BIBLIOTHECA INDICA:

A

COLLECTION OF ORIENTAL WORKS

PUBLISHED BY THE
ASIATIC SOCIETY OF BENGAL.
NEW SERIES, NO. 966.

GADĀDHARA PADDHATAU KĀLASĀRA

BY

GADĀDHARA RĀJAGURU

EDITED BY

SADĀÇIVA MIÇRA

OF PURI.

VOL. I, FASCICULUS I.

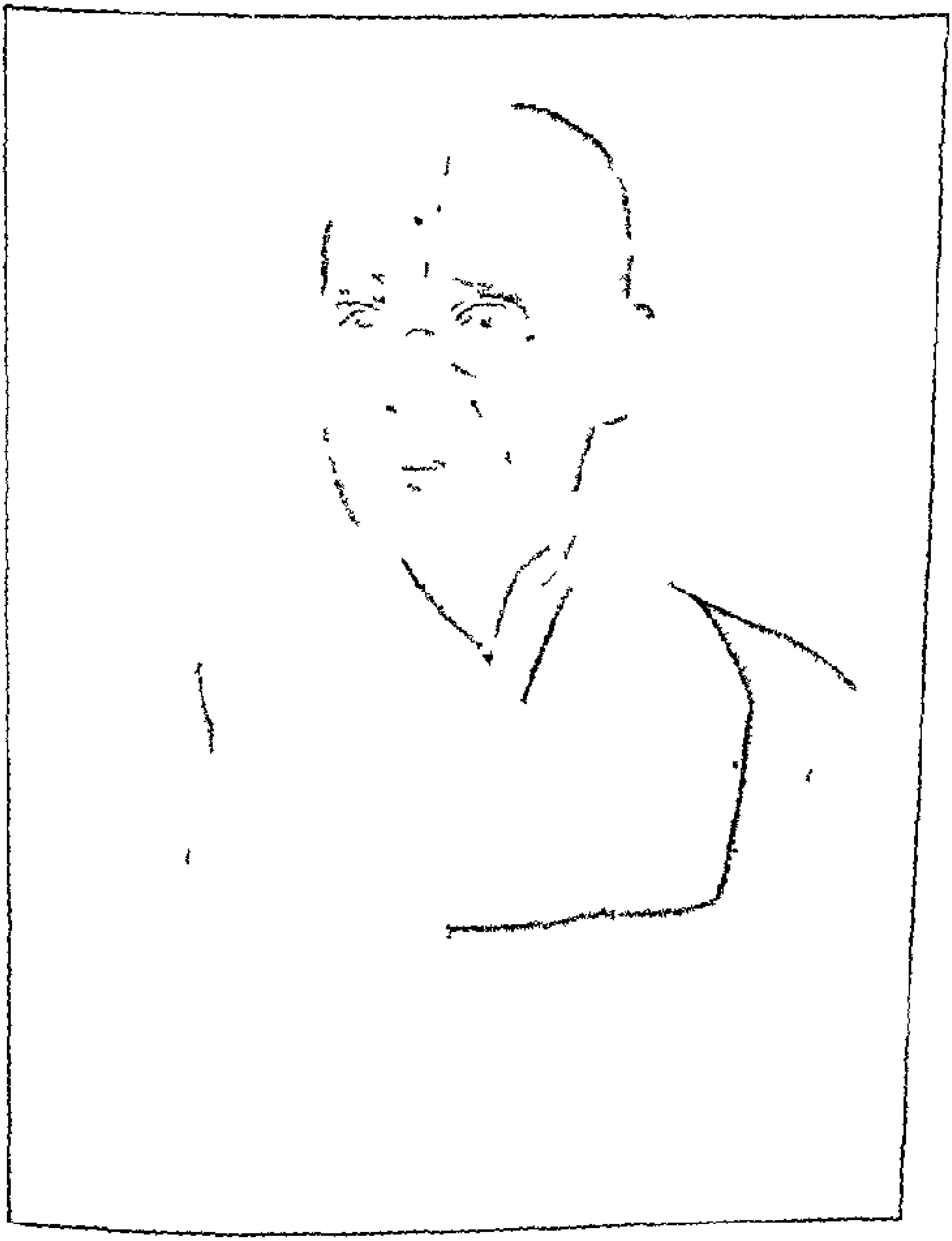
CALCUTTA:
PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS,
AND PUBLISHED BY THE
ASIATIC SOCIETY, 57, PARK STREET,
1900.

डाक्टर विद्याधन शास्त्री के प्रबन्ध में आदित्य प्रेस, देहली में मुद्रित

पुस्तक मिलने का पता—

१— पं० देवानन्द डिमरी, मौजा डिम्मर,
पो० ऑ० सिमली, गढ़वाल।

२— बाबू महीधर डिमरी,
स्टेट ऑफिस, नई दिल्ली।



ग्रन्थकर्ता

पं० देवानन्द शर्मा बदरिकाश्रमस्थः

Murari Art Press Delhi

* भूमिका *

विदितचरमेवास्तीदम् तत्रभवतां निगमागमाववोधोत्फुल्लसूक्ष्मेन्द्रियविषय विभागानां विदुषाम् । यदिह परब्रह्मपरमात्मनो मायाशक्तिविजृम्भिते, ब्रह्माण्डखण्डाभ्यन्तराले । अनादि कालकर्मवासनासंस्त्रियमाण जीवजातोपभोगनिमित्तं, स्थावरजङ्गमात्मकं सृष्टिचक्रं वर्त्तते । तत्र स्थावरसृष्ट्यपेक्षया जङ्गमस्योत्कृष्टतया, तत्रापि कृमि कीट पक्षि मृग पशु मनुष्याणा मुत्तरोत्तरं प्रबोधाधिक्येन, सकलजीव जात निकायानां मध्ये, मनुष्य जातेरे च प्राधान्य मस्तीति सुस्पष्टमेव । तस्याश्चातुर्वर्ण्येन विभागं कुर्वता भगवता गुणकर्मोपाधिस्तद्धेतु त्वेननिर्दिष्टः । तत्रच कर्मणां नित्यनैमित्तिककाम्यरूपाणां त्रैविध्यम्–तेषांच नित्यानां संध्यावन्दनादीनां । नैमित्तिकानाम्-जातकर्मादीनां, काम्यानाम्-व्रतोपवासयज्ञादीनां, अवयवावयवि भावेनानेकविधत्वम् धर्मप्रमाणैर्मुनिभिः स्वकीयासु संहितासु वाहुल्येनोपवर्णनंकृतम् । अथच गुणकर्मोपाधिगतानां, ब्राह्मण क्षत्रिय विट् शूद्राणां चतुर्णां वर्णानामाद्यानां त्रैवर्णिकानां द्विजत्वसंपादको वीजगर्भसमुद्भवैनोनिर्वहणार्थकः संस्कारो विहितः । तथा व्रतोपवास शालादि कर्मसु, आराध्यदेवतानां, पूजाविधाननियमोनियंत्रितः । तत्र वर्त्तमान कलिकालपिहित कर्मकाण्डविषये, प्रतिकूल क्रियाकलापक्रमसरणिमनुरुध्य, प्रवृत्तासु सतीष्वपि नानादिग्देशव्यवस्थानुसारिणीषु विकलाङ्गासु व्यतिक्रम क्रियार्थासु पद्धतिषु, सकलसमष्टिक्रिया क्रमविधानानुवर्त्तमानेन मया पूर्वाचार्य विचारपद्धतिमनुक्रम्य कर्मकाण्डरत्नाकरनाम्नाऽयंग्रन्थः संगृहीतः अत्र च पूजाखण्डसंस्कारखण्ड दानखंड–शान्तिखण्डभेदेन चतुर्धाविभज्य, विषय विभागोपवर्णनमकारि, प्रत्येकस्य विषयस्य प्रथमंतत्तदामुखे सप्रमाणां विषयसिद्धिं विधाय तदनुसारेण कर्मपद्धतिश्चोक्ता।

तत्रसहजात प्रमादवशेन अक्षरयोजकानवधानवशेन वा, यदिस्युः काश्चन त्रुटयस्ताः क्षन्तव्याः, तथा तत्सूचनानुग्रहेणानुग्रहीतव्योऽयमनुचरो विदुषामितिशम् ।

प्रार्थक.— ग्रन्थकर्त्ता ।

॥ प्रस्तावना ॥

श्री परब्रह्म जगदाधार ईश्वर की मानुष सृष्टि अनादिकाल से ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र चातुर्वर्ण्यात्मक है। इन वर्णों में से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनको द्विजत्व संज्ञा संपादन है। जिन तीन वर्णों के परम्परा से जन्म संस्कारादि कर्म होते आये हैं उन्हें द्विज कहते हैं। इनके जन्म और संस्कार के विषय में अस्मदादि के पूर्वज व्यास वसिष्ठादि महर्षियों ने अनादि वेदों के अनुसार कर्मकांड विषय को श्रुति स्मृति गृह्यसूत्र पुराणादिकों में यथेष्ट रीति से विवरण किया है। पर चकलिकाल के प्रभाव से तथा नाना मत मतान्तरों के कारण आधुनिक पद्धतियां पूर्वाचार्यों की निर्माण की हुई पद्धतियों के प्रतिकूल भिन्न २ प्रकार की हैं। छपी हुई पद्धतियां जो लब्ध होरही हैं उन में भी, सूत्रकारों के मतानुसार, समयोपयोगी कर्मों की यथेष्ट ज्ञानप्रद पद्धति के प्राप्त न होने के कारण मैंने आजतक ८ वर्ष के अन्दर वेद उपनिषद्, धर्मशास्त्र, गृह्यसूत्र पुराण तन्त्रशास्त्रादिकों का यथेष्टावलोकन करके यथासम्भव आधुनिक कर्मोपयोगितानुसार पद्धतियों का यह ग्रन्थ कर्मकाण्डरत्नाकर नाम का रचा है, जिसमें प्रत्येक पद्धति के पूर्व नाना ग्रन्थों के प्रमाणों को एकत्रित करके अमुक कर्म परिभाषा नाम से संग्रह किया है और तदनन्तर, अमुक कर्मपद्धति की रचना की है। इस पुस्तक को चार खण्डों में विभाजित किया है।

प्रथम पूजाखण्ड में गणेशादि पञ्चाङ्ग पूजा, ग्रहयागादि कोटि होमान्त अङ्ग प्रत्यङ्गादि समस्त वर्णन, तथा ग्रहयागादि ६ भद्रों के चित्र सहित पूजादि विषय और सामयिक एकादश्यादि शान्तिपद्धतियां तथा नवरात्रादि विधान सप्तसती चण्डी आदि के समस्त अनुष्ठान, और रुद्रादि समस्त महामहारुद्रान्त, पद्धतियों की रचना की है, इस प्रकार पूजाखण्ड में १५० से अधिक परिभाषा और पद्धतियां हैं।

दूसरा संस्कार खण्ड है। उसमें भी प्रथम विवाह संस्कार पारस्कर सूत्राऽनुसार जो भी विवाहोपयोग्य विषय सूत्रव्याख्या व धर्मशास्त्रादिकों से निर्णय करके परिभाषा लिखी गई है। तदनन्तर विवाह पद्धति की रचना हुई है। इसी तरह षोडश संस्कारों की परिभाषा व पद्धतियों के अतिरिक्त प्रतिमा विवाह अर्क विवाहादि जिन२ रस्मों को पुरातन प्रथानुसार बिना पद्धतियों के किया करते थे उनकी भी पद्धतियां शास्त्रानुकूल निर्माण की गई हैं।

तीसरा दानखण्ड है। इसके आदि में भी सर्वदान परिभाषा विशेष प्रमाणों से सविस्तार रची गई है। तदनन्तर गोदानादि तुलादानान्त जितने भी दान साम्प्रति समयानुकूल किये जाते हैं परिभाषा के अनुकूल पद्धतियां निर्माण की गई हैं।

चतुर्थ शान्तिखण्ड है- इसमें रजोदर्शन शांति से ग्रहशान्त्यन्त जितनी भी जातक शांति हैं सप्रमाण निर्मित हैं। छपने के पूर्व गतवर्ष कार्तिकमास में मैंने यह ग्रन्थ पं० वासवानन्द शास्त्री जी को समालोचनार्थ दिखाया श्रीमान ने बड़े परिश्रम से इस ग्रन्थ की आनुपूर्व्य देखकर, प्रमाण पत्र को वंश वर्णन रूप से देकर कृतार्थ किया। तदनन्तर माघके महीने काशी जाकर राजकीय क्वींस विद्यालय के भूतपूर्व अध्यापक पं० विश्वनाथ जी सर्वतन्त्र स्वतन्त्र सर्वशास्त्र पारंगत महाराज व मीमांसादि पारंगत क्वींस विद्यालय के महाध्यापक पं० बालबोध मिश्रजी व हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रधान महा महाध्यापक प्रोफेसर पं० बालकृष्ण जी, तथा चित्र स्वामी जी, तथा तर्करत्न तर्कचूडामणि महामहोपाध्याय पं० अन्नदाचरण, विद्वन्मंडली की सेवामें उपस्थित हुआ। तदनन्तर महामहोपाध्याय पं० हरनारायण विद्यासागर जी व पं० परमानन्द जी शास्त्री ज्योतिर्विद श्रीनगर निवासी ने बड़ी उदारता पूर्वक इस ग्रन्थ के आदि पृष्ठ से अन्ततक जैसे २ छपते गया अवलोकन करने का कष्ट किया। उपरोक्त श्रीमन्तोंने इस ग्रन्थ की समालोचना की और प्रमाण पत्र प्रदान कर, जिनकी प्रतिलिपि ग्रन्थ में मुद्रित हैं, मुझे कृतार्थ किया। श्रीमान पं हरिप्रसाद जी डिमरी शास्त्री तथा पं वन्शीधरजी डिमरी शास्त्रीजी का भी मै कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस कार्य में सहायता दी।

समस्त विद्वन्मण्डी से तथा कर्मठ पुरोहितों से नम्र निवेदन है कि पहिले पद्धतियों की परिभाषाओं की विचार पूर्वक समालोचना करके पद्धतियों का अवलोकन करें। इस ग्रन्थ के छपने का यह प्रथम अवसर है यदि कोई त्रुटियां रह गई हों तो विद्वान जन कृपा पुरःसर मुझे सूचना देने की कृपा करें जो कि पुनः संस्करण में ठीक कर दी जायगी।

प्रार्थना है कि अशुद्धियाँ विशेषतः ह्रस्व इकार की मात्राओं के छपते समय टूट जाने से तथा कम्पोजिटरों की व मेरी असावधानी से रह गई हैं शुद्धिपत्रानुसार संशोधन करने की कृपा करें जिससे कि मन्त्रोच्चारण में किसी प्रकार त्रुटि न रहे।

भवदीय—

ग्रन्थकर्त्ता

श्रीमान् पं० वासवानन्द शास्त्रिणां ग्रन्थकर्तृपरिचयरूपात्मकं

प्रमाणपत्रम् ।

अनेकधातूपलवृन्दवित्तै हिरण्मये राजतरत्नशृङ्गै ।
अस्त्यथ्युदीचिन्निदशत्वमाप्तो हिमालयोनाम नगाधिराज ॥१॥
वर्वर्तितस्मिन् त्रिविधै र्विचित्रै श्छायाप्रधानै स्तरुभिः फलाढ्यैः ।
समन्वितं चालकनन्दया वा पवित्रितं तद्बदरीवनाख्यम् ॥२॥
यत्राद्य योगीबदरीश्वरोऽसौ संरुद्धबाह्येन्द्रिय चित्तवृत्ति ।
आत्मानमध्यात्ममयात्मनैव निरीक्ष्यमाणो भजते तपस्याम् ॥३॥
तस्मिन्प्रदेशे किल काश्यपानां बद्रीशपादार्चक सद्द्विजानाम् ।
अहर्निशं ब्राह्मणवेदनादा ह्यास्ते पुरीडिम्मरनामधेया ॥४॥
बभूवतस्यां गुणरूपविद्या विचार विज्ञान विधानदक्ष ।
कुलाग्र्य पुत्रोऽन्वय मात्रमुख्य श्रीवह्निदत्त क्षिलभूमिदेव ॥५॥
अवापतस्माज्जनि मात्मजोऽपि श्रीकृष्ण यात्रोत्सव पुण्यकाले ।
अध्यात्मविज्ञान विधेयकृष्ण श्रीकृष्णदत्त सुकृते सतृष्ण ॥६॥
अभूदथैतस्यच सूनुरेको योजीवमात्रानु गृहीतचित्तः ।
परार्थसंधानपटुश्च जीवानन्देतिनाम्ना प्रथितोदयालु ॥७॥
विष्णो र्भक्ति परायणस्य सुतरां सत्यप्रवृत्ते सदा-
नानायत्नविधान शास्त्र सरणि प्रारब्धसिद्धार्थिन ।
तस्याप्यात्म समांशभाच विभवस्यासन्सुता सन्ततम्
पुरुषोऽर्थाद्दये ऽनुरूप गुणगाश्चत्वार एवाभवन् ॥८॥
तेषांज्येष्ठतमो गृहीतनियमो वृद्धानुयायीनयी-
सत्सेवाधि गतार्थ शास्त्र विभवो प्रज्ञाप्रधानेन्द्रिय ।
दीर्घोदार विचार चित्रचरितो नव्यार्थं संस्कारवत्
देवानन्द इति प्रसिद्धिमगमान्नाम्ना गुरूणां प्रिय ॥९॥
तेनेयं विदुषा गभीरधिषणा धैर्यान्वितेनाधुना-
पूर्वाचार्य विचार पद्धतिमनु सूत्रैव संयत्नत ।
सर्वोदयाभूमिकासु कर्मसरण्याकस्मिकं व्यत्ययम्
बुद्ध्या संग्रथितो द्विजन्म विधिकृन् रत्नाकरोऽयं मुदा ॥१०॥

परिचायक —

वासवानन्द शास्त्री

विदितमिदमस्तु प्रेक्षावताम्

बदरिकाश्रमनिवासिना परिणतबुद्धिना डिमरी इत्युपनाम्ना देवानन्दशर्मपण्डितवर्येण सातिश्रमभरं निर्मितोऽयं सार्थनाम्ना कर्मकाण्डरत्नाकरोऽयं ग्रन्थः क्वचित् क्वचिद्दृष्टतः श्रुतस्तेन श्रुतमात्रतः कर्मठानामुपयोगी संवक्ष्यते इति काशीस्थः काशीनाथपण्डितो विज्ञापयतीति शम्

द्. सर्वानन्द पाठक

काशीस्थ - विश्वविद्यालयस्य प्रधानाध्यापकानाम प्रमाण पत्रम

श्रीमता पण्डितप्रवरेण देवानन्दडिमरीशर्मणा बहून् प्राचीनान् नूतनांश्च स्मार्तान् मूलग्रन्थान् निबन्धनग्रन्थांश्च सम्यगवलोक्य परिशील्य च सङ्गृहीतोऽयं कर्मकाण्डरत्नाकराख्यः ग्रन्थः। स चायं कर्मकाण्डेषु प्रवेशमभिलषतां विद्यार्थिनां ब्राह्मणानां च महान्तमुपकारमादधाति तद्विषयिणीं त्रुटिं च पूरयेदिति दृढं निश्चिनोमि।

चिन्नस्वामिशास्त्री

[illegible]

[illegible]

श्रीः

श्रीमता डिमरी उपनामकेन देवानन्द शर्मणा [illegible] प्राचीनं कर्मकाण्ड
पद्धति सम्मति [illegible]
[illegible] कर्मकाण्डरत्नाकर नामा [illegible]
[illegible] कर्मकाण्ड
[illegible]
[illegible]

गवर्नमेन्ट
प्रो. व्याकरण क्वीन्स कॉलेज बनारस
[illegible] व्याकरण न्याय साहित्य [illegible]

श्री ।

महामहोपाध्याय विद्या सागर शिरोविभूषित -

श्री पण्डित हरनारायण शास्त्रिणां सम्मतिः-

डिमरी त्युपाह्वेन पण्डित देवानन्द शर्मणा विरचितः कर्मकाण्डरत्नाकराख्यो ग्रन्थो मया सम्यगवलोकितः। अस्मिन् परिभाषा प्रधान पुरःसरं प्रत्येक कर्म पद्धति संग्रहो विशेषेण कृतः। क्वचित् निज प्रान्तीय रीत्यनुरोध प्रयोगोऽप्ययं ग्रन्थोऽनेनायं महता प्रयत्नेन सम्पादितः। सफलीभूतश्चास्मिन् विषये ग्रन्थ कर्तुः श्रमः। पूजा दान संस्कार शान्ति विधान वर्णनात्मक खण्डचतुष्टय भूषितोऽयं निबन्धः कर्म काण्ड विषयजिज्ञासूनां महोपकाराय भविष्यतीति मदीया सम्मतिः।

हरनारायण शास्त्री,

ता० १७ अक्टूबर १९३२ प्रोफेसर हिन्दू कालिज दिल्ली।

कविराज पण्डित परमानंद ज्योतिर्विद् शास्त्री रसायनाचार्य

ता० १७ अक्टूबर १९३२ श्रीनगर (गढ़वाल)

देवानन्दाभिधानद्विजवररचितं कर्मकाण्ड प्रधानं,
ग्रन्थं वीक्ष्योपकार क्षममति रुचिरं जायते पूर्ण हर्षः।
कुर्वन् व्याख्यां बहूनामति विशदमति कर्मणां ग्रन्थकर्त्ता,
प्राप्त साफल्य मस्मिन्निति वदति भिषक् टेहरी प्रान्तवासी॥

परमानंदपाण्डेय

इन्द्रप्रस्थीय म्युनिसिपल्टीय प्रधान वैद्य देहली

* विषयसूची *

—❀ इति अकारादि विषयानुक्रमणिका ❀—

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे,	पंक्तौ
ानत्य,	नित्य,	२०	३
ापर्णाम,	पिर्णाम्	२०	३
मास,	मसि,	२०	२५
यान,	यानि,	२३	५
इात,	इति,	२७	२१
स्पनियश,	स्पतियश,	३१	२०
वान्य,	वाम्प	३६	२५
श्रास्म,	श्रस्मि	३८	१७
इह्रातष्ठ,	इहतिष्ठ,	४०	२४
पाताय,	पातयि,	४१	२२
इह्रगच्छे,	इहागच्छे,	५२	२०
यादवा,	यद्विा,	५३	६
दात्तरण,	दत्तिणे,	५३	१७
पुष्पाण,	पुष्पाणि,	५७	७
कर्ममा,	कूर्मा,	६०	१५
रथाध,	रथाघ्रि,	६३	११
ासनी,	सिनी,	६६	२६
हातष्ठ,	हतिष्ठ,	७०	१३
वालस०,	वलिस०,	७४	२०
ऽास्मन्स,	ऽस्मिन्स,	७५	२७
महावष्णु	महाविष्णु	८६	५
मात,	मूर्ति	८६	२५
ईशाने,	श्राग्नये,	८६	११
ातष्ठसु०,	तिष्ठसु०	६८	११
ामत्राय,	मित्राय,	१०६	२२
नृापर्गा,	नृपिर्गा	१०६	२८
पात,	पति,	१०७	२

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
सीतापशं,	सीतृपिशं	११०	१७
पूषन्,	पूषन्,	१११	१३
तजमानस्य,	यजमानस्य,	१२०	२६
ऋाष	ऋषिः	१३६	३
आधातु	आदधातु	१४१	१६
रत्तामूत्र	रक्षासूत्र	१४६	२६
सर्याभि	सूर्याभि	१५०	२८
सुरपातः	सुरपतिः	१५३	२७
शूपाढ्यो	भूपाढ्यो	१५८	१४
सर्पेभ्यो	सर्वेभ्यो	१६३	१२
भूभु ःस्वः	भूर्भुवःस्वः	१६५	२
विदथे	विदथे	१७१	२०
सन्तुपो	सन्तुयो	१७४	७
मपरि०	सपरि०	१७५	२१
यतो	ततो	१७६	३
याकिंचि	यत्किंचि	१८४	७
मीशानाद	मीशानादि	१८८	२२
पूजयमि	पूजयामि	१८६	३
आहरिव	अहिरिव	२०२	२७
नधातन	दधातन	२०५	८
यस्यस्ते	यस्यास्ते	२०७	१०
माप्रतिष्ठ	मेंप्रतिष्ठ	२०८	२१
पुणोक्त	पुराणोक्त	२१५	१
मधुवाऋता,	मधुवाताऋता,	२१५	१०
पुत्रमस्योवश	पुत्रमस्येविश	२१६	२७
नन्देत्यं,	नन्देत्याम्	२१६	२६
वरुरयेत्यस्य	वरुणस्येत्यस्य	२२१	५

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
स्वास्त	स्वति	२२२	१०
स्योना	स्योनापृथिविनो	२२२	२८
त्वदूगात	त्वदगर्ति	२८	१६
नवग्रहणा	नवग्रहाणां	२२६	२१
स्थंनमोनमः	स्थंनमोनमं	२३६	२१
समनिन्वितम्	समन्वितम्	२४०	११
पूजास्थनम्	पूजास्थानम्	२४४	२६
पाद्याम्	पाद्यम्	२४६	९
मुखायानमः	मुखायनमः	२४८	८
सञ्चालनान्ते	संचालनान्ते	२४६	१३
देवींविमृज्य	देवींविसृज्य	२५३	५
नवमीमिथि	नवमीतिथि	२५३	५
चांडीपाठ	चंडीपाठ	२५५	६
लक्षण,	लक्षणॉ,	२५८	५
पश्चिपद्वार,	पश्चिमद्वार	२५८	१४
वाल,	वलि,	२६१	१२
पत्राग्गे,	पत्राग्रे,	२६६	१०
इतिमंत्रै,	इतिमंत्रै	२७०	१६
इतिसम्रथ्यं	इतिसम्प्रार्थ्य	२७०	२८
श्रीमद्दासण,	श्रीमद्दक्षिण,	२७२	२६
भहाभयम्	महाभयम्,	२७६	२७
स्यापयाम,	स्थापयामि,	२७७	२३
श्रोदक्यनम,	श्रोदक्यैनम,	२७६	२४
शंभुरूपोस,	शंभुरूपोऽसि,	२८५	६
श्वाशलोश्चय,	श्वशिलोच्चय,	२८५	७
महिषाशरसि,	महिषशिरसि,	२८८	२२
दुर्गात,	दुर्गति	२८६	१

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे,	पंक्तौ
रङ्गेनभिन्धि,	खङ्गेनभिन्धि,	२८८	५।६
मार्गादर्शा,	मार्गादर्शी,	२६१	११
लदमनमः,	लक्ष्म्यैनम,	२६५	७
काषमण्यै	रुक्मिण्यै	३०४	१६
पोडपहस्त	पोडशहस्त	३१३	१८
ग्रुणुयात	शृणुयात्	३१४	१२
पार्त्री	पौर्त्री	३१७	१
त्वंसुखा	त्वंसुखी	३१७	४
स्थापोयत्वा	स्थापयित्वा	३१७	७
पातगृह्णताम्	प्रतिगृह्यताम्	३१७	२३
बृन्दाएये	वृन्दारण्ये	३१६	६
विष्णुारत्यस्य	विष्णुरित्यस्य	३२६	२८
पश्चिमालग	पश्चिमलिंग	३३०	१७
वज्रायमम:	वज्रायनमः	३३१	१५
कंयकं	इयवकं	३३८	१२
मृतम्	भूतात्	३४७	२५
भूर्वोक	पूर्वोक्त	३४८	३
मह	सह	३४६	२३
स्म	स्य	३५२	५
रजतत्तीपं	रजतदीपं	३५२	५
मयाश्व	नवाश्च	३५२	१७

अत. परं संस्कारखंडस्य शुद्धिपत्रम् ।

अशुद्धिः	शुद्धिः	पृष्ठे,	पंक्तौ
ममां	मिमां	१७८	६
योमा	योमा	३८१	२४
याद्गो	याद्गो	३८३	१६
केगेषु	केशेषु	१८८	२४

शुद्धिः	अशुद्धिः	पृष्टे	पंक्तौ
ष्कपाश्चैव	ष्कन्यायाश्चैव	३८९	२२
स्पष्ट	स्पृष्टं	३९१	१६
अनुकक	अमुक	३९१	१९
नातिरितव्या	नातिचरितव्या	३९६	१
ददाति	दद्याति	३९९	८
पड्वीशं	पड्वींश	४००	१३
द्विजोत्तम्	द्विजोत्तम	४०१	२५
वहास्यमानो	वहास्ययानो	४०५	६
दक्षिणांदत्वा	दक्षिणाँदत्वो	४०७	१२
पितर.	पितर	४०८	६
देवहूया ॐ	देवहूत्या ॐ	४०८	१३
मण्यस्मिन्	मह्मण्यस्मिन्	४०८	२३
प्रायश्चित	प्रायश्चित्त	४१८	१०
वरवधूयभ्यां	वरवधूभ्यां	४२१	१५
पुजा	पूजा	४२१	२१
वरणंदत्वा	वरणदत्वा	४३८	२४
प्रार्थत्	प्रार्थयत्	४३८	२८
तारानुकुले	तारानुकूले	४४७	३
करिष्य	करिष्ये	४७६	९
ॾ	+	४८०	२८
विधाना	विधिना	४८१	२८
प्रवेश,	प्रवेश	४८६	४
प्राणापात्रयं	प्राणायामत्रयं	४९६	२३
राधायं	राधाराध	४९७	१६
पे० नं० ५०२	पे० नं० ५०१		
पे० नं० ५०१	पे० नं० ५०२		
मोक्षणीपात्रे	मोक्षणीपात्रे	४९८	११

शुद्धिः	अशुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
व चे	व-ते	५०७	१६
पद्धितः	पद्धति	५२६	२३
वरजित	वारजित	५२८	१०
सुगान्ध	सुगन्धि	५३१	६
निधिपो	निधिपो	५३७	१७
रमकोहं	रमुकोहं	५४८	२६
नाक्षिणत	दक्षिणत	५५८	१४
सूत्रकारेणणु	सूत्रकारेणनु	५५४	१८

अतः पर दानखण्डस्य शुद्धिपत्रम्

शुद्धिः	अशुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
	दानखण्ड प्रारभ्यते	५६३	१
भक्षेनित्य	भक्षसेनित्य	५६८	१२
कुशाक्षत	कुशाक्षत	५७०	८
ससर्वत	सर्वत	५७३	१४
सावतु	सवितु	५७१	४
अमक	अमुक	५७५	१०
स्वयभुजीत	स्वयभु जीत	५८२	२८
भूषणैर्भूषित	भूषणैर्भु षित	५८७	१

अत पर शान्तिखण्डस्य, शुद्धिपत्रम् ।

शुद्धिः	अशुद्धिः	पृष्ठे	पंक्तौ
भोजयित्वा	भोजयित्वा	६०७	१६
जनन	जनन	६१६	३१
रयुग्रशा	रुयुग्रा भाया	६१८	१०
दधर्षान्	दधर्षान	६२४	९
स्वयहीराय	स्वयहीराय	६४६	१५
पुष्प	पुष्प	६२८	१८
तसमम	तत्समम	६५२	१
पुष्पाजलि	पुष्पाजलि	६५८	१७
भुवोसि	भुवोऽसि	६६५	२
खड्गधरो	खड्गधरो	६६६	७
पुरीष्याम	पुरीष्यामि	६७३	२८
करण	वरुण	६७४	१८

इति

❀ ॐ ❀

अथ कर्मकांड रत्नाकरस्य पूजाखंड प्रारम्भः ॥

श्रीगणेशायनमः, श्रीसरस्वत्यैनमः, श्रीगुरुचरण कमलेभ्योनमः ।



श्रीगणेशगुरुंचैव शारदां भुवनेश्वरीम् ।
सर्वाभीष्ट प्रदातारं वदरीशंच नौम्यहम् ॥
डिमरीत्युपनाम्नाच वदरीनाथ वासिना ।
देवानन्देन विदुषा क्रियते ग्रन्थ संग्रहः ॥
आदौ संगृह्य शास्त्रेभ्यो देवपूजा विधायकम् ।
सप्रमाणं विवक्ष्येऽहं पूजाखंडंयथेष्टदम् ॥

अथ कर्मबोधनी-परिभाषां वक्ष्ये,, तत्रादौ **कर्मभूमि माह** विष्णुपुराणे—अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बुद्वीपे महामुने । यतोहि कर्मभूरेषा ततोन्या भोग भूमयः॥ कदाचिल्लभते जन्तुर्मनुष्यं पुण्य संचयात ॥ गायन्ति देवा. किलगीतकानि धन्यास्तुयेभारतभूमिभागे । स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते भवन्ति भूय पुरुषा सुरत्वात । **तत्र शुचित्व विचारः**—सदा कुर्याद्धर्म कार्यं मापद्यापि शुचिर्नरः । श्रुतिस्मृत्युदितंकर्म नकुर्या दशुचिः क्वचिदि तिभृगुः । **आचारे याज्ञवल्क्यः ।** श्रुतिस्मृतिः सदाचारः स्वस्यच प्रियमात्मनः । **वशिष्ठः**—आचारः परमोधर्म्मः सर्वेषामिति निश्चयः । हीनाचारी परीतात्मा प्रेत्यचेह विनश्यति । चतुर्णामपि वर्णाना माचारो धर्मपालनम् । आचार भ्रष्टदेहानां भवेद्धर्म परांमुखः । **प्रातरुत्थान कालः, मनुः**—ब्राह्मेमुहूर्ते बुध्येत धर्म्मार्थौ चानुचिन्तयेत । **ब्राह्ममुहूर्त्तः** विष्णुपुराणे—रात्रेः पश्चिम यामस्य मुहूर्त्तोय स्तृतीयकः । सब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः सःप्रबोधने । पंच पंचउषः— कालः सप्तपंचारुणोदयः—षष्टपंचभवेत्प्रातः स्ततःसूर्योदयः स्मृतः । **तदभावेदोषः रत्नावल्याम्**:—ब्राह्मेमुहूर्ते यानिद्रा साधुण्य क्षयकारिणी । तांकरोतिद्विजोमोहात्पाद कृच्छ्रेणेशुध्यति । **अंगिराः**—उत्थायपश्चिमेरात्रे ततआचम्य चोदकम् । **प्रभाते करदर्शनम्**—करामेवसते लक्ष्मीः करमध्येसरस्वती । करमूले स्थितो ब्रह्मा [illegible] ति स्तनमंडले । [illegible]

श्रोत्रियंशुभगां गांच अग्निमग्नि चितंतथा। प्रातरुत्थाय य पश्येदापद्भ्य. सप्रमुच्यते। **प्रातः शकुनानि:**–भारद्वाज मयूराणां चाषस्य नकुलस्यच। प्रभातेदर्शनं श्रेष्ठं वामपृष्ठे विशेषतः। **प्रातरयोग्यदर्शनीयाः**–पापिष्ठंदुर्भगंचान्धं नग्नमुत्कृत्त नासिकम्। भल्लातकं कर्षफलं काक मार्जार मूषकान्। क्लीबंचगर्धभंचैव नपश्येत्प्रातरेवहि। **विण्मूत्रोत्सर्गः पारस्करसूत्रे**॥ तिष्ठन्मूत्र पुरीषे कुर्यात्। स्वयंप्रशीर्णेन काष्टेनगुदं प्रमृजीत। विकृतंवासो नाच्छादयीत। मूत्रपुरीषेष्ठीवनं चातपे नकुर्यात्। **दक्षः**—शौचेयत्नः सदाकार्यः शौचमूलो यतोद्विजः। शौचाचार विहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः। **शौचेदिक् प्रमाणं पाराशरः**—ततः प्रातः समुत्थाय कुर्याद्विण्मूत्रमेवच, नैर्ऋत्या मिषुविक्षेपा दतीत्याभ्यधिकंभुवः। **शौचेमुखंयमः**—प्रत्यङ्मुखस्तु पूर्वाह्णे ऽपराण्हे प्राङ्मुखस्तथा। उदङ्मुखस्तु मध्यान्हे निशायां दक्षिणामुखः

मनुः—छायायामन्धकारेच रात्रावहनि वाद्विजः। यथासुखं मुखंकुर्या त्प्राणबाधा भयेषुच। **शौचेयज्ञोपवीतधारणम्**—अमरे–उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोध्दृतेदक्षिणेकरे। प्राचीनावीतमन्यस्मिन्नीवीतं कंठलंबितम्। **कारिकासु**—मूत्रेतु दक्षिणे कर्णे पुरीषेवामकर्णके उपवीतंसदाधार्यं मैथुनेतूप वीतिवत्। **सायणीये**–मलमूत्रं त्यजेद्विप्रो विस्मृत्यैवोपवीतधृक्। उपवीतं तदुत्सृज्य धार्यमन्यं नवंतदा। **शौचस्थलमाह अंगिराः**—अयज्ञियैरनार्द्रैश्च तृणैः संछाद्य मेदिनीम्। कुर्यान्मूत्र पुरीषेतु शुचौदेशे समाहितः। **बौधानः**—दशहस्तान्परित्यज्य मूत्रं कुर्या ज्जलाशयेशतहस्ता न्पुरीषार्थेतीर्थेनद्या चतुर्गुणम्। **जलशौचमाह**—धाराशौचं नकुर्वीत शौचशुद्धिमभीप्सिता। चुलकैरेवकर्त्तव्यं हस्तशुद्धि विधानतः। तीर्थेशौचं नकुर्वीत कुर्वीतो ध्दृतवारिणा। **शौचशेष जलम्**—गृहीत्वाजल पात्रंतु विण्मूत्रं कुरुतेयदि। तज्जलं मूत्रसदृशमतथान्नायसं चरेत् शौचोत्तर मितिशेषः। **शौचेहस्तविचार आश्वलायनः**—लिंगशौचं पुराकृत्वा गुदशौचं ततः परम्। धर्मविद्दक्षिणं हस्तमध शौचेनयोजयेत्। तथाच वामहस्तेन नाभेर्ध्वं नशोधयेत्। **शौचेमृत्तिकाग्रहणम् शातातपः**—अंतर्जलाद्देवगृहाद्वल्मीकान्मूषकस्थलात्। कृतशौचस्थलाच्चैव नग्राह्या पंचमृत्तिका.। **शौचेमृदालेपन क्षालनम्भृगुः**—द्वेलिंगे मृत्तिके देयेगुदेपंच करेदश। उभयोः सप्तदातव्या विट्शौचे मृत्तिका. स्मृता। एकं शौच गृहस्थ स्यद्विगुणं ब्रह्मचारिणः। वाणप्रस्थस्य त्रिगुणंयतीनाच चतुर्गुणम्। यद्दिवा विहितं शौचंतदर्धंनिशिकीर्तितम्। तदर्धमातुरे प्रोक्तं मातुरस्यार्धमध्वनि। **स्त्रीशूद्रयोः**—स्त्रीशूद्रयोरर्ध मानंशौचं प्रोक्तमनीषिभिः। **शौचेमृत्तिकामानं शौनकः**—आर्द्रामलक मात्रास्तु मृत्शौचेहि मृत्तिकाः। **पादक्षालनम्**—चंद्रिकायाम् पादतले तिस्रोमृत्तिका गुल्फयोश्चतस्रः। **गंडूषप्रमाणं आश्वलायनः**। कुर्याद्द्वादश गंडूषान्पुरीषोत्सर्जने ततः। मूत्रोत्सर्गेच चतुरोभोजनान्तेच षोडश भक्ष्यभोज्या वसानेषु गंडूषाष्टकमाचरेत। **गंडूषप्रक्षेपणे विचारः प्रयोग पारिजाते**—पुरतःसर्वदेवाश्चदक्षिणे पितरः स्तथा। ऋषयः पृष्ठतः सर्वेवामे गंडूष प्रक्षिपेत्। **दंतधावनकाष्ठम्पारस्करः**–औदुम्बरेण दन्तान्धावेत्। **धन्वंतरिः**—निम्बश्चतिक्तके श्रेष्ठ कषाये खादिरस्तथा। तत्रादौ दंतपवनं द्वादशांगुलमायतम्। **दंतधावनवर्ज्यं व्यासः**···प्रतिपद्दर्शषष्ठीषु नवम्यां रविवासरे। दन्तानां काष्ठ संयोगो दहत्या सप्तमं कुलम्॥

स्नानकालः, हेमाद्रौ—अरुणकिरण युक्ता प्राचीदिश मवलोक्यस्नायादिति, **स्नानार्थं जलम्मरीचिः**-गांगंपयः पुनात्येव पापमा मरणात्कृतम्। **यमः**–आपएव सदापूता स्नानान्हि

पिशाचवत् । तस्मात्सर्वेषु कालेषु उष्णाम्भः पावनस्मृतम् । **उष्णोदक स्नानवर्ज्यम् मनुः**— संक्रान्त्यां रविवारे च सप्तम्यां राहुदर्शने । आरोग्ये पुत्रमित्रार्थे नस्नायादुष्णवारिणा ॥ मृतजन्मनि सङ्क्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिनेतथा अस्पृश्य स्पर्शनेचैव नस्नाया दुष्णवारिणा । **जाबालि.**— अशिरस्कं भवत्स्नानं स्नानाशक्तौ तुकर्मिणाः । आर्द्रेण वाससावापि मार्जनं दैहिकंविदुः । **रजस्वला स्नानविशेष.**—ज्वराभिभूता यानारी रजसाच परिप्लुता । कथंतस्या भवच्छौचशुद्धिः स्यात्केनकर्मणा । चतुर्थेऽहनिसंप्राप्तेस्पृशे दन्यातुतां स्त्रियम् । सासचेलाऽवगाह्याप स्नात्वा स्नात्वा पुनः स्पृशेत् । दशद्वादश कृत्वोवा आचमेच्च पुनः पुनः । अन्तेच वाससांत्यागस्तथाशुद्धाभवेत्तुसा । **स्नानादौ वर्ज्यजलमाह धन्वंतरि** – तृणपर्णोत्करयुतं कलुषं विषसंयुतम् । योवगाहेत वर्षासु पिबेद्वापि नवजलम् । सबाह्या भ्यतरान्रोगान्प्राप्नुयात्क्षिप्रमेवहि । **वाचस्पति**—स्नानमाचमनं दानं देवतापितृतर्पणम् । शूद्रोदकैर्नकुर्वीत तथामेघाद्विनिःसृतैः । **कात्यायनः**—धनुःसहस्राण्यष्टौ च गतिर्यासां न विद्यते । (?) सर्वान्धारज स्वला –तासुस्नानं नकुर्वीत वर्जयित्वा सुरापगाम् । (कनिःसमुद्रगा) उपाकर्मणि चोत्सर्गे प्रेतस्नानेतथैवच । चन्द्रसूर्य ग्रहेचैव रजोदोषो नविद्यते । **कात्यायनसूत्रे**—जटिलस्य शिरसा निरुक्त कण्ठ मज्जनस्नानम् । **सौभाग्यवती स्त्रीणां विशेष स्नाने**—सभर्तृक योषितांच ग्रहणादि निमित्तगङ्गादितीर्थेषु सङ्क्रान्त्यादि पर्वनिमित्तकंच कण्ठस्नानं फलप्रदम् । **पाराशर**—शिरस्नानं तूष्णजलेनैव सौभाग्यवतीनां प्रशस्त । शैत्येनत्वमङ्गलम् । नित्यमेव स्त्रीशूद्राणां सर्वत्र तूष्णींस्नानम् । **स्नानोत्तर वर्ज्यवस्त्रम्**—दक्षैरपध्दौतं स्त्रियाधौतं शूद्रधौतं तथैवच । प्रसारितं यमदिशि गर्हितं सर्वकर्मसु । **आपस्तंब**—आर्द्रवासास्तुयः कुर्याज्जपहोम परिग्रहान्सर्वं तद्राक्षसं विद्यात्कर्म जातंच यत्कृतम् । यज्जलेशुष्कवस्त्रेण स्थलेचैवार्द्रवससा । जपोहोमस्तथादानं तत्सर्वं निष्फलंभवेत् । **कर्मार्थभूमि विचार याज्ञवल्क्य**—सर्वत्र वसुधापूतायत्रलेपोन विद्यते । यत्रलेपो भवत्तत्र पुनर्लेपेनशुद्ध्यति । **आसन माहव्यास**—कौशेयं कंबलंचैवअजिनं पट्टमेवच । दारुजं तालपत्रंवाआसनं परिकल्पयेत् । **आसन गुणा**—कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि । वशाजिने व्याधिनाशः कम्बले दुःखमोचनम् ॥ **कार्यपरत्वेनासन विचार**—अभिचारेनीलवर्णं रक्तं वश्यादि कर्मणि । शान्तिकेकम्बलं प्रोक्तं सर्वेष्टं चित्रकम्बलम् । कुशासनं सर्वसिद्धिः कथिता मुनिभिः पुरा । अरण्यादु खसम्भूतिः पाषाणे व्याधिसम्भवः । **आसन परिमाणं कालिका पुराणे**—चतुर्विंशत्यंगुलैस्तुदीर्घं काष्ठासनं मतम् । षोडशांगुलविस्तीर्णं मुत्सेधे चतुरंगुलम् । वस्त्रं द्विहस्तान्न दीर्घं सार्द्धं हस्तान्नविस्तृतम् । अंगुष्ठं तु तयोन्चत्वारिं कुर्यात्पूजासुमानव **पादुकाधारण विचार**—अग्न्यागारं गवांगोष्ठेदेव ब्राह्मण सन्निधौ आहारे जपकाले च पादुकानां विसर्जनम् । **अथच कर्म विशेषे शरीरावयव संकोच विकसन भेदेन शरीर साध्यानि षडासनान्याह तत्रादौ प्रौढपाद मासन माचार मयूखे**—दानमाचमनं होमं भोजनं देवतार्चनम् । प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम् । **प्रौढपादासन लक्षणम्**—आसनारूढपादस्तु जानुनोर्वाथजंघयोः । कृतावसक्थिकोयश्च प्रौढपादः सउच्यते । **देवीभागवते पंचासनानि**—पद्मासनं स्वस्तिकंच भद्रंवज्रासनंतथा । वीरासनमितिप्रोक्तं क्रमादासन पञ्चकम् । **पद्मासनम्**—ऊर्वोरुपरि विन्यस्य सम्यक्पादतलेशुभे । अंगुष्ठौ च निबध्नीया द्धस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्ततः । **स्वस्तिकासनम्**—ऋजुकायःविशेद्योगी स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते । **भद्रासनम्**—सीवन्याः पार्श्वयोन्यस्य गुल्फयुग्मं सुनिश्चितम् । वृषणाधः पादपार्ष्णी पाणिभ्यां परिबंधयेत् । भद्रासनमितिप्रोक्तंयोगिभिः

परिपूजितम्। **वज्रासनम्**—उर्वोः पादौ क्रमान्यस्य जान्वोः प्रत्यङ्मुखांगुलिः। करौविदध्या दाख्यातं वज्रासन मनुत्तमम्। **वीरासनम्**—एकंपादमधः कृत्वा विन्यस्यैकं तथोत्तरे। ऋजुकायो विशेषांगी वीरासन मितीरितम्। **सर्वकर्मोपासने दिग्विचारमाह**— बृहत्पाराशरः ईशान्याभि मुखोभूत्वा द्विजः पूर्वमुखोऽपिवा। सन्ध्या मुपासयेन्नित्यंयथा वत्तन्निबोधत। **परिभाषा कर्मप्रदीपे**—यत्रदिंनि यमोनस्या जपहोमादि कर्मसु। तिस्रस्त त्रदिशः प्रोक्ता एन्द्रीसौम्याऽपराजिता। **गौतमाः**—राग्नावुदेमुखः कुर्या दैवंकार्य सदैवहि। शिवार्चनं सदाप्येवं शुचिः कुर्यादुदंमुखः। **कर्मादौ उर्ध्वपुंड्रतिलकधारणं, बृहन्नारदीये**—स्नानं दानंजपोहोमः सन्ध्यास्वध्याय कर्मसु। ऊर्ध्वपुंड्र विहीनाश्चे त्तत्सर्वं निष्फलं भवेत्। **प्रयोगपारिजातके**—ललाटे तिलकं कृत्वा सन्ध्याकर्म समाचरेत्। अकृत्वा भालतिलकंतस्यकर्म निरर्थकम्। **भस्मधारणं भविष्ये**— सितेनभस्मना कुर्यात् त्रिसंध्यंच त्रिपुण्ड्रकम्। सर्वपाप विनिर्मुक्तःशिवेनसह मोदते। **ग्राह्यभस्म**—अग्निहोत्राग्निजंभस्म विरजाहोमजं तथा औपासन समुत्पन्नं समिदग्निसमुद्भवम्। समिदग्नि समुद्भूतंधार्यंवै ब्रह्मचारिणा। **अन्ये**—अन्येषामपिसर्वेषां धार्येदावानलोद्भवम्। **त्रिपुण्ड्रलक्षण काशीखंडे**—भ्रुवोर्मध्यंसमारभ्य यावदन्तो भवद्भ्रुवो। मध्यमानामिकांगुल्यो र्मध्येतुप्रतिलोमतः। अंगुष्ठेनकृतारेखात्रिपुंड्रसोभिधीयते। प्रातःससलिलंभस्म मध्यान्हे गंधमिश्रितम्। सायान्हे निर्जलंभस्म, एवंभस्मविलेपयेत्। **रुद्राक्षधारणम्**—रुद्राक्षायस्य गात्रेषुललाटेच त्रिपुंड्रकम्। सचाण्डालोपि संपूज्यः सर्ववर्णोत्तमोभवेत। अभक्तोवाविभक्तोवानीचोनीचतरोऽपिवा। रुद्राक्षान्धारयेद्यस्तुमुच्यतेसर्वपातकैः। **पवित्रधारणम् मार्कंडेयः**—सपवित्रेणहस्तेन कुर्यादाचमन क्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रंतु भुक्तोच्छिष्टंतुवर्जयेत्। **कुशपवित्रप्रमाणम्**—द्व्यंगुलमूलवलयं ग्रंथिरं कांगुलिर्भवेत्। चतुरंगुलमग्रंस्यात्पवित्रस्यप्रमाणकम्। **प्रयोगपारिजातके**—स्नानेहोमेजपेदानेस्वाध्यायेपितृकर्मणि। करौसदर्भौकुर्वीत तथासन्ध्याभिवादने। **अन्यपवित्रधारणम्कातीयसूत्रभाष्ये**:—कुशाःकाशाः शरादूर्वायवगोधूमवल्कलाः। सुवर्णराजतंताम्रंदशदर्भाः प्रकीर्तिताः। **सुवर्णादिपवित्रंशारदायाम्**—ताम्रतारसुवर्णानामर्कषोडशखेन्दुभिः। कृतात्रिशक्तिमुद्रेयंतीव्रदारिद्र्यनाशिनी। इदंपवित्रतर्जन्यां धारयन्तिसदाद्विजाः। **उत्तरीयंप्रयोगपारिजातके**—उत्तरीयंगहन्तजन्याद्रजतंतथा। नजीवत्पितृकैर्धार्यं ज्येष्ठोवापिद्विनेयदि। **शिखाबंधनम् नागदेव**—स्मृत्वोंकारंचगायत्रीं निबध्नीयाच्छिखांततः। मानातोकेनमन्त्रेण शिखायैं वैतुकारयेत्। **कौर्शीशिखाधारणं संस्कारभास्करे**—खल्वाटत्वादिदोषेण विशिखश्चेन्नरोभवेत। कौशींतदाधारयीत ब्रह्मग्रन्थियुतांशिखाम्। **अन्यांतरे**—स्नानंदानंजपंहोमं संध्यायांदेवमार्चनं। शिखाग्रंथिविनाकर्म नकुर्याद्वैकदाचन॥ **शिखामुक्तिविचारः**—शौचेऽथमयनेसंगे (मैथुनं) भोजनेदन्तधावने। शिखामुक्तिंसदा कुर्यादाशौचेमनुरब्रवीत॥ **आचमनप्रकारः विश्वामित्रकल्पे**—शुद्धंस्मार्तंतथाचैव पौराणंवैदिकंतथा। तांत्रिकंश्रौत स्मार्तंचषड्विधश्रुतिनोदितं॥ **शुद्धाचमनम्**—विण्मूत्रादिकशौचेषुशुद्धेनपरिकीर्तितम्॥ **स्मार्ताचमनम्**—त्रैशपादे त्रिभि पीत्वाद्वाभ्याप्रक्षालयेत्करौ॥ द्वाभ्यामोष्ठौतुसंमृज्यद्वाभ्यामुन्मार्जनमपा। तर्जन्यहस्तौ प्रक्षाल्यपादावभ्युक्षयेत्पुनः॥ संस्पृशेत् नेत्र गन्धानंततः संस्पर्शणादिभिः। आत्मना-

नम्—प्रणवॅपूर्वमुच्चार्यसावित्रींतदनंतरम् । तथैवव्याहृतीस्तिस्रः श्रौताचमनमुच्यते । **वैदिका चमनम्**—कर्मांगंतुत्रिराचम्य, प्राणायामत्रयंस्मृतम् । प्राङ्मुखोवापिकर्त्तव्यं कर्मकुर्यात्प्रयत्नत: । **जलाभावेआचमनंपाराशर:**—प्रभासादीनितीर्थानि, गंगाद्या:सरितस्तथा । विप्रस्यदक्षिणेकर्णे वसन्तिमुनिरब्रवीत् । गंगाचदक्षिणेश्रोत्रे, नासिकायां हुताशन:, उभयो: स्पर्शनंचैव तत्क्षणादेवशु- ध्यति । **आचार मयूखे**—क्षुतंनिष्ठीवनंचैव जृम्भमाणेतथाऽनृते,, पतितानांचसंभाषे दक्षिणंश्रव- णंस्पृशेत् । **आचमनेजलप्रमाणं नागदेव:**—संहतांगुलिनातोय, गृहीत्वापाणिनाद्विज: । मुक्तां- गुष्ठकनिष्ठेनशेषेणाचमनं चरेत् । माषामाग्नमुवर्णस्य यत्रमज्जतिवैमणि: । एतदाचमनंप्रोक्तं, पवि- त्रंकायशोधनम् । **आचमनेवर्ज्य जलमाहव्यास:**—अप: पाणिनखैस्पृष्ट्वा, आचमेद्यस्तुयाद्विज: सुरापानेनततुल्यमित्येवमृषिरब्रवीत् । **सर्वकर्मादौसंध्योपासनंनित्यंकात्ययन:**—स्नानंसंध्या त्यजन्विप्र, सप्ताहाच्छूद्रतांव्रजेत् । तस्मात्स्नानंचसंध्यांच, सूतकेपिनसंत्यजेत् । **सन्ध्योपासने केचिदपवादाअत्रि:**—उन्मत्तदोषयुक्तस्य, व्याधितस्यचनित्यश: । पिताभ्रातातथान्योवा, सं- ध्यावंदनमाचरेत् । देवाग्निद्विजविप्राणां, कार्यंमहतिसंस्थिते । संध्याहानौ नदोषोऽस्तियतस्तत्पुण्य साधनम् । **मानसिकसन्ध्या**—अशक्तौनिर्जलेदेशे, मृतौजातौचसूतके । जपेच्चमानसींसंध्यां, कुशवारिविवर्जिताम् । **संध्याकालमाह देवीपुराणे**—उत्तमातारकोपेतामध्यमालुप्ततारका अधमाभास्करोपेता, प्रात: संध्यात्रिधोच्यते । उत्तमाभास्करोपेता, मध्यमालुप्तभास्करा । अधमा- तारकोपेता सायंसंध्यात्रिधामता । अध्यर्धयामादासायं संध्यामाध्यान्हिकीष्यते । **सन्ध्याधिकारिण: धर्मसिन्धुसारे**—उपनीताद्विजाएवा आधिकारिण: । स्त्रीशूद्राणामनधिकारित्वम् । तेषामुपनय- नाभावा द्वेदमंत्रेषुअधिकारोनास्ति । **सर्व कर्म्मादौ प्राणायाम: कर्त्तव्य:**—अगस्त्यसंहितायाम् प्राणायामैर्विनायत्कृतं कर्मनिरर्थकम् । अतोयत्नेनकर्त्तव्य :, प्राणायाम: शुभार्थिना । **प्राणायाम लक्षण:**—प्राणोवायुरितिप्रोक्त आयामस्तन्निरोधनम् । प्राणायामइतिप्रोक्तोयोगिनांयोगसाधनम् । **कात्यायन:**—प्राणायामैस्त्रिभि:पूत स्तत्क्षणाज्वलनेमिवत् । यथापर्वतधातूनां दोषान्हरतिपावक: एवमंतर्गतंपापं प्राणायामेन दह्यते ।

मार्जनंविश्वामित्र कल्पे—भूमौशिरशिचाकाशे, आकाशेभुविमंडले । मंडलेचतथा- काशे, एवंचनवधाक्षिपेत् । सैमधत्रयमाकाशे, ववरत्रयंमस्तके । नकाराणांत्रयंभूमौ 'नान्यथापावितं भवेत । एवमापोहिष्ठेति तृचेनमार्जनंकुर्यात । **याज्ञवल्क्य:**—अर्धर्चैर्याक्षिपेदूर्ध्व, मर्धर्चैर्याक्षिपे- दध: । अधोभागे विसष्टाभि, रसुरायान्तिसंक्षयम् । शिरसोमार्जनंकुर्यात्कुशै:सोदकविन्दुभि: । **अत्र- विधिसंबंधिनकेचिदुत्सर्गान्वक्ष्यामि**—(१)यत्रयत्राचमनंभवेत्तत्रत्रिवारंजलंपिवेत् । चतुर्थवारं जलंभूमौक्षिपेत् । (२) यत्रयत्रअर्घ्यादिकं विनियोगोभवेत्तत्रतत्रजलंकरे गृहीत्वाकर्मोपचारान्ते भूमौ क्षिपेत् । (३) यत्रयत्रमार्जनंभवेत्तत्रतत्र कुशोदकविन्दुभि:शिर:सिंचेत् । (४) यत्रयत्रध्यानंभवेत्त- त्रतत्रनमस्कार मुद्रयाकार्यम् । (५) यत्रयत्रोपस्थानं स्यात्तत्रकरौ स्वतिकाकारौ कुर्यात् । (६) यत्रयत्रावाहनं तत्रतत्रांजलिमुद्राकार्या । **(अपवादस्तु तत्रतत्रभिन्नभिन्नप्रकारेणेवदर्शिता)** **संध्याप्राधान्यं विश्वामित्रकल्पे** विप्रोवृक्षस्तस्यमूलंचसंध्या, वेद: शाखाधर्मकर्माणिपत्रे । तस्मान्मूलंयत्नतोरक्षणीयं, छिन्नेमूलेनैव शाखानपत्रे । **वेदवृक्ष**—ॐ कार:प्रौढमूल: क्रमपदस हितश्छन्द विस्तीर्णशाखो' ऋक्पत्र:-सामपुष्पोयजुरधिकफलोऽ थर्वगंधंदधान: । यत्रच्छायासमे

तोद्विजमधुपगणैः सेव्यमानः प्रभातेमध्येसायंत्रिकालंसुचरितचरितः पातुयोवेदवृत्तः ।**संध्यासेवनम्** स्वकालेसेवता नित्यंसन्ध्याकामदुघा भवेत । अकालेसेवितासाच सन्ध्यावन्ध्यावधूरिव । सन्ध्याहीनोऽ शुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु । यदन्यत्कुरुतेकर्म नतस्यफलमश्नुते । **संकल्प विचारोभविष्ये**—संकल्पेनविनाविप्रयत्किंचित्कुरुतेनरः । फलंचस्याल्पकं तस्यधर्मस्यार्धक्षयोभवेत । अत्रसंकल्प विधेयशास्त्राकारैर्नानाविध देशविशेषभेदादि दिवामहूर्त्ता दिनानाप्रकाराण्युक्तानि परंचात्रग्रथविस्तारभयान्नसंग्रहीतानि, **संकल्पवाक्यन्तुहेमाद्रौ श्राद्धखंडेप्रदर्शितम्** । ॐ इहपृथिव्यां जम्बूद्वीपे भारतवर्षे कुमारिकाखंडे प्राजापत्यादि, अमुकप्रदेशे एवंदेशादिकंसमनुकीर्त्य ब्रह्मणेद्वितीयपरार्द्ध,श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमस्य कलियुगस्य प्रथमेचरणे, षष्ठिसम्वत्सराणामध्ये, वर्त्तमानसम्वत्सरायनर्तुमासपक्षतिथिवार नक्षत्रयोगकरण दिवारात्रीमूहूर्त्त नामानि चैतानि सप्तम्यंता न्नुचारयेत, विशेषः प्रयोगेषुस्पष्टः ।

अथच पूजाविषयोपयोग्य विषयान्तरं—

तत्र पूजानाम देवतोद्देशेन द्रव्य त्यागात्मक त्वाद्यागएव । तत्र यद्यपिनेपाचिदावाहनादीनामयागात्मकत्वात्पूजात्वं नस्यात् । नचतेषां पूजात्व नास्त्येवेतिवाच्यम् । षोडशेष्वप्युपचारेषु शास्त्रकाराणा पूजाशब्द प्रयोगात । तथापि यागायागसमुदाये, पूजाशब्दो-गौरवितप्रीतिहेतुक्रियात्वेनोपाधिनारूढ़एव, यथा इष्टिपशु सोमसमुदाये राजसूय शब्दः, यद्यपि ईश्वरे यागायागसमुदाय क्रियया जीववन्दतः करण, वृत्तिरूपा प्रीतिर्नोत्पद्यते, अन्त करणाभावात् । तथापि मायावृत्ति विशेष एवप्रीतिः शिक्षादिवत । साच यद्यपि उत्पन्नत्वान्नश्यति, तथापि फल यावत्तिष्ठतीतिदिक् ॥ **पूजाधिकारिणः नृसिंहपुराणे**—अनाश्रमित्वं गृहभङ्गकारण मतो-गृहाणाश्रम मुत्तमं मुने । अनाश्रमस्थैर्द्विजवेदपारगै, रपित्वह नानुगृह्णामि चार्चनम् । अनाश्रमि कृतपूजांतु नगृह्णामीत्यर्थ ॥ **स्कन्दपुराणे**——पाखण्डिनश्च पतिता येचवैनास्तिकाद्विजाः पूजाकर्मणितेषांवै, सन्निधिर्नभ्यतेक्वचित ॥ **देवपूजायां सर्ववर्णाधिकारमाह विष्णुः**—आगमोक्तेन मार्गेण स्त्रीशूद्रैरपिपूजनम् । **स्मृत्यर्थ सारे बौधायनः** । शूद्राणां चैवभवति नाम्नावैदेवतार्चनम् । चतुर्थ्या तेनदेवतानाम्ने त्यर्थः,, तथा-दीक्षामन्त्रविहीनोपि कुर्याद्देवार्चनंबुध. । **देवीपुराणे**— पूजाविधौ भवेत् श्रेष्ठो, नापटुर्नकुशीलव । नानैष्ठिकोदाम्भिकोवा, पूजकः प्राप्यते शुभः, कुशीलवोनट ॥ **पूजाप्रतिनिधयः मंत्रराजानुष्टुब्विधानेः**—गुरवं पूजकाश्चैव, विद्वांसोयेऽग्निहोत्रिण । अधिकारित्व मर्हन्ति, यद्वा याज्ञिकदीक्षिताः । वेदवेदार्थ वेत्ताच, स्मार्त्तकर्मज्ञ एववा ॥ **पूजाकाल नृसिंहपुराणे**—देवकार्यस्य सर्वस्य, पूर्वाह्णस्तुविधीयते । **नारदीये विशेषः**—प्रातर्मध्यंदिनेसायं, देवपूजां समाचरेत् । नैमित्तिकेषु-सर्वेषु, तत्तत्काला विशेषतः ॥ **देवपूजायां प्रतिमादिस्थान विशेषान्तरये:**— गृह्यपरिशिष्टे-तानप्सुवाग्नौ सूर्येवास्थंडिले ,प्रतिमासु आवाहन विसर्जनंभवत । स्थाणुलिंगेषु शस्तासु देवता सन्निहितेति । **मनुः**—अप्स्वग्नौचैव हृदये, स्थंडिले प्रतिमासुच । त्रिष्वेषुवहरेः सम्यगर्चनं, मनुनास्मृतम् ॥ अग्नौक्रियावतां देवो, दिविदेवो मनीषिणाम् । प्रतिमास्वल्पबुद्धीनां, योगिनां हृदयेहरिः ॥ **स्कान्दे**—पूजार्थ मुत्तमंस्थानं, शालग्रामंतदुच्यते । नृसिंहपूजनेश्रेष्ठा, शालग्रामो-

द्धयाशिला । द्वारकाजात चक्रांका शिलाश्रेष्ठातथैवच । धात्रीफल प्रमाणाया, करगेपिहितांगका। शालग्रामोद्भवाशस्ता, जातायाचक्रतीर्थके ॥ **प्रतिमास्तत्रैव**:—रत्नजाहेमजाचैव, राजती ताम्रजतथा। रैतिकीपाततथालौही, शैलजाद्रुमजातथा। रैतिकीपित्तलजा—अधमाधमाविज्ञेया मृन्मयीप्रतिमाचया । सर्वकामप्रदाचैव, रत्नजाचोत्तमोत्तमा ॥ **लिंगपुराणे**:—यंत्रंमन्त्रमयंप्रोक्तं मन्त्रात्मादेवतेतिच । यन्त्रंविनाकृतापूजा देवतानप्रसीदति ॥ **ब्रह्मपुराणे**:—जलेस्थलेस्वरेमूर्त्तौ, कुम्भेचाकमलोपरि । **पूजानिर्माल्योद्वासनं हलायुधः**—प्रातःकाले सदाकुर्या न्निर्माल्योद्वासनं बुधः ॥ **वाराहपुराणे**:—उपलेपनंच स्थानस्य प्रातरेवहिशस्यते ॥ **पूजार्थजलमाह भारद्वाजः**—स्वच्छंसुशीतलंस्वादुलघुसत्पात्रपूरितम् ॥ आनीतंसज्जनैर्यत्तत्सलिलं तीर्थजंशुभम् । **गंधानुलेपनं नृसिंह पुराणे**—कुंकुमागुरु श्रीखण्डकर्पूरेणाच्युताकृति । आलिप्यभक्त्या राजेन्द्रकल्पकोटिवसेद्दिवि । **पद्मपुराणे**:—गन्धेभ्यश्चन्दनंपुण्येचन्दनादगुरुर्वरः । कृष्णागुरुस्ततः श्रेष्ठः कुंकुमंतुततोवरम् ॥ कालेयंचतुरश्चैचरक्तंचन्दनमेवच । नृणांभवन्तिदत्तानिपुण्यानिदेवपूजने । **सर्व गंधं गारुडे**—कस्तूरिकायाभागौद्वौचत्वारश्चन्दनस्यतु । कुंकुमस्यत्रयश्चैवशशिनःस्याच्चतुः समम् ॥ **अन्यच्च**—कर्पूरंचन्दनंदर्पः कुंकुमञ्चचतुःसमम् । सर्वगन्धमितिप्रोक्तंसमस्तसुरवल्लभम् ॥ **मङ्गलद्रव्याणिमदनरत्नेस्कान्दे**—हरिद्राकुंकुमञ्चैव सिन्दूरंकज्जलंतथा । कूर्पासकञ्चताम्बूलं मांगल्याभरणंशुभम् ॥ **भद्ररंजन द्रव्याणि**—रजांसिपञ्चवर्णानिमण्डलार्थन्तुकारयेत । शालि-तण्डुलचूर्णेनशुक्लंवायवसम्भवम् । रक्तंकुसुम्भ-सिन्दूर गैरिकादिसमुद्भवं । हरितालोद्भवंपीत हरिद्रासम्भवन्तुवा ॥ कृष्णंदग्धयवैश्चैव हरितंदिव्यपत्रजैः ॥ **कलशप्रमाणं विष्णुधर्मोत्तरे**—हेमराजतताम्रश्चमृण्मयालक्षणान्विता । यात्रोद्वाहप्रतिष्ठासुकुम्भा स्युरभिषेचने ॥ धातुजंमृण्मयं-वापिकलशंयत्नतश्छितं । तद्वत्प्रादेशदीर्घंच चतुरंगुलमुन्नतम् ॥ **सप्तमृद्**—अश्वस्थानाद्गज-स्थानाद्वल्मीकात्सङ्गमा ध्द्रदात्राजद्वाराच्च गोष्ठाच्चमृदमानीयनिक्षिपेत् ॥ **पञ्चरत्नानिस्मृत्यंतरे**:—कनकंकुलिशंनीलंपद्मरागंचमौक्तिकम् । एतानिपञ्चरत्नानिकलशाभ्यंतरेक्षिपेत् ॥ **पञ्चपल्लवा-ब्राह्मे**—अश्वत्थोदुम्बर, प्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः । पञ्चभङ्गाइतिप्रोक्ताःसर्वकर्मसुशोभनाः ॥ **सर्वौषध्य**—कुष्ठंमासीहरिद्रेद्वेमुरशैलेयचन्दनम् । वचाचम्पक मुस्ताचसर्वौषध्योदशस्मृताः ॥ **सप्तधान्यानिषट्त्रिंशन्मते**—यवगोधूमधान्यानितिलाः कङ्गुश्चमुद्गकाः । श्यामाकाश्चणका श्चैवमसप्तधान्यमुदाहृतम् ॥ **अथसर्वकर्मोपयोगी, मुद्रालक्षणानिवदये**—**उक्तञ्चस्मृति-संग्रहे**—अर्चनेजपकालेतुध्यानेकाम्येचकर्मणी । तत्तन्मुद्राप्रयोक्तव्यादेवतासन्निधापकाः ॥ **आवा-हनी**—हस्ताभ्यामञ्जलिंकृत्वाऽनामिकामूलपर्वणोः । अंगुष्ठौनिक्षिपेत्सेयंमुद्रात्वावाहनीस्मृता ॥ १ ॥ **स्थापनी**—अधोमुखी त्वियंचेत्स्या त्स्थापनी मुद्रिकास्मृता ॥ २ ॥ **सन्निधापनी**—उच्छ्रिता-ङ्गुष्ठमुष्ट्योस्तुसंयोगात्सन्निधापनी ॥ ३ ॥ **संरोधिनी**—अन्तः प्रवेशितांगुष्ठा सैवसंरोधिनीमता ॥ ४ ॥ **प्रसादिनी**—उत्तानौतुकरौकृत्वा प्रसार्यहृदयस्थितौ । प्रसादमुद्राविज्ञेया सर्वदेव प्रसा-दिनी ॥ ५ ॥ **अवगुण्ठनमुद्रा**—हस्तौतुसम्मुखौकृत्वा; मुष्टीकृत्वाविकुंचयेत् । तयोरुपरिचां-गुष्ठौ निक्षिपेद्विस्तृतंतथा । अवगुण्ठनमुद्रेयं सर्वकामफलप्रदा ॥ ६ ॥ **सम्मुखमुद्रिका**—मुष्टिद्वय-स्थितांगुष्ठौ सम्मुखौचपरस्परम् । संश्लिष्टावुच्छ्रितौकुर्यात्सेयं सम्मुखमुद्रिका ॥ ७ ॥ **प्रार्थनी**—प्रसृतांगुलिकौहस्तौ, मिथश्लिष्टौच सम्मुखौ । कुर्यात्स्वहृदयेन्येयंमुद्राप्रार्थनसंज्ञिका ॥ ८ ॥ **शङ्ख-**

मुद्रा—समस्तानांदेवतानामेताः शस्तानुपूजनेवामांगुष्ठन्तुसंगृह्य दक्षिणेनतुमुष्टिा। कृत्वोत्तानं तथामुष्टिमंगुष्ठंतुप्रसारयेत्, वामांगुल्यस्तस्थाश्लिष्टाः संयुक्ताः सुप्रसारिताः। दक्षिणांगुष्ठसंस्पृष्टा मुद्रा शंखस्यचोदिता॥ ९॥ **नाराचमुद्रा**—अंगुष्ठतर्जन्यग्राभ्यां सव्येनाराचमुद्रिका॥ १०॥ **योनिमुद्राः—मिथः**—कनिष्ठकेवध्यातर्जनीभ्यामनामिके। अनामिकोर्ध्वगश्लिष्टदीर्घमध्यमयोरधः अंगुष्ठाग्रद्वयंन्यस्येद्योनिमुद्रेय मीरिता॥ ११॥ **गरुडमुद्रा**—हस्तौतुसम्मुखौकृत्वा, ग्रथयित्वा कनिष्ठके। मिथस्तर्जनि केश्लिष्टे, श्लिष्टावंगुष्ठकौतथा। मध्यमानामिकेद्वेतुद्वौपक्षाविवकुञ्चयेत्। एषागरुडमुद्राख्या, दशेषविषनाशिनी॥ **धेनुमुद्रा**—हस्तद्वयेरधोचक्रे सम्मुखेचपरस्परम्। वामांगुली दक्षिणस्यचांगुलीनांहि सन्धिषु। प्रदर्श्यमध्यमाभ्यान्तुतर्जन्यौद्वेप्रयोजयेत्। कनिष्ठेद्वेऽनामिकाभ्यां युञ्ज्यात्साधेनु मुद्रिका॥ **विसर्जनीमुद्रा**—आवाहने तुयामुद्रासैवोक्तातुविसर्जने॥ **लक्ष्मी मुद्रा**—पद्माकारौकरौकुर्यां दूर्ध्वाग्रौकर्णसम्मितौ, ध्यायेद्देवीवदात्मानं लक्ष्मी मुद्रेयमुच्यते। एतादेव्याः प्रयत्नेन मुद्राराशीः प्रदर्शयेत्।, **सप्तजिह्वाख्यमुद्रा**—मणिबंधे स्थितौकृत्वा प्रसृतांगुलिकौ करौ। कनिष्ठांगुष्ठयुगलेमिलित्वान्तः प्रसारयेत्। सप्तजिह्वाख्यमुद्रेयं वैश्वानर वंशकरी॥ **दुर्गामुद्रा**—मुष्टिंकृत्वाकराभ्यांच वामस्योपरिदक्षिणम्। कृत्वाशिरसिसायुज्याद्दुर्गामुद्रेय मीरिता॥ **नमस्कारमुद्रा**—स्पर्शयेद्वाम हस्ताग्रंवाम हस्तस्यमूलतः। दक्षिणेननमस्कारमुद्रा शेषाप्रकीर्तिता॥ **इति कर्ममुद्रा लक्षणानि**॥

पूजापात्रस्थापनक्रमः पुष्पसारसुधानिधौ—अर्घ्यपात्रंतुवायव्येनैर्ऋत्यांपाद्यपात्रकम्। आग्नेय्यांस्नानकलशं मैशेत्वाचमनीयकम्। मध्येतुमधुपर्कस्या दित्येतत्पात्रलक्षणम्॥ कर्मपात्रंसम्मुखेच तद्दक्षेगंधपात्रकम्। कर्मपात्रस्य वामेतुस्थापये भाद्रघंटिकाम्॥ कर्मपात्राग्रतः शंखंत्रिपद्युपरिस्थापयेत्॥ पत्रपुष्पोपकरणं यथास्थानेतु स्थापयेत। धूपदीपेच द्वेपात्रे कर्मपात्रस्यदक्षिणे, नैवेद्यंक्रमशश्चैवदेवता दक्षिणेन्यसेत्। **पाद्यपात्रेप्रक्षेपणीय द्रव्याणि रत्नप्रकाशे**—पद्मंचविष्णुपर्णांच दूर्वांश्यामाकमेवच, । चत्वारि पाद्यद्रव्याणि लब्धंवापि समाचरेत्। **अर्घ्यद्रव्याणि तत्रैव**—कुशाक्षततिलव्रीहि यवमाष प्रियंगुभिः। सिध्यार्थक समायुक्तमर्घ्यस्यात्तु विशेषत :॥ **सामान्यार्घ्यः**—रक्तबिल्वदलैः पुष्पैर्दधिदूर्वांकुशैस्तिलैः। सामान्यःसर्वदेवानामर्घ्योयंपरिकीर्तितः। अलाभेदधिदूर्वादेर्मनसापि विचिंतयेत्। **अष्टांगार्घ्यम्**—आप-क्षीरंकुशाग्राणि, दधिसर्पिर्क्षतंडुला। यवसिध्दार्थकाश्चैवअष्टांगोर्घः प्रकीर्तितः॥ **आगमेतु**—शंखेकृत्वातुपानीयंगधपुष्पाक्षतान्वितम्। अर्घंददातिदेवस्यससागर धराफलम्॥ **मधुपर्कम्**...इक्षुर्मधुघृतंचैव पयोदधिसहैवतु। प्रस्थप्रमाणावामात्रंमधुपर्कमिहोच्यते॥ **आचमनीयम्**— एलालवंगौशीरंच कंक्कोलंच चतुर्थकम्। आचमनीयंविज्ञेयंयथालाभंप्रयत्नया॥ **स्नानद्रव्याणि नृसिंहपुराणे**—क्षीरेणपूर्वंकुर्वीतदध्नापश्चाद्घृतेनच। मधुनाचाथखंडेन (शर्करया) क्रमोह्येयोविचक्षणैः॥ प्रत्येकद्रव्यस्नानन्तेजलेनैवतु स्नापयेत॥ **सर्व स्नानांते शंखतोयेनस्नानस्कान्दे**—शंखेकृत्वातुपानीयंशाक्षतं कुसुमान्वितं॥ स्नापयेद्देवदेवेशंजीवन्मुक्तोभवेद्दिसः॥ **पूजासमये वाद्दिवाणांध्वनिः स्कांदे**—वादित्राणामभावेतु पूजाकालेचसर्वदा। घंटाशब्दोनरे. कार्यः सर्ववाद्यमयोमतः॥ **वस्त्रेण आर्द्रगात्र मार्जनम्**—विष्णुस्नानार्द्रगात्रन्तु वस्त्रेणपरिमार्जयेत्॥ **वस्त्रमाह भारद्वाजः**—नेत्रप्रियाणिसूक्ष्माणि नूतनानि घनानिच। न्यायागतानि वस्त्राणि प्रशस्तानि भवन्तिहि। **अदेयवस्त्राणि**-

बौधायनः—आखुदष्टानिदग्धानि जीर्णान्यग्नैधूतानिच । कृमिदष्टानिशीर्णानि स्थूलान्युपहृतां-नेच । दुष्कर्मसुप्रयुक्तानिदेवायनैवचार्पयेत् । **यज्ञोपवीतम्**—त्रिवृच्छुक्लंचपीतश्च पट्टसूत्रादि निर्मितम् । यज्ञोपवीतं देयेचदत्त्वायेदान्तगोभवेत् । **भूषणानि नन्दिपुराणे**—स्वर्णारत्नादेव-देवेशं भूषणैर्भूषयन्तिये । स्वर्गंतियांतितेभक्ता यावदिन्द्राश्चतुर्दश: ॥ **चन्दनंवामनपुराणे**—सुगन्धैश्चसुरामांसिकर्पूरागुरुचन्दनैः । तथान्यैश्चशुभैर्द्रव्यैरर्चयेद्दयताद्विजः ॥ **तत्रादौ विष्णुप्रिय पुष्पाणिवदये**—पाद्मे-तुलसीकृष्णगौराच तयाभ्यर्च्यजनार्दनम् । नरोयातितसुंत्यपत्वा वैष्णवीं शाश्वतींगतिम् । अस्नात्वातुलसींछित्वासोपनत्कस्तथैवच । सयातिनरकेघोरे यावदाभूतसम्प्लवम् ॥ **दुर्वातुलस्योश्च्छेदनवर्जितं विष्णुधर्मोत्तरे**—रविवारंविनादूर्वां तुलसींद्वादशींविना । जीवितस्याविनाशाय प्रविचिन्वीतधर्मवित् । संक्रान्तावर्कपक्षान्ते द्वादश्यांनिशिसन्धयोः ॥ यैश्छिन्नंतुलसीपत्रंतेश्छिन्नोहरिमस्तकः । **पादुमेविशेषः**—देवार्थेतुलसीछेदो होमार्थेसमिध-स्तथा । इन्दुक्षयेनदुष्येत गवार्थेतुतृणस्यच ॥ **वलिप्रतिप्रह्लादोक्त पुष्पाणिवामनपुराणे**—तान्येवचप्रशस्तानिकुसुमानिमहासुर । यानिस्युर्वर्णयुक्तानिरसगन्धयुतानिच ॥ **अग्निपुराणे**—विल्वपत्रं शमीपत्रं पत्रं भृङ्गरजस्यच । पत्रं दमन वृक्षस्य हरेस्तुष्टिकरंपरम् ॥ **मणिहेमादि-निर्मितपुष्पाणि तत्त्वसागरे नारदोक्तानि**—मणिरत्नसुवर्णादि निर्मितं कुसुमोत्तमम् । तत्परं कुसुमं प्रोक्त मपरं चित्रवस्त्रजम् ॥ उत्तमं वृक्षजं पुष्प मधमं फलरूपकम् । अधमं कुसुमं प्रोक्तं पत्रिका जातमेववा । पराणा मपराणांच निर्माल्यत्वं नविद्यते । स्वर्णपुष्पेण चैवेन पूज्य-मुक्तिमवाप्नुयात् । किंपुनर्रत्नमुक्तादि खचितं स्वर्ण पुष्पकम् । आरोप्यप्रतिमा मूर्ध्निपूजायाः सिद्धिभाग्भवेत् ॥ **निर्माल्यलक्षणम्**—नारद उवाच—निर्माल्यंद्विविधं प्रोक्तमुत्सृष्टंघ्रातमेवच । मन्त्रेणविधिनादत्तं देवायोत्सृष्टमेवतत् ॥ न क्रियान्तरयोग्यं तत्सर्वथा त्याज्यमेवच । घ्रातपुष्प फलंसिध्ये दर्पंतन्मनसान्यथा ॥ **देवार्चने वर्ज्यपुष्पाणि**—स्वयपतित पुष्पाणि कालातीतानि चैवहि । कृपाश्रान्तर संस्थानि, कुत्सित स्थान जानिच । वन्हिकीटानिचान्यानि विशोभान्य-शुभानिवै ॥ एवंविधानि पुष्पाणि त्याज्यान्येवविचक्षणे । **विष्णुधर्मे**—नशुक्लैः पूजयेद्देवं कुसुमैर्नमहीगते । नार्कनोन्मत्तककांची तथैवगिरिकर्णिकां ॥ नकण्टकारिका पुष्पमच्युताय निवेदयेत् । करानीतं पटानीत मानीतं चाकपत्रवे, एरण्डपत्रेप्यानीतं तत्पुष्पंपरिवर्जयेत् । देवोपरि धृतंयच्चवामहस्तेच यद्धृतम् । अधोवस्त्रधृतंयच्च तत्पुष्पं परिवर्जयेत् ॥ **अथदेवी प्रियपुष्पाणि देवीपुराणे**—उक्तानुक्तैस्तथापुष्पैर्जलजैस्थल सम्भवैः । पत्रै पुष्पैर्यथालाभम् सर्वौषधिसमन्वितैः । धान्यानां सर्वपत्रैश्च पुष्पैश्चैव प्रपूजयेत् । शुभंवाप्यशुभंवापि फलपुष्पं निवेदयेत्—॥ भक्त्यानिवेदयेत्सर्वंनाशुभंकिंचिदाप्नुयात् ॥ **क्वचित्**—नार्चयेद्दूर्वयादुर्गाम् ॥ **पद्मपुराणे**—गृह्णातितुलसीं शुष्कामपि पर्युषितां प्रभुः । वर्ज्यंपर्युषितंपत्रं वर्ज्यंपर्युषितंजलम् । नवर्ज्यंजान्हवीतोयं नवर्ज्यं तुलसीदलम् ॥ करवीरार्कपुष्पैश्च शांशपैश्चापराजितैः । सितपीतै-स्तथारक्तः कृष्णैश्चैव चतुर्विधैः । लताभिर्श्चाम्रवृक्षस्य, दूर्वांकुरै सकोमलै । मञ्जरीभि कुशा-नांच विल्वपत्रैः सुशोभनैः ॥ **अथ सूर्यप्रियपुष्पाणि—भविष्यपुराणे**—पुष्पैररण्यसम्भूतैः पत्रैर्वागिरि- सम्भवैः । अपर्युषित निश्छिद्रैः प्रोक्षितैर्जन्तुवर्जितैः ॥ आत्मारामोद्भवैर्वापि भक्त्या सम्पूजयेद्रविम् । **अथ शिवप्रियपुष्पाणि—नारदः**—विष्णोर्यानीह चोक्तानि

पुष्पाण्यपिचपत्रिका । केतकीपुष्पमेकन्तु विनातान्यखिलान्यपि । शस्तान्येवसुरश्रेष्ठ शङ्करा-राधनेपिहि । धत्तूरकेणयोलिंग सकृत्पूजयतेनर । सगोलक्षफलप्राप्य शिवलोके महीयते । बिल्वपत्रसहस्रेभ्यो द्रोणपुष्पं विशिष्यते । सर्वासांपुष्पजातीनां प्रवरनीलमुत्तमम् । (नीलकमल कैलासजं) **स्कन्दपुराणे**—चतुराणापुष्पजातीनां गन्धमाघ्रातिशङ्कर । अर्कस्यकरवीरस्य बिल्वस्यचवकस्यच । लिङ्गपूरन्तुय कुर्यान्ममदेवि दृढव्रत । शतवर्ष सहस्राणि दिव्यानि दिविमोदते । **बृहन्नारदीये**—तुलसीदलमालाभि कुर्यात्पूजाशिवस्यय । गवांकोटिप्रदानेन यत्फलतल्लमेन्नर । ॐ नम शिवायेतिमन्त्रेण । योनर पूजयेच्छिवम् ॥ अखण्ड बिल्व पत्रैश्च शिवसायुज्य माप्नुयात् । विशेषस्तत्रतत्र प्रमाणग्रन्थेषुद्रष्टव्य धूपदीपनैवेद्यादि विषय प्रधानत्वान्नसंग्रहीत ॥ **इति पूर्वाङ्ग कर्मबोधिनी परिभाषा ॥**

अथ संस्कार कर्माङ्गबोधिनी परिभाषा माह—तत्रादौस्नातस्यैव कर्माधिकार । **दानचन्द्रिकायां वाराहे**—सुस्नात सम्यगाचान्त कृतसन्ध्यादिकक्रिय । काम क्रोध विहीनश्च पाखण्डस्पर्शवर्जित ॥ जितेन्द्रिय सत्यवादी सर्वकर्मसुशस्यते ॥ तत्रादौस्नानविचार-**मार्कण्डेयपुराणे**—प्राङ्मुखोदङ्मुखोवापिश्मश्रु कर्मचकारयेत् । व्रतबन्धे विवाहेच संस्कार्य स्यचयत्नत । **मंगलस्नानं परशुराम रुद्रपद्धतौ**—तत स्वगृहमागत्य मङ्गलस्नानमा चरेत् । सर्वौषधीगन्धचूर्णयुक्तै कृष्णतिलामलै ॥ उद्वर्त्याङ्गानितैलेन चम्पकादि सुगन्धिना । मांगल्ये मङ्गलस्नान कुर्वीत ब्राह्मणै सह । (यजमानस्य नतु ब्राह्मणस्य) **निर्णयसिन्धौ कात्यायन**—मांगल्य विद्यतेस्नान वृद्धिपूर्वात्सवेषुच ॥ स्नेहिद्रव्य समायुक्त मध्यान्हाप्रश्च दिष्यते ॥ **वशिष्ठसंहितायाम्**—कर्मादौमन्त्र संयुक्त मङ्गलस्नानमाचरेत । दिव्याभरण वासो भिरलङ्कृत्यतत शुचि । विवाहादि दिनेप्राप्ते तत्कर्त्राभार्ययासह । कुलदेवादिसम्प्रीत्यै ब्राह्मणाश्च सुवासिनी स्नापयित्वासकन्येन स्नातव्य ससुतेनच । परिधायाऽहत वस्त्र द्विपटोश्च स्त्र्यपिद्वयम् । **वस्त्रपरिधानमाहमनु** —खण्ड वस्त्रावृतश्चैव वस्त्राधोलम्बितस्तथा । उत्तरीयव्यपेतश्च तत्कृत निष्फलभवेत । **गौतम** —एकवस्त्रोनभुञ्जीतश्रौतेस्मार्तेच कर्मणी । नकुर्याद्देवकार्याणि दान होमजप तथा । **विधान पारिजातके**—एक वस्त्रातुयारी मुक्तकेशा व्यवस्थिता । नसाधिकारि णीज्ञेया श्रौतेस्मार्तच कर्मणि । **प्रयोगपारिजातके**—संस्कार्य पुरुषोवापि स्त्रीवादक्षिणत सदा । संस्कारकर्त्ता सर्वत्र तिष्ठे दुत्तरत सदा । **पत्न्युपवेशने विचार धर्मप्रवृत्तौ**—जातके नामकेचैव ह्यन्नप्राशन कर्मणि । तथानिष्क्रमणेचैव पत्नीपुनच दक्षिणे । गर्भाधाने पुंसवने सीमन्तो नयनेतथा । वधूप्रवेशनेचैव पुन सन्धान एवच । प्रदानेमधुपर्कस्य कन्या-दाने तथैवच । कर्मस्वेतेषुवैभार्या दक्षिणे तूपवेशयेत् ॥ **स्मृतिसंग्रहे**—व्रतबन्धे विवाहेच चतुर्थ्यासहभोजन । व्रतेदानेमखे श्राद्धे-पत्नी तिष्ठति दक्षिणे । **धर्मप्रवृत्तौ**—आशीर्वादे ऽभिषेकेच पादप्रक्षालने तथा । शयने भोजनेचैव पत्नीतूत्तरतोभवेत् । **कर्मादौ तिलक विचारः मदनपारिजातके**—मङ्गल तिलक कुर्यात्सिन्दूरादेविचक्षण । श्याम (अगर कस्तूरीभ्यां) शान्तिकर प्रोक्त रक्त वश्यकरस्तथा ॥ श्रीकर पीतमित्याहु श्वेत मोक्ष प्रदायकम् ॥ इतिकामानामेदेनकुर्यात् ॥ **मांगल्ये वर्ज्यतिलकमाह आचार रत्ने**—श्राद्धे सूतकेचैव विवाहे पुनर्जन्मनि । मांगल्येषुच सर्वेषुनधार्यं गोपिचन्दनम् । **सर्वकर्मादौ देव**

पूजन विचारः, रुद्रकल्पद्रुमे—गणेशः सर्वदेवाना मादौपूज्यः सदैवहि। सर्वैरपि महाविघ्न नाशकोन्यो नविद्यते॥ **विशेषस्तत्रतत्र कर्मपरिभाषासुद्रष्टव्यः॥ अथचद्विजानां वेदाध्ययनमाह याज्ञवल्क्यः**—यज्ञानां तपसांचैव शुभानांचैव कर्मणां। वेदएव द्विजातीनां निःश्रेयसकरं परम्॥ **व्यासः**—श्रुतिस्मृतिश्च विप्राणां नयने द्वे विनिर्मिते॥ एकेन विकलः काणो द्वाभ्यामंधः प्रकीर्तितः॥ **अत्रिः**—वेदाः प्रमाणं स्मृतयः प्रमाणं, धर्मार्थयुक्तं वचनं प्रमाणं। अतः अयंयत्रभवेत्प्रमाणं तद्वाक्ययुक्तं कुरुतत्प्रमाणम्। वेदज्ञांपिब्राह्मणं ऋषिछन्दादीनिस्मरेत्॥ **मदनरत्ने याज्ञवल्क्यः**—आर्षंछन्दश्चदैवत्यं विनियोगस्तथैवच वेदितव्यं प्रयत्नेन, ब्राह्मणेन विशेषतः॥ अविदित्वातुयःकुर्यात् यजनाध्ययनंजपम्। होममन्तर्जलादीनि तस्यचाल्प फलं भवेत्॥ **ऋष्यादीना मुच्चारणे फलम्**—यश्चजानाति तत्वेनआर्षं छन्दश्च दैवतं। विनियोगं ब्राह्मणंच मन्त्रार्थं ज्ञानमेवच। एकैकस्य ऋषेः सोपिवन्द्योह्य तिथिवद् भवेत्। देवतायाश्च सायुज्यं गच्छत्यत्रनसंशयः। पूर्वोक्तेनप्रकारेण ऋष्यादीन्वेत्तियोद्विज.। अधिकारो भवेत्तस्य रहस्यादिषु कर्मसु॥ **आर्षछन्दोदैवत निर्वचनम्**—येनयदृषिणादृष्टं सिद्धिः प्राप्ताचयेनवै। मन्त्रेण तस्यतत्प्रोक्तमृषेर्भावस्तदार्षकम्। **छन्दोलक्षणम्**—छादनाच्छन्द उद्दिष्टं वाससी इवचाकृतेः। आत्मासंछादितो देवैर्मृत्योर्भातैस्तुवैपुरा॥ आदित्यैर्वसुभी रुद्रैस्तेनछन्दांसितानिवै॥ **देवता लक्षणं मन्त्रस्य**—यस्ययस्यतुमन्त्रस्य उद्दिष्टा देवतातुया तदाकारं भवेत्तस्य दैवत्वं देवतोच्यते। **मन्त्रस्य विनियोग लक्षणम्**—पुराकल्पे समुत्पन्ना मन्त्राः कर्मार्थ मेवच। अनेनचेदं कर्त्तव्यं विनियोग. सउच्यते। तेरुक्तं यत्रमन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम्। **ब्राह्मणम्**—प्रतिष्टानंस्तुतिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते। एवं पञ्चविधंयोगं जपकालेह्यनुस्मरेत। होमेचान्तर्जलेयोगे स्वाध्याये यजनेतथा। **एवं सर्वानुक्रम सूत्रे कात्यायन**—ऋषिदैवतच्छन्दांस्यनुक्रमिष्याम॥ इतिप्रक्रम्याह-एतान्यविदित्वा योधीतेनब्रूते जपति जुहोति यजते याजतेवा तस्य ब्रह्म निर्वीर्यं यातयामंभवत्यथान्तराश्व गर्त्तंवाऽऽपद्यते वर्च्छंति प्रमीयतेवा पापीयान्भवत्यथ विज्ञायैतानि, योधीते-तस्य वीर्यवत्तरम्भवति। जपतिहुत्वेष्ट्वा तत्फलेन युज्यते। अन्यत्रापि यत्रैकस्याक्रियायात्यनेक मन्त्राणां विनियोगस्तत्राप्येवमेव, यथा रुद्रजपाभिषेकादौ,, एवं पञ्चविधंयोगमिति ब्राह्मणान्तर्भावेन पञ्चविधत्वं प्रकारान्तरमधिक फलार्थंवा॥ **आचारादर्शे वाचस्पतिः**—इदंचऋष्यादिस्मरणं यत्रमन्त्रे प्रामाणिकं तत. प्राक्प्रयोगएव कर्त्तव्यम्। **आर्षादिविकल्पम्**—इदंचऋष्यादि ज्ञानं वैकल्पिकम्। एतान्य विदित्वेत्युपक्रम्य तस्य ब्रह्मनिर्वीर्ययातयामं भवतीत्युक्तत्वात्। अथविज्ञायैतानियोधीते तस्य वीर्यवदित्युक्तेः सर्वमेतच्छन्दो देवतार्षंच विज्ञाय यत्किञ्चिज्जपहोमादिकरोति सतस्यफलमश्नुते। **इति वैद्यनाथः, कृष्णभट्टीयेतु**—नचस्मरे दृषिरछन्दः श्राद्धेवैतानिकेमखे। अग्निहोत्रे वैश्वदेवे विवाहादि विधौतथा॥

अथच प्रसङ्गवसाद्वैदिक मन्त्राणां मुच्चारणार्थं संक्षेपेण प्रतिज्ञासूत्रादिकं शिक्षांच व्याख्यायते—अथप्रतिज्ञा १ अथश्रौतस्मार्त्त सूत्रकथनानंतरं प्रातिशाख्यसूत्रकथनानन्तरंच, प्रतिज्ञाव्यवहारजन्यज्ञानविषयोर्थः, विधास्यते। स्वरसंस्कारयोश्छन्दसिनियमात्तद्ज्ञानार्थलक्षणमाह॥ **(मंत्रब्राह्मणयोर्वेद नामधेयम्) २** मन्त्रश्चइषेत्वादिः,ब्राह्मणंचअतमुपेष्य-

भित्यादि । तयोर्वेदसंज्ञेत्यर्थः ॥ (तस्मिंछुक्लेयाजुषाम्नायेमाध्यंदिनीयके मन्त्रेस्वर-प्रक्रिया) ३ तस्मिनेतावन्मात्रोक्तौ अन्यशाखायामतिप्रसङ्ग.स्यादत आह—शुक्लेइत्यादिकृष्णय जुषोव्यावृत्त्यर्थशुक्लग्रहणम् । यजु वेंदोक्ताना मृचामपिवक्ष्यमाण स्वरसंस्कारसिध्यर्थ माम्नाय-पदोपादानम् । अन्यथा यजुर्लक्षणाक्रान्ता नामनियत परिमाणानामेव । इषेत्वादिमन्त्राणां ग्रहणंस्यात् । मतुपादसंव्वद्धानामग्निमूर्द्धेत्यादिनाम् ॥ कण्वशाखाव्यावृत्यर्थमाह—शुक्लेमाध्यं-दिनीयके इति ॥ कण्वशाखा हिनमाध्यंदिनप्रोक्तेति नतत्रातिप्रसङ्गः । ब्राह्मणेतू दात्तानुदात्तौ भाषिकस्वारौ । इत्यनेन ब्राह्मणे विशेषरूपेणस्वरस्यवक्ष्यमाणत्वात् माध्यंदिनीयकेमन्त्रेइति ॥ स्वरप्रक्रया स्वराणामुदात्तादीनां प्रक्रयाप्रयोगः कथ्यतेइतिशेष. । उच्चैरुदात्तः—इत्यादिभिरा-रम्भ. ॥ याज्ञवल्क्य.—समुच्चारयेद्वर्णान्हस्तेनचमुखेनच । स्वरश्चैवतुहस्तश्च द्वावेतौयुगपत्-स्थितौ ॥ हस्तभ्रष्ट.स्वरोभ्रष्टो नवेदफलमश्नुते ॥ यथावाणी तथापाणी रिक्तंतु परिवर्जयेत् । यत्रयत्र स्थितावाणी पाणीस्तत्रैवतिष्ठति । उत्तानंसोन्नतं किंचित्सुव्यक्तांगुलिरञ्जितम् ॥ स्वर-विद्धं करंकुर्यात्प्रादेशोद्दिशगामिनम् ॥ स्वरिते त्र्यंगुलंविद्यान्निपातेतुषडंगुलं । उत्थानेतु नवांगुल्य मेतत्स्वारस्यलक्षणम् । (हृद्यनुदात्तः) ४ सामीप्येसप्तमी हृदयसमीपेहस्तेनानुदात्तः प्रदर्शनीयः । अनुदात्तोच्चारणवेलायां हृदयसमीपे हस्तस्थापनं कर्त्तव्यम् इतियावत् ॥ यद्यपि प्रातिशाख्ये हस्तेनते, इति सामान्येनोक्तम् तथापिदक्षिण एवहस्तोग्राह्यः ॥ कात्यायनः—यत्रोपदिश्यतेतिपूर्वोक्तः ॥ (मूर्ध्न्युदात्त.) ५ मूर्ध्निमुखप्रदेशेउदात्तः प्रदर्शनीय । मुख-स्यापिमस्तका वयवत्वप्रसिद्धे., निष्कृष्टार्थ पूर्ववत् । (श्रुतिमूलेस्वरितः) ६ दक्षिण कर्णमूले स्वरितः प्रदर्शनीयइत्यर्थ. । क्रमेणैषामुदाहरणानि वायवस्थेत्यत्रपूर्ववकारोत्तराऽऽकारो ऽनुदात्तः यकारोत्तराकारउदात्त. । उत्तरवकारोत्तराकार स्वरितः । एवंजात्यादयोऽभिहिता) ७ यथाप्रचयस्यस्वरितभेदस्य प्रातिशाख्येऽभिधानम् । एवं जात्यादयोपिस्वरितभेदास्तत्रैवाभिहिताः (ब्राह्मणेतूदात्तानुदात्तौ भाषिकस्वारौ) ८ ब्राह्मणेपूर्वोक्ते ब्रतमुपैष्यमित्यादिभागेतु-उदात्तानुदात्तौभाषिक लक्षणलक्षितौ स्वरावेवस्वारौ, स्वार्थेअण । तेनस्वरितस्यव्यावृतिः । हृदिमूर्ध्निचभवते, इति अनुवृत्यालभ्यते । (तानिस्वराणि छन्दोवत्सूत्राणि) ९ सूत्राणि, कल्पाः, अथातोऽधिकार इत्यादयः शृंगग्राहिकन्यायेन अन्यान्यपि शिक्षादीनि वेदाङ्गानि छन्दोवच्छन्दसातुल्यानि भवन्तिस्वर संस्कारनियमेइतिशेष.—उदात्तादिस्वर बाधनार्थतानस्वरा-णीति । तान एकश्रुतिः स्वरोयेषांतानितथाच तत्रनोदात्तादिप्रवृत्तिरितिभावः ॥ इति प्रथमा कण्डिका ॥ (अथान्तस्थानामाद्यस्य, पदादिस्थस्यान्यहलसंयुक्तस्य, संयुक्तस्या-पिरेफोष्मान्त्याभ्यामृकारेणचा विशेषेणादिमध्यावसानेपूच्चारे जकारोच्चारणम्) १ अथ स्वरनिरूपणानन्तरंसंस्कार प्रक्रयाउच्यते । इतिशेषः । अन्तस्थानां, य, र, ल, व, वर्णानां आद्यस्य यकारस्य पदादौ विद्यमानस्य जकारोच्चारणम् इत्युत्तरेणान्वयः कर्त्तव्य इति शेषः । यथा—युंजानः प्रथमम् । इत्यादौ पदादिस्थस्येत्युक्त्या, धिय. इत्यादौ नातिप्रसङ्गः ॥ तस्माद्यज्ञादित्यादावतिप्रसङ्ग वारणायाह । अन्येइति—अन्येनहलाऽसंयुक्तस्य संयोगमप्राप्त-स्येत्यर्थः ॥ घृताचीर्यन्तुहर्यतेत्यादौपदादिस्थाभावा ज्जकारोच्चारणं नस्यादतस्तत्रापुनर्विशिनष्टि हलसंयुक्तस्यापीति । रेफोष्माणः [illegible] ऊष्मणामन्त्योहकारः, ताभ्यां युक्तस्यापि यकारस्य जकारो-

च्चारणम्भवति ॥ तथाच पूर्वोदाहरणेपितत्सिद्धिः । अत्रापि विशेषणआदिमध्यावसानेषु इति सम्बध्यते । तेन-घृताचीर्यन्तुहर्यत । सूर्यंषडा, इत्यादिषुसर्वत्रजकारोच्चारणंभवति । कृणुत-ध्वरम् । गेह्यायच, महांपेदांभूया । इत्यादीनिहकारयोगो दाहरणानि ज्ञेयानि , अन्य हलसंयुक्तस्येतिकाकाक्षिगोलकन्यायेन । अत्रापिसम्बध्यते, तेन—अग्निर्ज्योतिरित्यादौनातिप्रसङ्गः । ऋकारेणसंयुक्तस्यापि जकारोच्चारण मविशेषेण । अत्रअन्यहलसंयुक्तस्येति, नसम्बध्यते । रैफोष्मांत्याभ्यां पृथक्पाठसामर्थ्यात् । तेन—सदोऽस्यृतस्येत्यत्र राकारयोगेपि जकारोच्चारणं सिध्यते । (**द्विर्भावेप्येवम्**) २ धाप्प्याइत्यादौजकारोच्चारणसिद्धये इदम् । **अथापरांतस्थस्यायुक्तान्यहलः संयुक्तस्योष्म ऋकारे रेकारसहितो च्चारणम् ।**) ३ अथ—आद्यान्तस्थादेशकथनान्तरं अपरान्तस्थस्यरेफस्यअयुक्तः, योगमप्राप्तः, अन्यहलयस्मिन्तादृशस्यऊष्मभिः ऋकारेण वायुक्तस्य, एकारसहितोच्चारणं कर्त्तव्यमितिशेषः पूर्ववत्, यथादर्शत मित्यत्र,, दरेशतमितिपाठः, नतुरेफमात्रघटित., एवं, वर्षा, वर्षीयसि, बर्हिरसि ॥ इत्यादावपि बोध्यम् । वर्ष्यायच, यज्ञपतिह्वार्षीत् । इत्यादावन्यहलः यकारस्य मकारस्य वासंयोगात्र एकार सहितोच्चारणम् । (**एवं तृतीयान्तस्थस्यक्वचित्**) ४ । तृतीयान्तस्थस्य लकारस्यापि क्वचिल्लक्ष्यानुरोधेन एकारसहितोच्चारणम् । यथा—शतवल्शा विरोहतात् ॥ इत्यादौ शतवलेशा इतिपाठः (**ऋकारस्यतु संयुक्ता संयुक्तस्या विशेषेण सर्वत्रैवम्**) ५। एकारसहितो च्चारणा देश प्रसंगादिदम् । संयुक्ता संयुक्तस्य अविशेषेण सर्वत्र–आदिमध्यावसानेषु एकार सहितोच्चारणम् । ऋताषाड्, ऋजप्रशस्त, कृणुहि, सामान्यृभिरित्या दीन्युदाहरणानिबोध्यानि (अथान्त्य स्यान्तस्थानां पदादि मध्यान्तस्थस्य त्रिविधम् गुरुमध्यमं लघु वृत्तिभिरुच्चारणम्) ६ । अथ तृतीयान्तस्थादेश कथनानन्तरं, अंतस्थानामन्त्यस्य वकारस्यत्रिविधं, त्रिप्रकारं गुरुमध्यम लघुवृत्तिभिरुच्चारणं कर्त्तव्य मित्युच्यते । एतच्चपदादिक्र मेणज्ञेयम् । तदुक्तमन्यत्र—वकारस्त्रिविधोज्ञेयो गुरुर्लघुर्लघुतरः । आदिगुरुः, मध्येलघुः, पदान्तेचलघुतरः ॥ इति, यथा व्यायवस्थ, सविता, देवोवः । इत्यादि ॥ (**अथो–मूर्द्धन्योष्मणो ऽ संयुक्तस्य च खकारोच्चारणम्**) ७ ॥ अथो—अन्तस्थादेश कथनान्तरं मूर्द्धन्योष्मणः, षकारस्य असंयुक्तस्यटुं, टवर्ग योगं विना संयुक्तस्यच खकारोच्चारण कर्त्तव्यमित्युपदिश्यते, यथा–सहस्रशीर्षा,, सहस्र शीर्षा, पुरुषः, विभर्ष्यस्तवे, शष्प्यायचेत्यादौ खकारोच्चारणं कर्त्तव्यम् । टवर्गयोगेतु–प्रत्युष्टं, कृष्णोसि, श्रेष्ठतमायेत्यादौतुखकारोच्चारणं नभवति । (**अध्ययनादि कर्मस्वथवेलायां प्रकृत्या**) ८ ॥ एतेपूर्वोक्ताः स्वराः संस्काराश्च अध्ययनादि कर्मस्वेवेति नियम्यते । अध्ययनादीति आदिना यजनयाजनाध्यापनादि परिग्रहः । मन्त्रार्थ वेलायान्तु प्रकृत्या रूपेणैवोच्चारणम् ॥

इति द्वितीयकण्डिका २ ॥ (अथानुस्वारस्य ऽं॰ इत्यादेशः श, ष, स, ह, रेफेषु तस्यत्रैविध्यमाख्यातं ह्रस्व दीर्घ गुरुभेदैः ॥ दीर्घात्परो ह्रस्वो ह्रस्वात्परो दीर्घो गुरौपरेगुरुः परसवर्णेपत्प्रकृत्याचान्यत्र) १ ॥ अथ ऊष्मादेशोपदेशानन्तरं .श, ष, स, ह, रेफेषुपरेषु वर्णेषुपरेषु, अनुस्वारस्यस्थाने ऽं॰ इत्यादेशः । तस्य ऽं॰ कारस्य त्रैविध्यं ह्रस्व दीर्घ गुरुभेदैः । ह्रस्वादेकमात्रकात्परोदीर्घः । दीर्घाद्द्विमात्रकात्परो ह्रस्वः । गुरौ संयुक्ताक्षरेपरेगुरुर्बोध्यः । यद्यपि दीर्घोपि गुरुर्भवति तथापि संयोगेपरे

ह्रस्वस्यापि गुरुसंज्ञाविधानात् । ह्रस्वात्परस्यापि संयोगेपरे गुरुत्व विधानात्ततोविशेषः। यथा—त्रि ट० शब्दमित्यादौ ह्रस्वात्परोदीर्घः । पृथिव्या ॐ शतेनपाशै रित्यादौ दीर्घात्परो ह्रस्व । कल्पन्ता ॐ श्रोत्रम् । सोमान ट० स्वरणम् । इत्यादौ संयोगेपरे ह्रस्वाद्दीर्घाचपरो गुरुः । अन्यत्रशषसहरेफपरत्वाभावे, परा अनुस्वारात्परा तत्सवर्णीया ईषत्प्रकृतिः, तया उच्चारणम् । अर्थात्परत्र विद्यमान वर्ण वर्गीय पञ्चमवर्ण सदृशमुच्चारणम् कर्त्तव्यमिति फलति **(विसर्गेष्वीषद्विरामः) २।** विसर्गेषु अः, इत्यादिषु ईषद्विरामः, किंचिद्विरम्यते,, विसर्गस्य स्पष्टोच्चारणार्थं॥ **(पदाद्यस्या संयुताकारस्येषद्दीर्घताच भवतीषद्दीर्घताच भवति)२।** *पदादौ विद्यमानस्या संयुक्तस्य व्यञ्जनरहितस्य अकारस्येषद्दीर्घताच भवति । अश्मन्नूर्ज-* मित्यत्र शकारात्पूर्वः, अकारः । इषद्दीर्घोनभवति संयुक्तत्वात् । पदादौ विद्यमानस्येत्यु-क्त्यागोपताविल्यादौ, पकारोत्तकारस्य न दीर्घता । अकारस्येत्युक्त्याच विभ्राड्त्यादा विकार-स्य नदीर्घता । किन्तुव्वसोः पवित्रमित्यादौ वकाराकारस्य पकारा कारस्यच दीर्घता । तथाच तयोः ईषद्दीर्घोच्चारणं यथा भवति तथापठनीयम् ॥ एवमन्यत्रापिवाध्यम् । अन्तेद्विरभ्यास. परिसमाप्त्यर्थः । **इति तृतीयाकण्डिका पर्यन्ता प्रतिज्ञासूत्रव्याख्या समाप्ता ॥**

कर्माङ्ग देवता नामानि छन्दोगं परिशिष्टे—तेन विवाहाङ्ग भूत स्वस्तिवाचनादि पञ्चाङ्ग देवता पूजनान्ते, यथाविवाहस्याग्निर्देवता भवति,, तत्रादौ पञ्चाङ्ग पूजान्ते—ॐ विवाह कर्माङ्ग देवताग्नि. प्रीयताम्.॥ इत्युच्चारणं भवति,, एवं सर्वत्रवक्ष्यमाण कर्माङ्ग देवोच्चारणं कर्मान्ते कुर्यात् ॥ **औपासने**—अग्नि सूर्य प्रजापतय । **स्थालीपाके**—अग्निः। **गर्भाधाने**—ब्रह्मा । **पुंसवने**—प्रजापतिः । **सीमन्ते**—धाता । **जातकर्मणि**—*मृत्युः* । **नामकर्म निष्क्रमणान्न प्राशनेषु**—सविता । **वास्तुहोमे**—*वास्तोष्पति रन्ते प्रजापतिः* । **चूडायाम्**—केशिनः । **उपनयने**—इन्द्रः श्रद्धामेधा । **केशान्ते**—सुश्रवा । **पुनरुपनयने**—अग्नि. । **समावर्त्तने**—इन्द्रः । **उपाकर्मणि व्रतेषुच**—सविता । **तडागादि प्रतिष्ठासु**—वरुणः । **ग्रहहोमे**—नग्रहाः । **कूष्मांडहोम चान्द्रायण अग्न्याधानेषु**— अग्न्यादय सर्वे । **अन्त्येष्टिपिष्टिकर्मसु**—प्रजापतिः । **पंचगव्यलक्षणम्**—गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुशोदकम् ॥ पञ्चगव्यमिदं स्नाने कथितं पापनाशनम् ॥ **त्रिगव्यम्**—दधिक्षीरं घृतंचैव त्रिगव्यं परिकीर्तितम् ॥ **त्रिरस-लक्षणम्**—घृतं तैलं तथा क्षौद्रं त्रिरसं परिकीर्तितम् । **पंचरस लक्षणम्**—घृतं तैलं तथा क्षौद्रं दधिःक्षीरं चपंचमम् ॥ **सप्तधान्य बलिलक्षणम्**—मुद्गमाष मसूराश्च गोधूमचणकानिच । मकुष्टक. कपालश्च सप्तसस्योवलिस्मृतः । मकुष्टको वनमुद्गः कपालः अलाबुः । **पंचमासवलि लक्षणम्**—कुल्मापेन्द्रिरिकासूपवटकैः खांडवा-न्वितैः । पञ्चमाषोवलिः प्रोक्तः सदामासभुजां प्रियः । **पञ्चगव्य बलि लक्षणम्**—कीलाट दधिकाश्यैश्च क्षीरतक्रैर्मनोरमैः । पञ्चगव्यो बलिः प्रोक्तः सततंकेशवः प्रियः । **कीलाट लक्षणम्**—बहुतक्रोऽल्प दुग्धोयः पाकेन घनतांगतः ॥ कीलाटः सतुविज्ञेय पुंस्त्वजिह्वा बलप्रदः ॥ **पंचगौड बलि लक्षणम्**—*मोदकैश्च तथा पूपैः पायसेन तथैवच गुडौदनेन च* तथा पाचनेन गुडेनच ॥ पञ्चगौड बलिः प्रोक्तः परः सौभाग्यवर्धनः ॥ **त्रिपत्र लक्षणम्**—बिल्वंच तुलसीपत्रं जातीपत्रं तथैवच । **त्रिसुगन्ध लक्षणम्**—कर्पूरगुग्गुलं चैव प्रियंगु च

त्रिगंधकम् ॥ **पंचसुगन्ध लक्षणम्**—चन्दनंच प्रियगुंच तथा कर्पूरकान्वितम्। कुंकुमं मृगदर्पश्च पञ्चगन्धं प्रकीर्तितम् ॥ **इतिकर्मबोधिनी परिभाषा** ॥ **विशेषस्तत्र पद्धति परिभाषा सूत्र व्याख्यासुच द्रष्टव्यः** ॥

अथ गणेशपूजा परिभाषा

स्कन्दपुराणे—ऋषयऊचुः—निर्विघ्नेनतुकार्याणि कथंसिध्यन्तिसूतज । कांदेवतां नमस्कृत्य कार्यसिद्धिर्भवेन्नृणाम् । पूजयित्वा महाभाग गणेशं सिद्धिदायकम् । सिध्यन्ति सर्वकार्याणि मनसाचिन्तितान्यपि । विवाहादौ क्रियमाणे पूजनीयोगणाधिपः ॥ **लिंगपुराणे**—सर्वकामसमृध्यर्थं मादौपूज्योविनायकः ॥ **रुद्रकल्पे**—गणेशः सर्वदेवाना मादौपूज्यःसदैवहि। "**स्कान्दे**"—चन्दनेनलिखेत्पद्मकर्णिका केशरान्वितम्। आसनाद्यर्घ्यपाद्यंच दत्वा पश्चात्प्रयत्नतः। **रुद्रपद्धतौ**—गणेशंपूजयेदादौ निर्विघ्नार्थस्वकर्मणः। पट्टेवामृण्मयेपीठे रक्तवस्त्रेऽरुणाक्षतैः। कार्यमष्टदलंपद्मं तस्योपरिगणेश्वरम् ॥ **पञ्चोपचार पूजनंमात्स्ये**—उपचारैः ससिन्दूरैश्चन्दनैरक्तचन्दनैः, पुष्पैर्धूपैस्तथादीपै राच्छादनसुशोभनैः। **मूर्तिप्रमाणस्कांदे**—स्वशक्त्यागणनाथस्यस्वर्णरौप्यमयाकृतिः । अथवामृण्मयीकार्यावित्तशाठ्यंनकारयेत् ॥ **षोडशोपचारम्**—पूर्वमावाहनंप्रोक्तमासनंतदनंतरम्। ततश्चपाद्यमर्घ्यंचततस्त्वाचमनीयकम्। स्नानंवस्त्रंचोपवीतं ततोगन्धादिचन्दनम् ॥ पुष्पधूपश्चदीपश्च नैवेद्यं तदनन्तरम्। ततोवैप्रणामश्च ततो देयाप्रदक्षिणा ॥ विसर्जनंततोदद्यादुपचारास्तुषोडश ॥ अत्र गणेशपूजनादिविषये, कतिचित्प्रमाणवादिभिः, निर्णयग्रन्थेषुलिखितम्। आदौ नवग्रहानर्च्यततः कर्मसमारभेत। आदौप्रधानसङ्कल्पस्ततः पुण्याहवाचनम्। मातृपूजाततः कार्यावृद्धिश्राद्धंततः स्मृतमिति . परश्च । **उक्तंचपद्मपुराणे**—नार्चितोहिगणाध्यक्षो यज्ञादौयत्सुरोत्तम। तस्माद्विघ्नंसमुत्पन्न माकस्मिक मिदन्तव। पारस्करगृह्यसूत्रेगदाधरभाष्येपि, पुण्याहवाचनप्रयोगे कृताचमनःप्राङ्मुखोयजमानःपीठेउपविश्य पत्नींच स्वदक्षिणतः प्राङ्मुखीमुपवेश्य सेरकार्यचतथैवोपवेश्य,। सुमुखश्चैकदन्तश्च० इत्यादि—सर्वेष्वारम्भकार्येषु इत्यन्तं, गणेशपूजाविधानमादौकृत्वा कलशस्थापनान्ते पुण्याहवाचनप्रयोगोदर्शितः। अत.सर्वेषामपिपक्षाणां स्वगृह्योक्तंविधीयते। तथापि—स्मृतिसंग्रहे-नगृह्येषु स्मृतियेषां श्राद्धादावुपलभ्यते कर्तुमर्हन्तिते सर्वे पारस्करमुनीरितमितिदिक् ॥ इत्यादिनिर्णयेनादौगणेशस्यैवपूजनंभवतीतिशास्त्रसम्मतिः ॥ **इति गणेशपूजा परिभाषा**

अथ कलशस्थापनपुण्याहवाचन परिभाषा—अथनित्यनैमित्तिककाम्येषु त्रिविधेषु कर्मसु। तत्पूर्वाङ्गतया भ्युदयिकनान्दी श्राद्धस्यावश्यविरुद्ध कर्तव्यताविहितत्वेन ततोऽपिपूर्वं मातृकापूजनस्य कर्तव्यत्वात तदुपरि वसुधाराणामपिविधानात्। मातृकापूजनात्प्राक्पुण्याहवाचनस्यनिर्णीततथा—उक्तंच—आदौप्रधानसङ्कल्पस्ततः पुण्याहवाचनम् ॥ मातृपूजाततः कार्यावृद्धिश्राद्धंतत.परम् ॥ इति **वाचस्पति मिश्रोक्तलेखात्**—मातृपूजनात्प्रागेवपुण्याहवाचनप्रतीयते। यथाच—**पारस्करसूत्रे गदाधरभाष्ये सौनकः**—पुण्याहवाचनविधिंवक्ष्यामो यथाविधि ॥ प्रयोक्तुः कर्मणामादावन्तेचोदयसिद्धये। तच्चकर्मप्रयोगान्तर्गतमितिकेचित् ॥

आद्यपक्षेकर्मप्रयोगसङ्कल्पंकृत्वाकार्यम् ॥ द्वितीयेतुतत्कृत्वाकर्मसङ्कल्प । हेमाद्रौदानखण्डेबह्वृच-गृह्यपरिशिष्टत्वेनोक्त.—सकलसाधारणशिष्टाचारप्राप्तश्च पुण्याहवाचनप्रयोग । इतिप्रमाणैरादौ पुण्याहवाचनं प्रतीयते ॥ तस्यच—पारस्करसूत्रे गदाधरभाष्ये कर्मप्रयोगे, अवनिकृतजानुमंडल कमलमुकुलसदृशमञ्जलिशिरस्याधाय, दक्षिणेनपाणिनासुवर्णपूर्णकलशं, धारयित्वाशिष. प्रार्थयेत् इतिसकलश विधानेनतत्पूर्वकलशस्थापन पूजनस्यविधानत्वात्तस्मादादौ शान्तिपाठस्वस्तिवाचन, गणेशपूजनंचलभ्यते । तच्चादौनिर्णीतं तत्रैवद्रष्टव्यम् । तथाचायंक्रम:—गणेशपूजनान्ते पुण्याहवाचनाङ्गत्वेनकलशस्थापनमेवलभ्यते-चवाऽयंपारंपर्यं शिष्टाचारोपि, अत्रप्रसिद्ध अत-आदौ कलशपूजनंकृत्वा तत.पुण्याहंवाचयेत् ॥ **इति कलशस्थापनपुण्याहवाचन-परिभाषा—नीराजनम्**—ततोऽभिषेकान्ते, यजमानस्य नीराजनं कुर्यादिति गदाधर ॥ **इति नीराजनविधिः** ॥

अथ मातृकापूजन परिभाषा

अथच—वैदिकेषुकर्मसुमातृयागस्यावश्यकीयत्वेन, विहितत्वादकरणेप्रत्यवायश्रवणाच्च । नान्दीश्राद्धात्पूर्वं मातृकापूजनंलभ्यते, तच्चकदाकार्यमिति विचार्यते—**उक्तञ्च विष्णुपुराणे**—अकृत्वामातृयागंतु वैदिकंय समाचरेत् । तस्यक्रोधसमायुक्ता हिंसामिच्छन्तिमातर ॥ गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौपूज्यास्तुषोडश । इतिवचनैर्गणेशपूजनान्तेमातृकापूजालभ्यते । परन्तुवाचस्पति मिश्रादय.-पुण्याहवाचनान्ते षोडशमातृकापूजनवदन्ति ॥ तच्चआदौप्रधान सङ्कल्पस्तत पुण्याह-वाचनम् । मातृपूजातत कार्याश्राद्धंतत स्मृतम् ॥ **परिशिष्टे**—यत्रयत्रभवेच्छ्राद्धंतत्रतत्र चमातर इतिप्रमाणे पुण्याहवाचनानन्तरं मातृपूजनंनिश्चितमेव । इयमेवचपरम्परापूजनानुक्रम-णस्य सर्वत्रविधिषुलभ्यते ॥ इहगढ़वालदेशेचप्रसिद्ध ॥ एषएवक्रम पारस्करीयगृह्यगदाधरीय भाष्येणाप्यनुदर्शित । सच-तत्राथर्ववाकरिष्यमाणकर्माङ्गतया आदौपुण्याहवाचनानन्तरं कर्म-निमित्तकनान्दीश्राद्धस्यविहितत्वात् यद्यपिकूर्मांचलीयपद्धतिषु दानखण्डमदनरत्नप्रहयज्ञमहारुद्र, पद्धतिपदानुसरणेनकुमारिलभट्टोक्त—आदावन्तेप्रयोक्तव्यम् । इतिवचनेनचनान्दीश्राद्धानन्तर पुण्याहवाचनम् निर्णीतं । तथापिपूर्वोक्तप्रकारेणपुण्याहवाचनस्य मातृपूजनात्प्रागेवप्रयोगसिद्धौ मातृपूजनानन्तरविधीयमान नान्दीश्राद्धन्तुसुतरामेवप्राक्सिद्धत्वात्पुण्याहवाचनान्ते मातृकापूजा विधिवक्ष्ये ॥ **तत्रादौ मातृका यंत्रोद्धार:—विष्णुपुराणे**—प्रागोर्ध्वां पञ्चतीर्यक्चरेखाः कार्या प्रयत्नत । कुलदेवींगणेशच गौरींपद्मांतथैवच । पूजयेन्मध्यमेकोष्ठेशेषावाह्यहिकोष्ठके ॥ मध्यकोष्ठेचतुष्केतु स्थापयेच्चपृथक्पृथक् । गणेशवायुकोणेचशिवकोणेकुलेश्वरीम् ॥ गौरीचनैरृते पूज्यापद्मापावककोणके । शचीचपश्चिमेस्थाप्यामेधाचैवद्वितीयके । सावित्रीदक्षिणेपूज्याविजयाच द्वितीयके । जयोत्तरेच सस्थाप्यादेवसेनाद्वितीयके । स्वाहामग्नौसमभ्यर्च्यपानेचस्वधातथा ॥ पूर्वेतुमातर पूज्यास्तदग्रेलोकमातर । धृति पुष्टिर्वायुकोणेतुष्टिर्नैरृत्यके तथा । एवंहिमातर स्थाप्या स्वस्वस्थाने पृथक् पृथक् ॥ **षोडशमातृकानामानि छन्दोगपरिशिष्टे**—गौरीपद्माशचीमेधा सावित्रीविजयाजया । देवसेनास्वधास्वाहा मातरोलोकमातरः । धृति पुष्टिस्तथातुष्टि, तथात्म-कुलदेवता.—॥ गणेशेनाधिकाह्येता वृद्धौपूज्यास्तुषोडश. ॥ **अत्रादौ गणपतिपूजनम्**—

आदौ विनायकः पूज्योऽन्तेच कुलदेवताः अत्र क्वचिन्मतेन 'चतुर्दशोपादानात्, मातरो लोकमातरः इति सर्वासां विशेषण मुक्तम्। **अथ गृहमातरः**—कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा, पुष्टिः श्रद्धा-क्रियामतिः। बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिस्तुष्टिः कांतिस्तुमातरः॥ **अत्रलोकमातरः**—ब्राह्मी माहेश्वरीचैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराहीच तथेन्द्राणी चांमुडा सप्तमातरः। **अत्रैव प्रसङ्गवसात् द्वार मातृघृतमातृजीवमातृजलमातृश्चवक्ष्ये-द्वारमातरः**—कुमारीधनदानन्दा विपुला मङ्गलाचला। पद्माचैव समाख्याताः सप्तैता द्वारमातरः। **अथघृतमातरः**—श्रीश्चलक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः प्रज्ञा सरस्वती। मांगल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताघृतमातरः। **अथजीवमातरः**—कल्याणी मङ्गलाभद्रा पुण्यापुण्यमुखीतथा। जयाचविजयाचैव, सप्तैता जीवमातरः। **जलमातरः**—मात्सीकूर्मीच वाराहीकुक्कुटी दर्दुरीतथा॥ जलूकीचैव सोमाच सप्तैताजलमातरः। **मातृपूजा प्रकारः**—प्रतिमासुच शुभ्रासुलिखित्वावा पटादिषु। अपिवाक्षतपुञ्जेषु नैवैद्यैश्च पृथक् विधौ॥ **मातृणामुपरि घृतेनवसोर्धारापातनम्**—कुड्यस्तंभमुसंलग्ना मातृणामुपरिस्थिताः। कारयेत्पञ्चतिस्रोवासप्तवोदङ्मुखस्थिताः अत्रबह्व्यः प्रथा दृश्यन्ते यथादेशाचार मनुष्ठेयम्॥

॥ इति मातृकापूजा परिभाषा॥

अथ नान्दी श्राद्ध परिभाषा।

अखिलकर्मणा माभ्युदयिक पूर्वकत्वात्तस्यच विधान प्राचुर्यात्तन्निर्णयः क्रियते॥ **उक्तंच कात्यायनसूत्रः**—अभ्युदयिके प्रदक्षिणमुपचारः। पूर्वाण्हेपित्र्य मन्त्र वर्ज्यजपः। ऋजवोदर्भाः। यवैस्तिलार्थाः। सम्पन्नमिति तृप्ति प्रश्नः। सुसम्पन्नमितरेब्रूयुः। दधिवदराक्षत मिश्राः पिण्डाः। नान्दीमुखान्पितृनावाहयिष्ये। इतिपृच्छति। आवाहयेत्यनुज्ञातो। नान्दीमुखान्पितृन्वाचयिष्ये। इतिपृच्छति। वाच्यतामित्यनुज्ञातो, नान्दीमुखाः पितरः, पितामहाः प्रपितामहाः मातामहाः प्रमातामहाः वृद्धप्रमातामहाश्च प्रीयन्ताम्। इति। नस्वधांप्रयुञ्जीत युग्मानाशयेदत्र। **विष्णुपुराणे**—कन्यापुत्र विवाहेषु प्रवेशे नववेश्मनः। शुभकर्मणि बालानां चूडाकर्मादिके तथा। सीमन्तोन्नयनेचैव पुत्रादि मुखदर्शने। नान्दीमुखान्पितृनादौ तर्पयेत्प्रयतोगृही। **तत्रक्रममाह आश्वलायनः**—माता पितामहीचैव सम्पूज्या प्रपितामही। पित्रादयस्त्रयश्चैव मातुः पित्रादयस्त्रयः। एतेन वैवार्चनीयाः—पितरोऽभ्युदयेद्विजः। **वृद्धपाराशरमतेतु देवानामपि नान्दी विशेषण मुक्तम्**—नान्दी मुखेभ्यो देवेभ्यो प्रदक्षिण कुशासनम्॥ **कालमाहशातातपः**—मातृश्राद्धन्तु पूर्वंदद्युः कर्माहनितु पैतृकम्। मातामहं चोत्तरे दद्युर्वृद्धौश्राद्ध त्रयंस्मृतम्॥ **कालालाभे**—पूर्वेद्युरेव पूर्वाण्हेमातृकं मध्यान्हे पैतृकम्। अपराण्हे माता महानाम्। **अस्याप्यसंभवे वृद्धमनुराह**—अलाभे श्राद्धकालानां नान्दी श्राद्ध त्रयंबुधः। पूर्वेद्युरेव कुर्वीत पूर्वाण्हे मातृपूर्वकम्। **अत्रसंकल्पादौ विशेषः संग्रहे**—शुभायप्रथमान्तेन वृद्धौ संकल्पमाचरेत्। नषष्ठ्या यदिवाकुर्यान्महादोषोभिजायते। नषष्ठ्या नचतुर्थ्यावा सम्बुध्यावा कदाचन। अनस्मद्वृद्धशब्दानामरूपाणाम गोत्रिणाम्॥ अनाम्नामतिलार्थैश्च नान्दी श्राद्धं च सव्यवत्। **हेमाद्रौशातातपः**—कर्त्तव्यं चाभ्युदयिकं

श्राद्धमभ्युदयार्थिना । सव्येनचोपवीतेन ऋजुदर्भैश्च धीमता । पितृणामुपमाह्वयायदेवा अन्नं समश्नते । तस्मात्सव्येनदातव्यं वृद्धिकालेतुनित्यदा । **कात्यायनः**—दक्षिणं पातयेज्जानु देवान्परिचरन्सदा । पातयेदितरं जानु पितृन्परि चरन्नपि । निपातो नहिसव्यस्य जानुनो विद्यते क्वचित् । सदापरिचरेद्भक्त्या पितृनप्यत्र दैववत् । **आश्वलायनः**—तिलोसीति पदस्थाने यवोसीति पदंपठेत् । स्वधेतिच पदस्थाने पुष्टया शब्दंवदेदिह । पितृनिति पदात्पूर्वं वदेन्नान्दी मुखानिति । अत्रस्वधाशब्दस्थाने वैदिक मन्त्रेपि स्वाहा इति शब्दो वाच्यः, **पुराणसमुच्चये**–नकर्म पितृतीर्थेन नकुशाद्विगुणीकृताः । **भृगुः**—गोत्रसंबन्ध नमानि पितृकर्मणि कीर्तयेत्–

व्यासः—एकैकस्यतुविप्रस्य अर्घपात्रेविनिक्षिपेत् । अत्रसत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः, नान्दीश्राद्धे सत्यवसूइतिवचनात् ॥ **नान्दीश्राद्धे ब्राह्मणसंख्यामाह कात्यायनः**—प्रातरामंत्रितान्विप्रान् युग्मानुभयतस्थितान् । उपवेश्यकुशान्दद्यात् ऋजुनैवहिपाणिना । **निमित्तकनान्दीश्राद्धं मार्कण्डेय पुराणे**—निमित्तकमथोवक्ष्ये श्राद्धमभ्युदयात्मकम् । पुत्रजन्मनितत्कार्यं जातकर्मसमंनरैः **वृद्धमनुः**—पुत्रजन्मनितुदिनेपाकश्राद्धं भुक्तवतोपवासिनावापुत्रजन्मनानन्तरं नालच्छेदनादर्वागेवकार्यं ॥ **कात्यायनः**—स्वपितृभ्यःपितादद्यात्सुतसंस्कारकर्मसु । पिंडानोद्वहनात्तेषां तस्याभावेतुतत्क्रमात् । उद्वाहोऽत्रपूर्वाभिप्रेतः । द्वितीयेतुपितरिजीवत्यपि स्वकर्तृकत्वम् ॥ **तथाच-स्मृतिः**—नान्दीश्राद्धंपिताकुर्यादाद्ये पाणिग्रहेपुनः अतऊर्ध्वंप्रकुर्वीतस्वयमेवतुनान्दिकम् । **प्रयोग पारिजाते तु**—तत्राऽजीवत्पितृकः पित्रादीनुद्दिश्याद्येविवाहेपिवरः स्वयमाभ्युदयिकं कुर्यात् । वापितुरभावे— पितृव्याचार्यमातुलादियः संस्कारंकुर्यात्मत्क्रमात्तंपितरमारभ्यसंस्कार्यस्यवः पितृणाक्रमस्तेनक्रमेणदद्यादित्यर्थः । **पित्रादिवर्गजीविते विशेष**—मातृवर्गं पितृवर्गं तथामातामहस्यच ॥ जीवेत्तुयदिवर्गाद्यस्तंवर्गंतुपरित्यजेत् । **विशेषश्छन्दोगपरिशिष्टे-**

कात्यायनः—वृद्धौतीर्थेचसन्यस्ते ताते चपतितेसति । येभ्यएवपितादद्यात् तेभ्योदद्यात्स्वयंसुतः तेनजीवत्पितृक. स्वपितुः पित्रादीन्मातामहादींश्चोद्दिश्याभ्युदयिकंश्राद्धंकुर्यात् । **कल्पतरौहलायुधभाष्ये**— पितापितामहश्चैवतथैवप्रपितामह । त्रयोह्यश्रुमुखाह्येते पितरः संप्रकीर्तिताः । तेभ्यः पूर्वतरायेचप्रजावन्तःसुखैधिणः । तेतुनान्दीमुखानान्दी समृद्धिरितिकथ्यते । **परकीयकन्योद्वाहे नान्दीश्राद्धविचारः**—आत्मीकृत्यसुवर्णेन परकीयांतुकन्यकाम् । धर्मेणविधिनादातुः समगोत्रोपियुज्यते ॥ येनकेनापिप्रकारेणपरकीयांकन्यांदातुमिच्छति । सोपिसंस्कार्यकन्यायाः

पित्रादीन्नुद्दिश्यपूर्ववत्यथासम्भवंनान्दीश्राद्धंसमाचरेत् ॥ **दत्तककन्योद्वाहेविशेषः**—गणशः क्रियमाणानामेकंस्यान्मातृपूजनं । वृद्धिश्राद्धंचतत्रस्याद्धोमस्तुस्यात्पृथक्पृथगितिस्मृत्यर्थसारवचनात् ॥ **सुवर्णेननांदीश्राद्धमाहव्यास**—द्रव्याभावेद्विजाभावेप्रवासेपुत्रजन्मनि । हेमश्राद्धं प्रकुर्वीतयस्यभार्यारजस्वला । **षट्त्रिंशन्मतेतु**—हेमश्राद्धंप्रकुर्वीतवर्जयित्वा चयेऽहनि ॥ **संवर्तः**—पुत्रजन्मनिकुर्वीतश्राद्धं हेम्नैवबुद्धिमान् । नपक्वेननचामेनकल्याणान्यभिकामयन् । **त्रिस्थलीसेतौकात्यायन**—आपद्यनग्नौतीर्थेच प्रवासेपुत्रजन्मनि । आमश्राद्धंप्रकुर्वीतभार्या रजसिसंक्रमे ॥ **वाराहपुराणे पाराशरस्मृतौच**—असमर्थोन्नदानस्य धान्यमामंस्वशक्तितः । प्रदद्यात्तुद्विजातिभ्यः स्वल्पामपिचदक्षिणाम् ॥ **अथच ब्राह्मणेनवर्णपरत्वे लब्धमामाद्यादिद्रव्यस्य विनियोगविचारमाहव्यास**—हिरण्यमामंश्राद्धीयं लब्धंयत्क्षत्रियादितः । यथेष्टं

विनियोज्यंस्याद् भुंजीयाद्ब्राह्मणःस्वयम् । **हेमाद्रौषट्त्रिंशन्मते:**—आमंशूद्रस्ययत्किंचिच्छ्राद्धिकंप्रतिगृह्यते । तत्सर्वंभोजनायालं नित्येनैमित्तिकेनच । **नान्दीश्राध्दानन्तरं पिंडदानादिनिषेधःस्मृति रत्नावल्याम्**—विवाहमौंजीबन्धोर्ध्ववर्षार्धंवर्षमेववा पिण्डान्सपिंडानांदद्युः सपिण्डीकरणंविना । विवाहव्रतचूडासुवर्षमर्धंतदर्धकम् । पिण्डदानंनकर्त्तव्यं ज्ञातीनामृद्धिमृच्छता । अत्रसपिण्डीकरणग्रहणं तत्पूर्वभाविनांप्रेतश्राद्धानामुपलक्षणार्थम् ॥ **पिंडादिकरणे-निन्दामाहव्यासः**—वृद्धिश्राद्धेकृतेपश्चात्पुनः पिण्डान्ददातियः । सोऽत्रवृद्धिविघातीस्यान्नरकं प्रतिपद्यते ॥ **क्वचित्प्रकारान्तरेण नांदीश्राध्दानंतरं पिंडादिविधानमाह स्मृतिरत्नावल्याम्**—पित्रोःक्षयाहेयज्ञेच पितृयज्ञेमहालये ॥ *गयायांपिण्डदानस्य नकदाचिन्निराक्रिया ।* **बृहस्पतिः**—महालयेगयाश्राद्धे मातापित्रोःक्षयेऽहनि । कृतोद्वाहोपिकुर्वीत पिण्डनिर्वपणंसुतः ॥ **तिलतर्पण निषेधमाह मरीचिः**—विवाहेचोपनयने चौलेसतियथाक्रमम् । वर्षमर्धं तदर्धंचनेत्याहुस्तिलतर्पणम् ॥ **स्मृत्यर्थसारे**—वृद्धौसत्याश्चतन्मासि नेत्याहुस्तिलतर्पणम् ॥ **मरीचिः**—कठाःकण्वाश्चजाबालायेचवाजसनेयिनः । सतिलंतर्पणंकुर्युः निषिद्धेपिदिनेष्वपि ॥ **त्रिस्थलीस्मृतौ**—तीर्थेतिथिविशेषेच गयायां प्रेतपक्षके । निषिद्धेऽपि दिनेकुर्यात्तर्पणंतिलमिश्रितम् ॥ निषिद्धेषुवर्जितेषुदिनेष्वपि ॥

॥ इति नान्दी श्राध्दपरिभाषा ॥

॥ अथ सामान्य नवग्रह पूजा परिभाषा ॥

अथच नवग्रह पूजाप्रमाणं तच्चद्विविधं, यागसहितं तद्रहितंच, सयागन्तु बृहत्कार्येषु भवति । यागरहितंच नित्यनैमित्तक उत्सवसंस्कार शान्ति पौष्टिकादि कर्मेषु, यत्रयत्र गणेश कलश–पुण्याहवाचन मातृकादि पूजा भवति तत्र सामान्य कर्मसु ग्रहयागस्य अशक्य कर्तृकत्वात्पश्चाङ्गान्तर्गततया सामान्येनापि, ग्रहपूजा भवति । इति पूर्वसूरिभिः । स्वशाखीयपद्धतौ लिखितं । *असौगणेशादि ग्रहपूजान्तप्रयोगस्त्रिविध कार्येषु भवति । यथायोविषुवोपरागादि* पर्वदिनेषु विहितः । अवश्यमेव कर्त्तव्यः सनित्यः । गर्भाधानादिसंस्कार कर्मणि नैमित्तिकः । शान्त्यादिषु काम्य विषयेषु काम्यः । अस्य विस्तारपूर्वक परिभाषां ग्रहयाग प्रकरणे वक्ष्यामि । अत्र ग्रन्थविस्तारभियानदर्शिताविद्वद्भिस्तत्रैव दृष्टव्या ॥

इति नवग्रह परिभाषा—

अथ पञ्चगव्यकरणम्

अथ पञ्चगव्यविधिः, उक्तञ्चपराशरस्मृतौ—अतः परंप्रवक्षामिपञ्चगव्यमनुत्तमम्। पावनार्थंद्विजातीना मिहलोकेपरत्रच १ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंदधिसर्पि.कुशोदकम्। निर्दिष्टंपञ्चगव्यन्तुपवित्रंमुनिपुङ्गवैः॥ गोमूत्रेवरुणोदेवो हव्यवाहस्तुगोमये क्षीरेशशधरोदेवोवायुर्दध्निसमाश्रितः॥ भानु.सर्पिषिसंदिष्टः कुशेब्रह्मादिदेवताः॥ जलेसाक्षाद्धरिःसंस्थः पवित्रंतेननित्यश.॥ मूत्रंतुनीलवर्णायाः कृष्णायागोमयंस्मृतम्॥ क्षीरंतुताम्रवर्णायाः श्वेतायाउच्यतेदधि॥ सर्पिस्तुकपिलायावै ग्राह्यं पातकनाशमम्॥ अभावेसर्ववर्णानां कपिलायाः प्रगृह्यते॥ **अथ पञ्चगव्यद्रव्य प्रमाणं**—पलमात्रंतुगोमूत्र मं:गुष्ठार्द्धन्तुगोमयम्। क्षीरंसप्तपलंग्राह्यंदधित्रिपल मीरितम्॥ सर्पिस्त्वेकपलंदेय मुदकं.पलमात्रकम्। सर्वमेतत्ताम्रपात्रस्थितंकुर्याद्यथाविधिः॥ सर्वेषामलाभे सर्पिःकुशोदकं.पयइतिनिर्णय.॥ गायत्र्यादायगोमूत्रंगन्धद्वारेतिगोम:म्। आप्यायस्वेतिवैक्षीरं दधिक्राव्णेतिवैदधि॥ तेजोसिशुक्रसर्पिस्तु देवस्यत्वाकुशोदकम्। मन्त्रयित्वाप्रोक्षणन्तु आपोहिष्ठेतिमन्त्रत.॥

अथ पञ्चगव्याभिमन्त्रणम्

ॐ भूर्भुवःस्वः० इति गायत्र्यापलमात्रं गोमूत्रमभिमन्त्र्य ताम्रपात्रे वा पलाशपत्रपुटेवरुणंदेवंध्यायन्स्थापयेत्। गोमयम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम्। ईश्वरींसर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्। इत्यंगुष्ठार्धमात्रं गोमयमभिमन्त्र्य अग्निदेवं ध्यायंस्तत्रैवस्थापयेत्॥ दुग्धम्—ॐ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवावाजस्यसङ्गथे॥ इति सप्तपलदुग्धमभिमन्त्र्य सोमदेवंध्यायँस्तत्रैवस्थापयेत्॥ दधि—ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्यवाजिनः। सुरभिनोमुखाकरत्प्रणऽआयूँषितारिषत् इतित्रिपलन्दध्यभिमन्त्र्य वायुदेवंध्यायँस्तत्रैवस्थापयेत्॥ घृतम्—ॐ तेजोऽसिशुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि प्रियंदेवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥ इत्येकपलंघृतमभिमन्त्र्य सूर्यदेवंध्यायँस्तत्रैव स्थापयेत्॥ कुशोदकम्—ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्। इतिपलमात्रंकुशोदकमभिमन्त्र्य हरिंदेवंध्यायँ स्तत्रैवस्थापयेत्॥ ततः कुशैर्वादुर्वाभिर्व दयमाणतिसृभिरालो

डयेत् ॥ ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातुनः महेरणाय चक्षुषेयोवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातर स्तस्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयायजिन्वथ, आपोजनयथाचनः इति सप्तमाण पञ्चगव्यम् ॥

सर्व कर्माधिविधिः ।

श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥ श्रीगुरुचरण कमलेभ्यो नमः । ॐ नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं व्यासं ततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ तत्रादौ सर्वकर्मादि करणीय विधिवक्ष्ये ॥ तत्रकर्त्ता शुभदिने सुस्नातः शुध्देवाससी परिधाय शुभासने प्राङ्मुखोवोदङ्मुखः सन्नुपविश्य । ॐ सिध्दम् ३ इति वारत्रयं पठित्वा, आचमनं कुर्यात् । ॐ अच्युतायनमः । ॐ केशवायनमः । ॐ माधवायनमः । त्रिराचम्य । गायत्र्याशिखा वंधनं कृत्वा, कुशपवित्रे धृत्वा । दीपं पूर्वाभिमुखंप्रज्वाल्य । ॐ अस्यश्री आसनमंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं, छन्दः कूर्म्मोदेवता कूर्म्मासनो पवेशने विनियोगः । हस्ते अक्षतानगृहीत्वा ॐ हिरण्यवर्णासुभगा हिरण्य कशिपुर्मही तस्या हिरण्यं दापये सत्या अकरं नमः ॥ इत्यक्षतान्भूमौ क्षिप्त्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव इहागच्छेहतिष्ठ । ॐ पृथिव्यै नमः । इतिमंत्रेण पाद्यादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत्—ॐ पृथिवित्वया धृतालोका देवित्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरुचासनम् ॥ तत—जलं वामहस्ते धृत्वा दक्षिण हस्तेन कुशैरभिषेकं कुर्यात् । ॐ आपो हिष्टा मयोभुव स्तानऽऊर्जेदधातुनः । महेरणाय चक्षये योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः, उशती रिवमातर स्तस्माऽअरंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपोजन यथाचनः ॥ ॐ पुण्ड-रीकाक्षाय नमः पुनातु ॥ गौरसर्षपानादाय—भूतोत्सादनं कुर्यात् । ॐ अपःक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशः । सर्वेषा मविरोधेन ब्रह्मकर्म्मसमारभे । अपसर्प्प न्तुतेभूता येभूता भुवि

संस्थिताः । येभूता विघ्न कर्त्तार स्तेनश्यन्तु शिवाज्ञया । ततः-निर्गच्छ तांच भूतानां वर्त्मदद्यात्स्ववामतः । वामभागे हस्ताभ्यां तालत्रयं दत्वा सर्वान्विघ्नानुत्सार्यततः, ॐ सर्व वाद्यमयी घंटायै नमः । इतिमंत्रेण घंटासंपूज्य, ॐ आगमार्थंच देवानां निर्गमार्थं च रक्षसाम् । सर्वभूत हितार्थाय घण्टानादं करोम्यहम् ॥ इतिवादयित्वा स्ववामभागे कुशेषु घंटांस्थापयेत् । ॐ गंधर्व देवाय धूपपात्रायनमः, इतिसंपूज्य, स्वदक्षिणभागे निदध्यात् । ॐ वन्हि दैवत्याय दीपपात्राय नमः ॥ संपूज्य तत्रैवस्थापयेत् ॥ ततो ब्राह्मण द्वारा स्वमंगल तिलकं कारयेत् । मंत्रः—ॐ भद्र-मस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तु त्वां सुराः सर्वे संपदः सन्तुसुस्थिराः ॥ ततः पूर्वप्रज्वालितं दीपं, ॐ दीपनाथ भैरवाय नमः । इतिमंत्रेण पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पंगृहीत्वा प्रार्थयेत् । ॐ करकलित कपालः कुण्डली दंडपाणिस्तरुण तिमिर नीलो व्यालयज्ञो पवीती ॥ क्रतु समय सपर्य्या विघ्न विच्छेदहेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥ इति संप्रार्थ्य । अर्घस्थापनं कुर्यात्—रक्तपीतगंधेन चन्दनेनवा भूमौ त्रिकोणं वृत्तं चतुरस्रमंडलं च लिखित्वा तत्र त्रिपादिकां संस्थाप्य तदुपरि शंखंवा ताम्रमयार्घ संस्थाप्य-संपूज्यच ॥ ॐ शन्नोदेवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्रवन्तुनः । इतिजलेनापूर्य ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धो कावेरिजलेऽस्मिन्सन्निधि कुरु ॥ इत्यंकुशमुद्रया तीर्थाण्या वाह्य । तत्रगंधाक्षत पुष्पाणि निक्षिप्य; सम्पूज्य च, तेनार्घोदकेन कुशैः पूजोपकरण सामग्रीं सम्प्रोक्ष्य, आत्मानंचाभिषिंच्य-अर्घं तत्रैव स्थापयेत् । ततः प्राणायामं कृत्वा प्रधानदेवतार्चनं कुर्यात् ॥

॥ इति कर्मादि विधिः ॥

अथ सर्वकर्मादौशान्तिपाठविधिः

अस्यात्रपर्वतीयदेशेषु स्वस्तिवाचनेनापिव्यवहारः। यथार्थ आगम्। बहूनांमन्त्राणांस्वस्तिशब्दघटितत्वेन देहलीदीपन्यायेन सर्वमन्त्राणांतदभिधानस्ययोग्यत्वात्॥ गृह्यभाष्येगदाधरेणगर्भाधानशान्तिप्रकरणे, आनोभद्रा इतिशुक्लयजुर्वेदस्य पञ्चविंशतितमेऽध्याये, आनोभद्रेत्यारभ्यै कादशेऽनुवाके दशमन्त्राउक्ताः। क्वचित्पध्दतौ, स्वस्तिनोमिमीता मिति पंचमंत्रा अपिउक्ताः, परञ्च विशेषतः, गढवालदेशे पुरातनपध्दतौएता त्पंचमंत्रान्हित्वा, यजुर्वेदस्यैव षट्त्रिंशदध्यायस्यप्रथमानुवाकस्य, दधीचिऋषिदर्शिताः पंचदशमंत्राः शान्तिपाठे सम्मिलिताः सन्ति, अतः पंचविंशतिमंत्रायजुः शाखिनां सर्वकर्म्मारम्भे मंगलप्रदा भवन्तीति शान्तिपाठे तद्दर्शनाच्चेति॥

॥ अथ यजुर्वेदीनां शान्तिपाठ मन्त्राः ॥

हरिः—ॐ आनोभद्राः क्रतवोयन्तुविश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः। देवानोयथा सदमिद्वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥ १॥ देवानांभद्रासुमतिर्ऋजूयतां देवाना ॐ रातिरभिनोनिवर्त्तताम्। देवाना ॐ सख्यमुपसे दिमावयंदेवानऽ आयुःप्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥ तान्पूर्व्वयानि विदाहूमहेव्वयं भगं मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्। अर्य्यमणंव्वरुण ॐ सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥ तन्नोव्वातोमयोभुव्वातु भेषजन्तन्माता पृथिवीतत्पिताद्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयो भुवस्तदश्विना शृणुतंधिष्ण्यायुवम्॥ ४॥ तमीशानंजगतस्तस्थुषस्पतिंधियंजिन्वमवसे हूमहेव्वयम्। पूषानोयथाव्वेद सामसद्वृधेरक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥ स्वस्तिनऽ इन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥ पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभंयाव्वा

नोऽविदथेषुजग्मयः ॥ अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वेनो देवाऽ अवसागमन्निह ॥ ७ ॥ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभि र्यजत्राः ॥ स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंय्यदायुः ॥ ८ ॥ शतमिन्नुशरदोऽअंतिदेवा यत्रानश्चक्रा जरसन्तनूनाम् ॥ पुत्रासोयत्रपितरो भवन्तिमानो मध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः ॥ ९ ॥ अदितिर्द्यौरदिति रन्तरिक्षमदितिर्म्मातासपितासपुत्रः ॥ विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जात मदितिर्ज्जनित्वम् ॥ १० ॥ ऋचंव्वाचंप्रपद्ये मनोयजुः प्रपद्येसामप्प्राणं प्रपद्येचक्षुःश्श्रोत्रंप्रपद्ये ॥ व्वागोजः सहौजोमयिप्राणापानौ ॥११॥ यन्मेच्छिद्रंचक्षुषो हृदयस्य मनसो व्वाति तृण्णम्बृहस्पतिर्म्मेतद्दधातु शन्नोभवतुभुवनस्ययस्पतिः ॥१२॥ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि । धियोयोनः प्रचोदयात् ॥१३॥ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठयाव्वृता ॥१४॥ कस्त्वासत्यो मदानाम ँ० हिष्ठो मत्सदन्धसः ॥ दृढाचि दारुजे व्वसु ॥१५॥ अभीषुणः सखीनाम विता जरितॄणाम् ॥ शतम्भवा स्यूतिभिः ॥१६॥ कयात्वन्न ऽ उत्याभिप्रमन्दसेवृषन् कयास्तोतृभ्य ऽ आभर ॥१७॥ इन्द्रोव्विश्वस्यराजति । शन्नो ऽ अस्तुद्विपदेशंचतुष्पदे ॥१८॥ शन्नोमित्रः शंव्वरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा ॥ शन्न ऽ इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो व्विष्णुरुरुक्रमः ॥१९॥ शन्नोव्वातः पवता ॐ शन्नस्तपतु सूर्य्यः ॥ शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो ऽ अभिवर्षतु ॥२०॥ अहानि शम्भवन्तुनः श ँ० रात्रीः प्रतिधीयताम् ॥ शन्न ऽ इन्द्राग्नीभवतामवोभिः शन्न ऽ इन्द्राव्वरुणा रातहव्या । शन्न ऽ इन्द्रा पूषणाव्वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंय्योः ॥२१॥ शन्नोदेवी रभिष्टय ऽ आपोभवन्तु पीतये । शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥२२॥ स्योना पृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्म्म सप्रथाः ॥२३॥ द्यौःशान्तिरन्तरिक्ष ँ० शान्तिःपृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्व ँ० शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सामा शान्ति

रेधि ॥२४॥ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रंतन्न ऽ आसुव ॥२५॥ ॥ इति यजुः शान्ति पाठः ॥

॥ अथ ऋग्वेदोक्त शान्ति पाठमंत्राः ॥

ऋ० अष्टक ४ अध्याय ३ कं० ७

हरिः ॐ ॥ स्वस्तिनोमिमीतामश्विनाभगः स्वस्तिदेव्यदितिरनर्वणः । स्वस्तिपूषाअसुरोदधातुनः स्वस्तिद्यावापृथिवी सुचेतुना ॥१॥ स्वस्तयेवायुमुपब्रवामहै सोमंस्वस्तिभुवनस्ययस्पतिः । बृहस्पतिं सर्वगणंस्वस्तये स्वस्तयआदित्यासो भवन्तुनः ॥२॥ विश्वेदेवा नोअद्यास्वस्तये वैश्वानरोवसुरग्निः स्वस्तये । देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तयेस्वस्तिनोरुद्रः पात्वंहसः ॥३॥ स्वस्तिमित्रावरुणा स्वस्ति पथ्येरेवति । स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्तिनोअदितेकृधि ॥४॥ स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्य्याचन्द्रमसाविव ॥ पुनर्ददता ऽ घ्नता जानतासङ्गमेमहि ॥५॥ स्वस्त्ययनंतार्क्ष्यमरिष्ट नेमिंमहद्भूतं वायसंदेवतानाम् ॥ असुरघ्नमिन्द्रसखंसमत्सुबृहद्यशोनावमिवारुहेम ॥ ६ ॥ अंहोमुंचमांगिरसंगयंचस्वस्त्यात्रेयंमनसाचतार्क्ष्यम् । प्रयतपाणिः शरणंप्रपद्येस्वस्तिसम्बाधेष्वभयन्नो अस्तु ॥ ७ ॥

इति ऋग्वेदोक्त स्वस्तिवाचनम् ॥

॥ अथगणेशपूजापध्दतिः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ कर्त्ताकर्म्मदिनेप्रातरुत्थायशुध्देवाससी परिधाय, सामग्रींसपाद्यपूर्वोदितेनविधिना आचमनदीपपूजन अर्घस्थापनादिकंकृत्वा नित्यकर्मचसमाप्य सर्वविघ्ननिवारणार्थं गणपतिपूजनंकुर्यात् ॥ हस्तेपुष्पंगृहीत्वा–ॐ सुमुखश्चैकदंतश्च कपिलोगजकर्णकः । लम्बोदरश्चविकटो विघ्ननाशोगणाधिपः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानिनामानियः पठेच्छृणुयादपि,। विद्यारम्भेविवाहेच प्रवेशेनिर्गमे, तथा। संग्रा-मेसंकटेचैव विघ्नस्तस्यनजायते। विघ्नवल्लीकुठारायगणाधिपत येनमः। वक्रतुंडमहाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ। अविघ्नंकुरुमेदेव सर्वकार्येषुसर्वदा,, पुष्पांजलिंगणेशसन्निधौ क्षिपेत्॥ ततोविष्णुं ध्यायेत्– ॐ शुक्लाम्बरधरंदेवं शशिवर्णंचतुर्भुजम्॥ प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये। लाभस्तेषांजयस्तेषां कुतस्तेषांपरा-जयः॥ येषामिंदीवरश्यामो हृदयस्थोजनार्दनः। तेषांनित्याभियु-क्तानां योगक्षेमंवहाम्यहम्। स्मृतेसकल कल्याणंभाजनंयत्र-जायते। पुरुषस्तमजंनित्यं, व्रजामिशरणंहरिम्॥ सर्वेष्वारम्भ कार्येषुत्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवादिशंतुनः सिध्दिं ब्रह्मविष्णु महेश्वराः॥ सर्वदासर्वकार्येषु नास्तितेषाममंगलम्॥ येषांहृदिस्थो भगवान्मंगलायतनोहरिः॥ तदेवलग्नंसुदिनं तदेवताराबलं चन्द्रबलंतदेव। विद्याबलंदेवबलंतदेव लक्ष्मीपतेतेऽङ्घ्रि युगंस्मरामि तत्रैवसमर्पयेत्॥ ततोगौरीं—ॐ सर्वमंगलमांगल्ये शिवेसर्वार्थ साधिके॥ शरण्येत्र्यंबकेगौरि नारायणिनमोस्तुते॥ इ० पु०स०॥ तिलकुशजलान्यादाय सँकल्पंकुर्यात्– ॐ नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय, श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वतमन्वंतरे, अष्टा विंशतिसंख्यके कलियुगेप्रथमचरणे द्वितीययामे तृतीये-दिवसे जंबूद्वीपे भरतखण्डेभारतवर्षे आर्यावर्त्तान्तर्गत पुण्यक्षेत्रेअनेक नदीसुशोभिते अनन्तशिवलिंगाद्यनेक॥ शक्ति विष्णुप्रतिमादिविराजिते, वदरिकारण्यांतर्गत उर्वशीक्षेत्रे केदारखंडान्तर्गत सुमेरोर्दक्षिणपार्श्वे, अलकनन्दा भागीरथीपिंडर कालीनदीनां (दक्षिणकूले वा वामकूलेऽथवामध्ये शुध्देऽमुक क्षेत्रे वाप्रदेशेऽथवास्वगृहे) षष्टिसंवत्सराणां मध्ये, अमुकनाम संवत्स रेअमुकायने, अमुकर्त्तौ, अमुकमासे, शुक्लेऽथवा कृष्णेपक्षे, अमुक तिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगयोः, अमुककरणे, मुहूर्त्ते, अमुकराशिस्थितेसूर्ये, अमुकराशिस्थितेचन्द्रे, भौमे, बुधे

गुरौ, भार्गवे, शनौ, राहौ, केतौ, यथाराशिस्थानस्थितेषु ग्रहेषु सत्सु, श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त चतुर्वर्गफलप्राप्तये, अमुकगोत्रोऽमुक राशि रमुक शर्मा वर्मा गुप्तो दासो वाहं करिष्यमाणामुक कर्मणो निर्विघ्नतासिद्ध्ये, तत्रादौभगवतोगणेशस्य, तथाकलशस्थापन वरुणपूजन पुण्याहवाचन, मातृकापूजनवसोर्द्धारानिपातन, नान्दी श्राद्ध, नवग्रहादीनां पंचोपचारेणवाषोडशोपचारेण पूजनंकरिष्ये॥ तत्रादौलिखितपट्टपीठे, रक्ताक्षतैर्वक्ष्यमाण मंत्रैरक्षतान्विकीर्य पंचोपचारविधिना, नवशक्तिपूजनंकुर्यात्—ॐ तीव्रायैनमः तीव्रा मावाहयामिस्थापयामि पूजयामि, एवंसर्वत्र॥ ॐ ज्वालिन्यैनमः ज्वालिनीं० । ॐ नन्दायैनमः, नन्दाम्० । ॐ भोगदायैनमः, भोगदाम्०॥ ॐ कामरूपिण्यैनमः। कामरूपिणीम्०। ॐ सत्यायैनमः, सत्यां० । ॐ उग्रायैनमः, उग्रां० । ॐ तेजोवत्यैनमः तेजोवतीम्०। ॐ मध्येविघ्नविनाशिन्यैनमः विघ्नविनाशिनीम्० । ॐ सर्वशक्तिकमलासनायनमः॥ इति पीठशक्ति पूजनं विधाय॥ हस्तेसरक्ताक्षत पुष्पंनिधाय, गणपत्यावाहनं कुर्यात्॥ ॐ एहि हेरम्बत्वमेह्येहि अंबिकात्र्यंबकात्मज। सिद्धि बुद्धि पतेत्र्यक्षलक्षलाभपितः पितः। नागस्य नागहारत्वं गणराजचतुर्भुज। भूषितः स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुशपरश्वधैः। आवाहयामि पूजार्थंरक्षार्थंच ममक्रतोः। इहागत्य गृहाणत्वं गजाकर्त्तुरक्षरक्षमे। आवाह्येवं गणेशंतंपूजाद्रव्यैः प्रपूजयेत्॥ प्रतिष्ठांकुर्यात्—ॐ एतन्तेदेव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेनयज्ञमवतेन यज्ञपतिंतेनमामव। मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमंतनो त्वरिष्टं यज्ञ ँ० समिमंदधातु। विश्वेदेवासऽइहमा दयंतामोंप्रतिष्ठ। इति प्रतिष्ठाप्य। स्थापनम्–ॐ गणानान्त्वेति प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपतिस्थापनेविनियोगः। ॐ गणानान्त्वागणपति ँ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ० हवामहे। निधीनान्त्वानिधिपति ँ० हवामहेव्वसोमम आहमजानिगर्भध मात्वमजा सिगर्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिंस्थापयामि, गणपतइहसुप्रतिष्ठि

तोवरदोभव॥ ॐ गणपतयेनमः। इति मूलमंत्रेणवापुरुषसूक्तेन पंचोपचारपूजनंकुर्यात्॥ इति पंचोपचारपूजनम् ॥ (वक्ष्यमाण पूजाप्रकारः स्मृतिकौस्तुभेषोडशोपचार विधिस्तुविष्णुपुराणोक्तः सश्चायम्॥) ध्यानम्—एकदंतंशूर्पकर्णंगजवक्त्रंचतुर्भुजम्। पाशां कुशधरंदेवं ध्यायेत्सिद्धिविनायकम्॥ आवाहनम्—विनायक नम-स्तेस्तुउमामलसमुद्भव। इमांमयाकृतां पूजांगृहाण सुरसत्तम॥ आसनम्—अनेकरत्नसंयुक्तं मुक्तादामविराजितम्। स्वर्णसिंहासनं चारुप्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्। पाद्यम्—पाद्यंगृहाणभगवन् दिव्यचन्दन मुत्तमम्। करुणाकरहेरम्ब गणाध्यक्षायतेनमः॥ अर्घ्यम्—गौरी प्रियनमस्तेस्तु शंकरप्रियसिद्धिद। गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वसिद्धि-प्रदायक॥ आचमनीयम्—गंगादितीर्थसलिलंस्वर्णकुंभेसमाहृतम्। उमापुत्र नमस्तेस्तुगृहाणाचमनीयकम्॥ मधुपर्कम्—विघ्नेश्वर विशालाक्ष सप्तार्णव विनोदन॥ मधुपर्कंगृहाणेदंमयासंपादितं विभो॥ पंचामृतस्नाम्—स्नानंपंचामृतं दिव्यंगृहाणद्विरदानन। अनाथनाथदेवेश सुरासुर सुपूजित॥ शुद्धोदकस्नानं—सर्वतीर्था त्समुध्दृत्य गंधतोयैः कुशोदकैः॥ फलतोयैर्जलैर्गन्धैः स्नापयामि गणेश्वरं॥ वस्त्रयुग्मम्—रक्तवस्त्रद्वयंदिव्यं देवतार्हं सुमंगलम्॥ सर्वप्रदं गृहाणेदं लम्बोदर हरात्मज॥ यज्ञोपवीतम्—राजतं ब्रह्म सूत्रंचकांचनस्योत्तरीयकम्। विनायकनमस्तेस्तुगृहाण सुरसत्तम॥ गंधम्—गंधंगृहाण भगवन्दिव्य चंदनमुत्तमम्। कर्पूरामलसंयुक्तं लंबोदरहरात्मज॥ अक्षताः—अक्षतान्धवलान्देवगृहाणद्विरदानन। अमराणामतिश्रेष्ठ, पद्मवासमतिप्रिय॥ पुष्पाणि—सुगन्धितानि पुष्पाणि नवदूर्वांकुराणिच। मयानीतानि पूजार्थंगृहाण भक्त वत्सल॥ धूपम्—दशांगंगुग्गुलंधूपंसुगंधि सुमनोहरम्। उमापुत्र नमस्तेस्तुगृहाणवरदोभव॥ दीपम्—गृहाणमंगलंदीपं घृतवर्तिस-मन्वितम्। दीपं ज्ञानप्रदंदेवरुद्रप्रियनमोस्तुते॥ नैवेद्यम्—पक्वान्नं

टि० प्रणवादि नमोन्तच चतुर्थ्यन्तश्च सत्तम। देवताया स्वकनाम मूलमत्र प्रकीर्तित।

मोदकंचैव दधिघृतसमन्वितं ॥ नैवेद्यंसफलंदत्तं गृहाना विघ्न नाशिने ॥ कराननशुध्यर्थंजलम्—विघ्नेश्वर गणाध्यक्ष भालचन्द्र नमोस्तुते ॥ कराननविशुध्यर्थ जलमेतद्गृहाणमे ॥ उपायनम्— हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमवीजं वीभावसोः । अनन्तपुण्यं फलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥ ततोनारिकेलयुतं सफलमर्घ्यं वामहस्ते धृत्वा तदुपर्युत्तानं दक्षिण हस्तं निधाय निवेदयत् ॥ ॐ रक्षरक्षगणाध्यक्ष रक्षत्रैलोक्यरक्षक, भक्तानामभयंकृत्वा त्राताभवभवार्णवात् ॥ द्वैमातुरकृपासिन्धो पाण्मातुरग्रजप्रभो ॥ वरदत्वंवरंदेहि वांछितंवांछितार्थद । अनेनफलदानेनफलदोस्तु सदामम । इदंफलंमयादेव स्थापितंपुरतस्तव । तेनमेसफलावाप्ति र्भवेज्जन्मनिजन्मनि ॥ फलमग्रतोनिधायार्घ्यं वारिणागणपतिंस्ना-पयेत् ॥ ततोद्वादशनाममंत्रैर्दूर्वांकुरयुग्मं गंधलिप्तंगृहीत्वा, प्रति-मंत्रान्तेसमर्पयेत्—ॐ गणाधिपतयेनमः दूर्वांकुरयुग्मंसमर्पयामि (एवंसर्वत्र) ॐ उमापुत्रायनमः । ॐ अघनाशिनेनमः ॐ एकद-न्तायनमः ॐ इभवक्त्रायनमः ॐ मूषकवाहनायनमः ॐ विना-यकायनमः ॐ ईशपुत्रायनमः ॐ सर्वसिध्दिप्रदायकायनमः ॐ कुमारगुरवेनमः ॐ चतुर्थीशायनमः ॐ सर्वविघ्नहरायनमः ॥ ततोनीराजनम्— ॐ अन्तस्तेजोवहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् । नीराजनमिदंदेव गृहाणमदनुग्रहात् ॥ पुष्पांजलिम्—विघ्नेश्वरा-यवरदाय सुरप्रियायलम्बोदराय सकलायजगद्धिताय । नागान-नाय श्रुतियज्ञविभूषितायगौरीसुताय गणनाथनमोनमस्ते । भक्त्यार्तिनाशनपराय गणेश्वराय । सर्वेश्वरायशुभदायसुरेश्वराय विद्याधरायविकटायच वामनाय । भक्तप्रसन्नवरदाय नमोनमस्ते । नमस्तेब्रह्मरूपाय विष्णुरूपायतेनमः । नमस्तेरुद्ररूपाय करिरूपा-यतेनमः । विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे । भक्तप्रियाय-देवाय नमस्तुभ्यंविनायक । त्वांविघ्नशत्रुदलनेतिच सुन्दरेति । भक्तिप्रदेतिसुखदेति फलप्रदेति । विद्याप्रदेत्यघहरेतिच येस्तुवंति तेभ्योगणेशवरदो भवनित्यमेव । लम्बोदरनमस्तुभ्यं सततंमोदक

प्रिय । अविघ्नंकुरुमेदेव सर्वकार्येषुसर्वदा ॥ इतिसमर्प्य प्रदक्षिणा१ त्रयं कुर्यात्—ॐ आखुवाहनदेवेश विश्वव्यापिन्सनातन । प्रदक्षिणां गृहाणेश ? ममत्वं सन्निधौभव । ततःप्रणामं२ कुर्यात्—ॐबाहुभ्यांच सजानुभ्यां शिरसावचसादृशा । अविघ्नार्थंमुमापुत्रं प्रणमामिमुहुर्मुहुः ॥

इति गणेशपूजापद्धति

अथ वरुणपूजा पद्धतिः ।

तत्रादौ भूमिस्पर्शे मन्त्रमाह—ॐमहीद्यौः पृथिवीच न इमं यज्ञं मिमिक्षतां पिपृतान्नो भरीमभिः ॥ अथयवप्रक्षेपः—ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सहराज्ञा यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्त ऺ० राजन्पारयामसि ॥ ततः कलशस्थापनं—ॐ आजिघ्रकलशं मह्यात्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्जा निवर्त्तस्वसानः सहस्रंधुक्ष्वोरु धारापयस्वतीपुनर्मा विशताद्रयिः ॥ ततो जलेनापूरणम्—ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋत सदन मासीद । ततो गन्धक्षेपणम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषीणीम् । ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ततः सर्वौषधिक्षेपणम्—ॐ याओषधीः पूर्वाजाता देवेभ्यस्त्रियुगंपुरा मनैनु बभ्रूणामह ऺ० शतं धामानि सप्तच ॥ ततः सप्तमृत्तिका—ॐ स्योनापृथिविनो भवान्नृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ ततो दूर्वाक्षेपणम्—ॐ कांडात्कांड त्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।

---

१ टि०—एक चण्ड्यां रवौसप्त त्रीणिदद्याद्विनायके । चत्वारिविष्णवेदद्यात् शिवस्यार्द्ध प्रदक्षिणम् ।

२ विष्णुकल्प लतायाम्—पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां उरसा शिरसादृशा ॥ वचसामनसा चेति प्रणामो ऽष्टांगईरित ॥

एवानो दृवें प्रतनु सहस्रेण शतेनच ॥ पञ्चपल्लवम्—ॐ अश्व-त्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता: ॥ गोभाज इत्किलासथ—यत्स नवथपूरुषम् ॥ ततः पूगीफलक्षेपणम्—ॐ याफली नीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणी । बृहस्पति प्रसूता स्तानोमुंचंत्व ई० हसः ॥ ततः पञ्चरत्नक्षेपणम्—परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्या न्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥ हिरण्यक्षेपणम्—ॐ हिरण्य-गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत् । सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥ वस्त्रम्—यद श्वायव्वासऽउपस्तृणंत्यधीवासं—याहिरण्यान्यस्मै ॥ सन्दानम-र्वन्तं पड्वीशं प्रियादेवेष्वायामयन्ति । ततो धान्यपूर्णं पुटकं कलशोपरिस्थापनम्—ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जं ई० शतक्रतो—तदुपरिश्रीफलम्—ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्वि-नौव्यात्तम् । इष्णन्निषाण मुम्मइषाण सर्व्वलोकम्मइषाण ॥ ततो वरुणमावा हयेत्—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमान-स्तदाशास्ते—यजमानो हविर्भिः । अहेड मानो वरु-णेहबो ध्युरुश ई० समानऽआयुः प्रमोषीः ॥—ततः प्रतिष्ठापयेत्— ॐ एतन्तेदेव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतयेब्रह्मणे तेनयज्ञमवतेनयज्ञपतिंतेनमामव । मनोजूतिर्जुषतामाजस्य बृह-स्पतियज्ञमिमं तनोत्वरिष्टंयज्ञई० समिमंदधातुव्विश्वेदेवासऽइहमा दयंतामोंप्रतिष्ठ ॥ ॐभूर्भुवःस्वः वरुणेहागच्छेहतिष्ठप्रसुतिष्ठितो-भव ॥ आसनं—आसनंचमहद्दिव्यं रञ्जितंचमनोहरम् । अपांपति गृहाणत्वं ममसौख्यंविवर्धय ॥ पाद्यम्—कवोष्णमुदकंदिव्य मष्ट-गन्धसमन्वितम् । पाद्यंगृहाणदेवेश, वरुणायनमोनमः ॥ अर्घ्यम्—गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तं दूर्वादधिसमन्वितम् । अर्घ्यंगृहाणवरुण सर्व-सिद्धिप्रदोभव ॥ पञ्चामृतम्—सशर्करंदधिक्षौद्रं पयोघृतसमन्वितम् पञ्चामृतंगृहाणेश जलाधिपनयेनमः ॥ स्नानम्—सुशीतलंनिर्मलंच श्रीगङ्गालकनन्दयोः । वारिगन्धसमायुक्तं स्नानार्थंप्रतिगृह्यताम् ॥

गन्धम्—श्रीखण्डंचन्दनंदिव्यं केशरेणसुरञ्जितम् । ददामिभाल-शोभार्थं वरुणायनमोनमः ॥ अक्षतम्—अक्षतान्श्वेतवर्णाभां स्ताङ्-लान्सुमनोहरान् ॥ वरुणत्वंगृहाणो तान्मम शान्तिकरोभव ॥ पुष्पाणि—ऋतुजानिसुपुष्पाणि यथालब्धानिवैप्रभो । निवेदयामि जलपसर्वसौख्यंविवर्धय ॥ धूपम्—वनस्पतिरसोत्पन्नं गन्धाढ्यम्, सुमनोहरम् । धूपंगृहाणवरुणसर्वसम्पत्करोभव ॥ दीपम्—घृता-क्तवर्त्तिकायुक्तं वन्हिनादीपितंप्रभो । गृहाणमङ्गलंदीपं रत्नाकर-गृहाधिप ॥ नैवेद्यम्—अन्नंचतुर्विधं स्वादुनानाव्यञ्जनसंयुतम् । निवे-दयामिनैवेद्यं स्वात्मकल्याणहेतवे ॥ नैवेद्यान्तेजलम्—करानननविशु ध्यर्थं नैवेद्यान्तेजलंप्रभो । गृहाणपरयाभक्त्याजलेशायनमोनमः ॥ उपायनम्—हिरण्यंताम्रखण्डवा राजतंयन्मयार्पितम् । उपायनं गृहाणेश सर्वसम्पत्करोभव ॥ ततःपुण्याहवाचनार्थं कलशेदेवता-आवाहयेत् ॥ ॐ कलशस्यमुखेविष्णुः कण्ठेरुद्रःसमाश्रितः । मूले तस्यस्थितोब्रह्मा मध्येमातृगणाःस्मृताः ॥ कुक्षौतुसागराः सप्त सप्त-द्वीपावसुन्धरा । ऋग्वेदोथयजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः ॥ अंगैश्च सहिताः सर्वेकलशन्तुसमाश्रिताः ॥ अत्रगायत्रीसावित्रीशान्ति-पुष्टिकरीतथा ॥ आयान्तुममशान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ सर्वे-समुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः ॥ आयान्तुममशान्त्यर्थं दुरित क्षयकारकाः ॥ ततोहस्तौसम्वाह्य कलशंप्रार्थयेत्—देवदानवसंवादे मथ्यमानेमहोदधौ ॥ उत्पन्नोसितदाकुम्भ विधृतोविष्णुनास्वयम् त्वत्तोयेसर्वतीर्थानिदेवाः सर्वेत्वयिस्थिताः ॥ त्वयितिष्ठन्तिभूतानि त्वयिप्राणाःप्रतिष्ठिताः ॥ शिवःस्वयंत्वमेवासि विष्णुस्त्वञ्चप्रजा-पतिः । आदित्यावसवोरुद्रा विश्वेदेवाःसपैतृकाः ॥ त्वयितिष्ठन्ति सर्वेपियतःकामफलप्रदः । त्वत्प्रसादादिमंयज्ञं कर्त्तुमीहेजलोद्भव ॥ सान्निध्यंकुरुदेवेश प्रसन्नोभवसर्वदा ॥ नमोनमस्तेस्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय । सुपाशहस्तायझषासनाय जलाधिनाथाय नमोनमस्ते ॥ पाशपाणेनमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक ॥ पुण्याह-वाचनंयावत्तावत्त्वंसन्निधोभव ॥ इतिवरुण कलशपूजा पद्धतिः ॥

अथ पुण्याहवाचन पद्धतिः ।

तत्रादौस्मार्त्ताचमनंकृत्वा पूर्वोक्तविधिनाऽर्घ्यं संस्थाप्य ब्राह्मणानपिसंस्थाप्य, सङ्कल्पंकुर्यात् ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माऽहं, अमुककर्मणि सर्वा भ्युदयप्राप्तये ब्राह्मणद्वारापुण्याहंवाचयिष्ये, तदङ्गतयाब्राह्मणानां पूजनंवरणाञ्चकरिष्ये ॥ वरणद्रव्यंसम्पूज्य, ब्राह्मणेभ्योऽर्घंदद्यात्- ॐभूमिदेवाग्रजन्मासि त्वंविप्रपुरुषोत्तम । प्रत्यक्षोयज्ञपुरुषोह्यर्घो ऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ इतिमन्त्रेण प्रथक्प्रथक् ब्राह्मणहस्तेषुदत्वा पूजयेत् ॥ ॐगन्धद्वारेतिगन्धम्०, ॐनमोस्त्वनन्ताय० ॥ अक्षत पुष्पादिभिःसम्पूज्य वरणंकुर्यात्—अद्यपूर्वोचारित० अमुकोऽहम- मुककर्मणिएभिर्गन्धाक्षत, पुष्प, पूगीफलद्रव्यैः सर्वाभ्युदयप्राप्तये पुण्याहवाचनार्थं, अमुकगोत्रंअमुकशर्माणं ब्राह्मणंत्वामहंवृणे । वृतोऽस्मीतिब्राह्मणोब्रूयात् ॥ एवंसर्वान्वृत्वा अञ्जलिंबध्वाप्रार्थयेत् ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनआवः । सबु- ध्न्याऽउपमाऽस्यविष्ठाःसतस्य योनिमसतश्चव्विवः । ततोयज मानोऽवनिकृतजानुमण्डलः कमलमुकुलसदृश मञ्जलिंसिरस्याधा- य दक्षिणेनपाणिना सुवर्णपूर्णकलशं धारयित्वाङ्गानिस्पृशेत् । शिरसिमेसौभाग्यमस्तु, मस्तकेश्रीःकान्तिरस्तुचक्षुषोः सुतेजोऽस्तु श्रोत्रयोः श्रवणेन्द्रियमस्तु बाह्वोर्मेबलमस्तु । तत आशिषःप्रार्थयेत् ॥ प्रार्थनामाह—यजमानोवारत्रयंब्रूयात्—एताःसत्याआशिषःसन्तु । ब्राह्मणाः, वारत्रयंब्रूयुः ॥ सत्याः सन्तु ॥ ३ ॥ ॐदीर्घानागा नद्योगिरयस्त्रीणिविष्णुपदानिच । ॐत्रीणिपदाविचक्रमेविष्णुर्गोपा ऽअदाभ्यः । अतोधर्माणिधारयन् ॥ तेनायुष्यमाणेन पुण्यंपुण्याहं दीर्घमायुरस्तु । इतिभवन्तोब्रुवन्तु, इति यजमानो वारत्रयं ब्राह्म- णानब्रूयात् ब्राह्मणाः—ॐ पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु । इतिवारत्रयं ब्रुवन्तु—(एवंसर्वत्र यजमान ब्राह्मणोक्तिः) यज०—ब्राह्मणानां हस्तेषु सुप्रोक्षितमस्तु, ब्राह्म०—अस्तुसुप्रोक्षितम् । ॐ अपां

मध्येस्थिनादेवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम् । ब्राह्मणानां करेन्यस्ताः शिवा आपो भवन्तुते ॥ यज०—ॐ शिवा आपः सन्तु । ब्रा० ॐ सन्तु शिवा आपः । यज०—सौमनस्यमस्तु । ब्रा०—अस्तुसौमनस्यम् ॥ य०—अक्षतं चारिष्टंचास्तु । ब्रा०—अस्त्वक्षतमरिष्टंच । य०—गन्धापान्तु सौमङ्गल्यं चास्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु । ब्रा०—गन्धापान्तु सौमङ्गल्यंचास्तु । य०—अक्षतापान्तु आयुष्यमस्तु । ब्रा०—अक्षताः पान्तु आयुष्यमस्तु । य०—पुष्पाणि पान्तुसौश्रियमस्तु । ब्रा०—पुष्पाणिपान्तु सौश्रियमस्तु । य०—ताम्बूलानि पान्तु ऐश्वर्यमस्तु । ब्रा०—ताम्बूलानि पान्तु ऐश्वर्यमस्तु । य०—दक्षिणा पान्तु बहुदेयंचास्तु । ब्रा०—दक्षिणापान्तु बहुदेयंचास्तु । य०—दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टि स्तुष्टिः श्रीर्यशोविद्या विनयोवित्तं बहुपुत्रत्वं चायुष्यंचास्तु । ब्रा०—ॐ तथास्तु ॥ [अत्र सर्वत्र ब्राह्मणैरस्त्विति प्रत्युत्तरं देयमितिगदाधरः] यजमानः—यंकृत्वा सर्ववेदयज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्त्तन्तेतमहमोंकारमादि कृत्वा ऋग्यजु सामा थर्वाशीर्वचनं बहुऋषिसम्मतं सम्विज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये । ब्रा०—वाच्यताम् ॥ यजुः—ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयामदेवाभद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥१॥ देवानांभद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ॐ रातिरभिनो निवर्त्तताम् । देवाना ॐ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवानऽआयुः प्रतिरन्तुजीवसे ॥२॥ नतद्रक्षा ॐ सि नपिशाचा स्तरन्ति देवाना मोजः प्रथमज ॐ ह्येतत् । योविभर्त्ति दाक्षायण ॐ हिरण्य ॐ सदेवेषु कृणुते दीर्घमायुः समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥३॥ दीर्घा युस्तऽओषधे खनितायस्मैचत्वा खनाम्यहम् ॥ अथोत्वंदीर्घायुर्भूत्वा शतव्वल्शाविरोहतात् ॥४॥ द्रविणोदाः पिपीपति जुहोत प्रचतिष्ठत । नेष्ट्राहतुभिरिष्यत ॥ ५ ॥ ऋक्—ॐ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत ।

द्रविणोदान्वीरवती मिषन्नोद्रविणोदारासते दीर्घमायुः ॥ १ ॥ सवितापश्चात् सवितापुरस्तात् सवितोत्तरात्तात् सविताऽधरा॰ त्तात्। सवितानःसुवतुसर्वतातिंसवितानोरासतां दीर्घमायुः॥ २ ॥ नवोनवोभवति जायमानोऽह्नांकेतुरुषसामेत्यग्रम् । भागंदेवेभ्यो विदधात्यायं प्रचन्द्रमास्तिरतेदीर्घमायुः ॥ ३ ॥ उच्चादिविदक्षि॰ णावन्तोऽअस्युर्येऽअश्वदाः सहृतेसूर्येण। हिरण्यदाऽअमृतत्वम्भजंते वासोदाः सोमप्रतिरन्तआयुः॥ साम—ॐआपउन्दन्तुजीवसे दीर्घा॰ युत्वायवर्च्चसे। यस्त्वाहृदाकीरिणा मन्यमानोमर्त्त्यंमर्त्योजोह॰ वीमि। जातवेदोयशोअस्मासुधेहिप्रजाभिरग्ने ऽअमृतत्वमश्या। यस्मैत्वंसुकृतेजातवेदउलोकमग्नेऽकृणवस्योनम् ॥ अश्विनंसपुत्रिणं वीरवन्तंगोमन्तंरयिन्नुशलेस्वस्ति ॥ यजमानोक्तिः—व्रतजपनियम तपः स्वाध्यायक्रतुशमदमदयादान विशिष्टानांसर्वेषांब्राह्मणानांमनः समाधीयताम् ॥ ब्राह्मणाब्रूयुः—प्रसन्नाःस्मः ॥ य०—ॐशान्तिरस्तु। ब्रा०—ॐ अस्तु । य०—ॐपुष्टिरस्तु। ब्रा०—ॐअस्तु । ॐतुष्टिरस्तु। [ब्राह्मणाएवंसर्वत्रोत्तरत्रओं, अस्त्विति ब्रूयुः] य०-ॐ वृद्धिरस्तु। ॐअविघ्नमस्तु। ॐआयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐशिवकर्मास्तु। ॐकर्मसमृद्धिरस्तु। ॐवेदसमृद्धिरस्तु । ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐपुत्रपौत्रसमृद्धिरस्तु। ॐधनधान्य समृद्धि रस्तु। ॐइष्टसम्पदस्तु। ततोऽक्षतान् वक्ष्यमाणमन्त्रोच्चारणान्ते वहिःक्षिपेत्—ॐअरिष्टनिरसनमस्तु। ॐयत्पापंरोगंशोकमकल्याणं तद्दूरेप्रतिहतमस्तु ॥ अत्रोदकस्पर्शः। [ततोऽन्तर्देशेऽक्षतानक्षिपेत्] ॐयच्छ्रेयस्तदस्तु । ॐ उत्तरेकर्मण्यविघ्नमस्तु । ॐउत्तरोत्तरम हरहरभिवृद्धिरस्तु । ॐउत्तरोत्तराःक्रियाःशुभाःशोभनाः सम्प॰ द्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु ॥ ॐ तिथि करणमुहूर्त्तनक्षत्र ग्रहलग्नाधिदेवताःप्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्त्तेसनक्षत्रेसग्रहे सलग्ने सदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापांचा॰ ल्यौप्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाविश्वेदेवाःप्रीयन्तां। ॐ इन्द्र॰

पुरोगा मरुद्गणाःप्रीयन्ताम् । ॐ वशिष्ठपुरोगाः ऋषिगणाः प्रीय न्ताम् ॥ ॐ माहेश्वरीपुरोगाः उमामातरःप्रीयन्ताम् । ॐ अरु-न्धतीपुरोगाएकपत्न्यः प्रीयन्ताम् ॥ ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः-प्रीयन्ताम् । ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयन्ताम् । ॐ ब्रह्मच ब्राह्मणाश्चप्रीयन्ताम् । ॐ श्रीसरस्वत्यौप्रीयेताम् । ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम् ॥ ॐ भगवतीकात्यायनीप्रीयतां । ॐ भगवतीमाहे श्वरीप्रीयताम् । ॐ भगवतीऋद्धिकरीप्रीयताम् । ॐ भगवती पुष्टिकरीप्रीयतां । ॐ भगवतीतुष्टिकरीप्रीयताम् । ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् । ॐ सर्वाःकुलदेवताःप्रीयन्ताम् । ॐ सर्वाग्रामदेवताः प्रीयन्तां ॥ पुनरक्षतान्वहिःक्षिपेत्–ॐ हताश्च ब्रह्मविद्विषः । ॐ हताश्चपरिपन्थिनः–ॐ हताअस्यकर्मणोविघ्न कर्त्तारः । ॐ शत्रवः पराभवंयान्तु । ॐ शाम्यन्तुघोराणि । ॐ शाम्यंतपापानि । ॐ शाम्यन्त्वीतयः । पुनरपःस्पर्शः । पुनरक्षता नन्तर्देशेक्षिपेत् । ॐ शुभानिवर्द्धन्तां । ॐ शिवा आपःशन्तु । ॐशिवाःऋतवःसन्तु । ॐ शिवाअग्नयःसन्तु । ॐ शिवाआहु-तयःसन्तु । ॐ शिवाओषधयःसन्तु । ॐ शिवावनस्पतयःसन्तु । ॐ शिवाअतिथयःसन्तु । ॐ अहोरात्रेशिवेस्याताम् । ॐ निकामे निकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयःपच्यन्तांयोगक्षे-मोनः कल्पंताम् ॥ १ ॥ ॐ निकामेनिकामेनः प्रजन्योवर्षत्विति निकामेनिकामेवै तत्रपर्जन्यो वर्षतियत्रैतेन यज्ञेनयजन्तेफलवत्योन ऽओषधयःपच्यन्तामितिफलवत्यौवै तत्रौषधयः पच्यन्तेयत्रैतेन यज्ञेनयजन्तेयोगक्षेमोनः कल्पतामितियोगक्षेमोवै तत्रकल्पते यत्रैते यज्ञेनयजन्तेतस्माद्यत्रैतेनक्लृप्तः प्रजानांयोगक्षेमोभवति ॥ ॐ शुक्राङ्गारकबुधबृहस्पतिशनैश्चर राहुकेतु सोमसहिता आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाःप्रीयन्ताम् । ॐ भगवान्पर्जन्यःप्रीयताम् । ॐ भगवन्नारायणःप्रीयताम् ॐ भगवान्स्वामी महासेनःप्रीयतां । यजमानः—ॐ पुण्यंपुण्याहकालान्वाचयिष्ये । ब्राह्मणाब्रूयुः—

वाच्यतां । ॐ ब्राह्मंपुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकं । वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहंब्रुवन्तुनः ॥ यजमानोक्तिः—भोब्राह्मणाममगृहे ऽद्यकरिष्यमाणामुककर्मणि । ॐ पुण्याहंभवन्तोब्रुवन्तु । ततो ब्राह्मणाः—ॐ पुण्याहम् । मन्दस्वरेण १ ॐ पुण्याहम् । मध्यमस्वरेण ॐ पुण्याहम् । उच्चस्वरेणवारत्रयं ब्रूयुरेवमग्रेऽपि ॥ ॐ पुनन्तु- मादेवजनाःपुनन्तुमनसाधियः । पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः- पुनीहिमा ॥ ॐ उद्गातेवशकुने सामगायसि ब्रह्मपुत्रइवसवनेषु शंससि । वृषेवचाजीशिशुमतीरपीत्यासर्वतोनःसकुने । भद्रमावद विश्वतोनःशकुनेपुण्यमावद ॥ ब्रा०—ॐ पुण्याहसमृद्धिरस्तु ॥ ३ ॥ यजमानोक्तिः—पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणंपुराकृतम् । ऋषि- भिःसिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणंब्रुवन्तुनः ॥ भो०—ब्राह्मणाः अ०क० कल्याणं भवन्तोब्रुवन्तु ३ । ब्रा०—ॐ कल्याणम् ॥ ३ ॥ ॐ यथे- मांवाचंकल्याणी मावदानिजनेभ्यः ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्राय- चार्य्यायच स्वायचारणायच ॥ प्रियोदेवानांदक्षिणायैदातुरिहभूया समयम्मेकामःसमृद्ध्यताम् ॥ ब्रा०—ॐकल्याणसमृद्धिरस्तु ।३। यज मानः—ॐ सागरस्यतुयाऋद्धि र्महालक्ष्म्यादिभिःकृता । सम्पूर्णा सुप्रभावाचतांचऋद्धिंब्रुवन्तुनः । भोब्राह्मणाममगृहेऽमुककर्मणि- ऋद्धिंभवन्तोब्रुवन्तु ।३। ब्रा०—ॐ ऋध्यताम् ॥ ३ ॥ ॐसत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम । दिवंपृथिव्याऽअध्याऽरुहामा विदामदेवान्स्वर्ज्योतिः ॥ ॐ ऋध्यामस्तोमं सनुयामवाजमानो मंत्रंसरथेहोपयातम् । यशोनपक्वंमधुगोष्वन्तरा भूतांशोअश्विनोः काममप्राः ॥ ब्रा०—ॐ ऋद्धिसमृद्धिरस्तु ॥ ३ ॥ ॐ स्वस्ति- स्तुयाऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा । विनायकप्रियानित्यं, तांचस्वस्तिंब्रुवन्तुनः । भो ब्राह्मणाममगृहे० स्वस्तिंभवन्तोब्रुवन्तु ।३। ब्रा०—ॐआयुष्मतेस्वस्ति ॥ ३ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनःपूषाविश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ स्वस्तिनोमिमीतामश्विनाभगः स्वस्ति- देव्यदितिरनर्वणः । स्वस्तिपूषाअसुरोदधातुनः स्वस्तिद्यावा

पृथिवीसुचेतुना ॥ ब्रा०—ॐ आयुष्मतेस्वस्तिरस्तु ।२। ॐ समुद्र-मथनोत्पन्ना जगदानन्ददायिनी । हरिप्रियाचमाङ्गल्यातांश्रियश्च ब्रुवन्ततुंनः ॥ भो ब्राह्मणाः, ममगृहेऽमुककर्मणिसकुटम्बस्य सपरि-वारस्यश्रियंभवन्तोब्रुवन्तु ३ ब्राह्मणाः ॐ श्रीरस्तु ॥ ३ ॥ ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्या त्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ ॐ श्रिये जातः श्रियआ निरियायश्रियंवयोजरितृभ्योदधाति । श्रियंव्वसा-नाऽअमृतत्वमायन्भवन्तिसत्यासमिथामितद्रौ॥ ब्रा०—ॐ श्रीरस्तु

ततः सुवर्णपूर्ण कलशं भूमौस्थापयित्वा तज्जलेन सपत्निपुत्रसहितं यजमानं ब्राह्मणा आम्रादि पल्लवैरभिषेक मन्त्रै रभिषिचयेयुः ॥ अभिषेक विधिरग्रेवक्ष्यते ॥ ततोयजमानः सदक्षिणामान्नानि प्रोक्षयित्वा, पूर्वपूजित ब्राह्मणेभ्योनमः सम्पूज्यच । संकल्पः कार्यः—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्य, अमुकराशिरमुकोहं ममामुक-कर्मणि कारितस्य ब्राह्मण द्वारा पुण्याहवाचन कर्मणः सांगफला वाप्तयेइमानिसोपस्कराणि सदक्षिणान्यामान्नानि - प्रजापति दैव-तानि यथानामगोत्रेभ्यः पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य-दातुमहमुत्सृजे ॥ इतिदत्वाप्रार्थयेत्—अस्मिन्पुण्याहवाचने न्यूना तिरिक्तोयोविधिः सउपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात्परिपूर्णोस्त्विति भवन्तोब्रुवन्तु । ॐ परिपूर्णोऽस्तुविधिः ॥

॥ इति पुण्याहवाचनम् ॥

अथ यजमानस्य नीराजनम् ॥

कश्चित्तैजसेपात्रे घृताभ्यक्तां ज्वलन्तींवर्त्तिकां संस्थाप्य, तत्रपात्रे गन्धाक्षतदधिहरिद्रासहितं पूगीफलंच संस्थाप्य, ब्राह्मणोयजमानं नीराजयेत्–ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहाः सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। सूर्य्योवर्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्योज्योतिः स्वाहा ॥ ततो तिलकं कुर्यात्–ॐ भद्रमस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु ॥ रक्षन्तुत्वांसुराः सर्वेसम्पदः सन्तु सुस्थिराः ॥ तत आशिषं दद्यात्–ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमदुच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ पुण्याहवाचनात्सर्वं कल्याणमस्तुतेगृहे। कीर्तिवीर्यान्वित्वोभूत्वा जीवत्वं शरदांशतम् ॥ ततो ब्राह्मणाय दक्षिणां दद्यात् ॥ इति नीराजनम्–

अथ षोडश मातृका पूजापद्धतिः।

अथच पूर्वोक्तमातृका पूजा परिभाषा प्रकारेण (पंचोर्ध्वाः पंचतिर्य्यक् च रेखाः कार्याः प्रयत्नतः) षोडशमातृकायंत्रं सिन्दूर कंकुमादिना पट्टेलिखित्वा दूर्वाभिर्विभूष्यवक्ष्यमाण विधिनास्थापयेत्पूजयेच्च ॥ संकल्पं कुर्यात्–अद्यपूर्वोच्चारित, अमुक गोत्रोऽमुकराशिरमुकोऽहं अमुककर्मणः पूर्वाङ्गत्वेन सर्वाभ्युदय प्राप्तये पीठे लिखितासु प्रतिमासु गणपतिसहितगौर्य्यादि षोडशमातृणां पूजनं करिष्ये ॥ तत्रादौ मध्य चतुष्कवायव्य कोणेगणेशमावाहयेत्। अक्षतपुष्पैः–मध्येतु मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरंसदा। त्रैलोक्यपूजितं देवं गणेशंस्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशेहागच्छेहतिष्ठ। मध्य नैर्ऋत्ये गौरीम्–हिमाद्रितनयांदेवींवरदां शङ्कर प्रियाम् ॥ लम्बोदरस्यजननीं गौरीमावा हयाम्यहम् ॥ ॐ

भू० गौरीहागच्छेहतिष्ठ। मध्याग्नेयाम् पद्माम्—सुवर्णाभांपद्म हस्तां विष्णोर्वक्षस्थलस्थिताम् ॥ त्रैलोक्यपूजितां देवीं पद्मामावा ह्याम्यहम् ॥ ॐ भू० पद्मेइहागच्छेहतिष्ठ ॥ ततो वायव्यसन्नि- हित पश्चिमे प्रथमकोष्ठे वाह्येशचीम्—दिव्यरूपां विशालाक्षींशुचि कुण्डलधारिणीम्। देवराजप्रियां भद्रांशचीमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भू० शचीहागच्छेहतिष्ठ। पश्चिमे द्वितीयकोष्ठे मेधां—वैवस्व त्कृतफुल्लाब्ज तुल्याभांपद्मवासिनीम्। बुद्धिप्रसादिनींसौम्यां मेधामा वाहयाम्यहम् ॥ ॐ भू० मेधे इहा० ॥ ततोनैर्ऋत्यसन्निहितदक्षिणे प्रथमकोष्ठेसावित्रीम्—जगत्सृष्टिकरींधात्री रूपेणचव्यवस्थितां। ॐ काराख्यां भगवतींसावित्रीमाह्वयाम्यहम् ॥ ॐ भू० सावित्रि० ॥ ततो द्वितीयकोष्ठे दक्षिणे विजयाम्—विष्णुरुद्रार्क देवानांसर्वदाविजयप्रदाम् ॥ त्रैलोक्यवासिनींदेवीं विजयामाह्वया म्यहम् ॥ ॐ भूर्भवःस्वः विजये, इहागच्छेहतिष्ठ ॥ तत ईशान सन्निहिते प्रथमकोष्ठेउत्तरेजयाम्—दैत्यरक्षःक्षयकरीं देवानामभय प्रदां। त्रैलोक्यवन्दितांदेवीं जयामावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भू० जये उत्तरेद्वितीयकोष्ठेदेवसेनाम्—मयूरवाहनांदेवीं शक्तिखड्गधनुर्ध- राम् ॥ आवाहयेदेवसेनां तारकासुरमर्दिनीम् ॥ ॐ भू० देवसेने ईशानेस्वधाम्—कव्यमादायसततं पितृभ्योयाप्रयच्छति। पितृ- लोकार्चितांदेवीं स्वधामावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भु० स्वधे० ॥ आग्नेयांस्वाहाम्—हविर्गृहीत्वासततंदेवेभ्योयाप्रयच्छति । वन्हि प्रियाचयादेवी स्वाहांतामाह्वयाम्यहम् ॥ ॐ भू०स्वाहे हागच्छेह तिष्ठ ॥ ततईशान सन्निहितेप्रथमकोष्टेमातः—भूतग्राममिमंकृत्स्नं याभिरुत्पादितंपुरा ॥ त्रैलोक्यपूजितादेवी मातृरावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भू० भोकीर्त्यादित्रयोदशगृहमातरः, इहागच्छत, इहातिष्ठत ॥ पूर्वेद्वितीयकोष्टेलोकमातृः—आवाहयेलोकमातृर्जगत्पालनसंस्थिताः शक्राद्यैरर्चितादेवीः स्तोत्रैराराधनैस्तथा ॥ ॐ भु० भोब्राह्म्यादि सप्तलोकमातरः, इहागच्छत,इहतिष्ठत ॥ ततोवायव्येधृतिंपुष्टिंच— नमस्तुष्टि करीं देवीं लोकानुग्रह कर्म्मणि। सर्वकार्य सम्-

ध्यर्थं धृतिमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ भू० धृते० ॥ तत्रैव पुष्टिम्—आवाहयाम्यहं पुष्टिं जगद्विघ्न विनाशिनीम् कार्यपुष्टि करीं देवीं रक्षणायाध्वरस्यच ॥ ॐ भू० पुष्टि० । ततो नैर्ऋत्येतुष्टिम्—आवाहयाम्यहं तुष्टिं विद्युदुज्वल कुण्डलाम् ॥ धर्मतुष्टिकरीं देवीं यजरक्षणहेतवे ॥ तत आभ्यन्तरईशानकोष्टे कुलदेवीं—आवाहयामि त्वां मातर्वंशरक्षार्थमध्वरे । सर्वसिध्दि प्रदांमायां कुलदेवीं प्रपूजये ॥ ॐ भू० अमुकिकुलदेवि, इहागच्छेहतिष्ठ । ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य,, ॐ भूर्भुवःस्वः गणेशसहिताः गौर्यादि मातरः, लोक मातरः, गृहमातरः, सुप्रतिष्ठिता भवन्तु, चिरमिहतिष्ठन्तु वरदा भवन्तुच ॥—ॐ गणपति सहित गौर्यादि मातृभ्योनमः इति मन्त्रेण,, पाद्यं समर्पयामिवोनमः ॥ स्नानीयंजलम्० । वस्त्रं० चन्दनम्० पुष्पाणि० । धूपं० । दीपं० । नैवेद्यम्० । दक्षिणाम्० ॥ पूजनंविधाय, वसोर्धारा संकल्पंकुर्यात्—अद्ये० अमुकोहं, अमुक कर्मणि, सर्वाभ्युदय प्राप्त्यये गणपति सहित गौर्यादि—मातॄणा मुपरि गुडघृताभ्यां वसोर्धाराः पातयिष्ये ॥ ततः पात्रे सगुडघृतं द्रवीभूतं कृत्वा—पट्टलिखित मातॄणामुपरि पञ्चसप्तवा वसोर्धाराः पातयेत्—ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सवितापुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेणसुप्वाः कामधुक्षः ॥ ॐ आज्यं यतोस्तिदेवानामशनं मङ्गलात्मकम् । ततो मातॄः समुद्दिश्यघृतधारा ददाम्यहम् ॥ इतिमन्त्राभ्यां (कुड्यस्तम्भसुसंलग्ना मातॄणामुपरिस्थिताः ॥ कारयेत्पञ्चतिस्रोवा सप्तवोदङ्मुखस्थिताः) इतिधाराः पातयित्वा तच्छेषघृतं यजमानः स्वशिरसि लिम्पेत् ॥ [केचिदत्रघृत मातॄणामपि पूजनंकुर्वन्ति तद्यथाध्यायेत्—ॐ श्रीश्चलक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिः प्रज्ञा सरस्वती । मांगल्येषु प्रपूज्यन्तेसप्तैता घृत मातरः । ॐ श्रियैनमः । ॐ लक्ष्म्यैनमः । ॐधृत्यैनमः । ॐ मेधायैनमः । ॐ पुष्ट्यैनमः । प्रज्ञायैनमः । ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ इति नाममन्त्रैः पाद्यादिभिः सम्पूज्य ॥ वसोर्धारा

पूजनंकुर्यात् ॥ ॐ वसोर्धारादेवताभ्योनमः ॥ इति मूल-मन्त्रेण सम्पूज्य—ततो नीराजनम्—कर्पूरंनिर्मलं दिव्यं वन्हि-नादीपितंमया । नीराजनं प्रगृह्णीतयूयं सर्वाश्चमातृकाः ॥]
ततः क्रमशः पुष्पांजलि दद्यादादौ गणपतिम्—मध्येतुमातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरंसदा । त्रैलोक्यपूजितं देवं गणेशं प्रणमाम्यहम् ॥ ततो गौर्यादीः—ॐ गौरीं पद्मां शचीं मेधां सावित्रीं विजयांजयाम् । देवसेनांस्वधांस्वाहां मातृश्च लोकमातृकाः ॥ धृतिं पुष्टिं तथा तुष्टिं आत्मनः कुलदेवताम् । प्रार्थयामिसदाभक्त्या वृध्दिश्राध्द समृध्दये ॥—ततो गृहमातृः—कीर्तिःकीर्तिकरी समृध्दिकरणी लक्ष्मीर्धृतिर्धैर्यदा, मेधाधीकरणीच पुष्टिरमला श्रध्दाक्रियावामतिः । लज्जाविघ्नहरणीच शान्तिशरणी तुष्टिश्च कान्तिस्तथा, वन्देहं गृह-मातृकार्गृहपतेः सौभाग्य सौख्याप्तये ॥ ततोलोकमातृः—ॐ ब्राह्मींमाहेश्वरींचैव कौमारींवैष्णवींतथा ॥ वाराहींच तथे-न्द्राणींचांमुडां प्रणमाम्यहम् ॥ वसून—ॐ वसवोऽष्टौमहा-भागाः पूजिताविधिमार्गतः ॥ कुर्वन्तुकार्य मखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥ सांगागौर्यादि षोडशमातरः प्रसन्नाभवन्तु ॥

॥ इति षोडश मातृकापूजा पद्धतिः ॥

अथ देशप्रथा नुकूलवसोर्धारा पूजनम् ॥

तत्रादौपूर्वोत्तरक्रमेणभित्तौ पञ्चसप्तवाघृतधाराःवक्ष्यमाण मन्त्रेणकुर्यात्—ॐ वसोःपवित्रमसिशतधारं वसोःपवित्रमसि-सहस्त्रधारंदेवस्त्वासवितापुनातु॥ वसोःपवित्रेणशतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ इतिकृत्वा, ॐ एतन्तेदेव० इतिप्रतिष्ठाप्य, ॐ वसु-धारादेवताभ्योनमः, इतिपाद्यादिभिःसम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ वसवो ष्टौमहाभागाः पूजिताविधिमार्गतः ॥ कुर्वन्तुकार्यमखिलं निर्वि-घ्नेनक्रतूद्भवम् ॥ वा—शान्ताकारं० ॥

इति वसुधारा पूजनम् ॥

अथ नान्दीश्राद्धपद्धतिः

अथा ऽभ्युदयिक श्राद्धम्—धौतंश्वेतवस्त्रंपरिधाय त्रिराचम्य पुष्पाक्षतहस्तः, ॐ यंब्रह्मवेदान्तविदोवदन्ति परंप्रधानंपुरुषंतथा-ऽन्ये। विश्वोद्गतेकारणमीश्वरम्वा तस्मैनमोविघ्नविनाशनाय, ॥ विष्णुंध्यायेत्—ॐ शुक्लांबरधरंदेवं शशिवर्णंचतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनंध्याये द्विष्णुंविघ्नोपशान्तये॥ दूर्वायवान्गृहीत्वा दिग्बन्धनं कुर्यात्॥ यवारक्षन्तुदितिजाद्दूर्वारक्षन्तुराक्षसात्, पंक्तिवैश्रो-त्रियोरक्षे दतिथिःसर्वरक्षकः॥ ततोदूर्वाभिर्नीवीबन्धनम्—ॐ सोमस्यनीविरसिविष्णोः शर्मासिशर्म्मयजमानस्य योनिरसि सुसस्यास्कृषीस्कृधिः॥ इति दक्षिणकट्यांधारयेत्॥ ततोभूमौ चन्दनेन शङ्खचक्रेलिखित्वातदुपरिदूर्वात्रयमासनंतदुपरि, अर्घपात्रं तत्रदूर्वापवित्रंक्षिपेत्—मन्त्रः—ॐ पवित्रेस्थोवैष्णव्यौसवितुर्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेणसूर्यस्यरश्मिभिः। तत्पात्रेजलम् मन्त्रः—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये शंय्योरभिस्रव न्तुनः॥ यवान्—ॐ यवोऽसियवया स्मद्द्वेषोयवयारातिर्दिवेत्वा न्तरिक्षायत्वा पृथिव्यैत्वा शुन्धन्तांल्लोकाःपितृषदनापितृषदन मसि॥ चन्दनाक्षतपुष्पाणि तूष्णींनिक्षिप्यतेनजलेनदूर्वाङ्कुरैरा त्मानं नान्दीमुखश्राध्दसामग्रींचसम्प्रोक्ष्य, प्राणायामंकृत्वा, पितृनु द्दिश्यावाहयेत्* ॐ देवताभ्यःपितृभ्यश्चमहायोगिभ्यऽएवच। नमःस्वाहायैस्वाहायै नित्यमेवनमोनमः॥ इतिवारत्रयंपठेत्॥ ततः पुनर्गायत्रीमन्त्रेणकर्मपात्रस्थजलमभिमन्त्र्य, ॐ शूद्रादि-दृष्टिनिपातदोषादामान्नादीनां पवित्रतास्तु॥ इत्यामान्नादीन्प्रोक्ष्य प्रतिज्ञासंकल्पंकुर्यात्—ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यअमुक गोत्राणां अस्मन्मातृपितामही प्रपितामहीनाम् अमुकदेवीनांवसु-रुद्रादित्यस्वरूपाणांनान्दीमुखीनां, तथा—अमुकगोत्राणां अस्मित्पि-तृपितामह प्रपितामहानां, अमुकदेवानांवसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां

* टि० अत्रवृद्धि श्राद्धे-वैदिक मंत्रेऽविकाधाशब्द प्रयोगे स्वाहा, इतिवाक्यः॥

नान्दीमुखीनां, तथा—असुकगोत्राणां, अस्मन्मातामहप्रमातामह वृध्दप्रमातामहानां, असुकदेवानांसपत्निकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां नान्दीमुखानां, प्रीतयेअमुककर्मणिसत्यवसुसंज्ञक विश्वेदेव पूर्वकं नान्दीमुखश्राध्दमहंकरिष्ये ॥ कुरुष्वेतिब्राह्मणोवदेत् ॥ ततोब्राह्मणक्रमेणा आसनानिदद्यात् ॥ दूर्वात्रयंयवजलंच गृहीत्वा-अद्येह नान्दीमुखाऽमुकगोत्रास्मन्मात्रादि त्रयश्राद्ध सम्बन्धिनां, तथामुकगोत्रास्मत्पित्रादित्रयश्राद्ध सम्बन्धिनां, तथाऽमुकगोत्रास्मन्मातामहादि त्रयश्राद्ध सम्बन्धिनां—सत्यवसु संज्ञकानां विश्वेषां देवानां, इदमासनंवो नमो वृद्धि २ श्रियै,, ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेम ँ० हवम्मे येऽअन्तरिक्षेयऽउपद्यविष्ट ॥ येऽअग्निजिह्वाऽउतवायजत्राऽआसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयध्वम् ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः,, ततो मात्रादित्रयस्थंडिले आसनदानम्—तथा अमुकगोत्रा अस्मन्मातृपितामही, प्रपितामह्यः, अमुकदेव्यः वसुरादित्य स्वरूपानान्दीमुख्यः, इदमासनंवो नमो वृद्धि २ श्रियै,, तथामुकगोत्रा अस्यत्पितृपितामह प्रपितामहा अमुकदेवाः, वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः नान्दीमुखाः, इदमासनंवो नमोवृद्धि २ श्रियै,, तथामुकगोत्रा अस्मन्मातामह, प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः वसुरादित्यस्वरूपाः नान्दीमुखाः इदमासनं वो नमो वृध्दि २ श्रियै,, इतिध्यात्वा ॥ ततआसनक्रमेणपूजनं, तत्रादौविश्वेषांदेवानाम्—ॐ विश्वेदेवासऽआगतशृणुतामइमँ०हवम् ॥ एदम्वर्हिनिषीदत ॥ ॐ सत्यवसुसंज्ञकेभ्योविश्वेभ्यो देवेभ्योनमः ॥ गन्धाक्षतपुष्प धूप दीपनैवेद्यादिकंदत्वा पितृपूजनम्—ॐ मातृ पितामहीप्रपितामहीभ्योनमः । ॐ पितृपितामहप्रपितामहेभ्योनमः ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्निकेभ्योनमः सम्पूज्य ॥ सङ्कल्पः अद्येहअमुकगोत्रास्मन्मात्रादि त्रयश्राद्धसम्वन्धिनः, तथामुकगोत्रास्मत्पित्रादित्रयश्राद्धसम्वन्धिनः, तथाऽमुकगोत्रास्मन्मातामहादित्रयश्राद्धसम्वन्धिनः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाःअर्चन-

विधौइमानि गन्धाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्य वासोदक्षिणादीनिआमा न्नानिच, यथाविभागंवोनमोवृध्दि २ श्रियै ॥ ततोमातृस्थण्डिले अद्येत्यादि० अमुकगोत्राअस्मन्मातृपितामही प्रपितामह्यः अमुक देव्यः, नान्दी मुख्यः ॥ तथाऽमुक गोत्रास्मत्पितृ पितामह प्रपि- तामहाः, अमुकदेवाः वसुरुद्रादित्य स्वरूपाः नान्दीमुखाः,, तथा मुकगोत्रा अस्मन्मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहा अमुकदेवाः सपत्नीका वसुरुद्रादित्य स्वरूपा नान्दीमुखा अर्चनविधौ, इमानि गन्धाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य वासो दक्षिणा दीनि–यथा विभागंवो नमो वृद्धि २ श्रियै,, पुनः पूजनम् ॐ मातृपितामही प्रपितामहीभ्योनमः ॥ ॐ पितृपितामह प्रपितामहेभ्योनमः ॥ ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्योनमः॥ इति गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य,, ॥ यजमानोवदेत्–अर्चनविधिः परिपूर्णोऽस्तु ॥ ब्राह्मणः–अस्तुपरिपूर्णः ॥ आचमनंकृत्वा,, ततो सफल दधिघृत मिष्टान्नसहितानि सदक्षिणानि आमान्नानि चतु- स्थण्डिलेषुचतुर्धाविभज्य, पात्रेषु स्थापयेत् ,, संकल्पः–अद्येह, अमुक गोत्रास्मन्मात्रादित्रय नान्दीश्राध्द सम्बन्धिभ्यः,, तथा, अमुक गोत्रास्मत्पित्रादित्रय, नान्दीश्राद्ध सम्बन्धिभ्यः,, तथा– अमुक गोत्रास्मन्मातामहादित्रय नान्दीश्राद्ध सम्बन्धिभ्यः सत्य वसुसंज्ञकेभ्यो विश्वेभ्योदेवेभ्यः इदमामान्नं सदक्षिणं यथांशंवो नमो वृद्धि २ श्रियै,, तथा–अमुकगोत्राभ्योऽस्मन्मातृ पिता- मही प्रपितामहीभ्यः, अमुक देवीभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपाभ्यो नान्दीमुखीभ्य इदमामान्नं सदक्षिणं दधिघृत जल सहितं यथा- विभागंवो नमो वृध्दि २ श्रियै,, तथा–अमुक गोत्रेभ्योऽस्मत्पि तृपितामह प्रपितामहेभ्यो ऽअमुकदेवेभ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपे भ्योनान्दीमुखेभ्य इदमामान्नं सदक्षिणं–सजल दधिघृतादियुतं यथाविभागंवो नमो वृध्दि २ श्रियै,, तथा अमुकगोत्रेभ्योऽस्म- न्मातामह प्रमातामह वृध्द प्रमातामहेभ्योऽमुकदेवेभ्यः सपत्नीके- भ्यो वसुरुद्रादित्य स्वरूपेभ्यो नान्दीमुखेभ्य इदमामान्नं सजल

दधिघृतादिसहितं, सदक्षिणं—यथा विभागंवो नमो वृध्दि २ श्रियै,, इति समर्प्य ॥ तत आमान्नपूजनम्—ॐ अन्न पतेन्नस्य नोदेह्यनमीवस्य शुष्मिणः प्रप्रदातारन्तारिष ऽऊर्ज्जन्नोधेहिद्विपदे चतुष्पदे,, इतिमन्त्रेण गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य, ब्राह्मणंच सम्पूज्य,, सङ्कल्पः—अद्येहेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्या ऽमुकोहं मात्रादि त्रयाणां पित्रादि त्रयाणां, सपत्नीकानां मातामहादि—त्रयाणां वसुरुद्रादित्य स्वरूपाणां नान्दी मुखानां प्रीतये अमुक कर्मनिमित्तक सत्य वसु संज्ञक विश्वेदेव पूर्वक नान्दीमुख श्राध्द कर्मणः सांगफल प्राप्तये समस्त पितॄणां—विश्वेषां देवानांच प्रीतये इमान्यामान्नानि प्रजापति देवत्यानि सदक्षिणानि, अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय समस्त पितॄणा मक्षय्य तृप्त्यर्थं वो नमो वृध्दि २ श्रियै, ततो यजमानो वक्ष्यमाणमन्त्रेण स्वतिलकंकुर्यात्—ॐ सत्यानुष्ठानसम्पन्नाः सर्वदायज्ञवुध्दयः। पितृ मातृ पराश्चैव सन्त्वस्मत्कुलजानराः॥ ततो—ॐ देवताभ्यः इति त्रिःपठेत्—ततो यजमानो वदेत्—विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्॥ ब्राह्मणोक्तिः—ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्॥ य० स्वस्तिभवन्तो ब्रुवन्तु,, ब्रा० ॐ स्वस्ति॥ य० इदंवृध्दि श्राध्दं देशकाल अन्नदक्षिणादि वाक्य हीनं यत्कृतं तत्सुकृतमस्तु॥ यत्कृतं श्रीनारायणप्रसादाद्ब्राह्मण वचनात्परि पूर्णमस्तु॥ ब्रा० अस्तुपरिपूर्णम्॥ ततः श्राध्दं विसर्जयेत्—तत्रादौ विश्वेदेवान्विसर्जयेत्—ॐ वाजेवाजेवत वाजिनोनो धनेषुविप्राऽअमृताऋतज्ञाः॥ अस्यमध्वः पिबतमादयध्वं तृप्तायात पथिभिर्देवयानैः॥—ततो नीवींविसृज्य अर्घपात्रंभ्रामयित्वा विसृज्य आचम्य,, पितृप्रसादं गृह्णीयात्॥

॥ इत्याभ्युदयिक श्राद्धपद्धति ॥

अथ नवग्रहपूजापद्धति ।

अथच कर्त्ता आचमनादिभूतोत्सादनंकृत्वा प्राणायामं विधाय, सङ्कल्पः-अद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुक शर्म्माहममुककर्मणि पंचोपचारेणवाषोडशोपचारेण सूर्य्यादिनव-ग्रहाणांपूजनंकरिष्ये,, तत्रादौसूर्यंमध्येध्यायेत्-पद्मासनंपद्मकरो द्विवाहुः पद्मद्युतिःसप्ततुरङ्गवाहनः ॥ दिवाकरोलोकगुरुःकिरीटी मयिप्रसादंविदधातुदेवः ॥ आवाहयेत्-आकृष्णेतिहिरण्यस्तूप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सवितादेवतासूर्यावाहनेविनियोगः ॥ ऋक्-ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशन्नमृतं मर्त्यंञ्चहिरण्ययेनसवितार-थेनदेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपसगोत्रसूर्यैहागच्छेहतिष्ठ । सोमन्ध्यायेत्-श्वेताम्वरःश्वेत विभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरोद्विवाहुः ॥ चन्द्रोऽमृतात्मावरदः किरीटी मयिप्रसादंविदधातुदेवः ॥ इमंदेवेतिगौतमऋषिर्द्विपदा विराट्छन्दः सोमोदेवतासोमावाहने वि० ॥ ऋक्-ॐ इमन्देवाऽ असपत्नर्ठ० सुवध्वंमहतेक्षत्रायमहते ज्यैष्ठ्यायमहतेजानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इयममुष्यपुत्र ममुष्यैपुत्रमस्यै, विशऽएषवो मीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाॐराजा ॥ ॐ भू० यमुनातीरो-द्भवात्रेयसगोत्र, सोमेहागच्छेहतिष्ठ ॥ भौमंध्यायेत्-रक्ताम्वरो रक्तवपुःकिरीटी चतुर्भुजोमेषगमोगदाधरः ॥ धरासुतःशक्तिधरश्च शूली सदाममस्याद्वरदःप्रशान्तः ॥ आवाहयेत्ॐअग्निर्मूर्द्धेतिविरू-पाक्ष ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽङ्गारकोदेवताभौमावाहने वि० ॥ ऋक्-ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवःककुत्पतिःपृथिव्याऽअयम् ॥ अपाॐरेताॐ सिजिन्वति ॥ ॐ भू० अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्रभौमेहाग-च्छेहतिष्ठ ॥ वुधंध्यायेत्—पीताम्वरःपीतवपुःकिरीटीचतुर्भुजोदण्ड धरश्चसौम्यः ॥ सिंहस्थितश्चन्द्रसुतोहरिप्रियः सदाममस्याद्वरदो-स्तुसौम्यः ॥ आवाहयेत्—उद्बुध्यस्वेतिपरमेष्ठीऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वुधोदेवतावुधावाहने वि० ॥ ऋक्—ॐ उद्बुद्ध्यस्वाग्ने प्रतिजागृ-

हित्व मिष्टापूर्त्तंसर्ट॰ सृजेथामयश्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युतरस्मि
न्विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत ॥ ॐ भू॰ मगधदेशोद्भवात्रेयस
गोत्रबुधेहागच्छेहतिष्ठ ॥ गुरुंध्यायेत्—पीताम्बरः पीतवपुःकिरीटी
चतुर्भुजो देवगुरुःप्रशान्तः ॥ तथाक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्चदंडंच विभ्रद्व
रदोस्तुमह्यम् ॥ आवाहयेत्—बृहस्पतइति गृत्समदऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो
गुरुर्देवता, बृहस्पत्यावाहने वि॰ ॥ ऋक्—ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्यो
अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजा ततदस्मा
सुद्रविणंधेहिचित्रम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः, सिन्धुदेशोद्भवाङ्गिरसगोत्र
बृहस्पते, इहागच्छेहतिष्ठ ॥ भृगुन्ध्यायेत्—श्वेताम्बरःश्वेतवपुः
किरीटी चतुर्भुजोदैत्यगुरुः प्रशान्तः । तथाक्षसूत्रञ्चकमण्डलुञ्च
दण्डञ्चविभ्रद्वरदोस्तुमह्यम् ॥ आवाहयेत्—अन्नात्परिश्रुतइतिप्रजा
पत्यश्वीसरस्वतीन्द्रादयऋषयस्त्रिजगतीछन्दः शुक्रोदेवताशुक्रा
वाहने विनियोगः ॥ ऋक्—ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्रह्मणाव्यपि
बत्क्षत्रंपयः सोमंप्रजापतिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानर्ट॰ शुक्र
मन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतंमधु ॥ ॐ भू॰ भोजकटदेशोद्भ
वभार्गवगोत्रशुक्रेहागच्छेहतिष्ठ ॥ शनिंध्यायेत्—नीलाम्बरःशूल
धरःकिरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरोधनुष्मान । चतुर्भुजःसूर्यसुतः
प्रशान्तः सदास्तुमह्यंवरदोल्पगामी ॥ आवाहयेत्—शन्नोदेवीति
दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः शनिश्चरोदेवता शनिश्चरा
वाहने वि॰ ॥ ऋक्—ॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ।
शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ ॐ भू॰ सौराष्ट्रदेशोद्भवकाश्यपगोत्रशने,
इहागच्छेहतिष्ठ ॥ राहुंध्यायेत्—नीलाम्बरोनीलवपुःकिरीटी, कराल
वक्त्रःकरवालशूली, चतुर्भुजश्चक्रधरश्चराहुः सिंहासनस्थोवरदो-
स्तुमह्यम्,, आवाहयेत्—कयानइतिवामदेवऋषिर्गायत्रीछन्दो राहु
र्देवताराह्वावाहने वि॰ । ऋक्—ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदा
वृधःसखा । कयाशचिष्ठयावृता ॥ ॐ भू॰ राठीनापुरोद्भवपैठिनस
गोत्र राहोइहागच्छेहतिष्ठ ॥ केतुंध्यायेत्—धूम्रोद्विबाहुर्वरदोगदा
धरोगृध्रासनस्थोविकृताननश्च । किरीटकेयूरविभूषितश्च सदास्तु

मे केतुगण:प्रशान्त्यै ॥ आवाहयेत्—केतुंकृण्वन्निति मधुरछन्दऋपि गायत्रीछन्दः केतुर्देवताकेत्वावाहने वि०। ॐ केतुंकृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथा, ॐ भू० अन्तर्वेदीसमुद्भव जैमिनसगोत्र केतो इहागच्छेहतिष्ठ, ततः प्रतिष्ठापयेत्—ॐ एतन्ते देवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेनयज्ञ मवतेन यज्ञपतिं तेनमामव। मनोयूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमंत्वनोत्वरिष्टंयज्ञ टँ० समिमन्दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्ता मोम्प्रतिष्ठ॥ ॐ भास्करायानग्रहाः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु॥ आसनम्—दिव्यांबरं निर्मलंच कौशेय निर्मितंपरम् ॥ आसनंच मयदात्तं प्रगृह्णीत नवग्रहाः। स्नानीयंजलम्—पवित्रं निर्मलंवारि सर्वगन्धसमन्वितम्॥ स्नानीयं परमंदिव्यं प्रगृह्णीत नवग्रहाः॥ वस्त्रम्—ग्रहवर्णानिवस्त्राणि पवित्राणि शुभानिच। मयादत्तानि गृह्णन्तु भास्कराद्या नवग्रहाः॥ चन्दनम्—मलयागिरिसम्भूतं केशरेणसमन्वितम्। प्रगृह्णन्तुमयादत्तंचन्दनंग्रहदेवताः॥ ॐ नवग्रह देवताभ्योनमःअक्षतान्समर्प्पयामि॥ ऋतुजानिसुपुष्पाणि दूर्वांकुर-युतानिच। समानीतानि पूजार्थं गृह्णन्तु ग्रहदेवताः॥ धूपम्—वनस्पतिरसोत्पन्नं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्॥ धूपमाघ्रेयकं दिव्यं प्रगृह्णीत नवग्रहाः॥ दीपम्—साज्यंसद्वर्त्ति संयुक्तं वन्हिना दीपितं मया॥ आरार्तिक्यं प्रगृह्णीत भास्कराद्या नवग्रहाः॥ नैवेद्यम्—अन्नंचतुर्विधंस्वादु-घृतदुग्ध समन्वितम्॥ भक्त्यार्पितंच नैवेद्यं प्रगृह्णीत नवग्रहाः॥ ॐ ग्रहदेवताभ्योनमः, उपायनीभूत द्रव्यं समर्पयामि। पुष्पाञ्जलहस्तः प्रार्थयेत्—ॐ ब्रह्मामुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतोबुधश्च॥ गुरुश्चशुक्रः शनि-राहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु॥ ॐ मन्त्रहीनंक्रियाहीनं भक्तिहीनंच यत्कृतम्। पूजनंतन्मयाचात्रक्षमध्वं ग्रहदेवताः॥

॥ इति नवग्रहपूजा पद्धतिः॥

अथ रक्षाविधानम् ॥

यवान्कुशांस्तथा दूर्वां सर्षपान्गन्धमक्षतान् । गोमयंदधि संयुक्तंकारयेत्ताम्रभाजने ॥ तत्रैव स्थापयेत्सूत्रं रक्षार्थं रक्तपीतकम् ॥ हस्तेनमन्त्रये द्विद्वान्वक्ष्यमाणैः सुमन्त्रकैः ॥ मन्त्राः—ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् । विष्णुंरुद्रंश्रियंदेवीं वन्दे भक्त्यासरस्वतीम् । आचार्या मुनयश्चैव भास्कराद्या नव ग्रहाः तेसर्वेममयज्ञस्य रक्षां कुर्वन्तु विघ्नतः । प्राचींरक्षतुगोविंद आग्नेयीं गरुड़ध्वजः । यामींरक्षतुवाराहो नारसिंहस्तुनैर्ऋतीम् । केशवो वारुणींरक्षे द्वायवीं मधुसूदनः । उदीचीं श्रीधरोरक्षे दैशानींतु गदाधरः । ऊर्ध्वं गोवर्धनधरोह्यधस्ताद्धरणीधरः एवं दश दिशोरक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः । शंखोगदा तथाचक्रः पद्म द्वाराणिरक्षयेत् । उपेन्द्रः पातु ब्रह्माणमाचार्यंपातुवामनः । यज मानं सपत्नीकं पुण्डरीक विलोचनः । रक्षाहीनंच यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षताद्धरिः । वेदमन्त्रैश्च कर्त्तव्यारक्षाशुभ्रैश्चसर्षपैः । आदौ कृत्वापोटलीकां पूर्ववद्धनीयादक्षिणेकरे ॥ वेदमन्त्राः—आदौ गायत्री १ ॐ गणानान्त्वा० २ । ॐ जातवेदसे सुनवामसो- ममरातीयतोनिदहातिवेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः—ॐ सप्तऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षन्ति सदमप्रमादम् ॥ सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽअस्वप्नजौ सत्रसदौच देवौ ॥ नतद्रक्षा ॐ हनत । ॐ सिनपिशाचास्तरन्तिदेवानामोजः प्रथमज ॐ यदाबध्नन्दा योविभर्ति दाक्षायणं० समनुष्येषु कृणुतेदीर्घमायुः यदाबध्ना- क्षायणा हिरण्यं० शतानीकाय सुमनस्यमानाः । तन्मऽआबध्ना- मिशतंशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् । रक्षोहणंवलगहनं वैष्णवीमिदमहं तम्बलगमुत्किरामि यम्मेनिष्ट्योयममात्योनिच खाने दमहंतम्बलगमुत्किरामि यम्मेसमानो यमसमानो निचखाने दमहं दमहंतम्वलगमुत्किरामियम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखाने दमहं

तॅव्वलगमुत्किरामि यम्मेसजातोयमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि ॥ रक्षोहणोव्वोव्वलगहनः प्रोक्षामिव्वैष्णवान् रक्षोहणो वोव्वलगहनो ऽवनयामि वैष्णवान रक्षोहणो वोव्वलगहनो ऽवस्तृणामिवैष्णवान् रक्षोहणौवांव्वलगहना ऽउपदधामिवैष्णवी रक्षोहणौवांव्वलगहनो पर्य्यूहामिवैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवास्थः प्रत्युष्टꣳ रक्षः प्रत्युष्ठाऽअरातयो निष्ठप्तꣳ रक्षोनिष्टप्ताऽअरातयः । उर्वन्तरिक्षमन्वेमि । रक्षोहा विश्वचर्षणि रभियोनिमयोहते द्रोणेसधस्तमासदत् ॥ इतिमंत्रैः पीतकौशेयवस्त्रे पोठलिकामभिमंत्र्य पुरुषस्यदक्षिणकरे स्त्रियोवामकरेवध्नीयात् ॥ बन्धनमन्त्रौ—ॐ येनबध्दो बलीराजा दानवेन्द्रोमहाबलः । तेनत्वामभिवध्नामि रक्षेमाचलमाचल ॥ ॐ त्वंयविष्ठदाशुषो नॄꣳपाहि शृणुधीगिरः । रक्षातोकमुतत्मना ।

इति रक्षाविधानम् ।

० ०

अथ घृतच्छायादर्शनम् ।

अथच द्रवीभूतमाज्यं ताम्रपात्रेकांस्यपात्रेवा पूरयित्वा तत्र सुवर्णं रजतद्रव्यंवाप्रक्षिप्यचन्दनाक्षतैः सम्पूज्यवक्ष्यमाणमन्त्रैः कुशैर्दूर्वाभिरालोड्याभिमन्त्रयेत्—मन्त्राः—ॐ आज्यंपरमयज्ञीयमाज्यंतेजोमयोनिधिः । आज्यंहिदेवदेवानां प्रियमाज्ये स्थितं जगत् ॥ तदाज्यवीक्षणेभक्त्या कृतेमङ्गलमाप्नुयात् ॥ दुःस्वप्नो दुर्निमित्तंच विघ्नौघोनश्यतिध्रुवम् । तेजः प्रज्ञाचशौर्यंच बलंचापि प्रवर्धते । पुण्यंसत्ताङ्गराज्यंच भवेदन्यमभीप्सितम् ॥ ज्ञात्वावा ज्ञानतोवापि मनोवाक्कायकर्मभिः । कृतंयत्पातकंतन्मे घृतस्पर्शाद्विनश्यतु ॥ आज्येचैवमुखंदृष्ट्वा सर्वपापैःप्रमुच्यते । इत्यभिमंत्र्य सङ्कल्पः—अद्येत्यादि० अमुकगोत्रो ऽमुकराशिरमुकोहं सर्वारिष्ट निवृत्तये आज्यावेक्षणंकरिष्ये । ॐ तेजोसीति परमेष्ठीऋषिस्त्रि

ष्टुप्छन्दः, आज्यंदेवता आज्यावेक्षणे विनियोगः। ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसिधामनामासि प्रियंदेवाना मनाधृष्टंदेवयजनमसि ॐ ध्रुवोसिध्रुवोयं यजमानेस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्। घृतेनद्यावापृथिवी पूर्य्येथामिंद्रस्यच्छदिरसिव्विश्वजनस्यच्छाया। इतिघृतेशरीरछाया दर्शनंकृत्वा आज्यंहस्तेनस्पृष्ट्वा,, ब्राह्मणं सम्पूज्य अद्येत्यादि० अमुकराशिरमुकशर्माहं इदंछायादर्शितमाज्यं सपात्रं सद्रव्यंच मृत्युञ्जयप्रीतयेसर्वारिष्टपरिहारार्थं अमुकगोत्राया मुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसम्प्रददे॥ ॐ तत्सन्नमम,इतिदत्वा दानवाक्यंपठेत्—ॐ कामधेनोः समुद्भूतंदेवाना मुत्तमंहविः। आयुर्वृद्धिकरंदातु राज्यंपातुसदैवमाम्। ततो मृत्युञ्जयंप्रार्थयेत्॥ ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्ध्दनम्॥ उर्वारुकमिवबन्धना-न्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ ब्राह्मणोब्रूयात्–मृत्युंजय प्रसादाद्दीर्घायुषोऽस्तु॥ ततः कर्त्ताहस्तौपादौप्रक्षालयेत्॥

इति घृतच्छायादर्शनम्।

— o — —

अथ तिलपात्र दानमन्त्रः॥

ॐ त्र्यम्बक मिति वशिष्ठऋषि स्त्र्यम्बक रुद्रो देवता सरजित तिल ताम्र दाने आवाहने विनियोगः। ध्यानम्—त्र्यम्बकं वृषभारुढं प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनम्॥ कपाल शूल खट्वांगं चन्द्र मौलि सदा शिवम्॥ १॥

ऋचा–ॐ त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्॥ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिरुपति वेदनम् उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।

ॐ भूर्भुवःस्वः त्र्यम्बक इहगच्छेहतिष्ट सुप्रनिष्ठितो वरदो भव॥ त्र्यम्बक प्रीतिकारक स ताम्र तिलान्ने भ्योनमः सम्पूज्य

ततो ब्राह्मणायनमः सम्पूज्य ॥ अद्येत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं ममसमस्त दुष्टारिष्ट निवृत्ति पूर्वक सुखसौभाग्य वृद्धये अमुक कर्मणि न्यूनातिरिक्तजन्म दोषापनुत्तये अपूर्णपूर्णार्थं मिदं हिरण्यमूल्योपकल्पितं रजितसहितसताम्र तिलान्नं चन्द्रार्कप्रजापति दैवतममुकगोत्राय, अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहंसम्प्रददे अद्य कृतैतत् सताम्र तिलान्नदान प्रतिष्ठार्थं किञ्चिद्धिरण्य मूल्योप कल्पितं रजतंचन्द्र दैवतममुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॥ प्रार्थना ॥ तिलापुण्याः पवित्राश्च सर्वकाम कराशुभा ॥ शुक्लावायादवा कृष्णा विष्णुगात्र समुद्भवाः ॥ १ ॥ यानि कानिच पापानि जन्मान्तर कृतानिच ॥ तिलपात्र प्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा ॥ २ ॥

ब्रह्मामुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशिः भूमिसुतोबुधश्च ॥
गुरुश्चशुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकराभवन्तु ॥ १ ॥

इति तिलपात्र दानम् ।

—o— o—

अथाभिषेकाशीर्वादादि मन्त्रसंग्रहः ॥

अथ यजमानस्य, अभिषेक मन्त्रतिलकाशीर्वादादि कार्यान्त कर्त्तव्यं वक्ष्ये ॥ ततः सपरिवारो यजमानः मण्डपस्येशानोत्तर मध्यभागे, वा होमकुण्ड देवता सन्निधौच, पत्नीं वामभागेकृत्वा तस्यावामतः पुत्रादीन्दक्षिणे भातृवर्गांश्चकृत्वा भद्रासने पूर्वाभिमुखः स्नतिष्ठेत् ॥ आचार्य्यादय उत्तराभिमुखा उत्थायकलशोदकेन वैदिकैः पौराणिकैश्च मन्त्रैर्यजमानमभिषिञ्चकुर्युः ॥ तत्रादौ वैदिक मंत्राः—हरिः ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ सरस्वत्यैव्वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि ॥१॥ ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ॥ अश्विनोर्भैषज्येनतेजसेब्रह्मवर्चसा

ग्राभिषिंचामि ॥२॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्व वेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥३॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽऔषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षेपयोधाः। पयः स्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥४॥ ॐ अग्निर्देवता व्वातोदेवता सूर्योदेवता चन्द्रमा देवता व्वसवोदेवता रुद्रा देवताऽऽदित्यादेवता मरुतो देवता व्विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रोदेवता व्वरुणो देवता ॥ ॐ मूर्धासिराड्ध्रुवासिधरणी धर्त्र्यसिधरणी। आयुषेत्वा वर्च्चसेत्वा कृष्यैत्वाक्षेमाय कल्पन्ताम् ॥६॥ ॐ व्विष्णोरराटमसि विष्णोश्नप्त्रेस्थोविष्णोः स्यूरसिव्विष्णोर्ध्रुवोऽसि व्वैष्णवमसिव्विष्णवेत्वा ॥७॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ॰ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति र्व्वनस्पतयःशांति र्व्विश्वेदेवाः शांति र्ब्रह्मशांतिः सर्व्व ँ॰ शांतिः शांतिरेवशांतिः सामाशांति रेधि,, ॥८॥ ॐ सुशांतिर्भवतु ॐ व्विश्वानिदेव सवितर्दुरितानिपरासुव। यद्भद्रंतन्नऽआसुव ॥९॥ ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऽ ऊर्ज्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे॥ योवः शिवतमोरस स्तस्यभाजयतेहनः। उशतीरिव मातरः। ॐ तस्माऽ अरङ्गमामवोयस्य क्षयायजिन्वथ। आपोजन यथाचनः ॥ पौराणिक मंत्रा —उक्तश्चमात्स्ये—ॐ सर्वसमुद्राः सरित स्तीर्थानिजलदानदाः। आयान्तुयजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥ ॐ सुरास्त्वामभिषिंचन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। वासुदेवो जगन्नाथ स्तथासङ्कर्षणोविभुः। प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयायते ॥ अखण्डलोग्निर्भगवान्यमोवै निर्ॠतिस्तथा। वरुणःपवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथाशिवः। ब्रह्मणासहितः शेषोदिक्पालाःपान्तुते सदा ॥ कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधापुष्टिः श्रद्धाक्रियामतिः। बुद्धिर्लज्जावपुः शांतिस्तुष्टिःकान्तिश्चमातरः। एतास्त्वामभिषिंचन्तुधर्मपत्न्यःसमागताः। आदित्यश्चन्द्रमाभौमो बुधोजीवः सितोऽर्कजः। ग्रहास्त्वामभिषिचन्तु राहुःकेतुश्च तर्पिताः ॥ देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः। ऋषयोमुनयोगावो देवमातरएवच। देवपत्न्यो

द्रुमानागा दैत्याश्चाप्सरसांगणाः । अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजा वाहनानिच । औषधानिच रत्नानि कालस्यावयवाश्चये । सरि सागराः शैला स्तीर्थानिजलदानदाः ॥ एतेत्वामभिषिंचंतु स कामार्थ सिद्धये ॥ ॐ गणाधिपोभानु शशीधरासुतोबुधोगुरुश्च गेवसूर्यनन्दनः । राहुश्चकेतुः प्रभृतिर्ग्रहानवकुर्वन्तुवः पूर्णमनोर सदा । उपेन्द्रइन्द्रो वरुणोहुताशनो धर्म्मोयमोवायु र्ह श्चतुर्भुजः गन्धर्वयक्षो रगसिद्ध चारणा कुर्वन्तु० । नव दधिचिः सगरः पुरूरवा सकौन्तलेयो भरतोधनञ्जयः । रा त्रयं वेनबली युधिष्ठिरः कुर्वन्तुवः० । मनुर्मरीचिर्भृगुदक्ष नारद पराशरो व्यासवशिष्ठ भार्गवाः । बाल्मीकि कुम्भोद्भवग गौतमाः कुर्वन्तुवः० । रम्भासती सत्यवतीच देवकी गौरी लक्ष्मीश्च दितिश्च रुक्मिणी । कूर्मोगजेन्द्रोप्यचराचरा धरा कुर्वन्तुवः० । गङ्गा लकावा यमुना सरस्वती गोदावरी वेत्रवर्त च नर्मदा । साचन्द्रभागा वरुणा अशीनदी कुर्वन्तुवः पूर्ण मनो रथं सदा ॥ तुङ्गप्रभासो गुरुचक्र पुष्करो गया च काशी बदरीश्वरो नरः ॥ केदारनाथस्त्वथमार्गदायिनी कुर्व० । प्रयागराजो ह्यथ देवराजो रुद्रप्रयागोप्यथ कर्णतीर्थः । कण्वाश्रमो विष्णुप्रयागराजः कुर्व० पूर्णमनोरथंसदा ॥ (केचिदाचार्या इदानीमभिषेकान्ते यजमानस्य सपत्निकस्य, तैल हरिद्रोद्वर्त्तनपूर्वकम् सचैल मङ्गल स्नानमाचरन्ति, स्नान वस्त्राणि आचार्यायदत्वा, नूतनवस्त्राणि परिधाप्य पत्नीं वामतः कृत्वा पुत्रादिभ्यो तथाकृत्वा आसनेषूप वेशयित्वा, आचार्यो मन्त्रतिलकं कुर्यात्) मन्त्रः—ॐ भद्रमस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तुत्वां सुराःसर्वे सम्पदः सन्तु सर्वदा ॥ अक्षतारोपणम्—ॐ युञ्जन्तिब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः । रोचन्ते रोचनादिवि ॥ रक्षाबंधनम्—मन्त्रः—ॐ येनबद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेनत्वामभि बध्नामि रक्षेमाचल माचल ॥ ॐ त्वंयविष्ठद.शुषोः नॄँपाहि शृणुधीगिरः रक्षातोक मुत्मना ॥ ॐ रक्षा सुरक्षा भूयात ॥ आभ्यां पुंसां

दक्षिणहस्ते, स्त्रीणां वामहस्ते रक्षासूत्रं बध्नीयात् ॥ अथाशीर्वाद मन्त्राः—आचार्यादयो ब्राह्मणाः सफलपुष्पमालादिकं हस्तेषु गृहीत्वा उत्तराभिमुखा उत्थाय मन्त्रोच्चारणं कुर्युः—मन्त्राः—ॐ गणानान्त्वा० ॐ आकृष्णेन० इत्यादि नवग्रहणां मन्त्रान्पठित्वाऽ॥ ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेम हिदेवहितं यदायुः ॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्रा जरसंतनूनाम्। पुत्रासो यत्रपितरो भवन्तिमानो मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ॐ ब्राह्मणा सहपितरः सोम्यासः शिवेनो द्यावा पृथिवीऽनेहसा। पूषातः पातुदुरिता हतावृधो रक्षामाकिर्नोऽअघश ९० सईशतः। ॐ एताऽउव सुभ- गाविश्वरूपाऽविपक्षोभिः श्रयमाणाऽउदातैः। ऋष्वाः सतीः कवषः शुम्भमाना द्वारोदेवीः सुप्रायणा भवन्तु ॥ ॐ ब्रह्मणस्पते त्वमस्ययन्ता सूक्तस्यबोधि तनयञ्चजिन्व। विश्वंतद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेमविदथे सुवीराः। यऽइमाऽविश्वा विश्वकर्म्मायोनः पिताऽन्नपतेन्नस्यनोदेहि ॥ ॐ पुनन्त्वादित्या रुद्रावसवः समि धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथयज्ञैः। घृतेनत्वन्तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्यकामाः ॥ ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योति व्याधीमहारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णूरथेष्ठाः ॥ सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतुफलवत्योनऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्प न्ताम् ॥ पौराणिक मंत्रा—ॐ येनोत्थाय समूल मन्दरगिरिश्छत्री कृतो गोकुले, राहुर्येन महाबलो सुररिपुः कार्यादशेषीकृतः। कृत्वा त्रीणि पदानियेन वसुधा, बद्धोवलिर्लीलयायोयं पातुयुगे युगे युगपति स्त्रैलोक्यनाथोहरिः ॐ यौतौ शङ्खकपाल भूषित करौ मालास्थिमालाधरौ देवौद्वारवती श्मशान निलयौ नागारि गोवाहनौ ॥ द्वित्र्यक्षौ वलिदक्षयज्ञमथनौ श्रीशैलजावल्लभौ दुःखं वो हरतां सदा हरिहरौ श्री वत्स गङ्गाधरौ ॥ ॐ कमलासन

कमलेक्षणकमलारि किरीटकमलभृद्भाहैः ॥ नुतपदकमलाकरधृत कमला करोतुतेमंगलम् ॥ ॐ लक्ष्मीस्तेपंकजाक्षी निवसतुगृहेभा-रतीकंठदेशे, वर्द्धन्तांवन्धुवर्गाः स्वजनरिपुगणायान्तुपातालमूले। देशेदेशेच कीर्त्तिः प्रभवतुभवतां देवतानांप्रसादात् ॥ जेजीव्या-त्पुत्रपौत्रैः सुजनप्रियजनैः पत्निगुक्तस्त्वमेव,, ततोयजमानपत्न्यं-चले- ॐ गन्धाः पान्तुसुमंगलंचास्तु । ॐ अक्षताः पान्तु, आयुष्यंचास्तु, ॐ पुष्पाणिपान्तु, वहुदेयंचनोऽस्तु,, इतिक्षिप्त्वा। ॐ श्रीश्चते० इतिमंत्रेणादौ फलादिकंकान्ताभ्योदत्वा,, ॐ सौभा-ग्यवती पुत्रवतीआयुष्मती धनवतीभव। ततः पुरुषेभ्यः, मंत्रार्थाः सुफलाःसन्तुपूर्णाः सन्तुमनोरथाः ॥ शत्रूणांवुध्दिनाशोऽस्तु मित्रा-णामुदयस्तव । एवमाशिषंदत्वा देवंविसृज्य यथासुखं विहरेयुः ।

इत्यभिषेकादि मंत्रसंग्रहविधि. ॥

अथमण्डपादिस्तम्भ परिभाषां वक्ष्ये—अथच यज्ञादौवा चौलोपनयन कन्यादान राज्याभिषेक तुलादानादिषु मण्डपस्यावश्यक तयामण्डपनिर्माणार्थं मण्डपरिभाषांसंक्षेप-वक्ष्यति—**मण्डपनिर्माणार्थं विचारः—मात्स्ये**—गृहस्योत्तरपूर्वेण मण्डपंकारयेद्बुधः ॥ **मङ्गलकृत्येषुविशेषो मुहूर्तचिंतामणौ**—हस्तोन्मूत्रायांपदहस्तैः समन्तात्तुल्यावेदीसद्मनो वामभागे । युग्मेपरेऽ पष्टहीनेचपन्न सप्ताङ्गस्यान्मण्डपोद्वाग्गनंगत ॥ **विवाहपटलेप्येवम्**—व्रतबन्धेसंस्कार्यत्वा द्विहस्तेनवेदीनिर्मितिः विवाहेतुकन्यागृहे एववरस्ययजनोक्त्वा चतुर्हस्ता श्रमस्य . तदायत्तत्वाच्च कन्याहस्तेनैवर्वेदिमण्डपयोर्निर्माणम् । **मण्डपार्थं भूपरीक्षा—शारदातिलके**—नक्षत्र राशिताराणा मनुकूलेशुभेऽहनि । ततोभूमितलेशुद्धे तुषारांगार वर्जिते । पुण्याहंवाचयित्वातु मण्डपंरचयेच्छुभम् ॥ **तत्रभूपूजनंमात्स्ये**—वाराहंकूर्मशेषौच क्षितिंचैवविधानतः । पूजयेद्वास्तुकार्येषु विधिनासाधकोत्तमः ॥ **दिग्ज्ञानार्थं शंकुरोपणम्—कुण्डरत्नावल्याम्**—देशेसंभाविते प्राग्विधिवदिहसमां सम्विधायाधभूमिं, सम्पूज्यात्रैवमध्ये विरचितवलये रोपयेत्साम्रशंकुम् ॥ तच्छायाग्रंचयस्मिन्विशतिचवलयं यातियस्माच्चदेशा, त्सौप्रत्यक्पूर्वदेशौ तदनुगतगुणः प्रागुणोऽग्नौप्रदिष्टः ॥ **दिग्ज्ञानानंतरं सूत्रीकरणं मण्डप मानंचाह–हेमाद्रौशांतिकांडे**—ततस्तुसहितोविप्रैः सूत्रयेन्मण्डपंशुभम् । उत्तमंशतहस्तन्तु तदर्द्धंनतुमध्यमम् । जघन्यंशतदर्द्धेन शक्तिकालाद्यपेक्षया । **पञ्चरात्रादौ**—कनीयान्दशहस्तः स्यान्मध्यमोद्वादशोन्मित. । तथाषोडशभिर्हस्तै मण्डपः स्यादिहोत्तमः ॥ **गौतमीयतंत्रे**—चतुर्द्वारसमायुक्तं चतुरस्रंसमन्ततः ॥ **व्रतबंधविवाहयोर्विशेषः**—कार्यः षोडशहस्तोवा द्विषड्हस्तोदशावधिः ॥ **पञ्चरात्रे**—मण्डपाः कर्मसुप्रोक्ता अल्पामध्यास्तथोत्तमाः । यथादेशं यथाकालं प्रयोज्यस्ते विचक्षणैः ॥ **वेधमाहविवाहपटले**—द्वारविद्धा वलीविद्धा कूपवृक्षव्यथा तथा ॥ नकार्यावेदिकातज्ज्ञै शुभामङ्गलकर्मसु । **तुलादानादौलैंगे**—विंशद्धस्तप्रमाणेन मण्डपं कुण्डमेववा । अथाष्टादशहस्तेन कलाहस्तेनवापुनः । **विश्वकर्मप्रकाशे**—सर्वेषांसर्ववर्णानां कार्याः कार्यानुसारतः । **भूखननविचार, मुहूर्तचिंतामणौ**—सूर्येङ्गनासिंह घटेषुशैवे स्तंभो लिकोदण्डमृगेषुवायौ । मीनाजकुम्भेनिर्ऋतौविवाहे स्थाप्योऽग्निकोणे वृषयुग्मकर्के । **स्तम्भानां-संख्यारत्नावल्याम्**—स्तम्भाः षोडशयज्ञ दारुजदृढावेदे विदिक्स्वायता, श्चत्वारोऽष्टकराबहिः शरकरास्तेखण्डकोणेष्विना ॥ चूडाभिः सहिताश्च तन्निखननंसर्वत्रपञ्चांशकम् । द्वात्रिंशद्वलिकाः समाश्चसविलाः कार्यास्ततोऽतद्वये ॥ **वास्तुशास्त्रे**—पञ्चमांसंन्यसेद्भूमौ सर्वसाधारणोविधिः **मध्यस्तम्भानां निवेशनमाह**—मण्डपेमध्यमास्तम्भा मण्डपार्द्धप्रमाणतः । समन्ततस्त्रिभा-गेन परितोद्वादशापराः ॥ **द्वारप्रमाणंमंत्रमुक्तावल्याम्**—दिक्षुद्वाराणिचत्वारि विदध्यात्पञ्च-मांशतः ॥ **विशेषः**—मण्डपंतुदशधाविभज्यवै यत्रयत्रचभवेद्गुणसन्धिः । तत्रतत्रविनिवेशयेद्दृश, हस्तकानपिवहि शरहस्तान् । द्वाराणिदिक्षुद्विकराणिचाल्पे मध्येतुवेदांगुलवर्द्धितानि । श्रेष्ठन्तुनागाङ्गुलवृद्धिरुक्ता तंछादयेत्तानितुवर्जयित्वा । **स्पष्टम्**—कनिष्ठमण्डपे द्विहस्तोन्मितानि मध्यमेवेदाङ्गुलैर्वर्द्धितानि । उत्तमेविंशतिहस्तोपरिमण्डपे शतहस्तपर्यन्तेच द्विहस्ताष्टाङ्गद्वारमध्य प्रवेशंकुर्यादित्यर्थ ॥ **मण्डपाच्छादनक्रियासारे**—आच्छाद्यमण्डपाः सर्वेद्वारवर्ज्यन्तुसर्वतः ॥ वन्शैस्ततश्चसरलैः सुकटैरथापितंनारिकेलदलै रथवापिपद्मैः ॥ स्थूणाः सुचामरदर्पण-

कैरथापि सम्भूषयेत्तु सुपर्दैरथघण्टिकाभि वास्तुशास्त्रेप्येवम् तोरण शब्दाथमाह—तोरणानिवहिर्द्वाराणि ॥ तोरणोऽस्त्रीवहिर्द्वारमित्यमर ॥ तोरणनिर्माणमाह—तस्मात्करेवाद्विकरेऽपिहस्तेदीर्घाणिवाहां ७ ग ६ शरैस्तुकाष्ठै । अश्वत्थयज्ञांग जटोवटानां श्रेष्ठादिषुस्यु खलुतोरणानि । स्पष्टम्—तस्मान्मण्डपात्करे हस्तमात्र वाह्येद्वाराग्रे चतुर्षुद्वारेषु तोरणानिकुर्यात् ॥ पिंगलमतनु—हस्तद्वयवहिस्त्यक्त्वा तोरणानि निवेशयत् ॥ तोरणार्थवृक्षा—अश्वथोदुम्बर प्लक्षवटशाखाकृतानिच । मण्डपस्यप्रतिदिशं द्वारागयतानिस्मारयेत् ॥ द्वाराणि तोरणानिवहिर्द्वाराणीत्यर्थ ॥ तोरणोपरिफलक कीलनम्-रत्नाकरेनाम्—प्राच्यादिदिक्षुपरितोमनोज्ञ चूडासुदेयफलक हितेषाम् ॥ तदर्धमानतु निवेशनीयामध्य सजातीयकदारु कील ॥ कपिलपञ्चरात्रे—देवास्तोरणरूपेण सस्थितायत्र मण्डपे । सर्वविघ्नविनाशार्थं रक्षार्थं चाध्वरस्यच ॥ फलकानांमानमाह—अग्न्यादिवे दि १०ग्रवि १२ शक्र १४ पच दीर्घास्तता स्वांघ्रिमितामनोज्ञा । फलकोपरिचिन्हान्याह -विष्णवायुधाभा अथ विष्णुयागे शैवत्रिशूला स्वयरांगुलोना । स्पष्टम्—विष्णुयागे फलकोपरि विष्णवायुधानि शखचक्रगदा कमलानामाकाराणिचिन्हानिकुर्यात् ॥ शैवेशि वानुष्ठानादिषु, त्रिशूलाकारचिन्हानि विष्णवायुध पक्षया, एकांगुलोनानिकुर्यात् ॥ वास्तुशास्त्रे -मस्तकेद्वादशांशेन शखचक्रगदाम्बुज ॥ तोरणानां प्रकुर्याद्विपूर्वादिषुक्रमाद्बुध ॥ पिंगलमते—शूलेनचिन्हिता कार्याद्वारशाखास्तुमस्तके । शूले नवांगुलदैर्घ्यंतुरीयांशेन विस्तृत ॥ स्तभतोरणादीनां पूजनविधानपूजाप्रयोगे वक्ष्यामि ॥ मण्डपेवेदीना निर्माणं रत्नावल्याम्—अथ प्रधानादपियत्रपूर्वं ग्रहाधिवासश्चतदाप्रधानम् । ईशानदेशेच ततस्ववाच्या श्रोक्तेष्टवेदिं करविस्तृतान्वा । कर्मविशेषेवेदीमानम्—रुद्रादौ हवनेथवेदिरथवा वेदा ४ ग ६ नागै ८ करैरेकद्वित्रिमि रगुलैश्चकथिता रामादपुन्यूनता । पादोवाथतुलाविधौतुलाभि ६ नागै ८ स्वरैर्वापिसा द्वाभ्यासार्धं करेणहस्त १ विमिता प्युच्चाथ वाप्या दिषु ॥ क्रियासार—हस्तमात्रतदुत्सेधचतुरस्र समन्तत । हस्तान्तरान्वविस्तीर्णां चतुर्हस्तै समन्तत । सिद्धान्तशेखरे—वेदीचतुर्विधाप्रोक्ता चतुरस्राचपद्मिनी । श्रीधरी सर्वतोभद्रा दीक्षासुस्थापनादिषु । चतुरस्राचतु कोणा वेदीसर्वफलप्रदा । तडागादि प्रतिष्ठाया पद्मिनी पद्मसन्निभा ॥ राज्ञास्यात्सर्वतोभद्रा चतुर्भद्राऽभिषचने । विवाहे श्रीधरीवेदीर्विशत्यस्र समन्विता । मण्डपेवेदीनां दिक्परत्वेनस्थापनक्रम मथानभैरवतन्त्रे शेषवेद्यातत स्यात हस्तमक तुविस्तरे । उच्छ्रायोऽर्काङ्गुल प्रोक्त स्नानवेद्योद्विहस्तका । आग्नेयां मातृकावेदी वास्तुवेदीचनैऋत क्षेत्रपालस्य वायव्या मीशान्यांच नवग्रहा ॥ अथपूर्वादिदिक्षुमण्डपाद् वहिर्ध्वजास्थापनमाह—पूर्वस्यांदिशि पीतवर्णरुचिरा नागांकितेन्द्रस्यवै आग्नेय्यात्वथवन्हिवर्णसदृशा मेषांकिताग्नेर्ध्वजा । स्यात्कृष्णायमवाहनाङ्कितध्वजा ऽ वाच्यायमस्यैवच ॥ पचास्याङ्कित श्यामवर्णरुचिरानैऋत्यगानिऋते ।१। श्वेतास्फटिकवत्तथा जलपतेर्मत्स्यांकितापश्चिमे वायव्याच सधूम्रवर्णसदृशा वायो कुरङ्गाङ्किता ॥ औदीच्याच तुरग चिन्हसहिता पीताकुबेरस्यवै । ईशाने वृषभे श्वरस्यचसिता, गोवाहनेनांकिता ॥२॥ दिगीशानांच पूर्वोक्ताध्वजावशपु वैक्रमात् ॥ मण्डपस्य चरक्षार्थ सस्थाप्यायतनतोबुधै ॥३॥

—o—o—

मण्डपार्थ भूमिपूजा पद्धतिः ।

शारदा तिलके—ततो भूमितले शुध्दे तुषारांगार वर्जिते पुण्याह वाचयित्वा तु मण्डपं रचयेच्छुभम्, भूम्यादि पूजनं मात्स्ये—वाराहं कूर्मशेषौच क्षितिचैव विधानतः,, पूजयेद्वास्तु कार्येषु विधिना साधकोत्तमः,, अथच कुण्डमण्डपादिविधानकर्त्ता वास्तुशास्त्रानुसारेण भूमि परीक्ष्य, तत्र शुभेदिनेगत्वामध्यभागे काष्टपीठोपरि गणेशंस्थापयित्वा स्वस्ति वाचनं पठित्वा तत्रैव भूमौ वाराह यंत्रं लिखित्वा । तदुपरिपार्थिवंश्वेतवस्त्रं प्रसार्य पूजनं कुर्यात्—आचम्य प्राणायामादिकं कृत्वा सङ्कल्पः—अद्येत्यादि० अमुकोहं कर्त्तव्यामुककुण्डमण्डपादि रचनकर्मणि पृथिवी वराह कूर्मशेषाणां पूजनं करिष्ये—तत्रादौ पृथिवीं—ॐ भूर्भुवः स्व पृथ्वी मावाहयामि—ॐ पृथिव्यैनमः इतिमंत्रेण पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—वराहं—ॐ भू० ॐ दष्ट्रोध्दृत वसुंधराय वराहाय नमः, इति वराहं पूजयित्वा,, कूर्मम्—ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्ममा० ॐ पृष्ठोध्दृत वसुन्धराय कूर्मायनमः,, इति सम्पूज्य,, शेषंपू०—ॐ भू० ॐ सहस्रफण विराजमानाय फणोपरिपृथ्वी धरायनमः,, इति सम्पूज्य,, यजमानमभिषिच्य,, मध्यशंकुंस्थापयित्वापूर्वोक्त परिभाषानुसारेण मण्डपंयथाविभवं विरच्य मण्डपविस्तारात्स्तंभानुछ्रित्याछाद्य तोरणानि चतुर्द्वाराणि कल्पयित्वा वक्ष्यमाण पद्धत्या पूजनादिकं कुर्यात् ।

इति भूमिपूजा पद्धति ।

अथ स्तम्भ पूजापद्धतिः ॥

ततःकर्त्ता हस्तौपादौप्रक्षाल्याचम्य प्राणायामत्रयंकृत्वा ईशानस्थरक्षादीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्यच । प्रतिज्ञासङ्कल्पं कुर्यात्— अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रो ऽमुकशर्माऽहं करिष्यमाणा ऽमुककर्मणि तदुपयोग्य गुणात्मकअमुककर्मसंरक्षणाय पूर्वाङ्गतया सदीपषोडशवरुणकलश पूजनपूर्वकब्रह्मादिषोडशसरल कदलीमय सस्थूणशक्तिसहितान्स्तंभान्पूजयिष्ये ॥ तत्रादावाभ्यन्तरेशाने—पृथिव्यां स्तम्भमूले पुटकंसंस्थाप्य, यवान्गृहीत्वा—ॐ ओषधयः समवदन्तसोमेन सहराज्ञायस्मैकृणोति ब्राह्मणस्त इ० राजन्पारयामसि ॥ इतियवांस्तत्रक्षिप्त्वा,, कलशंतदुपरि । ॐ आजिघ्र कलशं मह्यात्वाविशन्त्विन्दवः पुनरूर्जानिवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्षोधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥ संस्थाप्य ॥ ॐ व्वरुण स्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्कम्भ सर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्य ऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसिव्वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥ इति जलेनापूर्य,, ततस्तदुपरिधान्यपूर्णपात्रं—ॐ पूर्णादर्विपरापत । सुपूर्णापुनरापत । व्वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्ज इ० शतक्रतो ॥ ततः ॐ वरुणायनमः,, इतिमंत्रेण कलशंसम्पूज्य, एवंरीत्या स्तम्भपूजनादौ सर्वत्रकलशस्थापनंकृत्वा) ईशानस्तम्भंपूजयेत् साक्षत पुष्पः ब्रह्माणंध्यायेत्—एह्येहिविप्रेन्द्रपितामहेश हंसाधिरूढ त्रिदशैक वंद्यः । श्वेतोत्पलाभासकुशाम्बुहस्त गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति गौतमऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवता मण्डप संरक्षणार्थंस्तम्भेब्रह्मास्थापने विनियोगः—ऋक्—ॐब्रह्मयज्ञानं प्रथमंपुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः । सबुध्न्याऽअस्यविष्ठाः उपमाऽ सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः । ॐ भूर्भुवः स्वः, भोब्रह्मन्निहागच्छे हतिष्ठ,, सुप्रतिष्ठितोवरदोभव ॥ ॐ ब्रह्मस्तम्भायनमः, इति सम्पूज्यप्रार्थयेत्—ॐ कृष्णाम्बराजिनधर, पद्मासनचतुर्मुख, माला कमण्डलुधर प्रसीदकमलासन ॥ इति संप्रार्थ्य स्तम्भेशक्ति पूजनं

कुर्यात्- ॐसावित्र्यैनमः, ॐ ब्राह्म्यैनमः, ॐ गङ्गायैनमः,, संपूज्यस्तम्भमालभ्य,, ॐ ऊर्ध्वऊषुणऽऊतयेतिष्ठा देवोनसविता ऊर्ध्वोव्वाजस्यसनिया यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥ स्तम्भ-शिरसि, ॐ नागमात्रेनमः । सम्पूज्य, शाखाबन्धनंकुर्यात्—ॐ आयंगोः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः पितरञ्च प्रयन्त्स्वः,, ततः क्षमापयेत्—यतोयतः समीहसे ततोनोऽअभयंकुरु । शन्नः कुरु-प्रजाभ्योभयंनः पशुभ्यः ॥ ॐ भोब्रह्मन् स्तम्भरूपेणपूजितोऽस्मिन्मखेमया । स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते ॥ भो ब्रह्मदैवतस्तम्भ पूजितोसिक्षमस्व एवंसर्वत्र ॥ तत आभ्यन्तराग्नेये—विष्णुमावाहयेत्—ॐ एह्येहिनारायणदिव्यरूप सर्वामरैरर्चितपादपद्म । शुभा शुभानन्दशुचामधीश गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ ॐ इदंविष्णुरितिमेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दो विष्णुर्देवता विष्णुस्थापने विनियोगः ॥ ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ँ सुरेस्वाहा ॥ ॐ भू० भोविष्णो इहागच्छेहतिष्ठ,, ॐ विष्णुरूपिणे स्तम्भायनमः सम्पूज्य, प्रार्थयेत्—ॐ महाविष्णो नमस्तेऽस्तुदेवदेवजगत्पते,, यज्ञंपाहि, सुरेशस्त्वं श्रीनाथभक्तवत्सल ॥ स्तम्भे शक्तिपू० ॐ लक्ष्म्यैनमः, ॐ नन्दायैनमः, ॐ वैष्णव्यैनमः,, सम्पूज्य स्तम्भमालंभनम् ॐ ऊर्ध्व-ऊषुणः० स्तम्भशिरसि ॐ नागमात्र्यैनमः सं० । शाखाबन्धनम्—ॐ आयंगौः० ॥ ॐ भोविष्णो स्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया ॥ स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते ॥ भो विष्णुदैवतस्तम्भ पू० ॥ २ ॥ ततोनैर्ऋत्ये—रुद्रं—एह्येहिगौरीशपिनाकपाणे शशाङ्कमौले वृषभाधिरूढ । गणाधिदेवेशनरुद्रदेव गृहाणपूजांभगवन्नमस्ते ॥ ॐ नमस्त इतिवामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो रुद्रोदेवता मण्डपसंरक्षणार्थं स्तम्भे रुद्रस्थापने विनियोगः । ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतइषवेनमः । बाहुभ्यामुततेनमः ॥ ॐ भू० भोरुद्र इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ रुद्रायनमः सम्पूज्य ॥ स्तम्भे—ॐ माहेश्वर्यैनमः, ॐ गौर्यैनमः, ॐ शोभनायैनमः ॥ सम्पूज्य,,

शेषंपूर्ववत् ॥३॥ ततोवायव्ये, इन्द्रं आवाहयेत्–एह्येहिदेवेन्द्र सुरेशवन्द्य शचीपतेवज्रधरामरेश,, संस्तूयमानोप्सरसांगणेन गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐत्रातारमिति गर्गऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रोदेवता मण्डपसंरक्षार्थस्तम्भे, इन्द्रस्थापने वि० ॥ ॐ त्रातार मिन्द्र मवितारमिन्द्र ँ० हवेहवे सुहव ँ० शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि-शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ० स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः ॥ ॐ भू० भो इन्द्रे ह्यागच्छेहतिष्ठ, ॐ इन्द्रायनमः सं० स्तम्भेशक्ति पू० ॐ इन्द्राण्यैनमः, ॐ आनन्दायैनमः,, ॐ विभूत्यैनमः । स्तम्भ-स्पर्शनादिकंपूर्ववत् प्रार्थयेत्–ॐ भोइन्द्र स्तम्भरूपेण पूजितो ऽस्मिन्मखेमया, स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यंसमाप्यते ॥४॥ ततो वाह्येशाने–सूर्यमावाहयेत्–ॐ एह्येहिसप्ताश्वरथाधरूढ सह-स्त्ररश्मिन्करुणेशभानो । श्रीकाश्यपेयारुण वर्ण सूर्यगृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ चित्रं देवानामिति कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सविता देवतास्तम्भे मण्डप संरक्षणार्थं सूर्यस्थापने वि० ॥ ॐ चित्रं देवाना मुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्रा-द्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्ष ँ० सूर्य्यऽआत्मा जगतस्तस्तुषश्च ॥ ॐ भू० भोसूर्येह्यागच्छेहतिष्ठ ॐ सूर्यायनमः, सम्पूज्य स्तम्भे शक्तिपू०–ॐ सावित्र्यैनमः, ॐ छायायैनमः, ॐ संज्ञायैनमः, सम्पूज्यस्तम्भालंभनादिकं पूर्ववत् ॥ प्रार्थयेत्–भोसूर्यस्तम्भ-रूपेण पूजितोस्मिन्मखेमया ॥ स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥५॥ ततईशान पूर्वयोरन्तराले–गणेशमावाहयेत्–एह्ये-हि लम्बोदर नागवक्त्र गणेशगौरी सुतदेवदेव ॥ सन्मङ्गलेत्वं प्रथमप्रधान गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ गणानान्त्वेति प्रजा-पतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता मण्डप संरक्षणार्थंस्तम्भे गण पतिस्थापने वि० ॥ ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ० हवामहे प्रिया-णांत्वा प्रियपति ँ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ० हवा महे व्वसोमम ॥ आहमजा निगर्ब्भधमात्वमजासिगर्ब्भधम्, ॐ भूर्भुवः स्वः, भोगणेशेह्यागच्छेहतिष्ठ,, ॐ गणेशायनमः

सम्पूज्यस्तम्भे शक्तिपूजनं कुर्यात—ॐ विघ्नहारिण्यैनमः, ॐ ऋध्यैनमः, ॐसिध्यैनमः, शेषं पूर्ववत् सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ गणेशस्तम्भ रूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया, स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥६॥ ततः पूर्वाग्नेययोरंतराले यममावाहयेत्—ॐ एह्येहिसूर्यात्मज धर्मराज लोकेशनैय्यायिकधर्मशील ॥ विशाल वक्षस्थल दण्डधारिन्गृहाणपूजां—भगवन्नमस्ते ॥ ॐ यमायत्वेति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दो यमोदेवता मण्डपसंरक्षणार्थस्तम्भे यमस्थापने वि० । ॐ यमायत्वा माखायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसेदेवस्त्वा सविता मध्वानक्तुपृथिव्याःसँस्पृशस्पाहि, ॐ भू० भोयम इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ यमायनमः सम्पूज्य स्तम्भे शक्ति पू० ॥ ॐ पूर्वसन्ध्यायैनमः, ॐ क्रूरायैनमः, ॐ नियन्त्र्यैनमः, शेषं पूर्ववत्—सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ भोयमस्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया, स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥७॥ ततो वाय्वाग्नेयकोणे नागराजमावाहयेत्—ॐ एह्येहि नागेन्द्र सहस्रमूर्धन्पातालवासिन वहुक्रोधधारिन्,नागांगनाभिः स्तुतिगीयमान गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यऽइति देवाश्रवाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो नागराजो देवतामण्डपरक्षणार्थंस्तम्भे नागराजस्थापने विनियोगः ॥ ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो येकेच पृथिवी मनुयेअन्तरिक्षेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ ॐ भू० नागराजेहागच्छेहतिष्ठ, ॐ नागराजायनमः सम्पूज्य स्तम्भेशक्तिपूजनं कुर्यात्—ॐ अधरायैनमः, ॐ पद्मायैनमः, ॐ महापद्मायैनमः ॥ शेषं पूर्ववत्सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ भोनागस्तम्भरूपेण पूजितोस्मिन्मखेमया ॥ स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥८॥ तत आग्नेयदक्षिणयोरंतराले स्कन्दमा वाहयेत्—एह्येहि गौरीसुत देव देव, षट्कृत्तिकानन्दन सिद्धवन्द्य, मयूरवाह प्रणतार्तिहारिन्गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ यदक्रन्द इति भार्गव जमदग्नि दीर्घ तमसा ऋषय स्त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दो देवता मण्डप रक्षणार्थस्तम्भेस्कन्दस्थापने वि० ॥ ॐ यदक्रन्दः

प्रथमंजायमानऽउद्यन्त्समुद्रा दुतवापुरीपात् ॥ श्येनस्यपक्षा हरिणस्यबाहू उपस्तुत्यंमहिजातन्ते अर्व्वन् ॥ ॐ भू० भोस्कन्द इहागच्छेहतिष्ठ ॐ स्कन्दायनमः सम्पूज्यस्तम्भे-शक्ति पू० । ॐ जयायैनमः, ॐ विजयायैनमः । ॐ पश्चिमसन्ध्यायैनमः । शेषं पूर्ववत् ॥ प्रार्थयेत्—ॐ सेनानिस्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखे मया ॥ स्थिरो भवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यंसमाप्यते ॥ ९ ॥ ततो दक्षिणनैर्ऋत्ययोरंतराले वायुमावाहयेत्—ॐ एह्येहिवायो मन्वर क्षणाय कुरङ्गवाह जगदाभिवंद्य, सर्वप्रिय प्राण शरीरधारिणां गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते । ॐ वायुरिति वशिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता मंडप संरक्षणार्थं स्तम्भे वायुस्थापने वि० ॥ ॐ वायुरग्नेरग्नेगायज्ञश्रीः साकंगन्मनसायज्ञं शिवोनियुद्भिः शिवाभिः, ॐ भू० वायो इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ वायवेनमः सम्पूज्य शक्ति पू० ॥ ॐ तीव्रायैनमः । ॐ गायत्र्यैनमः । ॐ वायव्यैनमः, शेषं पूर्ववत्—ततः पार्थयेत—ॐ वायोस्त्वंस्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया । स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥१०॥ ततो नैर्ऋत्ये सोममावाहयेत्—एह्येहिराशीश शशांकरूप विधत्स्वरक्षां स्वगणेनसार्द्धम् ॥ द्विजाधिदेवेश सुधामयेश गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ सोममिति बन्धुऋषिर्गायत्रीछन्दः—सोमोदेवता मण्डप संरक्षणार्थं स्तम्भे सोमस्थापने वि० ॥ ॐ सोम ई० राजानं साग्निमन्वारभामहे । आदित्यान्विष्णु ई० सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पति ई० स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भोसोम इहागच्छेह तिष्ठ, ॐ सोमायनमः, सम्पूज्य स्तम्भे शक्ति पू० ॥ ॐ सावित्र्यै नमः । ॐ अमृतकलायैनमः । ॐ विजयायैनमः ॥ शेषं पू० । ततः प्रार्थयेत्— भोसोमस्तम्भरूपेण पूजितोस्मिन्मखेमया । स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥११॥ ततः पश्चिम नैर्ऋत्ययोरंतराले वरुण मावाहयेत् ॥ ॐ एह्येहिपाशिन्सरितां मधीशल्लोकेश देवेश समुद्रनाथ, केयूरवान्कुण्डल हारधारिन्

हाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ इमम्मेवरुणोति वत्सऋषिर्बृहती छन्दो वरुणो देवता मण्डपरक्षणार्थं स्तम्भे वरुणस्थापने वि० ॥ ॐ इमम्मेव्वरुणश्रुधी, हवमद्याचमृडय, त्वामवस्युराचके ॥ ॐ भू० भोवरुणेहागच्छतेहतिष्ठ,, ॐ वरुणायनमः,, स्तम्भे शक्ति पू० । ॐ वारुण्यैनमः । ॐ बार्हस्पत्यै नमः । ॐ पाशधारिण्यैनमः । सम्पूज्य शेषं पू० । प्रार्थयेत्—ॐ वरुणस्तम्भरूपेण पूजितोऽस्मिन्मखेमया । स्थिरो भवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥१२॥ ततः पश्चिम वायव्ययोरंतराले वसूनावाहयेत्—ॐ इतेतदेवा वसवो सुरूपाः सौन्दर्यमुख्यागुण शीलवन्तः । सुपुष्प मालाभिरलंकृताश्च गृह्णीध्वमत्रार्चन मानतोऽस्मि ॥ ॐ सुगाव इति वसिष्ठ ऋषिर्गायत्री छन्दो वसवो देवता मण्डप संरक्षणार्थं स्तम्भेवसूनां स्थापने वि० ॥ ॐ सुगावो देवाः सदनाऽअकर्मयऽआजग्मेद ई० सवनंजुषाणाः । भरमाणा व्वहमानाहवींष्य स्मेधत्त वसवो व्वसूनि स्वाहा ॥ ॐ भू० भोवसव इहागच्छतेह तिष्ठत, ॐ वसुभ्योनमः,, सम्पूज्य शक्ति पू० ॥ ॐ विनतायैनमः । ॐ गरिमायैनमः । ॐ सम्भूत्यैनमः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ वसवोऽष्टौ महाभागाः स्तम्भेऽस्मिन्पूजितामयात्रत्तिष्ठन्तु रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥१३॥ ततो वायव्ये धनदमावाहयेत्—ॐ एह्येहियक्षैः परिसेव्यमान विशालयानेश्वर किन्नरेश ॥ ममाध्वरंरक्ष कुवेरदेव गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ सोमोधेनुमिति गोतमऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो धनदो देवता मण्डप संरक्षणार्थस्तम्भे कुवेरस्थापने वि० ॥ ॐ सोमोधेनु ई० सोमोऽअर्वन्तमाशु ई० सोमोवीरं कर्मण्यं ददाति ॥ सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृ श्रवणं यो ददाशदस्मै ॥ ॐ भू० भोकुवेरेहागच्छेहतिष्ठ ॐ कुवेरायनमः,, सम्पूज्य शक्ति पू० । ॐ अदित्यैनमः । ॐ सिनीवाल्यैनमः । ॐ लघिन्यैनमः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐधनाध्यक्ष महाबाहोस्तम्भेऽस्मिन्पूजितोमया ॥ स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥१४॥ तत उत्तर वायव्या

न्तराले वृहस्पति मावाहयेत—ॐ एह्येहिविप्रेन्द्र सुरेश मन्त्रिन्वृहस्पतेदेवगुरो प्रशान्त ॥ पीताम्बरा लंकृत देववन्द्य गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ वृहस्पत इति गृत्समदऋषिस्त्रिष्टुप्छदो वृहस्पतिर्देवता मण्डपसंरक्षणार्थस्तम्भे वृहस्पतिस्थापने विनियोगः ॥ ॐ वृहस्पतेऽअतियदर्य्यो अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजा तत दस्मासुद्रविणंधेहि चित्रम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः, भोवृहस्पते, इहागच्छेहतिष्ठ,, ॐ वृहस्पतयेनमः सम्पूज्य स्तम्भे शक्ति पू०,, ॐ पौर्णमास्यैनमः, ॐ वेदमात्रैनमः । ॐ सन्नत्यैनमः, सम्पूज्यशेषं पूर्ववत—ततः प्रार्थयेत—ॐ भोगुरो स्तम्भरूपेणपूजितोस्मिन्मखेमया । स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥१५॥ तत उत्तरेशानान्तराले विश्वकर्माणमावाहयेत—ॐ एह्येहि शिल्पज्ञ विशालबुध्दे, प्राकारनिर्माण कलाग्रगण्य ॥ दोर्दण्ड संसाधित सर्वकार्यगृहाणपूजां भगवन्नमस्ते,. ॐ विश्वकर्मन्नितिमन्त्रस्य शासऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो विश्वकर्मा देवता मण्डप संरक्षणार्थं स्तम्भे विश्वकर्म स्थापने वि० ॥ ॐ विश्वकर्मन्हविषावर्द्धने नत्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यं तस्मैविशः । समनमन्तपूर्वीरयमुग्रोविहव्यो यथासत् ॥ ॐ भू० विश्वकर्मन्निहागच्छेहतिष्ठ ॥ ॐ विश्वकर्मणेनमः, सम्पूज्य, स्तम्भे शक्ति पू०,, ॐ वास्तुदेवतायैनमः, ॐ वैश्वकर्मिण्यैनमः, ॐ शारदायै नमः, सम्पूज्य शेषं पूर्ववत—ततः प्रार्थयेत—ॐ विश्वकर्मन्मयात्र स्तम्भे सम्पूजितोनघ,, स्थिरो भवत्वं रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते ॥

इति षोडशस्तम्भ पूजापद्धति ॥

(यद्यपिस्तम्भ पूजा शास्त्र कारैर्नदर्शितान च तत्पूजायां प्रमाण वाक्यान्युपलभ्यन्ते तथापि देशाचारत स्तस्या आवश्यकत्वान्मयापिदर्शिता) ॥

अथ तोरण पूजापद्धतिः ध्वजारोपण सहिता ॥

अथच पूर्वपरिभाषोक्तरीत्या मण्डपाद्बस्त मात्रंबहिश्चतुर्द्वा-
राणि तोरणानि प्रकल्प्य सुसज्य च वक्ष्यमाण प्रकारेण पूजनं
कुर्यात् ॥ तत्रादौ पूर्वद्वार तोरणं पूजयेत्—अक्षत पुष्पादिभिः,, तोरणो
र्ध्वभागे—ॐ श्रियैनमः,, स्थापयामि पूजयामि,, अधः—ॐ
देहल्यैनमः,, स्थाप० । पूज० ॥ तत उत्तर दक्षिण स्थम्भमूले
द्वेकलशेविन्यस्य,, कलश स्थापन पूजन, विधिना संस्थाप्य सम्पू
ज्यच,, उत्तरस्तम्भे स्वदक्षिणभागे—ॐ स्कन्दायनमः स्कन्दमावा
हयामि स्थापयामि,, स्ववामे—ॐ गणेशायनमः,, गणेशमावा
हयामि स्थापयामि, द्वारकलशद्वये, ॐ गङ्गायैनमः, ॐ यमुना
यैनमः,, इति नाममन्त्रैः सम्पूज्य,, ततः शङ्खांकित तोरण पूर्वद्वारं
हस्तेन स्पृष्ट्वा मन्त्रः—ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्यदेव मृत
मम् ॥ होतारं रत्नधातमम् ॥ ॐ एतन्तेति० पठित्वा,, ॐ भूर्भुवः
स्वः सुदृढतोरण, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव,, इत्येवं
प्रतिष्ठाप्य,, ॐ सुदृढतोरणायनमः,, इति मन्त्रेण सम्पूज्य ॥ तत्र
ॐ राहवेनमः,, राहुमावाहयामि, ॐ बृहस्पतयेनमः,, बृहस्पति
मावाहयामि, स्था० पू० ॥ तत्रद्वाराद्बहिः ॥ ॐ एरावत दिग्गजा
यनमः, स्थापयामि, पूजयामि, प्रार्थयेत्—एरावतं स्थापयामि
रक्षार्थद्वारदिग्गजम् ॥ यावत्कार्य समाप्तिश्च चतुर्दन्त स्थिरोभव,
तत ऋग्वेदिनौ द्वारपालौ ऋग्वेद शांतिपाठकौ, आहूय गन्धादिना
सम्पूज्य,, ॐ ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्रः सोमदैवतः ॥ अत्रि
गोत्रस्तु विप्रेन्द्र शांतिपाठंमखेकुरु ॥ एवंद्वितीयश्च सम्प्रार्थ्य, तत,
इन्द्रमावाहयेत्—ॐ एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यै, रभिष्टुतोवज्र
धरामरेश । संवीज्यमानो ऽप्सरसाङ्गणेन रक्षाध्वरंनो भगवन्न
मस्ते ॥ तत एरावतां कितां वज्रांकितांच पताकामानीय गन्धादि
भिः ॐ आशुः शिशानो वृषभोनभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणी-
नाम ॥ संक्रंदनोऽनिमिषऽएकवीरः शत ६० सेनाऽअजयत्साक

मिन्द्रः,, इतिमन्त्रेण सम्पूज्यच ध्वजमुच्छ्रित्यतत्रध्वजे—ॐ इन्द्राय नमः, सम्पूज्य,, पार्थयेत् ॐ देवराजनमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया ॥ स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते ॥ तत आग्नेये रक्तवर्णां मेषाङ्किता मग्निदैवतकांध्वजामानीय—तत्र कलशंसंस्थाप्य, ॐ पुण्डरीकामृतायनमः इति मन्त्रेण तत्र पुण्डरीकामृतंसम्पूज्य, अग्निंध्यायेत् ॐ एह्येहि सर्वामरहव्यवाह मुनि प्रवीरैरभितो ऽभिजुष्ट। तेजोवता लोकगणेनसार्धं, ममाध्वरम्पाहिकवे नमस्ते। ॐ भू० भो अग्नेइहागच्छेहतिष्ठ ॥ ॐ अग्नेयेनमः कलशेअग्निं सम्पूज्य,, ध्वजां हस्तेकृत्वा, ॐ अग्निन्दूतंपुरोदधे हव्यव्वाहमुपब्रुवे ॥ देवा २ऽ आसादयादिह, इति ध्वजमुच्छ्रित्य, ॐ अग्नयेनमः, सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॐ अग्निदेव नमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया ॥ स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते ॥ ततो दक्षिणद्वार तोरण पूजनम् ॥ ततो द्वार ऊर्ध्वं—ॐ श्रियैनमः, अधः—ॐ देहल्यैनमः पूर्ववत्कलश द्वयंपूर्व पश्चिम शाखयोर्मूले स्थापयित्वा पूजयित्वाच तेनैवक्रमेण—ॐ पुष्पदन्तायनमः स्थापयामि पू०। ॐ कपर्दिनेनमः स्था० पू० कलशद्वये—ॐ गोदायैनमः, ॐ कृष्णायैनमः। सम्पू०। ततश्चक्रांकिततोरण दक्षिणद्वारं हस्तेनस्पृष्ट्वा वक्ष्यमाणमंत्रेण—ॐ इषेत्वोर्जेत्वा व्वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्या ऽ इन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मावस्तेन ऽ ईशतमाघश ᳪ० सोध्रुवा ऽ अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि ॥ ॐ समुद्रतोरणायनमः ॥ इति सम्पूज्य प्रतिष्ठाप्यच द्वारशाखयोः—ॐ सूर्यायनमः, ॐ भौमायनमः,, स्था० पू० ॥ ततोवामनाख्य दिग्गजमावाहयेत्—ॐ वामनाख्यदिग्गजायनमः स्थापयामि पूजयामि, प्रार्थयेत्—वामनख्यं स्थापयामि रक्षार्थं द्वारदिग्गजम् ॥ यावत्कार्यं समाप्तिस्त्र तावत्त्वं रक्षकोभव ॥ ततो यजुर्वेदिनौ द्वारपालौ यजुः शान्तिपाठकौ, आहूय गन्धादिभिः सम्पूज्य ॐ कातराक्षो यजुर्वेद

त्रैष्टुभो विष्णुर्देवतः। काश्यपेयस्तुविप्रेन्द्र शान्तिपाठं मखेकुरु॥ एवंद्वितीयमपिसंप्रार्थ्य,, ततो दण्डमहिषांकितांध्वजां हस्तेनिधाय गन्धादिभिः सम्पूज्य यममावाहयेत्–ॐ एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्त्ते॥ शुभाशुभानन्द शुचामधीश शिवायनः पाहिमखंनमस्ते॥ इत्यावाह्य सम्पूज्य प्रतिष्ठाप्यच। ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरंपुरः पितरश्च प्रयंस्वः,, इतिमंत्रेण ध्वज मुच्छ्रित्य,, ॐ यमायनमः। इति सम्पूज्य संस्थाप्यच, प्रार्थयेत्– ॐ धर्मराज नमस्तुभ्यंध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया। स्थिरो भवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते॥ ततो नैर्ऋत्य कोणेकलशं संस्थाप्य, तत्रकालशे, ॐ कुमुद दुर्जयाभ्यांनमः, स्थापयामि पूजयामि, इति सम्पूज्य—निर्ऋतिंध्यायेत्—ॐ एह्येहिरक्षो गणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाच संघैः॥ ममाध्वरंपाहि पिशाचनाथ लोके-श्वरस्त्वं भगवन्नमस्ते, ॐ भू० भोनिर्ऋते इहागच्छेहतिष्ठ। ॐ निर्ऋतयेनमः इति कलशे निर्ऋतिं सम्पूज्य॥ ध्वजंहस्तेकृत्वा— ॐ मोषूणऽइन्द्रात्रपृत्सु देवैरस्तिहिष्मातेशुष्मिन्नवयाः। महश्चि-द्यस्य मीढुषो यव्याहविष्मतो मरुतो वन्दतेगीः॥ इति ध्वज-मुच्छ्रित्य,, ॐ निर्ऋतयेनमः ध्वजे निर्ऋतिं सम्पूज्य, प्रार्थयेत्— ॐ नमस्तुभ्यं निर्ऋतेऽस्तु ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया, स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते॥ ततः पश्चिम द्वार तोरण पूजनम्- ऊर्ध्वं—ॐ श्रियैनमः, संपू० अधः—ॐ देहल्यैनमः, ततः स्तम्भमूले पूर्ववद्द्वेकलशे संस्थाप्य सम्पूज्यच, दक्षिणस्तम्भे—ॐ चण्डायनमः सं० वामे—ॐ नन्दिनेनमः संपूज्य, कलशद्वये— ॐ रेवायैनमः, ॐ नर्मदायैनमः सम्पूज्य, ततो गदांकित तोरणं पश्चिमद्वारं हस्तेन स्पृष्ट्वा—ॐ अग्नऽआयाहि वीतये, गृणानो हव्यदातये। निहोतासत्सिबर्हिषि, एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य, ॐ भू० सुकर्मनोरण इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितोवरदोभव, ॐ सुकर्मतोरणायनमः,, इतिसंपूज्य,, दक्षिणस्तंभे—ॐ शुभायनमः ... वामे—ॐ वधायनमः स्था० पू०॥ तत्र द्वारबहिः-

ॐ अञ्जनाख्यं स्थापयामि रक्षार्थं द्वारदिग्गजम् ॥ यावत्कार्यं समाप्तिश्च तावत्त्वंरक्षकोभव, ततः सामवेदिनौ द्वारपालौ शांतिपाठ वाचकौ, आह्वयगन्धादिना सम्पूज्य, प्रार्थयेत्—ॐ सामवेदस्तु पिंगाक्षो जागतः शक्रदेवतः॥ भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र शांतिपाठं मखेकुरु, एवंद्वितीयमपि, ततो वरुणमावाहयेत्—ॐ एह्येहि यादोगण वारिधीनां गणेन पर्जन्य सहाप्सरोभिः। विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहित्वमस्मान्भगवन्नमस्ते ॥ ततो स्वेन मत्स्यांकित पाशचिन्हितं स्वेतध्वजं हस्तेनिधाय, ॐ इमंम्मेवरुण श्रुधीहवमद्याचमृडय। त्वामवस्युराचके॥ इतिध्वजमुच्छ्रित्य-, ॐ ध्वरुणायनमः, इतिसम्पूज्य, प्रार्थयेत्—ॐ वरुणायनमः स्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया। स्थिरो भवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते, ततो वायव्ये—पूर्ववत्कलशं संस्थाप्य सम्पूज्यच तत्र —ॐ पुष्पदन्तायनमः स्था० पू० ॐ सिद्धार्थायनमः स्था० पू०॥ उभौ सम्पूज्य वायुंध्यायेत्—ॐ एह्येहियजे ममरक्षणायमृगादिरूढः सहसिद्धसंघैः॥ प्राणाधिपः कालकवे सहाय गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते। ॐ भू० भोवायो इहगच्छेहतिष्ठ, ॐ वायवे नमः० सम्पूज्य धूम्रवर्णमंकुश मृगांकितं ध्वजं हस्तेनिधाय गन्धादिभिः—सम्पूज्य, ॐ वातोवा मनोवा गन्धर्वाः सप्तविं०, शतिः। तेऽअग्नेश्व मयुँजँस्तेऽ अस्मिन्नवमादधुः ॥ इति ध्वजमुच्छ्रित्य; ॐ वायवेनमः ध्वजे वायुंसम्पूज्य, प्रार्थयेत्—ॐ वायु राजनमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया। स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते॥ तत उत्तरद्वारतोरण पूजनम्—ऊर्ध्वम्—ॐ श्रियेनमः,, अधः—ॐ देहल्यैनमः संपू०॥ ततःस्तम्भयोर्मूले द्वेकलशे संस्थाप्य सम्पूज्यच॥ स्तम्भद्वये—ॐ रौद्रायनमः ॐ प्रचण्डायनमः सम्पू०॥ कलशद्वये—ॐ वारुण्यैनमः,, ॐ वेरण्यैनमः सम्पूज्य—ततः पद्माङ्कित तोरणमुत्तरद्वारंहस्तेन स्पृष्ट्वा —ॐ शन्नो देवी रभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिः श्रवन्तुनः ॥ ॐ भू० सुभोत्र तोरणइहागच्छे

हतिष्ठ ॐ शुहोत्र तोरणायनमः सम्पूज्य,, प्रतिष्ठाप्य च ॥ दक्षिणस्तम्भे—ॐ सोमायनमः, वामे—ॐ केतवेनमः मध्ये ॐ शनिश्चरायनमः, स्था० पू० ॥ तत्रद्वारवहिः—ॐ सार्वभौम दिग्गजायनमः ॥ स्था० पू० ॥ इति सम्पूज्य प्रार्थयेत्— ॐ सार्वभौमं स्थापयामि रक्षार्थंद्वारदिग्गजम् ॥ यावत्कार्य समाप्तिस्च तावत्त्वं सुस्थिरोभव,, तत अथर्ववेदिनौ द्वारपालौ शान्तिपाठवाचकौ, आहूय गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ बृहन्नेत्रो ऽथर्ववेदो ऽनुष्टुभोरुद्रदैवतः। वैशम्पायन विप्रेन्द्र शान्तिपाठं मखेकुरु ॥ एवं द्वितीयमपि, ततः कुवेरमावाहयेत्— ॐ एह्येहि यज्ञेश्वरयज्ञरक्षां विधत्स्व नक्षत्र गणेनसार्द्धम् ॥ सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते,, ॐ भू० भोकुबेर, इहागच्छेहतिष्ठ प्रतिष्ठाप्यच,, ततो हरिद्वर्णं गदाश्वांकितं ध्वजं हस्तेकृत्वा ॥ ॐ आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवावाजस्यसङ्गथे ॥ इति ध्वजमुच्छ्रित्य,, ॐ कुवेरायनमः इति मन्त्रेणध्वजे, कुवेरंसम्पूज्य,, प्रार्थयेत्—ॐ धनाध्यक्षनमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया ॥ स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्य समाप्यते,, तत ईशाने—तत्रपूर्ववद् कलशंसम्पूज्य, तत्र—ॐ सुप्रतीकायनमः, ॐ भौमायनमः सम्पूज्य,, ईशानं ध्यायेत्—ॐ एह्येहियज्ञेश्वर नस्त्रिशूल कपालखट्वाङ्ग धरेण साद्धम् ॥ लोकेन यज्ञेश्वर यज्ञसिद्ध्यै गृहाणपूजां भगवन्नमस्ते ॥ ॐ भू० भोईशाने हागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ॐ ईशानायनमः सम्पूज्य,, ततस्त्रिशूलाङ्कितंश्वेतध्वजं, वृषभचिन्ह युतंहस्तेधृत्वा सम्पूज्य—ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्व मवसे हूमहेव्वयम् ॥ पूषानो यथा व्वेदसाम सद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये,, इति ध्वजमुच्छ्रित्य, ॐ ईशानायनमः ध्वजे ईशानं सम्पूज्य, प्रार्थयेत्—ॐ ईशानेश नमस्तुभ्यं ध्वजेऽस्मिन्स्थापितोमया स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यंसमाप्यते, तत ईशानपूर्वयोरंतराले—ब्रह्माणं ध्यायेत—ॐ एह्येहि सर्वाधिपते सुरेन्द्र

लोकेन सार्धं पितृदेवताभिः ॥ सर्वस्यधाताऽस्यमित प्रभावो विशाध्वरंनः सततंशिवाय,, ॐ भू० भोब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठ। ततो रक्तध्वजंहंसकमंडल्वो श्चिन्हाङ्कितं हस्तेनिधाय,, ॐ ब्रह्मजज्ञानम्प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोऽवेनऽआवः। सबु-ध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः ॥ इतिमंत्रे-णध्वजमुच्छ्रित्य,, ॐ ब्रह्मणेनमः, इतिध्वजेब्रह्माणंसंपूज्य प्रार्थयेत् ॐ आदिदेवनमस्तुभ्यं ध्वजेस्मिन्स्थापितोमया,, स्थिरोभवात्र रक्षार्थं यावत्कार्यसमाप्यते,, ततः पश्चिमनैर्ऋत्ययोरन्तराले, अन-न्तमावाहयेत—ॐ एह्येहिपातालधरामरेन्द्र नागाङ्गनाकिन्नरगी-यमान,, यक्षोरगेन्द्रामरलोकसंघै रनन्तरक्षाध्वरमस्मदीयम्,, ॐ भू० भो, अनन्तेहागच्छेहतिष्ठ,, ततोमेघवर्णं चक्राङ्कितं ध्वजंह-स्तेनिधाय,,—ॐ नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेच पृथिवीमनु। येऽअन्तरि क्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः,, इतिमंत्रेणध्वजमुच्छ्रित्य,, ॐ अनन्तायनमः संपूज्य प्रार्थयेत्—ॐ नमस्तुभ्यमनंताय, ध्वजेऽ-स्मिन्स्थापितोमया,, स्थिरोभवात्ररक्षार्थं यावत्कार्यं समाप्यते,, ततोमंडपमध्ये बृहद्ध्वजंक्षुद्रघंटिका चामरयुतं हस्तेकृत्वा—ॐ इन्द्रस्यवृष्णो वरुणस्यराज्ञऽआदित्यानां मरुतां ॐ शर्धऽउग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषोदेवानां जयतामुदस्थात—इत्युच्छ्रि-त्य,, ॐ मंडपस्थदेवताभ्योनमः,, संपूज्य प्रार्थयेत,, ॐ नमोमं-डपदेवेभ्यो ध्वजेऽस्मिन्स्थापितामया,, स्थिराभवन्तुरक्षार्थं,, यावत्कार्यंसमाप्यते॥ ॐ स्तंभादिसर्वेभ्योदेवेभ्योनमः ॥

इति ध्वजारोपण तोरण पूजा पद्धतिः ॥

॥ अथ दिक्पाल बलिदान पद्धतिः ॥

ततोमंडपाद्बहि रिन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यः पूर्वादिक्रमेण,, सदीपसदक्षिण दधिमाषान्नोदन बलीन्दद्यात्—तत्रादौपूर्वद्वारे इन्द्राय— सदीपसदक्षिण दधिभक्तबलिं पात्रेकृत्वा, इन्द्रमावाहयेत्—ॐ त्रातारमितिगर्ग ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रोदेवता इन्द्रावाहने बलिदाने च विनियोगः—ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार द० हवे हवे सुहव द० शूरमिंद्रंह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र द० स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॐ इन्द्रंसांगं सपरिवारंस शक्तिकमेभिर्गन्धाद्युपचारै स्त्वामहं पूजयामि, इतिबलिं संपूज्य—ॐ इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधायसशक्तिकाय इमं सदीपमाषभक्तबलिं समर्पयामि, हस्तेजलं गृहीत्वा—भोइन्द्रदिशंरक्ष बलिंभक्षममसकुटुम्बस्यायुः कर्ताक्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता निर्विघ्नकर्त्ता वरदोभव,, ॐ मंडलेसंप्रवक्ष्यामि मयाभक्त्या निवेदितम्,, इदमर्घमिदं पाद्यंदीपोयं प्रतिगृह्यताम्, इतिबल्युपरि जलंविसृजेत्। ततं आग्नेये—ॐ त्वन्नोऽअग्नइति हिरण्यस्तूप ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवता ग्न्यावाहने बलिदाने च वि० ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडो ऽअवयासिसीष्टाः ॥ यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ऽँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ ॐ भू० भोभो अग्ने इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ अग्नयेनमः बलिसम्पूज्य, जलंगृ० ॐ अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं दधिमाष भक्तबाल स० ॥ भो भो, अग्नेदिशंरक्षनंबाल भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेम० शान्ति० पुष्टि० निर्विघ्न० वरदोभव ॥ ॐ मण्डले सम्प्रवक्ष्यामि० ॥ इति जलंविसृजेत् ।२। ततो दक्षिणे—ॐ असीति जमदग्निर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्द यमोदेवता यमावाहने बलिदानेच वि० ॥ ॐ असियमोऽअस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितोगुह्येन व्रतेन असिसोमेन समयाविपृक्त । आहुस्ते त्रीणिदिविबन्धनानि स्वाहा ॥ ॐ भू० भोयमेहागच्छेहतिष्ठ,

ॐ यमायनमः बलिंसम्पूज्य, जलं०—ॐ यमाय साङ्गायसपरिवाराय, सायुधाय सशक्तिकायैनं दधिमाष भक्तबलिंसम० ॥ भो २ यम दिशंरक्षैनं बलिं भक्ष २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता, क्षेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्न० वरदोभव ॥ ॐ मण्डले सम्प्रवक्ष्यामि० ॥ इतिजलंविसृजेत् ॥३॥ ततो नैर्ऋत्ये,—ॐ असुन्वन्त मितिचिवम्वान्पिरित्रिष्टुप्छन्दो निर्ऋतिर्देवता निर्ऋत्यावाहने बलिदानेच विनियोगः। ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छ स्तेन स्यन्वास्तस्करस्यान्वेषि। अन्यमस्मदिच्छसान ऽ इत्या नमो देवि निर्ऋतेतुभ्यमस्तु ॥ ॐ भूर्भुवस्वः भो २ निर्ऋतइहागच्छ इहतिष्ठ ॐ निर्ऋतयेनमः बलिंसम्पूज्य, जलं०—ॐ निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति कायैनं दधिमाष भक्तबलिंसम० ॥ भो २ निर्ऋते दिशंरक्षैनं बलिं भक्ष २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता, क्षेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्त्ता वरदोभव, ॐ मण्डले सम्प्रवक्ष्यामि यथाभक्त्या निवेदितम् ॥ इदमर्घ्यमिदंपाद्यं दीपो ऽ यंप्रतिगृह्यताम्। जलंविसृजेत् ॥४॥ ततः पश्चिमे—ॐ तत्वायामीति शुनः शेफऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता वरुणावाहने बलिदानेच विनियोगः—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणे ह्युरुश ई० समान ऽ आयुः प्रमोषीः, ॐ भू० भोवरुण इहागच्छेहतिष्ठ ॐ वरुणायनमः बलिं सम्पूज्य ॥ जलंगृ०— ॐ वरुणायसाङ्गाय सशक्तिकायैनं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि ॥ भो २ वरुण दिशं रक्षैनं बलिं भक्ष २ मम सकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता, क्षेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्त्ता वरदोभव ॥ ॐ मण्डलेसं जलंवि० ॥५॥ ततोवायव्ये—ॐ आनोनियुद्भिरिति वसिष्ठऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता वाय्वावाहने बलिदानेच वि० ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतनीभिरध्वर ई० सहस्त्रिणीभि रुपयाहि यज्ञम्। वायो ऽ अस्मिन्त्सवने मादयस्वयूयंपातः स्वस्तिभिःसदानः ॥ ॐ भू० भोवायो इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ वायवेनमः बलि सम्पूज्य

जलं गृ०—ॐ वायवे साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तिकाय, सायुधायैनं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि, भो २ वायो दिशंरक्षैनं बलिं भक्ष २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेम० शांति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्न० वरदोभव, ॐ मण्डलेसं० जलम्विसृजेत् ॥६॥ तत उत्तरे—ॐ वयमिति वन्धु ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता सोमावाहने बलिदानेच वि०॥ ॐ वय ८० सोमव्रते तवमनस्तनुबिभ्रतः ॥ प्रजावन्तःसचेमहि ॥ ॐ भू० भोसोमेहागच्छेहतिष्ठ, ॐ सोमायनमः, बलि संपूज्य, जलं गृ०—ॐ सोमाय साङ्गाय सशक्तिकाय सपरिवाराय सायुधायैनं दधिमाष भक्तबलि समर्पयामि, भो २ सोम दिशंरक्षैनं बलि भक्ष २ ममसकुटुम्बस्यायुः कर्त्ता क्षेम० शांति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्त्ता वरदोभव॥ ॐ मण्डले सं० । इति बल्युपरिजलं विसृजेत् ॥७॥ तत ईशाने—ॐ तमीशानमित्यस्य गौतमऋषिर्जगतीछन्दः—ईशानो देवतेशानावाहने बलिदानेच वि० ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पति धियंजिन्वमवसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानो यथावेदसाम सद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भू० भोईशानेहागच्छेहतिष्ठ, ॐ ईशानायनमः बलिं सम्पूज्य, ॐ ईशानाय साङ्गायसपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैनं दधिमाष भक्तबलि समर्पयामि, भो २ ईशान दिशंरक्षैनंबलि भक्ष २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्त्ता वरदोभव, ॐ मण्डले सं०, बल्युपरिजलंक्षिपेत ॥८॥ तत ईशान पूर्वयोरंतराले—(संग्रहशिरोमणौ—ईशानान्तेच ब्रह्माणं पूर्वेशान्योस्तु मध्यमे, प्रतीचीनैर्ऋतीं मध्ये, अनन्तं स्थापयेदिति ॥) ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति गोतम ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मावाहने-बलिदानेच वि० ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः । सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्चयोनिम सतश्चव्विवः, ॐ भू० भोब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठ, ॐ ब्रह्मणेनमः बलि सम्पूज्य, जलं गृ० । ॐ ब्रह्मणे साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैनं दधि

माषभक्तबलिं समर्पयामि, भो० २ ब्रह्मन्दिशं रक्षैनंबलिं भक्ष २ ममसकुटुम्बस्य आयुःकर्त्ता क्षेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्न-कर्त्तावरदोभव, ॐ मण्डले सं० ॥९॥ ततो नैर्ऋति पश्चिमयो-रन्तराले—ॐ नमोस्त्विति देवश्रवाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, अनन्तो देवता अनन्तावाहने बलिदानेच वि० ॥ ॐ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो येकेच पृथिवी मनु। येऽअन्तरिक्षे येदिवितेभ्यः सर्प्पेभ्योनमः। ॐ भू० भो, अनन्तेहागच्छेहतिष्ठ ॐ अनन्तायनमः बलिं सं० जलं गृ०। ॐ अनन्ताय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्ति-कायैनं दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि, भो२ अनन्त दिशंरक्षैनं बलिंभक्ष२ ममसकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेम० शान्ति० पुष्टि० तुष्टि० निर्विघ्नकर्त्तावरदोभव, ॐ मंडलेसं० बल्युपरिजलंक्षिपेत् अथ क्षेत्रपाल बलिदानम्॥ ततो मण्डपाद्बहिर्वायव्यांदिशि दुर्ब्राह्मणं ❀ निमन्त्र्य तत्राहूय—सङ्कल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहंकृतस्यामुक कर्मण उत्तरांगत्वेन सर्वारिष्ट निवृ-त्यर्थं क्षेत्रपालाय बलिदानं करिष्ये तदंगत्वेन पूजनंच करिष्ये, ततो ब्राह्मणं पूजयेत्—ध्यानम्—सिन्दूर कज्जलाकारं शूलहस्तं त्रिलोचनम्, ध्यायामि मनसाभक्त्या क्षेत्रपालं सुरक्षकम् ॥ ततः पाद्य सिन्दूर कज्जलादिभिः, क्षेत्रपाल स्वरूपिणं ब्राह्मणं सम्पूज्य रक्तपुष्प मालाभिरलंकृत्य, रक्तवस्त्रेणा छाद्यच, ततः सदक्षिण सिन्दूर कज्जल कृसरान्नापूपान्न पक्वान्नबलिं सुसज्य तदुपरि—चतु-र्वर्तिसंयुक्तं दीपं प्रज्वलय्य बलिं जलेन संप्रोक्ष्य रक्तचन्दनादिभिः सम्पूज्यच—तत्र क्षेत्रपालं ध्यायेत् ॐ भ्राजद्वक्त्र जटाधरं त्रिन-यनं नीलांजनादिप्रभं, दोर्दण्डान्त गदाकपोलमरुणस्रग्गन्ध वस्त्रावृतम् ॥ घण्टाघुर्घुरमेखलाध्वनि मिलद्धुंकारभीमं विभुं, वन्दे संहित सर्पकुण्डलधरं श्रीक्षेत्रपालंसदा, ॐ भू० भोक्षेत्र-पालेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय

❀ टिप्पणी—यस्य वेदश्च वेदीच विच्छिद्येते त्रिपूरुषम्। सवैदुर्ब्राह्मणोनाम सर्व कर्मसुगर्हितः ॥

भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी वेतालादि परिवार युताय एष सदीपः सताम्बूलः सदक्षिणः कृसरान्नवलिर्नमः, इति समर्प्य, हस्तेजलंगृहीत्वा—भोभोक्षेत्रपाल दिशंरक्ष २ वलि भक्षभक्ष, ममसकुटुम्बस्य आयुष्कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शांतिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदोभव, ॐ मण्डले सम्प्रवक्ष्यामि०, इतिजलं वल्युपरिक्षिप्ता, ॐ दधिमाषोदनैर्युक्तं सदीपं वलिमुत्तमम् । क्षेत्र पाल गृहाणत्वं रक्षोविघ्नं प्रणाशय, इतिमन्त्रेणवलि ब्राह्मण हस्तेदत्वा, हस्ते गन्धाक्षत जलंगृहीत्वा वक्ष्यमाणेनभिः सारण कुर्यात्—ॐ यँ यँ यँ योगिराजं सकल गुणमयं नीलवर्णंघनाभं॥ शँ शँ शँ शूल हस्तं करधृत डमरुं डिं डिम वादयन्तं, मँ मँ मँ मण्डपस्थो परिगमन भयाद्विघ्नकान्द्रावयन्तम् । क्षों क्षां क्षौं क्षेत्रपालं भुवनभयहरं, पूजयामीशभक्त्या, इतिनजलं बहिर्गत ब्राह्मणोपरिक्षिपेत, सब्राह्मणः स्वयंभुंजीन वाचपुष्पथे प्रक्षिपेत॥ तत आचम्य ॐ भद्रंकर्णेभिः, इति मन्त्रं पठित्वा यथावकाश कुर्यात ॥

इति क्षेत्रपाल वलिदानम् ॥

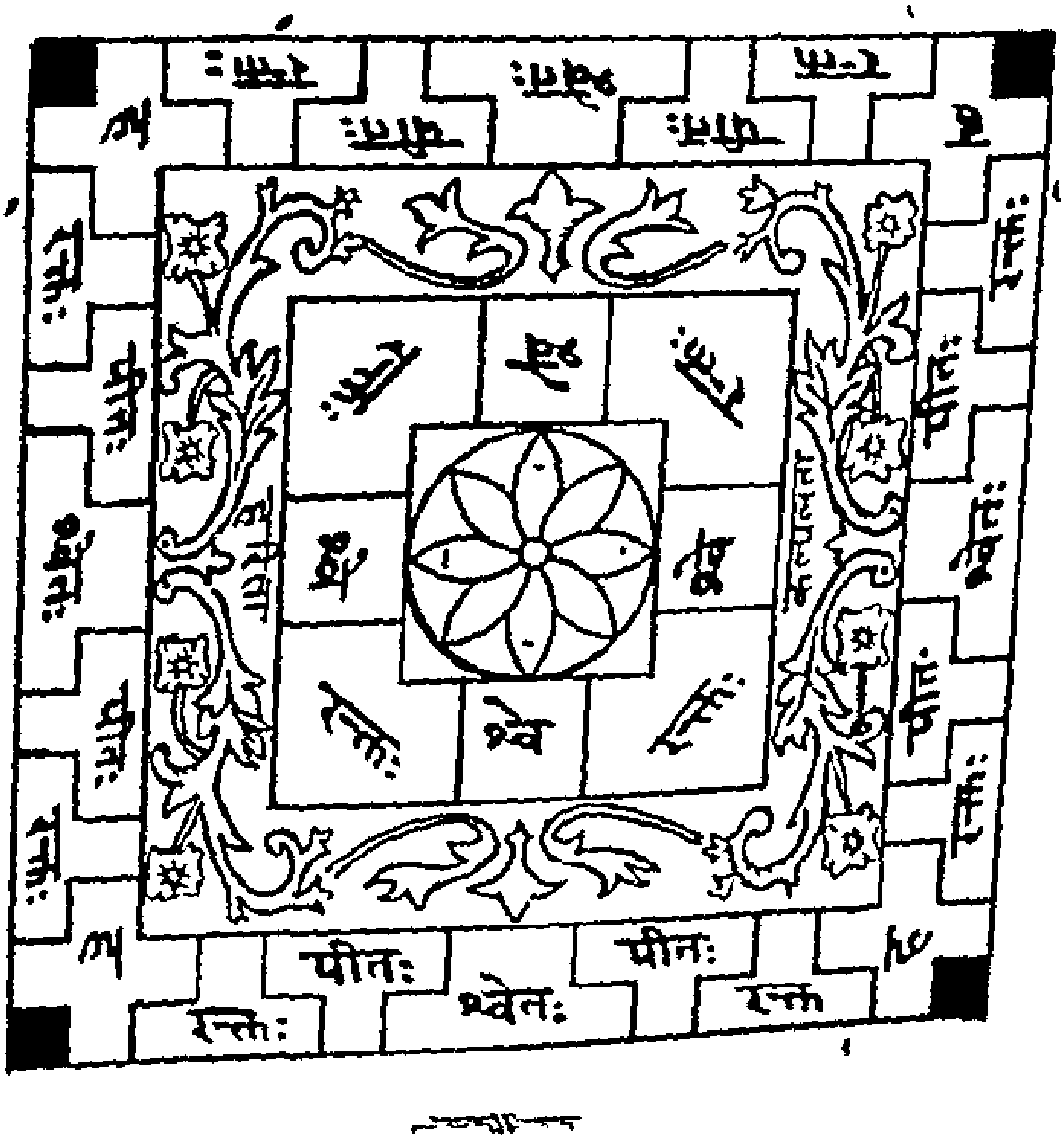
सप्तदश रेखात्मक दीक्षांग सर्वतो भद्रपरिभाषा

अथ शारदा तिलकोक्त सप्तदशरेखात्मक सर्वतो भद्र परिभाषां वक्ष्ये—तत्रा· दौ वेदीमानं मुक्तंकुण्ड रत्नावल्याम्—पदैः ४ साध शरै ५ स्तथाप्यथ द्वयें ७ हस्तैर्मिताया यवामध्ये मण्डप रन्ध्रभाग ६ विमिताऽप्यसापि हस्तोच्छ्रिका ॥ भूपानां प्रमराभिषेचन विधौ स्यात्सर्वतो भद्रिकाज्ञेया पद्मिनीभा जलाशय विधौवाणिमहे श्रीधरी ॥ क्रियासारेऽपि— हस्तमात्रं तदुत्सेधं चतुरस्रं समन्ततः । हस्तोन्नताच विस्तीर्णा चतुर्हस्तैः समंततः ॥ शारदातिल के—सूत्रपातविधानमुक्तम्—चतुर्स्रे चतुष्कोष्टे कर्णसूत्रसमन्विते । चतुर्ष्वपिचकोष्ठेपु कोणसूत्र चतुष्टयम् ।१। मध्येमध्ये यथामत्स्याभवेयु. पातयेत्तथा । पूर्वापरायते द्वे द्वे मन्त्रीयाम्योत्तरायते ।२। पातयेत्तेपुमत्स्येपु समंसूत्र चतुष्टयम् । पूर्ववत्कोण कोष्ठेपु कर्ण सूत्राणिपातयेत । ३ । ततुद्भूतेपु मत्स्येपु दद्यात्सूत्रचतुष्टयम् । तत कोणेपु मत्स्याःस्युस्तेपु सूत्राणि पातयेत । ४ । यावच्छत द्वयंमन्त्री हृद्पञ्चाशत्पदान्यपि । तावत्तेनैव विधिनाकर्णसूत्राणि पातयेत । ५ । अथ लेख प्रमाणम—पट्त्रिंशतापदैर्मध्ये लिखेत्पद्मं सुलक्षणम् । वहि पंक्त्याभवेत्पीठं पंक्तियुग्मेनवीथिका । १ द्वारशोभोपशोभास्रा शिष्टाभ्यां परिकल्पयेत । शास्त्रोक्त विधिनामन्त्रीतत· पद्मंसमालिखेत । २ । पद्मक्षेत्रस्य सत्यस्य द्वादशां शवहिः सुधी· ! तन्मध्यं विभजे द्वृत्तै स्त्रिभि समविभागत । ३ । आद्यंस्यात्कर्णिकास्थानं केशराणां द्वितीयकम् तृतीयंतत्रपात्राणां मुक्तांशेनदलाग्रकम् । ४ । वाह्यवृत्तान्तरालस्य मानेन विधिनासुधी । निधायकेशराग्रेपु परितो ऽर्द्धनिशाकरान् । ५ । लिखित्वा सन्धिमंस्थानि तत्रसूत्राणिपातयेत । दलाग्राणां चयन्मानं तन्मानाद्भृत्तमालिखेत । ६ । तदन्तराल तन्मध्य सूभ्रम्यां भयत. सुधी· । आलिखेद्वाह्यहस्तेन दलाग्राणि समन्ततः । ७ । दशमूलेपुयुगश केशराणि प्रकल्पयेत । एतत्साधारणंप्रोक्त पङ्कजं तन्त्रवेदिभि । ८ । पदान्त्रिणिपादार्थं पीठकोणेपु मार्जयेत । अवशिष्टैः पदैर्विद्वान्पीठगात्राणि कल्पयेत । ६ । पदानि वीथिसंस्थानि मार्जयेत्पंक्तभेदत । दिक्षुद्वाराणि रचयेद्दिचतुष्कोष्ठकैस्तत ।`१० । पदैस्त्रिभि रथैकेन शोभा स्युद्वारपार्श्वत· । उपशोभाःस्युरेकेन त्रिभि. कोष्ठैरनंतरम् । ११ अवशिष्टै. पदैः पङ्क्ति कोणानां स्याच्चतुष्टयम् । रङ्गकल्पना— रञ्जयेत्पद्मभिर्वर्णै मण्डलंतन्मनोहरम् । १२ । पीतं हरिद्रा चूर्णंस्यात्सितं तण्डुलसम्भवं । कुसुम्भचूर्णं मरुणंकृष्णंदग्ध पुलाकजम् । १३ । विल्वादिपत्रज श्याममित्युक्तं वर्णपञ्चकम् ॥ अंगुलोत्सेधविस्तारा सीमारेखा सिताशुभा । १ । कर्णिकापीतवर्णेन केशराण्यरुणेनच । शुक्लवर्णेन पत्राणि तत्सन्धी श्यामलेनतु । २ । रजसारञ्जयेन्मन्त्री यद्वापीतैश्चकर्णिका । केशराः पीतरक्ताः स्यूरक्तानिछदनानिच । ३ । सन्धय· कृष्णवर्णा· स्यु सितेनाप्यसितेनवा । रञ्जयेत्पीठ

गर्भोणि पादा स्युररुणप्रभा । ४ । गात्राणितस्य शुक्लानि वीथीष्वपिचतद्भ्सु । आलिखेत्क ल्पलतिकां सर्वदृष्टि मनोहराम् । ५ । वर्णैर्नानाविधैश्चित्रां दलपुष्प फलान्विताम् । द्वाराणि श्वेतवर्णानि कोणान्य सितभानिच । ६ । रक्ताशोभा समुद्दिष्टो पसोभातु पिशङ्गिका । तिस्रो, रेखा बहि कुर्यात्सितरक्ता. सिता क्रमात । ७ । मण्डल सर्वतोभद्र मेतत्साधारणस्मृतम् । पृथिव्यादिचतुराशीतिदेवता स्थापनायच । ८ ।

अत परं समन्त्रक देवता स्थापन क्रमोऽस्ति परंत्वत्र ग्रन्थविस्तार भयान्न दर्शित ॥

दीक्षांग सर्वतो भद्रोद्धारः ॥



अथ प्रतिमाग्न्यु त्तारणम्,;

अथ लोहकार स्वर्णकारादि घटित प्रतिमाग्न्यु त्तारण विधिः ॥ आचम्य देशकालौसंकीर्त्य अस्यांमूर्त्तौ स्वर्णकार लोहकारकृत घट्टनटंकाद्यवघातादि समस्तदोष परिहारार्थ देवत्वप्राप्त्यर्थमग्न्युत्तारण कर्मकरिष्ये,, प्रतिमांपात्रे निधायवंदयमाणाष्टकेनप्रथमावृत्तौ दुग्धधारां द्वितीयावृत्तौ जलधारां प्रतिमोपरिदद्यात् ॥ तत्रमंत्राः ॐ समुद्र स्यत्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्य ᳪ० शिवोभव। १। ॐ हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽअस्मभ्य ᳪ० शिवोभव। २ ॐ उपज्मन्नुपवेतसे वतर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमन्नो यज्ञम्पावक वर्ण ᳪ० शिवंकृधि। ३। ॐ अपामिदंन्ययन ᳪ० समुद्रस्य निवेशनम। अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्य ᳪ० शिवोभव ॥ ४ ॥ ॐ अग्नेपावकरोचिषा मन्द्रयादेवजिह्वया। आदेवान्वक्षियक्षि च ॥ ५ ॥ ॐ सनः पावक दीदिवोग्ने देवा२ऽ। इहावह। उपयज्ञ ᳪ० हविश्चनः ॥ ६ ॥ ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपाक्षामान्रुरुच उपसोभानुना। तूर्वन्नयामन्नेतशस्य नूरण आयोघृणेन ततृपाणोऽअजरः ॥ ७ ॥ ॐ नमस्तेहरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः। पावकोऽअस्मभ्य ᳪ० शिवोभव। इतिमंत्रैः प्रतिमांसंस्नाप्य गंधादिभिरालोड्यच यथास्थाने स्थापयेत् ॥

॥ इति प्रतिमाग्न्यु त्तारणम् ॥

अथ दीक्षांग सर्वतोभद्र देवता स्थापनम्पूजनंच।

अथ कर्त्ता सर्वतोभद्र वेदीसन्निधिमागत्याचम्य, भूतोत्सादनादिकं, कृत्वा वेदीशानकोणेरक्षादीपं प्रज्वलय्य,, संकल्पं कुर्यात–अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं ममास्यकुमारस्य बीजगर्भसमुद्भवैनो निवर्हणाय श्रीपरमेश्वर प्रीतये, द्विजत्व

संपादकश्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानासद्धिद्वाराषोडषसंस्कारान्तर्गतकरिष्यमाणामुकसंस्कारकर्मणिनवग्रहयोग्ययुतात्मकनवग्रहमंडपेमखसंरक्षणाय दीक्षाङ्ग सर्वतो भद्रवेद्यांपृथिव्यादि चतुरशीति, देवतानां तत्तत्प्रति मास्थापन पूर्वकमावाहनादि षोडशो पचारविधिना पूजनंकरिष्ये,, ततोभद्रमध्ये कलशस्थापन विधिना कलशंसंस्थाप्य सम्पूज्य च, चतुरशीति सुवर्ण रजतादि प्रतिमाः संस्थाप्य, भद्रस्थदेवता पूजामारभेत्—तत्रादौकर्णिकायाम्—पृथिवीमावाहयेत्—साक्षतपुष्पः—ॐ स्योना पृथ्वीतिमेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः पृथ्वी देवता पृथिव्यावाहने विनियोगः, ॐ स्योना पृथिविनो भवान्नृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्रथाः ॥ * ॐ भूर्भुवः स्वः भो, पृथ्वीहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठिता वरदा भव, हस्ते पुष्पं गृहीत्वा स्थापनीं मुद्रांदर्शयित्वा, ॐ पृथिव्या धार्यतेविश्वं दुर्वाहं सागरैर्नगैः । अतस्त्वांस्थापयामीह मण्डले ब्रह्मणःपदे, ॐ पृथिव्यैनमः संस्थाप्य प्रतिष्ठां कुर्यात्, ॐ एतन्तेदेव सवितर्य्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे । तेन यज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेन मामव ॥ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ० समिमंदधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयंतामों प्रतिष्ठ,, इति प्रतिष्ठाप्य, ॐ पृथिव्यैनमः सम्पूज्य, प्रार्थयेत्, एवं सर्वत्र, ततः केसराख्यपदेमेरुम्—ॐ प्रपर्वतस्येति देवरातऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मेरुर्देवता मेर्वावाहनेविनियोगः । ॐ प्रपर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिचऽइयानाः ॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताऽअहिर्बुध्न्य मनुरीयमाणाः । विष्णोर्विक्रमण

* टि० मत्स्य पुराणे—आवाहयेद्व्याहृतिभिः, सिद्धान्तसारे—पुष्पांजलिं समादाय मुद्रयार्च त्रिकण्ठया । यथोक्तां देवतांध्यात्वा मूलमन्त्रं समुच्चरन् ॥ सम्मुखीकृत्यदेवनामा आगच्छागच्छचेत्यपि, देवस्य तेजस्तन्मूर्त्तौ आवाहिन्याख्यमुद्रया । ततः संस्थापनं कुर्यादिहतिष्ठेहतिष्ठच ॥ संस्थापनीयां मुद्रांच दर्शयित्वा विभावयेत् ॥ ज्ञात स्थिरोदेव इति पश्चात्संस्थापयेदिति ॥ मुद्रालक्षणं सर्वकर्म परिभाषायां द्रष्टव्यम् ॥

मसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि ॥ पुष्पं—ॐ पर्वतेशं दिव्यवर्णं देवगन्धर्व सेवितं । सर्वकल्याण सिध्यर्थं मेरुं संस्थापयाम्यहम् । ॐ भू० मेरो इहागच्छेहतिष्ठ० । ॐ मेरवे नमः, सम्पूज्य, पद्मस्थाने ब्रह्माणं—ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति गोतम ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मा देवता ब्रह्मावाहने वि० ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचोऽवेन आवः । सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्चविवः ॥ पु०—ॐ चतुर्मुखं दिव्यरूपं हंसयान समन्वितं । मण्डले स्थापयाम्यत्र—ब्रह्माणं कमलासनम् ॥ ॐ भू० भो ब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठ, ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ ततो बहिरीशाने—ईशम्— ॐ तमीशानमिति गोतम ऋषिर्जगतीच्छन्द ईशानो देवतेशानावाहने वि० ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहेव्वयम् ॥ पूषानो यथाव्वेद सामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये, पु०—ॐ ईशानी पालकं देवं सर्वलोकाभयंकरम् । मण्डलेस्थापयाम्यस्मिन्नीशान्यां सर्वसिद्धये, ॐ भू० भोइशेहागच्छेहतिष्ठ, ॐ ईशायनमः, सं०, ततः पूर्वे, इन्द्रम्—ॐत्रातारमिन्द्रमिति गर्ग ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवतेन्द्रावाहने वि० । ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्र हैं० हवे हवे सुहव हैं० शूरमिन्द्रं ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र हैं० स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ पु०—ॐ सर्वलोकाधिपं श्रेष्ठं देवर्षीणांच पालकम् ॥ पूर्वदिक्पालकं देवराजं वैस्थापयाम्यहम् । ॐ भूर्भुवः स्वः भो इन्द्रेहागच्छेहतिष्ठ०, ॐ इन्द्रायनमः सं० ॥ तत आग्नेय्यामग्निम्—ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडो ऽ अवयासि सीष्ठाः ॥ यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ पु०—त्रिपादं मेषवाहंच त्रिशिखंच त्रिलोचनम् । आग्नेयां स्थापयाम्यत्र वन्हिं पुरुषमुत्तमम् ॥ ॐ भू० भो, अग्ने, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभवः ॥ ॐ अग्नये नमः, सम्पूज्य ॥ ततो दक्षिणे धर्मराजम्—ॐ यमायत्वेति दधीची ऋषि रुष्णि-

च्छन्दो धर्मराजो देवता धर्मराजावाहने वि० ॥ ॐ यमा-
यत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे॥
पु०— अन्तकः सर्वलोकानां धर्मराज इतिश्रुतः । अतस्त्वां स्थाप-
याम्यत्र रक्षोदिग्रक्षिणं प्रभुम् ॥. ॐ भू० भोधर्मराजेहागच्छते
हतिष्ठ सु० । ॐ धर्मराजायनमः, सम्पूज्य ॥ ततो नैर्ऋत्येनिर्ऋ-
तिम्—ॐ असुन्वन्तमिति मधुश्छंदा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो निर्ऋति-
र्देवता निर्ऋत्यावाहने विनियोगः—असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्ते
नस्येमन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसात ऽ इत्यानमोदेवि
निर्ऋतेतुभ्यमस्तु। पु०—नैर्ऋत्यां वसतिर्यस्य घोररूपीसदाद्वियः।
निर्ऋतिं स्थापयाम्यत्र नैर्ऋत्यां मण्डलेशुभे॥ ॐ भू० भोनिर्ऋत
इहागच्छेहतिष्ठ सु० । ॐ निर्ऋतयेनमः पू० ॥ ततः पश्चिमेवरु-
णम्—ॐ इमम्म इत्यस्य शुनशेफ ऋषिर्गायत्रीछन्दो वरुणो
देवता वरुणावाहने विनियोगः । ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हव-
मद्याच मृडय । त्वामवस्युराचके । पु०—ॐ अपांपतिं पाशधरं
यादसांपतिं शुभम् । वरुणं स्थापयाम्यत्र वारुण्यां मण्डलेशुभे॥
ॐ भू० वरुण इहागच्छेहतिष्ठ सुप्र० ॥ ॐ वरुणायनमः, पू० ॥
ततो वायव्ये वायुम्—ॐ वातोवामन इति बृहस्पतिऋषि रुष्णिः
क्छन्दो वायुर्देवता वाय्वावाहने वि० ॥ ॐ वातोवामनोवा-
गन्धर्वाः सप्तवि ट्ठ० शतिः । ते ऽ अग्रेश्वमयुञ्जँस्ते अस्मिन्नवमा-
दधुः ॥ पुष्पम् गृ०—ॐ आशुगं सर्वबोधश्च गन्धवाहं मनोरमम्।
मण्डलेस्थापयामीह वायव्यां दिशिरक्षकम् ॥ ॐ भू० भोवायो,
इहागच्छेहतिष्ठ सुप्र० ॥ ॐ वायव्येनमः । पू० । तत उत्तरे
सोमम्—ॐ सोममिति तापसऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः सोमोदेवता
सोमावाहने वि० । ॐ सोम ट्ठ० राजान मवसेग्निं गीर्भिर्हवामहे
आदित्यान्विष्णु ट्ठ० सूर्यं ब्राह्मणंच बृहस्पतिम् ॥ पु०—ॐ क्षीरोदा-
र्णवसम्भूतं लक्ष्मीबंधुंनिशाकरम् । मण्डले स्थापयाम्यत्र सोमं
सर्वार्थ सिद्धये॥ ॐ भू० भोसोमेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितोवरदो-
भव ॥ ॐ सोमायनमः, पू०॥ ततो वह्निरीशानयामे एकादशरुद्रान्—

ॐ रुद्रास इ० मृज्य इति सिन्धुद्वीपऋषिरनुष्टुप्छन्दो रुद्रादेवता रुद्रावाहने वि० ॥ ॐ रुद्रास इ० मृज्य पृथिवीं बृ० ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्रऽइच्छुक्रो देवेपुरोचते ॥ पु०—ॐ एकादशाधिकान्रुद्रानजपादैकपूर्वकान्। मखसंरक्षणार्थाय स्थापयामि सुरोत्तमान्। रुद्रनामानि—अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षोथरैवतः। हरश्चबहुरूपश्च त्र्यंबकश्चसुरेश्वरः ॥ सावित्रश्चजयन्तश्च पिनाकी रुद्रसंज्ञकाः ॥ इति संस्थाप्य—ॐ भूर्भुवःस्वः, भो एकादशरुद्राः, इहागच्छतेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु, , ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः पू० ॥ तत इन्द्रदक्षभागेवसून्—ॐ ज्मया इति वसिष्ठऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वसवो देवता वस्वावाहने वि० ॥ ॐ ज्मया अत्रवसवो रन्तदेवाउरावन्तरिक्षे, मर्जयन्तशुभ्राः ॥ अर्वाक्पथउरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतादूतस्य जग्मुपोनो ऽ अस्य ॥ पु०—ॐ ध्रुवंधरंतथासोमं आपश्चैवानिलंनलं। प्रत्यूषंचप्रभासंच क्रमशः स्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भू० भोवसवेहागच्छते तिष्ठत-सुप्रतिष्ठिना वरदाभवन्तु ॐ अष्टवसुभ्योनमः, पू०। तत इन्द्रवामेआदित्यान्—ॐ यज्ञोदेवानामित्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द आदित्यादेवता आदित्यानामावाहने वि० ॥ ॐ यज्ञोदेवानां प्रत्येतिसुम्नमादित्यासो भवतामृडयन्तः ॥ अवोर्वाचीसुमतिर्व्वृत्याद इ० होश्चिद्याव्वरिवो वित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा ॥ पु०—ॐ धातारंचैवरुद्रंच, अर्यमणंमित्र संज्ञकं। सूर्य्यभगंविवस्वन्तं पूषणंसवितारकम् ॥ त्वाष्ट्रमच्युतनामानमादित्यान्द्वादशांश्च-तान्। स्थापयाम्यत्ररक्षार्थं द्वादशादित्यसंज्ञकान् ॥ ॐ भू० भो द्वादशादित्या इहागच्छतेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु ॥ ॐ द्वादशादित्येभ्योनमः, पू० ॥ ततोदक्षिणेअश्विनौ—ॐ यावांकशा इत्यस्य मेधातिथि ऋषिर्गायत्री छन्द अश्विनौदेवते अश्विनौरावाहने वि०। ॐ याबाङ्कशामधुमत्यश्विना सूनृतावती। तयायज्ञंमिमिक्षतम्। ॐ अश्विनौदेव वैद्यौच दिव्यरूपधरौ शुभौ ॥ मण्डले स्थापयित्वातौ पूजयामि सुसिद्धये ॥ ॐ भू०

भो अश्विनाविहागच्छतमिहतिष्ठतम ॥ वरदाभवेताम् ॥ ॐ अश्विभ्यांनमः ॥ ततोऽग्निवामे विष्णुम्-ॐ विष्णोरराट मितिउनथ्य ऋषिर्यजुश्छन्दो विष्णुर्देवता विष्णवा वाहने वि० । ॐ विष्णोरराट मसि विष्णोरन प्त्रेस्थो विष्णोःस्यूरसि विष्णो-र्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा । ॐ नारायणं महाविष्णुं संसारार्णवतारकम्, मख संरक्षणार्थत्वां स्थापयाम्यत्र भक्तितः ॥ ॐ भू० विष्णो, इहागच्छेह तिष्ठ सुप्र० । ॐ विष्णवेनमः पूजयेत ॥ ततोयम दक्षेदुर्गां-ॐ तामग्निवर्णामिति सौभऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो दुर्गादेवता दुर्गावाहने वि० ॥ ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टाम् ॥ दुर्गांदेवीं शरणमहं प्रपद्येसुतर सितरसेनमः ॥ ॐ अग्निवर्णां ज्वलन्तींच महसा सर्वदा शुभाम् । भक्तानां वरदां देवींदुर्गां संस्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भोदुर्गे, इहागच्छेहतिष्ट सुप्रतिष्ठिता वरदाभव ॥ ॐ दुर्गायैनमः, पू० ॥ ततोयमवामे स्वधाम्- ॐ उदीरितामिति शंख ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः, स्वधा देवता स्वधावाहने विनियोगः- ॐ उदीरिता-मवरऽउत्परासऽउन्मध्यमापितरः सोम्यासः ॥ असुंयऽईयुरवृका ऋतज्ञा स्तेनोवन्तु पितरोहवेषु ॥ पु०-ॐ त्वंस्वाहा त्वंस्वधात्वं ह्विषट्कार स्वरात्मिका ॥ अतःस्त्वांमंडलेप्यस्मिन्स्थापयामि-स्थिराभव ॥ ॐ भू० भोस्वधेइहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठिता वर-दाभव, ॐ स्वधायैनमः, पू० ॥ ततोनिर्ऋतिदक्षेमृतिम—ॐ परंमृत्योरिति संकुशुक ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मृतिर्देवता मृतेरा-वाहने विनियोगः, ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहि पंथांयस्तेऽअन्यऽइतरो देवयानात । चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानः प्रजा ॐ रीरिषोमोत वीरान्, पु०—ॐ अनेकविधव्याध्यादि रोग दोष समन्वितम् । मृत संस्थापयामीहदुष्टारिष्ट प्रशान्तये ॥ ॐ भू० भोमृते, इहा-गच्छेहतिष्ठ, सुप्रतिष्ठिता वरदाभव, ॐ मृत्यवेनमः, पू० ॥ ततो निर्ऋतिवामेदक्षं—ॐ अदितिरिति वृहस्पति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो दक्षोदेवता दक्षावाहने वि० ॥ ॐ अदितिह्र [illegible] ञ्जनयथा

देवा ॐ ऽ अन्वजायन्त भद्राऽ अमृतबंधवः ॥ पु०—ॐ दक्षोऽसि सर्वकार्येषु महान्यज्ञकर प्रियः । ऋषीणां सर्वदादक्षो मण्डले ऽस्मिन्स्थिरो भव ॥ ॐ भू० दक्षेहागच्छेतिष्ठ सुप्र० ॥ ॐ दक्षाय नमः पू० ॥ ततो वरुणदक्षेगणेशम्—ॐ गणानान्त्वेति प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने वि० । ॐ गणानान्त्वा गणपति ᳪ० हवामहे, प्रियाणान्त्वा प्रियपति ᳪ० हवामहे ॥ निधीनान्त्वा निधिपति ᳪ० हवामहे वसोमम ऽ आहमजानि गर्भध मात्वमजासि गर्भधम् । पु०—ॐ सिद्धिबुद्धीश्वरंदेवंगणेशं यजनायकम् । अतस्त्वांस्थापयाम्यत्र मङ्गलार्थं विनायकं ॥ ॐ भू० गणेशेहागच्छेहतिष्ठसुप्र० ॥ ॐ गणेशायनमः । पू० ततोकार्तिकेयम्—ॐ यत्रबाणाइति, अप्रतिरथ ऋषिः पंक्तिश्छन्दः कार्तिकेयोदेवता कार्तिकेया वाहने वि० । ॐ यत्रबाणास्सम्पतन्ति कुमाराविशिखाऽइव । तन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतु ॥ पु०—ॐ षाण्मातुरंकार्तिकेयं मयूरवरवाहनम् । मण्डलेस्थापयाम्यत्र मखसंरक्षणायच । ॐ भू० भोकार्तिकेयेहागच्छेहतिष्ठसुप्र० ॥ ॐ कार्तिकेयायनमः । पूजयेत ॥ ततो वायुदक्षेगन्धर्वम्—ॐ गंधर्वस्त्वेतिप्रजापतिऋषिर्यजुश्छन्दो गन्धर्वोदेवता गन्धर्वावाहनेवि० । ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातुविश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्याग्निरिडऽईडितः ॥ पु०—ॐ स्थापयाम्यत्रगन्धर्वमप्सरोगणसेवितं । विश्वावसुंसुरागज्ञं, तालतानकोविदम् ॥ ॐ भू० भोविश्वावसो, इहागच्छेहतिष्ठसुप्र० । ॐ विश्वावसवेनमः । पू० ॥ ततोवायुवामेऋषभम्—ॐ ऋषभमितिवैराजऋषि रनुष्टुप्छन्दो ऋषभोदेवता ऋषभावाहने वि० । ॐ ऋषभमासमानानां सपत्नानांविपासहिम् । हंतारंशत्रूणांकृधि विराजंगोपतिं गवाम् ॥ ॐ पु०—योगाचार्ययोगिभर्ग्यानगम्यं, प्रज्ञापारंगोपतिंश्रीनिकेतम् ॥ संस्थाप्यैवंसर्वसौभाग्यहेतुं भद्रेचास्मिन्योगिराजं नतोऽस्मि ॥ ॐ भू० ऋषभेहागच्छेहतिष्ठसुप्र० ॐ ऋषभायनमः पू० । ततः सोमदक्षेप्रजापतिम्—ॐ प्रजापतेतिहिरण्यगर्भऋषि-

त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवताप्रजापत्यावाहनेवि० । ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यो विश्वारूपाणिपरितावभूवयत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तुवय ९० स्यामपतयोरयीणाम् । ॐ चतुर्बाहुंसौम्यरूपं जगन्मंगलकारणम् । प्रजापतिंस्थापयामि सर्वविघ्नप्रशान्तये । ॐ भूर्भुवःस्वः भोप्रजापते, इहागच्छेहतिष्ठ, सुप्रतिष्ठितोवरदोभव, ॐ प्रजापतयेनमः, पूजयेत् ॥ ततः सोमवामे अदितिम्-ॐ अदितिर्द्यौरितिगौतमऋषि त्रिष्टुप्छन्दो ऽ दितिर्देवता, अदित्यावाहने विनियोगः-ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपितासपुत्रः । विश्वेदेवा ऽ अदितिः पञ्चजना ऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् । पु०-ॐ सर्वसौभाग्यसंयुक्तां कश्यपप्राणवल्लभां । देवानांमातरंदेवी मदितिंस्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भू० भो अदिते, इहागच्छेहतिष्ठसुप्र० ॥ ॐ अदित्यैनमः । पू० ॥ तत ईशानदक्षेध्रुवम्-ॐ ध्रुवासीतिप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो ध्रुवो देवताध्रुवावाहने वि० । ॐ ध्रुवोसिध्रुवोयंयजमानो ऽ स्मिन्नायतनेप्रजयापशुभिर्भूयात् ॥ पु०-ॐ औत्तानपादंरणदुर्जयंध्रुवंनारायणाल्लब्धपदंदुरंतरम् ॥ तंराजपुत्रंमुनिवर्यदीक्षितं संस्थापयाम्यत्र सुमङ्गलार्थम् ॥ ॐ भू० भोध्रुवइहागच्छेहतिष्ठसुप्र० । ॐ ध्रुवाय नमः पू० ॥ ततो ऽ न्तरेशानमारभ्य नाममन्त्रैर्हस्ताभ्यामावाहनीं स्थापनीं मुद्राश्चप्रदर्श्यपाद्यादिभिः पूजनंकुर्यात्-ईशाने-ॐ वैनायक्यैनमः ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥ एवंसर्वत्र-पूर्वे-ॐ ऐंद्र्यैनमः ॐ भूर्भुवःस्वः एन्द्रीं आ० । स्था० । पू० । आग्नेये-ॐ कौमार्यैनमः ॐ भू० कौमारीं आ० स्था० पू० ॥ दक्षिणे-ॐ ब्राह्म्यैनमः ॐ भू० ब्राह्मीं आ० स्था० पू० । नैर्ऋत्ये--ॐ वाराह्यैनमः ॐ भू० वाराहीं आ० स्था० पू० । पश्चिमे-ॐ चामुण्डायैनमः । ॐ भू० चामुण्डाम् । आ० स्था० पू० । वायव्ये-ॐवैष्णव्यैनमः ॐ भू० वैष्णवीम्, आ० स्था० पू० । उत्तरे---ॐ ऐश्वर्यैनमः ॐ भू० ईश्वरीं आ० स्था० पू० । ततईशानवामे-तेनैवविधना-ॐ गौतमायनमः, ॐ

भूर्भुवःस्वः गौतममावाहयामिस्थापयामिपूजयामि। पूर्ववामे—ॐ भरद्वाजायनः, ॐ भू० भरद्वाजमावाहयमि स्था० पू०। अग्निवामे– ॐ विश्वामित्रायनमः। ॐ भू० विश्वामित्रम्–आ० स्था० पू० दक्षिणवामे ॐ कश्यपायनमः, ॐ भू० कश्यपम्–आ० स्था० प०। नैऋत्यवामे–ॐ जमदग्नयेनमः। ॐ भू० जमदग्निम्० आ० स्था० प०। पश्चिमवामे–ॐ वसिष्ठायनमः, ॐ भू० वसिष्ठम् आ० स्था० पू०। वायव्यवामे–ॐ अत्रयेनमः, ॐ भू० अत्रिम्० आ० स्था० प०। उत्तरवामे–ॐ अरुन्धत्यैनमः ॐ भू० अरुन्धतीम् आ० स्था० पू० । ततोवीथीशाने–ॐ त्रिशूलायनमः, ॐ भू० त्रिशूलम्, आ० स्था० पू० । पूर्वे ॐ अशनयेनमः, ॐ भू० अशनिम् आ० स्था० प० ईशाने–ॐ शक्तयेनमः, ॐ भू० शक्तिम् आ० स्था० पू०। दक्षिणे–ॐ दंडायनमः, ॐ भू० दंडं आ० स्था० पृ०। नैऋत्ये–ॐ खड्गायनमः। ॐ भू० खड्गम्, आ० स्था० पू०। पश्चिमे– ॐ पाशायनमः, ॐ भू० पाशम् आ० स्था० पू०। वातव्ये– ॐ अंकुशायनमः, ॐ भू० अंकुशम्, आ० स्था० पृ० उत्तरे– ॐ गदायैनमः, ॐ भू० गदाम्– आ० स्था० पू० । ततोवीथीपु पूर्वादिदिक्षु–ॐ ओमास इति मधुच्छन्द ऋषिर्गायत्री-छन्दो विश्वेदेवादेवता विश्वेदेवावाहने वि० । ॐ ओमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवास ऽआगत। दाश्वा ॐ सोदासुपःसुतम्। पु०-ॐ विश्वे देवान्पितृ गुरू त्रलकान्मंडपेश्वरान् । स्थापयामीह भक्त्यातान्पितृ यज्ञपरायणान्। ॐ भू०भोविश्वेदेवा इहागच्छ तेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु॥ ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः पूजयेत्। ततोवीथी दक्षिणेपितृन्—ॐ आयन्त्विति शंखऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः पितरोदेवताः पित्रावाहने वि० । ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्यासो ऽग्निष्वात्ताः—पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तुते वन्त्वस्मान्। पु०—ॐ अग्निष्वात्ता दिकान्पितृन्स्त्रगलंकार भूषितान्। देवयानानुगान्सर्वान्मंडलेस्था पयाम्यहम्। ॐ भू० भोपितरः, इहागच्छत, इहतिष्ठत, सुप्रति-

ष्ठिता वरदा भवन्तु । ॐ पितृभ्योनमः । पू० । ततोवीथी पश्चिमे सागरान्—ॐ धाम्नइति गौतमऋषिर्गायत्रीछन्दःसागरादेवताः सागरा वाह्ने वि० । ॐ धाम्नोधाम्नो राजन्नितो व्वरुणो नुमुञ्च यदापो ऽ अघ्न्या ऽ इतिव्वरुणेति शपामहेततो व्वरुणोनुमुञ्च । पु० ॐ लवणेक्षुसुरा सर्पिर्दधिदुग्ध जलाभिधान् । सागरान्सप्तक्रमशोमंडपे स्थापयाम्यहम् । ॐ भू० भोसप्तसागरा इहागच्छत इहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु । ॐ सप्त सागरेभ्योनमः पू० । ततोवीथ्युत्तरे सरितः—ॐ इमम्मे इति सिन्धुक्षित्प्रैयमेध ऋषिर्जगतीछन्दः सरितोदेवताः सरिता मावाहने विनियोगः । ॐ इमम्मे गंगेयमुने सरस्वति शतद्रूस्तोमं स्वचतापरुष्ण्या । असिक्न्यामरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये श्रृणुह्या सुषोमया । पु०—ॐ गंगांचैव सरस्वतींचयमुनांगोदावरीं नर्वदांकावेरीं सरयूं महेन्द्र तनयां चर्मण्वतीं चालकाम् । क्षिप्रांवेत्रवतीं महासुरनदीं, ख्यातांवुधैर्गंडकी मैनाःपूर्णजलाःसमुद्रसहिताः संस्थापयामिक्रमात् ॥ ॐ भू० गंगादिसरित इहागच्छते हतिष्ठत, सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । ॐ सरिद्भ्योनमः । पू० ॥

॥ इति सप्तदश रेखात्मक सर्वतोभद्रे, देवता स्थापन क्रम ॥

॥ अथ सर्वतो भद्र संघ पूजायां वैदिक पूजापद्धति ॥

एवं पूर्वोक्त पद्धत्या सर्वतोभद्रेदेवताः संस्थाप्य, एतन्तेति प्रतिष्ठाप्यन्त ध्यायत्—हरिः ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः-सहस्राक्षः सहस्रपात् सभूमि ᳪ सर्व्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ आसनम्—ॐ पुरुषऽएवेद ᳪ सर्व्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम् । उतामृत त्वस्ये शानो यदन्नेनातिरोहति,, आसनंसमर्पयामि, पाद्यम्—ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्चपूरुषः । पादोस्य विश्वा भूतानित्रिपादस्या मृतंदिवि, पा०स० । अर्घ्यं गन्धाक्षत सुगन्धिद्रव्य युतंच—ॐ त्रिपा दूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः । ततो विष्वंव्यक्रा मत्साशनानशनेऽभि ॥ अ०स० ॥ आचमनीयम्—ॐ ततोव्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः । सजातोऽअत्यरि च्यत पश्चाद्भूमि मथोपुरः । आ०स० स्नानीयंजलम्—ॐ तस्माद्यज्ञा त्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ॥ पशूंस्तांश्चक्रे व्वायव्या नारण्या ग्राम्याश्चये ॥स्ना०ज०स०॥ पयःस्नानम्—ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽऔषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयःस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् । प०स्ना०स० । दधिस्नानम्—ॐ दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णो रश्वस्य व्वाजिनः । सुरभिना मुखा करत्प्रणऽआयू ᳪ षितारिषत् ।द०स्ना०स०। घृतस्नानम्—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृतेश्रितो घृतम्वस्यधाम ॥ अनुष्वधमा वहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षिहव्यम् । घृत स्ना० स० । मधुस्नानम्—ॐ मधु व्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीर्मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ᳪ रजः । मधुद्यौरस्तुनः पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिर्मधुमा ᳪ ॥ अस्तुसूर्य्यः । माध्वीर्गावो भवन्तुनः । म०स्ना०स० । शर्करास्नानम्—ॐ अपा ᳪ रसस्ययोरस स्तंवोगृह्णाम्येपते योनिरिन्द्रा यत्वा जुष्टतमम् । श० स्ना० स० । गन्धोदकस्नानम्—ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्वयेश्रियम् ।ग०स्ना०स०।

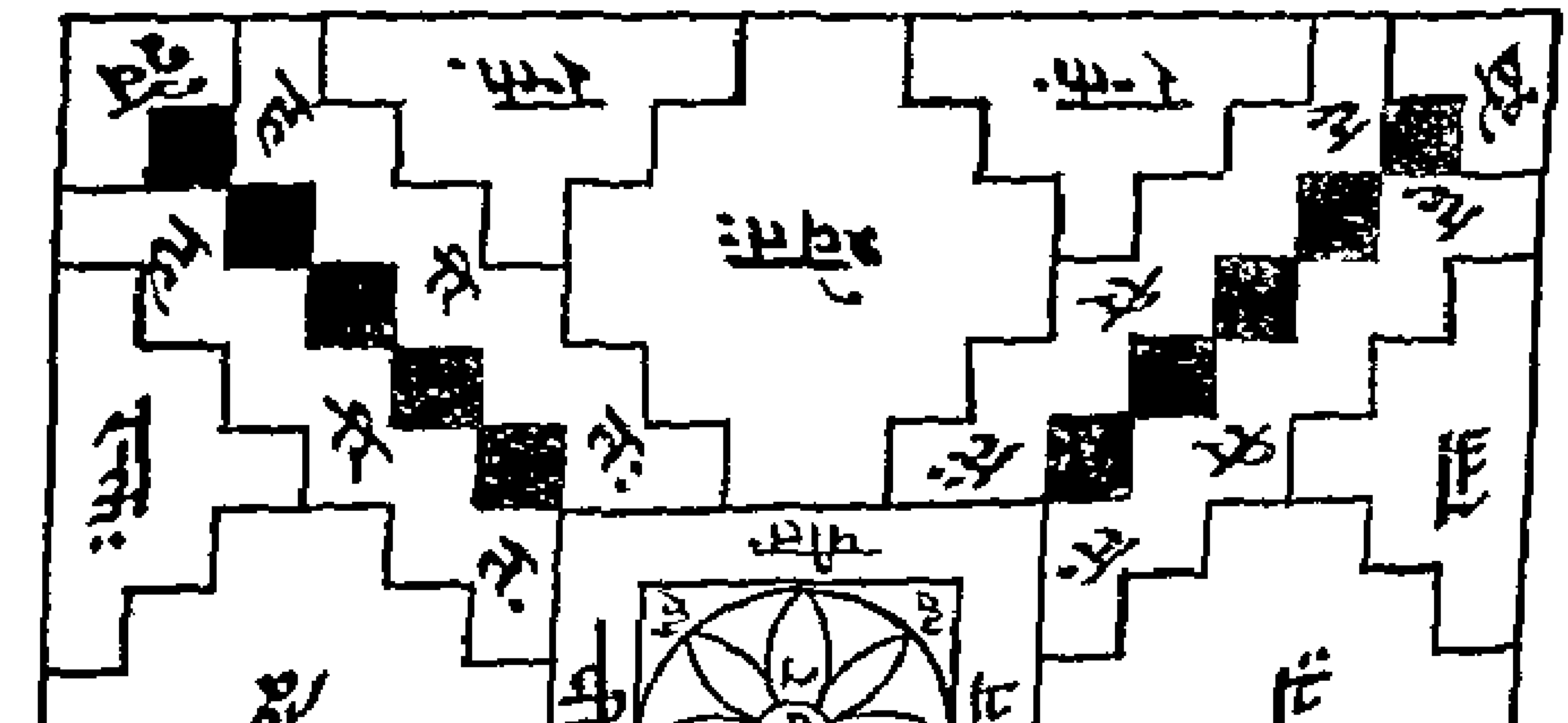
ततः शंखोदकेन—पुरुषसूक्तेनाऽभिषेकं कुर्यात्, अमृताऽभिषेकोऽस्तु,, स्नानान्ते आचमनीयम्—ॐ ततोविराड जायतविराजोऽधिपूरुषः, सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः।स्नानं स०। वस्त्रम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचःसामानि जज्ञिरे छन्दाँसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत, वस्त्रं सम०। वस्त्रान्ते आचमनीयं स०। यज्ञोपवीतम्—ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त येकेचो भयादतः। गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा ज्जाताऽअजावयः यज्ञोपवीतं स०। आचमनीयं स०। चन्दनम्—ॐ तंयज्ञंबर्हिपि प्रोक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्चये। चन्दनं स०। भूषणम्—ॐ स्वर्णधर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्णं ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा। भूषणं,समर्पयामि। अक्षतान्—ॐ अक्षन्नमीमद त ह्यवप्रिया ऽधूपत। अस्तोपत स्वभानवो विप्रान विष्टया मती योजान्विन्द्रते हरी॥ अ० स०। कंकुमादि सौभाग्य द्रव्यम्—ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्यायाहेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमाँ सम्परिपातु विश्वतः। सौभाग्यद्रव्यं स०। पुष्पाणि—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन्। मुखंकिमस्यासीत्किंबाहू किमूरूपादाऽउच्येते। पुष्पाणि स०। तुलसीदलम्—ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपाँ सुरे स्वाहा, तुलसी स०॥ विल्वपत्रम्—ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्यायच हनन्याय च। विल्वपत्र स०॥ दूर्वांकुरान्—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च दूर्वांकुरान्समर्पयामि। धूपम्—ॐ धूरसि धूर्वधूर्वन्त धूर्वत योस्मान्धूर्व तितं धूर्वयंवयं धूर्वामः। देवानामसि वन्हितम ठं० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्। धूपं स०। आरार्तिक्यदीपम्—ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः

स्वाहा ॥ अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्य्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहाः। ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा ॥ आ' स० ॥ नैवेद्यम्—ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ई० शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तन पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोका २ऽ अकल्पयन् ॥ पूर्वापोशनम् ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। नैवेद्यान्ते जलं समर्पयामि ॥ ततः पूगीफलम्—पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युत्तम्। सर्वतोभद्र देवानां प्रीतये कल्पयाम्यहम्। पू० स०। उपायनम्—ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम। उपायनं स०। ततः सफलार्घंदद्यात्—ॐ याफलीनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणी। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुंचंत्व ई० हसः ॥ अर्घजलेन देवंस्नापयित्वा फलमग्रेस्थापयेत् ॥ ततः पूर्वोक्त मन्त्रेण कर्पूरार्तिक्यंकृत्वा—पुष्पाञ्जलिर्दद्यात्—ॐ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्रपूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः। ॐ ब्रह्मादक्षः कुबेरो यमवरुण मरुद्वन्हिचन्द्रेन्द्र रुद्राः। शैलानद्यः समुद्रा ग्रहगणमनुजा दैत्यगन्धर्व नागाः। सिद्धानक्षत्र तारा रविवसुमुनयोव्योमभूरश्विनौच, प्रोक्तानुक्ताश्च येषां विहित सुरगणाः पान्तुनः सर्वदेवाः, ॐ चतुर्भिश्च चतुर्भिश्चद्वाभ्यां पञ्चभिरेव च। हूयते च पुनर्द्वाभ्यां समेविष्णुः प्रसीदतु ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। क्षम्यन्तु सर्वतद्देवाः प्रसीदन्तु सदामयि ॥ ततः कार्यान्ते उत्तराङ्ग पूजनंविधाय, पुनर्मन्त्र पुष्पाञ्जलिंदत्वा। देवताविसर्जनार्थं हस्ताभ्याम क्षतान्भद्रो परिक्षिप्त्वा, मन्त्रमुच्चरेत्—ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम्। इष्टकाम समृध्यर्थं, पुनरागमनाय च, सर्वे गच्छन्तु भोदेवाः, सर्वतो भद्रदेवताः स्वस्वस्थानेषुतिष्ठंतु मम कल्याण हेतवे ॥

॥ इति सर्वतोभद्र वैदिकपूजा पद्धतिः ॥

अथैकोनविंशति रेखात्मक सर्वतोभद्रप्रमाणम्—उक्तं च देवी पुराणे—समसूत्रकृत चने प्रागुदक्प्रवणभुवि । मण्डल लक्षणोपेत मायतत्रमहामुने । प्रागुत्तरेच मध्यवा यथा लाभ मनाविल । सनणरेखा शुद्धता न्यस्यावादिशिनिगतम् । हस्तमान प्रमाणेनतत्रस्थ सुपरोक्षितम् । उक्तं च भद्रमार्तिकायाम् प्रागुदीच्यायतारेखा कुर्यान्नाम विंशतिम् । खण्डेन्दुस्त्रिपद कोणे शृंखलापंचभि पदै । एकादश पदावल्लीभद्रतु नवभि पदै । मध्य षोडषभि कोष्ठे पद्ममष्टदल स्मृतम् । श्वेतेन्दु श्रृंखला कृष्णा वल्ली नीलेनपूरयेत । भद्राणा सितावापि परिधि पीतवर्णकं । बाह्यातर दलं श्वेता कर्णिकापीतवर्णिका । परिध्यावष्ठित पद्म वाह्येगरथरजस्तम । तन्मध्यस्थापयेद्देवा ब्रह्माद्याश्चसुरेश्वरान् । कुर्यान्मण्डप विस्तार स्तम्भ पूजाक्रमानत ।

॥ एकोनविंशति रेखात्मक सर्वतोभद्रोद्धारः ॥



अथ दीक्षेतरकर्मस्वेकोनविंशति रेखात्मक सर्वतो भद्र-देवता स्थापनं पूजनंचवक्ष्ये—तत्रादौकर्त्ता प्रातर्नित्यक्रियांकृत्वा पूजास्थलमागत्य गणेशादीन्सम्पूज्य, प्रतिज्ञासङ्कल्पं च कुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ सङ्कीर्त्यामुकराशिरमुकगोत्रो ऽ मुको ऽ हं

कर्त्तव्यामुक कर्माङ्गत्वेन ब्रह्मादि सर्वतोभद्रस्थ देवानामावाहन स्थापन क्रमेणपूजनं करिष्ये—आचार्यमपिच वृणुयात्। तत्रादौ मध्येकार्णिकायाम्-अक्षतपुष्पै रावाहनींमुद्रां प्रदर्श्य ब्रह्माणमावाह्येत्। ॐ आवाहयामिदेवेशं ब्रह्माणंकमलासनम्। चतुर्भुजं सृष्टिकरंधारयन्तं कमण्डलुम्। ॐ ब्रह्मजज्ञानमितिमन्त्रस्य प्रजापतिऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मस्थापने विनियोग। ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमत सुरुचोवेन ऽ आवः। सुबुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्यविष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्चविवः। ॐ भूर्भुवः स्वः, ब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभवः। ॐ ब्रह्मणेनमः। एवंसर्वत्र॥ तत उदीचीमारभ्य वायव्यान्तं कुबेरादीन्वायुपर्यन्तानष्टौ लोकपान्स्थापयेत्॥ उत्तरेवाप्यांसोमम्—आवाहयाम्यहंसोमं रोहिणीशंसुधामयम्। ज्योतिर्मण्डलसंकीर्णं सर्वकल्याणहेतवे। ॐ वय ई० सोमेत्यस्य बन्धुऋषिर्गायत्रीछन्दः सोमोदेवता सोमस्थापने विनियोगः। ॐ वय ई० सोमव्रतेतव मनस्तनूषुविभ्रतःप्रजावंतःसचेमहि। ॐ भू० सोम०॥ ईशान्यांखण्डेन्दावीशानम्-आवाहयाम्यहं देवमीशानं वृषवाहनम्। पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रंच शूलहस्तं कपालिनम्। ॐ तमीशानमित्यस्य गौतमऋषिर्जगतीछन्द ईशानोदेवता ईशानस्थापने विनियोगः। ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहेवयम्। पूषानोयथावेदसाम सद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये। ॐ भू० ईशान०॥ पूर्वेवाप्यामिन्द्रम्—ॐ आवाहयामिदेवेशं देवराजं सुरार्चितम्। एरावतसमारूढं वृत्रघ्नं कुलिशायुधम्। ॐ त्रातारमितिमन्त्रस्य गर्गऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रोदेवता-इन्द्रस्थापने विनियोगः। ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ई० हवेहवे सुहव ई० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र ई० स्वस्तिनोमघवा धात्विन्द्रः। ॐ भू० इ०। आग्नेयां खण्डेन्दावग्निम्—दिव्यरूपं त्रिनयनंदेवानां हव्यवाहकम्। सप्तजिह्वं वायुसखमाह्वयेहुतवाहनम्। ॐ त्वन्नो ऽ अग्न इतिमन्त्रस्यांगिरस हिरण्यस्तूप ऋषि

जगतीछन्दो ऽ ग्निर्देवताग्निस्थापने विनियोगः। ॐ त्वन्नो ऽ अग्ने तवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवंद्य। आतातोकस्यतनये गवामस्यनिमेष ई० रक्षमाणस्तवव्रते। ॐ भू० अग्ने०॥ दक्षिणे वाप्यांयमम्।—आवाहयाम्यहंदेवं परेतेशंभयङ्करम्। दण्डहस्तं रक्तनेत्रं यमंमहिषवाहनम्। ॐ यमायत्वेतिमन्त्रस्य दध्यङ्ङाथर्वणऋषि स्त्रीणियजूंषि आद्यस्य यमनामा चालोंत्ययोर्धर्मोदेवता यमस्थापने विनियोगः। ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमतेस्वाहा। स्वहाघर्मायस्वाहा घर्मःपित्रे। ॐ भू० यम०॥ नैर्ऋत्यांखण्डेन्दौ निर्ऋतिम्। ॐ आवाहयामिरक्षार्थं निर्ऋतिंनैर्ऋताधिपम्। खड्ग हस्तंकरालास्यं लिहन्तंसृक्किणीद्वयम्। ॐ असुन्वन्तमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो निर्ऋतिर्देवता निर्ऋतिस्थापने विनियोगः। ॐ असुन्वन्तम यजमानमिच्छस्तेनस्येत्या मन्विहितस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्या नमोदेविनिर्ऋतेतुभ्यमस्तु। ॐ भू० निर्ऋते०। पश्चिमेवाप्यांवरुणं—आवाहयामिदेवेशं वरुणं सागराधिपम्। मखसंरक्षणार्थंच मुक्ताहारविराजितम्। ॐइमम्म इत्यस्यशुनः शेफ ऋषिर्गायत्रीछन्दो वरुणोदेवता वरुणस्थापने विनियोगः। ॐ इमम्मे वरुणश्रुधी हवमद्या चमृडय त्वामवस्यु राचके। ॐ भू० वरुण०॥ खण्डेन्दौ वायव्यांवायुम्। ॐ आवाहयामिदेवेशं वायुंवायव्यरक्षकम्। मृगारूढंचण्डवेगं सर्वप्राणेश्वरंप्रभुम्। ॐ आनोनियुद्भिरितिमन्त्रस्य वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता वायुस्थापने विनियोगः। ॐ आनोनियुद्भिः शतनीभिरध्वर ई० सहस्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्। वायो ऽ अस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातः स्वस्तिभिः सदानः। ॐ भु० वायो०॥ ततो वायु सोममध्ये भद्रे वसून्। ॐ आगच्छन्तु महाभागा वसवोष्टौ महाबलाः। अस्ययागस्यसिद्ध्यर्थं यूयमत्रसुतिष्ठत। ॐ सुगावो देवा इति मन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वसवो देवताऽष्टवसुस्थापने विनियोगः। ॐ सुगावोदेवाः सदनाऽ अकर्मज ऽ आजग्मेद ई० सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना-

हवी ॐ प्यस्मैधत्त व्वसवो व्वसूनि । ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ध्रुवं धरं च सोमं च तथैवापोनिलानलौ । प्रत्यूपं च प्रभासं च भद्रे संस्थापयाम्यहम् । ॐ अष्टवसुभ्योनमः । वसव इहागच्छते-हतिष्ठतः । सोमेशानमध्ये भद्रे एकादश रुद्रान् । ॐ आवाह-यामि लोकेशान् रुद्रान्नैकादशान् क्रमात् । त्रिशूलधारिणो नीलान् वराभयकरांच्छुभान् । ॐ रुद्राः स ट० सृज्येत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो रुद्रा देवता एकादश रुद्रस्थापने विनि-योगः । ॐ रुद्राः स ट० सृज्य पृथिवीं वृहज्ज्योतिः समीधिरे। तेषां भानुरजस्त्र इच्छुक्रो देवेपुरोचते । ॐ अजैकपादहिर्बुध्न्यौ विरूपाक्षं च रैवतम । हरंच बहुरूपं च त्र्यम्बकं च सुरेश्वरम् ॥ सावित्रं च जयन्तं च पिनाकिनमतः परम् । स्थापयामि क्रमादे-तान् रुद्रान्मण्डल पूजने । ॐ भू० एकादश रुद्रा इहागच्छते-हतिष्ठत सु० ॥ अत्रोदक स्पर्शः—ईशानेन्द्रमध्येभद्रे द्वादशादित्यान् ॐ आवाहयामि देवेशानंधकारविनाशकान । तीक्ष्णरश्मीन्मा-सभेदाद्द्वादशादित्य संज्ञकान । ॐ यज्ञो देवानामित्यस्य कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द आदित्यो देवता आदित्य स्थापने विनियोगः । ॐ यज्ञोदेवानां प्रत्येति सुम्नमादित्या सो भवता मृडयन्तः । आवोर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ट० होश्चिद्या व्वरिवोवित्तरा सदादित्येभ्यस्त्वा । ॐ भू० धातारमथरुद्रंच ततश्चार्य ममित्र-कौ । वरुणाख्यं च सूर्य्यंच विवस्वन्तं भगं तथा । पूष्णांच सवि-तारं च त्वाष्ट्रं चैव क्रमादिह । मखसंरक्षणार्थाय भद्रेऽस्मिन्स्था-पयाम्यहम् । भो द्वादशादित्या इहागच्छतेह० ॥ ॐ द्वादशादि-त्येभ्यो नमः । इन्द्राग्निमध्ये भद्रेऽश्विनौ । ॐ आवाहयाम्यहं देवा वाश्विनेयौभिषग्वरौ । सूर्य्यपुत्रौयुग्मदेहौ सौम्यरूप धराबुभौ ॥ ॐ यावांकशेत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽश्विनौ देवतेऽ-श्विनोः स्थापने विनियोगः । ॐ यावांकशामधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया यज्ञंमिमिक्षतम् । ॐ भू० अश्विनौ० । अग्नियममध्ये भद्रे विश्वेदेवान्—ॐआवाहयामि देवेशान् विश्वे

देवान्विचक्षणान् । पितृध्यान परान्सौम्यान्स्मेराननविभूषितान् ॥ ॐ विश्वेदेवास ऽ इत्यस्य गृत्समद् ऋषिर्गायत्री छन्दो विश्वेदेवा देवताविश्वेदेव स्थापने विनियोगः । ॐ विश्वेदेवास ऽ आगत शृणुतामऽइम ँ० हवम् । एदम्बर्हिर्निषीदत। ॐ भू० विश्वे-देवा० ॥ यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रेयक्षान्—ॐ आवाहयाम्यहं यक्षान्विकटास्या न्भयापहान् । यमनिर्ऋ तयोर्मध्येभद्ररक्षणहेतवे ॐ अभित्यं देवमित्यस्यवत्स ऋषिर्जगतीछन्दो यक्षादेवता यक्ष स्थापने विनियोगः । ॐ अभित्यंदेव ँ० सवितारमोण्योः कवि-क्रतुमर्चामि सत्यसव ँ० रत्नधामभिः प्रियंमतिंकविम् । ऊर्ध्वा-यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवी मनिहिरण्यपाणि रमिमीत शुक्रतुः कृपास्वः । ॐ भू० यक्षाऽइहागच्छतेहति तसु० । निर्ऋति वरुण-मध्येभद्रे सर्पान्—ॐ काद्रवेयान्महाभागानाशीविषधरान्परान् । पन्नगारीन्महासर्पान्भद्रेऽस्मिन्नाह्वयाम्यहम् । ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्य इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः सर्पस्था पने विनयोगः । ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथिवीमनु । येऽ-अन्तरिक्षे येदिवितेभ्य- सर्पेभ्योनमः । ॐ भू० सर्पा० । तत्रैव भूतान्—ॐ भूतेभ्योनमः । भूतानाव ह्यामि स्थापयामि । वरु-णवायुमध्येभद्रे- गन्धर्वाप्सरसः—ॐ गन्धर्वाप्सरसश्चैव शक्रा-दित्रिदशप्रियान् । अस्ययागस्य सिद्ध्यर्थं भद्रेऽस्मिन्नाह्वयाम्य-हम् ॥ ॐ ऋताषाडित्योभयो र्लुशोधानाक ऋषिरूर्णिणकूछन्दो गन्धर्वाप्सरसो देवता गन्धर्वाप्सरसः स्थापने विनियोगः । ॐ ऋताषाड्त धामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदोनाम । सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा वाट्ताभ्यः स्वाहा । ॐ भू० गन्धर्वाप्सरस० ॥ उतरे वाय्यां ब्रह्मसोममध्ये स्कंदादीन्—ॐ आगच्छन्तुमहाभागा स्कन्दाद्या देवतागणाः । अस्ययागस्य शान्त्यर्थं भद्रेऽस्मिन्नाह्वयाम्यहम् । ॐ यदक्रंदेत्यस्य जमदग्नि दीर्घतमावृषी त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दो देवता स्कन्द स्थापने विनियोगः ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रा दुतवापुरीषात् ।

श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहूऽ उपस्तुत्यंमहि जातंतेऽअर्वन् । ॐ भू० स्कन्द० तत्रैवनाम मंत्रै ॐ भू० नन्दिने नमः । नन्दिनमावाहयामि स्था० । ॐ भू० ईश्वरायनमः । ईश्वरमावा० ॐ भू० शूलायनमः । शूलं० । ॐ भू० महाकालायनमः । महाकालं० । ब्रह्मेशानमध्ये वल्लीषु दक्षादिसप्तकम् । ॐ नमस्ते देवदेवेसंसत्यलोक निवासिनम् । आव्हयामि मखेह्यस्मिन्कुशलं दक्षसप्तकम् । ॐ तानित्यस्य गौतम ऋषि जगतीछन्दो दक्षादयो देवता दक्षसप्तक स्थापने विनियोगः ॥ ॐ तान्पूर्वयानि विदाह्महे वयं भगंमित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम् । अर्य्यमणं वरुण ई० सोममश्विना रस्वतीनः सुभगामयस्करत् ॥ ॐ भू० दक्षादिसप्तकेहागच्छ० । ब्रह्मेन्द्रमध्येवाप्यांदुर्गाम् । आवाहयामिदेवेशिं दुर्गांदुर्गार्तिनाशिनीम् । सर्वसौख्यप्रदात्रींच जगन्मङ्गलकारणीम् । ॐ अम्बेअम्बिकइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो दुर्गादेवता दुर्गास्थापने विनियोगः ॐ अम्बे अम्बिकेम्बालिके नमानयतिकश्चन । ससत्यः श्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासनीम् । भू० दुर्गे० । तत्रैवविष्णुम्—आव्हयामिमहाविष्णुं शार्ङ्गचक्रधरंप्रभूम् । गदाजलजविभ्राणंशरण्यं कमलाप्रियम् । ॐ इदंविष्णुरित्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो विष्णुर्देवताविष्णुस्थापमे विनियोगः । ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ॐ सुरे । ॐ भू० विष्णो० । ब्रह्माग्निमध्ये वल्लीषुपितृन्स्वधयासह—आवाहयामिसोष्णीषान पितृन्यमदिशिस्थितान् । अग्निष्वातादिकांश्चैव भद्रे ऽ स्मिन्स्वधयासह ॥ ॐ पितृभ्यइत्यस्य प्रजापत्यश्वि सरस्वत्यऋषयः सप्तयजुंषिछन्दांसि मन्त्रलिंगोक्तादेवताः स्वधयासहपितृस्थापने वि० । ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः । प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः । अक्षन्नपितरो मीमदन्तपितरो तीतृपन्तः पितरः शुन्धध्वम् । ॐ भू० स्वधयासह पितृगणा इहागच्छतेह० । ब्रह्मयममध्येवाप्यांमृत्युम् । ॐ कालशक्ति

धरंदेवं मृत्युंप्राणापहारकम् । आह्वयामिकरालास्यं यज्ञरक्षण-हेतवे । ॐ परंमृत्यो इत्यस्यसङ्कसुकर्षिस्त्रिष्टुप्छन्दो मृत्युर्देवता-मृत्युस्थापने विनियोगः । ॐ परंमृत्यो ऽ अनुपरेहिपन्थां यस्ते ऽ अन्य इतरोदेवयानात् । चक्षुष्मतेशृण्वते तेब्रवीमिमानः प्रजा ँ रीरिषोमोतऽवीरान् । ॐ भू० मृत्यो० । अत्रोदकः स्पर्शः । ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये वल्लीषुगणेशम् । ॐ आवाहयामिदेवेशं गजा-स्यमेकदन्तकम् । जगन्मङ्गलकर्त्तारं गणेशंविघ्ननाशकम् । ॐ गणानान्त्वेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिश्चत्वारि यजूंषिछन्दांसि गण-पतिर्देवता गणपतिस्था० ॐ गणानान्त्वा० सिगर्भधम् । ॐ भू० गणेश० । ब्रह्मवरुणमध्येवाप्यामपः—आगच्छन्तुमहाभागा अपः शुभ्रामलापहाः । जगतां प्रलयेवापिनारायण समाश्रिताः । ॐ शन्नोदेवीरित्यस्यदध्यङ्गाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्द ऽ आपोदेवता अपांस्थापने वि० । ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽ आपोभवन्तुपीतये । शंयोरभिस्रवन्तुनः । ॐ भू० अपऽइहागच्छतेह० । ब्रह्मवायुमध्ये वल्लीषुमरुतः—ॐ आगच्छन्तुमहाभागा मारुतास्त्वण्डविक्रमाः इन्द्रानुजाः सौम्यरूपास्त्रैलोक्यप्राणरक्षकाः । ॐ मरुतोयस्येतस्य गौतमऋषिर्गायत्रीछन्दो मरुद्देवता मरुतांस्थापने विनियोगः । ॐ मरुतोयस्यहिक्षयेपाथादिवोविमहसः ससुगोपातमोजनः ॐ भू० एकोनपञ्चाशन्मरुतऽइहा० । मध्येब्रह्मणःपादमूलेकर्णिकाधः पृथिवीम् आवाहयामि वसुधां सर्वेषांस्थितिरूपिणीम् । वराहस्थापितां देवीं सर्वाकर निभांपराम् । ॐ स्योनापृथिवीत्यस्य मेधातिथि-ऋषिर्गायत्री छन्दः पृथ्वी देवता पृथ्वी स्था० । ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म सप्रथाः । ॐ भू० पृथिवी० । तत्रैवमेरुम् ॥ आवाहयाम्यहं मेरुं दिव्यलोक समाश्रितम् । यज्ञविघ्नोपशान्त्यर्थं पर्वताधिपतिं प्रभुम् । ॐ प्रवर्ततेत्यस्य देववात ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मेरुर्देवता मेरु स्था० । ॐ प्रवर्ततस्य वृषभस्य पृष्ठानावश्चरन्ति स्वसि च ऽ इयानाः । ता ऽ आव वृत्तन्नधरागुदक्ता अहि बुध्न्य मनुरीयमाणाः । ॐ

भू० मेरो० । तत्रैवगंगादि नदीः । गंगाद्याः सरितः श्रेया जगदाद्यौघघस्मराः । पुण्यापो निर्मलाः सर्वाः भद्रेऽस्मिन्नाह्वयाम्यहम् । ॐ इमम्मे—इति सिन्धुक्षित्प्रैयमेधऋषिर्जगती छन्दो वरुणो देवता सरित्स्था० । ॐ इमम्मे गंगे यमुने सरस्वति शतद्रूस्तोमंस्व च तापरुष्ण्या । असिकन्या मरुद्वृधेवितस्तयार्जीकीये श्रृणुह्यासुषो मया ॥ ॐ भू० गङ्गादि सप्तसरितः० । तत्रैव पृथिव्यां सप्तसागारान्—ॐ आवाहयामि देवेशान्—सागरान्त्रलगर्भिनान् । जलाधिपाश्रितान्सर्वान्यज्ञरत्नाकरानहम् ॥ ॐ समुद्रोसीत्यस्य लुपोधानाकऋषिर्गायत्रीछन्दो वरुणो देवता समुद्रावा० । ॐ समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूरभिमावाहि स्वाहा । ॐ भू० सप्तसागराः० । ततो वाह्योत्तरपरिधौ सोमादि समीपे ॐ भूर्भुव स्वः, गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि पूजयामि च । एवं सर्वत्र ॥ ईशानान्तिके ॐ भू० त्रिशूलायनमः । त्रिशूलं० । पू० इन्द्रान्तिके—ॐ भू० वज्रायनमः । वज्रमा० । ॐ आ० अग्निसमीपे—ॐ भू० शक्तयेनमः शक्तिमा० । द० यमान्तिके ॐ भू० दण्डायनमः, दण्डमावा० । नै० निर्ऋतिसमीपे—ॐ भू० खड्गायनमः खड्गमावा० । प०, वरुणांतिके—ॐ भू० पाशायनमः पाशमा० । वा० वायुसमीपे—ॐ अंकुशायनमोऽकुशमा० गदावाह्योतरे—ॐ भू० गौतमायनमः । गौतममावा० । ईशाने—ॐ भू० भरद्वाजायनमः, भरद्वाजमावा० । आग्नेय्यां—ॐ भू० कश्यपायनमः कश्यपं० । दक्षिणे—ॐ भू० जमदग्नयेनमः, जमदग्निमा० । नैर्ऋत्यां—ॐ भू० वसिष्ठाय नमः वसिष्ठमावाहयामि पश्चिमे—ॐ भू० अत्रये नमः, अत्रिमावा० । वायव्याम्—ॐ भू० अरुंधत्यैनमः अरुंधतीमा० । तद्वाह्येपूर्वादितोऽष्टौ शक्तिः स्थापयेत् । ॐ ऐं ऐन्द्र्यै नमः । ऐन्द्रीमा० । आग्नये—ॐ कौं कौमार्यैनमः कौमारीमा० । दक्षिणे—ब्रं ब्राह्म्यैनमः, ब्राह्मीमा० । नैर्ऋत्याम् वं वराह्यैनमः, वराहीं० । पश्चिमे ॐ चां चामुण्डायैनमः । चामुण्डामा० ।

वायव्ये-वैं वैष्णव्यैनमः । वैष्णवीं० । उत्तरे-कौं कौवेर्यैनमः कौबेरीमा० । एवं सर्वतोभद्रदेवता आवाह्य पूजनं तु पूर्व दीक्षाङ्ग सर्वतोभद्रोक्त प्रकारेण वा पुरुषसूक्तेन सङ्घपूजनादिकं विधायतेनैव प्रकारेण दिग्पालादि क्षेत्रपालान्तां बलिंदत्वा प्रधान होमान्ते-स्थापनक्रमेणैव तत्तन्मन्त्रैर्वा नाममन्त्रैः प्रत्येकं दशदश-यवतिलाज्याहुतिभिरेकैकाज्याहुत्या वा जुहुयात । ग्रन्थ विस्तार भयान्नात्र दर्शितः ॥

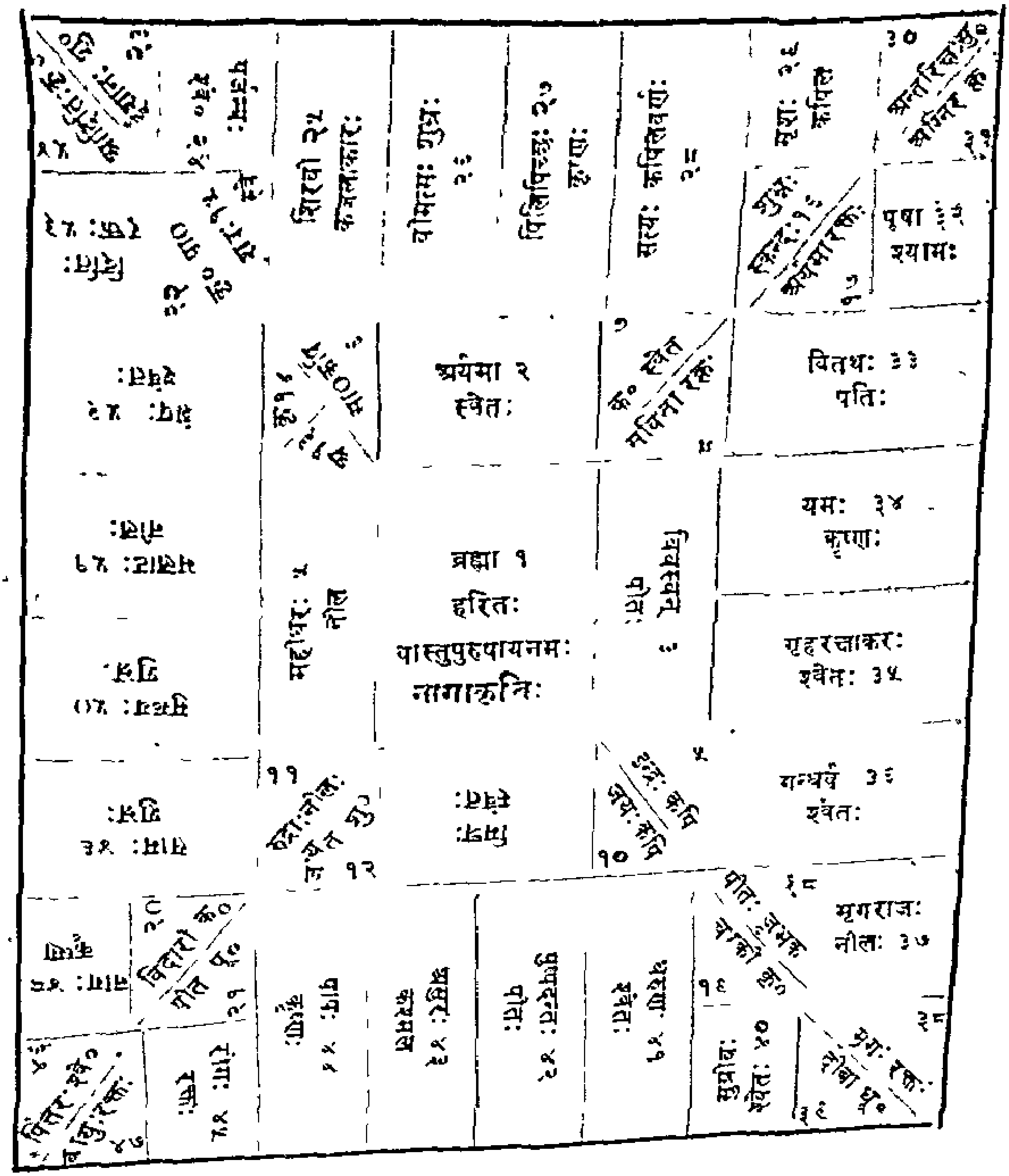
॥ इत्येकोनविंशति रेखात्मक सर्वतोभद्रपूजा पद्धतिः ॥

श्री गणेशायनमः । उक्तं च शारदातिलके । ततोरक्षामिदं वागवास्तुयागपुरस्सरम् । कृतेनयेनमंत्रज्ञोदीक्षाया फलमश्नुते ॥१॥ राक्षसंवास्तुनामान हन्यागृह्यायतत्तनुम् । स्थितास्त्रिपं चाशदेव्वास्तेभ्यः पूर्वबलिहरेत ॥२॥ बलिमण्डलमंतेषायथावदभिधीयते । पूर्वापरायतंसूत्रंविन्य-सेदुक्तमानतः ॥३॥ तन्मध्यकिंचिदालव्य मत्स्यौद्वौपरिकल्पयेत । तयोमध्येस्थितसूत्र विन्यसे द्दक्षिणोत्तरम् ॥४॥ द्वाभ्यांद्वाभ्यांततोग्राभ्या कोणेषुमकराल्लिखेत । मत्स्यमध्येस्थितान्प्राणि तत्र सूत्राणिपातयेत ॥५॥ चतुरस्रभवंत्तत्र चतुष्कोष्ठसमन्वितम् । तत्पुनर्विभजेन्मन्त्री चतुःषष्ठिपदं यथा ॥६॥ ईशानाद्दक्षसांयावद्यावद्ग्रेप्रभंजन । एवं सूत्रद्वयंदद्यात्कर्ण सूत्रं समाहितः ॥७॥ विवस्वन्तं ब्रह्माण पूजये दादौमध्ये काष्ठचतुष्टये । दिक्चतुष्केषुपूर्वादियजेदार्यमणोन्तरम् ॥८॥ सावित्रं सवितारं ततोमित्रं महीधरमत परम् । कोणार्द्धकोष्ठद्वन्द्वेषुवन्ह्यादि परित पुन ॥९॥ [illegible] सूत्रंभयत कोष्ठ च शक्रमिन्द्रं जयं पुनः । रुद्रंजयन्तं चयजेदपश्चैवापवत्सकम् ॥१०॥ चरकी च विदारी च पूतना पाप-द्वन्द्वेषुदेपिकः शर्वगुहंचार्यमणं जृम्भकं मंयजेत्ततः ॥११॥ अष्टावष्टौ विभागेनदेवान्के शिक-राक्षसीम् । अर्चये द्दिक्षुपूर्वादिसाधायन्त पदेश्विमान् ॥१२॥ पिलिपिन्छं गत्यग्रशीमान्तरिक्षन्तु सत्तम । क्रमादोशानपर्जन्य शिखिवीभस्मसत्यकान ॥१३॥ गन्धर्व मृगराजं चमृगंदक्षिणतस्तथा । पूर्वकं । अग्निपूष्णं चवितथंयमं चगृहरक्षकम् ॥१४॥ असुर च तथापापं रोगंपिन्धंरचपश्चिमे । पायु दौवारिकं च सुग्रीवंवरुणं पुष्पदन्तकम् ॥१५॥ असुर च तथापापं ... शेषंदिति चादितितुवेर दिशि पूजयेत । उक्ताना नागं च सोमंचमुख्यं भल्लाटमेवच ॥१६॥ शेषंदिति चादिति ... रजोभिरन्यैर्थरतेभ्यः पायागान्तंलिरेत । अथवा सर्पिदेवाना पदान्यापूर्व पंचभि ॥१७॥ रजोभिरत्यैर्थरतेभ्यः ... इति वास्तुमण्डलस्थानोस्थापनम् ॥ अत्र च वास्तु स्वस्व बलिभिर्वास्तु मण्डलमर्चयेत ॥१८॥ इति वास्तुमण्डलस्थानोस्थापनम् ॥ ... [illegible] । विवस्वन्तं भद्रस्थामराणां सवर्ण मंत्रवर्णनमस्त्यग्र । ब्रह्माण हरितं [illegible] गंधगे । मित्रं [illegible] पीतवर्ण विवस्वमिति संयजेत ॥१॥ मित्रं [illegible] गंधगे । सावित्रं कपिल [illegible] । महीधरं नीलवर्णरसद्माम इतिसंयजेत ।२।

कपिलं शिखिनं (यजेत् ।३। शक्रगुरुर्वर्णं पैन्द्रामग्नेति यजेत । इन्द्रं च कपिला का-
मायाग्निन्द्रेति यजेत ।४। तम च रक्तवर्णाकारं गोत्रभिद् मन्त्रतो यजेत । रुद्र नीलकृतियानि रुद्र
मन्त्रेण संयजेत ।५। जयन्तं शुभ्रवर्णं च जोमू तस्येति यजेत । अप शुभ्रायजेद्राप आमाग्ना
स्त इयत ।६। आपवत्सं कृष्णवर्णं आपोऽग्नेति यजेत । शत श्वेताकृति मानं महान्त मिति
संयजेत ।७। स्कन्द शुभ्रवर्णस्कन्द मन्त्रेण संयजेत । रक्तवर्णं सावित्रं स्त्रयम्बकं मन्त्रतो यजेत
।८। नभस पीतवर्णं न नदेरामिति यजेत । चरकी कृष्णवर्णां च मन्त्रेणैति संयजेत ।९।
विदारी पतिताकारां महाराजायतो यजेत । पूतना पीतवर्णां च कद्रुप्रियां यतो यजेत ।१०।
पापराक्षसिकाकृष्णां यम्यामिनमन्त्रतो यजेत । ईशानशुभ्रवर्णेन तमीशानमिति यजेत ।११।
पर्जन्यं श्वेतवर्णेन शन्नोवातेति संयजेत । शिखिनकज्वलाकारं नम शम्भायमन्त्रतो यजेत ।१२।
धीमन्तं शुभ्रवर्णं चो इन्द्रयोमन्त्रतो यजेत । पिलिपिञ्जकृष्णाभं कार्षिरसिमन्त्रतो यजेत ।१३।
सत्यं कपिलवर्णं च सत्यं चमेति यजेत । भृशकपिलवर्णं च आतारमिति संयजेत ।१४। अन्तरिक्ष
शुभ्रवर्णं घृतं मन्त्रेण संयजेत । अग्निरक्ताकृति त्वन्नो अग्नेमन्त्रेण संयजेत ।१५। पूषणश्यामलवर्णं
च स्वयंभूरसि नो यजेत । वितथपीतवर्णं तत्त्वायामीति यजेत ।१६। यमश्यामलवर्णेन यमाय
त्वेति संयजेत । गन्धर्वाकारश्वेत गन्धर्वमन्त्रतो यजेत ।१७। गन्धर्वश्वेतवर्णेन गन्धर्वस्त्वेति
संयजेत । भृङ्गराजनीलवर्णं गौरीमिलायमन्त्रतो यजेत ।१८। मृगं धूम्रवर्णं च मृगो नेति यजेत ।
दौवारिकं धूम्रवर्णं द्विरूपेति तो यजेत ।१९। सुग्रीवं पीतवर्णं च नो सुग्रीवेति यजेत । वरुण तुहिना-
कारं वरुणस्येति यजेत ।२०। पुष्पदन्तपीतवर्णं नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति यजेत । असुरं कृष्णलाकारं नम-
श्शिवेति संयजेत ।२१। पापकृष्णाकृतिं चैव तेन्द्राइति यजेत । रोगरक्ताकृति मद्देवा इति
यजेत ।२२। पितृशुभ्राकृति नागानां नमस्तेति । वायुरक्ताकृति वायोरिति मन्त्रेण यजेत ।
।२३। नाग कृष्णाकृति नमोऽस्तु सर्पेभ्येति यजेत । सोमशुभ्राकृति सोमराजानमिति यजेत ।२४।
मुख्यशुभ्राकृति मान स्तोके मन्त्रेण यजेत । भल्लाटनीलवर्णं च मिमाद्रायतो यजेत ।२५। शेष
श्वेत वास्तोष्पते मन्त्रेण यजेत । दितिरक्ताकृति हिरण्यस्येति यजेत ।२६। अदितिकृष्ण-
वर्णेन अदितिरिति यजेत । वास्तुनागाकृतिशुभं वास्तोष्पतीति यजेत ।२७। अथ लिङ्ग
विधानं वक्ष्ये सम्पादयेत् विस्तारतो वास्तोष्पते विधिः । वक्ष्याम्यनुप्रयत्नेन चतुरस्र
यथारुचि ॥ १ ॥ वास्तुमध्ये न्यसेद्भूमि शुभ्रवर्णगमन्त्रतः । कीलयेत्तादिरं कीलं चतुष्कोणेषु
पञ्चके ॥२॥ तस्योपरि लिखेद्भद्रं पूर्वोक्तविधिना सुधीः । ब्रह्मादिवर्णगन्धे शरंगं स्थानानिपूरयेत् ॥३॥
वास्त्वाकृति स्वर्णमयी नागाकारां सुशोभनाम् । प्रतिमां स्थापयेत् मध्ये ब्रह्मण पश्चिमे तटे ॥४॥
कार्या सुप्रतिमा सर्वाधनिष्कस्तु सुवर्णतः । सामान्यस्य हि भि कार्या राजता प्रतिमा शुभा ॥५॥
अग्न्युत्तारणं कृत्वा पूर्वोक्तविधिना सुधीः । मण्डलेशानकोणे तु सदीपकलशान्यसेत् ॥६॥ वरुणो
क्त विधानेन कलशं पूरयेत्ततः । सङ्कल्पचलत कुर्वीत पूजासमारभेत ॥७॥ प्रतिमा स्थापये
त्तत स्थानपुनःपृथक्पृथक् । परिभाषोक्तविधिना देवता स्थापयेत्क्रमात् ॥८॥ बह्वाग्न्यपिच
इत्यादिवर्णतुल्यानि नामतः । शाखार्थपदवानां च न्यसेत्पूगीफलान्यपि ॥९॥ पञ्चमात्राविधानेन चा
स्टन्द्रदवता । पाद्यार्घ्यविधानेन प्रकुर्यात्सर्वपूजनम् ॥१०॥

दीक्षांग वास्तु भद्रम् ।

पूर्वः



पश्चिमः

दीक्षांग वास्तुमण्डल देवता पूजा पध्दतिः

कर्ता प्रातः कृत्यंकृत्वा गणपत्यादि पंचांगपूजां विधाय वास्तुमण्डपमागत्य—हरिः ॐ अच्युतायनमः । ॐ केशवायनमः । ॐ माधवायनमः । त्रिराचम्य पृथ्वीं सम्पूज्यात्मते भूतोत्सादनं रक्षाविधानानुसारेण कृत्वादीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य च प्राणायामत्रयं विधायप्रधान संकल्पं कुर्यात् । हरिः ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं मेऽस्यार्भकस्यामुकशर्मणो वर्मणोगुप्तस्यवा बैजिकगार्भिकैनो निवर्हण पूर्वक ब्रह्मवलायु वृद्धये, श्रौतस्मार्त कर्मानुष्ठान सिद्धिद्वारा, करिष्यमाण चूडोपनयन वेदारंभ समावर्तनाख्य कर्मसु तदुपयोग्य गुतात्मक ग्रहमखमंडपरक्षणाय वास्त्वर्चनविधौ, ब्रह्मादि वास्तुपुरुषपर्यन्तानां देवतानां प्रीतये तत्तद्देवतानां मन्त्रैरावाहनाद्यर्चनं करिष्ये ॥ इति ॥ तदंगतया वास्तुपूजन वलिदानं च करिष्ये तत्पूर्वाङ्गतयावरुणपूजनंचकरिष्ये; तत्रादावाचार्यं वृणुयात् । ॐ नमोस्त्वनन्तायेति पाद्यंसमर्पयामि । गंधद्वारामितिगन्धम् । पुष्पादिभिराचार्यं ब्राह्मणं संपूज्य सधौतोत्तरीयांगुलीयं यथाविक्तद्रव्यंहस्तेनिधाय ॐ अद्येत्या द्यमुकोऽहममुकनाम्नो मत्पुत्रस्य करिष्यमाणामुक कर्मणि वास्त्वर्चन विधावाचार्य कर्मकर्तृमनेन वासोंगुलीयकासनद्रव्येणामुक गोत्र ममुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्य कर्म कर्तृत्वेनाहं वृणे । इति वरणद्रव्यं ब्राह्मणायदत्वा, सोऽपि वृतोऽस्मीतिब्रूयात् । प्रार्थयेत् । ॐ आचार्यत्वे यथास्वर्गेदेवानां च बृहस्पतिः । तथात्वंममयज्ञेऽस्मि न्नाचार्योभवसुव्रतः ।१। अहंभवानि । ततईशानकोणे वरुणविधानेन कलशंसम्पूज्य । अथ चाचार्यो वेद्याश्चतुर्दिक्षु चतुरोखादिर शंकून् तदभावेलोह शंकून, समंत्रं कीलयेत् । ॐ विश्वन्तुभूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । अस्मिन्गृहेऽवतिष्ठन्त्वायुर्बलकराः सदा ।१। इति मंत्रमुच्चारयन्नाचार्य ईशानादि चतुर्दिक्षु कीलयेत् ततस्तद्देवताभ्योमाषभक्तबलि चतुष्टयं सदीपंसंपूज्यानेनैव क्रमणेदद्यात् ।

मन्त्रादावीशाने जलंगृहीत्वामंत्रान्ते वलौक्षिपेत । सर्वत्र मंत्रः । ३० रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्योयेचान्ये तत्समाश्रिताः । वलि तेभ्यः प्रयच्छामि, पुण्यमोदनमुत्तमम् ।१। आग्नेये— ३० अग्निभ्योऽप्यथ सर्पेभ्योये चान्येतत्स माश्रिताः । तेभ्योवलिप्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ।२। नैर्ऋत्ये ३० नैर्ऋत्या धिपतिश्चैव नैर्ऋत्यांये च राक्षसाः । तेभ्योवलिप्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ।३। वायव्ये- ३० वायव्याधिपतिश्चैव वायव्यां ये च राक्षसाः । तेभ्योवलि प्रयच्छामि पुण्यमोदनमुत्तमम् ।४। अथ पूर्वनिर्मितवास्तुभद्रे वास्तुभद्र देवता स्थापनम् ।। ॐ ब्रह्मजज्ञामिति गौतमर्षिस्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मावाहने स्थापनेपूजने च विनियोगः । ऋक् ३० ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआव. । सबुध्न्याउपमा अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः । ३० भूर्भुवः स्वः, ब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठ, ३० ब्रह्मणेनमः । संस्थाप्य च पूजयेत् । ततः पीतं विवस्नतं ३० विवस्वन्निति कुत्सऋषिरनुष्टुप्छन्दो विवस्वान्देवता विवस्वदावाहने विनियोः । ऋक् ३० विवस्वन्नादित्यैषतेसोमपीथस्तस्मिन्मत्स्व अदस्मै नरो वर्चसैदधातनयदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः । पुमान पुत्रो जायते विन्दतेवस्वधा विश्वाहारपऽ एधतेगृहे । ३० भूर्भुवः स्वः विवस्वन्निहागच्छेहतिष्ठ ३० विवस्वतेनमः स्थापयामि पूजयामि । ततः श्वेतंमित्रम् । ३० मित्रस्य विश्वामित्रऋषि र्गायत्रीछन्दो मित्रोदेवता मित्रावाहने विनियोगः । ऋक् ३० मित्रस्यचर्षणी धृतोवोदेवस्य सानसिद्युम्नंचित्र श्रवस्तमम् । ३० भूर्भुवः स्वः मित्रइहागच्छेहतिष्ठ । ३० मित्राय नमः स्थापयमि पूजयामि । ततो नीलंमहीधरम् । यद्ग्राम इति प्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्दो महीधरो देवता महीधरावाहने विनियोगः । ऋक्—३० यद्ग्रामे यदरण्येयत्सभायां यदिन्द्रियेयदेनश्च कृमावयमिदं तदव यजामहेस्वाहा ॥ ३० भू० स्वः महीधर इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ महीधरायनमः । स्थाप० पूज० । ततः कपिलं सावित्रम् । ॐ उपयामगृहीतोसीति विवस्वानृषिर्गायत्रीछन्दः

सावित्रोदेवता सावित्र्यावाहने विनियोगः । ॐ उपयामगृहीतोसि सावित्रोसिचनोधा असिचनोमयिधेहिजिन्वयज्ञं जिन्वयज्ञपतिं भगायदेवायत्वासवित्रे । ॐ भू० स्वः भोसावित्र इहागच्छेहतिष्ठ ॐ सावित्रायनमः स्थाप० पूज० । ततः कपिलंसवितारं । ॐ विश्वानीति श्यावाश्वऋषि र्गायत्रीछन्दः सवितादेवता सवित्रावाहने विनियोगः । ऋक् ॐ विश्वानिदेव सवितुर्दुरितानि परासुवयद्भद्रं तन्नआसुवः । ॐ भू०स्वः सवित इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ सवित्रेनमः । स्थाप० पूज० । शुभ्रंशक्रम् । इन्द्र इति अप्रतिरथ ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः शक्रोदेवता शक्रावाहने विनियोगः । ऋक्- ॐ इन्द्र आसन्नेता बृहस्पति र्दक्षिणायज्ञः पुरएतुसोमः देवसेनानामभिभंजतीनां जयन्तीनामरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शक्रेहागच्छेहतिष्ठ, ॐ शक्रायनमः स्थाप० पूज० कपिलमिन्द्रम । ॐ आयात्विति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता इन्द्रावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ आयात्विन्द्रोवस उपनइहस्तुतः सधमादस्तुशूरः वातधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीर्द्यौर्नक्षत्रमभिभूमिपुष्यात । ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रइहागच्छेहतिष्ठ, ॐ इन्द्रायनमःस्थापयामिपूज० । कपिलंजयम् । ॐ गोत्रभिदिति अप्रतिरथऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो जयोदेवता जयावाहने विनियोगः। ॐ गोत्रभिदंगोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्मप्रमृणं तमोजसा । इम ं० सजाता ऽ अनुवीरयध्वमिन्द्र ॐ सखायो ऽ अनुस ं० रभध्वम् । ॐ भूर्भुवः स्वः जयइहागच्छेहतिष्ठ ॐ जयायनमः स्थापयामिपू० । नीलरुद्रम् । ॐ यातेरुद्रेतिपरमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दो रुद्रोदेवता रुद्रावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ याते रुद्र शिवातनू रघोरापापकाशिनी तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि । ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्र इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ रुद्राय-नमः स्था० पू० । शुभ्रवर्णजयन्तम् । ॐ जीमूतस्येति भरद्वाजऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो जयन्तोदेवता जयन्तावाहनेविनियोगः । ऋक्—ॐ जीमूतस्येवभवतिप्रतीकं यद्वर्मीयातिसमदामुपस्थे ऽ

अनाविद्ध्यातन्त्वा जयन्त ई० सत्वा वर्मणोमहिमापिपर्तु। ॐ भूर्भुवः स्वः जयन्तइहागच्छेहतिष्ठ ॐ जयन्तायनमः स्थाप० पूज०। शुभ्राआपः। ॐ आपोअस्मानिति देवश्रवाऋषिरनुष्टुप्छन्दःआपोदेवताअपामावाहनेवि०। ऋक्—ॐ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननोघृतप्वः पुनन्तुविश्व ई० हिरिप्रंप्रवहन्तिदेवी रुदिदाभ्यः शुचिरापूतएमि। ॐ भू० स्वः आपइहागच्छन्त्विहतिष्ठन्तु॥ ॐ अद्भ्योनमः स्था० पूज०॥ कृष्णवर्णमापवत्सम्॥ ॐ आतेवत्सइति कण्वऋषिर्गायत्रीछन्द आपवत्सोदेवताआपवत्सावाहने विनियोगः। ऋक्—ॐ आतेवत्सोमनोयमत्परामाचित्सधस्थात् अग्नेत्वांकामयागिरा। ॐ भूर्भुवः स्वः भो आपवत्स इहागच्छेहतिष्ठ ॐ आपवत्सायनमः स्थाप० पू०। श्वेतवर्णं शर्वम्। ॐ मानोमहान्तमितिकुत्सऋषिर्जगतीछन्दः शर्वोदेवता शर्वावाहने विनियोगः। ऋक्—ॐ मानोमहान्तमुतमानोऽअर्भकंम्मानउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम्। मानोवधीः पितरंमोतमातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः। ॐ भू० स्वः शर्वइहागच्छेहतिष्ठ ॐ शर्वायनमः स्था० पू०। शुभ्रंस्कन्दम्। ॐ यदक्रन्दइतिदीर्घतमाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दोदेवता स्कन्दावाहने विनियोगः। ऋक्—ॐयदक्रन्दप्रथमंजायमानमुद्यंत्समुद्रादुतवापुरीषात्। श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहु उपस्तुत्यंमहिजायन्तेअर्वन। ॐ भूर्भुवःस्वः स्कन्द इहागच्छेहतिष्ठ ॐ स्कन्दायनमः आवा० पूज०। रक्तवर्णमर्यमणम्। ॐ अर्यमणमितिपडग्नि ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽर्यमादेवताऽर्यमावाहने विनियोगः। ऋक्—ॐ अर्यमणंबृहस्पतिमिन्द्रं दानायचोदयवाचंविष्णु ई० सरस्वती ॐ सवितारंच वाजिन ॐ स्वाहा। ॐ भू० स्वः अर्यमन्निहागच्छेहतिष्ठ ॐ अर्यम्णेनमः स्थाप० पूज०। पीतवर्णंजृम्भकम्। ॐयदेपमितिवत्सऋषिर्गायत्रीछन्दो जृम्भकोदेवता जृम्भकावाहने विनियोगः। ऋक्—ॐ यदेषंपृषतिरथैः प्रष्टिर्वहतिरोहितः यान्तिशुभ्राणिन्नपः ॐ भू० स्वः जृम्भकइहागच्छेहतिष्ठ, ॐ जृम्भकायनमः स्थाप०

पूज० ॥ कृष्णवर्णाश्चरकीम् ॥ ॐ यन्तेदेवीतिमधुरछन्दऋषिःपंक्ति रछन्दः चरकीदेवता चरक्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ यन्तेदेवी- निर्ऋतिरावबंध पाशंग्रीवास्वविचृतम् । तन्तेविष्याम्यायुपोनम- ध्यादथैतंपितुमध्यप्रसूतः नमोभूत्यैयेदंचकार ॥ ॐ भू० स्वः चरकीहागच्छेहतिष्ठ, ॐ चरक्यैनमः स्थाप० पूज० ॥ ततोकपि- लांविदारीम् ॥ ॐ अक्षराजायेतिनारायण ऋषिः प्रकृतिरछन्दो विदारीदेवता विदार्य्यावाहने विनियोगः॥ ऋक् ॐ अक्षराजाया कितवः कृतायादिनवदर्श त्रेतायैकल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिन मास्कन्दायसभास्थाणुंमृत्यवेगोव्यच्छमन्तकाय ॥ गोघातंक्षुधेयो- गांविकृतंतंभिक्षमाण उपतिष्ठतिदुष्कृतायचरकाचार्यं पापमनेशैल- गम् ॥ ॐ भू० स्वः विदारीहागच्छेहतिष्ठ ॐ विदार्य्यैनमः स्था- प० पूजयामि ॥ १६ ॥ पीनवर्णांपूतनाम् ॥ ॐ कद्रुप्रियायेति आत्रेयऋषिर्जगतीछन्दः पूतनादेवता पूतनावाहनेविनियोगः ॥ ॐ कद्रुप्रियायधाम्नेमनामहे स्वक्षत्राय स्वयशेममहेवयम् ॥ आमेन्यस्य रजसोदयभ्रआं अपोवृणाना वितनोतिमायिनी ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः, पूतने इहागच्छेहतिष्ठ । ॐ पूतनायै नमः स्थाप० पूज० ॥ कृष्णां पापराक्षसिम् ॥ ॐ यस्यास्त इति मधुरछन्द ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः पाप राक्षसिका देवता पाप राक्षस्या वाहने विनियोगः ॥ ऋक्—ॐ यस्यास्ते घोर आसं जुहोम्येपाम्ब- न्धानामवसर्जनाय यांत्वाजनोभूमिरिति प्रमंदन्तेनिर्ऋतिंत्वाहं परि वेदविश्वतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पाप राक्षसि इहागच्छेह तिष्ठ ॥ ॐ पाप राक्षस्यै नमः स्थाप० पूज० ॥ शुभ्रवर्णं मीशा- नम् ॥ ॐ तमीशानमिति गौतम ऋषिर्जगती छन्दः ईशानो देवता ईशाना वाहने विनियोगः ॥ ऋक्—ॐ तमीशानं जगत- स्तस्थुपस्पतिं धियं जिन्वमवसेहूमहेवयम् । पूषानो यथावेदसाम सद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो ईशान इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ ईशानाय नमः स्था० पूजयामि ॥ श्वेतं पूर्जन्यम् ॥ शन्नोवात इति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः

पर्जन्यो देवता पर्जन्या वाहने विनियोगः ॥ ॐ शन्नोवातः पवता ॐ शन्नस्तपतु सूर्यः शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽअभिवर्षतु ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्य इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ पर्जन्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि ॥ कज्जलाकारं शिखिनम् ॐ नमः शम्भवायेति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः शिखी देवता शिख्यावाहने विनियोगः ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतरायच ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिन्निहागच्छेहतिष्ठ, ॐ शिखिने नमः स्थाप० पूज० शुभ्रवर्णं वीभत्सम् । ॐ उदस्तम्भीति विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वीभत्सो देवता वीभत्सावाहने विनियोगः । ॐ उदस्तम्भीत्समिधानाक मृष्वो अग्निमवन्तुतमो रोचनानाम् । यदीभृगुभ्यः परिमातरिश्वा गुहासन्तहव्यवाहसमीधे ॥ ॐ भू० स्वः वीभत्स इहागच्छेहतिष्ठ ॐ वीभत्साय नमः स्थाप० पूज० ॥ कृष्ण वर्ण पिलिपिच्छम् । ॐ कास्विदितिप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः पिलिपिच्छो देवताः पिलिपिच्छावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ कास्विदासीत्पूर्वचित्तिः किँस्विदासीद्बृहद्वयः । कास्विदासीत्पिलिप्पिला कास्विदासीत्पिशंगिला । ॐ भू० स्वः पिलिपिच्छ इहागच्छेहतिष्ठ ॐ पिलिपिच्छाय नमः स्थाप० पूजयामि । कपिलं सत्यम् ॥ ॐ सत्यंच मेति देवा ऋषयो विराट् शक्करीछन्दः सत्यो देवता सत्यावाहने विनियोगः ॥ ऋक्—ॐ सत्यंचमे श्रद्धाचमे जगच्चमे धनंचमे महश्चमे क्रीडाचमे मोदश्चमे जातंचमे जनिष्यमाणंचमे सूक्तंचमे सुकृतंचमे यज्ञेन कल्पन्ताम् । ॐ भू० स्वः भो सत्य इहागच्छेहतिष्ठ ॐ सत्यायनमः स्था० पू० । कपिलवर्णं भृशम् ॥ ॐ आत्वाहार्षमिति ध्रुवऋषिरनुष्टुप्छन्दो भृशो देवता भृशावाहने विनियोगः ऋक् ॐ आत्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठा विचाचलिः । विशस्त्वा सर्वावाञ्छन्तु मात्वद्राष्ट्र मधिभ्रशत् । ॐ भू० स्वः भृश इहागच्छेहतिष्ठ ॐ भृशायनमः स्था० पू० । शुभ्रवर्णं मन्तरि-

क्षम । ॐ घृतमिति दीर्घतमा ऋषिः पंक्तिश्छन्दोऽन्तरिक्षो देवता अन्तरिक्षा वाहने विनियोगः । ॐ घृतं घृतपावानः पिवतवसां वसापावानः पिवतान्तरिक्षस्यहविरसिस्वाहा दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा । ॐ भू० स्वः अन्तरिक्ष इहागच्छेहतिष्ठ ॐ अन्तरिक्षायनमः स्था० पू० । ततो रक्तमग्निम् त्वन्नो अग्नइति हिरण्यस्तूप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता अग्न्या वाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ त्वन्नोऽअग्ने तवदेव पायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्द्य । त्राता तोकस्यतनयेगवामस्यनिमेष ई० रक्षमाणस्तवव्रते । ॐ भू० स्वः अग्ने इहागच्छेहतिष्ठ ॐ अग्नये नमः स्थाप० पूज० ॥३०॥ श्यामलं पूषणम् । ॐ स्वयम्भूरसीति सूर्य ऋषिर्याजुषीछन्दः पूषा देवता पूषावाहने विनियोगः । ऋक् ॐ स्वयम्भूरसि श्रेष्ठोरश्मिर्वर्चोदाऽअसि वर्चोमे देहिसूर्य्यस्या वृतमन्वावर्ते । ॐ भू० स्वः पूषन् इहागच्छेहतिष्ठ ॐ पूष्णे नमः स्थापयामि पू० । वितथं पीतवर्णम् ॥ ॐ तत्सूर्य्यस्येति-कुत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वितथो देवता वितथावाहने विनियोगः ऋक्—ॐ तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्याकर्त्तोर्वितत ई० संजभारः यदेदयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्रीवासस्तनुतेसिमस्मै ॐ भू० स्वः वितथ इहागच्छेहतिष्ठ ॐ वितथायनमः स्था० पू० । श्यामलं यमम् । ॐ यमायत्वेति दध्यङ्ङाथर्वणऋषिर्यजुश्छन्दो यमो देवता यमावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वातपसे देवस्त्वा सवितामध्वानक्तु पृथिव्या सꣳस्पृशस्पाहि । अर्चिरसिशोचिरसि तपोसि । ॐ भू० स्वः यमइहागच्छेहतिष्ठ ॐ यमायनमः स्था० पू० । श्वेतंगृहरक्षाकरम् ॐ गृहामाविभीतमिति आसुरी ऋषिः पंक्तिश्छन्दो गृहरक्षाकरो देवता गृहरक्षाकरावाहने विनियोगः । ऋक् गृहामाविभीतमा वेपध्वमूर्जं विभ्रतऽएमसि ऊर्जंविभ्रद्वः सुमनाः सुमेधाः गृहानैमि-मनसा मोदमानः । ॐ भु० स्वः भोगृहरक्षाकर इहागच्छेहतिष्ठ ॐ गृहरक्षाकरायनमः । स्था० पू० ततो श्वेतवर्णं गंधर्वम् । ॐ

गन्धर्वस्त्वेति प्रजापति ऋषि यजुश्छन्दो गन्धर्वोदेवता गन्धर्वा-वाहने विनियोगः। ऋक् ॐ गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः। इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधिरस्यग्नि रिडऽईडितः। ॐ भु० स्वः भोविश्वावसो इहागच्छेहतिष्ठ। ॐ विश्वावसवेनमः स्था०पू०। नीलवर्णं भृंगराजम्। ॐ सौरीबलागेति भुरिगृऋषिर्जगतीछन्दो भृंगराजोदेवता भृंगराजावाहनेविनियोगः। ऋक् ॐ सौरीबलाकाशार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यैशारिः पुरुषवाक् श्वाविद्भौमी शार्दूलोवृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वतेशुकः पुरुषवाक्– ॐ भू० स्वः भृंगराज इहागच्छेहतिष्ठ भृङ्गराजायनमः स्था० पू०। रक्तवर्णंमृगम्। ॐ मृगोनेतिजय-ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मृगोदेवता मृगावाहने विनियोगः ऋक्—ॐ मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतआजगन्थापरस्याः सृक टं० स टं० शायपविमिन्द्र तिग्मंविशत्रून्ताढ्हि विमृदोनुदस्व। ॐ भू० स्वः मृगइहागच्छेहतिष्ठ ॐ मृगायनमः स्था० पू०। धूम्रवर्णं दौवारिकम् ॐ द्वेरूपे इति कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो दौवारिको देवता दौवारिकावाहने विनियोगः। ऋक—ॐ द्वेविरूपेचरतः स्वर्थेअन्यान्यावत्समुपधापयेते हरिरन्यस्यां भवतिस्वधावान् शुक्रोअन्यस्यांददृशेसुवर्चाः। ॐ भू० स्वः दौवारिक इहागच्छे-हतिष्ठ ॐ दौवारिकायनमः स्था० पू० पीतवर्णंसुग्रीवम्। ॐ नीलग्रीवेतिपरमेष्ठि ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुग्रीवोदेवता सुग्रीवावाहने विनियोगः। ऋक्—ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठादिव टं० रुद्राऽउप श्रिताः। तेषा ॐ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि। ॐ भू० स्वःसुग्री वइहागच्छेहतिष्ठ ॐ सुग्रीवायनमः स्था० पू० तुहिनाकारंवरुणम्। ॐ वरुणस्येति शुनः शेफऋषिर्गायत्रीछन्दो वरुणोदेवता वरुणा वाहने विनियोगः ऋक् ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्यऽऋत सदनमसि वरुणस्यऋत सदनमासीद। ॐ भूर्भुवःस्वः वरुण इहागच्छेहतिष्ठ

श्रुतबन्ध ऋषिर्गायत्री छन्दोऽ दितिर्देवता अदित्यावाहने विनियोगः। ऋक्-ॐ एउण्ड्यादितऽऽग्हिकाम्याऽग्तमयिवः काम-धरणं भूयात्। ॐ भू० स्वः अदित्ते इहागच्छेहतिष्ठ ॐ अदितयेनमः स्था०पू०। ततोभद्रमध्येब्रह्मणोऽन्तिके शुभ्रवर्ण नागाकृतिं वास्तु पुरुषम्। ध्यानम् नागाकृतिं चतुर्बाहुंब्रह्मण्यं च गृहाधिपम्। भद्रस्थदेवसहितंध्यायाम्यावाहनार्थकम् ।१। ॐ वास्तोष्पत इति वशिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वास्तुर्देवता वास्त्वा वाहने विनियोगः। ऋक् ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानी ह्यस्मान्त्स्वावेशो ऽ अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदेशं चतुष्पदे। ॐ भूर्भुवः स्वः भो वास्तो इहागच्छेहतिष्ठ ब्रह्मादि त्रिपञ्चा शद्देवसहितः सांगोपाङ्गः सन्मेपूजांगृहाण मम्वसंरक्षणं कुरुकुरु। ॐ सांगोपाङ्ग वास्तु पुरुषायनमः। ॐ एतन्नते देवसवितर्यज्ञं माहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेनयज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेनमामव। ॐ मनोयूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ टे० समिमं दधातु विश्वेदेवासऽइहमा दयन्तामोंप्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तु सहितब्रह्मादि चतुःपंचाशद्देवाः सुप्रतिष्ठिता भवन्तु। ततः प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा आवाहयेत् ध्यानम्। नागाकृतिं चतुर्बाहुं ब्रह्मपुत्रं सुवर्चसम् ॥ ग्राम गृहाधिपं वास्तुंध्यायाम्यावास हेनवे आवाहनं—आदित्यान् दितिजांश्चैव वास्तु मण्डल मध्यगान् ॥ गृहसौख्य समृध्यर्थं देवानावाहयाम्यहम् ॥आसनम्॥ अनेक वस्त्र संयुक्तं भद्राकृतिमनो हरम् ॥ आसनं प्रतिगृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थ देवताः ॥पाद्यम्॥ सुपात्रे निर्मलं दिव्यं भक्त्यार्पित शुभं जलम् ॥ पाद्यंगृह्णन्तु यूयंवै वास्तु भद्रस्थ देवताः ॥अर्घ्यम्॥ सदध्यक्षत दूर्वाढ्यं जलंपरमसुन्दरम् ॥ गृह्णन्त्वर्घं च संप्रीत्या वास्तु भद्रस्थ देवताः ॥स्नानीयं॥ नानागन्ध समायुक्तं स्नानीयकमनुत्तमम्। गृह्णन्तु संघपूजायां वास्तु भद्रस्थदेवताः ॥पंचामृतस्नानम्॥ पयोदधिघृतं क्षौद्रं शर्कराभिर्विमिश्रितम्। पंचामृतं प्रगृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थदेवताः। शुद्धोदक स्नानम्। शुद्धोदकं मयादत्तं पवित्रं

निर्मलं शुभम् । पुनः स्नानाय गृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । वस्त्राणि—कौशेयानि सुवस्त्राणि नानावर्णात्मकानिचमयादत्तानि गृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थदेवताः । यज्ञोपवीतम्—गृह्णन्तु चोपवीतानियेच यज्ञोपवीतिनः कर्पासतन्तुमूलानि वास्तु भद्रस्थ देवताः चन्दनम्—मलयाचल संभूतंसकर्पूरं सकेशरम् । चन्दनं प्रतिगृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । अक्षताः—अक्षतांस्तण्डुलांच्छुभ्रान्भालशोभाकरान्परान् । शोभार्थ प्रतिगृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थ देवताः । पुष्पाणि—नानाविधानि पुष्पाणि देशकालोद्भवानि च । मदत्तानि प्रगृह्णन्तु वास्तु भद्रस्थ देवताः । धूपम्—वनस्पतिसमुद्भूतं दिव्य गंधमनोहरम् । धूपं गृह्णन्तु चाध्रेयं वास्तु भद्रस्थ देवताः । आरार्तिक्यम्—घृताक्त वर्तिकायुक्तमारार्तिक्यं प्रकाशितम् । सन्मङ्गलार्थंगृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । नैवेद्यम्—भक्ष्यंभोज्यंचपक्कान्नं मधुरं घृतपायसम् । नैवेद्यं प्रतिगृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । नैवेद्यान्ते जलम्—करानन्नविशुद्ध्यर्थं गन्धद्रव्य सुसंस्कृतम् । जलं च प्रति गृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । उपायनद्रव्यम्—उपायनी भूतमिदं वित्तशाठ्यविवर्जितम् । द्रव्यं गृह्णन्तु मद्दतं वास्तु भद्रस्थ देवताः । फलम्—पूगी फलं लवंगं च ऋतुजानि फलान्यपि । भक्त्यार्पितानि गृह्णन्तु वास्तुभद्रस्थ देवताः । इति पूगीफलैर्वास्तु भद्रं सुसज्य होमवेद्युपरि वक्ष्यमाण प्रकारेण मग्वं कुर्यात् । तच्च वास्तुमण्डल देवताः संपूज्य होमवेदी समीप मागम्य संस्कारादिषु वक्ष्यमाण प्रकारेण हवनं कुर्यात् । तत्रादौ संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुक कर्मणि वास्तुमण्डलार्चित देवतानां पूर्वोक्त पूजा प्रकारेण प्रति देवताप्रीत्यर्थं तिलाज्य द्रव्येणपायसेनवा—अष्टाभिराहुतिभिः प्रत्येकंयक्ष्ये । वास्तुपुरुषंप्रति जपदशमांशेन पायसेन विल्वफलसंयुक्तेन जुहुयात् । होम संख्या न्यूनतायां मष्टोत्तर शताहुतिभिर्जुहुयात् । ततो वास्तुमंडपमागत्य वक्ष्यमाण प्रकारेण बलीन्दद्यात् । तत्प्रकारस्तु-मांसमन्न बलिंहित्वा विप्रेण घृतपायसम् ॥ देयं क्षत्रिय मुख्यैस्तु

ॐ वरुणायनमः स्था० पू० । पीतवर्णं पुष्पदन्तम् । ॐ नमोगणेभ्य इति कुत्सऋषिः शक्वरी छन्दः पुष्प दन्तो देवतापुष्पदन्ता वाहने विनियोगः । ऋक् ॐ नमोगणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्योव्रात पतिभ्यश्चवो नमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमोनमः ॐ भू० स्वः पुष्पदन्तइहागच्छेहतिष्ठ । ॐ पुष्पदन्तायनमः स्था० पू० कश्मलाकारमसुरम् । ॐ यमश्विनेति वस्त्विन्द्रपिस्त्रिष्टुपछन्दोऽसुरोदेवता असुरावाहने विनियोगः ऋक् ॐ यमश्विना नमुचेरासुरा दधि सरस्वत्य सुनोदिन्द्रियाय । इमन्त ई० शुक्रं मधुमन्त मिन्दु ई० सोम ई० राजानमिह भक्षयामि । ॐ भू० स्वः असुर इहागच्छेहतिष्ठ ॐ असुरायनमः स्था० पू० । कृष्णंपापम् । ॐ एतत्ते सदा इति वशिष्ठ ऋषिः पंक्तिश्छन्दः पापो देवता पापावाहने विनियोगः । ऋक्— ॐ एतत्ते रुद्रावसन्तेन परो-मूजवतोतीहि अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽ अहि ई० शन्नः शिवोतीहि । ॐ भूर्भुवः स्वः पाप इहागच्छेहतिष्ठ ॐ पापाय नमः स्था० पू० ॥ रक्तं रोगम् । ॐ यद्देवाऽइति प्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्दो रोगो देवता रोगावाहने विनियोगः । ऋक्— ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमावयम् । अग्निर्मातस्मादेनसो विश्वान्मुंचत्व ई० हसः । ॐ भू० स्वः रोग इहागच्छेतिष्ठ ॐ रोगायनमः स्था० पू० । शुभ्रान्पितॄन् । ॐ आयन्तुनः इति शङ्खऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः पितरो देवता पितॄणामावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ आयन्तुनः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञे स्वधयामदन्तोऽ अधिब्रुवन्तुतेऽवंत्वस्मान् । ॐ भू० स्वः पितर इहागच्छतइहतिष्ठतः ॐ पितृभ्योनमः स्था० पू० । रक्तं वायुम् । ॐ वायो येते इति गृत्समदऋषिर्गायत्री छन्दो वायुर्देवता वाय्वावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ वायो येते सहस्रिणो रथासस्तेभिरागहि । नियुत्वान्त्सोमपीतये । ॐ भू० स्वः वायो इहागच्छेहतिष्ठ ॐ वायवे

नमः स्था० पू० । कृष्णं नागम् । ॐ अहिरिवेति पायुर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो नागो देवता नागावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः । हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ऀ्ँ सम्परिपातु विश्वतः । ॐ भू० स्वः नाग इहागच्छेहतिष्ठ ॐ नागायनमः स्था० पू० । शुभ्रं सोमम् । ॐ सोम ᳬ० राजानमिति तापस ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सोमो देवता सोमावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ सोम ᳬ० राजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे । आदित्यां विष्णु ᳬ० सूर्य्यं ब्रह्माणं च वृहस्पतिम् । ॐ भू० स्वः सोम इहागच्छेहतिष्ठ ॐ सोमायनः स्था० पू० । शुभ्रं मुख्यम् । ॐ मानस्तोक इति कुत्स ऋषिर्जगती छन्दो मुख्यो देवता मुख्यावाहने विनियोगः । ऋक् ॐ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानो गोपुमानो अश्वेपुरीरिषः मानोवीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे ॐ भू० स्वः मुख्य इहागच्छेहतिष्ठ ॐ मुख्यायनमः स्था० पू० । नीलवर्णं भल्लाटम् । ॐ इमारुद्रायेति कुत्स ऋषिर्जगती छन्दो भल्लाटो देवता भल्लाटावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ इमारुद्रायतवसे कपर्दिनेक्षय द्वीरायप्रभरामहेमतिः । यथा समसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टंग्रामे अस्मिन्ननातुरम् । ॐ भू० स्वः भो भल्लाट इहा गच्छेहतिष्ठ ॐ भल्लाटायनमः स्था० पू० । श्वेतं शेषम् । ॐ याइषव इति देवश्रवा ऋषिरनुष्टुप्छन्दः शेषो देवता शेषावाहने विनियोगः । ऋक्—ॐ याइषवोयातु धानानां येवावनस्पती-ऀ्ँ॥रनु । येवावटेपु शेरतेतेभ्यः सर्पेभ्योनमः । ॐ भू० स्वः शेष इहागच्छेहतिष्ठ शेषायनमः स्था० पू० । दितिं रक्ताम् । ॐ हिरण्यरूपा इति वरुण ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो दितिर्देवतादित्यावाहने विनियोगः । ऋक् ॐ हिरण्यरूपाऽउपशो विरोकउभाविन्द्राउदिथः सूर्य्यश्च । आरोहतं वरुणमित्रगर्त्तन्ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोसि वरुणोसि । ॐ भू० स्वः दिते इहागच्छेहतिष्ठ ॐ दितयेनमः स्था० पू० । कृष्णामदितिम् । ॐ इडऽएहीति

ॐ मण्डलेशम्० ॥२५॥ पिलिपिच्छायमापभक्ताज्यं सलवणपायसम् ॐ पिलिपिच्छायनमः वालसम्पूज्य भोभोपिलिपिच्छममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥२६॥ सक्तुसमन्वितं वहुप्रकारान्नवलिं सत्याय । ॐ सत्यायनमः वलिंसम्पूज्यभोभो सत्यममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥२७॥ भृशायमुद्गान्नपूरितापूपं सलवण पायसंभक्तसहितम् । ॐ भृशायनमः वलिंसम्पूज्यभोभोभृश ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम् ॥२॥ अन्तरिक्षायशर्करामिश्रित सवल्कलधान्यंदुग्धंच । ॐ आकाशायनमः सम्पूज्यभो २ आकाशममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥२६॥ शर्करामध्वाज्यपक्वान्न वलिमग्नये ॐ अग्नयेनमः वलिंसम्पूज्यभो अग्ने ममयजमानस्य० मण्डलेशम्० ॥३०॥ पूष्णेसशर्कर गोधूमपिष्टदुग्धसाधितम् ॐ पूष्णेनमः सं० भो २ पूषन ममयजमानस्य० ॐ मंडलेशम्० ॥३१॥ हरिद्रासहितंदधिवितथाय । ॐ वितथायनमः वलिंसं० भो २ वितथममयजमास्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥३२॥ यमायमधुभक्तवलिम् । ॐ यमायनमो वलिंसं० भो २ यमममयजमानस्य ॐ मण्डलेशम्० ॥३३॥ गृहरक्षकाय नवनीतौदनम् । ॐ गृहरक्षकायनमः सं० भो २ गृहरक्षक ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥३४॥ गन्धर्वायसफल घृतपक्वान्नम् ॐ गन्धर्वायनमः सम्पूज्य भो २ गन्धर्व ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥३५॥ भृङ्गराजायमेषजिह्वाकृति पूरिकांपङ्कपचर्चितं भक्तम् । ॐ भृङ्गराजायनमो वलिं सम्पूज्य भो भो भृङ्गराज ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥३६॥ मृगाय तिलाज्यगन्धम् ॐ मृगायनमः स० भोभो मृग यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥३७॥ दौवारिकाय सचन्दनागरुपिष्टम् । ॐ दौवारिकायनमो वलिं स० भो दौवारिकममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥३८॥ सुग्रीवाय अपूपाज्य सितादुग्धं दन्तकाष्ट समन्विम् । सुग्रीवाय नमो वलिं स० भो सुग्रीव मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥३६॥ वरुणाय सपद्मपुष्प कुशपक्वान्नम् । ॐ वरुणायनमः स० भो वरुण

मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४०॥ पुष्पदन्तायपायसान्नं सपुष्पगन्धाज्यम् । ॐ पुष्पदन्तायनमो वलिं स० भो पुष्पदन्त मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४१॥ असुराय यव सक्तुकं- सलवण दुग्धं भक्तम् । ॐ असुरायनमो वलिं स० भो असुर मम यजमानस्य० ॐ मण्डले० ॥४२॥ पापाययवचूर्णाज्यदुग्ध वलिम् । ॐ पापायनमः स० भो पाप मम यजमानस्य० ॐ मण्डले० ॥४३॥ रोगाय घृतमोदकयुतं लाजावलिम् । ॐ रोगाय नमो वलिं स० भो रोग मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेश० ॥४४॥ पितृभ्यो मधुसर्पिः पायसान्नम् । ॐ पितृभ्योनमो वलिं स० भो पितरोममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्०॥४५॥वायवे घृत पायसम् । ॐ वायवे नमो वलिं स० वायो मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४६॥ मधुघृतदुग्धयुतं शालि पिष्टं नागाय ॐ नागाय नमः वलिं स० नाग मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४७॥ सोमायमधुयुतंदुग्धं दध्योदनं च । ॐ सोमायनमो वलिं स० सोम मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम ॥४८॥ मुख्याय पायसौदनम् । ॐ मुख्याय नमो वलिं स० मुख्य मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥४९॥ भल्लाटायसपायसं मुद्गसूपौदनम् । ॐ भल्लाटायनमः स० भल्लाटमम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥५०॥ शेषाय कर्पूरैलाविमिश्रितघृतौदनम् ॥ ॐ शेषाय नमो वलि सम्पूज्य शेष मम यजमानस्य ॐ म० ॥५१॥ दित्तये क्षीराज्ययुतां पोलिकाम् ॐ दितये नमः स० दिते मम यजमानस्य ॐ मण्डलेशम् ॥५२॥ अदितये घृताक्त शर्करापोलिकाम् ॐ अदितये नमो वलिं स० अदिते मम यजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ततोवास्तु पुरुषाय नानापक्वान्नसहितं छागाकृति पोलिकाम् ॐ वास्तवे नमः वलिं स० पुरग्रामप्रसादाधिप भगवम् वास्तोर्मम्म तजमानस्य सकुटुम्बस्यायुः कर्ताक्षेमकर्ता तुष्टिदः पुष्टिदोभव ॐ मण्डलेशं प्रयच्छामि तुभ्यं भक्त्या निवेदितम् ॥ एमं वलिंसदीपंच गृहाणपरमेश्वर ॥ ततो वास्तुपुरुषाय सफला-

द्रव्यं यत्कपिलोदितम् ॥ सर्वेर्वा विधिवद्देयः कुशपुष्पफलाक्षतैः । दधि तण्डुलमाषान्नैर्यद्वादेयो वलिर्बुधैः ॥ अथ वलिदान प्रकारे ब्राह्मणस्तु पूर्वोक्त कथनानुसारेण वास्तु भद्रस्थ देवताभ्यो घृत पायसवलिं दद्यात् । आचम्य—ॐ नमः परमात्मने इत्यादि देश कालौ संकीर्त्यामुकोऽहम्ममयजमानस्य वा सपुत्र परिवारस्या युरारोग्याभिवृद्धिपूर्वकं सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं निर्विघ्नतया मुकपुत्र-स्यदीक्षा सम्पादनार्थं ब्रह्मादि वास्तुपर्यन्त चतुःपंचा शद्देवानां प्रीतये तेभ्यः पायसेनमाषान्नेन वा वलिदानं करिष्ये । तत्रादौ ब्रह्मणेपायसम् । वलिं सम्पूज्य तदुपरि दीपं प्रज्वाल्य ॐ ब्रह्मणे नमः इति मंत्रमुच्चार्य हस्तेजलं गृहीत्वा भो ब्रह्मन् ममयजमानस्य सकुटम्बस्यायुः कर्ता क्षेम कर्ता तुष्टिदः पुष्टिदोभव ॥ ॐ भण्डलेशंप्रवक्ष्यामितुभ्यंभक्त्यानिवेदितम् । एनंवलिंसदीपंचगृहाण परमेश्वरः । इतिवल्युपरिजलं क्षिप्तावे तुपरि ब्रह्मणः पदेन्यसेत् १। एवं सर्वत्रबोध्यम् । ततोकर्पूरचन्दनयुतं पायसंविवस्वते ॐ विवस्वतेनमः सम्पुज्यभो भोविवस्वन ममयजमानस्यसपरिवा-रस्य० ॐ मण्डलेशं ॥२॥ महीधरायमाषौदनम् ॥३॥ ॐ मही-धरायनमः सम्पुज्यभोभोमहीधरममयजमानस्य सकुटुम्बस्य० । ॐ मण्डलेशं । ततोमित्रायपुष्पसहितंपायसम् । ॐ मित्रायनमः सम्पूज्यभोभोमित्रममयज० सकुटुम्बस्य० ॐ । ॐ मण्डलेशं ॥४ ॥ सावित्रायकर्पूरपुष्पकुशयुतजलम् । ॐ सावित्रायनमः सम्पूज्यभोभोसावित्र ! ममयजमानस्य । ॐ मण्डलेशं ॥५॥ सवित्रेसगन्धरक्तभक्तं रक्तपुष्पयुतम् । ॐ सवित्रेनमः सं० भोभोसवितोममयजमानस्य० मण्डलेशं० ॥६॥ इन्द्रायपुष्पकुंकु-मसंयुक्तंपायसम् । ॐ इन्द्रायनमः वलिंसम्पू० भोभोइन्द्रमम-यजमानस्य० मण्डलेशं ॥७॥ शक्रायसघृतमाषभक्तं सवस्त्रम् ॐ शक्रायनमः सम्पू० ॐ भोभो शक्रममयजमानस्यमण्डलेशं ॥८॥ जयायपिष्टंवस्त्रयुतंसगन्धम् । जयायनमः सं० भोभो जयमम-यजमानस्य० मण्डलेशं ॥९ ततोरुद्रायसलवणपायसं वस्त्रंच ॐ

रुद्रायनमः । वलिंसम्पूज्य भोभोरुद्रममयजमानस्य० मण्डलेशं ॥१०॥ जयन्तायघृतौदनम् । ॐ जयन्तायनमः सम्पू० भोभो जयन्तममयजमानस्य० मण्डलेशं ॥११॥ अद्भ्योमधुपुष्पयुतक्षीरम् ॐ अद्भ्योनमः सम्पू० भोभोआपमम यजमानस्य० मण्डलेशं ॥१२॥ आपवत्सायगुडदध्योदनम् । ॐ आपवत्साय नमः सम्पूज्यभोभोआपवत्सममयजमान० मण्डलेशं ॥१३ शर्वायदध्योदनं सरक्तपुष्पम् । ॐ शर्वायनमः सम्पूज्यभोभो शर्वममयजमानस्य मण्डलेशं ॥१४॥ सलवणक्षीरं भाषान्नंस्कन्दाय । ॐ स्कन्दायनमः सम्पूज्यभोभोस्कन्दममयजमानस्य० मण्डलेशं ॥१५॥ अर्यम्णे-सलवणपायसापूपकं कृसरान्नम् । ॐ अर्यम्णेनमः वलिंसम्पूज्यभोभो अर्यमन्ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं० ॥१६॥ जृम्भकायमत्स्याकृति पोलिकांसलवणपायसाम् ॐ जृम्भकायनमः सम्पूज्य० भोभोजृम्भक ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥१७॥ चरक्यैसघृतलवणपायसम् । ॐ चरक्यैनमः वलिसम्पूज्य भोभो चरके ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥१८॥ विदार्यैसलवण पायसंसिन्दूरयुक्तम् । ॐ विदार्यैनमः सम्पूज्य० भोभोविदारि ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं ॥१६॥ पूतनायैसतैलमाषान्नदधिभक्त वलिम । ॐ पूतनायैनमः वलिंसम्पूज्य भोभोपूतनेममयज मानस्य० ॐ मण्डलेशं० ॥२०॥ पापराक्षसिकायै सलवणपायसो परिमत्स्याकृति पोलिकांसलवणदुग्धञ्च । ॐ पापराक्षिकायैनमः वलिंसम्पूज्य भोभोपापराक्षसिकेममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं० ॥२१॥ईशानायसदुग्धभक्तंवलिम् । ॐ ईशानायनमः सम्पूज्य भोभोईशानममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशं० ॥२३॥ पर्जन्याय तण्डुललाजासहितंघृतपक्वान्नम् । ॐ पर्जन्यायनमः वलिंसम्पूज्य भोभोपर्जन्यममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्० ॥२६॥ शिखिनेघृतपक्वान्नवलिम् । शिखिनेनमः सम्पूज्यभोभोशिखिन् ममयजमानस्य० ॐ मण्डलेशम्०॥२४॥ वीभत्सायछागकर्णाकृतिपोलिकाम् ॐ वीभत्सायनमः वलिंसम्पूज्यभोभोवीभत्स ममयजमानस्य०

र्घदानम् । ॐ इदंफलंमयादत्तंस्थापितं पुरतस्तवतेनमेसफलावाप्ति र्भवेज्जन्मनिजन्मनि । क्षेत्रपालपूजाविधानम् स्तम्भपूजाप्रयोगे लिखितम् । तदनुसारेण क्षेत्रपालाय बलिंदद्यात् । तत उत्तराङ्ग पूजनंविधायप्रार्थयेत् । पुष्पंगृहीत्वा ॐ मंत्रहीनंक्रियाहीनं श्रद्धा-भक्तिविवर्जितम् । तत्सर्वपरिपूर्णस्यात् वास्तोतवप्रसादतः । नमस्तेवास्तुपुरुषनमस्ते देवसम्मच । पुत्रंपौत्रं धनंदेहि सर्वाङ्कामा श्चदेहिमे । ततो हस्तेपुष्पाक्षतान्गृहीत्वाविसर्जयेत् ॥ ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पतेदेवयन्तस्त्वे महेउपप्रयन्तु मरुतःसुदानव इन्द्रप्राशूर्भवा सुचा । ततः कलशाभिषेकादिकंयजमानस्यकृत्वादेव निर्माल्यं ब्राह्मणोदद्यात ॥ इति दीक्षाङ्ग वास्तुभद्रपूजापद्धतिर्बलिदान प्रयोगसहिता ।

—:§§§§§§§:—

अथ दीक्षांग वास्तु होमे नाममंत्र पध्दतिः ।

ॐ ब्रह्मणेनमः स्वाहा । ॐ विवस्वतेनमः स्वाहा । ॐ मित्रायनमः स्वाहा । ॐ महीधरायनमः स्वा० । ॐ सावित्रायनमः० । ॐ सवित्रेनमः ० । ॐ शक्रायनमः ० । ॐ इन्द्रायनमः स्वाहा । ॐ जयायनमः० । ॐ रुद्रायनमः० । ॐ जयन्ताय:० । ॐ अद्भ्योनमः० । ॐ आपवत्सायनमः० । ॐ शर्वायनमः स्वाहा । ॐ स्कंदायनमः० । ॐ अर्यम्णेनमः० । ॐ जृंभकायनमः० । ॐ चरक्यैनमः० । ॐ विदार्यैनमः० । ॐ पूतनायैनमः स्वाहा । ॐ पापराक्षसिकायै नमः । ॐ ईशानायनमः० । ॐ पर्जन्यायनमः० । ॐ शिखिनेनमः० । ॐ बीभत्सायनमः स्वाहा । ॐ पिलिपिच्छायनमः० । ॐ सत्यायनमः० । ॐ भृशायनमः० । ॐ अन्तरिक्षायनमः० । ॐ अग्नयेनमः० । ॐ पूष्णेनमः स्वाहा । ॐ वितथायनमः० । ॐ यमायनमः० । ॐ गृहरक्षाकरायनमः० । ॐ गंधर्वायनमः० । ॐ भृङ्गराजायनमः स्वाहा । ॐ मृगाय-

नमः० । ॐ दौवारिकायनमः० । ॐ सुग्रीवायनमः स्वाहा । ॐ वरुणायनमः० । ॐ पुष्पदन्तायनमः० । ॐ असुरायनमः० । ॐ पापायनमः० । ॐ रोगायनमः० । ॐ पितृभ्योनमः स्वाहा । ॐ वायवेनमः० । ॐ नागायनमः स्वाहा । ॐ सोमायनमः० । ॐ मुख्यायनमः० । ॐ भल्लाटायनमः स्वाहा । ॐ शेषायनमः० । ॐ दित्यैनमः० । ॐ अदित्यैनमः स्वाहा । ॐ वास्तुपुरुषायनमः स्वाहा ॥ (वास्तोष्पते होमं गृहवास्तु पध्दत्युक्त प्रकारेण विल्वपंचक होमं च कुर्यात् ॥)

इति दीर्घांगवास्तु होम पध्दतिः ।

कुश कंडिका सूत्रव्याख्या ।

अथ कुशकंडिका सूत्रव्याख्यां वक्ष्ये—(अथातो गृह्यस्थालीपाकानां कर्म ।१।) अथ श्रौतकर्म विधानानन्तरंयत श्रौतानिकर्माणि विहितानि स्मार्त्तानितु विधेयानि, अतोहेतो गृह्ये आवसथ्येग्नौ येस्थालीपाका तेषांगृह्यस्थालीपाकानांकर्म क्रियानुष्ठानमितियावत वक्ष्यते, इति सूत्रशेष । तत्रादावाधानादि सर्वकर्मणांसाधारणोविधि, प्रथमकंडियोच्यते । तत्रगृह्ये ष्वावसथ्याधानादिषु सर्वकर्मसुयजमान एवकर्त्ता । नान्यऋत्विक्तस्या नुक्तत्वात् । अथयजमान सुस्नात सुप्रक्षालित पाणिपाद स्वाचान्त कर्मस्थानमागत्य वारणादि यज्ञियवृक्षोद्भवासमे प्रागग्रा नुदगग्रान्वात्रीन्कुशानपसार्य, प्राङ्मुखउपविश्य वाग्यत शुध्यायांभूमौ सप्तविंशत्यंगुलं मंडलंपरिलिख्य, इतिहरिहर ॥ अत्रकुंडमान सूत्रकारेण नोक्तम्, मयाग्रथान्तरेभ्य समहीतम् **वशिष्ट संहितायाम**—अनेकदोषद कुंडमत्रन्यूनाधिकंयदि । तस्मात्सम्यक्परीक्ष्यैव कर्त्तव्यं शुभमिच्छता । क्रियासारे—न्यूनाधिक प्रमाणंय त्कुंडंकुर्युरमेखलम् । श्रृंगाररहितंयच्च यजमान विनाशकृत् ॥ **कुंडमंडप निर्माणार्थं भूमि शोधनं वास्तुशास्त्रे**—देशेसंभाविते प्राग्वि धिवदिहसमां संविधायाथभूमिं । संपूज्यात्रैवमध्ये विरचितवलये रोपयेत्साम्रशङ्कुम् ॥ तच्छाया ग्रंचयस्मि न्विशतिचवलये यातियस्माच्च देशात् । तौप्रत्यक्पूर्वदेशौ तदनुगतगुण प्राग्गुणो ऽसौप्रदिष्ठ । **कर्मपर त्वेनैककुंडस्य विधानम्**—एकंकुंडंशुभदं मध्येशान्तौजपाग हवनेषु आरम्भैकादशिनौ लघुमहदतिरुद्रहवनविधौ ॥ शान्तिस्तम्भन सिध्दिभद्रयशसा हृत्येतुवेदास्रकं,

भोगाकर्षणपुत्रकृद्भगमथं वश्येचशान्तौमृतौ ॥ अर्धेन्द्वाभमपारिनाशान विधौद्वेषेतथाकर्षणे, व्यस्त्रिस्यादथ वश्यपुष्टिकरणे सम्पत्तिशान्त्योर्वृति: ॥ शत्रूच्चाटनमारणादिविषयेस्यात्स्तंभनेऽग्ना-स्रकं पर्मपुष्टिधनागमाय गदकृद्दूरस्यार्थं मानप्रदम् । सर्वाप्तौच तथागजस्रमपितद्योगार्थमुक्ति-प्रदं, सम्पत्कृद्गुरुकुण्ड मत्रतुशराश्रिस्याच्च भूतादिहृत ॥ वर्णपरत्वेन कुण्डाकृतिमानं शारदातिलके —विप्राणांचतुरस्रंस्या द्राज्ञांवर्तुलमिष्यते । वैश्यानामर्धचन्द्राभं शूद्राणाम्त्र्यस्रमी-रितम् । नारदपञ्चरात्रे—चतुरस्रंतुसर्वेषा केचिदिच्छन्तिसूरय: सनत्कुमारसंहितायाम्—क्षोणीकुण्डानिविप्रेन्द्र योन्याकाराणिकारयेदिति । वेदिकायांमेखलात्याज्या—वशिष्ठसंहिता याम्—मर्यादशांगुलंत्यक्त्वा वेदिकायाश्चतुर्दिशं । क्रियासारे—त्यक्त्वावेदिचतुर्भागं कुण्डानि नवपञ्चवा । होमानुसारेण कुण्डमानंशारदातिलके—एकहस्तमितंकुण्डं लक्षहोमेविधीयते लक्षाण्यादशकंयावत्ता वद्धस्तेनवर्द्धयेत । भविष्येविशेष.—मुष्टिमात्रंशतार्द्धेस्याच्छतेचारत्नि-मात्रकम् । सहस्रेत्वथहोतव्ये कुण्डंकुर्यात्करात्मकम् । द्विहस्तमयुतेतच्चलक्षहोमेचतु:करम् । दशलक्षमितेहोमे षट्करंसम्प्रचक्षते । अष्टहस्तात्मकंकुण्डं कोटिहोमेतुनाधिकम् । कुण्डरत्नाव-ल्याम्—यन्मण्डपेयत्करकुण्डमिष्टं ज्ञात्वैवकुण्डादिकमारभेत । न्यूनेथकुण्डेप्यधिकोविधेयो न्यूनोनहोमस्त्वधिकप्रशस्त ॥ अत्रकुण्डस्थंडिलव्यवस्थातु होमद्रव्यस्याधिकसूक्ष्ममानात्सुधीभि: स्वबुध्यैवकार्याविशेष: कुण्डनिर्माणग्रन्थेषुद्रष्टव्य. ॥ मंडपरचनामाह नारदपञ्चरात्रे—शुद्धाभिर्मृत्तिकाभिश्च वालुभिश्चमिते शुभे । सपादहस्तमानेन स्थंडिलंपरिकल्पयेत् ॥ चतुरस्रं समन्ताच्च चतुरंगुलमुच्छ्रितम् समेखलंस्थण्डिलन्तु प्रशस्तंहोमकर्मणि ॥ कण्ठन्तुवर्जयेदत्रखाते कण्ठ: प्रकीर्तित: । अग्न्यायतनधर्माहि यतस्तेमेखलादय: । बौधायन:—कुण्डवन्मेखला कृत्वा योनिकृत्वाततः परम् । मेखलारहितेहोम. शोक प्रद. श्रुतीरित: मेखलाकण्ठयोन्यादीनां व्यवस्थागृह्ययागप्रकरणेवक्ष्यामि ॥ एवंविधिनाकुण्डं स्थण्डिलञ्चनिर्माय । (परिसमुह्य । २ ।) त्रिभिर्दर्भै पांसूनपसार्य. तच्चसामर्थ्यात्पांस्वपसारणयोग्यै र्दर्भादिभिर्यावत्पांस्वपसारणंभवति तावत्कार्यं ॥ एकेनदर्भेणवारत्रयमितिकारिकाकार' अनन्त:—तत्साधनान्तरानुक्त त्वाद्धस्तै नेवपरिसमूहनंकुर्यात ॥ (उपलिप्य । ३ ।) उपलेपनं भूमेरुद्वर्तनंतच्चगोमयेन, स्थण्डिलंवाकु-ण्डंगोमयेनोपलिप्यते ॥ मैत्रायणिगृह्या दिदमपिवारत्रयंभवतीतिकेचित् । (उल्लिख्य । ४ ।) त्रि. स्रादिरेणहस्तमात्रेण खड्गाकृतिनास्फ्येनउल्लिख्य, प्रागग्रा. उदक्संस्था. स्थण्डिलपरिमाणा स्तिस्रोरेखा कृत्वा, वर्द्धमानमतेन—पञ्चवारेखा.— स्थण्डिलोल्लेखनं कुर्यात्स्रुवेणाचकुशेनच ॥ (उद्धृत्य । ५ ।) अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां यथोल्लिखितलेखाभ्य: पांशूनुद्धृत्य, (अभ्युक्ष्य । ६ ।) मणिकाद्भिरभिषिच्य । गङ्गादितीर्थभूतेन वार्ध्यपात्रेणवारिणा । मणिकासेचनंकुर्यान्न्युब्जहस्ता त्पुन: पुन. ॥ वर्द्धमान —उत्तानेनतुहस्तेन प्रोक्षणंसमुदाहृतम् । तिरश्चावोक्षणंप्रोक्तं नीचेना

भ्युक्षणंसंस्मृतम् । दैवेपरिसमूहनादिस्त्रिस्त्रिः पित्र्येसकृत्सकृत — इति कर्कोपाध्यायः ॥ एतेपञ्चभूसंस्काराः, इतिभर्तृयज्ञः अन्यथा: इतिकर्कः तेनयत्रयत्राग्नेः स्थापनंतत्रतत्रैतेकर्तव्याः एषएवविधिर्येनक्वचिद्धोमः इतिहरिहरः । (अग्निमुपसमाधाय । ७ ।) कर्मसाधनभूतं लौकिकंस्मार्त्तश्रौतंवाग्निं आत्माभिमुखंस्थापयित्वा ॥ मेरुतंत्रे — पात्रान्तरेणापिहिते ताम्रपात्रादिकेशुभे । अग्निप्रणयनं कुर्याच्छरावे वाथनूतने ॥ **इतिपारस्कराचार्य मतेनाग्निस्थापनविधिः** ॥

देवीपुराणादिषुतु समन्त्रकोविधिः — नारायणउवाच — ततः कुण्डस्यसंस्कारं स्थण्डिलस्यचवामुने । प्रवक्ष्यामिसमासेन यथाविधिविधानतः । वेदोक्तेनविधानेन कुर्याद्भूपञ्चसंस्कृतिम् । समूहनंकुशैः कुर्या त्वद्देवादेवहेडनात् । मानस्तोकेनमन्त्रेण गोमयेनोपलेपयेत ॥ त्वांवृन्त्रेष्विन्द्रमन्त्रेण त्रिस्रोरेखाविलेखयेत् । पांसूनुध्दृत्यलेखानां व्रजञ्चच्छेतिमन्त्रतः । अद्भिरभ्युक्षणंकुर्याद्देवस्यत्वेतिमन्त्रतः । त्रिकोणवृत्तषट्कोणं साष्टपत्रं सुभूपुरम् । यंत्रम्विभावयेद्वन्हेः कुण्डेवास्थंडिलेशुभे । तत. संस्थापयेद्वन्हि अग्निर्मूर्धेति मन्त्रतः । गंस्थाप्यवन्हिरंबीजमुच्चार्यतदनंतरम् । समिधाग्निंदुमन्त्रेण समिदा-धानमाचरेत , अग्निसन्धुक्षणंकुर्यात्तमग्निगृह्णामिमन्त्रतः । वा-चित्पिङ्गलहनदहपचयुग्मंततः परमस्वाहा । या सर्वज्ञाज्ञापयस्वाहा, इति मन्त्रेणवा

कर्मभेदेनाग्निनामान्याह वाचस्पतिः — लौकिकेपावकोवन्हिः प्रथमःप्रकीर्तितः अग्निस्तुमारुतोनामा गर्भाधानेप्रकीर्तितः पुन्सवेचमसोनाम शोभनःशुभकर्मसु । सीमन्तेमङ्गलोनाम प्रगल्भोजातकर्मणि ॥ पार्थिवोनामकरणे प्राशनेऽन्नस्यवैशुचिः । सभ्यनामातुचूडायां व्रतादेशे समुद्भवः ।

पुरातनपद्धतिषु प्रक्षिप्तोऽर्द्धः — व्रतमध्ये हरिर्नाम व्रतान्तेराजपुत्रकः ॥ गोदाने सूर्यनामास्या द्विवाहे योजकःस्मृतः ॥ **वाचस्पति मतंतु** — गोदाने सूर्यनामास्या त्केशान्तेयाजकः स्मृतः । वैश्वानरोविसर्गेस्या द्विवाहे वलदस्मृतः । चतुर्थीकर्मणिशिखीधृति रग्निस्तथापरे । आवसथ्यस्तथा धाने वैश्वदेवेतुपावकः । ब्रह्माग्निर्गार्हपत्येस्या द्दक्षिणाग्निस्तथै श्वरः । विष्णुराहवनीयेस्या दग्निहोत्रेत्रयोमताः । लक्षहोमेऽभीष्टदस्या त्कोटिहोमे महाशनः । एकेघृतार्चिषं प्राहुरग्निध्यानपरायणाः । रुद्रादौतुमृडोनाम शान्तिकं शुभकृत्तथा ।

कश्चित् — शान्तिके वरदः प्रोक्तः पौष्टिके वल वर्द्धनः । पूर्णाहुत्यां मृडोनाम क्रोधाग्निश्चाभिचारके । प्रायश्चित्ते विटश्चैव पाकयज्ञेषु पावकः । देवानां हव्यवाहश्च पितॄणां कव्यवाहनः । वश्यार्थेकामदोनाम वनदाहेतु दूषकः । कुक्षौतु जाठरोनाम क्रव्यादो शवदाहने । वन्हिनामा लक्षहोमे कोटि होमे हुताशनः । वृषोत्सर्गेऽध्वरोनाम शुचयं ब्राह्मणस्मृतः । समुद्रेवाडवानलसंयसम्वर्त्तकस्तथा । विष्णुराहवनीयः स्यादग्निहोत्रे त्रयोऽमयः । शास्त्रेश्वमग्निनामानि

ततः पूजन मारभेत ॥ (सूत्रकारेणाग्निपूजनं नसूत्रितं परमपद्धतिकारैः गवंत्र यज्ञादिषु पूजनं जिह्वानांच पूजन मुक्तम् । कस्मिंश्चित्तु पुरातन पद्धतिषु स्वाहानिहोमान्ते वन्हिपूजन

मुक्तं कश्चिन्नवाहुति होमान्ते लिखितं, परन्तु सर्वकर्मादौ ध्यान पूजनादिकंभवति अग्निध्याने— अग्निं प्रज्वलितंवन्देति, ध्यानादग्ने पूजनं समित्प्रक्षेपान्तो समीचीनमतम् ॥) अत्राचार्य- वरणस्यैवावश्यकतास्ति, अध्वर्यु कर्मसु वेदयोगादिति, सर्वे कर्मसु अध्वर्यो कर्त्तव्यम् । पादशौचार्घं वस्त्रादि स्नानाद्यैःसमर्चयेत् । परन्तु हरिहरादिभिर्यजमानस्यैव कर्त्तव्य मुक्तं परन्तु यजमानस्य कर्त्तृत्वेपि पुस्तकाचार्यस्य वरण करणे कापिक्षतिर्नास्तीति शास्त्र सम्मतिः । (दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य ८) तस्याऽग्नेः सन्मुखस्थापितस्याग्नेर्दक्षिणस्यां दिशि ब्रह्मणे आसनं वारणादि यज्ञियदारुनिर्मितं पीठमास्तीर्य कुशैराच्छाद्य, तत्र वरणाभरणाभ्यां पूर्वसम्पादितं कर्मसु तत्वज्ञं ब्राह्मणं तदभाव—कुशमयो ब्रह्मा इतिकर्के — पञ्चाशता भवेद्ब्रह्मा तदर्धेनतुविष्टरः । इति पञ्चाशत्कुशनिर्मितं ब्रह्माणमग्नेरुत्तरत प्रागुत्तमार्गेण स्वयमुदङ्मुख आगीनोऽनु- लेपन पुष्पमाल्य वस्त्रालङ्कारादिभि सम्पूज्य, अमुकशर्माहं करिष्ये । तत्रामुक गोत्रामुक प्रवरस्त्वं ब्रह्माभवतिब्रूयात्, भवानि इत्युक्तवन्तमुपनश्य, अग्निगृह्ये— यमो वैवस्वतो राजा दक्षिणस्यां नियस्यते । तस्मात्सरक्षणार्थाय ब्रह्मातिष्ठति दक्षिणे ॥ (प्रणीयऽ) अप इतिशेष । अग्निगृह्ये—ब्रह्माचार्य प्रणीतानामाशन च त्रिभि कुशै ॥ नद्याभ्यामेकदर्भेण भवन्ति ऋषीश्वरा ॥ पात्राणा स्थापन कुर्या दुत्तरे यज्ञ कर्मणि । तद्यथा— अग्नेरुत्तरत आगम्‌- त्रिभि कुशैरासनद्वय कल्पयित्वा वारण द्वादशांगुलदीर्घं चतुरंगुल विस्तार चतुरंगुलमध्यखातं चमसं सव्यहस्तेकृत्वा दक्षिणहस्तादुद्धृत पात्रस्थादकेन— पूरयित्वा पश्चिमासने निधायऽऽलभ्य पूर्वासने स्थापयित्वा कारिकाया पश्चादुत्तरतो वास्तारपात्रासादन मभित । उत्तरचेदु- दक्संस्थ प्राक्संस्थ पश्चिमभवत । एतद्वर्विपर्ययाल सम्भवे असम्भवतु—कादयादन — प्राचप्राच मुदगग्नेरग्नग्र समीपन । (परिस्तीर्य, १०) अग्निं बर्हिर्मुष्टिमादाय, ईशानादि प्रागग्रैर्बर्हिभिरुदक्संस्थमग्नेः परिस्तरण कृत्वा । अग्निगृह्ये—वह्नितस्तुपरित्यज्य द्वादशा- गुलतोबहि । परिस्तरण दर्भास्तु षोडशा द्वादशापिवा । (अर्थवदासाद्य, ११) यावद्भिः पदार्थैरर्थ. प्रयोजन तावत पदार्थान् द्वद्व प्राक्संस्थानुदगग्रानग्नेरुत्तरत पश्चाद्वा आसाद्य,, कुशाभावे कार्तास्मृत भाष्ये कुशाभावतुकाशा स्यु काशा कुशसमास्मृता । काशाभावे गृहीतव्या अन्यदर्भा यथोचिता । कुशाकाशा शरादूर्वायवगोधूमवल्वजा । सुवर्णराजतंताम्रे दशदर्भा प्रकीर्तिता ॥ कारिकायाम्—आसादयतिपात्राणि प्रवेशैवरवेबुध । त्र्यगुलान्तरमानेन पात्रात्पात्रान्तरस्थिति । तद्यथा—पवित्र च्छेदनानि त्रीणिकुशतरुणानि । पवित्रेसाग्रे अनन्त- गर्भे द्वेकुशतरुणे । (प्रोक्षणीपात्र वारण द्वादशांगुलदीर्घ करतल सम्मितखात पद्मपत्राकृति कमलमुकुलाकृतिवा । आज्यस्थाली तैजसी मृण्मयीवा द्वादशांगुल विशाला प्रादेशोच्चा, तथैव चरुस्थाली, सम्मार्ग कुशात्रय, उपयमनकुशास्त्रिप्रभृतय पञ्चसप्तवा । समिधस्तिस्र

पालाशय' प्रादेशमात्र्य , स्रुव' खादिरोहस्तमत्रोंगुष्ट पर्वमात्रखात परिणाह वर्तुल पुष्कर: । आज्यंगव्यम् चरुश्चेद्व्रीहि तण्डुला' । षट्पञ्चाशदधिक मुष्टिशतद्वयपरिमितं पराध्यं बहु-भोक्तृपुरुषाहार परिमितमपराध्यं तण्डुलाद्यन्न पूर्णपात्रं दक्षिणावरोधा यथाशक्ति हिरण्यादि द्रव्यम् । (पवित्रेकृत्वा १२) प्रथमं त्रिभि. कुशतरुणैरमत. प्रादेशमात्रं विहाय, द्वेकुशत-रुणे अछिद्य, कुशपवित्र प्रमाणं कुशकण्डिका भाष्ये—ब्रह्मयज्ञे गोकर्ण प्रमाणौद्वौ दर्भौ, तर्पणे— हस्त प्रमाणास्त्रयोदर्भा' ॥ गोकर्णप्रमाणम्—प्रादेशतालगोकर्णास्तर्जन्या-दियुतेतते । अंगुष्ठे मकनिष्ठस्या द्वितस्तिद्वादशांगुल इत्यमर' ॥ मार्कण्डेयः—चतुर्भिर्दर्भ पिंजूलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम् । एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्णे वर्णे यथाक्रमम् ॥ सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमन क्रियाम ॥ नोच्छिष्टं तत्पवित्रंतु भुक्तोच्छिष्टंतु वर्जयेत ॥ बौधायन:—हस्तयोरु-भयो र्द्वौद्वावासनेऽपि तथैवच । शेषं कर्मबोधिनी परिभाषायां द्रष्टव्य ॥ प्रयोगपारिजाते—उत्तरीयं योगपट्टं तर्जन्याञ्च पवित्रकम् ॥ नजीवित्पितृकैर्धार्य ज्येष्ठोवाविद्यतेयदि ॥ (प्रोक्षणी: संस्कृत्य । १३) प्रोक्षणीपात्रं वारणं वारण काष्ठ निर्मितं द्वादशांगुल दीर्घ करतल समित खातं कमल मुकुलाकृतिर्भवति, इतिहरिर ॥ यज्ञपार्श्व संग्रह कारिकायाम्—वैकंकतं पाणिमात्रं प्रोक्षणी पात्रमुच्यते । हंसमुख प्रसेकं च त्वग्विलं चतुरंगुलं ॥ कंकतानि त्रिद-न्तीनि वारणानिभवन्तिहि ॥ प्रणीतोदकमासिच्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणी पात्रे निधाय दक्षिण हस्तेन प्रोक्षणी पात्र मुत्थाप्य सव्यंकृत्वा तदुदकंदक्षिण नामिकागुष्ठाभ्यां सपवित्राभ्यामुच्चाल्य प्रणीतोदकेन सम्प्रोक्ष्य (अर्थवत्प्रोक्ष्य, १४) अर्थवन्ति प्रयोजनवन्ति, आज्यस्थाल्यादीनि पूर्णपात्रपर्यन्तानि प्रोक्षण्यद्भिरासादनक्रमेणैकैकश प्रोक्ष्य,, असञ्चरे प्रणीताग्न्योरन्तराले प्रोक्षणीपात्र निदध्यात । अग्निगृह्येऽपि—निदध्यात्प्रोक्षणी पात्रं सप-वित्रमसञ्चरे । यदन्तरं प्रणीताग्न्योरसञ्चरस्तु सस्मृत ॥ (निरुप्याज्य. १५) आसादित माज्यं आज्यस्थाल्यां पश्चादग्नेर्निहितायां प्रक्षिप्य । आज्यंगव्यमिति हरिहरादय: । कात्यायन:—घृतमाज्यं लिंगादिति, तच्च गव्यमिति । महीनागवां पयाऽग्नि इतिमन्त्र लिंगात ॥ गव्य घृताऽभावे प्रतिनिधिमाह मण्डनमिश्र.—गवाज्या भावतश्छागी माहिष्यादेर्घृतंक्रमात । तदभावे गवादीनां क्रमाद्दुग्धं विधीयते । तदभावे दधिग्राह्य मलाभेतैलमिष्यते । बौधाय न:—घृताभावेतु तैलस्यात्तदभावेतु जार्तिलम् । तदभावे च कौसुंभन्तदभावे च सार्षपम् ॥ आज्यस्थाली लक्षणम्—आज्यस्थालीतु कर्तव्या तैजसद्रव्य सम्भवा । माहेयीवापिकर्तव्या नित्यं सर्वाग्निकर्मसु ॥ आज्यस्थाल्या प्रमाणं च यथाकामन्तु कारयेत ॥ द्वादशांगुल विस्तीर्णा प्रादेशोच्चाथवा शुभा ॥ चरुस्थाली लक्षणम् आज्यस्थाली समानैव चरुस्थाली प्रशस्यते । यज्ञपार्श्वे—मृण्मयोदुम्बरीवापी चरुस्थाली प्रशस्यते । तीर्यगूर्ध्वं समिन्मात्रा दृढानातिं

बृहन्मुखी। तच्च हस्तघटित स्थाल्यादि सलुदेयकम नरश्नेनारस्थाल्यां प्रणीतादक मासिच्य आसादितान्ताण्डुलान्प्रक्षिप्य ॥(**अधिश्रित्य च १६**) तत्राज्य प्रज्ञाधिश्रयति, तदुत्तरत स्वयमाचार्यश्चरमत्र युगपदासादाय्य (**पर्यग्निकुर्यात् १७**) ज्वलदुल्मुक समान्ता दाज्य चर्वोरपर्यन्तमग्नौ प्रदक्षिणक्रमेण भ्रामयत। (**स्रुवं प्रतप्य सम्मृज्याभ्युदय पुन प्रतप्य निदध्यात्। १८**) दक्षिणहस्तेन स्रुवमादाय प्राऽञ्चमधामुखमग्नौ तापयित्वा सव्यपाणौ-कृत्वा दक्षिणेन सम्मार्गाग्रै कुशैर्मूलतोऽग्रपर्यन्त मूलैरग्रमारभ्य मूलपर्यन्त मधस्तान्मूलपर्यन्तं समृज्य, प्रणीतोदके नासिञ्च्य, पुन पूर्ववत्प्रतप्य। **आश्वलायन** —तान्कुशान्कुशसम्मार्गा न्स्थापितानग्नौ क्षिपेदिति। **व्यास**.— कर्मार्थे दक्षिणे भाग आनाय स्थापयत्तुतौस्रुक्स्रुवाविति। **स्रुवलक्षणादेषु** —अगुष्ठपर्वतृत्ता स्यातरत्निमात्र स्रुवाभवत। **कात्यीय**— खादिरा बाहु मानस्तु जुहूस्रुक् सशक स्रुव। अरत्नि मानो हसास्यो वर्तुलोंगुष्ठ पवबत। अर्धपर्वप्रणा-ल्याच युक्तोनासाकृतिर्भवेत। **वायवीये**—स्रुवस्रुचौ तैजसौग्राह्यौ नकास्यायस सैसकौ। यज्ञदारुमयौवापि ताम्रिकौ शिल्पि सम्मितौ। **न्यूनहोमे चमिष्ट** —पालाशपत्रे निश्छिद्रे रुचिरेस्रुवस्रुचौमतौ। प्रकुर्याद्वाऽश्वत्थपत्रे सक्षिप्त होमकर्मणि ॥ **स्रुवधारणविधानं मात्स्य**—मूले हानिकर प्रोक्त मध्यशोककरतथा। अग्रे व्याधि कर प्रोक्त स्रुवधारयते कथम्। **तद्धारण प्रकार** —चतुरगुल परित्यज्य अग्रेचैव द्विरष्टकम्। चतुरगुल च तन्मध्य धारयन्छ्रुवमुद्रया। हीयते यजमानो वै स्रुवमूलस्य दर्शनात। तस्मात्सगोपयत्मूल होमकाले स्रुवस्तु ॥ (**आज्यमुद्वास्य १९**) आज्यमुत्थाप्यचरो पूर्वेणानीत्वा, अग्नेरुत्तरत स्थापयित्वा चरुमुत्थाप्य आज्यस्य पश्चिमतानीत्वा आज्यस्योत्तरत स्थापयेत्। आज्य मग्न पश्चादानीय चरुमानीय आज्यस्योत्तरतनिधाय एवमिन्धतुरा दीनन्यामपि हवींषि उद्वासय, दधिश्रिताना पूर्वणोद्वासिताना पश्चिमत हविषउद्वास्या नयनमिति याज्ञिकसम्प्रदा-यात। (**उत्पूय २०**) पूर्ववत्पवित्राभ्या माज्यमुत्क्षिप्य पवित्रे प्रणीतासु निधाय। (**अवेक्ष्य २१**) अवलोक्याज्य तस्मादपद्रव्य निरसनम्। (**प्रोक्षणीश्च पूर्ववत् २२**) पूर्ववत्पवित्राभ्या माज्यमुत्क्षिप्य पवित्रे प्रणीतासु निधाय (**उपयमनान्कुशानादाय २३**) दक्षिणपाणिना गृहीत्वा सव्यनिधाय (**समिधोऽभ्याधाय २४**) उत्तिष्ठन्नि स्रोसमिध अग्नौ प्रक्षिप्य। **समिल्लक्षणमाह कात्यायन** —प्रागग्रा समिधो देयस्ताश्च योगेषु पातिता। शान्त्यर्थेषु प्रशस्तार्द्रा विपरीता जिघांसति ॥ होतव्यामधु—सर्पिभ्यांदध्नाक्षीरेणसयुता। प्रादेशमात्रा समिधा ग्राह्य सर्वत्रचैवया ॥ **स्मृत्यर्थसारे**—पाला-शखदिराश्वत्थ शम्युदुम्बरजासमित। अपामार्गोऽर्कदूर्वाश्च कुशाश्चेतयरेविदु ॥ सस्वचा समिध कार्या ऋजुरलक्षणा समास्तथा। शस्तादशांगुलास्तास्तुद्वादशांगुलिकास्तथा ॥ आर्द्रा

पक्वा समन्त्रेदा स्तर्जन्यंगुलिवर्त्तुला । अपाटिताथाद्विशाखा कृमिदोषविवर्जिता ईदृशाहोम-येत्प्राज्ञ प्राप्नोतिविपुलांश्रियम् । **अत्राह्यसमिधोनायुपुराणे** विशीर्णाविदलाह्रस्वा वक्राश्च सुशिरा कृशा दीर्घास्थूलाघुणैर्दुष्टा कर्मसिद्धिविनाशका ॥ **अत्राग्न्युक्तास्तत्रैव**—निवासा-येचकीटानालताभिवेष्टिताश्चये । अयज्ञियागर्हिताश्च वल्मीकश्चसमावृता ॥ शकुनीनांनिवासाश्च ससानेयमहीरुहा । अन्याश्चैवंविधास्सर्वा स्त्वज्ञियांश्चविवर्जयेत ॥ (**पर्युक्ष्यजुहुयात् २४**) प्रोक्षण्युदकेनसपवित्रेण दक्षिणचुलकेनगृहीतेन, अग्निमीशानादि उदगपवर्गपरिषिच्यजुहुयात । आघारादीन्सम्यगवधारणार्थं पात्रप्रणीताग्न्योर्मध्येनिदध्यात । **अग्नेरुपस्थानम्**—अग्निप्रज्व-लितवन्दे ० ॥ पाद्यगन्धादिभिश्चैव कुण्डमध्येप्रपूजयत ।ॐ अग्नयेजातवेदसेनम , इतिमन्त्रेण । **देवीपुराणे**—इदानीमेवतत्रैव स्वाहाशक्तिंप्रपूजयेत । मध्येषट्स्वपिकोणेषु हिरण्यागगना तथा । रक्ताकृष्णासुप्रभाच बहुरूपातिरक्तिका । पूजयेत्सप्तजिह्वास्ता केशरेष्वङ्गपूजनम् । दले षुपूजयेन्मूर्त्तीं शक्तिस्वस्तिकधारिणी जातवेदा सप्तजिह्वो हव्यवाहनएवच । अश्वोदरज मत्रोन्य पुनर्वैश्वानराह्वय । ताराग्नयश्चदाद्या स्युर्नत्यन्तावन्हिमूर्त्तय । ॐ अग्नयेजातवेदसे-नम । इत्यादि प्रयोगऊह्य । **अग्निजिह्वानामानिपरशुरामकारिकायाम्**—हिरण्याकनकार क्ता कृष्णातदनुसुप्रभा । बहुरूपातिरिक्ताचवन्हिजिह्वाश्चसप्तवै ॥ **शारदातिलके**—कालीकराली च मनोजवाच सुलोहिताचैवसुधूम्रवर्णा । स्फुलिङ्गिनीविश्वरुचिस्तथैवलेलायमाना खलुसप्त-जिह्वाः । दक्षिणन्तुचतुर्जिह्वन्त्रिजिह्वमुत्तरमुख । **गृह्यसंग्रहे**—सप्तजिह्वाभवन्त्यता हुताशनमुखो द्भुता । याभिहव्यसदाश्नन्ति हुतसम्यक्द्विजोत्तमै । पावकस्यमुखाम्यदस्य युदुत्तपश्चयानिना । सप्तजिह्वाप्रमाणन्तु प्रादेशंपरिकीर्त्तितम् । प्रमाणचतुरस्रश्च वर्तुलमुखमण्डलम् ॥ **पुरातनपद्ध त्तौ**—करालीधूमिनीश्वेता लोहिताचातिलोहिता । सुवर्णापद्मरागाच सप्तैता परिकीर्तिता । करालींराक्षसाश्नन्ति धूमिनींमसुरास्तथा । श्वेतानागा समश्नन्ति पिशाचालोहितांतथा । अलो-हितागन्धर्वा सुवर्णांचयमास्तथा । पद्मरागांतथादेवा स्याताजिह्वाहुताशने । तस्यांतुहामये-न्नित्य सुसमिद्धे हुताशने । एताश्चोक्ता समासेन ज्ञातव्यास्तुद्विजोत्तमै ॥ **दत्ताभागवत**— तत स्रुक्स्रुवसंस्कारा वाज्यसंस्कारएवच । कृत्वाहोमतत कुर्यात्स्रुवेणादायवैघृतम् । ब्रह्मासन दक्षिणेतुहिरण्यगर्भमन्त्रत ॥ प्रणीतास्थापन कुर्यादापोहिष्ठेतिमन्त्रत । कयानश्चित्रमन्त्रेण प्रणीताद्भि प्रपूरयेत । प्रणीताग्न्योरन्तराल स्थापयत्प्रोक्षणींबुध पवित्रेस्थावैष्णव्या विति च छिन्देत्पवित्रके । गव्यमाज्यमसंस्कुर्या दिषेत्वेतेनमन्त्रत । त्रातारमिन्द्रमन्त्रेण प्रकुर्यात्स्रुवता पनम् । सवितुर्व प्रसवनकुर्यादुत्पवनस्रुन । अग्निपर्युक्षणकुर्या ध्द्वरसीतिचमन्त्रत । दक्षिणाद्-घृतभागास्तुन्दद्दक्षिणलोचने । जुहुयादग्नयस्वाहेत्य न्यवामतान्यत्त सोमायस्वाहेतिमध्यात् घृतमादायसत्तम् अग्नीषोमाभ्यांस्वाहेति मध्यनैहुनतत । सतारामिभ्यांरुनिभिर्जुहुयादथ

साधकः। जुहुयादग्निमन्त्रेण त्रिवारंतुततःपरम्। ततस्तुप्रणवेनैवा प्यष्टावष्टौघृताहुतिः। गर्भाधानादिसंस्कार कृतेतुजुहुयान्मुने। अग्निसंस्कारा:— गर्भाधानंपुन्सवनं सीमन्तोन्नयनंततः। जातकर्मनामकर्मा प्युपनिष्क्रमणंतथा। अन्नप्राशनंतथाचूडा व्रतबन्धस्तथैवच। महानाम्न्यंव्रतं पश्चात्तथैवोपनिषदंव्रतम्। गोदानोद्वाहकौप्रोक्ताः संस्काराः श्रुतिचोदिताः (एषएवविधिर्यत्रक्वचिद्धोमः २६) परिसमूहनादिपर्युक्षणपर्यन्तो विधिरेवनमन्त्रा, इतिसूत्रकारः यत्रयत्रक्वचन्लोके स्मार्त्तेवाग्नौहोमस्तत्रवेदितव्यः। परशुराम कारिकायाम्— आन्वाध्यदक्षिणंहोमं स्रुवेणजुहुयाद्घृतम्। स्वाहान्ते जुहुयाद्धोता स्वाहयासहवाहवि। देवीभागवते— स्वाहादेवी हविर्दाने प्रशस्तासर्वकर्मसु। दग्धुंनशक्तः प्रकृतिर्हुताशश्चत्वयाविना। त्वनामोच्चार्यमन्त्रान्ते योदास्यतिहविर्नरः। सुरेभ्यस्तत्प्राप्नुवन्तिसुराः सानन्दपूर्वकम्। दक्षिणाग्निर्गार्हपत्या हवनीयाक्रमेणच। ऋषयोमुनयश्चैवब्राह्मणाः क्षत्रियादयः। स्वाहामन्त्रंसमुच्चार्य हविर्दानंचचक्रिरे। स्वाहादेव्याःपूजनमप्युक्तंतत्रैव— सर्वयज्ञारम्भकाले शालग्रामेघटेथवा। स्वाहांसम्पूज्ययत्नेन यज्ञं कुर्यात्फलाप्तये। ध्यानञ्चसामवेदोक्तं स्तोत्रंपूजाविधानकम्। स्वाहां मन्त्राङ्गयुक्तांच मन्त्रसिद्धिस्वरूपिणीम्। सिद्धांचसिद्धिदांनृणां कर्मणांफलदांशुभाम्। इतिध्यात्वाचमूलेन दत्वापाद्यादिकंनरः ॐ ह्रींश्रींवन्हिजायायै देव्यैस्वाहान्त्यनेनच। मन्त्रेणोंकारपूतेन स्वाहान्तेनविचक्षणः। स्वाहावसाने जुहुयाद्ध्यायन्वैमन्त्रदेवताम्। मन्त्रोच्चारणाय याज्ञवल्क्यः— वर्णः स्पष्टतर कार्योनासा श्वासावधीतिवा। मुखश्वासावधिश्चयत्रभिषेकार्चनेषुच॥ अतः परमाचार्येण द्वितीयकण्डिकायां आधाननिरूपणंकृतं परञ्चसर्वत्रहोमपद्धतौअन्वारब्धहोमविधानापत्ते प्रथमकाण्डपञ्चमीकण्डिकायारपकर्पहरिहरादेरुक्तप्रमाणेनकरोमितच— अत्रवैवाहिकहोमप्रसंगेन सर्वकर्मसाधारणीपरिभाषां करोत्याचार्य। (अन्वारब्धआघारावाज्यभागौ महाव्याहृतय सर्वप्रायश्चित्तं प्राजापत्यँ स्विष्टकृच्च॥ ३॥ एतन्नित्य सर्वत्र॥ ४॥) ब्रह्मणादक्षिणेवाही दक्षिणहस्तेनअन्वारब्धे कर्त्तरिआधारसंज्ञकेआज्याहुती— यथामनसाप्रजापतयेस्वाहा— इदंप्रजापतये, मनसात्यागमपि— इतिहरिहर। होमेत्यागस्याङ्ग त्वात्सकृत,, यथासहस्रादिलक्षादि अनेककर्तृकहोमे, प्रत्याहुतित्यागस्य कर्तुमशक्यत्वा दितिजैमिनि॥ दानचन्द्रिकायान्तु— दानोत्तरं नममेतिकीर्त्तयेत॥ इतिप्रमाणाभ्यांसाधारणहोमे प्रायश्चित्तसंज्ञके प्रतिस्वाहान्तेनममेत्युच्चारणे कर्त्तव्येकिमपिक्षतिनास्तीतिदिक्। ॐ इन्द्रायस्वाहा, इदमिन्द्राय,, आज्यभागसंज्ञको होमौयथा अग्नयेस्वाहा इदमग्नये,, सोमायस्वाहा, इदंसोमाय। महाव्याहृतयोभूराद्योतिस्रोयथा। भूः स्वाहा इदमग्नये— इदंभूर्वा। भुवः स्वाहा-इदंवायवेभुर्विवा, स्वः स्वाहाइदंसूर्याय-स्वइतिवा। सर्वप्रायश्चित्तसंज्ञकाः पञ्चाहूतयः— यथा— त्वन्नो ऽ अग्नइत्यादिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा. सत्वनोऽअग्ने-मृडयोनऽएधिस्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां द्वाभ्यांत्यागः। इति पञ्चानांहोमः-आद्यां प्रजापति-

देवताकोहोम' प्राजापत्यशब्देनोच्यते। स्विष्टकृच्छब्देनस्विष्टकृद्धोमउच्यते। अयंचहोमः उत्तराःर्द्धंभवति, यथाअग्नयेस्विष्टकृते, चकारात्समुच्चयः एतदाधारादिस्विष्टकृदवसाने, सर्वत्रयज्ञेषु, होमात्मकेषु कर्मसुनित्यं॥ यत्रहोमाभावस्तत्रनास्ति, अन्तेविहितस्यस्विष्टकृद्धोमस्य कर्मविशेषे स्थानान्तरमाह। **प्राङ्महाव्याहृतिभ्य' स्विष्टकृदन्यच्चेदाज्याद्धविः॥** यत्राज्यातिरिक्तं हविरस्तितत्रमहाव्याहृति होमात्पूर्वमनुष्ठेय'। **होमेउत्तानहस्तप्रमाणम्**—उत्तानेनतुः हस्तेन अंगुष्ठा ग्रेण पीडितम्। संहितांगुलि पाणिस्तु वाग्यतो जुहुयाद्धविः॥ **होमान्ते पवित्र प्रतिपत्तिः**—सर्वकर्मसु होमान्ते पवित्राभ्यां मार्जनंकृत्वा तत अग्नौ ॐ स्वाहा, इति प्रक्षिपयेत॥ परिस्तरण बर्हीणामपि होमोविधीयते। प्रणीताश्च विमोकः पश्चिमे विहितः। एतेपदार्थाः भाष्यकारमते गृह्यस्थाली पाक कर्मसु नभवति। परंच पद्धति काराणां पद्धत्युक्तत्वा दनुष्ठीयन्ते। अमन्त्रत्वाच्छन्दोगपरिशिष्टे—आज्यंद्रव्य मनादेशे जुहोतिषु विधीयते। मन्त्रस्य देवतायाश्च प्रजापतिरितिस्थितिः। **होमद्रव्याभावे**—घृतंग्राह्यं॥ मन्त्रानुक्तौ प्रजापति देवताकस्य मन्त्रो महाव्याहृति मन्त्रो ग्राह्योभवति। देवतायाऽनुक्तौ प्रजापतिर्ग्राह्यः। यथा यत्रमन्त्रा न विद्यन्ते व्याहृतीस्तत्रयो जयेत। मन्त्राणामेवचोद्देशेमन्त्रैः कर्मसमारभेत॥ भूरादयो व्याहृतयो वेदेभ्योनि'सृतापुरा। महत्वं व्याहृतीनां च प्राप्तास्ते नैवकर्मणा। ॐकारजननात्तासां महत्त्वं प्रतिभाष्यते। व्याप्ताच व्याहृतित्वं च तेनत्रैविद्यतां ययुः ततः प्रणीता विमोकानन्तरम्॥ **पूर्णपात्रलक्षण' मेरुतन्त्रे**—द्वात्रिंशत्पलमानेन निर्मितं ताम्रपात्रकम्। तण्डुलैस्ततसमापूर्य सहिरण्यं सच्छिदम्। **पूर्णपात्र दानमाह: कात्यायन**'—ब्रह्मणेदक्षिणा देया यायत्र परिकीर्तिता। कर्मान्तेऽनुच्यमानायां पूर्णपात्रादिका भवेत्। विदध्याद्धौत्रमन्यश्चेद्दक्षिणार्धं हरोभवेत। स्वयंचेदुभयं कुर्यादन्यस्मै प्रतिपादयेत्। **मूर्खं ब्राह्मणाय दाननिषेधः**—अहमस्मै ददानीति एवमाभाष्य दीयते। नैनापृष्ट्वा ददतः पात्रेऽपिफलमस्तिहि। दूरस्थानपिद्वाभ्यां च प्रदायमन साधनम्। इतरेभ्यस्ततोदद्या देपदान विधिस्मृत। सन्निकृष्ट मधीयानं ब्राह्मणं यो व्यति क्रमेत्। यद्ददाति तमुल्लंघ्य ततः स्तेयेन युज्यते॥ यस्त्वेकगृहे मूर्खो दूरस्थश्च गुणान्वितः। गुणान्विताय दातव्यं नास्ति मूर्खे व्यतिक्रम'। ब्राह्मणाति क्रमोनास्ति विप्रे वेदविवर्जिते। **ततः पूर्णाहुतिः**—ततः पूर्णाहुतिं कृत्वा सर्व तन्त्र समन्वितां। गांदद्यात्यज्ञ वास्त्वन्ते ब्रह्मणेवाससी तथा। **शौनकः**—अथपूर्णाहुतिं दद्याद्गन्धपुष्प फलान्विताम्। सावतामूर्ध्वकायश्च समपाद्यक्र्दिमुखः। **गोभिल गृह्ये**—पूर्णाहुतिं च मूर्द्धानं दिव इत्यभिपातयेत। तत्रैव—मतबन्धे निवाहे च शालायां चौल कर्मणि। गर्भाधानादि संस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत॥ पूर्णाहुत्यन्तरं अग्नौ अविच्छिन्नाघृतधारामाचरन्ति—ततो होमावशिष्टेन घृतेनापूर्णनैरुभम्। निधाय पुष्पं

संस्थाप्यमित्युत्तराधोमुखेनताम् । सदर्भेण समाच्छाद्य मूलेना जलिनास्थित । यौपर्वर्मन्त्रेन जुहुयाद्धारां जयसमन्विताम् । वेन्ति—ॐ वसुभ्य स्वाहा, इति मन्त्रेण वसोर्धारा मान्त्न्ति ॥ त्र्यायुष करणं गृह्यमंभहे—ततोऽनामिकया स्रुवाद्विन्दुं सघृतभस्मना । ग्रीवाम-थोललाटे च त्र्यायुषेति पदे क्रमात । होमाग्नेः प्रमाणं ब्रह्मपुराणे—क्षुत्तृड्भ्यां क्रोध संयुक्ता हीन मन्त्रो जुहोतिय. । अप्रबुद्धे सधूमेवासोऽद्धस्या दग्ध जन्मनि । स्वल्पेरूक्षेस्फुलिंगे वामावर्त्ते भयानके । आर्द्रकाष्ठेश्च सम्पूर्णे फूत्कारवतिपावके । कृष्णार्चिषि सदुर्गन्धे तथा-लिहति मेदिनीम् । आहुतिर्जुहुयाद्यस्तु तस्य नाशो भवध्रुवम् । विशेषो ग्रहयाग परि-भाषायां द्रष्टव्य: ॥

॥ इति कुशकण्डिका सूत्र व्याख्या ॥

॥ अथ होम पद्धतिः ॥

अथातोऽग्नि स्थापन पद्धतिंसूत्रोक्तविधानेन वक्ष्ये—तत्रादौकर्त्ता शुद्धेधौते वाससीपरिधाय, दीपंप्रज्वाल्यसंपूज्यचाचम्य प्राणायामं विधाय, पूर्वोक्त परिभाषानुसारेण स्थंडिलं कुंडंवा यथासंभवं विस्तारपूर्वकं प्रादेशमात्रादारभ्य चतुर्हस्तायतात्मकं होमानुसारंनिर्माय । वेद्याः पश्चिमतः पूर्वाभिमुखःसन्नग्निं स्थापन कर्मसमारभेत् । तत्रादौ गणेशंस्मृत्वा होमेशानभागे अष्टदल कमलोपरि वरुणपूजाविधिना कलशं संस्थाप्यसंपूज्यच । तत्रपंचाशत्कुशनिर्मितं ब्रह्माणं दक्षिणाभिमुखं, ॐ ब्रह्मजज्ञान मिति मंत्रेण संस्थाप्य प्रतिष्ठाप्य संपूज्यच, होमसामग्रीं संपाद्य संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्या मुकगोत्रप्रवरोऽहं करिष्य माणामुक कर्मणिस्वशाखोक्त पद्धत्यानुसारेणाग्निस्थापन कर्म करिष्ये-तत्रादौत्रिभिः कुशैः स्थंडिलंकुण्डंवावारत्रयं परिसमुह्य†

†-टि० अग्निगृहे—कृमिकीट पतंगाद्या भ्रमन्ति वसुधातले । तेषां संरक्षणार्था य कुर्यात्परि समूहनम् ॥

गोमयोदकेन त्रिरुपलिप्य,§ ततः स्वादिरेण स्वङ्गाकृतिनास्फेनतद भावे स्रुवमूलेनवा, प्रागग्रा उदक्संस्थाः स्थंडिलप्रमाणा स्तिस्रो रेखांकृत्वा, अनामिकांगुष्ठाभ्यां यथोल्लिखिताभ्यो लेखाभ्यः पां सूनुद्धृत्येशानकोणे क्षिप्त्वा*, मणिकाद्भिस्तदभावे कमंडलु जलेनाभ्युदय, इतिपंचभूसंस्कारान्कृत्वा, पीठंपूजयेत्–पुष्पाक्षतैः– ॐ रत्नमंदिरायनमः, ॐ चतुर्द्वारमंडलायनमः, ॐ रत्नवेदिकायैनमः, ॐ श्वेतछत्रायनमः, ॐ रत्नसिंहासनायनमः, ॐ धर्मायनमः, ॐ ज्ञानायनमः, ॐ वैराग्यायनमः, ॐ ऐश्वर्यायनमः, ॐ अधर्मायनमः, ॐ अज्ञानायनमः, ॐ अवैराग्यायनमः, ॐ अनैश्वर्यायनमः, (गृह्यसूत्रातिरिक्तोयंविधिः) ततस्ताम्रादिपात्रे कर्मसाधनभूतं पात्रान्तरेणपिहितं लौकिकंस्मार्त्त श्रौतंवाग्निं स्वाभिमुखं स्थापयित्वा, अग्नि संस्कारंकुर्यात्—ॐ मयिगृह्णाम्यग्नेति मंत्रस्यावत्सारऋषिः ककुप्छन्दोऽग्निर्देवताग्निग्रहणे विनियोगः ॐ मयिगृह्णाम्यग्नेऽअग्निं ६० रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय । मासुदेवताः सचन्ताम् ॥ इतिग्रहणम् ॥ ॐ गर्भइति विरूपाक्षऋषि रुष्णिक्छन्दोऽग्निर्देवता गर्भाधाने वि० ॐ गर्भोऽअस्योषधीनां गर्भोव्वनस्पतीनां गर्भोविश्वस्य भूतस्याग्निर्गर्भोऽअपामसि । ॐ विवस्वन्निति गृत्समद ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता पुंसवने वि० । ॐ विवस्वन्नादित्यैपते सोमपीथ स्तस्मिन्मत्स्व अदस्मै नरोवचसे दधातन । यदाशीर्दा दम्पतीवाममश्नुतः । पुमान्पुत्रो जायते विन्दते वस्वधाविश्वाहा रपऽएधते गृहे । ॐ कस्त्वा सत्येति वामदेव ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवतासीमन्तोन्नयने वि० । ॐ कस्त्वासत्यो मदानाम ६० हिष्ठोमत्सदंधसः ।

---

§ टि० पुरा इन्द्रेण वज्रेण हतो वृत्रोमहासुर । देवी भागवत-मधुकैट भयोर्मेद संयोगान्मदिनीस्मृता । तस्मादसा गधर्वी तदर्थ मुपलेपनम् ॥

* टि० आकाश गामिनो येन राक्षसा यदघातवा । तेभ्य संरक्षणार्थाय उद्धर्त चैव कार्यत् ॥

,हृद्याचि दारुजेयसुः ॥ ३० अजीजन इति अरुणत्रसु दस्युर्ऋषिरनु-ष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता जातकर्मणि विनियोगः ॥ ३० अजीजनोहि पवमानस्य सूर्य विधारेशक्मनापयः । गोर्जीरयार ह० हमाणा पुरन्ध्या ॥ ३० यदापीति भृगुर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता नाम करणे विनियोगः । ३० यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितोधयन् । एतत्तदग्नेऽअनृणोभवाम्यहं तौपितरौमया संपृचस्थसम्माभद्रेण पृङ्क्त विपृचस्थ विम) पाप्मना पृङ्क्तः ॥ ३० पपेति तापसऋषि निचृत्साम्नी पंक्तिश्छन्दो लिंगोक्तादेवता निष्क्रमणे विनियोगः । ३० पूषापंचाक्षरेण पंचदिशउदजयत्ता ऽ उज्जेष ह० सवितापडक्ष रेणषड्तृनुदजयत्तानुज्जेषंमरुतःसप्ताक्षरेणगायत्री मुदजयत्तामुज्जे षम् । ३०अन्नपत इतिनाभानेदिष्ट ऋषिर्बृहतीछन्दोऽग्निर्देवताऽन्नप्रा शनेविनियोगः३०अन्नपतेऽन्नस्यनोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः।प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्जन्नोधेहि द्विपदेचतुष्पदे ॥ ३० अग्नइतिभरद्वाजऋषि-र्गायत्रीन्दोऽग्निर्देवता चौलकरणे वि० । ३० अग्नऽआयाहि वीतयेगृणानो हव्यदातये । निहोतासत्सिबर्हिषि । ॐ भद्रंकर्णे-भिरिति गौतमऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता कर्णवेधेविनियोगः । ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेम हिदेवहितंयदायुः ।३० अग्निरेकाक्षरे-णेति तापसऋषि निचृदार्षीगायत्रीछन्दो लिगोक्तादेवताः उपनयने वि० ॐ अग्निरेकाक्षरण प्राणमुदजत्त मुज्जेषमश्विनौ । द्व्यक्षरेण द्विपदोमनुष्या नुदजयतांता नुज्जेषंविष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रींल्लोका नुदजयत्ता नुज्जेष ह० सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदे पशूनुदजयत्ता नुज्जेषम् । ३० अश्वस्येति गर्गऋषि रनुष्टुप्छन्दोऽ-ग्निर्देवता वेदारम्भे विनियोगः । ॐ अश्वस्यात्रस्यसम्पतिः पुत्राणामभिसंपदे । आयुर्बलश्रिया ददन्त्वासानऽएहिकन्धति ।३० व्रतमिति आंगिरसऋषि रनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता समावर्त्तने विनि-योगः । ३० व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पति र्यज्ञियः । दैवीन्धियं मनामहेसुमृडी कामभिष्टये वर्चोधायज्ञवाहस ह०

सुतीर्थानोऽअसद्वसे। येदेवामनोजाता मनोयुजोदक्ष क्रतवस्तेनो वन्तुतेनः पान्तुतेभ्यः। ३० गावमितिपुरुमीढा अजमीढाऋषि गायत्रीछन्दोः गावोदेवता गोदाने विनियोगः। ३० गावऽउपा-वतावतम्मही यज्ञस्यरप्सुदा। उभाकर्णा हिरण्यया। ३० भग-इति वसिष्ठऋषि त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवता परिणये विनियोगः। ३० भगएवभगवां २ँऽ।। अस्तुदेवा स्तेनवयं भगवन्तः स्याम।। तन्त्वाभगसर्वइज्जो हवीतिसनोभग पुरएतामवेह। ३० ऋतावा-नमिति प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छदोऽग्नि देवता चतुर्थीकरणे वि० ३० ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिष्मति अस्रङ्वम्र्ममीमहे। आवाहनम्—ॐ उपयाम गृहीतोसीति वैखानसऋषिः सर्वेषां मंत्राणांजगती भुरिगार्षी गायत्रीछन्दांसि सोमाग्नीदेवते अग्न्यावाहने विनियोगः। ॐ उपायमगृहीतोस्यग्नयेत्वा वर्चसे एषतेयोनि रग्नयेत्वावर्चसेऽ अग्नेवर्चस्विन्वर्चस्वांस्त्वं देवेष्वसि वर्च्चस्वानहं मनुष्येषुभूयासम्।। ३० अग्निंदूतमिति भारद्वाज ऋषि गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता स्थापने विनियोगः। ॐ अग्निं-दूतंपुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे। देवां २ँऽ।। आसादयादिह, इति संस्कार्यमग्निं वेद्यांकुंडे स्थापयेत, तत्पात्रेऽक्षत पुष्पाणिक्षिप्त्वा, ३० भूर्भुवः स्वः भो अग्नेइहागच्छेहतिष्ठ इत्यावाह्य—३० एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेनयज्ञमवतेन यज्ञपतिं तेनमामव। मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमंत्वनो त्वरिष्टंयज्ञ ३० समिमंदधातु। विश्वेदेवासऽ इहमादयंन्तामोंप्रतिष्ठ इति प्रतिष्ठाप्य, तत अग्नेरुत्तरत आचार्य ब्रह्मणो वरणार्थं मास-नद्वयं कुशैः कल्पयित्वा तत्रादौ आचार्य माहूयवृहयज्ञादौ पाद्या-चमनीयविष्टरमधुमर्क पूर्वकमाचार्य ब्रह्माणांच सम्पूज्य, वरण-सामग्रीं संपूज्य हस्तेधृत्वा संकल्पं कुर्यात् अद्येत्यादि संकीर्त्या मुकोऽहं करिष्यमाणो ऽमुकहोम कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैरमुक शर्माणं ब्राह्मणमाचार्यं कर्मकर्त्तृत्वां वृणे,, वरणद्रव्यं तस्मैदत्वा वृतोऽस्मि, प्रार्थयेत्—आचार्यस्तुयथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।

तथा त्वंममयज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भवसुव्रत । कर्मकुरु करवाणीति प्रत्युक्तिः, ततो ब्रह्माणमपि सम्पूज्यासनेऽउपवेशयित्वा संकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकोऽहं करिष्यमाणा मुकहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्मकर्त्तुं मेभिर्वरण द्रव्यैरमुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेनत्वां वृणे, वृतोऽस्मि । प्रार्थयेत्—यथा चतुर्मुखो ब्रह्मासर्व वेदधरोविभुः । तथात्वं ममयज्ञेऽस्मि न्ब्रह्माभव द्विजोत्तम, कर्म कुरु करवाणीति प्रत्युक्तिः । इति वरणं कृत्वाऽग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मोपवेशनार्थं वारणपीठं कुशैराच्छाद्य, अग्नेः प्रदक्षिणक्रमेण, धृतं ब्रह्माणं तत्रोपवेशयित्वा, आचार्यासनमग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि कुशैराच्छाद्य तत्राचार्य मुपविशेत् । ततो ऽग्नेरुत्तरः पश्चिमभागे एकासनं पूर्वभागे द्वितीयासनं प्रागग्रैस्त्रिभिस्त्रिभिःकुशैःकल्पयित्वा प्रणीतापात्रं दक्षिण हस्तेनादाय सव्यहस्ते धृत्वा, दक्षिण हस्तस्थ पात्रजलेनापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणो मुखमवलोक्य पश्चिमासने निधायदक्षिण हस्तेनालभ्य पूर्वासने निदध्यात् । ततः पूर्वादिदिक्षु प्रागग्रैरुद गग्रैश्चकुशैः परिस्तरणं कुर्यात्❀ दक्षिणहस्तेकुशानादाय आग्नेयादीशानान्तं प्रागग्रैरुद गग्रैश्च, ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्त मुदगग्रैः, पश्चाद्दक्षिणत उत्तरपर्यन्तोदगग्रैः कुशैराच्छाद्य, ततोर्थवन्तिवस्तूनि अंगुलत्रयविस्तारेणा सादनीयानि, पश्चिमतउत्तरस्यां—पवित्रछेदनानित्रीणि कुशतरुणानि, द्वेपवित्रेसाग्रे अनन्तगर्भे, प्रोक्षणीपात्रं, आज्यस्थाली, चरुश्चेत् चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशाः पंच, उपयमनकुशास्त्रिप्रभृतयः त्रयोदशपर्यन्ता ग्राह्याः समिधस्तिस्रः पालाश्यः प्रादेशमात्र्यः स्रुवः गव्यमाज्यम्, चरुश्चेद्व्रीहितंडुलाः, पूर्णपात्रं षट्पंचाशदधिक मुष्टिशतद्वय परिमितं, वाबहुभोक्तुः पुरुषस्याहार परिमितंवा, कर्मोपयोगिनी

❀ टि-स्मृत्यन्तरे— यज्ञवास्तुनि मुष्टौच स्तम्भेदर्भ वटौस्तथा दर्भसंख्यान-विहिता विष्टरा स्तरणेषुच ॥ अग्निग्रहो-त्वन्हितम्तु परित्यज्य द्वादशांगुल-तोवहिः परिस्तरण दर्भास्तु षोडशा द्वादशापिवा ॥

दक्षिणा, वरोवा,, गोर्ब्राह्मणस्यवरः एतानिवस्तूनि अग्नेः प
त्प्राक्संस्थानि स्थापयेत् । तत्रपात्राणि प्राग्बिलान्युद गग्र
स्थापयेत् । तत्रादौ त्रिभिर्दर्भै र्द्वेपवित्रे प्रादेशमात्रे प्रच्छि
प्रोक्षणीपात्रं प्रणीता सन्निधौ संस्थाप्य, तत्रपात्रान्तरेण वारि
पूर्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय, दक्षिणहस्
प्रोक्षणीपात्रमुत्थाप्य सव्येहस्तेधृत्वा, उत्तानेन दक्षिणहस्
मध्यमानामिकांगुल्यो र्मध्यपर्वाभ्यां तज्जलमुच्छाल्य पवित्राभ
प्रणीतोदकेनप्रोक्षेदितिप्रोक्षणीं संस्कृत्य, ततः पवित्राभ्यां प्रये
जनवन्ति आज्यस्थाल्यादीनि पूर्णपात्र पर्यन्तान्यासादित वस्तू
प्रोक्षण्युदकेनैकैकशः संप्रोक्ष्य, प्रोक्षणीपात्र मसंचरे प्रणीताग्न्य
रंतरालेस्थापयेत्, तत आज्यस्थाल्यामाज्यंक्षिप्त्वा ऽग्नावारोपये
तत्राज्यं ब्रह्माधिश्रयति, चरुश्चेच्चरुस्थाल्यां चरुंघृततंडुलदुग्धा
दिकं प्रक्षिप्य, आज्यस्योत्तरतः स्वयमा चार्योवा ग्नावारोपयेत्
अर्द्धश्रिते चरावाज्येच ज्वलदुल्मुकंच ब्रह्माचार्यौ आज्यचर्वोरुप-
रितः समंताद्भ्रामयित्वातदुल्मुकम्वन्हौ प्रक्षिपेत, दक्षिणहस्तेन
परिभाषोक्त प्रकारेण शंखमुद्रया स्रुवमादायाधो मुखं प्रांचं प्रतप्य
सव्येपाणौकृत्वा पंचभिः सम्मार्जन कुशाग्रै मूलतोऽग्रपर्यन्तं कुश-
मूलैरधस्ता द्भागे अग्रमारभ्य मूलपर्यन्तं सम्मार्ज्य, तान्कुशानग्नौ
प्रक्षिपेत्, ततः पवित्राभ्यां प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्यपुनः प्रतप्य
हस्ताभ्यां सम्मार्ज्य स्वदक्षिणभागे कुशोपरि निदध्यात् । आज्य
मग्निल उत्तार्योत्तरतः स्थापयित्वा, अग्नेः पश्चा दानयेत् ।
(चरुसत्वे प्रथममाज्य मुत्थाप्य चरोः पूर्वेणनीत्वा ऽ ग्नेरुत्तरतः
स्थापयित्वा, चरुमुत्थाप्या ज्यस्यपश्चिमतोनीत्वा, आज्यस्योत्तर
तः स्थापयित्वा ऽऽज्यमग्नेः पश्चादानीय चरुंचानीय, आज्यस्यो
त्तरतो निदध्यात्) ततो ऽ गुष्ठानामिकाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा ऽऽ
ज्यमुत्पूय, अवेक्ष्यच, अपद्रव्य निरसनं कृत्वा पुनः पवित्राभ्यां
प्रोक्षण्युदकमुत्पूय तत्रैवपवित्रे निदध्यात् ॥ उपयमन कुशान्दक्षि-
णहस्तेनादाय वाम हस्तेकृत्वा, उत्तिष्ठन्घृताक्तास्तिस्रः समिधः,

आदाय तूष्णीमग्नौ प्रक्षिपेद्धानन्त्य—ॐ समिधाग्निमितिमंत्राणां आंगिरस ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता समिद्धोमे विनियोगः ॐ समिधाग्निन्दु वस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम, आस्मिन्हव्याजुहोतन ।१। सुसमिद्धाय शोचिषे घृतंतीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे ।२। तन्त्वा समिद्भिरंगिरोघृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोच यविष्ठ्य ।३। उपत्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तुहर्य्यतः। जुषस्व समिधोमम-स्वाहा ।४। ततोपविश्य प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रेण दक्षिणकुलकगृहीतेन, ईशानादि उत्तर पर्यन्त मग्निं संप्रोक्ष्य, पवित्रे प्रणीतायां निदध्यात ।* आज्य होमे संस्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्न्योर्मध्ये निदध्यात्- ततोयजमानः संकल्प पर्वकं द्रव्यदेवता भिध्यानं कुर्यात—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोहममुक होमकर्मणि, प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, अग्निं, वायुं, सूर्यं, अग्नीवरुणौ, अग्नीवरुणौ, अग्निं, वरुणं, सवितारं, विष्णुं, विश्वान्मरुत्स्वर्कान्, वरुणमदितिं, अग्निंप्रजापतिं, अग्निंस्विष्टकृतंच, आज्येनाहंयक्ष्ये, एतध्दोमद्रव्यं तत्तद्देवताभ्यो मयापरित्यक्तं ॐ तत्सद्यथा देवतमस्तु नममेत्येवं त्यागः कार्यः ॥ एतन्तेनि पुनः प्रतिष्ठाप्य अमुकनामाग्ने सुप्रतिष्ठितोवरदोभव ॥ ततोऽग्निं ध्यायेत्—ॐ तदेवाग्निस्तदा दित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः । तदेव शुक्रं तद्ब्रह्मताऽआपः सप्रजापतिः । एषोहदेवः प्रदिशोनुसर्वाः पूर्वोहजातःसऽउगर्भेऽअन्तः । सऽएवजातः सजनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः । ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्ण ममलं समिद्धं सर्वतोमुखम् ॥ सर्वतःपाणि पादश्च सर्वतोक्षिशिरोमुखः । विश्वरूपोमहानग्निः प्रणीतः सर्वे

---

* टि० पर्युक्ष्याग्निं प्रणीतासु निक्षिपे त्तत्पवित्रकम् । इति परशुराम कारिकायां ॥

+ टि० प्रोक्षणीपुत्यजेच्छेष संस्रवन्तु स्रुवाहुतेः । हस्ताहुते हविर्यस्य संतत्तस्य प्रकल्पयेत् ॥ एतच्चाज्यहोमे आज्यातिरिक्त होम द्रव्येतु पात्रान्तरे शेष प्रक्षेपः । यथा चतुर्थी कर्मादि विषयेषु ॥

कर्मसु । इतिध्यात्वा, परिभाषोक्त प्रमाणेन कार्यपरत्वेन—ॐ अमुक नामाग्नयेनमः, पाद्यादिभिः संपूज्य, रेखाः पूजयेत्—पूर्वरेखायाम्–ॐ ब्रह्मणेनमः, मध्यरेखायाम् ॐ विष्णवेनमः । तृतीयरेखायां–ॐ शिवायनमः ॥ इतिनाममंत्रैः संपूज्य, अग्नि जिन्हा पूजनं कुर्यात्–ॐ करालयैनमः । ॐ धूम्रिन्यैनमः । ॐ श्वेतायैनमः । ॐ लोहितायैनमः । ॐ महालोहितायैनमः ॥ ॐ सुवर्णायैनमः । ॐ पद्मरागायैनमः । इतिसप्तजिह्वाः संपूज्य, ॐ ह्रीं श्रीं वन्हि जायायैदेव्यैस्वाहा इति मंत्रेण पाद्यादिभिः स्वाहा शक्तिं च संपूज्य ॥ होम कुंडस्य चतुर्दिक्षु गोमय प्रतिमासु चतुर्वेदान्पूजयेत्–पूर्वे–ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्यदेव मृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ ॐ ऋग्वेदायनमः, इतिपाद्यादिभिः संपूज्यदक्षिणे–ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वा व्वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मणऽआप्यायध्वमघ्न्या ऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मावस्तेन ऽ ईशत माघश ꣳ सो ध्रुवा ऽ अस्मिन्गोपतौ स्यातबह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि । ॐ यजुर्वेदायनमः पूजयेत् ॥ पश्चिमे—ॐ अग्नऽआयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सिबर्हिषि ॥ ॐ सामवेदायनमः, पूजयेत् । उत्तरे—ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽआपोभवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ ॐ अथर्ववेदायनमः संपूज्य ॥ ततो दक्षिणं जान्वाच्य भूमौनिपातयित्वा ब्रह्मणान्वारब्धः (दक्षिणेनबाहौ कुशेन दक्षिणेनहस्तेन स्पृष्टः) आघाराबाज्य भागौच समिद्धतमेग्नौ जुहुयात् ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, मनसा प्रजापतिंध्यात्वा । इदं प्रजापतयेनमम ॥ (हुतशेष घृतं प्रणीताग्न्योर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रे क्षिपेदिति गदाधरः) एव मुत्त रत्र सर्वत्रबोध्यम, ॐ इंद्रायस्वाहा–इदमिन्द्रायनमम ॥ ॐ अग्नयेस्वाहा–इदमग्नयेनमम । ॐ सोमायस्वाहा–इदं सोमाय नमम ॥ इति हुत्वा ततः—(ब्रह्मणाऽनन्वारब्धः प्रकृतहोमंविधाय ब्रह्मणान्वारब्धो भूरादिहोमंकुर्यात्) ॐ भूरादिव्याहृतीनां प्रजापति र्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्यादेवताः

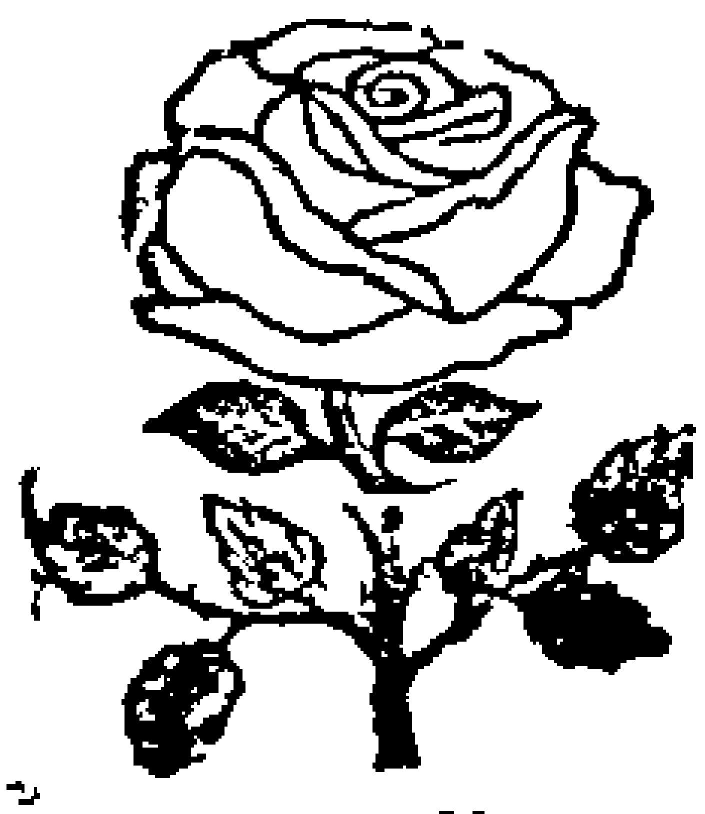
प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये नमम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवेनमम । ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्यायनमम, ॐ त्वन्नो अग्ने इति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नी वरुणौ देवते प्रायश्चित्त होमे विनियोगः—ॐ त्वन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा ऽसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा ॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ॐ सत्वन्नोऽअग्ने इति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नी वरुणौ देवते प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ सत्वन्नोऽ अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽ उपसोव्युष्टौ । अवयक्ष्वनो वरुण ऽ० रराणोवीहि मृडीक ऽ० सुहवोनऽएधि—स्वाहा—इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ॐ अयाश्चाग्ने इति प्रजापतिर्ऋषिर्विराट्छन्दोऽअग्निर्देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः ॥ ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्ति पाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि । अयानो यज्ञं वहास्यथानो धेहिभेषज ऽ स्वाहा । इदमग्नयेनमम ॥ ॐ येते शतमिति शुनः शेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणः सविता विष्णुर्विश्वे देवा मरुतः स्वर्काश्च देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः—ॐ येतेशतं वरुणं येसहस्रं यज्ञियाः पाशाः विततामहान्तः तेभिर्न्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वेमुंचन्तुमरुतः स्वर्काः स्वाहा—इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम ॥ ॐ उदुत्तममिति शुनः शेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्मदवाधमं विमध्यम ऽ श्रथाय । अथावयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम—स्वाहा—इदं वरुणायादित्याय नमम ॥—मनसा—ॐ प्रजापतये स्वाहा—इदं प्रजापतये नमम । ॐ अग्नये स्विष्टकृते—स्वाहा—इदमग्नये स्विष्टकृते नमम । (आज्यातिरिक्त होमद्रव्य सत्वे, स्विष्टकृद्धोमो महा व्याहृत्यादि होमात्प्रागेव कर्त्तव्यस्ततो व्याहृत्यादि प्राजापत्यान्तश्च) ततो बर्हिर्होमः—ॐ स्वाहा—इदं प्रजापतये

नमम: । ततः संस्रव प्राशनमवघ्राणं च कृत्वा द्विराचम्य, ब्रह्मणे पूर्णपात्र दानम्—अद्येत्यादि मयाकारितस्य ब्राह्मणद्वारा अमुक होम कर्मणः सांगफल प्राप्तये अपूर्ण पूरणार्थं च इदंसद्रव्यं पूर्णपात्रं ब्रह्मणेतुभ्य मह्ंसम्प्रददे-ॐ तत्सन्नमम ॥ दानवाक्यं पठेत्—ॐ अकन्कर्म कर्मकृतः सहवाचा मयोभुवा । देवेभ्यः कर्मकृत्वाऽस्तंमेत सचाभुवः । ततः स्रुक्स्रुवयोः सम्मार्जनं पूर्वोक्त प्रकारेणकृत्वा—ततो होमावशिष्टं घृतं स्रुवेणद्वादशवारं गृहीत्वा घृतपूर्णयास्रुचा पूर्णाहुतिंजुहुयात । तदभावेस्रुवेणैव पूर्णाहुतिंजुहुयात्–ततो ब्रह्मणा आज्यस्थाल्याः स्रुवेण स्रुचिद्वादशवारमाज्यं देयम् । तिष्ठन्नाचार्यो यजमानोवा अन्वारम्भ होमं कुर्यात् ॥ ततः स्रुचंस्रुवंवा घृताभिघारितनारिकेल पूगीफलान्यतम फल- पूरितंकृत्वा वक्ष्यमाणमन्त्रेण गन्धाक्षतादिभिस्सम्पूजयेत्—ॐ स्रुचश्चमे चमसाश्चमे वायव्यानिचमे द्रोणकलशश्चमे ग्रावाणश्च- मे धिषवणेचमे पूतभृच्चमऽआधवनीयश्चमे व्वेदिश्चमे बर्हिश्चमे ऽवभृथश्चमे स्वगाकारश्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ इतिसम्पूज्य— सङ्कल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोहं अमुककाम नयामुकहोमकर्मणः साङ्गफलाप्तये न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थं श्रीपरमेश्वर यज्ञपुरुषप्रीत्यर्थंच मृडनामाग्नौपूर्णाहुतिहोमंकरि- ष्ये ॥ ॐ मूर्द्धानन्दिव इति भारद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो महा वैश्वानरोदेवता मृडाग्नौपूर्णाहुति होमेविनियोगः—ॐ मूर्द्धानं- दिवो ऽ अरतिं पृथिव्यावैश्वानरमृत ऽ आजातमग्निम् । कवि ई० सम्राजमतिथिंजनाना मासन्नापात्रं जनयन्तदेवाः स्वाहा— ॐ पूर्णादर्वीति हिरण्यगर्भऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो ऽ ग्निर्देवता मृडाग्नौ पूर्णाहुति होमेविनियोगः—ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपू- र्णापुनरापत वस्नेवविक्रीणावहा ऽ इषमूर्जं ई० शतक्रतोस्वाहा— इतिश्रीफलंवन्हौ प्रक्षिप्त्वावक्ष्यमाणमन्त्रै रविच्छिन्न घृतधाराभि- र्वन्हिंप्रार्थयेत्— सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्यकाम्यम् । सनिं- मेधामयासिषं ॐ स्वाहा ।१। ॐ याम्मेधांदेवगणाः पितरश्चो-

पासते। तयामामद्यमेधया ऽ ग्नेमेधाविनं कुरुस्वाहा।२। ॐ मेधाम्मेवरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्चवायुश्चमेधान्धाताददातुमेस्वाहा।२। ततोवायव्यकोणेगत्वा अग्नेरुत्तराङ्गपूजनंकुर्यात्—ॐ अग्नेनयेत्यस्यअगस्त्यऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽ ग्निर्देवता, उत्तराङ्गपूजने विनियोगः॥ ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽस्मान्विश्वानिदेव वयुनानिविद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्तेनमऽउक्तिंविधेम। इतिगन्धादिभीः सम्पूज्यः प्रार्थयेत—श्रद्धांमेधांयशः प्रज्ञां विद्यांपुष्टिंबलंश्रियम्। आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहिमेहव्यवाहन॥ ततः स्रुवहस्तः प्रदक्षिणान्तु-ष्ठयंकुर्यात्—ॐ यानिकानिचपापानि०। मयाजन्मसहस्रेषु योऽर्जितः पापसञ्चयः। प्रदक्षिणपदेनैव विलयंयात्वसंशयम्॥ ततो यजमानस्याग्न्यालम्भनम्—ॐ तनूपाइत्यस्यावत्सारऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽ ग्निर्देवता अग्न्यालम्भने विनियोगः—ॐ तनूपा ऽ अग्ने ऽ सितन्वंमेपाहि ॐ आयुर्दाऽअग्नेस्यायुर्मेदेहि ॐ वर्चोदाऽ अग्ने सिवर्चोमेदेहि। ॐ अग्नेयन्मेतन्वा ऽ ऊनंतन्म ऽ आपृण ॐ मेधाम्मेदेवः सविताआधातु। ॐ मेधाम्मेदेवीसरस्वती ऽ आदधातु। ॐ मेधामश्विनौदेवा वाधत्ताम्पुष्करस्रजौ। इति मन्त्रैरग्नौपाणिप्रतपनपूर्वकं मुखंप्रोंच्छयेत्। ततो ऽ ङ्गानिस्पृशेत्—ॐ अङ्गानिचम ऽ आप्यायताम्। सर्वाङ्गान्युपस्पृशेत्। ॐ वाक्चम ऽ आप्यायताम्—मुखे॥ ॐ प्राणश्चम, आप्यायताम्—नासिकायाम्। ॐ चक्षुश्चम ऽ आप्यायताम्—नेत्रयोः। ॐ श्रोत्रंचम ऽ आप्यायताम्। कर्णयोः। ॐ यशोबलंचम ऽ आप्यायताम्। बाह्वोः। ॐ सुमित्रियान इतिदध्यङ्ङाथर्वणऋषि रापोदेवता प्रणीताद्भिः शिरः प्रोक्षणे विनियोगः—ॐ सुमित्रियान ऽ आप ऽ ओषधयःसन्तु॥ इतिसपवित्राभ्यां हस्ताभ्यां प्रणीताजलेनशिरःसम्प्रोक्ष्य॥ ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्चवयंद्विष्मः इति प्रणीतापात्रमग्नेः पश्चिमेवा ईशानेन्युब्जी कुर्यात्॥ ततः परिस्तरणादिकुशान्घृता क्तानुत्थाप्य—ॐ देवा-

गात्विति, अग्निऋषिरुष्णिक्छन्दोमनसस्पतिर्देवतावर्हिर्होमे विनियोगः ॥ ॐ देवागातुविदोगातुं वित्वागातुमितमनसस्पत। इमंदेव यज्ञ ॐ स्वाहावातेधाः। इति वन्हौप्रक्षिपेत् ॥ ततस्त्र्यायुषकरणम्—ततः स्रुवमूलेघृतंलिंपयित्वा तेनेशानकोण द्रस्ममाहृत्य कांऽस्यपात्रेस्थापयित्वा तत्रगव्यमाज्यंक्षिप्त्वा ऽनामिकया एकीकृत्यतेनैवधारयेच—ॐ त्र्यायुपमितिनारायणऋषि रुष्णिक् छन्दः शिवोदेवता त्र्यायुपकरणे विनियोगः—ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेः—इतिललाटे । ॐ कश्यपस्यत्र्यायुषमितिग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषुत्र्यायुपमितिदक्षिणांशे। ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषमितिहृदि ततोहवनदशांशंदुग्धमिश्रितजलेन तन्मन्त्रैस्तर्पणंकृत्वा, तद्दशांशेनमार्जयेत्। तत आचार्यादिभ्यो दक्षिणांदद्यात्। ततः पूर्वोक्त पद्धत्यनुसारेणाभिषेकादिकंकृत्वा शीर्वादंदत्वोभाभ्यां हस्ताभ्या मक्षतपुष्पान्गृहीत्वा ऽग्नौप्रक्षिपेत्। ॐ गच्छगच्छसुरश्रेष्ठ स्वस्थानेपरमेश्वर। यत्रब्रह्मादयोदेवास्तत्रगच्छहुताशन। भोभो अग्नेमहाशक्ते सर्वकर्मार्थसाधक। कर्मान्तरे ऽपिसम्प्राप्ते सान्निध्यंकुरुसादरम् ॐ यान्तुदेवगणाःसर्वे पूजामादायमामिकाम्। इष्टकामसमृध्यर्थं पुनरागमनायच। इत्यग्निंविसर्जयित्वा ब्राह्मणांश्चभोजयेत ॥

॥ इति कुशकण्डिका पद्धति ॥



॥ अथ ग्रहयाग परिभाषा ॥

अथ ग्रहयाग परिभाषारभ्य-तथाचशौनक —ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामिशौनकोऽहद्विजम नाम् । पुण्यहनि शुभवारे कुर्याद्वाथ स्विजन्मसु । अयने विपुवेचैव ग्रामसूर्यापरागयो ॥ ग्रहाणा मुग्रचेष्ठाना मताशांति समाचरेत । आदौ विनायकं पूज्यग्रहाश्चैव विधानत । कर्मणा सिद्धिमा प्नोतिश्रेयश्चाप्नोत्यनुत्तमम् । **कर्मतत्व दीपिकायाम्**—गर्भाधानादि संस्कार कर्मस्वपि विशषत । काम्यारम्भेषु सर्वेषुनववेश्मप्रवेशन । विवाहोत्सव यत्नेपुप्रतिष्ठादिपुकर्मसु । निर्विघ्ना र्थं मुनिश्रेष्ठतथोद्वेगाद्भवपुच । वश्यकर्माभिचारेषु तथैवोच्चाटनादिषु । नवग्रह मखकृत्वा तत काम्य समाचरेत । **मंडपदिग्विचारम्**—गृहस्योत्तरपूर्वेण मडपकारयद्बुध । रुद्रायतनभू मौवा चतुरस्रमुदक्प्लवम् । दशहस्तमथाष्टौवा हस्तान्कुर्यात्षोडशान् । तस्यद्वाराणि चत्वारि कर्त्तव्यानिविचक्षणौ । **वेदीप्रमाणमास्य**—ग्रहस्योत्तरपूर्वेण वितस्तिद्वयविस्तृताम् । वप्रद्वय वृतांवेदीं वितस्त्युच्छ्र्यसम्मिताम् ॥ संस्थापनाय देवानां चतुरस्रामुदङ्मुखाम् । **स्कान्देऽप्येवम्**-विप्रचतुरस्रचस्थण्डिल हस्तमात्रकम् । **ग्रहानाहमात्स्ये**—सूर्य सोमस्तथाभौमो बुधजीव सितार्कजा । राहु केतु रितिप्रोक्ता ग्रहालोक हिताहा । **ग्रहाणामादिक स्थापनम्**—मध्येतु भास्कर विद्याल्लोहित दक्षिणेनतु । उत्तरेण गुरु विद्याद्बुधपूर्वोत्तरेणतु । पूर्वेण भार्गव विद्यात्सो म दक्षिण पूर्वके । पश्चिमेन शनिंविद्याद्राहु पश्चिम दक्षिण । पश्चिमोत्तरत केतु स्थापयेच्छु क्लतण्डुलै ॥ **ग्रहाकाराणयाहस्कान्दे**—भास्करस्यतु वृत्तस्याच्चंद्रस्य चतुरस्रकम् ॥ कुजस्यतु त्रिकोणस्या द्बाणाकार बधुस्यच । गुरोर्दीर्घचतष्कोण पचकोण सितस्यच । चापाकार शने राहो शूर्पंकेतोर्ध्वजाकृति । **ग्रहाधिदेवानाह** भास्करस्येश्वर विद्या दुमाच शशिनस्तथा । स्कन्द मगारकस्यापि बुधस्य च तथा हरिम् ॥ ब्रह्माण च गुरोर्विद्याच्छुक्रस्यापिशचीपतिम् ॥ शनैश्चरस्यतु यम राहो काल तथैवच । केतोश्च चित्र गुप्त व सवषा मधि देवता । **ग्रहाणा प्रत्यधिदेवानाह**—अग्निराप क्षितिविष्णु रिन्द्रऐन्द्रीचदेवता । प्रजापतिश्च सर्पा श्च ब्रह्मा प्रत्यधिदेवता । विनायक तथा दुर्गा वायुमाकाशमेवच ॥ आवाहयेद्व्याहृतिभिस्त थैवाश्वि कुमारकौ ॥ **अधिदेव प्रत्यधिदेवानांस्थापने विचार** —अधिदेवा दक्षिण तो वाम प्रत्यधि देवता । **ग्रहवर्णा** सरक्तरक्तमादित्यमोंकारेण समन्वित । सोमशुक्रो तथाश्वे तौ बुधजीवौच पिङ्गलौ । मन्दराहू तथा कृष्णौ धूम्रकेतु गणविदु । **ग्रहाणा प्रतिमानाह याज्ञवल्क्य** —ताम्रकात्स्फाटिका द्रक्त चदनात्स्वर्णकावुभौ । रजता दयस सीसात्कांस्यात्का र्योग्रहा क्रमात ॥ सवर्णैर्वापटे लेख्यागधैर्मडलकेपुवा । **वस्त्राणि**—ग्रह वर्णानिदेयानि वासांसि कुसुमानिच । धूपामोदोत्र सुरभिरु परिष्टाद्वितानकम् । शाभार्थस्थापयेत्प्राज्ञ फलपुष्पसमन्वितम् ।

ग्रहभक्ष्यमाहः— गुडौदनं रवेर्दद्यात्सोमाय घृतपायसम् । अंगारकाय संयाव बुधाय क्षीर षष्टिकम् । दध्योदनंच जीवाय शुक्रायच गुडौदनम् शनैश्चराय कृशर मज्जामांसंच राहवे । चित्रौदनं च केतुभ्य सर्व भक्ष्यै रथार्चयेत । **संस्कार भास्करे स्कान्दे:**—जन्म भूर्गोत्र-मग्निश्च वर्ण स्थानं मुखानि च । यो ऽ ज्ञात्वा कुरुते शान्ति ग्रहास्तेना ऽ वमानिता: ॥ **ग्रहाणां जन्मभूमयः**—उत्पन्नोऽर्क कलिंगेषु यमुनायांचचन्द्रमा । अंगारकस्त्ववन्त्यां च मगधायांहिमांशुज: । सैन्धवेषुगुरुर्जात: शुक्रोभोजकटेतथा । शनैश्चरस्तुसौराष्ट्रेराहुर्वैराटिनेपुरे । अन्तर्वेद्यांतथाकेतु. इत्येताग्रहभूमय: । **संस्कारभास्करे ग्रहगोत्राणि**—आदित्य काश्यपे गोत्रे अत्रिजश्चंद्रमाभवेत् । भारद्वाजो भवेद्भौमस्तथाऽत्रेयश्चचन्द्रज: । शक्रपूज्योऽङ्गिरोगोत्र: शुक्रोवैभार्गवस्तथा ॥ शनि काश्यपगोत्रोऽथराहु पैठीनसिस्तथा । केतवोजैमिनेयाश्च ग्रहगोत्राणिकीर्तयेत् । **दिग्विभागेनग्रहाणां मुखानि स्कान्दे**—शुक्रार्कौप्राङ्मुखौ ज्ञेयौ गुरुसौम्या वुदङ्मुखौ । *प्रत्यङ्मुख: शनि सोम शेषादक्षिणतोमुखा.* । आदित्याभिमुखा सर्वे साधिप्रत्यधि देवता । स्थापनीया मुनिश्रेष्ठा नान्तरेण पराङ्मुखा प्राङ्मुखत्वम् । ऊर्ध्वदृष्टित्व । उदङ्मुखत्वम्–वामदृष्टित्वम् । दक्षिणमुखत्वम– दक्षिणदृष्टित्वम् । **ग्रहाग्नय संस्कारगणपतौ**—आदित्ये कपिलोनाम पिंगल: सौमउच्यते । धूम्रकेतुस्तथाभौमे जाठरोऽग्निर्बुधेस्मृत । गुरौचैव शिखीनाम शुक्रेभवति हाटक । शनैश्चरेमहातेजाराहुकत्वोर्हुताशन । **ततोग्रजमाभाभिषेकार्थं कलशस्थापनं स्कान्दे**—प्रागुत्तरेण कलश दध्यक्षत विभूषितम् । पचपल्लवसंयुक्तं भूमौ संस्थापयेद्बुध । वरुणेन विधानेन पूजयेत्तु प्रयत्नत । **होमार्थकुंडमानमाह स्कान्दे.**—अत परं प्रवक्षामि होमार्थ कुंडमानकम् । नवग्रहमखेकुंड हस्तामात्रे समंभवेत । चतुरस्रमधोहस्तं योनिवक्त्र समेखलम् । चतुरंगुलविस्तार मेखलास्तद्वदुच्छिना । मानहीनादिके कुंडमनेक भयदंभवेत । यस्मात्तस्मात्सुसंपूर्णं शान्तिकुंडं विधीयते । **लक्षहोमे कुंडमनम्**— अस्मादश गुणा प्रोक्तो लक्षहोम स्वयंभुवा । आहुतीभि प्रयत्नेन दक्षिणाभिस्तथैवच । द्विहस्त विस्तृतंतद्वच्च चतुरस्रंसमंतत । लक्षहोमेभवेत्कुंडं योनिवक्त्रं त्रिमेखलम् । विशेषो होमपद्धतौ द्रष्टव्य । **होमकुंडोत्तर पूर्वेऽपि देवता स्थापनार्थं वेदीनिर्माणस्तत्रैव**—तस्यचोत्तर पूर्वेण वितस्ति त्रयसंस्थितम् प्रागुदक्प्लवन तच्चचतुरस्रं समंतत । विप्रंभाष्योच्छ्रितं प्रोक्तंस्थंडिलं विश्वकर्मणा । संस्थापनाय देवाना वप्रत्रयसमावृतम् । व्यंगुलं ह्युच्छ्रितोवप्र प्रथम समुदाहृत: अंगुलोच्छ्रय संयुक्तंवप्रद्वय मथोपरि त्र्यंगुलस्यच विस्तार सिर्वेषांकथ्यतेबुधै । दशांगुलोच्छ्रिताभित्ति स्थंडिलेस्यात्तथोपरि । तस्मिन्नावहयं देवान्पूर्ववत्पुष्पतंडुलै आदित्याभिमुखा सर्वे साधिप्रत्यधि देवता । स्थापनीया मुनिश्रेष्ठ नोत्तरेण पराङ्मुखा यस्त्मानधिक स्तत्र संपूज्य: श्रियमिच्छता । शामध्वनि शरीरस्त्वं वाहन: परमेष्ठिन. । **कोटि होमे**

कुंडमानम्—अस्माच्छत गुणाः प्रोक्ताः कोटिहोमः स्वयंभुवा । आहुतीभिः प्रय त्नेन दक्षिणाभिः फलेनच । पूर्ववद्ग्रहदेवा नामावाहन विसर्जने । होममंत्रास्त एवोक्ताः स्नाने दाने तथैवच । कुंडमंडप वेदीनां विशेषोऽयंनिवोधमे । कोटिहोमे चतुर्हस्तं चतुरस्रं समन्ततः । योनिवक्रद्वयोपेतं तदप्याहुस्त्रिमेखलम् ॥ **सर्व कुण्डेषुमेखलामानम्**—व्यंगुला भ्युच्छ्रिता कार्या प्रथमामेखलाबुधैः त्र्यंगुलाभ्युच्छ्रितातद्वद्द्वितीया परिकीर्तिता । उच्छ्रायविस्तरयशा तृतीया चतुरंगुला स्नाता वेकांगुलं त्यक्त्वा मेखलानां स्थितिर्भवेत् । **कुण्डार्के मेखलालक्षणम्**—स्युर्वहिर्मेखलास्तानंदा ६ ग ६ श्रु ३ श्वेद ४ त्रि ३ करविततय इति । कंठाद्वहि मेखला भवन्ति, तत्राद्यामेखला नवांगुलोन्नता चतुरंगुलविस्तृताभवति । **कंठलक्षणम्**—खातात्कुंडग-र्त्तात् व्यंगुलेन, एकांगुलेनवहिः कंठोभवति । कंठंत्यक्त्वा मेखलाकार्या । **नाभिलक्षणं कुंडरत्नावल्याम्**—तेषां कुंडानांमध्ये वेदांगुलैश्चतुर्भिरंगुलैर्विस्तृतः द्विरंगुलैरुच्चः कुंडाकारश्चनाभिर्भवति सेनाभिः पद्मकुंडे नभवति, तत्रकर्णिकायाः सत्वात् । **शारदा तिलके**—कुंडानां कल्पयेदन्तर्नाभिमंबुज सन्निभाम् । तत्कुंडाद्यनुरूपांवा मानमस्य निगद्यते । मुष्ट्यरत्न्येकहस्तकनांनां भिरुत्सेधतो मता । नेत्रवेदां गुलोवापिपार्श्वे नाभिंचवर्जयेत । **योनिलक्षणं**—दीर्घारसांशैस्तु तथैवचोच्चास्य लात्तथाविद लवैस्ततात्र । एकाङ्घ्रिभागैर्यदि मेखलास्यात्तदाच योनिर्भवतीय मेव । साचाश्वत्थ दलाकृतिः पुनरियंसाकुंड सिद्धियुक्तचत्वाध्यमा द्रवतीह हस्तयधर वद्विस्तार देव्योभवेत् ॥ **वसिष्ठः**—योनिश्च पश्चिमेभागे प्राङ्मुखीमध्यसंस्थिता षडंगुलैश्च विस्तीर्णाचायता द्वादशं गुलैः ॥ मेखलोपरि सर्वत्र अश्वत्थदल सन्निभा ॥ **शारदातिलके**—स्थलादारभ्य नालंस्याद्यो न्यारं प्रेसरंध्रकम् । **कल्पलतायां यामले**—नालमेखलयोर्मध्ये परिधि स्थापनायचरंध्रं कुर्यात्त-था विद्वान्द्वितीय मेखलोपरि । योनिकुंडे तथायोनिं पार्श्वेनाभिंच वर्जयेत ॥ विशेषः कुंडमंडप ग्रंथेषु द्रष्टव्‍ [illegible] होमं स्थंडिले वास माचरेत् । [illegible] कार्यो ब्रह्मापश्चान्मुखे स्थितः । संस्नाप्यस्थापितं कुंभे चतुर्बाहुश्चतुर्मुखः । ब्रह्मयज्ञान मितिवा गायत्र्यावा प्रपूजयेत् ॥ **ग्रहसमिध**—अर्क पलाश खदिर अपामार्गा श्वपिप्पल. । औदुम्बर शमीदूर्वा कुशाश्च समिधः क्रमात् ॥ **समिधामानम्**—प्रादेशमात्रा अशिफा अशाखा अपलाशिनी । समिधः कल्पयेत्प्राज्ञः सर्व कर्मसुसर्वदा । **पक्वाहुति प्रमाणं परशुरामकारिकासु**—कर्षमात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पय स्मृतमुक्तानि पंचगव्यानि शुक्तिमात्राणिसाधुभि. । ततसमंमधुदुग्धान्नमक्षमात्र मुदाहृतम् । दधि प्रसृति मात्रंस्यालाजा. स्युर्मुष्टि संमिताः । पृथुकास्तत्प्रमाणास्युः सक्तवोऽपि तथाविधाः ॥ पलार्द्धं गुडमानंच शर्करापितथाविधा । ग्रासार्द्धं मानमन्नानामिक्षुः पर्वावधिः स्मृतः । एकैकं पत्रपुष्पादि तथाऽपूपादि कल्पयेत् । कदलीफल नारिंग फलान्यैकं कशोविदुः । अष्टधानारि केलानिखंडितानि विदुर्बुधाः । व्रीहयो मुष्टिमात्रा.स्यु र्मुद्गा माषायवास्तथा । चन्द्र चन्दन कश्मीर कस्तूरी यक्षकर्दमान् । कलयासम्मितानेता न्गुग्गुलंवदरास्थिवत । चतु. पष्टितिलैः प्रोक्ता तिलानामाहुतिर्बुधैः । व्रीहीणां च यवानांच शतमाहुति रिष्यते । **द्रव्याणां प्रतिनिधयः**—विष्णु धर्मोत्तरेदध्य लाभे पयोमार्ग मध्वलाभे तथागुड. । घृत प्रतिनिधिं कुर्या-त्पयोवा दधिवान्नृप । **घृतस्यप्रतिनिधयं कुशकंडिका व्याख्यां द्रष्टव्याः** ॥ **ऋत्विग्वरण**

स्कन्द पुराणे—नवग्रह मखेकुर्याद्दिविजश्चतुरः शुभान् । अथवा चैकमभ्यर्च्य विधिना ब्रह्मणासह । **ग्रहदीपिकायाम्**—ऋत्विजोऽष्टौ चचत्वारौ द्वावप्येकस्तथैवच । एतच्चोपलक्षणं बहवोऽपि कर्त्तव्याः । होम संख्यकान् ऋत्विजो वृणीत । आचार्य ब्रह्माणौ विनावरणं सर्वत्र होतृत्वा नुपपत्तेः । **उक्तं चानन्तभाष्ये**—होतृत्व प्रापणायैतद्वरणं दृष्टसाधनम् । यजमानेनक कर्त्तव्य मानन्स्यार्थ मिहार्पितत् । **वरणानन्तरं ऋत्विजि मृते रोगपीडितेवा तत्स्थाने यजमानो ऽन्यं द्विजं वृत्वा कर्मणि योजयेत्**—यावन्न योज्यतेऽन्यस्तु वरणेन स्वकर्मणि । नतावन्तत्समाख्यानं लभते कर्म हेतुकम् । **होमेमुद्राः**—होमे मुद्रा स्मृतास्तिस्रो मृगीहंसीचसूकरी । मुद्राविनाकृतोहोमः सर्वोभवति निष्फलः ॥ **मुद्रालक्षणमाह**—सूकरी करसंकोची हंसीमुक्त कनिष्ठिका ॥ मुक्तकनिष्ठा तर्जनी, मृगीमुद्रा प्रकीर्तिता । **कार्यपरत्वेनहोमेमुद्रा**—शान्तिकेतु मृगीज्ञेया हंसीपौष्टिक कर्मणि । सूकरीमारणेयाते कार्या तंत्रविदुत्तमैः । मृगीमोक्षेप्रकर्त्तव्या आहुतिः सर्वकामिका । हुतंयद्मुद्रयाहीनं तत्सर्वंनिष्फलं भवेत् ॥ **यथोक्ताभावेयज्ञकरण दोषमाह्**—अन्नहीनः कृतोयस्माद्दुर्भिक्ष फलदोभवेत । अन्नहीनोदहेद्राष्ट्रं मंत्रहीनस्तुऋत्विजः । यष्टारं दक्षिणाहीनोनास्तियज्ञसमोरिपुः नाप्याल्पधनः कुर्याल्लक्षहोमनरः क्वचित् । यस्मातपीडाकरोनित्यं यज्ञेभवतिविग्रह. । यस्तुपीडाकारोनित्यमल्पवित्तस्यवैग्रहः । तमेव पूजेयद्भक्त्या द्वौवात्रीनवां यथाविधो एकमभ्यर्चयेद्भक्त्या ब्राह्मणं वेदपारंग । दक्षिणाभिःप्रयत्मनेन बहूनल्पवित्तवान् । लक्षहोमस्तुकर्तव्यो यथावित्तं यथाविधिः । यतः सर्वानवाप्नोतिकुर्वनकामान्विधानतः । सतंकाम मवाप्नोति पदमानंत्यमश्नुते ॥ अनेन विधिनायस्तु कोटिहोमं समाचरेत् । सर्वान्कामानवाप्नोति ततोविष्णुपदंव्रजेत् । अन्यथा फलंदपुसांनकाम्यं जायते क्वचित् । तस्मादयत्तु होमस्य विधानं पूर्वमाचरेत् ॥ **होमसमये द्रव्यदेवतानां ध्यानम्**—देवतानामभिध्यानंनकरोत्यत्रमूढधीः । तस्यकर्मवृथैवस्या दितिवेदविदोविदुः ॥ द्रव्यं तृतीययांध्यायेद्देवतांच दुतियया ॥ द्रव्यदेवत रूपत्वात्कर्मणोऽतस्तदुच्यते ॥ **ग्रहाणां द्रव्य न्यूनवाहुल्ये आहुती संख्याप्रमाणां प्रयोगपारिजाते**—ततोयजमानस्य द्रव्यत्यागन्ते-समिदादि द्रव्येण प्रतिग्रहं प्रतिद्रव्यं दश दशाहुतीर्हुत्वा अधिदेवतादीनुद्दिश्य प्रत्येकं तिस्रः तिस्रः एकैकांवा आहुतिहुत्वाचसप्तभि व्याहृतीभिश्चतस्र आहुती र्जुहुयात्-होमबाहुल्ये,यदा नवग्रहाणामष्टोत्तर शताहुति होमसंख्यासु, अधिदेवताप्रत्याधि देवतानां तृतीयांसेन जुहुयात् दशमांशेनर्वा । **होमोत्तर कृत्यमाह्**—पूजांकृत्वा ग्रहाणाच हुवेस्त्विष्ट कृदाहुतिः। नवाहुतीस्ततोहुत्वा वलिदान मथाचरेत ॥ मूर्द्धानमितिमंत्रेण दद्यात्पूर्णाहुतिंततः । होमशेषं समाप्याथ आचार्योऽथद्विजैःसह अथाभिषेक मंत्रेण वाद्यमंगलगीतकैः । पूर्णकुम्भेनतेनैव होमान्ते प्रागुदंगुखैः।अव्याङ्गा वयवै ब्रह्मन् हेमस्राग्दास भूषितैः । यजमानस्य कर्त्तव्यं चतुर्भिः स्नपनं ॥ द्विजैः॥ **ऋत्विगादीनां दक्षिणादि**-भक्ष्यान्दद्यान्मुनिश्रेष्ठ भूषणान्यपिशक्तितः। शयनानिसवस्त्राणि हैमानिकटकानिच । स्वर्णांगुलिपवित्राणि कंठसूत्राणिशक्तिमान् । नकुर्याद्दक्षिणाहीनंवित्तशाठ्येन-मानवः । अददल्लोभतोमोहात्कुलक्षय मवाप्नुयात । अन्नदानंयथाशक्त्या कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता।।

धनिक दरिद्रादिभिर्दक्षिणादेयप्रमाणं कार्यानुसारं-वाराह पुराणे—व्याहृतीनां-सह स्रस्य । होमेशुल्कं द्विजेऽर्पयेत् । माषमात्रं सुवर्णन्तु लक्षहोमेशतंयवा । धनिको द्विगुणंदद्या-

निगुर्णतुमहाधनः। यथार्द्धतुदरिद्रेण दातव्यं पुण्यलब्धये। दद्यान्महा दरिद्रस्तु तदर्धशुल्कमेवतु। महाभारते—वेदोपनिषदेचैव सर्वकर्मसुदक्षिणा। सर्वत्रैवतु चोद्दिष्टा भूमिर्गावोधकाञ्चनम्॥ शेषः पूजाविधौहपष्ठः। इतिग्रहयाग-परिभाषा॥

॥ नवग्रह स्थापने वेदी॥

॥ ग्रहयाग भद्रम् ॥

ईशाने	पूर्वे	आग्नेये
बाणाकारः पीत. बुधः दक्षिणे। वामे- अ० दे०। प्र० दे० हरिः। विष्णुः	पञ्चकोणात्मकः श्वेतः शुक्रः दक्षिणे। वामे- अ० देवः। प्र० देवः इन्द्रः। ऐन्द्री:	चतुरस्रः श्वेतश्चन्द्रः दक्षिणे। वामे- अ० देवः। प्र० देव०: उमा। आपः
उत्तरे उत्तरे दीर्घचतुरस्रः पीतवर्णो गुरुः दक्षिणे। वामे- अधि-दे०। प्र० दे० ब्रह्मा। इन्द्रः	मध्ये वर्तुलाकार. रक्तवर्णः सूर्यः दक्षिणे। वामे- अधिदेव.। प्रत्यधिदेव. ईश्वरः। अग्निः	दक्षिणे त्रिकोणात्मकोरक्तः भौमः दक्षिणे। वामे- अ० दे०। प्र० दे० स्कन्दः। पृथ्वी
वायव्ये ध्वजाकृतिर्धूम्रवर्णः. केतुः दक्षिणे। वामे- अ० दे०। प्र० दे० चित्रगुप्तः। ब्रह्मा	पश्चिमे कृष्णवर्णश्चापाकारः शनि दक्षिणे। वामे- अ० दे०। प्र० दे० यमः। इन्द्र.	नैर्ऋत्ये सूर्पाकारः कृष्णवर्णः राहुः दक्षिणे। वामे- अ० दे०। प्र० दे० कालः। सर्पाः

अथ ग्रहयाग पद्धतिः

अथपूर्वोक्तविधानेन वेद्यांनवग्रहस्थापनार्थं नवकोष्टाकाराणिकृत्वा, तत्राग्न्युत्तारणपूर्वकंपूर्वोक्ताः प्रतिमाः सर्वेसूर्याभिमुखाः संस्थाप्य, पूजासामग्रींवरणद्रव्यंच सम्पाद्य स्वासनउपविश्य पत्नींस्वदक्षिणतउपवेशयित्वा, आचम्यभूतोत्सादनंकृत्वा रक्षादीपं प्रज्वाल्यसम्पूज्यच, गणेशादीन्सम्पूज्य, संस्मृत्वाच, प्रधानसङ्कल्पंकुर्यात—ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यमुकोहं तथाचामुकराशेरमुकशर्मणो ऽस्यकुमारस्य वटोर्वाबीजगर्भ समुद्भवैनो निबर्हणद्वारा आयुर्वर्चोमेधाभिवृद्धये श्रौतस्मार्त्तकर्मानुष्ठानसिद्धिद्वारा अद्य,श्वो, वाकरिष्यमाण (चूडोपनयन वेदारंभ समावर्त्तन कन्योद्वाह, तथा दशाविदशान्तर्दशास्थितादित्यादिग्रह सूचितदुष्टफलोपशान्तिपूर्वकशुभफलप्राप्तये) अमुक कर्मणिसर्वोपद्रव शान्तिपूर्वक दीर्घायुरारोग्य हर्षविजयप्राप्तये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थंच तदुपयोग्य युतात्मकग्रहमखमण्डपे मखसंरक्षणायवरुणपूजनपूर्वकं ग्रहयाग मण्डलस्थ सूर्यादिनवग्रह साधिप्रत्यधि देवताष्ठलोकपालादीनांचपूजनं करिष्ये तथाच तत्पूर्वांगत्वेनाचार्यादीनां वरणञ्चकरिष्ये ॥ आचार्यब्राह्मणं पाद्य मधुपर्कादिभिः सम्पूज्य, वरणासामग्रींच, करेकृत्वा—सकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकोहं करिष्यमाणा मुककर्मणि, एभिर्गन्धाक्षतपुष्प पूगीफल करांगुलीयक द्रव्यधौतवस्त्रोत्तरीय यज्ञोपवीतपुष्पमालादिभिः, अस्मिनग्रहयागकर्मणि आचार्यकर्मकर्त्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं अमुकवेदाध्यायिनं आचार्यत्वेनत्वांवृणे, वरणद्रव्यंतस्मैदत्वा, वृतो ऽस्मीत्याचार्योक्तिः । प्रार्थयेत्—ॐ आचार्यस्तुयथास्वर्गे० संप्रार्थ्य-यजमानोक्तिः—अस्यग्रह यागकर्मणः प्रतिष्ठापनार्थं त्वम्मेआचार्योभव । अहंभवानीतिप्रत्युक्तिः ॥ तथैव ब्राह्मणंसम्पूज्य-अद्येत्यादि० एभिर्वासांगुलीयक धौतवस्त्रादिभिः अस्मिन्ग्रहमखेकृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्म्मकर्त्तुंब्रह्मत्वेनैभिर्वरणद्रव्यै

रमुकगोत्र प्रवरममुकशर्माणं ब्राह्मणंत्वामहंवृणे । वृतो ऽस्मीति ब्रूयात, प्रा०—यथाचतुर्मुखो० । अस्मिन्ग्रहयागकर्मणि, त्वमे ब्रह्मा-भव । अहंभवानीति प्र० । एवंहोमसंख्यानुसारेणऋत्विजो ऽपि वृणुयात ॥ शान्तिपाठार्थ यथाविस्तारतश्चतुरो ब्राह्मणान्द्वार-पालानपिवृणुयात् ॥ वा होमवेलायांहोमकुण्डसन्निधौ, वृणुयात् । इदानींतु, जापक ब्राह्मणान्वृणुयात ॥ ३० अद्येत्यादि० अमुकोऽहं अमुककर्मनिमित्तकग्रहयाग कर्मणिनिर्विघ्नार्थमादौ, गणेश्वरस्य जपंकर्त्तुं अमुक ब्राह्मणंत्वामहंवृणे ॥ एवंसूर्यादीनामपि जापकां-श्च वृणुयात् ॥ यजमानोक्तिः—यथाविहितंकर्मकुरुत । तेषां प्रत्युक्तिः—करवामः ॥ इति वरणविधिः ॥

अथ ग्रह स्थापन पूजनम् ।

ततः शुक्लाम्बरधरः शुक्लमाल्यानुलेपनःसपत्नीकः साचा-र्यैःऋत्विक्सदस्य सहितोयजमानः । जलपूर्णकलशहस्तो मङ्गल-ध्वनि पुरःसरोभद्रं कर्णेभिरित्यादि मन्त्रान्पठन मण्डपंप्रदक्षिणी कृत्य, पश्चिमद्वारेणप्रविशेत्—तत्रग्रहवेदी सन्निधौ, पूर्वाभिमुखो पविश्य, पत्नींस्वदक्षिणत रुपवेशयेत् आचम्यार्घसंस्थाप्य भूतो-त्सादनंविधाय पंचगव्येनमण्डपं सम्प्रोक्ष्य, पूर्वस्यांपूर्वाभिमुखं दीपंसम्पूज्य, (इदानींकचित्पद्धतिपुकुण्डे अग्निस्थापनविधि राचार्यद्वारा लिखितोदेशाचारमनुकर्त्तव्यम्) पूजासङ्कल्पंकुर्यात अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोहं ग्रहयागकर्मणः श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये सुवर्णताम्रादि प्रतिमासु आदित्यादिनवग्रहाणां, अधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहितानां पद्मयुक्तदेवतानां वा सर्वेषां आवाहन स्थापन पूजनंचकरिष्ये, ततो ग्रहभद्रेशानकोणे अष्टदल कमलंविलिख्य, कलशंसंस्थाप्य महीद्यौरितमंत्र मारभ्यप्रसन्नो भव सर्वदेतिपर्य्यन्तयकर्णयागरक्षार्थं तत्रसम्पूज्य ॥ तत्रैवकलशे पंचाशत्कुशनिर्मितं चतुर्भुजं चतुर्मुखंब्रह्माणंच रक्षार्थस्थापयेत् ॥ रक्षासूत्रमामंत्र्यच स्थापयेत् । ततो वेद्यांग्रहानावाहयेत् तत्रादौ

मध्ये कर्णिकायां द्वादशांगुलवर्त्तुले रक्तमण्डलेप्राङ्मुखं सूर्यरक्त पुष्पाक्षतैर्ध्यायेत्—ॐ पद्मासनः पद्मकरोद्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्त तुरङ्गवाहनः । दिवाकरो लोक गुरुः किरीटी मयि-प्रसादं विदधातु देवः ॥ आवाहनम्—ॐ आकृष्णेति हिरण्यस्तूप ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः सवितादेवता सूर्यावाहने विनि-योगः—ऋक् ॐ आकृष्णेनरजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच । हिरण्ययेन सवितारथेन देवोयातिभुवनानिपश्यन्,, ॐ भूर्भुवः स्वः कलिंगदेशोद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्णपूर्वाभिमुख सूर्य, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ततः सूर्यदक्षिण पार्श्वे, सुर्याधिदेवं-ईश्वरम्-शुक्लपुष्पैर्ध्यायेत्—ॐ पंचवक्त्रोवृ-षारूढः प्रतिवक्त्रं त्रिलोचनम् । कपाल शूलखट्वाङ्गी चन्द्रमौली सदाशिवः । ॐ त्र्यंबकमितिवशिष्ठऋषिरनुष्टुप्छन्द त्र्यंबकोदेवता त्र्यंबकावाहने वि० ॥ ॐ त्र्यंबकं यजामहेसुग न्ध पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॥ ॐ भू० त्र्यंबक सूर्यदक्षिणे, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० । ततो वामपार्श्वेसूर्यप्रत्यधि देवतामग्निम्—ध्या० ॐ पिंगलः श्मश्रुकेशाक्षः पीनांगजठरोऽ-रुणः । छागस्थः साक्षसूत्रोऽग्निः सप्तार्चिः शक्तिधारकः ॥ ॐ अग्निं दूतमितिमंत्रस्य विरूपाक्षऋषिर्गायत्रीछन्दो ऽग्निर्देवता ऽग्न्यावाहने वि० । ॐ अग्निंदूतंपुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवेदेवा ँ२ऽ॥ आसादयादिह । ॐ भू० अग्ने सूर्यवामे इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० ।१। तत आग्नेयदले चतुरस्रे सोमंश्वेतपुष्पैः ॐ श्वेता-म्बरः श्वेतः विभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरोद्विबाहुः । चन्द्रोऽमृता-त्मावरदः किरीटी श्रेयांसिमह्यं विदधातुदेवः । ॐ इमंदेवा इति गौतमऋषि द्विपदा विराट्छन्दः सोमोदेवता सोमावाहने वि० । ॐ इमंदेवाऽअसपत्न ँ सुवध्वंमहतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठ्याय महते जानराजायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममसुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽएषवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणा ना ँ राजा, ॐ भू० यमुनातीरोद्भव, आत्रेयसगोत्र शुक्लवर्णा भोदष्टे सर्वाभि-

मुखसोमेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० । ततः सोमदक्षिणे सोमाधि देवतामुमां सूर्याभिमुखदृष्टिं, ध्यायेत्—ॐ अक्षसूत्रंच कमलं दर्पणंचैव कन्दुकम् । उमा विभर्तिहस्तेषु पूजिताच सुरासुरैः । आ०—ॐ श्रीश्चत इति नारायणऋषि स्त्रिष्टुप्छन्द उमादेवता, उमावाहने वि० । ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वेन॰ क्षत्राणि रूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्व्व-लोक म्मईषाण । ॐ भू० सूर्याभिमुखदृष्टे उमे इहागच्छेहतिष्ठ, सुप्रति० । ततः सोमवामे प्रत्यधिदेवतामपः सूर्याभिमुखदृष्टिं ध्यायेत् ॐ अपः स्त्रीरूप धारिण्यः श्वेतामकर वाहनाः । दधानाः पाशकलशौ मुक्ताभरणभूषिताः । ॐ अप्स्वतिमेधातिथि ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, आपोदेवता अपामावाहने वि० । ॐ अप्स्व-न्तर मृतमप्सु भेषजमपामुतप्रशस्तिष्व श्वाभवतवाजिनः । देवी राप्पो योवऽऊर्मिः प्रतूर्तिः ककुन्मान्वाजसा स्तेनायंवाज ᳪ० सेत् । ॐ भू० आप इहगच्छतेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदाभवेयुः ।२। ततो दक्षिणे त्रिकोणमंडले रक्तपुष्माक्षतैर्भौमम् ध्यायेत्—ॐ रक्ताम्बरो रक्तवपुः किरीटीचतुर्भुजो मेषगमो गदाधरः । धरासुतः शक्ति-धरश्चशूली सदाममस्या द्वरदः प्रशान्तः । आ० ॐअ ग्निर्मूर्द्धेति विरूपाक्षऋषिर्गायत्रीछन्दो भौमोदेवता भौमावाहने वि० ॐ अग्नि-र्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् अपाᳪरेताᳪ सिजिन्वति । ॐ भू० । अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाज गोत्र रक्तवर्ण दक्षिणदृष्टे भौम सूर्याभिमुख इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० ॥ ततो भौम दक्षिण पार्श्वे भौमाधिदेवं सूर्याभिमुखदृष्टिं, स्कन्दं ध्यायेत्—ॐ कुमारः षण्मुखः कार्यः शिखण्डी कविभूषणः । रक्तांबर धरो देवो मयूर वरवाहनः ॥ ॐ यदक्रन्द इति दीर्घतमा ऋषिस्त्रि-ष्टुप्छन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दावाहने विनियोगः । ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽ उद्यन्त्समुद्रा दुतवा पुरीषात् । श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महिजातन्ते ऽ अर्वन ॥ ॐ भू० स्कन्दे हागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० । ततो भौमवामपार्श्वे सूर्याभिमुखदृष्टिं

भौमप्रत्यधि देवता पृथ्वीं ध्यायेत् — ॐ शुक्लवर्णा महीकार्या सर्वाभरण भूषिता। चतुर्भुजा सौम्यवपुश्चण्डांसु सदृशाम्बरा॥ आ०—ॐ स्योना पृथ्वीति मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः पृथ्वी देवता पृथ्व्या वाहने वि०॥ ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्मसप्रथाः ॐ भू० पृथ्वि, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठिता वरदाभव ॥३॥ तत ईशाने वाणाकारमण्डले पीतं बुधं ध्यायेत ॥ ॐ पीताम्बरः पीत वपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्चहारी। चर्मासिभृत्सोमसुतः सदामे सिंहाधि रूढो वरदो बुधोऽस्तु ॥ आ०—ॐ उद्बुध्यस्वेति परमेष्ठी ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो बुधो देवता बुधावाहने विनियोगः। ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्व मिष्टापूर्त्तेस टं० सृजेथा मयंच। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥ ॐ भू० मगध देशोद्भव आत्रेयस गोत्र पीतवर्ण वामहष्टे बुध सूर्याभिमुखे इहा गच्छेहतिष्ठ, सुप्रति० ॥ ततो बुध दक्षिण पार्श्वे बुधाधिदेवं विष्णु मावाहयेत्—ॐ विष्णुः कौमोदकी पद्म शङ्ख चक्रधरः क्रमात्। प्रदक्षिणं दक्षिणाधः करादारभ्य नित्यशः॥ आ०—ॐ विष्णो-रराट मितिदीर्घतमा ऋषि रुष्णिक्छन्दो विष्णुर्देवता विष्ण्वा वाहने विनियोगः ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा। ॐ भू० विष्णोऽइहागच्छेहतिष्ठ सुप्र० ॥ बुधवामपार्श्वे नारायणं ध्यायेत्—ॐ नारायणश्चतुर्बाहुः शङ्ख चक्रधरः प्रभुः। गदा पद्म धरश्चैव नीलजीमूतसन्निभः। आ०—ॐ इदं विष्णु रिनिमेधा-तिथिर्ऋषिर्गायत्री छन्दो नारायणो देवता विष्ण्वा वाहने वि०॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिनधेपदम्। समूढमस्यपा ँ सुरेस्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० ॥४॥ तत उत्तरे चतुरस्त्रे पीत मण्डले गुरुंध्यायेत्—ॐ पीतवर्णः पीतवासा अक्षसूत्र कमण्डलुम्। दण्डंस्वकीय हस्तेपु दधानो गुरुरीश्वरः। आ०—ॐ बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिस्त्रिष्टप्छन्दो

बृहस्पतिर्देवता बृहस्पत्या वाहने विनियोगः। ॐ बृहस्पते ऽ अतियदर्यो ऽ अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजा ततस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण वासहष्टे सूर्याभिमुख, गुरो इहागच्छेहतिष्ठ, सुप्रतिष्ठितो वरदोभव॥ ततो गुरु दक्षिणपार्श्वे गुरोरधि देवं ब्रह्माणं ध्यायेत्—चतुर्मुखः पद्मसंस्थो ब्रह्माकार्य-श्चतुर्भुजः। अक्षमाला श्रुवं बिभ्रत्पुस्तकंच कमण्डलुम्॥ आ०—ॐ ब्रह्मजज्ञानमिति प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता ब्रह्मावाहने वि०॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरु-चोव्वेनऽआवः। सबुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्यविष्ठाः सतश्चयोनि-मसतश्चव्विवः। ॐ भू० ब्रह्म न्निहागच्छेहतिष्ठ॥ ततो गुरुवा-मपार्श्वे गुरोः प्रत्यधि देवमिन्द्रं ध्यायेत्—ॐ चतुर्दन्त गजारूढो वज्रीकुलिशभृत्करः। शचीपतिः प्रकर्त्तव्यो नानाभरण भूषितः॥ ॐ सजोषा इति विश्वामित्र ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, इन्द्रो देवता इन्द्रावाहने वि०। ॐ सजोषा ऽ इन्द्रसगणो मरुद्भिः सोमंपिब वृत्रहाशूरविद्वान्। जहिशत्रूँ२॥ रपमृधोनुदस्वाथा भयंकृणुहि विश्वतोनः। ॐ भू० इन्द्रेहागच्छेहतिष्ठः सुप्रतिष्ठितो॥७॥० ततः पूर्वे पञ्चकोणे श्वेत मण्डले शुक्रंध्यायेत्—श्वेताम्बरः श्वेतवर्णः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः। तथा क्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डंच बिभ्रद्वरदोस्तु मह्यम्॥ आ०—ॐ अन्नात्दिति प्रजापतिर्ऋषि रतिजगतीछन्दः शुक्रोदेवता शुक्रावाहने वि०। ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रंपयः सोमंप्रजा-पतिः। ऋतेनसत्य मिन्द्रियं विपान ँ० शुक्रमंधस ऽ इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोमृतंमधु। ॐ भूर्भुवः स्वः, भोजकटदेशोद्भवः भार्गवस गोत्र शुक्लवर्णं ऊर्ध्वंहष्टे सूर्याभिमुख शुक्रेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति-ष्ठितो वरदोभव। ततोदक्षिणपार्श्वे भृगोरधिदेवमिन्द्रं ध्यायेत्—ॐ इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तोमहाबलः। सहस्रनेत्रः पीनाङ्गः शतयज्ञकरः प्रभुः। आ०—ॐ त्रातारमिन्द्रमिति गर्गऋषिस्त्रिष्टु-

ष्छन्दः, इन्द्रोदेवता, इन्द्रा वाहने वि० । ३ॐ त्रातार मिन्द्र मवितारमिन्द्र ᳪ० हवेहवे सुहव ᳪ० शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामिशक्रं पुरुहूत मिन्द्र ᳪ० स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ ३ॐ भू० इन्द्रेहागच्छेह तिष्ठसुप्रति० । भृगुवामपार्श्वे इन्द्राणीं भृगोः प्रत्यधिदेवतां ध्यायेत्—३ॐ इन्द्राणी सर्वसिद्धार्था सर्वाभरण भूषिता । वरदा मंडिता कार्या सर्वसौभाग्य दायिनी ॥ आ० ३ॐ आदित्यै राष्णा सीति दध्यङ्ङा थर्वणऋषिर्यजुश्छन्द इन्द्राणीदेवते न्द्राण्या वाहने वि० । ३ॐ आदित्यै राष्णासीन्द्राण्या ऽ उष्णीषः पूषासि धर्माय दीष्व । ३ॐ भू० इंद्राणीहागच्छेह तिष्ठसुप्र० ॥६॥ ततः पश्चिमे धनुषाकारे कृष्णमंडले कृष्णंशनि तिलाक्षत पुष्पैर्ध्यायेत—३ॐ नीलद्युतिः शूलधरः किरीटीगृध्रस्थित स्त्रासकरो धनुष्मान । चतुर्भुजः सूर्यसुतःप्रशान्तःसदास्तुमह्यं वरदोऽल्पगामी । ३ॐ शन्नो देवीति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः शनिर्देवता शन्यावाहने- वि० । ३ॐ शन्नोदेवी रभिष्टय ऽ आपोभवन्तु पीतये शंय्योरभि स्रवन्तुनः । ३ॐ भू० सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र कृष्णवर्ण सूर्याभिमुख, अधोदृष्टे शने इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रति० ॥ ततः शने र्दक्षिणपार्श्वे यममधिदेवतामावाहयेत्—३ॐ महामहिषमारूढो धर्मराजश्चतुर्भुजः । दंडखड्गौऽभयकरौयमराजोऽभयप्रद । आ० ३ॐ यमायत्वेति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दो धर्मराजो देवता यमावाहने वि० । ३ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमतेस्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मःपित्रे ॥ ३ॐ भू० यमेहागच्छेहतिष्ठ सुप्र० । शनेर्वा मपार्श्वे प्रजापति प्रत्यधिदेवं ध्यायेत्—३ॐ यज्ञोपवीती सिंहस्थ एकवक्त्रश्चतुर्भुजः । अक्षस्रजं स्रुवंविभ्रत्पुस्तकंच प्रजापतिः ॥ आ० ३ॐ प्रजापत इति हिरण्यगर्भ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवता प्रजापत्यावाहने विनियोगः ।—३ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव । यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तुव्वय ᳪ० स्यामपतयो रयीणाम् । ३ॐ भूर्भुवः स्वःप्रजापते, इहागच्छेह तिष्ठसु० ॥७॥ ततोनैऋत्ये सूर्पाकारे कृष्णमंडले राहुंतिलाक्षत

पुष्पैर्ध्यायेत्—ॐ नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी कराल वक्त्रः कर वाल शूली । चतुर्भुजश्चर्मधरश्चराहुः सिंहाधिरूढो वरदोस्तुमह्यम् । आ०—ॐ कयानश्चित्र इति वामदेव ऋषिर्गायत्रीछन्दो राहुर्देवता राह्वावाहने वि० । ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुवदूती सदा वृधः । सखाकयासचिष्ठया वृता ॥ ॐ भू० वैराटिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण दक्षिणदृष्टे सूर्याभिमुख राहो, इहागच्छेहतिष्ट सुप्रति० ॥ राहोर्दक्षिणपार्श्वे कालंध्यायेत्—ॐ जन्तुप्राणहरो कालो लेलिहानश्चस्त्रक्किणीम् । यमदूताग्रणी स्त्वंवैमाविघ्नंकुरुमे मखे । आ०—ॐ कार्षीरसिसमुद्रस्यत्वा क्षित्याऽउन्नयामि समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ ॐ भू० कालेहागच्छेहतिष्ट सुप्र० । राहोर्वामपार्श्वे राहोः प्रत्यधिदेवा न्सर्पान्ध्या येत् ॐ अक्षसूत्रधराः सर्पाः कुंडिकाचिप दंष्ट्रिणः । एक भोगा स्त्रिभोगाचा सर्वेकार्यश्चभीषणाः ॥ आ०—ॐ नमोस्त्वित्ति देवश्रवाऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः सर्पावाहने वि० । ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो येकेच पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे येदिवितेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० सर्पा इहागच्छतेह तिष्टत सुप्र० ॥८॥ ततोवायव्ये ध्वजाकारे धूम्रमंडले केतुं ध्यायेत् ॐ धूम्रोद्विबाहुर्वरदोगदाभृद्गृध्रासनस्थो विकृताननश्च ॥ किरीटकेयूर विभूषिताङ्गः सदास्तुमेकेतु गणः प्रशान्तः । आ०—केतुंकृण्वन्निति मधुश्छन्द ऋषिर्गायत्री छन्दः केतुर्देवता केत्वावाहने वि० । ॐ केतुंकृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्याऽअपेशसे । समुषद्भिरजायथा ॥ ॐ भू० अन्तर्वेदीय समुद्भवजैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण दक्षिणदृष्टे सूर्याभिमुख केत्तो, इहागच्छेहतिष्ट, सुप्रति० । केतोर्दक्षिण पार्श्वे केत्वधिदेवं चित्रगुप्तंध्यायेत्—ॐ विवेकवांश्च जन्तूनां कर्मणां गुप्तरूपतः सुकृताना मनिष्टानां चित्रगुप्तः सुवेषवान् । आ०—ॐ चित्रावसो इति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दश्चित्र गुप्तोदेवता चित्रगुप्तावाहने वि० । ॐ चित्रावसो स्वस्तिते पारमशीय । ॐ भूर्भुवःस्वः चित्रगुप्त इहागच्छेहतिष्ट, सुप्रति० ॥ केतुवामपार्श्वे केतुप्रत्यधि

देवं ब्रह्माणंध्यायेत्—ॐ हंसपृष्ठसमारूढः सिन्दूराभश्चतुर्मुखः। प्रसन्नवदनः सौम्यो ब्रह्मालोक पितामहः॥ आ—ॐ ब्रह्मजज्ञा नमिति गोतमऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मावाहने वि०॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः। सबु- ध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाःसतश्चयोनिमसतश्चविव। ॐ भू०ब्रह्मनि हागच्छेहतिष्ठ सु०॥६॥ ततोगणपत्यादिपञ्चलोकपालानावाहयेत्॥ राहोरुत्तरे गणपतिं ध्यायेत्—ॐ सिन्दूरवर्णः शुभदो गणेशो राहुसौम्यगः। नागयज्ञो पवीतीच त्रिनेत्रश्च चतुर्भुजः। ॐ गणानान्त्वेति प्रजापतिर्ऋषि यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्या वाहने वि०। ॐ गणानान्त्वा गणपति ᳦० हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति ᳦० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ᳦० हवामहे व्व- सोमम। आहमजानिगर्ब्भधमात्वमजा सिगर्ब्भधम्॥—ॐ भू० गणपते, इहागच्छेहतिष्ठ सु०। शनेरुत्तरे दुर्गाम्—ध्या०—ॐ दुर्गा चतुर्भुजासौम्या सर्वाभरण भूषिता। कालाभ्रसन्निभादेवीसर्वलोक भयापहा। ॐ अम्बेइतिप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो दुर्गादेवतादुर्गा- वाहनेवि० ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽअम्बालिकेनमानयतिकश्चन। ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। ॐ भू० दुर्गेइहागच्छेह- तिष्ठ। सु० रवेरुत्तरतोवायुम्—ॐ सर्वप्राणेश्वरः सौम्यः सर्वगंध वहः शुचीः। प्रचण्डवेगगामीच बलवांश्चसमीरणः॥ ॐ वातो वामनइति बृहस्पतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता वाय्वावाहने वि०। ॐ व्वातोवामनोवा गन्धर्वाः सप्तवि ᳦० सतिः। ते ऽ ग्रेश्वमयुञ्जंस्ते ऽ अस्मिञ्जवमादधुः॥ ॐ भू० वायोइहागच्छेहति ष्ठ सु०। राहोर्दक्षिणे आकाशम्—ॐ नीलोत्पलाभङ्गगनं तद्वर्णा- म्बरधारकः। चन्द्राऽर्कहस्तंकर्त्तव्यं द्विभुजंसौम्यदण्डवत्॥ ॐ अग्निश्चेतिविवस्वानृषिर्गायत्रीछन्दो अन्तरिक्षोदेवताकाशस्था- पने वि० ॐ अग्निश्चपृथिवीच सन्नतेतेमेसन्नमतामदो वायुश्चा- न्तरिक्षंच सन्नतेनेमेसन्नमतामदः॥ ॐ भू० आकेशेहागच्छेहतिष्ठ सु०। केतोर्दक्षिणे, अश्विनौ, ध्यायेत्—द्विभुजौदेवभिषजौ कर्त्त

श्यौदेवसंयुतौ। तयोरोपधयः कार्यादिव्यादक्षिणहस्तयोः। ॐ-याचाङ्कसेति मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः, अश्विनौदेवते अश्विनोरावाहने वि०। ॐ याचाङ्कसामधुमत्यश्विना सूनृतावतीतया यज्ञंमिमिक्षताम्॥ ॐ भू० अश्विनौ, इहागच्छतमिहतिष्ठतम् सुप्रतिष्ठितोवरदोभवेताम्॥ (संग्रहशिरोमणौ-वास्तोष्पतिंक्षेत्रपालंस्थापयेत्तु गुरूत्तरे) गुरोरुत्तरे—वास्तुपुरुषम्—ॐ क्षेत्रेशो वास्तुपुरुषः सर्वसौख्यप्रदोविभुः। नागरूपीगर्त्तशायी गृहरक्षण तत्परः॥ ॐ वास्तोष्पतीति वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वास्तोष्पतिर्देवता वास्तोष्पतिस्थापने वि०। ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मानन्त्स्वावेशो ऽ अनमीवोभवानः। यत्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्व शन्नोभव द्विपदेशंचतुष्पदे॥ ॐ भू० वास्तोष्पते,इहागछेहतिष्ठ। ततवास्तोरुत्तरे क्षेत्राधिपतिंध्यायेत—ॐ क्षेत्राधिपः क्षेत्रपालः क्षेत्ररक्षणतत्परः। सर्वसौख्यप्रदोदेवः सर्वशक्तिधरोविभुः॥ ॐ क्षेत्राधिपतयेनमः॥ ॐ भू० क्षेत्राधिपते, इहागच्छेहतिष्ठ, सुप्रति०॥ ततः क्रतुसंरक्षकानिन्द्रादि दिक्पालानावाहयेत्॥ पूर्वेन्द्रं ध्या०—ॐ एरावतगजारूढो वज्रपाणिःशचीपतिः। पुरन्दरः सहस्राक्षोनानाभरणभूषितः। ॐ त्रातारमितिगर्गऋषि स्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रोदेवता,इन्द्रावाहने वि०। ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र हं० हवेहवेसुहवं० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामिशक्रंपुरुहूतमिन्द्र हं० स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः॥ ॐ भू० इन्द्रेहागच्छेहतिष्ठ०। अग्नेये अग्निंध्या०—ॐ छागारूढः शक्तिधरः पिंगाक्षोहव्यवाहकः॥ सप्तार्चिर्जटिलोवन्हिः रक्तांगोसप्तजिह्वकः। ॐ त्वन्नो अग्नइति हिरण्यस्तूपऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो ऽ ग्निर्देवताग्न्यावाहने वि०। ॐ त्वन्नो ऽ अग्नेतवदेवपायुभिर्मघोनोरक्षतन्वश्चवन्द्य। त्रातातोक स्यानयेगवामस्यनिमेष हं० रक्षमाणस्तवव्रते। ॐ भू० अग्नेइहागच्छेहतिष्ठ सुप्र० दक्षिणेयमम्—ध्या०-ॐ महिषस्थोमहाबाहुः श्यामांगोरक्तलोचनः। यमराजोदण्डहस्तः खड्गहस्तोभयङ्करः। ॐ यम इतिप्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोयमोदेवतायमावाहने वि०।

ॐ यमश्विनासरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयत्। सविभेदवत्तंभवन्न-मुचानासुरेसचा। ॐ भू० यमेहागच्छेहतिष्ठसु०। नैर्ऋत्येनिर्ऋतिं ध्या०—ॐ रक्तहस्तपाशभृत्क्रुद्धो निर्ऋतिर्विकृताननः। प्रेतस्थः खड्गहस्तश्च ध्यातव्यः सर्वदैवतु॥ ॐ नमःसुतइत्यस्य मधुच्छन्दा ऋषिःपंक्तिश्छन्दो निर्ऋतिर्देवता निर्ऋत्यावाहने वि०। ॐ नमः सुतेनिर्ऋतेतिग्मतेजोयस्मयं विचृत्ताबन्धमेतम्। यमेनत्वंयम्या-सम्विदानोत्तमे नाके ऽअधिरोहयैनम्॥ ॐ भू०निर्ऋते, इहा-गच्छेहतिष्ठ सुप्र०। पश्चिमेवरुणंध्या—ॐ वरुणःपाशभृत्सौम्यः प्रतीच्यांमकराश्रयः, पाशहस्तात्मकोदेवो जलराश्यधिपोमहान। ॐ इमम्मे इत्यस्यशुनःशेफऋषिर्गायत्रीछन्दोवरुणोदेवतावरुणा वाहने विनियोगः। ॐ इमम्मेवरुणश्रुधी हवमद्याचमृडय। त्वामवस्युराचके॥ ॐ भू० वरुणेहागच्छेहतिष्ट सुप्र०। वायव्ये वायुम्—ॐ धावद्धरिणपृष्ठस्थोखड्गधारीमहाबलः। सर्वाभरण भूषाढ्योदिव्यमाल्यानुलेपनः। ॐ आनोनियुद्भिरिति वशिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता वायवावाहने वि०। ॐ आनोनियु-द्भिः शतनीभिरध्वर ऽ० सहस्त्रिणीभिरुपयाहियज्ञम्। वायो ऽ अस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातः स्वस्तिभिः सदानः। ॐ भू० वायो इहागच्छे हतिष्ट सुप्रतिष्ठितो०। उत्तरे सोमम्—ध्या०— ॐ दशाश्वरथगः सोमो गदापाणिर्वर प्रदः। नक्षत्राणां च सर्वेषां सोमोराजा प्रकीर्तितः॥ ॐ वयमिति बन्धु ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः कुबेरो देवता कुबेरा वाहने वि०॥ ॐ वय ऽ० सोमव्रते तवमनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि। ॐ भू० कुबेर इहागच्छेहतिष्ट सु०। ईशाने ईशंध्या० पूर्वोत्तरे त्रिनेत्रश्च वृषभस्थस्त्रिशूल धृक्। कपालपाणिश्चन्द्रार्ध्दभूषणः परमेश्वरः॥ ॐ तमीशानमिति गौतम ऋषिर्जगती छन्दः, ईशो देवता, ईशावाहने वि०। ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषानो यथावेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः—स्वस्तये। ॐ भूर्भुवः स्वः, ईशेहागच्छेहतिष्ठ

सुप्रतिष्ठितो वरदोभव ॥ ऊर्ध्व-पूर्वेशानयोर्मध्ये—ब्रह्माणम्—ॐ ब्रह्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदव्यासः पितामहः । हंसपृष्ठ समासीनः स्रुवहस्तो महाबलः । ॐ ब्रह्मणस्पत इत्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मा देवता ब्रह्मावाहने० ॐ ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधितनयञ्च-जिन्व ॥ विश्वयंतद्भद्रं यदवन्तिदेवा बृहद्वदेम विदथे-सुवीराः ॥ ॐ भू० भो ब्रह्मन्निहागच्छेहतिष्ठ सु० । ततो भूमे रधः पश्चिम नैर्ऋत्ययोरंतराले, अनन्तं ध्यायेत् ॥ ॐ फणांगाधिपतिर्देवो ऽनन्तनामा महाबलः । पातालवासी रुचिरमणि भूषण भूषितः ॥ ॐ याइषवइत्यस्य देवश्रवा ऋषि रनुष्टुप्छन्दः, अनन्तो देवता अनन्ता वाहने वि० । ॐ या ऽइषवो यातुधानानां ग्येवा व्वनस्पतिँ१ रनु । येवाव्वटेपुशेरते तेभ्यः सर्प्पेभ्योनमः ॥ ॐ भू० अनन्त, इहागच्छेहतिष्ठ ॥ इति दिक्पाल स्थापनम् ॥ (क्वचित्पुस्तकेषु वक्ष्यमाण शेषादि देवतानामत्रपूजनं नास्तिपरंचात्र गढवाल देश निवासिभिराचार्य वर्य्यैः पुरातन पद्धतिष्वेतेषां स्थापनं पूजनं चोक्तम् प्रमाण रहितत्वादपि, महाजनोयेन गतः सपन्थेतिन्यायेन साम्प्रदायित्वा तत्पूजनंवक्ष्ये) सप्रणव चतुर्थ्यन्तेन नाममन्त्रेण पूजनं कुर्यात्—यथारवेः पूर्वे—ॐ शेषायनमः, ॐ भू० स्वः-भोशेष इहागच्छेहतिष्ठ, एवंसर्वत्र सोमाग्रे—ॐ वासुकयेनमः । वासुके इ० । भौमाग्रे—ॐ तक्षकायनमः, तक्षक इहा० । बुधस्याग्रे—ॐ कर्कोटकायनमः । कर्को० । गुरोरग्रे—ॐ पद्मायनमः । पद्म इ० । शुक्रोत्तरे—ॐ महा पद्मायनमः । महापद्म इ० । शनेः पश्चिमे—शङ्खपालाय नमः । शङ्खपाल, इ० । राहोरग्रे—ॐ कम्बलायनमः । कम्बल, इहागच्छेहतिष्ठ । केतोरग्रे—ॐ कम्बलायनमः, कम्बल इ० । ततो वहिर्भूमौ-पूर्वे—ॐ अश्विन्यादि सप्तनक्षत्रेभ्योनमः । ॐ विष्कुम्भादि सप्तयोगेभ्योनमः । आवाहयामि स्थापयामिति सर्वत्र ॥ ॐ यव वालव कर्णाभ्यां नमः आ स्था० । ॐ सप्त-

-द्वीपेभ्योनमः। आ० स्था०॥ ॐ ऋग्वेदाय नमः, आ० स्था०। ततो दक्षिणे—ॐ पुष्यादि सप्तनक्षत्रेभ्योनमः आ० स्था०। ॐ धृत्यादि सप्तयोगेभ्यो नमः। आ० स्था०। ॐ कौलवतैतिल कर्णाभ्यां नमः आ० स्था०॥ ॐ सप्तसागरेभ्यो नमः आ० स्था०। ॐ यजुर्वेदायनमः आ० स्था०। पश्चिमे—ॐ स्वात्यादि सप्तनक्षत्रेभ्यो नमः। आ० स्था०। ॐ वज्रादि सप्तयोगेभ्योनमः आ० स्था०। ॐ गरवणिजकर्णाभ्यां नमः। आ० स्था०। ॐ अतलादि सप्तविवरेभ्यो नमः। आ० स्था०। ॐ सामवेदाय नमः। आ० स्था०। ततउत्तरे, ॐ अभिजितादि सप्त नक्षत्रेभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि। ॐ साध्यादि षड्योगेभ्यो नमः आ० स्था०। ॐ विष्टिकर्णाय नमः आ० स्था०। ॐ भूरादि सप्तोर्ध्वलोकेभ्यो नमः। आ०॥ ॐ अथर्ववेदाय नमः आ०। ईशाने—ॐ ध्रुवाय नम। आ०। ॐ सप्तर्षिभ्यो नमः। ॐ गङ्गादि सप्तसरिद्भ्यो नमः। ॐ सप्त कुलाचलेभ्यो नमः। ॐ अष्ट वसुभ्यो नमः। ॐ द्वादशादित्येभ्यो नमः। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। ॐ एकोनपञ्चाशन्मरुद्भ्योनमः। ॐ षोडशमातृभ्योनमः। ॐ षड्ऋतुभ्योनमः। ॐ द्वादश मासेभ्योनमः। ॐ उभाभ्यामयनाभ्यां नमः। ॐ पञ्चदश तिथिभ्योनमः। ॐ षष्टिसम्वत्सरेभ्योनमः। ॐ सुपर्णायनमः। आवाहयामि स्थापयामि॥ इति ग्रहयाग भद्रस्थ देवताः संस्थाप्य–प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात्–ॐ एतन्तेदेव सवितर्यज्ञं प्राहु बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेनयज्ञ मवतेन यज्ञपतिं तेनमामव। मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ऽ० समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामों प्रतिष्ठ। ॐ भूर्भुवः स्वः ग्रहभद्रस्थ देवताः, इहागच्छतेहतिष्ठत सुप्रतिष्ठिता वरदाभवत। इतिप्रतिष्ठाप्य सङ्घपूजनं कुर्यात्–आसनम्–ॐ नानावर्णमयंदिव्यं पवित्रंशुद्धमासनम। प्रगृह्णन्तुमयादत्तंग्रहभद्रस्थदेवताः। आवाहनम्–पूर्वमावाहितादेवा ग्रहयागार्थकर्मणि करोम्यावाहनन्तेषां

सर्वेषां सङ्कपूजने ॥ पाद्यम्—जलमेतत्तुपाद्यार्थं पात्रस्थंगन्धसंयुतम् । प्रगृह्णन्तुमयादत्तं ग्रहभद्रस्थदेवताः । अर्घ्यम्–कुशाक्षतैः समायुक्तं ताम्रपात्रस्थ मुत्तमं । अर्घ्यं गृह्णन्तुतेसर्वे ग्रहभद्रस्थ देवताः । पञ्चामृतम्—पयोदधि घृतक्षौद्र शर्करा मिश्रितं परम् । पञ्चामृतं प्रगृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । स्नानीयम्—यथालब्धं परंद्रव्यं गन्धौषधि विमिश्रितम् । जलं गृह्णन्तु स्नानीयं ग्रह भद्रस्थ देवताः । यज्ञोपवीतम्—वेदोक्त विधिना शुद्धकार्पास निर्मितानि च । उपवीतानि गृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । वस्त्राणि —दिव्य रंगैः सुरक्तानि ग्रहाणां भिन्नरूपिणाम् । वासांसि प्रति गृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । भूषणानि—भूषणार्थमिदं द्रव्यं भूषणानिचवा यथा । देशकालानुकूलंलब्धं गृह्णन्तुमेग्रहाः । चन्दनम्—कस्तूरी कुंकुमयुतं निर्मी केशर कल्पितं । चन्दनं प्रतिगृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । अक्षतान—चन्दनोपरिशोभार्थं मक्षतान्निर्मलाञ्छुभान् । प्रगृह्णन्तु मयादत्तान् ग्र० भद्र० देवताः । पुष्पाणि–ऋतुजानिच पुष्पाणि कुन्द जातिजपानिच । पत्र दूर्वाः प्रगृह्णन्तु ग्रहभद्रस्थ देवताः । धूपम्–मासी चन्दन संयुक्तं गुग्गुलेन समन्वितम् । धूपं गृह्णन्तुते सर्वे ग्रहभद्रस्थ देवताः । दीपम्–साज्यं सद्वर्त्तिकाभिश्च योजितं तिमिरापहम् ॥ दीपं गृह्णन्तुते सर्वे ग्रह भद्रस्थ देवताः । नैवेद्यम्–घृतपक्वं पयः पक्वं नैवेद्यं स्वादु चूर्णकम् । गृह्णन्तु परयाप्रीत्या ग्रहभद्रस्थ देवताः । आचमनम्–नैवेद्यांगाचमं दिव्यं शीतलं निर्मलं जलम् । करानन विशुध्यर्थं गृह्णन्तु सर्वदेवताः । उपायनम्–उपायन मिदं द्रव्यं यथावित्तो पलब्धकम् । प्रगृह्णन्तु मयादत्तं ग्रहभद्रस्थ देवताः । फलम्–पूर्गीफलं श्रीफलंच लवंगं कदलीफलम् । प्रगृह्णन्तु यथालब्धं ग्रहभद्रस्थ देवताः ॥ पुष्पाञ्जलिः—ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च ॥ गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु ॥ सूर्यः सौर्यमथेन्दुरुच्च पदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः

शुभं शशनिः ॥ राहुर्बाहुबलं करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं नित्यं प्रीति कराभवन्तु ममते सर्वेऽनुकूलाग्रहाः ॥

इति ग्रहयाग कर्मणि ग्रहस्थापन पूजन पद्धति ।

अथ ग्रहयाग विधौ ग्रहहोम पद्धतिः ॥

अथचाचार्यो यजमानेन सपत्निनासह होमकुण्ड सन्निधिमागत्यो पविश्य यजमानः पत्नीं १ स्वदक्षिणतोपवेशयित्वा होम कुण्डोत्तरभागे निर्मित २ ग्रहवेद्यां, पूर्वोक्त प्रकारेण ग्रहाना वाह्य सम्पूज्य च ॥ तत्रेशानप्रदेशे कलशंच संस्थाप्य, तस्मिन्कलशे पञ्चाशत्कुश निर्मितं चतुर्हस्तं चतुर्मुखं, ब्रह्माणं च संस्थाप्य, कलशपूजोक्त विधिना, महीद्यौरित्यादि प्रसन्नोभव सर्वदेत्यन्तं कर्मकृत्वा, कृता कृता वेक्षणरूप ब्रह्माणं च सम्पूज्य, गणेशं पुष्पांजलिं निवेद्य, होमपद्धत्यनुसारेण, अग्निस्थापनादि कर्मकृत्वा पूर्वोक्त प्रकारेण आचार्यादीन्वृत्वा, तत आचार्यो ब्रह्मोपवेशनादि पर्युक्षणान्तं कर्मकृत्वा संस्रव धारणार्थ प्रोक्षणी पात्रं अग्निप्रणीतयोर्मध्ये संस्थाप्य, द्रव्य देवताभिध्यानं कुर्यात् ॥ संकल्पः-अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकोऽहं, अमुककर्मणि नवग्रह मखे, प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, आज्येन, प्रधानानि

टि—१ स्मृति सग्रहे—व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थ्यां सहभोजनं ॥ व्रतेदान मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे ॥

टि—२ तस्य चोत्तर पूर्वेण वितस्ति त्रय संस्थितम ॥ इत्यादि महयाग परिशिष्टोक्त प्रमाणेन वेदीं निर्मापयन् ॥

सूर्यं सोमं भौमं, बुधं, गुरुं भृगुं, शनिं, राहुं, केतुं, च प्रत्येक मष्टाहुतिभिः, समिच्चर्वाज्य यवतिल द्रव्यैः ईश्वरं, उमां, स्कंदं, विष्णुं, ब्रह्माणं इन्द्रं, यमं, कालं चित्रगुप्तं, अग्निं, अपः, भूमिं, विष्णुं, इन्द्रं, इन्द्राणीं, प्रजापतिं, सर्पान्, ब्रह्माणं च तैरेव द्रव्यैः, प्रत्येकं चतुः संख्यकाहुतिभिः। विनायकं, दुर्गां वायुं आकाशं, अश्विनौ, इन्द्रं, अग्नि, यमं, निर्ऋतिं, वरुणं, वायुं, कुबेरं, ईशानं, ब्रह्माणं, अनन्तं च, तैरेव द्रव्यैः, प्रत्येकं द्विसंख्या हुतिभिः। शेषेण स्विष्टकृतं अग्निं, वायुं, सूर्यं, अग्नीवरुणौ, अग्निं, वरुणं, सवितारं, विष्णुं, विश्वान्देवान्मरुतः स्वर्कान्, वरुणं, प्रजापतिं, चाज्येनाहं—यक्ष्ये, अथच यजमानः आचार्या दीनां होम कर्त्तृत्वे यजमानस्य प्रत्याहुति यथोक्त त्यागस्या सम्भवात् संकल्प विधिना इदानीमेव सर्पेभ्यो देवेभ्यो त्यागं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहं अमुक कर्मणि नवग्रहमखे, एतत्सम्पादित मिदं समिच्चव तिलाज्य द्रव्यं, आदित्याय, सोमाय, भौमाय, बुधाय, गुरवे, शुक्राय शनये, राहवे, केतवे, ईशाय, उमायै, स्कन्दाय, विष्णवे, ब्रह्मणे, इन्द्राय, यमाय, कालाय, चित्रगुप्ताय, अग्नये, अद्भ्यः, पृथिव्यै, विष्णवे, इन्द्राय, इन्द्राण्यै, प्रजापतये, सर्पेभ्यः, ब्रह्मणे, विनायकाय, दुर्गायै, वायवे, आकाशाय, अश्विभ्यां, इन्द्राय, अग्नये, यमाय, निर्ऋतये, वरुणाय, वायवे, कुबेराय, सोमाय, ईशानाय, ब्रह्मणे, अनन्तायच, मयापरित्यक्तं तत्तद्देवताकमस्तुनमम। इतिद्रव्यत्यागं कृत्वा वरदनामाग्निंसम्पूज्य प्रतिष्ठाप्यच ब्रह्मणान्वारब्धः कुश-कण्डिकोक्तप्रकारेण प्राक्संस्थौआधारौहुत्वा समिद्धतमेग्नौआज्य-भागौचहुत्वा, अनन्वारब्धः ऋत्विक्सहिताचार्यः यथोक्तघृता-क्तसमिदादिहोमं मृगीमुद्रया १—कुर्यात्—२—अथहोममन्त्राः—

टि० १—परशुराम कारिकासु— मुक्तकनिष्ठातर्जनी मृगीमुद्राप्रकीर्तिता॥ मृगी-मोक्षेप्रकर्त्तव्या आहुतिः सर्वकामिका॥ शान्तिकेतुमुद्राज्ञेया॥ इति॥

तत्रादौकुण्डे कपिलाग्निं आवाहयेद्रक्तपुष्पाक्षतैः—ॐ भूर्भुवःस्वः कपिलाग्ने इहसन्निधोभव ॐ कपिलाग्नयेनमः, कुण्डेतस्मिन्नेवाग्नौ पाद्यगन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य—विनियोगः—ॐ आकृष्णेति हिरण्यस्तूपऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः सवितादेवता सूर्यप्रीतये कपिलाग्नौ अर्कसमिद्धोमे यथोक्तद्रव्यहोमेविनियोगः ॥ ॐ आकृष्णेनरजसा व्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतंमर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सवितारथेना देवोयातिभुवनानिपश्यन्—स्वाहा ३—ततःसूर्याधिदेवस्य—ॐ त्र्यम्बकमिति वशिष्ठऋषिरनुष्टुप्छन्दो रुद्रोदेवता रुद्रप्रीतये पलाशसमिद्धोमे (यथोक्तद्रव्य) होमे विनियोगः—ॐ त्र्यंबकंयजामहेसुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्स्वाहा ॥ ततः सूर्यप्रत्याधिदेवस्य—ॐ अग्निंदूतमिति विरूपाक्षऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता, अग्निप्रीतये पलाश समिद्धोमे बायवतिलाज्य होमे विनियोगः—ॐ अग्निंदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे । देवा २ऽ॥ ऽआसादयादिहस्वाहा॥ इदमग्नये॥

टि० २—अत्रग्रहाणांसाधिदेव प्रत्यधिदेवानांच होमानुसारेणाहुतिमानमाह संस्कारभास्करादौ अत्र द्रव्यविधाना भिधानेकेवलग्रहयागे अष्टाभिः संख्याभिः नवग्रहाणांसमिद्धोम, इष्यते । ग्रहहोमसंख्यार्द्धमधिदेवानांच अधिदेवार्धसंख्याहोमप्रत्यधिदेवानांच । अयुतलक्षकोटि होमादिषुतु, क्रमेणग्रहाणां, अष्टाष्टविंशत्यष्टोत्तर सहस्रसंख्याभवन्ति ॥ ग्रहाधिदेवप्रत्यधिदेवानान्तु अष्टाष्टाविंशति,अष्टोत्तरशतसंख्या भवन्ति, विनायकादीनां सर्वेषान्तु—चतुरष्टाष्टविंशति संख्याश्चभवन्ति ॥ नृसिंहपुराणे—अयुतादिसंख्याश्च व्याहृतिभि स्तिलाज्यहोमैनपूर्णायाइति॥

टि० ३—अत्रनवग्रहात्मकेमखे प्रधानानां सूर्यादिग्रहाणांपृथक्, २ अग्निनिर्देशेन तत्तदग्नावेवाहुतानां मधित्यर्थापि तदधि प्रत्यधिदेवानां पृथगग्निनिर्देशाभावेन स्वकीयप्रधानाग्नावेव तेषामपिसाहचर्यन्यायेन होमाविधेः प्राप्ते—(योहियस्य प्रधान तद्धिधेस्तदंगेष्वप्यति निर्दिष्टत्वात्) इति ॥

इतिसूर्य साङ्गहोमः ॥१॥ चन्द्रस्य–तत्रकुण्डे-पिंगलनामाग्निं श्वेत पुष्पाक्षतैरावाहयेत् ॥ ॐ भूर्भुःस्वः पिंगलाग्ने, इहागच्छेहतिष्ट,, ॐ पिंगलाग्नयेनमः ॥ गन्धादिभिःसम्पूज्य । ॐ इदंदेवा ऽ इति गौतमऋषिर्द्विपदाविराट्छन्दः सोमोदेवता सोमप्रीतये पिंगलाग्नौ पलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः—ॐ इमं-देवाऽ असपत्न ᳪ० सुवध्वंमहतेक्षत्राय महतेज्यैष्ठायमहते जान राजायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममुष्यपुत्रममुष्यैपुत्रमस्यैविशऽएपवोमी राजा सोमो ऽ स्माकं ब्राह्मणाना ᳪ राजास्वाहा–इदंसोमाय ॥

ततः सोमाधिदेवताउमायै—ॐ श्रीश्चतेइत्युत्तर नारायणऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः उमादेवता उमाप्रीतयेपलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्य होमेवा निनियोगः—ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् । इष्णन्निषाणमुम्म ऽ इषाणसर्व-लोकम्म ऽ इषाणस्वाहा । इदमुमायै ॥ ततःसोमप्रत्यधिदेवता द्भ्यः—ॐ अप्स्वन्तरिनिबृहस्पतिर्ऋषिरुष्णिक्छन्दः, आपो देवता, अपांप्रीतयेपलाशसमिद्धोमे, तिलयवाज्यहोमेवा विनि० । ॐ अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुतप्रशस्ति ष्वश्वाभवतव्वा-जिनः । देवीरापोयोव ऽ ऊर्मिः प्रतूर्त्तिः ककुन्मान्वाजसा स्तेना-ऽ यं व्वाज ᳪ० सेत्-स्वाहा, इदमद्भ्यः ॥२॥ इतिचन्द्रसाङ्गहोमः ततोभौमस्य तत्रः कुण्डेरक्तपुष्पाक्षतैर्धूम्रकेत्वग्निमावाहयेत्–ॐ भूर्भुवःस्वः धूम्रकेत्वग्ने, इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ धूम्रकेत्वग्नयेनमः, सम्पूज्य–ॐ अग्निर्मूर्द्धाइति विरूपाक्षऋषिर्गायत्रीछन्दः भौमो देवता भौमप्रीतये धूम्रकेत्वग्नौखदिरसमिध्दोमे, तिलयवाज्य होमेवा, विनियोगः । ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम् । अपा ᳪ रेता ᳪ सिजिन्वति-स्वाहा ॥ इदंभौमाय ॥

ततोभौमाधिदेवस्कन्दाय ॐ यदक्रन्द इति भार्गव जमदग्नि, दीर्घतमसऋषय स्त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दप्रीतये पलाशसमिध्दोमे तिलयवाज्य होमेवा विनियोगः ॥ ॐ

यदक्रन्दः प्रथमंजायमानऽ उद्यन्त्समुद्रा दुतवापुरीषात् । श्येनस्यपक्षा हरिणस्यबाहू ऽउपस्तुत्यं महिजातन्ते ऽ अर्वन्त्स्वाहा। इदंस्कन्दाय, ततो भौम प्रत्यधिदेवतायै पृथिव्यै—ॐ स्योनापृथिवीति मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः पृथिवीदेवता पृथिवी प्रीतये पलाशसमिध्दोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः॥ ॐ स्योनापृथिविनो भवान्नृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्रथाः स्वाहा । इदंपृथिव्यै । इतिभौमसाङ्गहोमः ॥३॥ अथबुधस्य—ततः कुंडेपीतपुष्पाक्षतैः जाठराग्निमावाहयेत्—ॐ भूर्भुवः स्वः जाठराग्ने, इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ जाठराग्नयेनमः । संपूज्य ॐ उद्बुध्यस्वेति परमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो बुधोदेवता बुधप्रीतये जाठराग्नौ, अपामार्ग समिध्दोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्व मिष्टापूर्त्ते स टं० सृजेथामयञ्च । अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्चसीदत स्वाहा इदंबुधाय । ततो बुधाधिदेवाय विष्णवे ॐ विष्णोरराट मिति दीर्घतमा ऋषि रुष्णिक्छन्दो विष्णुर्देवता विष्णुप्रीतये पलाशसमिध्दोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवो ऽसिवैष्णवमसि विष्णवेत्वा स्वाहा । इदंविष्णवे । ततोबुधप्रत्यधिदेवाय विष्णवे—ॐ इदंविष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिगायत्रीछन्दो नारायणोदेवता, विष्णुप्रीतये पलाशसमिध्दोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ॐ सुरेस्वाहा—इदंविष्णवे । इति बुध साङ्गहोमः ॥४॥ अथगुरोः ततः शिखिनामाग्नि पीतपुष्पाक्षतैरावाहयेत्—ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिनामाग्ने इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ शिखिनामाग्नयेनमः संपूज्य, ॐ बृहस्पति इति गृत्समद ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः बृहस्पतिर्देवता बृहस्पति प्रीतयेशिख्यग्नौ अश्वत्थसमिध्दोमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ॐ बृहस्पते ऽ अतियदर्य्यो ऽ अर्हाद्द्युमद्विभाति

ऋतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽ ऋतप्रजा ततस्मासु द्रविणंधेहि-चित्रम्—स्वाहा, इदंबृहस्पतये । ततोगुरोरधिदेवाय ब्रह्मणे—ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति प्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता ब्रह्मप्रीतये पलाशसमिध्होमे तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ॐ ब्रह्मज-ज्ञानं प्रथमंपुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः सबुध्न्याऽउपमा ऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्चव्विवः स्वाहा । ततः प्रत्यधि-देवायइन्द्राय–ॐ त्रातारमिति गर्गऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता इन्द्रप्रीतये पलाशसमिध्होमे, तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ᳪ॰ हवेहवेसुहव ᳪ॰ शूरमिन्द्रम् । ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र ᳪ॰ स्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः स्वाहा । इदमिंद्राय, इतिगुरोः साङ्गहोमः ॥५॥ अथशुक्रस्य—ततः कुंडेहा-टकनामाग्निं श्वेतपुष्पाक्षतैरावाहयेत्—ॐभूर्भुवः स्वः हाटकाग्ने इहागच्छेहतिष्ट, ॐ हाटकाग्नयेनमः इति संपूज्य ॐ अन्नात्प-रिश्रुत इति प्रजापत्यश्वि सरस्वतीन्द्राऋषयः, जगतीछन्दः शुक्रो देवता शुक्रप्रीतये हाटकाग्नौ उदुम्बर समिध्होमे तिलयवाज्यहो-मेवा विनियोगः । ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसंब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्रंपयः-सोमंप्रजातिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपान ᳪ॰ शुक्रमंधसऽइन्द्र-स्येन्द्रियमिदंपयो मृतंमधु स्वाहा । ततः शुक्राधिदेवायेन्द्राय—ॐ सजोषाइन्द्र इति विश्वामित्र ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता इन्द्रप्रीतये पलाशसमिध्होमे, तिलयवाज्यहोमेवा विनियोगः । ॐ सजोषाऽइन्द्रसगणो मरुद्भिः सोमंपिव वृत्रहा शूरविद्वान् । जहिशत्रूँ॥ ऽ रपमृधो नुदस्वाथा भयंकृणुहिव्विश्व तोनः—स्वाहा । इदमिन्द्राय । ततःप्रत्यधिदेवते इन्द्राण्यै–ॐ अदित्यैरास्ना सीतिदध्यङ्ङ् थर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दः, इन्द्राणीदेवता इन्द्राणी प्रीतये पलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्य होमेवा विनियोगः ॥ ॐ अदित्यै रास्नासींद्राण्याऽउष्णीपः पूषाऽसिघर्माय दीष्व-स्वाहा । इदमिन्द्राण्यै ॥ इति शुक्रस्यसाङ्ग होमः ॥ अथशनेः—कुंडेमहाते-

जोग्निं कृष्णाक्षत पुष्पैरावाहयेत्—ॐ भू० महातेजोग्ने इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ महातेजोग्नये नमः सम्पूज्य ॥ ॐ शन्नोदेवी रितिदध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः शनिर्देवता शनिप्रीतये महातेजोऽग्नौ शमीसमिद्धोमे वाग्यवतिलाज्य होमे विनियोगः ॥ ॐ-शन्नोदेवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये । संय्योरभिस्रवन्तुनः-स्वाहा—इदंशनये, ततः शनेरधिदेवाययमाय—ॐ असियम इति भार्गव जमदग्नि दीर्घतमस ऋषयस्त्रिष्टुप्छन्दः यमोदेवता-यमप्रीतये पलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्य होमेवा वि० । ॐ असि-यमोऽअस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितोगुह्येनव्रतेन । असिसोमेन समया व्विपृक्त ऽ आहुस्ते त्त्रीणि दिविबन्धनानि—स्वाहा ॥ इदंयमाय । अत्रोदक स्पर्शः ॥ ततः प्रत्यधिदेवायकालाय—ॐ कार्षि-रसीति प्रजापतिर्ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः कालोदेवताकालप्रीतये पलाश समिद्धो मे यवति लाज्य होमेवा विनियोगः ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रायत्वा ऽ क्षित्या ऽ उन्नयामि । समापोऽ अद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः स्वाहा । इदंकालाय- पुनरुदक स्पर्शः ॥ इतिशनेः साङ्गहोमः ॥७॥ अथराहोः—ततःकुण्डेहुताशनाग्निं कृष्णाक्षतपुष्पैरावाहयेत्—ॐ भूर्भुवःस्वः हुताशनाग्ने इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ हुताशनाग्नयेनमः सम्पूज्य ॥ ॐ कयानश्चित्र इति वामदेव ऋषिर्गायत्रीछन्दः, राहुर्देवताहुताशनाग्नौ राहु-प्रीतये दूर्वा समिद्धोमेवातिलाज्यहोमे विनियोगः । ॐ कयान-श्चित्र ऽ आभुवदूतीसदावृधः । सखाकयास चिष्टयावृतास्वाहा ॥ इदंराहवे ॥ ततोराहोरधिदेवाय कालाय—ॐ कार्षिरसीति प्रजापतिर्ऋषि रनुष्टुप्छन्दः कालोदेवता कालप्रीतयेपलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्य होमेवा विनियोगः । ॐ कार्षिरसिसमुद्रस्यत्वा ऽ क्षित्या ऽ उन्नयामि । समापो ऽ अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः स्वाहा । इदंकालाय । ततःप्रत्यधिदेवेभ्यः सर्पेभ्यः—ॐ नमोस्तुस-र्पेभ्य इति प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः सर्पाणांप्रीतये

पलाशसमिद्धोमे तिलयवाज्यहोमेचा विनियोगः। ॐ नमोस्तु-सर्पेभ्योयेकेच पृथिवीमनु। ये ऽ अन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः-स्वाहा। इदंसर्पेभ्यः। इतिराहोःसाङ्गहोमः ॥८॥ अथकेतोः (क्वचित्पुस्तके केतोरोहिताग्निदर्शनात्) ततःकुण्डेधूम्रपुष्पास्तृते रोहितनामाग्निमावाहयेत्-ॐ भूर्भुवः स्वः रोहिताग्ने इहागच्छ इहतिष्ठ, ॐ रोहिताग्नये नमः सम्पूज्य, ॐ केतुंकृण्वन्निति मधुश्छन्दा ऋषिर्गायत्रीछन्दः केतुर्देवता केतुप्रीतये रोहिताग्नौ कुशसमिद्धोमे तिलयवाज्य होमेवा विनियोगः॥ ॐकेतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथा स्वाहा। इदं केतवे-ततः केतोरधिदेवाय चित्रगुप्ताय—ॐ चित्रावसोरिति रात्रि दैवत्य ऋषिः, जगतीछन्दः चित्रगुप्तो देवता चित्रगुप्त प्रीतये पलाशसमिद्धोमेतिलयवाज्यहोमे वि० ॥ ॐ चित्रावसो स्वस्तिते पारमशीय-स्वाहा। इदं चित्रगुप्ताय। ततः केतोः प्रत्यधि देवाय ब्रह्मणे-ॐ ब्रह्मजज्ञानमिति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवता ब्रह्मप्रीतयेपलाशसमिद्धोमेवातिलयवाज्यहोमेवि.। ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः। सबुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः स्वाहा—इदं ब्रह्मणे॥ इति केतोः सांगहोमः ॥६॥ अथ विनायकादि पञ्चलोकपाला-नाम्—ॐ गणानान्त्वेति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपति प्रीतये पलाश समिद्धोमे तिलयवाज्य होमेवा विनि० ॥ ॐ गणानात्वा गणपति हँ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिहँ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिहँ०हवामहे वसोमम। आहमजा-निगर्भधमात्व मजा सिगर्भधम्—स्वाहा। इदंगणपतये ॥१॥ ॐ अम्बेअम्बिके इतिप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः दुर्गादेवता दुर्गा प्रीतये पलाशसमिद्धोमे यवतिलाज्य होमेवाविनियोगः॥ ॐ अम्बे अम्बिके ऽ अम्बालिके नमानयतिकश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥ इदं दुर्गायै ॥ ॐ वातोवेति बृहस्पति ऋषिः, उष्णिक्छन्दः वातो देवता वायु प्रीतये पलाश

समिद्धोमेवा तिलयवाज्य होमे वि० । ॐ त्वानोवा मनोवा गन्ध-
र्वाः सप्तवि ८० शतिः । ते ऽ अग्रेऽश्व मयुञ्जॅस्तेऽअस्मिनजव-
मादधुः—स्वाहा, इदंवायवे ॥ ॐ ऊर्ध्वाअस्येति प्रजापतिर्ऋषिः
उष्णिक्छन्दः आकाशो देवता आकाश प्रीतये पलाश समिद्धोमे
वायवतिलाज्यहोमे वि० । ॐ ऊर्ध्वा ऽ अस्यासमिधो भवन्त्यू-
र्ध्वा शुक्राशोचीँष्यग्नेः । द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः—स्वाहा ॥
इदमाकाशाय । ॐ याबाङ्कशेति मेधातिथिर्ऋषिः गायत्रीछन्दः,
अश्विनौदेवते अश्विनोः प्रीतये पलाश समिद्धोमेवायवतिलाज्य
होमे वि० । ॐ याबाङ्कशामधुमत्यश्विना सूनृतावती । तया
यज्ञामिमि—क्षतम् स्वाहा ॥ इदमश्विभ्याम ॥ ॐ वास्तोष्पतीति
वशिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वास्तोष्पतिर्देवता वास्तोष्पति प्रीतये
पलाशसमिद्धोमे, वायवतिलाज्यहोमे वि० । ॐ वास्तोष्पते
प्रतिजानी ह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवो भवानः । यत्वेमहे प्रति-
तन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदे शञ्चतुष्पदे—स्वाहा ॥ इदं वास्तो-
ष्पतये । ॐ क्षेत्राधिपतये स्वा० । अथेन्द्रादिलोकपालानाम् ॐ
त्रातारमितिगर्गऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रोदेवता इन्द्रप्रीतयेपालाश-
समिद्धोमे वा तिलयवाज्य होमे वि० । ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार
मिन्द्र ८० हवेहवे सुहव ८० शूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरुहूत
मिन्द्र ८० स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः—स्वाहा । इदमिन्द्राय ।
ॐ अग्निंदूतमिति विरूपाक्ष ऋषिः गायत्री छन्दः, अग्निर्देवता
अग्नि प्रीतये पलाश समिद्धोमेवा यवतिलाज्य होमे विनियोगः ।
ॐ अग्निंदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे । देवा ँ॥ऽ आसादया
दिह—स्वाहा । इदमग्नये । ॐ यमइति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छदो
यमोदेवता यमप्रीतये पलाश समिद्धोमेवा तिलवाज्यहोमे वि० ॥
ॐ यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्र मवर्धयन् । सविभेदवत्तं
भवन्नमुचाना सुरेसचा—स्वाहा । इदंयमाय ॥ अत्रोदक स्पर्शः ॥
ॐ नमः सुत इत्यस्य मधुश्छन्दा ऋषिः पंक्तिश्छन्दो निर्ऋतिर्दे-
वता निर्ऋति प्रीतये पलाश समिद्धोमेवा तिलयवाज्य होमे

वि० । ॐ नमः सुतेनिर्ऋतेतिग्मतेजो यस्मयं विचृत्ताबन्धमेनम् स्वाहा ॥ इदं निर्ऋतये ॥ ॐ इमम्म इत्यस्य शुनः शेफ ऋषि, गायत्रीछन्दो वरुणो देवता वरुण प्रीतये पलाशसमिद्धोमे.वातिल यवाज्यहोमे वि० ॐ इमम्मे वरुण श्रुधी हवमद्याचमृडयत्वामव-स्युराचके स्वा० इदं वरुणाय। ॐआनोनियुद्भिरितिवशिष्ट ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोवायुर्देवतवायुप्रीतये पलाशसमिद्धोमेवा तिलयवाज्यहोमे वि० । ॐ आनोनियुद्भिः शतनीभिरध्वर ई० सहस्रिणीभिरुप-याहि यज्ञम् । वायो ऽस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयंपातः स्व-स्तिभिः सदानः—स्वाहा इदंवायवे । ॐ वयमिति वन्धुऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः कुबेरो देवता कुबेर प्रीतये पलाश समिद्धोमेवा ति-लयवाज्य होमे वि० । ॐ वयम् ई० सोमव्रते तवमनस्तनूषु विभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि–स्वाहा । इदं कुबेराय । ॐ तमी-शानमिति गौतम ऋषिर्जगती छन्दः ईशानो देवता, ईशानप्रीतये पलाशसमिद्धोमेवा तिलयवाज्य होमे वि० ॥ ॐ तमीशानंजग-तस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्व मवसेहूमहेवयम् । पूषानो यथावेद सामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये–स्वाहा, इदमीशानाय ॐ ब्रह्मणस्पत इत्यस्य याज्ञवल्क्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, ब्रह्मादेवता ब्रह्म प्रीतये पलाशसमिद्धोमेवा तिलयवाज्य होमे वि० । ॐ ब्रह्मणस्पतेत्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधितनयंच जिन्व । विश्वं तद्भद्रं यदवन्तिदेवा बृहद्वदेम विदथेसुवीराः—स्वाहा । इदं ब्रह्मणे ॥ ॐ याऽइषव इत्यस्य देवश्रवा ऋषि रनुष्टुप्छन्दः, अन-न्तो देवता अनन्त प्रीतये पलाश समिद्धोमेवातिलयवाज्य होमे वि० ॥ ॐ याऽइषवो यातुधानानां येवावनस्पतीँ २ँ॥ रनु । येवा ऽवटेषुशेरतेतेभ्यः सर्वेभ्योनमः स्वाहा इदमनन्ताय ॥ ॐ विश्वक-र्म्मन्निति भरद्वाजः शाशऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो विश्वकर्मा देवता विश्वकर्म्म प्रीतये पलाश समिद्धोमेवा तिलयवाज्य होमे वि० ॥ ॐ विश्वकर्म्मन्हविषा वर्द्धनेनत्रातारमिन्द्र मकृणोरवध्यम् । तस्मैविशः समनमन्तपूर्वीरयमुग्रोविहव्यो

यथासत्—स्वाहा । इदं विश्वकर्म्मणे अनः परं शेषा दीनां होमंनाम मंत्रैर्जुहुयात्--ॐ शेषाय स्वाहा, इदं शेषाय । ॐ वासुकये स्वाहा, इदंवासुकये । ॐ तक्षकाय स्वाहा इदं तक्षकाय । ॐ कर्कोटकाय स्वाहा, इदं कर्कोटकाय । ॐ पद्माय स्वाहा, इदंपद्माय । ॐ शंखपालाय स्वाहा, इदं शंखपालाय । ॐ महापद्मायस्वाहा, इदंमहापद्माय । ॐ कंवलायस्वाहा इदं कंवलाय । ॐ अश्विन्यादि सप्तकेभ्यः स्वाहा । इदमश्विन्यादिभ्यः । ॐ विष्कुंभादि सप्तकेभ्यः स्वाहा, इदंविष्कुंभादिभ्यः ॐ ववबालव कर्णाभ्यां स्वाहा, इदंववादिभ्याम् । ॐ सप्त द्वीपेभ्यः स्वाहा, इदंसप्तद्वीपेभ्यः । ॐ ऋग्वेदायस्वाहा । इदं ऋग्वेदाय । ॐ पुष्यादि सप्तकेभ्यः स्वाहा, इदं पुष्यादिभ्यः । ॐ धृत्यादि सप्तकेभ्यःस्वाहा, इदंधृत्यादिभ्यः । ॐ कौलवतैति लाभ्यां स्वाहा, इदंकौलवादिभ्याम् । ॐ लवणादि सप्तसागरेभ्यःस्वाहा, इदंलवणादिभ्यः । ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा, इदंयजुषे । ॐ स्वात्यादि सप्तकेभ्यः स्वाहा इदंस्वात्यादिभ्यः । ॐ वज्रादि सप्तकेभ्यः स्वाहा । इदं वज्रादिभ्यः । ॐ गरवणिजकर्णाभ्यां स्वाहा, इदंगरादिभ्याम् । ॐ अतलादि सप्तविवरेभ्यः स्वाहा । इदमतलादि सप्तकेभ्यः । ॐ सामवेदायस्वाहा । इदंसामवेदाय । ॐ अभिजितादि सप्तकेभ्यः स्वाहा, इदमभिजितादिभ्यः । ॐ साध्यादि षड्भ्यः स्वाहा, इदंसाध्यादिभ्यः । ॐ विष्टिकरणाय स्वाहा, इदं विष्ट्यै । ॐ भूरादिसप्तोर्ध्वलोकेभ्यःस्वाहा, इदंभ्वादिभ्यः । ॐ अथर्ववेदायस्वाहा, इदमथर्वाय । ॐ ध्रुवायस्वाहा इदंध्रुवाय । ॐ सप्तर्षिभ्यःस्वाहा, इदंसप्तर्षिभ्यः । ॐ गंगादि सरिद्भ्यः स्वाहा । इदं० । ॐ सप्तकुलाचलेभ्यः स्वाहा, इदं० । ॐ अष्टवसुभ्यःस्वाहा, इदं० । ॐ द्वादशादित्येभ्यःस्वाहा, इदं० । ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा । इदं० रुद्रेभ्यः । ॐ एकोनपंचाशन्मरुद्भ्यः स्वाहा, इदं० । ॐ षोडशमातृभ्यःस्वाहा, इदं० । ॐ षड् ऋतुभ्यः स्वाहा, इदं० । ॐ मासेभ्यः स्वाहा, इदं० । ॐ अयना-

भ्यां स्वाहा, इदं० । ॐ निधिभ्यःस्वाहा, इदं० । ॐ षष्टिसंवत्सरे भ्यः स्वाहा, इदं० ॐ सुपर्णाय स्वाहा, इदं सुपर्णाय,,—एवंविधिना ग्रहयागस्थ देवान्हुत्वा ततः स्विष्टहोमं कुर्यात् ॥ स्विष्ठ होमावसाने—ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृतेन मम ॥ अथ भूरादि नवाहुति होमः— घृतेन—पातित वामजानुः ब्रह्मणान्वारब्धो भूरादि नवाहुतयःकुर्यात्—ॐ व्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्यादेवताः, प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ॐ भू० स्वाहा, इदमग्नयेनमम । ॐ भुवः स्वाहा, इदंवायवे नमम । ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्यायन मम । ॐ त्वन्नो अग्ने इतिवामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, अग्नी वरुणौदेवते सर्वप्रायश्चित्त होमे वि० । ॐ त्वन्नो ऽ अग्ने व्वरुणस्यव्विद्वान्देवस्यहेडो ऽ अवयासि सीष्ठाः । यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानोव्विश्वाद्वेषा ँ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा । इदमग्नी वरुणाभ्यांनमम ॥ ॐ सत्वन्नो अग्ने इति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरुणौदेवते सर्वप्रायश्चित्तहोमे वि० ॥ ॐ सत्वन्नोऽअग्ने ऽअवमो भवोतीने दिष्टो ऽ अस्या ऽ उषसोव्युष्टौ । अवयक्ष्वनो व्वरुण ँ० रराणो व्वीहिमृडीक ँ० सुहवोन ऽ एधिस्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॥ ॐ अयाश्चाग्ने इति प्रजापतिर्ऋषिर्विराट्छन्दो अग्निर्देवता सर्व प्रायश्चित्त होमे वि० । ॐ अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व मयाऽअसि । अयानो यज्ञंव्वहास्ययानोधेहि भेषज ँ स्वाहा । इदमग्नये नमम । ॐ येतेशतमिति शुनःशेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणः सविता विष्णुर्विश्वे देवा मरुतः स्वर्काश्चदेवताः सर्वप्रायश्चित्त होमे वि० । ॐ येतेशतंव्वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशाव्वितता महान्तः । तेभिर्न्नो ऽ अद्यसवितोत व्विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा—इदं वरुणायसवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम ॥ ॐ ॐ उदुत्तममिति शुनः—शेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता सर्व प्रायश्चित्त होमे वि० ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्मदवाधमं व्वि-

मध्यमॐअयाय, अथाव्वयम। दित्यव्रतेतवा ऽनागसो ऽ अदितये स्याम-स्वाहा, इदंवरुणायसवित्रे (आज्यातिरिक्त द्रव्यहोमे-स्वि ष्टकृध्दोमो व्याहृत्यादि होमात्प्रागेवाचरे दिति हरिहरः) केवला ज्यहोमे त्विदानींस्विष्टकृद्भवति, ततोवर्हिहोमः, ॐ स्वाहा, प्रजापतयेनमम, ततः संस्रवंप्राश्यद्विराचम्य, पवित्राभ्यां प्रणीता जलेन, ॐ सुमित्रियान ऽ आप ऽ ओषधयः सन्तु, इतिमार्जनं कृत्वा, ॐ स्वाहा, वन्हौप्रक्षिपेत, ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयो ऽ स्मान्द्वेष्टियं च वयं द्विष्मः, इत्यग्नेः पश्चात्प्रणीता विमोकंकृत्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ अद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्य, अमुकोहंग्रह यागोक्त होमानुष्ठान विधिना, अमुकहोमकर्मणः सांगफलाप्तये,- अपूर्णपूर्णनार्थच इदंपूर्णपात्रं सदक्षिणंब्रह्मणे, अमुकशर्मणे ब्राह्म- णायतुभ्यमहंसम्प्रददे ॥ ॐ तत्सन्नमम, इतिदत्वा, यजमानोवा आचार्योपठेत्—ॐ अकर्म्कर्मकर्मकृतः सद्दवाचामयोभुवा । देवे- भ्यःकर्मकृत्वा ऽ स्तं प्रेतसचाभुवः । ततः पूर्वोक्तप्रकारेण स्त्रुक् स्त्रुवयोर्मार्जनंकृत्वा, ग्रहेभ्योवेद्युत्तरभागे वापूर्वभागे परिभाषोक्त ग्रहभक्ष्यद्रव्यैः, यथा गुडोदनंरवेर्दद्याद्वा, पायसेन, वामापदधि भक्तेनवलिदानंकुर्यात ॥ सचायंक्रमः—ततोग्रहाणांवलीन् ज्वल द्वर्तिकांस्त्रिभिः पुटकैःपृथक्पृथक् साधिप्रत्यधि देवताभ्यश्च नव- त्रिकंसंस्थापनं सदक्षिणश्चकुर्यात् ॥ अथसूर्यादित्रिकस्य, वलिदा- नम्—ततःपुटकत्रिकंसम्मुखेकृत्वाचम्य, हस्तेजलंगृहीत्वा—ॐ सूर्यायसाङ्गाय सपरिवाराय सायुधायसशक्तिकायैवं दक्षिणभागे त्र्यम्बकाय सूर्याधिदेवाय साङ्गायसपरिवाराय सायुधायसशक्ति- काय, वामे-अग्नये प्रत्यधिदेवाय, सां० स० सशक्तिसायु० एता न्सदीपान्पायसांश्च गुडोदनवलीन्समर्पयामि ॥ वलिसमर्प्यसम्प्र- र्थयन ॥ हस्तेजलंगृहीत्वा, भोभोसूर्य साधिदेवप्रत्यधिदेवाभ्यां सहैतानवलीन्प्रगृह्णीत ॥ भवन्तोममयजमानस्य वाममसकुटुम्ब- स्य, आयुष्कर्त्तारः क्षेमकर्त्तारः, शान्तिकर्त्तारः, पुष्टिकर्त्तारः, तुष्टिकर्त्तारोभवन्तु ॥ वा—मण्डलेशांश्चवोज्ञात्वा यूयंसम्यक्

निवेदितान् । रक्षार्थयजमानस्यप्रगृह्णीत शुभान्बलीन् ॥ एवंसर्वत्र ततश्चन्द्रादीनां—हस्तेजलंगृहीत्वा—ॐ चन्द्रायसाङ्गाय सपरिवाराय सायुधायसशक्तिकाय दक्षिणपार्श्वे-पार्वत्यै चन्द्राधिदेवतायै सा० । वामपार्श्वे-अद्भ्यश्चन्द्रप्रत्यधि देवेभ्यश्चसांगेभ्यः एतान्स दीपान् बलीन्स मर्पयामिवोनमः, भो भो सोमसाधिदेव प्रत्यधिदेवसहैतान्बलीन्प्रगृह्णीन ॥ भवन्तो ममयजमानस्यममवा सकुटुम्बस्य आयुष्कर्त्तारः क्षे० शा० तु० पु० भवन्तु । मण्डले शांश्च० इति बल्युपरिजलंक्षिपेत् ॥ ततो भौमादीनाम्—ॐ भौमायसा० दक्षिणपार्श्वे-स्कन्दाय भौमाधिदेवायसाङ्गाय० वाम पार्श्वेपृथिव्यै भौमप्रत्यधिदेवतायै, साङ्गायै० एतान्बलीन्सदीपान्समर्पयामिवोनमः । भोभोभौम साधिदेवैः प्रत्यधिदेवैः सहैतान्बलीन्गृहाण भवन्तो ममयजमानस्य ममवासकुटुम्बस्य सपरिवारस्य० आयुष्कर्त्तारः क्षे० शा० तु० पु० भवन्तु । मण्डलेशांश्च० ॥३॥ ततोबुधादीनाम्—ॐ बुधायसाङ्गाय, सपरिवाराय० । दक्षिणपार्श्वे—विष्णवेबुधाधिदेवाय साङ्गाय० । वामपार्श्वे—विष्णवे प्रत्यधिदेवाय साङ्गाय० एतान्सदीपा न्बलीन्समर्पयामिवोनमः । भोभोबुधसाधिदेवैः प्रत्यधिदेवैः सहैतान्बलीनगृहाण । भवन्तो ममयजमानस्य ममवा सकु० सपरि० आयुष्कर्त्तारः क्षे० शा० तु० पु० भवन्तु ॥ मण्डलेशांश्च० ॥४॥ ततोगुर्वादीनां—ॐगुरवेसांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय, दक्षिणपार्श्वे ब्रह्मणे गुर्वधिदेवाय साङ्गाय । वामे इन्द्रायगुरुप्रत्यधिदेवाय सांगाय० । एतान्सदीपान्बलीन्समर्पयामि वोनमः । भोभोगुरोसाधिदेवैः सहैतान्बलीन्गृहाण । भवन्तः, ममय० ममवास कु० सपरि० आयुष्कर्त्तारः क्षे० शा० तु० पुष्टिकर्त्तारोभवन्तु । मण्डलेशांश्चवोज्ञात्वा यूयं सम्यक् निवेदितान । रक्षार्थयजमानस्य प्रगृह्णीतशुभान्बलीन् । इ० जलं वि० ॥५॥ ततः शुक्रादीनां—ॐ शुक्राय साङ्गाय, सपरि० सायु० सशक्ति० दक्षिणेइन्द्राण्यशुक्रप्रत्यधि देवायसांगाय० वामे इन्द्राण्यै शुक्रप्रत्यधिदेवतायै सायुधायै, सशक्ति० सपरिवारायै

एतान्सदीपान्वलीन्समर्पयामिवोनमः । भोभो भृगोसाधिदेवैः प्रत्यधिदेवैः सहैतान्वली न्गृहाण ॥ ममयजमानस्य ममवा सकु० सपरि० आयुष्कर्त्तारः क्षे० शा० तु० पुष्टिकर्त्तारोभवन्तु । मण्डले शांश्च० ॥६॥ ततः शनिश्चरादीनां—ॐ शनिश्चराय सां० सप० सा० सशक्तिकाय, दक्षिणे यमायाधिदेवाय सां० स० सश० सायुधाय । वामे—प्रजापतये प्रत्यधिदेवाय सां० सप० सा० सशक्तिकाय, एतान्सदीपान्वलीन्समर्पयामिवोनमः, भोभो शनेसाधिदेवैः सहैतान्वलीन्गृहाण ॥ ममयजमानस्य ममवा सकु० सपरिवा० आयुष्कर्त्तारः क्षे शा० तु० पु० भवत । मण्डलेशांश्चवो० ॥७॥ ततोराह्वादीनाम्—ॐ राहवे सां० सप० सा० स० दक्षिणे कालाय सां० स० सा० सक्ति० वामे सर्पायप्रत्यधिदेवायसां० स० सा० सशक्तिकाय एतान्सदीपान्वलीन्समर्पयामिवोनमः । भोभो राहोसाधिदेव प्रत्यधिदेवैः सहैतान्वलीन्गृहाण ॥ भवन्तः ममयजमानस्य ममवासपरि० सकु० आयुष्कर्त्तारः क्षे० शा० तु० पुष्टिकर्त्तारोभवन्तु, मण्डलेशांश्च२ ॥८॥ ततः केत्वादीनाम्—ततः केतवेसांगाय सपरिवाराय साधुधायसशक्तिकाय दक्षिणे—चित्रगुप्तायसांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय-वामेब्रह्मणे प्रत्यधिदेवाय सां० स० सा० सशक्ति० । एतान्सदीपान्वलीन्समर्पयामिवोनमः ॥ भोभो केतोसाधिदेवैः सहैतान्वलीन्गृहाण-भवन्तः, ममयजमानस्य ममवासपरिवारस्य सकुटुम्बस्य आयुष्कर्त्तारः क्षेमकर्त्तारः शान्तिकर्त्तारः तुष्टिकर्त्तार पुष्टिकर्त्तारो भवंतु । मंडलेशांश्चवोज्ञत्वा यूयंसम्यक् निवेदितान् । रक्षार्थं यजमानस्य प्रगृह्णीत शुभान्वलीन् ॥९॥ अथ विनायकादीनाम्—ॐ विनायका सां० एषसदीप वलिर्नमः भोभो विनायक एतंसदीपं वलिंगृहाण मम सपरिवारस्य आयु० क्षे० शा० तु० पु० भव, मंडलेसंप्रवक्ष्यामि मया भक्त्यानिवेदितम् । यजमानस्य रक्षार्थं गृहाणवलिमुत्तमम् ॥ ततोदुर्गायै—ॐ दुर्गायै सांगायै

सपरिवाराये० एषसदीपवलिर्नमः । भो भो दुर्गे एतंसदीपंवलिं गृहाण ममसकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुष्कर्त्री क्षेमकर्त्री तु० पुं० भव, मण्डले सं० ॥२॥ तत आकाशाय—ॐ आकाशाय सांगाय स० सा० सश० एषसदीप वलिर्नमः । भो आकाश, एतं सदीपं वलिं गृहाण । ममयज० ममवासकु० सप० आयुष्कर्त्ता शा० पु० तु० भव, मण्डलेसं० ॥३॥ वायवे—ॐ वायवे सां० एषसदीपवलिर्नमः । भो वायो एतं सदीपं वलिं गृहाण । मम-यज० ममवा आयुष्कर्त्ता क्षे० शा० तु० पुष्टिकर्त्ताभव, मण्डले सं० ॥४॥ ततो अश्विभ्याम्—ॐ अश्विभ्यां सांगाय सपरिवा-राय सायुधाय सशक्तिकाय एषसदीपवलिर्नमः । भो अश्विनौ एतं सदीपं पायं सवलिं गृण्हीतम्, सपरि० ममयज० आयुष्क-र्त्तारौ क्षेमकर्त्तारौ शा० पु० तु० भवेवम्, ततो लोकपालेभ्यो लोकपाल वलिदान पद्धत्युक्त प्रकारेण वलींन्दद्यात् ॥ क्षेत्रपालाय वायव्ये क्षेत्रपाल वेदीसन्निधौदद्यात । तत्रैवोक्तम् ॥ वास्तुमण्डो परि दीक्षादि विधौ दीक्षांग वास्तु वल्युक्त प्रकारेण दद्यात । प्रतिष्ठादौ प्रतिष्ठा वास्तु वल्युक्त प्रकारेण दद्यात् । तत आचम्य, द्यौःशान्तिरितिपठित्वा आत्मानं मार्ज्जयित्वा, ततो होमकुण्ड सन्निधावागत्य, भार्यादक्षिणत उपवेशयित्वाचम्य, सङ्कल्पः— अद्येत्यादि० अमुकोहं ममामुकस्य चातुर्वर्गसिद्धये, ग्रहयागोक्त प्रकारेणा मुकनिमित्तकामुकहोमकर्मणो न्यूनातिरिक्त दोषपरिहा-रार्थं मृडाग्नौ अपूर्ण पूर्णता सिद्धये पूर्णाहुति होमं करिष्ये, ततः कुण्डे, ॐ मृडाग्नये नमः, मन्त्रेण गन्धादिभिर्मृडनामाग्निं सम्पूज्य ॥ पुत्रादि बन्धुवर्गान्वाम भागे कृत्वा भार्या दक्षिणतः सर्वे उत्तिष्ठन्तः सन्तः ॥ घृताभिघारितं पीतपटाच्छादितं श्रीफ-लंच सशाकल्यं हस्ते निधाय, भार्यापि स्वदक्षिणहस्तं पतिहस्त सलग्नं कृत्वा सर्वेप्येव हवनं द्रव्यंवा तद्वच्छ्रीफलादिकानि स्व स्व निधाय । ॐ पूर्णादर्वीति मन्त्रस्योर्णनाभ ऋषि रनुष्टुप्छन्दः

शत क्रतुर्देवता पूर्णाहुति होमे विनियोगः ॥ ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ᳪ॰ शतक्रतो। ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रावसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेनत्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः—स्वाहा ॥ इति मन्त्राभ्यां श्रीफलं कुण्डे प्रक्षिप्त्वा ॥ वक्ष्यमाण मन्त्रेण स्रुवेणाविच्छिन्न घृतधाराभिर्जुहुयात् ॥ ॐ सप्त इत्यस्य सप्तर्षिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता अग्नितृप्तये घृतावच्छिन्नधारा पूर्णाहुत्यन्ते होमेच विनियोगः—ॐ सप्तते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्तऋषयः सप्तधाम प्रियाणि। सप्तहोत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्तयोनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा, इति द्वादशधा स्रुवेणहुत्वा, ततः प्रदक्षिणा चतुष्टयं कृत्वा। वक्ष्यमाणमंत्रैः अग्निप्रतपन पूर्वक पाणिभ्यां सर्वाङ्गान्युपस्पृशेयुः। मन्त्रा—ॐ अङ्गानिचम ऽ आप्यायताम्—इति सर्वांगंस्पृशेत ॥ ॐ वाक्चम ऽ आप्यायताम्। इतिमुखंस्पृशेत। ॐ प्राणश्चम ऽ आप्यायताम्—नासिकांस्पृशेत् ॥ ॐ चक्षुश्चमऽआप्यायताम्—इति नेत्रे, स्पृशेत् ॥ ॐ श्रोत्रंचम ऽ आप्यायताम्—कर्णौस्पृशेत ॥ ॐ यशोवलंचम ऽ आप्यायताम्—बाह्वोः स्पृशेत। तत हस्तौप्रक्षाल्य. ततः सर्वेऋत्विजः कस्मिंश्चित्पात्रेसदुग्ध जलकुशैः होमसंख्यायाः दशमांसानि तर्पणानि कृत्वा, तर्पण संख्या दशमांशंमार्जन मप्या चरन्तु ॥ ततः त्र्यायुषकरणं—ॐ त्र्यायुषमिति जमदग्नि ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः शिवो देवता त्र्यायुषकरणे विनियोगः। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः। ललाटे धारयेत्। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषुत्र्यायषम्—दक्षिणांसे, ॐ तन्नो ऽ अस्तु त्र्यायुषम्—हृदये ॥ ततः पुनरावाहित देवानग्नि च सम्पूज्य ॥ सूर्यादि ग्रहाणां शान्त्यर्थं, दानानि कुर्यात—सूर्याय कपिलांगाम्। चन्द्रायशङ्खम्। भौमाय रक्तवृषभम्। बुध गुरुभ्यां सुवर्णं। शुक्रायश्वेताश्वंवाजिताश्वं। शनये कृष्णांगाम्। राहवे खड्गं। केतवे कवेरछागम्। यथोक्तालाभे वित्तानुसारेण दानानिकृत्वा।

। आचार्यादीनां दक्षिणादानं—वैशंपायनः—सर्वेषामथवा-
वो दातव्या हेम भूषिताः । शय्यादानम्–शय्यादानं ततः
र्पादाचार्याय निवेदयेत् । यतो दक्षिणा सङ्कल्पः—अद्येत्यादि
ाकालौ संकीर्त्य, अमुक राशिरमुक गोत्र प्रवरो ऽ मुकोहम् ।
मुक कर्मनिमित्तकस्यामुक कामनया कृतस्य ग्रहयाग कर्मणो ऽ
। चातुर्वर्गार्थसिद्ध्ये, श्रीपरमेश्वर यज्ञपुरुष प्रीतये, साद्गुण्या-
च, वामुकदेवतायास्तुष्ट्यर्थं, इदं सुवर्ण मुद्रां, वा सुवर्णमुद्रा-
ष्क्रयी भूताः रजतादि मुद्राः, इमां दक्षिणां च, आचार्याय,
ह्मणे, ऋत्विग्भ्यो, जापकेभ्यो द्वारपालेभ्यः सदस्या-
ार्याय च यथांशेन विभज्य दास्ये, ॐ तत्सन्नमम ॥ इति
त्वा, आचार्याय मण्डपदानम् वायवीये–मण्डपं गुरवेदद्याद्या-
ोपकरणैःसह ॥ अशक्तश्चेत्तन्निष्क्रयीभूतं द्रव्यंगांचवा दद्यात् ॥
था कर्मान्ते गोदानंकृत्वा ततो भूयसीसंकल्पः—अद्येत्यादि०
ामुकोऽहं ग्रहयागकर्मणः सांगफलाप्तये न्यूनातिरिक्त दोषपरि-
ारार्थं इमांभूयसीं दक्षिणांच, नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो
िभज्यदास्ये । ॐ तत्सन्नमम । ततोब्राह्मण भोजनसंकल्पः—
ाद्येत्यादि० मयाकृतैतद् ग्रहयाग कर्मणः साद्गुण्यार्थं, पक्वान्नेन
थासंख्यकान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये, ततो घृतच्छायादर्शनं पद्धत्युक्त
कारेणकृत्वा। तत उत्तरेशानांतरालेस्नानवेद्यां, सपरिवार सप-
नीकंयजमानं होमकुंडस्थेशान बृहत्कलश जलेनआचार्यादयः,
त्थाय पूर्वोक्तवैदिकपौराणिकमंत्रैरभिषिक्तंकुर्युः । ततोमंत्रा-
भिषेकानन्तरं संभवेसति, उद्वर्त्तनपूर्वकं यज्ञान्तं स्नानंकृत्वा
इदनींगंगाप्रदेश निवासिनो वादित्रादिपुरसरंजलयात्रां
ामनिवासिभिःसहगंगास्नानं कुर्वन्तितत्रैवोद्वर्त्तनेन स्नास्यंतीति
ारासमाचारः) नूतने वाससीपरिधाय, सचैलस्नान वस्त्राण्या-
ार्यादद्यात्। होमकुंड सन्निधावागत्य, तिलककरणं ॐ भद्रमस्तु
्त्यादि पूर्वोक्त पध्दत्या नुसारा दाशीर्वादं गृहीत्वा, ततोमंड-
स्थ देवतानामुत्तराङ्ग, पूजनंविधाय—प्रदक्षिणा चतुष्टयंकृत्वा,

मंडपेसमागत्य, हस्तेपुष्पाक्षतान्गृहीत्वा वक्ष्यमाण मंत्रैस्तत्रतत्र विकिरेत्—विसर्जन मंत्राः—ॐ गच्छगच्छगणेशत्वं, विघ्नसंघ-निवारण, इष्टकामसमृध्यर्थं पुनरागमनंकुरु । ॐ ब्रह्मंस्त्वंगच्छ वैकुंठे सर्व कर्मप्रसाधक । विष्णो त्वंगच्छगोलोके कैलासेत्वं महेश्वर । लक्ष्मीत्वं विष्णुपार्श्वंच स्वभर्त्तारमनुव्रज । रवेगच्छ-कलिंगेत्वं चन्द्रत्वंयमुनातटे । अवन्तिगच्छभौमत्वं बुधत्वं मग-धेव्रज । गुरोव्रजसिन्धुदेशे भृगोभोजकटेव्रज । मंदत्वंगच्छ-सौराष्ट्रेराहोपैठीनकंव्रज । केतोन्तर्वेदींगच्छत्वं स्वंस्वंस्थानं नव-ग्रहाः । इन्द्रामरावतींगच्छ तथाग्नेयींचपावक । यमसंयमनींगच्छ नैर्ऋतींव्रज निर्ऋते । वरुणांभोनिधौगच्छ सर्वत्रव्रजमारुतः गच्छा लकांकुबेरत्वमीशेशानीं दिशंव्रज । ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम् । इष्टकामसमृध्यर्थं पुनरागमनायच । ततो होमकुण्डे-ॐ भोभोवन्हे महाशक्ते सर्वकर्म प्रसाधक । कर्मान्त रेपिसंप्राप्ते सान्निध्यं कुरुसादरम् । गच्छत्वं भगवन्वन्हे कुंडम-ध्यात्सुरेश्वर ॥ यत्रब्रह्मादयो देवास्तत्रगच्छ हुताशन ॥ ॐ चतुर्भिश्चचतुर्भिश्चद्वाभ्यांपंचभिरेवच । हूयतेचपुनर्द्वाभ्यांसमे विष्णुः प्रसीदतु । हस्तेजलंगृहीत्वा ॐ कायेनवाचामनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मनावा प्रकृतिः स्वभावात् । करोमियद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि । अनेन ग्रहयागकर्मणा श्रीयज्ञपुरुषो महाविष्णुः प्रीयताम् । ॐ तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ततो ब्राह्मण भोजनं कारयेत् ।

इति ग्रहयाग होम पद्धति ।

॥ अथ भूमि परीक्षा पूजनं ॥

श्री गणेशायनमः ॥ अथ च वास्तुभद्र गृह प्रवेश मन्दिर वापीकूप जलाशयानां प्रतिष्ठा कर्मण्यावश्यकत्वात्तत्रादौ निर्माणार्थं भूमिपरीक्षामाह— उक्तंचगृह्यसूत्रे—(अथातः शालाकर्म) १॥ अत्र आवसथ्याधानादीनि शालाकर्मोसाध्यानि, अनुविहितानि, शालाकरणं चनोक्तम्, अतोहि-तोशालाकर्मशालायाः, गृहस्य क्रिया व्याख्यायते, (पुण्याहे शालां कारयेत) ॥ २ पुण्यं शुभं मलमास बालवृद्धास्तमित गुर्वादित्य सिंहस्थ गुरुक्षयमास दिनक्षय क्रूरग्रहा ऽ क्रान्त युक्तनक्ष त्रादि दोषरहितं ज्योतिः शास्त्रोक्त गृहारम्भविहित मासपक्ष तिथिवारनक्षत्र योगकरणमुहूर्त चन्द्रतारा बललग्नादि गुणान्वितमहः पुण्याहम् । तस्मिन् पुण्याहे शालांगृहं कारयेत, निर्माप येत् । यत्राम्ना तस्य शालाया पारवयमविरोधियत । विद्वद्भिस्तदनुष्ठेय मग्निहोत्रादि कर्म वत् ॥१॥ इति वचनात पारस्क राचार्येणा युक्तमपि— गोभिलगृह्यसूत्रोक्त (८–७) देश विशेष मविरोधात् अपेक्षितत्वाचात्र लिखामः ॥ **तद्यथा**—कीदृशे देशेशाला गृहंकारयेत, समेऽलोमशे ऽविभ्रंशिनि प्राचीन प्रवणे उदक्वा अक्षारा । कंटका कट्वौषधिवति भूमौतत्रैव गोभिले (गौ रपांशुर्बाह्मणस्य ५) गौरा.श्वेतवर्णा. पांसवोरेणवो यस्मिन्नवसाने तद्गौरपांशु अवसानं गृहम् तद्ब्राह्मणस्य भवति । उत्तरसूत्रयोरप्येवमेवविग्रह. (लोहित पांशुक्षत्रियस्य) ६–रक्त मृत्तिका क्षत्रियस्य (कृष्ण पांशुर्वैश्यस्य ७) कृष्णवर्णावैश्यस्य—वास्तुशास्त्रमतेतु—वैश्यस्य पीतपांसौ—शूद्रस्य कृष्णपांसौ—**अथभूमौसमोन्नत परीक्षा**—(स्थिराघात मेकवर्णमशुष्क मनूषर ममरुपरिहित मक्लिन्नम्) मुद्गरादिभिरपि यदाहन्यमानं नविदार्यतेतत्स्थिराघाताम् एकवर्णम्, अभिन्नवर्णम्, यत्रोऽपत्र माना एवौषधयो नशुष्येयुस्तदशुष्कम् । ऊपरम् इरिणम्, यत्रोप्तंन प्ररोहति । न ऊपरम्, अनूपरम् । मरु शब्देनोदक रहितः प्रदेश उच्यते । यत्रदूर मपि खनद्भिः किंचिदेवोदक मुपलभ्यते । **उक्तंच**—द्वीपमुन्नतमाख्यातं शादाचैवोष्टकाःस्मृताः क्लिन्नं सजलं प्रोक्तं दूरखातोदकोमरुः ॥ **शुद्ध भूमिविचारः— मूहूर्त मार्तण्डे**—श्वेता रक्तकपीत वसुधा स्वादु. कटुस्तिक्तका. कषाया घृतशोणितान्न मदिरागंधाशुभा विप्रतः ॥ **भूगन्धज्ञानम्**—सुगन्धा ब्राह्मणी भूमी रक्तगंधातु क्षत्रिया । मधुगंधा भवेद्वैश्या मद्यगंधा चशूद्रिका ॥ **भूमेरस ज्ञानं मृत्तिका भक्षणात्**—मधुरा ब्राह्मणी भूमि. कषाया क्षत्रियामता। अम्ला वैश्याभवेद् भूमिस्तिक्ता शूद्रा प्रकीर्तिता ॥ **प्रकारान्तरेणभूमिपरीक्षामाह—विश्व कर्मप्रकाशे**—निखनेद् हस्तमात्रेण पुनस्तेनैव पूरयेत ॥ पांशुनाधिक मध्योना श्रेष्ठा मध्याधमा क्रमात ॥ **पुन स्तत्रैव गर्त्तायांपरीक्षांकुर्यात्**—खातमध्ये गर्त्तं मध्यवर्ति दीपं प्रज्वाल्य

वायुतो दीप शिखादक्षिण दिशिगता भूमि परित्यजेत् ॥ **पुनः**—फालकृष्टे ऽथवा देशेसर्वबीजानिवापयेत्, त्रिपंच सप्तरात्रेण यत्रराहन्ति तान्यपि, ज्येष्ठोत्तमाकनिष्ठाभूर्मोह्या वर्ज्याचसामता अरत्निमात्रंगर्त्तेवै अनुलिप्तेतुसर्वशः ॥ घृतमाम शरावस्थंकृत्वा वर्तिचतुष्टयम् ॥ ज्वलयेद्भूमि परीक्षार्थं संपूर्ण सर्वदिङ्मुखम् ॥ दिप्त्या पूर्वादि गृह्णीयात्, वर्णानामनुपूर्वशः ॥ सर्वतो दीप्तो सर्वेषां शुभदेति पूर्त्तिकमला करे मात्स्ये पुनस्तत्रैव ॥ श्वभ्रमथवाम्बु पूर्णपद शतमित्वा गतस्य यदिनोनम् तदद्रव्यं यत्रभवेत् पलान्यपा माढकं चतु षष्टि' ॥ **भूमि सुप्तादि परीक्षा वास्तु शास्त्रे**—कर्त्ताग्राम दिशश्चैव स्वरयुक्तंतुकारयेत् ॥ वन्हिभिस्तु हरेद्भागं शेषाच्चफल मादिशेत् ॥ एके जागर्ति भूमिश्च द्वितीये समता भवेत् ॥ तृतीये राक्षसी भूमिस्तस्या मृत्युर्नसंशयः ॥

स्तृणवृक्षादि परीक्षामाह—उक्तंच पारस्कर गृह्यसूत्रे– (दर्भसंमितं ब्रह्मवर्चसकामस्य ऽ)—दर्भसंयुक्त भूर्ब्रह्मवर्चसव्याख्यानं तत्कामस्य (बृहत्तृणैर्बलकामस्य १०) मृदुतृणैः पशुकामस्य १०) स्पष्टम् ॥ **उक्तं चमत्स्यपुराणे**— कंटक क्षीरवृक्षश्चासन्न सफलोद्रुमः ॥ धनहानि प्रजाहानि कुर्वन्ति क्रमशस्तथा ॥१॥ **ब्रह्मवैवर्तपुराणे**—द्वारिका निर्माणे— शाल्मलीना तिंतिडीना हिन्तालाना तथैवच ॥ निम्बानां सिन्दुवाराणां उदुम्बराणांमभद्रकम् ॥१॥ धत्तूराणां वटाना च एरण्डानां भवञ्छिन्नम् ॥ एतेषामतिरिक्तानां शिविरश्चेष्ठ मुत्तमम् ॥२॥ वृक्षंच वज्रहतकं दूरतोपरिवर्जयेत ॥ पुत्रदार धनं हन्यादित्याह कमलोद्भवः ॥३॥ **उक्तं च मात्स्ये**—पुन्नगा शोक बकुलशमी तिलक चम्पकान् ॥ दाडिमीपिप्पलीद्राक्षा तथा कुसुममंडपम् ॥१॥ जम्भीर पूगपनसद्रुमसंजरीभिर्जाती सरोज शतपत्रिक मल्लिकाभिः ॥ यन्नारिकेल कदलीदल पाटलाभिर्युक्तं तदत्र भवनं श्रियमातनोति ॥२॥ **वास्तुप्रदीपे**--ब्राह्मणी भू कुशोपेता क्षत्रियास्यान्शरा कुला । कुशकाशाकुलावैश्या शूद्रासर्वतृणाकुला ॥१॥ ब्राह्मणी सर्व सुखदा क्षत्रिया राज्यदा भवेत् ॥ धन धान्य करी वैश्या शूद्रातु निंदिता बुधैः ॥२॥

निषिद्धभूमिमाह वास्तुप्रदीपे— स्फुटिताचमशल्याच वल्मीकारोहिणी तथा । दूरतः परिवर्ज्यंयं कर्त्तुरायुर्धनापहा ॥१॥ स्फुटितामरणंकुर्याद्दूराधननाशिनी ॥ सशल्यार्श्वशदान्त्यं नियमाशत्रुवर्धिनी ॥२॥ **सर्वोत्तमां भूमिमाहपारस्कर गृह्यसूत्रे**—(शाखासम्मितभ १२) (मण्डलैद्वीपसम्मितंवा १३) (यत्रवास्वभ्राः स्वयंखाताः सर्वतो ऽभिमुखा स्यु. १४) शादेष्टकादेशान्तरप्रसिद्धे । चतुरस्रमित्यर्थः ॥ मण्डलंवरिमण्डलंवर्तुलमित्यर्थः द्वीपशब्देन प्रतमभिधीयते, मण्डलंच तद्वीपंच मण्डलद्वीपं तत्सम्मितंवा तदाकृतिवा, कथंनाम,उभतस्यतः परिहृतिः परिमण्डलाकारा ॥ चतुरस्रावेति । यत्रवायस्मिन् स्थाने श्वभ्राः स्वखा स्वयंखाताः स्वयमुत्पन्नाः सर्वतः सर्वासुदिच अभिमुखास्तरेतराभिमुखेनावस्थितास्तस्तस्यु ॥ (तत्रा

पसानं प्रागद्वारं यशस्कामो बलकामः कुर्वीत १५) तस्मिन्नेवं गुणविशिष्टस्थाने अवसाने गृहं । अयमवसानशब्दो गृहवचनः । कुतः पुनरवसानग्रहणात् । अनुद्वारंच गृहद्वार मिति एव शब्दश्रुतेश्च । प्रागद्वारं-प्राङ्मुखद्वारं यशस्कामोबलकामः कुर्वीत । कामशब्दाभ्यासादन्यतर कामो नोभयकामः । यद्युभयमभिप्रेतंस्या तथामतियशोबल काम इत्यपठ्यत् । तस्माद्यशस्कामोबलकामोवेतिद्रष्टव्यम् । (उदग्द्वारंपुत्रपशुकामः १६) अवसानंकुर्वीतेतिवर्त्तते । (दक्षिणा द्वार इ० सर्वकामः १७) दक्षिणाद्वारे वास्तुनियत्कामयते तत्तद्भवतीतिदर्शयति । (नप्राग्द्वारंकुर्वीत ॥१८॥ अनुद्वारंच ॥१९॥ गृहद्वारम् ॥२०॥ नकुर्वीतेतिवर्त्तते, अनुपश्चाद्द्वारं अनुद्वारम् । तादृशंगृहद्वारं नकुर्वीतेति । द्विद्वार मित्यर्थः । अथवा द्वारमनुद्वारंनकुर्वीत । कथंनाम, अन्यमुखद्वाराभिमुखं गृहद्वारंनकुर्वीतेत्यर्थः । उक्तंचवास्तुशास्त्रे—द्वारगवाक्षस्तम्भैः कर्दमभित्यन्तकोणवेधैश्च । नेष्टंवास्तुद्वारं विद्धमनाकोतमार्येच । गृहद्वारंनकुर्वीतेत्यर्थः ॥ (यथानसंलोकीस्यात् ॥२१॥) यथायेन प्रकारेणायं वास्तुनि सन्ध्योपासन होमार्चनभोजनादि क्रियाप्रवृत्तोबहिर्वर्त्तिनां चाण्डालपतितादीनां संलोकी, आलोकन गम्योनस्यात्तथा ,। खातेनिसृत वस्तुमाह वास्तुशास्त्रे—खातेयदिश्मालभते हिरण्यंतथेष्टकायस्य समृद्धिरत्र । द्रव्यंच रम्याणिसुखानिधत्ते, ताम्रादिधातुर्यदि तत्रवृद्धिः । पिपीलिका दर्दुरिकाहचेत्सा द्वसंमतस्त्राखिल कार्यहानि. । तुषास्थिचोराणि तथैवभस्माथण्डानिमर्पामरणप्रदास्युः ॥ वराटिका दुःखदरिद्र दात्री कार्पासएवातिददातिरोगम् । काष्ठप्रदग्धंददिरोगवृद्धि कलिर्भवेत्खर्परकेननित्यम् लोहेन कर्त्तुर्मरणंप्रदिष्टंविचार्य वास्तुंप्रवदन्तितज्ज्ञा । दिक्साधनंसिद्धान्तरहस्ये—वृत्तेसमभूगतेतु केन्द्रः स्थितिशंकोः क्रमशोविशतयपेति । छायाग्रमिहाचपूर्वा ताभ्यांसिध्यतिमेरदिक्च्चयाभ्या । भूमिसुसमाह—प्रद्योतनारपञ्चनगाङ्कसूर्य नवेन्दुपङ्विविंशति तेपुभेपु । शेतेमहीनैवगृहंविधेयं तडागवापी खननंनशस्तं । अथ गृह निर्माणेवेध-पद्धलमाह—प्रणम्यपार्वतीपुत्रंध्यात्वा नारायणंगुरुम् । लोकानामुपकाराय क्रियतेवेधसंग्रहः ॥१॥ शिवउवाच—वेधेस्तयोक्षयंयान्ति देवमानुषराक्षसाः । वेधेनहन्यतेनित्यं नास्तिवेधसमोरिपुः ॥२॥ वेधनकलहंनित्यं वेधनचकुलक्षयः वेधेन ह्रियतेसर्वं तस्माद्वेधंनिरीक्षयेत् ॥३॥ विष्णुपृष्टेशिवोदृष्टौ चण्डिकायत्रदक्षिणे । तत्रवेधं विजानीयाद् गर्गस्यवचनंयथा ॥४॥ कोण १ दक् २ छिद्र ३ छायाश्च ४ ऋजु ५ वंशा ६ स्त ७ भूमयः ८ संघात ९ दन्तको १० । चेतिवेधास्तुदशधास्मृताः । ५। कोणवेधेभवेन्मृत्यु दृष्टिवेधेतुधनक्षयः । पशुहानिर्भवेच्छिद्रे छायावेधेचराक्षसाः ।६। ऋजुवेधेमहान्नाशो वन्शनाशस्तु वन्शजे । अस्तजेपशुहानिःस्याद्भिभूमौचधनक्षयः ।७। संघातेनिधनंशीघ्रं दन्तवेशोकमादिशेत् । कोणादिकोणपर्यन्तं प्रमाणंकोणवेधजम् ।८। कोणाच्चनिधनंशीघ्रं गृहेदोषंनिरर्थकम् । तथानीच

स्थितकोणे कोणवेधाज्जायते ।९। समच्छिद्रेच्छिद्रवेधो (गुफावेध) भूवधोनाधिकान्तरे । द्रुमंध्वा इष्टिपातेस्या च्छायासूर्योनदृश्यते ।१०। यामाद्दूर्ध्वन्तुयाच्छाया छायाप्रहरादध साछायादोषदात्मृणा वृक्षप्रसादगेहजा ॥११॥ सर्वयामपिवृक्षाणा छायारोगफलप्रदा । सश्रयन्तिसदावृक्षा किन्नरोरग राक्षसा ॥१२॥ नकुर्योद्याम्यनैर्ऋत्यामाग्नये पवपिवाटिकाम् । अन्यथाकलहाद्वेगौ कष्टवालभते नर ॥१३॥ **वृक्षवेधमाह**—वर्जयत्पूर्वतो ऽश्वत्थ प्लक्षदक्षिणतस्तथा । न्यग्रोधमपरादेशा दुत्तराच्चाप्युदुम्बरम् ॥१४॥ अश्वत्थादग्निभयंविद्यात् प्लक्षाद्यूयाप्रमायुकान् । न्यग्रोधात् (वटवृक्षात्) शस्त्रसम्पीडामक्षामय मुदुम्बरात् ॥१५॥ आदित्यदैवतो ऽश्वत्थः प्लक्षश्च यमदैवम । न्यग्रोधावारुणावृक्ष प्राजापत्यउदुम्बर ॥१६॥ **कूपादिवेधानाह**—कूप कोण स्तरुस्तम्भौदेवोद्वारश्चवर्त्मच । जलधाराश्चवह्निश्च दशवेधागृहेस्मृता ॥१७॥ कूपवेधेभवेन्मृत्यु कोणवेधेदरिद्रता । ज्वरपोतातरोर्वेधे मृत्युस्तम्भस्यवेधत ॥१८॥ देवनधाद्धपुनत्व द्वारवेधदरिद्रता । मार्गवेधाद्बन्धदुव्याधि मृतिस्तु जलवेधत ॥१९॥ धारावेध प्पुत्रर्त्तं व्याधि स्यादग्नि वेधत । गृहाणा सन्निकृष्टत्वा द्वारावेध. प्रजायते ॥२०॥ कोणाब्धभ्रमकूपकर्दमतरु द्वास्तम्भ देवक्षितम् । सभोद्विगुणाधिकान्तरभवनधन दोष किल ॥२१॥ एश्वर्यपुत्रहानिश्च स्त्रीनाशो मरणभवेत् । सम्पच्छत्रुभयसौख्य पुष्टि पुत्रादित क्रमात ॥२२॥ गृहमध्यभवेत्कूपो धनहानि प्रजायते । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन नकुर्यात्गृहमध्यगम् ॥२३॥ पुष्करिणीदवकुलंचैत्य प्रासादोनदी चेति । अशुभाविदिक्षुकथिता पूर्वोत्तरयो शुभाएव ॥२४॥ प्राग्यादिदिक्षेमलिंग्पुत्रहानि शिखि भयरिपुभयश्च । स्त्रीणादोष कलहाने स्ववित्तसुतप्राप्तिश्च ॥२५॥ **पाषाणादिवेधानाह**— पाषाणस्तरुवेधश्च स्तम्भवेधस्तथैवच , चलभूमिर्जलाकारा लिंगछत्र त्रिशलकम् ॥२६॥ पूर्व पाषाणजावेध स्तरुवेधो ऽग्निकोणक । स्तम्भवेधस्तु याम्याया चलभूमिस्तुनैऋत ॥२७॥ जलाकारश्चवारुण्या लिंगवेधस्तुमारुते छत्रवेधस्तुसौम्यायां त्रिशलच्छम्भुकाणके २८ आलि गितोपगूढाश्च शिलालाष्टाकृतिस्तथा । उपविष्टोपगाहीच लुप्तवेधा स्मृताबुधै ।२९। मित्रपूर्वदि ग्भागेयाम्येच मठमन्दिर । पश्चिमनादरी कुर्यात्पोत नैवतथान्तरे ।३०। मदिर पूर्वदिग्भागे याम्यपार्श्वस्मशान्यान् । पश्चिम मठव्यच स्मशान चोत्तरेयजेत ।३१। याम्यादिष्वशुभफल जातान्तरष प्रदक्षिणनैव । उदगादि सुप्रशस्ता प्लक्षवटो दुम्बराश्वत्था ३२ अयान्येवस्वरौन वेद्गृहाणा धारावेधो जायते सन्निकृष्टे ।३३, **वृक्षारोपणप्रकार माह विश्वकर्म प्रकाशे ।** नगर विन्यस दादौ पश्चाद्वृक्षांश्च विन्यसत । पीड्यन्ते चेत्तपृष्ठे स्यथानैव दापदा ॥३४॥ आग्नेय्यां क्षीर वृक्षं नैर्ऋत्यां च कदंबक । वायव्य कंटकाख्या नैर्ऋत्या पद्मस्थमत ॥३५॥ पूर्वहिमवाज वृक्षं च शिंशुपान दक्षिणे । पश्चिम पुष्पितान्वृक्षा उत्तरे गपम तरम् ॥३६॥

ईशान्या स्वगुप्तत्र आग्नेयामपि वर्जयेत् । नैर्ऋत्यां वटकं चैव वायव्ये शाल्मलिं त्यजेत् ॥३८॥ **दिक्परत्वेन वृक्षारोपणे शुभफलमाह तत्रैव**— पिप्पलं शाल्मलीं चैव वारुणे तिन्तिणी तथा । उत्तरे शरजं च ईशाने शौभाञ्जनम् ॥३९॥ पूर्वादिषु चैवं प्रोक्ताः पादपानेवशारदाः । अन्या शुभफला प्रोक्ताश्चवान्य फलप्रदाः ॥ वट पुरस्तात्कन्यस्या दक्षिणेचाप्युदुम्बरः । अश्वत्थ. पश्चिमभागेप्लक्षस्तूत्तरत शुभ ॥४०॥ **वेशनपद्धतौ**— कोशार्द्धकं शमीकं वा याम्यादिगृहमेव च । अश्वत्थौदुम्बर प्लक्षन्ताम्रलम्भागुरालया. ॥४१॥ प्रशस्तपतुनिन्द्यौ वाम दक्षिणगस्मृतः । वामे हानिस्तथा प्रोक्ता दक्षिणे रोगशोकभाक् ॥४२॥ सम्मुखे मृत्युमाप्नोति नदोषो ऽस्तिनतोन्नते । **मत्स्यपुराणे**—कण्टकीक्षीरवृक्षश्च आसन्न. सफलो द्रुम. । धनहानि प्रजाहानिं कुर्वन्ति नगरास्तथा ॥४३॥ नछिन्द्यदि तान्यानन्तरे स्थापयेत्सुभान् । पुन्नागाशोक बकुलशमीतिलकचम्पकान् ॥४४॥ दाडिमीपिप्पलीद्राक्षा तथाकुसुममण्डपम् ॥४५॥ जम्बीर पूगपनसद्रुमकेतकीभिर्जाती सरोजशतपत्रिकमल्लिकाभि । यन्नारिकेलकदलीदलपाटलाभिर्युक्तं तदत्र भवनं श्रियमातनोति ॥४६॥ **पूर्वपश्चिमयोर्वेध निर्णय**— यद्वेधं भवेत्पूर्वे द्वारेषु मुनिसत्तमत । पश्चिमस्यैनिहत्यैव गर्गस्यवचनंयथा ॥४७॥ पूर्वे वेधनेन मृत्युः कलहश्च नित्यनिश्च श । अपुत्रं चैवजायते वारुण्यामिति कीर्तितम् ॥४८॥ वापीकूपतडागेषु प्रासादगृहमन्दिरे । एतेवेधाभवत्यत्र वारुणाग्रेस्मृतयथा ॥४९॥ कुलक्षयेभवेन्मृत्यु, गृहवेधेधनक्षय वेधेनैऋत्ये मुनिभि परिकीर्तितम ॥५०॥ द्वारवेधभवेन्मृत्यु परस्त्रीगमनं तदा । स्त्रीणांचबहुपीडाच मार्कण्डेयवचनंयथा ॥५१॥ वस्तुद्वारतावेधे आग्नेयाय्रेगमनं तथा । दक्षिणे नरशब्दश्च नैर्ऋत्येवारुण्या दानम ॥ पश्चिमस्यमन्दिरस्य दक्षिणे देवालयं । बहुज्ञानरत्नौ गर्गस्यवचनंयथा । ॥५३॥ **आग्नेयवायव्यवेध निर्णय.** तुच्छलुघदाग्नेयं निम्नवायव्यमेवच । यहुवेधोभवेतत्र अपाराविचनंस्मृतम ॥५४॥ करटंचकोटरफलपिच्छमभीरदाडिम च । कलेरं चार्कतुलश्च आग्नेयां दिशिवर्जयेत ॥५५॥ आग्नेयातुयदा चैव, आग्नेयादि भयभवेत । रोगपीडाविधेयुक्ता वायव्यस्था स्वमातया, ॥५६॥ नीचं भवति नाग्नेया सुच्चवायव्यमेवच । वधोजायतेतत्र व्यासस्यवचनं तथा ॥५७॥ अहरार्द्धयदि छाया वृक्षप्रासादगेहजा । वेधतश्चविजानीया दाग्नेवायव्यमेवच । ॥५८॥ आग्नेयामन्दिरश्चैस्या द्वायव्याद्वारणश्च । अतिवेधोभवेत्तत्र गर्गस्यवचनंयथा ॥५९॥ क्लेशाश्च खानि वहधोजायन्तेपतिवेधत । वेधतःस्वदहर्यंयान्ति मनुष्याणांतुसर्वथा ॥६०॥ आग्नेयजायतेवधस्तत्रमिहाहर्तिनियाह । तत्रात्रेवेध स्यादगर्गस्यवचनंयथा ॥६१॥ **अथ दक्षिणोत्तरवेध निर्णय**—दक्षिणस्याभवेदुच्च नीचंचोत्तरदिक्स्थिरम । वेधंतश्चविजानीया न्मृत्युरोगभयादिकम् ॥६२॥ दक्षिणेमन्दिरस्तम्भतत्पाषाणमेवच । निम्ननेजलंकूप मेवामन्त्र

तमेनतु ॥६३॥ उत्तरस्यागृहपतिः पंचत्वतेनात्रसंशयः प्लक्षक्षमपकखर्जूरमालतीबीजपूरकान ।
।६४। एतान्वृक्षमयान्वेधान्दक्षिस्यांपरित्यजेत् ॥६५॥ आम्रनिंबचखर्जूरं दाडिमंबीजपूरकम् ।
एतान्वैफलवेधांस्तु दक्षिणस्यांविवर्जयेत ॥६६॥ पुत्रहानिश्चार्थहानि स्तथापशुनाशनम् ।
दारिद्र्यंजायतेतत्र मुनीनांवचनंयथा ॥६७॥ संस्थाप्यपूजयेत्तत्र हनुमन्तंगृहोपरि ॥ वेधस्तत्र
नजायेत दक्षिणोत्तरयोर्मिथः ॥६८॥ **अथनैर्ऋत्येशानयोर्वेध निर्णयः**—नैर्ऋत्यांमन्दिरंतुच्चं
पोच्यन्ते त्वीशदिक्स्थिताः जनापमृतिर्येतत्र तेषांनाशोभयंसदा ॥६९॥ गृहंप्रासादकश्चैव
तोरणो ऽट्टालमेवच नैर्ऋत्यांयदिदृश्यन्तेत्वीशानेवेधभंगिदाः ॥७०॥ रक्तपुष्पोचदाडिंबी श्वाट-
श्चाम्रोवटस्तथा ॥ एतेफलमयावृक्षानैर्ऋत्यादिशिवर्जिता ॥७१॥ बदरीमन्दिरश्चैव निन्दश्च
वटवृक्षः एतैर्वधंविजानीयादीशानेनैर्ऋते तथा ॥७२ स्त्रीणांस्त्रीभिर्विवादः स्याद्बन्धूनांबन्धु
भिः सह स्यात्पितापुत्रयोर्वैर मितिवेधाश्चनैर्ऋते ॥७३॥ षड्वर्षेम्रियतेस्वामिमाताथो पञ्चमेऽब्दे ॥
चतुर्थेपुत्रहानिः स्यात्सर्वंनश्यन्तिचाष्टमे ॥७४॥ पक्षेचमासेचऋतुद्वयेचसम्वत्सरे दापिफलंक्षितौ ।
शुभाशुभंज्ञेयमिदंबुधैश्चनात परंपात्रविचिंतनीयम् ॥७५॥ **अथहस्तादिमानम्**—चतुर्विंशा-
गुलविंशतिमितः करोधनु४करोदण्डः । तद्विसहस्रंक्रोश क्रोशचतुष्कंयोजनंप्रोक्तम् ॥७६॥ **अथ
युगानुसारेणदूरीव्यवस्था**—कृतेतुयोजनाद्वेधस्त्रेतायांक्रोशमात्रतः द्वापरेनरशब्दाषकलौपाणि
प्रपाततात् ॥७७॥ **देशविभागेनवेधमानम्**—जातधरेहरतमरुयापर्वतेदण्डका स्मृताः मध्यदेशे
क्रोशमध्याद्वीपान्येयोजनं स्मृता ॥७८॥ वेधःस्याद्धनुपशतंशरपातंचैकतोयान्ते तस्मार्द्धंपाश्वगतो
तस्माद्धेचोत्तरेपूर्व ॥७९॥ क्रोशमात्रेवारिवेधोयोजनेरनमन्तः गृहस्यशरपातेस्यपरमंभंगदस्यो
॥८०॥ **वर्णव्यवस्थयावेधमानम्**—प्राग्वेधादशदंड स्याद्याम्येक्रोशस्तुपश्चिमे । दंडविंशतिच
सौम्येणवेदा ४० विप्रसद्मनाम् ।८१। पान्या शतद्वयंदंड याम्यायांप्रदिशनात । चतु शत
पश्चिमाया शुक्रस्त्र्यंशे नृपालयात ।८२। राजगेहपदेवस्या स्येयवेधाम्बुसद्मनाम् । वेधस्तु
धस्यापि नवधानीचजातिनः ।८३। **उच्चनीच समभूमिवेध** — नीरितं शर्म पूर्व तुंगस्था
परदक्षिणे सौर्यस्भू सर्वदिग्भागे पंचान्ते पुत्रान्नि ।८४। दशदंडानि पर्यन्तं पंचो पर्म
नीचवम् । उत्तरे द्वादश नीचस्तस्थानस्थितिः सदा ।८५। पश्चिमे स्वामि ३० दंडानि नाभि
दुच्चभूमिषु । दूरस्थं यामसौपरस्थ नयाम्य गृहं त्यजेत ।८६। **एकग्रामे विशेष माह** —
नगरेवा पुरेवाऽपि एकग्राम गृहस्थितौ । तदंतरमितंदंडैः संस्थायातु दिगष्टकं ।८७। दशदंडेषु
पूर्वस्या माग्नेय्यांषोडशावधि । विंशद्दंडेषु याम्यायां पंचान्ते गृहभागिन ।८८। चतुरिरासु
नैर्ऋत्यां त्रिंशद्दंडेषु पश्चिमे । अष्ट दंडेषु वायव्यां सप्तदशनांकः ।८९। चतुर्दश दंडेषु
पंचाशे शंभुकोणे तत्रदंडमितेयांवरतः परं न गृहंत्यजेत ।९०। **शिवोक्तिः** दशदंडानि

भस्म सर्वदिक्षुमहेश्वरि नगरे च पुरे चैव दश नेत्रे विधानं ६१ वेधत्रयप्रधानमाह— वाणेभ- धारपरंचापि कवेव सर्पगमतो व्यत्यानरियोवास्तौ नवध परिकीर्तित ६२ समभूमी यदानिधोत्तन्तरं परिरपरंत अतुक्त नीरा तरनस्यानीर प्रवर्तते ६३ अत्युच्च मनद्धा नामयोत्तर शता १०८ स्यरम् । द्वियष्ठिमित दण्डानामभ्यदर्शयाति नीचगम ६४ धनु- शतान्यंतर पूर्वतोचे गुरवर्ण क्षाम्मनेनिदि नं सौम्ये तथा पश्चिमदिग्भागे मिनाम्न ७० दैत्ये नैऋत्य शिवाय ६१ भरनपुर ग्रामाग्रायेकाग्र रत्तेपुनिनानतो दोषा । शास्त्रायोऽन्य जायते पानिर्ग दृशामानि ६२ वेधपरिहार माह —तानरत्नाणं ताप गीतुवं मग्नमडपे । नगी- थागव्यमानन वेधानिर प्रजामत । ६७ आरोग्राम गृहारम्भनाचेमिज मन्दिरम् । आदित्यशा धाम गेनाभिनरम्नदृगृह । ६८ अत्युच्चयानिनीचेवा व्यहपृष्ठ मध्यग । जलाशयस्नत्या नै विस्तर नजायते ६६ वापीकूपतडागानां पाना दृश्यानेभ्यना विलेखितिने र म्याद्रानमार्ग न मध्यगे १०० निन्दितस्यानस्य माधवारम्नादिरम नाव्वरमोनमवट्ट नो नवग्म्लृमुणोदन १०१ तथा नोनस्थितेकोण कामानरानजाया मध्याम्यतन नो ना निनाडागमेश्वर ० म ग न नादृश्याय नदीप्रासाद एवन गर्वनिरुद्या भूमिनी निरालयने ३ **समभूमी** —नगरा द्विगुणाभूमि त्यक्त्वा पीडान जायते गृहच्छाया द्विगुणिना त्यक्त्वा रामानजायते ४ तत्रत्यालय भूतान्वेध पुरतामिनाम वास्तुनो मध्यगाभूमि तस्याद्वेध स्तोमदा ५ नद्यन्तरे पर्वतराजमार्गा तरेनवधोऽन्तरतस्त्विनाऽपि । ग्रामान्तस्राजगृहान्तरेवा गृहस्यमानाद्विगुणेनदोष ।८। इति **ग्रामान्तर्वेध निर्णय अथगृह निर्माणे द्वारादिवेधानाह** द्वारगवास्तनभेन धर्मभियन कोणमध्येऽन्व । नहुतास्तुद्वार विद्धमना ग वतमार्याय । ७ एकभित्तौद्वारयुग्मं तयोरानपराङ् मुखम । वधनम निजानियाम य पीडा प्रजायते ।८। कुक्षिद्वार नकर्तव्यं पृष्ठद्वार तथान्य । कुलहानिश्चविज्ञेया पृष्ठ्यानि विनिर्दिशेत ।९। स्तम्भहीन नकर्तव्य प्रमाणेन महद्गृहम । नागाकुर्वी तरारचव तस्मात समाञ्च कारयत ।१०। उद्घाटने विधानेच सशब्दंन यो भवम् देवायर नभार ान निन्द्य द्वार विवर्जयेत ।११।

इति वेध पटल ।

अथध्वजादि आयादय:—विस्तारेण हतदैर्ध्यं विभजेदष्टभिस्तत । यच्छेषंसभवेदायो ध्वजाद्यास्तेषुविज्ञेया ध्वजाद्युमोदरि भागो सर्वभोनायनोऽष्टम । **श्रीपति** – गृहेषुचाया विषमा प्रशस्ता. । **वशिष्ठ** —विषमाय शुभायेवसमाय शाकट् शद **अथ नन्दादि शिलाप्रमा- णाम्— विश्वकर्म प्रकाशे**—शिलाप्रमाण क्रमशः प्रदिष्ट वर्णानुपूर्वेण तथाङ्गुल नाम । ध्रवैव त्रिंशद्धनितिश्चनन्दा विस्तारयेद्व्यासमितं तदर्धम् । तदर्धिकानां त्वथपिण्डिकाख्या दू नी-

धिका न्यूनतरा न कार्या । **वर्णान्यवस्थया शिलामानम्** एकविंश द्विजन्मानां क्षत्राणां दश सप्त च । अथाष्टशम्भुर्वैश्यानां शूद्राणां तु नवाङ्गुलम् । **प्रासादार्थे तु विशेष विश्वकर्मशास्त्रे**—प्रासादादौ विधानेन न्यस्तव्या सुमनोहरा । चतुरस्रा समा कृत्वा समन्ता हस्तसम्मिता । **शिलानामानि सचिह्नानि**—नन्दा भद्रा जया रिक्ता पूर्णा पञ्चशिलास्तु । पद्मं सिंहासनं चैव तोरणं छत्रमेव च । कूर्मं चतुर्भुजं विष्णुं टङ्केन समशालिनम् । **टङ्कादिदोषपरिहारार्थं स्नपनविधानमग्निपुराणे**—सर्वासामपि शिलानां तन्मुखेणावगुण्ठनम् । मृद्भिर्गोमयगोमूत्र क्षारार्थैर्गन्धवारिणा विधिनापञ्चगव्येन स्नानपञ्चामृतेन च गन्धतोयान्तरयुता निजनामाङ्किता शुभा फलरत्नसुवर्णानां गन्धाक्षतसलिलैर्युतः ॥ चन्दनेन समालभ्य वस्त्रैराच्छाद्य निर्मला स्नपन पूजनमन्त्रं स्वगृह्योक्तानि **शिलास्थापनार्थं खननक्रमवास्तुशास्त्रे**—इति वास्तुविधानं तु कृत्वा तु स्नानमण्डपात् समानीय शिलाः सर्वाः तोरणाद्यान्वितं तन्नदिक्साधनतुर्यां गृहमध्य सुसाधिते ईशानादिक्रमेणैव खाताकुण्डलान्तु । मन्त्रैः कोणभागेषु मध्ये निक्षिपेत् । नाभि मात्रे तथा गर्ते शिलानां स्थापनं शुभम् । ख्यातानि कृत्वा यत्नेन विन्यसेत् ॥ स्थापन मन्त्रादि विषयं प्रयोगे वक्ष्यामि ॥ नन्दादिशिलानां स्थापनार्थं, प्रतिशिलायामधारार्थं पञ्चशिला कल्पयेत् ॥ तेषामुपशिलानां मध्ये पञ्चविंशतिविस्तरः ताम्रमयाः मृन्मया वा निम्नादिवर्णक्रमेण पञ्चाङ्गुला मा दर्शयेत् सपादाङ्गुलं पञ्चकुम्भाः कार्याः ॥ ध्रुवशिला वास्तुनेन खनित कुम्भमग्र तिष्ठन्यशराङ्गुलोच्चम् । विप्रादिवर्णानुसारं पदाप्तं स्तम्भमानं तु नदसमानम् । **वास्तुपूजाविधानम्—तत्रैव**—विभागमण्डपकृत्वा सप्तभागतुल्यं । निर्माणेन द्वाराणाय प्राशनीयं । गृहमध्ये हस्तमात्रमण्डलारि पित्रा । वास्तुपूजातुर्ष्टिं नातस्मात्तां यथायम्यतः । ग्रहमध्ये हस्तमात्रे मण्डलाकारे । द्वारकं एकाशीतिपदं वास्तुमण्डलार्थम् । इति विशिष्ट ॥ सूत्रपातं तथा क्षय तथा स्तम्भान्यपुन । द्वारकं चक्रयन्त्रं प्रवेशमन्तरं ना । वास्तुप्रशमनेन तु ब्रह्मास्तु यत्नस्तु पथाना ॥ **वास्तुमण्डलोद्धार**—एका- शीतिपदकुर्यांद्रेखाभि कनकेन । पञ्चात्पिष्टेनानुलिप्ते सर्पोत्तम इत्यपत ॥ दशपक्षापराश्वा दशपूर्वोत्तरायता । सत्रवास्तुविभागेषु विन्यासानि वाच्य । **रेखानामानि**—शान्ता यशोवती कान्ता विशाला प्राणवाहिनी । सती वसुमती नन्दा सुभद्रा सुस्थिता तथा । पूर्वापरागतास्तेषा उदग्या स्याधिनास्तथा । हिरण्या सुव्रता लक्ष्मी विभूतिर्विमल प्रिया । जया ज्वाला विशोका च तथैवावशमी स्मृता । अपसव्यक्रमेण मध्ये पञ्चमानि शा । ध्ववाग्निदाह प्रपनार्थं मन्दलं स्वयंयुतम् । कुर्याद् इत्यादि ग्राणि यान्याकारनिक्षेपेत् । स्वगिरान्यप्रयुक्ता प्रतिमागि यानि । पदरे इति पूर्वपदेशात् ईशानादिक्रमेणैवान्यप्रदक्षिणपथक्रमं पथं । त्रिंशपञ्चदशनवं च । एवं पचीतरणि निरामैनरपदजेन । पानादीन्तद्विपरीतो सूर्यतामसान । पीत ममान । पञ्च यथीतरणि निरामैनरपदजेन ।

मिद्रतुद्विपरमहरानिति मन्त्राद् । सूर्यरक्तद्विपन्के आदृष्णनलिसयगं । रा श्यन्तद्विपदक्नतन दीनेनियजेत । भृशङ्गणद्विपदन भायेदा तिमन्त्र गगनोलर्थमपदधायनति मरता यायुमर पदधुम मानवयायुमन्नत । पूषणपनिमनाए रक्तमतानिपूषणम् । वित द्विपन्नत वितथ दीनिमन्नत । गृहानाबीतिमन्त्रेण पीतव्यागनेत्रुतग । यमकृणद्विरगण यमाय बतिमन्त्रत गन्धर्वद्विपन्रक्त गन्धर्वनिमन्नत व्यर्थिष्णगराग गामरानानमन्त्र मृगानमीममन्त्रग पीतमैरपदमृगगम । रक्तनिरकेश्रयद पितृन्यसबतिनिक्रानी । दौवारिकपदरक्तवारिरतत सुग्रीवद्विपदरक्ता नतानानिमन्त्रत रक्तपुष्पदन्तग पायतिमन्नत वरुणद्विपन्नत क्ष्ममवरुणनित । असुरपीतिद्विपदयसुरपीनर्गनम । शोषाद्विपन्ति शपदक्षणात शप्तिगम् पीतमैरपन्गापमाभमव्यागनन्त । पापद्विपन्ति रागरप रमाक्षिगम् । अहिरिती मन्यणरक्तगन्धम्यहिम् । मुख्यरक्त यग्निमत मुख्यलक्ष्मन्त । भल्लाटमभट भद्र विणामिमन्त । सम ०० सोमम गायाध नदव्यागमम । भगद्विपदगयचामीरानद्वात द्विपदानन्तिपोता अदितिया रतिनमात । दितिमरपदापीता कागमाहविम त । अमभूया पीशभागे द्वितीये मगाट । अप ग्रथारौनपन्थाप आमारुन्नत । धन्यभागनमारिन मानवयस्तमापगा । व्यनमकपदशगार सदितिमन्ती । मावत्रादमक्षात मानकदातरक्त नभ । ततार ननरात पूराजिन्मनत नमै । पृथ्वीधरनमकमव्याघमयमगमात । गवि रक्तपन्यनिनारक्षरक्तस्यम् । यनमविन नत गदव तार्यस्वानिलनायण । शकरकत्र पन्मुदि यानानम नत । मित्रनपप्त नत्नामत्रापापदम । रानयदमागमराज्ञि मानय जमनरत्तम् । पश्चिम रक्त पृथ्वीनितिन्नत । आपत्तय यतिमनमकानिनापत्र मन । स थनरयवेपीत नद्यागमरानमम । मन्नयन नमिनितमन्त्र ततामजात ॥ तन्त्रमण्डलमध्यत् मध्ये पदपद्यनात । गुहा पृष्ठ नोया रजाना पृथियति मन्नत । तन्धा वास्तु पुरम नमन नताम मनत । तत्र च इत्यादि लग्न कुर्याद्युगत शुभम् । नशान्दि मम गन नरकयानरेन्द्र । शाल वरको मूर्णावानदिशीमनागत रक्तानिद रकामगी तता नरायणाय । नहाय पूतापीता द्वयन्दियमन्नत । वायव्ये पावर सपा धम्रारजसभागानि । ता प्रथयदन रक्त मध्यच माधयत दक्षिणे कृष्ण मय मया मननगगृहप न । पश्चिम नमन इया त्रपगानि मन्नत पिको पितृपीतवस्त्र नतत्रिनापतपत्तर । अप पप्तद्विर प्रानारमिनि मत्रत तिना अग्नेय नितत आग्नेय गिर चनुमधी । समायत्नति मन्त्रा वनदक्षिणनानेना । नैऋत्य क्षतिन्त्य अमन्तनि मन्नत त नानामो तिमन्त्र नरेण परिजन नना । नानानियुक्तिनित्रा वायुनाय मन्त्राणे । गोमगुत्तर

भागेतु वय ई० मामस्मत अर्धशभागे चेशान तमीशानेति मंत्रत । अस्मरेति ब्रह्माणं मध्येशान पूर्वयो । इन्द्राग्नीपूर्व्यो त्यनन्तञ्च मध्यपश्चिम निर्ऋतौ । वास्तु भद्र पूजादि प्रमाणमाह शौनकः —शिरादि पंच तत्व रिश देवाहतन प्रजगेत । वेदमंत्रनामभने प्रणव-व्याहृति भिरस्तथा । होमश्चि मंत्रलिङ्गयां । कुण्डहस्त प्रमाणतः । यवेक्षाणतिल स्तद्वु समिद्धि-श्चोरुजाः । पलाशैः खादिरापामार्गा उम्बर संभवैः । कुशदूर्वा मयेनापि मधुनापि समा न्वितं तर्यस्तु पंचभिर्विंश विंशतीज स्थापिता नामान्ते भवेत् गोऽध्येय दारुणश वल्करा । नमस्कारान्तु युक्तेन प्रणवेन मयेन । तत्रान्ते निहार्तं स्विष्ट कृद्धोम मेरच । पूर्णाहुति न जुहुयात्संख्यप प्रागमे तत्र शेष प्रयोग वदयामि ।

इति गृहवास्तु परिभाषा ।

गृहादि सूत्रारम्भ विधिः ॥

अथ सूत्रारम्भ विधानं वक्ष्ये शुभे ज्योतिः शास्त्रोक्त सूत्रा-रम्भ मुहूर्त्ते पुण्येऽहनि नूतन गृहं कर्त्तुमुत्सुको गृहान्मङ्गल ध्वनि वादित्रादिपुरः सरं कृतस्नानः सुवासाः साचार्यः शान्तिपाठादि मङ्गलसूक्तानि पठित्वा पूर्वोक्त कथनानुकूल परीक्षितं चतुरस्रगृह निर्माणस्थानमागत्य पञ्चगव्येनाभिषेक विधानेन कुशपिञ्जुलिना वा दूर्वाभिस्तद्भूमिमभिषिंच्यैशान कोणैकदेशे गोमयेनोपलिप्य दीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य च भूतोत्सादनादिकं विधाय गणेशादि पञ्चांग पूजनं कृत्वा-ईशानकोणे धान्यपुञ्जोपरि बृहत्कलशं वरुण विधिना सम्पूज्य शमीवट बिल्वाद्यन्यतमवृक्ष सम्भूतान् व्रणादि रहितान्यथोक्त लक्षणान् चतुरः शंकून् कौशेय कार्पास शणनि-र्मितं मध्यग्रन्थिरहित मर्धाङ्गुल विशाल सूत्रं तत्र सामयिकान्य-न्यानि वस्तून्यपि च तत्कलशपार्श्वे संस्थाप्यवक्ष्यमाण मन्त्रेण विश्वकर्माण मावाहयेत् ॥ ॐ विश्वकर्मन्निति मन्त्रस्य शासनापित्रि-ष्टुप्छन्दः विश्वकर्मा देवता विश्वकर्मा वाहने विनियोगः । ॐ

विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रम कृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्तपूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथा ऽसत इति पंचोपचारादिभिर्विश्वकर्माणं सम्पूज्य ॐ विश्वकर्मणे नमः सम्प्रार्थ्य ईशान शंकुम्। ॐ तमीशान मित्यस्य गौतम ऋषिर्जगतीछन्द ईशानो देवता ईशान कोण शंकु पूजने विनियोगः॥ ऋक्॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्व मवसे हूमहेवयम्॥ पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे। रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ॐ ईशानाय नमः सम्पूज्य प्रथक् स्थापयेत्—तत आग्नेय शंकुम्॥ ॐ अग्नेनयेत्यस्यागस्त्य ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवता आग्नेय कोण शंकु पूजने विनियोगः—ऋक्—ॐ अग्नेनय सुपथारायेऽअस्मान विश्वानिदेव वयुनानि विद्वान्॥ युयोध्यस्म ज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽउक्तिं विधेम ॐ अग्नये नमः सम्पूज्य प्रथक्स्थापयेत॥ ततो नैर्ऋत्यशंकुम॥ ॐ एषते इत्यस्य वरुण ऋषि रनुष्टुप्छन्दः निर्ऋतिर्देवता निर्ऋतिकोण शंकुपूजने विनि०॥ ऋक्—ॐ एषते निर्ऋते भागस्तंजुषस्व स्वाहा ॐ निर्ऋतयेनमः सम्पूज्य च प्र०॥ ततो वायव्य शंकुम्॥ ॐ वातोवेत्यस्य बृहस्पति ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता वायुकोण शंकु पूजने वि०॥ ॐ वातोवामनोवा गन्धर्वा सप्त वि दे० शतिः॥ ते ऽअग्रे श्वमयुजंस्ते ऽअस्मिञ्जवमादधुः॥ ॐ वायवेनमः सम्पूज्य प्रथक् स्थापयेत्। ततः प्रधान शिल्पिनमाहूय तं सम्बोध्यात्र त्वं मम गृह निर्माण कर्मणि प्रधान शिल्पी भवितुमर्हसि॥ अस्मीति प्रत्युक्तिः॥ त्वं भव भवानीति शिल्पी ब्रूयात॥ शिल्पिनं पारितोषिकं यथाशक्त्या द्रव्य परिधेय वस्त्रादिकं दत्वा तत्र शोधितायां भूमौ चतुरस्रे मण्डले शिल्पी अन्यत्तुपसूत्रं गृहीत्वा गृहभूमेश्चतुरायत यथोक्त रीत्यानिरीक्ष्य चतुर्षु कोणेषु उपशंकून् स्थापयित्वा शंकुंसूत्रेण द्विर्वेष्टयित्वा प्रादक्षिण्यादाग्नेयादि क्रमेण ईशान शंकूपरि दृढीकृत्येशानान्नैर्ऋत्य शंकुंयावत् कर्णसूत्रं पातयेत।

तद्वदाग्नेयाद्वायव्य शंकूपरिकर्णसूत्रंपातयेत् । येन प्रकारेण द्वयोः सूत्रयोर्दैर्घ्यैक्यता भवेत् । एवं विधिना त्रिकोण रहितं कुर्यात्॥ ततो ज्योतिः शास्त्रोक्त मुहूर्ते पद्धानुसारेणानुक्त स्थानस्थ ग्रहाणांदानानि कृत्वा सूत्रपातं कुर्यात् । अत्र सूत्रपातविधिं केचिदाचार्या आग्नेयकोणतो वदन्ति ॥ अपरेईशानतः ॥ अत्रोदेश प्रथानुसारात् पूर्वं पूजित प्रथमशंकोरुपरि सूत्रं दृढीकृत्य शंकोरग्रं तीक्ष्णमुखं घृतदुग्धादिभिर्विलिप्याचार्यो लोहमुष्टिं (हतोड़ीं) गृहीत्वा तत्र स्तम्भ निर्माणार्थ गर्त विधाय पूर्व शंकधिष्ठित भूम्यामचर्क्र दृढं पूजितमीशान शंकुं धृत्वा मन्त्रमुच्चरेत ॥ ॐ विशन्तु भूतले नागा लोकपालाश्च सर्वतः । अस्मिन् स्थानेतु तिष्ठन्तु आयुर्बल कराः सदा ॥ इति मन्त्रं पठन् शंकुं लोहमुष्टिना अष्टवारं ताड़येत् ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ॥ स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यसे महिदेवहितं यदायुः ॥ शंकोर्भेदे भंगेचानिष्टफलम् ॥ पूर्वोत्तरेशानेषु शंकु शिरस्निरश्चीनंचेच्छुभम् अन्यथाशुभम् ॥ ईशान स्थूणस्तम्भमपि सान्निध्ये दृढीकृत्य ॐ ब्रह्मणे नमः— इति मन्त्रेण पाद्यादिभिः सम्पूज्य बलिं दद्यात् ॥ माप भक्तबलिं सम्पूज्य ॐ रुद्रेभ्यश्चैव सर्पेभ्यो येचान्येतत्समाश्रिताः । बलिंतेभ्यः प्रयच्छामि गृह्णन्तुसततोत्सुकाः स्वाहा, एवं सर्वत्र तत आग्नेये ॐ विशन्तुभूतलेनागा लोकपालाश्चसर्वतः । अस्मिनस्थानेतुतिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा । अनेनमंत्रेण मुष्टिनरं शंकुंकीलयेत् । स्थूणस्तम्भं । ॐ विष्णवेनमः पाद्यादिभिः सम्पूज्याग्नेयशंकुं सूत्रेण प्रदक्षिणक्रमेण द्विर्द्विर्वेष्टयित्वा बलिंदापयेत् । बलिंसंपूज्य ॐ अग्निभ्योऽप्यथसर्पेभ्यो येचान्ये तत्समाश्रिताः । बलिंतेभ्यः प्रयच्छामिपुष्पमोदन मुत्तमम् स्वाहा । ततोनैर्ऋत्ये । नैर्ऋत्य शंकुंसूत्रेण द्विर्वेष्टयित्वा । ॐ विशन्तुभूतलेनागा लोकपालाश्चसर्वतः । अस्मिन् स्थानेतु तिष्ठन्तु आयुर्बलकराः सदा ।

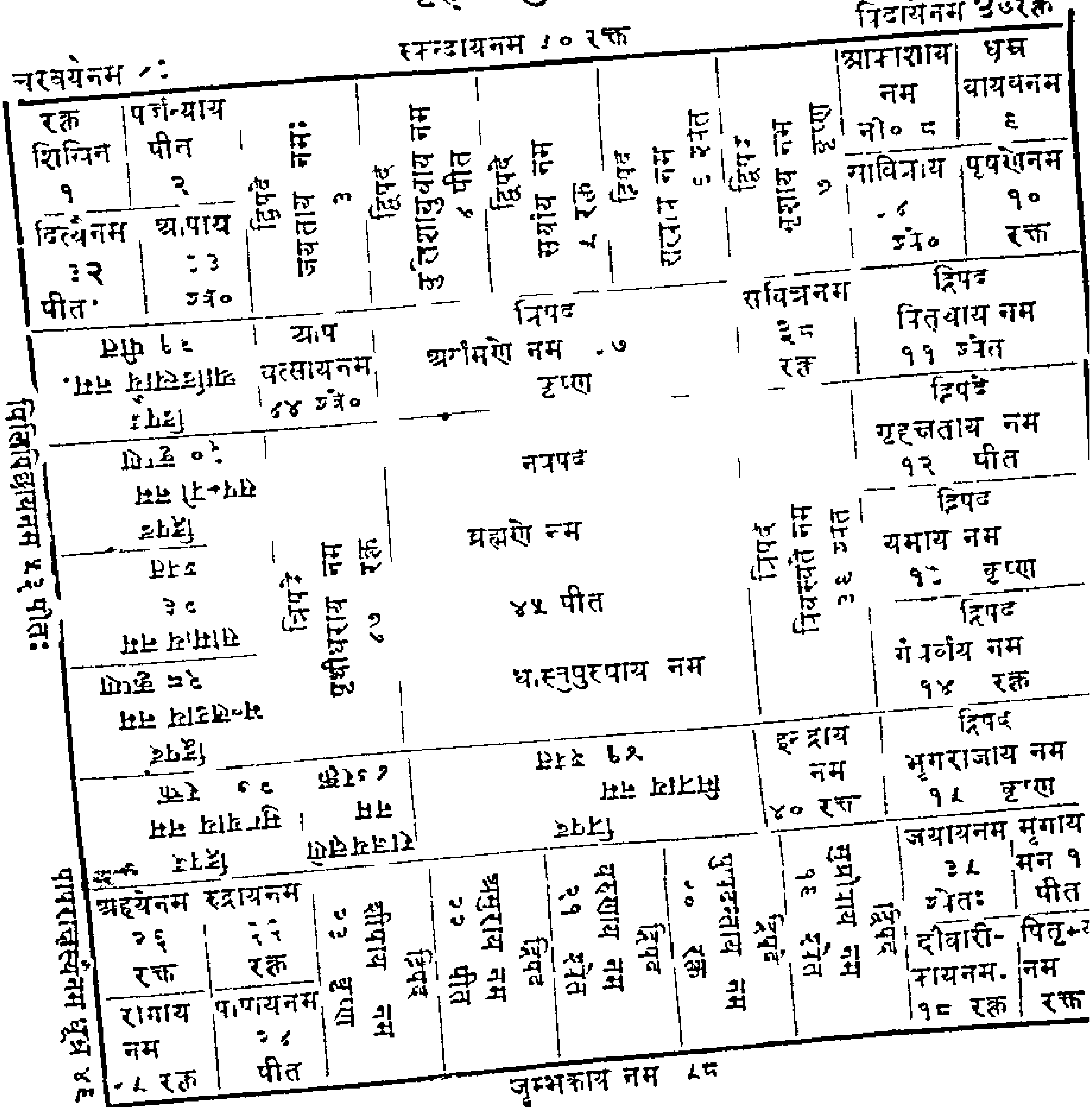
इति शंकुं पूर्ववत्कीलयेत् । स्तम्भम् ॥ ॐ महेश्वरायनमः पाद्या-
दिभिः सम्पूज्य बलिंच । ॐ नैर्ऋत्याधिपतिश्चैव नैर्ऋत्यां
येचराक्षसाः । बलिंतेभ्यः प्रयच्छामि सर्वं गृह्णन्तु साम्प्रतं स्वाहा ।
वायव्यकोणशंकुं द्विवेष्टयित्वा—ॐ विशन्तुभूतलेनागा लोकपाला
श्चसर्वतः । अस्मिन् स्थानेतु तिष्ठन्तुआयुर्बलकराः सदा । पूर्वव-
त्कीलयेत् ॐ इन्द्रायनमः स्तम्भं सम्पूज्य बलिंच । ॐ वायव्य
वासिनोयेच येचान्येतत्समाश्रिताः । तेभ्योबलिं प्रयच्छामि गृह्णन्तु
पुण्यमोदनम् स्वाहा । इति चतुष्कोणेषु शंकुकीलनादनन्तरं ततः
ईशानकोणस्थ शंकोस्तत्सूत्रंद्दढी कुर्यात् । तत आचम्य (अत्रके-
चिदाचार्या ग्रहयाग पूर्वकवास्तुयागंच तन्मध्यभूमौ वास्तु
वेदीमेकाशीति पदां निर्माय वास्तुमण्ड पूजा पद्धत्यनुसारेण
पूजाबलि होमादिकमपि प्रवदन्ति ॥ उक्तं च शब्द कल्पद्रुमे,
मात्स्ये सूत्रपातादौ ॥ सूत्रपाते तथा कार्यं तथा स्तम्भोदयेपुनः ।
द्वारवन्धोच्छ्रये तद्वत्प्रवेश समये तथा ॥ वास्तूपशमने तद्वद्वास्तु
यज्ञस्तु पञ्चधा ॥ इति प्रमाणवचनैः सूत्रपाता दारभ्यो गृहप्रवेशा-
न्तोक्त समयानुकूलो वास्तु यज्ञः पञ्चधा भवतीति) क्षेत्रमध्ये ऽ
अष्टदलं कमलं लिखित्वा तत्र पृथ्वीं पूजयेत् ॥ ध्यानम्—
सुरूपां प्रमदारूपां सर्व लोक धरामहीम् । ध्यायामिमनसा देवीं
दिव्या भरण भूषिताम् ॥ ॐ स्योना पृथ्वीति मेधातिथिर्ऋषि-
र्गायत्री छन्दः पृथ्वी देवता पृथ्व्यावाहने पूजने विनियोगः ॥
ऋक् ॐ स्योना पृथिवीनो भवा नृक्षरा निवेशनी । यच्छानः
शर्म्म सप्रथाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भो पृथ्वीहागच्छेहतिष्ठ सुप्र-
तिष्ठिता वरदाभव ॥ ॐ पृथिव्यैनमः ॥ इति पाद्यगन्धादिभिः
सम्पूज्य प्रार्थयेत ॥ पृथिव त्वं सर्वलोकानामाश्रयायार्चितासुरैः ।
अतोमेगृह निर्माण चमंस्थानं प्रकल्पय ॥ तत्रैव मध्यपदे वास्तु
पुरुषं ध्यायेत् ॥ ध्यानम ॥ ॐ एह्येहि भगवन वास्तो गृहेश सर्व
सौख्यद । पूजां गृहाण देवेश सर्वसम्पत्करोभव ॥ ॐ वास्तो-
ष्पत इति वशिष्ट ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वास्तुर्देवता वास्त्वावाहने

विनियोगः । ऋक्ः ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानिह्यस्मान्त्स्वावेशो ऽ अनमीवोभवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नोजुषस्वशन्नो भवद्विपदेशं चतुष्पदे । ॐ वास्तु पुरुषायनमः ॥ पाद्यादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—वास्तो स्वामिन् शक्तिरूप सर्व सौभाग्यसंयुत । गृहं रक्ष ममाभिष्टंप्रसाधय मुदाप्रभो । ततः ईशानमागत्य बृहत्कलश मादयाचार्यः स्वस्तिवाचन पूर्वककलशजलेनेशानादि प्रादक्षिण्येन सूत्रमार्गेणधारांदत्वा ईशान एव पुनस्तं कलशंयत्किंचिज्जल सहितं संस्थाप्य तेनैव क्रमेण यवान् वापयेत् ॥ तत स्तस्मिन्नेव सल्लग्ने आचार्यः (अत्रखातंशिलान्यासमपि आग्नेयतो वदन्ति- केचित् । देशप्रथानुकूलं कुर्यात्) शान्तिसूक्तादिपुरः सरशिल्पिना सहघृतमधुमुखेन कुद्दालेन उदङ्मुखेनभित्तिनिर्माणार्थशिलास्थानं खातयेत्— ततोमृदंनवेनवेणव पिटकेन नैर्ऋत्यां प्रक्षिपेत् । एवं चतुर्षु कोणेषु खातंकृत्वेशान्यांदिशि तत्खातगर्त्तेयवगन्धपंच- रत्न सुवर्ण रजतादि मुद्रां स्वनामांकिते स्वर्णपत्रेतद्दिनस्यसूर्याश संवत्सरगणानांकादिकंसुलेख्य शिलाधः स्थापयेत् । उपरित उत्तर पूर्वाभिमुखेनाचार्यः—ईशानशिलांनन्दानाम्नीमुत्थाप्य ॐ स्थिरो भववीड्वंग ऽ आशुर्भवत्वाज्यर्वन् । पृथुर्भवसुखदस्त्वम, अग्नेः पुरीषवाहणः इति ईशाने स्थापयेत् । ॐ नन्दायैनमः । गन्धादिभिः संपूजयेत् तत आग्नेये खनितगर्ते पूर्वदन्यस्याग्ने- यशिलां भद्रानाम्नीमुत्थाप्य ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यसे- महिदेवहितंयदायुः । ॐ भद्रायैनमः सम्पूज्य ततो निर्ऋतिकोणे जयानाम्नी शिलामुत्थाप्य ॐ स्थिरोभववीड्वङ्ग ऽ आशुर्भवत्वा- ज्यर्वन् । पृथुर्भवसुखद स्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः इति संस्थाप्य ॐ जयायैनमः इति सम्पूज्य । ततो वायव्य कोणेरिक्तानाम्नीं शिलामुत्थाप्य ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिंपुष्टि वर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ रिक्तायैनमः संस्थाप्य सम्पूज्यच तत आचार्यः शान्तिकलशोदकेन शिलाभ-

मिंच संप्रोक्ष्यकुद्दालादिकमपि जले आप्लाव्यगन्धादिना पूजयेत्
ततो सपत्नीकंयजमानं अभिषेक मंत्रैरापिंच्य ॐ भद्रमस्तु
शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तुत्वां सुराः सर्वसम्पदः
सुस्थिराभव ॥ इति देवोपभुक्त निर्माल्यंदत्वा आचार्यादीन् ।
शिल्पकारादींश्च दक्षिणाभिः पारितोपिकादिना तोषयेत् ।

इति सूत्रारम्भ विधिः ।

गृहवास्तुभद्रम्



अथ वास्तुयाग पद्धतिः ।

तत्रादौ, नूतन गृहनिर्माणनिर्विनिरूपिते शुभे मुहूर्ते आचा-र्योक्त्यनुसारेण शिल्पकार द्वारा पञ्चशिलाः पूर्वोक्त विधिना यथा ब्राह्मण एक विंशत्यंगुल दीर्घाः। क्षत्रिः सप्तदशांगुलदीर्घाः। वैश्यस्त्रयोदशांगुल दीर्घाः । शूद्रे नवांगुल दीर्घाः । दैर्घ्यार्द्ध विशालाः । विशालतार्द्ध प्रमाणोन्नताः समाः मनोहरा घाट-येत ॥ तासु क्रमशः नन्दायां पद्मम् । भद्रायाम् सिंहासनम् । जयायां तोरण छत्रे । रिक्तायां कुम्भम् । पूर्णायां चतुर्भुजं विष्णुम् । शिल्पीटंकेन लिखेत ॥ तासां शिलानां च स्थापनार्थं शिलामयाआधारशिला । वितस्तिमात्रायताअष्टांगुलोच्छ्रिताः षडां गुलायताः ॥ विंशतिशिलाः । अन्या अपिकारयेत्, यथागर्तमध्ये चतसृणामुपशिलानां मध्ये पद्मादि निधि कुम्भस्थापनार्थं प्रादेश मात्रं चतुरस्रं कुण्डं भवेत् । पद्मादिनिधि कुम्भाश्च ताम्रका मृण्मया वा वर्णादीनां क्रमेण पञ्चांगुलाश्चतुरस्राः सार्द्ध द्वयंगुलाः सपादांगुलाः पञ्चकार्याः शूद्राणामपि सपादांगुलाएव । तेषां पञ्च कुम्भानां पिधानानि च कार्याणि ॥ अथ कर्म प्रयोगः ॥ तत्र पूर्वेऽहनि कृतैकभुक्तो यजमानः सपत्नीकः प्राङ्मुखोपविश्यदीपं प्राज्वाल्याचम्य स्वस्ति वाचनं पठित्वा ॐ सुमुखेत्यादिना गणे-शाय पुष्पांजलि निवेद्य स्वेष्ट देवतां स्मृत्वा अर्घ संस्थाप्य प्राणा-याम त्रयं विधाय गौरसर्षपाक्षतैर्भूतोत्सादनं विधाय कुशतिल जलान्यादाय संकल्पं कुर्यात॥ अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं वास्तु शान्तिपूर्वक शिलान्यास गृह प्रवेश कर्मणि च निर्विघ्नता सिद्ध्यै आदौ श्री गणपत्यादि पंचांग देवतानां पूजन पूर्वकं नांदीश्राद्ध पुण्याहवाचनादि कर्म करिष्ये ॥ पूर्वोक्त विधानेनैतान्सम्पूज्य प्रधान सङ्कल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं नूतनगृहे शिलान्यासपूर्वकं करिष्यमाणगृह प्रवेश कर्मणि सर्वोपद्रव शान्ति पूर्वकमायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यै पुत्रपौत्र धन धान्यादि द्विपद चतु-

पदादि वृद्धये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं ग्रहमख सहितां सर्वतो भद्र ग्रहभद्र वास्तु भद्र पूजनयुतां वास्तु शान्ति करिष्ये— तथाचगणेशनवग्रहादि साधकाना माचार्यब्रह्मर्त्विग्सदस्यद्वारपाल कानाञ्चयथाक्रमंवरणंकरिष्ये ॥ वासांगुलीयकासन पंचपात्रधौतो तरीय वस्त्रादिसामग्रीं सम्पाद्यजलेनाभ्युक्ष्य गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्याचार्यब्राह्मणमाहूयार्घ्यंदत्वा गन्धादिभिः सम्पूज्याद्येत्या दि संकीर्त्यामुको ऽ हमेभिर्गन्धाक्षत यज्ञोपवीत पुष्पमाला वासो लङ्करणद्रव्यैः सवास्तुशान्तिशिलान्यासगृहप्रवेशकर्मण्याचार्यत्वेना मुक शर्माणं ब्राह्मणंवृणे । वरणंतस्मैदत्वा–वृतो ऽ स्मीत्याचार्यो ब्रूयात् । प्रार्थयेत—आचार्यस्तुयथास्वर्गे शक्रादीनांबृहस्पतिः । तथात्वं ममयज्ञे ऽ स्मिन्नाचार्योभवसुव्रत ॥ तथा गणेशमन्त्र जापकं नवग्रहमन्त्रजापकान । संहितापाठकंशात्यध्याय पाठ-कान् द्वारपालान यथाशक्तितोव्रणुयात् । ततआचार्यसहितो यज-मानः । धूपदीपादीनि सर्वोपकरणवस्तूनि ब्राह्मणैर्ग्राहयित्वावादि त्रादिमङ्गलध्वनिंपुरस्कृत्य मण्डपंप्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रवेशंकुर्यात् । नत्रसुलिप्तायांभूमौ मण्डपमध्यभागे यजमानहस्ता चतुर्हस्तांचतुरस्रां सर्वतोभद्रवेदिकांहस्तोच्छ्रितां वासपादहस्तां चतुरस्रां शिल्पकारद्वारा निर्माप्यतत्राधारं श्वेतवस्त्रंप्रसार्याचार्यः पूर्वोक्तप्रकारेण रेखानिर्माणं रचनादिकंचकृत्वा स्तम्भपूजोक्त विधिनाषोडश स्तम्भान सम्पूज्यमध्ये यथेष्टदेवं वेदोक्तविधिना सम्पूज्य यदिशिवशक्तिविष्ण्वादि मन्दिराणांवापीकूप तडागा-दीनां प्रतिष्ठाचेत् ॥ अष्टलिंगतोभद्रादीनां रचनयातत्तद्देवतानां स्थापनंपूजनंचकुर्यात् ॥ ततईशानेग्रहभद्रोक्तरीत्या त्रिवप्रांवेदीं निर्माप्यपद्धत्यनुसारेण पूजनंकुर्यात् ॥ तत्रआग्नेये यजमानहस्तेन हस्तमितायामविस्तारां चतुरंगुलोच्छ्रितां वास्तुवेदींनिर्माय वेद्यु-परिश्वेतवस्त्रंप्रसार्य ततोईशानादिकोण चतुष्केषु ॐ विशन्तु भूतलेनागा लोकपालश्चसर्वतः । अस्मिन्गृहेतुतिष्ठन्तु आयुर्बल-कराःसदा ॥ इतिमन्त्रेण प्रादक्षिण्येनखादिरादि कीलिकाआरो-

पयेत् ॥ तत्रैवपार्श्वे माषभक्तबलिंदद्यात् ॥ ३ॐ अग्निभ्योऽप्यथसर्पेभ्योयेचान्ये तत्समाश्रिताः । तेभ्योबलिंप्रयच्छामिपुण्यमोदनमुत्तमम् ॥ ततोवास्तुवेद्युपरिवस्त्रे स्वर्णशलाकयाऽथंगुलान्तराला समादश रेखानाम मन्त्रैः कुंकुम हरिद्रादिभिर्मन्त्र मुच्चार्य कुर्यात् । आदौ पश्चादारभ्याः प्रागन्ताः । ३ॐ शान्तायैनमः ३ॐ यशोवत्यै नमः ३ॐ कान्तायैनमः । ३ॐ ३ॐ विशालायैनमः । ३ॐ प्राणवाहिन्यैनमः । ३ॐ सत्यैनमः । ३ॐ सुमनायैनमः । ३ॐ नन्दायैनमः । ३ॐ सुभद्रायैनमः । ३ॐ सुरथायैनमः ॥१०॥ अतो दक्षिणारम्भाउदंगताः प्राक्संस्थाऽथंगुलान्तरालाः समादशरेखाः कृत्वा ३ॐ हिरण्यायैनमः ३ॐ सुव्रतायैनमः ३ॐ लक्ष्म्यैनमः । ३ॐ विभूत्यैनमः ३ॐ विमलायैनमः ३ॐ प्रियायैनमः । ३ॐ जयायैनमः ॥ ३ॐ कलायैनमः । ३ॐ विशोकायैनमः ३ॐ इडायैनमः ॥१०॥ एवं एकाशीतिपदं वास्तुमण्टलं विधाय पूर्वोक्तानुसारेण रक्तपीतादितवं वर्णयित्वा वक्ष्यमाण प्रकारेण पदेषु देवता स्थापन पूजनादिकं च कुर्यात् ततो वास्तुवेद्याः पश्चिमेवोत्तरे सयोनिमेखलं हस्तमात्रायत विस्तारंकुंडं चतुरंगुलोच्छ्रितंस्थंडिलंवाकृत्वा चतुर्द्वारयुक्तांशालांविदिकास्वध्वजादिभिः-सुसज्य यजमान आचार्यो वा वक्ष्यमाणपद्धत्या वस्तुवेद्यामीशानादि क्रमेण शिख्यादि देवानावाहयेत् । अथातो वास्तुभद्र पूजन विधिः । ३ॐसिद्धम् ३ त्रिराचम्यसंकल्पंकुर्यात्— अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽ हममुककर्मणि शिख्यादि वास्तु भद्रस्थदेवतानां सुवर्णरजतादि प्रतिमा स्थापन पूर्वकमीशानाद प्रादक्षिण्य क्रमेण तत्तद्देवतानामावाहनादिप्रकारेण पूजनंकरिष्ये। ततः सुवर्णे मयींनागाकृतिं वास्तुप्रतिमामान्याश्च प्रतिमास्ता म्रपात्रेसंस्थाप्याग्न्युत्तारण विधिनाऽग्न्युत्तारणं कृत्वा लिखित वास्तुभद्रानुसारेण तत्तत्स्थानेषु प्रतिमास्थापयित्वा कर्मारंभं कुर्यात्-। पंचशिलाश्च वास्तुवेद्याः परितः स्थापयेत् । तत्रादौ घाशईशान एकपदेरक्ते शिखिनम् । ३ॐ सनः पावक इत्यस्य

मेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दो ऽग्नि देवता शिख्यावाहने विनियोगः । ओ३म् सन पावक दीदिवोग्नेदेवा । २ऽ।। इहावह । उपयज्ञ ई० हविश्चन ओ३म् भूर्भुवः स्वः शिखिनेनमः स्थापयामि पूजयामि । तदग्रतः प्रादक्षिण्य क्रमेणैकपदेपर्जन्यं पीतम् ॥ ओ३म् शन्नो वात इत्यस्य दध्यंगाथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः पर्जन्यो देवता पर्जन्य स्थापने विनियोगः ॥ ओ३म् शन्नो वातः पवताॐ शन्नस्तपतु सूर्यः शन्तः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योऽभिवर्षतु ॥ ओ३म् भू० स्वः पर्जन्यायनमः स्था० पू० ॥ तदग्रतो जयंतं द्विपदे पीतं । ओ३म् गोत्रभिदमित्यस्याप्रतिरथ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता जयन्तस्थापने विनियोगः ॥ ओ३म् गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्त मज्मप्रमृणं तमोजसा ॥ इम ई० सजाता ऽ अनुवीर यध्वमिन्द्र ई० सखायो ऽ अनुस ई० रभध्वम् ॥ ओ३म् भू० स्वः जयन्तायनमः जयन्तं स्था० पू० ॥ ततो द्विपदे पीतं कुलिशायुधम् ॥ ओ३म् मन्त्वा शँ॥ इत्यस्य विश्वामित्र ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता कुलिशायुध स्थापने वि० ॥ ओ३म् मन्त्वा शँ॥ इन्द्रवृषभोरणायपिबासोम-मनुष्वधम्मदाय । आसिंचस्वजठरे मध्व ऊर्मिन्त्व ई० राजासि प्रतिपत्सुतानाम् ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः कुलिशायुधायनमः स्था० पू० ॥ तदग्रे रक्तं द्विपदं सूर्यम् ॥ ओ३म् आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तुप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सविता देवता सूर्य स्थापने० ॥ ओ३म् आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्य येन सविता रथेन देवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥ ओ३म् भू० स्वः—सूर्याय नमः स्था० पू० ॥ तदग्रे पदद्वये शुक्लं सत्यं ॥ ओ३म् व्रतेन दीक्षेत्यस्य प्रजापति ऋषि रनुष्टुप्छन्दः सत्यो देवता सत्य स्थापने वि० ॥ ओ३म् व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धा माप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥ ओ३म् भू० स्वः ओ३म् सत्याय नमः स्था० पू० तदग्रे पदद्वये भृशं कृष्णं । ओ३म् भायै दार्वाहारमित्यस्य नारायण ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो नारायणो देवता भृश । स्थापने विनियोगः ॥ ओ३म् भायै दार्वा-

हारं प्रभाया ऽ अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकायपेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितार ॐ सर्पेभ्यो लोकेभ्य ऽ उपसेक्तारं मवऋत्यैव्वधायोपमन्थितारं मेधायव्वासः पल्पूलिं प्रकामायरजयित्रीम् ॥ ॐ भू० स्वः० भूशाय नमः स्था० पू० ॥ भूशायत एकपदे आकाशं—ॐ घृतंघृत पावानइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो विश्वेदेवा देवता आकाश स्थापने विनियोगः ॐ घृतंघृतपावानः पिबतवसांवसापावानः पिबतान्तरिक्षस्यहविरसि स्वाहा दिशः प्रदिशआदिशोविदिश ऽ उद्दिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशायनमः आकाशं स्था० पू० तत आग्नेये एकपदे शुभ्रवर्ण वायुम् । ॐ वायोः पूतइत्यस्यामूर्ति ऋषिर्गायत्रीछन्दः सोमोदेवता वायुस्थापने विनियोगः ॐ वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्‍ सोमो ऽ अतिद्रुतः । इन्द्रस्य युज्यः सखा ॐ भूर्भुवः स्वःवायुं स्था० पू० तत एकपदे रक्तं पूषाणम् । ॐ पूषणंवनिष्ठुना इत्यस्य प्रजापति ऋषिः पूषादेवता पूष्णः स्थापने विनियोगः ॐ पूषणं वनिष्ठुनां धाऽन्धीन्स्थूल गुदयासर्पान्गुदाभिर्विहूरुत आन्त्रैरपोवस्थिना वृषणमांडाभ्यां वाजिन ३० शेपेनप्रजा ॐ रेतसाचापान पित्तेन प्रदरान्पायुनाकूष्माण्डाञ्छकपिण्डैः ॐ भू० स्व० पूषाणं स्था० पू० ततो द्विपदेशुक्लं वितथम् ॐ विभयदीत्यस्य कुशिक ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता वितथ स्थापने विनियोगः ॐ विदयदी सरमारुग्णमद्रे र्महिपाथः पूर्व्यं ३० सध्र्यक्‍ः अग्रंनयत्सु पद्यराणाम धारवं प्रथमा जानतीगात् ॥ ॐ भू० स्वः वि० स्था० पू० ॥११॥ ततः पदद्वये पीतं गृहक्षतम ॥ ॐ गृहमाइत्यस्य शंकु ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः वास्तुर्देवता गृहक्षत स्थापने वि० ॥ ॐ गृहामा बिभीतमा वेपध्वमूर्ज बिभ्रत ऽ एमसि । ऊर्ज विभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः ॥ ॐ भू० स्वः । गृह क्षतायनमः स्था० पू० ॥ ततो दक्षिणे पदद्वये कृष्णं यमम् ॥ ॐ यमायेत्यस्य दध्यंगाथर्वण ऋषिस्त्रिस्त्रियजूंषि आयस्य यम

नामा वातोदेवता अन्त्ययोर्घर्मोदेवता यमस्थापने वि० । ॐ यमा यत्वांगिरस्वते पितृमतेस्वाहा । घर्मायस्वाहा । घर्मः पित्रे ॥ ॐ भू० स्वः यमायनमः स्था० पूजयामि । ततो रक्तवर्णपदद्वयेगन्धर्वम् । ॐ गन्धर्वस्त्वेत्यस्य परमेष्ठीऋषिर्यजुश्छन्दःपरिधयोदेवता गन्धर्वस्थापने विनियोगः । ॐ गन्धर्वस्त्वाविश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्यपरिधिरस्यग्निरिडईडितः ॐ भू० स्वः ॐ गन्धर्वाय० स्था० पू० । ततोभृङ्गराजंद्विपदंकृष्णम् ॥ ॐ सोम ई० राजानमितितापसऋषिरनुष्टुपछन्दः सोमाग्न्यादिदेवता भृङ्गराजस्थापने विनियोगः ॥ ॐ सोम ई० राजानमवसेग्निमन्वारभामहे । आदित्यान्विष्णु ई० सूर्यंब्रह्माणंचबृहस्पति ॐ स्वाहा ॐ भू० स्वः भृङ्गराजायनमः स्था० पू० ततएकपदे पीतंमृगम् । ॐ मृगोनभीमइत्यस्यजयर्षिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवतामृगस्थापने विनियोगः । ॐ मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतआजगंथा परस्याः । सृक ई० स ई० शायपविमिन्द्रतिग्मं विशत्रूंताढिवि-मृधोनुदस्व ॥ ॐ भू० स्व० मृगायनमःस्था० पूजयामि । ततोनैर्ऋत्यएकपदेरक्तान्पितृन् । ॐ पितृभ्यइत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिःसप्तयजूंपिछंदांसिपितरोदेवतापितृस्थापनेविनियोगः । ॐपितृभ्यःस्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः ॥ अक्षन्नपितरो मीमदन्तपितरोतीतृपन्त: पितरः पितरःशुन्धध्वम् ॥ ॐ भू० स्वः पितृभ्योनमः स्था० पू० ॥ ततएकपदेरक्तंदौवारिकम् । ॐ द्वेविरूपेतिमन्त्रस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता दौवारिकस्थापने विनि० । ॐ द्वेविरूपेचरतः स्वर्थे ऽ न्यान्यावत्समुपधापयेते । हरिरन्यस्यां भवतिस्वधावांश्छुक्रो ऽ अन्यस्यांददृशेसुवर्चाः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः दौवारिकायनमः स्था० पू० । ततो द्विपदेशुक्लंसुग्रीवम् । ॐ तन्नोवातमित्यस्य गौतमऋषिर्जगतीछन्दः विश्वेदेवादेवताः सुग्रीवस्थापने विनियोगः । ॐ तन्नोवातोमयोभुवातुभेषजं तन्मातापृथिवी तत्पिताद्यौस्तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयोभुवस्तद-

रिचनाश्रृणुनं भिष्णगायुधम ॥ ३० भूर्भुवः स्वः मुर्श्यायनमः स्था० पू० ततःग्नेक्षिपदेरक्तंपुष्पदन्तम ३० नमः पार्यायेत्यस्य परमेष्ठीऋषि र्यजुंषिछन्दांसिरुद्रादेवतापुष्पदन्त स्थापने विनियोगः । ३० नमः पार्यायचावार्यायच नमः प्रतरणायचोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्यायच नमः शष्पायच फेन्यायच ॥ ३ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्पदन्तायनमः स्था० पू० । ततः पश्चिमे श्वेतं द्विपदेवरुणम् । ३० इमम्मेनिशुनः शेफऋषिर्गायत्रीछन्दो वरुणोदेवता वरुणस्थापने विनियोगः । ३० इमम्मे वरुणश्रुधीहवमद्या च मृडय । त्वाम वस्युराचके । ३ॐ भू० स्वः वरुणायनमः स्था० पू० । ततो द्विपदे पीतमसुरम् । ३० येरूपाणि—इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवताऽसुरस्थापने वि० ३० येरूपाणिप्रतिमुञ्चमानाऽअसुराःसन्तः स्वधयाचरन्ति । परापुरोनिपुरोये भरन्त्यग्निष्टां ल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् । ३० भूर्भुवःस्वःअसुरायनमः स्था० पू० । ततो द्विपदेकृष्णंशोषम । ३० नमोस्तुसर्पेभ्यइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः शोषस्थापने विनियोगः । ३ॐ नमोस्तु सर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु । ये ऽ अन्तरिक्षेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ३०भू० स्वः शोषायनमः स्था० पू० । तत एकपदेपीतंपापम् ॥ ३० मामेर्माइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः पापोदेवतापापस्थापने विनियोगः । ३ॐ माभेर्मासम्विक्था ऽ ऊर्जधत्स्वधिषणेव्वीड्वी सतीव्वीडयेथा मूर्जंदधाथाम् ॥ पाप्माहतोनसोमः ३ॐ भू० स्वः पापायनमः स्था० पू० ततोवायव्येएकपदे रक्तंरोगम् । परंमृत्यो रितस्यसङ्कल्पऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दःमृत्युर्देवतारोगस्थापने विनियोगः ३० परं मृत्योऽअनुपरेहिपन्थाम्यस्ते ऽ अन्य ऽ इतरो देवयानात । चक्षुष्मतेश्रृण्वते त्र्वीमिमानः प्रजा ॐ रीरिषोमोतव्वीरान् ॥ ३ॐ भूर्भुवः स्वः । रोगायनमः स्था० पू० । तत एकपदेरक्तमहिम् । ३ॐ अहिरिव भोगेरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः हस्तघ्नो देवता अहिस्थापने विनियोगः ॥ ३० आहरिव भोगैः पर्य्येतिवा हुंज्यायाहेति परिवाधमानः ॥ हस्तघ्नो विश्वाव्वयुनानि विद्वा

ग्पुमान्पुमा ॐ संपरिपालुविश्वतः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः अह्ये नमः स्था० पू० तनो द्विपदे मुग्च्यं रक्तं—ॐ मुग्न इ० सदस्य इत्यस्य प्रजापत्यश्वि सरस्वत्य ऋपयोजगतीछन्दः अश्विसरस्वतीन्द्रा देवता मुख्य स्था० वि० ॥ ॐ मुग्व इ० सदस्य शिर ऽ इत्सतेन जिह्वा पवित्र मश्विनासनसरस्वती । चप्पनपायु भिपगस्य त्वा-लोवस्तिनं शेपो हरसातरस्वी । ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्यायनमः । स्था० पू० । ततःपदद्वये कृष्णं भल्लाटम् । ॐ भद्रं कर्णेभिरित्यस्य गौतम ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दः विश्वेदेवा देवताभल्लाट स्था० वि० ॥ ॐ भद्रं कर्णेभिःशृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यसे महिदेवहितं यदायुः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भल्लाटायनमः स्था० पू०। ततो द्विपदेशुक्लंसोमसुत्तरे। ॐ वय इ० सोमेत्यस्य वन्धु ऋपिर्गायत्रीछन्दः सोमोदेवता सोम स्थापने वि० ॥ ॐ वय इ० सोमव्रतेतवमन स्तनूपु विभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ ॐ भू० स्वः सोमायनमः । स्था० पू० ततो द्विपदे कृष्णं सर्पम् । ॐ येवामीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवता सर्पस्था० वि० । ॐ येवामीरोचने दिवोयेवा सूर्य्यस्य रश्मिपु । येपामप्सुसदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्योनमः । ॐ भूर्भुवःस्वः सर्पायनमः स्था० पू० ॥ ततः पदद्वये पीतामदितिम् ॥ ॐ अदिति र्द्यौरित्यस्य गौतम ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दः विश्वेदेवाधिदेवता अदिति स्थापनेवि० ॥ ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष मदितिर्मातासपिता सपुत्रः । विश्वेदेवा ऽ अदितिः पंचजना ऽ अदितिर्जात मदिति र्ज्जनित्वम् ॥ ॐ भू० स्वः अदित्यैनमः स्था० पू० ॥ तत एकपदे पीतवर्णादितिम् ॥ ॐ कायस्वाहेत्यस्य प्रजापतिर्ऋपिर्दैवीबृहत्या दिछन्दांसि लिंगोक्ता देवताऽदितिस्थापने वि० ॥ ॐ कायस्वाहा कस्मैस्वाहा कतमस्मैस्वाहा स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा मनःप्रजा पतये स्वाहा चित्तंविज्ञानायादित्यै स्वाहा दित्यैमहै स्वाहा दित्यै सुमृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यैस्वाहा सरस्वत्यैपावकायै स्वाहा सर-स्वत्यै बृहत्यै स्वाहा पूष्णेस्वाहा प्रपथ्यायस्वाहा पूष्णेनरंधिषाय

स्वाहा त्वष्ट्रेस्वाहा त्वष्ट्रेतुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रेपुरूरूपाय स्वाहा विष्णवेस्वाहा विष्णवेधिभृपायस्वाहा विष्णवेशिपिविष्टायस्वाहा ॐ भू० स्वः दित्यैनमः स्था० पू० ॥ इति बाह्यपरिधौष्ठाशत्रिदेवतास्थापनक्रमः ॥ अथान्तरीशानादिचतुर्षु विदिक्षु अवादि देवता स्थापनक्रमः ॥ ततो बाह्यपरिधौ ईशानाभ्यन्तरे कपदे श्वेता अपः ॥ ॐ अपोअस्मानित्यस्य प्रजापति र्ऋषिरत्यष्टीछन्दः आपो देवता अपांस्थापने विनियोगः । ॐ आपो अस्मान् मातरः शुंधयन्तुघृतेननोघृतप्वः पुनन्तु । ॐ विश्व ँ० हिरिप्रंप्रवहन्तीदेवी रुदिदाभ्यः शुचिराप्न ऽ एमि ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः अद्भ्योनमःस्था० पू० ॥ तत आग्नेय आभ्यन्तरेकपदे शुक्लं सावित्रं ॥ ॐ वरमहा नित्यस्य जमदग्निर्ऋषिर्बृहतीछन्दः सविताऽदेवता सावितृस्थापने वि० ॥ ॐ वरमहा ँ२॥ असिसूर्य्यबटादित्यमहा ँ॥ असिमहस्ते सतोमहिमा पनस्यतेद्धादेवमहां असि ॥ ॐ भू० स्वः सवित्रेनमः स्था० पू० ॥ ततो नैर्ऋत्य आभ्यन्तरीयैकपदेशुक्लं जयन्तम् ॥ ॐ गोत्रभिद मित्यस्याप्रतिरथऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवताजयन्तावाहने विनियोगः ॥ ॐ गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुंजयन्तमज्म प्रमृणं तमोजसा । इम ँ० सजाता ऽ अनुवीरयध्व मिन्द्र ँ० सखायो ऽ अनुस ँ० रभध्वम् ॥ ॐ भू० स्वः जयन्ताय नमः स्था० पू० । ततो वायव्ये आभ्यन्तरीयेकपदे शुक्लंरुद्रं ॐ यातेरुद्रेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिरनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता रुद्रावाहने विनियोगः ॐ यातेरुद्रशिवातनू रघोरापापकाशिनी । तयानस्तन्वा शंतमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥ ॐ भू० स्वः रुद्रायनमः स्था० पू० ॥३३॥ ततः पूर्वपदत्रये कृष्णमर्यमणम् । ॐ अर्यमणमित्यस्य तापसऋषि रनुष्टुप्छन्दः अर्यमादेवता अर्यमस्थापने वि० ॐ अर्यमणं बृहस्पति मिन्द्रंदानाय चोदयव्वाचं विष्णु ँ० सरस्वती ँ सवितारंचव्वाजिन ँ स्वाहा । ॐ भू० स्वः अर्यम्णेनमः स्था० पू० ॥ तत आग्नेयेएकपदेरक्तं सवितारम् । ॐ सवितात्वेत्यस्य वरुण ऋषि रतिजगतीछन्दः

यजमानोदेवता सवितुः स्थापने वि० ॐ सवितात्वासवानाॐ सुवतामग्नि र्गृहपतीना ॐ सोमोव्वनस्पतीनाम् । बृहस्पति र्वाचमिन्द्रो ज्येष्ठ्यायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्म्म-पतीनाम् ॥ ॐ भू० स्वः सवित्रेनमः स्था० पू० ॥ ततोदक्षिणे पदत्रये शुक्लं विवस्वन्तम् ॥ ॐ विवस्वन्नित्यस्य प्रजापति र्ऋषि जगती छन्दः आशीर्देवता विवस्वत्स्थापने विनियोगः । ॐ विवस्वन्नादित्यैपते सोमपीथस्तस्मिन्वत्स । श्रदस्मैनरोवचसे नधालन यदाशीर्दादंपती व्वाममश्नुतः ॥ ॐभू० स्वः विवस्तेनमः स्था० पू० ॥ ततो नैर्ऋत्यैकपदे रक्तं विबुधाधिपम् । ॐ उदित्य मित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः सौरी गायत्री छन्दः सविता देवता विबुधाधिप स्था० वि० ॥ ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्तिकेतवः दृशेविश्वायसूर्यम् । ॐ भू० स्वः विबुधाधिपाय नमः स्था० पू०॥ ततः पश्चिमे पदत्रयेशुक्लवर्णमित्रम् । ॐ नमो मित्रस्येत्यस्य सूर्य ऋषिः सौरी जगती छन्दः मित्रो देवता मित्र स्था० वि०॥ ॐ नमो मित्रस्य व्वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृतꣳ सपर्यत । दूरेदृशेदेव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायशꣳ शत ॥ ॐ भू० स्व० मित्रायानमः ॥ स्था० पू० । ततो वायव्यैकपदे रक्तं राजय-क्ष्माणम् । ॐ साकंयक्ष्मेत्यस्याथर्वणोभिषगृषिरनुष्टुप्छन्दः औषधिर्देवता राजयक्ष्मणः स्थापने वि० । ॐ साकंयक्ष्म प्रपत-चाषेण किकिदीविना । साकं व्वातस्यध्राज्या साकं नश्यनिहाकया । ॐ भू०स्वः राजयक्ष्मणे नमः । तत उत्तरे त्रिपदे रक्तं पृथ्वीधरम् । ॐ पृथिवी देवयजनीत्यस्य परमेष्ठी ऋषि र्यजुश्छन्दः सविता-देवता पृथ्वीधर स्थापने वि० । ॐ पृथिवीदेवयजन्योषध्या स्ते-मूलं माहिꣳ सिषंव्रजंगच्छगोष्ठानं व्वर्षतु तेद्यौर्बधानदेव सवि-तः परमस्यां पृथिव्या ॐ शतेन पाशैर्योस्मान् द्वेष्टियं चवयं द्वि-ष्मस्तमतो मामौक ॥ ॐ भू० स्वः पृथ्वीधरायनमः स्था० पू० । तत ईशान एकपदे शुक्ल मापवत्सम् ॥ ॐ आपतये त्वेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि र्यजुश्छन्दः वायुर्देवता आपवत्सस्थापने विनियोगः

ॐ आपतयेत्वा परिपतयेगृह्णामि तनूनप्त्रे शाक्कराय शक्कनऽ ओजिष्ठाय । अनाधृष्ट मस्यना धृष्यंदेवाना मोजोनभि शस्त्य-भिरास्तिपाऽअनभिशस्ते न्यमंजसा सत्यमुपगेप ॐ स्थितेमाधाः। ॐ भू० स्वः आपवत्सायनमः स्था० पू० ॥ ४४ ॥ ततो मध्येवेद्यां नवपदेहृदये ब्रह्माणं पीतवर्णमावाहयेत् ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानमिति गौतम ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो ब्रह्मादेवनाब्रह्म स्थापने वि० ॐ ब्रह्म-जज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोव्वेन आवः सबुध्न्याऽ उपमाऽअस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः। ॐ भू० स्वः—ब्रह्मणेनमः स्था० पू० । भोब्रह्मन् सु० व० । ततस्तस्मिन्नेवपदे तदुत्तरतः स्त्रीरूपां पृथिवीम् ॥ ॐ स्योनापृथ्वीति मेधातिथि ऋषिर्गायत्री छन्दः पृथ्वीदेवता पृथ्वीस्थापने विनियोगः। ॐ स्योनापृथिवी नो भवा नृक्षरानिवेशनी। यच्छानः शर्मसप्रथाः॥ ॐ भू० स्वः पृथिव्यैनमः स्था० पू० ॥ ततस्तस्मिन्नेव तदुत्तरतो सुवर्णप्रतिमायां वृषवास्तुं सर्पाकारं विलिख्यस्थापयेत् ॥ आवा-हनम्—आवाहयाम्यहंवास्तुं वृषरूपधरं शुभम् । नागाकृति गृहेशं-त्वं पूजार्थमत्रमण्डले ॥ ॐ वास्तोष्पत इतिवषिष्ठ ऋषिस्त्रिष्टु-प्छन्दो वास्तुर्देवता वास्तुस्थापने विनियोगः॥ ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानिह्यस्मान्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः ॥ यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नो भवद्विपदेशं चतुष्पदे ॥ ॐ भू० स्वः वास्तवेनमः स्था० पू० । भोवास्तो सु० व०॥ ततो वास्तु मंडप संलग्नेऽष्टदल कमले चरक्यादिवाह्यदेवतानामीशानादिषु स्थापन क्रमः। ततः ईशानकोणे धूम्रवर्णां चरकीम् ॥ ॐ यन्ते देवीति मधुरच्छन्द ऋषिः पंक्तिश्छन्दः चरकीदेवता चरकीस्थापने वि०। मन्त्र— ॐ यन्ते देवि निर्ऋति राबबन्धपाशंग्रीवा स्व विचृत्यम्। तन्ते विष्याम्यायुषो नमध्यादथैनं पितुमद्धिप्रसूत नमोभूत्यैयेदंचकार ॐ भूस्वः चरक्यैनमःस्था०पू० आग्नेयेततोविदारीम् कृष्णांपिंगलाम् ॐ अजराजायेति नारायण ऋषिः प्रकृतिश्छन्दो विदारीदेवता विदारीस्थापने विनियोगः॥ ॐ अजराजाय किनव कृनाया

दिनचदर्श त्रेनार्यकल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिन मास्कन्दाय सभा स्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमंतकाय गोघातं चुधेयोगां विकृन्तंभिच माणउपनिष्टनि दुष्कृतायचरका चार्य्यं पाप्मने शैलगम् ॥ ॐ भू० स्वः विदार्यैनमः स्था० पूजयामि । ततोनैर्ऋत्ये पीतवर्णां पूतनाम् । ॐ कटुप्रियायेति आत्रेयऋषिर्जगतीछन्दः पूतनादेवता पूतनास्थापने वि० । ॐ कटुप्रियाय धाम्नेमनामहे स्वक्षत्रायस्वय शसे महेवयम् । आमेन्यस्यरजसोयदभ्रआँ ॥ अपोवृणानावितनोतिमायिनी । ॐ भू० स्वः पूतनायैनमः स्था० पू० । ततोवायव्येकृष्णांपापराक्षसीम् । ॐ यस्यास्तइतिमधुश्छन्द ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः पापराक्षसीदेवता पापराक्षसीस्थापने वि० । ॐ यस्यस्ते घोरआसंजुहोम्येपां वन्धनामवसर्जनाय यांत्वाजनोभूमिरितिप्रम दन्ते निर्ऋतिंत्वाहं परिवेदविश्वतः ॥ ॐ भू० स्वः पापराक्षस्यै नमः स्था० पू० ततः पूर्वादिदिक्षु । पूर्वेस्कन्दंरक्तम् । ॐ यदक्रन्दे त्यस्यदीर्घतमाऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दोदेवता स्कन्दस्थापने वि० ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानउद्यन्त्समुद्रा दुतवापुरीपात । शेनस्यपक्षा हरिणस्यबाहू ऽ उपस्तुत्यंमहिजातन्ते ऽ अर्व्वन् ॥ ॐ भू० स्वः ॐ स्कन्दायनमः स्था० पू० । ततोदक्षिणे ऽ र्यमणम् कृष्णम् ॥ ॐ अर्यमणमित्यस्य तापसऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽ र्यमा देवताअर्यमणःस्थापने वि०ॐ अर्यमणंबृहस्पतिमिन्द्रंदानायचोदय व्वाचं विष्णु ं० सरस्वती ॐ सवितारंच वाजिन ॐ स्वाहा ॐ भू० स्व० अर्यम्णेनमः स्था० पू० ततःपश्चिमेजृम्भकम् रक्तम् ॐ येरूपाणि—इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छंदो ऽ ग्निर्देवता जृम्भक स्थापने वि० । ॐ ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना ऽ असुराः सन्तः स्वधयाचरन्ति । परापुरो निपुरोये भरन्त्यग्निष्टांल्लोका त्प्रणुदात्यस्मात् ॥ ॐ भू० स्वः जृम्भकायनमः, स्था० पू० ततो चाह्योत्तरे पीतंपिलिपिन्सम् ॥ ॐ नतं विदाथइत्यस्य विश्वकर्मा भौवनऋषिःत्रि० विश्वकर्मादेवता पिलिपिन्स स्थापने वि० । ॐ नतं विदाथय ऽ इमाजनानान्यद्युष्माकमन्तरं वभूव । नीहारेण

प्रावृताजल्प्या चासुतृप उक्थशाशश्चरन्ति ॥ ॐ भू० स्व: पिलिपित्सायनमः स्था० पू० ॥ ततोवेदिसंलग्न कमलाग्रभागे पूर्वादिदिक्षु नाममंत्रैरष्टदिक्पालान स्थापयेत् ॥ पूर्वकमलाग्रभागे इन्द्रम् । ॐ इन्द्रायनमः इन्द्रंस्थापयामि पूजयामि । आग्नेयकोकोणे ऽग्निम् ॥ ॐअग्नयेनमः । अग्निं स्था० पू० । ततो दक्षिणे-यमम् ॥ ॐ यमायनमः । यमं स्था० पू० ततो नैर्ऋतिकोणे निर्ऋतिम् । ॐ निर्ऋतयेनमनिर्ऋतिंस्था०पू० । ततःपश्चिमेवरुणम । ॐ वरुणायनमः । वरुणंस्था० पू० ततो वायव्ये वायुम् । ॐ वायवेनमः । वायुं स्था० पू० तत उत्तरे कुवेरम् । ॐ कुवेरायनमः । कुवेरं स्था० पू० तत ईशानेईशं ॐ ईशानाय नमः । ईशं स्था० पू० । तत उर्ध्वम् । ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्माणं स्था० पू० । ततोऽधः । ॐ अनन्तायनमः । अनन्तं स्था० पू० । इतिवास्तु भद्रस्थ देवता स्थापन क्रमः ॥ अथवास्तु भद्रसंघ पूजा पद्धतिः

आवाहनम्-ब्रह्मादीं ल्लोकपालान्तान्वास्तुभद्रप्रतिष्ठितान् । देवाश्चावाहयामीहसङ्घपूजन कर्मणि । अर्घ्यम् ॥ गङ्गाजलं परंदिव्यं ताम्रपात्रस्थमुत्तमम् । देवागृह्णन्तुसौख्याय प्रतिष्ठावास्तुकर्मणि ॥ आसनम्—सर्वरङ्गविचित्राढ्य मासनंदिव्यमुत्तमम् । देवागृह्णन्तु सौख्याय संस्थितावास्तुमण्डले । तत्रप्राणप्रतिष्ठाम् । ॐ एतन्तेदेव सवितर्यज्ञंप्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणेतेनयज्ञमवतेनयज्ञ पतिंतेनमामव । ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमंतनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ᳭ समिमंदधातु विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामाप्रतिष्ठ ॐ भूर्भुवःस्वःब्रह्मादिलोकपालान्तदेवताविग्रहसांगप्रतिष्ठावास्तोइहतिष्ठेह सु०वरदोभव । इतिप्राणप्रतिष्ठांकृत्वा—पंचामृतम् । दधिदुग्धघृतक्षौद्रशर्करा मिश्रितंपरम् । देवा गृह्णन्तु सौख्याय वास्तुमंडप संस्थिताः स्नानीयम्–पविशंतीर्थजंदिव्यं स्नानीयं मंगलप्रदम् । देवा गृह्णन्तु सौख्याय प्रतिष्ठा वास्तुमंडले । यज्ञोपवीतम् नवतन्तु समायुक्तामुपवीतांश्चपीनकान् देवागृह्णन्तुसौख्यायसंस्थितावास्तु मंडले वस्त्रम् वस्त्रसंघंसमानीतं नानावर्णात्मकंपरम् देवा गृह्णन्तु

सौख्याय वास्तुमंडलसंस्थिताः । चन्दनम् । भालशोभाकरंदिव्यं चन्दनं सुमनोहरम् । देवा गृह्णन्तु सौख्याय प्रतिष्ठावास्तुमंडले । अक्षताः । शुद्धमुक्ताफलाभांस्ता अक्षतां चन्द्रशिसंन्निभान् । देवा गृह्णन्तु सौख्याय वास्तु मंडल संस्थिताः । पुष्पाणि—जातीचम्पक पुष्पाणिदूर्वापत्रादिकानिच । देवा गृह्णन्तु सौख्याय वास्तु मंडल संस्थिताः । धूपम्—धूपं नागरकंदिव्यं गुग्गुलेन समन्वितम् देवागृह्णन्तु सौख्यायवास्तुपूजाविधौमुदा । आरातिक्यम्—गवाज्यं वर्त्तिसंदीप्त मारातिक्यं सुमंगलम् । देवाः पश्यन्तु सौख्याय वास्तुपूजनकर्मणि । नैवेद्यम्—अन्नं चतुर्विधंदिव्यं घृतमिष्ठान्न संयुतम् । देवागृह्णन्तुसौख्याय संस्थितावास्तुमंडले । नैवेद्यान्तेजलम् नैवेद्यान्तेजलंचैव करानन्नविशुद्धिदम् । देवागृह्णन्तु सौख्यार्थं तिष्ठंतो वास्तुभद्रके । उपायनम्—हिरण्यंराजतंद्रव्य मुपायननिमित्तकम् । देवा गृह्णन्तु सौख्याय वास्तुपूजनकर्मणि । क्षमापनम्—विधि हीनंद्रव्यहीनं श्रद्धाहीनंच यद्भवेत् । देवाः क्षाम्यन्तु तत्सर्वं संस्थिता वास्तुमंडले । इति संघपूजनम्—ततः प्रदक्षिणा चतुष्टयंकुर्यात् । यानिकानीत्यादिना । मन्त्रपुष्पांजलिः । ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रेराजन्यः शूर ऽ इषव्योतिव्याधी महारथो जायतांदोग्ध्रीधेनु र्वोढानड्वानाशुःसप्तिः पुरंधिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरोजायतां निकामे निकामेनः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्योन ऽ औषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्पन्ताम् । ततो ऽष्टदलकमलाद्बहि उत्तरस्यांदिशि त्रिशूलचिन्हं कृत्वा तस्मिन् क्षेत्रपालं पूजयेत् । आ०— ॐ—नमोभगवते क्षेत्रपालाय सर्वदेवताधिनिर्जिताय भास्वद्भासुर किंकिणीज्वालामुखाय भैरवरूपाय । ह्रीं क्षौं मुरु २ तुरु २ लल पप ह्रूँह्रूँ फंफंकाररूपायह्रूँफट् क्षेत्रपाल इहागच्छेहतिष्ठ पूजांगृहाण ॐ क्षत्रस्ययोनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मात्वाहिं ०० सीन्मामाहिं ०० सीः ॥ इतिपाद्यादिभिः सम्पूज्यततोवास्तुवेद्यां वास्तु पदेनाग्रकलशं पूर्वोक्तानां पंचानांकलशानांमध्ये एकंपंचरत्न तीर्थ-

जल तीर्थमृत्तिकादि सर्वौषधियुतंस्थापयेत् । तत्रैववास्तुप्रतिमां पंचपल्लवसहितां स्थापयेत् । एवंविधिनाचतुर्ष्कोणेषु स्थापित नन्दादिशिलासन्निधिषुचतुरःकलशांस्थापयेत् । तेनैव विधिनावनमालादिपंचपल्लवसंलग्नां गृहवर्गायुतांत्रिसूत्रींचाभिमन्त्र्यतत्रैव स्थापयेत ॥

॥ अथ गृहवास्तु होमः ॥

अथगृहवास्तुहोमः—ततः सर्वेपूर्वोक्ताआचार्या होम वेदी वा कुण्डसन्निधिमागत्य शिलानामभिषेकार्थं संस्रवधारणार्थं जलकुम्भमग्नेरुत्तरतो यथा विधिकलशपूजाविधिना सम्पूज्य स्थापयेत् । सकलाचार्योयजमानो वा कुशकण्डिकाविधानेन प्रजा पतिमग्निंवा वरदनामानं संस्थाप्यसम्पूज्यच (वास्तुयागेप्रजापतिः) ततो यजमानोद्रव्यदेवता भिध्यानंकृत्वा द्रव्यत्यागं कुर्यात् ॥ सङ्कल्पः । ॐ अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुको ऽहंवाममयजमानस्यनूतनग्रहेवा देवालयेगृहप्रवेशनिमित्तकमूर्ति स्थापनकर्मणि शिलान्यासविधानपूर्वक वास्तुस्थापनकर्मणः साङ्गफलावाप्तये ग्रहयागमखेनयक्ष्ये ॥ तत्रप्रजापत्यादीनाज्येन जुहुयात् ॥ आदित्यादिग्रहान् साधिदेवप्रत्यधिदेवसहितान् ग्रहयागहोमरीत्या ग्रहयागाचार्योजुहुयात् ॥ सर्वतोभद्राचार्यः सर्वतोभद्रदैवतान्यद्यत्युक्तप्रकारेणजुहुयात् ॥ इदानींप्रतिष्ठांगत्वाद्वास्तुयागविधिं यथोक्तविधिनावक्ष्ये ॥ ततो वास्तुकाचार्यः यजमानोवासङ्कल्पं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादिसंकीर्त्यसशिलान्यासगृहप्रवेशदेवालय प्रतिष्ठामूर्तिस्थापनादि वास्तुस्थापनकर्मणि प्रजापत्यादीनाज्येनादित्यादिग्रहान्समिद्भिः प्रत्येकमष्टाहुतिभिः । अधिदेवता प्रत्यधिदेवता श्चचतुः संख्याहुतिभिर्विनायकादीनिंद्रादींश्च द्विसंख्याहुतिभिः शिख्यादीन् पञ्चचत्वारिंशद्देवान् शर्करामधुघृताक्त समिदोदुम्बर

पालाशसमीखादिरापामार्गाद्यन्यतमाज्य तिलयवादिभिर्दश संख्याकाहुतिभिः पृथ्वीं चाष्टाहुतिभिर्वास्तोष्पतिं चाष्टोत्तरशताहुतिभिः पञ्चभिर्बिल्व फलैश्चाग्न्यादीन् प्रजापत्यन्तान्नन्दाद्या शिलाश्चाज्येनाहं यक्ष्ये । एतत्सम्पादितमाज्यादिद्रव्यम् । पूर्वोक्त देवताभ्यश्च मयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तुनमम । इति द्रव्यम् त्यक्त्वा ततश्चाचार्यः—अग्निस्थापनविधना आघाराज्यभागयान्त दग्नौहुत्वाऋत्विजोवृणुयात । अद्येत्यादिनामुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेनामुकामुकशर्मणो ब्राह्मणान्‌ऋत्विक्त्वेन युष्मान्वृणे । तत ऋत्विग्भिः सहाचार्यः—अनन्वारब्धस्तिलाज्य यवतण्डुलमधु-शर्करापायसादिभिः प्रत्येकमष्टसंख्यया ग्रहहोमंचतुः संख्ययाधि-देवता प्रत्यधिदेवता होमंद्विसंख्यालोकपाल दिक्पालहोमंचकृत्वा प्रधानहोमं सङ्कल्पोक्त समिद्भिर्वा तिलाज्यादिभिर्दश संख्यया कुर्यात् ॥

॥ अथ होम नामावलिः ॥

ॐ शिखिनेस्वाहा ॐ पर्जन्यायस्वाहा ॐ जयन्तायस्वाहा ॐ कुलिशायुधायस्वाहा ॐ सूर्यायस्वाहा ॐ सत्यायस्वाहा ॐ भृशायस्वाहा ॐ आकाशायस्वाहा ॐ वायवेस्वाहा ॐ पूष्णे-स्वाहा ॐ वितथायस्वाहा ॐ गृहक्षतायस्वाहा ॐ यमायस्वाहा ॐ गन्धर्वायस्वा० ॐ भृंगराजायस्वा० ॐ मृगायस्वा० ॐ पितृगणायस्वा० ॐ दौवारिकायस्वा० ॐ सुग्रीवायस्वा० ॐ पुष्पदन्तायस्वा० ॐ वरुणायस्वा० ॐ असुरायस्वा० ॐ शोषायस्वा० ॐ पापायस्वा० ॐ रोगायस्वा० ॐ अहयेस्वा० ॐ मुख्यायस्वा० ॐ भल्लाटायस्वा० ॐ सोमायस्वा० ॐ सर्पेभ्यः स्वा० ॐ अदितयेस्वा० ॐ दितयेस्वा० ॐ आपायस्वा० ॐ सवित्रायस्वा० ॐ जयायस्वा० ॐ रुद्रायस्वा० ॐ अर्यम्णेस्वा० ॐ सवित्रेस्वा० ॐ विवस्वतेस्वा० ॐ विबुधाधिपायस्वा० ॐ

मित्रायस्वा० ॐ राजयक्ष्मणेस्वा० ॐ पृथ्वीधरायस्वा० ॐ आपवत्सायस्वा० ॐ ब्रह्मणेस्वा०। पूर्वोक्तनाममंत्रैर्होमं प्रत्येकं दश संख्यया कृत्वा पृथ्वीहोमं ॐ स्योनापृथ्वीति मेधातिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः पृथ्वीदेवता होमेविनियोगः॥ ऋक्—ॐ स्योनापृथिविनोभव। नृक्षरानिवेशनीयच्छानः शर्मसप्रथाः॥ इतिमंत्रेणाष्ट संख्ययाहुत्वावास्तोष्पतेः प्रधानत्वाध्दोमंवक्ष्यमाणेनकुर्यात्॥ ॐ वास्तोष्पत इति वशिष्ठऋषि त्रिष्टुप्छन्दोवास्तुर्देवता होमे विनियोगः॥ ऋक्—ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मंत्स्वावेशो ऽ अनमीवोभवानः। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नोभव द्विपदेशं चतुष्पदे, इतिमंत्रेणाष्टोत्तर संख्ययातिलाज्येन होमं कृत्वाततो विल्वफलेन घृताक्तेनवक्ष्यमाणमंत्रैर्जुहुयात्। (उक्तंचपारस्करसूत्रे कां० ३ कं० ४) ॐ वास्तोष्पतेनिचतसृणां वशिष्ठऋषिस्त्रिष्टुब्गायत्रीछन्दांसि वास्तोष्पतिर्देवता हो० वि०॥ ऋक्—ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मन्त्स्वावेशो ऽ अनमीवोभवानः। यत्तेमहेप्रतितन्नो जुषस्वशन्नोभव द्विपदेशंचतुष्पदे स्वाहा ॥१॥ ॐ वास्तोष्पते प्रतरणोन ऽ एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्द्रो ऽ अजरासस्ते सख्येस्याम पितेव पुत्रान्प्रतिनो जुषस्वस्वाहा॥ ॐ वास्तोष्पते सग्मया स ह० सदातेसक्षीमहिरण्वया गातुमत्या। पाहिक्षेम ऽ उत्तयोगे वरंनोयूयंपातस्वस्तिभिः सदानः स्वाहा॥२॥ ॐ अमीवहा वास्तोष्पते विश्वारूपाण्या विशत्। सखासुशेव ऽ एधिनः स्वा०॥३॥ पुनः—ॐ वास्तोष्पते प्रति० स्वा०॥४॥ इति मंत्रैर्विल्वफल होमं कृत्वाततश्चरक्यादि बाह्यदेवताभ्यः प्रत्येकंनाम मंत्रैरष्टाहुतिभिर्जुहुयात्॥ ॐ वास्तवेस्वाहा ॐ चरक्यैस्वा० ॐ विदार्यै स्वा० ॐ पूतनायै स्वा० ॐ पापराक्षस्यै स्वा० ॐ स्कन्दाय स्वा० ॐ अर्यम्णेस्वा० ॐ जृम्भकायस्वा० ॐ पिलीपिच्छाय स्वाहा। अतः परं—अग्निस्थापनानुसारेण ब्रह्मान्वारब्धेन स्विष्टकृध्दोमभूरादिनवाहुत्यन्तं विधाय संस्रव प्राशनानि पवित्र प्रतिपत्तिः प्रणीता विमोकश्चनउजलमार्जनादि

स्थापिते कुम्भेनिक्षिप्य चेशान्यां न्युब्जीकुर्यात ॥ ततो ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् ॥ संकल्पः ॥ अद्येहेत्यादि संकीर्त्यामुको ऽहं शिलान्यास वास्तूपशमनांग होमकर्मणो ऽपूर्णपूर्णता सिध्यर्थं त्रेदंसद्रव्यं सुवर्ण सहितं पूर्णपात्रममुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे । इति ब्रह्मणे दद्यात् ॥ ब्रह्माब्रूयात्—ॐ अक्रन्कर्म कर्मकृतःसहवाचामयोभुवा । देवेभ्यः कर्मकृत्वास्तंप्रेत सचाभुवा । परिपूर्णमस्तु । तत्र आचार्यो वास्तुदेवताभ्यः पायसबलिं कृसरान्नबलिंदद्यात ॥ संकल्पः—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुको ऽहं मम यजमानस्य सकुटुम्ब सपरिवारस्यायुरा रोग्यादि वृद्धिपूर्वकं सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं नवग्रहादिभ्यो ग्रहयागपद्धत्य नुक्रमतः शिख्यादि पंचपंचाशद्देवताभ्यश्च पायसेन कृसरान्नेनदध्यक्षतादिभिश्च बलिदानंकरिष्ये ॥ आदौ ग्रहयागोक्तपद्धत्या ग्रहादिभ्यो होमकुंडसन्निधौ बलिंदत्वा तत्पश्चाद्वास्तु वेद्युपरि यथास्थानस्थापित देवतासन्निधो वक्ष्यमाणरीत्या दद्यात् ॥ यथादौ—ॐ शिखिनेनमः, इति चतुर्वर्ति उज्वलितां बलि संपूज्य हस्तेजलं गृहीत्वा भोभो शिखिन्निहागच्छेहतिष्ठ, एनं सदीपं सद्रव्यं पायस बलिं (कृसरान्नमाषौदन बलिम्) गृहाण ममयजमानस्यायुः कर्ता शान्तिकर्ता क्षेमकर्ता भव इतिबल्युपरिजलं विसृजेत्॥एवंसर्वत्र-

ॐ शिखिनेनमः भोशिखि ए०ॐ पर्जन्यायनमः भोपर्जन्यए० ॐ जयन्तायनमः भोजयन्तए० ॐ कुलिशायुधायनमः भो कुलिशायुधएनं० ॐ सूर्यानमः भो सूर्यएनं ॐ सत्यायनमः भोसत्यएनं० ॐ भृशायनमः भो भृशएनंबलिं० ॐ आकाशाय नमः भो आकाश ए० ॐ वायवेनमः भोवायोएनं ॐ पूष्णेनमः भो पूषन् एनं० ॐ वितथायनमः भो वितथ एनं ॐ गृहक्षताय नमः भोगृहक्षत ए० ॐ यमायनमः भो यम एनंबलिं० ॐ गन्धर्वायनमः भो गन्धर्व एनंबलिं० ॐ भृंगराजायनमः भो भृंगराज ए० ॐ मृगायनमः भो मृगएनं० ॐ पितृगणायनमः भोपितृगण ए० ॐ दौवारिकायनमः भो दौरिकएनं ॐ

सुग्रीवायनमः भो सुग्रीवएनं ॐ पुष्पदन्तायनमः भो पुष्पदन्त एनं० ॐ वरुणायनमः भोवरुणए० ॐ असुरायनमः भो, असुर एनं० ॐ शोषायनमः भोशोष ए० ॐ पापायनमः भोपाप एनं-बलिं० ॐ रोगायनमः भोरोगएनं० ॐ अहयेनमः भोअहे एनं ॐ मुख्यायनमः भोमुख्य ए० ॐ भल्लाटायनमः भो भल्लाट एनं० ॐ सोमायनमः भोसोम एनं० ॐ सर्पेभ्योनमः भो सर्पा एनं ॐ अदितयेनमः भोअदिते एनं० ॐ दितेनमः भो दिते एनं ॐ आपायनमः भोआप एनं० ॐ सावित्रायनमः भोसावित्र ए० ॐ जयायनमः भोजयएनं० ॐ रुद्रायनमः भोरुद्र ए० ॐ अर्यम्णेनमः भो अर्यमन् एनं० ॐ सवित्रेनमः भोसवि० ॐ विवस्वतेनमः भोविवस्वनएनं०ॐविबुधाधिपायनमः भोविबुधाधिपएनं० ॐ मित्रायनमः भोमित्र ए० बलिं० ॐ राजयक्ष्मणेनमः भोराज-यक्ष्मन् ए० ॐ पृथ्वीधरायनमः भो पृथ्वीधर ए० ॐआपवत्सा, यनमः भोआपवत्स ए० ॐ ब्रह्मणेनमः भो ब्रह्मन् ए० ॐ पृथि-व्यैनमः भो पृथिवि एनं० ॐ वास्तवेनमः भोवास्तो ए० ॐ चरक्यैनमः भोचरकि एनं० ॐ विदार्यैनमः भोविदारि एनं० ॐ पूतानायैनमः भोपूतने ए० ॐ पापराक्षस्यैनमः भोपापराक्षसि एनं बलिं० ॐ स्कन्दायनमः भोस्कन्द एनं० ॐ अर्यम्णेनमः भोअर्यमन एनं ॐ जृम्भकायनमः भोजृम्भक एनं ॐ पिलि-पिच्छायनमः भोपिलिपिच्छ एनं बलिंगृहाण।

॥ अथ शिलान्यास विधिः ॥

अथ शिलान्यासविधिः। ब्रह्मणःपूर्णपात्र दानान्तेआचार्यो वास्तुवेदी समीपमागत्य पूर्वोक्त वर्णप्रमाणनोर्निमिताः शिलाः कर्मशोनन्दा १ भद्रा २ जया ३ रिक्ता ४ पूर्णा ५ इतिपंचशिलाः क्रमशोनन्दा १ भद्रा २ जया ३ रिक्ता ४ पूर्णा ५ इतिपंचशिलाः

स्थापयित्वा नन्दादिशिलासु अग्निपुराणोक्त १७ सप्तदशमुख्येषु कलशेषु विहितवस्तूनि संपाद्य यथाप्रथमे सप्तमृत्तिकोदकं १ पंचकषायः २ गोमूत्रं ३ गोमयं ४ पंचगव्यं ५ पंचामृतं ६ सफलजलं ७ सरत्नजलं ८ ससुवर्णजलं ९ वृषशृंगजलं १० तीर्थजलं ११ गन्धोदकं १२ नन्दादिषु ब्रह्म विष्णु रुद्र ईशान सदाशिव कलशेषु देवानावाह्य प्रतिष्ठाप्य वस्त्रादिभिराच्छाद्य सम्पूज्य च मंत्रै नन्दायाः शिलाः स्नापयेत् आदौ सप्तमृत्तिकोदकेन । ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम् । अपा ँ रेता ँ सिजिन्वति । ततो गोमूत्रेण गोमयेन च गायत्री मंत्रेण ततो मधुनामंत्रः— ॐ मधुवा ऋतायतेमधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । पयः स्नानम् । ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधिषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयः स्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् दधिस्नानम् । ॐ दधिक्राव्णो अकारिषंजिष्णो ऽ रश्वस्यवाजिनः सुरभिनो मुखाकरत्प्रण ऽ आयू ँ षितारिषत् । घृतस्नानम्—ॐ घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघेसुपेशसा । द्यावा पृथिवी वरुणस्य धर्मणाविष्कभिते ऽ अजरे भूरिरेतसा । शर्करास्नानम्—ॐ आयंगोः पृश्निरक्रमीद सदन्मातरंपुरः । पितरंच प्रयन्त्स्वः । तप्तोदकेन । सप्तधान्योदकेन ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेनसहराज्ञा । यस्मैकृणोति ब्राह्मणस्त ँ राजन्पारयामसि॥ वृषशृंगोदकेन ॐ हविष्मतीरिमाऽआपोहविष्मां २ँ॥ आविवासतीहविष्मान्देवाऽअध्वरोहविष्मां २ँ॥ अस्तुसूर्य्यः पंचगव्येनतीर्थजलेन ॐइमंमेवरुण श्रुधीहवमद्याचमृडयत्वामवस्युराचके । सुवर्णोदकेन ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक ऽ आसीत् । सदाधारपृथिवींद्यामुतेमां कस्मैदेवायहविषाविधेम ॥ गन्धोदकेन— गन्धद्वारांदुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम् । ईश्वरींसर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ततः पूर्वलिखितपद्मादिषु अष्टगन्धयुक्त चन्दनेनलिखेत् । नन्दाशिलायांपद्मम्—भद्रायांसिंहासनं । जयायां तोरणछत्रंच रिक्तायांकूर्म्मपूर्णायां चतुर्भुजांवष्णुञ्च लिखित्वा

वर्स्त्रेणाच्छाद्य ॥ अथमन्त्रान्त्रिशिलानां मूलेपुपूर्वस्थापित पंचकलशोदकेनाभिषेकंकुर्यात् ॥ तत्रादौ ब्रह्मकलशोदकेन नन्दाशिला मूले ऽ भिषिंचेत् ॥ ॐ आब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसीजायतामा राष्ट्रेराजन्यः शूर ऽ इषव्यो ऽ तिव्याधी महारथोजायतांदोग्ध्री धेनुर्वोढा ऽ नड्वानाशुः सप्तिः पुरंधिर्योषाजिष्णूरथेष्ठाः ॥ सभेयोयुवास्य यजमानस्यवीरोजायतां निकामेनिकामेनः पर्जन्यो वर्षतुफलवत्योन ऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्पन्ताम्- ततोविष्णुकलशेन भद्राशिलामूले ऽ भिषिंचेत् । ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रृणुयामदेवाः भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यसेमहिदेवहितंयदायुः ॥ ततो जयामूलेरुद्रकलशोदकेन ॥ ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी तयानस्तन्वाशन्त मयागिरिशन्ताभिचाकशीः ॥ ततो रिक्तामूले ईशान कुम्भोदकेन ॐ यमायत्वामखायत्वा सूर्यस्यत्वा तपसे देवस्त्वासवितामध्वा ऽ नक्तुपृथिव्याः स ॐ स्पृशस्पाहार्चिरसि शोचिरसितपोसि ॥ ततः पूर्णाशिलामूले सदाशिवकलशोदकेन ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णापुनरापत । वस्नेवविक्रीणावहा ऽ इषमूर्ज ऽ० शतक्रतो । अथ शिलानां मध्याभिषेकस्ते नैवजलेन कुर्यात् आदौनन्दाया मध्ये— ॐ नाभिर्मेचित्तं विज्ञानंपायुर्मे ऽ पचितिर्भसत् ॥ आनन्दनन्दावांडौ मेभगः सौभाग्यंपसः ॥ भद्राशिलामध्ये— ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ता विसीमतः सुरूचोवेन ऽ आवः सबुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः । जयाशिलामध्ये—ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णो र्ध्रुवोसि । वैष्णवमसि विष्णवेत्वा । रिक्तामध्ये ॐ नमस्तेरुद्रमन्यव ऽ उतोतइषवेनमः बाहुभ्यां मुतनेनमः। पूर्णामध्ये ॐ इमं देवा ऽ असपत्न ऽ० सुवध्वंमहते क्षत्रायमहते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्यें द्रियाय । इममसुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश ऽ एपवोमीराजासोमो ऽ स्माकं ब्राह्मणानाराजा तत स्तासांशिरसि अभिषेकं कुर्यात् ।

आदौनन्दायाः—ॐतद्विष्णोः परमंपद ई० सदापश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् ॥ भद्रायाः—ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपा ॐ सुरेस्वाहा ॥ जयायाः ॐ समख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। माम ऽ आयुः प्रमोषीर्मो ऽ अहं तववीरं व्विदेयंतवदेवि संदृशि ॥ रिक्तायाः—ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्युर्मुक्षीय मामृतात् ॥ पूर्णशिलायाः—शिरसि ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽ अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽ आजातमग्निम्। कवि ई० सम्राजमतिथिं जनाना मासन्नापात्रं जनयन्तदेवाः ॥ अथ शिलासुदेवतावाहनम्—तत्रादौनन्दायाम् ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानमित्यस्या वत्सार ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः ब्रह्मादेवता नन्दाशिलायां ब्रह्मावाहने स्थापने वि० ॥ ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेन ऽ आवः। सबुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्यविष्ठा सतश्चयोनि मसतश्चविवः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः भोब्रह्मन्निहा गच्छेहतिष्ठ ॐ ब्रह्मणेमः पाद्यादि नीराजनान्तं सम्पूज्य—भद्रायाम्—ॐ इदं विष्णुरित्यस्य मेधा तिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दोविष्णुर्देवता भद्राशिलायां विष्णवावाहने स्था० वि०॥ ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपा ॐ सुरेस्वाहा ॥ ॐ भू० स्वः भोविष्णो इहागच्छ० ॐ विष्णवे नमः सम्पूज्य। जयायाम्—ॐ नमस्ते इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिर्गायत्रीछन्दः रुद्रोदेवता जयाशिलायां रुद्रावाहनेस्था० विनियोगः॥ ॐ नमस्तेरुद्रमन्यव ऽ उतोत ऽ इषवेनमः। बाहुभ्यामुतते नमः ॥ ॐ भू० स्वः भोरुद्र इहागच्छेह० ॐ रुद्रायनमः सम्पूज्य ॥ रिक्तायाम्—ॐ इमं देवेतिगोतमऋषि विराट्छन्द ईश्वरोदेवता रिक्ताशिलाया मीश्वरावाहने स्था० वि० ॥ ॐ इमन्देवा ऽ असपत्न ई० सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महतेजानराज्या येन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽ एषवो मीराजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ॐ राजा—ॐ भू० स्वः भोईश्वर इहागच्छेह० ॐ ईश्वरायनमःसम्पूज्य-पूर्णायाम्—ॐ तद्विष्णोरि-

त्यस्य मेधातिथिर्ऋषि विष्णुर्देवता पूर्णाशिलायां सदाशिवावाहने स्था० वि० ॥ ॐ तद्विष्णोः परमंपद ॅ० सदापश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॐ भू० स्वः मो सदाशिवविष्णो: इ० ॐ सदाशिवरूपिणं विष्णवेनमः ॥ सम्पूज्य ॥ वस्त्रादिभिः सम्वेष्ट्य च तत आचार्योहोमवेदी समीपमागत्य ॐ अद्येत्यादि संकीर्त्या मुको ऽ हं ममयजमानस्य नूतनगृहे वास्तुस्थापनशिलान्यास कर्मणि नन्दादिशिलासु पूर्वोक्तविधानेन देवत्वसम्पादनार्थं शिला होमंकरिष्ये । तत्रशिलानाममन्त्रै रथवाशिलास्थापनमन्त्रैर्यथा क्रमेणादौ नन्दायाहोमंकुर्यात् ॥ अष्टोत्तरशताहुतिभिरथवायथा सम्भवंअन्यूनाष्टनम संख्ययाघृतेनजुहुयात् ॥ ॐ नन्दायै स्वा० ॐ भद्रायै स्वा० ॐ जयायै स्वा० ॐ रिक्तायै स्वा० ॐ पूर्णायै स्वा० । इतिप्रत्येकंहुत्वा ॐ यानेरुद्रइत्यस्यपरमेष्ठीऋषिरनुष्टुप्छन्दः एकरुद्रो देवता रुद्रप्रीतये अघोरहोमे वि० । ॐ यातेरुद्रशिवातनू रघोरापापकाशिनी ।तयानस्तन्वाशन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥ इत्यघोरमन्त्रेणाष्टोत्तरशताहुतिभिर्जुहुयात्। एवं होमं विधाय होमवेद्याईशान स्थापितकलशोदकेनकुशैः शिलाआपो हिष्टेत्यादिभिः सम्मार्जयेत शिलास्थापनकर्मच कुर्यात् ॥ अथ क्रमः ॥ ततः सुलग्नेसम्प्राप्ते पंचवाद्यानिवादयेत् ॥ इति वि० क्र० प्र० ॥ *आचार्यो यजमानेनसहवास्तुभूमौ (नूतनगृहे) गत्वा* आदौईशानादि प्रादक्षिण्यक्रमेण पंचशिलानन्दादि वक्ष्यमाण विधानेन स्थापयेत् ॥ अथ ईशानेनन्दाशिला स्थापनविधिः— तत आचार्य ईशानकोणमागत्यभूमिं प्रार्थयेत । ॐ विश्वेत्वं कमलेभूतेपृथिवीलोकधारिणि । यज्ञार्थंत्वोभितादेवि प्रसीदपर मेश्वरि ॥ तस्मात्त्वांवानयेदेवि सानुकूलामखेभव ॥ सर्वदेवमयी भूमिः सर्वदेवरसान्विता ॥ इति सम्प्रार्थ्येशानकोणेशिलायतदैर्घ्यानुसारेण जानुप्रमाणंगर्तंकुद्दालेनकृत्वा गोमयेनोपलिप्यपिष्टेन तण्डुलैर्वा सर्पाकारंवास्तुपुरुषं वहिर्मुखंलिखित्वा, आवाहयेत्— ॐ आवाहयाम्यहंदेवं भूमिष्टंचाप्यधोमुखम् । वास्तुनाथंजग-

त्माणं पूर्वस्यां प्रथमाश्रितम् ॥ ३० एतमित्यस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यजु श्छन्दः विश्वेदेवादेवता प्रतिष्ठापनेविनि० ॥ ३० एतन्तेदेव सवित र्यज्ञंप्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणेतेनयज्ञमवतेन यज्ञपतिंतेनमामव ॥ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंयज्ञ ढं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामो ३ँ॥ प्रतिष्ठ ॥ इति प्रति- ष्ठाप्य ॥ ३० वास्तोष्पतेप्रतिजानीह्य स्मान्त्स्वावेशो ऽ अनमीवो भवानः। यत्वेमहेप्रतितन्नोजुषस्व शन्नोभवद्विपदेशंचतुष्पदे ॥ इतिसम्पूज्यप्रार्थयेत् ॥ वास्तोष्पतेनमस्तेस्तु भूमिशय्यारत: प्रभो मद्गृहंधनधान्यादि समृद्धंकुरुसर्वदा। ततोदेवज्ञबोधिते सुलग्ने मङ्गलघोषवादित्रादियुत आधारशिलां पद्मकलशसहितां नन्दा- शिलांचानीयभूमौकुशोपरिन्यसेत्। तत आधारशिलामावाहयेत्। तेजोमयींलवरूपां सदाशिवस्वरूपिणीम्। ध्यायामिमनसादेवीं शिलामाधाररूपकाम् ॥ ३० एतन्ते० इतिप्रतिष्ठाप्य ३० भू० स्व० आधारशिले सु० व० ॥ ३० आधारशिलायैनमः स्थापयामि इतिप्राक्शिरस्कां स्थापयित्वा सम्पूज्यच समन्तान्मृदादृढीकृत्य वामपार्श्वेगर्ते दीपंप्रज्वाल्य, पद्मकलशाभ्यन्तरे सप्तमृत्तिका तीर्थजलपारदनवरत्न सुवर्णरजतमुद्रादिनिक्षिप्यपिधानेन कलश मुखंमुद्रयित्वा आधारशिलोपरि यवतण्डुलपुञ्जेपुन्यसेत्। पुनः पिहितकलशंमृदादृढीकृत्य पद्मकलशोपरिप्राक् शिरस्कांनन्दाशिलां वक्ष्यमाणमन्त्रेण स्थापयेत् ॥ ३० नाभिर्मइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि र्जगतीछन्दः भगोदेवता नन्दाशिला स्था० विनियोगः ॥ ३० नाभिर्मेचित्तंविज्ञानंपायुर्मेपचनिर्भसत् ॥ आनन्दनन्दावांडौमेभगः सौभाग्यंपसः ॥ इति संस्थाप्य ॥ ३० स्थिरोभवेत्यस्य त्रितऋषि रनुष्टुप्छन्दः रासभोदेवतास्थिरीकरणे विनि० ॥ ३० स्थिरोभव- वीड्वङ्ग ऽ आशुर्भववाज्यर्वन्। पृथुर्भवसुषदस्त्वमग्ने पुरीष वाहणः। इतिस्थिरीकृत्य—३० नन्दायैनमः। गन्धादिभिःसम्पू- ज्यप्रार्थयेत्—नन्देत्वंनन्दिनीपुंसां त्वामत्रस्थापयाम्यहम्। वेश्म- नित्तिष्ठसन्तिष्ठ यावच्चन्द्रदिवाकरौ। आयुरारोग्यमैश्वर्यं श्रियं

मेदेह्निनन्दिनि । अस्मिन्रक्षात्वयाकार्यासदावेश्मनियत्नतः । ततः समन्तान्मृदा दृढीं कुर्यात् ॥ इति नन्दाशिला स्थापनम् ॥

अथ भद्राशिलास्थापनम्—तत आग्नेयकोणमागत्य ३ॐ विश्वेत्वं कमले, इति भूमिंसम्प्रार्थ्य गर्तंविधायोपलिप्य पिष्टैर्वास्तुंगर्तेवि लिख्य, आवाहयाम्यहं मित्यावाह्य—एनन्तेति प्रतिष्ठाप्य ३ॐ वास्तोष्पत इति संपूज्य । वास्तोष्पतेनमस्तेस्तुसम्प्रार्थ्य । तदुपरि आधारशिलां विन्यस्यावाहयेत, तेजोमयीं लंवरूपां सदाशिव स्व रूपिणीम् । ध्यायामि मनसादेवीं शिलामाधार रूपकाम् ॥ एन न्तइति प्रतिष्ठाप्य–३ॐ भू० स्वः आधारशिले सुप्रक्तिव० ॥ पाद्य गन्धा-दिभिः संपूज्य मृदादृढीकुर्यात ॥ तस्या वामेदीपंप्रज्वाल्या धारशिलोपरि महापद्मनामकताम्र कलशेपूर्ववत्पारद नवरत्नादि कंनिक्षिप्य पिधानेनमुखंपिधायाधार शिलोपरिस्थापयेत्—कलशं पुनर्मृदादृढीकृत्य प्राक्शिरस्कांभद्राशिलां ३ॐ भद्रमित्यस्य गोतम ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः विश्वेदेवादेवता भद्राशिलास्थापने विनि० । ३ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैः रंगै स्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यसेमहिदेवहित यदायुः ॥ इतिसंस्थाप्य- ३ॐ वरुणस्येत्यस्य वत्सऋषिर्विराट्छन्दः वरुणोदेवता भद्राशिला स्थिरीकरणे विनि० ॥ ३ॐ वरुणस्योत्तंभनमसि व्वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थोव्वरुणस्य ऽ ऋत सदन्यसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद ॥ स्थिरीकृत्यैनन्तेति प्रतिष्ठाप्य ३ॐ भद्रायैनमः गन्धादिभिः सम्पूज्य ३ॐ भू० स्वः भद्रे सुप्रति० वर दाभव ॥ प्रार्थयेत्—भद्रेत्वं सर्वदा भद्रं लोकानांकुरुकश्यपि । आ युर्दाकामदादेवि सुखदा च सदाभव ॥ त्वामत्र स्थापयाम्यत्र गृहे ऽ स्मिन्भद्रदायिनि ॥ वेश्मनितिष्ठ संनिष्टयावच्चन्द्र दिवा करौ ॥

॥ इति भद्राशिला स्थापनम् ॥

अथ जयाशिलास्थापनम्—नैर्ऋत्यकोणे गत्वाविश्वेत्वं कमले इति सम्प्रार्थ्यगर्तं विधायोपलिप्य च गर्तेपिष्टेन वास्तुंविलिख्याय- वाहयाम्यहमित्यावाह्य—एनन्तेति प्रतिष्ठाप्य ३ॐ वास्तोष्पत इति

संपूज्य वास्तोष्पते नमस्तेस्तु० सम्प्रार्थ्य तदुपर्याधारशिलां विन्यस्य तेजोमयीं लंबरूपां–इत्यावाह्य तदुपरि यवतंडुलान्निक्षिप्य तत्र शंखनामकलशं संस्थाप्य वामेदीपं प्रज्वाल्यतत्रपूर्वोक्त पारदादीनि निक्षिप्य पिधायमृदादृढीकृत्य ॐ भू० स्वः, आधारशिले सुप्र० व० ॥ संपूज्य चप्राक् शिरस्कां जयाशिलाम्–ॐ वरुणस्येत्यस्य वत्सऋषिर्विराट्छन्दः वरुणोदेवता जयाशिलास्थापनेविनियोगः ॥ ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कंभसर्जनीस्थोवरुणस्य ऽ ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऽ ऋत सदनमसिवरुणस्य ऽ ऋतसदनमासीद। इति संस्थाप्य—ॐ स्थिरोभवेत्यस्यत्रितऋषिरनुष्टुप्छन्दः रासभोदेवता जयाशिला स्थिरीकरणे विनि०। ॐ स्थिरो भवबीड्वंगऽआशुर्भववाज्यर्वन्। पृथुर्भवसुखदस्त्वमग्ने—पुरीषवाहणः ॥ एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य ॐ भू० स्वः जये सु०व० ॥ ॐ जयायैनमः सम्पूज्यप्रार्थयेत्—गर्गगोत्रसमुद्भूतां त्रिनेत्रांच चतुर्भुजाम्। गृहे ऽ स्मिन् स्थापयाम्यद्य जयांचारुविलोचनां ॥ नित्यं जयायभूत्यैच स्वामिनो भवभार्गवि। वेश्मनित्विह संतिष्ठ यावच्चन्द्र दिवाकरौ ॥ इतिजया शिला स्थापनम् ॥ अथ रिक्ताशिलास्थापनम्—ततो वायव्यकोणे ॐ विश्वेत्वंकमले इति भूमिं सम्प्रार्थ्यगर्तं कृत्वोपलिप्यच वास्तुविलिख्य, आवाहयाम्यहम्० इ० वा० एतन्ते० प्र०। ॐ वास्तोष्पते०। सम्पूज्य। वास्तोष्पते नमस्तेतु० संप्रार्थ्य०। तदुपर्याधारशिलां संस्थाप्य ॐ तेजोमयींलंबरूपां० इतिध्यात्वा तस्यावामेदीपं संस्थाप्य शिलोपरियवतण्डुलेषु पूर्वोक्तपारदादीनि विजयनाम कुम्भेनिक्षिप्य स्थापयेत्— एतन्ते, इति प्रतिष्ठाप्य सम्पूज्यच मृदादृढीकृत्य प्राक् शिरस्कां रिक्ताशिलां ॐ त्र्यम्बकमिति वशिष्ठऋषि त्रिष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता रिक्ताशिलास्थापने वि० ॐ त्र्यम्बकं यजा० संस्थाप्य० ॐ वरुणस्योत्तभनमसि० इति स्थिरीकृत्वा एतन्ते० प्रति० ॐ भूर्भुवः स्वः रिक्ते सु० व०। ॐ रिक्तायैनमः सम्पूज्य प्रार्थयेत्। रिक्तेत्वं रिक्तदोषघ्ने सिद्धि भुक्तिप्रदेशुभे।

वेश्मनित्विह संतिष्ठयावच्चन्द्रदिवाकरौ। इतिरिक्ताशिलास्थापनम्। अथ पूर्णाशिलास्थापनम्—ततोवास्तुभूमेर्मध्येभागे, ॐ विश्वेत्वं कमले० इति भूमिं संप्रार्थ्यगर्त कृत्वोपलिप्य वास्तुंविलिख्य। आवाहयाम्यहं० इत्यावाह्य एतन्ते इति प्रतिष्ठाप्य ॐ वास्तोष्पते इति संपूज्य। वास्तोष्पते नमस्तेस्तु० संप्रार्थ्य। तदुपर्याधार शिलांविन्यस्य। तेजोमयीं लम्बरूपां० ध्यात्वा। तदुपरिपारदादिगर्भित सर्वतोभद्र नामकं कुम्भंसंस्थाप्य वामेदीपं प्रज्वाल्य। एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य गंधादिना संपूज्यच मृदासर्वतो दृढीकृत्य तदुपरिपूर्णाशिला प्राक् शिरस्कां ॐ पूर्णादर्वीत्यस्यौर्ण नामऋषि रनुष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता पूर्णाशिला स्थापने विनि०। ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेवविक्रीणावहा ऽ इषमूर्जं ८० शतक्रतो। इति संस्थाप्य। एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य ॐ भू० स्वः पूर्णे सुस्थिरा सुप्रति० वरदाभव। ॐ पूर्णायैनमः संपूज्य प्रार्थयेत् पूर्णेत्वं सर्वदापूर्णालोकानां पूर्णकामिनी। अयुर्दाकामदा देविधनदासुतदा तथा। गृहाधारा वास्तुमयी वास्तुदीपेनसंयुता। त्वामृतेनास्तिजगतो माधारश्चजगत्प्रिये। वेश्मनित्विहसंतिष्ठ यावचन्द्र दिवाकरौ इति सम्प्रार्थ्य ततः पंचशिलाभ्यो। पायसबलिं दध्यत्तत. बलिंदद्यात् ॐ नन्दायैनमः बलिंसंपूज्य भो नन्दे एतं बलिंगृहाण, एवंसर्वत्र ॐ भद्रायैनमः ॐ रिक्तायैनमः ॐ पूर्णायैनमः। हस्तौपादौप्रक्षाल्य पुरुषसूक्त पाठंवा स्वास्ति वाचनंपठेत्। इति शिलान्यास विधिः।

अथ वास्तुस्थापनविधिः—अथचाचार्यःशिलान्यासादिकर्मकृत्वा वास्तुपुरुष संस्थापनार्थ वास्तुभूमेः (नूतनसद्मनः) एकाशीति भागं विधायेशानकोणादष्टमे आकाशपदे रौद्रभागे आग्नेयस्थं वायुस्थानंत्यक्त्वा वास्तुंस्थापयेत्। तत्रपृथ्वीं प्रार्थयेत्। ॐ वाराह स्थापितां देवीं सर्वलोकधरांमहीम्। ध्यायामिप्रमदारूपां दिव्याभरणभूषिताम्। ध्यात्वा ॐ स्योनेत्यस्य मेधातिथि ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः पृथ्वी देवता पृथ्व्यावाहने पूजने वि०। ॐ स्योना

भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ॐ भू० स्वः पृथ्व्यै नमः संपूज्य भो पृथ्वि सु० व० । ॐ वास्तु पुरुषायनमः ध्यात्वा संपूज्य प्रार्थयेत् । ततो गृहंत्रिसूत्र्या अश्वत्थाम्रपल्लवादिनि र्मितव नमालया च वक्ष्यमाण रक्षोघ्नसूक्तेन पवमानेन च-वेष्टयेत्—अथ रक्षोघ्नम्—ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिंनपृथ्वी याहिराजे वामवां । ऋँ॥ इभेन त्रिष्वीमनुप्रसितिंद्रूणानो ऽस्ताऽसि व्विध्य रक्षसस्तापष्ठैः ॥१॥ तव भ्रमासऽआशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषताशोशुचानः । तपू ॐ ष्यग्ने जुह्वापतंगान संदितो व्विसृज विष्वगुल्काः ॥२॥ प्रतिस्पृशो व्विसृज तूर्णितमो भवापायुर्विशो ऽ अस्या ऽ अदब्धः । योनोदूरे ऽ अघश ऽ० सोयोअन्त्यग्नेमा किष्टेव्यथिरा दधर्षीत् ॥३॥ उदग्नेतिष्ठप्रत्यातनुष्व न्यमित्राँ ऋँ॥ ओषतातिग्महेते । योनो ऽ अराति ऽ० समिधानचक्रे नीचातं धक्ष्यतसन्नशुष्कम् ॥४॥ ऊर्ध्वोभव प्रतिविध्याध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने । अवस्थिरा तनुहियातजूनां जामिमजामि प्रमृणीहि शत्रून् ॥५॥

अथ पवमानसूक्तम्—अनेननूतन गृहस्यसूत्रमार्गद्वारासदुग्धजलेनपिचेत् । गृहस्य धुरातः अविच्छिन्नधाराद्य उभयोः पक्षयोर्दधात् ॥ ॐ पुनन्तुमापितरः सोम्यासः पुनन्तुमापितामहाः ॥ पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेणशतायुषा ॥१॥ पुनन्तुमा पितामहाः पुनन्तुमाप्रपितामहाः ॥ पवित्रेणशतायुषाव्विश्वमायुर्व्यश्नवै ॥२॥ अग्न ऽ आयू ॐ षिपवस ऽ आसुवोर्ज मिषंचनः ॥ आरेबाधस्व दुच्छुनाम् ॥३॥ पुनन्तु मादेवजनाः पुनन्तु मनसाधियः ॥ पुनन्तु व्विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहिमा ॥४॥ पवित्रेण पुनीहिमा शुक्रेणदेवदीद्यत् ॥ अग्नेक्रत्वा क्रतूँ ऋँ॥ रनु ॥५॥ पवमानः सो ऽ अद्यनः पवित्रेण व्विचर्षणिः ॥ यः पोतासपुनातुमा ॥६॥ उभाभ्यां देवसवितः पवित्रेण सवेनच । मांपुनीहिव्विश्वतः ॥७॥ वैश्वदेवी पुनतिदेव्या गाद्यस्यामिमाव ह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः ॥

कुंडस्येशान स्थापित कुम्भजल मिश्रितजल दुग्धेन गृहमविच्छिन्न धाराभिः संमार्ज्य सप्तधान्यबीजानि चेशानादिक्रमेण सूत्रमार्ग द्वारा वहिः सिक्त भूमौवापयेत् ॥ ततः पूर्वोक्त ईशानकोणमागत्य शिलास्थानात्पूर्वमाकाशपदे जानुमात्रंखानयित्वासप्तमृत्तिकागोमय तीर्थजलैरुपलिप्य पंचरत्नपारद श्वेत पुष्प सप्तधान्यादि दधि सुवर्ण रजतादिभिरलंकृत्य प्रक्षिपेच ॥ होमवेदीशानस्थ संस्रवधारणार्थकलशजल मिश्रित नूतन वृहद्घटजलं गन्धादिभिः संपूज्यघटं हस्ताभ्यां गृहीत्वा ऽ वनिकृत जानुमण्डलः सन् ॥ वास्त्ववटं तेनजलेन ॐ तत्वायामीति शुनः शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो देवता वास्त्ववट जलपूरणे वि० ॥ ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानोव्वरुणे हवोध्युरुश ᳪ सम्मान ऽ आयुः प्रमोषीः ॥ इति पूरयेत् ॥ ततः सैवाल सप्तधान्यसप्तमृत्तिका पुष्पाणि च प्रक्षिपेत् ॥ ततो वास्तुवेदीमुपागत्यपूजितनागाकृति वास्तुप्रतिमां सकलशांवाद्य ध्वनिपुरः सरं शान्तिसूक्तं पठन्आनीय तत्रसंस्थाप्य गन्धादिभिः सम्पूज्य कलशे शैवाल पारद पंचरत्नाष्टगन्धादीनि निक्षिप्य वास्तु प्रतिमां नागाकृतिं कलशेऽधोमुखींकृत्या कलशमुखं पिधानेन दृढीकृत्य प्रार्थयेत्—प्रसीदपाहि विश्वेश देहिमेगृहजंसुखम् । पूजितोऽसि मयावास्तोहोमाद्यैरर्चनैः शुभैः । वास्तु पुरुष नमस्तेस्तु भूमिशय्यारत प्रभो । मद्गृहं धनधान्यादि समृद्धंकुरुसर्वदा ॥ ॐ वास्तोष्पत इति वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वास्तु देवता नूतन गृहे वास्तुस्थापने विनियोगः । ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो अनमीवोभवानः । यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्वशन्नोभव द्विपदेशं चतुष्पदे । इति सप्रतिमं कलशं तत्रावटे स्थापयित्वा वामेदीपं प्रज्वाल्य ॐ एतन्ते देवसवितर्यज्ञंप्राहु र्बृहस्पतये ब्रह्मणे तेनयज्ञमवतेन यज्ञपति तेनमामव । ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्यबृहस्पति र्यज्ञमिमंतनो त्वरिष्टं यज्ञ ᳪ समिमं दधातु विश्वे देवासऽ इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुव स्वः वास्तो इहाग-

च्छेद्दतिष्ठ । सुप्रतिष्ठितोवरदोभव । ॐ वास्तु पुरुषायनमः । नाममंत्रेण पुनः सम्पूज्यप्रार्थयेत ॥ यावद्भूमण्डलं धत्तेसशैलवन सागरान् । तावदस्मिन् गृहेतिष्ठ सर्वसंपत्करोभव ॥ भोवास्तोः पूजितो ऽसिद्धमस्व ॥ ततः पूर्वोत्खातमृदा गर्तपूरयेत्, ततोवलिं दद्यात्—उपरितोगोमयादिनोपलिप्य वास्तुवेदीं देवविसर्जनान्ते तत्र स्थापयेत ॥ अत्र देशाचार व्यवस्था वास्तुवेद्युपरि पालाश दण्डस्थापनस्यास्ति तमप्याचार्यः स्थापयेत् । तत आचार्योवास्तु-स्थापनं कृत्वागृहाद्बहिः पूर्वादिदिक्षुदशदिक्पालेभ्यो (दधि घृत मधु मिश्रित भक्तं) वामापान्नं सदीपंपताकोच्छ्रितं वलिंदद्यात्—तत्रपूर्वं इन्द्रमावाहयेत् ॐ ऐरावत समारूढं वज्रहस्तं महावलम् । आश्रितं दिशिपूर्वस्यामिंद्रमावाहयाम्यहम् ॥ दधिमाप भक्त-वलिं सदीपंसंपूज्य हस्तेजलंनिधाय ॐ इन्द्रायसांगाय सशक्ति काय सपरिपरिवारायैनं वलिंसमर्पयामि, भो २ इन्द्रदिशंरक्ष २ वलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्त्ता पुष्टिकर्त्ता क्षेमकर्त्ताभववलि-नासह पीतपताकांच गृहाण इति वल्युपरि जलंक्षिपेत्—प्रार्थयेत्—इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महावलः । शतयज्ञाधिपो देवस्त-स्मै नित्यं नमोनमः ॥ एवं सर्वत्र ॥ तत आग्नेय्यामग्निमावा हयेत्—प्रार्थयेच्च—छागपृष्ठं समारूढं शक्तिहस्तं महावलम् । आश्रितं दिशमाग्नेयीमग्निमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ अग्नयेनमः, इति सरक्तपताकंवलिंसदीपंसंपूज्य—ॐ अग्नयेनमः सा०सा०स० स० नमः एनं० मा० समर्पयामि भो २ अग्नेदिशंरक्षवलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्त्ता०। प्रार्थयेत्—आग्नेयः पुरुषोरक्तः सर्वदेवमयो ऽव्ययः ॥ धूम्रकेतुर्ध्वजोयस्यतस्मै नित्यंनमोनमः ॥२॥ ततोदक्षिणे यममावाहयेत्—महामहिप मारूढं दंडहस्तमहावलम् । आवाह-यामियज्ञे ऽस्मिन् पूजेयंप्रतिगृह्णताम् ॥ कृष्णपताकायुतंवलिं संपूज्य ॐ यमायसांगाय० भो २ यमदिशंरक्ष २ वलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ताभवैनंवलिंगृहाण । प्रार्थयेत्—तुलायस्थो महाकायो दण्डहस्तो पराक्रमी । वृहत्पीनो महावाहुस्तस्मैनित्यं

नमोनमः ॥ नैर्ऋत्ये निर्ऋतिम्—निर्ऋतिंखड्गहस्तं च सर्वलोक भयंकरम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ नील पताकायुतंबलिंसंपूज्य ॐ निर्ऋतये सांगाय० भो निर्ऋते दिशं-रक्ष २ बलिं भक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ता० भव। एनंबलिंगृहाण॥ प्रार्थयेत्–निर्ऋतिः खड्गहस्तश्च सर्वलोकैकपावनः । नागरूढो महाकायस्तस्मै नित्यंनमोनमः ॥ पश्चिमे वरुणमावाहयेत्–पाश हस्तंचवरुणं यादसांपतिमीश्वरम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ श्वेतपताकायुतंबलिंसंपूज्य–ॐ वरुणाय-सांगायसायुधाय सशक्तिकाय सपरिवारायैनं बलिं समर्पयामि। भो २ वरुणदिशंरक्ष २ बलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ता० एनं बलिंगृहाण ॥ प्रार्थयेत्–पाशहस्तात्मको देवोवरुणो यादसांपतिः। भूपितोमणिरत्नैश्च तस्मैनित्यं नमोनमः॥ वायव्येवायुमावाह-येत्–वायुमाकाशगंचैव शीघ्रगंचमहाबलम्। आवाहयामियज्ञेस्मिन् पूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ धूम्र पताकायुतं बलिं संपूज्यवायवेसांगाय० भो २ वायो दिशंरक्ष २ बलिंभक्ष २ यजमानस्या युष्कर्ता० एनंबलिं गृहाण। प्रार्थयेत्। त्रैलोक्यान्तश्चरोवायुः सर्वेषामीप्सित प्रदः। सर्वाभरणसंयुक्तस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥ कुबेरमुत्तरआवा हयेत्–आवाहयामिदेवेशं धनाध्यक्षं महाप्रभुम्। उत्तरस्यांदिगीशं तमलका वासिनं शुभम् ॥ हरित्पताकायुतं बलिं संपूज्य ॐ कुबेरायसांगाय०। भो २ कुबेर दिशंरक्ष ० बलिंभक्ष २ यजमा-नस्यायुष्कर्ता० एनं बलिं गृहाण ॥ कुबेराय सुरेशाय धनाध्यक्षा-यतेनमः। उत्तरेशाय सौम्याय यक्षेशायनमोनमः। ईशाने ईशमा बाहयेत्। वृषभस्कन्ध मारूढंशूल हस्तं पिनाकिनम्। आवाहयामि-यज्ञे ऽस्मिन् पूजेयंप्रतिगृह्यताम् ॥ श्वेत पताकायुतंबलिं संपूज्य–ईशानाय सांगाय० भोईशान दिशंरक्ष २ बलिंभक्ष २ यजमानस्या युष्कर्ता० भव ॥ एनंबलिं गृहाणप्रार्थयेत्।—सर्वाधिपो महादेव ईशानः शुक्लईश्वरः ॥ शूलपाणिर्विरूपाक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये ब्रह्माण मावाहयेत्—हंस पृष्ठ समारूढंस्रुवहस्तं

महाबलम् ॥ लंबोदरं चतुर्वक्त्रं ब्रह्माणमाह्वयाम्यहम् ॥ रक्तपताका युतंबलिं सम्पूज्य ब्रह्मणेसा० भो २ ब्रह्मन् दिशंरक्ष २ बलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ता० एनंबलिगृ० प्रार्थयेत् । पद्मपाणिश्चतुर्मूर्ति वेंदावासः पितामहः । यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मैनित्यं नमोनमः । नैर्ऋत्य पश्चिमयोर्मध्ये ऽ नन्तमावाहयेत्—नागपृष्ठ समारूढं पातालतलवासिनम् । आवाहयाम्यहं देव मनन्तं सर्पराजकम् ॥ मेघवर्ण पताकायुतं बलिं सं० अनन्ताय सांगाय० भो २ अनन्त दिशंरक्ष २ बलिंभक्ष २ यजमानस्यायुष्कर्ता० ॥ एनंबलिंगृ०प्रा०- अनन्त रूपिणा येन विष्णुना सचरा चरम् । पुष्प बध्दारितं नित्यं तस्मै तुभ्यं नमो नमः ॥ १० ॥ एवं गृहप्रवेशांगत्वेन दिक्पालेभ्यो बलीन्दत्वा क्षेत्रपालायपुनः पूर्वोक्तानुसारेण माषबलिंदत्वा बलिशेषंमासभक्तादिकमुभाभ्यां हस्ताभ्यांपुटके सम्पुटीकृत्य नूतनगृहस्यनैर्ऋतकोणे गत्वोत्तराभि मुखो भूत्वासन्ध्याकालनिमित्तक बलिमिदानीमपकृष्य वक्ष्यमाण मन्त्रैः—उक्तंचविश्वकर्मप्रकाशे—देव्योदेवामुनीन्द्राः सभुवनपत- योदानवाः सर्वसिद्धायक्षारक्षांसिनागा गरुडमुख्खगागुह्यकादेव देवाः ॥ योगिन्योदेववेश्या हरिदधिपतयो मातरोविघ्ननाथाः । प्रेताभूताः पिशाचाः पितृवननगराद्याधिपाः क्षेत्रपालाः ॥१॥ गन्धर्वाः किन्नराः सर्वेगुह्यकाः पितरोग्रहाः । कूष्माण्डाः पूतना- रोगास्तथावेतालकाः शिवाः ॥२॥ असृक्प्लुताश्च शिशुनांमांस- भक्षणतत्पराः । लम्बकोष्ठास्तथा ह्रस्वादीर्घाशुलास्तथैवच ॥३॥ सूर्यकोटिप्रतीकाशा विद्युत्सदृशवर्चसः । गृह्णन्तुचबलिंसर्वं तृप्ता यान्तुबलिर्नमः ॥ सर्वेभ्योभूतेभ्योनमः, इतिबलिंदत्वा हस्तौपादौ प्रक्षाल्य ततोहोमवेदीसमीपमागत्य सपुत्रकलत्रादि परिवारयुतो यजमानोहोमपद्धत्युक्तप्रकारेण पूर्णाहुतिंजुहुयात् । ततो गोदान विधिनाशान्त्यर्थमाचार्यायसवत्सां पयस्विनींगांचदद्यात् ॥ तत आचार्यब्रह्मासदस्यपाठक जापकऋत्विक्द्वारपालादिभ्यो यथांशेन सुवर्णादिमुद्रां भूयसीदक्षिणांचदद्यात ॥ सङ्कल्पः—अद्येत्यादि

संकीर्त्यामुकराशिः सपत्नीकः सपुत्रपौत्रबन्धुवर्ग परिवारसहितो ऽहं कृतैतन्नूतनगृहकर्मणि शिलान्यासवास्तुस्थापन गृहप्रवेशांग कर्मणः साङ्गफलप्राप्तये साद्गुण्यार्थंच गांगोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यंवा आचार्यादि ब्राह्मणेभ्यो ब्रह्मादिभ्यश्च सुवर्णरजतादिमुद्रादक्षिणां दास्ये तथाचन्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थमिमां भूयसींदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तकादिभ्यो विभज्यदास्ये यथासंख्यकान् ब्राह्मणान्भोजयिष्ये। इति सर्वेभ्योदक्षिणां यथांशेन विभज्यमण्डपे सर्वेषांदेवानामुत्तरांगपूजनंविधायप्रार्थयेत मन्त्रपुष्पाञ्जलिंदद्यात्॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकआसीत्। सदाधारपृथ्वींद्यामुतेमां कस्मैदेवायहविषा विधेम॥ ॐ यज्ञेनयज्ञमजयन्त देवास्तानिधर्माणि प्रथमान्यासन् तेहनाकंमहिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिनेनमो वयंवैश्रवणायकुर्महे॥ समेकामान् कामकामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु कुबेरायवैश्रवणायमहाराजाय नमः॥ अहं मूढोनजानामि नजानामिविसर्जनम्। पूजांचैवनजानामि त्वङ्गतिपरमेश्वर॥ मन्त्रहीनंक्रियाहीनं विधिहीनंचयद्भवेत्। सत्सर्वंक्षम्यतांदेव प्रसीदपरमेश्वर॥ ॐ गणेशादिपंचाङ्गदेवताभ्योनमः। सर्वतोभद्रदेवताभ्योनः। गृहभद्रस्थदेवता०वास्तुभद्रस्थ शिख्यादिदेवताभ्योनमः। ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वेपूजामादायमामिकाम्। इष्टकामसमृध्यर्थं पुनरागमनायच। इति भद्रस्थदेवान्विसृज्य सर्वमण्डपस्थ कलशेभ्योजलमादाय होम संनिधिमागत्य सर्वकलशजलं तर्पणमार्जनजल सहितमेकीकृत्य होमेशानकलशस्थ जलमपिचैकीकृत्य त्र्यायुष्करणंकुर्यात्॥ तत आचार्योवामस्थ पत्नीपुत्रादिपरिवारयुतं यजमानमाम्रादिपल्लवैः पूर्वोक्ताभिषेक (सुरास्त्वामभिषिंचन्तु) विधिनावेदोक्तमन्त्रैरन्चाभिषेकाद्यार्शीर्वादान्तं कर्मविधायहोमकुण्डस्थदेवानामुत्तरांग पूजनंनीराजनादिकंकृत्वाऽग्निंप्रार्थयेत-ॐ चतुर्भिश्चचतुर्भिश्चद्वाभ्यांपंचभिरेवच। हूयतेचपुनर्द्वाभ्यांसमेविष्णुःप्रसीदतु॥ गच्छत्वं

भगवन्नग्नेकुण्डमध्यात्यथासुखम् । इष्टकामसमृध्यर्थंपुनरागमनायच ॥ इति अग्निविसृजेत् । ततोब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ इति वास्तुस्थापनविधिः ॥

॥ अथ गृहप्रवेशः ॥

पूर्वोदितोविधिंकृत्वा नूतनगृहप्रवेशे ब्राह्मणान्भोजयित्वा तस्मिन्नेवदिने दिवारात्रौ वाज्योतिर्विदादिष्टे सल्लग्ने (उक्तंचमात्स्ये) कृत्वाग्रतो द्विजवरानथपूर्णकुम्भन्दध्यक्षताम्रदलपुष्पफलोपशोभम् ॥ मांगल्यशान्तिनिलयागृहंविशेत्तु । शुक्लाम्बरःस्वभवनंप्रविशेत्सधूपम् ॥ कृत्वादौवास्तुपूजांजलभृतकलशं ब्राह्मणांश्चाग्रतोर्कं वामंकृत्वाथकार्यानवतरभवने तोरणाद्येप्रवेशः । ब्राह्मणैः कृत स्वस्त्ययनो मंगल तूर्यवादित्रादिगीतशान्तिपाठेन सफल सजल पूर्ण पंचपल्लव युतकलशो ब्राह्मणपुरः सरः शुक्लमाल्यानुलेपनस्नाहशकलत्र पुत्रपौत्रादि समेतः सशकुनः सूचिताभ्युदयस्तोरणाढ्यांशालां स्त्रिया अंचलग्रंथिंबध्वा स्वेष्टदेवता वेदपुस्तक यव श्रीफलादि मंगलवस्तूनिवंशनिर्मितनूतने पात्रे पत्नी शिरसिकृत्वा शुभ्रवस्त्रेणाच्छादयतामनुगच्छन्सन् गृहस्यप्रदक्षिणां कृत्वाश्रिमद्वार समीपमागत्य पूर्वोक्त गणेशपूजा विधिना देहलीगणेशं संपूज्य प्रतिष्ठाप्यचैक विशंतिमोदकान्दूर्वांकुरैः सह निवेद्यच मूहूर्तसामयिक लग्नदानं कुर्यात् दानसामग्रीं संपाद्य-संकल्पः--अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकशर्मा सपरिवारः सपत्नीकोऽहं नूतनगृह प्रवेशकर्मणि गृहप्रवेशसामयिक लग्नात्तत्र कुत्र-स्थानस्थिता द्वित्यादि नवग्रहाणामपस्थानामनिष्टफलोपशान्त्यर्थं

शुभस्थानां शुभफलाधिक्य प्राप्तये एतद्द्रव्यममुकशर्मणेदैवज्ञाय संप्रददे-इतिदत्वाद्वारमातृपूजनं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि-अमुक शर्मा सपत्नीकोऽहंनूतनगृहप्रवेशकर्मणिद्वारमातॄणांपूजनंकरिष्ये-आवाहनम्-आवाहयाम्यहं देवीद्वारमातॄः सुमंगलाः । नववेश्मप्रवेशार्थं पूजनंचकरोम्यहम् ॥ एतन्त इति म० कृत्वा ॐ भू० स्वः द्वारमातरः इहागच्छन्तु-इहतिष्ठन्तु सुमति० वरदाभवन्तु-इतिप्रतिष्ठाप्यध्यायेत्- ॐ कुमारी धनदानन्दा विपुलामंगलाचला । पद्माचैवेति नाम्नोक्ताः सप्तैताद्वारमातरः ॥ नाम मंत्रैः पूजनं कुर्यात्- ॐ कुमार्यैनमः, ॐ धनदायैनमः, ॐ नन्दायैनमः, ॐ विपुलायैनमः, ॐ मंगलायैनमः, ॐ अचलायैनमः, ॐ पद्मायैनमः, इति गन्धाक्षतादिभिर्नैवेद्यदक्षिणांदत्वा संपूज्यचाचार्यः स्वस्तिवाचनं पठन् गृहाभ्यन्तरं प्रविश्यस्वासन उपविश्यगणेशादि पंचांग पूजां कृत्वाजीवमातॄणांपूजनं कुर्यात् ॥ पट्टेः गणेश समीपेवा सप्तदध्यक्षत पुंजोपरि-आवाहयेत्-अद्येत्याद्यमुकोऽहं नूतन गृहप्रवेश कर्मणिकल्याण्यादिजीवमातॄणांपूजनंकरिष्ये । आवाहयेत्-आवाहयाम्यहं देवीर्जीमातॄः सुशोभनाः ॥ नववेश्म प्रवेशाय आयुष्कामार्थं सिद्धये ॥ एतन्ते०म०मति० ॐ भू० स्वः कल्याण्यादि सप्तजीवमातर इहागच्छन्त्विहतिष्ठन्तु ॥ सुमतिष्ठितावरदाभवन्तु ॥ इति प्रतिष्ठाप्य-कल्याणी मंगला भद्रापुण्या पुण्यमुखीतथा । जया च विजयाचैव वरदा भयपाण्यः ॥ इतिध्यात्वा-ॐ कल्याण्यैनमः, ॐ मंगलायैनमः, ॐ भद्रायैनमः, ॐ पुण्यायैनमः, ॐ पुण्यमुख्यैनमः, ॐ जयायैनमः, ॐ विजयायैनमः, ॐ इतिनाम मंत्रैरावाहनादि नीराजनान्तं संपूज्य गुडसर्पिभ्यां जीवमातॄणामुपरि वसोर्धाराः पातयेत्- ॐ वसोः पवित्र मसीतिमंत्रेण ततो ब्राह्मणादिभ्यो दक्षिणां दत्वा-आचार्यः-महानीराजनं तिलकं च कारयित्वाऽभिषेकादिकं कृत्वाऽऽशीर्दद्यात् ॥ ततः सुहृद्बन्धुयुतो भुंजीत ततो यथासुखं गेहेपंचरात्रपर्यन्तं शयनासनादिकं सतनं कर्त्तव्यम् ॥ इति गृहप्रवेश विधिः ॥ ❁

अथ सत्यनारायण पूजा परिभाषा ।

श्री भगवानुवाच—व्रतमस्तिमहत्पुण्यं स्वर्गमर्त्यंच दुर्लभम् ॥११॥ तवस्नेहान्मया वत्स ! प्रकाशः क्रियतेऽधुना । सत्यनारायणस्यैवंव्रतं सम्यग्विधानतः ॥१२॥ कृत्वासद्यः सुखं भुक्त्वाप्यन्ते मोक्षमाप्नुयात् । तच्छ्रुत्वाभगवद्वाक्यं नारदोमुनिर ब्रवीत् ॥१३॥ नारदउवाच । किंफलंकिंविधानं च कृतंकेनैव तद्व्रतम् । तत्सर्वंविस्ताराद् ब्रूहिकदाकार्यंहि तद्व्रतम् ॥१४॥ श्री भगवानुवाच । दुःख शोकादिशमनंधनधान्य प्रवर्द्धनम् । सौभाग्य संततिकरं सर्वत्रविजय प्रदम् ॥१५॥ अमावास्यां च संक्रान्तौ पौर्णमास्यां विशेषतः । यस्मिन्कस्मिन्दिने वाथभक्तिश्रद्धा समन्वितः ॥१६॥ सत्यनारायणं देवं पूजयेच्चनिशामुखे । ब्राह्मणैर्बान्धवैश्चैव सहितोधर्म तत्परः ॥१७॥ नैवेद्यं भक्तितो दद्यात्सपादं भक्तिसंयुतम् । रंभाफलंघृतं क्षीरंगोधूमस्य च चूर्णकम् १८ अभावे शालिचूर्णंवाशर्करां च गुडंतथा । सपादं सर्वभक्ष्याणि चैकीकृत्य निवेदयेत् । ॥१९॥ विप्रायदक्षिणां दद्यात्कथां श्रुत्वा जनैः सह । ततश्च बंधुभिःसार्धंविप्रांश्चप्र तिभोजयेत् । ॥२०॥ प्रसादंभक्षयेद् भक्त्या नृत्यगीतादिकं चरेत् । ततश्चस्वगृहं गत्वासत्यनारायणं स्मरन् । ॥२१॥ एवं कृतेमनुष्याणां वांछासिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् । विशेषतः कलियुगे लघूपायो ऽस्तिभूतले । ॥२२॥ प्रकुर्याच्च ततोवेदीं कदलीस्तम्भमण्डिताम् । सपादहस्त विस्तीर्णां श्चतुरङ्गुलमुन्नताम ॥२३॥ सर्वतो भद्रवद्दद्याद्रेखाः श्चैकोनविंशतिः तेनैवच प्रकारेण भद्रंतत्र प्रकल्पयेत ।२४। सर्वतोभद्र विधिना स्थापयेत्तत्र देवताः ।२६। गणनाथं प्रपूज्यादौ कलशं स्थापयेत्सुधीः । नान्दीमुखं मातृपूजां पुण्याहं वाचयेत्ततः ।२७। ग्रहार्चनं विधायैव ततः पूजां समारभेत । वेद्यां संस्थापयेत्तत्र कलशंसुमनोहरम् ॥२८॥ वारुणेन विधानेन पूजनं कथितंशुभम् । तत्राधारे सत्यदेवं शालिग्रामं च स्थापयेत ।२९। चतुर्भुजां स्वर्णमयींप्रतिमां वाथ स्थापयेत ।आचार्य वरणं कृत्वा ततः पूजां समारभेत् ॥ ३० पूजान्ते च कथांरम्यां स्कान्दोक्तां श्रावयेत्सुधीः ॥ ३१ ॥ धनवस्त्रादिभिश्चैव माचार्यपरितोषयेत् । आचार्ये परितुष्टेहि सत्यदेवोऽपि तुष्यति ॥ ३२॥ रात्रौ जागरणं कृत्वा होमं कुर्याद्विधानतः । शान्त्यर्थं दक्षिणां श्चैवगां च दद्यात्पयस्विनीम ॥३३॥

॥ अथ सत्यनारायण पूजा पद्धतिः ॥

अथ च सत्यनारायण पूजाकथायां सपाद हस्तां चतुरस्त्रां चतुरंगुलोच्छ्रितां वेदीं कृत्वासर्वतोभद्रविधिनासुलिख्य स्तम्भतोरणैः समलं कृत्य त्रिसूत्र्यावेष्ट्य गणेशादिपंचांग पूजनं पूर्वोदितं

विधायवेदीमध्ये पंचांगपूजित वरुण कलशमन्यं वा संस्थाप्य तत्र शालिग्राम शिलां वा सुवर्णप्रतिमामाधारोपरिसंस्थाप्य पूजनं कुर्यात्– तत्र कर्ता पूर्वोक्तविध्यनुसारतः पौर्णिमायां वामावास्यायां संक्रान्तौ वा मनेच्छितेवस्त्रे निशामुखेस्वासन उपविश्य दीपं प्रज्वाल्य संपूज्य चाधारं पूजयेत्। प्राणायामत्रयं विधाय संकल्पं कुर्यात्। अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रप्रवरोऽमुकशर्माहं सकल दुरितोपशमनसर्वापच्छान्तिपूर्वकं सकल मनोरथ सिद्ध्यर्थं यथासंपादित सामग्र्याऽ गणेश गौरी वरुणदेवता पञ्चलोकपाल दशदिग्पाल सूर्यादिग्रह देवता पूजन पूर्वकं पूर्वांगी कृतं श्री सत्यनारायण पूजनं कथा श्रवणं च करिष्ये। ततो गणेशादि देवता एको न विंशति रेखात्मकं सर्वतोभद्रं च संपूज्य कलशोपरि पात्रे पूर्वोक्तां प्रतिमां संस्थाप्य पुष्पाक्षत हस्तः श्री सत्यनारायणं ध्यायेत्–सत्येशं सत्यदेवेशं वरदं कामदं विभुम्। ध्यायामिमनसाभक्त्या सत्यनारायणं प्रभुम् ॥१॥ अर्घ्यम्— ॥ सत्यदेव नमस्तेऽस्तु संसारार्णवताराक। अर्घ्यंगृहाण सत्येश सत्यनारायण प्रभो ? ॥२॥ पाद्यम्— मंदोष्णं निर्मलं नीरं गन्धाक्षत समन्वितम्॥ पाद्यं गृहाणदेवेश सत्यनारायणप्रभो ?॥३॥ आचमनम्—यथालब्धंपरंवारि सर्वगन्धसमन्वितम्। गृह्यताम्यतांदेवसत्यनारायणप्रभो ? ॥४॥ पंचामृतम्—दधिदुग्ध घृतक्षौद्र शर्करामिश्रितंपरम्। पंचामृतंगृहाणेशसत्यनारायणप्रभो॥५॥ स्नानम्—अष्टगन्धसमायुक्तं स्नानीयंजलमुत्तमम्। स्नानार्थंगृह्ण सर्वज्ञसत्यनारायणप्रभो ? ॥६॥ स्नानान्ताचमनम्—स्नानान्ताचमनंदिव्यं गांगेयंजलमुत्तमम्। पुनर्गृहाणश्रीनाथसत्यनारायणप्रभो ॥७॥ वस्त्रम्—अङ्गशोभाकरंदिव्यं वर्णतन्तुसमन्वितम्। वस्त्रंगृहाणगोपीशसत्यनारायणप्रभो ? ॥८॥ यज्ञोपवीतम्—ब्रह्माद्यैर्निर्मितं शुद्धमुपवीतंसुमङ्गलम्। गृहाणकमलाकान्त सत्यनारायणप्रभो ? ॥९॥ चन्दनम्—चन्दनंपरमंदिव्यं कस्तूरीकेशरान्वितम्। भालशोभाकरंदिव्यं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥१०॥ निला-

क्षतम्—तिलाक्षतान्सुसंस्निग्धान्विष्णुप्रियमनोहरान । गृहाणदेव देवेशसत्यनारायणप्रभो ? ॥११॥ पुष्पाणि—जातीपुष्पाणि शुभ्राणि तुलसीं च समञ्जरीम् । सत्यनारायण प्रभो ? गृहाण तुलसी प्रिय ॥१२॥ धूपम्—गंधद्रव्यसमुद्भूतं गुग्गुलेन युतंप्रियम् । धूपं गृहाणलक्ष्मीश सत्यनारायणप्रभो ? ॥१३॥ दीपम्—गवाज्य वर्ति संश्लिष्टं दीपितं छविदर्शकम् । आरार्तिक्यंगृहाणेश सत्यनारायण प्रभो ? ॥१४॥ नैवेद्यम्—नानाव्यञ्जनसंयुतंच सरसंजम्भीररम्भा फलम्, चूर्णंचैवसुचारुपेयमधुरंदुग्धं समिष्टंशुभम् ॥ लाजाभ्राष्ट्र सुसंस्कृतान्श्चमधुरान्श्चोष्यंचलेह्यंतथा, नैवेद्यंचददामिस्वीकुरुहरे ? श्रीसत्यनारायण ? ॥१५॥ नैवेद्यान्तान्चमनम्—लवङ्गकर्पूरयुतंनैवे-द्यान्तंजलंपरम् । गृहाणाचमनंदेव सत्यनारायणप्रभो ? ॥१६॥ ताम्बूलम्—खादिरेणसुसंलिप्तं पूगीलवंगमिश्रितम् । ताम्बूलं गृहदेवेश सत्यनारायणप्रभो ? ॥१७॥ दक्षिणाम्—उपायनीभूत-मिदंवित्तशाठ्यविवर्जितम् ॥ द्रव्यंगृहाणदेवेश सत्यनारायणप्रभो ? ॥१८॥ ततः सफलार्घ्यम्—गन्धाक्षतजलमर्घे निधायोपरितः फलं संस्थाप्य वामहस्तेधृत्वोपरित उत्तानंदक्षिणहस्तंकृत्वा ॥ गन्ध-वारिसमायुक्तं फलंचात्यमनोहरम् । सफलार्घ्यंगृहाणेश सत्यनारा-यणप्रभो ? ॥१९॥ फलमग्रेस्थापयित्वा वारिणादेवंस्नापयेत ॥ कर्पूरार्तिक्यम्—कर्पूरंपरमंदिव्यं वन्हिनादीपितंमया । कर्पूरार्ति-क्यमादत्स्व सत्यनारायणप्रभो ?॥२०॥ प्रदक्षिणाम्—यानिकानि चपापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानितानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदेपदे ॥२१॥ इति—सत्यनारायणं भक्त्यासम्पूज्य कथां श्राव-यितु माचार्यं वृणुयात्—ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुक राशिरमुक शर्माहं चातुर्वर्गफलाप्ति कामनया श्री सत्यनारायण कथा परायणकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्रप्रवरान्वितममुक शर्मा णंब्राह्मणं व्यासत्वेनाहं वृणे, इति—वरणद्रव्य माचार्यहस्तेदत्वा प्रार्थयेत्—व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे । नमो वै ब्रह्मविधये वासिष्ठाय नमोनमः ॥२२॥ ततः पुस्तकं संपूज्य व्या-

सस्तवनं कुर्यात् । ततः सर्वे श्रोतारः समाहित मनस्काभवन्तु कथां च शृणुयुः । ततः कथावसाने चतुर्वर्तियु तमारार्तिक्यं सत्यनारायणस्य कुर्यात् ॥ सर्वेश्रोतारोव्यास पूजां कृत्वोपायनं निवेद्य करे कुसुमानि गृहित्वा मंत्र पुष्पाञ्जलिं दद्युः । ॐ यन्मया भक्तियुक्तेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् । निवेदितं चतत्सर्वं कृपया स्वीकुरुप्रभो ? ॥२३॥ सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं सत्यस्ययोनिं निहितं च सत्ये । सत्यस्य सत्यमृत सत्यनेत्रं सत्यात्मकं त्वां शरणंप्रपन्ना ॥२४॥ विभर्षिरूपाण्यवबोध आत्मा क्षेमाय लोकस्य चराचरस्य ॥ सत्वोपपन्नानि सुखावहानि सताम भद्राणि मुहुः खलानाम् ॥२५॥ स्वयं समुत्तीर्य्य सुदुस्तरं द्युमुद्भवार्णवंभीममदभ्रसौहृदाः । भवत्पदाम्भोरुहनावमत्रते निधाययाताः सदनुग्रहोभवान् ॥२६॥ सत्वंविशुद्धं श्रयतेभवान्स्थितौ शरीरिणांश्रेय उपायनंवपुः । वेदक्रियायोग तपः समाधिभिस्तवार्हणंयेन जनः समीहते ॥२७॥ शृण्वन्गृणन्संस्मरयंश्च चिन्तय न्नामानि रूपाणि चमंगलानि ते । क्रियासु यस्त्वच्चरणारविन्दयो राविष्टचेता नभवाय कल्पते ॥२८॥ नवांभोजनेत्रं नवंकेलिपात्रंचतुर्बाहुचामीकरं चारु गात्रम् ॥ जगत्त्राणहेतुंरिपौ धूम्रकेतुं सदासत्यनारायणं स्तौमिदेवम ॥२९॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं च यत्कृतम् । सर्व तत्पूर्णतांयांतु सत्यनारायणप्रभो ? ॥३०॥ तत रात्रौ जागरणं नृत्यगीतादिकं विदध्यात् । द्वितीयदिनोषसि पूर्ववद्देवं संपूज्य संस्तुत्य च होमादिकंकृत्वा गोदानं कुर्यात् । ततः पूजा स्थलमागत्य ॐ गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठ सत्यनारायणप्रभो ? । इष्ट कामसमृध्यर्थं पुनरागमनं कुरु ॥३१॥ तत' कलश जलेनपूर्वोक्त विधिनाभिषेकं कृत्वायजमानाय सपरिवारायाशीर्दद्यात् । ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयमपि भुञ्जीन ॥

इति श्री सत्यनारायण पूजापद्धति. ।

॥ अथ सङ्कट चतुर्थीव्रतं ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ सङ्कटचतुर्थी व्रतपूजा तथा शान्तिविधानम् ॥ अन्यचतुर्थी गणेशनिमित्तकव्रतानाम् ॥ **चतुर्थ्यपि**—सर्वव्रतेगणेशव्रतातिरिक्तापरैव । युग्मगादयग्नाल एकादशी तथाषष्ठी अमावास्याचतुर्थिका । उपोष्याः परसंयुक्ताः परापूर्वेणयोजिताः । इति **माधवीये**—बृहद्वशिष्ठोक्तेश्च । नागचतुर्थीतुमध्याह्नव्यापिनी पञ्चमीयुताचग्राह्या । गणेशव्रतेतु मध्याह्नव्यापिनीमुख्याचतुर्थीगणनाथस्य मातृविद्धाप्रशस्यते ॥ प्रातःशुक्लतिलैःस्नात्वा मध्यान्हे पूजयेन्नृप । वस्तुतस्तुयत्रभाद्रशुक्ल चतुर्थ्यादौगणेशव्रतविशेषे मध्याह्नपूजोक्ता तद्विषयाणि प्रागुक्तवचनानि ॥ नतुसार्वत्रिकाणि ॥ सङ्कष्टचतुर्थ्यादौबहूनांकर्मकालानां बाधापत्तेः ॥ तेन सर्वत्रगणेशव्रते पूर्वैवेतिसिद्धम् ॥ सङ्कटचतुर्थीतुचन्द्रोदयव्यापिनीग्राह्या ॥ दिनद्वयेसत्वेमातृयोगस्य सत्वात्पूर्वेतिकेचित् ॥ अन्येतुदिने मूहूर्तत्रयादिस्पर्श तृतीयायोगस्याभावात्परदिने । माधवोक्तमध्याह्नव्यापि सत्वात्सम्पूर्णत्वाच्च परेत्याचक्षते, दिनद्वयेतदभावे ऽपिपरैव ॥ **निर्णयतत्वे**—सङ्कष्टहर्नोकिलयाचतुर्थी सेन्दूदयस्थायदिचोभयत्र ॥ पूर्वापरावारितदाविधेया नचेद्युयुग्मंहिपरातदैव ॥ इत्यादि प्रमाणवाक्यैः सङ्कष्टापरामातृयोग. स्यात्पूर्वविद्धाप्रकर्तव्या ॥ सङ्कष्टचतुर्थीतुचन्द्रोदय कर्मकालव्यापिनीग्राह्या ॥

अथ पूजाविधानम्—प्रायस एतद्व्रतं स्त्रियो भर्तुरारोग्यैश्वर्य निमित्तंकुर्वन्ति ॥ प्रातर्नद्यादौ स्नानं विधाय सायंकाले चन्द्रोदिते समये पट्टे गणेशं कृत्वा पूजनं कुर्यात् तत्र संकल्पः— ॐ तत्सदितिदेशकालौ संकीर्त्यामुकी नाम्न्यहं यन्मयास्वभर्तुरायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धये आत्मनश्चजीविताबधिपत्यासह सर्व सौभाग्य प्राप्तये, इदानीं संकष्ट चतुर्थ्या यथालब्धोपचारेण षोडशमातृकासहितं सङ्कष्टमोचननामकगणेशपूजनंकरिष्ये—पुष्पाञ्जलहस्ना सन्ध्यायेत् ❀ लम्बोदरंचतुर्बाहुं रक्तवर्णंत्रिनेत्रकम् । ध्यायामिमनसाभक्त्यासङ्कष्टहरणंप्रभुम् ॥ ॐ विघ्नविनाशिनेनमः आसनंसमर्पयामि । ॐ लम्बोदरायनमः पाद्यं समर्पयामि ॥ ॐ चन्द्रार्धधारिणेनमः, अर्घ्यंसमर्पयामि । ॐ विश्वप्रियायनमः, आचमनंसमर्पयामि । विघ्ननाशायनमः स्नानं समर्पयामि । ॐ ब्रह्मचारिणेनमः यज्ञोपवीतं समर्प० ॐ गजकर्णायनमः वस्त्रं

सम० । ॐ चन्द्रमौलिसुतायनमः, चन्दनम्० ॐ सुमुखायनमः पुष्पम्० । ॐ उमापुत्रायनमः धूपं० । ॐ हरप्रियायनमः दीपम् ॐ विघ्ननाशायनमः नैवेद्यम्० ॐ सिद्धिदायनमः ताम्बूलम्० ॐ वरदायनमः इति फलम्० । ॐ विद्याधरायनमः दक्षिणां० ॐ गणेश्वरायनमः नीराजनम्० ॐ मूषकवाहनायनमः प्रदक्षिणां कुर्यात् ॥ पुष्पाञ्जलिः—विघ्नध्वान्तनिवारणैक तरणिर्विघ्नाटवी हव्यवाड्विघ्नव्यालकुलाभिमानगरुडो विघ्नेभपंचाननः ॥ विघ्नो त्तुङ्गगिरिप्रभेदनपवि ।विघ्नाम्बुधौवाडवो विघ्नाघौघघनप्रचण्ड पवनो विघ्नेश्वरः पातुवः ॥ ततः सूर्पपायसंवाएकविंशतिमोदका- न वैकविंशतितिलपूरिनशष्कुलीः संस्थाप्यसूर्परक्तवस्त्राच्छादितं कृत्वा गणेशायनिवेदयेत । ततश्चन्द्राय दुग्धार्घ्यंदद्यात् । पाद्या- दिभिः सम्पूज्याञ्जलौपात्रेवा—दधिदुग्धंसुगन्धिमिश्रितं निधायो त्थायच ॐ चन्दनागरुकर्पूरदधिदुग्ध सुमिश्रितम् । भक्त्यार्पितं मयादेवगृहाणार्घ्यंनिशाकर ॥ अर्घ्यंदत्वा गणपतिसमीपमागत्य दम्पत्युत्तरांगपूजनं विधाय प्रसादंगृह्णीयात्ताम् ॥ अथ व्रतशांति प्रकारंवक्ष्ये—कर्ताव्रती, रात्रौचतुर्थ्यां सर्वतो भद्रपूजा विधानेन सम्पूज्यमध्येकलशविधिना सम्पूज्य तत्र सुवर्णप्रतिमां गणेशं पूर्वोक्तविधिनासम्पूज्य—द्वितीये ऽह्नि पंचम्यां—गणानान्तेतिमंत्रेण घृताक्तपायसेन वायवतिलाज्येन वा मोदकैः ॥ अष्टोत्तरसहस्र मष्टोत्तरशतमष्टोत्तर विंशतिसंख्यकाहुतिभिर्यक्ष्ये ॥ ब्रह्मादिदेवता भ्यो एकैकामाहुतिदद्यात् । एवं पूर्णाहुत्यादिभिर्होमं समाप्यैक विंशतिब्राह्मणान् सम्पूज्यगणेशस्यैक नामोच्चारणंकृत्वा एक ब्राह्मणायैक मोदकं सदक्षिणं रक्तवस्त्रवेष्टितंदद्यात ॥ एवं सर्वेभ्यो दद्यात् ॥ तत्रमन्त्रः—ॐ गणेशायनमः, ॐ संकटहरायनमः २ ॐ लम्बोदरायनमः ३ ॐ विघ्ननाशाय० ४ ॐ गणाध्यक्षाय नमः ५ ॐ वक्रतुण्डाय० ६ गजाननाय० ७ ॐ सूर्पकर्णाय० ८ ॐ एकदन्ताय० ९ ॐ भालचन्द्रायनमः१० ॐ उमापुत्रायनमः ११ ॐ हरप्रियाय० १२ ॐ विकटायनमः १३ ॐ वामनायनमः

१४ ॐ विद्याधरायनमः १५ ॐ ब्रह्मचारिणेनमः १६ ॐ वर-
दायनमः १७ ॐ विनायकाय० १८ ॐ हेरम्बाय० १९ ॐ
संकटमोचनायनमः२० ॐ विश्वरूपायनमः—तत आचार्यायैक-
विंशति सूपस्थान्मोदकान्दद्यात् ॥ सम्पूज्य—विप्रवर्यगृहाण-
त्वं मोदकानेकविंशति । आवयोर्देहिसौभाग्यंसंकटंचहरप्रभो ।
ततोगोदानंकृत्वा गणेशंप्रार्थयेत् ॥ अन्नहीनंक्रियाहीनं भक्तिहीनं
च यद्भवेत् । तत्सर्वंपूर्णतांयातु विघ्नेश्वरनमोस्तुते ॥ आशिषो
गृहीत्वा बन्धुवर्गजनैः सहभुञ्जीत ॥

इति सङ्कष्टचतुर्थी व्रतम् ॥

॥ अथ हरितालिकाव्रतं ॥

उक्तञ्चहेमाद्रौभविष्ये कृष्णउवाच—शुक्ले भाद्रपदे स्यैव तृतीयायां समाचरेत । रत्नै
धान्यैः सखण्डे कृत्वा हरित शाद्वलं । खर्जूरैर्नारिकेलैश्चफलैर्नानाविधैस्तथा ॥ मातुलिंग कुमु-
रमैश्च धान्यकै जीरकै स्तथा । गंधै पुष्पैः फलै दीपै नैवेद्यै र्मोदकादिभिः । प्रीणयि
त्वा समास्थाय पद्मरागेण भास्वता । घंटावाद्यादिनिर्घोषैः शुभैर्दिव्यैश्च पात्रकैः. पूजनीया
महाभाग मंत्रेणानेन भक्तितः । हरेर्नाभिसमुत्पन्ने हरितालि हरिप्रिये । सर्वदा सस्य मूर्ति
स्थे प्रणतास्मि हरेनमः । इत्थं संपूज्य तां देवीं दद्याद्विप्राय दक्षिणाम् । कृत्वा जागरणं
रात्रौ प्रभाते किंचि दुद्गते । तदा सुवासिनी भिस्तु सानेयात्तु जलाशये । ततो जलाशये
रम्ये मंत्रेण विसर्जयेत । अर्चितासि मया भक्त्या गच्छ देवि सुरालयम् । मम दौ
र्भाग्यनाशाय पुनरागमनायच । एवंच पाण्डवश्रेष्ठ हरितालिव्रतंचरेत । प्रतिवर्षविधानेन नारी
वाभक्तितत्परा । सौख्यायत्फलमाप्नोति तदन्येनन लभ्यते । देव्युवाच—नामेदं कथितं देव विधि
वदमम प्रभो । किंपुण्यं किंफलंचास्य केनचाविधिनाचरेत । ईश्वरउवाच—शृणुदेवि विधिंवक्ष्ये
नारीणांव्रतमुत्तमम् । कर्त्तव्यन्तुप्रयत्नेन यदि सौभाग्यमिच्छति । तोरणादिप्रकर्त्तव्यं कदली-
स्तम्भमण्डितम । आच्छाद्यपट्टवस्त्रैस्तु नानावर्णैर्विचित्रितम । चन्दनादिसुगन्धेन लेपयेद्गृह-
मण्डपम । शंखभेरीमृदंगैश्च वादित्रैर्बहुभिर्वरैः । नानामङ्गलगीतैस्तु कर्त्तव्यंममसद्मनि । स्थापनं
तत्रकर्त्तव्यं पार्वत्या सहितस्य मे । पूजयेद्धृतुभि पुष्पै र्गन्धधूपैर्मनोहरैः । उपोष्य पूजये

दुर्भस्तन्या कुर्यात् जागरणं निशि । नारिकेलैश्च जंबीरै रन्यैश्च विविधैः फलैः ॥ ऋतुदेशोद्भवैः सर्वै नैवेद्यैः कुसुमैर्नवैः । सुगन्धैर्धूपदीपैश्च मंत्रेणानेन पूजयेत । नमः शिवाय शान्ताय पंच वक्त्राय शूलिने । नन्दिभृंगि महाकाल गणयुक्ताय शंभवे । शिवायै शिवरूपायै मंगलायै महेश्वरी । शिवे सर्वार्थदे देवि शिवरूपे नमोस्तुते । नमस्ते शिवरूपिण्यै जगद्धात्र्यै नमोनमः । संसार भीति संत्रस्तं त्राहिमां सिंहवाहिनि । सर्वापि येन कामेन पूजितासि महेश्वरि । राज्यं देहिनमौभाग्यं प्रसन्नाभव पार्वति । मंत्रेणानेन तांदेवि पूजये दुमयामह । ततः कथां समाकर्ण्य शक्त्या दद्याच्चदक्षिणाम् । ब्राह्मणाय प्रदातव्यं वस्त्रधेनु हिरण्यकम् । तृतीयायान्तु यानारी फलभोजन माचरेत । जन्मजन्मभवेद्वन्ध्या विधवा चपुनः पुनः याति सानरकं घोरमुपवासं नयाचरेत । काचनं रुक्मपात्रम् ताम्रंकंवा तथैवच । वेणु मृन्मय पात्राणी पूर्णानि विविधैः फलैः । एवंषोडश संख्यानि ब्राह्मणेभ्यः प्रदापयेत । यद्वाब्राह्मण योषिद्भ्यः पारणा तदनंतरम् । एतत्ते कथितं देवि व्रतानामुत्तमं व्रतम् तेन मात्वं प्रपश्यामि ममदेहार्धतांत था । **अथोद्यापन विधि स्तत्रैव**—युधिष्ठिर उवाच—उद्यापनविधिं ब्रूहि तृतीयायाः सुरेश्वर ॥ भक्तितः श्रोतुमिच्छामि व्रतसंपूर्ण हेतवे । श्री कृष्ण उवाच—उद्यापनमहंवक्ष्ये सावधानो नवाश्टणु । त्रिशद्दण्ड प्रमाणेन प्रमितं दक्षिणोत्तरे । प्रत्यक्प्रागपि राजेन्द्र तद्गोचर्मसमिष्यते ॥ गोचर्म मात्रं लेप्यतद् गोमयेनविचक्षणः । मंडलं कारयेत्तत्र नानावर्णं सुशोभनम् । ग्रहमंडल पार्श्वेतु पद्ममष्टदलं लिखेत । तन्मध्येस्थापयेत्कुम्भमव्रणं मृन्मयं शुभम् । ताम्रपात्रं प्रकुर्वीत पलैः शोडशभिस्तथा । तदर्धार्धेनवाकुर्या द्वित्त शाठ्यं विवर्जयेत । कर्षमात्र सुवर्णेन प्रतिमा कारयेद्बुधः । तदर्धमध्यमंप्रोक्तं तदर्धंतु कनिष्ठकम् । कृत्वाएवं प्रयत्नेन पार्वत्याश्च हरस्यच । अथताम्रमय पात्रे प्रतिमा तत्रविन्यसेत । श्वेतवस्त्र युगच्छन्ना श्वेत यज्ञोपवीतताम् । भाजनंच तिलैः पूर्णं कराशस्योपरिन्यसेत ॥ पार्वत्यास्तु सुगंधद्यात्तस्य पवित्रविधानतः । वेदोक्तेन प्रतिष्ठाप्य कर्तव्या चोपसंक्रिया । पंचामृतेन स्नानं कृत्वा देवस्य चोत्तमम् । स्नानंच कारयेत्पश्चात्तत पूजा समाचरेत ॥ गीत नृत्यादि संयुक्त कथा पुस्तक वाचनैः । उभौ जागरंतत्र कर्तव्यं भक्तिभावतः । ततः प्रभाते विमले कृत्वा स्नानादि कर्मच । पूर्ववच्चार्चयेद्देवं पश्चाद्धोमंच कारयेत । प्रारंभेच्च ततोहोमं नवग्रह पुरःसरं । जुहुयात् दुर्गमंत्रेण गौरीमंत्रेण वैद्विजाः । अष्टोत्तरशतं चापि अष्टाविंशति संख्यया । एवं समाप्य होमंतु तत्राचार्यं प्रपूजयेत् ॥ धेनुंसुलक्षणां दद्या रत्नालंकार भूषितम् । प्रयत्नेनच कर्तव्यं पक्वान्नं षोडशोन्मितम् । षोडश प्रमितैर्युक्तं ब्राह्मणाय निवेदयेत । वंशपात्रं प्रयत्नेन पक्वान्नैर्पूरिते शुभे । अन्येभ्योपि च विप्रेभ्यो दक्षिणां च प्रयत्नतः । अन्नं परया भक्त्या प्रदद्याद्नुसारतः । बंधुभिः सहभुंजीतनियतश्चापरेहनि । एवंकृते सर्वार्थं परिपूर्णं

व्रतीयतः। इति भविष्योत्तरे हरितालिका व्रतोद्यापन परिभाषा॥ अत्र व्रतद्वयेऽपि तृतीया मुहूर्त्तमात्रसीत्वेपि परेवमाह्या। चतुर्थीसहितायातु सातृतीया शुभप्रदा। अवैधव्यकरी स्त्रीणा पुत्रपौत्र फलप्रदा। द्वितीयाशेषसंयुक्ता याकरोति विमोहिता सावैधव्य मवाप्नोति प्रवदन्ति मनीषिण। इति माधवीयेप्येवं,, इति हरितालिका व्रत निर्णय.॥

॥ अथ हरतालिका पूजनम् ॥

अथच हरितालिकाव्रतानारी, प्रातः स्नात्वा प्रदोष समये शिवालये वा स्वगृहे, परिभाषोक्त प्रकारेण गौचर्म परिमितां भूमिं गोमयोदके नोपलिप्य, तत्राष्टदलं कमलं विलिख्य मस्य खर्जुर पुष्पपत्रादिभि हरितालिका मूर्तिंकृत्वा,, वा मृद्वालुकया-निर्मितं पार्वती सहितं शिवलिंगं निर्माय तत्र वक्ष्यमाणविधिना शिवगौरी पूजामाचरेत ,, पूजास्थलमागत्याचम्य, संकल्पः-अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्य, अमुकीदेव्यहं, करिष्यमाण हरि-तालिका व्रताचारण विधौभर्तुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्ये श्रीपरमेश्वर हरगौरीप्रीत्यर्थं, निर्मितप्रतिमोपरि हरगौरी पूजनं करिष्ये, पुष्पाक्षतहस्ता ध्यायेत्—मंदारमालाकुलितालकायै कपालमालां किनशेखराय। दिव्यांबरायैच दिगंबराय नमः शिवायैच नमः शिवाय। एतत्सहितेनैकैक वक्ष्यमाणमंत्रेण शिवयोः पूजनंकार्यम्। आवाहनम्—ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः०। देवदेव जगन्नाथ प्रार्थयेहं जगत्पते। तावत्त्वं प्रीतिभावेन लिंगेऽस्मिन्सन्निधोभव। आसनम्—ॐ पुरुषऽएवेद ७० सर्वं०। कार्त्तस्वरमयंदिव्यं नाना मणिगणान्वितं। अनेकशक्ति संयुक्तमासनं प्रतिगृह्यताम्। पाद्यम् ॐ एतावानस्य० गंगादिसर्वतीर्थेभ्यो मयाप्रार्थनयाहृतं। तोयमे-तत्सुखस्पर्शं पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्। अर्घ्यम्—ॐ त्रिपादूर्ध्वं० वरेभ्ययज्ञपुरुषप्रजा पालनतत्पर। नमोमाहात्म्यदेवाय गृहाणा-र्घ्यंनमोनमः। आचमनीयम्—ॐ ततो विराडजायत०। पाटलो शीरकर्पूरसुरभिस्वादुनिर्मलम्। तोयमाचमनीयार्थं शीतलं प्रतिगृह्यताम्। पंचामृतस्नानम्—ॐ आप्या यस्व० पयोदधिघृत-

क्षौद्र शर्करास्नानमुत्तमम् । तृप्त्यर्थं देवदेवेश गृह्यतां परमेश्वर, शुध्दोदकस्नानम्—ॐ यत्पुरुषेण० । मंदाकिन्याः समानीतं हेमांभोरुहवासितम् । स्नानायतेमयादत्तं नीरंस्वीक्रियतामिदम्, वस्त्रम्—ॐ तंयज्ञम्० । सर्वभूषाधिके सौम्येलोकलज्जानिवारके मयोपपादितेतुभ्यंवाससी प्रति गृह्यताम् । यज्ञोपवीतम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्० महादेव नमस्तेस्तु त्राहिमांभवसागरात् । ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाणपुरुषोत्तम । चन्दनम्—ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः,मलयाचलसंभूतंघनसारं मनोहरम् । हृदयानंदनं चारु चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । अक्षताः—रंजिताः कुंकुमाद्येन, अक्षतास्तु सुशोभनाः । गृहाणसर्वपापेभ्यस्त्राहिमांवृषभध्वज । पुष्पाणि—ॐ तस्मादश्वाः, माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनिवैप्रभो । मयाहृतानिपूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् । धूपम्—ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः०, वनस्पत्युद्भवो दिव्योगंधाढ्योगंधउत्तमः । आघ्रेयः सर्वदेवानांधूपोयं प्रतिगृह्यताम् । दीपं—ॐ ब्राह्मणोऽस्य० आज्यंचवर्त्तिसंयुक्तं वन्हिनायोजितंमया । दीपंगृहाणदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापह । नैवेद्यम्—ॐ चन्द्रमामन० । अन्नंचतुर्विधंस्वादु रसैः षड्भिभसमन्वितम् । भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् । नैवेद्यान्ताचमनीयम्—कर्पूरवासितंतोयं मंदाकिन्याः समाहृतम् । आचम्यतां मुमानाथमयादत्तंहि भक्तितः । फलम्—इदंफलं मयादेवस्थापितं पुरतस्तव । तेनमेसुफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि । ताम्बूलम्—पूगीफलंसकर्पूरं नागवल्लीदलैर्युतम् । लवंगादि समायुक्तं ताम्बूलं प्रति गृह्यताम् । दक्षिणा—हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजंविभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छमे । नमस्कारः—ॐ नाभ्या ऽ आसीद०, नमस्ते देवेदेवेश नमस्ते धरणीधर । नमस्ते विश्वरूपाय नमस्ते पुरुषोत्तम । प्रदक्षिणा—ॐ सप्तास्यासन्०—संसारार्णवमग्नं च त्राहिमां चन्द्रशेखर ॥ हरायच नमस्तुभ्यं त्रैलोक्यव्यापिनेनमः । प्रार्थना—ॐ नमः शिवायशान्ताय पंचवक्त्राय शूलिने

नंदिभृंगिमहाकाल गणयुक्ताय शंभवे । शिवायैशिवरूपायै मंगलायैमहेश्वरि । शिवेसर्वार्थदेदेवि शिवरूपेनमोस्तुते । नमस्ते सर्वरूपिण्यै जगद्धात्र्यैनमोनमः । संसारभीति संत्रस्तं आहिमां सिंहवाहिनि । मयापियेनकामेन पूजितासि महेश्वरि । राज्यं देहि च सौभाग्यं हरित्तालि नमोस्तुते । ततः कथा श्रवणं रात्रौ सोपवासं जागरणंच कुर्यात्–ततः किंचिदुद्गते प्रभाते उत्तरांगं पूजनंकृत्वा । सुवासिनीभिः, हरितालिकादेवीं शिवेनसहोत्थाप्य जलासयेगत्वा तत्रानेन मंत्रेणविसर्जयेत्—ॐ अर्चितासिमयाभक्त्या गच्छदेवि सुरालयम् । ममदौर्भाग्यनाशायपुनरागमनाय च । इति देवींविसृज्य यथासुखंभोजनंकुर्यात् । इति हरितालिका व्रत पूजापद्धतिः उद्यापनंतु परिभाषोक्त विधिनाकुर्यात् । तत्र स्पष्टत्वान्नात्रदर्शितम् ॥ इत्युद्यापनम् ॥

॥ इति हरतालिका पूजा ॥

अथ नवरात्र परिभाषा

अथ नवरात्र परिभाषा—उक्तं च देवी भागवते—जनमेजयउवाच—नवरात्रे तु सम्प्राप्ते किंकर्तव्यंद्विजोत्तम ! विधानंविविवद् ब्रूहिशरत्काले विशेषतः । व्यास उवाच—शृणुराजन् प्रवक्ष्यामिनवरात्र व्रतंशुभम् । शरत्काले विशेषेण कर्तव्यं विधिपूर्वकम् । वसन्ते च प्रकर्तव्यं तथैवप्रेमपूर्वकम् । श्रापदे चैवमाघेच प्रकुर्याच्चप्रयत्नतः । द्वावेवसु महाघोरावृतूरोगकरौनृणाम । वसन्त शरदावेव जननाश करावुभौ । तस्मात्तत्रप्रकर्तव्यं चण्डिका पूजनं बुधैः । अमामायां च सम्प्राप्य संभारं कल्पयेच्छुभम् । हविष्यं चाशनं कार्यमेक भुक्तं तु तद्दिने । मंडपस्तु प्रकर्तव्यः समेदेशे शुभेगृहे ॥ हस्तषोडशमानेन स्तंभध्वजसमन्वितः । गौरमृद् गोमयाभ्यां च लेपनं कारयेत्ततः । तन्मध्ये वेदिका शुभ्रा कर्तव्या च समास्थिरा । चतुर्हस्ता च हस्तोच्छ्रा पीठार्थंस्थानमुत्तमम् । तोरणानि विचित्राणि वितानंच प्रकल्पयेत् । रात्रौ द्विजानथामंत्र्य देवीतत्त्वविशारदान् । आचारनिरतान्दान्तान्वेदवेदांगपारगान् । नववंच त्रयस्त्वेको देव्याःपाठे द्विजाः स्मृताः । वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं निनिमित्त कर्हिचित् । द्विजानां वरणंकुर्याद् भक्तियुक्तेन चेतसा ॥ गणनाथं च सम्पूज्य निर्विघ्नार्थं प्रयत्नतः । स्वस्ति वाचनकं कार्यंवेदमंत्रविधानतः

नवसिंहासनं स्थाप्य चौमवस्त्र समन्वितम् ॥ तत्र स्थापयांतिकादेवीनतुर्हस्ता ऽ युधान्विता। शंखचक्रगदापद्म धरासिंहेस्थिता शिवा। अष्टादश भुजावापि प्रतिष्ठाप्या सनातनी। मार्कंडेये ऽ खिले—लिखेदष्टदलंपद्मं चंदनागुरु कुंकुमैः। पद्ममध्ये लिखेद्धर्मं षट्कोणं चण्डिकामयम् ॥ षट्कोण चक्रमध्यस्थ मायंबीजत्रयंन्यसेत। विलिख्य यंत्रमेवं तुगम्य गाराधनं चरेत्। अनेन विधिनाषट् कोणाष्टदल भूपुरात्मकं यंत्रं भवति। देवीभागवते—अचाभावे तथायंत्रंनवार्ण मंत्रेसंयुतम्। स्थापयेत्पीठ पूजार्थंकलशं तत्र पार्श्वतः। तदुक्तंरुद्रयामले—शुभाभिर्मृत्तिका भिश्च पूर्वंकृत्वा तुवेदिकाम्। यवान्वै वापयेत्तत्र गोधूमैश्चसमन्वितान् ॥ उक्तं चदेवीभाग वते—पंचपल्लव संयुक्तं वेदमन्त्रैः सुसंस्कृतम्। सुतीर्थजल सम्पूर्णं हेमरत्नै समन्वितम्। पार्श्वपूजार्थं संभारान् परिकल्प्य समंततः। गीतवादित्र निर्घोषान्कारयेन्मंगलायवै। तिथौ हस्तान्वितायां च नन्दायां पूजनंवरम्। प्रथमेदिवसे राजन्विधिवत्कामदंनृणाम्। नियमंप्रथमं कृत्वा पश्चात्पूजां समारभेत्। उपवासेन नक्तेन चैकभुक्तेन वापुनः। करिष्यामि व्रतंमाननंव रात्रे मनुत्तमम् ॥ सहाय्यंकुरुमेदेवि जगदम्बममाखिलम्। यथा शक्तिप्रकर्तव्योनियमो व्रत हेतवे। चन्दनागरुकर्पूरैः कुसुमैश्च सुगन्धिभिः। मालती मल्लिकापुष्पैस्तथा बिल्वदलैः शुभैः ॥ अन्नदानं प्रकर्तव्यं नाना व्यंजन संयुतम्। "यदन्नं योनरो भुंक्ते तदन्नं तस्यदेवताः।" पूजयं ज्जगतां धात्रीं धूपैर्दीपैं विधानतः। नारिकेलैर्मातुलिंगैर्दाडिमी कदलीफलैः। नारंगैः पनसैश्चैव तथापूगीफलैः शुभैः। उक्तंचमार्कण्डेये ऽ खिले—संपूज्य विधिवद्देवीं चण्डिकांकृततर्पणाम्। फलैरेपूजयेद्देवीं यन्त्रेवा पूजयेत्ततः। समन्तात्पूजयेद्दिक्षु दिशापालान्यथाक्रमम्। चन्दनेनवि- लिप्तांगःस्रग्वीन्याग परायणः। नवाहं भूपएकैकं मौनीबद्धासनोजपेत्। प्रणवादिरहस्यान्तं चण्डिका चरितत्रयम् ॥ शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मंत्रं नवार्णवम्। चण्डी सप्तश- ती मध्ये संपुटो ऽ यमुदाहृतः। नव दुर्गेति विख्याता पाप ताप प्रणाशिनी। कुमारी लक्षणं देवी भागवते—एक वर्षा न कर्तव्या कन्या पूजाविधौ नृप। परमज्ञा तु भोगानां गंधादीनां च बालिका। कुमारिका तुसा प्रोक्ता द्विवर्षा तु भवेदिह। त्रिमूर्तिश्च त्रिवर्षा च कल्याणी चतुरब्दिका। रोहिणी पंचवर्षा च षड्वर्षा कालिका स्मृता ॥ चण्डिका सप्त वर्षास्यां दष्ट वर्षा च शांभवी नव वर्षा भवेद्दुर्गा सुभद्रा दशवर्षिका। अत ऊर्ध्वं न कर्तव्या सर्वकार्य विगर्हिता। हीनांगी वर्जयेत्कन्यां कुष्ठयुक्तां व्रणाङ्किताम्। गंधस्फुरित हीनांगी विशाल कुल संभवाम्। जात्यन्धां केकराक्षीं च काणां कुरूपां तनुरोमशाम्। दासीं गर्भ समुद्भूतांगोऽभवां कन्यकोद्भवाम्। वर्जनीया सदा चैताः सर्वपूजादिकर्मसु। आह्वा—ब्राह्मणी गुरुतांग सुन्दरी व्रणवर्जिताम् ॥ एक वंश समुद्भूतां कन्यां सम्यक् प्रपूजयेत्। ब्राह्मणैर्ब्राह्मणी पूज्या

राजन्यर्क्षवंशजाः वैश्यैस्त्रिवर्गजा. पूज्याश्चतस्र.पादतां भवे.। **काम्यकुमारी पूजनम्**— ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृप वंशजाम्। लाभार्थे वैश्य वंशोत्थां सुतार्थे शूद्र वंशजाम्। दारुणे चान्त्य जातानां पूजयेद्विधिनानर.। **वेदपारायणमप्युक्तं रुद्रयामले**—एवं चतुर्वेद विज्ञो विप्रान्सवानिमन्त्रयेत। तेषां च वरणं कार्यंवेदपारायणायवै॥ तथा–एकोत्तराभिवृध्यातु नवमीयावदेवहि। चण्डीपाठं जपेच्चैव जापयेद्वा विधानतः। **उक्तंच वाराही तन्त्रे**— आधारे स्थापयित्वा तुपुस्तकं प्रजपेत्सुधी.। हस्तसंस्थापनादेव यस्माद्वै विफलं भवेत्। स्वयंन लिखितं यच्च शूद्रेण लिखितं भवेत्। अब्राह्मणेन लिखितं तच्चापि विफलं भवेत्॥ **देवीभागवते**—होमार्थं चैवकर्त्तव्यं कुण्ड चैव त्रिकोणकम्। स्थण्डिलंवा प्रकर्तव्यं त्रिकोणं मानत शुभम्। त्रिकालं पूजनं नित्यं नानाद्रव्यैर्मनोहरैः। गीतवादित्र नृत्यैश्च कर्तव्यश्च महोत्सव. नित्यं भूमौच शयनं कुमारीणां च पूजनम्। भविष्ये—एक भक्तेन नक्तेन नवरात्रो-पवासत। पूजनीया जनैर्देवी स्थाने स्थाने पुरे पुरे। गृहे गृहे शक्तिपरै ग्रामे ग्रामे वने वने। स्नातैः प्रमुदितैर्हृष्टै ब्राह्मणैः क्षत्रियै नृपै। वैश्यै शूद्रैर्भक्तियुक्तै म्लेच्छैरन्यैश्चमानवै। स्त्रीभि-र्मन्त्रस्तामसीत्या किरातानां तुमम्मता॥ **तामसपूजापरम्**—वस्त्रालंकरणैर्दिव्यै भोजनैश्च सुधामयै.। वित्तस्यानुसारेण कर्तव्यं पूजनं किल। वित्तशाठ्यं न कर्तव्यं राजन्भक्ति मन्वितःसदा। **इदं च देवी पूजनं शुक्रास्ताद्यपि कार्यं तदुक्तं धर्मप्रदीपे**—नष्टे शुक्रे तथा जीवे सिंहस्थेच बृहस्पती। कार्यचैव स्वदेव्यर्चा प्रत्यब्दं कुल धर्मत। मलमासेतु वचनाभावान्न भवति। **अत्राशौचे विशेषो निर्णयामृते विश्वरूप निबन्धने**—आश्विने शुक्लपक्षे तु प्रारब्धे नवरात्रि वै। शावाशौचे समुत्पन्ने क्रिया कार्या कथंबुधै। सूतकेवर्तमानेच समुत्पन्ने. मद्राबुधे। देवीपूजा प्रकर्तव्या शुभयन्त्र विधानत। सूतके पूजनं प्रोक्तं दानं चैव विशेषतः। देवीमुद्दिश्य कर्तव्यम् अत्र दोषो न विद्यते॥ **कालादर्शे विष्णुरहस्येऽपि**—पूर्वं संकल्पितं यद्व्रतं सुनियत व्रते। तत्कर्तव्यं नरे.शुद्धं दानार्चन विवर्जितम्। **उक्त च गौडनिबन्धे**— तिथि तत्त्व। आश्विनकृष्ण नवम्यादि शुक्लप्रतिपदादि षष्ठ्यादि सप्तम्यादि चैकैकर्मअतरचमत्र्य आशौचपातेऽपि सदाप। गरुड़ो व्रतमन्त्रयारिति। कृत्वा होमादिकंसर्वंनरदुर्गां विधानवत। वित्तशाठ्यं परित्यज्य कुर्याद्वाचार्यतोषणम्॥ रक्षाकुटीयभूयंचुयाजि होमप्रदानतः। अशक्तो निष्कमेकंतु देयमस्मै प्रयत्नत। विरभात विधानेन य एना नवनवकाम्। सम्पूज्यास्य फलं-भूयोहित्रिदिवेन वै। ऐन्द्र ब्रह्मादयो भागाम्तमायान्तिप्रदक्षिणम्। अपुत्रो लभतेपुत्रान्नन. सर्वनोबधे.। व्याघ्र सर्पंगानि शत्रवश्च सुदारुणा। न तस्याहित भयं निद्राजचौराश्च नारिचभिति। आश्विनस्य शुक्ल प्रतिपदि नवरात्रारम्भनिर्णय – अमायुक्ता न कर्तव्या प्रति-

पपूजनंमम । मुहूर्तमात्रा कर्तव्या द्वितीया दिगुणान्विता । आद्याःषोडश नाडिस्तु लब्ध्वाय शुभेनर । कलश स्थापनं तत्र ह्यरिष्टं जायतेध्रुवम् । उक्तं च स्कान्दे— वर्जनीया प्रयत्नेन अमायुक्ता तु पार्थिव द्वितीयादिगुणैर्युक्ता प्रतिपत्सर्वकामदा । तथा देवीपुराणे —यदि कुर्यादमायुक्ता प्रतिपत्स्थापनंमम । तस्यशापायुन द्वावाभस्मशेषं करोम्यहम् । यात्मद्वात्कुरुते यस्तु कलशस्थापनंमम । तस्यसंपत् विनाशः स्याज्यष्ट पुनोविनश्यति । धनाथिभिर्विशेषेण वशहानिश्च जायते । तदर्शकलयायुक्ताप्रतिपच्चण्डिकार्चने । इ यादि शतस प्रमाणवाक्यै नवरात्रारम्भे प्रतिपद्द्वितिया युक्ताग्राह्या । उक्त च भार्गव वचन दीपिकायां देवीपुराणे— वाह वैधृति युक्ताचेत्प्रति पच्चंडिकार्चने तयारन्ते विधातव्यं कलशारोपणं गृहे । चित्रावैधृति युक्तापि द्वितीया युक्ताचे मेराग्राह्ये शुभम् ॥

॥ इति नवरात्र [illegible] ॥

अथ नवरात्र पूजा पद्धतिः ।

चैत्रेवाश्विनेमासि आमावास्यायां सामग्रींसम्पाद्य शुभेसमे देशेगृहाभ्यन्तरेवा विशेषानुष्ठाने पूर्वोक्तषोडश हस्तपरिमितं मनोहरंमंडपं विधायषोडशस्तंभ विभूषितं च कृत्वा श्वेतमृद् गोमयाभ्यामुपलिप्यमध्ये चतुर्हस्तायतनां हस्तोच्छ्रितामायतविस्तृतां वेदिकां विरच्य । श्री देवीतत्वविदान् वैदिकांश्चद्विजान् नवसप्तपंच त्रीनेकंवा अमावास्यायां निमन्त्रयेत् । ततो गृहमागत्यैकवारं हविष्यान्नं भुक्त्वाभूमौ शुद्धासने शयीत । यदिमनिवार्षिकोत्सवपूजनं चेदेकंविप्रं निमन्त्र्य स्वगृहे पूजास्थानं चोपलिप्य सम्मार्ज्यच वक्ष्यमाण विधानेन प्रतिपदि नवदुर्गार्चनारंभं कुर्यात् एवममावैधृति दोषरहितायां प्रतिपदि साधकोयजमानोवा नित्यकर्म कृत्वा पूजास्थानमागत्य स्वासने उपविश्याचम्यभूतोत्सादनं कृत्वा दीपंप्रज्वाल्य संपूज्य च कुशपुंजेन पंचगव्येन पूजास्थानं सम्मार्ज्याचार्यं वृणुयात् आचार्यं पाद्यगंधादिना सम्पूज्य वरणसामग्रीं सम्पाद्य अद्येत्यादि संकीर्त्य मुको ऽहं करिष्य माण श्री दुर्गोत्सव नवरात्र कर्मणि

अमुकशर्माणंब्राह्मणं कर्मकर्तुं तथा मुकामुकविप्रान् वेदपारायणादि देवीभागवतसप्तसतीपाठकानेभिर्वरणद्रव्यै स्त्वांयुवांवः वृणे–ततआचार्यो गणेशादिनवग्रहान्त पूजनंकारयित्वा कलश पूजाविधिना वरुणकलशं सम्पूज्य बृहत्पूजायांपूर्वोक्त चतुर्हस्तविस्तृतायांवेदिकायां यन्त्रं निर्मायतन्मध्ये सिंहासनंसंस्थाप्य हस्तमात्रांवेदिकां शुष्कमृदानिर्माय शुष्कगोमयंच योज्यचतुस्त्रां कुर्यात् । तत्र स्वस्तिवाचनमन्त्रै र्यवान्वारत्रयंवापयेत् । तत्र मध्येवरुणोक्तविधिना पूजितंकलशं स्थापयेत् । तत्रदुर्गार्चनं कुर्यात् । वेदिकायामपिपीठे यन्त्रेवा वक्ष्यमाण विधिना देवीं पूजयेत् । इदानींपौराणिकीं पूजांवक्ष्ये संकल्पं कुर्यात्—अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यममेह जन्मनि श्री भुवनेश्वरी प्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्तिपूर्वक दीर्घायुविपुल धनपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्न संतति वृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रुपराजय सदभीष्टसिध्यर्थं वसन्त शरदनवरात्रप्रतिपदि विहितकलश स्थापन पूर्वकं श्री भुवनेश्वरी महाकाली त्यादीष्ट देवता पूजनमहं करिष्ये । तत्र भूमौ त्रिकोण चतुरस्रमण्डलं कृत्वा पूजयेत् । ॐ अखण्डं मण्डलाकारंविश्वंव्याप्य व्यवस्थितम् । त्रैलोक्यं मण्डितं येनमण्डलं तत्सदाशिवम् । नवार्णव मन्त्रेण गन्धादिभिः सम्पूज्य तत्राधारां त्रिपादिकां संस्थाप्य ॐ मँ दशकलाव्याप्त वन्हिमंडलाय नमः । संपूज्य तदुपरि पात्रंसंस्थाप्य ॐ अँ द्वादशकलात्मने सूर्य मण्डलायनमः । सम्पूज्य जलेनापूर्य ॐ क्रों गंगेच यमुनेचैव गोदावरि सरस्वति । नर्मदे सिन्धुकावेरी जले ऽस्मिन्सन्निधिंकुरु । इत्यंकुकुश मुद्रया तीर्थमावाह्य ॐ उँ षोडश कलात्मने सोममंडलाय नमः । सम्पूज्य मूलेनाष्टवारमभिमंन्त्र्य धेनुमुद्रया वँ इत्यमृती कृत्यगरुडमुद्रया निर्विषीकृत्यास्त्रेण संरक्ष्य ॐ हुँ इत्यवगुंठ्यप्रणमेच । तेनार्घ्यजलेन पूजाद्रव्यमभिषिंच्य देवींपुष्पं धृत्वाध्यायेत् मूलमन्त्रमुक्त्वा ॐ आगच्छवरदेदेवि दैत्यदर्पनिषूदिनि । पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये ॥ अस्मिन्घटे समागच्छ तिष्ठ-

देवगणैः सह । भुवनेशिसमागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय । वलिं पूजांगृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह । पाद्यम्भुवनेशिसुरेशानि ज्ञानमार्गप्रदे शिवे । पाद्यंगृहाणदेवेशि भद्रकालिनमोस्तुते। आसनम्—कात्यायनि स्मेरमुखि चामुण्डेशंकरप्रिये । आसनंदिव्य वस्त्रंच गृहाणत्वं सुरेश्वरि । अर्घ्यम्—जगद्वंदिनिलोकेशि सर्वासुरविभंजनि । अष्टांगार्घ्यंगृहाणत्वं तापत्रयनिवारिणि । आचमनम्—गांगेयंनिर्मलं वारिदिव्यपात्रस्थमुत्तमम् । गृहाणाचमनंदेवि शान्तिकुरु सुरेश्वरि । पंचामृतम् । दधिदुग्धघृत क्षौद्रशर्करामिश्रितंपरम् । पंचामृतं प्रियंतुभ्यंददामि भुवनेश्वरि । स्नानीयम् । गन्धचन्दनसंमिश्रं तीर्थोदक समन्वितम् । जलं गृहाण स्नानार्थं जगज्जननि सौहृदे। पुनराचमनम्। स्नानान्तेनिर्मलं दिव्यं लवंगेन समन्वितम् । गृहाणाचमनं देवि सर्व सिद्धिप्रदायिनि वस्त्रम्— वस्त्रंस्वच्छं महार्हंच पट्टसूत्रेण निर्मितम् गृहाण भुवनेशित्वं दुकूलं च सुरेश्वरि । अलंकारान्। देवासुर शिरोरत्न निघृष्ट चरणाम्बुजे । अलंकारान्गृहाणत्वं नानाविधि विभूषितान् । चन्दनम् । कस्तूरी कुंकुमयुक्तं केशरेणसमन्वितम् । भालशोभाकरं दिव्यं चन्दनं प्रतिगृह्यताम् । सिंदूरम् । नागभस्मं परंदिव्यं मंजिष्ठारंजितंशुभम् । चन्द्रार्धोपरि बिन्द्वर्थं सिन्दूरं गृह्णदेवित्वम् । अक्षतान्—अक्षतानि सुधौतानि सिन्दूरोपरि मंगले । गृहाणपरया प्रीत्याभद्रदायिनितेनमः पुष्पम्—नानापुष्प विचित्राढ्यांदिव्यमालां मनोहराम् । अर्पयामिचपुष्पाणि त्वंगृहाण सुरेश्वरि । धूपम् गुग्गुलं घृतसंयुक्तं गन्धद्रव्यसमन्वितम् । धूपं दिव्यं समाघ्रेयं गृहाण भुवनेश्वरि । दीपम् गवाज्याभ्यक्तसद्वर्तीं वन्हिनादीपितं शुभम् । आरार्त्तिक्यंगृहाणत्वं देहिदेवि परंसुखम । कज्जलम्— नेत्रांजनं परंदिव्यंधूपकर्पूर संयुतम् । पक्ष्मपंक्ति सुशोभार्थं गृहाण दिव्य चक्षुके । नैवेद्यम। दिव्यन्नं रससंयुक्तंनानाविधिसुसंस्कृतम् । नैवेद्यंगृह्णमानस्त्वं चोष्यपेयसमन्वितम् । आचमनम । करानन विशुद्ध्यर्थं नैवेद्यान्ते जलं शुभम् । अर्पयामिशिवे तुभ्यं देहिमेविपुलं

सुखम् । फलानि—नानाफलानिदिव्यानि ऋतुदेशभवानि च । पूगीफलैश्चसहितान्यंचत्वामर्पयाम्यहम् । ताम्बूलम्—गृहाण देवि ताम्बूलं लवंगेनसमन्वितम् । पूगीफल समायुक्तं खादिरेण समन्वितम् । ततो वामहस्ते सफलजलयुतमर्घ्यं कृत्वोत्तानं दक्षिहस्तं उपरितोनिधाय—मनोहरफलेनैवपूरितं शुद्ध वारिणा सफलार्घ्यं गृहाणत्वं फलदातुसदाभव । फलंदेव्यग्रेनिधाय वारिणा देवीं स्नापयेत् उपायनम् उपायनीभूतमिदंद्रव्यंदेविसुरेश्वरिगृहाणपरयाप्रीत्या दयांकुरु सुरेश्वरी । मन्त्रपुष्पांजलिम्—भुवनेशिनमस्तुभ्यं चातुवर्गार्थदायिनि । मन्त्रपुष्पांजलिंदेवि गृहाणत्वंसुरार्चिते । नमस्कारः—विश्वेश्वरीं विश्वरूपां विश्वपालनकारिणीम् । प्रणमामिसदाभक्त्या विश्वांत्वांभुवनेश्वरीम् । ईशानमानरंदेवीमीश्वरीमीश्वरप्रियाम् । प्रणतोऽस्मिसदादुर्गा संसारार्णवतारणीम् बालार्कमण्डलाभासां श्चतुर्बाहुत्रिलोचनाम् ॥ सर्वलोकप्रणेत्रींच प्रणमामिसदाशिवाम् । योगिनींयोगगम्यांन्चचण्डिकांसर्वमंगलाम् ॥ प्रणमामीश्वरीं भक्त्याकालिकांमुण्डमालिनीम् ।

॥ इति ॥

॥ अथ छागबलि विधिः ॥

पूर्वोक्त पूजनान्ते नवम्यां वा यथेष्ट दिने सुलक्षणछागं देव्यग्रेआनीय ततः पशुप्रोक्षणमारभेत । ॐ अग्निः पशुरासीत्तेनाजंनसऽग्नेंल्लोक मजयद्यस्मि न्नग्निः सते लोको भविष्यति । तन्जेष्यसिपिबेनाऽअपः । इति छागं सम्प्रोक्ष्य प्रार्थयेत्-ॐ शृंगे-पृष्ठे ललाटे च पादयोर्जंघयोस्तथा । उदरे सर्व गात्राणि मुञ्चन्तु पशुदेवताः । पशोः शृंगंगृहीत्वा कुशैः सम्मार्जयेत् । ॐ कालि २ ॐ ह्रीं हन २ ॐ हूं ॐ ह्रैं ॐ ह्रौं ॐ ह्रः मदीयशत्रुं स्तम्भय २ इति सम्मार्ज्य ततः पशोश्शृङ्गं गृहीत्वापठेत्-ॐ पशोः शृङ्ग गृहीतोसि पशुत्वं क्षिप्रहीयताम् । उपयोगस्त्वया कार्यो

देवी पूजाविधौसदा। त्रिःपठेत्। ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरच्छेदाय धीमही। तन्नो पशु प्रचोदयात्। अनेनैव मंत्रेण पशुं पाद्य गंधादिना ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्वदेवता स्वरूपिणे वलिरूपाय छागमेष, पशवे नमः सम्पूज्य रक्तचन्दन सिंदूराक्षत रक्तमाल्यादिभिः सम्पलं कृत्य तंफट् इति सुसंरक्ष्य हूं इत्यवगुंठ्य धेनुमुद्रया मृतीकृत्य वलेरंगपूजनं कुर्यात्। ब्रह्मरन्ध्रे ॐ ब्रह्मणे नमः। नासायां ॐ मेदिन्यै नमः। कर्णयोरों आकाशाया नमः। जिह्वायाम् ॐ सर्वतोमुखाय्या नमः। नेत्रयोः ॐ ज्योतिर्भ्यां नमः। वदने ॐ विष्णवे नमः। ललाटे ॐ चन्द्राय नमः। दक्षगण्डे ॐ शक्रायनमः। वामगण्डे ॐ वन्हये नमः। ग्रीवायां ॐ समवर्तिने नमः। रोमकूपेषु ॐ धृत्यै नमः। भ्रूमध्ये ॐ प्रचेतसे नमः। नासामूले ॐ स्वसनाय नमः। स्कन्धे ॐ महेश्वराय नमः हृदये ॐ सर्वराजेन्द्राय नमः। इत्यक्षतादिभिः सम्पूज्य तद्दक्षकर्णे पशुगायत्रीं मंत्रां स्त्रपठेत्—ॐ पशुपाशाय विद्महे शिरच्छेदाय धीमहि तन्नः पशुः प्रचोदयात् ॐ ह्रीं हूँ फट् शिवस्वरूपं गच्छ स्वाह ॐ जुंसः हसक्षमलवरयूं शिवरूपंगच्छ स्वाहा, इति वारत्रयं प्रजप्य पुष्पं गृहीत्वा ॐ महातपोभि र्दानैश्च यज्ञैर्यत्साध्यते नरैः। तन्मे देहि महाभाग सत्वरं चाप्नुहीश्रियं। वलि शिरसि क्षिपेत्। ततो वलि पशुं संबोधयेत् ॐ यज्ञार्थपशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा। अतस्त्वां घातयिष्यामि तस्माद् यज्ञे वधोऽवधः। शिवायत्तमिदं पिण्डमनस्त्वं शिवतांगतः। उद्बुध्य स्व पशो त्वंहि नाशिवस्त्वं शिवोऽसिहि। पशोत्वं जीव रूपेण मम भाग्यादुपस्थितः। चण्डिकांप्रतिदानेन दातुरापद्विनाशक, पुरतः खड्गं संस्थाप्य पूजयेत् खड्गमध्ये ह्रीं वीजंलेख्य ॐ ह्रीं कालि कालिवज्रेश्वरि लोहदण्डायैनमः, इति खड्गमभिमंत्र्यध्यायेत्— कृष्णं पिनाकपाणिंच कालरात्रि स्वरूपिणम्। उग्रं रक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनम् रक्तांवरधरं चैवपाशहस्तं कुटुम्बिनम्। पिवमानंच रुधिरं भुञ्जानं क्रव्य सञ्चयं॥ रसनात्वंचण्डिकायाः

सुरलोकप्रसाधकः । ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लोहपूर्णायै नमः। इतिखड्गमभिमन्त्र्य ॐ गं ह्रीं श्रीं फट् लौहदण्डाय तीक्ष्णधाराय खड्गायनमः । इति गंधादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ तीक्ष्ण धाराय खड्गाय तस्मै शुद्धायते नमः । पुरादेवासुरे युद्धे निर्मितोऽसि जयप्रदः। तेजो रूपाय्यनङ्गाय जयं देहिनमस्तुते। हस्ते खड्गं गृहीत्वा ऑं ऑं ह्रीं फट् इति मंत्रेण खड्गं छागस्कन्धे स्पर्शोत्। मन्त्रमुच्चरेत्—ह्रौं कालि २ विकट दंष्ट्रे स्फं २ खादय २ छेदय २ सर्वदुष्टान्मारय २ छागं छिन्धि २ किलि २ चिकि २ रुधिरं किरि २ संकल्पं कुर्यात्— अथेहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुक-गोत्रेऽमुकोऽहंदीर्घायुर्विपुल धनराज्य संपत्तिकामः सकलदुष्टा-रिष्ट खण्डनार्थं श्री अमुकदेवता प्रीत्यर्थममुकपशुं घातयिष्ये। इति तज्जलंपशु शिरसि क्षिपेत्— यावन्नचालयेद् गात्रं तावच्छेदंन कारयेत्। गात्रसञ्चालनान्ते पशुं मण्डपाद्बहिरानीय पूर्वाभिमुखं कृत्वा तन्मुखे सैन्धवं दत्वा खड्ग प्रहारक उत्तराभिमुखो भूत्वा ॐ ऑं हूँ ह्रीं फट् छिन्धिछिन्धि स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेणैकैव खड्ग प्रहारेण छिन्द्यात्। द्रोणे तद्रुधिरं पूगसैन्धवं गन्धाक्षत-युतं देव्या वामे स्थापयेत्। सरक्त पशु मुण्डंच देव्यग्रे स्थापयेत्। एतद्रुधिर बलिं गं ह्रीं क्लीं निवेदयामि । ॐ कवोष्णं फेनिलं रक्तं छागकण्ठाद्विनिर्गतम् । माध्वीकं पिबदेवि त्वं परमानन्द हेतवे। ततो ज्वलद्वर्तिकां बलिमुंडेनिधाय हस्ते जलगृहीत्वा—गृहदेवि माहामाये मस्तकं सप्रदीपकम्। कुरुष्व मम कल्याणं नमस्ते शङ्करप्रिये। यावद्दहन्ति लोमानि पशोस्ते शिरः खण्डिते। तावद्वर्ष सहस्राणि देवीलोके च गच्छतु । इति वर्तिकोपरि हस्तस्थ जलं क्षिपेत्। ततो बिल्वपत्रेण रक्तामालोडयेत्। ॐ प्रस्फुर २ चुल २ पुल २ तल २ कुरु २ मारय २ युकु २ अँगारय २ विद्रावय २ कंपय २ कर्मय २ पूरय २ आवेशय २ ॐ ह्रीं ह्रौं ह्रौ ॐ लँ हः फट् मद मद ह्रीं हुः इत्यभिमन्त्र्य नैर्ऋत्यां महापूजनार्थे

नमः ॥ ॐ वां छ्रौं छ्रीं राक्षस्यै नमः । ॐ ऐशान्यां ऐं कालिकायै नमः । आग्नेयां ॐ विं विदार्यै नमः । नैर्ऋत्यां नृं नैर्ऋत्यै नमः । ॐ ॐ ह्रीं श्रीं कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम् । ॐ अमृतोपस्मरण-मसि स्वाहा, इत्युत्तरापोशनं दत्वा ततो नीराजनपुष्पाञ्जलिं दत्वा योनिमुद्रयाप्रणमेत् ॥

॥ इति छागबलिदानप्रयोग ॥

॥ अथ कुमारी पूजा पद्धतिः ॥

उक्तंचदेवीपुराणे—पितरोवसवोरुद्रा आदित्यागणलोकपाः सर्वेतेपूजितास्तेन कुमार्योयेनपूजिताः । पूर्वोक्तलक्षणानुसारेण नव कन्यानांनिमन्त्रणं कृत्वास्वगृहेआह्वयेत् । देवीपुराणे—प्रक्षाल्य पादौसर्वासां कुमारीणांचवासव । सुलिप्तेभूतलेरम्ये तत्रना आसनेस्थिताः । पूजयेद्गन्धपुष्पैश्च स्रग्भिश्चापिमनोहरैः । पूज-यित्वाविधानेन भोजनंतासुदापयेत् । अथ कुमारीपूजनम् । ध्यायेत्—मन्त्राक्षरमयींलक्ष्मीं मातृणांरूपधारिणीम् । नवदुर्गा त्मिकांसाक्षा त्कन्यामावाहयाम्यहम् । जगत्पूज्ये जगद्वन्द्येसर्व शक्तिस्वरूपिणि । पूजांगृहाणकौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते ॥ अनेन मन्त्रेणावाह्य, ॐ कौं कौमार्यैनमः । इति मन्त्रेणपाद्यादिनीरा-जनान्तां पूजयेत् । त्रिमूर्तिंध्यायेत्—त्रिपुरांत्रिगुणाधारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीम् । त्रैलोक्यवन्दितांदेवीं त्रिमूर्तिंपूजयाम्यहम् । ॐ त्रिं त्रिमूर्त्यैनमः सम्पूज्य । कल्याणींपूजयेत्—कालात्मिकां कलातीताम् कारुण्यहृदयांशिवाम् । कल्याणजननींनित्यां कल्याणींपूजयाम्यहम् । ॐ कं कल्याण्यैनमः सम्पूज्य रोहिणीं पूजयेत्—अणिमादिगुणाधारा मकाराद्यक्षरात्मिकाम् । अनन्त शक्तिकांलक्ष्मींरोहिणींपूजयाम्यहम् । ॐ रों रोहिण्यैनमः सं० । कालिकांपूजयेत्—कामचारींशुभांकान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम् । कामदांकरुणोदारां कालींसम्पूजयाम्यहम् । ॐ कालिकायैनमः ।

सं० । चण्डिकांपूजयेत्—चण्डवीरां चण्डमायां चण्डमुण्डप्रभञ्जनीम् । पूजयामिसदाभक्त्या चण्डिकांचण्डविक्रमाम् । ॐ चं चण्डिकायै नमः सम्पूज्य । शांभवींपूजयेत्–सदानन्दकरींशान्तां सर्वदेवनमस्कृताम् । सर्वभूतात्मिकांलक्ष्मीं शांभवींपूजयाम्यहम् । ॐ शां शाम्भव्यैनमः । सम्पूज्यदुर्गांपूजयेत्—दुर्गमेदुस्तरेकार्ये भवदुःखविनाशिनीम् । पूजयामिसदाभक्त्या दुर्गांदुर्गार्तिनाशिनीम् । ॐ दुं दुर्गायैनमः सं० । सुभद्रांपूजयेत्–सुन्दरींस्वर्णभां देवींसुखसौभाग्यदायिनीम् । सुभद्रजननींदेवीं सुभद्रांपूजयाम्यहम् । ॐ सुं सुभद्रायैनमः सम्पूज्य । एवमभ्यर्चनंकुर्यात्कुमारीणांप्रयत्नतः । कंचुकैश्चैव वस्त्रैश्च गन्धपुष्पाक्षतादिभिः । नानाविधैर्भक्ष्यभोज्यैर्भोजयेत्पायसादिभिः । अर्धभोजनदानेनदातुः कार्यार्थनाशनम् । परिपूर्णभोज्येन सर्वान्कामानवाप्नुयात् । उक्तंचनारदीये—प्रत्यहं भोजयेद्विप्रान्कुमारीर्योगिनीरपि । कामनाविशेषे स्कान्दे—एकैकां पूजयेत्कन्यामेकवृद्ध्यातथैवच । द्विगुणंवापि प्रत्येकंनवकंनवकंतुवा । नवभिर्लभते भूमिमैश्वर्यं द्विगुणेनतु । एकवृद्ध्यालभेत्क्षेममेकैकेनश्रियंलभेत् ॥

इति कुमारी पूजनम् ॥

अथ च दशम्यां देवीविसर्जन विधिः ।

तच्च दशम्यां कार्यम् । **उक्तं च कालिकापुराणे**—निहते रावणे वीरे नवम्यां सकलैः सुरैः । विशेषपूजा दुर्गायाश्चक्रे लोकपितामहः । ततः सम्प्रेषिता देवी दशम्यां शारदोत्सवैः । **रुद्रयामले**— दशम्यामभिषेकं च कृत्वामूर्तिं विसर्जयेत् । **दुर्गाभक्तितरंगिण्यां देवीपुराणे**—ततः प्रातः पूजयित्वा दशम्यां विधिपूर्वकम् । सम्प्रेषणं तु कर्तव्यं गीतवादित्र निःस्वनैः । इयमेव च विजयादशमी- मात्र द्वितीयदिने श्रवणयोगाभाव पूर्वाग्राह्या ॥ नवम्यां शेष संयुक्ता दशम्यामपराजिता । ददाति विजयं देवी पूजिता जयवर्धिनी । **हेमाद्रौ व्रतकाण्डे कश्यप** —उदये दशमी किंचित्सम्पूर्णैकादशी यदि । श्रवणर्क्षं यदा काले सा तिथिर्विजयाभिधा **अत्र विशेषो धवलनिबन्धे** —अपराह्ने दिवाभागे श्रवणस्य यदा भवेत् । सम्पूर्णा तदा देव्याः

पाठ पद्धतिः—अथ च पूर्वोक्त पितृविसर्जनामायां देवी पूजा संभारं कृत्वा ततः प्रभाते आश्विन शुक्लप्रतिपदि कृतनित्यक्रियः तोरणावलि मण्डितेशुभेस्थाने गृहेवा तत्र स्वासनेप्राङ्मुखः समुपविश्य दीपं प्रज्वाल्य पूर्वोक्त पूजा पद्धत्यनुसारेणाचमनं भूतोत्सादनमर्घ्य स्थापनादिकं च कृत्वा तेनैव विधानेन वेदीमध्ये घट स्थापनादिकं देव्याःपूजनं च कुर्यात्। देवींयथावत संपूज्य संकल्पं कुर्यात्। अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहममुक कामनयाद्यारभ्यनवमीपर्यन्तं श्री अमुकदेवता प्रीत्यर्थमेकोत्तरवृद्धि चाण्डीपाठ साङ्गोपाङ्ग कर्मसिद्धिर्यथा चैकोत्तर वृध्या कुमारीपूजनं ब्राह्मण भोजनंच करिष्ये। स्वयंकर्तुमशक्त श्चेदाचार्य ब्राह्मण द्वाराचरणद्रव्येण ब्राह्मणं वृणुयात्कारयेच्च। ततो दिग्देवीभ्यो बलिं दद्यात्। तत्रादौ पूर्वस्यां ॐ कादम्बरि गजवाहने इहागच्छ २ इत्यावाह्य ॐ कादम्बर्यैनमः पाद्यादि नीराजनांतं सम्पूज्य तदग्रेपत्रावल्यां घृतशर्करासहितं पायसंवा दधिभक्तमाष बलिं च निधाय ॐ कादम्बर्यैनमः एषते बलिं निवेदयामि बलि सम्पूज्य च ज्वलद्वर्तिकांवल्युपरि निधाय हस्तेजलं गृहीत्वा भोः कादम्बरि। एनं सदीपंपायसबलिं दध्यन्नं बलिं वागृहाण ममवा मम यजमानस्य सपरिवारस्यायुष्कर्त्री क्षेमकर्त्री शान्ति कर्त्री तुष्टिदात्री पुष्टिदात्रीभव इति बल्युपरिजलंक्षिपेत् एवंसर्वत्र विधिं कृत्वाबलीन्दद्यात्। एवमाग्नेय्यामुल्कामजवाहनांपूर्ववत्सम्पूज्यबलिं दद्यात् एवंदक्षिणेमहिषारूढां करालीम्। नैर्ऋत्ये प्रेतवाहनांरक्ताक्षीं पश्चिमे मकरवाहनां श्वेनाम्। वायव्ये मृगवाहनां हरिताम्। उत्तरे सिंहवाहनां यक्षिणीम्। ईशाने—वृषवाहनां कंकालीम्। इन्द्रेशानयोर्मध्ये सुरज्येष्ठां हंसवाहनाम्। निर्ऋतिवरुणयोर्मध्ये—अहिवाहनां सर्पराज्ञीम्। स्व २ स्थानेषुपृथक् २ सम्पूज्य बलिंदत्वा प्राक्स्थापित कुम्भोपरि महालक्ष्मीं समावाह्य नानाविधै रुपचारै रभ्यर्च्य तदग्रे प्राग्वत्सरहस्य त्रयं आद्यन्तं नवार्णव मंत्राष्टोत्तरशतसहित मेकासनेन देवीमहात्म्यं चरित्रत्रयं पठित्वा

कुमारीमेकामेकं विप्रंचसम्पूज्य भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणा नमस्कारादिभिः संतोषयेत् । एवंप्रतिपदा यामेकावृत्तिं पाठं कृत्वैकां कुमारीमेकं ब्राह्मणं च भोजयेत् । एवंद्वितीयायामेकोत्तर वृध्या द्विरावृत्ति पाठंकृत्वा द्वे कुमारी द्वौ ब्राह्मणौ च भोजयेत् । एवं तृतीयायां त्रिगुणमिति क्रमेण नवम्यां नवगुणं यथा भवतितथापूजा चंडीपाठकुमारी ब्राह्मणभोजनादिकं च यथाविभवविस्तारं नवम्यन्तं प्रतिपदपेक्षया नवगुणं कुर्यात् । अत्राप्येकाहार व्रतिको नियमः कर्तव्यः । ततो नवमेदिने पूर्वोक्त होमपद्धत्य नुसारेण कृतचण्डिका पाठदशांशेन प्रागुक्तद्रव्यैर्होमं कृत्वा-सर्वविधिवत्कुर्यात् ॥ ततो दशम्यां पूर्णाहुतिंदत्वा देवीविसर्जन पद्धत्युक्तप्रकारेणाशिषं गृहीत्वा देवीं संप्रार्थ्यविसर्जयेत् । यथाचार्यद्वाराकारयति तदाचाचार्याय वित्त शाठ्यरहितां विपुलां दक्षिणांगां चदत्वाप्रणम्य संतोषयेत् । एवं विधिनाकृते सर्वमनोरथाः प्रपद्यन्ते ॥

॥ इति नवरात्र महोत्सवैकोत्तरवृद्धि चंडी पाठ पद्धतिः ॥

॥ अथ शतचण्डी परिभाषा ॥

उक्तं च रुद्रयामले— शतचण्डी विधानं च प्रोच्यमानं शृणुष्वतत् । सर्वोपद्रव नाशार्थं शतचण्डी समारभेत । सुघोरायामनावृष्ट्या भूकम्पे च सुदारुणे । पर चक्रभये तीव्रे क्षयरोग उपस्थिते । राजवादादि भयेषु आपत्सु सुतजन्मनि । महोपघातनाशायपं च विशति योजने । देशे सर्वत्र शान्त्यार्थं शतचण्डी मिमां जपेत । शिवाभ्यासेसमे देशे चतुर्द्वार सुतोरणम् । पताकालंकृतं कुर्यान्मण्डप वेदिभूषितम । तत्र कुण्डंप्रकर्तव्यमुक्तलक्षणसंयुतम् । सदाचार कुलीनाये हीमन्त. सत्यवादिन । चण्डिकापाठ निपुणा दयावन्तो जितेन्द्रिया. । दशविप्रान्समभ्यर्च्य महालक्ष्मी स्वरूपिण । मधुपर्क विधानेन ब्राह्मणाश्चैव पूजयेत । सप्तविंशतिदर्भाणां विष्टरां ग्रन्थिभूषित । विष्टरे सर्वयज्ञेषु लक्षणपरिकीर्तितम् । सुखोष्णोदकसंयुक्ता पाद्यार्थ ताम्रभाण्डिका. । शंखश्चा र्घप्रदानाय गंधपुष्पफलान्वित । साचमनीयानि वैद्यार्न्यचपात्राणिय ब्रत । मधुपर्काय कांस्यादि दधिमध्वाज्यपूरितम । महार्हाणिच वस्त्राणि मुद्रिकाभूषणानि च ।

दशम्यां तुपुनर्दिवा । दिनद्वये दशमीसत्वे पूर्वदशम्यां श्रवणान्तर्भागयोगे तत्रैवविसर्जनं कार्यम्। तत्र तद्योगा भावेतु परदशम्यामेव तत्—परदिने दशम्यभावे तुपूर्वदशम्यां नक्षत्रयं गेसति-असति वा कार्यम् ॥ राजमार्तण्डे—निर्माल्यं तु श्रवणदशमी यागरान्ते तु जप्त्वा । इत्यनेन देवीविसर्जनं दशम्यामेवोपलक्ष्यते । सा च विजयादशमी श्रवणर्क्षयुता एकादशीसहिता परेहि तदैव देवी विसर्जनम् । श्रवणयोगा भावेतु प्रदोषकाल व्यापिनी नवमीयुता विजयादशमी प्रशस्ता तत्रैवदेवी विसर्जन मुक्तामिति दिक् ।

॥ अथ दशम्यां देवी विसर्जन पद्धतिः ॥

ततो दशम्यांप्रातःस्नात्वा देवीपूजामण्डपमागत्यनित्यकर्म विधाय देवींपूर्ववत्सम्पूज्य—ततो होमकुण्डमागत्य होमाग्निं प्रज्वाल्यपूर्वोक्तप्रकारेण पूर्णाहुतिंहुत्वामार्जन तर्पणानिचविधाय तन्निहिविसृज्यपूजास्थलमागत्य सपरिवारोयजमानोदेवीं सम्पूज्य प्रणम्यचकृतांजलि र्देवींभक्त्येदयमाण स्तदग्रतस्तिष्ठनस्तुवीत— ॐ दुर्गांशिवांशान्तिकरीं ब्रह्माणींब्रह्मणः प्रियाम् । सर्वलोक प्रणेत्रींच प्रणमामिसदाशिवाम् । भुवनेशींजगद्धात्रीं सर्वरोग-भयापहाम् । ह्रीं काररूपिणींदेवीं नमामिभुवनेश्वरीम् । सुन्दरीं लोकजननींसर्वकल्याणदायिनीम् । त्रिपुरासुन्दरींदेवीं प्रणमामि मुहुर्मुहुः । विन्ध्यस्थांविन्ध्यनिलयां दिव्यस्थाननिवासिनीम् । योगिनींयोगमायांच चण्डिकांप्रणमाम्यहम् । रक्तास्यांरक्तजिह्वां च मुण्डमालासुशोभिनीम । रक्ताक्षीमभयानाम्नां कालिकांप्रणम्याम्यहम् । महामायांमहादेवींशुम्भासुरविनाशिनीम् । त्रैलोक्य मीश्वरी बुद्धिरूपांच प्रणमामिसरस्वतीम् । ईशानमातरंदेवी मीश्वरी मीश्वरप्रियाम् ॥ प्रणतोऽस्मिसदादुर्गां संसारार्णवतारिणीम् । इतिपुष्पांजलिंदत्वा नीराजनादिकं विधायक्षमापनंकुर्यात्— विधिहीनं क्रियाहीनंभक्तिहीनंयदर्जितम् । पूर्णभवतुतत्सर्वं त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि । मातः ? क्षमस्वेत्युक्त्वा, ततईशान्यां ततग्माण मन्त्रकथनान्तैशान्यां नैकपुष्पनिक्षेपेणविसर्जयेत् । ॐ उत्तिष्ठदेवि

चण्डेशि शुभांपूजांप्रगृह्यच। कुरुष्वममकल्याण मष्टाभिःशक्तिभिः सह। गच्छगच्छपरंस्थानंस्वस्थानेदेविचण्डिके। व्रजस्रोतोजले वृध्यैतिष्ठगेहे च भूतये। ॐ दुर्गेदेवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते। कल्याणाय यथाकालं पुनरागमनं कुरु। इति घण्टांवादयित्वा पुष्पमीशान्यां क्षिप्त्वादेवीं विसृज्य ततो ब्राह्मणाः स्थापित कलशोदकेन पूर्वोक्तसुरास्त्वामभिषिंचन्तु, इत्यादि पौराणिकै वैदिकमन्त्रैरभिषिञ्चेयुः। ततस्तिलकं कृत्वादेव्युपभुक्तनिर्माल्यं यवांकुरादींश्च (हरियालीनिप्रसिद्धा) फलान्यपिच च दत्वानवरात्र्यनुष्ठान सिद्ध्यर्थं ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां दत्वा प्रतिपदमारभ्य नियमान् विसृज्य विप्रान्भोजयित्वा स्वयमपि व्रतीवन्धुभिः सह भुञ्जीत। यद्दिनेविसर्जनं तत्रैवनियमत्यागस्योचितत्वात् विसर्जनोत्तरं तद्दिनएवपारणं कार्यम्। शुक्लप्रतिपदारभ्य यावत्स्यान्नवमी तिथिः तावद्व्रतं प्रकुर्वीत दशम्यां पारणं चरेत्। इति विसर्जनान्त नवरात्रपद्धतिः। ॐ दुर्गायैनमः।

अथ चैकोत्तर वृद्धि नवरात्र चण्डीपाठ विधिः—उक्तंचाखिल मार्कण्डेये—शरद्कालेविषेमासि शुक्लपक्षे नृपोत्तम। प्रतिपत्तिथिमारभ्य यावच्चनवमी तिथिः। तोरणाढ्येशुभेस्थाने सुवितानाद्यलंकृते। पूर्वादिक्रमयोगेन दिग्देवीभ्यो वलिं हरेत्। कलशं पंचरत्नाढ्यं हेमवस्त्रादिकान्वितम्। संप्रतिष्ठाप्य संपूज्य चण्डिकार्चनमारभेत्। कृत्वान्यत्पूर्ववत्सर्वं जपेदेकाग्रमानसः। सकृद्रहस्य संयुक्तं चण्डिकाचरितत्रयम्। एकासनेन चरित सरहस्यत्रयंपठेत्। यदाद्यदिवसे कुर्याच्चण्डिका पूजनादिकम्। द्विगुणं तद्द्वितीयेऽन्हि त्रिगुणं तत्परेऽहनि। नवमीमिथि पर्यन्तं वृध्या पूजाजपादिकम्। अत्र जपग्रहणात्पाठस्यापि वृद्धिः एकवारं व्रती कुर्यात्सत्यादिनियमैर्युतः। कृत्वा होमादिकं सर्वं पाठस्य दशमांशकम्। अपुत्रो लभतेपुत्रान्निधनः सधनो भवेत्। व्याधयः संक्षयं यान्ति शत्रवश्च सुदारुणाः। न तस्यास्तिभयं किंचिद्राजचोराग्नि वारिजम्। शेषंप्रयोगे स्पष्टम् अथैकोनरवृद्धि चंडी

मयूरपत्रछत्राणि विचित्राण्यासनानि च। पादुका आहरेत्तत्र तामभूषणभूषिता.। अर्घ्यैर्मधुपर्केश्च विप्रेभ्योयत्प्रपूजनम्। तस्माद्द्विगुणितं दद्यादाचार्यायतुपूजनं। यजमानं सपत्नीकं सुतबन्धु समन्वितम्। उपवेश्यासनेपूर्वैः कुशाग्रैरुपभूषिते। वेदमंत्रान्तरे पूर्णं कुर्युस्ते स्वस्तिवाचनम्। कृतस्वस्त्ययनं विप्रै वंद्यादिभिनिः स्वनैः। चण्डिका मंडपंयाया त्परिवारविभूषित। पश्चिमद्वारमार्गेण प्रविश्य क्रतुमण्डपम्। ददाति पूजनेऽनुज्ञां देशिकाय कृताञ्जलि.। देशिक आचार्यः। देशिकः सर्व मंत्रज्ञो नवभि र्ब्राह्मणै.सह। अगण्डं दीपकर्देव्याः प्रीतये पंचरात्रकम्। गणनाथं ग्रहांश्चैवदिग्देवी र्लोकपालकान्। दिशापालांश्च सम्पूज्य घटं संस्थाप्य पूजयेत्। मंडपस्य चतुर्दिक्षु दत्वाभूत वलिं वहिः। मण्डपे कलशौद्वौच॥ द्वारिद्वौच निवेशयेत्। गङ्गादि तोय सम्पूर्णौ स्थापयेत्पल्लवान्वितौ॥ कस्तूरी कुंकुमोपेतं सकर्पूरंसचन्दनम्। पलद्वययुतंसर्वमनुलेपनमाहरेत्। दिव्य वस्त्र मलंकारं हेमगद्याणकत्रयम्। लक्षपुष्प चतुर्धांशंगुग्गुलं च पलद्वयम्। दीपानां विंशतिश्चाष्टौमण्डपे जपसाधनम्। कुडवौ द्वौ हविष्यान्नं नैवेद्यंसरम शुचिः। नवचण्डि विधानोक्तं महालक्ष्मीप्रपूजनम्। नवभि र्ब्राह्मणैः सार्धं कृत्वाचार्योद्विजोत्तम। कार्यं जप्या प्रसिद्ध्यर्थमनुज्ञां मानपूर्वकम्। ततोऽनुज्ञा मनुप्राप्य वेद्यामाचार्य संनिधौ॥ मृद्वासनेषु संतुष्टा उपविष्टाः मुनिश्चलाः। न्यासध्यानसमायुक्ता नासाग्रस्थावलोकिन। सुगन्धि पुष्पा मालाढ्याश्चण्डिका चरितत्रयम्। सरहस्यमृषिश्छन्दो देवता शक्ति संयुतं। बीजतत्व समोपेत मुपांशुगणसंयुतम् जपे। तुल्यमेकैकं मौनिनस्त्वक्तमत्सरा.। पाठान्ते च समुत्थायतत कुर्युः प्रदक्षिणाम्। चण्डिकांतु नमस्कारै. परितोष्य पुनः पुन.। उपवेश्यासने पूर्वैः श्लोकैं सर्वार्थसाधनै.। प्रार्थयेयु प्रार्थ्यफलं महालक्ष्मीं द्रुतं ता। कुमार्यो दशसंख्याता भोज्या विप्रा दशोत्तमा.। महाकाली महालक्ष्मी सरस्वत्या जप जपम्। ततो बन्धुसमायुक्तो भुंजीयात्स्वकृतपुमात्। सत्कथाभिः सुगीतैश्च सर्ववादित्र निः स्वनै.। पूजनैः प्रेक्षणैश्चैवर्वेदपाठैर्निशां नयेत्। द्वितीये दिवसे स्नात्वा विधिवत्ते द्विजा दश। चण्डिका तर्पणं कुर्यु सम्पूर्णं ध्यान पूर्वकम्। सर्वप्रथवप्रथवकृत्वा दिग्देवी पूजनादिकम्। वहिर्भूतवलिंदत्वा कृत्वादेव्या प्रदक्षिणम्। पुष्पागारे महारम्ये स्वस्वमासनमास्थिता। जयन्ती जयचण्डीति यावद्दु र्गाप्रपूजनम्। पूर्वस्मात्पूजना त्कुर्याद्द्विगुणं पूजनं क्रमात्। आचार्य. सुस्थितः शान्त चण्डिकायाश्च तोषणम् कृतेतुपूजने विप्रा जपेयुर्द्विगुणं जपम्। द्विगुणंतु प्रकर्तव्यं कुमारी द्विजतोषणम्। कार्यश्च जागरो रात्रौयुक्तै. सर्वमेहान्वयैः। चण्डिकापूजनं जाप्यं कुमारीद्विजभोजनम् तृतीयेऽहनि कर्तव्यं त्रिगुणंचसजागरम्। चतुर्थेदिवसे सर्वसम्यक्कार्यं चतुर्गुणम्। महानागणापितं होमः स्यात्पंचमेऽहनि होमविधिः—पायसंसर्पिरोयुक्तं तिलै. शुक्लैर्विमिश्रितम्। जुहुयात्कुकृदर्धिना दशांशेनतृपोत्तम्? स्वाध्यायेनथाहोमो तन्त्रेणैवेनमाध्यते चण्डीसप्तशतीजाप्ये होममन्त्रैर्नयापरः

कथितःपूजनध्यानं तेनहोमोनवेदिह । नमोऽन्ते ॐ स्मृतं प्रथवार्थमंत्रहोमः शतांते स्तोत्रनिरूपितैः । जपहोमेतुसम्पूर्णेदिग्देवीनां शतं शतं । होमव्यंनाममन्त्रेण हुतिपातेनसादरम् । एकवृद्धिप्रयोगोक्त दिग्देवीनांनाममन्त्रैः, प्रहेन्मोरेदिकैर्मंत्रैः फलेषुपंशतं शतं । होमसम्पूर्णता प्राप्ते नमस्कृत्वेष्टदेवताम । चण्डिकादेवदेवाना मृण्मीर्णाविन्दितामपराम् । स्तम्भद्वयंमुखंकृत्वा यजमानः स्वलंकृतः । घृतकुम्भदशाभिन दद्यात्पूर्णाहुतिंस्वयम ।" मूर्धानंमन्त्रपाठेन नवाक्षरमयेनच प्रागनंमार्जनंचयं नवदुर्गाविधानतः । जपंहुतंगमयेच चण्डिकायैमनोरथान । ब्रह्मणेनिष्कयस्कं च दद्याद्दुर्गामिथुनद्वयम् । यस्याः प्रभावमतुलंस्लोकमुखवाक्कृतांजलिः । दद्याद्दुर्गामिथुनस्यष्टा पाचार्याय चभक्तिमान् । चतुर्विंशतिसंख्याके हेमकल्याणकैःसह । एकैकमत्रविप्रेभ्योदद्याद्दुर्गामिथुनंसमम् । निष्कत्रयसमायुक्तं वस्त्रालङ्कारभूषितम् । सुस्थितंस्वासनेशान्तं यजमानंमहोत्सवम । कुंकुमाक्षतानादूर्वासुगन्धचन्दनंदधि ॥ आदायादायतेविप्रा आचार्याश्चसुपूजिताः स्तोत्राणांच चतुर्णान्तुमहालक्ष्मीपरायणाः । एकैकश्लोकमुच्चार्यदद्युराशिषमुत्तमम । सभार्यः ससुतः पूर्णोलब्धाशीर्वादमङ्गलम । स्तनपुष्पांजलिंदद्यात्चण्डिकायैविसर्जनम । भूरिदानंततोदद्यात्पुण्यपाठिषु विप्रेषु शनैःश्रविरोच्छान्तिपाठंच तोरणाद्स्वमालयम् । शतचण्डीविधानस्य कृतेन सुकृतेनहि । महालक्ष्मीतदालक्ष्मैश्वर्यसुखमुत्तमम । यत्कार्यसमुद्दिश्य क्रियतेशतशतचंडिका तत्तत्स्यमहालक्ष्मी सत्यमाशुप्रयच्छति । इति शतचण्डीविधिः । **नानाविधि चंडी पाठ काम्यप्रयोग विषयः ।**

अतःपरंमार्कंडेयोक्त चण्डीपाठमन्त्रदर्य- चरितत्रयजाप्यस्य चण्डिकाया नृपोत्तम । सरहस्यस्यनामानि प्रोक्तानिवदाम्यहम । महाविद्यामहामन्त्रश्चण्डीसप्तशतीतिच मृतसंजीवनीनामचतुर्थंपरिकीर्तितम पञ्चमंचमहाचण्डी चतुःषष्ठीपदीपरा । रूपचण्डीपरादुर्गा कथितावेदपारगे । महाविद्यामहासनीसर्वतंत्रेषुगोपिता । अथनमध्यचरितं महामन्त्रमुदीरितम् । आदिमध्यान्तचरितेक्रमाच्चण्डीमहामनु । मध्यमान्तचरितेक्रमात्सप्तशतीस्मृता । मध्यमान्तचरितं मृतसंजीवनीस्मृता । अन्त्यादिमध्यचरितं महाचण्डीनिकथ्यते । योगिनीनांचतुःषष्ठियोगात्सप्तशतीमता । चतुःषष्ठिपदीप्रोक्ता योगसिद्धिप्रदायिनी । रूपंदद्यीतियोगेन रूपचंडीतिरास्मृता । परापोजमायोगात्परचण्डीतिकथ्यते । एतानियोविजानातिनामानिनृपनन्दन ? जपंविनाभवेच्चंडी वरदाम्यालुगवेदा । पाठभेदफलंराजञ्छृणुवक्ष्याम्यनुक्रमात । महाविद्यांच शान्त्यर्थं पठेच्छततंनरः । चंडीपाठं हेराजेन्द्र पुष्टयर्थंचसदाजपेत । मोक्षार्थंसप्तशतीपाठंभवति सिद्धिदम् । विपरोगाल्पमृत्युघ्नपाठंसंजीवनीकम । स्तंभनेचमहाचण्डीमततेसिद्धिदायिनी । सर्वसमारणेज्ञेयामहाचण्डीच चंडिका । उच्चाटनेचविद्वेषे कृत्याशान्त्यादिकर्मणि । रूपचण्डीशुभ-

करोति राज्यं चण्डीं च मोक्षदां । शतमावर्तनं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवाक्षरम् । चण्डीसप्तशतीमध्ये सम्पुटो ऽयमुदाहृतः । एकाय सम्पुटो जाप्यः द्विपाठे सम्पुटं विना । एतद्गोप्यतरं तत्त्व चण्डिकाया निवेदितम् । इति चण्डीकाम्यप्रयोगविधि ॥

— ⁂ —

॥ अथ शत चण्डी प्रयोग पद्धतिः ॥

तत्रानावृष्ट्या अखिल विध्युक्त दुरितोपशान्त्यर्थं राज्यावाप्त्यादि सकल कामना सिध्यर्थं च पूर्वोक्त लक्षणसम्पन्नो यजमानः शिवालय समीपेवा देवीप्रसिद्ध मन्दिर सन्निधौ समेभूतले यथोक्त लक्षणं षोडश हस्तात्मकं मण्डपं चतुर्द्वारयुतं सुतोरणाढ्यं पताकालंकृतंमध्ये चतुर्हस्तायत दैर्घ्यविस्तृतां यथोक्तलक्षणां वेदिं च निर्माय मध्येवेद्यां षट्कोणाष्टदलभूपुरात्मकंयंत्रं विलिख्य मध्ये ऐं ह्रीं क्लीं बीजान्यालिख्य तस्याईशानकोणेत्रिकोणं चतुरस्रं यथोक्तलक्षणं सपादहस्तं कुंडं वेदिं वानिर्मायविध्युक्त लक्षणान्नवब्राह्मणान् दशममाचार्यं दान्तंशान्तं देवीतत्त्वज्ञं, एवंदशब्राह्मणांन्पूर्वोक्त मधुपर्कादि विधानेनाचार्यं ब्रह्मान्विगष्टकेनवरण पूर्वकमर्चयित्वा इतरब्राह्मणापेक्षयाचाचार्याय द्विगुणां वरण सामग्रींचदत्वा तदनुज्ञया सपत्नीको यजमानः शुभासनेसमुपविष्टो ब्राह्मणैः कृतस्वस्त्ययनः सुतबन्धुसुहृद्वृतो वेदघोष नाना ध्वनि पूर्वकं ब्राह्मणैः सह महालक्ष्मीमण्डपंगत्वापश्चिमद्वारमाश्रित्य आसने समुपविश्य द्वारपूजां कुर्यात्–आचम्य भूमौजलेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलमालिख्य सम्पूज्य च ॐ ह्रीं द्वाराद्यमण्डलायनमः । इत्यर्घपात्रंसंस्थाप्य सगन्धजलेनापूर्य तत्रा कुंशमुद्रयातीर्थमावाह्य गंगेतिधेनुमुद्रांप्रदर्श्यमूलेनाष्टधाभिमन्त्र्य तज्जलेन तत्त्वत्रयेणाचमेत्—ॐ आत्मतत्त्वायस्वाहा १ ॐ

विद्यातत्वायस्वाहा २ ॐ शिवतत्वायस्वाहा ३ इत्याचम्य द्वार-स्योर्ध्वशाखायांदक्षे ॐ धात्रेनमः गन्धाक्षतपुष्पादिभिःसम्पूज्य एवंसर्वत्र। ततोवामे ॐ विधात्रेनमः सं०। अधः शाखायां दक्षे ॐगंगायैनमः सं० वामे। ॐ यमुनायैनमः सं०। उर्ध्वोदुम्बरे ॐ द्वारश्रियैनमः सं०। अधः ॐ देहल्यैनमः सं०। वामांगसंकोचेना-न्तः प्रविश्य आग्नेयकोणे ॐ वास्तुपुरुषायनमः, गन्धाक्षतैः सम्पूज्यासनभूमौ रक्तचन्दनेन चतुरस्रं विलिख्य तत्र पृँ पृथि-व्यैनमः, इतिमण्डलं सम्पूज्य तत्रासनमास्तीर्य पृथ्वीति मन्त्रेण सम्प्राथ्योंपविश्य मूलमन्त्रेण शिखांबध्वा तत्वत्रयेणाचमंकृत्वा महालक्ष्मीतत्वेन प्राणायामं विधायस्वदक्षे हरिंवामे ईश्वरं सम्प्र-णव नाममंत्रेण सम्पूज्यप्राङ्मुखोपविशेत्। तत्र संकल्पं कुर्यात्-ॐ अद्येहेत्यादि० अमुको ऽ हं शतचण्डीपाठ कर्मणि-अमुक कामनासिद्ध्ये तत्रादौनिर्विघ्नता सिध्यर्थ गणेशादिपंचांगदेवता पूजनंनान्दीश्राद्धकलश स्थापन पुण्याह वाचनादि कर्मकरिष्ये। तत्र क्वचिन्मनोहरपीठं लिखित्वा गणेशपूजनं मातृका पूजनाभ्यु-दयिक कलशस्थापनं पुण्याहवाचनं नवग्रहादि पूजनं पूर्वोक्तानु सारेण कृत्वा स्तंभ पूजाप्रकारेण स्तंभान्सम्पूज्य दिक्पालबलिं क्षेत्रपालबलिं च दत्वा वेद्या ईशाने अखंडित रत्नादीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य च चतुर्ष्कोणेषु सर्वतोभद्र पूजोक्त प्रकारेण तोरणानि सम्पूज्य वक्ष्यमाण पूजासामग्रीं स्वसन्निधौ कुर्यात्साचेयम्—अस्सीति गुंजामिताकस्तूरी, तावन्मात्रं कुंकुमं, केशरंच सकर्पूरं तावन्मात्रं एतच्चतुष्टयं पलमात्रं चन्दनेन सहघर्षयित्वा संगृह्णी-यात्। पलप्रमाणं तुविंशत्युतर त्रिशतगुंजामितम्। अनेन पलद्वय मनुलेपनं भवति। स्त्रीजन परिधानयोग्यं कौशेयवस्त्रं गद्याण कत्रय हेमनिर्मितमलंकरणम् (साक्षेरौप्यकतोलकम्) पंचविंशति सहस्राणि पुष्पाणि बिल्वदलसहितानि (प्रतिदिनंपंचसहस्र नियमेन) धूपार्थं पलद्वयं गुग्गलुः। वेद्यांविंशतिर्दीपाघृतपूरिता यावत्पाठप्रदीप्ताः। कुडवद्वयमात्रंहविष्यान्नं नैवेद्यम् (द्रोणमात्रं

तदभावेप्रस्थद्वयम्) शतद्वयंनागवल्लीदलम् । पूगफलंखादिरसारंच तदनुयोग्यंग्राह्यम् । इत्थंपूजासामग्रीं च सम्पाद्यतत्र वेद्यां प्रागुक्त कलशस्थापन विधिना प्रधानकुंभं संस्थाप्य नवरात्रविधान पौराणिक पूजापद्धत्या घटे महालक्ष्मीमावाह्य सम्पूज्य च मण्डपस्य पूर्वादि द्वारचतुष्टये प्रतिद्वारं पूर्वोक्त कलश स्थापन विधिना द्वौ द्वौ कलशौ गालिनोदकपूर्णौ स्थापयेत् । दुर्गापूजा पद्धत्यनुसरेणाचार्यो यजमानतो वेद्यां पूजनं कारयेत् । अशक्तश्चे-द्यजमान आचार्येण कारयेत् । तत्र ॐ कारपीठायनमः इत्यारभ्य ॐ सिंसिंहायनमः, इत्यनंतां पूजां कृत्वा यथालाभोपचारैः सम्पूज्यसंतर्प्य च यन्त्राग्रेवेद्यां सर्वोत्तमंपीठं संस्थाप्य तत्ररक्त-वस्त्रं कौशेयमास्तीर्य तन्मध्ये श्रीयन्त्रंवा भुवनेश्वरी यन्त्रंवा सुवर्णप्रतिमां वा मूर्तिं संस्थाप्य हस्तेपुष्पंधृत्वा योगमुद्रया श्री महालक्ष्मीं मध्यबीजे ह्रीं इति चिरंध्यात्वा तया मण्डलस्थ सर्व शक्तिभिरैक्यं विभाव्य मण्डलात्पीठे समाह्वयेत् । विंशतिदीपा-न्प्रज्वाल्य तेनैव तत्रोक्त प्रकारेण पूर्वोक्त सामग्रीभि र्महालक्ष्मीं श्रीं पूजयेत् । अत्रयावच्छ्रीदेव्याः पूजनंभवति तावत्सर्वे ब्राह्मणाः जय चण्डीति ब्रुवन्तस्तां ध्यायेयुः । तत आचार्यसहिताः सर्वे ब्राह्मणाः आसनान्यास्तीर्य स्वस्वासनेपूपविश्य तत्वत्रयेणाचमनं कृत्वा भूतोत्सादनं विधाय ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै हृदयायनमः ॐ ह्रीं म० शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रीं म० शिखायै वषट् ॐ ह्रीं म० कवचाय हुँ ॐ ह्रीं म० नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ ह्रीं म० अस्त्रायफट् एवं षडंगन्यासं कृत्वा ॐ अरुणाग्निमिति मन्त्रेण महालक्ष्मीं ध्यात्वा ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे श्रीं महालक्ष्मीतृप्य-ताम् । इतिमन्त्रेण श्री महालक्ष्मीं सुगन्धिजलेन दुग्धमिश्रिते नाष्टोत्तरशतंसंतर्प्य ॐ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् । इति गायत्रीं यथाशक्ति जपित्वाप्राणायाम एवैकं जपं श्री देव्यै समर्पयेयुः । तत आचार्यो ब्राह्मणेभ्यो बहुमानपुरः सरंसप्तशती पाठार्थमाज्ञां दद्यात् ।

स्वयमप्याचार्यो ब्राह्मणैः सह श्री महालक्ष्म्या ध्यानपूर्वकंविधिवच्चरितत्रयं सरहस्यं जपित्वोत्थाय प्रदक्षिणा नमस्कारैः पुनः पुनः परितोष्यासने समुपविश्य प्रार्थनाश्लोकान्पठित्वा यजमानस्याभिष्टानि फलानि पुनः पुनः प्रार्थयेयुः । ततो यजमानो सुलक्षणाः, दशकुमारीः पूर्वोक्त कुमारी पूजाविधिना सम्पूज्य संभोज्यचान्यत्तमान्दशविप्रांश्च जापकान्यान् संभोजयेत् । ताम्बूल दक्षिणादिभिः संतोषयेत् । ततः पश्चादाचार्यादि दशब्राह्मणां स्तथैवभोजयित्वा दक्षिणादिभिः परितोष्य बन्धुभिः सार्धं स्वयमपि भुक्त्वानृत्यावादित्रनिःस्वनैर्वेदघोषैः सत्कथाभिश्च रात्रिंनयेत् । इति विधिना प्रथम दिवसेदशावर्ति पाठं कुर्यात् । ततो द्वितीयदिवसे आचार्यादयः स्नात्वानित्यक्रियां निवर्त्यध्यान पूर्वकं दिग्देवीपूजनं बहिर्भूत बोल चदत्वा श्री देवीं प्रदक्षिणी कृत्यप्रणम्य च पूजामण्डपे स्वे २ आसने समुपविश्य ॐ जय महालक्ष्मीति जपन्तोयावद्देव्याः पूजनं भवति तावत्तिष्ठेयुः तत आचार्योऽपि पूर्वं पद्धत्यनुसारेण पूर्वदिवसापेक्षया यजमानेन संपादितैर्द्विगुणवस्त्राभरणगन्धपुष्पादि समस्तपूजाद्रव्यै विशेषतः पूजांकृत्वा द्विगुणं परितोषणं भगवत्याः कुर्यात् । ततः पूजान्तेपूर्वोक्त षडंगन्यासं कृत्वा तेनैव मंत्रेण विधिना द्विगुणं पूर्वापेक्षया कृत्वा द्विगुणं गायत्रीमन्त्रं च जपित्वा पूर्वोक्त विधानेन पूर्वापेक्षया द्विगुण सप्तसतीपाठं कृत्वादेवीं प्रार्थयेयुः ततो यजमानो द्विगुणितानां कुमारीणां ब्राह्मणानां च पूजाभोजनं च कारयित्वा पूर्ववत्स्वयमपि भुक्त्वा जागरणमपि कुर्यात् एवं तृतीये दिवसे त्रिगुणपूजा जपपाठ कुमारीब्राह्मण भोजनादि विधेयम् । एवं चतुर्थे दिवसेऽपि चतुर्गुणं सर्वं कुर्यात् एवं क्रमेण चतुर्थदिवसे शतावृत्तिश्चंडीपाठोभवति । ततः पंचमेदिने होम पद्धत्यनुसारेण पूर्वनिर्मितकुंडेवामण्डपे विधिनाग्निंसंस्थाप्यतत्र घृततिलपायसेनवायतिलाज्येन जपदशांसेनसरहस्यचरितत्रयस्य प्रति श्लोकेनवानमोदेव्यै महादेव्यैइतिश्लोकेनवापूजाप्रकरणोक्तेन

नवार्णव मंत्रेण होमंकृत्वा दिग्देवीनां नाममन्त्रेण प्रत्येकं तन्नाम मन्त्रेण शतं २ स्वाहा तद्द्रव्यैर्ण व हुत्वा नवग्रहाणां वेदोक्त न्मत्रेणतस्य तस्योक्त समिद्भिर्घृतेश्चरुभिश्च शतं शतमेकैकस्य ग्रहस्यहुत्वा इत्थंहोमं सम्पाद्य श्री महालक्ष्मी प्रणम्य ततो यज मानास्तंभद्रशो परिस्त्रुवंनिधाय घृतकुंभदशांशेन घृतेन" ॐ मूर्द्धा नमित्यस्य भारद्वाज ऋषिः त्रिष्टुन्छन्दो वैश्वानरोदेवतापूर्णाहुति होमेविनियोगः । ॐ मूर्द्धानंदिवो ऽ अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत ऽ आजातमग्निम् । कविं ८० सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रंजनयन्तदेवाः स्वाहा ॥ इत्यवच्छिन्नधारया पूर्णाहुतिंजुहुयात। अथवा नवाक्षरेण मन्त्रेण जुहुयात् । होमदशांशं नवाक्षर मंत्रेण तर्पणं कृत्वा तर्पण दशमांशं तेनैवमार्जयेत् । शेषं होमपद्धत्युक्त प्रकारेण कुर्यात् । ततः शान्त्यर्थं गोदानानि कृत्वा संस्रवप्राशनं प्रणीतामार्जनं च कृत्वा जपंहुतं च श्रीमहा लक्ष्म्यै निवेद्य मनोरथंप्रार्थयित्वा यजमानो ब्रह्मणेनिष्कपट्क हेमसहित सर्वालंकारयुक्तं गोमिथुनद्वयंदत्वा ॐ यस्याः प्रभा मतुलमिति श्लोकंकृतांजलिः पठित्वा" आचार्याय द्विगुणनिष्क षट्क हेमसहितं पूर्वोक्त लक्षणंगोमिथुनाष्टकं दद्यात् । अष्टर्त्वि ग्भ्यश्चैकैक निष्कषट्क हेमसहितंचैकैकं गोमिथुनंदद्यात् । दरिद्रो ऽपि ऋत्विग्भ्यो ७८ अष्टाविंशति रजतमुद्राणकंगोमिथुनं चावश्यमेवदद्यात् । ब्रह्मणे द्विगुणम । आचार्यायचतुर्गुणमिति ।

ततो यजमानं सपरिवार सुखासने समुपविश्याचार्यो ऋत्विजश्च कलशजलेन पूर्वोक्ताभिषेकविधिना सर्वानभिषिंच्य तिलकं कृत्वा,वैदिक पौराणिक मन्त्रैराशिषंदद्युः। ततो लब्धाशीर्यजमानः श्रीमहालक्ष्मी परायणो रत्नपुष्पांजलिंदत्वा देवीविसर्जन पद्धत्य नुसारेण देवीविसृज्य ब्राह्मणेभ्यो दानंदत्वा चादिम्नवेदध्यनिपुरः सरंस्वगृहंप्रविशेत् । ततो ब्राह्मणान्भोजयेत ॥ इति दिवम ॥

॥ इति शतचण्डी प्रयोग ॥

॥ अथ सहस्र चण्डी परिभाषा ॥

उक्तं च रुद्रयामले सहस्र चण्डी विधिन्तुणु प्रिणा महामा । राज्यनष्टे महापाते जनमारे महाभये ॥ गजमारश्वमारेश्च परचक्र भय तथा । इत्यादि विविध दुःख चायरोगादिजं भय । सहस्र चण्डिका पाठ कुर्याद्वारयत्तथा । जापकास्तु शतभोक्ता विंशद्धस्तत्र मण्डपम् । भोज्या सहस्र विप्रेन्द्रा गो शत दक्षिणाविधेत । गुरुद्विगुण देयशय्यादान तथैव च । गमधान्य च भूदान स्वैताश्व च मनोहरम् । पञ्चनिष्कमिता मूर्ति कर्तव्या चार्धमानत । अष्टादश भुजाविशी सर्वायुध विभूषिता । अग्निरिनामदातव्य सहस्र यह प्रभो ? । शतवानियताहारः पय पानेन वर्तयत । एवं यज्ञाणिडका पाठ सहस्र तुममाचरत । तदयस्या कार्यसिद्धिस्तु नात्रकार्या विचारणा । अथ सहस्र चण्डी यज्ञस्यापि विधान शतचण्डी वत्सर्व ज्ञेयम । विशेषस्त्वेतावान, जपकर्त्तारो ब्राह्मणा शतम । मण्डपं विंशद्धस्तात्मकम । कुण्ड दीर्णा शत शेषं शतचण्डी वत्कारयत ॥

॥ इति सहस्र चण्डी विधि ॥

॥ अथ सार्द्ध नव चण्डी परिभाषा ॥

उक्त च वाराही तन्त्रे रुद्रयामले—नवसार्धं जपेद्यस्तु मुक्त प्राणान्तकाद् भयात । राज्यं श्रियच सम्पत्ति सर्वान्कामानवाप्नुयात । प्रयोगोऽय महागुह्य देवानामपि दुर्लभ । तत्तेह सम्प्रवक्ष्यामि सावधानोऽवधारय । मधुकैटभनाश च महिषासुर घातनम् ॥ शक्रादिस्तुतिरेवात्र देवीसूक्तं पुनस्तथा । नारायणी स्तुतिश्चैव फलानुकीर्तन तथा । ततो वरप्रदानञ्च अर्धपाठोऽयमुच्यते । अर्धपाठस्त्रय प्रोक्त सर्वकाम फलप्रद । अर्धपाठेन सहित नवपाठफलनहि । अथार्धपाठक्रमश्च मार्कण्डेय सूर्यतनय इत्यारभ्य शक्रादिस्तुतिश्च पञ्चमाध्यायी । देवा ऊचु नमो देव्यै, इत्यारभ्य ऋषिरुवाचेतिपर्यन्तमिति नारायणी स्तुतिरेकादशो यत्र द्वादश त्रयोदशाध्यायौ । अयमर्धपाठ । ब्राह्मणा स्वयमप्यभागे एकादश । तेषुनवब्राह्मणा सम्पूर्ण सप्तशती पाठ कुर्युः एकोऽर्धपाठकर्ता एकोयजुर्वेदीय षडङ्गरुद्राष्टाध्यायी पाठकर्त्ता, एवमेकादश ब्राह्मणान्वृणुयात ॥

॥ इति सार्द्ध नव चण्डी परिभाषा ॥

अथ सार्धनवचण्डी अनुष्ठानपद्धतिः ॥ तत्र कर्ताशुभेमुहूर्ते अथवा कृष्णाष्टमी नवमी चतुर्दशीनामन्यतमेदिवसे यथोक्तलक्षणांकुमारीमानीय, यजमानः सपत्नीकस्नात्वाशुक्लः धौते वाससीपरिधायैकां कुमारींपूर्वोक्त विधिना सम्पूज्य संभोज्य चदक्षिणादिभिः परितोष्यानुष्ठानार्थं कुमारीं प्रार्थयेत्। भोमातेश्वरि! कुमारि! महंसार्धनवचण्डीमहोत्सवं कर्तुमाज्ञांदेहि। कुमारीवदेत्—प्रसन्नतया कुरुतेयथेष्ठं भवतु" इत्याज्ञां गृहीत्वा पूजास्थानमागत्य—गोमयोपलिप्तायां भूमौ स्वासने—उपविश्य स्वेष्टदेवंस्मृत्वा दीपं प्रज्वाल्य आचम्य स्वस्तिवाचनान्ते गणेशादि पंचांगपूजनं कृत्वा संकल्पंकुर्यात् ॥ ॐ तत्सदद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रो ऽहममुकशर्मा श्री भवानीशंकरप्रसन्नता पूर्वक ज्ञाताज्ञात निखिल पातकोपपातक निरसनपूर्वक कालिकराजतो—व्यवहारपूर्वक श्री वृद्धिकामः सकुटुम्बसपरिवारस्यात्मनः शरीरारोग्यकामश्च वामुककार्य सिद्धयर्थमेकादश ब्राह्मणद्वारा यजुर्वेदीय षडंगैकपाठसहित चण्डी चरित्रस्य श्री महाकाली महालक्ष्मी महा सरस्वती दैवतस्य सार्धनवकरूप पुरश्चरणमहं कारयिष्ये—यतो ब्राह्मणान्वृणुयात्—पाद्यगंधादिभिः संपज्य वरणद्रव्यमुभाभ्यां हस्ताभ्यामञ्जलौनिधाय संकल्पं कुर्यात्। ॐ अद्यपूर्वोद्यारित, अमुकगोत्रो ऽमुक शर्माहं पूर्वोक्तसिद्धिकामः एभिर्वरण द्रव्यै रेकषडंगसहित सार्द्धनवक चण्डीपाठानकर्तुमेका दशब्राह्मणानमुकामुक गोत्रानमुकामुक शर्मणोऽहंवृणेततःप्रदक्षिण क्रमेण प्रत्येकं ब्राह्मणंतद्रव्येणवृणुयात्। करवामइतिब्राह्मणाब्रूयुः। तत आचार्योयथाविधि कचिन्मनोहरपीठे कलशंसंस्थाप्यतत्र भवानीसहितंशङ्करमावाह्य षोडशोपचारेण सम्पूज्यदेवींध्यात्वा नमस्कृत्यपुस्तकं गन्धादिभिः पूजयेत्। तत्रादौपुस्तकोपरि षडंग पाठाधिष्ठात्रिदेवतेभवानीशंकरौ नाममात्रेणपूजयेत्। यथाएतानि पाद्यानिश्री भवानीशंकराभ्यांनमः। एवंगन्धादिनैवेद्यान्तं सम्पूज्यैवं सप्तसतीपुस्तकमपिपूजयेत्। सर्वेब्राह्मणाः स्वासनेषूपविश्य

प्रथक् प्रथक् पाठसङ्कल्पंकुर्युः । ॐ तत्संदेशकालौसंकीर्त्यामुक गोत्रो ऽ हममुकशर्मामकुगोत्रस्यामकुनांम्नो यजमानस्यामुक कामनासिद्ध्यर्थ- जनार्यंताष्टोत्तरशतनवार्णवजप पूर्वकचण्डी चरित्रस्यै कपाठमहंकरिष्यामि । एवंनवब्राह्मणैः । दशमेनच, अग्रपूर्वोच्चारितामुको ऽ हं० चण्डीचरित्रस्यार्धपाठमहंकरिष्यामि एकादशेन षडङ्गपाठंकरिष्यामि—अर्धचण्डीपाठकः पूर्वोक्तानुसारेणार्धपाठंकुर्यात्। एवंपाठान्तेअष्टोत्तरशतनवार्णवमन्त्रंजप्त्वा श्रीदेव्यैसमर्प्यपूर्वोक्तविधिना वेद्यामग्निस्थापनंविधाय घृतपाय सनिलैरेकावृतिसप्तशतीपाठमन्त्रैर्होमंकृत्वानवार्णवमन्त्रेण पूर्णाहुतिंदत्वा ॥ तेनैवतद्दशांशतर्पणमार्जनादिकं विधायकुमारीपूजनं कृत्वाचार्यादिब्राह्मणेभ्यो दक्षिणांदद्यात् । आचार्यायद्विगुणं, गोदानंचकृत्वा कलशजलेनसपत्नि पुत्रपरिवारं यजमानंपूर्वोक्त मन्त्रैरभिषिच्याशीर्वादंदत्वा श्रीदेवींपूर्वोक्तप्रकारेण विसृज्य ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयमपिभुञ्जीत ॐ शिवमिति, इतिसार्द्ध नवचण्डीप्रयोगविधिः ।

अथ चण्डीदीपदानप्रयोगपद्धतिः—अथचसाधकः कृतनित्य क्रियोयागमण्डपे गोमयोपलिप्ते समेशुद्धभूमौस्वासनमास्तीर्य तत्रोपविश्यसुपवित्रमृदाहस्तमात्रांचतुरस्रां चतुरंगुलोन्नतांवेदीं निर्मायतद्वद्द्वितीयां वेदीमपिनिर्मापयेत्। प्रथमवेदिकायांकलश स्थापनविधिना कलशंस्थापयेदादौ गणेशादि पञ्चाङ्गपूजनंकृत्वा वेद्युपरिकलशे पूर्वोक्तविधिनादेवीमावाहयेत । द्वितीयवेद्यां सिंदूररजसा त्रिकोणषट्कोणाष्टदलचतुरस्रं यन्त्रंनिर्माय यथा कामनयासङ्कल्पंकृत्वा स्वर्णरजतताम्राद्यन्यतमंपात्रं गोघृतादि पूरितंरक्तवर्तिकायुतंकृत्वा यन्त्रपूजामारभेत्। भूपुराद्बहिःपूर्वादि वामावर्तेन । ॐ ह्रीं ग्लां ग्लीं ग्लूँ गणपतयेनमः उत्तरे—ॐ ह्रीं क्षां क्षीं क्षूँ क्षेत्रपालाय नमः । पश्चिमे—ॐ ह्रीं तीक्ष्णसिंहाय महिषायनमः । दक्षिणे—ह्रीं वनस्पतिपुत्राय सिंहायनमः इति पूर्वादिदक्षिणान्तं वामावर्त्तपूजनम् ॥ ॐ ह्रीं समस्तगुरुपादुका-

भ्यो नमः । स्याग्रेपूजयेत्—त्रिकोणाग्रकोणे ॐ ह्रीं विष्णु लक्ष्मीभ्यां नमः। दक्षकोणे ॐ ह्रीं रुद्रगौरीभ्यांनमः । वाम-कोणे ॐ ब्रह्मवागीश्वरीभ्यांनमः । इति सम्पूज्य षट्कोणे ऽग्रकोणमारभ्य दक्षावर्तेन ॐ ह्रीं नन्दायैनमः ! ॐ ह्रीं रक्तदंतिकायैनमः। ॐ ह्रीं शाकंभर्यैनमः । ॐ ह्रीं भीमायैनमः । ॐ ह्रीं भ्रामर्यैनमः ॐ ह्रीं शिवदूत्यैनमः । इति षट्कोणदेवीः सम्पूज्य अष्टदले ऽग्रदलमारभ्यदक्षावर्तेन ॐ ह्रींब्राह्म्यैनमः । ॐ ह्रीं माहेश्वर्यैनमः । ॐ ह्रींकौमार्यैनमः । ॐ ह्रीं वैष्णव्यैनमः । ॐ ह्रीं वाराह्यैनमः । ॐ ह्रींनारसिंह्यैनमः । ॐ ह्रीं ऐन्द्र्यैनमः । ॐ ह्रीं चामुण्डायैनमः । इति पत्रमूले—अथ पत्राग्रे पूर्वादि प्राद-क्षिण्येन पूजयेत् । ॐ ह्रीं असितांग भैरवायनमः । ॐ ह्रीं रुरु भैरवायनमः। ॐ ह्रीं चण्डभैरवायनमः । ॐ ह्रीं क्रोधभैरवाय नमः । ॐ ह्रींउन्मत भैरवायनमः। ॐ ह्रीं कपालीभैरवायनमः। ॐ ह्रीं भीषणभैरवायनमः । ॐ ह्रीं संहारभैरवायनमः । इति सम्पूज्य ततो भूपुरान्तः पूर्वादिदिक्षु—ॐ ह्रीं इन्द्रायनमः । ॐ ह्रीं अग्नयेनमः । ॐ ह्रीं यमायनमः ॐ ह्रीं निर्ऋतयेनमः। ॐ ह्रीं वरुणायनमः । ॐ ह्रीं वायवेनमः । ॐ ह्रीं कुबेरायनमः । ॐ ह्रीं ईशानायनमः । पूर्वेशानमध्ये ह्रीं ब्रह्मणेनमः । निर्ऋति पश्चिममध्ये ह्रीं अनन्तायनमः इति दिक्पालान्यथास्थानंसंपूज्य, भूपुराद्बहिरिन्द्रादि समीपे ॐ ह्रीं वज्रायनमः । ॐ ह्रीं शक्तये-नमः। ॐ ह्रीं खड्गायनमः । ॐ ह्रीं पाशायनमः । ॐ ह्रीं ध्वजा यनमः। ॐ ह्रीं गदायैनमः। ॐ ह्रीं त्रिशूलायनमः । ॐ ह्रीं पद्मायनमः। ॐ ह्रीं चक्रायनमः। इति सम्पूज्य रक्तचन्दन मिश्रिताक्षतान् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै, अनेन मन्त्रेण दीपंप्रज्वाल्ययंत्रमध्येस्थापयित्वातस्मिन्दीपेयथोक्तरूपांमहाकाली महालक्ष्मीमहासरस्वतींनाम्ध्येययथेष्टां देवीमावाह्यपूर्वोक्तदेवीपूजा विधिना षोडशोपचारेण सम्पूज्य वक्ष्यमाणमन्त्रैः पुष्पांजलिंदद्या त्। ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं० १ सुरासुरैः पूर्वमभीष्ट० २

यासाम्मतं चोद्धत० ३ माहेश्वरिमहामाये० ४ याचस्मृता तत्क्षण मेव० ५ सर्वाबाधाप्रसमनं० ६ सृष्टिस्थिति विनाशानां० ७ शरणागत दीनार्त० ८ सर्वस्वरूपे सर्वेशे० ९ एभिर्नवमन्त्रैः पुष्पांजलिं दत्वा ऽथ तुनर्वाणवमन्त्रं जप्त्वा तद्दशांशं जुहुयात्। प्रयोगानन्तरं श्लोकैः। कटुतैलयुतेनाथ रक्तचन्दन राजिकाः। सहस्राहुतिमात्रेण राजानं वशमानयेत्। मधुचाशोक पुष्पं च रात्रौ हुत्वा च पूर्ववत्॥ चक्रवर्ती भवेद्वश्यश्चण्डी मन्त्र प्रभावतः। अन्ते शतं ब्राह्मणांश्च सुवासिन्यश्च भोजयेत्। प्रयोगो ऽयं महादेवि देवानामपिदुर्लभः। गुह्यं च मम सर्वस्वं कलाविद्यार्थ सिद्धिदम्। एवं विधिना प्रयोगानुसारेण हुत्वा देव्याः प्रसादं संगृह्य ब्राह्मण सुवासिनि वटुक कुमार्यादिपूजां पूर्वोक्त विधिना कुर्यात्। ॐ शिवमस्तु।

इति प्रयोगान्तरे चण्डी दीपदान पद्धतिः॥

—:०:—

॥ अथ कालिका पूजा प्रयोग विधिः ॥

अथ दक्षिणकाली यन्त्रोद्धारादि प्रयोगविधिं वक्ष्ये—तत्रादौ यन्त्रोद्धारः—

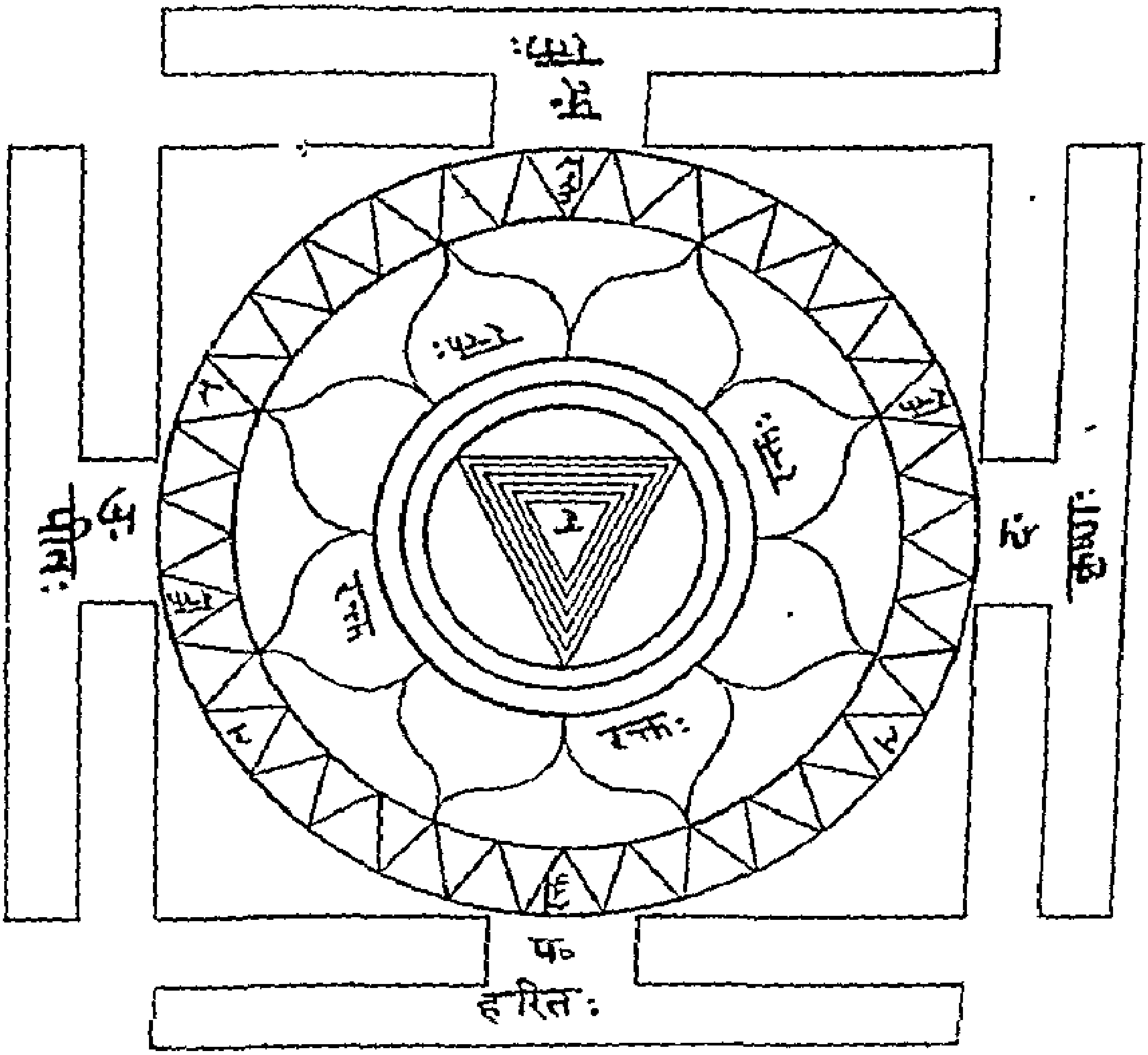
आदौ त्रिकोणमालिख्य त्रिकोणंतद्बहिर्लिखेत्। ततोवैविलिखेन्मन्त्री त्रिकोणत्रयमुत्तमम्। ततस्त्रिकोणमालिख्य लिखेदष्टदलंततः। वृत्तंविलिख्यविधिवल्लिखेद्भूपुरमेककम्। वर्त्तुलत्रयसंयुक्तं प्रकुर्यात्तत्त्रिकोणकम्। ततः कुर्यात्प्रयत्नेन दलाष्टकमलंशुभम्। सिन्दूरेणसुसंसज्य तद्बहिर्मण्डलंलिखेत्। ततश्चतुरंगुलविस्तीर्णं पुनर्मण्डलमालिखेत्। तत्रमानेनवैकुर्याच्चतुःषष्टित्रिकोणकान्। वक्ष्यमाणेनविधिना योगिनीस्तत्रस्थापयेत्। तद्बाह्येयत्नतोमन्त्री चतुर्द्वाराणिकल्पयेत्। यन्त्रवाह्येषुकोणेषु त्रिशूलानिप्रकल्पयेत्। दलाद्बहिस्तुशोभार्थं स्वेच्छारंगंप्रकल्पयेत्। एवंयंत्रंविलिख्यादौ देवताः स्थापयेत्ततः। मध्येयोन्यांकालिकांच सम्पूज्यस्थापयेत्सुधीः। तत्रआवरणदेवीवामावर्त्तेनस्थापयेत्। कालीवाद्यत्रिकोणस्य सम्मुखेस्थापयेत्ततः। तत्रैवोर्ध्ववामकोणे स्थापयेत्तुकपालिनीम्। तत्रदेव्यादक्षकोणेकुल्लादेवींचस्थापयेत्। तस्मादाभ्यन्तरेकोणे कुरुकुल्लांचसम्मुखे। तत्रदेव्यावामकोणेस्थापयेत्तुविरोधिनीम्। तत्रदक्षेविप्रचित्तां द्वितीयेतुत्रिकोणके। तस्मादाभ्यन्तरे ऽ उग्रांसम्मुखेचत्रिकोणके। उग्रप्रभांवामभागे त्रिकोणेतत्रस्थापयेत्। तत्रदेव्या

दक्षभागे दीप्तांतिग्रपुर्यानिपु ॥ नैर्ऋत्यामन्मुखेवाण तस्मादान्य तदनिते । घनावामवलम्बांत दन्तेगातुर्थकनिवे । तान्यारपथमगकाणे माता ॥ तु सम्मुख वामदग्नेन्द्रमर्मात मुद्रामि ांचस्थापयत मध्येद्यान्य तदेन्द्रां काम्निास्थापितापुरा । तत्रैव्यादृचभाग महाकालमस्थापयत् । तौ तो देव्यास्त्रैरमध्ये दद्या त्रनामिमांगुणाम् । तत्र पूर्वादिदिग्भागेन स्थावर्तममुणा । अष्टाम्बे च अष्ट शक्तीनास्थापनकथयाम्यहम् । पूर्वस्यादिशि ब्रह्माणी मनीनारायणीपरा । माहेश्वरीदक्षिणस्यां श्री चामुण्डापश्चिमेर्नऋते । पश्चिमे ात कौमारी वायव्ये चापराजिताम् । उत्तरस्यातुवाराही मीशाने नारसिंहिकाम् । कमलानेनतानन्तो भैरवानष्टकाञ्छुभान् । मग्ल न्यनर ान पूर्वादिक्रमतो न्यसेत् । अमिताङ्गोरुरुश्चण्डो क्रोधोन्मत्तोनलपरो । कपालीभीषणश्चैव महारश्चाष्टभैरवा ॥ तनर्वेवाम गागण भैरवी पृत्र नमा । तगामानिर मयदने स्थापनाय प्रमगात श्री भैरवीच पूर्वस्मिन्नीशाने महाभैरवीम् । उत्तरे सिद्दानन्नीर वायव्ये धूम्रभैरवीम । पश्चिमे भीमरूपाच ह्युमत्ता चैर्नैऋते ॥ दक्षिणेच घरोरुणां मग्नामाह्न भैरवीम् । तत स्वतम्मुन्नमन्त्री वामारान्न योगिनी ॥ पूर्वाक्त भटन्वयस्थापयद्भक्तिभावत । वनि मतानुसारेण कथिता पशुघातने । ननिया कालरायन नित्यपूजा विधामया ॥ **योगिनी नामानि हेमाद्रौ**—

दिव्ययक्षरी महामाया सिद्धेश्वरी तथयच । गणेश्वर च नताक्षी डाकिनीचैव कालिका ॥ ॐकारी रुद्रवेताली कालरात्री निशाचरी हींकारीभूतडामर्युर्ध्वकेशी चविक्षिणी ॥ शुष्काङ्गी नरभोजीच भराडीवीरभद्रका । रक्तमो घोररक्ताक्षी विरूपाच भयंकरी ॥ भासुरी रुद्रवताली अपर्णा त्रिपुरान्तका । भरा ध्वमिनीचैव कौविनीदुर्मुखी तथा । प्रेतवाही खट्कीच नाम्नी यमदूतकी । कराल चैव चैवघरद्युषाणी क्षधलम्बोष्ठिरातधा । कालाग्नि गृहिणी चक्री मालिनी मग्नयाणनी । धूम्राक्षी कलहाचन कपाली भुवनेश्वरी स्फाराक्षाकार्मुकीचन लौकिकी काक दृष्टिका मत्स्यग्रवासुग्रीचिय प्रेरणी चव व्याघ्रिका । ककशो प्रेतभक्षीच वीर कामाक्षिकातथा चन्द्राचैव वराहीव तथव सुम धारिणी कामाक्षीचैव उड्डाणी नागवरीच योगिनी । महालक्ष्मी रचतु पञ्चयोगिन्य काथत जवै । नाममन्त्रश्चतु य ते प्रणवनमर्मविन्नैः । पूजनाया प्रयत्नेन पाद्यधूपादिभिस्तथा । धनयाथ लोकपाला निद्रादीस्थापयेत्ततः । ततोवनादि शस्त्राणि स्थापयदद्वार रक्षणं । पूर्वादिन विन नन यन्त्रदेवांश्चसंस्थापयेत । तत्रथेभ्य अकृष्ण पूजा पद्धतिरुत्तमा । दीक्षितानां न्यायाय देवा न्न धीमता । कालीमन्त्रच सवदये तन्नाङ्गी विधानत ॥ कालीवीजत्रयप्रोक्त या स जावीजद्वयतत । हैँकारीद्वौ तत पश्चाद्दक्षिणेका लिकातत । कालीवीज त्रयतस्मा त वाचीजद्वयपठन् । द्रौस्वाहा त स्वाहा कालामन्त्र न्दाहृत ॥ १ ॥ प॥ १ स्पष्टम् ॥

॥ इति कालिकामन्त्रोद्धारविधिः ॥

॥ दक्षिण कालिका यंत्रोद्धारः ॥



॥ अथ कालिका यंत्रपूजापद्धतिः ॥

अथ चोपासकः प्रातर्नित्यक्रियां कृत्वां ऽनुष्ठानविधौ श्री देव्यामंदिरे ऽथवा यत्रकुत्र चिद्यंत्रं पूर्वोक्त विधिना शुद्धायां भूमौ गौमयमृदोपलिप्य ॥ तत्र यंत्रोद्धारानुसारेणाद्यायंत्रं निर्माय- पूजामारभेत्---ततोयंत्रसमीपं कीयद्दूर मागत्य गुरुं प्रणम्यआचान्तः कुशहस्तोमौनीभूत्वा पापप्रशमनार्थं देवींप्रार्थयेत्। ॐ देवित्वत्प्रकृतंचित्तं पापाक्रान्तमभून्मम। तन्निस्सरतु चित्तान्मे पापंहूँफट्चतेनमः। सूर्यसोमोयमः कालोमहाभूतानि

पंचच। एते शुभाशुभस्येह कर्मणोनवसाक्षिणः। इति संप्रार्थ्य यंत्रसन्निधौगत्वा, ॐ क्रीं कालिकायैनमः, इतिमंत्रेणाचम्य, ॐ मणिधारिणि वज्रिणि शिखरिणि सर्वलोक वशंकरि हूँ फट् स्वाहा इतिशिखांबध्वा। ॐ वज्रोदके हूँ फट् स्वाहा-इति जलंगृहीत्वा- ॐ हूँ स्वाहा इति करेआदाय- ॐ ह्रीं विशुद्धसर्वपापानिशमय, अशेष विकल्पमपनय हूँ फट्स्वाहा-इतिपादौप्रक्षाल्य ॥ ॐ कालिकायैनमः। ॐ कपालिन्यैनमः। इतिदशकरांगुलिभिरोष्ठौ द्विरुन्मृज्य। ॐ कुल्लायैनमः। इतिहस्तौप्रक्षाल्य। ॐ क्रीं कालिकायैनमः इतिमंत्रेण, संकुचितांगुलिभिर्मुखं-तर्जन्यंगुष्ठाभ्यांनासिकां, अनामिकागुष्ठाभ्यांकर्णौ, अंगुष्ठाकनिष्ठाभ्यांनाभिम् पाणितलेनहृदयम्। सर्वांगुलिभिर्मस्तकम्। भुजौचस्पृशेत्, ततो ललाटादिद्वादशांगेषु रक्तचन्दनेन त्रिपुंड्राकृतिद्वादश तिलकानि कुर्यात् ततः ॐ पवित्र वज्र भूमे हूं फट् स्वाहा इति भूमिमभिमंत्र्य, ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनायनमः, इतिजलेनाभ्युक्ष्य त्रिकोणंविलिख्य, ॐ आसुरेखेवज्ररेखे, इति मंडलंकृत्वा। तन्मध्येत्रिकोणेहसौं, प्रेतबीजंविलिख्य, ह्रीं आधारशक्ति कमलासनायनमः, इत्यासनं संपूज्य—ॐ अनन्तायनमः, ॐ विमलासनायनमः, ॐ पद्मासनायनमः, इतिमंत्रैः कुशानास्तीर्य, तदुपरिव्याघ्राजिनं कम्बलासनंवा प्रकल्प्यतत्रासने—ॐ क्रीं कालिकायैनमः, इत्युक्त्वा वामोरूपरि दक्षिणपादंकृत्वा पूर्वाभिमुखउत्तराभि मुखोवाभूत्वा, ॐ आसनमंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः सुतलंछंदः कूर्मोदेवता आसनपरिग्रहे विनियोगः—ॐ पृथ्वीत्वया धृता०। ततोदेव्यावामे त्रिकोणं विलिख्य मध्येरमिति वन्हिबीजं विलिख्य तत्रदीपपात्रं संस्थाप्य तैलेनापूर्य रक्तचतुर्वर्तिकायुतं कृत्वा रमितिप्रज्वाल्यअवगुंठन मुद्रयावगुंठ्य, सकलीकरण मुद्रयासकलीकृत्य, ॐ दें दीपनाथ भैरवायनमः इति पाद्यादिभिः संपूज्य, ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय० इतिसंप्रार्थ्य। ततोर्घ्यं स्थापयेत्--ततः स्ववामे त्रिकोण वृत्तभू-

पुरात्मकं मण्डलं विलिख्य—ॐ आं आधारशक्तिभ्योनमः इति पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य, ॐ हुः पूजार्घस्थापयामि इतितत्र त्रिपादिकां निधाय, ॐ फट् इतिप्रक्षालितार्घं त्रिपादिकोपरिनिधाय ॐ क्रीं नमः इति जलेनापूर्य,, ॐ गंगेचयमुनेचैव० । क्रीं कालिकायैनमः इति गंधाक्षतपुष्पकुशैरभ्यर्च्य, ततोऽर्घजलेन—ॐ क्रीं दक्षिणकालिकायैनमः, इति पूजा सामग्रीमभिषिंच्य, ॐ हूँफट्—इति चतुर्दिक्षुक्रोधदृष्ट्यानिरीक्ष्य गौरसर्षपानादाय ॐ अपसर्पन्तुतेभूता येभूताभूमि संस्थिताः । येचात्र विघ्नकर्तारस्तेनश्यन्तु शिवाज्ञया, इत्युक्त्वासर्षपांश्चतुर्दिक्षुक्षिपेत । ततोवामे ॐ सर्वेभ्योगुरुभ्यो नमः—इतिप्रणमेत्, दक्षिणे ॐ गणेशायनमः—पुरतः ॐ दक्षिणकालिकायैनमः— प्रणमेत् । ततो रक्तचंदन पुष्पाक्षतानादाय ॐ हूँ इति मंत्रेण कराभ्यामर्दयित्वा ॐ क्लीं इति दक्षिणहस्तेन समृज्य—ॐ तत्सत्—इति वामहस्तेनाघ्राय । ॐ ह्रीं—इत्यैशान्यां नाराच मुद्रयापरित्यक्त्वा पठेत्—ॐ तेसर्वेविलयंयान्तुयेमां हिंसन्ति हिंसकाः । मृत्युरोगभयक्रोधाः पतन्तुरिपुमस्तके । अथात्मनि षडंगन्यासं कुर्यात्—ॐ क्रां हृदयायनमः । ॐ क्रीं शिरसेस्वाहा ॐ क्रूँ शिखायैवषट् । ॐ क्रैं कवचायहुम् । ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । क्रः अस्त्रायफट् । इति तालत्रयं दत्वा ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ क्रूँ मध्यमाभ्यांनमः । ॐ क्रैं अनामिकाभ्यांनमः । ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यांनमः । ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां वौषट् । तत यंत्रोपरि हस्तंक्षिपेत्—ॐ आः सुरेखेवज्ररेखे हूँफट् स्वाहा । इतिस्पृष्ट्वा ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणकालिकायैनमः इति पंचगव्येन संप्रोक्ष्य, ॐ अस्य श्रीदक्षिणकालिका यंत्र प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्माविष्णु रुद्राऋषयः ऋग्यजुः सामानिछन्दांसि अग्निवायुसूर्यस्तत्वानि प्राणाख्या पराशक्तिश्चैतन्य रूपिणी देवता आँ बीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं चातुर्वर्गफलाप्तये श्रीस्वेष्टदेवता दक्षिणकालिका यंत्रप्राण प्रतिष्ठापने

विनियोगः तत यंत्रोपरि हस्तंनिधायन्यासं कुर्यात्—ॐ क्रींब्रह्म विष्णु ऋषिभ्योनमः शिरसि ॐ क्रीं ऋग्यजुः सामछंन्दो भ्योनमः रुद्रमुखे। ॐ क्रीं चैतन्यरूपिणी प्राणाख्यापराशक्ति देवतायैनमः हृदये। ॐ ऐं वीजायनमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तयेनमः पादयो। ॐ क्लीं कीलकायनमःसर्वाङ्गे। एवंन्यासं यंत्रेविधाय वक्ष्यमाण मूलमंत्रमष्टोत्तर शतं जपेत्—ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ चं सं हं सं ह्रीं ॐ हंसः श्रीमद्दक्षिणकालिकायाः पद् त्रिकोणाष्टदल भूपुरात्मक यंत्रस्य सजीव वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राण प्राणः सर्वेन्द्रियाणिचेहागत्य सुखंचिरं तिष्ठंतुस्वाहा। ॐ यंत्र-राजायविद्महे महायंत्रायधीमहि। तन्नोयंत्रः प्रचोदयात्। इति दशवारं जप्त्वा। रक्त चन्दनालोडिनाक्षत पुष्पैराधार शक्त्यादि पूजनंकुर्यात्—ॐ ह्रीं आधारशक्तिभ्योनमः॥ ततः पीठ शक्तीः पूजयेत्—ॐ जयायैनमः। ॐ विजयायैनमः। ॐ अजितायैनमः। ॐ अपराजितायैनमः। ॐ नित्यायैनमः। ॐ विलासिन्यैनमः। ॐ दोग्ध्र्यैनमः। ॐ अघोरायैनमः। ॐ मंगलायैनमः। ॐ ह्रीं कालिकायोग पीठात्मनेनमः। ॐ ह्रीं सदाशिवमहाप्रेनपद्मासनायनमः। एवं यंत्रं प्रतिष्ठाप्य., आचार्य वृणुयात्—वरणद्रव्यमाचार्यंच संपूज्य संकल्पं कुर्यात्—ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकराशिरमुकगोत्र प्रवरान्वि-तोऽमुकोऽहं चातुर्वर्ग फलाप्तये श्रीस्वेष्टदेव्या दक्षिण कालिकाया यंत्र पूजानार्थमाचार्यत्वेनत्वां वृणो वरणद्रव्यं दत्वा प्रार्थयेत॥ ॐ आचार्यस्तु यथास्वर्गे०। तत आचार्यो यजमान द्वारा पूजनं कारयेद्वा स्वयं कुर्यात्। ततहस्ते रक्ताक्षत पुष्पाण्यादाय मध्य त्रिकोणे कालींध्यायेत्—ॐ क्रीं कराल वदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजां कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुंडमालाविभूषिताम्। शव-रूप महादेव हृदयोपरिसंस्थिताम्। शिवाभिर्घोर रूपाभि श्चर्दिक्षुसमन्विताम्। आवाहनम्—आत्मसंस्थामजांशुद्धां त्वामहं म्परमेश्वरीम्। आरण्यमिव हव्यांशंयंत्र यावाहयाम्यहम्। ॐ

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ-दक्षिणकालिकायैनमः । भगवति दक्षिण कालिके सावरण शक्तिसहिते इहागच्छेहतिष्ठ तिष्ठ । ॐ देवेशि भक्ति सुलभे परिवारसमन्विते । यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ॥ इति संस्थाप्य,, पुष्पासनम्—ॐ अस्मिन्वरासने देविसुखासीना ऽ क्षरात्मिका । प्रतिष्ठिता भवेः सात्वं प्रसीद परमेश्वरि ॥ ॐ एहिभगवति दक्षिण कालिके इहप्रतिष्ठिताभव, इहसन्निधेहिच इहसन्निरुंधस्व ॥ ॐ क्रीं भगवति दक्षिणकालिके, इह सम्मुखीभव । ॐ हुँ भगवति० इह अवगुंठिताभव ॐ दशपीयूष वर्षिण्या पूरयेयज्ञविष्टरम् । मूर्त्तौवा यज्ञसंपूर्त्तौस्थिरा भवमहेश्वरि ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणकालिकायै नमः,, इत्यंजलिमुद्रया स्थिरी करणं कृत्वा देवतांगेवक्ष्यमाण षडंगन्यासेन सकलीकरणं कुर्यात्–तद्यथा–क्राँ हृदयायनमः, क्रीं शिरसेस्वाहा, क्रूँ शिखायैवषट्, क्रैं कवचायहुम्, क्रौँ नेत्रत्रयायवौषट्, क्रः अस्त्रायफट् ॥ ततोयंत्रे-वक्ष्यमाण लेलिहान मुद्रया प्राणस्थापनंकुर्यात्–तद्यथा—(तर्जनी मध्यमानां समां कुर्यादधोमुखीम् । अनामायां क्षिपेद्‌द्धांऋजुंकृत्वाकनिष्ठिकाम् । लेलिहानात्ममुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता) ॐ अस्यश्री दक्षिण कालिका प्राणस्थापन मंत्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्राऋषयः ऋग्यजुः सामानि छन्दांसिअग्निर्वायुः सूर्यस्तत्वानि प्राण प्रख्यापराशक्तिः चैतन्यरूपिणीदेवता आँ वीजं ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकं चातुर्वर्ग फलाप्तये श्री स्वेष्टदेवता दक्षिण काल्याः प्राणस्थापने विनियोगः ॥ ततो यंत्रोपरि-लेलिहानां मुद्रांकृत्वा पठेत्—ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ ह्रों ॐ क्षंसंहंसः ह्रीं ॐ हंसः श्री मद्दक्षिणकालिकायाः प्राणाः इह प्राणाः ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रं लँ वँ शँ पँ सँ ह्रों ॐ क्षँसँहँसः ह्रीं ॐ हँसः श्री मद्दक्षिण कालिकाया जीवइहस्थितः,, ॐ आँ ह्रीं क्रों यँ रँ लँ वँ शँ पँ सँ ह्रों ॐ क्षँसँहँसः ह्रीं ॐ हँसः, श्रीमद्दक्षिणकालिकायाः, वाङ्-

मनश्चक्षुः श्रोत्रघ्राणप्राणाः सर्वेन्द्रियाणिइहागत्य सुखंचिरं तिष्ठन्तुस्वाहा। ततोवारत्रयं मूलमंत्रेणार्घोदकेन प्रोक्षणं कुर्यात्—ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणकालिकायैनमः, इति यंत्रं संप्रोक्ष्य,,—ॐ ऐं-इति मंत्रेण महायोनिमुद्रां दर्शयित्वा-खड्ग मुद्रांदर्शयेत्—ततः पुष्पांजलिंदद्यात्-ऐं पादयोः, ऐं जानुनि, ऐं नाभौ, ऐं हृदये, ऐं शिरसि,, ततः पाद्यम्-ॐ यद्भक्ति लेश संपर्कात्परमानन्द संभवः। तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये॥ (ॐ क्रीं ३ ह्रीं २ हूँ २ दक्षिणकालिकायैनमः इदंपाद्यं निवेदयामि॥ इति मूल मंत्रान्ते सर्वत्रसपर्या निवेदनं कुर्यात) आचमनम्—ॐ वेदानामपि वेदायदेवानां देवतात्मने आचमं कल्पयामीशे शुद्धानां शुद्धिहेतवे॥मू०॥ मधुपर्कम्--सर्वकालुष्य हीनायै परिपूर्णसुखात्मने। मधुपर्कं मिदंदेवि कल्पयामिप्रसीदमे॥मू०॥ पुनराचमनीयम्--ॐ उच्छिष्टोप्यशुचिर्वापियस्याः स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति तस्यै तेपुनराचमनीयकम्॥ अर्घ्यम्-ॐ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्द लक्षणम्। तापत्रयं विनिर्मुक्तं तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम्। ततः सतैल हरिद्राद्युद्वर्त्तनम्--ॐ गृहाण मातः स्नेहेन गात्रोद्वर्त्तन हेतुकम्। हरिद्रामिश्रितं तैलं ददामि स्नेहमुत्तमम्। स्नानीयम्--ॐ परमानन्द बोधाब्धि निमग्न निज मूर्त्तये। सांगोपांगमिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश्वरि। वस्त्रम्-ॐ मयाचित्र पटच्छन्नं निजगुह्योरु तेजसे। निवारणाय विज्ञान वासस्ते कल्पयाम्यहम्। भूषणानि--ॐ स्वभाव सुन्दरांगायै नाना शक्त्याश्रितेशुभे। भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते॥ चन्दनम्--ॐ नानागंध समायुक्तं केशरेण सुरंजितम्। गृहाण चन्दनंमातः सर्वशक्तिसमन्विते। सिन्दूरं-सिन्दूरं परमं दिव्यं भालशोभा करंपरम्। परमानन्द सौभाग्ये गृहाणत्वंच कालिके॥ अक्षतम्—ॐ अक्षतान्धवलांन्देवि सर्वसौभाग्यदायिनि। चन्दनोपरिशोभार्थं गृहाण परमेश्वरि। पुष्पं--ॐ देवोपवन संभृतं नानावर्णमनोहरम्। अमंद सौरभं पुष्पं गृह्यतां जगदंबिके

धूपम्--ॐ वनस्पति रसोत्पन्नं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । आघ्रेयः सर्व देवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम्--सुप्रकाशो महाज्योतिः सर्वतस्तिमिरा पहः । सबाह्याभ्यन्तर ज्योतिर्दीपो ऽ यं प्रतिगृह्यताम् ॥ ततो नाना व्यंजनयुतं नैवेद्यं सत्पात्रे निधाय, भूमौगंधेन त्रिकोण चतुरस्रमण्डलं कृत्वा तदुपरि तन्नैवेद्यपूरितंपात्रं निधाय,, ॐ फट्,, इति मंत्रेण द्वादशवारं जप्त्वाभिरक्ष्य,, ॐ यँ,, इतिवायुबीजेन संशोष्य, वामकरतलेदक्षिणहस्तपृष्टं कृत्वा,, ॐ रँ, इति वन्हिबीजेन द्वादशवार जप्तेन सन्दह्य, दक्षिणहस्ताग्रेण संस्पृश्य,, ॐ वँ,, इति सुधाबीजेन धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणकालिकायैनमः ॥ इति मंत्रेणकराभ्यां संस्पृश्याष्ट वारमभिमंत्र्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य गन्धपुष्पैः समभ्यर्च्यतत्त्वाख्य मुद्रया देव्यै नैवेद्यं निवेदयेत् । ततः सजलशंखंहस्तेनिधाय तज्जलेन मूलमन्त्रेणाभिषिंच्य, ॐ सत्पात्रसिद्धं सहविर्विविधानेकभक्षणम् । निवेदयामिदेवेशि कृपयात्वंगृहाणतत् । ततो ग्रासमुद्रांप्रदर्श्य शंखोदकेननिवेदयेत् । ॐ अखण्डानन्दसम्पूर्णं गृहाणजलमुत्तमम् । समस्तदेवदेवेशि सर्वावाप्तिकरंपरम् ॥ ततः पंचप्राणादिमुद्राभिः—ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ पानायस्वाहा, ॐ समानायस्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ व्यानायस्वाहा, जलंनिधाय—ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ दक्षिणकालिकायैनमः, इदंनैवेद्यं निवेदयामिनमः, इदानीं मद्यपैः सुरादेया, नतुब्राह्मणैः, मन्त्रः—ॐद्राक्षादिपरमंदिव्य मासवंतृप्तिकारकम् ॥ गृहाणपरयाप्रीत्या कालिकेयुद्धदुर्मदे ॥ जलम्—नैवेद्यान्तेजलंमातः करास्यपादशोधनम् ॥ प्राणतृप्तिकरं चैव गृहाणजगदम्बिके ॥ ततो नैवेद्यवत्ताम्बूलमभिमन्त्र्यवामकर तल उत्तानदक्षिणहस्ते, पूगीफलमेलालवङ्गखादिरयुतं नागवल्ली दलंचनिधाय,—ॐ एलालवङ्गकर्पूरनागवल्लीदलैर्युतम् । पूगभागेरितंदेवि ताम्बूलंगृह्यतांनमः, पूर्ववन्मूलमन्त्रेण निवेदयेत् ॥ उपायनम्—उपायनीभूतमिदंद्रव्यं देविददाम्यहम् । गृहाणकालिके

मातः सर्वारिष्टंनिवारय, ततो मुखप्रदेशेतत्त्वमुद्रांप्रदर्श्यहस्तेपुष्पं निधाय--ॐ सविन्मयेपरेशानि परामृतेचरुप्रिये, अनुज्ञांकालिकेदेहि परिवारार्चनायमे। तत आवरणपूजामारभेत्—पुष्पंधृत्वा ध्यायेत्- ॐ सर्वाःश्यामाअसिकरा मुण्डमालाविभूषिताः। तर्जनींवामहस्तेन धारयन्त्यश्चसस्मिताः॥ ततोवाह्यषष्टत्रिकोणस्याधःकोणे-ॐ क्रीं कालींस्थापयामिनमः, ततस्तत्रिकेदेव्यावामकोणे–ॐ क्रं कपालिन्यैनमः स्था०। तत्रदक्षिणभागे ॐ क्रुं कुल्लायैनमः स्था०। एवंसर्वत्र वामावर्त्तेनस्थापयेत्–ततोवाह्या-द्वितीयाभ्यंतरत्रिकोणस्याधःप्रदेशे–ॐ क्रुं कुरुकुल्लायैनमः स्था० तत्रदेव्यावामे—ॐ विं विरोधिन्यैनमः स्था०। तत्रदक्षे—ॐ विं विप्रचित्तायैनमः स्था०। ततो वाह्यातृतीयत्रिकोणाधःप्रदेशे–ॐ उँ उग्रायैनमः स्थापयामि। तत्रदेव्यावामे—ॐ उँ उग्रप्रभायैनमः स्था०। तत्रदक्षे—ॐ दीं दीप्तायैनमः स्था०। ततो वाह्याचतुर्थत्रिकोणाधःप्रदेशे—ॐ नीं नीलायैनमः स्था०। वामे–ॐ वँ घनायैनमः स्था०। तत्रदक्षे—ॐ वँ वलाकायैनमः। स्था० ततोवाह्यात्पंचम त्रिकोणस्याधः प्रदेशे—ॐ मां मात्रायैनमः। वामे—ॐ मुँ मुद्रायेनमः। दक्षे—ॐ मि मित्रायैनमः स्थापयामि॥ ततो मध्यत्रिकोणेदेव्या दक्षिणभागेमहाकालंध्यायेत्—पुष्पम्–ॐ अञ्जनाद्रिनिभंदेवं पिंगकेशंद्विवाहुकम्। आशांवरं सर्पभूषा भूषितंप्रणमाम्यहम्, इति ध्यात्वा। ॐ ह्रीं च्रीं हूँ महाकालाय ह्रौं महादेवाय क्रीं कालिकायै ह्रौं। इति मन्त्रेण पाद्यादिभिःसम्पूज्य। ॐ कालिकादि पंचदशत्रिकोणस्थ शक्तिभ्योनमः, इति सम्पूज्य, ततोजलंगृहीत्वा—ॐ अभीष्टसिद्धिं मेदेहिशरणागतपालिके। भक्त्यासमर्पयेतुभ्य मिदमावरणार्चनम् इति शंखोदकेनदेव्या वामहस्तेआवरणार्चनंसमर्पयेत्॥ ततोऽष्टदलकमलेपूर्वादि दक्षिणावर्त्तक्रमेणाष्टशक्तीरावाहयेत्–पूर्वदले–पुष्पाञ्जतिः–ॐ दण्डंकमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रंमहाभयम्। विभ्रतीं कनकच्छायां ब्राह्मीमावाहयाम्यहम्॥ ॐ ब्रों ब्राह्म्यैनमः।

स्थापयामिपूजयामि ॥ अग्निकोणे–ॐ नारायणींमहामायां शंखं चक्रंचबिभ्रतीम् । चतुर्भुजांसौम्यरूपां देवीमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ ई श्रीनारायण्यैनमः स्था० पू० । दक्षिणे–ॐ महिषघ्नीं महामायां त्रिशूलवरधारिणीम । आवाहयामिदेवेशींदेवीं माहेश्वरींपराम् । ॐ उँ माहेश्वर्यैनमः स्था० पू० ॥ नैर्ऋते–ॐ खड्गं चक्रं कपालंच दधतींश्यामलांशुभां । आवाहयामिदेवेशींचामुण्डां मुण्डघातिनीम् । ॐ ॠँ श्रीचामुण्डायैनमः । पश्चिमे–ॐ पाशं दण्डञ्चखड्गञ्च बिभ्रतींपरमेश्वरीम् । आवाहयामिदेवेशीं कौमारींकामदायिनीम् ॥ ॐ लृँकौमार्यैनमः ॥ वायव्ये–अपराजितांमहामाया मपराणांनिषूदिनीम् । करालास्यांरौद्ररूपां देवी मावाहयाम्यहम् ॐ ऐं अपराजितायैनमः ॥ उत्तरे–ॐ तुण्डप्रहार विध्वस्तांदंष्ट्रो धृतवसुन्धराम् । आवाहयामि वाराहीं धुर्धुरां घोरनादिनीम् ॥ ॐ औंवाराह्यै नमः । ईशाने–ॐ पंचास्यामुग्रवदनां शिवाशतनिनादिनीम् । आवाहयामिदेवेशींनारसिंहीं महाबलाम् । ॐ अः नारसिंह्यैनमः । एवमष्टशक्तीः सम्पूज्य जलंगृहीत्वा–ॐ अभीष्ट सिद्धिंमेदेहि शरणागतपालिके । भक्त्यासमर्पयेतुभ्यमिद मावरणार्चनम् । इति देव्यावामहस्तेनिवेदयेत् । ततो मंडलाभ्यंतरेकमलपत्रयोरंतरालेषु पूर्वादिक्रमेणदक्षावर्त्तेन भैरवांस्थापयेत्–पूर्वे–ॐ यँ यँ यँ यक्षरूपं दशदिशिकुपितं भूमिमामोडयंतं । सँ सँ संहारमूर्तिं शिरसिवरजटा शेखरंचन्द्रबिंबम् । दँ दँ दँ दीर्घकायं प्रविकृतनयनमूर्ध्वरोमं सहासम् । पँ पँ पँ पापनाशमसितवदनकं भैरवं स्थापयामि । ऐं ह्रीं अँ असितांगभैरवायनमः स्थापयामि पूजयामि, एवंसर्वत्र । आग्नेये–ॐ रँ रँ रँ रक्तवर्णं कटितट कठिनंतीक्ष्णदंष्ट्रंकरालं, घँ घँ घँ घोरघोषं घघघ च घटितं घर्घरा घोर नादम् । कँ कँ कँ कंकरूपंकरधृतकुलिशं भैरवंरुरुसंज्ञम् । दँ दँ दँ दिव्यदेहं बहुविधवरदमाग्नेके स्थापयामि । ऐं ह्रीं इँ रुरु भैरवायनमः स्था० पू० । दक्षिणे ॐ चँ चँ चँ चण्डवेगं

प्रचुरभयकरांस्त्रकुङ्किर्णीं लेलिहन्तं, कूँ कूँ कूँ कूष्णदेहं कुटिलनग्न मुग्वं चंडसंज्ञमहोग्रम्। रूँ रूँ रूँ रूण्डमालं व्यपगतवसनं ताम्रनेत्रंकरालं, कँ कँ कँ कालदंष्ट्रं करधृतकवचं भैरवं स्थापयामि। ऐं ह्रीं ऊँ चण्डभैरवायनमः स्था० पू०। नैर्ऋते—ॐ खँ खँ खँ खड्गहस्तं खग्वग्व वदतंक्रोधसंज्ञचलंतं, हँ हँ हँ हस्तिहस्तं त्रिभुवन निलयंकश्मलंभीमरूपम्। भूँ भूँ भूँ भूतनाथं भवभयभवनं रक्तनेत्रंकरालं, उँ उँ उँ उग्रदंष्ट्रं स्वजनभयहरं भैरवं स्थापयामि। ऐं ह्रीं क्रूँ क्रोधभैरवायनमः स्था० पू०। पश्चिमे—ॐ शँ शँ शँ शंखहस्तं भुवनविजयिनं दीर्घजिह्वंविशालं, सँ सँ सँ स्वेदश्विन्नंशशधरधवलं भीममुन्मत्तसंज्ञं। भँ भँ भँ भव्यभूतिंकिलकिलकगिनं गेहगेहेललंतं, वँ वँ वँ वारुणास्त्राकलितकरयुगं भैरवं स्थापयामि ऐं ह्रीं लूँ उन्मत्त भैरवायनमः स्थापयामि पूजयामि। वायव्ये ॐ छुँ छुँ छुँ छुन्नदेहं विषविषममना कालकालंकरालं, वँ वँ वँ वायुवेगंवहुविधगमनं, कोटिज्योतिः प्रकाशं। हुँ हुँ हुँ कारनादं भुवनभयहरंगर्जनं रौद्ररावं, कापालंधारयंतं निजकरयुगले भैरवं स्थापयामि। ऐं ह्रीं ऐं कपाली भैरवायनमः स्था० पू०। उत्तरे ॐ यों यों यों योगिराजं सकलगुणमयं भीषणारव्यंदयालुं, शूँ शूँ शूँ शूलहस्तं डमरुरवयुतं डिण्डिमं वादयंतम्। रूँ रूँ रूँ रुद्ररूपं भुवनभयहरं मुंडमालँस्त्रिनेत्रं, ऐं ऐं ऐश्वर्यनाथं स्वभिमत वरदं भैरवं स्थापयामि। ऐं ह्रीं श्रों भीषण भैरवायनमः स्था० पू०। ईशाने— सँ सँ सँ ह्रारूप मदनिवहुविधं द्वादशार्कप्रकशम्, भँ भँ भँ भस्मदेहं कपिलवर जटाजूटविस्तीर्ण केशम्। ईं ईं ईशान रूपं त्रिभुवनदहनेकोप कोपाग्निरूपं वन्देहंभूतनाथं सकलभवहरं भैरवं स्थापयामि ऐं ह्रीं श्रँ संहार भैरवायनमः, स्था० पू०। पाद्यादिभिः संपूज्य जलं गृहीत्वा ॐ अभीष्ट सिद्धिंमेदेहि शरणागतपालिके। भक्त्यासमर्पयेतुभ्य मिदमावरणा र्चनम्। तत्रैवपूर्वादितोवामावर्त्तनाष्टौ भैरवीः स्थापयेत्—ध्यायेत् ॐ भैरव्योष्टौ महामायाः किंकिणीजालमंडिताः। सायुधावरदास्सर्वा

स्थापयामीह भक्तितः । पूर्वे ॐ श्री भैरव्यैनमः स्थापयामि पूजयामिः । एवंसर्वत्र ईशाने ॐ महाभैरव्यैनमः० । उत्तरे–ॐ सिंहभैरव्यैनमः । वायव्यै– ॐ धूम्रभैरव्यैनमः । पश्चिमे—ॐ ॐ भीमभैरव्यैनमः । नैर्ऋते ॐ उन्मत्तभैरव्यैनमः । दक्षिणे–– ॐ वशीकरणभैरव्यै० । आग्नेये–ॐ मोहनभैरव्यैनमः । इति संपूज्य जलंगृहीत्वा ॐ अभीष्ट सिद्धिंमेदेहि शरणागतपालिके भक्त्या समर्पयेत्तुभ्य मिदमावरणार्चनम् । इति जलंदेव्यावाम-हस्ते समर्पयेत् (ततो महिषबलि प्रयोगेकैश्चित्चतुः षष्ठि योगिनीनामपि स्थापनमुक्तम् नित्यपूजा प्रयोगादौतुनासौविधिः । तत्स्थापन क्रमस्तु पूर्वादितोवामावर्त्तेन मंडलाद्बहिरूपमंडलंचतुः षष्ठि त्रिकोणात्मकमाभ्यन्तर मंडल संलग्नं कृत्वा स्थापयेत् । तद्बहिर्द्वारपालस्थापनमितिदिक्) नाममंत्रै योगिनीनां पूजनंस्थापनं च कुर्यात्—ध्यानम् ॐ युध्दोन्मत्ता महादेवीः सर्व सौभाग्यदायिनीः । पूजार्थं च चतुः षष्ठीयोगिनीः स्थापयाम्यहम् ॥ ततो रक्ताक्षतपुष्पैः । ऐं दिव्येश्यैनमः स्थापयामि पूजयामि । एवं सर्वत्र— ऐं महारूपायैनमः० । ऐं सिध्येश्वर्यै० । ऐं गणेश्वर्यै० । प्रेताक्ष्यै० । ऐं डाकिन्यै० । ऐं कालिकायै० । ऐं ओंकायैनमः । ऐं रुद्रवेताल्यै० । ऐं कालरात्र्यै० । ऐं निशाचर्यै० । ऐं ह्रींकार्यै० । ऐं भूतडांवर्यै० ऐं ऊर्ध्वकेशिन्यै० । ऐं विरूपाक्ष्यै० । ऐं शुष्कांग्यै० । ऐं नरभोजनायै० । ऐं भराडयैनमः । ऐं वीर भद्रायै० । ऐं राक्षस्यै० । ऐं घोररक्ताक्ष्यै० । ऐं० विरूपायै० । ऐं भयंकर्यै० । ऐं भासुर्यै० । ऐं रुद्रवेताल्यै० । ऐं श्रीपर्ण्यै० । ऐं त्रिपुरान्तकायै० । ऐं भैरव्यै नमः । ऐं ध्वंसिन्यै० । ऐं क्रोधिन्यै० । ऐं दुर्मुख्यै० । ऐं प्रेतवाहिन्यै० । ऐं कंटक्यैनमः । ऐं त्रोटक्यनमः । ऐं यमदूत्यैनमः । ऐं कराल्य० । ऐं खट्वांग्य० । ऐं० दीर्घलंबोष्टिकायै० । ऐं कालाग्नि गृहिण्यै० । ऐं चक्र्य० । ऐं० मालिन्यै० । ऐं मंत्रयोगिन्यै० । ऐं धूम्रायै० । ऐं कलह प्रियायै० । ऐं कंकाल्य० । ऐं भुवनेश्वर्यै० । ऐं स्फाराक्ष्यै० । ऐं कार्मुक्यै० । ऐं लोलिजिह्वे० । ऐं काकदृष्ट्यै० । ऐं

भक्षिण्यै० । ऐं अधोमुख्यै० । ऐं प्रेरण्यै० । ऐं व्याघ्र्यै० । ऐं कंकण्यै नमः । ऐं प्रेतभक्षण्यै० । ऐं वीर कौमारिकायै० । ऐं चण्डायै० । ऐं वाराह्यै० । ऐं मुंडधारिण्यै० । ऐं कामाख्यै० । ऐं उड्डाण्यै० । ऐं जालंधर्यै० । ऐं महालक्ष्म्यैनमः ॥ इति स्थापयित्वा—ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दिव्येश्वरीमारभ्य महालक्ष्मी पर्यन्त चतुःषष्टियोगिनिभ्यो नमः ॥ इति पाद्यादिभिः संपूज्य,, हस्तेजलं गृहीत्वा—ॐअभीष्ट सिद्धिंमेदेहि शरणागत पालिके ॥ भक्त्यासमर्पयेतुभ्य मिदमावरणार्चनम् ॥ ततोयंत्र वहिरष्टदिदिवन्द्रादि लोकपालानावाहयेत् पूर्वे—ॐ लं इन्द्रायनमः । आग्नये—रँ वन्हयेनमः । दक्षिणे-ॐ यँयमायनमः । नैऋते—ॐ क्षँ निर्ऋतयेनमः । पश्चिमे-ॐ वँ वरुणायनमः । वायव्ये—ॐ यँ वायवेनमः । उत्तरे—ॐ इँ कुवेरायनमः । ईशाने—ॐ ह्रों ईशानायनमः । यंत्रोपर्याकाशे—ॐ ह्रौं ब्रह्मणेनमः । यंत्राधोमूले—ॐ श्रँ अनन्तायनमः ॥ ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्योनमः, इतिसंपूज्य, ततः पूर्वादि क्रमेणैवास्त्राणि स्थापयेत्—पूर्वे—ॐ वंवज्राय नमः । आग्नये- ॐ शँ शक्तयेनमः । द० ॐ दँ दण्डायनमः । नै० ॐ खँ खड्गायनमः । प० ॐ पंपाशायनमः । वायव्ये-ॐ अँ अंकुशाय नमः । उ०-ॐ गंगदायैनमः । ई०—ॐ शँ शूलायनमः । यंत्रोपर्याकाशे- ॐ. पँ पद्मायनमः । यंत्रमूले-ॐ चँ चक्रायनमः । ॐ वज्रादिशस्त्रेभ्योनमः । इनि सम्पूज्य जलंगृहित्वा-ॐ अभीष्ट सिद्धिंमेदेहि शरणगतपालिके । भक्त्यासमर्पयेत्तुभ्यमिदमावरणार्चनम् ततस्त्रिकोणमध्ये देव्यावमोर्ध्वहस्ते ॐ अँ खँ खड्गनाथायनमः । सम्पूज्य, तदधः-ॐ मुँ मुंडयनमः, सं० । दक्षोर्ध्वहस्ते ॐ अँ अभयायनमः । सं० । तदधः-ॐ वँ वरायनमः सम्पूज्य ॐ अभीष्ट सिद्धिंमेदेहि शरणागतपालिके भक्त्यासमर्पयेत्तुभ्यमिदमावरणार्चनम् । इनि सर्वावरणार्चनं देव्यावामकरे समर्पयेत् ततः पाद्यादि नीराजनान्तां संग्रपूजां कृत्वा, वक्ष्यमाण मंत्रपुष्पांजलिंदेव्याः पादयोर्निवेदयेत्—ॐ नमंत्रंनोयंत्रं तदपि

च नजानेस्तुतिमहो । नचाह्वानंध्यानं तदपिच नजानेस्तुतिकथाः ॥ नजानेमुद्रास्ते तदपि चनजाने विलपनं । परंजानेमात स्त्वदनुशरणं क्लेशहरणम् ।१। द्वितीयाम—ॐ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया । विधेया शक्यत्वा त्तवचरणयोर्याच्युतिरभूत् । तदेतत्क्षंतव्यं जननिसकलोद्धारिणि शिवे । कुपुत्रोजायेतक्वचिदपि कुमातानभवति ।२। तृतीयाम्—ॐ जगन्मातर्मात स्तवचरणसेवानरचिता । नवादत्त देविद्रविण मपिभूयस्तवमया । तथापित्वं स्नेहं मयिनिरुपमं यत्प्रकुरुषे । कुपुत्रो जायेतक्वचिदपि कुमाता न भवति ।३। इतिवार त्रयं देव्याः पादयोः समर्प्य, ततोदेव्यंगे षडंगन्यासं कुर्यात—ॐ क्रां हृदयायनमः, ॐ क्रीं शिरसेस्वाहा, ॐ क्रूं शिखायैवौषट्, ॐ क्रैं कवचायहुम् । ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्रः अस्त्रायफट्, एवंन्यासं विधाय पात्रेमधुकर्पूर मिश्रित जलं कृत्वादेवीं तर्पयेत्—ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूँ हूँ, श्री दक्षिण कालीदेवीं तर्पयामि,, नमः ॥ इति द्वादशवारं संतर्प्य घंटां वादयित्वा जयकाली त्युच्चै र्ब्रूयात् ॥ अथबलिप्रयोगः ततोयंत्र वामे भूमौत्रिकोण चतुरस्र मंडलं कृत्वा, तदुपरि पात्रं संस्थाप्य तस्मिन्मांस मापान्न शाकाज्य पायसापूपकाद्यन्यतमं बलिं संस्थाप्य,, हूँ फट्,, इतिजलेनसंप्रोक्ष्य, क्रींनमः, इति गंध पुष्पैरभ्यर्च्य, यं, इतिवायु बीजेनद्वादशवार जप्तेन संशोष्य वामकरतलोपरि दक्षिण हस्तपृष्ठं कृत्वा, रं, इति वन्हिबीजेन षोडशवार जप्तेन धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, हूँ, इत्यवगुंठ्य योनिधेनुमुद्रे प्रदर्शयित्वा तत्त्वमुद्रांच प्रदर्श्य, ॐ क्रीं श्रीं भगवति दक्षिणकालिकायै स्वाहा एपबलिर्नमः । इतिबल्युपरिजलंक्षिप्त्वा नैर्ऋत्यां स्थापयेत् ॥ कालरात्री बलिप्रयोगः—यदि कालरात्री पूजाचेद्रात्रौ छागाद्यन्यतम काम्यबलिर्देयः, तत्र छागपूजापद्धत्या छागंसंपूज्यघातयित्वा तेनैवप्रकारेण देव्यैनिवेद्य, तत्रान्यतमबलिं बलिप्रयोगोक्तप्रकारेण संरक्ष्य, तत्रमंत्रः—ऐं पशो

पद्मे महापद्मे पद्मावति कालरात्रे महायज्ञाधिपेमयोपनीतमिमं बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय, मम सर्वारिष्ठ शान्तिं कुरुकुरु डाकिनीशाकिनी भूतप्रेतादि कृत महाव्यर्थांमहामारींच निवारय निवारय, परविद्यां चाकृष्या कृष्य छिन्धिछिन्धि, भिन्धिभिन्धि खड्गेन निरर्थंकृत निरर्थंकृत मम सर्वापराधान्त्तमस्व। ह्रीं हूँ स्वाहा। इतिमंत्रेण, बलिंचतुष्पथे वानैर्ऋत्ये क्षिपेत्, महिषबलि प्रयोगे यंत्रादतिरिक्तं यंत्रदृष्टिगतस्थाने कीयद्दूरे महिषपूजनार्थं चतुरस्रं स्थानंकृत्वा तत्र महिषमानीय महिषपूजापद्धत्या सम्पूज्य तत्रैव, एकप्रहारेण महिषस्यशिरश्छित्वादेव्यग्रे दृष्टिपथेभूमौ निधाय, पूजोक्तपद्धत्यनुसारतः समर्पणं कुर्यात्। विस्मृत्यापि यंत्रमध्येदेव्युपरिमहापशुछेदनंनकुर्यात्। उक्तं च देवीभागवते— देव्यग्रे निहतायान्ति पशवः स्वर्गमव्ययम्॥ नहिंसा पशुजातत्र निघ्नतां तत्कृते नघ॥ मांसाशनं येकुर्वन्ति तैः कार्यपशुहिंसनम्। अहिंसा याज्ञिकीप्रोक्ता सर्वशास्त्र विनिर्णये,, अत्राग्रशब्द स्यार्थः स्पष्टः देव्यग्रेपशुधातनं नतुयंत्रोपरि॥ कालिकापुराणे— यंत्रंदेव्या शरीरंच नयंत्रेपशुघातनम्। दंभात्कुर्वन्ति येमूढास्तेषां नाशो भवेद्ध्रुवम्॥ यंत्रं तु देव्याः शरीरं नतुपशुघातनार्थं माधारम्। एतत्पशुहिंसनन्तु ब्राह्मणेतर क्षत्रियादीनामुक्तम्॥ मांशाशनं येकुर्वन्तीति—ब्राह्मणस्य कालिका पुराणादिषु साक्षाद्बलिदानस्य निषेधकथनात्क्षत्रियादि विषयक एवायंविधिरितिबोध्यम्॥ उक्तं च शारदातिलके—ब्राह्मणो नियतः शुद्धः सात्विकं बलिमाहरेत्, हिंसायुक्तो बलिस्त्वाद्य वर्णहित्वा प्रशस्यते। आद्यवर्णं ब्राह्मण वर्णंत्यक्त्वे त्यर्थः॥ कालिकापुराणे—सिंहव्याघ्रादिकं दत्वा चात्मवध्यामवाप्नुयात्। मद्यंदत्वा ब्राह्मणस्तु ब्राह्मण्यादेवहीयते,, अवश्यं विहितोयत्र बलिस्तत्र द्विजः पुनः। पिष्ठनापि घृतेनापि निर्मितं तु समर्पयेत्॥ छान्दोग्य श्रुतिरपि— अहिंसन्सर्वभूतान्यन्यत्रतीर्थेभ्यः। नाहिंस्यात्सर्वभूतानीत्यपि,, इत्यादिबहुनिप्रमाणानिशास्त्रेषुसन्ति, ततोदेव्यावामे हस्तमात्र

त्रिकोणं चतुरस्रंवा स्थंडिलं निर्माय पूर्वोक्त होम पद्धत्यनुसारतो ऽ ग्नि स्थापनं कृत्वा मूलमंत्रेण होमंविधाय,, कुमारी पूजनविधिना कुमारीः संपूज्य गोदानादिकं कृत्वा आचार्यादिभ्यो दक्षिणांदत्वा यंत्रपूजास्थल मागत्य कालिकायंत्रस्योत्तराङ्ग पूजनंकृत्वादेवीं रक्ताक्षतपुष्पै विसृजेत्—ॐ गच्छगच्छमहामाये स्थाने मणिपुरे शुभे । इष्ट कामसमृध्यर्थं पुनरागमनं कुरु ॥ इति विसृज्याचार्यो यंत्रोपरितः पत्रपुष्पादिकंगृहीत्वा पूर्वोक्ताभिषेक पद्धत्युक्त प्रकारेण यजमान मभिषिच्य मंत्रतिलकं कृत्वा शीर्दद्यात्तनो ब्राह्मणान्भोजयित्वा यथासुखंविहरेत् ॥

इति दक्षिण कालिका यंत्रपूजा पद्धतिः ।

॥ अथ महिषपूजापद्धतिः ॥

तत्रादौ कर्त्ता पूर्वोक्त विधिना यंत्रं संपूज्य यंत्र वामभागे कंचिद्ब्राह्मणं दैत्यसंहार स्तवराजपाठार्थं कृत्वा सच ब्राह्मणो वीररसेणोच स्वरेण दैत्यसंहार स्तवराजं महिषछेदनावधि पठित्वा कालिकां प्रार्थयेत्,, ततो महिषछेदनार्थं यंत्र दक्षिगनपथे—कीयद्दूरे चतुरस्रं स्थानं कृत्वा, तत्रमंडलोत्तरभागे दृढं काष्टस्तम्भमुच्छ्रित्य स्वयं पूर्वाभिमुखः ॥ तत आचम्य भूतोत्सादनादिकंकृत्वा स्वस्तिवाचनं पठित्वा महापशुं महिषमानयेत्—ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ॥ स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु । ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ँ० शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शांतिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि, ॐशान्तिः३सुशान्तिर्भवतु। ततो महिषायस्तंभसंनिधानेकीयद्दूरे पाद्यार्घ्याचमनीयं दद्यात् ॥ अर्घपात्रे गंधाक्षत पुष्प जलमेकी

कृत्य, महिषायनमः, एतत्पाद्यार्घ्याचमनीय जलं समर्पयामि ॥ ततोमहिषं सर्वांगंस्नापयेत्, तत्रमन्त्राः—ॐ आपोहिष्ठामयो भुवस्तान ऽ ऊर्ज्जेदधातनमहेरणायचक्षसे योवः शिवतमोरसस्त स्यभाजयतेहनः उशतीरिवमातर स्तस्मा ऽ अरङ्गमामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ ऽ आपोजनयथाचनः । महिषायनमः, इदंस्नानीयं जलंसमर्पयामि, ततोमहिषोपरि सहस्रधारताम्रपात्रंकृत्वा तत्सहस्रधाराभिःस्नापयेत्—ॐ वसोःपवित्रमसिशतधारंवसोः पवित्रमसिसहस्रधारं। वसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः ततःपंचसुगन्धमिश्रितजलेन—ॐ गन्धद्वारांदुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीसर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ततः पुष्पोदकेन—ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णंन्निषाणामुम्मईषाण: सर्वलोकम्म ईषाणः । पुनरनेनैवमन्त्रेणनदीजलेनस्नापयेत्—नदीजलाभावेघटे ॐ गंगेयमुनेचैव० इत्यभिमन्त्र्यस्नापयेत्—ततोहरिद्रा रंजितलम्ब चीरेमहिषग्रीवायां विल्वबृक्षशाखांबध्नीयात् ततोललाटेकज्जलमिश्रितसिन्दूरंगन्धपुष्पाणिचदद्यात् ततःकंठेत्रिसूत्रंबध्नीयात्—मंत्रः-ॐ—अवभृथनिचुंपुण निचेरुरसि निचुम्पुणः। अवदेवैर्देव कृतमेनो यासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरराव्णो देवरिषस्पाहि ॥ द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्न स्नातो मलादिव पूतं पवित्रेण वाज्यमापः शुंधन्तुमैनसः ॥ पुष्पमालाम्—ॐ अम्बे अंबिके अंबालिके नमा नयतिकश्चनः। ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। ततो गंधद्वारेति मंत्रेण शृंगान्तरेअर्धचन्द्रकारं रक्तगन्धेन कुर्यात्—रक्तवस्त्रम्—ॐ युवासुवासा परिवीत आगात्सउ श्रेयान्भवसि जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्त स्वाध्योमनसादेवयन्तः ॥ ॐ श्रीश्चनेति मंत्रेण रक्त वस्त्राच्छादित महिषोपरि पुष्पाणि-विकिरेत ॥ श्वेतसर्षपानादाय रक्षाबन्धनं कुर्यात्—ॐ ह्रीं दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा ॥ इति महिषोपरि भ्रामयित्वा चतुर्दिक्षुक्षिपेत ,, ततः पुष्पाञ्जलैः प्रार्थयेत्—ॐ महिषायनमः., ॐ यम-

वाहनायनमः,,ततोमहिपस्य दक्षिण कर्णे मंत्रराजं दशवारं जपेत्-मंत्रः- ॐ ह्रीं दुर्गे दुर्गे रक्षिणि ऐं स्वाहा,, ततः पंचगव्येन प्रोक्षयेत्-ह्रां नेत्रभ्यां वौषट्,, ततः स्तंभंपूजयेत्- ॐ शिवस्वरूपिणे महास्तंभायनमः ,, इति मंत्रेण पाद्यादि नीराजनान्तं संपूज्य सतैल सिन्दूरेणानुलिप्यचाक्षतपुष्पैः प्रार्थयेत्—ॐ स्तंभत्वं शंभुरूपोसि ब्रह्मणा निर्मितःपुरा। अतस्त्वां पूजयिष्यामि पशुवन्धनहेतवे ॥ यथाचलोगिरिर्मेरु र्हिमवांश्चाशिलोच्चयः ॥ सर्वदासिद्धितत्त्वेनस्तंभराज नमोस्तुते ॥ ततः पाशपूजामारभेत्-ॐ महापशुवन्धपाशायनमः ॥ इति मंत्रेण पाद्यादिभिः संपूज्य सतैल सिन्दूरेण पाशमनुलिप्यच । प्रार्थयेत्—ॐ महिषोऽसि-महाकायो भीमरूपी महावलः। एतस्य वन्धनार्थाय पाशतुभ्यं नमोनमः ॥ ॐ वरुणस्य महास्त्राय जंतुवन्धन कारिणे ॥ तुभ्य-न्नमोस्तुपाशाय सारथ्यकठिनत्वचे। ततः कुशपुंजुलिनाद्भिः पशु प्रोक्षणं कुर्यात्- ॐ अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्तसऽएतँ ल्लोक मजयद्यस्मिन्नग्निः सतेलोको भविष्यति तंजेष्यसि पिवैताऽ अपः ॥ ॐ वायुः पशुरासीत्तेनाय जन्तसऽएतँल्लोक मजयद्य स्मिन्वायुः सतेलोको भविष्यति तंजेष्यसि पिवैताऽअपः । ॐ सूर्यः पशुरासीत्तेनायजन्तसऽएतंल्लोक मजयद्यस्मिन्सूर्यः सते लोको भविष्यति तंजेष्यसिपिवैताऽअपः ॥ ॐ वाचन्ते शुन्धामि ॐ प्राणन्ते शुन्धामि, ॐ चक्षुस्ते शुन्धामि, ॐ श्रोत्रंते शुन्धामि, ॐ घ्राणंते शुन्धामि, ॐ नाभिन्ते शुन्धामि, ॐ मेढ्रन्ते शुंधामि, ॐ पायुंते शुन्धामि, ॐ चरित्रांस्ते शुन्धामि, ततः पञ्चमंत्रैश्च—ॐ शिरस्तऽआप्यायतां ॐ वाक्तऽआप्यायताम्, ॐ प्राणस्तऽ आप्यायतां, ॐ चक्षुस्तऽआप्यायताम्, ॐ श्रोत्रन्तऽआप्यायताम्, ॐ यत्तेक्रूरं यदास्थितन्तत्तऽआप्यायतां, ॐ निष्ट्यायतांतत्ते शुध्यतु, ॐ शमहोभ्यः शुध्यतु, ततोऽक्षतपुष्पैः पशुगात्रस्थदेवा-न्विसृजेत, ॐ शृंगेपृष्ठे ललाटेच पादयो र्जंघयोस्तथा। उदरे सर्वगात्राणि मुञ्चन्तुपशुदेवताः ॥ ॐ पशोऽ शृंगंगृहीतोसि पशुत्वं

हीयतां द्रुतम् ॥ उपयोगस्त्वयाकार्यो देवीपूजाविधौसदा ॥ एवं संप्रोक्ष्य, वस्त्रेणाछाद्य पाशेन बध्वा बिल्वफल मालया सुसज्य ललाटे सिंदूरं दत्वा तद्वामकर्णेजपेत्–मंत्रः—ऐं लिहि लिहि बहु-रूप धारायै कालिकायै ह्रीं ह्रीं इमंप्रदर्शय, भक्तिं नियोजय नियोजय स्वाहा, ततोमहिषंनमस्कुर्यात्—ॐ नमस्ते बलिरूपाय सर्वपाप क्षयायच । सर्वशत्रु विनाशाय पशुराज नमोस्तुते ॥ इति महिषं नमस्कृत्य पुनरद्भिरभ्युक्ष्य, ॐ महिषायनमः इति मंत्रेण पंचोप चारेण संपूज्यान्त्यग्रासं दद्यात्–ॐ पशोस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्या दुपस्थितः ॥ अंत्यग्रासं मयादत्तं गृहाण महिष प्रभो ॐ क्रीं, अन्त्यग्रासं निवेदयामि ॥ ततः स्तम्भसमीपमानीय पुनःस्तम्भं पंचोपचारेण सम्पूज्य प्रार्थयेत्--ॐ स्तंभत्वं शंभुरूपोऽसि पार्वत्यानन्द वर्धनः । भक्तितः पूजयामित्वां पशु बन्धनहेतवे ॥ सर्वशत्रुविनाशार्थं सर्वाभीष्टार्थ सिद्धये । चंडिका प्रीतिहेत्वर्थं पशुंबन्धयबन्धय ॥ स्तंभत्वं धर्मरूपोऽसि महिषं चोत्तमंपशुं ॥ बलिदान मुमाप्रीतौ निर्विघ्नेनापिबन्धय , ॐ ह्राँ ह्राँ फट् स्वाहा, इति महिषं स्तंभेबध्नीयात् ॥ ततोवृहज्जलघटे हरिद्राचूर्णं निक्षिप्यतन्मंत्रैः पूजयेत्–ॐ ब्रीं ब्रह्माण्यैनमः, ॐ मां माहेश्वर्यैनमः, ॐ कौं कौमार्यैनमः, ॐ वैं वैष्णव्यैनमः, ॐ वां वाय्व्यैनमः । ॐ इँ इन्द्राण्यैनमः, घटवामे–ॐ उँ उग्र-चण्डायैनमः, इति घटं पंचोपचारैः सम्पूज्य, तेन जलेनवक्ष्यमाण मंत्रेण महिषं पुनःस्नापयेत्,–ॐ ऐं ऐं कालि कालि पापक्षयाय ब्रह्म राजस्वपाय दिव्य भौमायनमः, इति सर्वांगं महिषं संस्नाप्य घटशेष जलं वक्ष्यमाणा मन्त्रेण नैर्ऋत्ये क्षिपेत्--ॐ अमृतासवं विद्महेस्वधाकारायधीमहि ॐ संवर्त्तकः प्रचोदयात्, ततः पीतवस्त्रं महिषस्य वामशृंगेवेष्टयेत्–ॐ नरसिंहायनमः, इति बन्धयित्वा पशोरङ्गानिस्पृशेत्–ॐ शिं शिरसि, ॐ खँ मुखे, ॐ इँ नेत्रयोः ॐ उँ कर्णयोः ॐ ञँ इँ उँ ऋँ लृँ ऐं ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणिस्वाहा इति सर्वाङ्गं स्पृष्ट्वापञ्च न्यासं कुर्यात्, ॐ ह्राँ

हाँ बाह्वोः, ॐ ऋँ पादयोः ॐ हूँ मुखे, ॐ ह्रीं नेत्रयोः, ॐ ह्रीं पुच्छे, इति स्पृष्ट्वाऽक्षतैर्महिषं प्रबोधयेत्—ॐ महिपस्त्वं पुरादेव्यै बहुदुःखप्रदायकः। अतो निहत्य दातव्यस्त्वमयेवरदोभव ॥ देवासुर रणेदेव्या बहुदुःख प्रदोसियत्। त्वयानिस्सारिताः सर्वे आखण्डल मुखासुराः। सूर्या चन्द्रमसोर्वायो राधिपत्यं धवेनच। न्याये नानेन रौद्रेण मातृके नानुलोमतः। हित्वापशुत्वंदुर्गाया गणतांत्वंगमिष्यसि । पशुयोनौप्रसूतोऽसि बलियज्ञस्य-सिद्धये। तुष्टाभवत् सादेवी ममांशे रुधिरैस्तव॥ ततो दाक्षिणकर्णे पशुगायत्री मुपदिशेत्—ॐ ऐं पशुपाशाय विद्महेशिरश्छेदायधीमहि। तन्नः पशुः प्रचोदयात्। ततःकौशिक मन्त्रेणकुशपुंजलिना ऽद्भिः पशुत्वंनिःसारयेत्। ॐ ह्रीं ह्रां महा कौशिकायनमः, इतिसम्माज्यर्महिषपृष्ठेस्वदक्षिणकरतलं संस्थाप्य वक्ष्यमाणमन्त्रैरमृतीकरणंकुर्यात्—ॐ प्रस्फुर २ ॐ चर्वय २ ॐ भ्रामय २ ॐ मारय २ ॐ कामय २ ॐ कम्पय २ ॐ प्रापय २ ॐ कर्षय २ ॐ आवेशय २ ॐ मोहय २ ॐ हासय २ ॐ हां ह्रीं हूँ हैं ह्रौं ॐ बचय २ ॐ मद्रेष्टय २ ॐ हः स्रां ह्रीं महिषरुधिर मिदममृतंस्वाहा, इत्यमृतीकरणंकृत्वा पुनर्महिषंप्रार्थ-येत्—ॐ महिषत्वं महावीरधर्मराजस्यवाहनः। भक्तिनः पूज-यामित्वां सर्वकामार्थसिद्धये । ॐ ह्रीं पशूनांपतये नमः ॥ इति पुष्पं समर्पयामि, ॐ क्रीं धूपंनमः ॥ ॐ ह्रीं दीपंनमः ॥ इति महिषंसम्पूज्य,, पुरतःखड्गं संस्थाप्यपूजयेत्—ततःखड्ग मध्ये ऐं बीजंविलिख्य, ॐ ह्रीं कालिवज्रेश्वर लोहखड्गाय नमः, इत्य भिमन्त्र्यध्यायेत्—ॐ कृष्णंपिनाकपाणिंच कालरात्रिस्वरूपि-णम्। उग्रंरक्तास्यनयनं रक्तमाल्यानुलेपनं । रक्ताम्बरधरंचैव पाशहस्तंकुटुम्बिनम् ॥ पिबमानंचरुधिरं भुञ्जानंक्रव्यसंचयं ॥ रसनात्वंकालिकायाः सुरलोकप्रसादक। ॐ कालि २ वज्रेश्वरि लोहपूर्णायैनमः, इत्यभिमन्त्र्य। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं फट् लोहदण्डाय तीक्ष्णधाराय खड्गायनमः, इति मन्त्रेणखड्गपाद्यगन्धधूपादिभिः

सम्पूज्यप्रार्थयेत । ॐ पुरादेवासुरेयुद्धे निर्मितो ऽ सिजयप्रदः । तेजोरूपायखड्गायजयप्रदनमोस्तुते । आसेर्विशनसःखड्गस्तीक्ष्ण-धारोदुरासदः । श्रीगर्भोविजयश्चैव धर्मपालनमोस्तुते ॥ पुनः खड्गंमन्त्रयेत्—ॐ ऐं कालिवज्रेश्वरि लोहदण्डायनमः स्वाहा । ततोवक्ष्यमाणमन्त्रेणखड्गंमहिषस्कन्धेस्पर्शयेत— ॐ ह्रीं कालि २ विकटदंष्ट्रोग्रे फें फें कारिखादय २ सर्वान्दुष्टान्मारय २ खड्गे नच्छिन्धि २ किरि२ किलि २ रुधिरं पिव २ छौं कालिकायैनमः, ततो महिषहननार्थमन्यपुरुषस्य वरणंकुर्यात्—ततस्तंक्रोधभैरव रूपिणंपुरुषमग्रतःकृत्वा, ॐ क्रोधभैरवस्वरूपिणे ऽ मुकायनमः पाद्यादिभिः सम्पूज्य तस्यदक्षिणहस्ते त्रिकोणयन्त्रंलिखित्वा शिरसिसिन्दूरेणत्रिपुण्ड्रं विदुयुतंकृत्वा गन्धाक्षतपुष्पमालादिभिः सम्पूज्य सङ्कल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्यामुको ऽ हं करिष्यमाणामुकदेवताप्रीत्यर्थं महिषबलिकर्मणि महिषछेदनार्थं क्रोधभैरवरूपिणममुकगोत्रममुकवर्माणंत्वामहंवृणेवृतो ऽस्मीति प्रतिवचनम्, ततःप्रार्थयेत्—यथादेवासुरेयुद्धे मारितोमहिषासुरः । हे क्रोधभैरवत्वंहि महिषंजहिसत्वरम् ॥ ततः स्तम्भान्महिषंमोच यित्वा सङ्कल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रो ऽ मुकराशिरमुकवर्माहं करिष्यमाणामुककामनासिद्धये तथाच सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य सर्वोपद्रवशान्तिदीर्घायुस्त्व धनधान्या-द्यविच्छिन्न चातुर्वर्गार्थसिद्धये श्रीः १ अमुकीदेव्याः प्रीत्यर्थमि मंसुपूजितममृतीकृतंमहिषं यमदैवतंबलिरूपंघातयिष्ये । इति महिषाशिरसि क्षिप्त्वादेव्यग्रे पुनरुच्चस्वरेणप्रार्थयेत्—ॐ जल-दसदृशवर्णचारुविस्तीर्णकर्णं । धरणिधरसमांगं दीर्घतीक्ष्णायता-क्षम् ॥ बलिमिममुपनीतं देविप्रीत्यागृहाण । भगवतिमयिनित्यं राजलक्ष्मींनिधेहि ॥१॥ कुरुममरिपुनाशंव्याधिपीडादिदुःखं । हर सकलविकारं दुर्गतिंशत्रुभीतिम् । भवभुवनवरेण्या मङ्गलन्त्वं विधेहि भगवतिवरदात्वंसर्वसिद्धिप्रदेहि ॥२॥ ततो महिषंघात-नार्थंप्रार्थयेत्—ॐ महिषत्वंमहावीर सर्वाभीष्टप्रसाधकः ।

दुर्गोतचैवपापानि सर्वशत्रुक्षयंकुरु । यज्ञार्थपशवःसृष्टाःस्वयमेव स्वयंभुवा । अतस्त्वांघातयिष्यामि तस्माद्यज्ञेवधो ऽ वधः । ततः क्रोधभैरवंप्रचारयेत् रक्ताक्षतपुष्पैः—सचोत्थितःखड्गमुत्थाप्य ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स ख्फ्रें ह्सो ह्रौं ह्सौं श्रीः क्रोधमार्त्तण्डभैरवाय ह्सौं ह्रौं ह्स ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं, भोक्रोधभैरव, एनं महिषंखड्गे नभिन्धि २ छिन्धि २ निरयंकुरु २ ततः क्रोधभैरवोदक्षिणहस्ते खड्गमुत्थाप्यमहतातेजोमय क्रोधेन, ऐं छ्रौं कालिकायैनमः, इत्युक्त्वा, एकप्रहारेणमहिषशिरश्छेदनंकुर्यात् । यथा—हन्यादेक प्रहारेण महासिद्धिमवाप्नुयात् । अन्यथाविघ्नमायाति कर्त्ता सम्वत्सरावधि । ततोमहिषमुण्डंयन्त्रात्कीयद्दूरे देव्यग्रेभूमौ त्रिकोणोपरिनिधाय—पुष्पंघृत्वा–ऐं कवोष्णंफेनिलंरक्तं पशुकंठाद्विनिर्गतम् ॥ माध्वीकंपिवदेवित्वं परमानन्दहेतवे ॥ घोरदंष्ट्रे करालास्येमधुमांसवलिप्रिये । वलिं गृहाणभोदेवि विपत्क्षय-कारिणि ॥ ततो महिषशिरसि ज्वलद्वर्त्तिकां दीपयित्वाहस्तेजलं गृहीत्वा—ऐं यावद्दहतिलोमानि वर्त्तिकाशिरसः पशोः । ताव द्वर्षसहस्राणिदेवीलोकेसगच्छतु । शेषंपूजोक्तपद्धत्यनुसारेणकुर्यात् ॐ कालिकायैनमः ॥

इति महिषवलिपद्धति ॥

अथ नरक चतुर्दशी परिभाषा ।

कार्तिककृष्ण चतुर्दशी नरकचतुर्दशी—साचोपरिचन्द्रोदय व्यापिनीग्राह्यातदुक्तं च मदनरत्नेभविष्ये कार्तिकेकृष्णपक्षेतु चतुर्दश्यांविधूदये । तिलतैलेनकर्तव्यं स्नाननरकभीरुभिः ॥१॥ अत्र चन्द्रोदयस्नानासम्भवेसूर्योदयेऽपि चतुर्दश्यां प्रात काली गौणत्वेनविधीयते । अत्र स्नानमध्येतुम्बी अपामार्गभ्रमण कर्त्तव्यम् । तन्मंत्रा । सीतालोष्ठसमायुक्तसकटकदलान्वित । हरपापमपामार्गभ्राम्यमाणः पुन पुन ॥२॥ ततोयमतर्पण कुर्यात् ॐ यमायनम, इत्यादिमंत्रैः । जीवत्पितापितुर्वीततर्पणं यमभीष्मयो ॥३॥ अत्र क्वचित्पर्वतप्रदेशे ऽस्यांगवां पूजनादिकमपि कुर्वन्ति । तत्तु समीचीनमस्ति । पूर्वसरिणिन्तु गोवत्सद्वादशीमारभ्यवलिराज्यपर्यन्तमेतदुक्तम् तदुक्तं च हेमाद्रौभविष्ये वत्सवर्णांसमवर्णां च शालिनीगांपयस्विनीम् । चन्दनादिभि रालिप्य

पुष्पमालाभिरर्चयेत् ।४। दीपावलिदानमुक्तंस्कान्दे । तत. प्रदोषसमयेदीपान्दद्यान्मनोहरान् । ब्रह्मविष्णुशिवादीनां भवनेषुमठेषुच ।५। अत्रैव रात्रौदीपावल्यनन्तरमुल्कादानंविहितम् । उक्तं च ज्योतिर्निबन्धे । तुलासंस्थेसहस्रांशौप्रदोषेभूतदर्शयोः । उल्काहस्तानराः कुर्युः पितॄणांमार्गदर्शनात् ।६। अत्र चतुर्दश्यांखण्डतिथौ कदाकर्मकर्तव्यम् । अत्रप्रातः कालस्य गौणत्वप्रापकश्चन्द्रोदयकालोमुख्यः यत्तुः कृष्ण चतुर्दश्यांरात्रिशेषे चतुर्षुघटिषुभवति । तन्मुख्यः काल । पूर्वत्रैव चतुर्दश्यां तद्व्याप्तौ तत्रैवाभ्यंगादि दीपदानांतं निर्विवादम् । तदंगकर्मकालेषु तिथि सत्वात् । परत्र तद्व्याप्तौ तत्रैवाभ्यंगादि । असत्यामपि चतुर्दश्यां काले दीपदानं कार्यम् । स्नानादिनप्रदोषे तिथ्यनपेक्ष्ये तद्विधानात । सूर्योदये तिथ्यनुवृत्तौ । यातिथिं समनुप्राप्ययात्यस्तंपद्मिनीपतिः । सातिथिस्तद्दिने प्रोक्ता त्रिमुहूर्तंवयाभवेत् ।७। नरके च चतुर्दश्यामिन्दुक्षयतिथावपि । उर्जादौस्वातिसंयोगे तदादीपावलीभवेत् ।८। ज्योतिर्निबंधोदाहृत नारदवाक्येऽपि शब्देनचतुर्दशीस्थानेऽमाया अनुकल्पत्वेन विधेरोदश विषयएवप्रवृत्यौ चिन्त्यात । स्वातियोगस्तु प्राशस्त्यार्थः । दीपावलीशब्दोऽभ्यंग स्नानपरः । अमुनैवाशयेनसर्वज्ञनारायणेन चतुर्थयामे चतुर्दशी सत्वमभ्यंग प्रयोजकत्वेनोक्तम् । तथा कृष्ण चतुर्दश्यामाश्विनोऽर्कोदयात्पुरा यामिन्याः पश्चिमे यामंतैलाभ्यंगो विशिष्यते ।९। इत्यादिप्रमाण वाक्यैस्त्रयोदशी युक्तायांनरक चतुर्दश्यां कदापिदीपावली यत्वात्त , नभवतीति सर्वसम्मति ।

अथ नरक चतुर्दशी कर्म पद्धतिः ॥

अथच उदयव्यापिन्यां चतुर्दश्यामुषः कालेसूर्योदयात्पूर्व नरक भीरुभिस्तिलतैलेनस्नात्वा तदैव ३० यमायनमः, इत्यादि चतुर्दशनामभिस्तर्पणानिदत्वा पितॄनपि सम्पूज्य मध्यान्हात्पूर्व गोष्ठेगवां पूजनमारभेत् । अर्घ्यम्—रुद्राणीचैवयामाता वसूनां दुहितात्मया । आदित्यानां च भगिनी सानःशान्तिंप्रयच्छतु ।१। गन्धाक्षत पूजनमंत्रः । नमोगोमतीभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एवच । नमोधर्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्योनमोनमः ॥२॥ इति गंधाक्षतमालादिभिः सम्पूज्य गोग्रासंदद्यत्—सुरभी वैष्णवी मातानित्यं विष्णुपदेस्थिता । प्रतिगृह्णातु मेग्रासंसुरभीमे प्रसीदतु ।२। इति गोभ्योदेशरीत्यानुसारतोयथेष्टान्नं दत्वा प्रार्थयेत् । गावोमेऽग्रतः सन्तुगावोमे सन्तुपृष्ठतः । गावोमेहृदये सन्तुगवां

मध्येवसाम्यहम् ।३। मावियोगोऽस्तुमे पुत्रैर्भर्त्रा च सहबान्धवैः त्वत्प्रसादेन भक्तिः स्यान्निश्चलागौः सदात्वयि ।४। ततो गृहमागत्य ब्राह्मणैर्बान्धवैः सहभुंजीत । ततः प्रदोष समयेदीपावलिं दद्यात् । अथ दीपमंत्रः अग्निर्ज्योतिरविर्ज्योतिश्चन्द्रोज्योतिस्तथैव च उत्तमो ज्योतिषां ज्योतिर्दीपोऽयं प्रति गृह्यताम् ।५। दीपान्दत्वा भोजनात्पूर्व मुल्कापूजनं विदध्यात् । गोमयोपलिप्तायांभूमावुल्कां संस्थाप्य तत्र दीपंप्रज्वाल्य सम्पूज्य च ॐ पितृमार्गप्रदर्शन्युल्कायैनमः गंधादिभिः सम्पूज्य ततो मंत्रेण दीपयेत् ॐ शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानांभूतदर्शयो : । उज्वल ज्योतिषादेहं दहेयं व्योमवन्हिना ।६। यमलोकागतानां च सर्वेषांस्वर्गगामिनाम् । मार्गादर्शां पितृणां च उल्कांसंदीपयाम्यहम् ।७। उल्कां दीपयित्वा दक्षिणाभिमुखोभूत्वा भ्रामयेत् । अत्र देशप्रथा वाजिभिः सह कीयद्दूरंसर्वे ग्राम निवासिनः समारोहेणगच्छन्ति ततः समागत्यतदैव पाण्डवोत्सवमपि कुर्वन्ति । उक्तं च प्राच्यनिवंधे ॐ अग्निदग्धाश्चयेजीवायेऽप्यदग्धाः कुलेमम । उज्वलज्योतिषा दग्धास्तेयान्तुपरमांगतिम् ।८। यमलोकंपरिलङ्घ्य चागतायेमहापथे । उज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो वजन्तुते ।९। इति उल्कां शांतयित्वा ब्राह्मणैः सबान्धवैश्चभुञ्जीत । अत्र प्रभाते चन्द्रोदयकालीन कर्म परिभाषोक्त विधिना कुर्यात् ।

अथ लक्ष्मी पूजा परिभाषा

अथ कार्तिक कृष्णामायां गो क्रीडनदीपदान लक्ष्मीपूजाविधिं वक्ष्ये ॥ उक्तं च कालादर्शे—प्रत्यूष आश्वयुग्दर्शे कृताभ्यंगादिमंगल । भक्त्याप्रपूजयेद्देवीमलक्ष्मीविनोत्तये ॥१॥ उक्तचब्राह्मे—इषभूते च दर्शे च कार्तिकप्रथमे दिने । यदास्वातिस्तदाभ्यंग स्नानंकुर्याद्दिनोदये ॥२॥ मात्स्ये—दीपैर्नीराजनादत्र सैषादीपावलीस्मृता । अत्र विशेषो हेमाद्रौ भविष्ये—दिवानत्र न भोक्तव्यमृतेबालातुराज्जनात । प्रदोष समयेलक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात ॥३॥ दीपवृक्षाश्चदातव्याः शक्त्यादेवगृहेषुच ॥ तत्रैवाभ्यंगमभिधाय—एवं प्रभात समये त्वमावास्यांनराधिप । कृत्वातु पार्वणंश्राद्धं दधिक्षीरघृतादिभिः ॥४॥ दीपान्दत्वा प्रदोषेतु लक्ष्मीपूज्य यथाविधिः । स्वलंकृते नभोक्तव्यं सितवस्त्रोप शोभिना ॥५॥ इयं प्रदोष

व्यापिनी ग्राह्या। तुलासंस्थे सहस्रांशौ प्रदोषेभूत दर्शयो.। उल्काहस्ता नर कुर्यु पितॄणां मार्गे दर्शनम् ॥६॥ दिन द्वये सत्वेपर। दण्डैकरजनीयोगे दर्शस्यात्तुपरेऽहनि। तदा विहाय पूर्वेद्युपरेऽन्हि सुखरात्रिके ॥७॥ अपराह्णेच कर्त्तव्यं श्रद्धं पितृपरायणैः। प्रदोष समयेराजन्? कर्त्तव्या दीपमालिका ॥८॥ इति क्रमः। ससम्पूर्णतिथावेव प्राप्तेरनुवादो न विधि। तत्तत्कर्मकाल व्याप्ते बलवत्वात्सम्पूर्णतिथौ प्राप्त्या खंड तिथावप्राप्त्या विध्यनुवाद विरोधाच्चेत्युक्तम् ॥ अत्रैव परा त्री दर्शऽलक्ष्मी. 'दरिद्रा' नि सारणमुक्तम्, मदन रत्ने भविष्ये— एवंगते निशीथेतु जनेनिद्रार्ध लोचने। तावनगर नारीभि शूर्पडिण्डिमवादने.। निष्काष्यते प्रहृष्टाभि दरिद्रास्व गृहांगणात। अत्रप्रति नवमे वर्षे अमायांग्रहण संप्राप्तिर्भवती त्यार्शक्यम्। तदोदय व्यापिन्याममायादिने ग्रहण युताया गौपूजनंपितृार्चनं रात्रीच प्राप्तास्ते एतानि कर्माणिभवन्ति नवेतिद्वैधीभूते किंकर्त्तव्यमितितदाह--यैरेतासु तिथिष्वेतानि कर्माण्युक्तानि सन्तितै पूर्वस्मृतिनिर्णय कारैस्तु अन्येषु पूर्वोक्तकर्म वर्ज्यविषय किमपि नलिखितमस्ति, अनेनैव स्पष्टमिति। तैस्तु ग्रहणेपितृ श्राद्धब्राह्मणभोजन होम दानादीनि नानाकर्माण्युक्तानि। **तान्याह—**अत्र श्राद्धमाह ऋष्यशृंग.। चन्द्र सूर्य ग्रहेयस्तु श्राद्धंविधिवदाचरेत्। तेनैव सकला पृथ्वीदत्ताविप्रस्यवै कर।१०। वायवीयोक्ति। सैंहिके योयदासूर्यं ग्रसने पर्व संधिषु। गजच्छायातु साप्रोक्ता तस्यां श्राद्धंप्रकल्पयेत्।११। घृतेन भोजयेद्विप्रा न्घृतंभूमौ समुत्सृजे। राहु दर्शन दत्तद्धि श्राद्धमाचन्द्र तारकम्।१२। आमश्राद्धं प्रकुर्वीत हेम श्राद्धमथापिवा। **उक्तञ्च भारते—**सर्व स्वेनापि कर्त्तव्यं श्राद्धं वै राहु दर्शने। अकुर्वाणस्तु नास्तिक्या त्पंके गौरिव सीदति।१३। **विज्ञानेश्वरोप्याह—**ग्रहणश्राद्धे भो नतुर्दोषोदातुस्त्व भ्युदय.। यो ब्राह्मण. मृतक सूतके भुक्ते न तस्याऽपराग भोजन निषेधक कश्चनविधि र्महाब्राह्मणत्वात्। यत्फलं मृतक सूतकान्न भोजने तदेव ग्रहणेऽपि। **उक्तं चापस्तम्बेन—**सूतके मृतके भुंक्ते गृहीते शशिभास्करे। छायायां हस्तिनश्चैव न भूयः पुरुषोभवेत्।१४। **गोदानादि विषयमाह— यत्र च पृथ्व्यं चन्द्रोदये प्रभास खण्डे—** गावो नागास्तिलाधान्यं रत्नानि कनकं महीम्। यो ददाति ग्रहे मर्त्यं नपुनर्जन्म मालभेत्।१५। **गो पूजने निर्णयामृते लिखितमस्ति—** गां कुर्यू प्रतिपन्मिश्रा तत्रगां पूजयं न्नृप। पूजना प्रीणि वर्धन्ते प्रजागावो महीपति।१६। प्रति पद्दर्श संयोगेक्रीडनतु गवांमतम्। परविद्धेषुय. कुर्यो त्पुत्रदार धनक्षय.।१७। **इति देवल वचनात्—**इदानींमेव ग्रहणस्य संभवोभवति। एवविषयस्तु बलि पूजा विधौनिर्णीयते यत्र दीपाऽन्यमायां ग्रहणं भवति सैवप्रतिपद्विद्धाभवति। उदयव्यापिन्यमायां रात्रौदीपावलि रणिकायां **उक्तश्च पुराणमात्रये—** नियामिकादर्शनिविभिषेकेनगार्भं नियामाप्रतिपद्विद्धौ। दैवोजनंतेमुनिनिः परिटे अतोन्यथापूर्वमुतोविशेने ॥१८ दर्शादिग्रमार्गपालजिनरद्धिं सर्वकर्म भानि महगृद्धिं दशिकीणाद्यौ (तमान) भानो निशाप्रस्मानि। इति॥

अथचकार्तिककृष्ण अमायां लक्ष्मीपूजा पद्धतिः।

लक्ष्मीपूजायां कार्तिक कृष्णामावस्या सायङ्कालप्रदोप व्यापिनी ग्राह्या, उभयोर्मध्येद्वितीयदिने दण्डैकरजनी व्याप्ता ग्राह्या नतुभूतविद्धा। अन्येद्युर्दण्डैकरजनी योगरहिता चेच्चतुर्दशी युता याममायां दीपावली लक्ष्मीपूजा कर्त्तव्या। अपरे ऽन्हि सार्धत्रि यामव्यापिन्याममायामपि गोपूजनं रात्रौदीपावल्यादि कर्म करणे काप्यिक्षतिर्नास्ति, इति सर्वनिर्णयसम्मतिरस्तीति दिक्। विशेषः पूर्वमुक्तः। अथ पूजापद्धतिः। तत्रादौ स्वासने उपविश्याचम्याधारं पूजयित्वा रक्षाविधानंकृत्वाप्राणायामत्रयं विधाय श्रीगणेशंप्रणमेत्। हस्तेपुष्पाक्षतंनिधाय—ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलोगजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटोविघ्ननाशो गणाधिपः ॥१॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। शुक्लांबर धरंदेवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नो पशान्तये। ॥२॥ सर्व मंगलमांगल्ये शिवेसर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बकेगौरी नारायणिनमो ऽस्तुते ॥३॥ इति प्रणम्य। अथ च कृतोपवासः कर्ता स्वगृहे दीपावल्यादि दीपवृक्षांश्च निर्मायादौ वक्ष्यमाण मंत्रेण दीपावलिं दीपयेत्। ॐ अग्निर्ज्योतिरविर्ज्योतिश्चन्द्रोज्योतिस्तथैव च। उत्तमो ज्योतिषांज्योतिर्दीपो ऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥४॥ पाद्यगंधादिभिःसम्पूज्य प्रार्थयेत्—,दीपावलिं गृहाणत्वं सर्वसौख्यप्रदाभव। प्रदोषरूपिणि शिवेमहालक्ष्मि नमो ऽस्तुते ॥५॥ ततः स्वासने पूजास्थलमेत्य पूर्वोक्तकलशस्थापन पूजाविधिना कलशं संस्थाप्य सम्पूज्यच तत्रक्वचिन्मनोहरे पीठे सिंहासनेवा स्वेष्टदेवीयंत्रं प्रतिमांवा संस्थाप्य श्री महालक्ष्मी पूजनमारभेत्। ततो रक्तगंधा लोहितपुष्पैर्ध्यायेत्। यासा पद्मासनस्था, विपुलकटि तटी पद्मपत्रायताक्षी। गंभीरावर्तनाभिस्त नभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया। या लक्ष्मीर्दिव्य रूपैर्मणिगण रचितैः स्नापिता हेम कुम्भैःसानित्यं पद्महस्तामम वसतुगृहेसर्व

मांगल्ययुक्ता ॥६॥ इति ध्यात्वावाहयेत् । सर्वलोकस्य जननी पद्मस्थां चारुभूषणाम् । सर्वदेवमयीमीशां लक्ष्मीमावाहयाम्य हम् ॥७॥ ततः पुष्पासनम्—अमलेकमले देविरक्ताम्वर विचित्र कम् । सपुष्पकं परंदिव्य मासनंप्रतिगृह्यताम् ॥८॥ ततःपाद्यम्— लाजा कुंकुमपुष्पैश्च तण्डुलौषधि भिर्युतम् । पाद्यंगृहाण देवेशि महालक्ष्मि नमो ऽ स्तुते ॥९॥ अर्घ्यम्—नाना गंधसमायुक्तं दिव्यपात्रस्थकंपरम् । अर्घ्यं गृहाण मद्दत्तं महालक्ष्म्यै नमोनमः ॥१०॥ तत आचमनम्—सर्वशक्ति स्वरूपायै संसारार्णवतारिके। ददाम्याचमनंतस्यै महालक्ष्म्यैमनोहरम् ।११। स्नानीयम्–पंचामृत समायुक्तं गंगाजलमनोहरम् । गृहाण विश्वजननि स्नानार्थं भक्तवत्सले ॥१२॥ वस्त्रम्–दिव्याम्वरंनूतनंच कौशेयंसुमनोहरम्। दीयमानं मयादेविगृहाण परमेश्वरि ॥१३॥ मधुपर्कम् कापिलंदधिकुन्देन्दुधवलं मधुनायुतम् । गृहाण मधुपर्कंत्वं क्षीरसागर कन्यके ॥१४॥ भूषणार्थे पुष्पम्—सागरोद्भव रत्नानां भूषणानि त्वयाधृता । अतोदेवि महालक्ष्मि तुभ्यं पुष्पंददाम्यहम् ॥१५॥ ततश्चन्दनम्—चन्दनं चसकर्पूरं मृगनाभि समन्वितम् । गृहाण भाल शोभार्थं नमो ऽ स्तुभक्तवत्सले ॥१६॥ सिन्दूरम्—चन्दनोपरि शोभार्थं सिन्दूरंतिलकप्रिये । भक्त्यादत्तं मयालक्ष्मि सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥१७॥ सौभाग्य द्रव्यम्—स्वयं सौभाग्यदेदेवि ? महालक्ष्मि हरिप्रिये । चूर्णकुंकुमकं पीतददामिसुभगायते ॥१८॥ ततः सुगन्धिद्रव्यम् । तैलानि च सुगन्धीनि पुष्पसारयुतानि च। मयादत्तानि कान्त्यर्थं गृहाणजगदम्बिके ॥१९॥ पुष्पाणि–ऋतुजानि सुरम्याणि पुष्पपत्रादिकानि च । सुरभीणि विचित्राणि गृहाणपरमेश्वरि ॥२०॥ पुष्पमालाम्–नाना पुष्प समायुक्तां ग्रथितां सुमनोहराम् । मालां गृहाणभोलक्ष्मिममसौख्यं विवर्धय ॥२१॥ ततोङ्गावरण पूजनं पुष्पाक्षतैः कुर्यात् । ॐ चपलायैनमः पादौ पूजयामि ॐ चंचलायैनमो जानुनीपूजयामि । ॐ कमलायै नमः कटिं०। ॐ कात्यायैनमो नाभिपू०।ॐजगन्मात्रे नमोजठरं

पू०। ॐविश्ववल्लभायैनमो वक्षस्थलं०। ॐ कमलवासिन्यैनमो नेत्र त्रयं पू० । ॐ श्रियैनमः शिरः पू० । इत्यंग पूजनम् अथ पूर्वादि दक्षा वर्तेनाष्टसिद्धीः पूजयेत् । तत्र पूर्वे, ॐ अणिम्नेनमः । ॐ महिम्नेनमः । ॐ गरिम्णेनमः । ॐ लघिम्नेनमः । ॐ प्राप्त्यै-नमः । ॐ प्रकाम्यायैनमः । ॐ ईशितायैनमः । ॐ वशितायै नमः । अथ च पूर्वादि क्रमेणाष्टलक्ष्मी पूजनम् । पूर्वे, ॐ आद्य लक्ष्म्यनमः । ॐ विद्यलक्ष्म्यै नमः । ॐ सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः । ॐ अमृतलक्ष्म्यै नमः । ॐ कामलक्ष्म्यै नमः । ॐ सत्यलक्ष्म्यै नमः । ॐ भोगलक्ष्म्यै नमः । ॐ योग लक्ष्म्यै नमः । इति सम्पूज्य धूपंकुर्यात् । वनस्पति रसोत्पन्नो गंधाढ्यः सुमनोहरः । आघ्रेयः सर्व देवानां धूपो ऽ यंप्रतिगृह्यता-म् ॥२२॥ दीपम्–चतुर्वर्तिसुसंपन्नं घृत युक्तं मनोहरम् । तमो नाशकरंदीपं गृहाणभुवनेश्वरि ॥२३॥ नैवेद्यम्–नैवेद्यं गृह्यतांदेवि भक्ष्यभोज्य समन्वितम् । षड्रसैरन्वितं दिव्यं महालक्ष्मि नमो ऽ स्तुते ॥२४॥ नैवेद्यान्तचमनीयम्–शीतलंनिर्मिलं तोयं कर्पूरेण सुवासितम् । आचम्यतां ममजलं प्रसीदत्वं महेश्वरि ॥२५॥ ताम्बूलम्–एलालवंगखदिर नागवल्लि दलान्वितम् । पूगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥२६॥ त्वत्फलात्फलितंसर्वंत्रैलोक्य सचराचरम् । तस्मात्फल प्रदानेन पूर्णान्कुरु मनोरथान् ॥२७॥ दक्षिणाम्–हिरण्य गर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः । अनन्त पुण्य फलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥२८॥ कर्पूरनीराजनम्–कदली गर्भ संभूतं दीपितं सुमनोहरम् । आरार्तिक्यं गृहाणत्वंप्रसन्ना भवसर्वदा । ॥२९॥ प्रदक्षिणा–यानि यानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानितानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिण पदेपदे ॥३॥ पुष्पां-जलिम्–गुलाब सिरताजैश्च कुसुमै र्ऋतुजैःशुभैः । पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तातव प्रीत्यै नमोऽस्तुते ॥३१॥ ततः प्रार्थयेत–सुरा सुरेन्द्रादि किरीट मौक्तिकैर्युक्तं सदायत्तवपाद पंकजम् । परावरं पातुवरं सुमंगलं नमामि भक्त्या तव काम सिद्धये

। ३२ । भुवनेश्वरि कल्याणि सर्वं संपत्प्रदायिनि । सुपूजिता प्रशन्नास्यान्म हालक्ष्मि नमो ऽस्तुते । ३३ । अथमसीपात्र 'दवात' पूजनम् । तत्रादौ ध्यायेत् । सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तै-र्वरंविभ्रतीम् घोरास्या शिरसास्रजंसुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलिम् । सृक्कासृक्प्रवहां श्मशान निलयां श्रुत्योः शवालंकृतिंश्यामांङ्गी-कृतमेखलां शवकरैर्देवींभजेत्कालिकाम् ॥ ३४ ॥ ॐ महाकल्यै नमः, इति पाद्यगंधादि भिः सम्पूज्यावरण पूजनं विदध्यात् । ॐ काल्यै नमः । ॐ कपालिन्यैनमः । ॐ कुल्लायै नमः । ॐ कुरुकुल्लायै नमः । ॐ विरोधिन्यै नमः । ॐ विप्रचिन्तायैनमः ॐ उग्रप्रदत्तायै नमः । ॐ दीप्तायै नमः । ॐ नीलायै नमः । ॐ घनायैनमः । ॐ बलाकायै नमः । ॐ मात्रायै नमः । ॐ मुद्रा-यैनमः । एतैर्नाममंत्रै गंधाक्षता दिभि :सम्पूज्य लेखनीं पूजयत् । कृष्णाननेद्विजिह्वेचचित्रगुप्तकरस्थिते । सदक्षराणांपत्रेत्वंलेख्यंकुरु सदामम ॥३५॥ ॐ प्रणोदेवीसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्ठुधियावसु ॥ ॐ सरस्वतीस्वरूपायैलेखन्यैनमः । पाद्यादिभिः सम्पूज्यप्रार्थयेत—याकुन्देन्दुतुषारहारधवला याशुभ्रवस्त्रावृता । यावीणावरदण्डमण्डितकरा याश्वेतपद्मासना । या ब्रह्माच्युत शङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदावन्दिता, सामांपातुसरस्वतीभगवती निःशेषजाड्यापहा ॥३६॥ ततोद्रव्यनिधिस्थाने धनाध्यक्षंकुबेरं पूजयेत् । ॐ कुबेरायनमः कुबेरमावाहयामिस्थापयामि—इत्या-वाह्यगन्धपुष्पाक्षत धूपदीपनैवेद्यादिभिःसम्पूज्यप्रार्थयेत । धनदाय नमस्तुभ्यं निधिपद्माधिपायच । भवन्तुत्वत्प्रसादान्मे धनधान्या-दिसम्पदः ततस्तुला (तराजू) पूजनम्—ध्यायेत्—नमस्तेसर्व देवानांशक्तित्वेसत्यमाश्रिता । साक्षीभूताजगद्धात्री निर्मितायिश्व योनिना ॥३७॥ ॐ तुलायैनमः इतिपूर्ववत्सम्पूज्यनीराजनंकुर्यात अग्निर्ज्योतीरविर्ज्योतिश्चन्द्रोज्योतिस्तथैवच । उत्तमः सर्वतेजस्तु दीपो ऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥३८॥ प्रार्थयेत—मातात्वंप्राणिमात्राणां देवानांऋषिसम्भवे । आख्याताभूतलेदेवी महालक्ष्मिनमो ऽ

स्तुते ॥३६॥ धनंधान्यंमहींहर्षमायुः कीर्तिर्यशः श्रियम्। सर्वदा देहिमेद्रव्यं महालक्ष्मिनमो ऽ स्तुते ॥४०॥ ततः प्रसादंगृहीत्वा पूर्वोक्तविधिना पितॄणां मार्गदर्शनायोल्कांदीपयित्वा तन्मार्गं सन्दर्श्य विप्रान्भोजयित्वासवान्धवैः स्वयमपिभुंजीत । ततो निशायांवादित्र संगीतादिगायनैर्जागरणंकुर्यात्-तत्रैवनिद्रार्धं मीलितलोचनैरात्रिचतुर्थयामेनार्यः सूर्पडिंडिमवादनैर्गृहाद्गृहांगणवहिर्दरिद्रां निष्कासयेयुः । तत्रमंत्रः—गृहाद्गृहांगणाच्चैव दरिद्रेगच्छसत्वरम् । विस्मृत्यामपिदुष्टेत्वंमात्रपादार्पणंकुरु ॥४१॥ इतिदरिद्रांनिष्कास्य हस्तौपादौप्रक्षाल्यनिवसेयुः ।

इति दीपावली महालक्ष्मीपूजापद्धतिः ।

॥ वलिराजकृत्यम् ॥

अथ च वलिराजप्रतिपदमात्रिद्धाग्राह्या, द्वितियाचन्द्रदर्शन विद्धान कदापिग्राह्या तत्रप्रतिपदिप्रातःकाले सर्वैतैलाभ्यङ्गस्नानं कुर्युः । ततः स्त्रियोभित्तौद्वारेपुरङ्गरञ्जित चित्राणिकुर्वन्तु । अत्र दिनेगोवर्द्धनपूजनंगोक्रीडनादिकमपिभवति । इतिशिवम् ॥

अथैकादशी निर्णयः ॥

तत्रैकादश्युपवासोद्विधा निषेधपरिपालनात्मको व्रतरूपश्च । तत्राद्य.—नर्गखेनपिबे-त्सोयंनखादेत्कूर्मसूकरौ । अग्निपुराणे—गृहस्थो ब्रह्मचारीवा आहिताग्निस्तथैवच एकाद-श्यान भुंजीतपक्षयोरुभयोरपि उक्तं च शिवरहस्ये —वैष्णवोवाथ शैवोवाकुर्यादेकादशीव्रतम् । उक्तंचकालादर्शे। विधवायावनस्थस्य यतेश्चैकादशीद्वये । उपवासोगृहस्थस्य शुक्लायामेवपुत्रिण. भुजेनिषेध. कृष्णाया सिद्धिस्तस्य ततो व्रते । अत्रैकादश्यादशमीविधाद्विधा तत्राद्यणोदयवेध सूर्योदयवेधश्च उक्तंचाद्योवेधोगारुडे—दशमीवेधसंयुक्तो यदिस्यादरुणोदय. । नैवोपोष्यं वैष्णवेन तद्दिनैकादशीव्रतम् । उक्तं चब्रह्मवैवर्त्ते—चतस्रोघटिका प्रातररुणोदयनिश्चय:

चतुष्टयविभागोऽत्रवेधादीनां किलोदितः। अरुणोदयवेधस्यात् सार्धतुघटिकात्रयम्। अतिवेधोद्विटिकः प्रभासंदर्शनाद्रवेः महावेधोऽपितत्रैवदृश्यतेर्कोनदृश्यते। तुरीयस्तत्र विहितोयोगः सूर्योदयेबुधैः। उक्तंच मदनरत्ने—अन्यस्तूदयवेधः अतिवेधादयः सर्वयेवेधास्तिथिषुस्मृताः सर्वेप्यवेधाविज्ञेयावेधाः सूर्योदयेमतः। गृहस्थस्मार्तैस्तुस सूर्योदया दशमीविद्धावर्ज्या अन्याग्राह्या च वैष्णवैस्तुपट्पंचाशद्दंडात्मिकायांदशम्यां सत्यांविद्धावर्ज्या। एकादशीद्वादशीचेत्युभयं वर्धतेयदा। तदापूर्वदिनंत्याज्यंस्मार्तैर्ग्राह्यंपरंदिनम् अरुणोदयवेधोऽत्रवेधः सूर्योदयेतथा। उक्तौद्वौदशमीवेधो वैष्णवस्मार्तयोः क्रमात्। महादेवर्तकपालवेध उक्तः—अर्धरात्रीतुकेपाचिद्दशम्यां वेधउच्यते। कपालवेधइत्याहु राचार्याहरिप्रियाः उक्तंच हेमाद्रिणा दशम्या संगदोषेण अर्धरात्रात्परेणतु। वर्जयेच्चतुरोयामान् संकल्पार्चनयोर्मदा। एतन्तु वैष्णवैर्वर्ज्यम् उक्तंचमाधवेन एकादशी द्वादशी चेत्युभयंवर्धतेयदा। तदा पूर्वदिनं त्याज्यंस्मार्तैर्ग्राह्यंपरंदिनम् उपवासा ऽसामर्थ्येतु मार्कंडेयकौर्मयो एकभक्तेननक्तेन तथैवायाचितेन च। उपवासेदानेन ननिर्द्वादशिकोभवेत्। नक्तकालमाह—दिवसस्याष्टमेभागे मन्दीभूते दिवाकरे। तत्रनक्तंविजानीयान्ननक्तं निशिभोजनम्। उपवासेपारणमाह—संकटेविषमे प्राप्ते द्वादश्यां पारयेत्कथम्। अद्भिस्तु पारणकुर्यात्पुनर्भुक्तंन दोषकृत्। संकटे त्रयोदशी आद्यप्रदोषादौ—द्वादश्यां च प्रथमपादमतिक्रम्य पारणंकार्यम् द्वादश्याः प्रथमपादोहरिवासर संज्ञितः तमतिक्रम्य कुर्वीतपारणं विष्णुतत्परः ग्रन्थविस्तारभया दलम् विशेषो निर्णय ग्रन्थेषुद्रष्टव्यः। इत्येकादशी निर्णयः

अथैकादशी व्रतोद्यापन विधि.—उक्तं ब्रह्मवैवर्ते नारद नारायण संवादे—नारद उवाच—अधुना श्रोतु मिच्छामि सर्वपांचेप्सितं मम। एकादशी व्रतस्यास्य विधानं वद निश्चितम्॥ अहो श्रुतौश्रुतं किं चिन्मतभेदान्ननिश्चितम्॥ श्रुतीनांकारण मुखाच्छ्रोतुं कौतूहलंमनः॥ नारायण उवाच—एकादशी व्रतमिदं व्रताना दुर्लभंवरम्। श्रीकृष्ण प्रीतिजनकं तप. श्रेष्ठं तपस्विनाम्॥ एकादशी व्रतमिदं व्रतानां च वरं तथा। कर्त्तव्यं च चतुर्णां च वर्णाना नित्यमेवच। यतीनां वैष्णवाना च विप्राणां च विशेषतः। कृत्वा हविष्यं पूर्वाह्णेन च भुंक्ते पुनर्जलम्। एकाकी कुश शयायां नक्तंशयनमा चरेत। ब्राह्मे मुहूर्त्ते उत्थाय प्रातः कृत्यं विधाय च। नित्यकृत्यं विधायाथ तत. स्नानं समाचरेत्। व्रतोपवास संकल्पं श्री कृष्ण प्रीति पूर्वकम्। कृत्वा संध्यां तर्पणं च विधायाह्निक माचरेत्। नित्य पूजा दिने कृत्वा व्रतद्रव्यं समा हरेत। षोडशोचारं प्रकृष्टं विधि बोधितम्॥ आचम्य श्रीहरिंस्मृत्वास्वस्ति वाचन मारभेत्॥ देवषट्कं समावाह्य पृथक्ध्यानैः समर्चयेत॥ पूजा पंचोपचारेण प्रकृष्टेन विचक्षण॥ गणेश्वरं दिनकरं वन्हि विष्णुं शिवं शिवाम्॥ सम्पूज्यतान्प्रणम्याथ व्रतंकुर्याद्धरिस्मरन। माराध्य देवषट्कंच यदि कर्मसमाचरेत। नित्यंनैमित्तिकं तस्य सर्वं तन्निष्फलंभवेत॥

आरोप्य मङ्गलघटं भद्रोपरि शुभेक्षणे ॥ घटाधः कर्णिकायां च श्वादि लोकां श्चस्थापयेत् ॥ घटोपरिन्यसेत्तत्र पात्रं तण्डुलपूरितम् ॥प्रतिमां स्थापयेत्तत्रसुवर्णां विष्णु रुपिणीम् ॥ पूर्वदले मध्यभागे रुक्मिणी सखिसंयुत्ताम् । तथादक्षिणभागे च सत्य भामांच स्थापयेत् । जाम्बवतीं पश्चिमे च कालिन्दी मुत्तरेक्रमात् । सहस्राणां चतुभिस्ता दासीनां स्थापयेद्व्रती ॥ दलाभ्यन्तर भागेषु क्रमेणैनाश्चस्थापयेत् ॥ शंखं चक्रं गदां पद्ममाग्नेया दिषुस्थापयेत् ॥ पुरतः पक्षिराजंच वाहनं सर्वं मङ्गलम् ॥ परितः स्थापयेद्धोमां ल्लोकपालांश्च रक्षक न् ॥ कुर्यादाराधनं विष्णोः शक्त्या भक्त्या जगद्गुरोः । देवालये नदीतीरे शुचौदेशेऽथवागृहे । सम्पूज्य विधिवद्देवं स्तुत्वास्तोत्रैः प्रसन्नधीः । रात्रौ जागरणंकुर्यान्महात्म्य श्रवणादिभिः ॥ एकचित्तेन भावेन गीत नृत्यादिभिःसह । प्रभातायान्तु शर्वर्यां कृत्वाचावश्यकं विधिम् ॥ अग्निं संस्थाप्य विधिवत्पयसि-श्रपयेच्चरुम् । पौरुषेणथसूक्तेन प्रत्यृचं जुहुयाद्व्रतम् ततो होमावसाने च गामरोगांपयस्विनीम् । दद्याद्धोमस्य पूर्त्यर्थं आचार्याय सदक्षिणाम् । शय्यादीनि भूषणानि वासांसि विविधानिच ॥ आचार्याय प्रदेयानि पदकानिच दक्षिणा । यदीच्छेदात्मनः श्रेयोव्रतस्या विफलंफलम् । तेना-चार्यं प्रयत्नेन सन्तोष्योऽथनसंशयः शुभायाश्चैव प्री त्यर्थं ब्राह्मणा न् द्वादशान्शुभान् ॥ कृष्णायाश्चापि प्रीत्यर्थं तथा द्वादश ब्राह्मणान् ॥ सम्पूज्य विधिवत्तत्र केशवादिकनामभिः । वस्त्रोपवीत भूषाद्यैरलं कृत्य प्रपूजयेत् ॥ पक्वान्न पूरितान् कुम्भान्सामान्नांश्च सदक्षिणान् ॥ ततः सोपस्करंपीठ माचार्याय निवेदयेत् ॥ भुंजीत तदनुज्ञातः स्वेष्टबन्धुजनैःसह ॥ इत्याह भगवान् व्यासः पुराणे ब्रह्मसंज्ञके ॥

इत्येकादशी व्रत विधिः

॥ अथैकादशीव्रतोद्यापनपद्धतिः ॥

अथचैकादश्युद्यापनंतु प्रबोधिन्यांवाभीष्मैकादश्यामथवा माघेवैशाखेवित्तसमृद्धौवाकुर्यात—तत्रादौ पूर्वदिनेदशम्यांकृत नित्यक्रियएकवारं हविष्यंभुक्त्वा रात्रौभूमौसुखेनोपविशेत् । द्वितीयदिनएकादश्यां गङ्गादौगृहेवा स्नानंकृत्वा नित्यनैमित्तिकं विधायपितॄन्सन्तर्प्यच निराहारं व्रतंकुर्यात् । व्रतकर्तुमसक्तश्चे द्ब्राह्मणद्वारानिष्क्रयंदत्वाकारयेत् । ततःपूर्वोक्तविधानेनस्वेच्छा नुसारतश्चतुर्हस्तायतविस्तृतं सपादहस्तविस्तृतं वा सर्वतोभद्र

मण्डपंसमुच्छ्रितकदलीस्तम्भंनिर्माय रेखादिभिर्विरच्यच नाना प्रकारेणवस्त्र मालादिभिरलंकृत्यपूजोपचारसामग्रीं सम्पाद्य हस्तौ पादौप्रक्षाल्यच निशामुखेदीपंप्रज्वाल्यासनउपविश्याचम्य रक्षां विधायप्राणायामत्रयंकृत्वा संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रप्रवरो ऽहं करिष्यमाणैकादशी व्रतोद्यापन शान्तिकर्मणि ममाखिलपापक्षयपूर्वकं चातुर्वर्गफलप्राप्तये श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं मद्यावध्याचरितैकादशीव्रतानामुद्यापनंच-तत्रा-दौनिर्विघ्नतासिद्ध्यर्थंगणपत्यादि नवग्रहान्तपूजनञ्चकरिष्ये। तत आचार्यब्राह्मणंसम्पूज्य वरणद्रव्यंहस्तेकृत्वा सङ्कल्पंकुर्यात्—अद्य पूर्वोच्चारिते गुणविशिष्टायामेकादश्या मेकादशीव्रतोद्यापनकर्मण्य मुकगोत्र प्रवरामुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्वरणद्रव्यै राचार्यकर्मकर्तुं त्वामहंवृणे॥ हस्तेदत्वाप्रार्थयेत्—ॐ आचार्यस्तुयथास्वर्गे देवानां चबृहस्पतिः। तथात्वंममयज्ञे ऽस्मिनाचार्योभवसुव्रत॥ प्रत्युक्तिः भवानीति-आचार्योब्रूयात्॥ ततआचार्यः स्वस्तिवाचनंपठि-त्वाचपूर्वोक्त विधिनागणेशादिदेवानां पूजनंकृत्वा सर्वतोभद्र पूजापद्धत्यनुसारेण सर्वतोभद्रमण्डले देवानावाह्यसम्पूज्यच ततः कञ्चिन्मनोहरं ताम्रकलशंपञ्चपल्लवयुतं जलपूर्णंवेद्यां संस्थाप्य वक्ष्यमाणेन विधिनापूजामारभेत्॥ तत्रादौकर्णिकायां पुष्पं गृहीत्वा ऽऽवाहयेत्॥ ॐ भूः पुरुषमावाहयामि। ॐ भुवः पुरुषमावाहयामि। ॐ स्वः पुरुषमावाहयामि ध्यायेत्। ॐ आग च्छदेवदेवेश जगद्योनेरमापते। शुद्धेऽस्मिन्नधिष्ठाने सन्निधेहिकृपां कुरु॥ ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ सभूमि ँ० सर्वतस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशांगुलम्॥ ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीयुतंपुरुषं मध्ये प्रतिमायामावाहयामि स्थापयामिपूजयामि। ततः प्रति-मायाः परितः ॐ अग्नयेनमः आ० स्था० ॐ इन्द्रायनमः आ० स्था ॐ प्रजापतयेनमः आ० स्था० ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः आ० स्था०। ॐ ब्रह्मणेनमः आ० ॐ वसुदेवायनमः० ॐ रामा यनमः० ॐश्रियैनमः०। इत्यावाहैवंसर्वत्र। ततःकमलपूर्वदलस्य

मध्यभागे रुक्मिणीमा०—आयातुरुक्मिणीदेवी श्रीकृष्णप्राण-वल्लभा । कमले ऽ न्तःपूर्वदले ससखीगणमण्डिता ॥ ॐ रुक्मिण्यैनमः स्था० । जाम्बवन्तीम् ।—आगच्छागच्छकल्याणि जाम्बवन्तिहरिप्रिये । कमले ऽ न्तर्दक्षदले ससखीवृन्दवन्दिते ॥ ॐ ॐजाम्बवत्यैनमः आ० स्था० ॥ आगच्छदेविकालिन्दि रासेश. प्राणवल्लभे । पंकजे ऽ न्तः परदलेससखीगणशोभिते ॥ ॐ कालिन्द्यैनमः आ० स्था० । ततः सत्यभामामुत्तरे—आवाहयामिदेवेशीं सत्यभामांहरिप्रियाम् । उदक्पकञ्जपत्रान्नः सखीगणसुमण्डिते । ॐ सत्यभामायैनमः आ० स्था० । तत आग्नेये ॐ पांचजन्यायनमः आ० स्था० । नैऋत्ये ॐ सुदर्शनायनमः आ० स्था० । वाव्ये—ॐ कौमोदक्यैनमः ईशाने—ॐ महापद्मायनमः आ० स्था० पू० ॥ पुरतः ॐ सामध्वनिशरीरस्त्वं वाहनंकेशवस्यच । विषपापहरोनित्यमतः शान्तिंप्रयच्छमे ॥ ॐ वैनतेयायनमः आ० स्था० । ततः पूर्वादिप्रक्रमतो लोकपालान्नावाहयेत् । पूर्वे—ॐ इन्द्रायनमः आ० स्था० एवंसर्वत्र ॐ अग्नयेनमः० ॐ यमायनमः ॐ निर्ऋतयेनमः० ॐवरुणायनमः० ॐ वायवेनमः० ॐ ॐ सोमायनमः० ॐ ईशानायनमः एवं नाममन्त्रैरावाह्य । ॐ एतन्तेदेवसवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतयेब्रह्मणे ॥ तेनयज्ञमवतेनयज्ञपतिन्तेनमामव ॥ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमंन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञं० समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामों३॥ऽ प्रतिष्ठ ॥ इतिप्रतिष्ठाप्यपूजयेत् पुष्पंधृत्वाध्यायेत्—ॐ नवीननीरदोल्लासश्यामसुन्दरविग्रहम् ॥ शरत्पार्वणचन्द्राभानवयास्यमधुत्तमम् ॥ ध्यानगम्यंदुराराध्यं ब्रह्मादीनांचवन्दितम् ॥ आवाहयामिदेवेशं हरिमेकादशीप्रियम्—अर्घ्यम्—इदमर्घ्यपवित्रं मेशङ्खतोयसमन्वितम् । पुष्पदूर्वाचन्दनाक्तं गृह्यतांभक्तवत्सल ॥ पाद्यम्—पादप्रक्षालनार्हंतत्सुवर्णपात्रसंस्थितम् । सुवासितंशीतलं चगृह्यतां राधिकापते ॥ आसनम्—आसनंपरमंदिव्यं रत्नसार परिच्छदम् । नानावर्णविचित्राढ्यंगृह्यतांपरमेश्वर ॥ पंचामृतम्—

दधिदुग्धघृतक्षौद्रशर्करामिश्रितंपरम् ॥ पंचामृतंगृहाणत्वंहरे चैकादशीप्रिय ॥ स्नानीयम्—पवित्रंतीर्थजंदिव्यं स्नानीयंमङ्गलात्मकम् । गृहाणपरयाभक्त्या सत्यभामापतेप्रभो ॥ स्नानान्ताचमनीयं समर्पयामि—यज्ञोपवीतम्—सावित्रीग्रन्थिसंयुक्तं स्वर्णतन्तुविनिर्मितम् । गृह्यतांदेवदेवेशरचितंचारुकारुणा । वस्त्रम्—वस्त्रं क्षौमंविशुद्धाभंनिर्मितंविश्वकर्मणा । कल्पितंपरयाप्रीत्या गृह्यतां राधिकापते । चन्दनम्—प्रधानादरणीयश्च सर्वमंगलकर्मणि । प्रगृह्यतांदीनबन्धो गन्धो ऽ यं मंगलप्रदः ॥ पुष्पम्—जातीचम्पकपुष्पाणितुलसीमिश्रितानिच । गृहाणदीनबन्धोत्वं सत्यभामाप्रियप्रभो ॥ (अत्रकतिचित्पुराणेष्वंगपूजोक्तास्तेयम्) ॐ दामोदरायनमःपादौपूजयामि । ॐ माधवायनमःजानुनीपूज० । ॐ कामपतयेनमःगुह्यंपू० ॐ वामनायनमःकटिंपू० ॐ पद्मनाभायनमःनाभिपू०ॐ विश्वमूर्तयेनमःउदरंपू० ॐ ज्ञानगम्यायनमःहृदयं पूज० । ॐ श्री कण्ठायनमः कण्ठं पू० । ॐ सहस्रबाहवेनमः बाहू पू० । ॐ ध्यानगम्यायनमः चक्षुषीपू० । ॐ उरगायनमः ललाटं पू० । नाकसुरेश्वरायनमः नासां पू० ॥ श्रवणेशायनमः श्रवणे पू० । ॐ सर्वकामदायनमः शिखां पू० । ॐ सहस्रशीर्ष्णे नमः शिरः पू० । ॐ सर्वस्वरूपिणेनमः सर्वांगंपूजयामि । धूपम्—रसोत्तमविशेषस्य नानाद्रव्य समन्वितः । सुगन्धयुक्तः सुखदोधूपो ऽ यं प्रतिगृह्यताम् ॥ दीपम्—दिवानिशं सुप्रदीप्तो रत्नसार विनिर्मितः । घनध्वान्त विनाशाय दीपो ऽ यं गृह्यतांहरे ॥ मधुपर्कम्—सर्वेषां प्रीतिजनकं सघृतं मधुरंमधु, पात्रस्थंमधुपर्कं यद्गृहाण रुक्मिणी पते ॥ नैवेद्यम्—एकादश्युद्यापने चतुर्विंशति संख्यकानि नैवेद्यानि दद्यात् ।—मोदकां ल्लड्डुकांश्चापि घृतपूरकमंडकान् । सोहोलिकादिकंसार सेवासक्तुफलानि च । वटकानपायसं दुग्धं शालिदध्योदनंतथा । इंडिरकाः पूरिकाश्चापूपान् गुड़मोदकान् ॥ तिलपिष्टं खण्डपिष्टं लाजादुग्धं सशर्करम् । रम्भाफलंच सघृतंमुद्गचूर्णं गुडौदनम् । नैवेद्यंगृह्ण श्रीकृष्ण उद्यापनविधौ हरे ॥ आच-

मनम्—निर्मलं जान्हवीतोयं सपवित्रं सुवासितम्। पुनराचमनीयं च गृह्यतां मधुसूदन। ताम्बूलम्—एलाग्वादिर संयुक्तं कर्पूरादि सुवासितम्॥ मया निवेदितंनाथ ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्। उपायनम्—उपानीत मिदंद्रव्यं यावच्छक्ति प्रकल्पितम्। गृहाणानाथ नाथत्वं हरेचैकादशीप्रिय॥ पुष्पमालां हस्ताभ्यां दर्शयित्वा च। नानाप्रकार पुष्पैश्च ग्रथितंसूक्ष्मतन्तुना॥ प्रवरं भूषणानांचमाल्यं मेप्रतिगृह्यताम्॥ मंत्रपुष्पांजलिम्—हे कृष्ण राधिकानाथ करुणा सागरप्रभो! संसार सागरे घोरेमां समुद्धरमाधव। शत जन्म गतायाता दुःखिग्नस्य ममप्रभो॥ स्वकर्मपाशनिगडै र्बन्धस्य मोक्षणंकुरु। प्रणतंपादपद्मेते पश्यमां शरणागतम्॥ मार्तण्डतनयाद् भीतं पाहिमां भक्तवत्सल। भक्तिहीनंक्रियाहीनं विधिहीनञ्च वेदतः। वस्तुमंत्रं विहीनं यत्तत्सम्पूर्णं कुरुप्रभो। वेदोक्तविहिता ज्ञानात्स्वांग हीनेचकर्मणि॥ त्वन्नामोच्चारणेनैव सर्वंपूर्णं भवेद्धरे॥ ततः सफलार्घ्यंवामेकरे कृत्वोपरितोदक्षिणहस्तमुत्तानंन्यस्य हे कृष्ण द्वारिकावासिंल्लक्ष्मी कांतदयानिधे। गृहाणार्घ्यं मयादत्तं व्रत संपूर्ति हेतवे॥ फलं पुरतो निधायार्घ्यं जलेनदेवं स्नापयेत॥ ततः कथाश्रवणार्थमाचार्यं व्यासत्वेनवृणुयात। व्यास स्वरूपिणं ब्राह्मणं संपूज्यवरण द्रव्यंकरेकृत्वा ॐ अद्येहेत्यादि देशकालौ सकीर्त्यामुकैकादश्यां शुभपुण्यतिथौ—अमुकगोत्र प्रवरो ऽ हममुक शर्माकर्तव्यैकादश्युद्यापन कर्मणि देवपूजनानन्तरमद्यनिशायां। शक्तिवशत्यैकादशी माहात्म्यपारायण श्रवणंकर्तुंमेभिर्वासांगुलीय धौतवस्त्रादि वरणद्रव्यैरमुक शर्माणं ब्राह्मणं कथावाचनार्थं व्यासत्वेन त्वामहंवृणे। इति वरणद्रव्यंदत्वा करवाणीतिप्रत्युक्तिः॥ ततेरात्रौ माहात्म्य श्रवणादिभिर्जागरणं कृत्वाद्वितीयदिनेनित्य कर्मविधायाचार्यावाहितदेवताः। संपूज्यहोमार्थं मंडपंनिर्माया ग्निस्थापनपद्धत्यनुसारेण पंचभूसंस्कारान्कृत्वा तेनैव पद्धत्या घृतोक्तद्वादशाहुत्यनंतरंप्रधानहोमंपायसेनकुर्यादभावे यवतिल घृतादिभिः कुर्यात-ततः क्षीरमानीय तस्मात्पायसात्।

ॐ पवित्रंतेविततम् । इति मंत्रेणकिंचित्पृथगुध्दृत्यपात्रान्तरे स्थापयेत् । तदुक्तंव्रतराजेपायसादुध्दृतं किंचित्प्रापणं तत्प्रकीर्तितम् । एतदेवप्रापणमग्रे देवायच निवेदयेत् । तत्रादौघृतेन—ॐ सहस्रशीर्षा० १६ ऋक् ॐ अग्नये स्वाहा ॐ इन्द्राय स्वा० ॐ प्रजापतये स्वा० । ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्यः स्वा० ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ततो घृताक्तपायसेन ॐ वसुदेवाय स्वाहा ॐ रामाय० ॐ श्रियै० ॐ विष्णवे० ॐ विष्णोनुकमिति तिसृणांदीर्घतमा ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः विष्णुर्देवता होमे विनियोगः । ॐ विष्णोर्नुकंवीर्य्याणि प्रवोचंयः पार्थिवानि विममेरजाꣳसि स्वाहा । ॐ तदस्यप्रियं स्वा० ॐ प्रतद्विष्णुस्तवतेवीर्य्येण मृगोनभीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषुविक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानिविश्वा स्वाहा । ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवःस्वा० ॐ स्वः स्वा० ॐ भूर्भुवः स्वःस्वा० ॐ केशवायनमःस्वा० ॐ नारायणायनमः० ॐमाधवाय० ॐ गोविन्दाय० ॐ विष्णवेमधुसूदनाय० ॐ त्रिविक्रमाय० ॐ वामनाय० ॐ श्रीधराय० ॐ हृषीकेशाय० ॐ पद्मनाभाय० ॐ दामोदराय० ततो घृतेन—ॐ स्त्रीचतुः सहस्रपरिवृतायै रुक्मण्यै स्वाहा ॐ स्त्रीचतुः सहस्र० सत्यभामायै स्वाहा । ॐ स्त्रीचतुः सहस्र० जाम्ववत्यै स्वाहा ॐ स्त्रीचतुः सहस्र०कालिन्द्यै स्वाहा । ॐ शंखाय० ॐ चक्राय० ॐ गदायै० ॐ पद्माय० ॐ वैनतेयाय० ॐ इन्द्राय० ॐ अग्नये० ॐ यमाय० ॐ निर्ऋतये० ॐ वरुणाय० ॐ वायवे० ॐ सोमाय० ॐ ईशानाय० । ततः सर्वतोभद्रस्थ ब्रह्मादिमंडलदेवतास्तत्तन्मंत्रैर्वा नाममन्त्रैर्वाज्य तिलैर्होमयेत् । ततः स्विष्टकृद्धोमं कृत्वा पूर्णाहुत्यर्थंयजमानः घृताक्तं श्रीफलं निधायोतिष्ठन्सन्—ॐ पूर्णादर्वीत्यस्यौर्णनाभ ऋषिरनुष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवता पूर्णाहुतिहोमे विनियोगः । ॐ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णा पुनरापत । वस्नेवविक्रीणावहा ऽ इषमूर्जं ꣳ० शतक्रतोः स्वाहा । ततः पृथक्स्थापितपायसं घृताभ्यक्तंपात्रे धृत्वा वक्ष्यमाणमंत्रेण निवेदयेत्—ॐ त्वामेकमाद्यं पुरुषंपुराणं

नारायणं विश्वसृजंयजामः। त्वयैषभागो विहितो विधेयो गृहा एहव्यंजगतामधीश। ततो ऽ ग्निंचतुर्वारं प्रदक्षिणीकृत्य ॐ भिंदि विश्वाअपद्विषः। इतिमंत्रेण धरण्यां जानुनीनिपात्यभुव सूक्तं पुरुषसूक्तंवापठित्वा अष्टौपदानि प्रतिदिशं वक्ष्यमाणमंत्रैस्त्यक्त्वा गच्छेत्। मन्त्राः ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरयेपरमात्मने शरण्यायाप्रमेयाय गोविन्दायनमोनमः। नमः स्थूलाय सूक्ष्माय व्यापकाव्यापकाय च। अनन्ताय जगद्धात्रे ब्रह्मणे ऽ नन्तमूर्तये। अव्यक्तायाखिलेशाय चिद्रूपायगुणात्मने। नमोमूर्तायसिद्धायपरायपरमात्मने। देवदेवायवेद्याय परायपरमेष्ठिने। कर्त्रे विश्वस्य गोप्त्रे च तत्संहर्त्रेचतेनमः। ततो देवायनिवेदितं पायसमानीय शिरसिधृत्वा केवैष्णवाः केवैष्णवाः केवैष्णवाः। इत्युच्चैर्घोषयेत् ततः समानाः प्रतिवदेयुः। वयं वैष्णवाः इति वारत्रयंघोषयेयुः ततस्तेभ्योहविर्दत्वा स्वयमनेन मंत्रेण प्राशयेत् ॐ नमोभगवते वासुदेवाय, इदममृतमहं प्राश्नामि इतिप्राश्य—आचम्य—प्राणानायम्य यजमान आचार्योवापुनर्होम समीपमागत्य ॐ सिद्धये स्वाहा इत्यग्नावाज्यं जुहुयात्—ततः ॐ यतइन्द्रभयामहेततोनोऽ अभयंकुरुशन्नः कुरुप्रजाभ्योभयंनः पशुभ्यः इत्यात्मानमभिमंत्रयेत्। ततो यजमानः सांगतासिध्द्यर्थं माचार्यादीन् विध्युक्तप्रकारेण सम्पूज्य दक्षिणादिभिः प्रतोष्याचार्याय सालंकारां सवत्सांगां च दद्यात्। ततश्चतुर्विंशदामान्नानि सयज्ञोपवीत पूगीफल दक्षिणानि सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्—अद्येहेत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं कर्तव्यैकादशी व्रतोद्यापनकर्मणः सांगतासिद्धये शुक्लैकादशी निमित्तं केशवादि नाममंत्रोच्चारणेन तथा कृष्णैकादशी निमित्तं शंकर्षणादि नाममंत्रोचारणेन चतुर्विंशति ब्राह्मणेभ्यो नानागोत्रेभ्योदास्ये–ॐतत्सत्कृष्णार्पणमस्तु नममवक्ष्यमाणमंत्रैः प्रत्येकायदद्यात्—ॐ केशवायनमः१ ॐ नारायणायनमः२ ॐ माधवायनमः३ ॐ गोविन्दायनमः ४ ॐ विष्णवेनमः ५ मधुसू-

दनायनमः ६ ॐ त्रिविक्रमायनमः ७ ॐ वामनायनमः ८ ॐ श्रीधरायनमः९ ॐ हृषीकेशायनमः १० ॐ दामोदरायनमः १२ इतिशु० ॐ संकर्षणायनमः १ ॐ वासुदेवायनमः २ ॐप्रद्युम्नायनमः ३ ॐ अनिरुद्धायनमः ४ पुरुषोत्तमायनमः ५ ॐ अधोक्षजायनमः ६ ॐ नारसिंहायनमः७ ॐअच्युतायनमः ८ ॐ जनार्दनायनमः ९ ॐ उपेन्द्रायनमः १० ॐ हरयेनमः ११ ॐ श्री कृष्णायनमः। एवं नाममंत्रेण सम्पूज्य ब्राह्मणेभ्योदद्यात्— प्रार्थयेत्—हविष्यान्नंद्रोणपात्रे ससूनं च सदक्षिणम् । ददामि द्विजवर्याय केशवःप्रीयतामिति । इत्यत्रकेशवपदस्थने पूर्वोक्त देवनाम्ना मूहः कार्यः ततः सोपस्करं देव प्रतिमापीठादिकमुत्तरांग पूजनंविधायाचार्यायदेयं प्रार्थयेच्च ॐ यस्यस्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतांयान्तु सद्योवंदेतमच्युतम् । ततः कलशजलं पात्रान्तरे कृत्वा यज्ञशालामागत्याचार्यः पूर्वोक्तविधिना सुरस्त्वामभिषिचन्तु० इत्यादिभिरभिषिंचेत तिलकंकृत्वादेवोपभुक्त निर्माल्यंदद्यात् अग्निंविसृजेत् ॐ गच्छ-२ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर यत्रब्रह्मादयो देवास्तत्रगच्छहुताशन । ॐ यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम् । इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनंकुरु । अद्येत्यादि० कृतस्यकर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं नाना नाम्नगोत्रान्ब्राह्मणान्-अहं भोजयिष्येतेभ्यो दक्षिणांच दास्ये । ततो व्रतं सम्पूर्णतां वाचयेत । ॐ जपच्छिद्रं तपश्छिद्रं यच्छिद्रं व्रतकर्मणि । सर्वं भवत्वच्छिद्रंमे ब्राह्मणानां प्रसादतः ॥ ततो ब्राह्मणान्नमस्कृत्येष्टजनैःसह भुंजीत ॥

॥ इति एकादशी व्रतोद्यापन पद्धतिः ॥

—

अथ भीष्मपंचक परिभाषा

अथच कार्तिक शुक्लैकादशीमारभ्य-पूर्णिमान्तं भीष्मपञ्चकव्रतम् ॥—

अत्रैकादशी शब्देनप्रसिद्धव्रतदिनग्रहणम् । प्रकारान्तरेण लक्षणायां प्रमाणाभावात् ॥ तिथिश्च युग्मवाक्या द्वादशीविद्धैवग्राह्या ॥ दिक्पञ्चदशभिस्ततैवत्युक्तवेधस्यैवदूषकत्वम् । एवं च दशम्यविद्धैकादशीमारभ्यपंचदिनात्मकंव्रतं चतुर्दश्यविद्ध पूर्णमास्यां चेतत्समाप्यते नैवात्रसन्देहः॥ तिथिक्षयवशेन नैवं घटते चेत्विद्धायामप्यारम्भः प्रधानग्रता नुरोधेनांगतिथिगुणस्य परविद्धत्वादेरनादरणीयत्वात् ॥ एवमविद्धैकादश्यामारभ्य । परविद्ध पूर्णमास्यामसमाप्ते यदि तिथि वृद्धिवशेन षड्दिनापत्तिस्तदा चतुर्दशीविद्धापौर्णमास्यां समाप्तिः । उपक्रमसमाप्त्यो रङ्गत्वाद विशेषेऽपि मुख्यंवैतन्यायेनोपक्रम धर्मस्यैव बलवत्वात्-विशेषो धर्मशास्त्रादिषुद्रष्टव्यः । उक्तंच भीष्मपञ्चकव्रतं मदन रत्ने देवी पुराणे ॥ एकादश्यान्तु गृहणीयाद्व्रतं पञ्चदिनात्मकं । प्रातः स्नात्वाविधानेन मध्याह्नेच तथाव्रती ॥ नद्यां निर्झरगर्तेवा समालभ्यच गोमयम् ॥ यवव्रीहितिलैःसम्यक्पितॄन्संतर्पयेत्क्रमात ॥ स्नात्वामौनं नरः कृत्वाधौत वासा दृढ व्रतः ॥ ततः सम्पूजयेद्देवं सर्वपापहरं हरीम् ॥ स्नापयेच्चाच्युतंभक्त्या मधुक्षीरघृतेनच तथैव पञ्चगव्येन गन्ध चन्दन वारिणा ॥ धूप दीपेन पुष्पेण नैवेद्य दक्षिणादिभिः ॥ पूजये द्वासुदेवंच ॐ नमो वासुदेवेति मंत्रतः ॥ दीपकंच दिवारात्रौदद्यात्पंचदिनानिच ॥ ॐ नमोवासुदेवेति जपेदष्टोतरं शतं ॥ जुहुयाच्चघृताभ्यक्त तिलव्रीहियवान्व्रती ॥ षडक्षरेण मन्त्रेण स्वाहाकारन्वितेनच । उपास्य पश्चिमां संध्या प्रणम्य गरुडध्वजं ॥ जपित्वा पूर्ववन्मंत्रं क्षितिशायोभवेन्नरः ॥ सर्व मेत द्विधानंच कार्यं पञ्चदिनेष्वपि ॥ विशेषोक्तं व्रतेचास्मिन् द्यन्यूनं शृणुष्वतत् ॥ प्रथमेन्हिहरेः पादौ पूजयेत्कमलैर्नरः ॥ द्वितीये विल्वपत्रेण जानुदेशं समर्चयेत ॥ पूजयेतु तृतीयेन्हि नाभिंभृंगारकेणतु ॥ वाणविल्वजपाभिश्चततः स्कन्धौसमार्चयेत् ॥ ततस्तु पूजयेच्छीर्षं मालत्या चक्र पाणिनः । **पाद्मेतु**—भीष्मायोदकदानंच अर्घ्यंचैव प्रयत्नतः । पूजाभीष्मस्य कर्त्तव्या दानं दद्यात्प्रयत्नतः ॥ त्रि.प्राश्यगोमयं सम्यगेकादश्या मुपावसेत् ॥ गोमूत्रं मंत्र वद्भूयो द्वादश्यां प्राशयेद्व्रती ॥ क्षीरंचैव त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां तथादधि ॥ संप्राश्यकायशुध्यर्थं लंघनीयं चतुर्दिनं॥ पञ्चमे दिवसे स्नात्वा विधिवत्पूज्यकेशवं ॥ भोजयेद्ब्राह्मणान्भक्त्या ततो दद्याच्चदक्षिणाम । ततो नक्तं समश्नीयात्पंच गव्य पुरःसरम ॥ **भविष्योत्तरे**—स्त्रीभिर्वात्रयेन कर्त्तव्यं स्वपत्युः पुण्यवर्धनम् ॥ विधवाभिस्तु कर्त्तव्यं पुत्राणा शुभवृद्धये ॥सर्वकामसमृध्यर्थं मोक्षार्थं चैवपांडव ॥ वैश्वैवस्तु कर्त्तव्यो—विष्णुध्यानपरायणैः । पापस्यप्रतिमा कार्या रौद्रवक्त्त्रातिभीषणा खड्ग हस्तातिं विकृता लौहीदंष्ट्राकरालिनी ॥ तिलप्रस्थोपरिस्थाप्या कृष्णवस्त्राभिवेष्टिता ॥ रक्त वस्त्र कृता पीडा ज्वलत्कांचन कुंडला ॥ सम्पूज्य परयाभक्त्या धर्मराजस्यनमाभि।शेषंप्रयोगेष्टंम्॥

॥ अथ भीष्म पंचक प्रयोग पूजापद्धतिः ॥

अथ च भीष्मपंचकव्रतं कर्ताप्रातः स्नात्वासंध्यामुपास्य-पूर्वोक्तै कादश्यां मध्यान्हेवा प्रभाते गंगासमीपे वातडागे कूपेनिर्झरे वा यथालब्ध जलाशये समागम्य हस्तौपादौ प्रक्षाल्यताम्रपात्रमादा योदङ्मुखः पवित्रपाणिराचम्य संकल्पंकुर्यात अद्येहेत्यादि देश कालौसंकीर्त्यामुकगोत्रप्रवरो ऽमुकशर्म्माहं,, अद्यैकादशीमारभ्यपौर्णिमा पर्यन्त जन्मार्जित समस्तप्रायश्चित्त दूरीकरणार्थ चातुर्वर्गफलावाप्तये श्रीकृष्णप्रीत्यर्थं भीष्मपंचक व्रतं करिष्ये। ततो गोमयस्नानम्,, गोमयमानीयमंत्रयेत्-ॐ अग्रमग्रंचरन्ती नामौषधीनां वने वने ॥ तासामृषभपत्नीनां, पवित्रं काय शोधनम् ॥ तन्मेरोगांश्चशोकांश्चनुदगोमय सर्वदा । इत्यभिमंत्र्य । ॐ मानस्तोक इतिमंत्रस्य कुत्सऋषिः । रुद्रोदेवता जगतीछन्दः अंगानुलेपने विनियोगः ॥ ॐ मानस्तोकेतनयेमान ऽआयुषिमानो गोषुमानोऽश्वेषुरीरिषः मानोवीरान्रुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदामित्वाहवामहे । इतिसोदकं गोमयमुभाभ्यां हस्ताभ्यांसूर्याय-दर्शयित्वा वारत्रयं ललाटादिपादतलपर्यन्तान्यंगान्यनुलिप्य प्रक्षालयेत ॥ ततोवारत्रयं निमज्योन्मज्यस्नात्वा तीरमागत्य, तर्पणोक्त विधिना पितॄन्संतर्प्य ॥ तदुपरिहरिपूजासमाप्तिपर्यंतं दृढमौनीभवेत ॥ तर्पणान्ते पुनःस्नात्वा-धौतंवासः परिधाय तिलकं कृत्वोदकोक्तमंत्रेण गंधपुष्पादि युतमर्घ्यं भीष्माय दद्यात तन्मंत्रः ॥ अर्घ्यंनिधाय—ॐ सत्यव्रतायशुचये गांगेयायमहात्मने ॥ भीष्माय च ददाम्यर्घ्यमाजन्म ब्रह्मचारिणे ॥ वसूनामवताराय शंतनोरात्मजायच अर्घ्यं ददामि भीष्माय सोमवंशोद्भवाय च । इति पंचधार्घ्यंदत्त्वा ॥ ततोजीवितपितृकोपि अपसव्येन पितृतीर्थे न दक्षिणजान्वाच्य-तिलोदकंदद्यात ॥ सतिलजलमंजलौनिधाय—मंत्रः-वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृत्यप्रवरा यच ॥ गंगापुत्राय भीष्माय प्रदास्येहंतिलोदकम् ॥ अपुत्रायददाम्यै

तत्सलिलं भीष्म वर्म्मणे ॥ इति पंचधासलिलं दत्त्वा ॥ ततो लक्ष्मी वासुदेव सहितं भीष्मं ॥ ॐ लक्ष्मीवासुदेवयुत भीष्माय नमः ॥ इतिमंत्रेण पंचोपचार–पाद्य स्नान गंध धूप दीप नैवेद्या दिभिर्जलैसंपूज्य–पंचरत्नानि ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ ॐ अद्येहेत्यादि अमुकोहं भीष्मपंचक व्रतनिर्विघ्नता सिद्धये इदानीं सकलकिल्मि षदूरीकरणार्थं श्री लक्ष्मी वासुदेव सहित भीष्म प्रीत्यर्थं पंचरत्न दानंकरिष्ये ॥ इतिब्राह्मणायदत्वा ॥ वारिपूर्णताम्रकलशंकृत्वा नग्न पादो वा काष्ठ पादुकारूढो भूत्वा गृहमागत्य पाणिपादौ प्रक्षाल्य पूजास्थलमागत्य । आचम्य—भूतोत्सादनंकृत्वा दीपं दद्यात ॥ सचदीपोऽवच्छिन्नतयायथा पंचसुदिवसेषु भवेत तथैव रक्षयेत ॥ संपूज्य च–ततः प्राणायामान्ते आवाहनाद्युपचारान् जलेनाभ्युदय सुवर्ण प्रतिमां लक्ष्मीसहितां वा शालिगरामं पुरतः संस्थाप्य संकल्पं कुर्यात् ॥ देशकालौ संकीर्त्यांद्य कार्तिक शुक्लै कादश्यांभीष्मपंचक व्रताख्ये—श्री लक्ष्मी सहितं हरिं यथा लब्धोपचारेणाहं पूजयिष्ये ॥ पुष्पंगृहीत्वाध्यायेत ॥ ध्यानासाध्यं दुराराध्यं ब्रह्मादीनां च वंदितम् ॥ हरिंध्यायामि मनसा पंच भीष्म व्रताप्तये । पाद्यम्–पादप्रक्षालनार्थंतद्दिव्यंवारि सुनिर्मलम् ॥ हरेगृहाण–पाद्यं त्वं पंचभीष्मव्रताप्तये ॥ आसनम्–आसनार्थमि-दंवस्त्रंपुष्पंवागृह्यतांहरे । भक्तवत्सलहेकृष्ण पंच भीष्मव्रताप्तये ॥ अर्घ्यम्—इदमर्घ्यंपवित्रंचशङ्खतोयमसमन्वितं ॥ पुष्पदूर्वाचन्द-नाक्तं गृहाणकमलाप्रिय ॥ स्नानीयम्—गंगादि तीर्थजंदिव्यं स्नानीयं जलमुत्तमम् ॥ हरेगृहाण-परमं-पंचभीष्म व्रताप्तये ॥ चन्दनम्—चन्दनागरुकस्तूरी-संयुतंनिर्मलंशुभम् ॥ हरेगृहाणगंध त्वंपंचभीष्मव्रताप्तये ॥ धूपम्—रसोवृक्षविशेषस्य नानाद्रव्य-समन्वितः । सुगन्धयुक्तःसुखदो धूपोयंप्रतिगृह्यताम् । दीपम्—दिवानिशंसुप्रदीप्तो रत्नसारविनिर्मितः ॥ उत्तमोज्योतिषांज्योति र्दीपोयंगृह्यतांहरे ॥ नैवेद्यम्–नानाविधानिद्रव्याणिस्वादूनिमधु-राणिच ॥ चोष्यादीनिपवित्राणि स्वात्मारामप्रगृह्यताम् ॥ मधु-

पर्कम्—देवानां प्रीतिजनकं सघृतंमधुरंमधु ॥ हरे गृहाण सुप्रीत्या पंचभीष्मव्रताप्तये ॥ पंचामृतम्—सुस्वादुमधुरंपेयं दुग्धंमिष्टान्नसंयुतम् ॥ पंचामृतंचगोविन्द गृहाणत्वंव्रताप्तये ॥ पुनराचमनम्—निर्मलंजान्हवीतोयं भोज्यान्तेतृप्तिदायकम् ॥ पुनराचमनीयंचगृह्यतांमधुसूदन ॥ दक्षिणाम्–हिरण्यंराजतं द्रव्यं वित्तशाठ्यविवर्जितम् ॥ उपायनीभूतमिदंगृह्यतांकमलापते ॥ ततःपुष्पांजलिम्—नानाप्रकारपुष्पैश्चग्रन्थितं सूक्ष्मतंतुना । प्रवरंभूषणानांच माल्यंचगृह्यतांहरे ॥ चक्रिन्श्रीनाथभक्तेशभीष्मप्रणसुरक्षक ॥ संसारसागरेघोरे मामुद्धरभयानके ॥ शतजन्मगतायातादुद्विग्नस्यममप्रभो ॥ स्वकर्मपाशनिगडैर्बन्धस्य मोक्षणं कुरु । प्रणतंपादपद्मेते पश्यमांशरणागतम् ॥ मार्त्तण्डतनयाद्भीतं पाहिमांभक्तवत्सल । भक्तिहीनंक्रियाहीनं विधिहीनंचवेदतः ॥ वस्तुमन्त्रविहीनंयत् तत्सम्पूर्णंकुरुप्रभो ॥ वेदोक्तविहिताज्ञानात स्वांगहीनेचकर्मणि ॥ त्वन्नामोच्चारणेनैव सर्वपूर्णंभवेद्धरे । एभिर्मंत्रैः प्रथमेन्हिएकादश्यांकमलपुष्पंपादौनिधाय पादौगन्धाक्षतादिभिः पूजयेत् ॥ तन्मन्त्रः । ३ॐ हरयेनमः ॥ इति मन्त्रेणकमलपुष्पैस्तदभावे अन्यपुष्पैःपूजयेत् । ततो वक्ष्यमाणमन्त्रमष्टोत्तरशतंजपेत् ॥ ३ॐ हरयेनमः १०८ वारंजप्त्वा । प्रादेशमात्रं चतुरस्रकुण्डंवामण्डपंविधाय पूर्वोक्तहोमपद्धति प्रकारेणाग्निप्रतिष्ठापनादिकंकृत्वा घृताभ्यक्ततिलव्रीहियवान् ३ॐ हरयेनमः स्वाहा, इति अष्टोत्तरशतंहुत्वा, सुवर्णदक्षिणांब्राह्मणायदद्यात् ॥ ततः कायशोधनार्थं गोमयंप्राशयेत् । तन्मन्त्रः—३ॐ गन्धद्वारांदुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ इति वारत्रयंप्राशयेत् ॥ ततः पंचदिनात्मकोपावासं कर्त्तुमशक्तश्चे न्नीवारफलमूलशाकादिकं भक्षयेन्नत्वन्नम् ततः सायंकालेपूजास्थलमागत्यसायं सन्ध्यामुपास्यविष्णुंप्रणम्य–धूपार्तिक्यादिकंकृत्वा ॥ ३ॐ हरयेनमः । इति १०८ वारजप्त्वा-रात्रौ भूमिशायीभवेत् ॥ एवंपंचस्वपिदिनेषुकुर्यात् । इत्येकादशीदिन

कृत्यम् । एवंद्वादश्यामपिपूर्वोक्तविधिनासर्वंकृत्यंकृत्वा । ॐ पूर्वोक्तपुष्पांजलिमन्त्रै विल्वपत्रैर्जानुनी-पूजयेत्। ततो गौमूत्रं गायत्रीमन्त्रेणाभिमंत्र्य-वारत्रयंप्राशयेत्। ततस्तृतीयदिनेभृङ्ग-राज पत्रपुष्पाभ्यांनाभिंपूजयेत् ॥ ततः ॐ पयसाशुक्रममृतंजनित्र ई० सुरयामुन्त्रांजनयन्तरेतः । अपामतिंदुर्मतिंवाधमानाउवर्ध्यं वात ई० सर्व्वन्तदारात् ॥ इति मन्त्रेण-वारत्रयंदुग्धं-प्राशयेत्। चतुर्थेदिनेवाणविल्वजपाभिः। स्कन्धंपूजयेत्। ततः ॐ दधिक्रा-व्णोऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्यवाजिनः सुरभिनोमुखाकरत्प्रणआयू ॐ पितारिषत् ॥ इतिमन्त्रेणवारत्रयंदधिप्राश्नीयात् ॥ ततः पंच मेन्हि-प्रथमदिनोक्तं सर्वकर्मकृत्वामालतीपुष्पेणशिरः पूजयेत् ॥ उक्तलक्षणां-लोहींप्रतिमां पापपुरुषस्यकृत्वा एकप्रस्थतिलोपरि संस्थाप्यवक्ष्यमाणमन्त्रैःपूजयेत्। ॐ यमायनमः आवाहनं। ॐ धर्मराजायनमः स्थापनं। ॐ मृत्यवेनमः प्रतिष्ठापनं। ॐ अन्त-कायनमः स्नानम्। ॐ वैवस्वतायनमः चन्दनं। ॐ कालायनमः तिलाक्षतान् ॐ सर्वभूतायनमः पुष्पं । ॐ औदुम्बरायनमः धूपं। ॐ दध्नायनमः दीपं। ॐ नीलायनमः नैवेद्यं। ॐ परमे-ष्ठिनेनमः पुनराचमनम्–ॐ वृकोदरायनमः उपायनमं। ॐ चित्रा नमः सफलार्घ्यम्। ॐ चित्रगुप्तायनमः मन्त्रपुष्पांजलिमादाय ॐ यदन्यजन्मनिकृतमिहजन्मनिवापुनः। पापंप्रशममायातुतव-पादप्रसादतः। अद्येहेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोहं यन्मया भीष्मपंचकव्रतकर्मणि जन्मार्जितसमस्तपापदूरीकरणार्थं श्रुतिस्मृ तिपुराणोक्तफलावाप्तये श्रीकृष्णप्रीत्यर्थमिमां पापप्रतिमांधर्मोमे प्रीयतामिति निश्चलाभक्त्या मुकगोत्राया मुकशर्मणेविप्रायतुभ्य महंसन्दास्ये भूमिदेवायदत्वा–अद्य० पापपुरुषप्रतिमादानप्रतिष्ठार्थं सपादमासमात्रसुवर्णंचाहंदास्ये। विप्रोब्रूयात्—निश्चलोधर्मस्ते प्रीयताम् । ततः शायंकालेपूर्ववत्कर्मकृत्वा रात्रौपञ्चगव्योक्त मन्त्रैः पञ्चगव्यमभिमन्त्र्यचगायत्र्यावारत्रयंप्राश्नीयात्। यदिपञ्च भीष्मव्रतोद्यापनंचेदिदानीं श्रीसत्यनारायणपद्धत्युक्तप्रकारेणसर्वं

कर्मकृत्वा रात्रौकथाश्रवणादि नृत्यगानादिभि र्जागरणंकृत्वापरे ऽन्हि शान्त्यर्थंगौदानहवनादिकं समाप्यविप्रांश्चभोजयेत् । तेभ्यो दक्षिणांश्चदद्यात् । उक्तदानाभावपक्षेब्राह्मणभोजनादि स्त्रीशूद्राणां पञ्चगव्यदानंतत्प्राशनंचामन्त्रकम् । जपहोमावप्रणवौ द्वितीयादिदिनेषुवस्त्रं गौघृतंपायसं श्वेतकृष्णतिलयुतं वस्त्रंचसुवर्णस्थाने क्रमेणदेयानि । ताम्बूलाभ्यंगवर्जनसत्यवचनादिनियमयुक्तः पंच दिनेषुभवेत् ।

इति पञ्चभीष्मव्रतोद्यापनपद्धतिः

॥ अथ तुलसीविवाह विधिः ॥

अथ तुलसी विवाह विधिः,–उक्तंच विष्णु यामले—आदावेवाथ तुलसी वनेवाखगृहेपिवा । आसन्नसेण संवर्ध्या ततोयजन मारभेत् । सौम्यायने प्रकर्तव्यं गुरु शुक्रोदये तथा ॥ अथवा कार्तिके मासि भीष्मपञ्च दिनेषुवा । वैवाहिकेषु ऋक्षेषु पूर्णिमायां विशेषतः । मण्डपं कारयेत्तत्र कुण्डवेदी विवाहवत ॥ ब्राह्मणाश्च शुचिन्स्नातान्वेदवेदांग पारगान् । ब्राह्मणं देशिकंचैव चतुरश्च तथार्त्विजः । ग्रहयज्ञंपुरःकृत्वा मातृणां यजनं तथा । कृत्वा नान्दीमुखं श्राद्धं सौवर्णं स्थापयेद्धरिम् । कृत्वाच रौप्यां तुलसीं लग्नं त्वस्तमितेरवौ ॥ संपूज्या लंकृतां तांच प्रदद्याद्विधिना हरेः (षष्ठी चतुर्थ्यर्थे) वासः शतेनमन्त्रेण वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत । यदाबध्नेति मंत्रेण कङ्कणं पाणिपल्लवे ॥ कोदादितिच मंत्रेण करग्रहो विधीयते । कर्त्तव्यश्च ततो होमो विशेषाद्विधि पूर्वकम् । आचार्यो वेदिका कुण्डे जुहुयाच्च तथाहुतीः ॥ ॐ नमो भगवते केशवायनमः स्वाहा, इत्यादि चतुर्विंशति नामभिर्जुहुयात् । यजमानः सपत्नीकः सहामात्यैश्च गोत्रजैः । प्रदक्षिणाः प्रकुर्वीतचतस्रो विष्णुनासह । पठेयुः शान्तिका ध्यायांस्तथा वैष्णव संहिताम् गायन्तो मङ्गलं नार्योभेरी तूर्यादिभिः स्वरैः ॥ गांपदंच तथा शय्यामाचार्याय प्रदापयेत् ॥ ऋत्विग्भ्यो दापयेद्द्रव्याण्यन्येषां चैव दक्षिणाम् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्सर्पिः क्षीरैः सशर्करैः । एवं प्रतिष्ठितांदेवीं विष्णुनाचसमर्पयेत् ॥ आजन्मो पार्जितं पापं दर्शनेन प्रणश्यति ॥

॥ इति तुलसी विवाहपरिभाषा ॥

धर्म सिन्धुसारे काशीनाथ मततु— तुलसी विवाहस्य नवम्यादि दिनत्रये, एकादश्यादि पूर्णिमान्ते यत्र क्वापिदिने कार्तिक शुक्लान्तर्गत विवाह नक्षत्रेषुवा विधाना दनेक कालत्वं तथापि पारणाहे प्रबोधोत्सव कर्मणासह तन्त्रतयैव सर्वत्रानुष्ठीयते इतिसोपि पारणाहे पूर्वरात्रे कार्यः। प्रबोधोत्सवात्पृथक चिकीर्षाया कालान्तरे चाचार्य ॥

अथ तुलसी विवाह पद्धतिः

अथच तुलसीविवाहोविष्णुनासहानेकधा भवति तत्रादौ सुवर्णगोपालमूर्त्तिनासह,, यथा मानुषीकन्यायाः पाणिग्रहणे वाग्दानमुहूर्त्तपत्राकरणादि वरगृहात्कन्यागृहे, यथा विभव विस्तारेणमानुषाः समायान्ति, तद्वत्तुलसीविवाहकर्त्ता कस्य-चित्कुटुंबीविप्रद्ब्राह्मणस्य, पूजा स्थापितंगोपालं वृत्वा तुलस्या विवाहं करोति,, तत्रतु वाग्दानं धूल्यर्घं विवाहकर्मच सर्वकृत्यं, लौकिकवद्भवति विवाहमण्डपे होमवेद्यां जयादिहोमोऽस्मा-रोहणादिकर्माणितु वक्ष्यमाणपद्धत्यानुसारेण भवन्ति, अत्रापि ग्रहयागः पूर्ववानुष्ठीयः, यौतकादि सर्वं लौकिकाचारेण विचानु-सारंदेयम्, द्वितीय विवाहस्तु विष्णुप्रतिमारूपाश्वत्थेन सह भवतिसचादौ, अश्वत्थवृक्षं कतिचिद्वर्षैरारोप्य पोषयित्वाच तदनंतरं पूर्वोक्त परिभाषानुसारेण गुरुशुक्रास्तबालवार्द्धक्यादि दोषरहिते विवाहोक्तचन्द्रलग्नानुकूले सुमुहूर्ते, उत्तरायणेवा कार्तिक शुक्लनवमीतः पौर्णिमान्ततिथिषु, मध्ये प्रबोधोत्सवेच कार्यः, तस्मिन्वर्षे स्वगृहे तुलस्याः वृक्षं आषाढहरिशयन्यांवा शुभदिने काचिन्मृत्तनायां वंशपेटिकायामारोप्य जलदानादिना वर्द्धयित्वा पूर्वोक्तकालंपरीक्षेत ॥ अथ कर्मपद्धतिः—तत्रादौ, अश्वत्थतुलसीविवाहकर्त्ता, अश्वत्थसमीपे षोडशहस्तपरिमितं चतुरस्रं मंडपंकृत्वा तत्र मंडपेशाने एकोनविंशति रेखात्मकं सर्वतो

भद्रं पूर्वे ग्रहयागभद्रं, आग्नेये मातृकाभद्रं, नैर्ऋते, वास्तुभद्रं, वायव्येक्षेत्रपालभद्रंचविरच्य, मध्येग्रहयागार्थं कुंडं वा हस्तमात्रं स्थंडिलंकृत्वा, शुभदिनेचन्द्रतारानुकूले त्रिपञ्चनवमितं विवाह दिनंत्यक्त्वा प्रातर्नित्यक्रियांसमाप्य सुमुहूर्त्ते तोरणपूजोक्तपद्धत्यनुसारेण तोरणपूजांकृत्वा दिगीशध्वजानुच्छ्रित्य तोरणोर्ध्वं लिखितपट्टेशंखचक्रगदापद्मचिन्हानां पूजनंकृत्वा, पश्चिमद्वारेणमंडपेगत्वा, ग्रहयागवेदीसन्निधौपट्टे लिखितगणेशादि पंचांगपूजनं कृत्वा, ग्रहयागोक्त विधिना ग्रहान्संपूज्य, सर्वतोभद्रपद्धत्यनुसारेण भद्रं सम्पूज्य, तत्रमध्ये यथावित्तं सुवर्णप्रतिमां दामोदर रूपिणीं, तुलसीरूपां सुवर्णप्रतिमांवारजतप्रतिमां च अग्न्युत्तारण पूर्विकां तत्र संस्थाप्य पुरुषसूक्तेनसम्पूज्य, मातृकाभद्रं वास्तुभद्रं क्षेत्रपालभद्रं च सम्पूज्याचार्यंगंधादिना सम्पूज्य वृणुयात्— अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं कर्त्तव्याश्वत्थतुलसी विवह कर्मणि ब्रह्मकर्म कर्त्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्रप्रवरान्वितममुकशर्माणं त्वामहंवृणे, तस्मैवरणद्रव्यंदत्वा—ॐ आचार्यस्तुयथा० इति प्रार्थ्यभवानीति प्रत्युक्तिः ततो जपार्थंचतुरोऽष्टौवा ब्राह्मणान्विभवानुसारेणजपार्थंवृणुयात्—सम्पूज्य—संकल्पः—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोहं कर्त्तव्याश्वत्थतुलसीविवाहकर्मणो निर्विघ्नतासिद्धये गणेशादिनवग्रहनारायणाष्टाक्षरादिमंत्राणां जपकर्त्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकामुकगोत्रप्रवरान्वितानमुकामुकशर्मणो यथासंख्य कान्ब्राह्मणान्वृणे द्रव्यंदत्वा, कर्मकुरु, करिष्यामः यथावित्तानुसारेण जपंकारयित्वा, ततो प्रातर्विवाहदिने स्वगृहाभ्यंतरे, पट्टे गणेशादि पंचांगदैवतान्विरच्य स्नात्वा शुद्धेधौतेवाससीपरिधाय पूजास्थलमागत्य रक्षाबंधनादि कर्मकृत्वा संकल्पं कुर्यात्— अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोहं ममाखिलविविधपातक प्रशमनपूर्व काभीष्ठ सिद्धिद्वारा श्रीपरेश्वरेण विष्णुरूपिणा, श्वत्थेनसह तुलसीविवाहकर्मणि सकलोपद्रवशांत्यर्थं स्वस्तिवाचन पूर्वकगणेशपूजनं कलशस्थापनं पुण्याहवाचनं नान्दीश्राद्धं मातृका

पूजनं वसोर्धारानिपातनं नवग्रहाणांपूजनंच करिष्ये। ततस्तत्तत्प-द्धत्यासम्पूज्य। गृहांगणेव जित्रैः सहसुवासिनीद्वारा सुरक्षितां तुलसींपेटिकायुतां काष्ठपीठेधृत्वा मंगलस्नानसमये गायन्त्यः सौभाग्यवत्यः हरिद्रादधितैलादि पिष्टकादिसुगन्धिद्रव्यमिश्रित चूर्णेन तैलादिलापनं पञ्चसंख्याभिः, मंगलस्नानं सम्मार्जनरीत्या चक्रुः॥ वस्त्रयुग्मेनतुलसींसम्वेष्ट्य, गणेशपूजास्थलेनीत्वातत्र तुलसीनिमित्तंगणेशपूजनं स्वयमेवयजमानःपुनःकृत्वा, भूषणैर्वि-भूष्य, ३० यदाबध्नंदाक्षायणा हिरण्य ८० शतानीकायसुमनस्य मानाः तन्म ऽ आवध्नामिशतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथा ऽऽ सम्, इतिमन्त्रेण (रक्षाबन्धन पोटलिकां) कङ्कणंवामहस्ते (वाम भागशाखायां) बध्नीयात्॥ तुलसींतत्रैवगणेशसन्निधौरक्षयेत, ततोवरपक्षियाःसौभाग्यवत्यो वाजित्रैःसहगायन्त्यो ऽ श्वत्थ वृक्षंमंगलद्रव्येणानुलिप्योष्णोदकेनसंस्नाप्य, तत्राचार्योनत्प्रनि-निधिर्वा गणेशादिपूजनान्ते पूर्वोक्तमन्त्रेणपिप्पलदक्षिणशाखा-यांकङ्कणंबध्नीयात्, ततस्तुलसीविवाहकर्त्ता, तद्दिनेविवाहात्पूर्वं तत्रमण्डपमध्ये, होमपद्धत्यनुसारेण पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमाग्नि संस्थाप्याघाराबाज्यभागौचहुत्वा नवग्रहाणांतत्समिद्भिस्तिल-यवाज्यैर्वा अपदशमांशहोमंहुत्वा ततोनारायणाष्टाक्षरमन्त्रजपस्य दशमांशंतिलयवाज्यैर्हुत्वा ततःस्विष्टकृतंहुत्वाप्रायश्चित्तहोमंकृत्वा पूर्णाहुत्यन्तंकर्मविधाय, तद्दशांशमार्जनतर्पणञ्चकृत्वा गृहंप्रत्याग-च्छेत्॥ ततःसांयकालेगोधूल्यां आचार्यश्चर्त्विगादयो ऽ न्येपि गोपालमूर्त्तिविवाहपक्षे श्रीगोपालमूर्त्ति सिंहासनस्थांशिविकोपरि वोढयित्वावाजित्रैःसहसमारोहेण तुलसीविवाहकर्त्तुर्गृहंप्रत्यागच्छ न्त्वेवमश्वत्थेनसहविवाहेप्यागच्छन्तु कर्त्ताचसन्मानार्थंगृहसमीपं गत्वा श्रीगोपालयानंस्वजनैर्वोढयित्वास्वांगणेस्थापयित्वाशिष्टा-चारपुरःसरेणसम्पूज्यतत्रागतानपिगन्धारोपणादिकंकृत्वा (टीका भेटगन्धाक्षं) उपायनंस्ववित्तानुसारंदत्वा पूगीफलताम्बूलादिकं दद्यात्—(ततो गोपालविवाहपक्षे वक्ष्यमाणेनैवविधिनावाक्-

दानंधूल्यर्घंविवाहंचकुर्यात्) अश्वत्थविवाहपक्षे,—तदैवावसरे श्रीतुलसीं सपेटिकां शिबिकायांस्थापयित्वा शिबिकांरक्तवस्त्रेण सम्वेष्ट्य (डोलायां) स्वबन्धुवर्गैः सहतैर्वरपक्षीयाचार्यादिभिश्चवाजित्र शंखघंटाभेर्यादिध्वनिपुरः सरंकृत्वाश्वत्थसन्निधौमंडपं प्रत्यागच्छन्तु ॥ तत्रसर्वतोभद्रमण्डपे सपेटिकांश्रीतुलसीदेवीं संस्थाप्यचाचम्य भूतोत्सादनादिकंविधाय गणेशादीन्नमस्कृत्य,, वाग्दानंकुर्यात् ॥

॥ अथ तुलसीविवाहेवागदान पद्धतिः ॥

अत्राश्वत्थपक्षेकर्त्ताआचार्यएवास्ति ततआचार्यः सर्वतो भद्रतःसुवर्णप्रतिमां विष्णुरूपिणीमुत्थाप्याश्वत्थवृक्षमूले नूतन काष्ठपीठोपरिउत्तरमुखेनस्थापयेत् ततः तुलसीविवाहकर्त्तापूर्वाभि मुखेनोपविश्याचम्यप्राणायामंविधाय, वरपक्षीयाचार्यंवृणुयात्— ब्राह्मणमाचार्यं वरणद्रव्यधोतोत्तरीयादिकंचसम्पूज्य-सङ्कल्पः- अद्येत्यादिसंकीर्त्या ऽमुकोहंतुलसीविवाहांगभूतवागदानकर्मणि, कर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्रप्रवरान्वितममुकशर्माणंवरपक्षी यंब्राह्मणंत्वांवृणे-द्रव्यंदत्वा, कर्मकुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः ॐ आचार्यस्तु० इतिसंप्रार्थ्य,, ततोवाग्दानसामग्रीं पंचहरिद्राखण्ड युतांतण्डुलपूरितां श्रीफलयज्ञोपवीतदक्षिणादिपरियुतां स्थाल्यामि न्द्राणींपूजयेत्-ॐ इन्द्राण्यैनमः, इतिसम्पूज्य,, गोत्रोच्चारणं कुर्यात्---आचार्योब्रूयात्---पाणिग्रहेपर्वतराजपुत्र्याः पादाम्बुजं पाणिसरोरुहाभ्यां। अश्मानमारोपयतः स्मारेर्मन्दस्मितंमंगलमा तनोतु ॥ ततः कर्तावाग्दानपात्रंहस्तेगृहीत्वा---व्याघ्रपदगोत्रो त्पन्नाय वैय्याघ्रपदगार्ग्य वसिष्ठेतित्रिप्रवराय, देवमीढवर्मणः प्रपौत्राय, सूरसेनवर्मणः पौत्राय, वसुदेववर्मणःपुत्राय, अनेक कोटिब्रह्मांडनायकाय, श्रीकृष्णाय. गोपालाय, श्रीधरायवराय आलम्बायनदेवलगौतमेति त्रिप्रवरांविश्वकर्मणः प्रपौत्रींप्रजापतेः

पात्रींईश्वरस्यपुत्रीं तुलसींकन्यांउयोतिविदादिष्टे मुहूर्त्तेदास्ये,, इतिस्थालीस्थद्रव्यमाचार्यायदद्यात्-ततःप्रार्थयेत्-ॐ वाचावृन्दा मयादत्ता आत्मार्थंस्वीकृतात्वया ॥ वृन्दावलोकनविधौ निश्चित-त्वंसुखाभव ॥ ततोब्राह्मणाः-ॐ भद्रंकर्णेभिरितिपठेयुः ॥ ततो नीराजनादिदक्षिणादानंचकुर्यात् ॥

अथ तुलसी विवाहे धूल्यर्घ पद्धतिः ॥

ततः कर्त्ता तत्रैवाश्वत्थ मूले-पूर्वाभिमुखोभूत्वा नूतन काष्टपीठोपरि विष्णुप्रतिमा मुत्तराभिमुखीं स्थापयित्वा, आचम्य प्राणायामंकृत्वा-संकल्पंकुर्यात-अद्येत्यादि संकीर्त्या-मुकोऽहं करिष्यमाण तुलसी विवाह कर्मणि तुलसीदान प्रति ग्रहार्थ मश्वत्थं विष्णुरूपिणं वरं (गोपालं) विष्टरादि मधुपर्कान्तै-रर्चयिष्ये-तत आचार्यंवृत्वा, ततः काष्ठपीठासने पुष्पै रावाहयेत-ॐ अश्वत्थ रूपिणं देवं श्रीकृष्णं तुलसी प्रियम् ॥ आवाहयामि पूजार्थं वरत्वेनार्चयाम्यहम् ॥ ॐ नमो भगवते केशवाय नमोऽस्मिन्पीठे आस्तामर्चयिष्यामो भवन्तम् । इत्युक्त्वा सुवर्णप्रतिमां तत्रस्थापयेत, अर्चकः । ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः इत्युक्त्वा-ॐ नारायणायनमः विष्टरः प्रतिगृह्यताम् ॥ प्रतिगृह्णामीत्याचार्यो वदेत सर्वत्र ॥ इति विष्टरंसमर्प्य, ॐ पाद्यम् ३ ॐ माधवायनमः पाद्यंसमर्पयामिप्रतिगृ० आ० व० । अर्घ्यम्—ततोऽर्घे दधिदुग्ध बदरीतंडुलगंध-मिश्रितंजलंकृत्वा ऽ र्घो ऽ र्घो ऽ र्घः पठित्वा—ॐ गोविन्दायनमः, अर्घं प्रतिगृह्यताम्, आ० प्रतिगृह्णामि ॥ आचमनीयम् ३ ॥ ॐ विष्णवेनमः, आचमनीयंसमर्पयामि । आ० प्रतिगृह्णामि ॥ मधुपर्कः ३ । ॐ मधुसूदनायनमः, मधुपर्क प्रतिगृह्यताम् ॥ आ० प्रतिगृह्णामि ॥ ततः पुरुषसूक्तेनाश्वत्थ प्रतिमयोः पूजनंनीराजनान्तंकृत्वा, सभ्या परिधेयवस्त्र भूषणा सनादि भांडपरियुतं द्रव्यं पाद्यादिभिः सम्पूज्य संकल्पः- अद्ये-

त्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं करिष्यमाण तुलसीविवाहाकर्मणि, व्याघ्र पदगोत्रस्य वैय्याघ्रपद गार्ग्य वसिष्ठेति त्रिप्रवरस्य देव- मीढवर्मणः प्रपौत्रं शूरसेन वर्मणः पुत्रं (गोपालं) दामोदर मश्वत्थरूपिणं तुलस्यार्थिनं, एभिः कटकालंकरणादि शय्यासन भांडादिद्रव्यै, स्त्वांवृणे। इतिहस्तस्थ जलं प्रतिमोपरिक्षिपेत— तत आचार्यो भूषणादि वस्त्राणि परिधाप्य, वृणोमीतिब्रूयात्- ततः पार्थयेत्-अशुन्यं शयनं नित्यमशून्यामुन्नतिंश्रियम्। सौभाग्यं देहिमेनित्यं शय्यादानेन केशव। यानिकानिचपापानि, अयावधि कृतानिच ताम्रादि पात्रदानेन तानिनश्यन्तु केशव॥

॥ इति धूल्यर्घ पद्धति. ॥

अथ तुलसीविवाहपद्धतिः॥

ततआचार्यस्तत्रैव प्रादेशमात्रां वेदीं कृत्वा होमपद्धत्यनु- सारेण पञ्चभूसंस्कार पूर्वक मग्निंसंस्थाप्य, ततः सर्वतो भद्र मण्डपात्सपेटिकां वस्त्रभूषणभूषितां तुलसींनीत्वा, प्रतिमा तुलस्योरंतरालेऽन्तर्पटं कृत्वा, यजमानः पूर्वाभिमुखेनोपविश्य, स्वभार्यां दक्षिणभागेकृत्वा भ्रातृपुत्रादीन्वामे, उपवेशयित्वा तुलसीपेटिकां क्रोडे धारयित्वा, श्री सूक्तेनवा पुरुषसूक्तेन तुलसीं सम्पूज्य ततआचार्यो यजमानदत्तवस्त्रेभ्यो वस्त्रद्वयं तुलस्यै,—ॐ युवासुवासाः परिवीत आगात्सउश्रेयान्भवति जायमानस्तं धीरासः। कवयऽउन्नयन्ति साध्योमनसादेवयंतः॥ इति मन्त्रेण दत्वा सौभाग्य द्रव्यं, ॐ सौभाग्य जनकं दिव्यं रक्षासूत्रेणवेष्ठितम्। सौभाग्यमस्तुतेदेवि जीवत्वं विष्णुवल्लभे॥ इति मंत्रेण सौभाग्यपुटकमालवालेषु वध्नीयत्॥ ततःप्रतिष्ठा पयेन—ॐ मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ८० समिमंदधातु। विश्वेदेवासऽइहमा दयंतामों प्रतिष्ठ ॐ भूर्भुवस्वस्तुलस्याइहजीवः इहप्राणाः सन्तु सुप्रतिष्ठिता

वरदाभवन्तु ॥ ततो यजमानस्तुलस्यश्वत्थयोः (गोपालस्य) परस्परं समंजति, ॐ समंजन्तु विश्वेदेवाः समापोहृदयानिनौ। सम्मातरिश्वा सन्धाता समुद्रेष्ट्री दधातनौ ॥ इत्यंतपटं पृथक् कृत्वा तुलस्यश्वत्थयोः सम्मुखीकरणंकृत्वा प्रार्थयेत्—शङ्खचूडे हलेयेन तुलसी छलमोहिता, सत्वं निरीक्ष्य तुलसीं प्रसन्नोऽस्तु सदाहरे, ततो मङ्गलाष्टकं पठित्वा गोत्रोच्चारणं कुर्यात्—वृन्दा रण्येतपनतनया नीर वा नीर कुंजे,गुञ्जन्मञ्जुभ्रमर पटली काकली केलिभाजि। आभीराणां मधुर मुरली नादसमोहितानां, मध्ये क्रीडन्नवतु नियतं नन्दगोपालबालः, वरस्य—व्याघ्रपद्गोत्रस्य वैय्याघ्रपद्गार्ग्य वसिष्ठेति त्रिप्रवरस्य देवमीढ वर्म्मणः प्रपौत्राय, व्याघ्रपद गोत्र० शूरसेन वर्म्मणः पौत्राय, व्याघ्रपदगो० वासुदेव वर्मणः पुत्राय, श्रीगोपालाय तुलस्यार्थिने वरायाश्वत्थायवा। एवं त्रिरुच्चार्य, कन्या पक्षे—वृन्दा वृंदावनी देवी नन्दिनी विश्वपावनी, सदाऽवतु महा दिव्या तुलसी कृष्णजीवनी ॥ आलंबायन गोत्रस्यालंबायन दैवल गौतमेतित्रिप्रवरस्य विश्वकर्मणः प्रपौत्रीं आलंबायन गो० प्रजापतेःपौत्रीं, आलंबायन गोत्रस्य० ईश्वरस्यपुत्रीं तुलसीनाम्नीं वरार्थिनीं, संकल्पं पठेत् ॥ ततः शंखे सुवर्णं वदरीपत्रं तिलादींश्च संक्षिप्य—देशकालौ स्मृत्वाऽमुकोहं मम जन्म प्रभृत्युपार्जितकायिक वाचिक मानसिक त्रिविध पापक्षयपूर्वक समस्त पितॄणां निरतिशयानन्द ब्रह्मलोका वाप्त्यादि कन्यादान फलपुत्रपौत्राद्यनवच्छिन्नसंततिलक्ष्मीप्राप्त्यादि तुलाकल्पोक्त फलसिद्धि चैकविंशति पुरुषोद्धरण वैकुंठभुवनगमन तत्रत्यविपुलभोगोपभुक्त्यनन्तरं विष्णुसायुज्यता प्राप्त्यर्थं श्री परमेश्वरप्रीतये व्याघ्रपदगोत्रस्य वैय्याघ्रपद गार्ग्यवसिष्ठेति त्रिप्रवरस्य देवमीढवर्मणः प्रपौत्राय शूरसेनवर्मणः पौत्राय, वसुदेव वर्म्मणः पुत्राय, व्याघ्रपद् गोत्राय वैय्याघ्रपद् गार्ग्यवसिष्ठेति त्रिप्रवराय, अनेककोटि ब्रह्मांडनायकायानन्तनाम्ने, गोपाल

कृष्णायअश्वत्थस्वरूपिणेवरायच, आलंबायनदेवल गोतमेति त्रिप्रवरां मयाकन्यात्वेन संवर्धितां इमांतुलसीनाम्नीं कन्यां वरार्थिनीं यथा शक्त्यलंकृतां यथाशक्त्युपकल्पितयौतकयुतां प्रजापति दैवतां देवाग्निगुरुब्राह्मणसंनिधौ अग्न्यादि साक्षिकतयासहधर्माचरणाय भार्यात्वेन तुभ्यमहंसंप्रददे, प्रतिगृह्णातुभवान् इति सकुशजलं तुलस्या दक्षिणहस्तं (शाखां) सुवर्णप्रतिमायाः (वागोलमूर्त्तेः) दक्षिणहस्ते दद्यात्, आचार्यः—ॐ द्यौस्त्वा ददातुपृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु ॐ कोऽदात्कस्मा ऽदात्कामोदात्कामायादात् कामोदाताकामः प्रतिग्रहीताकामैतत्ते इतिपठित्वा, ततोयजमानो वद्धांजलिः पठेत्—ॐ वृन्देममाग्रतोभूया वृन्देमेदेवि पार्श्वयोः वृन्देमेपृष्ठतोभूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ॥ वृन्दांकनकसम्पन्नां कनकाभरणैर्युताम् । दास्यामिविष्णवेतुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया ॥ ममशुद्धगृहेजाता पालितावत्सरत्रयम् । तुभ्यंकृष्णमयादत्ताधर्मज्ञानविवर्धिनी ॥ इतिप्रार्थ्य दानप्रतिष्ठांकुर्यात्—ॐ अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोहं कन्यात्वेनतुलसीदानप्रतिष्ठार्थमिंदसुवर्णमग्निदैवतं श्रीगोपालायाश्वत्थरूपिणेवरायतुभ्यंसम्प्रददे नमम, इति प्रतिमादक्षिणहस्तेदत्वा, शिष्टाचारादंचलग्रंथिवंधनंकुर्यात् ॥ ततस्तत्रविवाहवेद्यांब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्ते—ॐ नमोनारायणायस्वाहा, इतिमन्त्रेणनवाहुतीर्जुहुयात् ॥ ततोमहाव्याहृतयः, सर्वप्रायश्चित्तं ॥ ततराष्ट्रभृद्धोमंकुर्यात् ततआचार्यः—घृतेन—ॐ नमोभगवतेकेशवायनमः स्वाहा । ॐ नारायणायनमः० ॐ माधवायनमः । ॐ गोविन्दाय० । ॐ विष्णवे० । ॐ मधुसूदनाय० । ॐ त्रिविक्रमायनमःस्वाहा । ॐ वामनाय० । ॐ हृषीकेशाय० । ॐ पद्मनाभाय० ॐ दामोदराय० ॐ उपेन्द्रायनमः० ॐ वासुदेवय० । ॐ अनिरुद्धाय० । ॐ अच्युताय० । ॐ अनन्ताय० । ॐ गदिने० । ॐ चक्रिणे० ॐ विष्वक्सेनाय० । ॐ वैकुंठाय० । ॐ जनार्दनाय० ॐ मुकुन्दाय० । ॐ अधोक्षजायनमः स्वाहा । इति चतुर्विंशतिनाममंत्रैर्हुत्वा एवंजयाहोमम् आभ्यातान

होमंच लाजाहोमंच प्रत्येकं चतुर्विंशतिनाममंत्रैः कुर्यात् नाश्मारोहणादि सप्तपदीस्थाने यजमानेनशांतिकाध्यायं पठित्वाचतस्रः प्रदक्षिणाः कार्याः ततो होमपद्धत्युक्तविधिना प्राजापत्यहोमंस्विष्टकृद्धोमं पूर्णाहुतिसंस्रवप्राशनंप्रणीताविमोकान्तंकृत्वा गोदानादीन्कृत्वा भूयसीदानंच कुर्यात् । नात्रचतुर्थीकर्म, इति तुलसी विवाहंकृत्वा, आचार्यऋत्विग्जापकेभ्यो दक्षिणांदत्वा, आशीर्वादंगृहीत्वा, ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयमपिच भुंजीयात, ततः शिष्टाचारादाचार्यः गोपालंवासुवर्णं प्रतिमां तुलसींच शिबिकादिषु संस्थाप्य ब्राह्मण पुरंध्रीसहितं मंगलवाद्यपुरः सरंस्वगृहंनयेत् ततः स्वगृहे नृत्यगीतवाद्यपुरःसरंयथाविभवषोडशोपचारेण सम्पूज्य ब्राह्मणादीनपि गंधाक्षतैः संपूज्य यथाशक्ति ब्राह्मणान्संभोज्य आशीर्वादं गृह्णीयात् ।

इति तुलसी विवाह पद्धति.

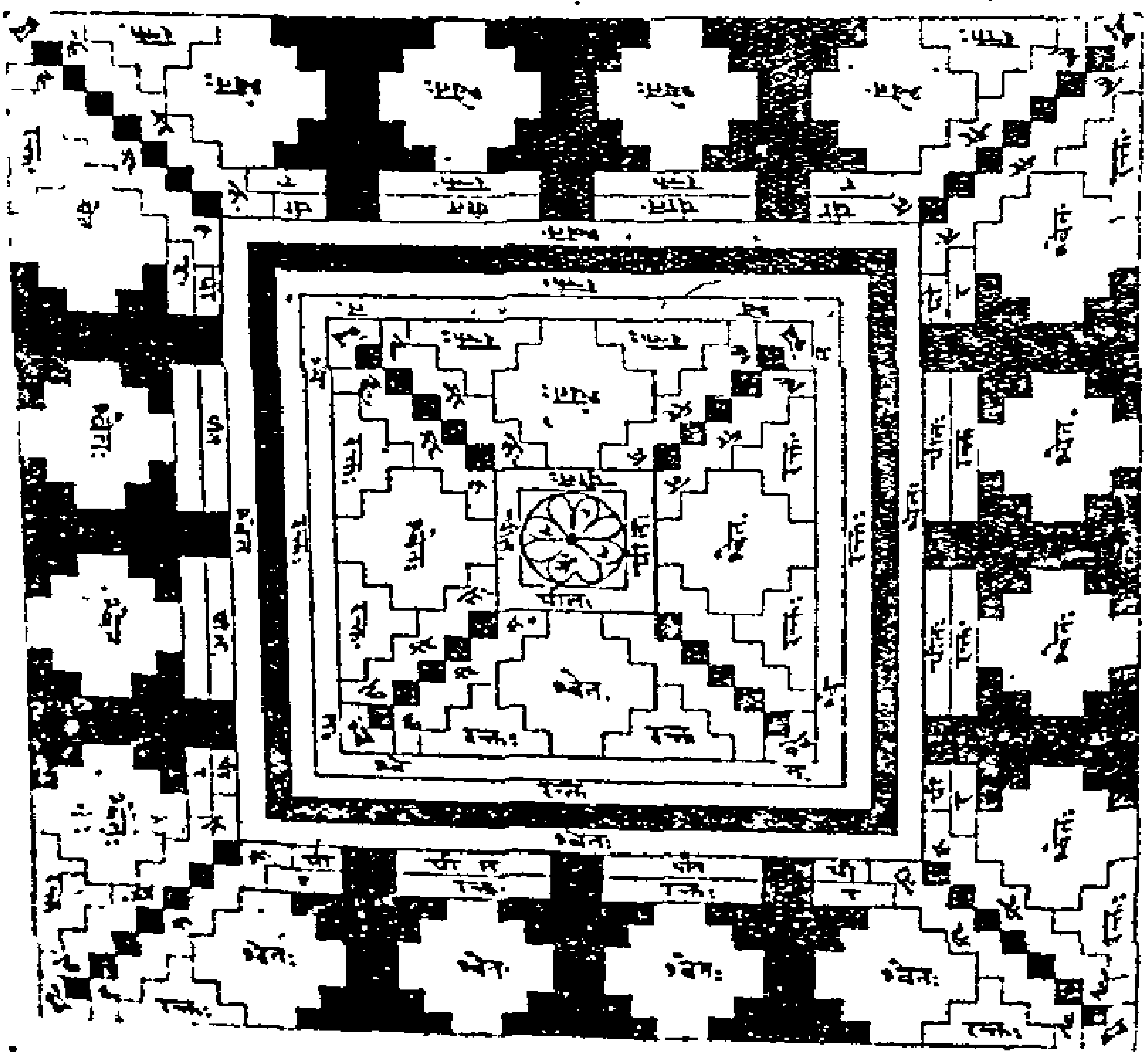
द्वादश लिंगतो भद्र परिभाषा ।

अथ द्वादश लिंगतो भद्र परिभाषा, उक्तंच हेमाद्रौ कालादर्शे—त्रिंशका त्रिंशद्रेखाश्च प्रागुदीची करोत्यथ । खंडेन्दु त्रिपद कोणे शृंखलासप्तभि पदैः। पञ्चदशपदा बल्ली भद्रतुनवभि पदैः । अशीतिश्चान्तरेवापि चतुर्विंशतिभि पदैः । लिंगस्यात्तत्रचेशस्य, अष्टाविंशतिभि पदैः ॥ लिंग स्यात्पार्श्वतोवापी वाप्यलिंगं तत परम् । एवंवाप्य श्चतस्रस्युर्लिंगानां मध्यतस्त्रिषे । मध्येस्यात्सर्वतोभद्रं सत्वरजस्तमोवृतं । शृंखलापिञ्जलावापी ऊर्ध्वं पीतेन पूरयेत् । वापीपीता तरालेतु रक्तवर्णेन पूरयेत् । कृष्णधान्येन रुद्राणां लिंगाश्चैव प्रपूरयेत । श्वेतेन्दु शृंखलाकृष्णा वल्लीं नीलेन पूरयेत । भद्रारुणा सिताव त्म परिधि पीतवर्णके । मध्येषोडशभि कोष्ठै पद्ममष्टदलंलिखेत् । वाह्योत्तरदले श्वेताकर्णिका पीतवर्णका । परिध्यावेष्टितं पद्मं बाह्येसत्वरजस्तम । सितारुणेन कृष्णेन सत्वादीथ प्रपूरयेत । लिंगस्कन्धान्तरालेषुपीतरक्तैश्च पूरयेत् । रजैश्चपूरयेद्रेखा खण्डान्द्विगुणषोडशान् ॥ मण्डलं द्वादशलिंगंस्याल्लतालिंगोद्भवतथा ॥ शिवनते समुद्दिष्टं सर्वसिद्धिकरं परम् ॥ इति हरिहर मंडलात्मक द्वादश लिंगतो

भद्रोद्धार: ॥ अथ पूजा विधि:--तत्रैव—आचार्यंवरयेत्तत्र ऋत्विग्भि: सहितं शुचि: । शिवरूपास्तथाविप्रा: पूज्याश्चन्दन पुष्पकैः। अनुज्ञातश्चतैर्विप्रैः शिवपूजांसमारभेत् । अव्रणं सजलं कुंभंतस्योपरितुविन्यसेत्। सौवर्णंराजतंताम्रं मृण्मयंवापिकारयेत्। कुम्भोपरिन्यसेद्देवं उमया सहित शिवम्। सौवर्णंप्यथवारौप्ये वृषभे संस्थितं शुभे, रत्नालङ्करणैर्हेमैरलंकृत्यच पूजयेत्। वस्त्रयुग्मेन संवेष्ट्य बिल्वपत्रैः प्रपूजयेत्। पलेनवातदर्धेन तदर्धेनाथवा पुन: ॥ उमामहेश्वरीं मूर्ति पूजये द्वृषभस्थिताम् । अत: परं पूजाविधानस्य पूजापद्धतौ स्पष्टत्वाद्ग्रंथ विस्ताराभियालम्।

इतिद्वादश लिंगतोभद्र परिभाषा

अथ हरिहरमंडलात्मकद्वादशलिंगतोभद्रोद्धारः



॥ अथ भस्मधारणविधिः ॥

भस्मधारणविधिः। तत्रमन्त्राः—ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमोनमः। भवे भवेनातिभवेभवस्वमांभवोद्भवायनमः। ॐ वामदेवायनमोज्येष्ठायनमःश्रेष्ठायनमोरुद्रायनमः। कालायनमःकलविकरणायनमोबलविकरणायनमो बलायनमोबलप्रमथनायनमः सर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः। ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्योनमस्ते ऽ अस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॐ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहितन्नोरुद्रःप्रचोदयात्। ॐ ईशानःसर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमे ऽ अस्तुसदाशिवोम्॥ इति मन्त्रैर्भस्मगृहीत्वा,, मन्त्रयेत—ॐ अग्निरितिभस्म वायुरितिभस्म जलमितिभस्मव्योमेतिभस्म सर्वं ह॰ हवा ऽ इदंभस्ममन ऽ इत्येतानिचक्षूँषि भस्मानि, इति त्रिरभिमन्त्र्य,, ॐ आपोज्योतिरसो ऽ मृतंब्रह्मभूर्भुवस्वरोमिति तस्मिन्नपआसिच्य। ॐ मानस्तोके तनयेमान ऽ आयुषिमानोगोषुमानो ऽ अश्वेषुरीरिषः। मानोवीरानरुद्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे। इतिसंक्षुभ्य ॐ ईशानः सर्वविद्यानाम्॰ इति शिरउध्दूल्य,, ॐ तत्पुरुषाय विद्महे॰ इतिमुखंदर्शयित्वा। ॐ अघोरेभ्यो॰ इति, हृदये॥ ॐ वामदेवाय॰ गुह्ये। ॐ सद्योजातं॰ पादयोः। ॐ त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनं॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥ इत्यभिमन्त्र्य। ॐ नमः शिवाय, इतिध्यायन्—ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेः कश्यपस्यत्र्यायुषम्। यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नो ऽ अस्तु त्र्यायुषम्॥ इति मन्त्रेणद्वाभ्यामङ्गुलीभ्यां मध्यमांगुलीभिरनुलोमं कृत्वा शिरोललाटवक्षः स्कन्धेषुतिर्यक्तिस्रोरेखाःप्रकुर्वीत। मध्य रेखांविलोमांगुष्टेनकृत्वा ऽ नुलोमामनामातर्जनीभ्यां रेखाद्वयम्वा तिस्रोरेखाएवंवाकुर्वीत। नोध्दूलनम्॥ नेत्रयुग्मप्रमाणास्ताः।

रुद्रजपहोमार्चनेषु, अन्यत्रापिचेतन्नित्यम् ॥ शाम्भवंव्रतमेतत्सर्वेषु वेदेषुवेदवादिभिरुक्तम् । मुमुक्षुरपुनर्भवाय तत्समाचरेत् ।

इति भस्मधारण विधि.

अथ रुद्राक्षधारणम्—रुद्राक्षान्कंठदेशेदशनपरिमितान्मस्तके विंशतिद्वेषट्षट्कर्णप्रदेशे करयुगलकृतेद्वादशद्वादशैव । बाहोरिंदोकलाभिर्नयनयुगकृतेएकमेकंशिखायां वक्षस्यष्टाधिकंयः कलयति शतकंसस्वयंनीलकण्ठः ॐ नमः, इतिप्रत्येकंरुद्राक्षं अष्टोत्तरशतं जपित्वा, ॐ नमः शिवाय, इतिरुद्राक्षान्प्रक्षाल्य पूर्वोक्तांगेषु धारयेत् ॥ फलमाह—योधारयतिरुद्राक्षान्रुद्रवत्सोपिपूज्यते । रुद्रलोकमवाप्नोति शिवेनसहमोदते ॥ अधृत्वाभस्मरुद्राक्षान्योशिवं पूजयेन्नरः । न पूजाफलमाप्नोति नरकंयातिरौरवम् । तस्मान्मृदापिकर्तव्यं ललाटेतुत्रिपुण्ड्रकम् ॥ इत्याग्नेयपुराणोक्तिः ॥

इति रुद्राक्षधारणम् ।

अथ हरिहरमण्डलात्मक, द्वादशलिंगतोभद्र पूजा पद्धतिः ॥

अथलिङ्गतोभद्रदेवता स्थापनकर्मवक्ष्ये—कर्त्ताउषसिनित्यकर्मविधाय, पूर्वोदितगणपत्यादिपूजनंकृत्वा, पश्चिमद्वारेणमंडपे समागत्यमण्डपदेवान्सम्पूज्य पूर्वोक्तमण्डपपरिभाषोक्त यथास्थानेषु ग्रहवेदींवास्तुवेदींमातृकावेदीं क्षेत्रपालवेदींचनिर्माय पूजयित्वा चाचम्य, प्राणायामंकृत्वा, सङ्कल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य, अमुकोहं, अमुकशिवानुष्ठानकर्मणि त्रिचत्वारिंशद्देवात्मक, हरिहरमण्डलात्मकद्वादशलिङ्गतोभद्रेलिंगेषु पूर्वादिक्रमेण द्वादशलिंगेषु लिङ्गदेवतास्थापनावाहनपूजनंकरिष्ये—पुष्पाक्षतहस्तः,, क्ष्याहृत्यावानामन्त्रै रावाहनंस्थापनंच कुर्यात्—तत्रादौपूर्वलिंगेषु—ॐ वीरभद्रायनमः वीरभद्रमावाहयामिस्थापयामि,, ॐ

भुर्भुवःस्वः वीरभद्रेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितोवरदोभव। ॐ वीरभद्रायनमः, सम्पूजयेद्देवंसर्वत्रवोध्यम् ॥ ॐ शम्भवेनमः शम्भुमावाहयामि स्था०। ॐ भू० शम्भो इहा० सुप्र०। ॐ शम्भवेनमः, सं० ॥२॥ ॐ अजैकपादायनमः, आ० स्था०। ॐ भू० अजैकपादइहा० सुप्र०। ॐ अजैकपादायनमः सं० ॥३॥ ततो दक्षिणलिंगेषु—ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः आ०स्था०। ॐ भू० अहिर्बुध्न्येहाग० सुप्र०। ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः सं० ॥१॥ ॐ पिनाकिनेनमः, आ० स्था०। ॐ भू० पिनाकिन्इहाग० सुप्र०। ॐ पिनाकिने नमः पू० ॥२॥ ॐ शूलपाणयेनमः,, आ० स्था०। ॐ भू० शूलपाणे, इहाग० सुप्र०। ॐ शूलपाणयेनमः। पू० ॥३॥ पश्चिम लिंगेषु—ॐ भुवनाधीश्वरायनमः, आ० स्था० ॐ भू० भुवनाधीश्वर इहाग० सुप्र०। ॐ भुवनाधीश्वरायनमः पूजयेत्—॥१॥ ॐ कपिलायनमः आ० स्था०। ॐ भू० कपिल, इहाग० ति० सुप्र०। ॐ कपिलायनमः पू० ।२। ॐ दिवस्पतयेनमः आ० स्था० ॐ भू० दिवस्पते इ० तिष्ठ सुप्र०। ॐ दिवस्पतयेनमः पू० ।३। उत्तरलिंगेषु—ॐ रुद्रायनमः आ० स्था०। ॐ भू० रुद्र, इ० सु प्र०। ॐ रुद्रायनमः पू०। ॐ शिवायनमः आ० स्था०। ॐ भू० शिव, इ० सु०। ॐ शिवायनमः पू०। ॐ महेश्वरायनमः आ० स्था०। ॐ भू० महेश्वर, इहा० ति० सु०। ॐ महेश्वरायनमः पूजयेत ॥ ततः पूर्वाद्यष्टदिक्ष्वष्टौ भैरवान्स्थापयेत–पूर्वे—ॐ असितांग भैरवायनमः स्थापयामि, पूजयामि। आग्नये—ॐ रुरुभैरवायनमः। आ० स्था०। दक्षिणे—ॐ चण्डभैरवायनमः। आ० स्था०। नैर्ऋत्ये—ॐ क्रोधभैरवायनमः। आ० स्था०। पश्चिमे—ॐ उन्मत्तभैरवायनमः। स्था० पू०। वायव्ये—ॐ कपालभैरवायनमः। आ० स्था० उत्तरे—ॐ भीषणभैरवायनमः। आ० स्था०। ईशाने—ॐ संहारभैरवायनमः। आ० स्था०। ततः पूर्वादिक्रमेण चतुर्विंशतिदेवताःस्थापनीयाः। पूर्वे—ॐ भवाय नमः। आ० स्था०। ॐ सर्वायनमः आ०। ॐ रुद्रायनमः

आ० आग्नये–ॐ पशुपतयेनमः आ० । ॐ महतेनमः आ० । ॐ भीमायनमः आ० दक्षिणे–ॐ ईशानायनमः आ० । ॐ अनन्तायनमः । आ० ॐ तक्षकायनमः आ० । नैर्ऋत्ये–ॐ वासुकयेनमः आ० । ॐ कुलिशाय नमः आ० स्था० ॐ कर्कोटकायनमः आ० । पश्चिमे–ॐ शंखपालायनमः आ० । ॐ कंबलायनमः आ० । ॐ अश्वतरायनमः । आ० वायव्ये ॐ शूलिनेनमः आ० । ॐ चन्द्रमौलयेनमः आ० । चन्द्रमसेनमः आ० । उत्तरे—वृषभध्वजायनमः आ० । ॐ त्रिलोचनायनमः आ० । ॐ शक्तिधरायनमः आ० । ईशाने—ॐ महेश्वरायनमः आ० ॐ शूलधारिणेनमः आ० । ॐ स्थाणवेनमः आ० पू० ।

॥ इति लिंगदेवता स्थापनक्रमः ॥

ततो भद्रे ब्रह्मादिदेवता स्थापनक्रमंवक्ष्ये—तत्रादौ मध्येकर्णिकायाम्—ॐ ब्रह्मयज्ञानमिति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः आदित्यो देवता ब्रह्मावाहने विनियोगः । ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः । सबुध्न्याऽउपमा ऽ अस्यव्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि, प्रति० ॐ एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य, ॐ ब्रह्मणेनमः संप्रजयेत् । तत उदीचीमारभ्य वायुकोणपर्यन्तमष्ठ लोकपालान्स्थापयेत्—तत्रादौ उत्तरलिंगस्याधः—ॐ वय टॅ० सोममित्येतस्य बन्धुऋषिर्गायत्रीछन्दः सोमोदेवता सोमावाहने स्थापने च वि० । ॐ व्वय टॅ० सोमव्रते तवमनस्तनूषुविभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ सोमायनमः आ० स्था० । ईशाने—ॐ तमीशानमित्यस्य गोतमऋषिर्जगतीछन्दो विश्वेदेवादेवताः, ईशानावाहने स्थापने वि० । ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसेहूमहेव्वयम् । पूषानोयथाव्वेद सामसद्वृधेरक्षिता पायुरदब्धःस्वस्तये । ॐ ईशानायनमः आ० पू० । पूर्वलिंगस्याधः–ॐ त्रातारमिति मंत्रस्य गर्गऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः, इन्द्रोदेवता इन्द्रावाहने स्था० वि० । ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र टॅ० हवेहवे

सुहव ✡︎० शूरमिन्द्रम् । ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्र ✡︎० स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ३ॐ इन्द्रायनमः । तत आग्नेय्याम्—ॐ त्वन्नो अग्ने इत्यस्य आंगिरस हिरण्यस्तूपऋषिर्जगतीछन्दः, अग्निर्देवता ग्न्यावाहने स्था० वि० ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽ अवयासिसीष्ठा। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानोव्विश्वाद्वेषा ᳪ सिप्रमुमुग्ध्यस्मत् । ३ॐ अग्नयेनमः०। ततो दक्षिणलिंगस्याधः ॐ, यमायत्वेत्यस्यदध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्धर्मोदेवता यमावाहने स्था०वि०। ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे । ३ॐ यमायनमः आ० स्था० पू०। ततो नैर्ऋत्यां—३ॐ असुन्वन्त मित्यस्य प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो निर्ऋतिर्देवता निर्ऋत्या वाहने स्था० वि० ३ॐ असुन्वन्तमयजमान मिच्छस्तेनस्ये त्यामन्विहि तस्करस्य । अन्यमस्म दिच्छसात ऽ इत्या नमोदेवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु । ॐ निर्ऋतयेनमः । पश्चिमलिंगस्याधः—ॐ तत्वायामीत्यस्यशुनः शेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, वरुणोदेवता वरुणावाहने स्था० वि० ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानोहविर्भिः अहेडमानो व्वरुणेहबोध्युरुश ✡︎० समान ऽआयुः प्रमोषीः । ॐ वरुणायनमः ततोवायव्ये ॐ आनोनियुद्भिरित्यस्य प्राजातिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वायुर्देवता वाय्वावाहने स्था० वि०। अनोनियुद्भिः शतनीभिरध्वर ✡︎० सहस्रिणीभिःरुपयाहियज्ञम् । व्वायोऽअस्मिन्त्सवनेमादयस्वयूयंपातः स्वस्तिभिः सदानः । ३ॐ वायवेनमः । ततो वायुसोममध्ये मंत्रे— ॐ सुगावो देवाइत्यस्य प्रजापतिऋषिस्त्रिष्टुप्छदो देवादेवताःअष्ट वसुस्थापने वि० ॐ सुगावोदेवाः सदनाऽकर्मंज ऽआजग्मेद ✡︎० सवनंजुषाणाः । भरमाणा व्वहमानाहवी ᳪ ष्यस्मेधत्तव्वसवो व्वसूनि स्वाहा,, नाममंत्रैश्चस्थापयेत्—३ॐ ध्रुवायनमः आ० स्था० । ३ॐ अध्वरायनमः० । ३ॐ सोमायनमः० । ॐ अद्भ्यो नमः० । ३ॐ अनिलायनमः० । ॐ अनलायनमः० । ३ॐ प्रत्यूषायनमः० । ३ॐ प्रभाषायनमः० । ततःसोमेशानमध्ये मंत्रे—

रुद्रान्—ॐ रुद्राःस टं० सृजेत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता, एकादशरुद्रावाहने स्थापनेच वि० ॥ ॐ रुद्राःस टं० सृज्य पृथिवींबृहज्योतिः समीधरे । तेषांभानुरजस्रऽइच्छुक्रोदेवेषु रोचते । नाम मंत्रैश्च—ॐ वीरभद्रायनमः आ० स्था० । ॐ शंभवेनमः० । ॐ गिरीशायनमः० । ॐ अजैकपादायनमः० । ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः० । ॐ पिनाकिनेनमः० । ॐ भुवनाधीश्वरायनमः० । ॐ कपालिनेनमः० । ॐ दिक्पतयेनमः० । ॐ स्थाणवेनमः० । ॐ रुद्रायनमः० ॥ ततः पूर्वेशानमध्ये भद्रेद्वादशादित्यान्—ॐ यज्ञोदेवानामित्यस्य कुत्सऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः, आदित्योदेवता द्वादशादित्यावाहने स्थापने विनियोग । ॐ यज्ञोदेवानांप्रत्येतिसुम्नमादित्यासोभवतामृडयन्तः । आवोर्वाची सुमतिर्ववृत्याद टं० होश्चिद्यावरिवो वित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा । नाममंत्रैश्च-ॐ भगायनमः आवाहयामि स्थापयामि । ॐ वरुणायनमः० । ॐ सूर्यायनमः० । ॐ वेदांगायनमः० । ॐ भानवेनमः० । ॐ रवयेनमः० । ॐ गभस्तयेनमः० । ॐ हिरण्यरेतसेनमः० । ॐ दिवाकरायनमः० । ॐ मित्रायनमः० । ॐ आदित्यायनमः० । ॐ विष्णवेनमः० । ततःइन्द्राग्निमध्ये भद्रे—अश्विनौ—ॐ याबांकशेत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दः, अश्विनौदेवते अश्विनावाहने स्थापने विनियोग । याबांकशामधुमत्य श्विनासूनृतावतीतयायज्ञं मिमिक्षतम् । उपयामगृहीतो स्यश्विभ्यांत्वैषते योनिर्माध्वीभ्यान्त्वा । ॐ अश्विभ्यांनमः आ० स्था० । ततोऽग्नियममध्ये भद्रे ॐ ओमासश्चर्षणी धृतइत्स्यमधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्रीछन्दः विश्वेदेवा देवता विश्वेदेवावाहने स्थापने विनियोग । ॐ ओमासश्चर्षणी धृतो विश्वेदेवासऽआगत । दाश्वा ॐ सोदाशुषः सुतम् । ॐ विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः,, आवाहयामि स्थापयामि । यमनिर्ऋतिमध्ये भद्रे-ॐ अभित्यं देवमित्यस्य प्रजापतीर्ऋषिरष्टिछन्दः सविता देवता सप्तयक्षावाहने स्थापनेच विनियोगः । ॐअभित्यं

देव ई० सवितारमोण्योः कविक्रतु मर्चामिसत्यसव ई० रत्नधामभिः प्रियंमतिंकविम् ॥ ऊर्ध्वायस्या मतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनिहिरण्य पाणीरमिमीत सुक्रतुः कृपास्वः ॥ ३० सप्तयक्षेभ्योनमः० । निर्ऋतिवरुणामध्ये भद्रे—३० नमोस्तुसर्पेभ्यऽइत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः सर्पावाहने स्थापने च विनियोगः । ३० नमोस्तुसर्पेभ्योयेकेच पृथिवी मनु । ये ऽन्तरिक्षे येदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः ॥ ३० सर्पेभ्योनमः० । तत्रैव—३० भूतेभ्योनमः आ० स्था० । वरुणवायुमध्ये भद्रे—ॐ ऋताषाडित्यस्य देवाऋषयोगायत्रीछन्दः गंधर्वाप्सरसोदेवता गन्धर्वाप्सरसामावाहने स्थापने च विनियोगः ३० ऋताषाड्ऋतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदोनाम । सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातुतस्मै स्वाहा वाट्ताभ्यः ॥ ३० गन्धर्वाप्सरोभ्योनमः० । तत उत्तरलिंगस्याधः—३० यदक्रन्देत्यस्य जमदग्निर्दीर्घतमा ऋषी त्रिष्टुप्छन्दः स्कन्दो देवता स्कंदावाहने स्थापनेच वि० । ३० यदक्रन्दः प्रथमंजायमानः उद्यन्त्समुद्रा दुतवा पुरीषात् । श्येनस्यपक्षाहरिणस्य बाहूउपस्तुत्यं महिजातन्ते ऽअर्वन् । ॐ स्कन्दायनमः । तत्रैवनाममंत्रैः ॐ नन्दिनेमः आवाहयामि । स्थापयामि ३० ईश्वरायनमः। ॐ शूलायनमः ॐमहाकालायनमः । ततोब्रह्मेशानमध्ये शृंखलाचक्रिषु—३० अदितिर्द्यौरित्यस्य गौतमऋषि त्रिष्टुप्छन्दः विश्वेदेवादेवताः दक्षादिसप्तकावाहने स्थापने च वि० अदितिर्द्यौरदति रंतरिक्षमदितिर्मातासपितासपुत्रः । विश्वेदेवाऽअदितिः पंचजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् । ॐ दक्षादिसप्तकेभ्योनमः । पूर्वलिङ्गस्याधः—ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिकेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः अश्वोदेवता दुर्गावाहने स्थापने च वि० । ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिके नमानयतिकश्चनः । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकांकाम्पीलवासिनीम् । ॐ दुर्गायैनमः० । तत्रैव—३० इदंविष्णुरित्यस्य मेधातिथिर्ऋषि गायत्रीछन्दो

विष्णुर्देवता विष्ण्वावाहने स्थापनेच वि० । ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपा ༀ सुरेस्वाहा । ॐ विष्णवेनमः ततो ब्रह्माग्निमध्ये शृंखलावल्लिषु—ॐ पितृभ्यइत्यस्यप्रजापत्य शिवसरस्वत्यऋषयः सप्तयजूंषिछन्दांसिपितरो देवता स्वधा वाहने स्थापनेच वि० । ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः । अक्षन्पितरोमीमदन्तपितरो तीतृपंतः पितरः पितरः शुन्धध्वम् । ॐ स्वधायैनमः० । ततोदक्षिणलिंगस्याधः—ॐ परंमृत्यो, इत्यस्यसंकसुकऋषि त्रिष्टुप्छन्दो मृत्युर्देवता मृत्योरा वाहने स्थापने च वि० । ॐ परंमृत्योऽअनुपरेहिपंथां यस्तेऽअन्य- ऽइतरोदेवयानात् । चक्षुष्मतेशृण्वते तेब्रवीमिमानः प्रजाༀरीरि- षोमोतवीरान् । ॐ मृत्यवेनमः । ततो ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृंख- लावल्लिषु—ॐ गणानान्त्वेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषि र्यजुश्छन्दो गणपतिर्देवता गणपत्यावाहने स्थापनेच वि० । ॐ गणानान्त्वा गणपति ༀ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ༀ हवामहे निधी- नान्त्वा निधिपति ༀ हवामहे व्वसोमम । आहमजानिगर्भधं- मात्वमजा सिगर्भधम् । ॐ गणपतयेनमः ततः पश्चिमलिंग- स्याधः—ॐशन्नोदेवीति मंत्रस्यदध्यङ्ङाथर्वणऋषि र्गायत्रीछन्दः आपोदेवताः अपामावाहने स्थापनेच वि०। ॐ शन्नोदेवीरभिष्टय ऽआपोभवन्तुपीतयेशंय्योरभिस्रवंतुनः । ॐ अद्भ्योनमः० ॥ ब्रह्मवायुमध्ये शृंखलावल्लीषु—ॐ मरुतोयस्य गौतम ऋषिर्गायत्री छन्दः मरुतोदेवत मरुतामावाहनेस्थापनेच वि०। ॐ मरुतोयस्यहि- क्षयेपाथादिवो व्विमहसः । ससुगोपातमोजनः मरुद्भ्योनमः । पद्मस्यकर्णिकाधः—ॐ स्योनापृथ्वीत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गाय त्रीछन्दः पृथ्वीदेवता पृथिव्यावाहने स्थापनेच वि० । ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्म्मसप्रथाः । ॐ पृथिव्यैनमः० । तत्रैव—ॐ पंचनद्यइत्यस्य, आदित्ययाज्ञवल्क्या ऋषी, अनुष्टुप्छन्दः सरस्वतीनदीदेवता गंगादिनद्यावाहने स्थापने

च वि० । ॐ पंचनद्यः सरस्वती मपियन्ति सस्रोतसः । सरस्वती तुपंचधासोदेशे भवत्सरित् । ॐ गंगादिसरिद्भ्योनमः० तत्रैव ॐ समुद्रायेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः, बृहतीच्छंदः समुद्रोदेवताः सप्तसागरावाहने स्थापने च वि० । ॐ समुद्राय शिशुमारानाल· भते पर्ज्जन्यायमण्डूकानद्भ्यो मत्स्यान्मित्रायकुलीपयान्वरुणाय नाक्रान् ॐ सप्तसागरेभ्योनमः० ततः कर्णिकोपरि—ॐ प्रपर्वतस्येति देवरातऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो मेरुर्देवता मेर्वावाहने स्थापने वि० । ॐ प्रपर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्तिस्वसिचऽइयानः ताऽआवहृत्रन्नधरागुदक्ताऽअहिर्बुध्न्यमनुरीयमाणाः । विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णो विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि । ॐ मेरवेनमः० ततउदीच्यांलिंगे ॐ सद्योजातइत्यस्य जमदग्निऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता सद्योजातावाहने स्थापनेच वि० । ॐ सद्योजातो व्यमिमीतयज्ञमग्नि र्देवानामभवत्पुरोगाः कस्यहेतुः प्रदिस्यृतस्यवाचि स्वाहा कृत ह० हविरदन्तु देवाः ॐ सद्योजातायनमः । पूजयेत् प्राच्यांलिंगे— ॐ वाममित्यस्य भरद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वामदेवोदेवता वामदेवावाहने स्थापने वि० । ॐ वाममद्य सवितर्वाम मुश्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्य ह० सावीः । वामस्यहिक्षयस्य देवभूरे रयाधिया वामभाजःस्याम ॥ दक्षिणस्यांलिंगे-ॐ अघोरइत्यस्य अघोरऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, रुद्रोदेवता अघोरावाहने स्थापनेच वि० । ॐ अघोरेभ्यो ऽघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वं शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तुरुद्ररूपेभ्यः । ॐ अघोरायनमः । ततः प्रतीच्यांलिंगे-ॐ तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुषऋषिः, गायत्रीछन्दः रुद्रोदेवता तत्पुरुषावाहने स्थापनेच वि० । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयात ॥ ॐ तत्पुरुषायनमः । ततःकर्णिकायांमेरोरुपरि—ॐ तमीशान मित्यस्य गौतम ऋषिर्जगतीछन्द ईशानोदेवतेशानावाहनेस्थापने वि० । ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पति धियंजिन्वमवसेहूमहेवयम् । पूषानोयथावेद

साम सद्वृधेरक्षितापायुरदब्धःस्वस्तये ॥ ॐ ईशानायनमः० । ततः परिधौ—ॐ त्वयाहिनइत्यस्य शङ्खऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः पितरोदेवतापरिध्यावाहनेस्थापनेच वि० । ॐ त्वयाहिनःपितरः सोमपूर्वे कर्माणिचक्रुः पवमानधीराः । वन्वन्नवातः परिधीं १ रपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवाभवानः ॥ ॐ परिध्यैनमः ॥ ततोमेरोःपरिधिं समन्ताल्लिंगानांस्कन्धे विंशतिकोष्ठेपुचतुःपुर्यः—ॐ चतुःपुरीभ्यो नमः । आवाहयामिस्थापयामि ॥ तत आग्नेयकोणेशृङ्खलाशिरसि पदत्रये—ॐ अग्निमीलइत्यस्यमधुरछन्दा ऋषिर्गायत्रीछन्दो ऽग्निर्देवता ऋग्वेदावाहनेस्थापनेच वि० । ॐ अग्निमीलेपुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम् । होतारंरत्नधातमम् । ॐ ऋग्वेदायनमः पूजयामि ॥ ततोनैर्ऋत्ये—शृङ्खलाशिरसिपदत्रये—ॐ इषेत्वेत्यस्यपरमेष्ठीऋषिर्दैव्यनुष्छन्दः शाखादेवता यजुर्वेदावाहनेस्थापने च वि० । ॐ इषेत्वोर्जेत्वाव्वायवस्थदेवोवः सवितापार्पयतु श्रेष्ठतमायकर्मण ऽ आप्यायध्वमघ्न्या ऽ इन्द्रायभागंप्रजावतीर नमीवा ऽ अयक्ष्मामावस्तेन ऽ ईशतमाघश ऽं० सोध्रुवा ऽ अस्मि न्गोपतौस्यातवह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि । ॐ यजुर्वेदायनमः ॥ ततो वायुकोणे शृंखला शिरसि पदत्रये—ॐ अग्न आयाहीत्यस्य भरद्वाज ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता सामवेदावाहने स्थापनेच विनियोगः । ॐ अग्नऽआयाहिवीतये गृणानो हव्यदातये । निहोता सत्सिबर्हिषि । ॐ सामवेदायनमः० । ततईशानेशृंखला शिरसि पदत्रये—ॐ शन्नोदेवीरित्यस्य दध्यङ्ङाथर्वणऋषिः, गायत्रीछन्दः, आपोदेवताः, अथर्ववेदावाहने स्थापने वि० । ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽ आपोभवन्तुपीतये । संयोरभिस्रवन्तुनः ॥ ॐ अथर्ववेदायनमः० । ततउत्तरमध्यलिङ्गस्य वामवाप्याम्—ॐ महतेनमः । महान्तमावाहयामिस्थापयामि, एवंसर्वत्र ॥ ततो दक्षिणवाप्याम्—ॐ भवायनमः—भवं० । पूर्वमध्य लिंगवामवाप्याम्—ॐ शर्वायनमः—शर्वं० । दक्षिणे—ॐ पशुपतयेनमः—पशुपतिं० । ततो दक्षिणमध्यलिंगस्य वामवाप्यां—ॐ ईशानाय

नमः--ईशानं० । दक्षिणवाप्यां-ॐ उग्रायनमः--उग्रं० । ततः पश्चिमे मध्यलिंगस्य वामवाप्यां--रुद्रायनमः रुद्रं० । दक्षिणवाप्याम्--ॐ भीमायनमः भीमं आ० स्था० ॥ तत उत्तरवायव्यान्तराल वाप्याम्--ॐ महत्यैनमः-महतीं०आ०स्था० । तत उत्तरेशानेन्तरालवाप्यम्--ॐ भवान्यैनमः भवानीं० ॥ ततः ईशानपूर्वान्तरालवाप्याम्-ॐ शर्वाण्यैनमः-शर्वाणीं० । ततः पूर्वाग्नेयान्तरालवाप्यां-ॐ पशुपत्यैनमः-पशुपतीं० । तत आग्नेय दक्षिणाऽन्तराले—ॐ ईशान्यैनमः-ईशानीं०। ततो दक्षिणनैर्ऋत्या न्तराल वाप्याम्-ॐ उग्रायैनमः-उग्रां० । ततो नैर्ऋत्यपश्चिमान्तराल कोण वाप्याम्—ॐ रुद्राण्यैनमः रुद्राणीम्० । ततः पश्चिमवायव्यान्तराल कोणवाप्यां—ॐ भीमायैनमः-भीमा मावाहयामि स्थापयामि । ततो बाह्यपरिधौ दिगीशसन्निधौ-तत्रादौ उत्तरे-सोमसन्निधौ-- ॐ गदयैनमः-गदां आवाहयामि स्थापयामि ॥ ईशाने-ईशसन्निधौ—ॐ त्रिशूलाय नमः-त्रिशूलं०। पूर्वेइन्द्र०-ॐ वज्रायनमः-वज्रं०॥ आग्नेये-अग्नि० ॐ शक्त्यैनमः—शक्तिं० । दक्षिणेयम० । ॐ दण्डायनमः-दंडं० नैर्ऋत्येनिर्ऋति० ॐ खड्गायनमः खड्गं० । पश्चिमेवरुण० ॐ पाशा यनमः—पाशं० । वायव्येवायु० । ॐ अँकुशायनमः-अँकुशम् । आ० स्था० । तद्बाह्येउत्तरे—ॐ गौतमायनमः-गौतमं आ० स्था० ईशाने—ॐ भरद्वाजायनमः । भरद्वाजं० । पूर्वे-ॐ विश्वामित्रा यनमः-विश्वामित्रं० आग्नेये-ॐकश्यपायनमः कश्यपं० । दक्षिणे ॐ जमदग्नयेनमः-जमदग्निं० नैर्ऋत्ये-ॐ वशिष्ठायनमः-- वशिष्ठं० । पश्चिमे-ॐ अत्रयेनमः-अत्रिं० । वायव्ये-ॐ अरुन्धत्यैनमः अरुन्धतीम्० ॥ तद्बाह्येपूर्वाद्यष्टदिक्षु-ॐ ऐन्द्र्यैनमः-ऐन्द्रीं० ॐ कौमार्यैनमः-कौमारीं० । ॐ ब्राह्म्यैनमः ब्राह्मीं० ॐ वाराह्यैनमः-वाराहीं० । ॐ चामुण्डायैनमः-चामुण्डाम्० । ॐ वैष्णव्यैनमः-वैष्णवीं । ॐ कौवेर्यैनमः-कौवेरीं । ॐ वैनायक्यैनमः वैनायकीम्० । इति हरिहरमण्डल द्वादशलिंगतोभद्रदेवता स्थापनक्रम ।

अथैतेषांसंलग्नपूजापद्धतिंवक्ष्ये—पुष्पाक्षतः—ध्यायेत्—ॐ ब्रह्माद्यान्विनियुक्तांस्तान्वैनायकयन्तगान्सुरान्। ध्यायामिमनसा भक्त्यालिंगतोभद्रदेवतान् ॥ आवाहनम्—मन्दस्मेराननान्सौम्या न्ब्रह्मदीन्सगणायुधान। आवाहयाम्यहं भक्त्यालिंगतोभद्रदेवतान् ॥ आसनम्—शुभ्रंवारंजितंवस्त्रं कार्पासादिविनिर्मितम्। आसनंप्रतिगृह्णन्तुलिंगतोभद्रदेवताः। स्थापनम्—आव्रजन्तिवहृतिष्ठन्तुब्राह्माद्यास्त्रिदिवौकसः। स्थापयामिचपूजार्थं लिङ्गतोभद्रमण्डले ॥ पाद्यम्—सुनिर्मलंसुग्वोष्णंच पवित्रंतीर्थजज्जलम्। पाद्यं गृह्णन्तुतेसर्वे लिङ्गतोभद्रदेवताः ॥ अर्घ्यम्—ताम्रादिपात्रगंशुद्धंसुगन्धेनसुवासितम्। अर्घ्यंगृह्णन्तुतेसर्वे लिङ्गतोभद्रदेवताः ॥ पंचामृतम्—पयोदधिघृतक्षौद्रशर्करामिश्रितंशुभम्। पंचामृतंप्रगृह्णन्तुलिङ्गतोभद्रदेवताः ॥ आचमनम्—पवित्रंनिर्मलंनीरं कर्पूरादिसुवासितम् आचम्यंचप्रगृह्णन्तु लिंगतोभद्रदेवताः। स्नानीयम्—पवित्रंनिर्मलं दिव्यं स्वर्णयादिगतंपरम्। जलंगृह्णन्तुस्नानार्थं लिंगतोभद्रदेवताः यज्ञोपवीतम्—नवतन्तुसमायुक्तं ब्रह्मग्रन्थिनियोजितम्। उपवीतंप्रगृह्णन्तु लिङ्गतोभद्रदेवताः। वस्त्रम्—ऊर्णाकार्पासकौशेयमङ्गाच्छादनमाहृतम्। वस्त्रपुंजंप्रगृह्णन्तु लिङ्गतोभद्रदेवताः। भूषणम्—भूषणानिविचित्राणि कुण्डलादीनियानिवै। मयादत्तानि गृह्णन्तुलिङ्गतोभद्रदेवताः। चन्दनम्—मलयाचलजंदिव्यंकेशरादिविमिश्रितम्। गृण्हन्तुभालशोभार्थं लिंगतोभद्रदेवताः। सौभाग्यद्रव्यम्—चन्दनोपरिशोभार्थं भ्रुकुट्योरन्तरङ्गतं। सिंन्दूरादि प्रगृण्हन्तुलिङ्गतोभद्रदेवताः। अक्षताः—तंडुलांश्वेतवर्णाभानक्षतान्मंगलप्रदान। सगन्धान्प्रतिगृण्हन्तु लिङ्गतोभद्रदेवताः। पुष्पाणि ऋतुजानिसुगन्धीनि दूर्वापत्रादिकानिच। पुष्पाणिप्रतिगृण्हन्तु लिंगतोभद्रदेवताः। बिल्वपत्राणि—येशैवाशिवभक्ताश्च सशिवारचशिवप्रियाः। बिल्वपत्राणिगृण्हन्तु लिंगतोभद्रदेवताः। नयनांजनम्—स्निग्धंदिव्यंपवित्रंच नयनानन्दनंपरम्। अंजनं प्रतिगृण्हन्तु लिंगतोभद्रदेवताः। धूपः—गुग्गुलादिसमायुक्तं गंधा

हव्यंसुमनोहरम् । गृण्हन्तु धूपमाघ्रेयं लिंगतो भद्र देवताः । दीपः—साज्यं सद्वर्त्तिकाभिश्च ज्वलितं सुप्रकाशकम् । आरार्तिक्यंप्रगृह्णन्तु लिंगतोभद्रदेवताः । नैवेद्यम्—अन्नंफलं घृतं-दुग्धंनैवेद्यं तृप्तिदायकम् । यथालब्धंप्रगृह्णन्तु लिंगतोभद्र देवताः नैवेद्यान्तेजलम्–कराननविशुध्यर्थंमेलाचूर्ण समन्वितम् जलंगृह्णन्तु मद्दत्तंलिंगतोभद्रदेवताः । ताम्बूलं–सगन्धचूर्णं ताम्बूलं नागवल्ली दलान्वितम् । गृह्णन्तुपरयाप्रीत्या लिंगतोभद्रदेवताः । ततः प्रार्थयेत्—आवाहनंनजानामिनजानामिविसर्जनम् । पूजांचैवनजानमि त्वद्गतिंपरमेश्वराः । न्यूनातिरिक्तं पूजायांयत्पाद्यादिभिर्भवेत् तत्सर्वंक्षम्यतांदेवाः प्रसीदन्तु सुरेश्वराः । येयेलिंगेषुदेवास्तदनुमतिगतायेचयेदक्षवामे, नागाधीशाः सुरेशाविविधसुरगणा मातृका भैरवाश्च । ब्रह्माद्यालोकपाला ऋषिगणसहिताभास्कराद्याग्रहाश्च तेसर्वेपान्तुदेवाःसकलभयहरालिंगतोभद्रदेवाः। ततःपूजापद्धत्युक्त प्रकारेण लिंगतोभद्रदेवेभ्यस्तत्तन्मंत्रैर्नाममंत्रैर्वादशदश, यवतिलाहुतिभिरेकैकयाज्याहुत्यावाजुहुयात् । ततो नाममंत्रैर्वावैदिक मंत्रैः, पायसबलिंदद्यात् । कार्यान्तेदेवविसर्जनम्– यान्तुशैवगणा सर्वे यान्तुब्रह्मादिदेवताः । यान्तुभैरवभूतादि पुनरागमनायच । ततो यजमानमभिषिंच्याशीर्दद्यात् ।

इति लिंगतोभद्र संघपूजा पद्धतिः

एवंलिङ्गतो भद्रस्थ देवान्सम्पूज्य कार्णिकायां वक्ष्यमाण विधानेन शिवपूजनं कुर्यात् अथचादौ पार्थिवलिङ्ग निर्माण प्रकारमाह–उक्तंच नन्दि पुराणे–आयुष्मान्बलवान् श्रीमान् पुत्र बांधववान्सुखी । वरमिष्टंलभेल्लिंगं पार्थिवंयः समर्चयेत् ॥ तस्मात्तु पार्थिवंलिङ्गंज्ञेयं सर्वार्थ साधकम् । भविष्य पुराणे–मृद्भस्मनोः सक्तुपिष्टं ताम्रकांस्यमयंतथा । कृत्वालिङ्गं सकृत्पूज्य वसेत्कल्पायुतं दिवि । शिथिलत्वे–अत्तादल्प परिमाणं नलिङ्गं कुत्रचिन्नरः । कुर्यातांगुष्ठतो ह्रस्वं नकदाचित्समाचरेत् । देवी-

पुराणे—मुदाहरण संघट्ट प्रतिष्ठा ह्वानमेव च। स्नपनं पूजनंचैव विसर्जनमतः परम्। हरोमहेश्वरश्चैव शूलपाणिः पिनाक धृक्। पशुपतिः शिवश्चैव महादेव इति क्रमात्॥ पार्थिवलिंग निर्माणार्थं मंत्रः—ॐ हरायनमः—अनेनमृत्तिका ग्रहणं कुर्यात्। ॐ महेश्वरायनमः। इति लिंग निर्माणंकु०। ॐ शूलपाणयेनमः, इति प्रतिष्ठांकु०। ॐ ध्यायेन्नित्यंमहेशं०। इति ध्यानं—ॐ पिनाकधृगेनमः। ॐ भूर्भुव स्वः पिनाकधृगिहागच्छेहतिष्ठ सुप्र०। ॐ पशुपतये नमः, पाद्यम्—ॐ नमः शिवाय इति सामान्यपूजनम्—ततोवामावर्त्तेन पूर्वाद्याग्नेयान्तमष्ठमूर्त्ति स्थापनंपूजनंचकुर्यात—पूर्वे—सर्वायक्षिति मूर्त्तयेनमः स्थापयामि पूजयामि। एवंसर्वत्रईशाने—ॐ भवाय जलमूर्त्तयेनमः स्था० पू०। उत्तरे—ॐ रुद्राय अग्निमूर्त्तयेनमः। स्था० पू०। वायव्ये—ॐ उग्रायवायुमूर्त्तयेनमः। पश्चिमे—ॐ भीमायाकाशमूर्त्तयेनमः स्था०। दक्षिणे—ॐ महादेवायसोम मूर्त्तयेनमः स्था०। आग्नेये—ॐ ईशानायसूर्यमूर्त्तयेनमः स्था० पू० ततउत्तरांगपूजान्ते—ॐ महादेवायनमः क्षमस्व इति संहारमुद्रया विसर्जयेत॥

इतिपार्थिव पूजापद्धतिः—

वेदोक्त शिवार्चन पद्धतिः

ॐ नमः शिवाय अथचकर्त्ता प्रातर्नित्यक्रियांकृत्वा शिवालयेवास्वगृहेवाद्वादश लिंगतोभद्रे यत्रानुमतिर्भवेत्तत्र हस्तौपादौ प्रक्षाल्यस्वासने, उपविश्याचम्य प्राणायामंविधाय, ॐ नमः शिवायेति त्रिरुच्चार्य भस्मधारणोक्त विधिना भस्मत्रिपुण्ड्रंधृत्वा रुद्राक्षांश्चसंधार्य, पूजा संकल्पं कुर्यात् अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहं करिष्यमाणामुककर्मनिमित्तक समस्तदुष्टारिष्ट

दूरीकरणार्थं समस्तशुभफलप्राप्त्यर्थंवा अमुककामना सिध्यर्थंच अमुकशिवलिंगोपरिवेदोक्तविधिना यथालब्धोपचारद्रव्यैरङ्गन्यास पूर्वकंषोडशोपचारेण पूजनमहंकरिष्ये । तत आचार्यंवृणुयात्– ब्राह्मणंवरणद्रव्यंच सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोहं करिष्यमाणामुककर्मनिमित्तक, शिवाराधनविधौ, अमुकशर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेनवृणे । वरणद्रव्यंतस्मैदत्वा, आचार्यस्त्विति संप्रार्थ्य,, भवानीतिप्रत्युक्तिः । ततः शान्तिपाठं कृत्वा पूजनमारभेत, तत्रादौनन्दीश्वरंपूजयेत—हस्ताक्षतपुष्पः ध्यायेत्—ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः पितरंचप्रयन्त्स्वः । ॐ भूर्भुवः स्वः, नन्दीश्वरेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ॐ नन्दीश्वरायनमः, पाद्यादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत् ॐ चत्वारिशृंगा त्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य । त्रिधाबद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवोमर्त्याँ २ऽ।। आविवेश । ततोवीरभद्रमावाहयेत्—ॐ भद्रंकर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितं यदायुः । ॐ भू० वीरभद्र, इहा० । ॐ वीरभद्रायनमः, सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ भद्रोनोऽअग्निराहुतो भद्रारातिः सुभगभद्रोऽअध्वरः । भद्राऽउतप्रशस्तयः । ततः कार्त्तिकेयमावा० ॐ यदक्रंदः प्रथमंजायमान ऽ उद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् । श्येनस्य पक्षाहरिणस्यबाहू ऽ उपस्तुत्यं महिजातन्ते ऽअर्व्वन् । ॐ भू० कार्तिकेय० । ॐ कार्तिकेयायनमः सम्पूज्य प्रा०–ॐ यत्रबाणाः संपतन्तिकुमाराविशिखाऽइव । तन्नऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः । शर्मयच्छतुविश्वाहा शर्म्मयच्छतु । ततः कुवेरमा०—ॐ वयं ट० सोमव्रते तवमनस्तनूषुबिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि । ॐ भू० कुवेरइ० । ॐ कुवेरायनमः सम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ कुविदङ्ग यवमन्तोयवंचिद्यथादान्त्यनु पूर्वंवियूय । इहेहैषांकृणुहि भोजनानियेबर्हिषोनम ऽ उक्तिंयजन्ति । ततः कीर्तिमुखं० ॐ इष्कृति

र्नामवोमाताथोयूय ई० स्थनिष्कृतीः सीराः पतत्रिणीस्थनयदा मयति निष्कृथ। ॐ भू० कीर्तिमुखाइ० । ॐ कीर्तिमुखायनमः सं० प्रा० ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे, उभाभ्यामुततेनमः बाहुभ्यान्तवधन्वने । अथचार्चकः वक्ष्यमाण विधिना, अदौस्वात्मनि, अंगन्यासं विधायपुनः शिवलिंगोपरि कुर्यात् हस्तेन अंगानिस्पृशेत्। शिवलिंगे—शिखायाम् ॐ यातेरुद्रशिवातनू रघोरापापकाशिनी । तयानस्तन्वा शंतमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि। शिरशि—ॐ असिमन्महत्यर्णवेन्तरिक्षेभवाऽअधि। तेषाॅंसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । ततो ललाटे-असंख्याता सहस्राणियेरुद्राऽअधिभूम्याम् । तेषाॅंसहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि। भ्रुवोर्मध्ये—ॐ व्वय ई० सोमव्रते तवमनस्तनू पुविभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि। नेत्रयोः ॐ त्र्यंबकं यजामहेसुगन्धिपुष्टिवर्द्धनम्। उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्। तृतीयनेत्रे ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निःस्वाहा सूर्य्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्चोज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्य्योवर्चोज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्य्योज्योतिः स्वाहा। कर्णयोः—ॐ नमः श्रुत्यायचपथ्यायच नमःकाट्यायचनीप्यायच नमःकुल्यायच सरस्यायच नमोनादेयायच वैशन्तायच। नासिकयोः—ॐमानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे। मुखे—ॐ अवतत्यधनुष्ट्व ई० सहिस्राक्षशतेषुधे । निशीर्य्यशल्यानां मुखाशिवोनः सुमनाभव । ग्रीवायाम्—ॐ नमोवंचतेपरिवंचते स्तायूनांपतयेनमोनमो निषंगिण ऽ इषुधिमते तस्कराणांपतये नमोनमः। कंठदेशे—ॐ नीलग्रीवाः शितिकंठादिव ई० रुद्राऽउपश्रिताः। तेषाॅंसहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि । उभयोर्बाह्वोः—ॐ नमस्तऽआयुधाया नाततायधृष्णवे । उभाभ्यामुततेनमो बाहुभ्यान्तवधन्वने। हस्तयोः—ॐ येतीर्थानि प्रचरन्तिसृकाहस्ता

निषंगिणः। तेषाॐसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । अंगुलीषु ॐ नमोज्येष्ठायच कनिष्ठायच नमःपूर्वजायचापरजायच । नमोमध्यमायच पगल्भायच नमोजघन्यायच बुध्न्यायच । हृदये–ॐ नमः पर्णायच पर्णशदायच नमऽउद्गुरमाणायचा भिघ्नतेचनम ऽआखिदतेच प्रखिंदतेच नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्चवोनमोनमोवः किरिकेभ्योदेवानाॐहृदयेभ्योनमो विचिन्वत्केभ्योनमो विक्षिणत्केभ्योनम ऽआनिर्हतेभ्यः। पृष्ठे–ॐ नमोगणेभ्यो गणपति भ्यश्चवोनमोनमो व्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवोनमः उदरे–ॐ विकिरिद्रविलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः यास्तेसहस्र ॅं० हेतयोन्यमस्मिन्निवपन्तुताः । दक्षिणकुक्षौ ॐ नमः शंभवायचमयोभवायचनमः शंकरायचमयस्करायचनमः शिवायच शिवतरायच। वामकुक्षौ ॐ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रनीललोहितः आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनां मामेर्मारोङ्मोचनः किंचनाममत् । नाभौ–ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत् सदाधारपृथिवीन्द्या मुतेमांकस्मैदेवाय हविषाविधेम । कट्याम् ॐ मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभव परमेवृक्षऽआयुधन्निधाय कृत्तिंवसानऽआचरपिनाकं विभ्रदागहि-लिंगे ॐ शिवोनामासि स्वधितिस्ते पितानमस्तेऽअस्तुमामा हि ॅं० सीः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्यायप्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वायसुवीर्याय । गुह्ये—ॐ इमारुद्रायतव-सेकपर्दिने क्षयद्वीरायप्रभरामहे मतीः। यथासमसद्विपदे चतुष्पदेविश्वं पुष्टंग्रामे ऽ अस्मिन्ननातुरम् ॥ वृषणयोः—ॐ इषेत्वोर्ज्जेत्वाव्वायवस्थदेवोवः सविता प्रार्पयतुः श्रेष्ठतमायकर्म्मण ऽ आप्यायध्वमघ्न्या ऽ इन्द्रायभागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मामावस्तेन ऽ ईशतमाघश ॅं० सो ध्रुवा ऽ अस्मिन्गोपतौस्यातवह्वीर्य्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ ऊर्वोः– ॐ मानोमहान्तमुतमानो ऽ अर्भकम्मान ऽ उक्षन्तमुतमान ऽ

उक्षितम् । मानोवधीः पितरंमोतमातरम्मानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ॥ जान्वोः—ॐ एषतेरुद्रभागः सहस्वस्राम्बिकयातंजुषस्व स्वाहैषते रुद्रभाग ऽ आखुस्तेपशुः ॥ जङ्घयोः—ॐ नमोज्येष्ठाय च कनिष्ठायचनमः पूर्वजायचापरजायच । नमोमध्यमायचा पगल्भायच नमो जघन्यायच बुध्न्यायच । गुल्फयोः—ॐ नमोह्रस्वायच वामनायच नमोवृद्धायच सवृधेच नमो ऽ ग्र्यायच प्रथमायच । पादयोः—ॐ येपथांपथिरक्षयऐलबृदा ऽ आयुर्युधः । तेषा ँ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि । अस्त्रे—ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमोदैव्योभिषक् । अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त सर्वाश्च यातुधान्योधराचीः परासुव कवचे—ॐ नमोबिल्मिनेच कवचिनेच नमोवर्मिणेच वरूथिनेच नमः श्रुतायच श्रुतसेनायच । नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्यायच । धनुषि—ॐ विज्यंधनुःकपर्दिनो विशल्योबाणवा ँ॥ऽउत । अनेशन्नस्यया ऽ इषव ऽ आभुरस्यनिषंगधिः ॥ बाणे—ॐ यत्रबाणाः सम्पतन्तिकुमाराविशिषाइव । तन्न ऽ इन्द्रोबृहस्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतु । विश्वाहाशर्म्मयच्छतु खड्गे—ॐ विकिरिद्रविलोहितनमस्ते ऽ अस्तुभगवः । यास्ते-सहस्र ँ॰ हेतयोन्यमस्मिन्निवपन्तुताः । ततो ऽ ऽत्तैर्दिग्बन्धनं कुर्यात—ॐ यएतावन्तश्चभूया ँ सश्चदिशोरुद्राविंतस्थिरे । तेषा ँ सहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ (एवंन्यासविधि—कृत्वाशिवोहमितिभावयेत ॥ ततःशिवलिंगोपर्य्यप्येवंन्यासविधिं कृत्वा पूजासमारभेत्-) अक्षतपुष्पोध्यायेत्—ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशंरजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसंरत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तंप्रसन्नम । पद्मासीनंसमन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिंवसानं विश्वाद्यंविश्ववंद्यं निखिलभयहरंपंचवक्त्रंत्रिनेत्रम् । आवाहनम्—ॐ मानोमहान्तमुतमानो ऽ अर्भकंमान ऽ उक्षन्तमुतमान ऽ उक्षितम् । मानोवधीः पितरंमोतमातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ॥ प्रत्युपचारम्—ॐ यातेरुद्रशिवातनूरघोरा

पापकाशिनी । तयानस्तन्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ।
पाद्यम्—ॐ यामिषुंगिरिशन्तहस्ते विभर्ष्यस्तवे । शिवांगिरित्र-
तांकुरुमाहिं ई० सीः पुरुषंजगत् । अर्घ्यम्—ॐ शिवेनव्वचसात्वा
गिरिशाच्छाव्वदामसि । यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ई० सुमना
ऽ असत् । आचमनम्—ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमोदैव्योभि-
षक् । अहींश्चसर्वांजम्भयन्त्सर्वांश्चयातुधान्योधराचीःपरासुव ।
स्नानम्—ॐ असौजस्ताम्रो ऽ अरुण ऽ उतबभ्रुःसुमङ्गलः येचैन
ई० रुद्रा ऽ अभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषा ॐ हेडईमहे ॥ पयः
स्नानम्—ॐ पयः पृथिव्यांपय ऽ ओषधीषुपयोदिव्यन्तरिक्षे
पयोधाः । पयःस्वतीःप्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥ दधिस्नानम्—
ॐ दधिक्राव्णो ऽ अकारिषंजिष्णोरश्वस्यव्वाजिनः । सुर-
भिनोमुखा करत्प्रणऽआयू-ॐ षितारिषत् ॥ घृतस्नानम्
घृतंघृतपावानः पिवतव्वसां व्वसापावानः पिवतान्त-
रिक्षस्य हविरसिस्वाहा । दिशःप्रदिश ऽ आदिशोवि-
दिश ऽ उद्दिशोदिग्भ्यःस्वाहा । मधुस्नानम्—ॐ मधु-
व्वाता ऽ ऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।
शर्करास्नानम्—ॐ स्वादुःपवस्वदिव्याय जन्मनेस्वादुरिन्द्राय
सुहवीतुनाम्ने स्वादुर्मित्रायव्वरुणायव्वायवे बृहस्पतयेमधुमा ँ॥ऽ
अदाभ्यः । ततः शुद्धोदकस्नानम्—ॐ असौजस्ताम्रो ऽ अरुण ऽ
उतबभ्रुः सुमङ्गलः । येचैन ई० रुद्रा ऽ भितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशो
वैषा ॐ हेडईमहे ॥ ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां
पूष्णोहस्ताभ्याम् ॥ पुनराचमनीयम्—ॐ अध्यवोचदधिवक्ता
प्रथमोदैव्योभिषक् ॥ अहींश्चसर्वांजम्भयन्त्सर्वांश्चयातुधान्यो
धराचीः परासुव । वस्त्रेणकटिबन्धनम्—ॐ असौयोवसर्पति
नीलग्रीवोव्विलोहितः । उतैनंगोपा ऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः सदृ-
ष्टोमृडयातिनः । यज्ञोपवीतम्—ॐ नमोस्तुनीलग्रीवाय सहस्रा
क्षायमीढुषे । अथोये ऽ अस्यसत्त्वानो हन्तेभ्योकरन्नमः ॥ चन्द-

नम्—ॐ प्रमुंचधन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योंज्याम् ॥ याश्चतेहस्त ऽ इषवः पराताभगव्वोव्वप । अक्षतान्—ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यव प्रिया ऽ अधूषत । अस्तोषतस्वभानवोविप्रानविष्टयामतीयोजान्वि न्द्रतेहरिः । पुष्पाणि—विज्यन्धनुःकपर्दिनोविशल्योवाणवा २॥ऽ उत । अनेशन्नस्यया ऽ इषव ऽ आभुरस्यनिषंगधिः । ॐ याः फलीनीर्य्या ऽ अफलाऽ अपुष्पा याश्चपुष्पिणीः बृहस्पतिप्रसूता स्तानोमुञ्चन्त्व टि० हसः ॥ विल्वपत्राणि—ॐ नमोविल्मिनेच कवचिनेच नमोव्वर्मिणेचवरूथिनेच नमः श्रुतायचश्रुतसेनायच नमो दुंदुंभ्यायच हनन्यायच । —गृहाण विल्वपत्राणिस-पुष्पाणिमहेश्वर । सुगन्धीनिनवानीश शिवत्त्वंकुसुमप्रिय । धूपम्—ॐ यातेहेतीर्मीढुष्टमहस्तेवभूवतेधनुः । तयास्मान्वि-श्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिभुज । ॐ धूरसिधूर्व धूर्वन्तन्धूर्वत योस्मान्धूर्वनित धूर्वजंवयं धूर्वामः । देवानामसि वन्हितम टि० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमन्देवहृतमम् ॥ दीपम—ॐ परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तुव्यिश्वतः । अथोयऽइपुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहितम् । ॐ अग्निर्ज्योति र्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा । अग्निर्व्वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्य्योव्वर्चोज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा । ज्योतिःसूर्य्यःसूर्य्योज्योतिः स्वाहा । नैवेद्यम्—* ॐ अवतत्यधनिष्ट्व टि० सहस्राक्षशतेषुधे ।

टि० * —नैवेद्य भक्षण विचार — पाद्मे — द्रव्यमन्न फलं तोय शिवस्व स्पृशे त्त्वचित् ॥ लघये नैव निर्माल्य कूपे सर्व परित्यजेत् । शिवनारदसंवादे— बाणलिंगे तु चण्डाशानंच निर्माल्यकल्पना । सर्व बाण स्थित ग्राह्य शक्त्या भक्त्या स्व- मान्यथा । गालाग्महाविवादे । - बाणलिंग न विद्यते अर्हनमगनैवद्य पत्रपुष्पफल जलम् । शालग्राम शिलालग्न सर्व याति पवित्रताम् नैवेद्यमेनोभुक्त्वा शुची चाण्डायण चरेत् ।

निशीर्य्यशल्यानां मुखाशिवोनः सुमना भव ॥ ॐ अन्नपतेन्नस्यनो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः । प्रप्रदातारंतारिष ऽ ऊर्ज्जन्नोधेहि द्विपदे चतुष्पदे । नैवेद्यान्तमाचमनीयम्–ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक् । अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्चयातुधान्योधराचीः परासुव ॥ मुखवासम्–ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे । उभाभ्यामुततेनमो वाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ दक्षिणाम्–ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त्ततान्ग्रेभूतस्य जातः पतिरेक ऽ आसीत् । सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम ॥ पुनर्ध्यायेत्— सर्वव्यापिनमीशानंशिवं वैधिरवरूपिणम् । वंदे सदा शिवं देवं वरदाभयहस्तकम् । गौरीं चतुर्भुजांचण्डीं त्रिनेत्रां मुकुटोज्वलाम् । प्रसन्नवदनां ध्यायेच्छिवोत्संगेतु वामतः ॥ ततो ऽ न्नाभिषेकं कुर्यात्–अत्र शिवलिंगोपरि गव्यपायसं शिवालिंगाद्बहिः पुरुषसूक्तेन, वानीलसूक्तेनोपलिप्य, अन्नमयं लिङ्गंविधायैवं वक्ष्यमाणविधिना पूजयेत् ॥ अन्नाभिषेकविधिमेनमकृत्वापि- वक्ष्यमाणेनैवच पूजयेत्–तत्रादौ पुष्पोदकेनतर्पयेत्–ॐ भवं देवं तर्पयामि । ॐ शर्वंदेवं तर्पयामि । ॐ ईशानंदेवं तर्पयामि । ॐ पशुपतिंदेवं तर्पयामि । ॐ रुद्रंदेवं तर्पयामि । ॐ उग्रंदेवं तर्प- यामि । ॐ भीमंदेवं तर्पयामि । ॐ महान्तंदेवं तर्पयामि । ॐ देवदेवं तर्पयामि । ॐ ज्येष्ठायनमः पुनराचमनीयं सपर्पयामि नमः । ॐ श्रेष्ठायनमः मधुपर्कं सम० । ॐ कालायनमःगन्धंस० ॐ कलविकरणायनमः पुष्पाणिस० । ॐ सर्वभूतदमनायनमः धूपं० । ॐ मनोन्मनायनमः दीपम्० ॐ भवोद्भवायनमः ॥ नैवेद्यंसमर्पयामि* । ततोऽष्टौपुष्पांजलीन्दद्यात्– ॐ भवायदेवा- यनमः पुष्पांजलिंसमर्पयामि । ॐ शर्वायदेवायनमः पु० ॐ ईशानायदेवायनमः पु० । ॐ पशुपतयेदेवायनमः पु० । ॐ रुद्रा- यदेवायनमः पु० । ॐ उग्रायदेवायनमः पुष्पां० । ॐ भीमाय देवायनमः पुष्पां० । ॐ महतेदेवायनमः पुष्पां० ततः शक्तिपूज-

नम्—ॐ भवस्यदेवस्यपत्न्यैनमः पूजयामि, इतिपाद्यादिभिः पूजयेत् । ॐ सर्वस्यदेवस्यपत्न्यैनमः पू० ॐ ईशानस्यदेवस्य पत्न्यैनमः पू० । ॐ पशुपतेर्देवस्यपत्न्यैनमः पू० । ॐ रुद्रस्यपत्न्यै नमः पू० । ॐ अघोरेभ्यो थघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॐ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवाय धीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्,, ततः पुष्पाक्षतैः— ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तयेनमः । ॐ भवायजलमूर्त्तयेनमः ॐ ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तयेनमः । ॐ उग्रायवायुमूर्त्तयेनमः । ॐ भीमा याकाशमूर्त्तयेनमः । ॐ पशुपतयेयजमानमूर्त्तयेनमः । ॐ महा- देवायसोममूर्त्तयेनमः । ॐ ईशानायसूर्यमूर्त्तयेनमः ॥ इतिदेवं सम्पूज्य, ततस्त्रिपादिकायां सछिद्रघटंसंस्थाप्य, सम्पूज्यच । तत्र सदुग्धजलंप्रपूर्यशिवोपरि जलधारांदद्यात् ॥ परिचर्यावसानेप्रद- क्षिणांकुर्यात*, मन्त्रपुष्पांजलिंदद्यात्—ॐ हिरण्यगर्भः सम- वर्त्तताग्रेभूतस्यजतः पतिरेक ऽ आसीत् । सदाधारपृथिवींद्यामुते- मांकस्मैदेवायहविषाविधेम । आरात्रिःपार्थिव टि० रजःपितरः प्रायिधामभिः । दिवःसदा ॐ सि बृहतीविनिष्ठस ऽ आत्वेषंवर्त- तेतमः । यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवा स्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् । तेहनाकंमहिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याः संतिदेवाः । ॐ राजा- धिराजायप्रसह्यसाहिने नमोवयंवैश्रवणाय कुर्महेसमेकामान्काम कामायमह्यं कामेश्वरोवैश्रवणोददातु, कुबेरायवैश्रवणाय महा- राजायनमः,, ॐ शान्तिः।३। ॐ नमःशिवाय,। तत आचार्यादयो यजमानायाशीदद्युः ॥　　इति वेदोक्तशिवार्चन पद्धतिः ॥

टि० * —शिव स्यार्ध प्रदक्षिणा—वृषचंडं वृषंचैव सोमसूत्रं पुनर्वृषम् । चण्डंच सोमसूत्रंच पुनश्चंडंपुनर्वृषम् ॥ अपसव्यं यतीनान्तु सव्यन्तु ब्रह्मचारिणाम् । सव्यापसव्यें गृहिणा मेव गंभो प्रदक्षिणा ।

अथ शिवानुष्ठादि परीभाषा

अथ शिवानुष्ठादिपरिभाषां वक्ष्ये—तत्रादौ रूद्राभिषेकादौ रुद्रैकादशिन्यादि प्रकारांश्च-उक्तंच महाकल्पे नंदिकेश्वर सतानन्द सम्वादे-शृणुष्वगौमहाप्राज्ञ रुद्रभेदा न्वदामिते। रुद्रा पंचविधाः प्रोक्तादेशिकरुत्तरोत्तरम्। सांगस्त्वाद्योरूपकाख्यः सशीर्षोरुद्रउच्यते। एकादशगुणैस्तद्वद्रुद्रीसंज्ञोद्वितीयकः। एकादशभिरेताभिस्तृतीयोलघुरुद्रकः। लघ्वेकादशभिः प्रोक्तोमहारुद्रश्चतुर्थकः। पंचमस्त्वान्महारुद्रैरेकादशभिरन्तिमः। अतिरुद्रः समाख्यातः सर्वेभ्यो ह्युत्तमोत्तमः। (रूपकः १ रुद्री २ रुद्रः ३ महारुद्रः ४ अतिरुद्रः ५ एवं पंचभेदाभवन्तिः) तत्र सांगरुद्रयुक्तोतदंगान्यपि तत्रैवोक्तानि, अथच—शिवसंकल्पं हृदयंसूक्तं स्यात्पौरुषंशिरः। प्राहुर्नारायणंचैव शिखातस्योत्तरामिदाम्। आशुः शिशानः कवचंनेत्रंविभ्राड्बृहदस्मृतम्। शतरुद्रीयमस्त्रंस्यादष्टांगः क्रमईरितः। ततः शतरुद्रीयसंज्ञा रुद्राध्यायस्यषोडशर्चोनामिभिरिति संज्ञा। सांगरुद्रपाठ क्रमोपिमहाकल्पएवोक्तः पूर्वमंगानि संजप्यरुद्राध्यायंततोजपेत्। आदावन्तेच सौंकारं सौंकारंव्याहृतित्रयम्। अष्टप्रणवसंयुक्तं रुद्राध्यायं सकृज्जपेत्। तदन्तेसप्तमंत्राश्चयच इ० सौशिरोजपेत्। उग्रश्चेतिसप्तमंत्राजटामंत्राजपेत्तत। ततोऽष्टानुवाकरूपांगच मकाध्यायमाचरेत। जपदन्ते ऋचंवाचे संकल्पाध्यायमेवच। ततोवै शान्तिरिति च कंडिकाजपमाचरेत्। शान्तिः शान्तिः शान्तिरिति चान्तेत्युच्चारणंसदा। एवमुक्त क्रमेणैवसकृदावर्त्तनं बुधैः। सांगस्त्वाद्योरूपकाख्यः सशीर्षोरुद्र उच्यते। रुद्रेः प्रथमाध्यायस्य पञ्चमंत्राहृदयम्। पौरुषंसूक्तं शिरो द्वितीयाध्यायस्य षोडशमंत्रा। तत्रद्वितीयाध्यायस्योत्तरनारायणा नुवाकस्याद्भ्य,, इतिषण्मंत्राः शिखा। आशु शिशानेत्यादि तृतीयाध्यायस्य सप्तदशमंत्रा कवचम्। विभ्राडित्यादि चतुर्थाध्यायस्य सप्तदशमंत्रा, नेत्रत्रयम्। रौद्राध्यायस्य पञ्चमाध्यायस्य, प्रथमानुवाकस्य षोडशमंत्राः, अस्त्रम्॥ एवं क्रमेण अङ्गान्तंपठित्वा,, तत. ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः इति प्रणवत्रयमुच्चार्य, पुन. पञ्चमाध्यायस्यादिमंत्र, (ॐ नमस्ते रुद्रामन्यव.) तः, जम्भेदध्म,, इत्यन्तान्यट्षष्टिमंत्रान्पठित्वा, ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ॥ इत्यष्ट प्रणवयुक्तः पञ्चमाध्यायः शिरः। ततो रुद्रेःसप्तमाध्याये जटा। ततश्चमकाध्यायः शान्त्याध्यायः शान्तिकण्डिका पठित्वान्ते वारत्रयं ॐ शान्ति ३। **इति रूपक स्वरूपम्**॥ एव मेकावर्त्ति रुद्रोपाठस्यरूपकेति संज्ञा,, एकावृत्तिमात्रेंतेनै कुर्यादन्यथाभ्रष्टाभवन्तीति शास्त्रसम्मतिः॥ **इत्येकावृत्तिविधिः**॥

अथैकादशिनी-विधि वक्ष्ये—उक्तंच प्रयोग दर्पणे—एकादशोर्ध्वरूपाणि रुद्राणिच-सकृज्जपेत्। अंगान्यादौशिरश्चान्ते रुद्रैकादशिनीस्मृता॥ अत्रानुक्तसमुच्चयार्थेन चकारेण जटाया अपि, आक्षेपत्वात,, तथाचादौषडङ्गानि जप्त्वा मध्ये सकृद्रुद्राध्याय मेकादशवारं जप्त्वा-

न्ते शिरोजटाच जप्यते यदातदासारुद्रोति भवति । इति प्रथमः पक्ष ॥ अत्रकेचित्तु— सागमाद्य जपेद्रुद्र मेवज्ञानिनिर्वांतर । सांग सशीर्षकं चयं निरङ्ग मितिकेचन । इत्युक्त तत्र प्रधानभूत रुद्रस्यैकादशा वर्त्तनाभावादथ परपरा मूलकतया नादर्त्तव्यम् । इतिपूर्व पक्षस्यैवसाधीय स्त्वम् । अत्र प्रथमपक्षे— एकादशिनी प्रयोग— अष्टमाध्याय-नमकरूपस्याष्टानुवाकमयस्यैकादश चावर्त्तनेषुपाठस्य क्रमद्वयम् । तत्रवाजश्चमेचतस्रस्यु सत्यचेतिचतुष्टयम् । ऊर्क्चेतिचतस्र स्युरश्माचेतित्रयंतत । अग्निश्चमेधतिस्र स्यु रनुवाकाइमेमता । अनुवाकत्रयस्याथ षड्वेशचपठेद्बुध । तत्रा ॐ शुश्चतिस्र स्युरग्निश्चेति द्वयतत । एकाचमेततश्चैकामथैकाचचतस्रश्चमे । ततश्चयविश्चमेद्वन्द्ववायस्वाहेतिद्वयम् । ऐटा न्येकादशैतानिक्रमादेकादशेषुच । रुद्रस्यावर्त्तनेष्वेव पठेत्क्रमनवद्बुध । इति ॥ अत्रकेचिद्वदन्ति रुद्रस्यैकादशावर्त्तने ष्वनुवाकानामप्येकादशस्यैवोचितत्वादष्टावर्त्तने ष्वष्टानुवाकाना मनुवृत्तौ, शेषेष्वपित्रयेष्वन्तिमानुवाकस्य सामधेनी वृद्धौचान्तिममन्त्रानुवर्त्तवत् पाठस्योचितत्वमिति । तन्मते—अ ॐ० शुश्चेतिपंचस्युस्ततश्चैकाचतुष्टयम् । वाजायस्वाहेतिद्वयमष्टमाथेषुयोजयेत् । इतिविशेष । तत्रान्यतरक्रमेणावृत्तौ अन्यत्सर्वंपूर्वोक्तसकृदावर्त्तनवत् । मत्सम्मत्यानुपूर्वपक्षएव मुष्टुतरोऽस्ति—सच—अङ्गान्यादौशिरश्चान्तेतिदिक् । इति रुद्रैकादशिनीप्रयोगविधि ॥

अथलघुरुद्रस्वरूपवदये—रुद्रैकादशिनोत्वपासर्वकामफलप्रदा । एकादशगुणासैवरुद्रइत्यभि धीयते । महारुद्रस्वरूपम्—रुद्रएकादशगुणोमहानित्यभिधीयते । अतिरुद्रस्वरूपम्— महानैकादशगुणस्त्वतिरुद्रइहोच्यते । रुद्रकल्पानुसारेण रुद्रभेदानिरूपिता । देवानन्देनविदुषा तेनतुष्यतुशङ्कर । प्रतिआवृत्तहोमस्याद्दशांशोमुख्यपक्षत । शतांशहोमोपि क्वचित्केचिदिच्छन्ति नापरे । तत्रफलविशेषेण रुद्रीसंख्यानामुपयोगमाह —रुद्रीसंख्याफलदेविश्रृणुष्ववदतो मम । एकावृत्यादिपाठाना यथावत्कथयामिते ॥ सङ्कल्पपूर्वकन्यस्य न्यासांगेषुमनून्सकृत् । स्नात्वापञ्चामृतैनैवध्यानपूर्वशिवस्मरेत । बालग्रहोपशान्त्यर्थ मेकावृत्तिसमाचरेत् । उपसर्गोपशा, न्त्यर्थं त्रिरावृत्तिपठेन्नर । ग्रहोपशान्त्यैकर्त्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने । महाभयेसमुत्पन्ने सप्तावृत्ति मुदीरयेत् ॥ नवावृत्याभवेच्छान्तिर्वाजपेयफललभेत् । राजवश्येविभूत्यैच रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ रुद्रोलघुरुद्र —रुद्रैस्त्रिभि काममिद्धिर्वैरिहानिश्चजायते । रुद्रै पञ्चभिशत्रुश्च तथास्त्रीवशतामियात् रुद्रैःसप्तभि सौख्यं स्याच्छ्रियमाप्नोतिमानव । नवरुद्रै पुत्रपौत्रधनधान्यसमन्वित । राजभीति विनाशायवैरस्योच्चाटनायच धर्मार्थकाममोक्षाणा साधनायतत परम् । अल्पमृत्युविनाशाय तथाराज्ययशश्रियै ॥ राजवृद्धिप्रदेवाय महारुद्रैकसख्यया । त्रिभिश्चैवमहारुद्रैरसाध्यसाधन भवेत । पञ्चभिश्चमहारुद्रै राजग्राम प्रसाध्यते । सप्तभिश्चमहारुद्रै सप्तलोकजयोभवेत् । नवभि श्चमहारुद्रै पुनर्जन्मनजायते । अतिरुद्रैकसख्येन देवत्वप्राप्नुयान्नर ।

इति रुद्रातिरुद्र परिभाषा।

अथ महामृत्युंजय जपविधिः ॥

अथ महामृत्युंजय जपविधिः । संकल्पः—अद्येत्यादि पूर्वोच्चारितएवंगुणविशेषेण विशिष्टायांशुभपुण्यतिथौममआत्मनः श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं वायजमानस्य शरीरेऽमुकग्रहपीडा निरासद्वारासद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं, अमुकसंख्यात्मकं श्रीमहामृत्युंजयदेवताप्रीत्यर्थं श्रीमहामृत्युंजयमंत्रजपमहंकरिष्ये, विनियोगः—ॐ अस्य श्रीमहामृत्युंजयमंत्रस्य वशिष्ठऋषिः श्रीमहामृत्युंजयरुद्रो देवता अनुष्टुप्छन्दः हौं वीजँजूँशक्तिः सः कीलकं सर्वाऽरिष्टनिवृत्यर्थं मृत्युंजयप्रीत्यर्थं जपेविनियोगः—न्यासाः—ॐ वशिष्ठऋषयेनमः शिरसि, ॐ अनुष्टुप्छन्दसेनमः मुखे, ॐ श्रीमहामृत्युंजयरुद्रदेवतायैनमः हृदये, ॐ हौं वीजायनमः गुह्ये, ॐ जूँ शक्तयेनमः पादयोः ॐ सः कीलकायनमः सर्वाङ्गेषु, करन्यासः—ॐ त्र्यंवकं अंगुष्ठाभ्यांनमः ॐ यजामहेतर्जनीभ्यांनमः ॐ सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनंमध्यमाभ्यांनमः, ॐ उर्वारुकमिववन्धनात् ।अनामिकाभ्यांनमः ॐ मृत्योर्मुक्षीय कनिष्ठिकाभ्यांनम ॐ मामृतात्करतलकरपृष्ठाभ्यां, ध्यानम्—ॐ चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजंसुरपतिं पीयूषपात्रंमहद्धस्ताब्जेनदधन्सु दिव्यममलं हास्यास्यपंकेरुहम् । सूर्येन्द्वग्निविलोकनं करतलैः पाशाक्षसूत्रांकुशांभोजं विभ्रतमक्षयंपशुपतिं मृत्युंजयंतंस्मरे । ततो मानसोपचारेण पूजयेत्—ॐ लँ पृथिव्यात्मकं गंधंसमर्पयामि । ॐ हँ आकाशात्मकं पुष्पंसमर्पयामि । ॐ यँ वाय्वात्मकंधूपं स० । ॐ रँ तैजसात्मकं दीपं स० । ॐ वँ अमृतात्मकं नैवेद्यंसमर्पयामि। ॐ सँ सर्वात्मकं मंत्रपुष्पांजलिं समर्पयामि । मंत्रोद्धारः—ॐ हौं ॐ जूँ ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ—त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ॐ स्वः ॐभुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूँ ॐ हौं ॐ जपान्ते पूर्ववदुत्तरन्यासंकृत्वा । ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्तात्वं गृहाणास्म

त्कृतंजपम्, सिद्धिर्भवतुमेदेवत्वत्प्रसादान्महेश्वर, मृत्युंजय महा-रुद्र त्राहिमां शरणागतम्। कर्मभोगजरोगैश्च पीडितंयजमानकम्। अनेनमहामृत्युंजयजपाख्येनकर्मणा श्री सदाशिवो महामृत्युंजयः प्रीयतांनमम, इतिनिवेदयेत्—इत्यष्ठप्रणव संपुटितमहामृत्युंजय मंत्रः। अथ षड्प्रणवयुक्तो महामृत्युंजयमंत्रः—पूर्ववत्संकल्पादिकं कृत्वा मंत्रराजंजपेत्—ॐ ह्रौं जूँ सः ॐ भूः भुवः स्वः ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीयमामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूँ ह्रौं ॐ अर्पणादिकं पूर्ववत्। एवं जपानन्तरं देवं सम्पूज्यप्रार्थयेत्। मृत्युंजय महादेव त्राहिमांशरणागतम् कामनाहोमद्रव्यंचवक्ष्ये—पुत्रार्थेशालि बीजै-र्धनार्थे बिल्वपत्रकैः। दूर्वाभिरायुष्कामस्तु पुष्टिकामस्तुवेतसैः विद्याकामस्तु पालाशैर्दशांशेनतुहोमयेत्॥ तिलैरारोग्यकामस्तु व्रीहिभिः सुखमश्नुते। धान्यकामोयवैश्चैव गुग्गुलेनरिपुक्षये।

इति मृत्यु जय मंत्र सपुटीकरण विधि।

वैकुंठ चतुर्दशी-परिभाषा

अथच वैकुण्ठ चतुर्दशी कार्तिक शुक्ला—रात्रिव्यापिनी ग्राह्या दिनद्वयत द्व्याप्तौ निशीथ प्रदोषोभयव्यापिनी ग्राह्या। उक्तच सनत्कुमार संहितायाम्—शुक्ल प [illegible] चतुर्दश्यां मरुणाभ्युदयं प्रतिमहा [illegible] व लिबौ [illegible] मूत्त मणिकर्णिके। स्नात्वाविश्वेश्वरोदेव्या विश्वेश्वरम पूजयेत। प्रदोषसमयेकुर्याद्व्रती प्रयत्नमानस। पूजन दीपदानच शिवलिगार्चनविधौ। शतत्रय वर्तिकाना कुर्यात्पष्ठ्युत्तरंचतत। स्थापयेद्दीपकै मर्त्यै प्रत्यहेत्रनिरन्धना [illegible]। रुद्रैर्भक्त [illegible] दीपकानथवा [illegible]। सम्पूज्य विधिनाद्दीपान्प्रदाप दीपयेद्व्रती। स्मृत्यन्तरे—रात्रौ जागरणं कुर्याद्गीतवाद्यादि मङ्गलै। सुवर्णवर्तिकां कृत्वा राजतं दीपकं शुभम्। गव्यनवयुता सुतफुल्लमध्यवर्तिकाम्। पुत्रार्थिनीच यानारी सोत्थाया शिवसन्निधौ। उभयोर्हस्तयोर्मध्ये दीपं धृत्वा प्रयत्नेन निर्विघ्नगतारात्रि शकुनंचेत्सुमंगलम्॥ प्रभाते दीपकंतच ब्राह्मणाय निवेदयेत्। ततोऽरुणोदये जाते स्नानकुर्याद्व्रतीनर। संध्यासमाप्य विश्वेश सोमभ्यर्च्य यथाविधि,, मद्भक्तान्भोजयित्वाच ब्राह्मणान्भोजयत्तत। मतिथौ सितकार्तिकयायोनर. पूजयेच्चमा। ददाम्यहं मतिप्रीत्यासर्वान्कामांस्ततनरम्॥ ॥ इति ॥

॥ अथ वैकुंठ चतुर्दशी दीपदान पद्धतिः ॥

अथचवैकुंठ चतुर्दश्यां शिवभक्ति युतोनरः प्रातर्नद्यादौ वायस्मिन्कस्मिन् जलाशये स्नात्वा नित्यकर्मकृत्वांइदमाचरेत ॥ सायंकाले शिवालये तदभावे नदीतीरेवा पूर्वोक्तपार्थिव लिंग-विधानेन पार्थिवंलिंगं निर्मायत्तेनैव विधिना-सम्पूज्यच दीपान्व-क्ष्यमाण विधानेन संदीपयेत् । स्वासने, उपविश्याचम्य भूतोत्सा-दनं कृत्वा प्रणम्यच ॐ नमः शिवायेति त्रिर्जप्य, सुमुखेत्यादि-ना गणेशं-संप्रार्थ्य-संकल्पं कुर्यात् अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहम्, आत्मनः सर्वपाप क्षय पूर्वकामुककामनया, अद्यवै-कुंठ चतुर्दश्यामसुक शिवलिंगार्चन विधौ प्रतिसांवत्सराख्य नियमानुकूलतया दीपदान विधौ संवत्सरप्रतिदिवसैकैक वर्तिका नियमेन आशुतोष सदाशिवप्रीत्यर्थं, अमुकसंख्यकान्दीपानहं-दीपयिष्ये ॥ पूजनंचकरिष्ये ॥ ततः पूर्वोक्त विधानेनवा, पुरुषसू-क्तेनच, सर्वाभावे ॐ नमः शिवाय, इतिमंत्रेण पाद्यादि नीरा-जनान्तं शिवं संपूज्य दीपावलीमपिपूज्यच । पूर्ववत्संकल्पं कृत्वा दीपान्प्रज्वालयेत्—मंत्रः—ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽअस्मान्विश्वानि देव व्वयुनानि विद्वान् । युयो ध्यस्मज्जुहुराणमेनोभूयिष्ठान्ते-नम ऽ उक्तिं विधेम ॥ इति पूज्यब्राह्मणाय व्रतपूर्त्यर्थमामा-न्नं सदक्षिणं दद्यात—अद्येत्यादि० अमुकोहमद्यवैकुंठ चतुर्दश्यां यन्मया शिव प्रीत्यर्थदीपदानं कृतं तत्प्रतिष्ठार्थं मिदमामान्नं सदक्षिणममुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय दास्ये, परिपूर्णमस्त्वचनम् ॥

अथ हस्त धृतोत्थिताखंडदीपकपद्धतिः—

अथ सपत्निकः संतानकामः पुरुषो वैकुंठचतुर्दश्यां-वा महाशिव-रात्रौ-प्रातर्नद्यादौ-स्नात्वा आचार्येण सह शिवालये गत्वा स्वासने उपविश्य दीपंप्रज्वाल्य गणेशादिपंचांग पूजनं कृत्वा-नान्दीश्राद्धं चसंपाद्य, आचार्यवृणुयात् अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्या मुकरा-

शिः सपत्नीकोहं अद्यवैकुंठ चतुर्दश्यां वा महा शिवरात्रौ अमुक शिवलिंग सन्निधौ संततिकामोऽद्यनिशायां पत्नीहस्त धृत प्रज्वलित दीपविधि परिपूर्णतासिध्यर्थं, अमुकशर्माणंब्राह्मणंवेदोक्त विधानेन पूजाचतुष्टयसम्पादनार्थं तथापडंगरुद्रीपाठैकाशिन्यादि कर्मकर्त्तुआचार्यत्वेन वा पाठकत्वेनत्वांवृणे ॥ वरणद्रव्यंदत्वा प्रार्थयेत । आचार्यस्तु० ॥ ततआचार्योशिवलिंगपूर्वोक्तवैदिकपूजा पद्धत्यापूजयित्वा । स्वयंचपाठकैः सहपडङ्गरुद्रीपाठंमृत्युंजया दिजपश्चकुर्यात् ॥ प्रदोषेपितेनैवविधिनापुनःसम्पूज्य,, रजतदीपं ससुवर्णोत्फुल्लकार्पासवर्त्तिकायुक्तं गवाज्यपूरितंच शिवसन्निधौ संस्थाप्य, सम्पूज्यच, प्रार्थयेत्—ॐ परमार्थैकरूपायनमस्तेपर- मात्मने ॥ स्वेच्छाविभासितासत्य भेदभिन्नायशम्भवे । त्रिगुण- ग्रन्थिदुर्भेदभवबन्धविभेदिने । भवभीतिपराभूतः सन्तानार्थी च त्वामिह । शरण्यंशरणंयातो व्रतभक्तिंगृहाणमे ॥ ॐ अग्नेनये त्यस्यागस्त्यऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवता दीपप्रज्वालने विनि- योगः । ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽ अस्मान्विश्वानिदेवव्वयुनानि विद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्तेनम ऽउक्तिंविधेम। इति दीपंप्रज्वाल्य ॥ विनियोगः—ॐ अग्नेव्रतपाइत्यस्यागस्त्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवतादीपांजलिग्रहणेविनियोगः । ॐ अग्ने व्रतपास्तेव्रतपायातव तनूर्म्मय्यभूदेषा सात्वयिसामतनूस्त्व य्यभूदिय ६० सामयि । यथायथन्नोव्रतपते व्रतान्यनुमेदीक्षान्दी क्षापतिरम ६० स्तानुतपस्तपस्पतिः ॥ इति मन्त्रेण यजमानपत्नी प्रज्वलितंदीपमजलौनिधाय ॥ वि०—ॐ आनइत्यस्यप्रजापति र्ऋषिरुष्णिक्छन्दो ऽग्निर्देवताकर्म्मानुष्ठाने विनियोगः । ॐ अग्नेव्रतपतेव्रतंचरिष्यामि तच्छकेयन्तन्मेराध्यताम् । इदमहमनृ- तात्सत्यमुपैमि । ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णे हस्ताभ्याम् ॥ इति मन्त्रैर्दीपमंजलौगृहीत्वा यथावकाशमुत्तिष्ठेत, विनियोगः—ॐभूरसित्यस्या त्रिशिराऋषिः पंक्तिश्छन्दः पृथि- वीदेताभूमिप्रार्थने विनियोगः । ॐ भूरसिभूमिरस्य दितिरसि

न्विश्वस्य भुवनस्यधर्त्री । पृथिवींयच्छपृथिवींदृ ह० ह पृथिवीं माहिं ह० सीः इति संप्रार्थ्य । ॐ पृथिव्यैनमः सम्पूज्यतत्रैवो तिष्ठेत् ॥ शक्तिश्चेत—ॐ नमः शिवाय,, इतिं मन्त्रंपुरुषोजप्त्वा स्वयमपिस्थाणुवद्दीपरक्षांकुर्यात् ॥ ततआचार्योरात्रौपूजाचतुष्टयं स्वयंकुर्यात् ॥ ततः प्रभातेसंजाते—शिवसमीपेसमागत्य—ॐ अग्नेव्रनपतइत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिःपंक्तिश्छन्दो ऽ ग्निर्देवताशिवो पासनाव्रतविसर्जने विनियोगः ॥ ॐ अग्नेव्रतपतेव्रतमचारिषं तदशकंतन्मेराधीदमहंय्य ऽ एवास्मिसो ऽ स्मि ॥ इति तूष्णींदीपं शिवसन्निधौ संस्थाप्यसुरक्षयेत् ॥ ततः स्नात्वानित्यकर्मसमाप्य पुनः शिवंसम्पूज्य, पाठजपादि शान्त्यर्थंकुशकण्डिकोक्तप्रकारेणा- ग्निं संस्थाप्यप्रज्वाल्यसम्पूज्यच । जपपाठ दशमासंचरुणाहुत्वा तद्दशांशतर्पणंमार्जनंच विधाय ॐ अग्नेनयसुपथा० ॥ इति पूर्वो क्तमन्त्रेणकृत्वा । दीपदानंकुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्या मुक- राशिरमुकोहंकरिष्यमाणपूर्वेन्हि पुत्रकामनयाकृतस्य श्री सदा- शिवप्रीत्यर्थं वैकुण्ठचतुर्दश्यांरात्रौ अंजलिस्थदीपधारणकर्मणः शान्त्यर्थमिमंसुवर्णवर्त्तिकासहितं दीप्तंरजतदीपममुकशर्मणेतुभ्य महंसम्प्रददे । प्रार्थयेत्—प्रदीप्तंरौप्यदीपंच हैमवर्त्तिसमन्वितम् । सदाशिवनिमित्तंच ददामिव्रतपूर्त्तये ॥ ततः शिवलिङ्गंपूर्वोक्तपूजा पद्धत्युक्तप्रकारेण,, ॐ भवंदेवंतर्पयामीत्यादिमन्त्रैर्दुग्धजलेन तर्पयित्वा गोदानतिलपात्रंवाकृत्वा सपत्नीकंयजमानंपूर्वोक्त विधिनाभिषिच्याशीर्दद्यात । ततः शैवान्ब्राह्मणान्वाभोजयेत ॥

इति हस्तधृतोत्थितार्खंडदीपदानपद्धतिः—

अथ शिवलक्षवर्त्ति दीपदान पद्धतिः ।

अथ च व्रतीगणेशादि पंचांग पूजनंकृत्वा शिवालयेगत्वा पूर्वोक्तविधानेन शिवार्चनंकृत्वा, चापूर्वोक्त प्रकारेणद्वादशलिंगतो भद्रं निर्माय पूजापद्धत्युक्त प्रकारेण भद्रस्थ देवान्सम्पूज्य, आचार्यंवृत्वा संकल्पः—अद्येत्यादि तिथ्यादिकं संकीर्त्यममाखिल

दुरितनाशाभीष्ठ सिद्धिपूर्वकं सांवसदाशिव प्रीत्यर्थं आचरित रुद्रलक्षवर्त्तिव्रतस्योद्यापनंकरिष्ये, ततो लिंगतोभद्रे ताम्रकलशो-परिहैमंसांवरुद्रं त्र्यंवकमंत्रेण प्रतिष्ठाप्य शिवार्चन पद्धत्युक्त प्रकारेणसम्पूज्य भद्रस्यवाशिवलिंगस्य सन्निधौ, वार्त्तिकान्संस्था-प्य, मध्ये रजतदीपं हैमीवर्त्तिकोपेतं संस्थाप्य गव्येनाज्येनापूर्य, ॐ शिवलक्षवर्त्तिकाभ्योनमः सम्पूज्य शिवंध्यात्वा—ॐ अग्नेनय इत्यस्यागस्त्यऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता लक्षवर्त्तिप्रदीपने विनि-योगः ॐ अग्नेनयसुपथारायेऽ अस्मान्विश्वानि देवव्वयुनानि व्विद्वान्॥ युयोध्यस्मज्जुहुराण मेनोभूयिष्ठांतेनम ऽ उक्तिंव्विधेम इति वर्त्तिकान्संदीप्य, ततो होमपद्धत्युक्तप्रकारेण प्रायश्चित्तान्तं होमंकृत्वा। ॐ नमः शिवायेति मंत्रेण, घृतपायसं दशसहस्रा हुतिभिः लिंगतोभद्रदेवताश्चैकैकायाज्याहुत्याहुत्वा, ॐ अग्ने-नय० इतिमंत्रेण होमदशांसतर्पणं तर्पणदशांशमार्जनं सदुग्धजलेन कृत्वा उत्तराङ्ग पूर्णाहुतिंहुत्वा, गोदानंकृत्वा आचार्य ऋत्विग्भ्यो दक्षिणांदत्वा आचार्यो यजमानं कलशजलेनाभिषिच्याशीर्दं द्यात्। ततो ब्राह्मणान्भोजयेत्।

इति शिवलक्षवर्त्ति दीपदान पद्धतिः

नवाश्वनवभूवर्षे वैक्रमीयेदिनेशुभे। ज्येष्ठेमासिसितेपक्षे दशम्यां चन्द्रहस्तयोः॥१॥ आदित्यनामकेयंत्रे इन्द्रप्रस्थेशुभेपुरे। मुद्रितो-ऽसौशुभः कर्मकांडरत्नाकरोमया॥२॥ देवानन्देन विदुषा डिम्मरग्रामवासिना। समाप्तिमगमत्तस्य पूजाखंडोयथेप्सितः॥३॥

इति कर्मकांड रत्नाकरस्य पूजाखंडः।

श्री गणेशायनमः ।

अथ कर्मकांडरत्नाकरस्य, द्वितीयः संस्कारखंडः प्रारभ्यते ।

तत्रादौ विवाहसूत्रव्याख्यां वक्ष्ये—

अथ विवाहोपयोगिविषयाणि । अथातः संस्कारप्रकरणंव्याख्यास्यामः तत्र संस्कारोनाम आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहितक्रियाजन्यो ऽतिशयविशेषः ॥ गर्भाधानादौ लाक्षणिकं च संस्कारपदम् ॥ सच संस्कारोद्विविधः—ब्राह्मोदैवश्च ॥ गर्भाधानादिः स्मार्तब्राह्मः ॥ पाकयज्ञा हविर्यज्ञाः सौम्याश्चदैवः । सौम्याः सोमयागाअग्निष्टोमादयः ॥ स्मार्तब्राह्मस्तु—उत्पत्त्यादिरिन माहनाशकः । यथा—बीजगर्भसमुद्भवैनो निवर्हणोजातकर्मादिजन्यं । सच षोडशधा (तथाचजातूकर्ण्यः) आधानपुंसवसीमन्तजातनामान्नचौलकाः ॥ मौञ्जीव्रतानिगोदान समावर्त्तविवाहकाः ॥ अन्त्यंचैतानिकर्माणिप्रोच्यंतेषोडशैवतु ॥ शूद्राणांचैवभवतिविवाहश्चान्त्यकर्मच । याज्ञवल्क्यः—ब्रह्मक्षत्रियविट् शूद्रा वर्णास्त्वाद्यास्त्रयोद्विजाः ॥ निषेकाद्याः श्मशानान्तास्तेषां वैमन्त्रतःक्रियाः ॥ मातुर्यदग्रेजायन्ते द्वितीयंमौञ्जीबन्धनात् ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशस्तस्मादेते द्विजाःस्मृताः ॥ याज्ञवल्क्यः—तूष्णीमेताः क्रियाः स्त्रीणांविवाहस्तुसमन्त्रकः ॥ तूष्णींमन्त्ररहितं ॥ एताः क्रियानिषेकादिक्रियाः ॥ विवाहमात्रसंस्कारं शूद्रोपिलभतांसदा ॥ अतःस्त्रीशूद्रयोर्विवाहएववरः, उपनयनस्थानेविधानात् ॥ मनुः—वैवाहिकोविधिः स्त्रीणामौपनायनिकः स्मृतः । वाचस्पतिमिश्रादयस्तुत्रैवर्णिकपुरुषस्याप्याद्योविवाहसंस्कारएवेत्याहुः ॥ केचित्तुउपनयनान्ते विवाहसंस्कारमाहुः गर्भाधानादिन्यायस्तान् ॥ यद्यपिषोडशसंस्काराणांमध्ये गर्भाधानस्यैवप्राथम्यंबहुप्रमाणेषुदृश्यते ॥ तथापिगर्भाधानाद्युपनयनान्तसंस्कारास्त्रैवर्णिकस्यैवभवंति विवाहसंस्कारस्तुसर्वेषांचातुर्वर्ण्यस्याद्यात् श्रेष्ठत्वम ॥ सृष्ट्युत्पत्तावपिशतरूपा मन्वोर्विवाहएव प्रथममभूदतोनगर्भाधानाद्युपनयनान्तानां संस्काराणांप्राथम्यम । यतोदारसंग्रहंविनागर्भा-

नादिरसंभवात् गृह्यस्थालीपाकानां चासम्भवात् ॥ **पारस्कराचार्येणयजुः शारयोयानांगृह्यसूत्रे** विवाहएवपूर्वमुद्दिष्टः ॥ अतोमयापिअत्रकर्मकाण्डरत्नाकरग्रंथे षोडशसंस्कारादौ विवाहसंस्कार एवमंगृहीतः। सच विवाहो ऽष्टधाभवति ॥ **उक्तंचमनुना—** ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्त थासुरः। गान्धर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ **तल्लक्षणानि याज्ञवल्क्योक्तानि—** ब्राह्मोविवाहआहूय दीयतेशक्त्यलंकृता ॥ तज्जः पुनात्युभयतः पुरुषानेकविंशतिम् ॥ यज्ञस्थऋ- त्विजेदैव आदायार्षस्तुगोद्वयम् ॥ चतुर्दशःप्रथमजः पुनात्युत्तरजश्चषट् ॥ इत्युक्त्वाचरतां धर्मं सहयादीयतेर्थिने ॥ सकायः पावयेत्तज्जः षट्षड्वंश्यान्सहात्मना ॥ आसुरोद्रविणादानाद् गान्धर्वः समयान्मिथः। राक्षसोयुद्धहरणात्पैशाचः कन्यकाछलात् ॥ **आदौअनाश्रमीप्रायश्चि- त्तम्**—अनाश्रमीनतिष्ठेत दिनमेकमपिद्विजः ॥ आश्रमेणविनातिष्ठ न्प्रायश्चित्तीयतेयतः ॥ **उक्तञ्चमिताक्षरायाम्**—अनाश्रमीसम्वत्सरंप्राजापत्यंकृच्छ्रंचरित्वा आश्रममुपेयात, द्वितीये ऽतिकृच्छ्रम्, तृतीयेकृच्छ्रातिकृच्छ्रम् ॥ अतऊर्ध्वंचान्द्रायणम् ॥ **अथ विवाहावसरः**—गुरवेतु वरंदत्वा स्नायीततदनुज्ञया। वेदव्रतानिवापारंनीत्वाह्युभयमेववा ॥ **अविप्लुतब्रह्मचर्यो लक्षण्यांस्त्रियमुद्वहेत्**—अनन्यपूर्विकांकान्ता मसपिण्डांयवीयसीम् ॥ अरोगिणींभ्रातृमतीं मसमानार्षगोत्रजाम् ॥ समावर्त्तनानन्तरंविवाहावसरः। **आदौकुलपरीक्षाआश्वलायनसूत्रे**— कुलमग्रेपरीक्षेतयेमातृतः पितृतश्चेतियथोक्तं पुरस्तादिति। **गदाधरभाष्येयमः**—कुलंशीलं च वपुर्वयश्चवित्तंच विद्यावसनाथताच। एतान्गुणान्सप्तपरीक्ष्यदेयाकन्याबुधैः शेषमचिन्तनीयम् **मनुरपि**—महान्त्यपिसमृद्धानिगोऽजाऽविधनधान्यतः। स्त्रीसंवन्धेदशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत हीनक्रियंनिष्पुरुषं निश्छन्दोरोमशार्शसम्। क्षय्यामयाव्यपस्मारि श्वित्रिकुष्ठिकुलानिच। कुलानु- रूपाप्रजाः संभवंतीतिहारीतोक्तिः। **अथ कात्यायनोक्तवरदोषाः**—उन्मत्तः पतितः कुष्ठीषंढ- श्चैवस्वगोत्रजः। चक्षुःश्रोत्रविहीनश्च तथापस्मारदूषितः। वरदोषाः स्मृताश्चैतेकन्यादोषाः प्रकीर्तिताः। तत्रैवनारदोक्तिः—अपत्यार्थस्त्रियः सृष्टा स्त्रीक्षेत्रंवीजिनोनराः। क्षेत्रंवीजवतेदेयं नाऽवीजोक्षेत्रमर्हति। **कन्यागुणलक्षणान्याहमनुः**—अव्यङ्गाङ्गीं सौम्यनाम्नीं हंसवारणगामि- नीम्। तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम्। **अयोग्यकन्यालक्षणान्याह**—नोद्वहे- त्कपिलां कन्यांनाधिकाङ्गीं नरोगिणीम्, नालोमिकांनातिलोमांनवाचाटां नपिंगलाम्। पिंगलां कपुराक्षीम्। नर्क्षवृक्षनदीनाम्नीं नान्त्यपर्वतनामिकाम्। नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नींनच भीषणनामि- काम्। **मयच्च मापिंड्यलक्षणम्**—अरोगिणींभ्रातृमतीं ममानगोत्रार्षहीनांचममापिहीनाम्। पितुर्जनन्याश्च सपिंडतायामुत्थायरः पुंस्त्वपरीक्षितः सन्। **उक्तंचधर्मनीकायाम्**—पुंसः स्त्रियः शुभरतौरतौच रामन्ययां वैशारस्परतम्। सापिंड्यमाह किलकेचिदत्रैवपिण्डान्वयित्वं गलुदे-

वर्तेयथात्। पितृव्यमातुलसहोदर मातुलान्यादीनास्ति चेतदितिमाभवतानुवाच्यम्। अतोयतो भवति देवगणेवयमेषां स्त्रीणां तुपिण्डकरणेपतिना सहैक्यात्। सापिंड्यमेतदिह सप्तमपूरुषान्तं नोर्ध्वंभवेत्तदपिमातृकुले पितुश्च । पुत्रादिषट्स्वथच तातपितामहादि षट्स्वेव नापरि तथा हरिदत्तकस्तु ॥ कूटस्थमारभ्य वधूवरोर्वाचिदष्टमस्तात कुलं तदानीम् ॥ षष्ठीभवेन्मातृ कुले द्वितीया दिकां वधूम्मूलत उद्वहेत्सः ॥ नैतच्छिष्टा आद्रियन्ते ततो ऽत्र मूलात्षष्ठो वाष्टमो मूलषष्ठी ॥ मूलात्तद्वचाष्टमीं चोद्वहेत्सः पक्षः श्रेयान्नास्ति पूर्वो गरियान् ॥ मातृ बन्धुत्रयात्तात बन्धुत्रितयतः क्रमात् ॥ पञ्चमी सप्तमी कन्या न विवाह्या द्विजैः सदा ॥ **अथातो बन्धुत्रयनिरूपणम्**—मातुः पितृष्वसुः पुत्राः मातुर्मातृष्वसुः सुताः ॥ मातुर्मातुल पुत्राश्च विज्ञेया मातृबान्धवाः ॥ पितुः पितृ पितृष्वसु पुत्राः पितुर्मातृष्वसुः सुताः ॥ पितुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेयाः पितृबान्धवाः ॥ **याज्ञवल्क्यः**—पञ्चमात्सप्त मादूर्ध्वं मातृतः पितृतस्तथा मातृपक्षे पञ्चमा त्पितृपक्षे सप्तमादूर्ध्वं सापिंड्यं निवर्तते इति ॥ **कूटस्थमारभ्य गणनाकार्या—गदाधर भाष्ये**—वध्वावरस्य वातात कूटस्थाद्यदि सप्तमः ॥ पञ्चमी चेतयोर्माता तत्सापिंड्यनिवर्तते ॥ कूटस्थो मूलपुरुषोयतः संतानभेदः ॥ असमानार्षं गोत्रजां मृषिरिह मार्षम्। गोत्रप्रवर्तकस्य मुनेर्व्यावर्तकप्रवरइत्यर्थः । गोत्रं वंश परंपरा प्रसिद्धम् । स्वसमानं आर्षं गोत्रस्य तस्मा ज्जाता नभवतिताम्। यास्क वाधूल मौनमूकानां भिन्न गोत्राणामपि भार्गव वैतहव्यसावेतसेति प्रवरैक्य मस्ति तत्र विवाहो माभूदिति असमानार्षजा मित्युक्तम्। अगस्त्याष्टम सप्तर्ष्यपत्य मापत्यं साक्षात्परंपराजातं गोत्रम् जमदग्निर्भरद्वाजो विश्वामित्रात्रि गौतमाः। वशिष्ठ कश्यपा-गस्त्या मुनयो गोत्रकारिणः ॥ एतेषां यान्यपत्यानि तानि गोत्राणि मन्यते ॥ गोत्रकारिणो गोत्रप्रवर्तकाः । **तत्रबौधायनः**—गोत्राणान्तुसहस्त्राणि प्रयुतान्यर्बुदानिच । ऊनपञ्चाश देवैषां प्रवरा ऋषिदर्शनात् ॥ **यथा—**अथत्रिधाकाश्यप जातवर्गास्ते नैध्रुवा सांडिलरैभसंज्ञाः॥ *गोत्रैक्यतो न्योन्यमनन्वयाः स्युः कुर्वन्तु सर्वमनुप्रभातम्।* **नैध्रुवाणांत्रयः**—कश्यपावत्सार सशांडिल्येति। काश्यपावत्सार देवलेतिवा। काश्यप आवत्सार असितेतिवा। काश्यप आसित देवलेतिवा। द्वौ वा देवलासितेति। **रैभ्याणांत्रयः**-कश्यपावत्सरारैभ्येति नैध्रुवादि रैभ्यन्तानां सर्वे काश्यपानामविवाहः। एवं सर्वत्र बोध्यम् ॥ **प्रवरैक्य विशेषमाह बौधायन—**पञ्चानां त्रिषु सामान्याद विवाह स्त्रिषुद्वयोः। भृग्वंगिरोगणेष्वेव शेषेष्वे कोपि वारयेत.॥ विवाह मिति शेषः ॥ **अथ समानार्षजागोत्र विवाहे प्रायश्चितम्**—समान प्रवरां कन्या मेक गोत्रा मथापिवा ॥ *विवाहयति यो मूढस्तस्य वक्ष्यामि निष्कृतिम्* ॥ उत्सृज्यतां ततो भार्यां मातृवत्परिपालयेत. ॥ **इति शातातपस्मृतेः** ॥

समान प्रवरस्वरूपचबौधायनेनोक्तम्—एक एव ऋषिर्यावत्प्रवरेष्वनुवर्तते । तावत्समान गोत्रत्व मृते भृग्वङ्गिरोगणात् ॥ समानगोत्रत्वसमानप्रवरत्वामत्वर्थ ॥ **स्वगोत्रप्रवराज्ञानेनिर्णय** स्वगोत्रप्रवराज्ञानविधुराणांतथैवच । ब्राह्मणानामथाचार्य प्रवराणामिति स्मृति ॥ आचार्यगोत्रप्रवरानभिज्ञस्तुद्विज स्वयम् । दत्वात्मानतु कस्मैचित्तद्गोत्रप्रवरोभवेत् । यद्वा स्वगोत्रप्रवरविज्ञानरहित पुमान् । जमदग्निगोत्रप्रवरे स्वकार्यंहिसमाचरेत् । **अथचसापत्न मातृकुले सापिण्ड्यनिर्णय**—सापत्नमातामहकुले ऽप्यातिदेशिकात्सापिण्ड्यादविवाह । तथाचसुमन्तु—पितृपत्न्य सर्वामातरस्तद्भ्रातरोमातुलास्तद्भगिन्यो मातृष्वसारस्तद्दुहित रश्चभगिन्यस्तदपत्यानिभागिनेयानि । अन्यथासङ्करकारिण्य स्यु । अन्यथावदवचनवाचिकम् इति न्यायेनपरिगणितात्वातिदेशिक सापिण्ड्यम नतुपञ्चमसप्तमपर्यन्तमितिलक्षणया त्रिपुरुष सापिण्ड्य विवाहनिषेधायाश्रीयत इतिदिक् ॥ **अथदत्तकसापिण्ड्यम्**—सापिण्ड्यमुक्तखलुदत्त कस्यस्वतातवंशेपित्र्यमातृवंशे ॥ तत्तद्गुणपतक्तातमातृवंशेक्रमात्ससमपञ्चमात्तम् ॥ **विरुद्ध सम्बधोपिविवाहेवर्ज्य उक्तञ्चधर्मेनोकायाम्**—स्वाज्याविरुद्धापिच सर्वेयत्नात्सापत्नमातृ भागिनीतनयाचतस्या पितृव्यपत्निभगिनीतनयाच तस्या । **उक्तञ्चगृह्यपरिशिष्टे**—दम्पत्यो मिथ पितृमातृगाम्यविरुद्धसम्बन्धा यथ भार्यास्वसुर्दुहिताशालिस्यापुत्री । पितृव्यपत्नीस्वसा-स्रति । **केचित्तु** गुरोश्चशिष्य सम्यक्चकन्यकापुत्र्याख्या तथ ज्येष्ठसहोदरस्य ॥ भार्यास्वसारसिन्नसुता च कन्यागाय[illegible]कायाउपयेतुरन्न ॥ धमएवकन्यादिरताग्रताय स्नहेनकन्यादिकताग्रताय ॥ कन्यासुतपात्रिवदापि न्याय्याविरुद्धसम्बन्धवामदवदन्ति ॥ **अथच सापिण्ड्यविवरणम्**—वध्वा वरस्यवातात कूटस्थ्याद्यदिसप्तम । पञ्चमीचतयोर्माता तत्सापिण्ड्यन्निवर्तन । इति शाखवरग मातृशब्दात्स्वजननीमन्त्रवाचका ऽ पितु—तिस्र पूज्या पितुपक्षे तिस्रोमातामहस्य । इत्यत्र मातर पूज्या सर्वेशास्त्रविनिर्णयात् । इति मातामह्यादिष्वपिमातृशब्दबाधकात् पितामह्यादि साधारण ॥ तथाचकूटस्था-मातरिपञ्चम्याचतुर्थ्यांपितामह्यां तृतीयायांप्रपितामह्यां द्वितीयायां वृद्धप्रपितामह्यमपिचकूटस्थ सापिण्ड्यतानिवर्तते ॥ एवंगोत्राणिप्रवराश्च सक्षेपेणनिर्दिश्यएतेषां वंशपरम्परया अवान्तरभेदेनबहुकुलानिजातानि । तप्ततानिप्रवक्ष्य गोत्रप्रवरैरपिग्राम परकजातिभेदा गोत्रप्रवरयो गणचक्रयो परंपरागवधानि मन्त्रेन विवाहोभवति । तदुक्त वसिष्ठेन ।—यस्तुदेशानुगाणकुलमार्गेणचोद्वहेत् । निरस्य चा[illegible]र्य स्याद्देशाचैव प्र तीयते । यस्मिन्देशेयआचार पारम्पर्यक्रमागत । वर्णानांसान्तरालाना सदाचारउच्यते । **तत्र भृगु**—यस्मिन्देशेपुरग्रामेत्रैविद्येनगरेऽपिवा । यौयत्रविहितोधर्मस्तधर्मनविचालयेत् । **उक्तञ्च धर्मसिन्धौ**—उदवहे गप्तमात्तूर्ध्वं तदभावेनुसप्तमीम् । पञ्चमीतदभावेतु पितृपक्षेप्ययविधि

सप्तमी च तथापञ्चमीपंचमीच तथैव । एवमुद्वाहयेत्कन्यां नरःप शाकटायन । तृतीयांना तुर्य्यापञ्चयोरुभयोरपि । विवाहयन्मनु प्राहपाराशर्य्योयमाङ्गिरा । यत्तुदेशानुरूपणतिकुला चारादाचरन्तितेषां सापिण्ड्यसकाचेन विवाहोनदोषायभवतीति पूर्णमम्मति । येनास्यपितरो- यातायनयाता पितामहा । येनयाया सतां मार्गतेनगच्छमदुष्यति । **एवं दाक्षिणात्येषु मातुलकन्या परिणयनेऽपि**—मातुलस्यसुतामूढ्वा मातृगोत्रांतथैवच । समानप्रवरांचैव त्यक्त्वा चान्द्रायणंचरेत । गोत्रान्मातु सपिण्डाच्च विवाहोगोवधस्तथा । **उक्तं च मन्त्रलिङ्गे**- तृप्तांजहुमातुलस्यैवयापाभागस्ते पितृष्वसर्यीवपामिव । १ यदिमातुलकन्यापरिणयनस्य निषेधत्वादपियपायुक्त मातुलकन्यापरिणाया नुगतस्तेषां दोषायनभवति । परपरारहितानातु दोषाय भवति । **अथवाग्दानार्थं कन्यादातारः**——पिता पितामहो भ्राता सकुल्याजननी तथा । कन्याप्रद पूर्वनाशेप्रकृतिस्थ पर पर । अप्रयच्छ न्समाप्नोति भ्रूणहत्यामृतावृतौ । गम्यत्वभावेदातृणां कन्याकुर्यात्स्वयंवरम् । **नारदोऽपि**— तस्यामप्रकृतिस्थायां कन्यादद्यु स्वजातय । यदातुनैव कश्चित्साकन्या राजानमाव्रजेत् । गन्धर्वादिष्वविपतिभावान पश्चाद्धोमादि सप्तपदीपर्यन्तकार्यम् । गांधर्वासुरपैशाचा विवाहा राक्षसश्च । पूर्वपरिग्रहस्तेषु पश्चाद्धामा विधीयते । **होमाद्यन्तावेवरान्तराय देयासेतिवौधा यनम्माह**—बलादपहृता कन्यामन्त्रैर्यदिन संस्कृता । अन्यस्मैविधिवद्देया यथाकन्यातथैवसा । **इति गदाधरभाष्य परिशिष्टात् अथवाकदानविधि** विवाहादि कियाकाल तत्क्रिया सिद्धिकारणम् य प्रयन्त्रति वमन सोऽश्वमधफललभेत । **इति चोक्त्वा**—अव्यङ्ग पतित पल बदशदोषविवर्जित । इमाक था प्रदास्यामि देवाग्निद्विजसन्निधौ । वाचादत्तामयाकन्या पुत्रार्थं स्वीकृतात्वया । कन्यावलोकनविधे निश्चितत्वमुखीभव । वरपितानब्रूयात् । वाचादत्ता॥ त्वया कन्या पुत्रार्थं स्वीकृतामया । वरावलोकनविधौ निश्चितत्व सुखीभव । **अथच वाग्दनो त्तर वरमरणे विशेष**—अद्भिर्वाचा च दत्ताया म्रियेतोर्ध्वंवरोयदि । नचमन्त्रोपनीतास्या त्कुमारीपितुरेवासा । **वशिष्ठ**—कुलशीलविहीनस्य षण्डादिपतितस्य च । अपस्मारि विधर्मस्य रोगिणां वषधारिणाम् । दत्तामपिहरेत्कन्यास गोत्रोढातथैवच । **अथातो विवाहार्थं मधुपर्क सूत्रव्याख्या**—(**षड्घ्या भवति १**) षट्पुरुषा अर्घ्याभवन्ति अर्घार्हाभवन्ती तिशेष । पूजनीयाइत्यर्थ । **क त**—(**आचार्यं ऋत्विग्वैवाह्यो राजाप्रिय स्नातक इति २**) **तानाह**—आचार्य उपनयनपूर्वकवेदाध्यापक । ऋत्विग श्रौतस्मार्तादिकर्मार्थंवृतो ब्रह्मादि । वैवाह्याजामाता । राजाअभिषेकादिगुणवान् प्रजापालनेऽधिकृत , क्षत्रिय. प्रिय उत्कृष्टज्ञा तिर्वा समानजाति गम्भारा । स्नातको ब्रह्मचर्य्या समावृत । आचार्यस्यैवार्घ्यंनान्यस्य । उक्तं

च मनुना । संप्रतीतं स्वधर्मेण प्रदायदरं पितुः स्त्रियं गन्धमाल्येनमन्येत्प्रथमं गवा । (**प्रति-संवत्सरानर्हयेयुः ३**) प्रतिसंवत्सरागतानेतानाचार्यादीन अर्घ्यपूजनेनपुनर्वा । (**यक्ष्यमाणास्त्वृत्विजः ४**) यक्ष्यमाणायस्तरिष्यन्तोयजमानाः, प्रतिराजोयाजकान्पुनः अर्हयेयुः इत्यनुषंगोनप्रति संवत्सरनियमः । (**आसनमाहार्याह साधुभवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तमिति ५**) आगतेवाद्दणादिद्वारमयंपीठादि आहार्यअनुचरेणानाय्य आहप्रोतिअर्चक किमिति । एवं । कथंभवान्पूज्य. साधुगुणंयथाभवति तथास्तानिष्ठु पूजयिष्यामो भवन्तमर्चनीयंयावत, अर्चयिष्याम इति बहुवचनं सपरिवारापेक्षम यद्वा अर्हमागच्छति गर्ने गृहाद्य ये तत्र चेष्टयन्ति इति सूत्रं ॥ (**आहरन्तिविष्टरं पाद्य पाद्यार्थ मुदकमर्घमाचमनीयं मधुपर्क दधिमधु घृतमपिहितं का ६ स्यं काः ६ स्ये ६)**— आहरन्ति आनयन्ति यजमान पुरुषाः विष्टरादि मधुपर्क पर्यन्तान्यर्हणो पकरणानि ॥ तत्र विष्टरं पञ्चविंशति दर्भरचणमयं साग्रमनन्तं कूर्चम् ॥ पंच विंशति दर्भाणा वेणयग्रे ग्रंथिभूपिता ॥ विष्टरं सर्व यज्ञेषु लक्षणं परिकीर्तिताः । इति हरिहर. ॥ प्रादेश मात्रं त्रिवृत्तं कौशिना वारानिर्मित मिति रेणुकः ॥ पंचाशद्भिर्भवेद् ब्रह्मा तदर्धेनतु विष्टरः ॥ इति परि शिष्टात ॥ पाद्यं पद्भ्यामाक्रमणीय मुक्तलक्षणं द्वितीयविष्टरम् ॥ पादार्थमुदकं पादप्रक्षालनार्थं ताम्रादिपात्रस्थंजलंमुखोष्णम् ॥ अर्घगन्धपुष्पाक्षतकुशतिलशुभ्र सर्षपदधिदूर्वान्वितंसुवर्णादिपात्रस्थं तदभावेशंखस्थवाजलम् । आचमनीयमाचमनार्थं कमण्डलु सम्भृतंजलम् । मधुपर्कंदधिमधुघृतंकांस्यपात्रेकृतम् । अपरेणकांस्यपात्रेणाच्छादितम् । मधुपर्कंदध्यलाभे पयोजलंवाप्रतिनिधिर्मध्वलाभेघृतं गुडोवेत्याश्वलायन. । (**अन्य स्त्रिस्त्रिः प्राह विष्टरादीनि ७**) अन्यो ऽ चैकादपरः । विष्टरो विष्टरो विष्टरः । इत्येवमेकैकान्त्रि स्त्रिस्त्रीस्त्री न्वारान्ब्रूयात । विष्टरादीनिविष्टरप्रभृतीनिपद्यपाद्यार्थोदकार्घाचमनीयमधुपर्कान् ॥ (**विष्टरंप्रति गृह्णाति ८**) अभ्यर्हमुखेन यजमानेनतिष्ठतादत्तं आगन्तापरिचमेप्राङ्मुखस्तिष्ठन्नर्घ्यः पूर्वोक्त लक्षणंविष्टरंतूष्णीं पाणिभ्यामुदगग्रमादत्ते । (**वर्ष्मोऽस्मिसमानाना मुद्यतामिवसूर्य्यः । इमंतमभितिष्ठामियोमाकश्चाभिदासति । इत्येनमभ्युपविशति ९**) वर्ष्मोऽस्मिइति मन्त्रान्तेएनंविष्टरमुदगग्रमासनं निधायाभ्युपविशति ॥ (**पादयोरन्यं विष्टरमासीनाय १०**) आसीनायार्घ्यायान्यं विष्टरंयजमान. पूर्ववद्ददाति, सचतंपूर्ववत्प्रतिगृह्यप्रक्षालितयो पादयोरध-स्ताद्वर्ष्मो ऽ स्मीत्यनेनमन्त्रेणनिदधाति ॥ (**सव्यंपादंप्रक्षाल्यदक्षिणं प्रक्षालयति ११**) ततो ऽ न्येनपाद्यमितित्रिरुक्तोयजमानार्पित पाद्योदकमादाय वामंचरणं प्रक्षाल्यइतरं प्र-प्रक्षालयति, क्षत्रियादिरर्घ्यः ॥ (**ब्राह्मणश्चेद्दक्षिणं प्रथमम् १२**) यदि ब्राह्मणोऽर्घ्यः॰

स्यात्तदा प्रथमं दक्षिणं प्रक्षाल्य वामं प्रक्षालयति ॥ (**विराजोदोहोऽसि विराजो दोहो मशीय मयि पाद्यायै विराजो दोह इति १३**) विराजो दोहोसि इत्यावृतेन मंत्रेण ॥ (**अर्घं पति गृह्णाति, आपस्थयुष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानिति १४**) ततोऽर्घ्य इत्येतत्त्रिरुक्ते यजमानदत्तमर्घम् । आपस्थयुष्माभिरित्यनेन मंत्रेणप्रतिगृह्णाति । (**निनयन्न-भिर्मंत्रयतेसमुद्रंवः प्रहिणोमि स्वायोनिमभिगच्छत । अरिष्टाअस्माकंविरामा परोसेचिमत्पय इति । १५**) प्रतिगृहीतमर्घं शिरसाभिवन्द्यनिनयन्भूमौ प्रवाहयन् अभि-मंत्रयते समुद्रंवः इति मंत्रेण। अभिमंत्रणं अनामिकाग्रेणस्पर्शनं अवलोकनंवा ॥ (**आचामत्या मागन्यशसा स ᳪ सृजवर्चसा। तंमाकुरुप्रियंप्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनू-नामिति । १६**) तत्त आचमनीयमिति त्रिरन्योक्ते यजमानेनदत्तमाचमनीयं प्रतिगृह्य, आमागन्यशसा इति मंत्रेणाचामतिसकृत् प्राश्नातिजलम् । ततः स्मार्ताचमनंकरोति । एवंस-र्वत्र (**मित्रस्यत्वा इति मधुपर्कं प्रतीक्षते १७ ।**) ततोमधुपर्क इति त्रिरन्येनोक्ते यजमान हस्तगतमुद्घाटितंमधुपर्कं मित्रस्यत्वेति मंत्रेणप्रतीक्षतेपश्यति। (**देवस्यत्वेति प्रतिगृह्णाति १८**) देवस्यत्वा इति मंत्रेण यजमानदत्तं मधुपर्कं दक्षिणहस्तेन प्रतिगृह्णाति । (**सव्ये पाणौकृत्वा दक्षिणस्यानामिकयात्रिः प्रयौतिनमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तमिति । १९**) तंमधुपर्कं वामहस्ते निधायदक्षिणस्यपाणेः अनामिकाङ्गुल्या त्रिवारमालोडयति । नमः । श्यावास्य इति मंत्रेण । (**अनामिकाङ्गुष्ठेन च त्रिर्निरुक्ष-यति २०**) अनामिका च अङ्गुष्ठश्च इत्यनमिकाङ्गुष्ठौ, अनयोः समाहरः अनामिकाङ्-गुष्ठेनत्रिवार निरुक्षयति पात्राद्बहिर्निर्गमयति प्रक्षिपति चकारात्प्रतिसंयवनंनिरुक्षणम् ॥ (**तस्यत्रिः प्राश्नाति यन्मधुनोमधव्यंपरम ᳪ रूपमन्नाद्यम् । तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेणरूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानीति । २१**) तस्यमधुपर्कस्य एकदेशमा-दाय ''यन्मधुनोमधव्यम्,, इत्यादिनामंत्रेण सकृत्प्राश्य पुनरनेनैव मंत्रेणउच्छिष्ट एवं द्वितीयं प्राश्यतद्वन्मन्त्रं च्छिष्टं तृतीयप्राशनानि । उच्छिष्टस्यैव मंत्रोच्चारणम्—(ताम्बूलेक्षुफलेचैव भुक्तस्नेहानुलेपने मधुपर्केच सोमेच नोच्छिष्ट मनुर मब्रीत् । (**मधुमतीभिर्वा प्रत्यृचम् ।२२**) मधुवाता इत्यादि तिसृभि ऋग्भिः प्रत्यृचं प्रतिमंत्रंवा पूर्ववत्त्रिः प्राश्नाति ॥ (**पुत्रायान्ते वासिनेवोत्तरत आसीनायोच्छिष्टंदद्यात् २३ ।**) मधुपर्कस्य शेषः प्रतिपत्तिमाह—पुत्राय सूनवेअन्तेवासिने उपनयनप्रभृति विद्यार्थित्वेन आचार्य्यकुलवासिने शिष्यायवाकर्थं भूतायउत्तरत आसीनायउच्छिष्टं प्राशितशेषंमधुपर्कंप्रयच्छेत् । (**सर्वंवा प्राश्नीयात् । २४ ।**) अथवासर्वं भक्षयेत्,। (**प्राग्वासंचरे निनयेत् । २५**) यद्वाप्राक्पूर्वस्यांदिशि असंचरे जनसंचारवर्जिते

देशैत्यजेत्। अत्र पूर्वापूर्वासंभवे उत्तरोत्तरां प्रतिपत्तिं कुर्यात। **आचम्य प्राणान्त्संमृशति 'वाङ्मम आस्येनसोः प्राणोऽक्ष्णोश्चक्षुः कर्णयोः श्रोत्रं बाह्वोर्बलमूर्वोरोजोरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सहेति २६।)** आचम्यप्राणानिन्द्रियाणि संमृशतिसजलमालभते। तद्यथा वाङ्मम आस्ये इति मुखंकराभ्याम्। नसोर्मेप्राण स्तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां युगपच्चक्षुषी। कर्णयोर्मेश्रोत्रमस्तु बाह्वोर्मे बलमस्तु,ऊर्वोर्म ओजोऽस्तु, अरिष्टानिमेऽङ्गानि, तनूस्तन्वामे सहसन्तु, इति शिरः प्रभृतीनि पादान्तानि सर्वाण्यंगानि उभाभ्यां हस्ताभ्यामालभते **अथ गवालंभनम् आचान्तोदकाय शासमादाय गौरितित्रिः प्राह २७)** आचान्तमुदकंयेनस आचान्तोदक स्तस्मैऽर्ध्याय शासंखड्गं गृहीत्वा यजमानः—गौर्गौर्गौः आलभ्यतामिति प्राह ब्रवीति। **(ततोऽर्घ्यः प्रत्याह माता रुद्राणां दुहिता वसूना ॐ स्वसादित्यानां ममृतस्य नाभिः। प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागमनागामदितिं वधिष्ट। ममचामुष्यच पाप्मान ॐ हनोमीति यद्यालभेत ॥ २८ ॥)** ततोऽर्घ्यः—माता रुद्राणा मित्यादि वधिष्टेत्यन्तं मंत्रं पठित्वा, मम चामुक शर्म्मणो यजमानस्यच पाप्मानं हनोमीति पठिति यदि गामालभेत॥ **(अथ यद्युत्सिसृक्षेन्मम चामुष्यच पाप्माहत, ॐ उत्सृजत तृणान्यत्त्विति ब्रूयात् ॥ २९ ॥)** अथवा अर्घ्यो यदि गामुत्स्रष्टु मिच्छेत्। तदा मम चामुक शर्मणो यजमानस्यच पाप्माहत'। ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु इति ब्रूयात इत्यन्त मुच्चैः पठेत्॥ **(नत्वेवामा ॐ सोर्धः स्यात् ॥ ३० ॥)** तु शब्द पक्षव्यावृत्तौ। अर्धः अमांस परवालम्भवर्जितो नैवभवेत्। अत्र यद्यालभेत—यद्युत्सिसृक्षेत् इत्यनेन सूत्रेण गवालंभस्य विकल्पं विधाय, नत्वेवामा ॐ सह', इत्यनेन गवालंभनमर्घ पात्रे नियमेन विधत्ते, तथाच सति द्वयोः स्मृत्यो विरोधे अप्रामाण्यं प्राप्ते व्यवस्था माह—**(अधियज्ञमधि विवाहं कुरुतेत्येव ब्रूयात् ॥ ३१ ॥)** अधियज्ञे यज्ञे अधि विवाहं विवाहे। कुरुत विदधत गवालंभं पाप्मानं हनो मीत्यस्यान्ते इत्येवं वदेत्, अन्यत्र पाप्माहत इति पाप्मान ॐ हनोमि, इतिवा विकल्पो नान्यत्रेतिभाव। यद्यप्येवं मधुपर्कं गवालम्भ आचार्येणोक्त स्तथापि अस्वर्ग्य-त्वाल्लोक विद्विष्टत्वाच कलौ न विधेयः। अस्वर्ग्यं लोकविद्विष्टं धर्ममप्याचरेन्नतु।' इति याज्ञ-वल्क्यादि स्मृतिषु निषेध दर्शनात्॥ इति हरिहर.॥ यज्ञाधानं गवालंभं सन्यासं पलपैतृकम्। देवराच्च सुतोत्पत्तिः कलौ पंच विवर्जयेत् ॥ **इति पराशर स्मृतेः॥** अतश्च गवालंभस्य कलौ निषिद्धत्वा दुत्सर्गस्यच यज्ञ विवाहयो रप्राप्तत्वाद् गौरित्युच्चारणादि यज्ञ विवाहयो कलौ न प्रवर्तते। यज्ञ विवाहयो रन्यत्र उत्सर्ग पक्ष एव कलौ इति गदाधरः। **(यद्यप्य सकृत्सं वत्सरस्य सोमेन यजते कृतार्घ्या एवैनं याजयेयुर्ना कृतार्घ्या इति श्रुतेः ॥ ३२ ॥)**

यद्यपि असकृत्तु पुनः संवत्सरस्य संवत्सरे सोमेन ज्योतिष्टोमादिना यजेत । तथापि एनं सोमयाजिनं कृतमधुपर्कं कृतोऽर्धं यिपाते कृतार्ध्याणुवंगन्त । याजयेयुर्यज्ञकारयेयुः नअकृतार्घ्याः याजयेयुरिति श्रुतिर्नात ।

इति मधुपर्क सूत्र व्याख्या समाप्ता ।

अथ विवाहसूत्रव्याख्या ।

अथ विवाहसूत्रव्याख्या (**चत्वारः पाकयज्ञाः हुतोऽहुतः प्रहुत प्राशित इति ॥१॥**) पच्यतेऽपच्यते ओदनादिक मस्मिन्निति पाको गृह्याग्नि स्तस्मिन्पाके नान्यत्रेतिभाव पाकेयज्ञा पाकयज्ञाः । यत —वैवाहिकेऽग्नौकुर्वीत गार्ह्यकर्म यथाविधि । पंचयज्ञविधानं च पक्तिं चान्वाहिकीं गृही । इति मनुनादैनंदिनपाको गृह्येऽग्नौ समर्यते । तेचत्वारश्चतुर्विधाभवन्तित्यथम् —हुतोऽहुत प्रहुत प्राशित इति ॥ तत्रहुत होममात्रम्, यथासायंप्रातर्होमः । अहुत होमविरहितंकर्म, यथा प्रस्तरारोहणम्, प्रहुत यत्रहोमोबलिकर्म भक्षणंच, यथा पक्षादिकर्म । प्राशित यत्रप्राशनमात्रम्, नहोमोबलि, यथा—गवांसांगवांपयसिपायसश्रपणानन्तरं ब्राह्मण भोजनम्, इति चतुर्विधा ॥ (**पंचस्वहिः शालायां विवाहे चूडाकरणे उपनयने केशान्ते सीमन्तोन्नयने इति ।२।**) पंचसुसंस्कारकर्मसु बहिः शालायागृहाद्बहि र्मंडपभवति तस्यांकर्म भवति । यथा विवाहे चूडाकरणेउपनयने व्रतबंधे केशान्ते गोदानकर्मणि सीमन्तोन्नयने गर्भसंस्कारे । एतेषुपंचसुबहिः शालायामनुष्ठानम् । अन्यत्रगृहान्तरे सुखशालायामेव । **मंडपश्च मुहूर्तचिन्तामणौ**—हस्तैर्न्यायवेदहस्तैः समन्तात्तुल्यावेदी सद्मनोवामभागे । युग्मेघस्रेपंचहीनेच पंचसप्ताहे स्यान्मंडपोद्वासनंसत । **विवाहपटले**—मंगलेषुच सर्वेषुमंडपो गृहवामत कार्यः षोडशहस्तोवा द्विषट्हस्तोदशापि वा । स्तम्भैश्चतुर्भिरेवात्रवेदी मध्ये प्रतिष्ठिता । शोभिता चित्रिताकुम्भैरासमन्ताच्चतुर्दिशम् । द्वारविद्धावली विद्धाकूपवृक्षव्यधास्तथा न कार्याविद्धिरात्मनैः. शुभमंगलकर्मसु । व्रतबन्धे संस्कार्यत्वाद्वटुकहस्तेनवेदीनिर्मितिः । विवाहेतु कन्यागृहे एवपूर्व वरपूजनस्योक्तत्वाद् गृहस्थाश्रमस्य तदायत्तत्वाच्च कन्याहस्तेनैववेदीनिर्मितिः । **उक्तंच वशिष्ठेन**—षोडश रत्निकाकुर्याच्चतुर्द्वारोपशोभिताम् । मडपंतोरणैर्युक्तं तत्रवेदींप्रकल्पयेत् । अष्टहस्तंच रचयेन्मंडपंवा द्विषट्करम् । उत्तम. षोडशहस्तो मध्यमोद्वादशहस्तो ऽधमोऽष्टहस्त **उक्तंच नारदेन**—समां तथा चतुर्दिक्षुसोपाने रतिशोभिताम् । प्रागुदक्प्रवणां रम्भास्तंभहंसशुकादिभि । एवंविधामारुरुहेन्मिथुनं साग्निवेदिकाम् । वेदीपृष्ठेमुखिन्ते च चतुर्विंशाङ्गुलयुता । वेदीवैवाहिकी कार्या चतुरंगुलमुन्नता ।

ताशत्रोनैव लिप्येतनवंध्याविधवेस्त्रियौ । पतिपुत्रवती नारीमेवतामुपलेपयेत । **मंडप प्रतिष्ठाविधिः रेणुकारिकायाम्**—मंडपस्थापनं कुर्यात्स्वस्तिवाचनपूर्वकम् । चतुरो ब्राह्मणां स्तत्र पूजयेद्दक्षिणादिभि. । नंदिनीनलिनीमैत्राउमा च पशुवर्धिनी । मंडपस्थापनेयोज्याः स्तम्भेमात्रा. प्रकीर्तिताः । विवाहोत्तरं मंडपोद्वासनं देवकोत्थापनं चाहनारदः—समंतुदिवसं कुर्यादेवकोत्थापनंबुधः । षष्ठंचविषमं नेष्टमुक्त्वा पंचमसप्तमौ । समेषुषष्ठंविषमेषुच पंचम सप्तमव्यतिरिक्तं दिनं नेष्ठमित्यर्थः । (**उपलिप्त उद्धतावोक्षितेऽग्निमुपसमाधाय** ।२। उपलिप्ते गोमयोदकेन, उद्धतेस्फ्येनउल्लिखितेनेति तिसृभिः रेखाभिः अवोक्षिते उदकेनाभ्युक्षिते वहि. शालागृहयो रन्यतरस्मिन्प्रदेशे अग्निमुपसमाधाय । अग्निलौकिकमावसथ्यं वा उपसमाधाय स्थापयित्वा । अयंच लेपनादि विधिर्नापूर्व. अपितुपरिसमुह्य (पा० गृ० कां० १ कं० १ सू०२) इत्यादि पूर्वोक्तस्यैवानुवाद' तत श्चानुक्तमपि परिसमूहनमुद्धरणञ्च सर्वत्रभवति । (**एष एव विधि र्यत्रक्वचिद्धोम.**) (पा० गृ० कां० १ कं० १ सू० ४) इति वचनात् । (**निर्मन्थ्यमेके विवाहे** ।४। विवाह इति दारपरिग्रह कर्मणोनामधेयम् । एकेआचार्याः विवाहे पाणिग्रहणे निर्मन्थ्यम् आरणेयाग्नि वैवाहिकहोमाधिकरणमिच्छन्ति, अन्येलौकिकमिच्छन्ति । (**उदगयनआपूर्यमाण पक्षेपुण्याहे** ।५।) (**कुमार्याः पाणिंगृह्णीयात्** ।६। उदगयनेमकरादिराशिषट्कस्थितेरवौ आपूर्यमाणपक्षे शुक्लपुण्याहे ज्योतिः शास्त्रोक्तविष्ट्यादिदोषरहितेकुमार्या अनन्यपूर्विकायाः कन्यायाः अक्षतयोन्या विवाहात्पूर्व अधर्षितायाः । ननु विवाहोत्तर पतिमरणापेक्षया' अक्षतयोन्याः विधवाया । वक्ष्यमाणविधिना विवाहंकुर्यात् । विंशतिप्रसूतास्त्रीव्युदासार्थं कुमारीग्रहणं स्मर्यतेहि तस्या पुनर्विवाह. पत्यासह भवतीति नत्वन्येनपुरुषेण सह पुनर्विवाह. । उदगयन आपूर्यमाणपक्षे पुण्याहे इत्युक्तत्वात्कालप्रसंगाच्च स्मृत्यंतरोक्त संवत्सरादि कन्या विवाहकालोऽभिहस्यते **तत्र ज्योतिर्निबन्धे**—षडब्दमध्ये नोद्वाह्या कन्यावर्षद्वयंयत. । सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गन्धर्वश्च तथानल । तथायम—सप्तस वत्सरादूर्ध्वविवाह. सार्ववर्णिक. । कन्याया शस्यतेराजन्नान्यथाधर्मगर्हितः । तत्रयुग्मायुग्मवर्षविचारः **राजमार्तण्डे**—अयुग्मेदुर्भगानारी युग्मेतु विधवा भवेत् । तस्माद् गर्भान्विते युग्मे विवाहेसा पतिव्रता । मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मेऽपिमासत्रयमेवयावत् । विवाहशुद्धिं प्रवदन्तिसन्तो वात्स्यादय स्त्री जनिजन्यमासात् । **कन्याविवाहकालमाह**—अष्टवर्षाभवेद्गौरी नववर्षातुरोहिणी । दशवर्षाभवेत्कन्या अत ऊर्ध्वंरजस्वला । दशमेनाग्निका वा स्याद्द्वादशे वृषलीस्मृता । अपरावृषलीज्ञेया कुमारीयारजस्वला । प्राप्तेतु द्वादशेवर्षेय. कन्यांनप्रयच्छति । मासिमासिरजस्तस्याः पितापिबतिशोणितम् । तस्मादुद्वाहयेत्कन्यां यावन्नर्तुमतीभवेत् । प्रदानं

प्राप्तोरस्तस्या ऊर्ध्वकुर्वन्सदाभार। धर्मैकगुणाभार्यो सुद्धवंश निर्गुण स्वयम् त्रिंशद्वर्षो
दश वर्षाञ्च भार्याविन्दतिनाग्निकाम्। ज्येष्ठोभ्राता पितामाता दृष्ट्वाकन्यां रजस्वलाम्। त्रयस्तेय
त्रयस्तेनरकयान्ति स्वयमित्यब्रवीयम यस्तांविवाहयत्कन्यां ब्राह्मणो मदमोहित असंभाष्यो
ह्यपाङ्क्तेयोवृषलीपति वृषली सग्रहीतायो, ब्राह्मणोमदमोहित सततसूतकतस्य ब्रह्महत्यादिने दिने
पितुर्गृहेतुयाकन्यारज पश्यत्यसंस्कृता। भ्रूणहत्यापितुस्तस्या साकन्यावृषलीस्मृता दद्याद्
गुणवतेकन्यां नग्निकां ब्रह्मचारिणीम्। अपिवा गुणहीनाय नोपरुन्ध्याद्रजस्वलाम्।
ब्रुभोनराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितोविवाह ॥ वरकन्याजन्मराशौ त्रिकोणायद्विसप्तग। श्रेष्ठ
गुरु खषडायेपूजयान्यत्रनिन्दित ॥ यदाहगुरु —क्षीणगुरुबलनैव विवाह शोभनस्मृत
परस्यार्कबलप्राप्येन्दवन्तुभयोरपि ॥ देवल —नष्टा प्रजाधनवतीविधवाकुशीला, पुत्रान्विता।
हृतधवासुभगाविपुत्रा। स्वामिप्रियाविगतपुत्रधवाधनाढ्या भवरसुरगुरौक्रमशोभिनन्म ॥ गर्ग —
जन्मत्रिदशमारिस्थ पूजयाशुभतोगुरु। विवाहेऽथचतुर्थाष्टद्वादशस्थोमृतिप्रद ॥ आत्रयाप-
याद्—सर्वत्रापिशुभदद्याद् द्वादशाब्दात्परगुरु। पक्षषष्ठाब्दयोरेव शुभगोचरतामता ॥
रजस्वलांप्रतिविशेषमाह—रजस्वलया कन्याया गुरुशुद्धिनचिन्तयेत्। अष्टमेऽपिप्रश
स्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात् ॥ अर्कगुर्वविलग्नेभ्यो रोहिण्यर्कबलास्मृता। कन्याचन्द्रबलाप्राप्ता
वृषलीलग्नतोबला। वृषलीरजोरतोकन्या ॥ बृहस्पति —स्वचापकुलीरस्थो जीवो ऽप्य
शुभगोचर। अतिशोभनतांदद्याद्विवाहोपनयादिषु ॥ अथ गुर्वादित्यादिफलमाह—गुर्वा
दित्येव्यतीपात वक्रातीचारगेगुरौ। नष्टेशशिनिशुक्रेवा बालवृद्धेथवागुरौ ॥ पौषेचत्रे ऽथवर्षा
सुशरद्यधिकमासके। वसूदगमनेरवौ ऽर्क सिंहस्थ ऽमरमन्त्रिणि ॥ विवाहव्रतयात्रादिपुनहर्म्य
गृहादिकम्। चौरविद्यापविद्याश्चयत्नत परिवर्जयेत् ॥ लल्ल —अतिचारगतोजीवस्तराशिनति
चेत्पुन। लुप्तसम्वत्सरोनेय सर्वकर्मबहिष्कृत ॥ मुहूर्तचिन्तामणौ— गोचाक्यकुम्भेतरगोऽति
चारगो नोपूर्वराशिंगुरुरेतियर्हित। तदाविलुप्ताब्दइहातिनिन्दित शुभेषुरेवासुरनिम्नगान्तरे ॥
अतिचारगतेगुरौतुवर्ज्यादीन्याहवशिष्ठ —अतिचारगतेजीववर्जयेत्तदनन्तरम्। विवाहा-
दिषुकार्येषु अष्टाविंशतिवासरान्। अथसिंहमकरस्थगुरुनिर्णय —मुहूर्तचिन्तामणौ—
सिंहेगुरौसिंहलवेविवाहोनेष्ट० ॥ मघादि० ॥ मघेऽर्कसद० ॥ रेवापूर्व० ॥ उक्तंचज्योतिर्नि-
बन्धे राजमार्तण्डेपिच—सिंहराशौतुसिंहांशेयदाभवतिवाक्पति। सर्वदेशेष्वयत्याज्यो दम्पत्यो
निधनप्रद ॥ विशेषमाहवशिष्ठ —सिंहेसिंहांशगेजीव कलिंगेगौडगुर्जरे। कालमृत्युरयंयोगो
दम्पत्योर्निधनप्रद ॥ देशविभागमाहवशिष्ठ —विवाहोदक्षिणेकूले गौतम्यानेतरत्रतु। भागी
रथ्युत्तरेकूले गौतम्यादक्षिणेतथा ॥ विवाहोव्रतबन्ध सिंहस्थेज्यनदुष्यति। मृगेन्द्रसंस्थिते

जीवे मध्यदेशेकरग्रहः ॥ मृत्युयोगोमृत्युदः स्याद्दंपत्योः पञ्चवर्षतः ॥ **अत्रभागीरथीगौतम्योर्मध्यप्रदेशे, ज्योतिर्निबन्धे**—सिंहगतेसुरमन्त्रिणिकन्या मेषगतेतपनेपरिणीता । भूपणरत्नसुताचसुशीला, सत्यवती,सुतकीर्तिमर्मता ॥ **मकरस्थगुरुनिर्णयः**—तदुक्तंतल्लेन—नर्मदापूर्वभागे तुशोणस्योत्तरदक्षिणे । गण्डक्या.पश्चिमेभागे मकरस्थोनदोषभाक् ॥ **अर्थादन्यदेशेषु निषिद्धः ॥ उक्तञ्चदैवज्ञमनोहरे**—मागधेगौड़देशेच सिन्धुदेशेचकोंकणे । व्रतंचूडाविवाहंच वर्जयेन्मकरेगुरौ ॥ **व्यवहारचण्डेश्वरेतुविशेषः**—नीचराशिगतोजीवः प्रशस्तःसर्वकर्मसु । नीचांशकगतस्त्याज्यो यस्मादंशेषुनीचता ॥ **वामनपुराणे**—वापीकूपतडागादिनिषिद्धं सिंहगे गुरौ । मकरस्थे ऽपितत्कार्यंनदोषः काललोपतः ॥ काललोपोकालनिषेधः सङ्कलास्ति, निषेधवाक्यस्यदेशपरत्वादंशपरत्वाच्चेतिभावः । सर्वत्रगुरुबलाभावेशौनकोक्ता: शान्तिःकार्या, साचमया प्रयोगेऽन्वेष्टव्या, दानशान्तिपरिशिष्टेद्रष्टव्या ॥ **अथविवाहमासाःमुहूर्तचिन्तामणौ**—मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगेमिथुनगे ऽपिरवौत्रिलवेशुचेः । अलिमृगाजगतेकरपीडनंभवतिकार्तिकपौषमधुष्वपि ॥ मिथुनेस्थितेसूर्ये ऽपिशुचेराषाढस्यत्रिलवेतत्रितीयांशे आषाढशुक्लप्रतिपदारभ्य दशमीपर्यन्तंकरपीडनंविवाहोभवति । **तदुक्तंकेशवार्केण**—प्राय:सौरंमानमिष्टंविवाहे तत्किंचान्द्रमानमाहुर्भल्लेन । तस्मात्सम्यक्तत्फलंसिस्तदैवये सौरोमासःकेवलःकिंचिदून: ॥ कश्यपादिभि:सौराएवमासा:प्रोक्ता: तेषांचप्राशस्त्यम्विवाहादौस्मृत:सौरोयज्ञादौसावनोमत: । **नारदः**— माघ-फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठमासाः शुभावहा: ॥ कार्तिकोमार्गशीर्षश्च मध्यमौनिन्दिता परे ॥ पौषे ऽपिकुर्यान्मकरस्थिते ऽर्के चैत्रेभवेन्मेषगतेयदास्यात । प्रशस्तमाषाढकृतं विवाहंवदन्तिगर्गा मिथुनस्थिते ऽर्के ॥ मार्गमासितथाज्येष्ठेक्षौरंपरिणयंव्रतम् । ज्येष्ठपुत्रदुहित्रोश्चयत्नेनपरिवर्जयेत् ॥ **जन्ममासजन्मदिनवर्ज्यंमूरलप्रकाशे**—जन्मर्क्षेजन्मदिवसेजन्ममासे शुभंत्यजेत ॥ **राजमार्तण्डे**— जातंदिनंदूषयतेवशिष्ठोह्यष्टौचगर्गोनियतंदशात्रि: । जातस्यपक्षंकिलभागुरिश्चशेषा प्रशस्ताः खलुजन्ममासि ॥ जन्ममासतिथौभेच विपरीतदलेसति । कार्यंमङ्गलमित्याहुर्गर्गभार्गवशौनकाः ॥ **पराशरस्मृतौविशेषः**—ज्येष्ठस्यज्येष्ठकन्यायाः विवाहोनप्रशस्यते । तयोरन्यतरेज्येष्ठेज्येष्ठोमासःप्रशस्यते ॥ द्वौज्येष्ठौमध्यमौप्रोक्तावेकज्येष्ठंशुभावहम् ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीतविवाहेसर्वसम्मतम ॥ **(त्रिषुत्रिपूत्तरादिषु ॥७॥) (स्वातौमृगशिरसिरोहिण्याम् ॥८॥)** नक्षत्रनियममाहसूत्रकारः— उत्तराआदिर्येषातान्युत्तरादीनितेषु कतिषु त्रिषु । तथाहि—उत्तराफाल्गुनीहस्तचित्राइतित्रीणि । उत्तराषाढश्रवणधनिष्ठाइतित्रीणि । उत्तराभाद्रपदारेवत्यश्विन्यइतित्रीणि । स्वातौमृगशिरसिरोहिण्यांच । एतेषांनक्षत्राणामन्यतमे कार्यः ॥ **उक्तंमुहूर्तचिन्तामणौ**— निर्वेधैःशशिकरमूलमैत्रपित्र्यब्राह्मान्त्योत्तरपवनैःशुभो

विवाहः। रिक्तामपहिततिथौशुभेह्निवैरनप्राश्याग्निश्रुतितिथिभागतो ऽभिजिरस्यात्॥ तिथिपर्थमाहवशिष्ठः—शुक्लद्वितीयादितएवकृष्णेपक्षेदशम्यन्तगताः प्रशस्ताःवाराःप्रशस्ताः शुभग्वेचराणांसूर्यार्किवारौखलुमध्यमौतौ॥ त्याज्यःसदाभूमिसुतस्यवारः कामार्कतिथ्योरपितौप्रदोषौ। वेधमाहनारदः—तीर्यकूपंचोर्ध्वगाः पञ्चरेखेद्वेद्वेचकोणयोः। द्वितीयशम्भुकोणे ऽग्निर्धिष्ण्यंचक्रेचविन्यसेत्॥ भान्यतः साभिजित्येकरेखाकोणेनविद्धभम्। पञ्चशलाकाचक्रे एकरेखास्थितेनविद्धम्॥ क्रूरैर्विध्दंसर्वधिष्ण्यांयेविवर्ज्यंसौम्यैर्विध्दं नाखिलंदोषएव॥ क्रूराक्रान्तादिनक्षत्रदोषमाहसापवादम—अक्राणिकूरविध्दानि क्रूरमुक्तादिकानिच। भुक्त्वाचन्द्रेणमुक्तानि शुभार्हाणिप्रचक्षते। उक्तंचनारदेन—ग्रहणोत्पातभंशयाज्यं मङ्गलेपुग्रातुत्रयम। यावच्चरणि भुक्त्वा भुक्तंतद्दग्धकाष्ठवत्॥ लतादोषमाह—तराहुपूर्णेन्दुसिताःस्वपृष्ठेभंसप्तगोजातिशरैर्मितंहि। संलत्तयंते केरानीज्यभौमाः सूर्याष्टतर्कागिनिमितंपुरस्तात्॥ पातदोषमाह—हर्षण वैधृति साध्य व्यतीपात गण्डशूलयोगानाम्। अन्ते यन्नक्षत्रं पातेन निपातितं स्यात्। राजमार्तण्डे—राहुग्रस्ते तथा युद्धे पितृणां प्राणसंशये। अतिप्रौढा च या कन्या चन्द्रलग्नबलेनतु॥ यद्वा तदा सुरादि विवाह विषयम्। तथा च गृह्यपरिशिष्टे—धर्म्येषु विवाहेषु कालपरीक्षणम्, नाधर्म्येषु। नारदः…याश्याया शुभकार्येषु घातचन्द्रं विवर्जयेत्॥ ज्योतिर्निबन्धे—विवाह चौलव्रतबन्धयज्ञे महाभिषेके च तथैव राज्ञाम्। सीमन्तयात्रासु तथैव जाते नोचिन्तनीयः खलुघातचन्द्रः॥ अकालवृष्टि लल्लेनोक्तम्—पौषादिचतुरोमासान् प्रोक्तावृष्टिरकालजा। निर्घातेक्षिति चलने ग्रहयुद्धेराहुदर्शनेचैव॥ आपंचदिनात्कन्या परिणीता नाशमुपयाति। उल्कापातेन्द्रचाप प्रबलघनरजोधूमनिर्घातविद्युद्वृष्टिप्रलयकदोषादिषु सकलबुधैस्त्याज्यमनैकरात्रम्॥ दुःस्वप्ने दुर्निमित्ते ह्यशुभतरदशे दुर्मनोभ्रान्तबुद्धौ, चौलेमौंजीनिबन्धे परिणयनविधौ सर्वदा त्याज्यमेव॥ संक्रान्तिदोषमाह ज्योतिःप्रकाशे—अर्वाक् षोडशनाड्य संक्रान्तेः पुण्यदापरतः। उपनयन व्रतयात्रा परिणयनादौविवर्ज्याःताः॥ गर्गः—दिग्दाहे दिन मेकंचगृहे सप्तदिनानि च। वज्रपाते चैकदिनं वर्जयेत्सर्वकर्मसु॥ दर्शनादर्शनाद्राहुकेत्वोः सप्तदिनं त्यजेत्। यावत्केतूद्गमस्तावदशुभः समयोभवेत्॥ अद्भुतसागरे अस्यापवादमाह—अथयदि दिवसत्रयमध्ये मृदुपानीयं यदा भवति। उत्पातदोषशमनं तदैवशं ग्राहुराचार्याः सम्बन्धतदेव भूकम्पादेर्नदोषोऽस्ति वृष्टिश्चाध्रे क्षनेमति॥ अथातः प्रतिकूलादिनिर्णयमाह—मेधातिथिः—वधूवरार्थं घटिते सुनिश्चिते वरस्यगेहेप्यथकन्यकायाः। मृत्युर्यदिस्यान्मनुजस्यकस्यचित्तदानकार्यं खलुमंगलंबुधैः॥ मंगलेविवाहः। इन्दुजिचन्द्रिकायाम्—कृतेपुनिश्चयेपश्चान्मृत्युर्भवति कस्यचित्। तदानीं मंगलं कार्यंनारी

वैधव्यदं ध्रुवम् ॥ **भृगु** —वाग्दानानन्तरं यत्र कुलयोः कस्यचिन्मृतिः । तदोद्वाहोनिवकार्यः स्यांशात्क्षयदोषत ॥ **शौनकः**—वरवध्वोः पितामाता पितृव्यश्च सहोदरः । एतेषां प्रतिकूलं हि महाविघ्नप्रदं भवेत ॥ पितापितामहश्चैव माताचैव पितामही । पितृव्य स्त्रीसुतोभ्राता भगिनीचाविवाहिता ॥ एभिरन्नविपन्नैश्च प्रतिकूलं बुधै स्मृतम् । अन्यैरपि विपन्नैस्तु केचिदूचुर्नतद्भवेत ॥ **स्मृतिरत्नावल्याम्**—पितुरब्दमशौचंस्यात्तदर्धमातुरेवच । मासत्रयंतु भार्यायास्तदर्ध भ्रातृपुत्रयोः ॥ अन्येषांतु सपिण्डानामाशौचं मासमीरितम् । तदन्ते शान्तिकं कृत्वा ततोलग्नंविधीयते ॥ **ज्योति प्रकाशे**—प्रतिकूलेऽपि कर्तव्यो विवाहोमासतः परः । शान्ति विधायगौदत्वा वाग्दानादिचरेत्पुन ॥ **शान्तिरत्नेविनायकशान्ति । तथाचमेधातिथिः**— संकटे समनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिना । शान्तिरुक्ता गणेशस्य कृत्वा तांशुभमाचरेत् ॥ **ज्योति सागरेऽपि**—दुर्भिक्षेराष्ट्रभंगे च पित्रोर्वाप्राणसंशये । प्रौढायामपि कन्यायां नानुकूल्यं प्रतीक्ष्यते ॥ **मेधातिथि** —पुरुषत्रयपर्यन्तं प्रतिकूलं स्वगोत्रिणाम् । प्रवेशनिर्गमस्तद्वत्तथा मुण्डनमंडन ॥ प्रेतकर्माण्यनिर्वर्त्य चरनाभ्युदयक्रियाम् । आचतुर्थंतत पुंसि पंचमे शुभदं भवेत् ॥ **मासिकविषये शाट्यायनि** —प्रेतश्राद्धानि सर्वाणि सपिंडीकरणं तथा । अपकृष्यापि कुर्वीत कर्तुनान्दीमुखंद्विज ॥ मासिक कुम्भदानानि चापकृष्येति कृत्वा ततो नान्दीश्राद्धं कुर्यात् ॥ **वृध्द्यभावे अपकर्षेदोषमाहोशनाः**-वृद्धिश्राद्धविहीनस्तुप्रेतश्राद्धानियश्चरेत सश्राद्धीनरकेघोरेपितृभिः सहमज्जति । **अत्रविशेष** — अथ माता पिता पितृव्यश्च सहोदरश्च पितामहश्चैव पितामहीच पितृव्यपत्नीं सुतबान्धवश्च । अनूढित स्वसृतरोऽपि कश्चिन्मृतो महाविघ्नकरोभवेत्स । संवत्सरानन्तरमेवकार्यांजातेविवाह प्रतिकूलकेतु । पितुर्जनन्या स्वसुतस्यमातु भ्रातु सुतस्येतरगोत्रजस्य । वर्षतदर्धमाधिक्माम क्रमशश्चमासम् । हिरवागणेस्यच शान्तिमादौकृत्वा विवाहं प्रकरो तयद्वा । ततापिकष्ठे समुपस्थितेतु मासोत्तरशान्तिपुर सरंच । करोतुलग्नंदश्रराष्ट्रभंगे पित्रोर्मृते कालउपागतेच । कन्यातिकाले समुपस्थितेवासुतासपिण्डीकरणो त्तरंतत । लग्नमितिशेष शान्तिस्तुसर्वत्र सगोत्रिणान्तु त्रिपुरुषान्तं प्रतिकूलमेतत । **अथ मंगलेमातूरजसि**—वध्वावरस्यवा मातूरजोदोसे ह्युपस्थित विवाहोनैवकर्तव्या मतवन्त्वेसमीरितम् । प्रारम्भात्प्रागिवाहस्य यदिमाता रजस्वला । निष्कृतिस्तस्यकर्तव्या सहस्रश्रुतिचोदनात् । विवाहव्रतचूडासु माता यदि रजस्वला तदानमंगलंकार्यंशुभेष्सुभि । **मेधातिथि** —चौलेच मतबन्धेच विवाहेयज्ञकर्मणि भार्यारजस्वला यस्य प्रायस्तस्यनशोभनम् । **वृहस्पति** वैधव्यच विवाहेस्याज्जडत्वं व्रतबन्धने । चूडायाच शिशोर्मृत्यु विघ्नयात्राप्रवेशयो **आभ्युदयिक श्राद्धोत्तरन्तु कपर्दिकारिकासु विशेष** —सूतिकोदक्यो शुद्ध्यै गादद्याध्द्रोमपूर्वकम् प्राप्ते

कर्मणि शुद्धिः स्यादितरस्मिन्नशुद्धति ॥ आलभेशुमुहूर्तस्य रजोदोषेन गंगते । श्रियंसम्पूज्य तत्कुर्यात् पाणिग्रहणमंगलम् । हैर्मीमापमितांपद्मां श्रीशूक्तविधिनार्चयेत् । प्रत्यूचे पायसंहुत्वा अभिषेकसमाचरेत् । इति **अथ कन्या विवाहकालेऋतुमतीचेत्तत्र यज्ञपार्श्वे—विवाहे** वितते तंत्रे होमकालेउपस्थिते । कन्यामृतुमतीं दृष्ट्वा कथंकुर्वन्तियाज्ञिकाः स्नापयित्वातुतां कन्यामर्चयित्वा यथाविधिः । युंजानामाहुतिंदत्वा ततः कर्मणियोजयेत् । युंजानः प्रथमम् । इत्यनेनमंत्रेणाहुतिंहुत्वेत्यर्थः **अथवा**—पिताप्रतःस्वपुत्र्यास्तुगणयेदादितः सुधीः । दद्यात्‌-दतुसंख्यागाः शक्तः कन्या पिता यदि । दातव्येकामिनिः स्वेनदानेतरयथा विधि ॥ **अथ विवाहे आशौचनिर्णयः**—विधिवत्कृतकन्यावरणे त्रिरात्रादि व्रतसमाप्तिपर्यन्तम्, मध्ये आशौच प्राप्तौतदपोद्यसद्यः शौचचन्द्रिकाकार **आह**—दाने विवाहेयज्ञेच संग्रामे देशविप्लवे आपद्यपिच काष्ठायांसद्यः शौचंविधीयते**दातुर्वरस्यकन्यायाश्चसद्यः शौचमाहबृहस्पतिः**—विवाहोत्सवयज्ञेषु त्वन्तरामृतशूतके । पूर्वसंकल्पितार्थंपुनदोषः परिकीर्तितः । **षट्त्रिंशन्मते**—व्रतयज्ञविवाहेषुश्राद्धे होमेऽर्चनेजपे । प्रारब्धेसूतकंनस्यादनारब्धेतु सूतकम **। प्रारम्भश्चतत्रैवोक्तः**—प्रारम्भोवरणंयज्ञे संकल्पो व्रतसत्रयोः नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धेपाकपरिक्रिया । वरणमितिमधुपर्कपरम उक्तं **च ब्राह्मे**—गृहीतमधुपर्कस्य यजमानाच्च ऋत्विजः पश्चादशौचे पतितेनभवेदिति निश्चयः मधुपर्कात्तु पूर्वंभवत्येव । **इति रामांडारभाष्ये** नान्दीमुखविधिश्चावश्यकत्वेअधिकउक्तः एकविंशत्यहर्यज्ञे विवाहेदशवासराः त्रिषट्चौलोपनयने नान्दीश्राद्धं विधीयते नान्दीश्राद्धमिदं चोद्वाहे पिता कुर्यात् द्वितीयादौ **वर एव तथा च स्मृतौ**—नान्दीश्राद्धं पिता कुर्यादाद्ये पाणिग्रहे पुनः । अतऊर्ध्वं प्रकुर्वीत **स्वयमेवतु** नान्दिकम् ॥ **पितुरभावे**—असंस्कृतास्तु संस्कार्या भ्रातृभिः पूर्वसंस्कृतैः ॥ **कन्यागृहे**—इत्थं वधूपिता कृत्वोद्वाहारम्भनिमित्तकम् । नान्दीश्राद्धं स्वयंकुर्यात्तस्मिन्नद्विनिर्णयत. ॥ "(**तिस्रोब्राह्मणस्य वर्णानुपूर्व्येण ॥९॥**) (**द्वे राजन्यस्य ॥१०॥** (**एकावैश्यस्य ॥११॥**) ब्राह्मणस्य द्विजाग्रस्य वर्णानुपूर्वेण वर्णक्रमेण तिस्रः—ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या, विवाह्या भवन्ति । द्वेक्षत्रिय वैश्य राजन्यस्य विवाह्ये भवतः । एकावैश्यैव विवाह्या भवति ॥ वर्णानुपूर्व्यग्रहणात् व्युत्क्रमोनिषिद्धः ॥ (**सर्वेषां शूद्रामप्येके मन्त्रवर्ज्यम् ॥१२॥**) ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्रामप्येके विवाह्यां मन्यन्ते ॥ **तत्रविशेषः**—मन्त्रवर्ज्यं मंत्ररहितं यथा भवति तथा । अत्रद्विजातीनामपि शूद्रापरिणयने आचार्येण मंत्रवत्क्रिया निषेधात् । अतः—शूद्रस्य शूद्रापरिणयने मंत्रवत्क्रियानास्ति किन्तु मंत्ररहितंक्रियामात्रमितिगम्यते । ततश्च शूद्रस्य शूद्रापरिणयने यन्मंत्रवद्धोमादि कर्मकुर्वन्ति तदशास्त्रीयम् ॥

एवेन मन्यन्ते शूद्राविवाहम्। पुन —शूद्राया धर्मकार्येष्वनधिकारात् । पुनोत्पादिस्तर इतिचेत्-रामारमणायोपयन्तो न धर्माय, कृष्णजातीया । इतिनिरुक्तकार यास्काचार्यवचनात्॥ अतोरमणार्थं शूद्रापरिणयनमपत्र ॥ एवमति पश्यामदीक्षागन तराम्। शमिनिःस्याप्रभवग नरामामुपेयात ॥ इति निषेध उपपद्यते। प्राप्तेहि प्रतिषेधनिषेध । यदि रामार्थमस्यादा अनिश्चित कथ तत् प्रथमगमन प्रतिषिध्यते। तस्माच्छूद्रापरिणयनं भोगार्थमिच्छया कुर्वतो न शास्त्रातिक्रम ॥ धर्मप्रजारक्षयार्थहि विवाह । प्रत्युद्वाहादिनिर्णय —कन्याद्वयमेकस्मै पुरुषाय-दद्यात् भ्रात्रोर्द्वयोश्चापि न कन्यये द्वे। नायं तयैवोद्वहनमिथान नैवैकदा सुतनस्तूयस्याः॥ यथा रामदत्त सुताहरिदत्त पुत्राय दीयते । हरिदत्तसुता रामदत्तपुत्राय दीयते। एवविधो विवाह सर्ववर्णानामशुभप्रदो भवति ॥ **अथैनांवास परिधापयति (जरांगच्छ परिध त्स्व वासोभवाकृष्टीनामभिशस्ति पावाशतंच जीवशरद सुवर्चारयिंच पुत्राननु-संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववास इति ॥१३॥)** अथाग्नि स्थापनानन्तर एनांकुमारीं-वास अहत सदशंवस्त्र परिधापयति परिहितं कारयतिवर । जरांगच्छ इत्यादि मन्त्र पठित्वा कुमारी च स्वयं परिधत्ते ॥ **(अथोत्तरीयमृयाकृन्तन्नवयया अतन्वत्, याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ। तास्त्वादेवी जरसे सव्ययस्वायुष्मतं इ परिधत्स्ववास इति ॥१४॥)** अथच वस्त्रपरिधानानन्तर उत्तरीयवास "याअकृन्तन्,, इत्यादिमन्त्रमुक्त्वा वर परिधापयति। परिधापयतीतिणिजन्तस्य कारितार्थत्वात "परिधत्स्ववास ,, इतिमन्त्र स्यापितदर्थत्वात्परिधापयितान्य इत्यवगम्यते, सचानन्तर एवनाध्वर्यु । स्मार्तपु कर्मसु अध्वर्योः कर्तृत्वयोगाभावत्। अत्रवरोपि समाचाराद्वासमी परिधत्ते, ' परिधास्ये,, "यशसामा, इतिमन्त्राभ्याम् ॥ **(अथैनौसमजयति समजन्तुविश्वेदेवा. समापोहृदयानिनौ। संमा तरिश्वा सन्धाता समुदेष्टी दधातुनौ इति ।१५॥)** अत्र वस्त्रपरिधानानन्तर "पर स्पर समञ्जयथाम्, इति प्रेषेण कन्यापिता एनौवधूवरौ समञ्जयति सम्मुखीकरोति । **अत्रविशेषमाहऋष्यशृंगः**—वरगोत्र समुच्चार्य प्रपितामह पूर्वकम्। नामसकीर्तयद्विद्वा कन्यायाश्चैवमवहि ॥ तत्रवर —' समजन्तु विश्वदेवा ,, इत्यादि मन्त्र कन्या सम्मुखीभूत पठति। अतोत्तरत पिताप्रत्तामि, इतिसूत्रदर्शनात् अत्रैव कन्यादानम्—तत्तुप द्धतीवक्ष्ये। **पिताप्रत्तामादाय गृहीत्वा निष्क्रामत्तिकरोत्विप्यसौ इति ।१६।)** पिता जनकेनतदभावे वक्ष्यमाणे प्रत्तासम्प्रदत्तां आदायप्रतिग्रहविधिना प्रतिगृह्यगृहीत्वाहस्तेधृत्वा निष्क्रामति गृहमध्यात् मण्डपान्याग्निसमीपम् तुम् यदैवैविमनसा इत्यादिना मंत्रेण ' करोत्वसुर्यि वेति,, इत्यन्तेन मंत्रपाठः। कन्यादाने पितुरभावे अन्येषामप्यधिकारमाह याज्ञवल्क्य पिता

पितामहो भ्राता सकुल्यो जननीतथा । कन्याप्रदः पूर्वनाशे प्रकृतिस्थ परः परः। नारदः—मातामहो मातुलश्च सकुल्यो बान्धवस्तथा । तस्याम प्रकृतिस्थायां कन्यांदद्युः स्वजातयः विशेषः पूर्वेदष्टव्योवाग्दानप्रयोगे। (**अथैनांसमीक्षयति अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवापशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः । वीरसूर्देवकामा स्योनाशंनोभव द्विपदेशंचतुष्पदे ।१। सोमः प्रथमोविविदेगंधर्वो विविदउत्तरः। तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः।२। सोमोऽददद्गंधर्वाय गंधर्वो ऽददद्ग्नये। रयिंश्चपुत्रांश्चादादग्नि र्मह्यमथो इमाम्।३ मानः पूषाशिवतमामैरयसानऽऊरूउशतीविहर। यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपं यस्यामुकामावहवो निविष्ट्याऽइति।४।** ।१७। अथ निष्क्रमणानन्तरंएनौवधूवरौ गमीक्षाथाम् प्रेषेणकन्या पिता समीक्षयति समीक्षणंकारयति। तत्र समीक्षमाणोवरः "अघोर चक्षु",, इत्यादींश्चतुरो मंत्रान्पठति । **इति चतुर्थ कंडिकासमाप्ता।** (**प्रदक्षिणमग्निं पर्याणीमेके ।१।**) एके आचार्या. अग्ने. प्रदक्षिणं कारयित्वावास परिधानं समंजनं समीक्षणं च मन्यन्ते। एके न मन्यन्ते ततो विकल्पः। (**पश्चादग्नेस्तेजनीं कटंवा दक्षिणपादेन प्रवृत्योपविशति ।।२।।** समीक्षणानन्तरं अग्निं प्रदक्षिणीकृत्य अग्नेः पश्चिमतः प्राङ्मुख उपविशति स्मृत्यन्तराद्वरस्य दक्षिणतः कन्या उपविशति । सावधू दक्षिणपादेन तेजनीं तृणपूलिकां कटं तृणमयंवस्तरं (**चटाई**) वा प्रवृत्यप्रकम्य उल्लेध्यउभयोः संस्कार्यत्वात्सवरोवा।

(**अन्वारब्ध आघारावाज्यभागौ महाव्याहृतय. सर्वप्रायश्चित्तं प्राजापत्यं ँ स्विष्टकृच्च ।३।**) अत्रवैवाहिक होमप्रसंगेन सर्वकर्मसाधारणीं परिभाषां करोत्याचार्यः, "अन्वारब्ध इति पूर्ववत्कर्तव्यः। (**एतन्नित्य ँ० सर्वत्र ।४।**) एतदाघारादिस्विष्ट कृदवसानं सर्वत्रयत्रयत्र होमस्तत्रभवति । यत्रहोमाभावस्तत्रनास्ति यथा स्तरारोहणलांगलयोजनं पायसब्राह्मणभोजनेषु । (**प्राङ् महाव्याहृतिभ्य. स्विष्टकृदन्यच्चेदाज्याद्वविः ।।५।।** महाव्याहृतिभ्यः प्राक् पूर्वं स्विष्टकृद्यागोभवति चेद्यदिआज्यात्मकाशादन्यदपि चरुप्रभृति हविर्भवति। केवलाज्यभागे सर्वाहुति शेषे भवति। **सर्वप्रायश्चित्तं प्राजापत्यान्तरमेतदावापस्थानं विवाहे।६।**) "त्वन्नोअग्ने, सत्वन्नोअग्ने "अयाश्चाग्ने,, 'येतेशतम्,, "उदुत्तमम्, इत्याहुति पंचकं सर्वप्रायश्चित्तम्। प्राजापत्य. प्राजापत्याहुति एतयोरन्तरं विवाहेआवापस्थानं आवापश्च अन्यत्र विहितस्य होमस्यजपादे. कर्मणः कर्मान्तर प्रक्षेपः आवापस्य आगन्तुकत्वेनअन्तेनिवेशोयुक्तः न्यायात्तन्निवृत्यर्थं (**राष्ट्रभृत इच्छंजयाभ्यातानांश्चजानन्।।७।।**) (**येनकर्मणेर्त्सेदितिवचनात्।।८।।**) विवाहे वैवाहिकहोमकर्मणि राष्ट्रभृत्संज्ञका। आहुती.

आवपेदित्यध्याहार । जयाभ्यातानांश्च आपवेत् किंकुर्वनिच्छन् राष्ट्रभृज्जयाभ्यातानानां होमफल कामायन् किंप्रमाणमितिचेद् । येनकर्मणा अस्मिन्कर्मणि ओप्यतेननयत्फलं भवतीति जानन्विदन् तत्कर्मफलमिच्छन् तस्मिन्कर्मणि तत्कर्म आपपेदिति वचनात् श्रुतेरित्यर्थं तत्र राष्ट्रभृतो यथा ऋताषाडृतधामाग्निर्गन्धर्वं इत्यादिद्वादशमंत्रा राष्ट्रभृत्संज्ञका तान्प्रयोगेवक्ष्ये ।

(चित्तंचचित्तिश्चाकूतं चाकूतिश्चविज्ञातंच विज्ञातिश्च मनश्चशक्करीश्च दर्शश्च पौर्णमासंच बृहच्चरथन्तरं च प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्र. पृतनाजयेषु । तस्मैविश समनमन्तसर्वा स उग्र. स इहव्योवभूव स्वाहा इति ।८।

येतेत्रयोदशमंत्रा जयाइत्युच्यन्ते । चित्तंचित्येवमादीनांपदनां चतुर्थ्यन्तानां येचिदिच्छन्ति तदसम्मतम् । कुत नह्येतानि देवतापदानि किन्तु मन्त्राएतेमंत्राश्चएते यथाम्नातएव प्रयुज्यन्ते

(अग्निर्भूत.नामधिपति समाऽवत्विन्द्रो ज्येष्ठानाम् । यम पृथिव्या वायुरन्तरिक्षस्य, सूर्यो दिव, चन्द्रमानक्षत्राणाम् , बृहस्पति र्ब्रह्मणोमित्र सत्यानाम्, वरुणोऽपा ॐ साम्राज्यानामधिपतिस्तन्माप्रवतु सोमचोपधीना ॐ सवितप्रसवाना. ॐ, रुद्र . पशूनाम्, त्वष्टारूपाणाम् , विष्णु पर्वतानाम् मरुतोगणानाम् अधिपतयस्ते मावन्तुपितर' पितामहा परेवरेततास्तमहा: इह मावन्त्वस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रे ऽस्यामा शिष्यस्याम् पुरो गायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहेति सर्वत्रानुपजति ।१०।) अग्निर्भूतानामित्यादिपुपितर पिता महा. इत्येतेष्वष्टादशसु मंत्रेषुप्रतिमंत्रं यथालिंग यथावचनं समावत्वित्यादि देवहूत्या ॐ स्वाहेत्यन्त वाक्यैकदेशं अनुपजति सयुनक्ति तच्चपद्धतौ प्रदर्शयिष्यामि । **अग्निरैतुप्रथमोदेवतानां ॐ सोऽस्यैप्रजां मुंचतु मृत्युपशात् तदयॐराजा वरुणोऽनुमन्यतांयथेयॐस्त्री पौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा ।१। इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्य प्रजामस्यैनयतुदीर्घमायु अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभि विबुध्यतामिय ॐ स्वाहा २ स्वस्तिनो अग्नेदिव आपृथिव्या विश्वानि धेह्ययथायजत्र । यदस्यांमहिदिविजातं प्रशस्ततदस्मासुद्रविण धेहिचित्र ॐ स्वा० ।३। सुगन्नपन्थां प्रदिशन्नएहि ज्योतिष्मद्धेह्यजरन्नआयु अपैतुमृत्युरमृतन्न आगाद्वैवस्वतोनोअभयं कृणोतु स्वाहा ॥४॥ इति ।११।) परमृत्यावितिचैके प्राशनान्ते ॥४॥ ।१२।)** अग्निरैतु इत्यादिक परमृत्योरित्यन्ता पचमंत्रा परमृत्यवितिच जुहुयात् । एके आचार्या परमृत्यविति एतामाहुतिं प्राशनान्ते सश्रव प्राशनान्ते जुहुयादितीच्छन्ति । अत्रोदक्स्पर्श इति पचमी कण्डिका **(कुमार्या भ्राता शमीपलाशमिश्रॉल्लाजान जलिनाजलावावपति ॥ १ ॥** कुमार्या कन्याया भ्रातःशमीपलाशमिश्रान् शमीपत्र-

युक्तान् लाजान् भृष्टानि धान्यानि अंजलिना कृत्वा कन्यायाः अंजलौ आवपति ॥ (तान् जुहोति स ॐ हतेन तिष्ठति ॥ अर्यमणं देवं कन्याग्निमयक्षत । सनो ऽ अर्यमादेवः प्रेतोमुंचतु मापतेः स्वाहा ॥१॥ इयंनार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका । आयुष्मानस्तुमेपतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा ॥२॥ इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणंतव । ममतुभ्यंच संवननं तदग्निरनुमन्यता मियᳬ स्वाहा ॥३॥ तान् अंजलिस्थान लाजान् तिष्ठंतीऊर्ध्वा सᳬहतेन मिलितेन अञ्जलिनाजुहोति विवाहाग्नौ प्रक्षिपति, तत्रैकैकेन मंत्रेण हस्तप्रक्षिप्तलाजानां तृतीयांशं तृतीयांशं जुहोति । अर्यमणं देवमित्यादि प्रथमम् इयंनार्युपब्रूते, इत्यादि द्वि० इमांल्लाजानां इत्यादि तृ० (अथास्यै दक्षिणᳬहस्तं गृह्णाति सांगुष्ठम् । गृह्णामिते सौभगत्वाय हस्तंमयापत्या जरदष्टिर्यथाऽसः । भगोर्यमासविता पुरंधिर्मह्यंत्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः ॥ अमोहमस्मि सात्व ᳬसात्वमस्यमोऽहम् । सामाहमस्मि ऋक्त्वं द्यौरहं पृथिवीत्वम् ॥ तावेवविवहावहै सहरेतोदधावहै, प्रजाँ प्रजनयावहै पुत्रान् विन्दावहै बहून् तेसन्तु जरदष्टयः संप्रियो रोचिष्णू सुमनस्यमानौ पश्येम शरदः शतं जीवेमशरदःशतᳬ शृणुयाम शरदः शतमिति ॥३॥६॥) अथलाजाहोमानन्तरम्—अस्यै अस्याः (आर्षत्वात्षष्ठ्यर्थेचतुर्थी) कुमार्याः दक्षिणं सांगुष्ठसहितं हस्तं गृह्णाति वरः स्वहस्तेनादत्ते ॥ गृह्णामिते इत्यादि शरदः शतमिति यावत पठित्वा (इति षष्ठीकंडिका) ॥ (अथैनामश्मानमारोहयत्युत्तरतोऽग्नेर्दक्षिणपादेन—आरोहेममश्मानमश्मेव त्वᳬ स्थिराभव । अभितिष्ठ पृतन्यतोऽवबाधस्वपृतन्यतः इति ॥१॥) अथ पाणिग्रहणानन्तरं एनांवधूं अश्मानं दृषदं उत्तरतोऽग्नेर्ध्रियमाणं दक्षिणपादेन कृत्वा आरोहयति, आरोहेम इत्यादि पृतनायत इत्यादि मंत्रेण गत्वोभावुत्तरेणाग्निं तस्याः सव्येतरं करम् सव्येनादाय हस्तेन वधूपादंतु दक्षिणं शिलामारोहयेत्प्रागायतां दक्षिणपाणिना । मंत्रपाठश्च वरस्य न कुमार्याः (अथ गाथां गायति—सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवती । यांत्वाविश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः । यस्यांभूतᳬ समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत् । तामद्यगाथांगास्यामि यास्त्रीणामुत्तमं यशः इति ॥२॥) अश्मारोहणानन्तरं सरस्वति इत्यादि उत्तमंयशः इत्यन्तां गाथां गायति ॥ (अथ परिक्रामतः— तुभ्यमग्रेपर्यवहन्सूर्यांवहतुनासह । पुनः पतिभ्योजायां दाग्ने प्रजया सहेति ॥३॥ वधूवरौ अग्नेः परिक्रमणं कुरुतः । (एवं द्विरपरं लाजादि ॥४॥) एवमुक्तप्रकारेण द्विःवारद्वयमपरं पुनरपि लाजादि कुमार्या भ्रातैरारभ्य परिक्रमणान्तं कर्मभवति । एवं

तृतीयम्। (चतुर्थं ॐ सूर्पकुष्ठ्या सर्वांल्लाजा नावपति भगाय स्वाहेति ॥५॥)
ततस्तृतीय परिक्रमणानन्तरं कुमार्या भ्राता शूर्पकुष्ठ्या शूर्पस्य कोणेन सर्वान् यावच्छूर्पावशि-
ष्टान् लाजान् कुमार्या अंजलौ आपवति निक्षिपति तान् लाजान् तिष्ठंती कुमारी भगाय स्वाहा
इति मंत्रेण चतुर्थं जुहोति ॥ तत.समाचारात्तूष्णीं चतुर्थं परिक्रमणं वधूवरौ कुरुतः ॥ "हविः
पात्रस्यामृत्विजो पूर्वपूर्व मन्तरमृत्विजा च यथा पूर्वमिति परिभाषा सूत्रात्—तेन परिक्रमणं
कुर्वन्तौ वधूवरौ ब्रह्माग्न्योर्मध्ये न गच्छेताम् ॥ इति हरिहरः। दम्पत्योर्गच्छतो स्तत्र
ब्रह्माग्नी अन्तरागतिः ॥ इति गदाधरः। आजमाह सुदमाहं तथा ब्रह्माणमृत्विजम्।
एतानि बाह्यतः कृत्वा शेषाणान्तु प्रदक्षिणम् ॥ इति संग्रह वचनात्—दक्षिणदिशमाश्रित्ययमो
मृत्युश्च तिष्ठतः। तयो. संरक्षणार्थाय तस्माद् ब्रह्मावहिर्भवेत ॥ इति प्रमाणत्रये गदाधर-
स्यैवसुष्ठुतरा वरवध्वो ब्रह्माग्निमध्यगमनस्य सम्मतिः॥ (त्रिःपरिणीता प्राजापत्य ॐ
हुत्वा ॥६॥७॥) पूर्ववदुपविश्य प्रजापतये स्वाहा इति ब्रह्मान्वारब्धो हुत्वा इदं प्रजापतये
इतित्यागं विधाय ॥ (इति सप्तमी कंडिका ॥) अथैनामुदीचीं ॐ सप्तपदानि प्रक्रामय-
त्येकमिषे द्वे ऊर्जे त्रीणिरायस्पोषाय चत्वारि मायोभवाय पञ्चपशुभ्य. षडृतुभ्य.
सखेसप्तपदाभव सामामनुव्रताभव ॥१॥ (विष्णुस्त्वानयत्विति सर्वत्रानुष-
जति ॥२॥) अथवर एना कन्या अग्ने रुत्तरत उदीचीमुदङ्मुखी मेकमिषे इत्येतैः सप्त-
मंत्रैः सप्तपदानि प्रक्रामयति परिक्रमणं कारयति। कारितरबात्सप्तपदानि, प्रक्रमस्व, इत्य-
धेषणा इति कुमार्या दक्षिणपादं गृहीत्वा अग्रे अग्रे स्थापयती त्यन्ये। विष्णुस्त्वा नयत्विति
सर्वत्र षट्सुमंत्रेष्वनुषंग। न तु सप्तमे मंत्रे तुल्ययोगित्वाभावात्साकांक्षत्वाच्च पूर्वमंत्राणामिति
कर्काचार्यः। अन्येषांभाष्यकाराणांपद्धतिकाराणां च मते सर्वमंत्रेष्वनुषंगः। (निष्क्रमण-
प्रभृत्युदकुंभं ॐ स्कन्धे कृत्वा दक्षिणतोऽग्नेर्वाग्यत. स्थितो भवति ॥३॥) (उत्त-
रत एकेषाम् ॥४॥) निष्क्रमणप्रभृतिविवाहपर्यन्तमावाह्य निष्क्रामति, इत्यादिना आरभ्य
कश्चित्पुरुषो जलपूर्ण कलशं स्कन्धे निधाय वधूवरयो पृष्ठत आगत्य अग्नेर्दक्षिणस्यां दिशि-
मौनीस्थित आस्ते। केषाचिन्मते उत्तरतस्तिष्ठति, अतएव विकल्प.। स्कन्धकलशस्थपुरुषो
ब्राह्मण एवभवति नतुक्षत्रियादयः इति ॥ (तत एनांमूर्द्धन्यभिषिंचति—आप. शिवाः
शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजमिति ॥५॥) (आपोहिष्ठेति-
च तिसृभिः ॥६॥) ततस्तस्मात्स्कन्धस्थितादुदककुंभादाचारादाम्रादिपल्लवसहिते न
हस्तेन जलमादाय एनांवधूं मूर्धनि शिरस्यभिषिंचति वर, आप. शिवा इत्यादिना, भेषज-
मित्यंतेनमंत्रेण। पुनस्तथैवोदकमादाय आपोहिष्ठा, इत्यादिना आपोजनयथाचन, इत्यन्ता-

भिरिति सूभि. ऋग्भिः अभिषिञ्चति चकारादनुपज्यते । (**अथैना ॐ सूर्य-मुदीक्षयति तच्चक्षुरिति ॥७॥**) अथभिषेकादुपरि सूर्य मुदीक्षयस्वेति प्रैषेण सूर्य एनां वधूं वरः उदीक्षयति, सूर्यस्य निरीक्षणं कारयतीत्यर्थः साचवरप्रेषिता सती-तच्चक्षुरित्यादि मंत्रेण स्वयं पठितेन सूर्यं निरीक्षते दिवाविवाह पक्षे इति हरिहरः। सूर्यक्षणान्यथाऽनुपपत्त्या अस्तमिते ध्रुवं दर्शयति । इत्यनास्तमित ग्रहणाच पारस्करगृह्यानुसारिणां दिवैव विवाह इत्युच्यते ॥ (**अथास्यै दक्षिणां ॐ समधिहृदयमालभ्यते-ममव्रते हृदयं दधामि, मम चित्त मनुचित्तंते अस्तु, मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुक्तु मह्यम इति ॥ ८ ॥**) अ। सूर्यो दीक्षणानन्तरं अस्यै इति षष्ठ्यर्थे चतुर्थी, अस्या वध्वा दक्षिणसमधि दक्षिणस्य स्कन्धोपरि हस्तनीत्वा तस्या हृदयमालभतेवरः, स्पृशति-ममव्रतेति मंत्रेण ॥ (**अथैनामभिमंत्रयते-सुमङ्गलीरियं वधूरिमा ॐ समेत पश्यत सौभाग्य-मस्यैदत्वा याथास्तं विपरेतन इति ॥९॥**) अथ हृदयालम्भनानन्तरं एनां वधूं वरोऽभि मंत्रयते-सुमङ्गली रित्यादिना मंत्रेण ॥ अत्र शिष्टाचारात् "उत्तरत अयतनाहि स्त्री" उत्तर शब्दो वामवचनः। इति श्रुतिलिंगाच वधूंवरस्य वामभागे उपवेशयति । गदाधर मतेतु- अत्राचारः अनसः स्त्रियो मङ्गलं कुर्वन्ति । **उक्तंच कारिकायाम्**—पतिपुत्रान्विता भव्या अतस्रः सुभागाअपि । सौभाग्यमस्यै दद्युस्तां मङ्गलाचार पूर्वकम् ॥ (**तां दृढ पुरुष उन्मथ्य प्राग्वोदग्वाऽनुगुप्त अगार आनु डुहेरोहिते चर्मण्युपवेशयति इह गावो निषीदंति हास्वा इह पूरुषाः । इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ इह पूषानिषीदतु इति ॥१०॥**) ततस्तां वधूं दृढ पुरुष. बलवान् कश्चित्पुमानुन्मथ्य उत्थाप्य प्रव्यस्यां दिशि उदक् उदीच्या वा दिशि पूर्वकल्पिते अनुगुप्ते सर्वत. परिवृते आगारे ,गृहे तत्र च पूर्वमास्तीर्णे आनुडुहे आर्षभे रोहिते लोहितवर्णे चर्मणि, अजिनेप्राग्ग्रीवे उत्तरलोम्नि उपवेशयति । इहगाव इत्यादिना निषीदन्त्विति मंत्रस्य पाठान्ते केचन जामातैव दृढपुरुषमित्याहुः ॥ **ग्रामवचनंकुर्युः ॥११॥** अत्र विवाहे ग्रामशब्द वाच्यानां स्वकुलवृद्धानां स्त्रीणां शमशाने च वाक्यं कुर्युः। अंकुरार्पण हरिद्राक्षतचन्दनादि धर्मप्रतिपादकम् ॥ ('**विवाह श्मशानयो ग्रामं प्राविशता-दिति वचनात् ॥ १२ ॥**) (**तस्मात्तयोर्ग्रामः प्रमाणमिति श्रुतेः॥१३॥**) विवाहे शमशाने च स्वकुलवृद्धानां स्त्रीणां वचनं वाक्यं कुर्यु. । यथा सूत्रेऽनुपविष्टमपि वधूवरयो मंगल सूत्रं (कङ्कणं) गले मालाधारणं वरागमने नासिकाभूषण धारणम्। कन्यादानान्तरं अंचलग्रन्थि बन्धनम । कतिचिद्देशेषु छोलिकाभरणम्, न्यग्रोधपुटिका, सौभाग्यपुटिकाधारणम् । वर हृदये दध्यादिलेपनादि, ताश्चयन्स्मरन्ति तदपि कर्तव्यमित्यर्थः। च शब्दाद्देशाचारोऽपि,

ग्रामशब्देन स्वकुलवृद्धाः स्त्रियोऽभिधीयन्ते । ताहि पूर्वपुरुषैरनुष्ठीयमानं सदाचारं स्मरन्ति । ग्रामवचनं लोकवचनं इति भर्तृयज्ञः । वृद्धानां स्त्रीणां वचनं कार्यं मिति कुत इत्यत आह–ग्राममिति श्रुतः ग्रामं वृद्धानां स्त्रीणामाचारं प्रविशतादिति स्मृति वचनात् ॥ **आचार्यायवरं ददाति ॥१४॥) (गौर्ब्राह्मणस्य वरः ॥१५॥) (ग्रामोराजन्यस्य ॥१६॥) (अश्वो वैश्यस्य ॥१७॥)** ततो वर आचार्याय स्वकीयाय वरं ददाति । वरशब्दार्थं व्याख्यानं करोति । ब्राह्मणश्चेत्परिणेता तदा गां वरं ददाति, क्षत्रियश्चेद्वरस्तदा ग्रामं वरं ददाति, वैश्यश्चेद्वर स्तदाश्वं वरं ददाति । एते वरा विवाहे एव प्रकरणात् ॥ **(अधिरथ ꣳ शतं दुहितृमते ॥ १८ ॥)** दुहितृमांश्च यस्य दुहितर एव न पुत्राः तस्मै दुहितृमते रथेनाधिकं गोशतं दत्वा तस्यकन्यामुद्वहेत् । **मनुः**—यस्यास्तु नभवेद्भ्राता नविज्ञायेत वा पिता । नोपयच्छेततां कन्यांपुत्रिकधर्मशङ्कया ॥ **(अस्तमिते ध्रुवं दर्शयति–ध्रुवमसि ध्रुवंत्वा पश्यामि ध्रुवेधि पोष्येमयि । (मह्यंत्वदाद् बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती संजीव शरदः शतमिति ॥१९॥) (सायदिन पश्येत्पश्यामीत्येव ब्रूयात् ॥२०॥)** अस्तमिते सूर्ये वधूं ध्रुवसंज्ञकं नक्षत्रं दर्शयति । ध्रुवमसि–इत्यादिना मंत्रेण । सावधूः यदिध्रुवंनेक्षेत तथापि पश्यामीत्येवं वदेत् । नविपरीतम् । **(त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनौस्यातामधः शायीयाता ꣳ संवत्सरंनमिथुनमुपेयाताम्, द्वादशरात्र ꣳ षड्रात्रं त्रिरात्रमन्ततः ॥२१॥)** विवाह दिनमारभ्य त्रिरात्रं त्रीण्यहोरात्राणि अक्षार लवणाशिनौस्याता भवेताम् । अधः अस्तृत:भूमौन खट्वायां शयीयाता स्वपेताम् । संवत्सरंच वर्षपर्यन्तम् । मिथुनं अभिगमनं नोपयेताम्, नोपगच्छेयाताम् । अथवा द्वादशरात्रम्, अथवाषड्रात्रम्, यद्वात्रिरात्रमन्तत । संवत्सरादिपक्षादि शक्तौ त्रिरात्रपक्षाश्रयणेऽपि चतुर्थां कर्मान्तरं पञ्चम्यादि रात्राभिगमनम् । चतुर्थी कर्मणा' ऽप्राक्तस्या भार्यत्वमेव न संवृत्तं विवाहैक देशत्वाच्चतुर्थीकर्मणः इति सूत्रार्थः ॥

॥ इति विवाह सूत्रव्याख्या ॥

——.०:——

अथ चतुर्थी कर्मसूत्रव्याख्या ॥

(चतुर्थ्यां मपररात्रेऽभ्यन्तरतोऽग्निमुपसमाधाय । दक्षिणतो ब्रह्माणमुपवेश्यो-त्तरतः उदपात्रं प्रतिष्ठाप्य स्थालीपाक ꣳ श्रपयित्वा आज्यभागाविष्ट्वाऽऽज्याहुति र्जुहोति ॥१॥) (अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्ते रसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकामऽ

उपधावामि याऽस्यैप्रजाघ्नी तनूस्तामस्यैनाशाय स्वाहा ॥२॥) (सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामियाऽस्यै पशुघ्नी तनूस्ता मस्यै नाशाय स्वाहा ॥३॥) (चंद्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानांप्रायश्चित्तिरसि ब्रह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामियाऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥ ४ ॥) (गंधर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामियाऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशाय स्वाहा ॥ ५ ॥) ॥ २ ॥) चतुर्थ्यां तिथौ विवाहतिथिमारभ्य आपररात्रेः पश्चिमेयामेअभ्यन्तरतः गृहस्यमध्ये अग्निं वैवाहिकमुपसमाधाय पंचभूसंस्कारान्कृत्वा स्थापयित्वा दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य तत्रपूर्ववद् ब्रह्माणमुपविश्यउत्तरतउदपात्रं प्रतिष्ठाप्यप्रणीतास्थानादुत्तरतो जलपूर्णं ताम्रादिपात्रं स्थापयित्वा, स्थालीपाकंचरुं श्रपयित्वा, आज्यभागाविष्ट्वाऽऽज्याहुतिर्जुहोति । आज्येन "अग्ने प्रायश्चित्ते, इत्यादिभिः पंचभिर्मंत्रैः पंचाहुती जुहोति, चतुर्थीकर्मणो विवाहांगत्वाद्बुद्धिः शालयामाभूदित्याभ्यंतरग्रहणम् । स्थालीपाकस्यजुहोतिप्रजापतयेस्वाहा इति ।३। स्थालीपाकस्य चरोः प्रजापतये स्वाहा, इत्येकामाहुतिं जुहोति । (हुत्वाहुत्वैतासामाहुतीमुदपात्रे स ्ँ स्रवान् समवनीय अग्ने प्रायश्चित्ते —इत्यादीनां मंत्राणां प्रजापत्यन्तानामेतेषा माहुतीनांप्रत्येकंहुत्वासंस्रवान् हुतशेषान् उदपात्रेसमवनीय प्रक्षिप्य (ततएनां मूर्धन्यभिषिंचति यातेपतिघ्नी, प्रजाघ्नी, पशुघ्नी गृहघ्नी, यशोघ्नी, निंदितातनूर्जारघ्नीं ततएनांकरोतिसा जीर्यत्वंमयासहासाविति ।४। तत स्तस्मादुदपात्रात् उदकमादाय एनांवधूं वरोमूर्धन्यभिषिंचति यातेपतिघ्नी इत्यादिनामंत्रेण । अत्रैनकतिचिद्देशेषु भार्यायाः पति स्वनामसंवर्धनामकरोति । यथा यज्ञदत्तसुन्दरी, असावित्यत्रवधूनामग्रहणात् । (अथैना ॐ स्थालीपाकं प्राशयति प्राणैस्तेप्राणान्संदधाम्यास्थिभिरस्थीनिमा ॐ समांॅसानित्वचात्वचम् ।५। अथाभिषेकानन्तरंएनां वधूंस्थालीपाकंचरुशेषम् प्राणैस्ते, इत्यादिनावरः प्राशयति । वधू संस्कारोऽयंनतुद्रव्यप्रतिपत्तिः । अतोद्रव्यस्य नाशदोषादावन्यद्रव्येण प्राशनंकर्याम् । तदुक्तंकारिकायाम्— वधूसंस्कारएवायंप्रतिपत्तिरियंनतु । अतोद्रव्यविनाशादौ तुल्यन्ते प्रतिपत्तयः । अत्रसमाचारा द्वरोऽपि स्त्रियासह भोजनं करोति । हेमाद्रौगालवः— एकयानसमारोह एकपात्रेच भोजनम् । विवाहेपथि यात्रायां कृत्वा विप्रोनदोषाभाक् । (तस्मादेवं विद्धोत्रियस्यदारेण नोपहासमिच्छेदुतहेर्वंवित्परोभवति ।६। यतोऽनेनचरुशेषप्राशनकर्मणा भर्त्रासहैक्यंप्राप्तदारा स्तस्मात्तेषुवित्पुरुषः श्रोत्रियस्यविदुषःदारेणभार्ययासह उपहासंमैथुनंनेच्छेत्नकामयेत हियस्मादेवंविदपि श्रोत्रियस्य परशत्रुर्भवति

इति चतुर्थीकर्म परिभाषा ।

* अथातो वरवध्वोर्गृहागमनपरिभाषा *

वरवध्वो कन्यागृहाद्वरगृहं यावत्प्रस्थानपरिभाषा । उक्तंचमानवगृह्यसूत्रेपुरुष १खंड १३ (पुण्याहे युङ्क्ते ।१।) युंजतिप्रध्नमितिद्वाभ्यां युज्यमानमनुमंत्रयतेदक्षिण मथोत्तरम् ।२। (अहतेन वाससादर्भैर्वारथंसमाष्टि ॥३॥) (अवृन्यंतावभितोरथं येध्वान्ता वाता अग्निमभियेसंचरंति । दूरेहेति पतत्री वाजिनीवांस्ते नोऽग्नय पप्रय पालयन्तु इति चक्रेऽभिमंत्रयते ॥४॥ वनस्पते वीड्वङ्ग इत्यधिष्ठानम् ॥५॥ सुकिंशुकं शल्मलों विश्वरूपं हिरण्यवर्णं सुवृतं सुचक्रम् । आरोह सूर्ये अमृतस्य लोकं स्योनं पत्येवहतुं कृणुष्व इत्यारोहयति ॥६॥ अनुमायन्तुदेवता अनुब्रह्म सुवीर्यम् । अनुक्षत्रं तु यद्बलमनुमामैतु यशश इति प्राङभिप्रयाय प्रदक्षिणामावर्तयति ॥७॥ प्रतिमायन्तुदेवताः प्रतिब्रह्मसुवीर्यम् । प्रतिक्षत्रन्तु यद्बलं प्रतिमामैतु यशश इति यथास्तंयन्तमनुमंत्रयते ॥८॥ अमंगल्यं चेद्तिक्रामति । भद्रंकर्णेभिरित्यादि जपति ॥९॥ नमोरुद्रायग्रामसद्, इतिग्रामे इमारुद्रायेतिच ॥१०॥ नमोरुद्रायैकवृक्षसद इत्येकवृक्षे । येवृक्षेषु शष्पिंजरा इति ॥११॥ नमोरुद्राय श्मशान सद इति श्मशाने । ये भूतानामधिपतय इतिच ॥१२॥ नमोरुद्राय चतुष्पथसद इति चतुष्पथे । येपथां पथिरक्षय इतिच ॥१३॥ नमोरुद्राय तीर्थसद इति तीर्थे । ये तीर्थानि प्रचरन्ति इतिच ॥१४॥ यत्रापस्त रितव्या आसीदति । समुद्राय वैष्णवेसिन्धूनां पतये नम । नमोनदीनां सर्वासांपत्ये । विश्वाहा जुषतां विश्वकर्मणामिदंहवि स्व स्वाहेत्यप्सूदकांजलीनिनयति । अमृतंवाआस्ये जुहोम्यायु प्राणेऽप्यमृत ब्रह्मणासहमृत्युंतरति । ग्रामहादिति रिष्टिरिति मुक्तिरिति मुच्यमाण सर्वभयं नुदस्व स्वाहेति त्रि परिसृप्याचामति ॥१५॥ यदिनावातरेत्सुनामाणमिति जपेत् ॥१६॥ यदिरथाक्ष शम्याणो वा रिष्येतान्यद्वारथांगं तत्रैवाग्निमुपसमाधाय जयप्रभृतिभिर्हुत्वा सुमंगली रियंवधूरिति जपेत् । वध्वामह, व रूमभेत पश्यत ॥१७॥ व्युत्क्रामपंथा जरितां जवेन । शिवेन वैश्वानर इडयास्याभत । आचार्या येन येन प्रयाति तेन तेन सह । इत्युभानेव व्युतक्रामत ॥१८॥ गोभि सहास्तमिते ग्रामं प्रविशेति ब्राह्मणवचनाद्वा ॥१९॥ इति त्रयोदशखण्डम् अपरस्मिन्नन्ह सन्वीगृहान्प्रपादयोत ॥१॥ प्रतिब्रह्मनिति प्रत्यवरोहति ॥२॥ खंडम् । मंगलानि प्रादुर्भवंति ॥३॥ गोश्रमततासुलपराजि गृणाति ॥४॥ रथादध्योपासनात्, येध्वध्येतिप्रसवन्त्येषु सौमनसंमहत् । तेनोपह्वयामहे तेनाजानन्त्वागतम् । इतितयाभ्युपैति ।५। गृहानहंसुमनस प्रपद्येवीरंहि वीरवत सुशेवा । इरावहन्ती घृतमुक्षमाण स्तेष्वहंसुमना संवसाम । इत्यभ्याहिताग्निं सोदकमौषधमावसथप्रपद्ये रोहिण्यामूलेनवा यद्वापुण्योक्तम् ।६। इति वरवध्वोश्च गृहागमनेमार्गरक्षापरिभाषा ।

अथ वाग्दानपद्धतिः ॥

अथ ज्योतिःशास्त्रोक्ते शुभे लग्ने द्वौ चत्वारः अष्टौ वा प्रशस्तवेषाः पुरुषाः वरपित्रादिना सहिताः शकुनदर्शन पूर्वकं (अग्रतो दधियवपूरितपात्रसहितम्) कन्यागृहमेत्य तत्र कन्यापिता गृहसमन्तात् वाजित्रादिमङ्गलध्वनिपूर्वकं तान्गृहमानाय्य गंधाक्षतादिभिः सत्कृत्य जनवासं दद्यात् ॥ ततः कन्यापिता ज्योतिर्विदादिष्टे सल्लग्ने गणेशादिपञ्चांगपूजनं कृत्वा वरपितरं वात्सल्यस्नेहिपुरुषमाहूय, सच वरपिता कन्यापितरं प्रति प्रार्थयेत् ॥ तत्रमंत्रः—मत्पुत्रार्थं प्रयच्छ त्वं स्वकन्यां स्नेहपालिताम् । भार्यानुमतिं कृत्वा वाग्दानं देहि सत्वरम् ॥ अथदाता ब्रूयात्—भार्यानुमतिसहितोऽहं दास्यामीतिचोच्चै ब्रूयात् ॥ ततः कन्यादाता प्राङ्मुख उपविश्याचम्य देशकालौ स्मृत्वा करिष्यमाण विवाहांगभूतं वाग्दानमहं करिष्ये तदंगं गणपत्यादि पंचांग पूजनं च करिष्ये ॥ एवं गणेशादि पंचांगपूजनंकृत्वा, तत्र वरपितरं तत्प्रतिनिधिं वा प्राङ्मुखं उपविश्य, तं गन्धाक्षतादिभिः संपूज्य, किंचिन्मनोहरं जलपात्रं जलेनापूर्य स्थाल्यां हरिद्राखंड पंचकं हरपूगीफलानि यज्ञोपवीतंच प्रस्थमात्र तंडुलोपरिस्थापयित्वा मनोहरवस्त्रेणाछाद्य अग्रतः संस्थाप्य तत्र इन्द्राणीं सदासौभाग्यवतीं पूजयेत् ॥ ध्यानम्—इन्द्राणी मिन्द्रगृहिणीं सदासौभाग्यवर्द्धिनीम् । ध्यायामि मनसादेवीं कन्या सौभाग्यहेतवे ॥ आवाहनम्—आगच्छागच्छ कल्याणि देवेन्द्रप्राणवल्लभे । यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ॥ ऋक्—ॐ आदित्यैरास्ना सीन्द्राण्याऽउष्णीषः पूषासि धर्म्मायदीष्व ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः, इन्द्राणीहागच्छेहतिष्ठ, एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य, ॐ ई इन्द्राण्यैनमः इति मंत्रेण पाद्यादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत्—देवींद्राणि नमस्तुभ्यं देवेन्द्र प्रियभामिनि । सौभाग्यमायुरारोग्यं मत्कन्यायै

प्रयच्छतु वै ॥ धनधान्यं पशून्देहि जगन्तसमसन्ततिम् । यशोदेहि सुखंदेहि सर्वसिद्धि प्रदाभव ॥ इति संप्रार्थ्य आचार्य्यः मङ्गलपुरःसरं वारत्रयं गोत्रोचारणं कुर्यात् । अत्र कन्यापत्तीयाचार्याय, वरपिता दक्षिणां बहुमूल्यवस्त्रं (पर्वतीय देशेपु भगुलीति) तन्निष्क्रयीभूतं द्रव्यं स्वशक्तितो दद्यात् । ततः कन्यापिता पूर्वोक्तां स्थालीं हस्ते निधाय—ॐ वाचा दत्ता मया कन्या पुत्रार्थं स्वीकृता त्वया । कन्यावलोकनविधौ निश्चितत्वं सुखीभव ॥ पंडो व्यंगः पंक्तिवर्ज्यो रोगी चेद्वित्तवर्जितः । दत्ता ममां न दास्यामि तव पुत्राय कन्यकाम् ॥ अव्यंगे पतिते क्लीवे दशदोष विवर्जिते । इमां कन्यां प्रदास्यामि देवाग्नि द्विज सन्निधौ ॥ इति चोक्त्वा स्थालीजलपात्रसहितं द्रव्यं वरपित्रे दद्यात् । स्वस्तिइति प्रतिवचनम् ॥ वरपित्रोक्तिः—आविवाहाच्चते कन्यां रोगिणीं च कुचारिणीम् । दत्तामपिच त्यद्यामि कन्याते निश्चयादहम् ॥ ततो वरगृहागतं कण्ठाभरणादिभूषणम् सौभाग्यवती द्वारा मङ्गलवाद्यवेदध्वनिपुरस्सरं कन्यायै परिधापयेत् ॥ ततो भूयसीं दक्षिणां दत्वा, मंत्रतिलकपुरस्सरं आशीर्वादं गृह्णीयात् ॥

॥ इति विवाहातिरिक्तसमयोक्त वाग्दानपद्धतिः ॥

अथ गृहागतवरं प्रति वाग्दानधूल्यर्घपद्धतिः ॥

अथ च कन्या पिता वरं मार्गागतं श्रुत्वा वाग्दान सामग्रीं संपाद्य सुलिप्तायां भूमौ उपविश्य त्रिराचम्य दीपं प्रज्वाल्य गणेशमातृकाश्च संपूज्य कलशमपि वरुणविधिना संस्थाप्य संपूज्यच वरागमनंप्रतीक्षेत ॥ ततः कन्यापिता कियद्दूरं समाजसहागतं वरं विलोक्य स्वगृहान्नग्नपादः सन् स्वजनैर्बंधुपुत्रादि

भृत्यवर्गैसह: पंचघोष पूर्वकं कतिचित्पदानि गत्वा वरयानं स्वजनोपरि वाहयित्वा द्वारमानाय्य द्वारसमीपे यथाशक्ति स्वयमपि चोद्वावरं यानादवतार्य्य वरो मंत्रं पठन् श्रीफलं हस्ते निधाय, ३ॐ भद्रमस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तुत्वांसुराः सर्वे संपदः सुस्थिराभव ॥ इति मंत्रेण कन्यापितृहस्ते दद्यात् ॥ सच तं सादरं हस्ताभ्यां गृह्णीयात् । ततो मनोहरे क्वचित्पीठे पूर्वाभिमुखं वरमाश्वासयेत् ॥ ततः कन्यापिता तत्र पूर्वोक्तस्थले उत्तराभिमुख आचम्य प्राणायामत्रयं विधाय रक्षाबन्धनं कृत्वा आचार्यवरणार्थं वृहत्स्थालीपात्रं ताम्रादिघटं यथावित्तं कमंडलुं वा धौतवस्त्रंच संपाद्य, वरपक्षीयं ब्राह्मणमाहूय पादप्रक्षालनं कुर्यात—आपद्घनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितर्थार्पणकामधेनवः । अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥ ततो गंधम्–"गन्धद्वारामित्यादि" अक्षतपुष्पमालादिभिः आचार्यं सम्पूज्य प्रार्थयेत्—३ॐ आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः । तथात्वं मम कार्येऽस्मिन्नाचार्य्यो भव सुव्रत ॥ ततः पूर्वोक्तां वरणसामग्रींसम्मुखीकृत्य संकल्पं कुर्यात्—अद्येहेत्यादि देश कालौ संकीर्त्य अमुकराशिरमुकशर्माहं करिष्यमाण कन्यादानांगत्वेन तत्रादौ वाग्दानकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्र प्रवरान्वितममुकशर्म्माणं ब्राह्मणं वाग्दानादि विवाहावधि कर्मकर्तुमाचार्यत्वेनत्वामहं वृणे इति तद्द्रव्यं आचार्य हस्ते दत्वा कर्म कुरु ब्रूयात्– करवाणीति आचार्य्यो ब्रूयात् ॥ ततो वरस्य पाद प्रक्षालनं कुर्यात्—३ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्र पादाक्षिशिरोरुवाहवे । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणेनमः ॥ इति पादौ प्रक्षाल्य "गन्धद्वारेत्यादिना" तिलकं कृत्वा अक्षतपुष्पमालादिभिरलं कृत्य, हरिद्रारंजिततंडुलैः स्थालीमापूर्य्य तदुपरिपञ्चपूगीफलानिश्रीफलं हरिद्रापञ्चखण्ड यज्ञोपवीतानि यथावित्तद्रव्यंच संस्थाप्य कौशेयपीतवस्त्रेणाछाद्य सम्मुखीकृत्य इन्द्राणीं पूजयेत् । आवाहनम्–आगच्छागच्छ

कल्याणि शचीन्द्रप्राणवल्लभे। यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिराभव ॥ ॐ आदित्यै रास्नासीन्द्राण्यै उष्णीषः पूषासि घर्मायदीष्व:, इत्यावाह्य ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य ॐ इन्द्राण्यै नमः इति मंत्रेण पंचोपचारादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्---शचीदेवि नमस्तुभ्यं त्रैलोक्यैश्वर्यवंदिते। सौभाग्यमायुरारोग्यं मत्कन्यार्थं प्रयच्छत्वम् ॥ ततो वारत्रयं गोत्रोच्चारणं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्-अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य--अमुकराशिरमुकशर्माहं करिष्यमाण कन्यादानांगत्वेन वाग्दानकर्मणि अमुकगोत्रस्यामुक-प्रवरस्यामुकशाखिनोऽमुकवेदाध्यायिनोऽमुकशर्मणः प्रपौत्रीं, अमुकशर्म्मणः पौत्रीं, अमुकशर्म्मणः पुत्रीं, अमुकनाम्नीं श्री स्वरूपिणींवरार्थिनीं कन्यांज्योतिर्विदादिष्टे सुमुहूर्त्ते तुभ्यंदास्ये इतिवाचांसंप्रददे। ततः स्थालींद्रव्यसहितां वरहस्तेदद्यात्। स्वस्तीतिवरोब्रूयात्। ततोवरः कंठाभरणादिकं सौभाग्यद्रव्यं सुवासिनीद्वारा मंगलवाद्यवेदध्वनिपुरस्सरंकन्यायैपरिधापयेत्। (क्वचिद्देशेषु इदानींकन्याहस्तेनइन्द्राणीपूजनंभवति तदपिदेशाचारतः समीचीनम्) इति गृहागतवरंप्रतिवाग्दानविधिः।

अथ धूल्यर्घमधुपर्कपद्धतिः।

ततः कन्यापिता धूल्यर्घसामग्रींसम्पाद्याचम्य प्राणायामत्रयं विधाय भूतोत्सादनंकृत्वा संकल्पंकुर्यात्—अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यअमुकशर्म्माहंममास्याः कन्यायावीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हण पूर्वककन्यादानप्रतिग्रहार्थं गृहागतं स्नातकंवरं विष्टरादि मधुपर्कान्तैरर्चयिष्ये। संलग्नवाग्दानाभावे आचार्यंवृणुयात्। वरपत्नीयमाचामार्यमाहूय आपद्मन० इत्यादिना पादप्रक्षालनम्, गन्धद्वारेतितिलकं अक्षतपुष्पमालादिभिरलंकृत्य वासांगुलीयधौतवस्त्रादिवरणसामग्रीं हस्तेनिधाय अद्येहेत्यादि संकीर्त्य० अमुकराशिरमुकगोत्रप्रवरोऽहं करिष्यमाणकन्यादानकर्मणि कर्मकर्त्तुमेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्रममुक

शर्म्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेनाहंवृणे । वृतोऽस्मीति प्रत्युक्तिः आचार्यस्तु इति प्रार्थयेत् । अथ कन्या पिता वारणादि याज्ञीयकाष्टमयं हरिद्रादिरंजितं नूतनंचतुष्पादमासनं (पीढा) दर्भास्तीर्ण पीठासनमाहार्यार्ह साधुभवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तमित्युक्त्वा पूर्वाभिमुखं वरंकाष्टपीठोपरि स्थापयेत् । अर्चय इति वरोब्रूयात् ततोऽर्चकादन्य आचार्यो विष्टरोविष्टरो विष्टर इति वारत्रयंवदेत्, एवंसर्वत्र । तत उत्तराभिमुखोऽर्चको विष्टरमादयविष्टरः प्रतिगृह्यतामितिवदेत् । वरश्च ॐ प्रतिगृह्णामीतिवदेत् । उदगग्रंविष्टरंतूष्णीमादाय—ॐ वर्ष्मोऽस्मीत्यथर्वणऋषिरनुष्टुप्छन्दो विष्टरोदेवता उपवेशने विनियोगः । ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानामुद्यतामिवसूर्यः । इमंतमभितिष्ठामियोमां कश्चाभिदासति । अनेनमंत्रेण विष्टरमुदग्रमासने निधायतदुपरि उपविशति । ततः तप्तोदकेन पाद्यंपाद्यं पाद्यमित्यन्येनश्राविते, पाद्यंप्रतिगृह्यतामिति यजमानोवदेत् ॐ प्रतिगृह्णामीत्युक्त्वा तत्पात्रंभूमौनिधाय, ॐ विराजोदोहोसीति प्रजापतिर्ऋषि र्यजुश्छन्दः आपोदेवताः दक्षिणपाद प्रक्षालने विनियोगः (क्षत्रियादेः सव्यंपादमादौ प्रक्षालयेत्) अंजलौजलमादाय ॐ विराजो दोहोसि विराजोदोहमशीयमयि पाद्यायैविराजोदोहः । इति ब्राह्मणस्यादौ दक्षिणपादं प्रक्षाल्य,अनेनैव मंत्रेण वामपादं प्रक्षालयेत् पुनर्द्वितीयविष्टरमादाय अन्येन श्राविते विष्टरो विष्टरो विष्टरः, विष्टरं प्रतिगृह्यतामिति यजमनोक्तिः । वरः ॐ प्रतिगृह्णामीतिवदेत् । ॐ वर्ष्मोऽस्मीति अथर्वणऋषिः अनुष्टुप्छन्दो विष्टरोदेवता चरणाधः स्थापनेविनियोगः । तन्मंत्रः ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानामुद्यतामिवसूर्यः इमंतमभितिष्ठामि योमाकश्चाभिदासति । इति मंत्रेणआसने उदगग्रंपादयोरधस्तान्निदधाति ॥ ततो ऽर्घ्यकरणम् ❀ एवंसदर्भमष्टांगमर्घ्यं हस्तेनिधाय

❀ टि० जलदधि घृतंक्षीरं वदरी तण्डुलास्तिलाः । सिद्धार्थकास्तथादर्भा अर्घोऽष्टांग प्रकीर्तित । नाभौहस्तेप्रदातव्य स्कन्धेशिरसिवत्मके । जानुनोश्चोदरे दाणाष्टाङ्गार्घ्यों वर पूजने ।

यजमानोवरस्य वक्ष्यमाणअंगेपुदद्यात्। ततःअर्घोऽर्घोऽर्घः इत्यन्येन आविते अर्घ्यं प्रतिगृह्यतामिति यजमानोवदेत् ॐ आगतोसिवर श्रेष्ठः सर्वकामार्थसिद्धये। प्रतिग्रहसमर्थोसि गृहाणार्घ्यं नामोस्तुते वरः ॐ प्रतिगृह्णामीति वदेत् ततो वरः ॐ आपस्थ इति प्रजापति र्ऋषिर्यजुश्छन्द आपो देवता अर्घ्य ग्रहणे विनियोगः। ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान्कामानवाप्नवानि। इत्यर्घं पाणिभ्यां प्रतिगृह्य मूर्द्धपर्यन्तमानीय। ॐ समुद्रंव इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्द आपोदेवता अर्वाभिमंत्रणे विनियोगः। ॐ समुद्रंवः प्रहिणोमि स्वांयोनिमभिगच्छत। अरिष्टास्माकंवीरामापरा सेचिमत्पयः॥ इत्यनेन मंत्रेण ऐशान्यां निनयन्नभिमंत्रयतेवरः॥ अथान्येनाचमनीयम् आचमनीयं, आचमनीयमित्युक्ते, आचमनीयं प्रतिगृह्यतामिति यजमानो वदेत, वरः ॐ प्रतिगृह्णामीत्युक्त्वा यजमानदत्तामाचमनीयं प्रतिगृह्य, ॐ आमागन्निति परमेष्ठी ऋषिर्बृहतीछन्द आपोदेवता आचमने विनियोगः। ॐ आमागन्यशसासमास ॐ स्रृज वर्चसा। तंमाकुरुप्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्। इतिवरः सकृदाचम्य तूष्णीं स्मार्तमाचमनीयं कुर्यात वारत्रयम्। (अत्रकतिचित्पुस्तकेषु "असौजस्ताओ० असौयोवसर्पति०" मंत्रयोरध्ययन लिखितं तत्सूत्रअनुक्तत्वादप्रमाणम्) ततोदधिमधुघृत कांस्यपात्रस्थापितं द्वितीयकांस्यपात्रेणपिहितमादाय ॐ मधुपर्कोमधुपर्कोमधुपर्कः इत्यन्येनआविते यजमानः प्रतिगृह्यतामित्युक्त्वा, वरश्च-ॐ प्रतिगृह्णामीत्युक्त्वा, यजमान हस्तस्थितमुद्घाटितं मधुपर्कं वक्ष्यमाणमंत्रेण प्रतीक्षते—ॐ मित्रस्यत्वेति बृहस्पति र्ऋषिर्यजुश्छन्दो मित्रोदेवतादातृ करस्थमधुपर्क प्रतीक्षणे विनियोगः। ॐ मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रतीक्षे, इतिप्रतीक्ष्य, ॐ देवस्यत्वेति बृहस्पति रांगिरसऋषिर्यजुश्छन्दः सविता देवता मधुपर्क ग्रहणे विनियोगः। ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।

इति मधुपर्कं दातृहस्तात्संगृह्य सव्येपाणौकृत्वा दक्षिणहस्ता-नामिकया त्रिःप्रयौति मिश्रयति । ओ० नमःश्यावेति प्रजापति ऋपिर्यजुश्छन्दः सवितादेवता स्वहस्तस्थमधुपर्कवीक्षणे विनि-योगः । ओ० नमःश्यावास्यायान्नशनेयत्त अविध्दं तत्तेनिष्कृंतामि। इति मंत्रेण मधुपर्कं सकृत्प्रदक्षिणमालोड्य, अंगुष्ठाऽनामिकाभ्यां सकृत्तूष्णीं मधुपर्कं किंचिद्भूमौ क्षिपेत । एवं पुनर्द्विवारमालो-टनं निरुक्षणंच कृत्वा, ओ० यन्मधुन इति कुत्सऋपि जगतीछन्दो मधुपर्को देवता मधुपर्क प्राशने विनियोगः । ओ० यन्मधुनो मध-व्यं परम ॐ रूपमन्नाद्यं तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणा-न्नाद्येन परमोमधव्योऽन्नादोऽसानि । इति मंत्रेणानामिकया वार-त्रयंपुनः पुनर्मंत्रमुक्त्वा वरो प्राश्नीयात्, उच्छिष्टस्यैव पुनर्मंत्रव-त्प्राशने कोऽपिदोषोनास्ति ॥ सर्वंभुक्त्वावा प्राशितशेषं पूर्वस्या-मसंचरे क्षिपेत् *। तत आचमनम् ओ० ऋग्वेदा स्वाहा । द्विःस्मार्ता-चमनं कृत्वाजलं स्पृष्ट्वा वक्ष्यमाण मंत्रणांगान्यालभेत, वरः सजलम्—मुख कराग्रेण वाङ्म आस्ये अस्तु, तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां—नसोर्मे प्राणःअस्तु, युगपद्दक्षिणादिनासारंध्रयोः, अनामिका-गुष्ठाभ्यां युगपच्चक्षुषी अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु, मध्यमांगुष्ठाभ्यां दक्षि-णकर्णं—ओ०कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु, अनेनैव वामकर्णम् । कराग्रेण दक्षिणबाहुम्—ओ० बाह्वोर्मे बलमस्तु, एवं वामबाहुम् । युगपद्ध-स्तेनोरू—ओ० ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ ततः शिरःप्रभृति पादान्तानि सर्वाङ्गानि उभाभ्यां हस्ताभ्यामालभते । ओ० अरिष्टानिमेऽङ्गानि तनूस्तन्वामे सहसन्तु । ततो द्विराचमेत् ॥ (इदानीं सूत्रकारेण गवालंभनविधिरुक्तः सचकलियुगे वर्ज्यः—अस्वर्ग्यं लोकवि-द्विष्टं धर्ममप्याचरेन्नतु ॥ इति याज्ञवल्क्यादिस्मृतिषु दर्शनात् । यज्ञाधानं गवालंभं संन्यासं पलपैतृकम् । देवराच्च सुतोत्पत्तिः कलौपंचविवर्जयेत् ॥ इति पाराशरस्मृतेः । अतश्च मयाप्यस्मि-

* टिप्पणी—ताम्बूलेक्षुफलेचैव भुक्तस्नेहात्तु लेपने। मधुपर्केच सोमेच नोच्छिष्ट मनुरब्रवीत् ॥

न्पद्धतौ गवालंभस्य कलौनिषिद्धत्वा द्युत्सर्गस्यच यज्ञविवाह-योरभावत्वाद् गौरित्युच्चारणादि यज्ञविवाहयोः कलौनप्रवर्तते— अतोगवालंभं न लिखितम्) (गौरालभश्च कलिवर्जितेकाले भवतीतिदिक्) ॥ ततः समाचारादाचार्यप्रमुखाः वरपत्नीया एतद्ब्राह्मणकंडिकासप्तकमुच्चैःपठेयुः ॥ मंत्राः—ॐ अथवरं वृणीतेऽवलवद्धवैदेवाऽएतस्य ग्रहस्यहोमं प्रेप्संतितेऽस्माऽएतंवर ॐ समर्द्धयन्ति क्षिप्रेनऽइमंग्रहं जुहवदिति तस्माद्वरं वृणीते ॥१॥ अथवरं वृणीतेय ॐ हवैकंच सुपुवाणोऽवरं वृणीते सोऽस्मैसर्वः समृध्यते तस्माद्वरं वृणीते ॥२॥ अथ वाराहाऽउपानहाऽउपमुंचते । अग्नौहवैदेवा घृतकुम्भं प्रवेशयाञ्चक्रु स्ततोऽवराहः संबभूव तस्माद्वराहो मेदुरोघृताद्धि संभूतस्तस्माद्वराहेगावः संजानते । स्वमेवैतद्रसम्भिसंजानते । तत्पशूनामेवैतद्रसे प्रतितिष्ठति । तस्माद्वाराहाऽउपानहाऽउपमुंचते ॥३॥ सऽआजगाम गौतमोयत्र प्रवाहणस्य जैवले रास । तस्माऽआसनमाहार्योदकमाहारयांचकाराथहास्माऽअर्घंचकार ॥ ४ ॥ सहोवाच ऽवरंभवतेगौनमायदद्मइति । सहोवाच प्रतिज्ञातोमऽएपवरोयांतु कुमारस्यान्ते ऽवाचमभाषथास्तांमेऽब्रूहीति ।५। सहोवाचदैवेषुवै गौतमतद्वरेषुमानुषाणां ब्रूहीति ।६। सहोवाचविज्ञायतेहास्ति हिरण्यस्यापात्तं गोऽश्वस्यानांदासीनां प्रवाराणां परिधानानांमानो भवान् बहोरनन्तस्यापर्यन्तस्याभ्यवदान्योभूदिति । सवैगौतम-तीर्थेनाच्छासाऽइति । उपैम्यहंभवन्तमिति । वाचाहस्मैव पूर्वे ऽउपयन्ति ।७। इति पठित्वासहस्रशीर्षेति० पुरुषसूक्तेनवा ॐ नमोस्त्वनन्तयसहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोधरायते । सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणेनमः । इति गंधाक्षत पुष्पमालादिभिः वरं सम्पूज्य अद्येहेत्यादि० अमुकराशिरमुकोऽहं करिष्यमाण कन्यादानकर्मणिएभिः स्वर्णाङ्गुलीयवासोभिरग्नि बृहस्पतिदैवतैः कन्यादानप्रतिग्रहार्थं अमुकगोत्रंअमुकप्रवरं अमुकवेदाध्यायिनं, अमुकशाखिनं, अमुकशर्म्माणं विष्णुस्वरूपिणं

कन्यार्थिनं वरत्वेनत्वामहंवृणे । वरणसामग्रीं वरोगृहीत्वा ॐ वृतोऽस्मीतिब्रूयात्— ॐ कोदात्कस्माऽअदात्कामोऽअदात् कामायादात् कामोदाताकामः प्रतिगृहीताकामैतत्ते । ततो वस्त्रपरिधानंवक्ष्यमाणमंत्रैः कुर्यात् । ॐ जरांगच्छेति प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वासोदेवतावासः परिधानेविनियोगः । ॐ जरांगच्छपरिधत्स्ववासो भवाकृष्टीनामभिशस्तिपावा । शतंच जीवशरदः सुवर्चारयिंच पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः ॥ इत्यंगवस्त्रम् । ॐ याअकृन्तन्न इति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वासोदेवता उत्तरीयवस्त्र परिधाने विनियोगः । ॐ याअकृन्तन्नवयंय्याअतन्वत । यश्चदेवीस्तन्तूनभितोततंथ तास्त्वादेवीर्जरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः ॥ इत्युत्तरीयम् । परिधास्यैइत्यथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दो वासोदेवता अधोवस्त्रपरिधाने विनियोगः ॐ परिधास्यैयशोधास्यै दीर्घायुत्वायजरदष्टिरस्मि । शतंच जीवामिशरदः पुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्ये इत्यधोवस्त्रम् । अथोष्णीषम् (पगड़ी) ॐ युवासुवासा इति विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो यूपोदेवता उष्णीषपरिधानेविनियोगः ॥ ॐ युवासुवासाः परिवीतआगात्सउश्रेयान्भवतिजायमानस्तंधीरासः कवयउन्नयन्ति साध्योमनसादेवयंतः । इति शिरोवस्त्रंपरिधापयेत् । ततोवरायालंकरणानिदद्यात् । हिरण्यगर्भसंभूतंपवित्रंचांगुलीयकम् । श्रेयस्करंपवित्रंच प्रीणातुकमलापतिः कुंडलादिकान्— कुंडलेकटकेदिव्येहारं च मणिसंयुतम् । प्रीत्या तुभ्यंप्रदास्यामि गृहाणविष्णुरूपिणे ततः । शय्यादानम्—ॐ खट्वास्थापित सवस्त्रायैसालंकारायैशय्यायैनमः। पाद्यगंधादिभिः सम्पूज्य—अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्यअमुकराशिगोत्रप्रवरोऽहं गृहागतवरार्चनविधौ इमांसालंकारां सवस्त्रांपरितः पानीयपात्र ताम्रकांस्यलोहादि भांडयुतांसछत्रोपानहपादुकादिभिः परियुतां शय्यांअमुकगोत्रप्रवरान्विताय कन्यार्थिने ऽमुकशर्म्मणे वरायतुभ्यंसंप्रददे । इति शय्योपरिक्षिपेत् । अद्यपूर्वोच्चारि० अमुकोऽहं

शय्यादान प्रतिष्ठार्थं हिरण्यरजतमुद्रांवा अमुकशर्मणेवरायसंप्रददे इति प्रतिष्ठाद्रव्यं वरहस्तेदत्वाप्रार्थयेत् । अशून्यंशयनं नित्यमशून्यामुन्नतिश्रियम् । सौभाग्यंदेहिमेनित्यं शय्यादानेनकेशव । यानिकानिचपापानि अत्यावधिकृतानि च । ताम्रादिपात्रदानेन तानिनश्यन्तुकेशव । ततआचार्य्यादिभ्यो दक्षिणांदत्वा वरान्मंत्राशिषं गृह्णीयात् । ततो यजमानस्यतिलकम्—ॐ भद्रमस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु । रक्षन्तुत्वांसुराः सर्वेसंपदः । सुस्थिराभव । इति कृत्वा सफलपुष्पंवरोहस्तेधृत्वा आचार्योपठेत् मंत्राः–ॐ अग्नयेत्वामह्यं वरुणोददातु सोऽमृतत्वमशीयायुर्दात्रऽएधिमयोमह्यंप्रतिग्रहीत्रे ।१। ॐ रुद्रायत्वामह्यंवरुणो ददातुसोऽमृतत्वमशीयप्राणोदात्रऽएधिव्वयोमह्यं प्रतिग्रहीत्रे ॥२॥ ॐ बृहस्पतयेत्वामह्यंव्वरुणो ददातुसोऽमृतत्वमशीयत्वग्दात्रऽएधि मयोमह्यंप्रतिग्रहीत्रे ॥३॥ ॐ यमायत्वामह्यं व्वरुणोदातुसोऽमृतत्वमशीयहयोदात्रऽएधि व्वयोमह्यंप्रतिग्रहीत्रे ॥४॥ॐ कोऽदात् कस्माऽअदात् कामोऽदात् कामायादात् । कामोदाताकामः प्रतिग्रहीताकामैतत्ते । इति मंत्राशिषं प्रतिगृह्यसमाचाराद्वरस्य महानीराजनं कुर्यात् । (कतिचित्पर्वतीयप्रान्तेषु वरवरणविधि वरागमनसमयेकुर्वन्ति, अत्रप्रान्ते मधुपर्कान्तेकुर्वन्ति, पारंपार्यत्वान्मयापीदानीं संगृहीतः) ततो वरपक्षीय आचार्यो विवाहाग्नि सस्कारवेद्यांगत्वा तत्र वृद्धेर्दीमध्ये हस्तमात्रां वेदींकुशैः परिसमुह्यतान्कुशानैशान्यां परित्यज्य गोमयोदकेनोपलिप्य जलेनाभ्युदय स्रुवमूलेन प्रागग्रास्तिस्रोरेखा विलिख्य उल्लेखनक्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदमुध्दृत्य पुनर्जलेनाभ्युदय तूष्णीं कांस्यपात्रोप नीतं अग्निं स्वाभिमुखंवेद्यां स्थापयेत् ॐ नत्वेवामां इति बृहस्पतिर्ऋषि यजुश्छन्दोऽग्निर्देवता अग्न्यावाहने विनियोगः । ॐ नत्वेवामाॐसोघः स्यादधियज्ञमधिविवाहं कुरुतेवैश्वानर मह मावाहयिष्ये । ॐ भूः स्वः अग्ने इहागच्छेहतिष्ठ । ॐ प्रसीदयह्वे समार्ष्टकृशानोहव्यवाहन । अग्नेपावकशुभ्रार्यनामाष्टकनमोस्तुते

इति अग्निप्रार्थ्यतद्रक्षणार्थं तत्र काष्ठादिकं दत्वावेदीशाने दीपं प्रज्वाल्य तत्र कंचित्पुरुषंरक्षार्थं नियुञ्जेत्। इति धूल्यर्घपद्धतिः ॥

अथ विवाहपद्धतिः ॥

———:o:———

अग्निमुपसमाधायपाणिं गृह्णीयात् । इति पारस्करसूत्राद् धूल्यर्घान्ते कन्यापाणि ग्रहणात्पूर्वमेव । शालायामग्नि स्थापनंभवति । तच्च पूर्वोक्तविधिना अवश्यमेव कर्तव्यम् । कतिचिद्देशनिवासि ब्राह्मणाः पाणिग्रहणान्ते शालां गत्वाग्निस्थापनं कुर्वन्ति । तच्च सूत्रव्यत्ययंकर्म । अथकन्यापित्रादयः सुसज्जितां कन्यांगणेशादिपूजास्थानं नीत्वाकन्यादान सामग्रींसंपाद्य पश्चिमाभिमुखींकन्यांमातुः क्रोडे समुपवेशयित्वा उत्तराभिमुखोदाता स्वदक्षिणतः पत्नीपुत्रबांधवादिकान्कृत्वा । समुपविशेत् । *ततो विवाहलग्नात्पूर्वं वरपक्षीया बान्धवादयः कन्यापरितोषिकार्थमानीतं वस्त्रभूषणादि बहुमूल्यहारवेशरादि सौभाग्यद्रव्यं कास्मीरोद्भव द्राक्षाफलनारिकेलादि मिष्टान्नदार्थान् सौभाग्यपेटिकांच प्रथक् प्रथक् कतिपयपात्रेषु संस्थाप्य (वरडाल्ली) इति ख्याग्रतः कृत्वा स्वस्तिवाचनादि पंचवाद्यघोषपुरः सरंस्व मपिच वरस्तस्मिन्कन्यादानगृहस्थलेगत्वा स्वानीतं कन्यासम्मुखी कृत्यतत्रैवस्थापयेत्। कन्यापि प्रसन्नमनसातानिवस्तूनि हस्तेन स्पृष्ट्वास्वीकरोतु ततोवरःपूर्वाभिमुखो भूत्वा उपविशेत् ततः कन्यापिता तान्वरेणसहागतान्पुरुषान्गंधाक्षतादिभिरलंकृत्य संतोष्यचविसृजेत् । ततो वरकन्ययोरन्तराले-ॐ समं-

---

*उक्तं च प्रयोगदर्पणे सर्वत्रप्राङ्मुखोदाता प्रतिग्रहीउदङ्मुख. ।एष एव विधिर्नित्यः कन्यादाने विपर्ययः । उक्तं च स्मृतिसंग्रहे—व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थ्यां सहभोजने । व्रतदानेमखे श्राद्धेपत्नीतिष्ठति दक्षिणे । प्रादाने मधुपर्कस्य पत्न्यादाने तथैवच । कर्मस्वेतेषु वैभार्यां दक्षिणेतूपवेशयेत् । इति धर्म प्रवृत्तौ ।

जंत्विति भार्गवऋषि रनुष्टुप्छन्दः सूर्य्यो देवनान्तर पट करणे विनियोगः । ३० समंजन्तु विश्वेदेवाः समापोहृदयानिनौ । संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधातनौ ॥ इतिवरः पठित्वा अन्तर्पटं दद्यात ॥ ततःकन्यापिता पुनर्वराय वस्त्रयुग्मं कन्यापरिधानार्थं वस्त्रयुग्मं वरपरिधानार्थं वस्त्रचतुष्टयं च दद्यात्। अद्ये-हेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकोऽहं कन्यादान कर्मणः पूर्वाङ्ग-त्वेन अमुकशर्म्मणे वराय सद्रव्यं वस्त्रचतुष्टयं संप्रददे इति दद्यात् । वरश्च ३० स्वस्तीत्युक्त्वा प्रतिगृह्य तेषुवस्त्रद्वयं कन्यायै परिधानार्थं प्रयच्छति । वस्त्रद्वयं स्वय परिधत्ते । वरः स्वानीत वस्त्राभ्यां कन्या परिधानं कारयेत् । ३० जरांगच्छेति प्रजापति र्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वासोदेवता अधोवस्त्रपरिधाने विनियोगः । ३० जरांगच्छ परिधत्स्वव्वासो भवाकृष्टी नामभिशस्तिपावा । शतंच जीवशरदः सुवर्चारयि च पुत्राननुसंव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्ववासः ॥ इत्यधोवस्त्रपरिधत्ते । अथोत्तरीयं (शाटकाम्) ३० याऽअकृन्तन्निति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वासो देवता उत्तरीयशाटकापरिधाने विनियोगः । ३० याऽअकृन्तन्नवयन्या-ऽअतन्वत । याश्चदेवीस्तन्तूनभितो ततन्थ । तास्त्वादेवीजरसे संव्ययस्वायुष्मतीदं परिधत्स्व वासः ॥ ततोवरः स्वानीताभूषणं दद्यात—हिरण्यगर्भसंभूतमाभूषणमनोहरम् । भद्रप्रदं प्रदा-स्यामि गृहाणप्रीतिवर्धकम् ॥ ततः कन्यापक्षीयाचार्यो वरानीत सौभाग्यद्रव्यसिन्दूरादिभिः कन्यामलंकृत्य सौभाग्यपुटकं (सुहागपूड़ा) वक्ष्यमाणमन्त्रेण कन्याशिरसि संधारयेत—३० सौभाग्यजनकं द्रव्य रक्षासूत्रेण वेष्टितम् । सौभाग्यमस्तु ते कन्ये धारणाच्छरदःशतम् ॥ इतिमंत्रेण केषेषु बध्नीयात ॥ अथवरः कन्यापित्रादत्तं वस्त्रद्वयं स्वयं परिधत्ते—३० परिधास्यै इत्याथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दो वासो देवता वस्त्रपरिधाने विनियोगः ३० परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वा जरदष्टिरस्मि । शतंच जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोष मभिसंव्ययिष्ये ॥ अथोत्तरी-

यम्—ॐयशसामेत्या थर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दो लिंगोक्ता देवता उत्तरीय परिधाने विनियोगः। ॐ यशसामाद्यावापृथिवी यश- सेन्द्रा बृहस्पतिः। यशोभगश्च माऽविन्दयशो मा प्रतिपद्यताम्॥ अथ कन्यापिता एनौ परिहिताहतसदशवस्त्रौ कन्यावरौ समंज- यति। परस्परं समंजयेथामिति प्रैषेण। ततो वरः कन्यासम्मुखी- भूत्वा, ॐ समंजन्त्वित्याथर्वण ऋषि रनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता परस्परसमंजने विनियोगः। ॐ समंजन्तु विश्वेदेवाः समापौ हृदयानिनौ। सम्मातरिश्वा सन्धाता समुदेष्ट्री दधा- तुनौ॥ इति सम्मुखी कृत्य, ततः कन्यावरयोर्हस्तेन देशाचाद् गणेशादि पश्चाङ्ग देवतानां पूजनं कारयितव्यम्। इदानीमेव वरः कन्यापक्षीयायाचार्याय कलशद्रव्यं बहुधनं वित्तशाठ्यरहितं हस्तेधृत्वा संकल्पं कुर्यात्—ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकराशिरमुकोऽहं आवयोर्वरकन्ययोः ज्योतिशास्त्रानुकूलाष्ट भकूटादिसंमेलने न्यूनातिरिक्तवैधव्यादिदाराहयोगाना मनिष्ठ निरसनार्थं तथाच दशायामन्तर्दशायां गोचरेऽष्टकवर्गैनैर्याणे वर्षफलेऽपिवा यत्रकुत्र स्थानस्थितानां आदित्यादिनवग्रहाणां दुष्टानां दुष्टदोषो पशान्त्यर्थं शुभानां शुभफलाधिक्य प्राप्तये इदं- सुवर्णं सुवर्णनिष्क्रयी भूतं रजतद्रव्यं वा कन्यापक्षीय पुरोहि- ताय अमुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे। ततो ब्राह्मण आशीर्वादं दद्यात्। अथच वंशगोत्रसापिंड्यनिश्चयार्थं गोत्रोच्चारःकर्तव्यः (तत्रक्रममाह—ऋष्यशृङ्गः—वरगोत्रस- मुच्चार्य प्रपितामह पूर्वकम्। नामसंकीर्तयेद्विद्वान्कन्यायाश्चैवमे- वहि॥ कारिकाकारश्च--उच्चारः प्रातिलोम्येनपित्रीणां सर्वकर्मसु। कन्यादाने यज्ञवृत्ता वानुलोम्येन सस्मृतः॥) तत्रादौ कन्यापक्षी याचार्यो मंगलाचरणपठनपूर्वकं वरस्य गोत्रप्रवरादिकं पृच्छेत्— अविरलमदधाराधौतकुम्भः शरण्यः फणिवरवृतगात्रः सिद्धसा- ध्यादिवन्द्यः। त्रिभुवनजनविघ्नध्वान्तविध्वंसदक्षोवितरतुगज- वक्त्रः संततं मंगलंवः॥ किंगोत्रस्य किंप्रवरस्य किंशाखिनः किं

वेदाध्यायिनः किं शर्मणः प्रपौत्राय, किंशर्म्मणः पौत्राय, किं शर्म्मणः पुत्राय आयुष्मते कन्यार्थिने विष्णुस्वरूपिणे वराय ॥ ततो वराचार्यो मङ्गलंपठित्वोच्चारयति—दोर्व्यांतदन्तखंडः सकलसुरगणाडम्बरेषुप्रचण्डः, सिन्दूराकीर्णगंडः प्रकटितविलसच्चारुचान्द्रीयखंडः। गंडस्थानन्तघंडः स्मर हरतनयः कुण्डलीभूतशुंडो विघ्नानां कालदंडः सभवतुभवतां भूतये वक्रतुण्डः ॥ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुक वेदाध्यायिनः अमुकशर्मणः प्रपौत्राय, अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्म्मणः पौत्राय, अमुकगोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुक वेदाध्यायिनः अमुकशर्म्मणः पुत्राय, आयुष्मते विष्णुस्वरूपिणे कन्यार्थिने अमुकनाम्नेवराय। पृच्छेत्—किंगोत्रस्य किंप्रवरस्य किंशाखिनः किंवेदाध्यायिनः किंशर्म्मणः प्रपौत्रीं किंशर्म्मण' पौत्रीं किंशर्म्मणः पुत्रीं आयुष्मतीं श्रीस्वरूपिणीं वरार्थिनीं किंनाम्नीं कन्याम्। अथ कन्यापक्षीयाचार्यो मंगलं पठित्वा प्रत्युत्तरं ददाति—शैवालश्रेणिशोभां दधतिहरजटावल्लयो हस्तयस्यास्तद्धासोल्लास वेल्लद्वरशफरतुलां यत्रधत्तेकलावान् ॥ उन्मीलद्भोगिभोगावलिसुभग सिताम्भोजसंभावितात्मा गङ्गानंगारिसंगा महतितवविधौमंगलान्यातनोतु ॥ अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुक शाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्म्मणः प्रपौत्रीम्, एवं अमुकशर्म्मणः पौत्रीम्, अमुकशर्म्मणः पुत्रीं आयुष्मतीं श्रीस्वरूपिणीं वरार्थिनीं अमुक नाम्नीं कन्याम् ॥ पृच्छेत्—किंगोत्रस्य किंप्रवरस्य किंशाखिनः किंवेदाध्यायिनः किंशर्म्मणः प्रपौत्राय, किंशर्म्मणः पौत्राय, किंशर्म्मणः पुत्राय आयुष्मते विष्णुस्वरूपिणे कन्यार्थिने किंनाम्ने वराय ॥ अथ वराचार्यो पुनः मङ्गलं पठित्वा उत्तरयेत्पृच्छेच—सकलभुवनबन्धौर्वैरमिन्दोः सरोजैरनुचितमितिमत्वा गाःस्वपादारविन्दम्। घटयितुमिवमायी यो जयत्याननेन्दौ वटदलपुटशायी मङ्गलं वो ददातु ॥ अमुकगोत्रस्य

अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्म्मणः प्रपौत्राय, एवं पौत्राय, एवं पुत्राय आ० वि० कन्या० अमुक शर्म्मणे वराय। किंगो० किंप्र० किंशा० किं वेदा० किंशर्म्मणः प्रपौत्रीं, पौत्रीं पुत्रीं आ० श्रीस्व० वरा० किनाम्नीं कन्याम्। कन्यापक्षीयाचार्यः पठित्वोत्तरयेत्—कस्त्वं ब्रह्मन्नपूर्वः क्वचतव वसतिर्याखिला ब्रह्मसृष्टिः कस्तेनाथोह्यनाथः क्वचतव जनको नैवतातं स्मरामि। किन्ते भीष्टं ददामि त्रिपदपरिमिताभूमि रल्पंकिमेतत्त्रैलोक्यं भावगर्भं बलिमिदमवदद्वामनो वःसपायात्॥ अमुकगोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्म्मणः प्रपौत्रीं, पौत्रीं, पुत्रीं आयुष्मतीं श्रीस्वरूपिणीं वरार्थिनीं अमुकनाम्नीं कन्याम्। पृच्छेच्च—किंगो० किंप्र० किंशा० किंवेदा० किंशर्म्मणः प्रपौत्राय, किंश० पौत्राय, किंश० पुत्राय आ० वि० कन्या० अमुकनाम्ने वराय॥ वरपक्षीयः०—उत्तुंगस्तनमंडलोपरिलसत्प्रालम्बमुक्तामणे रन्तर्बिम्बितामिन्द्रनीलनिकरच्छायानुकारिद्युतिः। लज्जाव्याजमुपेत्यनम्रवदना स्पष्टमुरारेर्वपुः पश्यन्तीमुदितामुदेऽस्तुभवतां लक्ष्मीर्विवाहोत्सवे अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकशर्म्मणः प्रपौत्राय अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनःअमुकशर्म्मणः पौत्राय अमुकगोत्रस्य अमुककशर्म्मणः पुत्रायआयुष्मते विष्णुस्वरूपिणे कन्यार्थिनेवराय। पृच्छेत् किं गो० किं प्र० किं शा० किं वेदा० किं शर्म्मणः। प्रपौत्रीम् एवं किंगो० किंप्र० किंशा० किंवेदा० किं शर्म्मणः पौत्रीम् एवंपुत्रीं आयुष्मतीं श्रीस्वरूपिणीं वरार्थिनीं किंनाम्नीं कन्याम्। ततः कन्यापक्षीयाचार्यो ब्रूयात्—प्रत्यासन्नविवाहमंगलविधौ देवार्चनव्यग्रयादृष्ट्वाग्रे परिणेतुरेवलिखितां गंगाधरस्याकृतिम्। उन्मादस्मितरोषलज्जितधिया गौर्य्याकथंचिच्चिरद् वृद्धस्त्रीवचनात्प्रियेविनिहितः पुष्पांजलिः पातुवः। अमुकगोत्रस्य अमुक प्रवरस्य अमुकशाखिनः अमुकवेदाध्यायिनः अमुकशर्म्मणः प्रपौत्रीम् एवं अमुकशर्म्मणः पौत्रीम्, अमुकशर्म्मणः पुत्रीं आयुष्मतीं

श्रीस्वरूपिणीं वरार्थिनीं अमुकनाम्नींकन्याम् । एवंवारत्रयं गोत्रोच्चारं कृत्वा उभयपक्षीयौ आचार्य्यौ आशीर्वादंपठेताम् । यंशैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेतिवेदान्तिनो वौद्धावुद्ध इति प्रमाणपटवःकर्त्तेतिनैय्यायिकाः । अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेतिमीमांसकाःसोयंवोविदधातु वांच्छितफलं त्रैलोक्यनाथोहरिः । याहग्जानासि जाम्बूनदगिरिशिखरे कान्तिमिन्दोः कलानामित्यौत्सुक्येन पत्यौस्मितमधुर मुखाम्भोरुहंभाषमाणे । लीलांदोलायमानश्रुति कमलमिलद् भृंगसंगीतसाक्षी पायादम्भोधिजायाः कुसुमशरकला नाट्यनान्दीनकारः ततः कन्यापिता ददानि ददानिददानीति ब्रूयात । ततो गोत्रोच्चारणदक्षिणांदद्यात् ततो लग्ने समायाते ग्रहदानानिकुर्यात् । वरः अद्येहामुकोऽहं विवाहकर्मणि इदानीं अमुकलग्नोवधिकानां यत्रकुत्रचित्स्थानस्थितानां दुष्टग्रहाणां दुष्ट फल निरासपूर्वकं शुभग्रहाणां शुभफलप्राप्तये इदंसुवर्णं तन्निष्कयीभूतं द्रव्यंवा अमुकगोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यंदास्ये ॐ तसन्नमम ततः सुलग्नेसमायाते इदानींकन्यां नासिकाभूषणाभ्यामलंकृतां कुर्यात् मंत्रः ॐ भद्रंकर्णेभिरित्यादि मंत्रै भूषयित्वा पाद्यगंधाक्षतपुष्पमालादिभिः वक्ष्यमाणमंत्रैर्वा श्रीसूक्तेनतांपूजयेत् ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावाहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूप मश्विनौ व्यात्तम् इष्णन्निषाणामुंम्मऽइषाण सर्वलोकंम्म ऽइषाण ॥१॥ ॐ अम्बे अम्बिके ऽअम्बालिके नमानयतिकश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥२॥ ॐ समख्ये देव्याधिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा । ममआयुः प्रमोषीर्मोऽअहं तववीरं विदेय तवदेविसन्दृशि ॥३॥ इति मंत्रैः कन्यां सम्पूजयेत्

अथ कन्यादानसंकल्पः ।

।अथ कन्यापिता सुवर्णजलतिलतुलसी कुशचन्दनाक्षत बदरीपुगदूर्वादिभिः पूरितंशंखं स्वदक्षिणहस्ते निधाय तदुपरि

प्रत्यङ्मुखोपविष्टायाः कन्यायादक्षिणांगुष्ठंगृहीत्वा कांस्यपात्रोपरि कृत्वा साच कन्यामाता स्वपतिदक्षिणस्थाऽविच्छिन्नां वारिधारां तत्र दद्यात्—ॐ स्वस्ति, इतिवरोब्रूयात् (ॐ स्वस्तीतिवरो ब्रूयाद्धर्मेचेति वधूपितेति संस्कारगणपतौ)। श्री गणेशाय नमः,, श्रीस्वेष्टदेवतायैनमः, ॐ पितृभ्योनमः, ॐ नमः श्रीपुराणपुरुषो त्तमाय, संकल्पः—ॐ नमः परमात्मने श्रीमुकुन्दसच्चिन्दानन्दस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्यमायाशक्तिविजृम्भितामायायोगात्। कालकर्म स्वभावाविर्भूतमहत्तत्त्वोदिताऽहङ्कारोद्भूत वियदादिपंचमहाभूतेन्द्रियदेवतानिर्मितेऽण्डकटाहेचतुर्दशलोकात्मके लोके लीलया तन्मध्यवर्त्तिभगवत श्रीनारायणस्यब्रह्मणः सृष्टिंकुर्वतस्तदुद्धरणाय प्रजापतिप्रार्थितस्याच्युतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्यमहाजलौघमध्ये, परिभ्रममाणानामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमे अव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते, अस्मिन्महतिब्रह्मांडखंडे, आधारशक्तिश्रीमदादिवाराहदंष्ट्राग्रविराजिते, कूर्मानन्तवासुकि तक्षककुलिककर्कोटक पद्ममहापद्मशंखाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे, ऐरावतपुंडरीकवामन कुमुदांजनपुष्पदंत सार्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजप्रतिष्ठितानामतलवितलसुतलतलातलरसातलमहातलपातललोकानामुपरिप्रतिष्ठिते, भूर्लोकभुवर्लोक स्वर्लोकमहर्लोक जनोलोकतपोलोकसत्य लोकाख्य सप्तलोकानामधोभागे, चक्रवालशैल महावलयनागमध्यवर्त्तिनो महाकालमहाफणिराजशेषस्य, सहस्रफणानांमणिमंडलमंडिते, दिग्दन्तिशुंडोत्तम्भिते, अमरावत्यशोकवती भोगवतीसिद्धवती गान्धर्ववती काञ्च्यवन्त्यलकावती यशोवतीतिपुण्यपुरीप्रतिष्ठिते इन्द्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायु कुबेरेशानाष्टदिक्पालप्रतिष्ठिते, धरध्रुवाधरसोमयाप्रभंजनानल प्रत्यूपप्रभासाख्याष्ट वसुभिर्विराजिते, हरत्र्यंबककपर्द्द मृगव्याधापराजित कपाली भैरव शम्भुकपर्दिवृषाकपिबहुरूपाख्यैकादशरुद्रैः संशोभिते, रुद्रोपेन्द्रसवितृ भातृत्वष्टृर्यमेन्द्रेशान भगमित्रपूषाख्य द्वादशादित्यप्रकाशिते,, ।

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहार धारणाध्यान समाध्यष्टाङ्गयोग-निरतवशिष्ठवालखिल्य विश्वामित्र दक्षकात्यायनकौण्डिन्य गौत्तमाङ्गिरस पाराशर्यव्यासवाल्मीकिशुकशौनक भरद्वाजसनक सनन्दनसनातनसनत्कुमारनारदादि मुख्यमुनिभिः पवित्रिते, लोकालोकाचलवलयिते, लवणेक्षुरससुरासर्पिर्दधि क्षीरोदकयुक्त सप्तार्णवपरिवृते, जम्बूप्लक्ष शाल्मलिकुशक्रौंच शाकपुष्कराख्य सप्तद्वीपयुते, इन्द्रकांस्यताम्रग भस्तिनागसौम्यगन्धर्वचारणभार· तेति नवखंडमंडिते, सुवर्णगिरिकर्णिकोपेत महासरोरुहाकार पञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्णभूमंडले, अयोध्यामथुरामाया काशी काञ्च्यवन्तिकाद्वारावतीतिसप्तपुरीप्रतिष्ठिते, महामुक्तिप्रदस्थले,, शालग्रामशंभलनन्दिग्रामेतिग्रामत्रयविराजिते, चम्पकारण्यवदरि-कारण्यदंडकारण्यार्बुदारण्यधर्मारण्य पद्मारण्यगुह्यारण्यजम्बुका-रण्य,'विन्ध्यारण्यद्राक्षारण्यनहुवारण्यकाम्यारण्य द्वैतारण्यनैमि-षारण्यादीनांमध्ये, सुमेरुनिषधकूट शुभ्रकूट श्रीकूट हेमकूट रजत कूट चित्रकूट किष्किन्धाश्वेताद्रिकूट हिमविन्ध्याचलानां, हरिवर्ष किंपुरुषवर्षयोश्चदक्षिणे, नवसहस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखंडे, । मलयाचलसह्याचलविन्ध्याचलानामुत्तरेण, स्वर्णप्रस्थचंद्रप्रस्थसू-क्तिक आवन्तकरमणक महारमणकपांचजन्य सिंहलङ्काऽशोकव-त्पलकावती सिद्धवती गांधर्वत्यादि पुण्यपुरीविराजिते, नवखं डोपद्वीपमंडिते दक्षिणावस्थितरेणुकाद्ध्यसूकर काशीकाञ्ची कालिकावटेश्वर कालञ्जर महाकालेतिनवोषरयुते, द्वादशज्योतिर्लिङ्ग भागीरथी गौमती क्षिप्रायमुना सरस्वती नर्मदा तापीपयो-ष्णी चन्द्रभागा कावेरी मन्दाकिनी प्रवराकृष्णावेण्याभीमरथी तुङ्गभद्रामलापहा कृतमालाताम्रपर्णी विशालाक्षीचंचुला चर्मण्य-तीवेत्रवतीभोगवती विशोकाकौशिकी गंडकीसरयू सर्वपापहा-रिणी शोणाभवनाशिनीत्यनेक पुण्यनदीभिर्विलसिते ब्रह्मपुत्र सिन्धुनदादि परमपवित्रजलविराजिते, हिमवन्मेरु गोवर्धनक्रौ-ञ्चचित्रकूट महेन्द्रमलय सनेन्द्रकील पारियात्राद्यनेक पर्वतसम

न्विते, मतंगमाल्यकिष्किन्ध ऋष्यशृङ्गेति महानगसमन्विते,, । अंगवंगकलिंग काश्मीरकांबोजसौवीर सौराष्ट्र महाराष्ट्रमगधने पालकेरल चोरलपांचालगौड मालवमलयसिंहलद्रविडकर्नाटक ललाटकरहाटवरहाटपानाट पाश्चनिषधमागध आन्ध्रदशार्णव भोजकुरुगान्धारविदर्भ विदेहबाल्हीकबर्बरकैकेय कोशलविराट शूरसेनकोङ्कणकैकट मत्स्यमद्रपारसिक खर्जूरयावनम्लेच्छजालंधरे-ति सिद्धवत्स्यन्यदेश विशेषभाषा भूमिपालविचित्रिते,इलावृतकुरु-भद्राश्वकेतुमाल किंपुरुषरमणक हिरण्मयादि नववर्षाणांमध्ये भरतखण्डे, कोकनहिरण्यशृङ्गकुब्जार्बुदमणिकर्णीवट शालग्राम सूकरमथुरागया निष्क्रमण लोहार्गलपोतस्वामि प्रभासवदरीति चतुर्दशगुह्यविलसिते जम्बूद्वीपे कुरुक्षेत्रआदि समभूमध्यरेखायाः पूर्वदिग्विभागेकुलमेरोर्दक्षिण दिग्विभागे, विन्ध्यस्योत्तरभागे गंगाद्वारतोत्तरदिग्विभागे—कर्मभूमौ व्यासवसिष्ठादि परमभा-गवतमुनिवराश्रमानुपचित्रिते हिमवत्पर्वतैकदेशे, (अलकनन्दा भागीरथी यमुनासरस्वती मंदाकिनी क्षीरगंगा स्वर्गारोहिणी ऋषिगंगा कांचनगंगा गरुडगंगा धवलापिंडरगंगा, तथाकेदारक्षे-त्रांतर्गत वासुकी मंदाकिनी कालीगंगा भिलंगनाद्यनेक सुरधुनी सहस्रपुण्यधाराप्रविलसिते,मायापुरीगंगाद्वारकुब्जाम्रतपोवनश्री क्षेत्रादि नानाक्षेत्रसंशोभिते,देवप्रयाग रुद्रप्रयाग स्कन्दप्रयाग क-र्णाश्रमप्रयागविष्णुप्रयागगणेशप्रयागेति महाप्रयागनानानदीनद संगमजनितोपप्रयागसंवलितेकेदारखंडे केदारनाथ मदमहेश्वर वि-श्वनाथतुंगनाथरुद्रनाथ कल्पनाथकमलनाथ भिल्लेश्वराद्यनेकशिव-लिंगालंकृतेउर्वशी नवदुर्गानन्दाराजराजेश्वरी, भुवनेश्वरी, बाला-त्रिपुरसुन्दरी, चण्डिकाछिन्नमस्ता,मार्गदायी कालिकामहिषम-र्दिनीगौरीउमामाहेश्वर्यादि शक्त्याधृते,श्रीनरनारायणक्षेत्रबदरी-श्वर नरनारायण कुबेरोध्दव नारदगरुड घण्टाकर्ण कैलासनृसिंह योगेश्वर केदार ब्रह्मकपालशिला नारदशिला वाराहशिला नृसिंह शिला मार्कंडेयशिला संगतक्षेत्राग्निनारदीय प्रह्लादकूर्म वसो-

धीरादि परमपावनतीर्थ विलसितेबदरिकाश्रमे,, अलकनन्दाया वामकूले दक्षिणकूले वा पिंडरनद्याश्चोत्तरकूले दक्षिणकूले वा अलकनन्दा भागीरथ्योरंतराले अमुक स्थाने (ग्रामे) मत्स्यकूर्म वराहनृसिंह वामन परशुराम रामकृष्णबुध्दकल्कीतिदशावताराणांमध्ये बौध्दावतारे,, नानादेवतीर्थसरिद्भिः पावितेनवसहस्र-योजनविस्तीर्णभारतवर्षे,, निखिलजन पावन परमभागवतोत्तम शौनकादि निवासिते नैमिषारण्ये आर्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तैक-देशे, सूर्यान्वयभूभृत्मनिष्ठिते श्रीमन्नारायण नाभिकमलोद्भूत-सकलजगत्स्रष्टुः परार्ध्दद्वयजीविनोब्रह्मणोद्वितीयपरार्ध्दे,, एक-पंचाशत्तमेवर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नोद्वितीययामे तृतीयेमुहूर्त्तेरथंतरादि-द्वात्रिंशत्कल्पानांमध्येऽष्टमे श्रीश्वेतवाराह-कल्पे,, स्वायंभुवादि चतुर्दशमन्वन्तराणांमध्ये सप्तमेवैवस्वत-मन्वन्तरे,, कृतत्रेताद्वापरकलिकसंज्ञकानांचतुर्णां युगानांमध्ये,, वर्त्तमाने अष्टाविंशतितमेकलियुगे प्रथमचरणे, श्रीमन्नृपविक्रमार्काब्द,संख्यागमेन चांद्रसौरनाक्षत्रादि प्रकारेणागत,नांप्रभवादिषष्टि सम्वत्सराणांमध्ये, अमुकनाम्निसम्वत्सरे,, उत्तर (वा दक्षिण) गोलावलंबिनि श्रीमार्त्तण्डमंडले, अमुकर्त्तौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे, अमुकराशिस्थेसूर्ये, चन्द्रे, भौमे, बुधे, गुरौ, भृगौ, शनौ, राहौ, केतौ,, यथायथा स्थानस्थितेषुसत्सु, एवंगुणविशेषेण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ,, अमुकगोत्रप्रवरोऽमुकराशिः सपत्नीपुत्रपौत्रादिपरिवारयुतोऽमुकशर्माहं, (वा वर्मा, वा गुप्तोऽहम्) मम—(महापापोपपापाभ्यां नानायोनिषुयत्कृतम् । बालभावेनयत्पापं क्षुतृडर्थंचयत्कृतम् ॥ आत्मार्थंचैवयत्पापंपरार्थंचैवयत्कृतम् ॥ तीर्थेषुचैवयत्पापंगुर्ववज्ञाकृतंचयत् ॥ रागद्वेषादिजनितंकामक्रोधेनयत्कृतम् ॥ हिंसानिद्रादिजंपापं भेददृष्ट्याचयन्मया । देहाभिमानजंपापं सर्वदायन्मयाकृतम् । भूतंभव्यंचयत्पापं भविष्यंचैवयत्कृतम् ॥ शुष्कमार्द्रंचयत्पापं जानता-

जानताकृतम् ॥ महल्लघुचयत्पापं तन्मेक्षिप्रंप्रणश्यतु ॥ ब्रह्महा-मद्यपस्तेयी तथैवगुरुतल्पगः । महापापानिचत्वारितत्संसर्गीतु पंचमः ॥ अनाहिताग्नितापण्य विक्रयःपरिवेदनम् । इन्धनार्थेद्रुमच्छेदःस्त्रीहिंसौषधि जीवनम् ॥ कृमिकीटादिहननंयत्किंचित्प्राणिहिंसनम् । मातापित्रोरशुश्रूषातद्वाक्याकरणंतथा ॥ परकार्यापहरणं परद्रव्योप जीविनम् । ततोऽज्ञानकृतंवापि कायिकंवाचिकंतथा । मानसंत्रिविधंपापंप्रायश्चित्तैरनाशिनम् । तत्सर्वंनाशयेःक्षिप्रंकन्यादानेन केशव ॥ (स्त्रीणांविशेषः)—पाणिग्रहणमारभ्य स्वकर्मापरिपालनम् ॥ इन्द्रियाभिरतिःपुंसु नानायोनिषुयाभवेत् । कृमिकीटादिहननं पंक्तिभेदादिकं तथा । स्पृष्टास्पृष्टमनाचारं मनसादोषकल्पनम् । तत्सर्वंनाशयेः क्षिप्रंकन्यादाने न-केशव)। इत्यादि प्रकीर्णपातकानां एतत्कालपर्यन्तं संचितानांलघु स्थूलसूक्ष्माणां च निःशेषपरिहारार्थं,, तथाच—आध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकतापत्रयनिराकरणाय,, ज्ञाताज्ञातमनोवाक्कायकर्मजनिताखिलपापापनोदनाय च कन्यारोमसमसंख्यकशतसहस्रगुणितदिव्यवर्षनिरतिशयसानन्दगोलोकावाप्तयेऽनेन - वरेणास्यांकन्यायामुत्पादयिष्यमाणसन्तत्या आत्मनोमातृपितृवंशजान्द्वादशपूर्वान्द्वादशपरान् आत्मनश्चपवित्रीकर्त्तुकामः कन्यादानकल्पोक्तज्योतिष्टोमातिरात्रसमफलावाप्तिकामः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये श्रीधर्मस्वरूपीस्वेष्टदेवताप्रीतयेच,, अमुक गोत्रस्यत्र मुकप्रवरस्य अमुकशाखिनः,अमुकवेदाध्यायिनोऽमुकशर्म्मणःप्रपौत्राय ॥ अमुकगोत्रस्यअमुकप्रवरस्यअमुकशाखिनोऽमुकवेदाध्यायिनो ऽ मुकशर्म्मणःपौत्राय । अमुकगोत्रस्यामुकप्रवरस्या मुकशाखिनोऽमुकवेदाध्यायिनो ऽमुकशर्म्मणःपुत्राय आयुष्मते विष्णुस्वरूपिणे कन्यार्थिने, अमुकगोत्रायामुकप्रवराय ामुकवेदाध्यायिने अमुकशर्म्मणे वराय,,—अमुकगोत्रस्यअमुकप्रवरस्य,अमुकशाखिनोऽमुकवेदाध्यायिनोऽमुकशर्म्मणःप्रपौत्रीं । अमुकगोत्रस्यअ मुकप्रवरस्य अमुकशाखिनो ऽमुकवेदाध्यायिनः

अमुकशर्म्मणः पौत्रीम् । अमुकगोत्रस्य अमुकप्रवरस्य अमुकशाखिनो ऽमुकवेदाध्यायिनो ऽमुकशर्म्मणः पुत्रीं आयुष्मतीं श्रीरूपिणींवरार्थिनीं, अमुकीनाम्नीमिमांकन्यां यथाशक्त्यलंकृतां यथा शक्त्युपकल्पित यौतकयुतां प्रजापतिदैवतां, देवाग्निगुरुब्राह्मणसन्निधौ, अग्न्यादिसाक्षिकनयासहधर्माचरणायतुभ्यमहं संप्रददे,, प्रतिगृह्णातुभवान ॥ इतिदाताउत्थाय *सकुशतुलसीदलसुवर्णयुतंशंखं कन्यादक्षिणांगुष्ठं वरदक्षिणहस्तेसमर्पयेत,, सचकन्यांगुष्ठमंचलग्रंथिकरणात्पूर्वनमुञ्चेत,, दातोत्थायैवदानवाक्यानिपठेत—ॐ कन्यांकनकसंपन्नामनेकाभरणैर्युताम् । दास्यामि विष्णवेतुभ्यं ब्रह्मलोक जिगीषया । विश्वम्भरःसर्वभूताःसाक्षिण्यःसर्वदेवताः ॥ इमांकन्यांप्रदास्यामि पितॄणांतारणायच ॥ ततःप्रार्थयेत—गौरींकन्या मिमांविप्रयथाशक्ति विभूषिताम् ॥ गोत्रायशर्म्मणे तुभ्यंदत्तांविप्रसमाश्रय । कन्यालक्ष्मीः समाख्याता वरोनारायणःस्मृतः । तस्मात्कन्या प्रदानेन कृष्णोमेप्रीयतामिति ॥ ततोवरकन्ययोर्लक्ष्मीनारायणनिमित्तकं पूजनमप्याचरन्ति केचित ॥ इतिसम्पूज्य प्रार्थयेत्—ॐ नारायण महा बाहो लक्ष्म्यासह दयानिधे, कन्यादानेन सुप्रीतः सदाशान्तिं प्रयच्छमे, ततः कन्यां प्रार्थयेत्—कन्येममाग्रतो भूयाः कन्येमेदेविपार्श्वयोःकन्येमेपृष्ठतोभूयास्त्वदानान्मोक्षमाप्नुयाम्,ततोवरःपठेत ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम् ॐ प्रजापतयेकन्यां प्रतिगृह्णामि—ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु । ॐ स्वस्तिइत्युक्त्वाकामस्तुतिंपठेत्—ॐ कोऽदात्कस्माऽअदात्कामोऽदात्कामायादात्, कामोदाताकामःप्रतिग्रहीताकामैतत्ते । ततो दाताबद्धांजलिः पुनः पठेत्—कन्याममगृहेजातापालितावत्सराष्टकम् । तुभ्यंविप्रमयादत्तापुत्रपौत्रविवर्धिनी । धर्मचार्थे

*टि.—विध नारिज.ते–बृहस्पतिः—चतुर्थार्द्ध गृहे कन्यां दार्माछन्नंर्थ तस्म् तिष्ठनेनाग्द्विजोदद्या दृभ्यर्थाद्दोनुपविश्यच,,

च कामेच नातिचरितव्यात्वयेयम् ततोवरः—नातिचरामीति ब्रूयात्, ततः कन्यादाताउपविश्य कन्यादानप्रतिष्ठांकुर्यात्, ततः सुवर्णं यथावित्तंहस्तेगृहीत्वा तिलकुशयवजलान्यादाय ॐ तत्स-दद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्यामुकोहं कन्यादानकर्मणः सांगफलावा-प्तये प्रतिष्ठार्थमिदंसुवर्णमग्निदैवतं अमुकगोत्रायामुकशर्मणेवराय तुभ्यंसंप्रददे इतिदत्वा वरश्च ॐ स्वस्ति इतिवदेत् । ❀अत्राचा-रादन्यदपियौतकत्वेन सुवर्णरजतताम्रगोमहिष्यश्वग्रामादिकन्या पितायथासंभवंददति, अन्येऽपिबान्धवादयो यथाभिरुचिंयौतकं प्रयच्छंति केचनहोमान्तेगोदानसमयेप्रयच्छंति, अत्रदेशाचारतो व्यवस्था, ततः शिष्टाचारात्पुरोहितादिः द्रव्यपूगीफलसर्षपाक्षत हरिद्राभिः संमिलितमंगलपदार्थैर्वरकन्ययो र्वस्त्रांचलग्रन्थिं ॐ भद्रंकर्णेभिरितिपठित्वा, दृढंबध्वा, एतन्तेदेव०इतिप्रतिष्ठाप्य,ॐ भूर्भुवः स्वः अंचलग्रंथे सुप्रतिष्ठितोभव, तंचचतुर्थीकर्मपर्यंन्तं नमोचयेत्। ततोवरोवध्वाअंगुष्ठंत्यजेत, ततःकन्यापिताकन्यादान-साद्गुण्यार्थंभूयसीदानंकुर्यात्—ततः स्ववित्तानुसारंद्रव्यंहस्तेनि-धाय संकल्पः अद्येत्यादिदेशकलौ संकीर्त्यामुकराशिरमुकशर्मा सपत्निकोहं कन्यादानकर्मणः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तसांगफलावाप्तये श्रीलक्ष्मीनारायणप्रीत्यर्थे इमांभूयसींदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तकेभ्योदीनानाथेभ्यश्च विभज्यदास्ये ॐ तत्सन्नमम, ।

❀ अथ च देशाचाराच्छोलिकाभरणम् ❀

जीवितपतिपुत्रवतीस्त्रियमाहूय एकस्मिन्कांस्यपात्रे शुक्ल तन्डुललड्डुकफलेक्षुदंडद्रव्याणि कदलीफलद्राक्षापूगीफल जाती फल जम्भीरीफल बीजपूरफलनिम्बफल आम्रफल अक्षोटकफल

❀ टि०—कन्यादानमारभ्य चतुर्थीकर्मपर्यन्तं विवाहशब्देनोच्यतेतन्मध्ये कन्यया स्वपित्रादि-गोत्रेण न प्रातंतव्यं तत्काममिति जयराम इति वृद्धाः ।

नारिकेलफलानि कांस्यपात्रस्थितानि जातमात्र जीवितपुत्रपति वती स्त्रीहस्तेन, (तदभावेकन्याहस्तेन) ब्राह्मणायदद्यात्। तत्र मंत्रः—ॐ याः फलीनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्तानोमुंचन्त्व ह० हसः। इतिप्रथमम्। अथद्वितीयम्— कर्पूरैलासुवासितशर्कराघृतमिश्रितानि मोदकशष्कुली सुहालिका फेणीसर्वपक्वान्नानि सुवर्णरौप्यकांस्यपात्रस्थितानिपतिपुत्रवती स्त्रीहस्तेन गृहीत्वा ब्राह्मणायप्रयच्छेत्—मंत्रः—ॐ अन्नपतेन्नस्य नोदेह्यनमीवस्यशुष्मिणः। प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहिद्विपदे शंचतुष्पदे ॥२॥ ततस्तृतीयम् ततोवासांसि हरितपीतश्वेतरक्त नीलमंजिष्टकौसुम्भकाश्मीरादि नानादिग्देशजातानि बहुमूल्यानि दुकलोत्तरीयकंचुकादीनिकांस्यादिपात्रोपरिस्थापितानिकुमारीहस्तेन सौभाग्यवत्यैदद्यात् मंत्रः—ॐयदश्वायवासऽउपस्तृणंत्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मैसन्दानमर्व्वन्तं पड्वीशंप्रियादेवे ष्वायामयन्ति इतिदत्वा। ततश्चतुर्थम्—मणिमौक्तिक हीरक गारुत्मत मरकतपुष्परागादि विविधोपशोभितस्वर्णरचित कटककेयूर पदांगुलीयक कांचीहार ग्रैवेयक नासिकाभरणादि विविधाभरणानि सुवर्ण-रौप्य कांस्यादि पात्रस्थितानि कन्यायै प्रयच्छेत्ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथ्वीं द्यामुतेमांकस्मै देवायहविषाविधेम ॥ ॐ रूपेण वोरूपमभ्यागांतुथोवोविश्ववेदाविभजतु। ऋतस्यपंथाःप्रेतचन्द्रदक्षिणाविश्वः पश्यव्यंतरिक्षं यतस्वदस्यै। इतिस्त्रोलिकाभरणम्। अथवरः पित्राप्रत्तामादाय स्वदक्षिणहस्तेनकन्यायाः वामहस्तं गृहीत्वातामग्रतः कृत्वादानगृहाद्वेद्यामग्निसमीपे गन्तुंनिष्क्रामयेत्। ॐयदैषीत्याथर्वणऋषिरनुष्टुप्छन्दोलिंगोक्ता देवता निष्क्रमणे विनियोगः ॐ यदैषिमनसादूरंदिशोनुपवमानोवा हिरण्यपर्णोवैकर्णः सत्वा मन्मनसांकरोतु हे! श्रीअमुकदेविमयासहाग्रतोगच्छ। ततोऽग्रतः कश्चिद्ब्राह्मणेजलपूर्णकलशंस्कन्धेनिधायगच्छेत् ॥ ततः कन्यावरौ अग्निसमीपं गच्छन्तौ कन्यापितापरस्परं समीक्षेथामितिप्रैषेण

ॐ अघोरचक्षुरित्यादीनां चतुर्णांमंत्राणांप्रजापति ऋषिरायन्तयो स्त्रिष्टुवमध्ययोरनुष्टुप्छन्दः कुमारीदेवता परस्परसमीक्षणे विनियोगः । ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवापशुभ्यः सुमनाः सुवर्चा व्वीरसूर्देवकामास्योनाशन्नोभवद्विपदे शंचतुष्पदे ॥१॥ सोमः—प्रथमो विविदेगन्धर्वोव्विविद्ऽउत्तरः । तृतीयोऽग्निष्टेपतिस्तुरीयस्तेमनुष्यजाः ॥२॥ सोमोऽददद्गंधर्वाय गंधर्वोऽददग्नये रयिंचपुत्रांश्चादादग्निर्म्मह्यमथोऽइम्माम् ॥३॥ सानः पूषाशिवतमामैरयसानऽऊरूऽउशतीव्विहर । यस्यामुशन्तः प्रहरामशेपं यस्यामुकामबहवोनिविष्ठ्यै ॥४॥ इतिमिथः समीक्षणंकुरुतः । सचस्कन्धकलशीयो ब्राह्मणआमूर्द्धाभिषेकान्तं जलपूर्णकुम्भंस्कन्धे धृत्वावाग्यतो दक्षिणतस्तिष्ठेत् । अथच वरोवधूंअग्रतः कृत्वा अग्निप्रदक्षिणीकृत्य वधूंस्वदक्षिणतः कृत्वा दक्षिणपादेनकटं (चटाई) उल्लंघ्य दक्षिणपादमग्रतः कृत्वा उपविशेत् । ततोवर स्त्रिराचम्य प्राणायामत्रयं विधायवधूंदक्षिणपार्श्वे उपवेश्यअर्घं संस्थाप्य प्रधान संकल्पंकुर्यात्—अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्माहं चातुर्वर्गफलाप्तये श्री परमेश्वरप्रीतये पितृप्रत्तामिमांगौरीं कन्यां ब्राह्मविधिना विवाहयिष्ये । तत्पूर्वांगतया विवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्मकर्तृब्रह्मणः पूजनपूर्वकं वरणंकरिष्ये इतिदक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य ब्राह्मणं गंधाक्षतादिभिः सम्पूज्य वरणसामग्रीं सम्पूज्य च करेधृत्वा अद्येहेत्यादि संकीर्त्य अमुकराशिरमुकशर्माहं एभिर्गन्धाक्षतपुष्प पूगीफलद्रव्यवासोभिः विवाहहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्मकर्तुं अमुकशर्माणं ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे, ॐ वृतोस्मीति ब्रह्माब्रूयात् । यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वर्गेयज्ञनिरीक्षकः । तथात्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तमः । इति प्रार्थ्य, अग्नेरुत्तरासने ब्रह्माणंकृत्वा, ततो ब्रह्माणमग्निं प्रदक्षिणक्रमेणानीय अग्ने र्दक्षिणतः कल्पितासने उदङ्मुखं ब्रह्माणमुपवेशयेत् । तत आचार्यस्यासनं वरकन्ययोश्चासनं अग्नेःपश्चात्प्रागग्रकुशैः संपादयन्नो-

पविश्य, प्रणीतापात्रंसव्ये पाणौकृत्वा दक्षिणहस्तेन पात्रस्थजले नापूर्य दर्भैराच्छाद्य ब्रह्ममुखमवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात्। ततः परिस्तरणम्। बर्हिर्मुष्टिमादाय ईशानादिप्रागग्रै र्बर्हिभिरुदक्संस्थमग्नेः परिस्तरणं कृत्वा अर्थवद्वस्तून्यासाद्य पश्चिमदिशि पवित्रछेदनानि त्रीणिकुशानि, द्वेपवित्रे, प्रोक्षणीपात्रं, आज्यस्थाली, संमार्जनकुशाःपंच, उपयमनकुशा त्रयोदश, समिधस्तिस्रः। स्रुवः आज्यं, पूर्णपात्रं कर्मोपयोगिनीदक्षिणा एतानि वस्तूनिअग्नेः पश्चात्स्थापयेत् तत्र पात्राणिप्राग्बिलान्युदग्राणि स्थापयेत। तत्रैवशमीपलाशमिश्राः लाजाः पालाशपत्रद्वयम् अखंडाश्मा, कुमारीभ्राता, तदभावेसजातीयोवा, नवीनंशूर्पं, दधिमाषाभ्यक्ततंडुलाः कार्पासवर्तिकाघृताक्ताः, दधिमोदकाः, कटुतैलं, दर्पणः चूडिका, कज्जलं, सिन्दूरं, बिंदिकादिसौभाग्यद्रव्याणि। ततः पवित्रछेदनार्थं स्त्रिभिर्दर्भैः प्रादेशमात्रेद्वेपवित्रेछित्वा, प्रोक्षणीपात्रंप्रणीतासन्निधौ पुरतः कृत्वा तस्मिन्प्रणीतोदक मासिच्य पवित्राभ्यां तज्जलमुत्क्षिप्य, पवित्रेप्रोक्षण्यांनिधाय, दक्षिणहस्तेन प्रोक्षणीपात्रमुत्थाय वामहस्तेधृत्वा तदुदकस्य दक्षिणहस्तस्य मध्यमाऽनामिकांगुल्योर्मध्यपर्वाभ्यामुच्छालनंकृत्वा प्रणीतोदकेन तज्जलंप्रोक्षेत्। प्रोक्षण्युदकेन पवित्राभ्यांआज्यस्थाल्यादीनि वस्तूनि प्रोक्षेत्। आज्यस्थाल्यामाज्यं निरूप्याधिश्रित्यज्वलत्तृणेन प्रदक्षिणक्रमेण हविर्वेष्टयित्वा तद्वह्नौप्रक्षिपेत्। दक्षिणहस्तेन श्रुवमधोमुखंप्रतप्य, सव्येहस्तेकृत्वा संमार्जनपंचकुशै र्मूलं, मध्यै मध्यं अग्रैरग्रंसंमार्ज्यतान्कुशान् वह्नौ प्रक्षिपेत्। ततः प्रणीतोदकेन श्रुवमभ्युक्ष्य पुनःप्रतप्यस्वदक्षिणतः कुशोपरि निदध्यात्, आज्यमग्नेरवतार्य अंगुष्ठानामिकाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां आज्यमुत्क्षिप्य अवेक्ष्य अपद्रव्यनिरसनंकृत्वा प्रोक्षणीवत्पवित्राभ्यामुत्क्षिप्य तत्रपवित्रेनिदध्यात्। उपयमनत्रयोदशकुशान्। दक्षिणहस्तेनादाय वामेकृत्वोत्तिष्ठन् घृताक्तास्तिस्रस्समिधस्तूष्णीमग्नौ प्रक्षिपेत्। ततःपवित्रेण प्रोक्षणीजलेन ईशानादुत्तरपर्यन्तं सम्प्रो-

दय पवित्रेप्रणीतायां निदध्यात् । संस्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्न्योर्मध्ये निदध्यात् । ततोऽग्नेः पूजनम् । अग्निं परिज्व लय्य-ॐ एतन्तेदेव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणेतेनयज्ञमव तेनयज्ञपतिंतेनमामव । मनोजूति र्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनोत्वरिष्टंयज्ञ ँ॰ समिमंदधातुविश्वेदेवासऽइहमादयन्ता मोंप्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः योजकनामाग्ने सुप्रतिष्ठितोवरदोभव इत्यग्निंप्रतिष्ठाप्य, (विवाहेयोजकोवह्निः) ॐ अग्निंप्रज्वलितं वंदेजातवेदंहुताशनम् । सुवर्णवर्णमनघमनन्तं विश्वतोमुखम् ।सर्वतः पाणिपादश्चसर्वतोक्षिशिरोमुखम् । विश्वरूपोमहानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु । इति संप्रार्थ्य ॐ चत्वारिश्रृङ्गात्रयोऽस्यपादाद्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य । त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवोमर्त्यां २८॥ आविवेश । इति ,मंत्रेणाग्निं पाद्यगन्धादिभिः नैवेद्यान्तं सम्पूज्य, ॐ ब्रह्मणेनम' प्रथमरेखां पूजयेत् ॐ विष्णवेनमः इति मध्यमरेखां॰ ॐ महेश्वरायनमः इति तृ॰ रे॰ । अथाग्ने र्जिह्वा- नांपूजनम् ॐ करालयैनमः ॐ धूम्रिन्यैनमः ॐ श्वेतायैनमः ॐ लोहितायैनमः ॐ महालोहितायैनमः ॐ सुवर्णायैनमः, ॐ पद्मरागायैनमः । इति सप्तजिह्वाश्चसम्पूज्य । इतिकर्म आचार्य द्वारास्वयंवाकृत्वा वरःसंकल्पपूर्वकं देवताभिध्यानं करोति, अद्येत्यादिसवधूकोऽहं विवाहकर्मणायक्ष्ये, तत्र प्रजापतिं इन्द्रं, अग्निं, सोमं, अग्निं, वायुं, सूर्यम्, अग्नीवरुणौ, अग्निं, त्वरु- णंसवितारं विष्णुंविश्वान्देवान् । मरुत, स्वर्कान्, त्वरुणम् ।१२। ऋतासाहम्, ऋतधामानम्, अग्निंगन्धर्वम् ओषधीरप्सरसोमुदः । स ँ॰ हितं विश्वसामानं, सूर्यंगन्धर्वं मरीचीरप्सरसऽआयुवः, सुषुम्ण ॐ सूर्यरश्मिं, चन्द्रमसंगंधर्वं अपोऽप्सरऽऊर्ज्जः, भुज्युः सुपर्णं, यज्ञं, गन्धर्वं, दक्षिणाऽप्सरसस्तावाः प्रजापतिं विश्वकर्माणं मनोगंधर्वम् ऋक्सामान्यप्सरसऽएष्टीः ।१२। चित्तं चित्तिं, आकूतं आकूतिं, विज्ञातः विज्ञातिं मनः शक्वरीः दर्शं, पौर्णमासं, बृहत् रथन्तरम् प्रजापतिम् । ।१३। अग्निंभूतानामधिपतिं, इन्द्रंज्येष्ठाना-

मधिपतिं, यमंपृथिव्याअधिपतिं वायुमन्तरिक्षस्याधिपतिं सूर्यं दिवोऽधिपतिं, चन्द्रमसंनक्षत्राणामधिपतिं, बृहस्पतिं ब्रह्मणोऽधिपतिं, मित्र ॐ सत्यानामधिपतिं वरुणमपामधिपतिम् समुद्र ॐ स्रोत्यानामधिपतिं, अन्न ॐ साम्राज्यानामधिपतिंसोममोषधीनामधिपतिं,सवितारंप्रसवानामधिपतिं रुद्रंपशूनामधिपतिं त्वष्टार ॐ रूपाणामधिपतिं, विष्णुं पर्वतानामधिपतिं, मरुतोगणानामधिपतीन् पितृन्, परान्, अवरान्- ततान् ततामहान्। १८। अग्नि, अग्निं, अग्निं वैवस्वतं मृत्युं ॥४॥ चाज्येनाहंयक्ष्येऽदानीं कन्या देवता भिध्यानं करोति, अर्यमणं अग्निं, अग्निं अर्यमणं अग्निं, अग्निं अर्यमणं, अग्निं, अग्निं भगं, च लाजैरहंयक्ष्ये पुनर्धरः। प्रजापतिं, अग्नि ॐ स्विष्टकृतं,चाज्येनाहंयक्ष्ये,, (एवंद्रव्य देवतेमिध्यानमात्रंकृत्वा, विवाह होमस्य यजमान एव कर्त्ता तेन विवाहसमये प्रत्याहुत्यन्ते ननमेत्यागंकुर्यात्)

ततः पातितदक्षिणजानुः कुशेन ब्रह्मणान्वारब्धः समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाज्याहुतिर्दद्यात् ॥ तत्राघारादारभ्य द्वादशाहुतिपर्यन्तं स्रुवावशिष्टं हुतशेषं घृतपात्रे प्राशनार्थं प्रक्षिपेत् ॥ होममंत्राः—

ॐ प्रजापत्यादि चतुर्णां मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मंत्रोक्ता देवता आज्यहोमे विनियोगः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम। इति प्रजापतिं मनसाध्यात्वा, ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय नमम। इत्याघारौहुत्वा, ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमम, ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमम इत्याज्यभागौ। ततो महाव्याहृतिहोमः। महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्नि वायु सूर्या देवता व्याहृतिहोमे विनियोगः। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये नमम, ॐ भुवः स्वाहा इदंवायवे नमम, ॐ स्वःस्वाहा इदंसूर्याय नमम ॥—

ॐ त्वन्नो अग्ने इति वामदेव ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरुणौ देवते सर्वप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः। ॐ त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशु-

चानोऽविश्वाद्वेषा ॐ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदमग्नीर्वरुणाभ्यांनमम। ॐ सत्वन्नऽअग्न इति वामदेवऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्नीवरुणौ देवते सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः। ॐ सत्वन्नोऽअग्नेऽवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउपसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनोव्वरुण ॅ० रराणोव्वीहिमृडीक ॅ० सुहवोन एधि स्वाहा ॥ इदमग्नी वरुणाभ्यां नमम ॥ ॐ अयाश्चाग्न इति वामदेव ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अयानो यज्ञं व्वहास्ययानोधेहिभेषज ॐ स्वाहा। इदमग्नयेनमम॥ ॐ येते शतमिति वामदेव ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणः सविता विष्णुर्विश्वे देवामरुतः स्वर्काश्च देवताः प्रायश्चित्त होमे विनियोगः। ॐ येते शतंव्वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशाव्वितताम्महान्तः। तेभिर्नोऽअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतः स्वर्काः॥ इदं व्वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यो नमम। ॐ उदुत्तममिति शुनः शेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः। ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्मदवाधमं व्विमध्यम ॐ श्रथाय। अथा व्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणाय नमम। इति सर्वप्रायश्चित्त होमः। अत्र प्रणीतोदकं स्पृष्ट्वा प्रायश्चित्त होम शान्त्यर्थं यथा वित्तलिलपात्रादि दक्षिणादानं कुर्यात्॥

अथ राष्ट्रभृद्धोमः॥

ॐ ऋताषाडिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः। ऋताषाडृतधामाग्निर्गंधर्वो देवता होमे विनियोगः। ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्निर्गन्धर्वः स न ऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इद मृतासाहे ऋतधामाग्नये गंधर्वाय न मम॥ ॐ ऋताषाडिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः ओषधयोमुदोऽप्सरसो देवता होमे विनियोगः। ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्नि र्गन्धर्व स्तस्यौषधयोऽ

प्सरसोमुदोनाम ताभ्यः स्वाहा । इदमोषधीभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यो न मम ॥ ओं स ॅं हित इति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः स ॅं हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वो देवता होमे विनियोगः । ओं स ॅं हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वः सनऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं स ॅं हिताया विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न मम ॥ ओं स ॅं हित इति प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दो मरीचयोऽप्सरस आयुवो देवताः होमे विनियोगः । ओं स ॅं हितो विश्वसामा सूर्य्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरसऽ आयुवो नाम ताभ्यः स्वाहा । इदंमरीचिभ्योऽप्सरोभ्यऽआयुभ्यो न मम ॥ ओं सुषुम्ण इति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमाः गन्धर्वो देवता होमे विनियोगः ओं सुषुम्णः सूर्य्यरश्मिश्चन्द्रमाः गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् । इदंसुषुम्णाय सूर्यरश्मयेचन्द्रमसे गन्धर्वाय नमम॥ ओं सुषुम्ण इति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो नक्षत्राण्यप्सरसोभेकुरयो देवताः होमे विनियोगः । ओं सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरियो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरसोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम ॥ ओं इषिर इति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः इषिरो विश्वव्यचा व्वातो गन्धर्वो देवता होमे विनियोगः । ओं इषिरो विश्वव्यचा व्वातो गन्धर्वः स नऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदमिषिराय विश्वव्यचसे व्वाताय गन्धर्वाय न मम ॥ ओं इषिर इति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः आपोऽप्सरस ऊर्जोदेवताः होमे विनियोगः ॥ ओं इषिरो विश्वव्यचाव्वातो गन्धर्व स्तस्यापोऽप्सरसऽऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदमद्भ्योऽप्सरोभ्यऽऊर्भ्यो न मम ॥ ओं भुज्युरिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वोदेवता होमे विनियोगः ॥ ओं भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः सनॅऽ इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम ॥ ओं भुज्युरिति प्रजापतिर्ऋषि-

र्यजुश्छन्दो दक्षिणाऽप्सरसस्तावा देवता होमे विनियोगः ॥ ३० भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणाऽप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा ॥ इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यो न मम ॥ ३० प्रजापतिरिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनोगन्धर्वो देवता होमे विनियोगः ॥ ३० प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनोगन्धर्वः सनऽइदं ब्रह्मक्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ॥ इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न मम ॥ ३० प्रजापतिरिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः ऋक् सामान्यप्सरस ऽएष्टयो देवता होमेविनियोगः ॥ ३० प्रजापति विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्यऽऋक्सामान्यप्सरसऽएष्टयो नाम ॥ ताभ्यः स्वाहा ॥ इद मृक्सामेभ्योऽप्सरोभ्यऽएष्टिभ्यो न मम ॥ १२ ॥ राष्ट्रभृद्धोम शान्त्यर्थं दक्षिणांदात्वा मंत्रं पठेत् ॥ गन्धर्वाप्सरश्चैव प्रयच्छन्तु यशः श्रियम् । दीर्घायुर्धनमारोग्यमुभयोः स्त्री कुमारयोः ॥

॥ इति राष्ट्रभृद्धोमः ॥

अथ जय होमः

३० चित्तं चेत्यादीनां द्वादशमंत्राणां परमेष्ठी ऋषिर्ऋुंषि चित्तादयोमंत्र लिंगोक्तादेवताः होमे विनियोगः ॥ ३० चित्तं च स्वाहा, इदं चित्ताय न मम ॥ ३० चित्तिश्च स्वाहा, इदं चित्त्यै न मम ॥ ३० आकृतंच स्वाहा, इदं अकृताय नमम ॥ ३० आकूतिश्च स्वाहा, इदमाकूत्यै नमम ॥ ३० विज्ञातंच स्वाहा, इदंविज्ञातायनमम॥ ३० विज्ञातिश्च स्वाहा,इदंविज्ञातयेनमम॥ ३० मनश्च स्वाहा, इदं मनसे नमम ॥ ३० शक्करीश्च स्वाहा, इदं शक्करीभ्यो न० । ३० दर्शश्च स्वाहा, इदं दर्शाय नमम ॥ ३० पौर्णमासं च स्वाहा, इदं पौर्णमासाय नमम ॥ ३० बृहच्च स्वाहा इदं बृहते नमम ॥ ३० रथन्तरंच स्वाहा, इद ँ० रथन्तराय न मम ॥ ३० प्रजापतिरिति मंत्रस्यपरमेष्ठी ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवताजयहोमे विनियोगः॥ ३०प्रजा-

पतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे भायच्छदुग्रः पृतनाजयेषु । तस्मैविशः सम-नमन्तसर्वाः सऽउग्रः सऽइहव्योबभूवस्वाहा । इदंप्रजापतयेनमम ॥१३॥ अत्रोदक स्पर्शः ॥ जयहोमशान्त्यर्थे दक्षिणादानम् ॥ दीर्घायुर्प्रयच्छन्तु जय होमस्थ देवताः । शान्तिरस्तु शिवंचास्तु उभयोर्वरकन्ययोः ॥

॥ इति जयहोमः ॥

॥ अथाभ्यातान होमः ॥

ॐ अग्निर्भूतानामधिपति रित्यादीनांपतरः पितामहाः इत्यन्तानामष्टादशमंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिः पंक्तिश्छन्दो मंत्र लिंगोक्ता अग्न्यादिदेवताः प्रतिमंत्रहोमे विनियोगः ॥ ॐअग्नि भूतानामधिपतिः समाऽ त्ववस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽ स्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यांदेवहूत्या ॐ स्वाहा । इदम-ग्नयेभूतानामधिपतये नमम ॥ ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानां मधिपतिः समाऽ वन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽ स्यामा शिष्यस्यांपुरोधा यामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूयाॐस्वाहा ॥ इदमिन्द्रायज्येष्ठाना-मधिपतयेनमम । ॐ यमःपृथिव्या ऽ अधिपतिः समावन्त्वस्मिन् क्षत्रे ऽ स्यामांशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इदंवायवेअन्तरिक्षस्याधिपतयेनमम ॥ ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिःसमावन्त्वस्मिनब्रह्मण्यस्मिन्क्षत्रे ऽ स्यामाशिष्य-स्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यांदेवहूत्या ॐ स्वाहा ॥ इद ॐ सूर्यायदिवोऽधिपतयेनमम ॥ ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः समावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामा शिष्यस्यां पुरोधाय-मस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा । इदं चन्द्रमसेनक्षत्राणां अधिपतयेयनमम । ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणो ऽ धिपतिःसमावन्त्व-स्मिन् ब्र ण्यस्मिन् क्षत्रे ऽ स्यामाशिष्यस्यांपुरोधायामस्मि-न्कर्मण्यस्यांदेवहूत्याॐस्वाहा इदंबृहस्पतयेब्रह्मणोऽधिपतयेनमम ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः समावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ

स्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं मित्राय सत्यानामधिपतयेनमम ३० वरुणोऽपामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदंवरुणायापामधिपये नमम ॥ ॐ समुद्रः स्रोत्यानामधिपतिः समावत्वस्मिन ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यांदेवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं समुद्रायस्रोत्यानामधिपतये नमम। ३० अन्नॐसाम्राज्यानामधिपतिः तन्माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदमन्नायसाम्राज्यानामधिपतयेनमम। ३० सोमऽओपधीनामधिपतिःसमावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं सोमायौपधीनामधिपतयेनमम। ३० सविताप्रसवानामधिपतिः समावत्वस्मिन ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मणयस्यां देवहूत्याॐ स्वाहा। इदंसावित्रेप्रसवानामधिपतयेनमम। ३० रुद्रः पशूनामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यांपुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा इदं रुद्राय पशूनामधिपतयेनमम १४ प्रणीतोदकः स्पर्शः। ३० त्वष्टारूपाणामधिपतिः समावत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं विष्णवेपर्वतानामधिपतयेनमम। ३० मरुतोगणानामधिपतयस्तेमावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्याॐस्वाहा इदं मरुद्भ्यो गणानामधिपतिभ्योनमम। ३० पितरः पितामहाः परेऽवरेततास्ततामहाःइहमावन्त्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन्कर्मण्यस्यां देवहूत्या ॐ स्वाहा। इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्योनमम

॥१८॥ अत्रोदकस्पर्शः । दक्षिणादानम् । अभ्यातानेचयेदेवाः प्रयच्छंतुशुभांमतिम् । धनंयशस्यं पुत्रांश्चएतयो वरकन्ययोः इत्यभ्यातानहोमः ॥

अथ अग्न्यादि पंचकहोमः ।

ॐ अग्निरैत्वित्यादीनांचतुर्णांमंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दोलिंगोक्ता देवता आज्यहोमे विनियोगः । ॐ अग्निरैतुप्रथमोदेवताना ॐ सोऽस्यै प्रजांमुंचतुमृत्युपाशात् । तदय ८० राजाव्वरुणोऽनुमन्यनां तथेय ॐ स्त्री पौत्रमघन्नरोदात्स्वाहा ॥ इदमग्नयेनमम । ॐ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यैनयतु दीर्घमायुः । अशून्योपस्थाजीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभि विबुध्यतामिय ॐ स्वाहा । इदमग्नयेनमम । स्वस्तिनोऽअग्नेदिव ऽआपृथिव्या व्विश्वानिधेह्ययथायजत्र । यदस्यांमहिदिविजातं प्रशस्तंतदस्मासुद्रविणंधेहिचित्र ॐ स्वाहा । इदमग्नयेनमम । ॐ सुगंनुपंथां प्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मध्येह्यजरन्नऽआयुः । अपैतु मृत्यु रमृतन्नऽआगाद्वैवस्वतोनोऽअभयंकृणोतु स्वाहा । इदं वैवस्वतायनमम । (रौद्रींपैत्रीं तथामृत्योः इति कारिकोक्त दोषत्वात् संस्कार भास्करे दोपश्रवणात् । वधूं वस्त्रेणाच्छाद्य मंत्रं मनसिपठन् जुहुयात् ।) ॐ परं मृत्यविति संकसुक ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो मृत्युर्देवता होमे विनियोगः । ॐ परं मृत्योऽअनुपरेहिपंथांयस्ते ऽअन्यऽइतरो देवयानात् । चक्षुष्मते शृण्वतेतेब्रवीमिमानः प्रजा ॐ रीरिषीमोतव्वीरान् स्वाहा । इदंमृत्यवेनमम । अत्र प्रणीतोदकः स्पर्शः । अत्रापिदक्षिणादानम् । मंत्रः—अग्निर्वैवस्वतोदैवः कीर्तिस्वायु प्रयच्छतांम् । नैरूज्यंधनसंपत्तिरेतयोर्वरकन्ययोः ।

अथ लाजाहोमः—

अथ च कुमार्या भ्राता ज्येष्ठः कनिष्ठो चोपकल्पितान् शमी पत्रपलाशपत्र मिश्रितानलाजान् घृतेनाभिघार्य नूतनेसूर्पेचतुर्धा विभज्य ततस्त्वेकं भागमादौ कुमार्याः (स्वभगिन्याः) अंजलौ

दद्यात्। साच कुमारी तांल्लाजान् अंजलौ गृहीत्वा प्राङ्मुखी तिष्ठन्ती वरश्चानुपृष्ठंपरिक्रम्योत्तराभिमुखोवध्वादक्षिणतस्तिष्ठन् वध्वा अंजलिंदेशप्रथानुसारतउभाभ्यां हस्तभ्यां आलभेत। साच-वधूमंत्रंपठन्तीलाजान् जुहुयात्। (अत्रकन्यायाएवहस्तेनहोम प्राधान्यतानतुवरहस्तेन। आयुष्मानस्तुमेपतिः इतिमंत्रप्रमाणात्॥) ॐ अर्यमणमित्यादिमंत्राणामथर्वणऋषिरनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता लाजाहोमेविनियोगः ॐ अर्यमणंदेवंकन्याऽग्निमयक्षत सनोऽअर्यमादेवः प्रेतोमुंचतुमापतेः स्वाहा। ॐ इदमर्यम्णेनमम इति वरोब्रूयात् (इत्यंजलिस्थलाजानांतृतीयांशं अंजलिवामभागेन जुहोति, स्त्रीणांवामागं प्राधान्यात्) ॐ इयंनार्युपब्रूतेलाजानावपन्तिका॥ आयुष्मानस्तुमेपतिरेधन्तांज्ञातयोमम स्वाहा। ॐ इदमग्नयेनमम। इत्यर्धंजुहोति। ॐ इमांल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणंतव। मम तुभ्यंच संवननं तदग्नि रनुमन्यतामियॐ स्वाहा। ॐ इदमग्नयेनमम। इत्यंजलिस्थान् सर्वान् जुहोति अथच वरोवध्वा सांगुष्ठमुत्तानंदक्षिणहस्तंगृह्णाति। ॐ गृभ्णामीति चतुर्णांमंत्राणांयाज्ञवल्क भारद्वाजाथर्वण प्रजापतयऋषयः त्रिष्टुबुष्णिगनुष्टब्यजूंषिछन्दांसि भगार्यमसवितृपुरंध्रयोदेवताः वधूपाणिग्रहणे विनियोगः। ॐ गृभ्णामितेसौभगत्वायहस्तंमयापत्याजरदष्टिर्यथासः भगोऽअर्यमासविता पुरंध्रिर्मह्यन्त्वाऽदुर्गार्हपत्यायदेवाः॥१॥ अमोहमस्मिसात्व ट० सात्वमस्यमोऽअहम्। सामाहमस्मि ऋक्त्वंद्यौरहंपृथिवीत्वम्॥२॥ तावेवविवहावहै सहरेतोदधावहै। प्रजांप्रजनयावहै पुत्रान्प्रजनयावहै पुत्रान्विन्दावहैबहून्॥३॥ तेसन्तुजरदष्टयः संप्रियौरोचिष्णूसुमनस्यमानौ पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शत ट० शृणुयाम शरदः शतम्॥४ अथैनामश्मानमारोहयति अग्नेरुत्तरतः स्थापितेऽश्मनिवरोवध्वा दक्षिणपादं स्वदक्षिणहस्तेनगृहीत्वा वक्ष्यमाणमंत्रेणस्थापयेत्। कतिचित् पुस्तकेषुवरोस्ववामहस्तंवध्वा वामस्कंधेधृत्वा दक्षिणहस्तेनवध्वादक्षिणपादं स्पृशन् इति लिखितमस्ति देशाचारतः।

कुर्यात् ॐ आरोहेममित्यस्याथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दो वधूर्देवता अश्मारोहणेविनियोगः ॐ आरोहेममश्मानमश्मेवत्व ॐ स्थिराभव । अभितिष्ठपृतन्यतोऽववाधस्वपृतनायतः । इति वधूमश्मन्यारोप्यवरस्तस्याःशिरसिहस्तं धृत्वागाथांगायति । ॐसरस्वति प्रेदमितिविश्वावसु ऋषि रनुष्टुप्छन्दः सरस्वती देवता गाथागाने विनियोगः । ॐ सरस्वतिप्रेदमवसुभगेव्वाजिनीवति । यांत्वा विश्वस्यभूतस्य प्रजाया मस्याग्रतः ॥१॥ यस्याभूत ई० समभवद्यस्यां विश्वमिदंजगत् । तामद्य गाथांगास्यामियास्त्रीणामुत्तमंयशः ॥२॥ ततोऽग्नेः परिक्रमणार्थं वधूवरौ गच्छेताम् । ॐ तुभ्यमग्रइत्याथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता परिक्रमणे विनियोः ॥ ॐ तुभ्यमग्रे पर्य्यवहन्त्सूर्य्यांव्वहतुनासह । पुनः पतिभ्योजायांदाग्ने प्रजयासह ॥ (अग्रेनु शुभदांपत्नीमांगल्ये सर्वे कर्मणि) इति प्रमाणतः ॥ एवं पुनर्वारद्वयं पूर्ववल्लाजाहोम पाणिग्रहणाश्मारोहण गाथागान परिक्रमणानितेनैव विधिनाकर्तव्यम्॥ ततस्तृतीय लाजाहोमादि परिक्रमणान्ते कुमर्या भ्राता सूर्पकोणेन सर्वांल्लाजान् कुमार्यंजलौददाति ॥ सा च पूर्ववत्तिष्ठन्ती अंजलिनैव जुहुयात)। कतिचित् पुस्तकेषु सूर्पकोणेनैवसर्वान जुहुयात्— इति लिखितमस्ति । स च सूत्रप्रमाण रहितो विधिः)॥ ॐ भगायेति मंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो भगोदेवता लाजाहोमे विनियोगः । ॐ भगायस्वाहा ॐ इदं भगायनमम इति वरः ॥ (ततश्चतुर्थे परिक्रमणं कुर्वन्तौवधूवरौ ब्रह्माग्न्योर्मध्ये नगच्छेताम् किन्तु ब्रह्माणमपिमध्ये कृत्वा परिक्रामयेनाम्)॥ तूष्णीं चतुर्थे परिक्रमणंकृत्वा पूर्वस्थान मागत्योपविश्यच ॐ प्रजापतय इति प्रजापतिर्ऋषिःत्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवता उत्तरांग होमे विनियोगः ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम ॥ इतिमनसा प्रजापतिंध्यात्वाहुत्वा (अत्रैव कतिचित् पुस्तकेषु पचमंपटं परिक्रमणंच लिखितमस्ति सूत्रादतिरिक्तोऽयं विधिः) यथा समाचारस्तथा कर्तव्यः । अथसप्तपदी—ततोवर एनां वधूमुदीचीं सप्त

पदानि प्रक्रामयति, तद्यथासमाचारात्—(कश्चिद्देशेषु शिलायां हस्तमात्रायतायामेव सप्तपदी भवति । स च विधिर्निरर्थकः । सप्तपदी शब्दस्यार्थः सप्तपदगमनमस्ति न तु शिलायाम् हस्त-मात्रायतायाम् ॥) स्वेनतण्डुलान् दधिमिश्रितान्कृत्वा कन्या सप्तपादायतांतराल भूमौ सप्त पुंजानि कृत्वा प्रत्येक पुंजोपरि एकैकां वर्तिकां प्रज्वलय्य वधूस्तदुपरि दक्षिण पादंधृत्वैभिरेव मंत्रैः षड्वर्तिकानिर्वाप्य सप्तमीं ज्वलन्तीमेव स्थापयेत् ॥ सा च वधू वामपादेन दक्षिणपादं नाति क्रामति । वरश्च तदनुगच्छेत् । एकैकं मंत्रं समुच्चार्य सप्तपदानि दापयेदुत्तरोत्तरं दक्षिणपादेन ॥ ॐ एकमिषे इत्यादीनां सप्तानां मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः लिंगोक्तादेवताः सप्तपदीकरणे विनियोगः ॥ ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वानयतु, इति वरेणोक्तस्य मंत्रस्यान्ते वधूर्दक्षिणं पादमुदग्द-धाति । तदनन्तरं वाम पादम् । ॐ द्वेऽऊर्जे विष्णुस्त्वानयतु । ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वानयतु ॥ ॐ चत्वारि मायो भवाय विष्णुस्त्वानयतु ॥ ॐ पञ्चपशुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥ ॐ षड्ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वानयतु ॥ ॐ सखे सप्तपदाभवसामा-मनुव्रताभवविष्णुस्त्वानयतु ॥ ततःसदीपं तंडुल पुंजं ज्वलन्तमेव स्थापयेत् ॥ ततः परिक्रमणंकृत्वा पूर्वासने उपविश्य पुरुष स्कन्ध स्थित कुम्भोदकादाम्रपल्लवैर्दूर्वापिंजूलेनवा वरो वक्ष्यमाणमंत्रै वधूमूर्द्धन्यभिषिंचति ॥ ॐ आपः शिवा इति प्रजापतिर्ऋषिः-यजुश्छन्द. आपोदेवताः वधूमूर्धन्यभिषेचने विनियोगः ॥ ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ ॐ आपो हिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपोदेवताः वधू मूर्धन्यभिषेके विनियोगः ॥ ॐ आपो हिष्ठा मयो भुव स्तानऽऊर्ज्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे ॥१॥ योवः शिवतमो रसस्तस्यभाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ।२। तस्माऽअरंगमामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जन यथा चनः ।३। दिवाविवाहे । ततो वरो वधूं सूर्यमुदीक्षस्वेति वदेत्—

ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वणऋषिर्ब्राह्मी त्रिष्टुप्छन्दः सूर्योदेवता सूर्यादीक्षणेविनियोगः। ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येमशरदः शतं जीवेमशरदः शत ँ० शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥ अथ वरो वध्वादक्षिणांशोपरि स्वदक्षिणंकरंधृत्वा तस्याः हृदयं आलभेत॥ ॐ मम व्रत इति प्रजापतिर्ऋषिःत्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवता वधू हृदयालंभने विनियोगः। ॐ मम व्रतेते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तंतेऽअस्तु। ममवाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तुमह्मम्॥ अथवरो वधू शिरसिहस्तं नीत्वाभिमंत्रयते॥ ॐ सुमङ्गलीरिति प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता वध्वभिमंत्रणे विनियोगः। ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमा ॐ समेत पश्यता सौभाग्यमस्यैदत्वा यथास्तं विपरेतन॥ अत्र शिष्टाचारात् वधूंवरस्य वामभागे उपवेशयन्ति। तस्याः सीमन्ते वरेण सिन्दूरंच दापयन्ति वृद्धाः। देशाचारतो वधूवरौ परस्परं तैलाभ्यंग केशसम्मार्जन चूटिका कज्जलधारण आदर्शादर्शनं दधिप्राशनान्तानिकर्माणि कुरुतः अन्यदपि ग्रामवृद्धवचनानि देशरीत्याच,, विवाहश्मशानयोर्ग्रामवचन मिति प्रमाणात्॥ अथाग्नेः प्रागुदग्वा गृहे (कलाविनडुह चर्म वर्जितस्यात्) रक्तवस्त्रे दृढपुरुषोवरएववा वधूमुत्थाप्यो पवेशयन्ति॥ ॐ इह गाव इति प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवता वधूपवेशने विनियोगः॥ ॐ इह गावो निषीदन्त्विहाश्वा ऽ इह पूरुषाः। इहो सहस्रदक्षिणो यज्ञ ऽ इह पूषा निषीदतु॥ ततो वरस्तस्मात्स्थानादागत्य यथास्थानमुपविश्य स्वयं चोपविशेत्॥ कतिचित्सुदेशेष्विदानीं ग्रामवचनं पूर्वोक्त कर्माणि स्वकुलवृद्ध स्त्रीणां वचनानि कुर्वन्ति॥ ततो हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचमनं कृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा॥ इदमग्नये स्विष्टकृतेनमम॥ इति स्विष्टकृद्धोमंकृत्वा, संस्रवघृतं प्राश्यावधा पधा। जलेन पवित्राभ्यां मुंच संमार्ज्य पवित्रप्रतिपत्तिः,-ॐ

स्वाहा, इति वन्हौ प्रक्षिपेत् । ततोऽग्नेः पश्चात् प्रणीता विमोकं कुर्यात् ॥ ततो ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्—अद्येत्यादि अमुकगोत्रोऽमुक शर्म्मा सवधूकोऽहं विवाह होमकर्मणः सांगता सिद्ध्ये इदं सदक्षिणं पूर्णपात्रं प्रजापति दैवतं अमुक शर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ अकृन्कर्मकर्मकृतः सहवाचामयो भुवा । देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेतसचाभुवः । इति पठेत् (पूर्णाहुति रत्र न भवतीति वक्ष्यमाणप्रमाणात् ॥ विवाहे व्रतबन्धे च शालायां चौलकर्मणि ' गर्भाधानादिसंस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत् ॥ इतिगोभिलसूत्रे) अत्र स्वाचार्यायवरं विपुलं धनं ददाति ॥ किं तद्धनंमाह गौर्ब्राह्मणस्यवरः, ग्रामोराजन्यस्य, अश्वोवैश्यस्य, यथोक्त वराभावे स्वविचानुसारेण सुवर्णरजतादिद्रव्यं दद्यात्—तत्र संकल्प अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकराशिरमुकशर्मा सवधूकोऽहं विवाहहोमकर्मणः सांगता सिद्ध्ये, इमां गां रुद्रदैवतां वा इदं गौ निष्क्रयीभूतं सुवर्णादि द्रव्यममुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यं संप्रददे ॥ ततो भूयसी दक्षिणादानम्—अद्य० अमुक शर्मा सवधूकोऽहं विवाह कर्मणः सांगफलावाप्तये इमां भूयसीं दक्षिणां नाना गोत्रब्राह्मणेभ्यो नटनर्तकादिभ्यो वा विभज्य दास्ये । ततःत्र्यायुपकरणम् ॐत्र्यायुषमिति नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः शिवोदेवता त्र्यायुपकरणे विनियोगः ॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेषुत्र्यायुषंतन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् । ततो भद्रमस्तु०मंत्रेणवधूवरयोर्मंगलतिलकंकृत्वात्र्यायुषं दत्वा आशीर्दद्यात् चतुर्थीकर्महोमार्थमग्ने धारणार्थत्वादग्ने र्विसर्जनमत्रनकर्तव्यम् । रात्रौविवाहेऽभिषेकानन्तरं वरो वधूं ध्रुवं दर्शयति, भोअमुकि देविध्रुवमीक्षस्व ध्रुवमसीति प्रजापति ऋषिः पंक्तिश्छन्दो ध्रुवो देवता ध्रुवोदीक्षणे विनियोगः ॥ ॐध्रुवमसि ध्रुवंत्वा पश्यामि ध्रुवैधिपोष्येमयि । मह्यंत्वाऽदाद् बृहस्पतिर्म्मयापत्या प्रजावती संजीव शरदःशतात् ॥ सा यदि अमात्रपश्येत । तथापि पश्यामि, इति च ब्रूयात (अत्र तु विवाहादारभ्य त्रिरात्र मक्षारलवणाशिनौस्यातामू, जायापती

अधः खट्वा रहिते भूभागे आस्तृते शयीयातां त्रिरात्रमेव,, अत्र त्रिरात्रपक्षाश्रयणं चतुर्थ्युत्तरकालः । हेतुस्तु पूर्वव्याख्याने विहितः । सूत्रोक्तिस्तु चतुर्थ्यामपररात्रेऽभ्यन्तरतोऽग्निमुपसमाधायेति चतुर्थी कर्मणो विधिः । स च चतुर्थ्यां तिथौ विवाह तिथिमारभ्यापररात्रेः रात्रेः पश्चिमे यामेऽभ्यन्तरतो गृहस्यमध्ये ऽग्निं वैवाहिकमुपसमाधाय पंचभूसंकारान् कृत्वा स्थापयित्वा च कुशकंडिकोक्त विधिना सर्वकर्म भवति । समीचीनोऽसौ सूत्रोक्त विधिः ॥ परंच कतिचित् पर्वतीयप्रान्तेषु विघ्नबाधा संकोचेन-सूत्रे (ग्राम वचनं च कुर्युः) अत्र विवाहे ग्राम शब्दवाच्यानां स्वकुलवृद्धानामाचार्याणां वाक्यं पारं पर्यानुगतमर्यादानां पालनं च कुर्वन्ति । यथा अंकुरार्पण हरिद्रोक्षतकंकणमुकुटधारणादिधर्मप्रतिपादकमस्ति ॥ तद्वद् चतुर्दिनानामपकर्षं कृत्वा विवाह वेद्यामपि चतुर्थीकर्म कुर्वन्ति-तदनुमयापि देशरीत्या विवाह वेद्यां चतुर्थीकमर्णोविधिरुदाहृतः ॥

अथ चतुर्थीकर्मपद्धतिः ॥

ततः पूर्वोक्तध्रुवदर्शनानन्तरं विवाह वेद्या उत्तर भागे हस्तमात्रां वेदीं कृत्वा सामग्रीं संपाद्याचम्य प्राणायाम त्रयंविधाय वधूं स्वदक्षिणतः कृत्वा संकल्पं कुर्यात्-अद्येत्यादि० अमुकशर्माहं करिष्यमाण चतुर्थीकर्मांगहोमकर्मणितत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्ये गणेशवरुणपूजनमहं करिष्ये । ततः पूर्वोक्तविधिना गणेशंसंपूज्य होमवेदीशानकोणेकलशंवरुणविधिना संस्थाप्य संपूज्य च पुण्याह वाचनं वा शान्तिसूक्तपाठं कृत्वा कुशकंडिकाविधिना वेदीसंस्कारं कुर्यात् ॥ तद्यथा-कुशैर्हस्तमात्रमितां वेदीं परिसमूह्य तान् पूर्वस्यां क्षिपेत् । गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलकेन यथोत्तरं त्रिस्रोरेखा विलिख्योल्लिखनक्रमेणानामिकांगुष्टकाभ्यां मृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य तत्र विवाहाग्निं कांस्यपात्रे स्वाभिमुखीकृत्य स्थापयेत् । ततो ब्रह्माणं गन्धाक्षतादिभिः संपूज्य, अद्येत्यादि० अमु-

कोऽहं कर्तव्यचतुर्थी होमकर्मांगकर्माणिकृताकृतावेक्षणरूप ब्रह्म कर्मकर्तुमेतैर्वासोंगुलीये बृहस्पतिदेवतैरमुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे वृतोऽस्मीतिप्रत्युक्तिः यथा विहितं कर्मकुरु। करवाणीति प्रत्युक्तिः। अग्नेर्दक्षिणतः कुशानास्तीर्यासनं दत्वा ब्रह्माणमग्निप्रदक्षिणं कारयित्वाकल्पितासनेउदङ्मुखमुपवेशयेत्। अस्मिन्कर्मणित्वंमेब्रह्माभव, भवानीतिप्रत्युक्तिः। प्रणीतापात्रंपुरतः कृत्वावारिणापूर्य कुशैराच्छाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात्। ततः पूर्वादारभ्य कुशास्तरणं कुर्यात्। ततोऽग्नेः पश्चात् पवित्रछेदनार्थं साग्रमनन्तंकुशपत्रत्रयं पवित्रार्थंसाग्रमनन्तगर्भं कुशपत्रद्वयंस्थापयेत्। प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली चरुस्थाली संमार्जनकुशाःपंच वेंणीरूपकुशाःसप्त पालाशसमिधस्तिस्रः स्रुवस्तण्डुलपूर्णपात्रमेतानिवस्तूनि पवित्रछेदनकुशानां पूर्वपूर्वं क्रमेणासादनीयानि। पवित्रछेदनकुशैर्द्वे पवित्रे छित्वा प्रोक्षणीपात्रेजलंत्रिरुत्क्षिप्यप्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणं कृत्वा प्रोक्षणीजलेनासादितवस्तूनि, सिक्त्वा अग्निप्रणीतयोर्मध्येप्रोक्षणीपात्रंनिदध्यात्। आज्यस्थाल्यामाज्यं चरुस्थाल्यां चरुं चाग्नौयुगपदारोप्य यथाविधिश्रपयित्वाज्वलत्तृणेन हविर्वेष्टयित्वा वह्नौप्रक्षिपेत्। स्रुवमधोमुखंप्रतप्य संमार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः संमृज्य प्रणीतोदकेनाभ्युक्ष्यपुनः प्रतप्य स्वदक्षिणतः कुशोपरिनिदध्यात्। तत आज्यंचरुश्चाग्नेरवतार्यावेक्ष्यापद्रव्यं निरस्योपयमन कुशानादाय वारत्रयं तदाज्यमुत्पूयवामहस्तेकृत्वा ततोघृताक्तास्तिस्रः समिधः उत्तिष्ठन मनसाप्रजापतिंध्यात्वातूष्णीमग्नौजुहुयात्। अग्नि पर्युक्ष्योपविश्य ततोऽग्नेः पूजनम्— (चतुर्थ्यांतुशिखीनामेतिवचनात्) ॐ भूर्भुवः स्वः शिखीनामाग्ने इहागच्छेहतिष्ठसुप्रतिष्ठितोवरदोभव ॐ एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य ॐ अग्निप्रज्वलितंवन्दे जातवेदसम्, सुवर्णवर्णमनलंसमिद्धं सर्वतोमुखम्। ॐ चत्वारिशृङ्गा० ॐ शिखिनामाग्नयेनमः इति नाममंत्रेणपाद्यादि नीराजनान्तंसम्पूज्य ॐ रेखाभ्योनमः। ॐ

सप्तजिह्वाभ्योनमः सम्पूज्यब्रह्मणान्वारब्धआघारादिजुहुयात् ॐ प्रजापत्यादिचतुर्णांमंत्राणां प्रजापतिर्ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो मंत्रोक्तादेवता आज्यहोमे विनियोगः। मनसाप्रंजापतिंध्यात्वा, ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदंप्रजापतयेनमम । ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्रायनमम, इत्याघारौ, ॐ सोमाय स्वाहा, इदंसोमायनमम ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नयेनमम, इत्याज्यभागौ, (पारस्करगृह्यसूत्रानुसारात् आज्यभागानन्तरं अग्नेप्रायश्चित्ते, इत्यादिभिः पंचाहुतीः पंचभिर्मंत्रैर्हुत्वा ततोऽग्नौ स्विष्टकृतेहुत्वाऽऽज्येन महाव्याहृत्यादि प्राजापत्यान्तानवाहुतीर्वाजुहोति । इतिप्रमाणादादौ अन्वारम्भंत्यक्त्वाआज्येन प्रधानहोमंकुर्यात्) ॐ अग्ने प्रायश्चित्त इत्यादीनां पंचानांमंत्राणां परमेष्ठी ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो लिंगोक्ता देवताः चतुर्थीकर्मांगाज्यहोमे विनियोगः । ॐ अग्ने प्रायश्चित्तेत्वं देवानांप्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकामऽउपधावामि यास्यैपतिघ्नी तनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा। इदमग्नयेनमम। इत्यादि षडाहुतीनां संस्रवमुदपात्रे पृथक्प्रक्षेपः । ॐ वायोप्रायश्चित्तेत्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकामउपधावामियास्यै प्रजाघ्नीतनूस्तामस्यैनाशय स्वाहा। ॥२॥ इदंवायवेनमम ॐ सूर्य प्रायश्चित्तेत्वं देवनांप्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकाम उपधावामियास्यैपशुघ्नीतनूस्तामस्यैनाशयस्वाहा इद ‌ं० सूर्यायनमम ॥३॥ ॐ चन्द्रप्रायश्चित्तेत्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वानाथकामऽउपधावामियास्यै ग्रहघ्नीतनूस्तामस्यैनाशय स्वाहा,इदं चन्द्रमसेनमम ॥४॥ ॐ गन्धर्वप्रायश्चित्तेत्वंदेवानां प्रायश्चित्तिरसिब्राह्मणस्त्वानाथकाम, उपधावामियास्यै यशोघ्नीतनूस्तामस्यै नाशयस्वाहा, इदं गन्धर्वायनमम ॥५॥ ततः स्थालीपाकमाज्येनाभिघार्य स्रुवेणादाय प्रजापतिंमनासाध्यात्वा । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतयेननम ॥ ६ ॥ इत्यन्तं उदपात्रे संस्रवप्रक्षेपः (ततश्चरुणाअग्नये स्विष्ठकृतेहुत्वा पश्चादाज्येन महाव्याहृत्यादि प्राजापत्यान्तानवाहुतीर्जुहुयात्,, इति प्रमाणात्) ॐ अग्नये

स्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम । ततो ब्रह्मणान्वारब्धः ॐ महाव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषि गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्यादेवताः प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ भूः स्वा० इदमग्नयेनमम । संस्रवधारणम् । ॐ भुवः स्वाहा इदंवायवेनमम ॐ स्वः स्वाहा इदꣳसूर्यायनमम । ॐ त्वन्नोऽअग्न इत्यस्य वाम देवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्नीवरुणौदेवते प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानोव्विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॐ सत्वन्नइतिवामदेव ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरुणौदेवते प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ । अवय- क्ष्वनोव्वरुण ꣳ० रराणोव्वीहिमृडीक ꣳ० सुहवोनऽएधि । स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॐ अयाश्चाग्न इति वामदेवऋषिस्त्रिष्टु- प्छन्दो ऽअग्निर्देवता प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ॐ अयाश्चा- ग्नेऽस्यनभिशस्ति पाश्चसत्यमित्वमयाऽसि । अयानोयज्ञंव्वहा- स्ययानोधेहिभेषजꣳ स्वाहा । इदमग्नयेनमम । ॐ येतेशतमिति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोव्वरुणः सविता विष्णुर्विश्वेमरुतः स्व- र्काश्चदेवताः प्रायश्चित्त होमे विनियोगः ॐ येतेशतंव्वरुणंये स- हस्रंयज्ञियाः पाशाव्वितताम्महान्तः तेभिर्न्नोऽअद्यसवितोत विष्णु र्विश्वेमुञ्चन्तुमरुतः स्वर्काः स्वाहा । इदंव्वरुणायसवित्रेविष्णवे व्विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्चनमम । ॐ उदुत्तममितिशुनः शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोव्वरुणोदेवता प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्मदवाधमंव्विमध्यमꣳ श्रथाय । अथाव्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा । इदंव्वरुणाय नमम ॥ मनसा—ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदंप्रजापतये नमम । ततोवर्हिर्होमः । ततः संस्रवं प्राश्य पवित्रेऽग्नौ प्रक्षिप्य पश्चिमतः प्रणीताविमोकं कृत्वा पूर्णपात्रदानं कुर्यात् । पूर्णपात्रं सम्पूज्य ब्रह्मणे नमः । अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममास्या वध्वाः

सोमाद्युप भुक्ति परिहारार्थं चतुर्थी कर्माङ्ग होम कर्मणः सांगता सिद्ध्ये इदंसद्रव्यं पूर्णपात्रं अमुकशर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे। इति पूर्णपात्रं ब्रह्मणे दद्यात् ॥ ॐ अक्रन् कर्म कर्मकृतः सहवाचा मयो भुवा ॥ देवेभ्यः कर्मकृत्वास्तं प्रेतसचा भुवः इत्याशिषं पठित्वा पूर्वस्थापितादुदपात्रादुदकमानीय वरो वक्ष्यमाण-मंत्रेण वधूमूर्धन्यभिषिंचति ॥ ॐ यातऽइति प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दोवधूर्देवता अभिषेचने विनियोगः॥ ॐ यातेपतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूः। जारघ्नी ततऽएनांकरोमि। साजीर्यत्वं मयासह अमुकिदेवि ? (इत्यत्र कतिचित्सु प्रान्तेषु पति नामाद्य वर्णाक्षरान्वितं सुन्दरीति पदान्तं वध्वाः पुनर्नामकरणं कुर्वन्ति समाचारतः समीचीनासौ विधिः) अथ वरो वधूं हुतशेषंस्थालीपाकं प्राशयति ॥ ॐ प्राणै-स्त इति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दो वधूर्देवता वध्वाः स्थालीपाक प्राशने विनियोगः ॥ ॐ प्राणैस्ते प्राणान्संदधाम्यस्थिभिरस्थीनिमा ॐ सैर्मा ॐ सानि त्वचात्वचम् ॥ देशाचाराद्वरः स्वहस्तेनैवग्रासपञ्चकं वधूं प्राशयेत् ॥ अतः परंपत्नी शब्दः प्रयोक्तव्यः। अत्र देशाचारतो वरोऽपिकन्याहस्तेन भोजनं करोति ॥ इति गदाधरोक्तिः ॥ इदानीमेव वरः स्वपत्न्या दक्षिणस्कन्धो परि स्वदक्षिण करतलं निधाय मंत्रं पठन् हृदयमालभेत ॥ ॐ यत्त इति प्रजापतिर्ऋषि त्रिष्टुप्छन्दो हृदयं देवता हृदयालंभने विनियोगः ॥ ॐ यत्तेसुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् ववेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतंजीवेम शरदः शत ꣳ शृणुयाम शरदः शतम् ॥ ततो वेद्याः कलश सहितं सपत्नीकोवरः पत्नीमग्रतः कृत्वा प्रदक्षिणा चतुष्टयं कुर्यात् ॥ ततो देशाचारतो वरः स्वभार्यायाः अभिनव कंकतिकया सीमन्तोन्नयनं कृत्वा तन्मध्ये सिन्दूरं दापयित्वा भालमध्ये विन्दिकया अलंकरोति ततो वरो वाध्वा, वधूश्च वरस्य अञ्चलग्रन्थि कङ्कण मोचनं परस्परं कुरुतः कङ्कण मोचन मंत्रः—ॐ कङ्कणं मोचयाम्यद्यरक्षोघ्न रक्षणंमम।

मयि रक्षां स्थिरां कृत्वा स्वस्थानं गच्छ कङ्कण ॥ ततो दक्षिणा संकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य सपत्नीकोऽमुकोऽहं कृतस्यास्य चतुर्थी कर्मणः सांगता सिध्यर्थमिमां दक्षिणामाचार्यायान्येभ्यो नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यचदास्ये । एवं ब्राह्मण भोजनस्यापि संकल्पं कृत्वोत्तरांग भूतमग्निपूजनं विधाय (अत्रापि चतुर्थी कर्मणो विवाहांगत्वान्न पूर्णाहुतिः) वह्निं विसृजेत् ॥ ॐ गच्छत्वं भवन्नग्नेः स्वस्थानं कुण्ड मध्यतः इष्टकाम समृध्यर्थं पुनरागमनंकुरु ॥ ततस्त्र्यायुषं कृत्वा वरवध्वो मंगलाभिषेक तिलकंच कृत्वाऽऽशीर्दद्यात् ॥ इति चतुर्थी कर्मपद्धतिः ॥

विवहोत्तरांगकर्मपद्धतिः

कतिपय प्रदेशेषु—अधुना कन्यापिता बान्धवैः सह पूर्व दिवसे स्थापितानां गणेशादि पंचांग-देवताना मुत्तरांग पूजनं विधाय,, ॐ यांतुदेवगणः सर्वे पूजामादायमामकीम् ॥ इष्टकाम समृध्यर्थं पुनरागमनंकुरु इति विसृज्यकलशजलं वेद्यामानीय तदा-गोदान विधिना सवत्सां गां सम्पूज्य स्वपिरन्धन् पुच्छतोयेन संतर्प्यंच वरवधूभ्यांदत्वा ताभ्यां कलशजलेनाभिषेकादि मंत्र तिलक पुरः सर माशीर्याचते ॥ तौ वरवध्वौ सकुटम्ब यजमान माशीर्दत्वा ततः पंच घोषपूर्वकं सपत्नीकोवरः विवाह मंडपात् स्वसुरगृहाभ्यन्तरं गत्वा तत्रपट्ट लिखित सप्तजीव मातृणां पूजनं कुर्यात् ॥ तत्राभ्यन्तरे सपत्नीकोवरः स्वासन उपविश्या-चम्य भूतोत्सादनं कृत्वा प्राणायामत्रयंविधाय संकल्पंकुर्यात् । अद्येत्यादि सपत्नीकोऽहं सर्वसौभाग्यप्राप्तयेपट्टलिखितानां कल्याण्यादिजीवमातृणांपूजनंकरिष्ये । ॐ भूर्भुवः स्वः कल्याण्यादि जीवमातरः,इहागच्छन्तु, इहतिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितावरदा भवन्तु-इति प्रतिष्ठाप्य ध्यायेत्—ॐ कल्याणी मंगला भद्रा पुण्यापुण्यमुखी-तथा ॥ जया च विजयाचैव रक्षन्तु जीवमातरः ॥ इति ध्यात्वा नाममंत्रैः पाद्यादि नीराजनान्तं पूजनं कुर्यात् ॥ तद्यथा—ॐ

कल्याण्यै नमः, ॐ मंगलायै नमः, ॐ भद्रायै नमः, ॐ पुण्यायै नमः, ॐ पुण्यमुख्यै नमः, ॐ जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः इतिमन्त्रै र्नैवेद्यान्तं संपूज्योपायनं समर्प्य पुष्पांजलिं दद्यात्। ॐ कल्याणि देहि कल्याणं मंगलं चैव मंगले ॥ भद्रे त्वं देहिनो भद्रं पुण्ये पुण्यप्रदा भव। पुण्योद्गमं पुण्यमुखि विजये देहि जयंचनः विजयं विजयेमातः शत्रुभ्यः कुरु सर्वदा ॥ इति संप्रार्थ्य—ततः पुत्र्यन्वितंवरंचतुष्पात्काष्ठपीठे धृत्वा श्वश्रूनयोः पादौ पात्रेप्रक्षाल्य तिलकं कृत्वा सुवासिनी द्वारा स्वयंवा महानीराजनं कुर्यात् ततोवरः स्ववित्तानुसारंधनं श्वश्रूचरणयो धृत्वा भो श्वश्रु ! अमुकनामाहं तव जामाता त्वामभिवादये। ततः श्वश्रोः प्रत्युक्तिः आयुष्मानस्तु सौम्य ! ततोऽन्यासामपि चरणाभिवन्दनं कृत्वा सुखेनोपविशेत्। ततः श्वश्रू आदौ पुत्रीजामातरौदधि प्राशनं कारयित्वा ततः पिष्टापूपमोदकपदार्थानि दद्यात्। ततो भोज्यपदार्थान् भुक्त्वा यथा सुखं विहरेत्। इति जीवमातृप्रजनश्वश्रू सम्मेलन विधिः।

वरवध्वोर्गमने मार्गरक्षाविधिः।

"कतिचित्प्रदेशेषु वरवध्वो र्गमनतः पूर्वकन्यापिता उपवासं विदधातीति देशाचारोऽयम्,, ततो द्वितीयदिवसे तद्दिनेवा श्वसुरदत्तयौतकमाप्तपुरुषद्वारा स्वगृहं प्रति संप्रेष्य सवधूवरः श्वश्रू श्वसुरयोश्चरणौ—अभिवन्दनार्थं गृहाभ्यन्तरं व्रजेत् । तत्रस्वास्तीर्णे कम्बलाद्युपविश्य कन्यापिता वरपक्षीयसंबन्धीनप्याहूयास्तीर्णे उपवेशयित्वा वरवध्वासहतान् गन्धाक्षतादिभिः संपूज्य स्ववित्तानुसारतउपायनेन संतोष्य समन्यूनातिरिक्त सपर्यां स्वीकृत्य भवन्तो गृहंप्रति प्रसन्नतया गच्छन्तु,इति विसृजेत् ततोऽग्रतः सवधूकोवर उत्थायतत्रस्थान्स्नेहिजनानभिवंद्य कन्यामाता तदुपरि सुमंगलार्थं लाजा तण्डुलादिमिश्रितसद्द्रव्यवृष्टिं

विधाय बहिरागत्य अष्टद्वारदेहलीगणेशसन्निधौ वधूदेहलीगणेश-पूजनं कुर्यात् ॥ आचम्य पाद्यगन्धादिभिर्देहलीम् ॐदेहल्यै नमः इतिमंत्रेण संपूज्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ आवयोर्देहि सौभाग्यमायुरारोग्यतांचवै ॥ अत्रस्थाः सुखिनः सन्तु मातर्देहलि तेनमः ॥ इति देहल्यां गन्धाक्षत पुष्पाणि संस्थाप्योभाभ्यां हस्ताभ्यां वार त्रयमभिवादयेत् । अथ देहली वन्दनानन्तरं शुभदिने वरः स्वभार्यां स्वगृहमानयितुं शिबकां रथंवाऽऽनाय्य तदा शिविकाबन्धने-वारथेऽश्वादि नियोजने,, वक्ष्यमाणमंत्रंपठेद्वापाठयेत्-मंत्रः-ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषंचरन्तम्परितस्थुषः । रोचन्ते रोचनादिव । ततः शिविकां वा रथं नूतनवस्त्रेणाच्छादयेत् । संमार्जयित्वा चाभिमंत्रयेत् ॐ अंकौन्यंकावभितोरथंये ध्वान्ता वाता अग्निमभिर्येसंचरन्ति दूरेहेतिः पतत्रीवाजिनीवां स्तेनोऽग्नयः प्रप्रयः पालयन्तु । तत्र आसनमभिमंत्रयेत्—ॐ वनस्पतेव्वीड्वङ्गोऽहिभूयाऽअस्मत्सखाप्रतरणः सुवीरः । गोभिः सन्नद्धोऽअसिव्वीडयस्वास्थाताजयतुजेत्वानि । शिविकारोहणमंत्रः—सुकिंशुकं शल्मलिंविश्वरूपं हिरण्यवर्णंसुवृतंसुचक्रम् । आरोहसूर्येऽमृतस्य लोकंस्योनंपत्येवहतुंकृणुस्व । अतःपरमाचार्यः प्रतिमंत्रान्ते रक्षोघ्नद्रव्यं वरवध्वोरुपरि भ्रामयित्वा चतुर्दिक्षुप्रक्षिपेत् । ततोवरोऽपि-शिविकाया मुपविश्या ग्रतोवधूंकृत्वा वादित्रवादकान्बोधयेत् । मंत्रः ॐ उपश्वासयपृथिवीमुतद्याम्पुरुत्रातेमनुतां विष्ठितंजगत् सदुंदुभेसजूरिन्द्रेणदेवैर्दूराद्दवीयोऽअपसेधशत्रून् । इतिमंत्रेण दुंदुभ्यादिवाद्यध्वनिं कारयेत। ततो रथंशिविकांवा वक्ष्यमाणमंत्रंपठन् पूर्वंवाहयित्वा प्रादक्षिण्येनग्राममार्गप्रत्यागच्छेत् तदामंत्रंपठति, ॐ प्रतिमायन्तुदेवताः प्रतिब्रह्मसुवीर्यम् प्रतिक्षत्रंयद्बलं प्रतिमामैतियद्यशः । यदिमार्गेअमंगलवस्तून्यालोकयति, तदामंत्रः-भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा ॐ संस्तनूभिर्व्यशेमहिदेवहितंयदायुः । मार्गेग्रामश्चेत्तदामंत्रंपठेत् ॐ इमारुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः । यथाशम

सद्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टंग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्। मार्गेवृक्षसन्निधौ जपनीयोमंत्रः ॐ नमोरुद्रायैकवृक्षसदे ॐ येवृक्षेषुशष्पिंजरानील-ग्रीवा विलोहिताः। तेषाॐसहस्रयोजने वधन्वानितन्मसि। मार्गे श्मशान श्चेत्तत्रजपनीयो मंत्रः—ॐ नमोरुद्राय श्मशान सदे॥ ॐ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः तेषा ॐ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि॥ मार्गे चतुष्पथे जपेत्—ॐ नमोरुद्राय चतुष्पथ सदे॥ ॐ ये पथांपथिरक्षय एल बृदा ऽआयुर्युधः। तेषा ॐ सहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि। मार्गे तीर्थमापतति चेत्तत्र जपेत्। ॐ नमो रुद्रायतीर्थसदे। ॐ ये तीर्थानि प्रचरंति सृकाहस्तानिषंगिणः। तेषाॐसहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि। मार्गे सुप्रतरानदी समापततिचेत्—वरोऽजलौजलमादायपठेत् ॐ समुद्रायवैष्णवेसिन्धूनांपतयेनमः नमोनदीनांसर्वासां पत्ये विश्वाह्याजुपतांधिश्वकर्मणामिदंहविः स्वः स्वाहा। इत्यंजलिस्थं जलंनद्यामेवहुत्वा। वारत्रयंमार्जनंकृत्वा, मंत्रंपठित्वा—ॐ अमृतं वाश्रास्येजुहोम्यायुः प्राणोऽप्यमृतं ब्रह्मणासहमृत्युंतरात। प्रस ह्यादितिरिष्टिरितिमुक्तिरिति मुर्चीयमाणः सर्वभयंनुदस्व स्वाहा। इतिवारत्रयमाचमनंकुर्यात्। यदिसेतुनौभ्यांसुप्रतरणीयांनद्या पततिसेतौनाविवागांनं जपेत् ॐ सुत्रामाणं पृथिवींद्यामनेहस ॅं सुशर्माणमदिति ॅं सुप्रणीतिम्। दैवींनावॅंस्वरित्रामनागस मस्रवन्ती मारुहेमास्वस्तये। ततोगोधूल्यांब्राह्मणाज्ञया समुहूर्तंच स्वनगरे प्रविशेत्। ततो गृहाङ्गणे गत्वा वरो वधूमग्रतः कृत्वा तत्रस्थाभ्यां युग्मकलशाभ्यां जलमाम्रादिपल्लवैः शिरस्य-भिषिच्य कलशयोराभ्यन्तरे वित्तानुसारं द्रव्यं क्षिप्त्वा स्वास्ती र्णउपविश्याचम्य गणेशंसंपूज्यमंगलतिलकंचकृत्वा ब्राह्मणादाशी र्वादं गृहीत्वा ततो ज्योतिः शास्त्रोक्ते सल्लग्ने समायाते सुमुहू र्ते सपत्नीको वरः गृहश्रेष्ठद्वारसंनिधौ गत्वा तत्र वधूं स्यासने स्यवामभागे, उपवेशयित्वाऽऽचम्य प्राणायाम त्रयं विधाय संक-ल्पं कुर्यात् अद्येत्यादि सं० अमुकराशिः सपत्नीकोऽहं करिष्य-

माण विवाहोत्तरांग नूतनवधूप्रवेशकर्मणःपुर्वाङ्गत्वेनद्वारमातॄणां पूजनं करिष्ये ध्यायेत्—ॐ कुमारी धनदानन्दा विपुला मंगला-चला ॥ पद्मा चैवेतु सप्तैता ध्यायामि द्वारमातरः । ॐ भूर्भुवःस्वः कुमार्यादि सप्तद्वारमातर इहागच्छन्त्विह तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ एतंतेति प्रतिष्ठाप्यावाहयेत् ॐ आवाहयामि देवेशीर्द्वारमातॄः सुमंगलाः। वधूप्रवेशनार्थंवः पूजयामीह भक्तितः ततोनाममंत्रैः पाद्यादि नीराजनान्तं पूजयेत् । तत्रादौ दक्षिणद्वारे ॐ कुमार्यैनमः ॐ धनदायैनमः ॐ नन्दायैनमः, ततो वामद्वारे ॐ विपुलायैनमः ॐ मंगलायैनमः ॐ अचलायैनमः, द्वारोर्ध्व-प्रदेशे—ॐ पद्मायैनमः, अधः प्रदेशे ॐ देहल्यैनमः, इति संपू-ज्य प्रार्थयेत् । ॐ धनंदेहियशोदेहिसौभाग्यंशरदः शतम् । पुण्यं पुत्रांश्चमेदेहि मातर्देहलितेनमः इतिमंत्रेणाक्षत गन्धपुष्पान्वित पुंजं देहल्यां निधायोभाभ्यां हस्ताभ्यांवारत्रयमभिवंद्य ततो लग्नसामयिकदानानि कुर्यात्—अद्येहामुक राशिस्सपत्नीकोऽहं करिष्यमाणस्वगृहेनूतनवध्वासह गृहप्रवेशकर्मणो लग्नसामयिका-यत्रकुत्र स्थानस्थानामादित्यादि नवग्रहाणांमध्ये शुभानां शुभफ-लाप्तयेक्रूराणांदुष्टफलोपशान्ति पूर्वकशुभफलाप्तये, इदंद्रव्यं अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यंसंप्रददे ॥ ॐ तत्सन्न्‌म । वा गणे-शादि पूजनसमये कुर्यात् । ततः स्वस्तिवाचनं वाचयित्वा वधू मग्रतोनिधायादौ वधूदेहल्यांवामपादं ततो दक्षिणपादं संचालयेत् ततः पूर्वपूजितगणेशपूजास्थलमागत्य स्वासनउपविश्य पत्नींस्व-वामभागे उपवेश्यगणेशादि पूजनंपुण्याह वाचनंकृत्वा क्वचित्फल-केसप्तकोष्ठानिकृत्वा रंगवल्यादिभिः सुसज्यसप्तजीवमातॄणां पूजनं कुर्यात् । अद्येत्यादि० सपत्नीकोऽहं सर्वसौभाग्यप्राप्तये वधू प्रवेशसामयिकपट्टलिखितानां जीवमातॄणां पूजनंकरिष्ये । ॐ भूर्भुवः स्वः कल्याण्यादिसप्तजीवमातर इहागच्छन्त्विहति-ष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु । ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठाप्यध्यायेत्—

ॐ कल्याणीमंगलाभद्रा पुण्या पुण्यमुखी तथा ।.जयाच विजया चैवरक्षन्तुजीनमातरः । इति ध्यात्वा पाद्यादिनीराजनान्तं संपूज्य तद्यथा—ॐ कल्याण्यैनमः, ॐ मंगलायैनमः ॐ भद्रायैनमः, ॐ पुण्यायैनमः ॐ पुण्यमुख्यैनमः ॐजयायैनमः, ॐ विजयायैनमः । इति नैवेद्यान्तं सम्पूज्य दक्षिणांसमर्प्य पुष्पांजलिंदद्यात् ॐ कल्याणिदेहिकल्याणं मंगलंचैवमंगले । भद्रेत्वं देहिनोभद्रं पुण्येत्वं पुण्यदाभव । पुण्योद्गमं पुण्यमुखि जयेदेहिजयंचवः । विजयंविजयेमातःशत्रुभ्यः कुरुसर्वदा ॥ इति संप्रार्थ्य तिलपात्र दानंकृत्वाऽऽशीर्वादंगृहीत्वा वधूश्वश्रूचरण प्रक्षालनंकृत्वा गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्य स्वपितृदत्तधनं वक्ष्यमाणमंत्रेण चरणयोर्निद ध्यात् । मत्पित्रातवपुत्राय भार्यार्थं संस्कृतास्म्यहम । उपायनं गृहाणेदंश्वश्रुमांरक्षपुत्रवत् । इत्युक्त्वा श्वश्रूचरणयोः शिरसाभिवंद्यतद्द्रव्यं चरणयोर्निदध्यात् । ततः श्वश्रूर्वधूशिरसिहस्तंनीत्वा— सर्वदात्वंसुपोष्यामे मातृवद् विद्धिमांवधु । सर्वसौभाग्यसंपन्ने जीवत्वंशरदांशतम् । इदानींश्वश्रूर्वधूमुखंदृष्ट्वा स्ववित्तानुसाराभूषणंददाति । ततो वरपिता वा अन्योयेनगणेशादि पूजनंकृतं स गणेशादीनामुत्तरांगपूजनंविधाय । ॐयान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम् । इष्टकामसमृध्यर्थंकुर्वन्तु पुनरागमम् । इति । विसृज्य तिलपात्रदानंकृत्वा पूर्वस्थापित कलशजलेन पूर्वोक्त सुरास्त्वामभिषिंचन्त्विति मंत्राभ्यामभिषिंच्य मंत्रतिलकंकृत्वादेवोपभुक्त निर्माल्यंदत्वा कंचिच्छ्रीफलादिफलं वधूंदत्वा यथासुखं विहरेत् । इतिवधूप्रवेशकर्म पद्धतिः ।

अथ वधूजलाशयपूजापद्धतिः ।

ततो वधूप्रवेशानन्तरं वरमाता स्वयंनूतनेवाससीपरिधाय स्वाभरणानिसुसज्य परिवारस्त्रीभिः सहनानाविधिमिष्टान्नपिष्टापूप गंधाक्षतादिपूजासामग्रींसंपाद्याग्रतःसुवासिन्यो गीतगायन्त्यो मंगलतूर्यादिवाजित्रैः सहच मात्रिकाफलकं सौभाग्यवत्या शिर

स्याग्रतः कृत्वा धृतमुकुटादि भूषणै वधूवरौवाप्यादिजलाशयं गमयित्वा तत्ररक्तगन्धेनाचार्यो जलमातॄर्विलिख्यपूजयेत्। संकल्पः—अद्येत्यादि० वधूसहितोऽमुकोऽहं करिष्यमाण नूतनवध्वासह जलमातॄणांपूजनंकरिष्ये—आवाहनम्—आवाहयामिदेवेशीर्जलमातॄः सुमंगलाः। सदासौभाग्यदायिन्यः पूजार्थं स्थापयाम्यहम् ॐ एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य चतुर्थ्यन्तै र्नाममंत्रैः पंचोपचारादि पूजनंकुर्यात्। तद्यथा—ॐ मात्स्यैनमः ॐ कूर्म्यैनमः, ॐ वाराह्यै नमः ॐ कुक्कुट्यैनमः ॐमण्डूक्यैनमः ॐ जलूक्यैनमः ॐसोमायैनमः। इति सम्पूज्यनैवेद्यं निवेदयित्वा जलचरेभ्योजलेक्षिप्त्वा प्रार्थयेत्, मात्सींकौर्मींचवाराहीं कुक्कुटीं मंडुकींतथा। जलूकींचैव सोमांच सौभाग्यार्थंनमाम्यहम्। ततःसर्वं नैवेद्यं जलचरजंतुभ्यो जलाशयेक्षिप्त्वा भक्षयित्वा च जलाशयान्मनोहरेपात्रेजलंनीत्वा वधूशिरसितत्पूर्णकलशं निधाय समाचारतोग्रामदेवता स्थानंप्रतिगच्छेत, तत्रदेवताधारचतुर्थ्यन्त नाममंत्रेण पाद्यादिनीराजनान्तां पूजांकृत्वोपायनंनिवेदयेत्। ततः प्रार्थयेत्—यत्रयोदेवस्तस्यध्याने नप्रार्थयेत् (वा) ॐ ग्रामदेवनमस्तुभ्यं सर्वदामंगलंकुरु। प्रसीद देवदेवेशशरणागतवत्सल। ततो प्रदक्षिणांकृत्वा तेनपूरितकलशेन सह वधूमग्रतः कृत्वा गृहमागच्छेत्। कतिचिद्देशेष्विदानीं गृहांगणेश्यामादेवीपूजनपिभवति। देशाचारतो यस्यदेशस्ययआचारः सः सर्वदासेव्यो भवतीतिशास्त्रसम्मतिः। आचारःप्रथमोधर्मः,

इति वधूजलाशयपूजा

एवं विधिनाद्विरागमनमपिकुर्यात् संकल्पस्यैवपृथक्त्वं अन्यत्कर्मसमानम्। अथवधूप्रवेश द्विरागमनयोर्विशेषः—देवकोत्थापन मंडपोद्वासनविधिः—तत्रकालः—समेचदिवसे कुर्याद्देवकोत्थापनंबुधःषष्ठंचविषमंनेष्टमुक्त्वासप्तमपंचमौ समेषुषष्ठंविषमेपंचमसप्तमातिरिक्त दिनंनाश्रेष्ठमित्यर्थः। अथवध्वाःप्रथमगृहप्रवेशविचारः—मुहूर्त चिन्तामणौ—समाद्रिपंचांगदिने विवाहाद्वधूप्रवेशो-

ष्टिदिनान्तराले । शुभः परस्माद्विषमाब्दमासदिनेत्विवर्गात् परतो यथेष्टम् । उक्तं च सारसंग्रहे—विवाहमारभ्य वधूप्रवेशोयुग्मादिने षोडशवासरान्तः । अतः परंविवाहपटले–वधूप्रवेशः प्रथमेत्रवर्षे तथातृतीयेप्यथपंचमेवा । सूर्येन्दुदेवेज्यवलेनकुर्यात् पुंसोमुनिर्गौतम आहसत्यम् । सममासवर्षयोर्दोषमाहनारदः—समेवर्षेसमे मासेयदिनारीगृहंव्रजेत् । आयुष्यंहरतेभर्तुः सानारीमरणंव्रजेत् गुरुशुक्रयोर्विचारमाहलल्ल'—स्वभवनपुरप्रवेशेदेशानां विप्लवेच थोद्वाहे । नववध्वागृहागमने प्रतिशुक्र विचारणानास्ति । नित्ययानेगृहेजीर्णे प्राशनान्तेपुसप्तसु । वधूप्रवेशमांगल्येनमौढ्यंगुरुशुक्रयोः । गर्गः—व्यतीपाते च संक्रान्तौग्रहणेवैधृतावपि । आद्यं विनाशुभंनैव प्राप्तकालेऽपिमानवः । मुहूर्तमार्तण्डे–उद्वाहात्प्रथमे शुचौयदिवसेद्भर्तुर्गृहेकन्यका हन्यात्तज्जननींक्षयेनिजतनुंज्येष्टेपतिर्ज्येष्ठकम् । पौषेचश्वसुरंपतिंच मलिनेचैत्रेस्वपित्रालये तिष्ठन्तीपितरं निहन्तिनभयंतेषामभावेभवेत् । अथ द्विरागमनेविशेषमाह— वादरायणः—अस्तंगतेभृगोः पुत्रेतथासम्मुखमागते । नष्टेजीवे निरंशोवानैवसंचालयेद्वधूम् । मूहूर्त चि०—वरेदथोजद्वायने घटालिमेषगेरवौरवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्यवासरे । नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषेविलग्नकेद्विरागमंलघुध्रुवेचरेस्रपेमृदुर्भिः (नवोढायास्तुवैधव्यंयदुक्तंसम्मुखेभृगौ । तदैवविबुधैर्ज्ञेयम्, केवलंतद्विरागमे । आवश्यकेविशेषमाहपराशरः-पोष्णादिवन्हिभान्ध्रियाव त्तिष्ठतिचन्द्रमाः । तावच्छुक्रोभवेदन्धः समुखेगमनंहितम् । केचिद्दीपोत्सव प्रतिपदिनक्षत्रादिनियमंविनेववधूप्रवेशं द्विरागमंचवांछन्ति । अस्तंगतेगुरौशुक्रे सिंहस्थेवाबृहस्पतौ । दीपोत्सववलेनैववधूभर्तृगृहं विशेत् । कतिचित्सु प्रान्तेपुपारं पर्येत्रान्नक्षत्रादिनियमंविनैव (ग्रामवचनम्) इति प्रमाणात्—नव दिवसान्तराले आविवाहाद्विरागमनं कुर्वन्तीति दिक् ।

इति द्विरागमन पद्धति

अथ विवाहोत्तर वर्ज्यावर्ज्यानि विषयाणि—एकमातृजयोरेक वत्सरे पुरुषस्त्रियोः । न समान कुर्या कुर्वीन्नातृभेदे विधीयते ।१। **नारदः**-पुत्रोद्वाहात्परं पुत्री विवाहो न ऋतुत्रये । न तयोर्व्रतमुद्वाहान्मण्डनादपि मुण्डनम् । **वराहः**-विवाहस्त्वेक जातानां षण्मासाभ्यन्तरे यदि । असंशयं त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैका विधवा भवेत् । **वसिष्ठः** नपुंविवाहोर्ध्वमृतुत्रयेऽपि विवाह कार्यं दुहितुः प्रकुर्यात् । नमण्डनाच्चापि हि मुण्डनं च गोत्रैकतायां यदिनाब्दभेदः ॥ **अत्र गोत्र शब्दोसापिंड्यजनकः**—एकोदरभ्रातृविवाह कृत्यं स्वसुर्न पाणि ग्रहणं विधेयम् । षण्मासमध्ये मुनयः समूचुर्न मुण्डनं मण्डनतोऽपि कार्यम् ॥ **एतदपवादमाह**—ऋतुत्रयस्य मध्ये चेदन्याब्दस्य प्रवेशनम् । तदाप्येकोदरस्यापि विवाहस्तु प्रशस्यते । **सारावल्याम्**—फाल्गुने चैत्र मासे तु पुत्रोद्वाहोपनयने । भेदादब्दस्य कुर्वीत नर्तुत्रय विलम्बनम् ॥ **संहिताप्रदीपे**—ऊर्ध्वं विवाहात्तनयस्य नैव, कार्यो विवाहो दुहितुः समार्धम् । अमङ्गलं स्याच्च वधूं प्रवेश्या स्वगृहं नवोढा । **वशिष्ठः**—द्विशोभनं त्वेकगृहेऽपि नेष्टं शुभं तु पश्चान्नवभिर्दिनैस्तु । आवश्यकं शोभनमुत्सवो वा द्वितीयमवश्यं विभिन्नतो वा । **त्रिमंगलं नेष्टमाह**—एकोदर सूनूना माङ्गल्यार्थत्रयं भवेत् । भिन्नोदर सूनूना नेति शातातपोऽब्रवीत् । ज्योतिर्निबन्धे शातातपः—कुलेऋतुत्रयादर्वाक् मण्डनाच्च तु मुण्डनम् । प्रवेशान्निर्गमो नेष्टो नकुर्यान्मंगलत्रयम् । पुत्रोद्वाहः प्रवेशाख्यः कन्योद्वाहस्तु निर्गमः । मुण्डनं चौलमित्युक्तं व्रतोद्वाहौ तु मङ्गलम् । चौलं मुण्डनमेवोक्तं वर्जयेन्मण्डनात्परम् । मौञ्जी चोभयतः कार्या यतो मौञ्जी न मुण्डनम् । संकटे विशेषः कन्दिकायाम्—उद्वाह पुत्री न पितृ विद्ध्यात्पुत्रान्तरस्योद्वहनं करोति यावच्चतुर्थ दिनमपूर्व स न स्वयोद्वहनं विरुध्यात् । **कश्यपः** - मौञ्जीबन्धस्तथोद्वाहः षण्मासाभ्यन्तरेऽपि वा । पुत्रोद्वाहे न कुर्वीत विभक्तानां न दोषकृत् । **गार्ग्यः** मातृयुगे स्वसृयुगे भ्रातृस्वसृयुगे तथा । न कुर्यान्मंगलं किंचिदेकस्मिन्मण्डपेऽहनि । ज्योतिर्निबन्धेऽपवादः—एकोदरयोर्द्वयोरेकदिनोद्वहने भवेन्नाशः । न्यूनतरेकदिनेऽपि तु संकटे चशुभम् । ऊर्ध्वं विवाहात्पुत्रस्य नारीविवाहो न ऋतुत्रयेऽस्यात् । नारी विवाहात्परतोऽपि शस्तं न तस्याणिग्रहमाहुरार्याः भिन्नभ्रात्रोस्तु एकवासरे विवाहविधिः—पृथङ् मातृजयोः कार्यो विवाहस्त्वेकवासरे एकस्मिन्मण्डपे कार्यः पृथक् वेदिकयोस्तथा । पुष्पपट्टिकयोः कार्यं दर्शनं न शिरस्थयोः भगिनी भ्रातृभिश्चापि च यावत्सप्तपदी भवेत् । **यमलयोस्तु विशेषो गार्ग्य** —एकस्मिन्वासरे प्राप्ते कुर्याद्यमलजातयोः ॥ क्षौरं चैव विवाहं च मौञ्जीबन्धनमेव च । **भट्टकारिकायाम्**—कर्तव्यं मंगलं स्वस्रोः भ्रात्रोर्यमलजातयोः

अथ कन्या गृहे भोजननिषेधः आदित्यपुराणे—विष्णुं जामातरं मन्ये तस्य कोपं न कारयेत् । अप्रजायांतु कन्यायां नाश्नीयात्तस्य वै गृहे । यदि भुञ्जीत मोहाद्वा पूयावहं नरकं व्रजेत् । **मदनरत्ने भविष्ये**—दौहित्रस्य मुखं दृष्ट्वा किमर्थमनुशोचसि दौहित्रस्यान्यपुत्रस्य । **अथ नान्दीश्राद्धोत्तरधर्माः निर्णयदीपे गार्ग्य** —नान्दीश्राद्धे कृते पश्चाद्यावन्मातृ विसर्जनम् । दर्शश्राद्धं क्षयश्राद्धं स्नानं शीतोदकेन च अपसव्यं स्वधाकारं नित्यश्राद्धं तथैवच । ब्रह्मयज्ञं चाध्ययनं नदीसीमातिलंघनम् । उपवास व्रतं चैव श्राद्धभोजनमेव च नैव कुर्युः सपिण्डाश्च मण्डपोद्वासनावधि । **ज्योतिषे**—स्नानं नेत्रं तिलैस्तर्पणकर्म प्रेतानुयानं कलशप्रदानम् अपूर्वतीर्थामरदर्शनं च विवर्जयेन्मंगलतोऽब्दमेकम् । त्रिपुरुषकमात्रम् ॥ मासषट्कं विवाहादौ व्रतारम्भणं च । जीर्णभाण्डादि न त्याज्यं गृहसंमार्जनं तथा । ऊर्ध्वं विवाहात्पुत्रस्य तथा च व्रतबन्धनात् । मदनरत्ने मुण्डनं नैव वर्षं वर्षार्धमेव च अभ्यंगेऽप्युत्सवे चैव विवाहे पुत्र जन्मनि माङ्गल्येषु च सर्वेषु नश्चार्यं गोचिन्तनम् । **बृहस्पतिः**—तीर्थे विवाहे यात्रायां संग्रामे देशविप्लवे । नगरग्रामदाहे च

स्पृष्टास्पृष्टिर्न दुष्यति। योगियाज्ञवल्क्यः—नग्नाय दुहित्रे तीर्तिमंगला विनिर्दिश्य च अनुव्रज्य सुहृद्बन्धू श्राचमितिष्वेदेशाम् । हेमाद्रौरमूलत्ते—विवाहव्रत चूडासु वर्षे मासे तदर्धकम् पिण्डदानमृदा स्नानं न कुर्यात्तिलतर्पणम्। स्मृतौ—त्वालये गयश्राध्दे मातापित्रो क्षये हनि, कृतोद्वाहोऽपि कुर्वीत पिण्डनिर्वपणं सुत ।

अन्यग्रिसाधारणस्थलम्—

अथ कुम्भविवाह परिभाषा।

अथारिष्टार्थं कन्यावैधव्ययोगेतूक्त्या मार्कण्डेयपुराणे—चलवैधव्ययोगेतु कुम्भे पुत्रे निवादिभि । कृत्वा लग्नं तत स्वस्वकन्योद्वहेतिच परे । तत्र पुनर्भूदोषाभाव उक्तो दिमानखण्डे—स्वर्णाम्बुपिप्पलानां च प्रतिमा विष्णुरूपिणी । तयाम्ह विवाहे तुपुनर्भूत्वनजायते । सूर्यारुणसंवादे—विवाहात्पूर्वकाले च चन्द्रतारा बलान्विते । विवाहाको च कन्यान्या कुंभेनसहचोद्वहेत् सूर्येण वक्ष्ये नवशता हृता नुयिवता । कुरुाजकृतदं तथा रेकनारिरे । तत कुंभं चनिः सर्वप्रभ-स्थातिलजागे । ततोऽभिषिचनं कुमारिकं कल्पिकामिभे । कुंभप्रार्थनापि तत्रैवोक्ता—वरुणांग स्वरूपाय जीवनानां समाश्रय। पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्र सुखं कुरु। देहिविष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः । ततोऽष्टावस्त्रादि च यथा अर्थेत्। अनन्तरो विष्णु । तत्रैव मूर्तिदानमप्युक्तम् ब्राह्मणाबधुवामेव सम्पूज्य विधिवद्धरिं । तस्मात्स्य द्विवानन विष्णुमूर्तिं चतुर्भुजम् । शुद्धवर्णं सुवर्णेन निर्मितं कान्तिवर्धितम् । निर्मितां चिता शङ्ख गदा चक्रकरायुताम् । दधता वामस्य पीतेकुसुदोत्तम-मालिनम् । सत्दिणा च ता यन्त्र भेनमुदीरयेत् । मंत्र —न्यात्राणि स्नुविद परत्रातिन राजम्म् । विरोपविन स्त्र यैर्हतो न भवि क्वचित् । प्रा मान महाघोर सौख्यधनम् । वैधव्यादिदुःखौघनाशाय सुस्थभवे । बहुसौभाग्य लब्धौ च महाविष्णोरिमा ततुम् । सौवर्णिनिर्मिता मया तुभ्यंसम्प्रददे द्विज । अनन्ताद्वादसमीत्ति निशार जयन्ति । एवं चित्ति तस्यो काष्ठगृहीत्वा सहनिशत । ततो वेदविद् कुर्याद्विधिं तमुपगीहरा ।

॥ अथ कुंभविवाहपद्धतिः ॥

अथच कन्यापिता ऽन्योवा–एकान्त स्थाने विष्णुमन्दिरादौ गत्वासनेप्राङ्मुखमुपविश्याचम्यप्राणायामत्रयं विधाय भूतो-त्सादनं कृत्वा स्वदक्षिणतः कन्यामुपविश्य स्वस्तिवाचनं पठित्वा संकल्पं कुर्यात। अद्येहेत्यादि देशकालसंकीर्तनान्ते ममास्याः कन्याया नक्षत्रादि योगेन ग्रहयोगेनच पुनर्भू दोषाभावेन विषा-ख्य योगसंभव वैधव्यारिष्ट परिहारार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कुंभ विवाहं करिष्ये,, तत्पूर्वांगत्वेन गणेशादिपंचांगपूजनं नान्दीश्राद्धं चाहं करिष्ये,, ततो गणेशादि पूजनं कृत्वा । आचार्यं वृणुयात् ॥ ब्राह्मणं सम्पूज्य वरण सामग्रीं हस्तेनीत्वा–अद्येत्यादि संकीर्त्य मुकोऽहं ममास्याः कन्यायावैधव्य दोषपरिहारार्थं करिष्यमाण

वक्ष्यमाणमन्त्रेणान्तः पटं कुर्यात् । विवाहोक्तगोत्रोच्चारण विधौ मंगलपद्याष्टकं पठित्वा कन्याया वस्त्राणिपरिधाप्योत्तरतो वक्ष्य माणमंत्रेणान्तः पटमपसार्य समीक्षणं कुर्यात् । मंत्रः ॐ समं जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानिनौ ॥ संमातरिश्वा संधाता समुदेष्ट्री दधाननौ । इतिपरस्पर कुंभकन्ययोः समीक्षणं कृत्वा । कन्यां पाद्यगंधादिभिः संपूज्यसंकल्पं कुर्यात् । ॐ विष्णुः ३ इति त्रिराचम्याद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य ममास्याः कन्याया वैधव्य दोष परिहारद्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं श्री विष्णुवरुण स्वरूपिणे कुम्भायैमां वरार्थिनी श्रीस्वरूपिणीं कन्यां संप्रददे । दान वाक्य पठेत्– गौरीं कन्यामिमां श्लक्ष्णां यथाशक्ति विभूषितां । ददामि विष्णवे तुभ्यं सौभाग्यं देहि सर्वदा । इति दत्वा वक्ष्यमाण मन्त्रेण दशतन्तुकेन सूत्रेण कन्यांकुंभंच मंत्रावृत्या दशधावेष्टयेत् । ॐ परित्वेत्यस्य मधुच्छन्दाऋषीरनुष्टुप्छन्दः कुंभविवाहे कन्या कुंभेनसहवेष्टने विनियोगः । ॐ परित्वागिर्वणोगिरऽइमामवन्तु विश्वतः वृद्धायु मनुवृद्धयो जुष्टाभवन्तुजुष्टयः । इति मंत्रेण दशावृत्या वेष्टयेत् । ततःकन्यांप्रार्थयेत् । ॐ यन्मयाप्राचि जनुषि त्यक्त्वा पति समागमम् । विषोपविषशस्त्राद्यैर्हतोवाति विरक्तया प्राप्यमानं महाघोर यशःसौख्य धनापहम् । वैधव्याद्याति दुःखौ घ नाशाय प्रार्थयाम्यहम् । विष्णोस्त्वं देहि सौभाग्य कुरु वैध-व्यनाशनम् । इति सम्प्रार्थ्य ततोवेष्टितसूत्रात्कुंभं निःसार्य जला शयेप्रसारयेत् । ततः पञ्चपल्लवसहितेन पूजाप्रकरणोक्त समुद्रज्येष्ठा इत्यादि मन्त्रैस्तत्रोक्तैर्वैदिकैश्च कन्यामभिषिच्यान्यद्वासांसि परि धाप्यप्रतिमादानं कुर्यात । अद्येहेत्यादि संकीर्त्यामुकराशे रमुक क-न्यायाः करिष्यमाण वैधव्य दोषोपशमनार्थं कुंभ विवाह कर्मणि आजन्म सौभाग्य फलप्राप्तये इमेसुपूजिते विष्णु वरुणप्रतिमे वै-याहवस्त्रसहिते चामुक शर्मणेआचार्याय दास्ये तथा चान्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसी दक्षिणां विभज्य दास्ये तथा च ब्राह्मणान्भो

जयिष्ये—इत्याचार्याय प्रतिमां दत्वा प्रार्थयेत्—ॐ बहुसौभाग्य लब्धौ च महाविष्णो रिमां तनुम् । सौवर्णिं निर्मितिं शक्त्यातुभ्यं संप्रददेद्विज । ॐ अनघाहमस्मि, इति वारत्रयंकन्याप्रार्थयेत् एवमस्तु, इति वारत्रयमाचार्यो ब्रूयात् । ततो गणेशादीनामुत्तरांग पूजनंकृत्वा यान्तुदेवेति विसृज्याभिषेकमन्त्रतिलकं कृत्वा यथा शक्तिब्राह्मणान्भोजयित्वा ततः कन्याविवाहं कुर्यात् । एवंविधि कृते सतिशुभं भवेत् इति कुंभविवाह पद्धतिः ।

अथ प्रतिमाविवाहपद्धतिः ।

अथच कन्याया जन्मकालीन ग्रहादिसूचितवैधव्य परिहारार्थं पूर्वं विष्णुप्रति मया सह विवाहं कृत्वा तदन्तरं विवाहमाचरेत् । उक्तंच विधानखण्डे—स्वर्णाम्बुपिप्पलानां च प्रतिमाविष्णुरूपिणी तयासहविवाहेतुपुनर्भूत्वंनजायते । संस्कारप्रकाशेऽपि—विष्णु प्रतिमा विवाहप्रकारोऽऽभ्यभिहितः । तत्र कर्ता स्नात्वास्वासनमुपविश्य प्राङ्मुखः आचम्य भूतोत्सादनंकृत्वा दीपंप्रज्वाल्यसंकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादि० अमुकीकन्यायावैधव्यदोषपरिहारार्थं करिष्यमाण विष्णुप्रतिमयासह विवाहकर्मणि निर्विघ्नतासिद्ध्ये तत्रादौ गणेशादि पंचांग देवतानां पूजनपूर्वकं प्रतिमा विवाहं च करिष्ये । ततः कन्यां संस्नाप्य शुद्धेनूतने वाससी परिधाप्य स्व दक्षिणभागे समुपवेश्य स्वस्तिवाचनं पठित्वा गणेशादिपूजनं कृत्वा प्रधानसंकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादि० इदानीममुकगोत्रायामुकराशेरस्याः कन्याया अमुकस्थानस्थितदुष्टग्रहसूचित वैधव्य दोषोपशांतिद्वारा श्री परमेश्वरप्रीत्यर्थं सौभाग्य प्राप्त्यर्थं च विष्णुप्रतिमयासहविवाहं करिष्ये ॥ कन्या हस्तेन प्रतिमा दानंच करिष्ये । तत आचार्यवरणं कृत्वा । संप्रार्थ्य च, ततः सपादपलस्वर्ण निर्मितां चतुर्भुजां विष्णुप्रतिमां शंखचक्रगदायुतां पूर्वोक्त विधिनाऽग्न्युत्तारण कृतां पञ्चामृतेन संस्नाप्य, तण्डुलपूरित

ताम्रपात्रोपरि संस्थाप्य ॐ एतन्तेति पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः भो विष्णोप्रतिमायामिह/ गच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठतो वरदोभव इति प्रतिष्ठाप्य अद्येहेत्यादि० अमुकगोत्रायाममास्याः कन्यायाः जन्मलग्नावधिकेवैधव्य संभावनाजनितग्रहैवैधव्यदोष निवृत्तये-आजन्म भविष्यत्पतिना सह सौभाग्य प्राप्तये श्रीपरमेश्वर प्रीतये सुवर्णप्रतिमायां श्री विष्णोः षोडशोपचार पूजनं करिष्ये ध्यानम्- ॐ निर्मितां रुचिरां शंखगदाचक्राब्जसंयुताम् । दधानां वाससीपीतेध्यायामि विष्णुरूपिणीम् । इति ध्यात्वा पुरुष सूक्तेनवा वक्ष्यमाणमन्त्रैः षोडशोपचारेण प्रतिमापूजनं कुर्यात् । ॐ तद्विष्णोरित्यादिमन्त्रत्रयाणां मेधातिथि-र्याज्ञवल्क्यऋषिर्गायत्री छन्दो विष्णुर्देवता प्रतिमाविवाहे प्रतिमा पूजने विनियोगः । ॐ तद्विष्णोः परमं पद ई० सदापश्यन्ति सूरयः दिवीवचक्षुराततम् । ॐ त्रीणिपदाविचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाभ्यः । अतो धर्माणि धारयन् । ॐ तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवा ॐ सः समिन्धते । विष्णोर्यत्परम्पदम् । इति मन्त्रैः सम्पूज्य ॐ विष्णवे नमः । प्रार्थयेत् । ॐश्री विष्णो जगतां नाथ जगन्मंगल कारक । वैधव्ययोग शान्तिं त्वं मत्कन्यायाः कुरु प्रभो ॥ ॐ देहि विष्णो वरं देव कन्यां पालय दुःखतः । पतिं जीवय कन्यायाश्चिरं पुत्रसुखं कुरु । इति संप्रार्थ्य मधुपर्कं दद्यात् । ॐ प्रतिमारूपिणे तुभ्यं मधुपर्कं ददाम्यहम् ॥ विष्णवे कुरु सौभाग्यं कन्यायाश्चैव सर्वदा ॥ कन्याप्रतिमा ऽन्तरालेऽन्तः पटंकृत्वा मङ्गलपद्यं पठेत् । ब्रह्मादक्षः कुबेरोयमवरुण मरुद्वह्नि चन्द्रेन्द्ररुद्राः शैलानद्यः समुद्राग्रहगण-मनुजादैत्यगंधर्वनागाः । सिद्धा नक्षत्रताराखिवसुमुनयो व्योम-भूरश्विनौच संलीनायस्यदेहे सहरतु भगवान्सर्ववैधव्यदोषान् ततोऽन्तः पटमपसार्य वक्ष्यमाणमन्त्रेण समंजनं कुर्यात् । ॐ कन्यावैधव्य योगाश्च तव दृष्टि निपातनात् ॥ सर्वेनश्यन्तुविष्णोत्वं कन्यांपश्यहद्व्रत ॥ इति कन्याप्रतीक्षणं कृत्वा कन्यां गंधाक्षतादिभिः सम्पूज्यदानसंकल्पं कुर्यात् । अद्ये-

त्यादि संकीर्त्यामुकोऽहंममास्याः कन्यायाः जनुषिक्रूरग्रहजनित वैधव्यदोषपरिहारार्थं सौभाग्याप्तये इमाममुकीनाम्नीं कन्यां विष्णवेतुभ्यंसमर्पयामि । इति कन्याहस्तं प्रतिमोपरिस्पर्शंकारयित्वा दानप्रतिष्ठां कुर्यात् । अद्यैतद्वैधव्यदोषपरिहारार्थं कन्यादानकर्मणः सांगतासिद्ध्ये-इदंसुवर्णं विष्णवेतुभ्यंसंप्रददे । इति दत्वा । दशतन्तुसंमिलितसूत्रेण कन्यांप्रतिमयासहवेष्टयेत् । ॐ परित्वेत्यस्यमधुश्छन्दा ऋषिरनुष्टुप्छन्दो विष्णुप्रतिमा विवाहे कन्याप्रतिमयासह वेष्टनेविनियोगः । ॐ परित्वागिर्वणोगिरऽइमाभवन्तु विश्वतः । वृद्धायुमनुवृद्धयो जुष्टाभवन्तुजुष्टयः । इति मन्त्रावृत्या परिवेष्टनत्रयंविरमेत् । ततः कन्याविष्णुंप्रार्थयेत् । जन्मार्जितानां पापानां फलाद्वैधव्ययोगजाम् । निःसरयत्वंवैधव्यान्मां च विद्धिस्वकिंकरीम् । यशोदेहिधनंदेहिदेहिमेविपुलंसुखम् । पत्या च सहसौभाग्यंदेहित्वंशरदांशतम् । ततः प्रतिमां निः सार्धकन्या प्रतिमादानं कुर्यात् । गंधाक्षतादिभिरुत्तरांगपूजनंविधाय अद्येत्यादि० अमुकयहंस्ववैधव्यदोष निवृत्ति द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं कृतस्यविष्णुप्रतिमाविवाहकर्मणः सांगतासिद्ध्ये इमांविष्णुप्रतिमां जनुषि लग्नादौस्थितैर्ग्रहैः संसूचयिष्यमाणवैधव्यादिदोषनिवृत्तयेसकलैश्वर्य सौभाग्यप्राप्तये श्रीपरमेश्वरप्रीतये— इमां सुपूजितां सौवर्णांविष्णुप्रतिमांसर्वोपस्करयुतामिदानींस्वगात्रपरिधेयवस्त्रांश्चामुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे ॐ तत्सन्नमम । दानवाक्यंपठेत् । यन्मयाप्राचि जनुषिघ्नंत्या पतिसमागमम् । विषोपविषशस्त्राद्यैर्हतोवातिविरक्तया ॥१॥ प्राप्यमाणंमहाघोरंयशःसौख्यधनापहम् वैधव्याद्यतिदुःखौघंतन्नाऽशयसुखाप्तये॥२॥ बहुसौभाग्यलब्ध्यै च महाविष्णोरिमांतनुम् सौवर्णीनिर्मितां शक्त्यातुभ्यंसम्प्रददेद्विज॥३॥ इति ब्राह्मणहस्ते, प्रतिमांदत्वा कन्यावदेत् । ॐ अनघाहमस्मि, इति वारत्रयंब्रूयात् ब्राह्मणस्तु-ॐ द्यौस्त्वाददातु पृथिवीत्वाप्रतिगृह्णातु । ॐ स्वस्ति इति प्रतिगृह्य ॐ कोदात्कस्माअदात्० इति पठित्वा ॐ अनघा-

भव, इतिवारत्रयं ब्रूयात्। ततः कृतैतत्प्रतिमादानप्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णं वा सुवर्णनिष्क्रयीभूतं द्रव्यमाचार्याय तुभ्यं सम्प्रददे। ततोऽभिषेकतिलकं कृत्वा ब्राह्मणभोजनं दद्यात्।

इति प्रतिमाविवाह पद्धतिः

अथार्कविवाहपरिभाषा

अथ च तृतीयमानुषीविवाहस्य निषिद्धत्वात्तन्निवृत्त्यर्थमर्कविवाहविधिः। काश्यपः—तृतीयां मानुषीं नैव चतुर्थीं समुद्वहेत्। पुत्रपौत्रविनाशः स्यात् गुरुपत्नीनिषेवणात्। उद्वहेत्तत्सिद्ध्यर्थं तृतीयां न कदाचन। मोहादज्ञानतो वापि यदि गच्छेत्तु मानुषीम्। नश्यत्येव न सन्देहो गर्गस्य वचनं यथा। संग्रहे—तृतीयां यदि चोद्वहेत्तर्हि सा विधवा भवेत्। चतुर्थादिविवाहार्थं तृतीयार्कं समुद्वहेत्। आदित्य दिने वापि हस्तर्क्षे वा शनैश्चरे। शुभे दिने वा पूर्वाह्णे कुर्यादर्कविवाहकम्। देशादिनिर्णये ब्रह्मपुराणे—प्रामस्य प्राच्यामुदीच्यां वा स्थुष्पफलं शुभम्। परीक्ष्यार्कं ततोऽधस्तात्स्थण्डिलादि यथाविधिः। व्यासः—स्नात्वालंकृतवासास्तु रक्तगन्धादिभूषितम्। स्पुष्पफलतरार्कं बैकार्धगुल्मं तत्र प्रार्थयेत्। तत्र च संयुक्तमर्कं संस्थाप्य यदि वा। अर्कवन्यादानार्थमाचार्यं वरयेत्पुरा। अर्कविधिमारभ्य तत्समस्तां स्वयं चार्चयेत्। नान्दीश्राद्धं विधायेन आचार्यं प्रपूजयेत्। पूजयेच्च धुरीणारं विप्रमात्रतः॥ यज्ञोपवीतं वस्त्रं च हस्तकर्णादिभूषणम्। उष्णीषगन्धमाल्यादि। तत्पश्चाद्दापयेत्। शास्त्रोक्तप्रकारेणमर्कं समर्चयेत्॥ यथाविधीत्यस्यानन्तरं ब्रह्मपुराणे—स्नानं कारोपदेवेशं छायासंयुतं विभुम्। वस्त्रैर्माल्यैस्तथा गन्धैस्तन्मन्त्रेणैव पूजयेत्। तन्मन्त्रेण कुर्यान्नरथ वा ततः। श्वेतवस्त्रेणसंवेष्ट्य तथा कार्पासतन्तुभिः। गन्धपुष्पैः सकलैश्चाक्षतैः स्वस्तिगैरभिषिञ्च्य। गुडौदनं नैवेद्यं ताम्बूलं चन्दनं पूर्पयेत्। अर्कप्रदक्षिणं कुर्वन् जपे मन्त्रमिमं बुधः। अयं गेम ग्रं शं शं शं नि। तदर्कस्य कन्यादानं ऋषिपुरुषं गुरुमुच्चरेत्। आदित्यः सविता सूर्यः पुत्रीपौत्रीच नाशिका। गोत्रं कश्यपद्वंशकुलं तु के सविकमर्चयेत्। सुमुहूर्तेऽर्कं निरीक्षयेत् स्वाहास्तिसूक्तमुदीरयन्। आशीर्भिः सहितैः कुर्याच्च यश्च प्रमुखैर्द्विजैः। अथाच यैस शाहूयविधिना तत्सुखाच्चतम्। प्रतिगृह्य ततो होमं गृह्योक्त विधिना चरेत्। **व्यासः**—प्रतं उनताकार्याकृत्वा कंकणपूर्वकम्। यावत्पंचवृत्तं सूत्रं तावदर्कं प्रदर्शयेत्। स्वशाखोक्तेन मन्त्रेणाग्निं प्रज्वाल्य स्थापयेत्। पंचीकृतं पुनःसूत्रम् स्कन्धेवालादिसंस्थः। बृहतमिति मन्त्रेण सूत्रं स्वां कल्पयेत्। अर्कस्य पुतः पश्चाद्दक्षिणोत्तरतस्तथा। कुम्भांश्च निक्षिपेत्सम्यक् दशनेमादिभ्युदये। सवस्त्रं प्रतिकुम्भं नि:सूत्रेणैव वेष्टयेत्। हरिद्रा-

गन्धसंयुक्तं पूरयेच्छीतलं जलम् । प्रतिकुम्भं महाविष्णुं सम्पूज्य परमेश्वरम् । पाद्याद्यैर्नैवेद्यान्तं कुम्भ-नाम्नैव मन्त्रवित् ॥ **अत्र होमप्रकारः शौनकेन प्रदर्शितः**—अर्कसन्निधिमागत्य तत्र स्वस्त्यादि-वाचयेत् । नान्दीश्राद्धं प्रकुर्वीत स्थण्डिलं च प्रकल्पयेत् । अर्कं सम्पूज्य संयोज्य गन्धपुष्पाक्षतादिभिः । सूत्रं चालंकृतं तद्वद् वस्त्रमाल्यादिभिः शुभैः । अर्कस्योत्तरदेशे तु समन्वारब्ध एतया ॥ एतया कन्यया । उल्लेखनादिकं कुर्यादाघारान्तमतः परम् । आज्याहुतिं च जुहुयात् सांगोभिरन्वैवया । यस्मै त्वा काम-कामायेत्येतच्चापरं क्रमम् । व्यस्तमिश्रसमस्ताभिस्तदथ स्विष्टकृद्धुनेत् । परिदेवनपर्यन्त मयाश्चेत्या-दिकं क्रमात् । **अत्र पंचमदिने कर्तव्यमुक्तं महापुराणे**—चतुर्थदिवसेऽतीते पूर्ववत्स्नापयेच्च दिवस्य होमसमन्वितविधिना नानुपर्वापरम् । उद्वहेदन्यथा नैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिमान् । नपशून्यचनित्राणि मङ्गलं-नेत्यगच्छति । एवमेतद्विना शेष विधिना सम्यगुद्वहेत् । धनधान्यसमृद्धिश्च इच्छाशक्तिपरश्च च । ततो वेदादितसूक्तानि जपस्वगतं विधेत्पुनः । गोयुग्मं दक्षिणां दद्यादाचार्याय च भक्तितः । इतरेभ्योऽपि वि-प्रेभ्यो दक्षिणां चाभिशक्तितः । तत्सर्वं पुण्यवाचनं पुण्याहं चाचरेत् । इति प्रयोगक्रमम् ॥

अथार्कविवाहपद्धतिः

अथ च क्रियमाणतृतीयविवाहात्प्राक् चतुष्टय दिनाधिक व्यवहिते । रविवारे शनिवारे वा हस्तर्क्षे वा चन्द्रतारानुकूलेऽन्यस्मिंश्शुभनक्षत्रे शुभे दिने ग्रामात्प्राच्यां वा सुपुष्पफलान्वितस्यार्क वृक्षस्य सन्निधौ गत्वा तस्याधः प्रदेशे समंतात्सपादहस्तवेदिकां चतुरस्रां कृत्वाऽर्कस्य पश्चिमत उपविशेत् । तत्रार्कविवाहसामग्रीं सम्पाद्याचम्य दीपं प्रज्वाल्य भूतोत्सादनादिकर्म कृत्वा आनो भद्रेति स्वस्तिवाचनं कृत्वा संकल्पं कुर्यात् । अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकराशिरमुकोऽहं करिष्यमाणार्कविवाहकर्मणि निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं भगवतः श्रीगणेश्वरस्य पूजनं मातृकापूजनं नान्दीश्राद्धादि नवग्रहान्त पंचांगपूजनं च करिष्ये (तत्र नान्दीश्राद्धं सपाद माष-सुवर्णेन कुर्यात्) इति गणेशादि पंचांगपूजनं विधायाचार्यं वृणुयात् पाद्यादिभिर्ब्राह्मणं सम्पूज्य" वरणसामग्रीं हस्ते कृत्वा अद्येत्याद्यमुकोऽहं करिष्यमाणार्कविवाहकर्मणि कर्मोपदेशार्थमेभिर्द्रव्यैर-

मुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे,, वरणं दत्वा प्रार्थयेत्। आचार्यस्तु० कर्म० कर०॥ ततोऽर्ककन्याप्रदानार्थमन्यत्राह्मणंवृणुयात्। पाद्यादिभिस्तं सम्पूज्य वरण सामग्रीं करे कृत्वा, अद्ये० अमुकोऽहमेभिर्वरणद्रव्यैर्गन्धाक्षतादिभिरर्क कन्यादानार्थममुक शर्माणं त्वा महं वृणे। वरणंदत्वाप्रार्थयेत्। कन्यापितायथा सूर्योदेवानां च प्रजापतिः। तथात्वमर्कदानार्थे माचार्यस्त्वंकुरु द्विज ? यावत्कर्मस माप्येत तावत्त्वंसन्निधौभव। ततो दानाचार्योवरं पाद्यादि मधुपर्कान्तं कर्मकृत्वा यज्ञोपवीतालंकारादिभिः पूजयेत्। ३ॐ साधु भवानास्तां पूजयामि ३ॐ अर्चय ३ॐ विराजो दोह० पाद्यम्। विष्टरं च दत्वा मधुपर्कान्ते वस्त्रालंकरणादीनि वरणसामग्रीं करे कृत्वा। अद्ये० एभिर्गन्धाक्षत वरणद्रव्यैरमुकगोत्रमर्क कन्यापरिग्रहार्थं त्वामहंवृणे इतिवरंवृत्वा सचवरोऽर्कस्यपुरतस्तिष्ठन्। सूर्य प्रार्थयेत्। हस्तेगंधाक्षतपुष्पं निधाय—३ॐ त्रिलोक वासिन् सप्ताश्व छाययासहितो रवे। तृतीयोद्वाहजं दोषं निवारय सुखं कुरु। ततोऽर्काधः कलशं संस्थाप्य कलशपूजाविधिना सम्पूज्य ततः सौवर्णि सुवर्ण प्रतिमामग्रतः कृत्वाऽग्न्युत्तारणादि पञ्चगव्य स्नानान्तं कृत्वा कलशोपरि गोधूमान्नपूरितताम्रपात्रं निधाय तत्र-प्रतिमां संस्थाप्य "आकृष्णेति विनियोगपुरः सरं मन्त्रेण प्रतिमां कलशोपरिसंस्थाप्य "एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य ३ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु सौम्य मित्याद्यष्टा दशमंत्र सूर्यसूक्तेन वा "आकृष्णेतिमन्त्रेणार्कं छायासहितं सम्पूज्य श्वेतवस्त्र सूत्राभ्यामर्कमावेष्ट्य च" ३ॐ आपोहिष्ठेत्यादिभिस्त्रिभिर्मन्त्रैरर्कमभिषिञ्च्य नैवेद्यार्थं गुडौदनं ताम्बूलं च निवेद्य ततः प्रदक्षिणां कुर्वन् प्रार्थत्—३ॐ ममप्रीतिकरायेयंमयासृष्टापुरातनी। अर्कजा ब्रह्मणा सृष्टा ह्यस्माकं परिरक्षतु। पुनरपि वक्ष्यमाणमंत्रंजपन्प्रदक्षिणां कुर्यात्। ३ॐ नमस्ते मंगले देवि नमःसवितुरात्मजे। त्राहिमां कृपया देविपत्नी त्वं म इहागता। अर्कत्वं ब्रह्मणा सृष्टः सर्वप्राणिहिताय च। वृक्षा-

णामाधिभूतस्त्वं देवानां प्रीति वर्द्धनः। तृतीयोद्वाहजं दोषं मृत्युं चाशु विनाशय। ततोऽर्कवेद्या उत्तरतो होमार्थं प्रादेशमात्रं स्थण्डिलं कृत्वा पंचभूसंस्कारपूर्वकं तैजसे पात्रे-अग्निं स्वाभिमुखीकृत्यसंस्थाप्यप्रतिष्ठाप्य च तद्रक्षार्थमिन्धनंनियुज्य, वरः प्राङ्मुखो भूत्वाऽर्कसमीपे तिष्ठेत। ततो वरार्कयोरन्तरालेऽन्तः पटं धृत्वा वक्ष्यमाण मंगलपद्यं पठेत्। सिन्दूरं स्पृहया स्पृहन्ति करिणां कुंभस्थ माधोरण भिल्लीपल्लव शंकयाविचिनुते सान्द्र द्रुमद्रोणिषु। कान्ताः कुंकुम शंकया करतलेमृद्गन्ति लग्नं चयत् तत्तेजः प्रथमोद्भवं भ्रमकरं सौरं चिरंपातु वः। अद्येहेत्यादि० काश्यपगोत्रः काश्यपावत्सार नैध्रुवेतित्रिप्रवरान्वितादित्यप्रपौत्रीं सवितुः पौत्रीं ममार्कस्यपुत्रीमिमां कन्यां "अमुकगोत्रायामुकप्रवरायामुकप्रपौत्रायामुकपौत्रायामुकपुत्रायामुक नाम्ने वराय" इति गोत्रोचारं कृत्वान्तःपटमपसार्य ततः कन्यां निरीक्ष्य स्वस्तिवाचनंपठित्वा आशिषं दद्यात्। ततो दानाचार्यः—भक्तिः प्रह्वाय दातुं कुमुल पुट कुटी कोटरक्रोडलीनां, लक्ष्मीमाक्रष्टुकामा इव कमल वनोद्घाटनं कुर्वतेये कालाकारान्धकारानन पतितजगत्साध्वसाध्वंसकल्पाः, कल्याणं वः क्रियासुकिसलयरुचयस्तेकरा भास्करस्य। अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य काश्यपगोत्रां काश्यपावत्सार नैध्रुवत्रिप्रवरान्वितामादित्यस्यप्रपौत्रीं सवितुः पौत्रीं ममार्कस्यपुत्रीं "आर्की नाम्नीमिमां कन्यां अमुकप्रपौत्रायामुकपौत्रायामुकपुत्रायामुकगोत्रायामुकप्रवरायामुकशाखिनेऽमुकवेदाध्यायिनेऽमुक नाम्ने वराय तुभ्यमहंसंप्रददे" इति वर हस्ते जलं दत्वा दान वाक्यं पठेत्। ॐ अर्ककन्यामिमां विप्र यथाशक्ति विभूषिताम्। गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्तां विप्र समाश्रय। अद्येत दानप्रतिष्ठार्थं सुवर्णं तुभ्यमहं सम्प्रददे। स्वस्तीति वरो ब्रूयात्। ततो वरः गंधाक्षत पुष्पयुतोदक पूर्णास्त्रीनंजलीनर्कोपरि दद्यात्॥ तत्रमंत्राः—ॐ यशो मे कामः समृध्यातां १ ॐ धर्मो मे कामः समृद्ध्यतां २ ॐ दशो मे कामः समृद्ध्यताम् ३ इत्यंजलित्रयं

दत्वा ततो गायत्री मन्त्रेण वा ॐपरित्वागिर्वणोगिरऽइमा भवन्तुविश्वतः। वृद्धायु मनुवृद्धयो जुष्टाभवन्तु जुष्टयः। इति पंचवारमर्कवृत्तोपरिसूत्रमावेष्ट्य तत्सूत्रं पुनः पंचगुणं कृत्वाऽर्कस्यदक्षिणस्कन्धे बध्वा वृहत्सामेतिरक्षांकुर्यात्। ॐ वृहत्साम क्षत्र भृद्वृद्ध वृष्ण्यं त्रिष्टुभौजः सुभित मुग्रवीरम्। इन्द्रस्तोमेनपंचदशेनमध्यमिदं वातेन सगरेण रक्ष। ततोऽर्कस्याष्टदिक्षु अष्टदलेषु अष्टौ कुं भान्संस्थाप्य वस्त्रैराच्छाद्य त्रिसूत्र्या कुंभ गलं संवेष्ट्य च हरिद्रागंधादिकं जलं आभ्यन्तरे क्षिप्त्वा तेषु कलशेषु सुवर्ण प्रतिमासु महाविष्णुमावाह्य पुरुष सूक्तेन वा इदं विष्णुरितिमन्त्रेण षोडशोपचारैः पूजयेत्। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपा ꣳ सुरे। ततः स्थण्डिले पंचभूसंस्कारपूर्वकं (वरदः शान्तिकर्मणि) इतिवरद नामाग्निंसंस्थाप्य एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य ॐ वरदनामाग्नये नमः इतिमन्त्रेणावाह्यसम्पूज्य च॥ अद्येत्यादि० अर्क विवाह कर्मणि कृताकृतावेक्षणार्थं अमुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे॥ वृतोऽस्मीति॥ ततः पूर्वोक्त कुशकण्डिकाविधिना कर्मकृत्वा पर्युक्षणान्तेऽद्येत्यादि—अमकोहं करिष्यमाणार्क विवाह कर्मणि–आज्येनाहं यक्ष्ये ततोदक्षिण जान्वाकुंच्य ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये नमम। एवंसर्वत्र ॐ इन्द्रायस्वाहा इदं०। ॐ अग्नये स्वाहा० ॐ सोमाय स्वाहा० इत्याज्यभागान्ते ॐ संगोभिरित्यस्यांगिरा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वृहस्पतिर्देवता ऽऽज्य होमे विनियोगः। ॐ संगोभि रांगिरसो नक्षमाणो भगदवे दर्यं मणंन्निनाय। जने मित्रो न दम्पती अनक्ति वृहस्पतये वाजयाशूं रिवाजौ स्वाहा। इदं वृहस्पतये नमम। ॐ यस्मैत्वेति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवताऽज्यहोमे विनियोगः। ॐ यस्मैत्वाकाममकामायवयं सम्राड्यजामहे। तमस्मभ्यं कामं दत्वाथेदंघृतंपिव स्वाहा॥ इद मग्नयेनमम। ॐ व्यस्तसमस्त व्याहृतीनांप्रजापतिऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्य प्रजापतयो देवता आज्य

होमेविनियोगः ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेनमम । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे नमम ॐ स्वःस्वाहा इदꣳ सूर्यायनमम । ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा इदँ प्रजापतयेनमम । ॐ व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषि गायत्र्युष्णि गनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्यादेवताः प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये० । ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे० ॐ स्वः स्वाहा इदंसूर्याय० । ॐ त्वन्नो अग्नेऽइति वामदेवर्षिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्नि वरुणौदेवतेप्रायश्चित्त होमेविनियोगः ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम । ॐ सत्वन्नो अग्ने इतिवामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौ देवते प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः । ॐ सत्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्टोऽस्याऽउपसोव्युष्टौ अव-यक्ष्वनोव्वरुणꣳ रराणोव्वीहिमृडीकꣳ सुहवोनऽएधि स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम । ॐ अयाश्चाग्ने इति प्रजापतिर्ऋषि-र्विराड्छन्दोऽग्नि देवता प्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ॐ अया-श्चाग्नेऽस्यनभिशास्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि । अयानो यज्ञंव्वहास्ययानोधेहिभेषजꣳ स्वाहा । इदमग्नयेनमम । ॐ येतेशतमितिशुनःशेफऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो मंत्रलिंगोक्तादेवता । प्रायश्चित्तहोमेविनियोगः । ॐ येतेशतंव्वरुणंयेसहस्रं व्यज्ञियाः पाशाव्विततामहान्तः । तेभिर्नोऽअद्यसवितोत विष्णुर्विश्वेमुंच-न्तुमरुतः स्वर्काःस्वाहा । इदंवरुणाय सवित्रेविष्णवेविश्वेभ्योदेवे-भ्योमरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्चनमम । ॐ उदुत्तममितिशुनःशेफऋ-षिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाशमस्म दवाधमंव्विमध्यमꣳश्रथाय । अथाव्व-यमादित्यव्व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम स्वाहा । इदंवरुणाया दित्यायनमम । मनसा ॐ प्रजापतयेस्वाहा इदं प्रजापतयेनमम ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम । ततो बर्हिर्होमः । ॐ स्वाहा प्रजापतयेनमम । ततः संस्रवप्राशनंकृत्वा

ॐ स्वहा पवित्रप्रतिपत्तिंकुर्यात् । ततो ब्रह्मणेपूर्णपात्रदानम् । अद्येहेत्यादि अमुकोऽहं कर्तव्यार्कविवाहहोमकर्मणि तत्सांगता सिद्ध्ये ऽपूर्णपूर्णार्थमिदंपूर्णपात्रंसदक्षिणं ब्रह्मणेतुभ्यमहं सम्प्रददे 'तत्सन्नमम, तत आचार्यः कुम्भोदकैः पूर्वोक्त विधिना वरमभिपिंचयेत् । ततोवरः पुनरर्कंप्रदक्षिणी कृत्यप्रार्थयेत् । ॐ मयाकृतमिदं कर्मस्थावरेषुजरायुणा । अर्कापत्यानिमेदेहितत्सर्वं क्षन्तुमर्हसि । इति संप्रार्थ्य सूर्यसूक्तंपठित्वा ॐ विभ्राड् बृह० इत्यादि सूर्यंविसृज्यगोदानाविधिनाचार्याय सवत्सांगांदत्वान्येभ्योऽपि दक्षिणांदत्वा पूजासामग्रीं वरपरिधेयवस्त्राणि चआचार्याय दत्वा पुण्याहं वाचयेत् दिन चतुष्टयमर्कमग्नि कुम्भांश्चसंरक्ष्य पंचमेहनिपूर्वोक्तप्रकारेण सम्पूज्यपूर्णाहुतिं कृत्वा न्यायुपकरणमन्त्रपाठं कृत्वा ब्राह्मणैराशीर्वादं गृहीत्वा ऽग्न्यर्कादीन्विसृज्य ततो मानुषीविवाहं कुर्यात् । ❀इति अर्कविवाह पद्धतिः❀

अथ रजोदर्शनादि परिभाषा ।

अथरजोदर्शनादि विचारमाह 'तामुदुह्यर्तुप्रवेशनम्'–'इतिसूत्रोक्तिः । एवपूर्वोक्तेनक्रमेण तांवधूमुदुह्य विवाहविधि विवाह कर्मणा भार्यात्वंसंपाद्यऋतुप्रवेशनं ऋतुकाल रजोदर्शन लक्षणेनपभिगमन कुर्यादितिशेष ॥ याज्ञवल्क्य —षोडशर्तुर्निशा स्त्रीणां तासुयुग्मासुसंविशेत् ॥ ब्रह्मचर्यपर्वण्याद्याश्चतस्रश्चवर्जयत । वर्ज्यतिथय —चतुर्दश्यष्टमीचैव अमावास्याचपूर्णिमा । द्वादश्यांतनिपर्वाणि दिवाक्तितावच ॥ मनु — ब्रह्मचारीभवेन्नित्यमप्यृते स्नातके द्विज । तपामध्यंतस्त्वृतुर्निन्दिते कदर्गीतथा । त्रयोदशी च पाश्चु प्रशस्तादशरात्रय । ऋतुस्नानदिनशुद्धिमाह—शुद्धाभर्तुश्चतुर्थेऽह्नि स्नानस्त्रीरजस्वला । दैवेकर्मणि पित्र्येचपञ्चमेऽहनिशुद्ध्यति । रजसोऽनिवृत्तौनिषेधमाहमनु —रजस्युपरतेसाध्वीस्नानेन स्त्रीरजस्वला ॥ इतिरात्र्युत्तरोत्तरा प्रशस्ता —व्यास –रात्रौचतुर्थ्यां पुत्रस्यादल्पायुर्धनवर्जित । पञ्चम्यांपुत्रिणीनारी षष्ठ्यांपुत्रस्तुमध्यम । सप्तम्यामप्रजा योषिदष्टम्यामीश्वरःपुमान् । नवम्यांसुभगा नारी दशम्यांप्रवरःसुत । एकादश्यामधर्मीस्त्री द्वादश्यांपुरुषोत्तम । त्रयोदश्यांसुतापापा वर्णसंकरकारिणी । धर्मज्ञश्चकृतज्ञश्च आत्मवेदीदृढव्रत । प्रजायतेचतुर्दश्यां पञ्चदश्यांपतिव्रता । आश्रयःसर्वभूतानां षोडश्यांजायतेपुमान् ।

तच्चैकस्यां रात्रौ सकृदेव मैथुनं कार्यम् । **ऋतावगमने दोषमाह पराशरः**—ऋतौ स्नातां तु यो भार्यां सन्निधौ नोपगच्छति । घोरायां भ्रूणहत्यायां युज्यते नात्र संशयः । **अस्यापवादमाह मदनरत्ने**—ऋतुकालेऽनिरीणां भ्रूणहत्या प्रमुच्यते । वृद्धां वन्ध्यामसद्वृत्तां मृतापत्यामपुष्पिणीम् । कन्यां च बहुपुत्रां च वर्जयेन्मुच्यते भयात् । **ऋतुगामिनः स्नानमाह**—ऋतौ तु गर्भसंकित्वात् स्नानं मैथुनिनः स्मृतम् । अनृतौ तु यदा गच्छेच्छौचं मूत्रपुरीषवत् । **मैथुनान्ते तु स्त्रीणां न स्नानमुक्तम्**—उभावप्यशुची स्यातां दम्पती शयनं गतौ । शयनादुत्थिता नारी शुचिः स्यादशुचिः पुमान् । **रोगजे तु पारिजाते**—रोगेण यद्रजः स्त्रीणामन्वहं हि प्रवर्तते । नाशुचिस्तु भवेत्तेन यस्माद्वैकारिकं मतम् । **भविष्यपुराणे**—रजोदर्शनतः पूर्वं न स्त्रीसंसर्गमाचरेत् । संसर्गं यदि कुर्वीत नरकं प्रतिपद्यते ॥ ननु—क्वचिद्रजोदर्शनं विनापि गर्भसम्भवो दृश्यते । क्वचित्तु सत्यपि रजसि गर्भानुपलम्भ इति । नैष दोषः—गर्भधारणं हि रजोदर्शनं विना भवतीत्येष व्याप्तिः । तच्च क्वचित्प्रकटं क्वचिदप्रकटमन्तरेवतिष्ठति । तत्राप्रकटेऽपि रजस्यन्तर्गतरजः सत्त्वाद्गर्भधारणसम्भवः । अतः प्रयुक्तदोषाभावः—**तदुक्तं कश्यपसंहितायाम्**—यथैव दृश्यते वृक्षे विना पुष्पं फलं क्वचित् । अन्तःपुष्पं भवत्येव पनसोदुम्बरादिवत् । यत्तु सत्यपि रजसि गर्भधारणं न दृश्यते तत्पुष्पबीजक्षेत्रादिदोषः द्रष्टव्यः ॥ **अथ रजोवतीधर्मानाह मदनपारिजाते च सिद्धः**—स्नानं स्यान्नाभ्यङ्ग्यं न स्वप्यात् दिवा न अधः शयीत न दिवा सुप्यात् रज्जुं सृजेत् न नासनं सृजेत् न विप्रान् निरीक्षेत् न हस्तेन किञ्चिदाचरेत् अखर्वेण पात्रेण पिबेदञ्जलिना वा पात्रेण लोहितायसेन वेति । वामहस्तः । **स्नानविधिमाह पराशरः**—स्नाने नैमित्तिके प्राप्ते नारी यदि रजस्वला । पात्रान्तरिततोयेन स्नानं कृत्वा व्रतं चरेत् । सिक्तगात्रा भवेदद्भिः साङ्गोपाङ्गा कथंचन । न वस्त्रपीडनं कुर्यान्नान्यद्वासश्च धारयेत् । **अथ ज्योतिःशास्त्रोक्तप्रथमरजोदर्शनशुभाशुभफलसूचकमाह । स्मृतिचन्द्रिकायाम्**—चैत्रे स्यात् प्रथमर्तौ तु नारी वैधव्यभागिनी । वैशाखे धनपुत्राढ्या ज्येष्ठे रोगान्विता तथा । शुचौ मृतप्रजा प्रोक्ता श्रावणे धनधान्यदा ॥ नभस्ये दुर्भगा क्लिष्टा—आश्विने च तपस्विनी । ऊर्जे चायुष्मती नारी मार्गशीर्षे बहुप्रजा । पौषे तु पुंश्चली नारी माघे पुत्रसमन्विता । फाल्गुने श्रीपतिं माध्वी, क्रमान्मासफलं स्मृतम् । **पक्षफलं तत्रैव**—शुक्लपक्षे सुशीला स्यात् कृष्णे सा कुलटा भवेत् । कृष्णस्य दशमीयावन्मध्यमं फलमादिशेत् । **वारमाह कश्यपः**—रोगिणी रविवारे तु सोमवारे पतिव्रता । दुःशीला भौमवारे तु बुधे सौभाग्यसंयुता । श्रीसंयुता गुरोर्वारे पतिभक्ता भृगोर्दिने मलिना मन्दवारे तु राज्ञां च पितृर्थे वधः । **लग्नमाह नारदः**—कुलीरसिंहचापान्त्य मृगकन्यातुलाधरः । राशयः शुभदा ज्ञेया नारीणां प्रथमार्तवे । **कालमाह स्मृत्यन्तरे**—प्रातःकाले तु सधना सायाह्ने सर्वभोगिनी । मध्याह्ने च भवेद्दुष्टा निशीथे विधवा भवेत् । **नक्षत्राण्याह मुहूर्तचिन्तामणौ**—श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातीमितप्रभो । मध्यं च मूलादितिमैत्रपितृक्षिप्रे रेशवसन् ॥ **वस्त्रपरिधानमाह वशिष्ठः**—सुभगा श्वेतवस्त्रा स्याद्दृढवस्त्रा पतिव्रता । क्षौमवस्त्रे स्थिता सा स्यात् श्यामवस्त्रा सुखान्विता । दुर्भगा जीर्णवस्त्रा स्याद्रोगिणी रक्तवाससा । नीलाम्बरधरा नारी विधवा पुष्पिता यदि । **अन्यच्च**—

स मार्जनं कण्टकतृणाग्निसूर्पान् हस्ते दधाना कुलटा तदस्यात्। तल्पोऽभोगैर्रसिस्थिता चेदृष्टं रजो-भाग्यवती तदस्यात्। दुष्टरजसादि विषयं तच्छान्तिच शान्तिप्रकरणे वक्ष्यामि। 'यथ कामी वा कामः भावि नितो सम्भवमेति वचनात् स्त्रियाः कममतिक्रम्य यथाकामं तन्नास्तीति यथाकामीवा-भ न्नृतु मृतुकालभिगमन नियमः। कामं स्वेच्छया आविजानितो आप्रसवात् सम्भवाम, भर्त्रा-सह सम्भवामेति स्त्रीणामिन्द्रदत्तवर प्रार्थनाचवचनात्। प्रजापतेरितिकेचित्। अन्ययद्यपि यथर्तु प्रवेशनमिति समन्येनोक्तं तथापि स्मृत्यंतरोक्तपर्वादि निषेधपालनं कुर्वीत। सच दैवथितः (अथास्यै दक्षिणांसं मधिहृदयमालभते यत्ते सुसीमे हृदयंदिविचन्द्रमसिश्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतमिति अथाभिगमनानन्तरम्—अस्यै अस्या भार्याया दक्षिणांसं दक्षिणस्कन्धमधि उपरि दक्षिणहस्तं नीत्वा हृदयमालभते, हृदयं स्पृशति, आलभते स्पृशति। यत्ते-सुसीमे, इत्यादिमन्त्रेण (एवमत ऊर्ध्वम्=१०।११) एवमनेनैव प्रकारेणातोऽनंतरमृतावृतौ प्रवेशनं यथाकामं वेति हरिहरः। गदाधरमते तु गर्भाधानसूत्रव्याख्या॥

——**——

अथगर्भाधानपद्धतिः।

तत्र रजोदर्शनाच्चतुर्थ दिने प्रातः पुरुषोऽभ्यंगपूर्वकं स्नात्वा ततः स्त्रियंसर्वौषधिपंचपल्लवयुतेन वारिणा संस्नाप्य–अहते वाससीपरिधाय गृहात्पूर्वप्रदेशे भूमौ गोमयेनोपलिप्य गंधाक्षत पुष्पकुंध धूप दीप नैवेद्य सामग्रीं संपाद्य–आसने उपविश्य वधूं दक्षिणतो विधायाचम्य, अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममास्या भार्यायाः प्रथमरजोदर्शनेकरिष्यमाण गर्भाधान कर्मणि तत्रादौ कर्म साक्षिणं सूर्यं सम्पूज्य पत्न्या सहदर्शयिष्ये–ॐ आकृष्णेन० पाद्यगंधादि नैवेद्यान्तमर्कं सम्पूज्यार्घ्यं च दत्वा॥ वक्ष्यमाण-मंत्रेण सूर्यमुद्वयापश्येताम्। ॐ आदित्यमित्यस्य विरूपार्षि स्त्रिष्टु-प्छन्दः सूर्योदेवता गर्भाधान कर्मणि सूर्यावेक्षणे विनियोगः। ॐ आदित्यं गर्भं पयसा समंग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्धि हरसामाभिम ॐ स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः। इतिदर्शयित्वाप्रणम्य॥ यथा विहरेत्। ततः सायान्हे सुमुहूर्ते हस्तौ पादौप्रक्षाल्य शुद्धे वाससी परिधाय, आसने—उपविश्य

दीपं प्रज्वाल्य गणेशमातृकाकलश नान्दीमुख पुण्याहवाचन नवग्रहादिपंचांगपूजनं कृत्वा 'नान्दी श्राद्धं स्वयं कुर्यात्—येभ्य एव पिता दद्यात्तेभ्यो दद्यात्स्वयं सुतः ॥ इति वचनात्, आशिषं गृहीत्वा, ततो भर्ता वक्ष्यमाण मंत्रेण नारिकेल फल प्रदानं करोति सा वधू वस्त्रे गृह्णाति । मंत्रः—ॐ याफली इत्यस्य भिषगृषिर-नुष्टुप्छन्दः फलदेवता गर्भाधान कर्मणि फलदाने विनियोगः । ॐ याः फली नीर्या ऽअफला ऽअपुष्पायाश्चपुष्पिणीः । बृहस्पति-प्रसूता स्तानोमुंचन्त्व ह० हसः । इति दत्वा, ततश्चन्द्रतारानुकूले सल्लग्ने रात्रिपूर्वाण्हे शयनागारेगत्वाभर्ता आचम्य प्राणाना-यम्य ॐ लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रियः । अविघ्नंकुरुमे देव सर्वकार्येषुसर्वदा । इतिध्यात्वा संकल्पं कुर्यात्—देशकालौ-स्मृत्वामुकोऽहं—अस्या मम भार्यायाः प्रतिगर्भसंस्कारातिशयं-द्वारा अस्यां जनिष्यमाणसर्व गर्भाणां वीजगर्भसमुद्भवेनोनि-वर्हणद्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं गर्भाधानाख्यं कर्म करिष्ये । ततोऽनुरागीभर्ता—अनुरागिणींभार्यां शय्यायां प्रसार्य स्वदक्षिणे-नपाणिना भगं तूष्णीमभिस्पृश्यमंत्रं जपेत्—ॐ पूषाभगमिति-मंत्रद्वययोः प्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्दो भगो देवताभगाभिमंत्रणे विनियोगः । ॐ पूषाभग ह० सविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुं विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टारूपाणिपि ह० शतु । आसिं-चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातुते । ॐ गर्भं देहि सिनीवाली गर्भं देहिपृथुष्टुके । गर्भं ते अश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजौ । ॐ ब्रह्मा गर्भं दधातुते । इत्यभिमंत्र्य । ततः प्राङ्मुखो वोदङ्-मुखो भूत्वा । उपस्थे प्रजनेन्द्रियंप्रविश्य पठेत् । ॐ रेत इत्यस्य-प्रजापति ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो रेतो देवता वीर्याधाने विनियोगः । ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिंप्रविशादिन्द्रियंगर्भो जरायुणावृत उल्वं जहाति जन्मना । ऋतेन सत्यमिन्द्रियंविपान ह० शुक्रमं-धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतंमधु । ततः संभोगानन्तरमुत्थाय स्नानं कृत्वा वक्ष्यमाणमंत्रेण तिष्ठन्त्या वध्वादक्षिण स्कन्धस्योपरि

दक्षिण हस्तं नीत्वा तदग्र करतलेन तस्या हृदयं स्पृशति । ॐ यत इतिप्रजापति र्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्द श्चन्द्रमा देवता हृदयालम्भने विनियोगः । ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसिश्रितम् । वेदाहन्तन्मां तद्विद्यात् पश्येम शरदः शतंजीवेम शरदः शत ँ० शृणुयाम शरदः शतम् । ततो यथासुखं शयीत सकृदेवमैथुनं कुर्यान्नतु वारद्वयम् । इति याज्ञवल्क्यः । ततः प्रभाते संजाते स्नात्वा नित्यकर्म समाप्य रात्रि पूजित पञ्चांगदेवताः संपूज्य यस्य स्मृत्येति पठित्वा० देवताविसृज्याशिर्वादं गृह्णीयात् । गर्भाधान संस्कारोऽयं प्रथमर्तौ मलमास शुक्रास्तादावपि कार्यः । पारस्करेण तु हृदयालम्भनमात्रमुक्तमन्यत्कर्म—अमन्त्रकं परं च संस्कार भास्करादौ पारस्कर गृह्य सूत्रादतिरिक्त प्रक्षिप्तमंत्राणां प्रयोगदर्शनान्मयापि प्रत्यक्ष श्रुति मूलत्वात्प्रदर्शितः, अतो विद्वद्भिर्ग्राह्य इतिदिक् । इति गर्भाधानम् ॥

अथ पुंसवन सूत्रव्याख्या

गर्भ धारणोपायमाह—'सायदिगर्भं न दधीति सि ँ० ह्या. श्वेत पुष्प्या उपोष्य पुष्येण मूलमुत्थाप्य चतुर्थेऽहनि स्नातायां निशायामुदपेषं पिष्ट्वा दक्षिणस्यां नासिकाया मासिञ्चति ॥ ॐ इयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती । अस्या अहं बृहत्या पुत्र. पितुरिव नाम जग्रभमिति ॥१।१२।) सि ँ० ह्या कंठ कारिकाया. कथंभूताया: श्वेतपुष्प्यास्तस्या उपोष्योपवासं कृत्वा पुष्य नक्षत्रेण मूलंशिफमुत्थाप्य उद्धृत्य रजोदर्शनाच्चतुर्थेऽहनि स्नातायाभार्यायां रात्रौ तन्मूलमुदकेन पिष्ट्वाद्रवीभावमानीय अध्वादक्षिण नासापुटे—आसिञ्चति प्रक्षिपति भर्ता । इयमोषधी त्रायमाणा, इतिसूत्रोक्तमंत्रेण अथ पुंसवम (सूत्र व्याख्या अथपुंसवनम्) अथावसरप्राप्तं पुंसवनाख्यं गर्भसंस्कारकं कर्मव्याख्यायते । (पुरास्पन्दत इतिमासे द्वितीये तृतीयेवा ।२।) पुरा—अग्रेस्पन्दते चलिष्यति (यावत्पुरानिपातयोर्लट्) इति पुरायोगे भविष्यर्थे वर्तमान प्रयोग इति हेतो गर्भ धारण कालाद् द्वितीये तृतीये वा मासे प्रथमे मासि वा यदाह (यदहपुष्येणा नक्षत्रेणचन्द्रमा युज्येत तदह रूपवास्यास्याप्लुत्याहते वाससी परिधाप्य न्यग्रोधा वरोहां छुङ्गाश्चनिशाया मुदपेषं-

पिष्ट्वापूर्ववदासेचनꣳहिरण्यगर्भोऽद्भ्यः संभृत इत्येताभ्यां ।३।) यस्मिन्नहन्पुंसा पुमाननक्षत्रेण पुष्यादिना नक्षत्रेण चन्द्रमायुक्तोभवति । तदहस्तस्मिन्दिने गर्भिणीमुपोष्य—स्नानं कारयित्वा आप्लाव्यस्नापयित्वा—अहते वाससी परिधाप्य च न्यग्रोधो वटस्तस्यावरोहान्—अधोजायमानाङ्कुरान्त-दग्रपल्लवान्मुकुलाकारांश्च उभयं रात्रौ पूर्ववद्गर्भधारणप्रोक्तवत् पिष्ट्वा पूर्ववदेव सेचनंभर्तुर्दक्षिण नासारन्ध्रे हिरण्यगर्भ—अद्भ्यः संभृतः । इत्येताभ्यामृग्भ्याम् ॥ **(कुशकंटकꣳसोमाꣳशुं-चैके ।४।)** एके—आचार्या न्यग्रोधावरोह शुंगेषुपिष्यमाणेषु कुशस्य कंटकं मूलं सोमांशुंसोमलता-खंडं च प्रक्षिपन्ति । तस्मिन्द्रव्य चतुष्टयपेषणम् ॥ **(कूर्मपित्तं च उपस्थे कृत्वा स यदि कामयेत वीर्यवान्स्यादिति विकृत्यैनमभिमंत्रयते सुपर्णोऽसीति प्राग्विष्णुक्रमेभ्य ।५)** स भर्तायदि कामयेत—अयं गर्भोवीर्यवान्—शक्तिमान्याभावीया उपस्थे अङ्के कूर्मं पित्तं जलपूर्णं शरावं निधाय विकृत्या विकृति छन्द स्काया सुपर्णोऽसि—इत्यनया—ऋचा स्वपत्नी इत्यन्तयैनं गर्भ-भिमंत्रयते हस्तेन गर्भाशयं स्पृष्ट्वामंत्रं जपतीत्यर्थः ॥—कात्यायनः— स्पृशन्ननामिकाग्रेण कश्चिदालोकयन्नपि । अनुमंत्रणीयं सर्वत्र सदैव अनुमंत्रयेत् ।

अथ पुंसवनकर्मपद्धतिः ।

गर्भमास प्रभृतिद्वितीये तृतीयेवामासि रिक्तारहिततिथौ यस्मिन्दिनेचन्द्रमाः पुन्नक्षत्रेषुपुनर्वसुपुष्यहस्त श्रवणमृगसिरादिषु शुक्रचन्द्र बुधगुरु वासरेषु विष्ट्यादिदोषरहिते चन्द्रतारानुकूले पर्वणिवर्जिते दैवज्ञोक्ते सल्लग्ने पुन्सवनं कुर्यात् । तद्दिनेगर्भिणीं स्नापयित्वातद्भर्ता च स्नात्वाशुद्धवाससी परिधाप्य, भर्ता गर्भिण्या सह तद्दिन उपवासं कृत्वा अस्तमयेरात्रौ गणेशमातृ-काभ्युदयादि पंचागपूजनंविधायतेभ्यो मंत्रपुष्पांजलिं दत्वासंक-ल्पंकुर्यात् । अद्येत्यादिस्मृत्वा अमुकोहं ममास्यांभार्यायांउत्पत्स्य मानगर्भापत्यस्यबैजिक गार्भिकदोषपरिहार सुरूपता ज्ञानोदय-प्रतिरोधिपरिहारद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं पुंसवनाख्यंकर्मकरिष्ये तत्र आनीतवटवृक्षस्यावरोहान्नधोभागे जायमानान्नंकुरान्छुंगा न्नग्रपल्लवान्मुकुलाकरांश्च केचिन्मतानुसारात् कुशकंटकङ्कुशस्य-मूलंसोमलताखण्डञ्च एकीकृत्यजलेनपिष्ट्वातदुकर्कं सूक्ष्मवस्त्रेण पावितंकृत्वा तद्रसंगर्भिण्या दक्षिणनासापुटेदद्यात् । मंत्रः ॐ हिरण्यगर्भ अद्भ्यः संभृत इत्यनयोर्हिरण्यगर्भनारायणौ ऋषी त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापत्यादित्यौ देवतेपुंसवने नासकायांवटशुंगर-

सासेके विनियोगः। ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवींद्यामुतेमांकस्मै देवायहविषाविधेम।१। ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यैरसाच्चविश्वकर्मणःसमवर्त्तताग्रे-तस्यत्वष्टाविदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्रे। इति मंत्राभ्यांरसं कंठादुदर प्रक्षिमाग्रंक्षिपेत्। सयदिकामयेतवीर्यवान्स्यादयंगर्भस्तदागर्भिण्याउत्संगे उदरेजलपूर्णशरावं निधाय दक्षिणा नामिकाग्रेण गर्भाशयंस्पृष्ट्वा ॐ सुपर्णोऽसीत्यस्य प्रजापति ऋषिर्धृतिश्छन्दो गरुत्मान्देवता गर्भाभिमंत्रणे विनियोगः ॐ सुपर्णोऽसिगरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रंचक्षुर्बृहद्रथंतरेपक्षौ। स्तोमऽआत्माछन्दा ॐस्यंगानियजूंषिनाम। सामतेनतनूर्वामदेव्यंयज्ञायज्ञियंपुच्छंधिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसिगरुत्मान्दिवं गच्छस्वःपतः। इति जप्त्वा ततो दक्षिणा संकल्पं विधाय यथा शक्ति ब्राह्मणान्भोजयित्वा ततोमंत्राभिषेक तिलकादिकं कारयेत्।

इति पुंसवन पद्धतिः।

अथसीमन्तोन्नयन सूत्रव्याख्या।

(अथ सीमन्तोन्नयनम्। १। पुंसवनवत्। २।) अथ पुंसवनानन्तरं क्रमप्राप्तंसीमन्तोन्नयंनगर्भ संस्कारकं कर्मव्याख्यास्यते॥ तच्च पुंसवनवत्पुत्रजन्मनेभवति (तिलमुद्गमिश्र ॐ स्थालीपाक ॐ श्रपयित्वा प्रजापते हुत्वा पश्चादग्ने र्भद्रपीठ उपविष्टायां युग्मेन सटालु प्रप्सेनौदुम्बरेणत्रिभिश्चदर्भ पिञ्जूलैस्त्र्येण्यासलल्या वीरतर शंकुना पूर्णं चात्रेण च सीमन्तमूर्ध्वं विनयति भूर्भुवः स्वरिति।४।) तत्र विशेषमाह—तिलैर्मुद्गैर्मिश्रस्तिलमुद्गमिश्रस्तं स्थाली पाकमोदन चरु श्रपयित्वा—आज्यभागान्ते प्रजापतये स्वाहा—इत्येकामाहुतिं हुत्वा स्विष्टकृदादि प्राशनान्तं दद्यात। अग्नेः पश्चिमतो भर्तु र्दक्षिणतो भद्रासने— आसीनायां गर्भिण्यां सत्याम्। ततो भर्ता— औदुम्बरेणोदुम्बर वृक्षोद्भवेन युग्मेन ह्यादियुग्म पलवता सटालुप्रप्सेन पक्वफले कस्तबकनिबद्धेन त्रिभिश्च दर्भपिञ्जूलैस्त्रिभिर्दर्भ पवित्रैश्च त्र्येण्या त्रिषुस्थानेषु श्वेतान्येणी तया त्र्येण्या शलल्या शल्यकाख्य कण्टकेन वीर तर शंकुनातेषीकया आश्वत्थेनवा। शकुना पूर्णं चात्रेणच सूत्रेण पूर्णं चात्रं सूत्रकर्तन साधनं,—तर्कुरितियावत्, तेन लोहकीलकेन च, अतश्चौदुम्बर युग्मादिभि. सर्वैः पुंजीकृतैः सीमन्त स्त्रिया—ऊर्ध्वं विनयति, पृथक्करोति, ललाट तर माध्य केशा-

न्द्वयं करोति, भूर्भुवः स्वर्विनयामि । इत्येतावता मन्त्रेण त्रिकृत्व । प्रतिमहाव्याहृति वा । ५)
पक्षान्तरमाह—अथवा प्रतिमहाव्याहृतिभिर्विनयतियथा—भूर्विनयामि, भुवर्विनयामि, स्वर्विनयामि ।
(त्रिश्वेतमावध्नाति—(अयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भवेति ।६।) त्रिश्वेतं वध्नाति-
अवबध्नाति—पुञ्जीकृतमौदुम्बरादि फलं वेण्यां त्रिगुणसूत्रेणार्थ. । अयमूर्जावत, इत्यनेन मन्त्रेण ॥
(अथाह—वीणागाथिनौ राजानं संगायेतां यो वाप्यन्यो वीरतर इति ॥७॥)
अथौदुम्बरादि फलस्य वेणीबन्धनानन्तरमाह—अथेति, किंच । वीणागाथिनौ राजानं
भूर्ति संगायेतां राजवर्णनरूपं ध्रुवादिरूपकं द्वावपि संगायेताम् । अथवा योऽन्योऽपि
राजव्यतिरिक्तः श्रेष्ठो वीरः शूरस्तं संगायेतामित्यनुषङ्गः ॥ (नियुक्ताश्चैके गाथा-
मुपोदाहरन्ति) सोम एवनो राजेमा मानुषी प्रजा । अविमुक्तचक्र आसीरंस्तीरे तुभ्यमसौ—इति ८)
एके—आचार्या नियुक्ता गाने विहितां गाथामनुपोदाहरन्ति—पठन्ति । अपि समुच्चये—यतार्थे, तच्चे-
राजवीरे तयोर्यत्र लं गाथा गानं च समुच्चितं भवति । पक्षान्तरे राजवीरतयोरन्य-
तरगानं गाथागानं च" गाथा तु, सोम एवेति सूत्रे स्पष्टम् । (यां नदीमुपावसिता भवति तस्या नाम
गृह्णाति ॥९॥) ततो गर्भिण्या नदीसमीपे—अवासिताद्यवस्थिता भवति तस्या नद्या आसाविति
गङ्गामुन इत्येवं प्रथमं नाम गृह्णाति । 'ततो ब्राह्मणभोजनम्' १० 'स्पष्टार्थम्' अत्र भोजने साधिक्षि-
तसुक्तं पराशरमाधवीये धौम्येन—ब्रह्मौदने च सोमे च सीमन्तोन्नयने तथा । जातश्राद्धे नवश्राद्धे भुक्त्वा
चान्द्रायणं चरेत् । इदं च कर्माङ्गं ब्राह्मणभोजनविषयम् । न त्विष्टकुटुम्बादिभोजनविषयमिति मनुगतिः ॥

अथ सीमन्तोन्नयनपद्धतिः

अथ च प्रथमे गर्भे गर्भधारणप्रभृति षष्ठे ऽष्टमे मासि पुंसवनवन्नक्षत्रतिथिवारादिषु, चन्द्रतारानुकूले दिवसे गर्भिणीं मङ्गलद्रव्येण स्नातां परिहितप्रावृताहतवासोयुगलामलं कृतां पत्नीं स्वदक्षिणत उपवेश्याचम्य प्राणायामत्रयं विधाय, भूतोत्सादनं विधाय रक्षादीपं प्रज्वलय्य संपूज्य च स्वस्तिवाचनं पठित्वा प्रधान संकल्पं कुर्यात्-अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुको ऽहं ममास्यां भार्यायां गर्भाभिवृद्धिपरिपन्थिपिशित, अलक्ष्मी भूतराक्षसीगण दूरनिरसन जन्म सकलसौभाग्य निदान भूत महालक्ष्मी समावेशन द्वारा प्रतिगर्भं बीजगर्भसमुद्भवैनो

निवर्हण जनकातिशयद्वारा च श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं स्त्री संस्कारूपं सीमन्तोन्नयनाख्यं कर्म करिष्ये-तत्पूर्वांगत्वेन गणपति सहित गौर्यादि षोडशमातृणां पूजनं कलश स्थापनं नान्दीश्राद्धं पुण्याहवाचनं नवग्रह स्थापनपूजनं च करिष्ये एवं गणेशादि पंचाग देवतानां पूजनं विधाय (जीवित मातृ पितृको ऽ पिनान्दी श्राद्धं स्वयं पितामहादिभ्यः कुर्यात्) अत्र पुण्याह वाचनान्ते धाताप्रीयन्ता मित्यूह ॥ ततोवहिः शालायां हस्तमात्रां चतुरस्त्रां भूमिं कुशत्रयेण परिसमूह्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुव मूलेन तिस्रो रेखोदक संस्थाः स्थंडिल प्रमाणाः कृत्वा, अनामिकागुंष्ठाभ्यां लेखाभ्यः पांशुनुद्धृत्य मणिकाद्भिरभिपिच्य कर्मसाधनभूतमग्निं तेजसेपात्रे स्वाभिमुखं वेद्यां स्थापयित्वा, अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनमास्तीर्य । ततो ब्रह्मवरणम्—अद्येत्यादि० अमुकोऽहं कर्तव्यसीमन्तोन्नयन कर्मणि ब्रह्मकर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहंवृणे । वृतोऽस्मीति ब्रह्माब्रूयात् । प्रार्थयेत्—यथा चतुर्मखो ब्रह्मा० कर्म कुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः । ततः कल्पितासनेऽग्नेरुत्तरतः प्रदक्षिणी कृत्योपवेशयेत् । प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वावारिणा प्रपूर्य कुशैराछाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात् । ततः कुशपिंजुलिकामादायाग्नेयादीशानान्तं ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं नैर्ऋत्याद्वाय व्यान्तं, अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रसार्य । ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रछेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तगर्भं कुशद्वयं, उपयमनकुशाः सप्त, संमार्जनकुशाश्च प्रादेश मितपालाशसमिधस्तिस्रः प्रोक्षणीपात्रं श्रुवः, आज्यस्थाली आज्यं परिमितपात्रं तिलमुद्गतण्डुलाश्चैतानि वस्तूनि क्रमेण पूर्वं पूर्वं आसादनीयानि ॥ तदुत्तरतो वीणागाथिनौ विशेषोपकल्पनीयानि—मृदुपीठमापस्त्वाच्छादि फलवती—औदुम्बर समित पवित्र लक्षणास्तिस्रो शलली त्रेणी अश्वत्थशंकुर्वा,शरेषीका दर्भपिंजुल्यः सूत्रपूर्ण सूत्रकर्तन साधनं चेति । ततः पवित्र

छेदनार्थं त्रिभिकुशैर्द्वे पवित्रे प्रादेशमात्रेछित्वा दक्षिणहस्तेन पवित्राभ्यां त्रिः प्रणीतोदकमासिच्य पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीपात्रे निधाय प्रोक्षणीपात्रं दक्षिणेनहस्तेन वामेनिधाय मध्यमानामिकामध्यपर्वाभ्यां तज्जल मुच्छाल्य प्रणीतोदकेन पवित्राभ्यां तज्जलं प्रोक्ष्य तेन जलेन प्रत्येकंद्रव्यं प्रोक्ष्य,, तिल तण्डुलमुद्गांश्च प्रत्येकं वारत्रयं प्रक्षाल्य, आज्यस्थाल्यामाज्य-मग्नावधिश्रित्य चरुस्थल्यां प्रणीतोदकमासिंच्य तत्रादौ मुद्गान् प्रक्षिप्याग्नौसंस्थाप्य, ईषत्पक्वेषु मुद्गेषु तिल तण्डुलांश्च प्रक्षि-प्य, अर्धश्राणेचरौ ज्वलदुल्मुकमाज्यस्योपरिचरोश्चोपरिसम-न्तादूभ्रामयित्वा वन्हौ प्रक्षिपेत । उदकं स्पृष्ट्वा प्राङ्मुखं स्रुवं प्रतप्य संमार्ज्जनदर्भैरग्रतानं स्रुवंमूलतोऽग्रपर्यन्तं मूलैरधोऽग्रतो संमार्ज्याभ्युक्ष्य पुनः प्रतप्य सजलपाणितलेन संमार्ज्य दक्षिण-तो निधायाज्यं चरोः पूर्वेणनीत्वा—अग्नेरुत्तरतः संस्थाप्य चरु-माज्यस्य पश्चिमतोनीत्वा—आज्यस्योत्तरतः संस्थाप्य । तत आज्यमग्नेः पश्चान्निधाय तदुत्तरतश्चरुं निधायाज्यमुत्पूयावेक्ष्य प्रोक्षणीश्चोत्पूय पवित्रे तत्र निधाय, उपयमनकुशानादायो-त्थाय प्रजापतिं मनसाध्यात्वा घृताक्तास्तिस्रः समिधोऽग्नौ-स्तूष्णीं प्रक्षिप्योपविश्य च प्रोक्षणीजलेनेशानादुत्तरपर्यन्त-मभ्युक्ष्य पवित्रे प्रणीतायां निधाय प्रोक्षणीपात्रं संस्रवधारणार्थं मग्निप्रणीतयोर्मध्ये निदध्यात् । ब्रह्मणान्वारब्धः पातित दक्षिण जानुराज्येन जुहुयात । ततः प्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवसंलग्नशेष घृतस्य संस्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः । ॐ मङ्गल नामाग्नये नमः । इत्यग्निं संपूज्य ततः समिद्धतमेऽग्नौ ॐ प्रजापत्यादि चतुर्णां मन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोमन्त्रोक्ता देवता आज्य होमे विनियोगः । ॐ प्रजापतये स्वाहा मनसेदं प्रजापतये नमम । ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय नमम । इत्याघारौ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये नमम । ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय नमम इत्याज्यभागौ । ततोऽन्वारब्धः स्थालीपाकेनाज्यमिश्रितेन

होमः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते ननम। ॐ भूरादि व्याहृति त्रयस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि—अग्नि वायुसूर्या देवता व्याहृतिहोमे विनियोगः। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये०। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे०। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय नमम। ॐ त्वन्नो अग्ने मन्त्र द्वयस्य वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोग्नि वरुणौ देवते सर्व प्रायश्चित्त होमे विनियोगः। ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः। शोशुचानो विश्वाद्वेषाᳬंसि प्रमुमुग्ध्यस्मत स्वाहा। इदमग्नये नमम। ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमोभवो तीनेदिष्टोऽअस्याऽउपसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनोव्वरुणᳬंरराणो व्वीहिमृडीकᳬं सुहवोनऽएधि स्वाहा इदं वरुणाय नमम॥ ॐ अयाश्चाग्ने मन्त्रस्य विराड्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व मयाऽअसि। अयानो यज्ञं वहास्ययानोधेहि भेषजᳬं स्वाहा। इदमग्नये नमम। ॐ येतेशतमिति मंत्रस्य शुनःशेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवता सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः। ॐ येतेशतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोतविष्णुर्विश्वेमुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्चनमम। ॐ उदुत्तममिति मंत्रस्यशुनः शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता सर्वप्रायश्चित्त होमे विनियोगः। उदुत्तमं वरुणपाशमस्मदवाधमंव्विमध्यमᳬंश्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितयेस्याम स्वाहा। इदं वरुणायादितयेनमम। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतयेनमम। ततः संस्रवंप्राशयित्वा आचम्य, अद्य सीमान्तोन्नयन कर्मणि ब्रह्मकर्मणः प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रममुकगोत्राय ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहंसंप्रददे। ॐस्वस्ति ब्रह्मा प्रत्याह्—ननो ब्रह्मग्रंथि विमोकः। ॐ सुमित्रियानमंत्रस्य

दध्यंगाथर्वणऋषिरापो देवताः शिरः प्रोक्षणे विनियोगः । ॐ सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तु । इति पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन शिरः संप्रोक्ष्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टियंचवयं द्विष्मः । इति प्रणीताविमोकं कृत्वा ॐ देवागातुवितिमंत्रस्यात्रिर्ऋषिरुष्णिक् छन्दो मनसस्पति र्देवतावर्हिर्होमे विनियोगः । ॐ देवागातु विदोगातुंवित्वागातुमित मनसस्पत इमंदेवयज्ञ ॅ०स्वाहा वातेधाः । इति वन्हौप्रक्षिपेत् । ततोऽग्नेः पश्चाद् भर्तुर्वामतोभद्रपीठोपरि मृद्वासनेस्थितायाः स्त्रियाः सीतन्तेऽपक्वौदुम्बर फलयुग्मवत्यासमिधातिसृभिर्दर्भपिंजूलीभिस्त्रेण्या सललपाशरंपीकया सूत्रपूर्णलोहकीलेन च ललाटान्तरमारभ्यवक्ष्यमाण मंत्रेण भर्तामंत्रान्पठन्सीमन्तं द्विधाकरोति । ॐभूरादिव्याहृति त्रय संयुक्त मंत्राणां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि—अग्नि वायु सूर्या देवता विनयने विनियोगः ॥ ॐ भूर्विनयामि । ॐ भुवर्विनयामि ॐ स्वर्विनयामि । इति वार त्रयं विनयनं कृत्वा तत औदुम्बरादि पञ्चकं पुञ्जीकृतं तस्यां वेणयामाबध्नाति । मंत्रः—ॐ अयमूर्जावत इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः फलिनी देवता वेणीबन्धने विनियोगः । ॐ अयमूर्जावतो वृक्षऽउर्ज्जीव फलिनीभव । इति वेण्यां त्रिवृत्कृत्वा बध्नीयात् । अथ वीणा गाथिनौप्रेषयति (सोम ॐ राजानं गायताम्) इति तौच प्रेषितौ वीणामादाय । ॐ सोममित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री छन्दः सोमो देवता गाने विनियोगः । ॐ सोमऽएवनोराजेमाः मानुषी प्रजा । अवि मुक्त चक्रऽआसीरं स्तीरे तुभ्यम् । इतिगायतः, अथ च गर्भिणीग्रामसमीप वर्तिन्यावा देश प्रवाहिन्या नद्या नाम संबुद्ध्यन्तं गृह्णीयात् यथा 'गंगे' अलके, इत्यादि । इति हरिहरभाष्यकारोक्तिः । गर्भाधानादित्वान्नपूर्णाहुतिः । ॐ त्र्यायुषमिति नारायण ऋषिरुष्णिक् छन्दः शिवो देवता त्र्यायुष करणे विनियोगः । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः, इति ललाटे ॥ कश्यपस्य त्र्यायुषं, ग्रीवायाम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं, दक्षिणबाहुमूले । तन्नो

अस्तुन्यायुष्यंहृदि। एवं गर्भिण्या अपि। ततो दक्षिणा संकल्पः। अद्येत्यादि, अमुकगोत्रोऽमुकोऽहंममास्याभार्यायाःसीमन्तोन्नयनकर्मणः सांगतार्थं, इमां दक्षिणामाचार्यादिब्राह्मणेभ्यो विभज्य दास्ये दशवा वित्तानुसारतो ब्राह्मणान्भोजयिष्ये। ततो मंत्राभिषेकतिलक रक्षासूत्र बंधनं कारयेत्। ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयमपि च भुंजीत॥

इति सीमन्तोन्नयनसंस्कारपद्धतिः।

॥ अथच गर्भिणीधर्मपरिभाषा ॥

प्रसंगवशाद्गर्भिणीधर्मास्तत्पतिधर्मा उच्यन्ते उक्तंचकारिकायाम् —आरभ्याष्टमिक पक्षात्... [illegible] ...नारी। मुसलोलूखल... [illegible] ... तथैव च। नोत्तिष्ठेत्... [illegible] ... शयनं च कुर्यात्। नोभुक्ते ... [illegible] ... शेते। नामङ्गलाभ्यसमुद्धी ... [illegible] ... न यायात्। प्रयोगपारिजाते—गर्भिणी कुञ्जराश्वादि शैलहर्म्यादिरोहणम्। व्यायामं शीघ्रगमनं शकटारोहणं त्यजेत्। शोकरक्तविमोक्षं च साध्वसं कुक्कुटासनम्। ... [illegible] ... दिवास्वप्नं रात्रौ जागरणं त्यजेत्। वराह —सामिषमशनं ... [illegible] ... प्रभृति। सर्वारम्भेजम्। मदनरत्नेसेव्यविषयानाह—हरिद्रां कुंकुमंचैव सिन्दूरं कज्जलं तथा। कूर्पासकं च ताम्बूलं मांगल्याभरणं शुभम्। केशसंस्कारं कबरी कण्ठकर्णविभूषणम्। ... [illegible] ... गर्भिणी नहि। बृहस्पतिः —चतुर्थमासि षष्ठे वाप्यष्टमे गर्भिणी भवेत्। ... [illegible] ... विशेषतः। इत्यन्तरे—उग्रौपधं तथाक्षारं मैथुनं ... [illegible] ... गर्भिणी परिवर्जयेत्। गर्भं ... [illegible] ... नित्यं शौचनिषेवणात्। इति।

अथगर्भिणीपतिधर्मान्वक्ष्ये—गर्भिणी ... [illegible] ... तस्यैवदद्यादस्थापितम्। सूतं चिरायुष ... [illegible] ... मर्हति। याज्ञवल्क्य —दोहदस्याप्रदानेन गर्भो दोषमवाप्नुयात्। वैरूप्यमरणं वापि तस्मात्कार्यंप्रियं स्त्रियाः।—आश्वलायन —गमनं मैथुनं तीर्थं वर्जयेद्गर्भिणीपतिः। श्राद्धं च सप्तमान्मासादूर्ध्वं चान्यत्र वेदवित्। ... [illegible] ... रत्नसंग्रहे— दहनं वपनं चैवचौलं ... [illegible] ... गिरिरोहणम्। नावमारोहणंचैव वर्जयेद्गर्भिणीपतिः। प्रयुक्त गर्भपरिधित्यान्मृतस्याहु ... [illegible] ... क्षौरकर्म रोगम्। शुद्धिदर्पणेदक्ष —पिण्डदानं च प्रेतकर्म तथैव च। न ... [illegible] ... गर्भिणी पतिश्चरेत्॥ वपनंप्रेतनिर्यानाद्यादिमाहतमेव—क्षौरं नैमित्तकं कुर्यान्निषेधः क्षौरपिण्डयम्। पित्रो प्रेतविधानं च गर्भिणीपतिश्चैव ... [illegible] ... विभर्यति। कालविधाने—क्षौरं शवानुगमनं नखकृन्तनं च युद्धं च वास्तुकरणं त्वतिदूरयानम्। ... [illegible] ... गर्भिणीकापतीनाम् इति॥ इतिसीमन्तोन्नयनपद्धतिः॥

॥ अथजातकर्मसूत्रव्याख्या ॥

'सोष्यन्तीमद्भिरभ्युक्षति—एजतु दशमास्य, इतिप्राग्यस्यैनद्वति ।१। सोष्यन्तीं प्रसवशूलवतीं स्त्रियं भर्ता अद्भिर्जलेनाभ्युक्षति प्रसिञ्चति । एजतु दशमास्य इत्येतया प्राग्यस्यैत इतिप्राक्कण्डिकया ऋचा, अवसानपर्यन्तं जपेत् ।१। (अथावरावपतनम् । अवैतु पृश्निशेवलं शुने जराय्वत्तवे । नैव मांसेन पीवरीं न कस्मिंश्चनायतन मव जरायु पद्यतामिति ।२।) अथाभ्युक्षणानन्तरमवरावपतनम् । अवरमुल्वं जरायुवेष्टितं गर्भवेष्टनं, आवपतनमधः पतनं येन जप्ते भवेत्तदाव पतनोमन्त्रस्तं स्त्रीसमीपे चोपविश्य भर्ता जपति । यथा—अवैतु पृश्निशेवल इत्यादि–जरायुपद्यतामित्यन्तम् । अवरापतनमन्त्रो भर्त्रा जाप्यः ।२। व शिष्ठः—पुत्रजातं पिता पुत्रं सचैलं स्नानमाचरेत् । हेमाद्रौ—जन्मतोऽनन्तरं कार्यं जातकर्म यथाविधि । दैवादतीतकालं चेदतीते सूतके भवेत् । कारिकायाम्—जातेपुत्रे सचैलं स्यात्स्नानं नैमित्तिकं पितुः । तचरोतिनद्यां वाप्यां वा आपालिर अपीत । दिवाहृतेन तोयेन स्वर्णयुक्तेन । स्नापयेत् । इतिसांख्यायनःप्राह—रात्राविति संनिधौ । अच्छिन्ननाड्यां कर्तव्यं श्राद्धस्नानादनन्तरम् । आमद्रव्येण तत्कार्यं वचनात्तु प्रजापतेः हिरण्येन भवेच्छ्राद्धं आमद्रव्यं गृहे न चेत् । इति व्यासवचः श्रौत पक्वान्नं सनिषेधति । पुत्रजन्मनि यात्रायां शर्वर्यां दत्तमक्षयम् । जैमिनिः—यावन्नच्छिद्यते नालं तावन्नाप्नोति सूतकम् । छिन्नेनाले ततः पश्चात्सूतकन्तु विधीयते । व्यासः—नैमित्तिकन्तु कुर्वीत स्नानं दानं च रात्रिषु । मरणोद्वाहसंक्रान्तिग्रहणादौ प्रसवेषु च । दानं नैमित्तकं ज्ञेयं रात्रावपि न दुष्यति ॥ (जातस्य कुमारस्याच्छिन्नायां नाड्यां मेधाजननायुष्ये करोति ।३।) ततो जातस्योत्पन्नस्य कुमारस्य पुत्रस्याच्छिन्नायां नाड्यामखण्डिते नाले सति मेधाजननायुष्ये करोति ।३। (अनामिकया सुवर्णान्तर्हितया मधुघृते प्राशयति घृतं वा भूस्त्वयि दधामि भुवस्त्वयि दधामि स्वस्त्वयि दधामि भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि ।४।) मेधाजननं तावदाह अनामिकयांगुल्या सुवर्णेनान्तर्हितया मधुघृते मधुघृते असमासमसमानमात्रे द्विकौ घृतं वा येन कुमारं प्राशयति कुमारस्य जिह्वायां निमार्ष्टि, भूस्त्वयि दधामीत्यादिमन्त्रैः त्वयि दधामि इत्यन्तेन चतुर्भिरिति मन्त्रम् इति हरिहरानुवचनात् । (अथास्यायुष्यं करोति ।५। अथ मेधाजननानन्तरम् अस्य कुमारस्यायुष्यमायुषे हितं जीवनवर्द्धनं करोति ॥ (नाभ्यां दक्षिणे वा कर्णे जपति अग्निरायुष्मान्स वनस्पतिभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । सोम आयुष्मान्स ओषधीभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । ब्रह्म आयुष्मत्तद्ब्राह्मणैरायुष्मत्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । देवा आयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । यज्ञ आयुष्मान्स दक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि । समुद्र आयुष्मान्स स्रवन्तीभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।

इतित्रिः ॥६॥ तद्यथा नाभिदेशे दक्षिणे वा श्रवणे नाभिसमीपे दक्षिण कर्णसमीपे वा । अग्निरायुष्मानि-त्यादिकाष्ठौ मन्त्रान्त्रिर्जपति । श्रौनुग्रावातुर्णां तु पठित । अग्नि सोमब्रह्मदेव ऋषिपितृयज्ञ समुद्रइत्यन्त म् त्र्यायुषमितिच ॥७॥ त्र्यायुषं जमदग्नेरित्यादि तस्मो अरतुन्त्र्यायुषमित्यन्तं च । मन्त्रान्तरत्रयं जपति । इद चायुष्य करणकालातिक्रमेऽक्रियते । मेधाजननं तु मुख्यकालातिक्रमान्निवर्तते । तस्मात्कुमारं जातं घृतं वैवाऽग्रे प्रतिलेह्य नि.तन चतुर्धाशयन्तीति । जातमात्रस्य कुमारस्य मुख्यमेधाजननोपदेशात् । (सयदि कामयेत सर्वमायुरियादिति वात्सप्रेणैनमभिमृशेत् ॥८॥) सपिता यदीच्छेत् अयं कुमारः सर्वं सम्पूर्णमायुः जीवितमिय त्प्राप्नुयात् इत्येवं तदा वात्सप्रेण वत्सप्रयाभलन्देनदृष्टेनानुवाकेन दिवस्परीत्यादि द्वादशर्चेनैनं कुमारमभिमृशन्ततः सर्वशरीरमालभेत । तत्रविशेषमाह । (दिवस्परीत्ये-तस्यानुवाकस्योत्तमामृचंपरिशिनष्टि ॥९॥) दिवस्परीत्यादिकेद्वादशर्चोऽनुवाको वात्सप्रएतस्योत्तमामन्त्यां द्वादशीं अस्ताव्य मित्रियेतामृचं परिशिनष्टि उदस्यति तां परित्यज्यैकादशभिऋग्भिरभिमृशेदित्यर्थः । (प्रतिदिशं पंचब्राह्मणानवस्थाप्य ब्रूयादिममनुप्राणितेति १०) पूर्वोब्रूयात्प्राणे-तिव्यानेतिदक्षिणः अपानेत्यपरः उदानेत्युत्तरः समानेति पंचमं उपरिष्टादवेक्षमाणोब्रू-यात् ॥११॥) स्वयंवाकुर्यादनुपरिक्रामन्नविद्यमानेषु ॥१२॥) कुमारस्य प्रतिदिशं दिशं प्रति चतसृषु दिक्षु मध्ये च यथाक्रमं पंचब्राह्मणानवस्थाप्य संनिवेश्य कुमाराभिमुखान तान्प्रति किम् इममनुप्राणितेति इमं कुमारम् नुप्राणितानु लब्धी कुरुत प्राणेत्यादि ब्रूत इति प्रैषः ततः प्रेषिताब्राह्मणाः पूर्वादिक्रमेण प्राण इति कुमारं लब्धी कुर्वन्पूर्वो ब्रूयात्, व्यानेति दक्षिणो ब्राह्मणः, अपानेति पश्चिमः, उदानेत्युत्तरः समानेति पंचमः, उपरिष्टादूर्ध्वमवेक्षमाणः । अविद्यमानेषु — असत्सु ब्राह्मणेषु । स्वयं वा स्वयमेवानुप्राणनं कुर्यात् । कथम् । अनुपरि क्रामन्परिक्रम्य, परिक्रम्य पूर्वादिकां दिशं प्राणेत्य दि— अनु-परिक्रामेतिणमुलन्तमस्मिन्पक्षे प्रैषाभावः ॥१०।११।१२) (सयस्मिन्देशे जातो भवति तमभि-मंत्रयतेवेद ते भूमि हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् । वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतमिति १३) स कुमारो यस्मिन्देशे भूभागे उत्पन्नः पतति तं देशमभिमन्त्रयते । हस्तेन स्पृशति वेद ते भूमि इत्यादि शरदः शतमित्य-न्तेनमंत्रेण १३ । (अथैनमभिमृशत्यश्मा भवपरशुर्भवहिरण्यमस्तृतंभव । आत्मैव पुत्रनामासि सजीव शरदः शतमिति । १४) अथ जन्मदेशाभिमंत्रणानंतरमेनं कुमारं पिताभिमृशति समंततः सर्वशरीरं स्पृशति । अश्मा भव इत्यादिना सजीव शरदः शतमित्यन्तेन मंत्रेण ॥ वात्सप्राभिमर्शनादि, एतदभिमर्शनान्तं कालव्यतिक्रमेऽपि क्रियते संस्कार धर्मत्वात् १४) (अथास्यमातरमभिमंत्रयते, इडासिमैत्रा वरुणी वीरेवीरमजीजनथाः । सात्वं वीर-वती भवयाऽस्मान्वीरवतोऽकरदिति १५) अथ कुमाराभिमर्शनानन्तरमस्य कुमारस्य जननी-

मभिमन्त्रयतेऽभि लक्षो कृत्य—"इडासि इत्यादिना वीरवतोऽकरिदित्यन्तेन" ।१५। (अथास्यै दक्षिणᳪस्तनं प्रक्षाल्यप्रयच्छतीमᳪस्तनमिति १५) अथाभिमंत्रणं कृत्वा-अस्यै-मात्या-मातुर्दक्षिणं स्तनं प्रक्षाल्य धावयित्वा कुमाराय ददाति, इमᳪस्तनम्, इत्येतदर्चा ॥ यस्ते स्तन इत्युत्तरेणभ्याम् १७) ततउत्तरंवाम स्तनं प्रक्षाल्यप्रयच्छति, यस्तेस्तन, इमᳪस्तनम्, इत्येताभ्यामृग्भ्याम् ।१६।१७। (उदपात्रᳪशिरस्तोनिदधात्यापो देवेषु जाग्रथ। यथमस्याᳪसूतिकायाᳪसपुत्रिकायां जाग्रथेति १८) उदपात्रं जलपूर्णपात्रंमिरस्त. शिरः प्रदेशे कुमारस्य निदधाति. स्थापयति । आपोदेवेष्वित्यादिना जाग्रथेत्यन्तेनमन्त्रेण, ॥१८॥ (द्वारदेशेसूतिकाग्निमुपसमाधायोत्थानात्संधिवेलयोः फलीकरणमिश्रान्सर्षपानग्नावावपति—शंडामर्का उपवीरः शौंडिकेय उलूखलः। मलिम्लुचो द्रोणासश्चयवनोनश्यतादितः स्वाहा। आलिखन्ननिमिषः किम्वदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुम्भीशत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिर्हन्त्रीमुखः सर्षपारुणश्च्यवनोनश्यतादितः स्वाहा इति १९) ततः पंच भू संस्कार पूर्वकं द्वारदेशे सूतिकागृहस्य सूतिकाग्निं स्थापयित्वा—उत्थानादुत्थान यावत्—संधिवेलयो. सायंप्रात. फलीकरण-मिश्रान्फलीकरणैस्तुलकणैर्मिश्रा न्शुक्लान्सर्षपास्तस्मिन्नग्नावावपति जुहोति द्वे, आहुती-शंडामर्का, इति, आलिखन्ननिमिष, इतिद्वाभ्यांमन्त्राभ्यां—अवपनोपदेशात्—होमेति कर्तव्यता निवृत्ति. ॥१९॥

(यदि कुमार उपद्रवेज्जालेनप्रच्छाद्योत्तरीयेण वा पिताङ्क आधाय जपति-कूर्कुरः सुकूर्कुरः कूर्कुरो बाल बन्धन। चेच्चेच्छुनकसृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर ।१। तत्सत्यं यत्तेदेवा वरमददुः सत्वं कुमारमेव वा वृणीथाः ॥ चेच्चेच्छुनकसृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर ।२। तत्सत्यं यत्तेसरमा माता सीसरः पिताश्यामशबलौभ्रातरौ। चेच्चेच्छुनकसृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर इति ॥२०॥) नैमित्तिकमाह—यदि चेत्कुमारो बालग्रहस्तं बालमुपद्रवेत्—अभिभवेत्-तदा त बलं-जालेन मत्स्य ग्रहणमघनेन तदलाभे—उत्तरीयेण वा वाससा प्रच्छाद्य छादयित्वाके—उत्सङ्गे निधाय धृत्वा कूर्कुर इत्यादिकं अपह्वर इत्यन्त मंत्रत्रयं जपति ।२०। (अभिमृशति-ननामयति-नरुदति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र चाभिमृशामसि, इति ।२१।१६ जपान्ते कुमारस्य सर्वाङ्गमभिमृशति ननामयतीत्यादि यत्र चाभिमृशाममीत्यन्तेन मंत्रेण ।२१।)

इति जात कर्म सूत्र व्याख्या।

अथ जातकर्मपद्धतिः ।

अथ चसुखप्रसवार्थं सोष्यन्तीकर्म-वक्ष्ये-(सोष्यन्तीं प्रसूति वायुना शूलवतींप्रसवोन्मुखीम्) त्रियमद्भिरभ्युक्षति । ॐ, एजत्विति-अत्रिर्ऋषिर्महापंक्तिश्छन्दो गर्भोदेवतागर्भाभ्युक्षणेविनियोगः । ॐ एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणासह । यथायं वायुरेजतियथासमुद्रऽएजति । एवायं दशमास्योऽ अस्रजरायुणासह । इत्यभ्युदय-ॐ अवैत्विति प्रजापतिर्ऋषि र्बृहतीछन्दोऽग्निर्देवतागर्भावपाते विनियोगः । ॐ अवैतु पृश्निशैवलँ शुनेजराय्वत्तवे । नैनमाँ सेन पीवरी । न कस्मिंश्चनायतमव जरायुपद्यताम् । एतद् गर्भ विमोक्षणमात्र एव कार्यम् ।

अथच पितापुत्रे जातेपुत्रस्यमुखमवलोक्य स्वर्णयुक्तेनगृहानीतेन जलेनाग्निसमीपे वानद्यादौ गत्वा रात्रावपि शीघ्रं सवस्त्रं स्नानमाचरेत् । अद्येहेत्यादि० अमुकोऽहंपुत्रजन्मनिमितकं सचैल स्नानमहं करिष्ये । स्नात्वा शुद्धेधौते वाससी परिधाय प्राङ्मुखोपविश्याचम्य दीपं प्रज्वाल्यशान्तिपाठं पठित्वा गणेशादि मातृका पूजनादिकं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौस्मृत्वामुकोऽहं ममास्य कुमारस्य गर्भांबुपानजनित सकल दोष निवर्हणायुर्मेधाभिवृद्धिर्बीजगर्भसमुद्भवैनोनिवर्हणद्वारा परमेश्वर प्रीत्यर्थं जातकर्माहं करिष्ये । तदंगत्वेन-गणेश पूजनं गौर्यादि मातृकापूजनं नान्दी श्राद्धं कलश स्थापनं पुण्याहवाचनं वसोर्धारापातनं नवग्रहपूजनं च करिष्ये—इति पूर्वोक्त प्रकारेण पूजनं विधायनान्दी श्राद्धं सुवर्णेनवाद्विगुणामान्नेन विदध्यात् 'पुत्र जन्मनि कुर्वीत श्राद्धहेम्नैव बुद्धिमान्' ततः सुवर्णादि पात्रे मधुघृते चैकीकृत्य केवलं घृतं वा सुवर्णान्तर्हितया अनामिकया आदाय जातं शिशुं सकृत्माशयति । कुमारस्यजिह्वाग्रं नुमार्ष्टीत्यर्थः । ॐ भूरादि व्याहृति त्रयाणां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीछंन्दांसि

अग्निवायुसूर्यप्रजापतयो देवताः प्राशने विनियोगः । ॐ भूस्त्वयि दधामि ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ स्वस्त्वयिदधामि ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि । इति मेधाजननम् । अथायुष्करणम्— जातस्य पुत्रस्य नाभिसमीपे वा दक्षिण कर्णसमीपे मंत्रोपदेशवज्जपेत् । ॐ अग्निरायुष्मानित्यादिनोमष्टानांमंत्राणांप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो लिंगोक्तादेवता आयुष्करणे विनियोगः । ॐ अग्निरायुष्मान्स वनस्पतीभिरायुष्माँस्तेनत्वाऽयुषाऽयुष्मन्तंकरोमि ॥१॥ ॐ सोमऽआयुष्मान्सऽओषधीभिरायुष्मांस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तंकरोमि ॥२॥ ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद् ब्राह्मणैरायुष्मत्, तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तंकरोमि ॥३॥ ॐ देवाऽआयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायुष्मन्त स्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तंकरोमि ॥४॥ ॐ ऋषयऽआयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तंकरोमि॥५॥ॐपितरऽआयुष्मन्तस्ते स्वधाभिरायुष्माँस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तंकरोमि ॥६॥ ॐ यज्ञऽआयुष्मान्सदक्षिणाभिरायुष्माँस्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तंकरोमि ॥७॥ ॐ समुद्रऽआयुष्मान्सस्रवन्तीभिरायुमाँ स्तेनत्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ॥८॥ ॐ त्र्यायुषमित्यस्य नारायणऋषिरुष्णिक् छन्दः शिवो देवता-त्र्यायुषकरणे विनियोगः । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् । इतित्रिर्जपेत् । सकृद्वा । (यदिकुमारस्यपिताकामयतेऽयंकुमारः शतवर्षमायुर्जीवितमियात्स्यात् तदा दिवस्परीत्येकादशभिर्मंत्रैः कुमारंसर्वांगंहस्तेनाभिमृशेत्)एतदप्यायुष्करणम् ॐदिवस्परि–इत्येकादशमंत्राणां वत्सप्रीऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽष्टमस्यपंक्तिश्छन्द रुक्माग्निर्देवते जाताभिमर्शने विनियोगः । ॐ दिवस्परि प्रथमं जज्ञेऽअग्निरस्मद्द्वितीयं परिजातवेदाः ।तृतीयमप्सु नृमणाऽअजस्रमिन्धानऽएनं जरतेस्वाधीः ॥१॥ ॐविद्मातेऽअग्ने त्रेधा त्रयाणिविद्मातेधामविभृतापुरुत्रा । विद्माते नाम परमंगुहा यद्विद्मातमुत्सँयतऽआजगन्थः ॥२॥ ॐसमुद्रेत्वा नृमणाऽअप्स्वन्तर्नृचक्षाऽईधे दिवोऽअग्नऽऊधन् ॥—तृतीयेत्वारजसि तस्थिवा

ॐसमपामुपस्थे महिषाऽअवर्द्धन् ॥३॥ ॐ अक्रन्ददग्निस्तनयन्निव- द्यौः क्षामारेरिहद्वीरुधः समञ्जन्। सद्यो जज्ञानो व्वीहिमिद्धोऽअ- ख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥४॥ ॐ श्रीणामुदारोध- रुणो रयीणां मनीषाणाम्प्रार्पणः सोमगोपाः। व्वसुः सूनुः सहसो ऽअप्सु राजा व्विभात्यग्रऽउषसामिधानः ॥५॥ ॐ व्विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भऽआरोदसीऽअपृणा ज्जायमानः । व्वीडुञ्चिदद्रिमभिनत्परायञ्जना यदग्निमयजन्त पञ्च ।६। ॐ उशि- क्पावकोऽअरतिः सुमेधा मर्त्तेष्वग्निरमृतो निधायि इयर्त्ति धूममरि- षं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥७॥ ॐ दृशानो रुक्मऽ उर्व्या व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रियेरुचानः । अग्निरमृतोऽअभवद्वयोभि- र्यदेनन्द्यौरजनयत्सुरेताः ।८। ॐ यस्तेऽअद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूप- न्देव घृतवन्तमग्ने । प्रतन्नय प्रतरं व्वस्योऽअच्छाभिसुम्नं देवभक्तं य विष्ठ ।९। आतं भज सौश्रवसेष्वग्नऽउक्थ ऽउक्थ आभज शस्यमाने प्रियः सूर्ये प्रियोऽअग्नाभवात्युज्जातेन भिनदद्दुज्जनित्वैः ।१०। ॐ त्वामग्ने यजमानाऽअनुद्यून्विश्वा व्वसुदधिरे व्वार्याणि । त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो व्विवव्रुः ।११। ('दिवस्प रीत्येतस्य नात्सानुवाकस्य अस्ताव्यग्निरित्येतामृचं परिशिनष्टि व- र्जयेदित्यर्थः) अथ कुमारस्य पूर्वादिचतसृषु दिक्षु चतुरो ब्राह्मणान्नेकं मध्ये चावस्थाप्य, इममनुप्राणीत, तान्ब्राह्मणानिति प्रैषं पिता ब्रूयात् तत्रादौ पूर्वदिक्स्थितो ब्राह्मणः कुमारं लक्षीकृत्य ॐ प्राण।। दक्षिण स्थः ॐ व्यानः। पश्चिमस्थः ॐ अपानः। उत्तरस्थः ॐ उदानः। पंचमो मध्यमस्थ उपरिष्टादवेक्षमाणः सन् ॐ समानः । ब्राह्मणाभावे पिता स्वयमेव पूर्वादिक्रमेण स्वत्रन्नत्वा गत्वा कुमारा- भिमुखं स्थित्वा प्राणेत्यादि ब्रूयात् । अस्मिन्पक्षे प्रैषाभावः । ततो यस्मिन्देशे कुमारो जातो भवति । तं देशं दक्षिणहस्तानामिकयास्पृ- शन् वक्ष्यमाण मंत्रं पठति । ॐ वेदते भूमि इति मंत्रस्य प्रजापति र्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः पृथ्वी देवता जन्मभूम्यभिमंत्रणे विनियोगः । ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम् । व्वेदाहं तन्मां तद्विद्या-

त्पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शत ॅ॰ शृणुयामशरदः शतम् । ततः कुमारंसर्वशरीरेस्पृशतिमंत्रेण ३॰ अश्माभवेत्यस्यमंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोलिंगोक्तादेवता अभिमर्शणे विनियोगः ३ॅ॰ अश्माभवपरशुर्भव हिरण्यमश्रुतंभव । आत्मावैपुत्रनामासि सजीवशरदः शतम् । (वात्सप्रभिमर्शनादि एतदभिमर्शनान्तं कर्म कालव्यतिक्रमेऽपिक्रियते संस्कारकर्मत्वाच्चतुर्दशसूत्रस्यव्याख्यायांस्पष्टम् । मेधाजननंतुमुख्यकालतिक्रमान्नभवतीति सप्तमसूत्र व्याख्यानात्) ततः कुमारमानरंलक्ष्यीकृत्याभिमंत्रयेत् । ३ॅ॰ इडासीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दःइडादेवता अभिमंत्रणे विनियोगः । ३ॅ॰ इडासिमैत्रावरुणीव्वीरे व्वीरमजीजनथाः । सात्वं व्वीरवतीभवयास्मान्वीरवतोऽकरत् । अथमातुर्दक्षिणंस्तनंप्रक्षाल्य कुमारायप्रच्छति । ३॰ इम ॅ॰ स्तन मित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता दक्षस्तन प्रदाने विनियोगः । ३॰ इम ॅ॰ स्तन मूर्ज्जस्वन्तंधयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्यमध्ये । उत्संजुषस्वमधुमन्तमर्व्वन्त्समुद्रिय ॅ॰ सदनमाविशस्व । ततो वामंस्तनंप्रक्षाल्य च ३॰ यस्तेस्तन इति दीर्घतमाऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोवाग्देवता वामस्तनदाने विनियोगः ३ॅ॰ यस्तेस्तनशशयोयोमयोभूर्य्यो रत्नधाव्वसुविद्यः सुदत्र । येन व्विश्वापुष्यसिव्वार्याणि सरस्वति तमिहधातवेकः । ३॰ इम ॅ॰ स्तनमिति च द्वाभ्यांवामंप्रयच्छति । ततः सूतिकाया शिरप्रदेशभूमौजलपूर्णं कुम्भं दशदिनपर्यन्तं निधाय संरक्षयेत् ३॰ आपोदेवेष्वित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवताः सूतिकायाः शिरप्रदेशरक्षानिमित्तमुदककुम्भ स्थापनेविनियोगः ३॰ आपो देवेषुजाग्रथयथादेवेषु जाग्रथ एवमस्या ॅ॰ सूतिकाया ॅ॰ सपुत्रिकायऽ जाग्रथ । ततः सूतिकागृहस्यद्वारदेशे (कतिचिच्छीतव्यासदेशेषुसूतिका संन्निधावेवाग्निस्थापनं कुर्वन्ति) यथा देशप्रथानुकूलेन कर्तव्यम्—तत्रवेदींकृत्वापंचभूसंस्कार पूर्वक मग्निंस्थापयित्वा एषएवविधिर्यत्र क्वचिद्धोमः एतंतेतिप्रणीताप्रणयनादयोनभवन्ति ततः स्थापिताग्निं एतंतेनिमतिष्ठाप्य प्राग

ल्भोजातकर्मणि) इति वचनात् ॐ भूर्भुवः स्वः प्रगल्भनामाग्ने इहागच्छेतिष्ठ सुप्रतिष्ठितोवरदोभवः ॐ प्रगल्भाग्नयेनमः । इति मंत्रेणपाद्यादिभिः संपूज्य तंडुलमिश्रितान्स्वेतसर्षपान्गृहीत्वा दशदिवसपर्यन्तं प्रतिदिवसंसायं प्रात वेद्यमाण मंत्राभ्यामाहुतिद्वयं होमं कुर्यात् । यावत्सूतिकोत्थानम् । तत्रमंत्रः—ॐ शंडामर्का इति प्रजापतिर्ऋषि रनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता सूतिकाग्नौ तंडुल मिश्र सर्षपहोमे विनियोगः । ॐ शंडामर्काऽउपवीरः शौण्डिकेयऽउलूखलः मलिम्लुचोद्रोणासश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा । इदमग्नये नमम, ।१। आलिखन्नितिप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवना सूतिकाग्नौ तण्डुलमिश्र सर्षपहोमे विनियोगः । ॐ आलिखन्ननिमिषः १क वदन्तऽउपश्रुतिः हर्यक्षः कुम्भीशत्रुः पात्रपाणिर्नृमणिः हंत्रीमुखः सर्षपारुणश्च्यवनो नश्यतादितः स्वाहा—इदमग्नये नमम । इत्युभयत्र त्यागः । अथ च कुमार नामको बालग्रहो बालकं प्रत्युपद्रवं रोदन मूर्च्छादिकं कुर्यात् । तदातदुपद्रव शान्तये तं जातं शिशुं मत्स्य जाल खण्डेन वा उत्तरीयेण वस्त्रेणाच्छाद्य अंके गृहीत्वा पिता वद्यमाण मंत्रैरक्षां कुर्याज्जपेच । ॐ कूर्कुर इत्यादिनां मंत्राणांप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः शुनको देवता ग्रह बाधा दूरी करणार्थं जपे विनियोगः । ॐ कूर्क्कुर सुकूर्क्कुरः कूर्क्कुरो बाल बंधनः । चेच्चेच्छुनक सृज नमस्तेऽअस्तु सीसरो लपेतापह्वर ।१। ॐ तत्सत्यंयत्ते देवाच्वरमददुः कुमारमेववाऽवृणीथाः । चेच्चेच्छुनक सृज नमस्तेऽअस्तु सीसरो लपेतो पह्वर ।२। ॐ तत्सत्यं यत्तेसरमामाता सीसरः पिता श्यामसवलौ भ्रातरौ । चेच्चेच्छुनकसृजनमस्तेऽअस्तु सीसरो लपेता पह्वर ।३। इति जप्त्वा बालकमभिमृशति । ॐ ननामयतीत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दो वायुर्देवता ग्रहबाधा दूरी करणार्थं पुत्राभिमर्शने विनियोगः । ॐ न नामयति न रुदति न हृष्यति नग्लायति । यत्र च्वयंच्वदामो यत्रचाभिमृशामसि ॥ इति मंत्रेणाभिमृश्यततो

दक्षिणादिकं ब्राह्मणेभ्यो दत्वा ततो नालमष्टांगुलं नाभौशेषं कृत्वाकर्त्तनेन क्षुरेण वा छेदयेत्। ततो ब्राह्मण भोजनं सूतकान्ते कुर्यात् (पुत्र जन्मनि यात्रायां शर्वर्यां दत्तमक्षयम्। प्रथमेऽन्हि तथाषष्ठे दाताऽनाप्नोतिसूतकम्। इति वचनात्-स्नानदान प्रतिग्रहेषु दोषो न भवति। इति जातकर्म पद्धतिः।

—:०:—

॥ अथषष्ठीपूजामहोत्सवपरिभाषा ॥

नचायंविधिःपारस्करगृह्यसूत्रोक्तः। परंचस्मृतिपुराणोदितत्वादवश्यमेव कर्तव्योऽयंविधिः। **मिताक्षरायांमार्कण्डेयः**—रक्षणीयातथाषष्ठी निशातत्रविशेषतः। रात्रौजागरणंकार्यं जन्मदानांतथाबलिः। पुरुषाश्च हस्ताश्च नृत्यगीतैश्चयोषितः। व्यासः—सूतिकावासनिलया जन्मदानाम देवताः। तासांयागनिमित्तंतु शुद्धिर्जन्मनिकीर्त्तिता। प्रथमंदिवसेषष्ठे दशमेचैवसर्वदा। त्रिष्वेतेषुन कुर्वीत सूतकंपुत्रजन्मनि। **अपरार्के**—कन्याश्चतस्रोराकाद्या वातघ्नीनैवपंचमी। कीटनाशांचबालानां षष्ठीचशिशुरक्षिणी। स्वगेहेपूजनीयाश्च ब्राह्मणैश्चद्विजातिभिः। राकानुमतिःसिनीवाली कुहूरितिचतस्रः कन्याः। **श्रीकृष्णयुधिष्ठिरसंवादेभारते**—युधिष्ठिरउवाच—पुत्रजन्मनिकन्यायां उत्सवःकोविधीयते। किंदानंकस्यपूजाच तन्मेब्रूहिजनार्दन ?। श्रीकृष्णउवाच—शृणुपाण्डवयत्नेन सुतोत्पत्तिमहोत्सवम्। जन्मषष्ठदिनेकार्या षष्ठीनाम्नीत्रिशूलिनी। पीठेराज्ञमयेगौर्याःप्रतिमांलिखेत्। कर्णिका प्रदातव्याश्चाग्रे चाग्रेविशेषतः। कर्णयोः कुण्डलेदेयेदूर्वापल्लवशोभिते। दिव्यशास्त्रपरीधानां तांदेवींपूजयेत्ततः। अग्रेदीपकदेयं नैवेद्यैर्विविधैःशुभैः। नारिकेलादिकंतद्वत्–देशकालोद्भवैःफलैः। कलशंस्थापयेत्तत्र–अग्रतःपल्लवान्वितम्। द्विजनारीसमीपेतदाचारसमन्वितम्। आहूय कारयेत्तस्यास्तयोर्मङ्गलपूजनम्। नृत्यगीतविनोदेन वाद्येनचयुधिष्ठिर ?। रात्रौजागरणंकार्यं दैवज्ञेन द्विजैःसह। वटकच्छत्रमालाभिर्बद्धग्रीवमजासुतम्। पुनःपुनर्महाशब्दं कारयेत्कर्णताडनात्। डाकिन्यो यातुधानाश्च भूतप्रेतपिशाचकाः॥ बालग्रहाश्चनश्यन्ति तच्छब्दाकर्णनाद्ध्रुवम्। तत्रदानानिदेयानि ब्राह्मणेभ्योविशेषतः। प्रथमेऽह्निषष्ठेवादाताऽनाप्नोतिसूतकम्। दानंप्रतिग्रहं तत्रश्राद्धंचकिंचितेयतः॥ प्रभातेदीयतेदानं तत्सर्वंकथयन्। स्त्रियःसभर्तृका पूज्या वस्त्रालंकरणादिभिः। अनेनविधिनायस्तु षष्ठीदेवींप्रपूजयेत्। आयुर्वृद्धिर्भवेत्तस्यसंततेःपाण्डव ?। पुत्रेजातेव्यतीपातेग्रहणेचन्द्रसूर्ययोः। पितुःसम्वत्सरदिनेदानं कोटिगुणंभवेत्। अत्रप्रद्युम्नस्कन्दपद्मकृत्तिकादीनां पूजनं पारंपर्यं देश रीत्यादीर्घायुषांपूजनं—कुमारस्यदीर्घायुपनिमित्तंपूर्वाचार्यैर्निरूपितं। क्वचित्तु पद्धतिदेशाच्च रतोधनुर्बाणेन—राहुवेधनमस्ति। तदपिदेशाचारः। मनुविशेषम्॥ इतिषष्ठीमहोत्सवविधिः॥

———

अथ षष्ठीमहोत्सवपूजापद्धतिः ।

अथ च जातकजन्मदिवसात्षष्ठेऽन्हि पिता प्रातरुत्थाय शुचिः स्रौतस्मार्तक्रियापरं सपत्नीकं ब्राह्मणं विनियेनोपसृत्य । अद्यपुत्रस्य कन्याया वाषष्ठीमहोत्सवार्थं युवामहं निमन्त्रये, इत्युक्त्वा तथास्त्विति तौ ब्रूयास्ताम् । ततः स्वगृहमागच्छेत् । तद्दिने ब्राह्मणः सपत्नीकः श्चोपोषितस्तिष्ठेत् । ताभ्यां षष्ठी महोत्सवं कारयेत् अथवोपवासपूर्वकः स्वयमेव पिता वा अन्यः कुर्यात्—ततोऽपराण्ह समये ब्राह्मणोगोमयेन सूतिकागारभित्तौ मध्ये षष्ठीदेव्याः पार्श्वयोः स्कन्ध प्रद्युम्नयोरेवंतिस्रः प्रतिमाः कृत्वा, वा काष्ठपीठे पिष्टेन लिखित्वा तंडुलैर्यवै र्वा पूरयित्वा, षष्ठीदेव्याः कर्णयोर्दूर्वापल्लवैः कुण्डले सर्वाङ्गे षोडशकपर्दिकाः सुसज्जेत् । ततोऽन्यद्वस्त्रादिभिस्तिस्रः प्रतिमाः विदध्यात् । ततः प्रदोष समये जातकस्य पिता स्नात्वानित्यकर्म विधाय पूजा सामग्रीं संपाद्य सूतिका गृहद्वार समीपमागत्य द्वारमातृ पूजनं कुर्यात् । आचम्यार्घं संस्थाप्य भूतोत्सादनं कृत्वा संकल्पः— अद्येत्यादि० अमुकराशिरमुकोऽहममुकराशेः पुत्रस्य कन्याया वा करिष्यमाण षष्ठीमहोत्सव कर्मणि तत्रादौ द्वार मातॄणां पूजनं करिष्ये । एतन्ते० इति० ॐ भूर्भुवः स्वः द्वारमातर इहागच्छन्तु-इहतिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य, ध्यानम्— ॐ कुमारीधनदानदाविपुला मगलाचला । पद्माचैव तु नाम्नोक्ताः सप्तैदा द्वारमातरः । इति ध्यात्वा नाममंत्रैः पूजनं कुर्यात् । ॐ कुमार्यैनमः ॐ धनदायै० ॐ नन्दायै० ॐ विपुलायै० ॐ मंगलायै० ॐ अचलायै० ॐ पद्मायै नमः इतिमंत्रैः पाद्यगंधधूपादिभिः संपूज्य दक्षिणां दत्वा स्वस्ति वाचनं कुर्वन्–आभ्यंन्तरं-गच्छेत् । तत्रादौ सर्षपसैन्धवसर्प कचुलिका निम्बपत्रघृतमिश्रितैः सूतिकासन्निधौ धूपदत्वा । ततोगणेशादि पंचांग पूजनं कृत्वा ततः स्कन्दप्रद्युम्न जन्मदाषष्ठी देवीनां पूजनं कुर्यात् । आचम्यार्घं

संस्थाप्य संकल्पः । अद्येत्यादि देशकालौ स्मृत्वाऽमुकोऽहं जातस्य-शिशोरायुरारोग्य सकलारिष्ट शान्ति द्वारा श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं गोमयप्रतिमोपरिस्कन्दप्रद्युम्नयोः पूजनं करिष्ये । (कतिचित्तु पुस्तकेष्वादौ प्रद्युम्न पूजाविधिरुक्तः—परञ्च जन्मदाषष्ठी देवी-भ्यामादौ स्कन्द एवरक्षितोऽत्रापि बालस्य रक्षार्थं—पौराणका-चार्यैस्तेषां पूजाविधिरुक्तः प्रद्युम्नस्य जन्मनः पूर्वमेवस्कन्दस्य पूजायांप्राथम्यतोमयापि—आदौ स्कन्द पूजाविधिरुक्तः) तत्रादौ स्कन्दं ध्यायेत् । ॐ वराभयकरः साक्षाद्द्विभुजः शिखिवाहनः । किरीटीकुण्डली देवो दिव्याभरण भूषितः । ॐ ध्यायामि वरदं देवं मयूर वर वाहनम् । स्कन्द सेनापतिं वीरं बालरक्षण हेतवे । ॐ स्कन्दाय नमः । ॐ द्रप्सश्चेति मन्त्रस्य देवश्रवाऋषिस्त्रि-ष्टुप्छन्दः स्कन्दो देवता स्कन्दावाहने पूजने विनियोगः । ॐ द्रप्सश्चस्कन्दपृथिवीमनुद्यामिमं च योनिमनुयश्च पूर्वः । समानं-योनि मनुसंचरन्तन्द्रप्सं जुहोम्यनुसप्तहोत्राः । इति मंत्राभ्यां पाद्य गंधादिभिः संपूज्य प्रार्थयेत् । ॐ नमः कुमाराय महा प्रभायस्कन्दायते स्कन्दितदानवाय । नवार्कविम्बद्युतये नमोऽस्तु नमोस्त्वमोघोद्यतशक्तिपाणये । नमो विशालाय विचारिणेऽस्तु नमोऽस्तुते षण्मुख कामरूपिणे । गुहायगूढाभरणायधर्त्रे नमोऽस्तुते दानव दारणाय । नमोऽस्तुतेऽर्क प्रतिमप्रभाय नमोऽस्तुगुह्यायगुहाय तुभ्यम् । नमोस्तु ते लोक भयापहाय । नमोऽस्तु ते बालपराक्र-माय ॥ नमो विशालायतलोचनाय नमो विशालायमहा व्रताय नमो नमस्तेऽस्तु मनोरमाय । नमो नमस्तेऽस्तुकरोत्कराय ॥ नमो मयूरज्ज्वल वाहनाय नमो धृतोदग्रपताकिनेऽस्तु । नमोऽस्तु केयूर धराय तुभ्यं । नमः प्रभावप्रणताय तुभ्यम् ॥ सेनानये पावकिने नमोऽस्तु । क्रियां परीलामयदिव्य मूर्तये । कृपामयो यज्ञ इवामल-स्त्वं नमोऽस्तु षष्ठीश नमो नमस्ते । इति द्वात्रिंशन्नामभिः पुष्पां-जलिनासंप्रार्थ्य—ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि । एवानो दुर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च । इतिमंत्रेणस्कन्दोपरि दुर्वां

समर्पयेत् । ततः प्रद्युम्नंध्यायेत्—ॐ प्रद्युम्नस्तु चतुर्बाहुः शंख चक्र गदाधरः । रतिनारञ्जितो देवो वनमाला विभूषितः । ततः प्रद्युम्नमावाहयेत्—ॐ कामदेव धरं रूपं प्रद्युम्नंरुक्मिणी सुतम् । आवाहयामिदेवेशं शिशुकल्याणहेतवे । ॐ प्रद्युम्नाय नमः इतिमंत्रेणपाद्यादि नैवेद्यान्तं संपूज्यप्रार्थयेत्–(ॐ कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च । प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमः शंकर्षणाय च । शंवरारे ? नमस्तेऽस्तु नमस्ते रतिवल्लभ ? नमस्ते रुक्मिणी पुत्र ? नमस्तेशिशु रक्षक ? । भोप्रद्युम्नमहावाहो लक्ष्मी हृदयनन्दन । कुमारं रक्षमे भीतेः प्रद्युम्नाय नमोनमः । इति संप्रार्थ्य ततः षट् कृत्तिकाः पूजयेत्—अद्येत्यादि० देश कलौ स्मृत्वा ममास्य जातस्य षष्ठीमहोत्सव कर्मणिसर्वोपद्रवशान्त्यर्थं दध्यक्षत पुंजेषु षट् कृत्तिकानां पूजनं करिष्ये–ध्यायेत् ॐ स्कन्दमातृश्च जगद्धात्र्श्चबालरक्षण तत्पराः । ध्यायामिमनसा देवीः कृत्तिकाः शिशु पालिकाः ॐ एतन्ते इति प्रतिष्ठाप्य ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमातरः ॥ इहागच्छन्त्विह तिष्ठंतु । सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ।१। ॐभू० संभूते इ०।२।ॐभू० सन्निते इ०।३। ॐभू० प्रीते इ०।४। ॐ भू० अनसूये० इ० ।५। ॐ भू० क्षमे इ० ।६। इति प्रतिष्ठाप्य नाममंत्रैर्गन्धाक्षतादिभिः संपूजयेत् । ॐ शिवायै नमः । ॐ संभूत्यै नमः । ॐ सन्नत्यै नमः । ॐ प्रीत्यै नमः ॐ अनसूयायै नमः । ॐ क्षमायै नमः । इतिसंपूज्य प्रार्थयेत् । ॐ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्दकारिणि ! नमस्ते देवि कल्याणि प्रसीद मयि कृत्तिके ॥ ॐ कार्तिकेयाय नमः ॐ कार्तिकेय महावाहो गौरी हृदयनन्दन । कुमारं रक्षमे भीतेः कार्तिकेय नमोस्तु ते । ॐ प्रद्युम्नाय नमः । ॐ कृष्णात्मज नमस्तेऽस्तु नमस्ते कामरूपिणे । सवालांसूतिकांरक्ष प्रद्युम्नाय नमो नमः । ॐ खड्गाय नमः । ॐ शंखाय नमः । ॐ मंथनाय नमः । ॐ वंशाय नमः । इति खड्गाद्यायुधानि संपूज्य मध्येमहाषष्ठीं पूजयेत् । तत्रादावर्घ्यं संस्थाप्याचम्य प्राणायामत्रयं विधाय दीपाष्टकादि पूजा सामग्रीं

संपाद्य संकल्पः अद्येत्यादि० अमुकराशिरमुकशर्माहममुकराशे र्जातस्यपुत्रस्य कन्याया वा दीर्घायुरारोग्यावाप्तये सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये गोमयप्रतिमायांपष्ठीदेव्याः षोडषो-पचारैः पूजनं करिष्ये--ॐ एतन्ते० पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः गोमयप्रतिमायां पष्ठीदेवि ! इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितावरदा भव। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ ळँ हंसः सोहं षष्ठी-देव्याः प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु जीवइहतिष्ठतु सर्वे न्द्रियाणीह तिष्ठन्तु वरदा भवन्त्विति प्राण प्रतिष्ठां कृत्वा-आत्मनि देवे च न्यासं कुर्यात्। ॐ षाँ हृदयाय नमः ॐ षीं शिरसेस्वाहा ॐ षूँ शिखायै वषट् ॐ षैं कवचाय हुम्। ॐ षौं नेत्राभ्यां वौषट् ॐ षः, अस्त्रायफट् न्यासं कृत्वा ध्यायेत्। ॐ चतुर्भुजां सौम्यरूपां पीन्नोन्नत पयोधराम्। रक्तवस्त्रां चारु हासां मयूर वर वाहनाम्। दिव्यरूपां दिव्यनेत्रां शिवार्धासन संस्थिताम्। शक्तिशूलवराभीति हस्तां ध्यायेन्महेश्वरीम् दक्षिणे वंशमंथानं वामे नीलोत्पलं शुभम्। स्कन्दप्रद्युम्न मध्यस्थां महाषष्ठीं विचिन्तये। आवाहनम्--आयाहि वरदे देवि षष्ठीदेवीति विश्रुते। शक्तिभिःसह मेपुत्रं रक्ष-जागर वासरे। ॐ अम्बेऽअम्बिके ऽम्बालिके नमानयतिकश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। आसनम्—आसनं परमंदिव्यं कौशेयंचमनोहरम्। षष्ठीदेवि गृहाणत्वं सपुत्रांरक्षसू-त्तिकाम्। पाद्यम्—गंधाक्षतसमायुक्तं शीतलंनिर्मलंजलम्। पाद्यं गृहाणसुमुखिषष्ठीदेव्यै नमोनमः। अर्घ्यम्—गन्ध पुष्पाक्षताढ्यं च गांगवारिसुनिर्मलम्। अर्घंगृहाण देवेशिमहाषष्ठ्यैनमोनमः। आचमनीयम्—कर्पूरैलालवंगैश्च वासितं जलमुत्तमम्। गृहाणा-चमनंदेवि महाषष्ठ्यैनमोनमः। पंचामृतम्-पंचामृतं गृहाणेदं पयोदधिघृतंमधु। शर्करासहितंमातर्महाषष्ठ्यैनमोनम.।स्नानीयम् गंगादि तीर्थसंभूतं दिव्यगंधयुतंजलम्। स्नानार्थंतेप्रदास्यामि महा षष्ठ्यैनमोनमः। वस्त्रम्। कौशेयं मृदुलंदेविनानारंगैर्मनोरमम्।

वस्त्रंगृहाण जननि महाषष्ठ्यै न० । भूषणानि—नानारत्नमयं दिव्यं मुक्ताहारादिकंपरम् । गृहाणभूषणंशुद्धं महाषष्ठ्यै न० । चन्दनम् कर्पूरागरुकस्तूरी केशरेण समन्वितम् । गृहाणचन्दनंदेवि महाषष्ठ्यै न० । सिन्दूरम्-चन्दनोपरि शोभार्थंद्रव्यं सौभाग्यसूचकम् । सिन्दूरंगृह्णसुभगे महाष० । अक्षताः-सुक्षालितैरक्षितैश्चतण्डुलैः शशिसंन्निभैः । द्योतयामिजगन्मातर्महाष० । पुष्पाणि—ऋतुजानि सुपुष्पाणि तथा दूर्वाङ्कुराणि च । निवेदयामितेप्रीत्यामहाषष्ठ्यै० धूपम्-वनस्पत्युद्भवं धूपं गंधाढ्यं सुमनोहरम् । गृहाणाघ्रेयकंदिव्यं महाषष्ठ्यै०दीपम्—आज्यं वर्तिकृतं देवियन्हिदीप्तंप्रभान्वितम् आरार्तिक्यंगृहाणेशिमहाषष्ठ्यै० । नैवेद्यम् नानाविधंच नैवेद्यं भक्तिभावसमन्वितम् । स्वगणैर्भुङ्क्ष्वकल्याणि महाषष्ठ्यै० आचमनीयम् करास्यपादशुद्ध्यर्थंपानार्थं च शुभंजलम् । गृहाणविश्व जननिमहाषष्ठ्यै०।उपायनम्—सुवर्णराजतंद्रव्यंवित्तशाठ्य विवर्जितम् । उपायनीभूतमिदं गृहाणजगदंबिके ।ततोदीपाष्टकंषष्ठीदेव्या अग्रतोदीपयेत् ३० घृतेनपूरितान्दीपानष्टवर्तिसंमन्वितान् । दीपयामि हितार्थंतेमहाषष्ठिनमोऽस्तुते । ततो गन्धाक्षतादिभिः पूजयित्वा द्वारप्रदेशेचष्टकाष्टकमालां अजापुत्रस्यगलेबध्वा भूतादिविद्रावणार्थं कर्णताडनेन पुनः पुनः शब्दंकारयेत् । ततोनीराजनं कुर्यात्–३० अन्तस्तेजोबहिस्तेजएकीकृत्यामितप्रभम् । आरार्तिक मिदंदेवि गृहाणपरमेश्वरी । नमस्कारः ३० जयदेवि जगन्मात र्जगदानन्दकारिणि । प्रसीदमम कल्याणि महाषष्ठिनमोऽस्तुते । ततः पुष्पान्गृहीत्वाप्रार्थन्–देवानांचऋषीणांच मनुष्याणांच वत्सले । असुंममसुतंरक्ष षष्ठिदेविनमोऽस्तुते । पुरादेवैः पूजितासि ब्रह्मविष्णु शिवादिभिः । आवाभ्यामपि देवित्वंपूज्यसे भक्तिपूर्वकम् । देहास्यबालकस्यायुर्दीर्घंतुभ्यंनमोऽस्तुते । ततः पिता बालकस्यषष्ठीदेव्याः पुरःस्थितः । बध्वांजलिर्भक्तिनम्रवाक्यमुच्चारयेदिदम् । ३० त्वंदेवमातादितिरक्षिधजात्वं गौरीत्वमेवासिधृतिः क्षमा त्वम् । कीर्तिः समृद्धिर्भुवनस्यधात्रीत्वमेवदेविप्रणतोऽस्मितुभ्यम्

त्वं सृष्टिराद्यासृजसिप्रजास्त्वम् । स्थितिस्त्वमेताः सकलाविभर्षि । त्वामेववाचामनसा च कर्मणा समर्चयाम्यस्तु शिशुश्चिरायुः । स्वस्तिमेऽस्तु गृहेनित्यंत्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि । पुत्रोत्सवमहंनित्यं पश्येमंत्वदनुग्रहात् । ततोऽर्भकस्यजननीप्रार्थयेत् । तवप्रसादात्तनस्यवक्त्रंदृष्टं मयादेविनमोऽस्तुतभ्यम् । सौभाग्यमारोग्यमभीष्टसिद्धिंदेहिप्रजास्त्वंचिरजीवितं च । गौर्याःपुत्रो यथास्कन्दःशिशुःसंरक्षितस्त्वया । तथाममाप्ययं बालोरक्ष्यतांषष्ठिकेनमः । षष्ठिदेवि नमस्तुभ्यंसूतिका गृहवासिनि । पूजितासिमयाभक्त्या सबालां रक्षसूतिकाम् । अथ तद्बान्धवाः सर्वेस्वस्तिवाक्यपुरःसरम् सबालां कामयंतोऽर्भकस्यायुः प्रार्थयन्तः सयोषितः सपुष्पाक्षतहस्ता सर्वे एकस्वरेण ब्रूयुर्वारत्रयं ॐ स्वस्ति ॥३॥ मन्त्रः—ॐ जननीसर्वसौख्यानांवर्द्धिनीकुलसम्पादाम् । साधनी सर्वसिद्धीनां जन्मदेत्वां नतावयम् । पुनः पिताप्रार्थयेत्—जननींसर्वभूतानां बालानांचविशेषतः । नारायणि स्वरूपेण बालंमेरक्षसर्वतः । शक्तिस्त्वं सर्वदेवानां लोकानांहितकारिणि । मातृवद्रक्षमेबालं महाषष्ठिनमोऽस्तुते । अमुं मम कुलोत्पन्नं रक्षत्वंदेवि बालकम् । पूजितासिमहाभागे चिरंजीवतुबालकः । रक्षोभूतपिशाचेषु डाकिनीशाकिनीषु च । मातेवरक्षमे बालंपन्नगश्वापदेषुच । त्वमेव वैष्णवीदेवी ब्रह्माणी च व्यवस्थिता रुद्रशक्ति समाख्याता महाषष्ठिनमोऽस्तुते । धात्रीत्वं कार्तिकेयस्य स्त्रीरूपामदनस्य च । त्वत्प्रसादविघ्नेनचिरंजीवतुमेसुतः ततो भूमौगोमयेनोपलिप्यमातुः सकाशाद्बालकमानाय्य बालकं यत्नेनतत्र निधाय पिता हस्तेनस्पृष्ट्वाऽथर्ववेदोक्तां रक्षांपठेत् । ॐ कृत्यानां परित्राणं तथा रक्षोभयस्य च । रक्षा कर्म करिष्यामि ब्रह्मातदनु मन्यताम् । नागाः पिशाचागन्धर्वाः पितरोयक्षराक्षसाः पृथिव्यामन्तरिक्षेचयेचरन्तिनिशाचराः । विदिक्षुदिक्षुयेचान्येया-न्तुत्वांतेनमस्कृताः । पान्तुत्वामृषयोब्रह्माद्दिव्याराजर्षयस्तथा । पर्वताश्चैवनद्यश्चतथासर्वेचसागराः । अग्नीरक्षतुतेजिह्वांप्राणा-न्रक्षन्तुवायवः । सोमोव्यानमपानन्तुपर्जन्यःपरिरक्षतु । उदानं-

विद्युतःपान्तुसमानंस्तनयित्नवः । वल्लभिस्तेवलंपातुवाचंवाच-स्पतिस्तथा । कामंतेपान्तुगन्धर्वाःसत्यमिन्द्रोऽभिरक्षतु । प्रज्ञांच वरुणोराजासमुद्रोनाभिमण्डलम् । चक्षुःसूर्योदिशःश्रोत्रंचन्द्रमा-वतुतेमनः । रेतस्तेपान्त्विमाआपोरोमाण्यौषधयस्तथा । आकाशं तेनिशापातुदेहंतववसुन्धरा । वैश्वानरस्तवशिरःपातुविष्णुःपरा क्रमम् । पौरूपंपुरुषश्रेष्ठोब्रह्मापातुध्रुवौतव । देहंदेहविशेषेणतवपातु-वसुंधरा । एतैर्वेदात्मकैर्मन्त्रैः कृत्वाव्याधिविनाशिनी । मयैवं कृत-रक्षस्त्वंदीर्धमायुरवाप्नुहि । ब्रवीतुप्यस्तितेब्रह्माविष्णुरुद्रौनथै-वच । स्वस्तिवायुस्तथासूर्यः स्वस्तिदेवामहोरगाः । नारदश्चतथा-स्वस्ति कुर्वन्त्वायुःसदैवहि । इतिरक्षांपठित्वाजातकं वस्त्रभूषणा-दिभिर्विभूष्यस्वांकेनिधायसपत्नीकमाचार्यसम्पूज्यदक्षिणा संक-ल्पं विदध्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ, संकीर्त्यामुकराशिरमुको ऽहममुकराशेःकुमारस्य कन्याया वा करिष्यमाण षष्ठीमहोत्सव-कर्मणः साद्गुण्यार्थंजातस्य दीर्घायुरारोग्यावाप्तयेषष्ठीदेव्याः प्रीतयेचेमां दक्षिणाममुकगोत्रायसपत्नीकाय तुभ्यमहंदास्ये । ॐतत्सन्नमम । अद्यपूर्वोच्चारित० अमुकोऽहंपूर्वपूजित देवतानां-साद्गुण्यार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहाराय चेमांभूयसींदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो विप्रेभ्योनटनर्तकगायकेभ्योविभज्यचदास्ये । तथाचब्राह्मणान्भोजयिष्ये । (कतिचिद्देशेषुषष्ठीदेव्या यामचतु-चतुष्ठयपूजामपिकुर्वन्ति । धनुर्वाणेनपोटलिकायां राहुवेधनंचकुर्व-न्ति वस्त्रभूषणधारणकाले वालाकस्यनासरंध्रयोर्नस्यंदत्वाछिकां कारयन्तिलौकिकाप्रथैषा) ततःसूतिकागारे मुराहिकृतिनिर्गुंडी वचाकुष्ठंचसर्षपाः । विल्वपत्रमयोधूपः कुमारायुःप्रपोषकः । एवं-गवाज्येनसहधूपंकृत्वायजमानकुमारयोर्महानीराजनं विधाय वालकंमातुरंकेसमर्पयेत् । ततोद्वारप्रदेशेपूर्वोक्तछागरक्षकाश्चस्था-पयित्वारात्रौजागरणंकुर्यात् । प्रभातेजातेचोत्तरांगपूजनंविधाय देवान् विसृज्यमंगलतिलकाशीर्वादादिकंच गृह्णीयात् । ततो ब्राह्मणेभ्योनटनर्तकादिभ्योदक्षिणापारितोषिकंचदद्यात् । इतिष०

अथ नामकरणसूत्रव्याख्या ।

दशम्यामुत्थाप्य ब्राह्मणान्भोजयित्वा पितानामकरोति ॥१॥ प्रसवदिनमारभ्य दशम्यां रात्र्या-मतीतायामेकादशेऽहनि सूतिकागृहात्सूतिकां—उत्थाप्य श्राद्धव्यतिरेकेण त्रीन् ब्राह्मणान्भोजयित्वा पिता कुमारस्य नाम संज्ञां संव्यवहारार्थं—करोति 'अस्मिन्नपि संस्कारे पितुरेवोत्थापनस्य कर्तृत्वं इह पितु-र्ग्रहणादन्यत्रापि नियमोऽवगम्यते । "मदनरत्ने नारदीये"—सूतकान्ते नामकर्म विधेयं स्वकुलो-चितं ॥ गोभिल सूत्रे —(दशरात्रे व्युष्टे नाम करणम्) **याज्ञवल्क्यः**—अहन्येकादशे नाम ॥ **मदनरत्ने**—द्वादशे दशमे वापि जन्मतोपि त्रयोदशे षोडशे विंशतौचैव द्वात्रिंशे-वर्णतः क्रमात् ॥ **कारिकायाम्**—एकादशे द्वादशेवा मासि पूर्णे तथापरे ॥ अष्टादशेऽहनि तथा वदन्त्यन्ये मनीषिणः शतरात्रे व्यतीते वा पूर्णे संवत्सरेऽथवा ॥ "**ज्योतिर्निबन्धे गर्गः**—अमासंक्रान्ति विष्ट्यादौ प्राप्तका-लेपि नाचरेत् ॥ मुख्यकाले नामकरणाशक्तौ स्मृत्यन्तरोक्त कालमाह **कारिकायां**--मुख्यकाले यदा ना-मधेयं कर्तुं न शक्यते ॥ उक्तानामन्यतरस्मिन्दिने स्यात्तु गुणान्विते ॥ **कश्यपः**.उक्तकाले-प्रकर्तव्या द्विजानामखिलाः क्रियाः । अतीतेषु च कालेषु कर्तव्याश्चोत्तरायणे ॥ गुरौ ज्येऽप्यगुरौ ज्ये वा न रुग्णेन च वार्द्धके । शुभ लग्ने शुभांशे च शुभेऽह्नि शुभवासरे । चन्द्रतारा बलोपेते नैधनोदय वर्जिते । पूर्वाह्णे क्षिप्र नक्षत्रे चास्थिरमृदुध्रुवेषु ॥ नाममङ्गल घोषैश्च स्वस्यं दक्षिण श्रुतौ । प्रयोजनं च दर्श्यते नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः शुभावह कर्मसु भाग्यहेतु । नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नामकर्म ॥ द्व्यक्षर चतुरक्षरं वा घोषवदाद्यन्तरन्तस्थं दीर्घाभिनिष्ठानं कृतं कुर्यान्न तद्धितम्) ॥ द्व्यक्षरे यस्य द्व्यक्षरं चतुरक्षरं—अक्षराणि यस्य तच्चतुरक्षरमनयोर्विकल्पः । किंच घोषवदादि घोषवदक्षरमादौ यस्यतन्नाम्नस्तद्घोषवदादि ।। घोषवन्ति चाक्षराणि—गघङ । जझञ । डढण । दधन । बभमह । इत्येतानि—अन्तरन्तस्थमन्तर्मध्येऽन्तस्था यस्य तदन्तरन्तस्थम् । अन्तस्थाः—यरलवाः । दीर्घा-भिनिष्ठानं दीर्घमहत्स्वम् । अभिनिष्ठानम् अन्तं यस्य तद्दीर्घाभिनिष्ठानम् । कृतं कृत्प्रत्ययान्तं कुमारस्य नामधेयं कुर्यात् । पक्षान्तरे कृतम् पितामहादि नाम तत्कुर्यात्—।न तद्धितं तद्धितप्रत्ययान्तं न कुर्यात्—(अयुजाक्षरमाकारान्तं स्त्रियै तद्धितम् । २) स्त्रिया नाम्नि विशेषमाह-अयुजाक्षरम् अयुजानि विषमाणि त्र्यादीन्यक्षराणि यस्मिन्नाम्नि तदयुजाक्षरम् । आकारान्तमाकारोऽन्ते यस्य तदाकारान्तं तद्धित तद्धितप्रत्ययान्तं स्त्रियै स्त्रिया नाम कुर्यादित्यनुषंगः । (**शर्म ब्राह्मणस्य वर्म क्षत्रियस्य गुप्तेति वैश्यस्य ४**) ब्राह्मणस्य विशेष्य पूर्वोक्त लक्षण नाम्ना ते शर्मेति । क्षत्रियस्य वर्मेति वैश्यस्य गुप्तेति पदम् । **तदुक्तंशंखेन**--कुलदेवता नक्षत्रादि माससंबन्धं नाम पिता वा कुर्याद-न्योऽपि वा कुलवृद्धः । **अत्र केचित्**--जन्मनाम तु गोपयेत् ॥ इति स्वरव्यञ्जनाक्षरसंबन्धिनाम

शुत एतान्यपि व्यवहारार्थमन्य न म कुर्यादित्याहु । मासनामानि वशिष्ठेनोक्तानि- कृष्णोऽनन्तो ऽच्युतश्चक्री वैकुण्ठोऽथ जनार्दन उपेन्द्रो यज्ञपुरुषो वासुदेवस्तथा हरि । योगीश पुण्डरीकाक्षो मासनामान्यनुक्रमात् । अत्र यथाचार चैत्र दिमार्गशीर्षादिर्नाम । इति नाम० व्याख्या ॥

—— ० ——

॥ अथनामकरणपद्धति ॥

अत्रपारस्करसूत्रमादौनिर्दिष्टम्—सूतकान्ते नामकर्मविधेयमिति-नारदीये॥ तत्रसूतकं दशाहमेव सर्ववर्णानां-लोकाचाराद् भवति । अत्रपक्षे सर्ववर्णानामेकादशेहनि—एवनामकर्मभवति । तस्येयं पद्धतिः । ततोनामकर्मदिनेसबालांसूतिकांसंस्नाप्याहतेवाससी परिधायपंचगव्येनाभिषिच्यपावयित्वाच सूतिकाग्रहाद्बालंमातुरंके—उत्थाप्याग्रतः पंचवाद्यपुरः सरंजलपूर्णकुंभं सौभाग्यवत्यावाकन्यायाः शिरसिधृत्वाबालंपूजास्थलेआनीय ततःपितावा न्यःकार्यकर्तापूर्वोक्तक्रमेणगणेशादि पंचांगदेवतानांपूजनंकुर्यात्॥ संकल्पः अद्येत्यादि०अमुकशर्माहं ममास्य जातस्य पुत्रस्य पौत्रस्य वा बीजगर्भसमुद्भवैनो निबर्हणाय करिष्यमाणनामकर्मकर्मणि निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशादि पंचांग देवतानां पूजनं करिष्ये। इतिपूजयित्वा—ततोहोमकर्मवेदींविधायाचार्यवरणम्-अद्येत्यादि० अमुकोऽहममुकराशेः पुत्रस्य कन्यायाः वा करिष्यमाण नामकरण कर्मणि कर्मकर्तुमाचार्यत्वेनत्वामहंवृणे—संप्रार्थ्यचकुशकण्डिका विधिंकुर्यात्—त्रिभिःकुशैर्हस्तमात्रमितांभूमिंपरिसमुह्यगोमयोदकेनउपलिप्यस्फेनवास्रुवेणोदक्संस्थाः स्थण्डिलप्रमाणास्तिस्रो-रेखाः कृत्वाअनामिकांगुष्ठाभ्यां लेखाभ्यः पांशूनुध्दृत्यमणिका अद्भिरभिषिच्यतेजसेपात्रेऽग्निमात्माभिमुखंस्थापयित्वा—अग्नेर्दक्षिणतोब्रह्मासनमास्तीर्यकुशैस्तीर्त्वावरणद्रव्यंब्राह्मणंचसम्पूज्य अद्येहकर्त्तव्यनामकरणाख्य संस्कारकर्मणि प्रायश्चित्ताख्यपंचगव्यहोमेब्रह्मकर्मकर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैर्ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे—इतिब्रह्माणंकृत्वासंप्रार्थ्यंच। वृतोऽस्मीतिप्रत्युक्तिः। यथाविहितंकर्मकुरु,

करवाणीतिब्रह्मा ब्रूयात्–। ततोऽग्नेःप्रदक्षिणांविधाय कल्पिताशनेउपवेशयित्वाकर्मकुरु, करवाणीतिब्रह्मणःप्रत्युक्तिः । तत्रतदंगत्वेया त्रीन्ब्राह्मणान्भोजयिष्येऽथवा भोजनपर्याप्तमामान्नंवातन्निष्क्रयीभूतंद्रव्यंदास्ये–। ततःप्रणीतापात्रंपुरतः कृत्वाद्भिरापूर्यकुशैराच्छाद्याग्नेरुत्तरतः कुशोपरिनिदध्यात्। बर्हिर्मुष्टिमादायेशानादिप्रागग्रैर्बर्हिरुदक्संस्थमग्नेःपरिस्तरणंकृत्वाअग्नेः पश्चिमतः पवित्रच्छेदनानित्रीणिकुशतरूणि पवित्रकरणार्थंसाग्रमनन्तगर्भंद्वे-कुशतरूणे, प्रोक्षणीपात्रम्, आज्यस्थाली, पंचगव्यपात्रम्, सम्मार्जनकुशास्त्रयः, उपयमनकुशाःसप्तः, प्रादेशमितपालाशसमिधस्तिस्रः, स्रुवः, आज्यं, पूर्णपात्रम्, क्रमेणैतान्यासदनीयानि यथापूर्वम् । ततःपवित्रच्छेदनकुशैर्द्वेपवित्रेछित्त्वा प्रोक्षणीपात्रंप्रणितासन्निधौनिधाय प्रणीतोदकेनाभ्युदय पवित्राभ्यांप्रणीतोदकमुत्पूय पवित्रेप्रोक्षणीपुनिधाय दक्षिणेनहस्तेनप्रोक्षणीपात्रमुत्थाप्य सव्येकरेधृत्वा तदुदकं मध्यमानामिकाभ्यांमध्यपर्वाभ्या मुच्चाल्य प्रणीतोदकेन पुनःप्रोक्ष्यचाज्यस्थाल्यादीनि पूर्णपात्रपर्यन्तानिवस्तूनिप्रोक्षणीजलेन क्रमेणैकैकशः पवित्राभ्यांसंप्रोक्ष्य प्रणीताग्न्योरन्तरालेप्रोक्षणीपात्रेनिदध्यात् । तत्राज्यस्थाल्यामाज्यंनिरूप्यतत्रैवाग्नौआज्यंब्रह्माधिश्रयति तत्रज्वलदुल्मुकंप्रदक्षिणमाज्यस्य समन्ताद्भ्रामयित्वादक्षिणेनहस्तेनप्रांचमधोमुखंस्रुवमग्नौ तापयित्वा सव्येपाणौकृत्वादक्षिणेनहस्तेनसम्मार्जन कुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तंमूलैरग्रमारभ्याधस्थान्मूलपर्यन्तंप्रणीतोदकेनाभिषिच्यपुनः प्रतप्यदक्षिणतोनिदध्यात् । आज्यमुत्थाप्यतत्राज्यमग्नेः पश्चादानीयपूर्वपवित्राभ्यामुत्पूय–अवेक्ष्यचतस्मादपद्रव्यनिरसनंकृत्वा पवित्राभ्यांप्रोक्षणीश्चपूर्ववदुत्पूय–उपयमनकुशानादाय सव्येकृत्वासमिधोऽभ्याधायोतिष्ठन तिस्रोघृताक्ताः समिधस्तूष्णीमग्नौप्रक्षिपेत् । ततःसपवित्रेणप्रोक्षण्युदकेनदक्षिण चुलकेनाग्निमीशानादि–उत्तरपर्यन्तंसम्प्रोक्ष्यपवित्रेप्रणितायांनिदध्यात् । संस्रवधारणार्थंप्रोक्षणीपात्रंप्रणीताग्न्योरन्तरालेनिद-

ध्यात। इतिपशुत्तणान्तकर्मसमाप्यपूर्वोक्तविधिनापंचगव्यंकृत्वा (अत्रबहुषुपुस्तकेपुनामकरणकर्मणिपार्थिवाग्नेःपूजनमस्ति) पार्थि-वोनामकरणे) विधानपरिजातोक्तत्वात) परंचपारस्कराचार्येण-नामकर्मणिहोमानुदेशात। कतमोऽग्निर्ग्राह्य इतिद्वैधीभूतेकिंत्वत्र सूतिकाशुद्ध्यर्थे पूर्वाचार्यैःपञ्चगव्य पानंहोमंचैवविहितं-इत्याकां-चायां कस्याग्नेःस्थापनंपूजनंचयथेष्टम्। इति। (अत्रपंचगव्य-होमपानयोस्तुसूतिकायाःप्रायश्चित्त शुद्ध्यर्थनिमित्तकविधिरस्तु (प्रायश्चितेविधिश्चैव) इतिवचनात्। अत्रविधिनामाग्नेरावाहनं पूजनंचयथेष्टंनतुपार्थिवाग्नेः॥ विद्वांसोविचारयन्तु) ॐभूर्भुवः स्वः, विधिनामाग्ने-इहागच्छेहतिष्ठसुप्रतिष्ठितोवरदोभव॥ ॐ तदेवाग्नि स्तदादित्यस्तद्वायुस्तदुचन्द्रमाः। तदेवशुक्रंतद्ब्रह्मताऽ-आपःसप्रजापतिः॥ ॐ विधिनामाग्नयेनमः। इतिमन्त्रेणपाद्या-दिनीराजनान्तंसम्पूज्य दक्षिणजान्वाकुंच्यब्रह्मणान्वारब्धोजुहु-यात्। ॐ प्रजापतयेस्वाहा, इदंप्रजपतयेनमम। मनसा—ॐ इन्द्रायस्वाहा-इदमिन्द्राय०। ॐ अग्नयेस्वाहा-इदमग्नये०। ॐ सोमायस्वाहा-इदंसोमाय०। इत्याघारावाज्यभागौचहुत्वा—अन्वारंभंत्यक्त्वा सप्ताधिककुशपिंजूलिना पंचगव्यहोमंकुर्यात्। तन्मन्त्राः—ॐ इरावतीत्यस्य वसिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो विष्णु-र्देवतापंचगव्यहोमे विनियोगः। ॐ इरावतीधेनुमतीहिभूतँ सूयवसिनीमनवेदशस्या। व्यस्कभ्नारोदसी विष्णवेतेदाधर्त्थ पृथि-वीमभितोमयूखैःस्वाहा। इदंविष्णवेनमम। ॐ इदंविष्णुरित्यस्य मेधातिथिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दो विष्णुर्देवतापंचगव्यहोमेविनियोग.। ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम्। समूढमस्यपाँसुरेस्वाहा। इदंविष्णवेनमम। ॐ मानस्तोकेइत्यस्यपरमेष्ठीऋषिर्जगतीछन्दो रुद्रोदेवता पंचगव्यहोमे विनियोगः। ॐ मानस्तोके तनयेमान ऽआयुषिमानो गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्रुद्रभामि नोवधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे स्वाहा। इदँरुद्रायनममः। अत्रप्रणीतोदकं बालकस्योपर्यपिअभिषिंचयेत। ॐ शन्नोदेवी-

रित्यस्यदध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः सवितादेता पंचगव्यहोमे विनियोगः । ३० शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये । संय्योरभिश्रवन्तुनः स्वाहा इदमद्भ्योनमम । ३० तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सवितादेता पंचगव्यहोमे विनियोगः । ३० भूर्भुवःस्वः, तत्सवितु० स्वाहा । इदंॐसवित्रेनमम । ३० प्रजापतेनत्वेत्यस्य हिरण्यगर्भ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापति देवतापंचगव्यहोमे विनियोगः । ३० प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणिपरितावभूव । यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुव्वय ॐस्यामपतयोरयीणाॐस्वाहा । इदंप्रजापतयेनमम । इतिपंचगव्य होमंकृत्वा ब्रह्मणान्वारब्धंभूरादिनवाहुतिपर्यन्तंजुहुयात् । ३० भूरादिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि-अग्निवायुसूर्यादेवताःप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ३० भूःस्वाहा इदमग्नयेनमम । ३० भुवःस्वाहा इदंवायवे० । ३० स्वःस्वाहा इदं सूर्याय० । ३० त्वन्नोअग्ने इतिवामदेवऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौ देवतेप्रायश्चित्तहोमे विनियोगः । ३० त्वन्नोअग्नेव्वरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानोविश्वाद्वेषाॐसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ३० सत्वन्नोऽअग्ने इतिवामदेवऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निदेवताप्रायश्चित्तहोमेविनि० । ३० सत्वन्नोऽअग्नेऽअवमोभवोती नेदिष्ठोऽअस्याऽउषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्वनोव्वरुणॐ रराणो व्वीहिमृडीकॐसुहवोनऽएधिस्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॥ ३ॐ अयाश्चाग्नेऽइति प्रजापतिर्ऋषि विराट् छन्दोऽग्निर्देवता प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ३ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्व मयाऽअसि । अयानो यज्ञं व्वहास्ययानोधेहि भेषज ॐस्वाहा इदमग्नये नमम । ३० येतेशतमिति शुनः शेफ ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणः सविता विष्णु र्विश्वेदेवामरुतः स्वर्काश्चदेवाः सर्वं प्रायश्चित्त होमेविनियोगः । ३० येते शतंव्वरुणं येसहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नोऽअद्यसवितोत विष्णु-

विश्वेमुंचन्तुमरुतः स्वर्काः स्वाहाः—इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च नमम । ॐ उदुत्तममिति शुनः शेफ ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता प्रायश्चित्तहोमेविनि-योगः । ॐ उदुत्तमं वरुणपाश मस्मदवा धमं व्विमध्यमश्ँश्र थाय । अथाव्वयमादित्य व्रते तवा नागसोऽअदितये स्याम-स्वाहा-इदं वरुणादित्याभ्यां नमम । इत्यन्वारब्धं कृत्वापंचगव्यमिश्रितेन घृतेन स्विष्ट कृद्धोमं कुर्यात् । ॐ प्रजापतयेस्वाहा-इदं प्रजापतये नमम । ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम । ततः संस्रवं प्राश्याचम्य अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममुकराशेर्बालकस्य नामकरण निमित्तक होमकर्म्मणः सांगफलावाप्तये इदं पूर्णपात्रं-प्रजापतिदैवतममुक शर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ तत्स-न्नमम ॥ ॐ स्वस्तीति ब्रह्मा ब्रूयात् । ॐ सुमित्रियान मंत्रस्य दध्यंगाथर्वणऋषी रापो देवता न्यूत्प्राजापत्या गयत्री छन्दः शिरः प्रोक्षण प्रणीता विमोके विनियोगः । ॐ सुमित्रियानऽ-आपऽओषधयः सन्तु । इतिपवित्राभ्यां प्रणीता जलेन शिरः संप्रोक्ष्य । ॐ दुर्मित्रियास्तस्मैसन्तु योस्मान्द्वेष्टियं च वयंद्विष्मः ॥ इति प्रणीता जलं ईशान्यां विमोकं कुर्यात् । ॐ देवागात्विति अत्रि ऋषि रुष्णिकछन्दो मनसस्पतिर्देवता बर्हि होमे विनि योगः । ॐ देवा गातु विदो गातुं वित्वागातुमित मनस्पत इमं देव यज्ञँ्स्वाहा वातेधाः स्वाहा इति बर्हि होमः पूर्णाहुतिस्तु न भवति । ततो हुतशेषं पंचगव्यं सूतिकायै पाययित्वा, सूतिका गृहं च तेनैव पंचगव्येन शुद्ध्यर्थं संप्रोक्ष्य, ततः सूतिकां तत्रा नयति सा च बालकमंकेकृत्वा अग्नेः प्रदक्षिणां कृत्वा भर्तुर्वामे उपविशेत् । आचम्य गणेशादीन्नमस्कृत्य पुष्पांजलिदत्वा ततः संलग्ने—आचार्यो वा कुमारस्य जनकः पूर्वोक्त प्रकारेण पंचना-मानि—अष्टगन्ध द्रव्येणाश्वत्थपत्रेषु वा श्वेतवस्त्रे वक्ष्यमाण प्रमा णेन सुवर्णसलाकया लिखेत् । (प्रमाणानिसूत्रव्याख्यायां निर्दि-ष्टानि) तदनुसारादादौ कुलदेवता संबन्धं प्रथमं नाम यथा

"वदरीशदत्त शर्मा" ? द्वितीयं जन्ममास देवताक संवन्धं नाम यथा वा तन्मासनामवत् यथा "माधवानन्द शर्मा चैत्रादिः" तृतीयं नाक्षत्र नाम "अमरदेव शर्मा" चतुर्थं नाम घोषवदादीति गृह्यसूत्रानुसारतो हकार वर्ग तृतीयचतुर्थं यरलव मध्यं चतुरक्षरं तद्धितान्तरहितं कृदन्तान्तं-यथा "जीवानन्द शर्मा" पंचमं नाम स्वकुलानुसाराद्व्यावहारिकं कुर्यात्-यथा "रामकृष्ण शर्मा"। एवं पंच नामानि बालकस्य लिखित्वातंडुलपूर्णे पात्रेनिधाय-ॐ एतन्ते० ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः, बालकस्य नामानि सुप्रतिष्ठितानि भवन्तु-इतिप्रतिष्ठाप्य । ततः आदित्यादि नवग्रहाणां सर्वेषां दानानि क्रमशः कुर्यात् । ततो लग्न दानानि कृत्वा ततो लिखित नामानि सद्रव्यं शंख मध्ये धृत्वा स्वेष्टदेवं प्रणम्य "पिता स्वयं वा आचार्यः श्रावयेत् । ततः शंखंस्व मुखे कृत्वा बालकस्य दक्षिण कर्णसमीपे शंखाग्रभागं नीत्वा तद्रंध्रद्वाराभो कुमार ? त्वं अमुक शर्मा, अमुक वर्मा, अमुक गुप्त इति नामासि दीर्घायुर्भव ततो नामकर्ता नाम श्रावयित्वा ब्राह्मणान्प्रति ब्रूयात् । भो ब्राह्मणाः ? अमुकनामायं भवन्तोऽभिवादयते । आयुष्मान्भव-अमुक । इति ब्राह्मणा वदेयुः । इति क्रमेण पंचनामानि श्रावयेत् । शर्मान्तं विप्रस्य वर्मान्तं क्षत्रियस्य, गुप्तान्तं वैश्यस्य । दासान्तं शूद्रस्य नाम कुर्यात् । कुमार्याअपि नामकरणं-आकारान्त विषमाक्षर-युतं तद्धितान्तं नामसमन्त्रकं कुर्यात । तत आचार्याय दक्षिणा-दानम् अद्येत्यादि-अमुकराशे रमुकबालकस्य वैजिक गार्भिक, दुरितोपशान्तये नाम कर्माख्य संस्कार कर्मणः साद् गुण्यार्थ माचार्यायेमां दक्षिणां तथा च न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं नाना नामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नटनर्तक गायकादिभ्यश्च विभज्य दास्ये । ॐ तत्सत्रमम । तथा च ब्राह्मणान्भोजयिष्ये । ततोऽग्ने-रुत्तरांग पूजनं कृत्वा त्र्यायुषं कृत्वा स्थापितदेवता अग्निं च विसृज्य कलशजलेन मंत्राभिषेकादिकं कुर्यात् ॥ इति नाम-करण पद्धतिः ।

अथ खट्वारोहणम् ।

इदानीमेव नामकरणोत्तरं । खट्वारोहस्तु कर्तव्यो दशमे द्वादशेऽपिवा । इतिप्रयोगपारिजातके ज्योतिर्निबन्धे । आन्दोला शयेनपुंसो द्वादशे दिवसे शुभः । त्रयोदशस्तु कन्याया न नक्षत्र विचारणा । गदाधर पारस्करसूत्र द्वितीय भाष्य कारेणनामकरण दिने षोडशदिने द्वात्रिंश दिनेऽपि ज्योतिर्विदादिष्टेमुहूर्तेऽप्युक्तः । ततः स्वेष्ट देवता समीपंगत्वा शिशुं प्रणामयित्वा उपायनं समर्प्य ततो हरिद्रारंजित पर्यंक समीपे शिशुमानीयमाता वा सौभाग्य- वती स्त्री हस्तेपुष्पं निधायशेषशायिनंप्रार्थयेत् । ॐ शेष शायि- न्यथा शेषशय्यायां सुखितोसित्वम् । तथायं मम बालोऽपि शय्यायां सुखमाप्नुयात् । इत्युक्त्वा बालकंपूर्व शिरसं शय्यायां संस्थाप्य यशोदां प्रार्थयेत्–मातर्यशोदेहि त्वया श्रीकृष्णपरि रक्षितः । तथा त्वंमम बालं च सर्वदा रक्ष दुःखतः । इतिखट्वां चालयेत् । इतिखट्वारोहणम्—

अथ निष्क्रमणसूत्रव्याख्या—

(चतुर्थेमासि निष्क्रमणिका ॥५॥) कुमारस्य जन्मचतुर्थेमासि निष्क्रमणिका गृहाद्बहिर्निष्क्रमणं करोति पिता –(सूर्यमुदीक्षय- तितच्चक्षुरिति ६।) अथ तच्चक्षुर्देवहितम्, इत्यादिनाभूयश्चशरदः शतात् । इत्यन्तेनमंत्रेण सूर्यंभगवन्तं रश्मिमालिनमुदीक्षयति कुमारंप्रदर्शयति पिता । ज्योतिर्निबन्धे–तृतीयेवा चतुर्थेवा मासि निष्क्रमणंभवेत् । ततस्तृतीयेकर्तव्यं मासिसूर्यस्यदर्शनम् । विष्णु- धर्मोत्तरे संस्कारप्रकरणे–मासेचतुर्थेकर्तव्यं शिशोर्निष्क्रमणंगृहात् । दिगीशानां दिशांचैव तथाचन्द्रार्कयोर्द्विजः। पूजनंवासुदेवस्य गग- नस्य च कारयेत् ॥ भविष्योत्तरे–द्वादशेऽह्निराजेन्द्र शिशोर्निष्क्र- मणंगृहात् । इत्यादि बहुमतसम्मत्याप्रकृत्य विशेषतः शीतव्याप्त देशेषु माघः समानाराधननामकर्म दिवसएवसूर्यावलोकनं चान्त्नीनिदेशाचारादि बहुमतसम्मतिः ।

अथ सूर्यावलोकननिष्क्रमणपद्धतिः

ततो नाम कर्मदिनेवा चतुर्थमासि चन्द्रतारानुकूले दिनेऽलंकृतंशिशुंसूतिकां च सूर्यमुदीक्षयति। तत्रादौगृहांगणे पूर्वस्यां दिशि भूमौगोमयेनोपलिप्य तत्र यवैस्तण्डुलैर्वाऽष्टदलं कमलंविलिख्य सिन्दूरेणप्रपूर्य ततः गंधपुष्पाक्षत धूपदीप नैवेद्यादि पूजासामग्रीं च सम्पाद्य, स्वासन उपविश्याचम्यप्राणायामत्रयं विधाय पिताऽन्यो वा संकल्पं कुर्यात्। अद्येत्यादि० अमुकशर्माहममुकराशेरमुकशर्मणो ऽस्यवालकस्य करिष्यमाण गृहान्निष्क्रमणकर्मणि सूर्यावलोकन विधौसर्वारिष्टनिवृत्तये कलशे दिगीशानां दिशांचन्द्रस्यसूर्यस्य वासुदेवस्य गगनस्य च पूर्वांगतया पूजनंकरिष्ये। तत्रादावष्टदले कलशपूजोक्त विधिना कलशं संस्थाप्य सम्पूज्य च ध्यायेत्। आगच्छन्तुमहाभागादिगीशाद्यादिवौकसः। समाविशन्तु कलशेरक्षार्थं वालकस्यमे। ॐ एतन्ते० ॐ भूर्भुवः स्वः, दिगीशादि गगनपर्यन्तादेवताः अस्मिन्कलशे समागच्छन्तु तिष्ठन्तुसुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु, इतिप्रतिष्ठाप्य। अक्षतैः कलशेवक्ष्यमाण नाममन्त्रैः—ॐ दिगिशेभ्योनमः ॐ दिग्भ्योनमः ॐ चन्द्रायनमः ॐ सूर्यायनमः ॐ वासुदेवायनमः। ॐ गगनायनमः। इत्याद्यर्घपाद्यादिभिः सम्पूज्य च प्रार्थयेत्—अप्रमत्तंप्रमत्तं वा दिवारात्रमथापि वा रक्षन्तुसततं सर्वेदेवाः शक्रपुरोगमा। इति संप्रार्थ्य अथ च शंखघंटादि नादपूर्वकं शान्तिपाठपूर्वकं वालकंमातुः क्रोडेधृत्वा वहिरानीयसूर्यं भगवन्तंपूजयेत् सूतिकायैआचमनंकरयित्वा ताम्रपात्रेरक्तचन्दनेन सूर्यविम्बं लिखित्वाग्रेसंस्थाप्य सजलदुग्धमर्घार्थंपुटकेनिधाय। संकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकराशे रमुकवालस्य वैजिकगार्भिक दोषोपशान्तये आदित्यस्य पूजनंकरिष्ये। ध्यानम् ॐ पद्मासनः पद्मकरोद्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरंगवाहः। दिवाकरोलोकगुरुः किरीटीमयिप्रसादं विदधातुदेवः। ॐ आकृष्णेनरजसावर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता

रथेनदेवोयाति भुवनानिपश्यन् । इतिमन्त्रेण वा ॐ सूर्यायनमः अनेन च पाद्यादिनीराजनान्तं संऽपूज्य सफलजलयुतं दुग्धमञ्जलौ पूरयित्वा ॐ एहिसूर्य सहस्रांशोतेजोराशेजगत्पते । अनुकम्पयमां भक्त्या गृहाणार्घ्यंदिवाकर । इति वारत्रयमर्घ्यंदत्वा सूर्यंप्रदर्शयेत् ॐ तच्चक्षुरितिदध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरुष्णिक्छन्दः सूर्योदेवता सूर्योदीक्षणे विनियोगः। ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत् । पश्येमशरदः शतंजीवेमशरदः शत ँ० शृणुयामशरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतंभूयश्चशरदः शतात् । इति मन्त्रेणबालकं सूर्यंप्रदर्श्यप्रार्थयेत् ॐ हरितहयरथंदिवाकरंकनकमयाम्बुजरेणुपिञ्जरम् । प्रतिदिनमुदये नवंनवंशरणमुपैमि हिरण्यरेतसम् । दक्षिणासंकल्पः—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकराशेरमुकबालस्य कृतस्यानिष्क्रमणाख्य संस्कारकर्मणःसूर्यावलोकनस्यच सांगतासिद्ध्यर्थमिदंद्रव्यं अमुकशर्मणे आचार्यायदास्ये । यथासंख्यकान् विप्रांश्च भोजयिष्ये ततःकलशजलेन ससूतिका बालकमभिषिंच्यतिलकंकृत्वाशीर्वादंदद्यात् ।

इति सूर्यावलोकन निष्क्रमण पद्धतिः

अथ सूतिका जल पूजाकर्म—अथ च नामकर्मोत्तरेऽपिसूतिकायादैवे पित्रेकर्मणिनाधिकारः । धर्मसिन्धुसारे—अथ सूतिकाशुद्धिःदशाहान्तेस्नातकाया अस्पृश्यत्वनिवृत्तिर्नामकर्मजातकर्मादिप्राप्तकर्माधिकारश्च । जातेष्टि विवाहोपनयनादिकर्मसुतु पुत्रप्रसूतानांविंशतिरात्रान्तेऽधिकारः । कन्याप्रसूनां मासान्तेऽधिकारः उक्तंच मुहुर्तचिन्तामणौ—कवीज्यास्त चैत्राधिमासेनपौषेजलंपूजयेत्सूतिकामासपूर्तौ । बुधेंदुिज्यवारे विरिक्तेतिथौहिश्रुतादितींद्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः । इति । 　अथ जलपूजा सूतिका कर्म पद्धतिः

अथ च सूतिका जलपूजनं पुत्रप्रसववत्या एकविंशति दिनादाराभ्य कन्याजनन्यामासोत्तरंपूर्वोक्त चन्द्रतारानुकूलसद्वासरे जल पूजा कर्तव्या ततः प्रातर्जल पूजार्थिनीं संस्नाप्य पंचगव्यमभिषिंच्यपंचवारं चुलुकेनपाययित्वा गणेश पूजास्थलमागत्याचम्य

रक्षां विधाय ॐ अद्येत्यादि० देशकालौ संकीर्त्यामुकराशिरमुकी नाम्नीदेव्यहममुकाराशे र्बालकस्य बैजिक गार्भिक दुरितोपशान्तये आत्मनः समस्त देवपित्र्यादि कर्माधिकार प्राप्तये गणेशादि जलमातृणां पूजनमहं करिष्ये – ततोगणेशं सम्पूज्य कलश पूजोक्त विधिना कलशं संस्थाप्य तत्रजल मातृः, आवाहयेत्–ॐ आवाहयामि देवेशीर्जलमातृः सुमंगलाः । आयुसंतानदातृश्च पूजार्थं स्थापयाम्यहम् ॥ ॐएतन्ते । ॐभूर्भुवःस्वः, मत्स्यादि सप्तजलमातर इहागच्छन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु । इतिप्रतिष्ठाप्य वक्ष्यमाण नाममन्त्रैःपूजयेत् – ॐमत्स्यैनमः । ॐकूर्म्यैनमः । ॐवाराह्यैनमः । ॐकुक्कुट्यैनमः । ॐमण्डूक्यैनमः । ॐजलूक्यैनमः । ॐसोमायैनमः । इतिसम्पूज्य नैवेद्यंनिवेदयित्वा दक्षिणांसमर्प्य (कतिचित्प्रदेशेषु जलपूजनं नद्यादौजलाशये वा कुर्वन्तिसमाचारात्कुर्यात) ततःप्रार्थयेत् – ॐनमस्तेभ्योजलेशिभ्योमातृभ्यश्चनमाम्यहम् । दीर्घायुर्षप्रयच्छन्तु जातकायशुभाय मे । इतिसम्प्रार्थ्यसूतिकागृह शुद्ध्यर्थंतत्रगृहेप्रादेशमात्रं स्थंडिलं कृत्वापंचभूसंस्कार पूर्वकमग्निंसंस्थाप्य नवग्रहमन्त्रैर्यथा संख्यकं हुत्वा तत्रसूतिका तिलपात्रंकृत्वा त्र्यायुषंकृत्वा कलशजलेनाभिषेकंकृत्वा मंत्राशिषंदद्यात् । ततोब्राह्मणंभोजयित्वा दक्षिणांदत्वा च यथासुखंविहरेत् । इति सूतिकाजल पूजापद्धतिः

अथ दुग्धपानम्–एकत्रिंशद्दिनेचैवपयःशंखेनपाययेत । अन्नप्राशन नक्षत्रे दिवसोदयराशिषु । अथ दुग्धपानपद्धतिः ॥ अथ चैकत्रिंशद्दिने कुमारस्य कन्याया वा जन्म दिवसगणनयाविना चन्द्रतारानुकूलेऽपिस्वेष्ट देवतां सम्पूज्य शर्करायुतं दुग्धं शंखे संस्थाप्य–ॐ आपायस्व समेतुते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवावाजस्यसंगथे । इति मन्त्रेण सोमन्ध्यायन्नभिमन्त्रयित्वा माता अन्या वा सुभगा शंखेन बालकं पाययेत् । अन्यस्मिन्दिनेऽपि-अन्नप्राशनोक्त नक्षत्रेचन्द्रतारानुकूलेऽन्हि-अनेनैवविधानापाययेत् ।

———०———

अथ-अन्नप्राशनसूत्रव्याख्या

(षष्ठे मासेऽन्नप्राशनम् ।१) जन्मतः षष्ठे मासे कुमारस्यान्नप्राशनं कर्म कुर्यात् ॥१॥ नारद —जन्मतोमासि षष्ठे स्यात्सौरेणाम्नादानं परम्। दशमे वाष्टमे मासि नवमे द्वादशेऽपि वा। द्वादशेवापि कुर्वीत प्रथमान्नाशनं परम्। संवत्सरे वा संपूर्णे केचिदिच्छन्ति पण्डिताः। वराहाय-ष्टमे मासि पुंसां स्त्रीणां तु पञ्चमे। सप्तमे मासि वा कार्यं नवान्नप्राशनं शुभम्। रिक्तां दिनक्षयनन्दां द्वादशीमष्टमीममाम्। त्यक्त्वा तिथिषु प्रोक्ता शिशोर्भोजनकर्मणा। चन्द्रार्के प्रशस्ति श्रेष्ठं चा-न्यत्रिकं विना। श्रीधर —आदित्य तिष्यवसुपौष्ण कराऽनिलाश्विन् चित्राज विष्णु वरुणोत्तरपैत्र-मित्रा। बालान्नभोजनविधौ दशमे विशुद्धे। विशेषो मुहूर्त ग्रन्थेषु द्रष्टव्यः। (स्थालीपाकं श्रपयित्वाऽऽज्यभागाविष्ट्वा ज्याहुतिर्जुहोति देवीं वाचमजनयन्त देवास्तांविश्व-रूपा पशवोवदन्ति सानोमन्द्रेषमूर्जं दुहानाधेनुर्वागस्मानुपसुष्टुते तु स्वाहेति। वाजिनो अद्येति च द्वितीयायाम् । २) अन्नप्राशनस्येति कर्तव्यता। विशेषमाह-स्थालीपाक चरुं यथाविधि श्रपयित्वा आघारावाज्यभागौ हुत्वा द्वे-आहुती जुहोति ॥ देवीं वाचमित्यादि वा-जिनो अद्येति च द्वितीयाम्। इत्यन्त सूत्र-आश्येन 'देवीं वाच, इत्यादि कयार्च—एकामाहुतिं जुहुयात्। इदं वाचे इति त्याग विधाय चकारात्पुनर्देवीं वाचमित्येतस्यान्ते वाजोन। अथ देवीं वाचमिति वाजिनो अद्येति च द्वाभ्यामृग्भ्यां द्वितीयामाज्याहुतिं हुत्वा 'इदं वाचे वाजाय च,, इति त्याग कुर्यात्॥ २ ॥ (स्थालीपाकस्य जुहोति प्राणेनान्नमशीय स्वाहाऽऽपानेन गन्धा-शीय स्वाहा, चक्षुषा रूपाण्यशीय स्वाहा श्रोत्रेण यशोऽशीय स्वाहेति । ३ ।) स्थालीपाकस्य चरोः प्राणेनान्नमशीयेत्यादिभिश्चतुर्भिर्मन्त्रैश्चतस्र आहुती जुहोति। ३। (प्रा-शनान्ते सर्वान्रसान्सर्वमन्नमेकतोद्धृत्याथैनं प्राशयेत् । तूष्णीं हन्तेति वा हन्तकार मनुष्या इति श्रुतेः । ४) ततः स्विष्टकृदादि प्राशनान्त विधाय मधुराम्लतिक्तकषायादीन् सर्वमन्नं भक्ष्यभोज्यलेह्यपेयचोष्यादि एकतः एकस्मिन् पात्रे—उद्धृत्यैकीकृत्याथानन्तरमेनं कुमारं प्रा-शयेत्। तूष्णीं मन्त्ररहितं हन्त इति वा मन्त्रेण हुत, हन्तकार मनुष्या इति श्रुतेः। हन्तकार मनुष्या उपजीवन्ति—इति श्रवणात्। 'मार्कण्डेय —देवता पुरतस्तस्य धात्र्युत्सङ्गगतस्य च। अलंकृतस्य दातव्यमन्नं पात्रे च कांचनम्। (भारद्वाज्यामांसेन वाक् प्रसारकामस्य ५) (कपिंजलमांसेनान्नाद्यकामस्य ६) (मत्स्यैर्जवनकामस्य ७) (कृकषायाऽआ-युष्कामस्य ८) आट्या ब्रह्मवर्चसकामस्य ९) (सर्वैः सर्वकामस्य १०) भरद्वा-ज्या पक्षिण्या मांसेन कुमारस्य प्राशनं कारयितव्यम्। यदीय कामना भवति। अथ कुमारो वाग्मी स्यादिति कामयेत्। यदि कुमारोऽन्नाद स्यादिति कामयेत्तदा कपिंजलमांसं प्राशयेत्। कपिंजल

करंड्यो मयूरः कचित्तित्तिरो वेति । यदि कुमारोऽयं जवनः शीघ्रगामीस्यात्तदा चपलेन्ध्वं मत्स्या-न्प्राशयेत् । स यदि कुमारो दीर्घायुः स्यादिति कामयेत्तदा कृकषायाः मांसं प्राशयेत् । यदि कुमारो ब्रह्मवर्चस्वी स्यादिति कामयेत्तदा—आटयाः मांसं प्राशयेत् यदि वाक्प्रसारादीनि ब्रह्मवर्चसान्तानि सर्वान्कामान्कामयेत् सर्वाणि पूर्वोक्तानिमांसानि क्रमेण प्राशयेत् । एकैकस्य वा प्राशयेदिति भर्तृयज्ञः ४ । १० । (अन्नपर्याय वा ततो ब्राह्मण भोजनमन्नपर्याय वा ततो ब्राह्मणभोजनम् । ११ अन्नपरिपाट्या वा—अन्नेकीकृत्य प्राशयेदित्यर्थः । ततः कर्म समाप्तविकस्य ब्राह्मणस्य भोजनं कारयितव्यम् । अत्र कण्डिकापरिसमाप्तौ द्विरुक्तिः । व्यासः—अन्नप्राशन कालेऽपि भूमौ बालं समाविशेत् । वाराहं पूजयेत्पूर्वं पृथिवीं च तथामहान् । बालकस्य जीविका परिरक्षार्थं तदुक्तं कारिकायाम्—कृतप्राशनमुत्संगा द्धात्री बालं समुत्सृजेत् । कार्यं तस्य परिज्ञानं जीविकाया अनन्तरम् । देवताग्रेऽथविन्यस्य शिल्पभाण्डानि सर्वशः । शास्त्राणि चैव शस्त्राणि ततः पश्येत्त लक्षणम् । प्रथमं यत्स्पृशेद्बालस्ततो भाण्डं स्वयं तदा । जीविका तस्य बालस्य तेनैवेति भविष्यति । गर्भाधानादिका अन्नप्राशनान्ता मलिम्लुचे । आकर्णवेधा, ऽपुं• क्रिया नान्या त्स्यादिम.त्करः ।

इति अन्नप्राशन सूत्र व्याख्या ।

॥ अथअन्नप्राशनकर्मपद्धतिः ॥

अथचान्नप्राशनंकर्म जन्मतःषष्ठेऽष्टमे दशमेद्वादशेमासि पूर्णसंव-त्सरेवापुन्त्राणांकुर्यात। स्त्रीणांतु–आपंचमादयुग्मेमासिसम्वत्सरे पूर्णवालचज्योतिर्विदादिष्टे शुभेऽन्हिसर्वारंभकर्मकृत्वान्नप्राशनदिने कर्त्तानित्यक्रियः शुचिर्धौतेवाससी परिधायपूजाकर्मस्थलमागत्य सामग्रींसम्पाद्यस्वासने—उपविश्याचम्यदीपं प्रज्वलय्यभूतोत्सा दनंकृत्वाप्राणायामत्रयंविधायस्वस्तिवाचनंपठित्वापूजार्घंसंस्थाप्य संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं ममामु-कराशेरमुकनाम्नः पुत्रस्य (कन्यायावा) मातृगर्भमलप्राशन शुध्य आद्यब्रह्मवर्चस तेजइन्द्रियायुर्लक्षण फलसिद्धिर्बीजगर्भसमुद्भवैनो निवर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वर प्रीतयेऽन्नप्राशनाख्यंकर्मकरिष्ये—तत्पू-र्वाङ्गतयागणेशादि पंचांगदेवतानांपूजनंनान्दीश्राद्धंपुण्याहवाचनं चकरिष्ये।—इतिसंकल्पपूर्वोक्त गणेशादिपंचांगपूजांविधाय तत्रैव गृहाभ्यन्तरे होमार्थंवेदींकृत्वा तत्रपंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निंसंस्था

प्य वरणद्रव्यंविप्रंचसम्पूज्य—अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहममुक-राशेः पुत्रस्यान्नप्राशनांगहोमकर्मणिकृता कृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिर्वरणद्रव्यैर्ब्रह्मत्वेनत्वां-वृणे । कर्मकुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः । यथाचतुर्मुखोब्रह्मा०प्रार्थ्य-स्वयंकर्मकर्त्तुमशक्तश्चेत्तदाचार्यमपिवृणुयात । ततोहोमवेदीशाने कलशंसंस्थाप्य सम्पूज्यरक्षासूत्रमभिमंत्र्य तत्रैवस्थापयेत् । कुशकंडिकांकुर्यात् । तत्राग्नेर्दक्षिणतोब्रह्मणेत्रिभिः कुशैराशनंदत्वा तत्राग्नेःपूर्वतः परिक्राम्यब्रह्माणमुपवेशयेत् । ततोऽग्नेरुत्तरतआस नद्वयंप्रणीताप्रोक्षण्योराधारर्थं कल्पयित्वाप्रणितापात्रंसव्येपाणौ-कृत्वा जलेनापूर्यकुशैराच्छाद्य ब्रह्ममुखमवलोक्यपश्चिमासनेनि-धायालभ्यपूर्वासनेनिदध्यात् । ततःपरिस्तरणार्थंकुशमुष्टिमादाय पूर्वपश्चिमयोरुत्तराग्रैर्दक्षिणोत्तरयोः पूर्वाग्रैःकुशैःपरिस्तरणंकृत्वा त्रीणि कुशतरुणानिद्वेपवित्रेप्रोक्षणीपात्रंमाज्यस्थालींचरुस्थालीम् पंचसंमार्जनकुशान्, सप्त–उपयमनकुशान्, तिस्रःसमिधः, स्रुव-माज्यं, तण्डुलान्, सदक्षिणं, पूर्णपात्रं, कर्मदक्षिणां, चैतानि, वस्तूनिप्राक्संस्थान्युदगग्राणि—अग्नेरुत्तरतःस्थापयेत् । अन्नप्राश-नार्थवस्तून्यपिकल्पनीयानि । उद्धरणपात्रंसौवर्णंराजतंवा, मधु-रादिसर्वरसान्, सर्वमन्नं, घृत, मधु, दधि, दुग्धं, च, वेदपुस्तकं, शस्त्रलेखनी, शिल्पभाण्डानिच, भारद्वाजादि, मांसानिचवस्त्रं, सुवर्णं, रजतं,चस्थापयेत्, । ततस्त्रिभिःकुशैर्द्वेपवित्रेप्रच्छिद्यप्रोक्ष-णीपात्रं प्रणीतातउत्तरतोनिधायप्रणीतोदकेनाभ्युदय तज्जलंपवि-त्राभ्यामुत्पूयपवित्रेप्रोक्षण्यांनिधाय तत्प्रोक्षणीपात्रंसव्येकरेकृत्वा तदुदकंदक्षिणानामिकांगुष्ठाभ्यामुच्छाल्य, प्रणीतोदकेनप्रोक्ष्य, तत्प्रोक्षण्युदकेनाज्यस्थाल्यादीनिसमस्त वस्तूनिप्रोक्षयेत् । तत आज्यस्थाल्यामाज्यंप्रक्षिप्य, चरुस्थाल्यांप्रणितोदकमासिच्य, त्रिः प्रक्षालितांस्तण्डुलांस्तत्रप्रक्षिप्य, युगपदग्नावारोपयेत् । प्रोक्षणी-पात्रमग्निप्रणीतयोर्मध्येनिदध्यात् । आज्यंब्रह्माश्रावयेत्–चरुंस्व-यमाचार्योवापाचयेत् । ज्वलदुल्मुकमादायाज्योत्तरतउभयोःसम

न्तादभ्रामयित्वाप्रक्षिपेत् ॥ उदकस्पर्शः, श्रुवमधोमुखंप्रतप्योप-स्पृश्यकुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तंकुशमूलैरग्रतोमूलपर्यन्तंसंमार्ज्याभ्यु-क्ष्यपुनः प्रतप्योपस्पृश्यदक्षिणतः कुशोपरिनिदध्यात् । आज्यमुत्था प्यचरोः पूर्वेणनीत्वोत्तरतः संस्थाप्य, चरुमुत्थाप्याज्यस्यपश्चि-मतोनीत्वोत्तरतः संस्थाप्याज्यमग्नेः पश्चादानीयचरुंचानीयाज्य स्योत्तरतःसंस्थाप्य,पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूयप्रोक्षणींचोत्पूयोपयम-नकुशान्सव्येहस्तेकृत्वोतिष्ठन्–घृताक्ताः समिधः स्तूष्णीमग्नौ प्रक्षिप्य, प्रोक्षण्युदकेन–ईशानाद्युत्तरपर्यन्तंपर्युक्ष्यपवित्रेप्रणीतायां निधाय प्रोक्षणीपात्रंसंस्रवधारणार्थमग्निप्रणीतयोर्मध्येनिधाय संकल्पंकुर्यात्–अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं ममास्य बालकस्य (कन्यायावा) अन्नप्राशनविधौहोमकर्मणायक्ष्ये–ततःशुचिनामाग्निं संस्थाप्य, ॐ एतन्ते० पठित्वा, ॐ भूर्भुवःस्वः, शुचिनामाग्ने ? इहागच्छेहतिष्ठसुप्रतिष्ठितोवरदोभवेतिप्रतिष्ठाप्य ॐ तदेवाग्नि-स्तदादित्यस्तद्वायुस्तदुचन्द्रमाः । तदेवशुक्रंतद्ब्रह्मताऽआपःसप्र-जापतिः । इतिध्यात्वा ॐ शुचिनामाग्नयेनमः । इतिनाममंत्रेण आवाहनादि नीराजनान्तंसम्पूज्य ॥ जिह्वापूजनंकुर्यात् ॐ करालयैनमः ॐ धूम्रिन्यैनमः ॐ श्वेतायैनमः ॐ लोहितायैनमः ॐ महालोहितायैनमः ॐ सुवर्णायैनमः ॐ पद्मरागायैनमः सम्पूज्य ॐ ब्रह्मणेनमः ॐ विष्णवेनमः । ॐ रुद्राय नमः, इति रेखाश्च सम्पूज्य, दक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्म-णान्वारब्धो जुहुयात् । ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये नममेति मनसास्मरेत् । ॐ इन्द्रायस्वाहा, इदमिन्द्रायन० ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये नमम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमा-यन० । अन्वारंभं त्यक्त्वाद्रै आज्याहुतीर्जुहोति । ॐ देवीं वाच-मिति भार्गव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वाग्देवता–आज्यहोमे विनि-योगः । ॐ देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति ॥ सानोमन्द्रेषमूर्ज्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु-स्वाहा, इदं वाचेनमम । ॐ वाजो न इति देवा ऋषयस्त्रिष्टु-

ष्छन्दोऽन्नं देवताआज्यहोमे विनियोगः । ॐ देवीं व्वाचमज
नयन्तः देवास्तां व्विश्वरूपाः पशवोवदन्ति । सानो मन्द्रेषमूर्ज्जं
दुहाना धेनुर्व्वागस्मानुपसुष्टु तैतु स्वाहा । ॐ व्वाजो नोऽअद्य
प्रसुवातिदानं व्वाजो देवाँ ॥२॥ ऋतुभिः कल्पयाति । व्वाजो
हिमासर्वव्वीरं जजान व्विश्वाऽआशा व्वाजपतिर्ज्जयेयम् स्वाहा ।
इदं वाचे व्वाजाय च नमम । ततः स्रुवेण चरुमभिघार्याज्यमिश्रि-
तेन स्थालीपाकेन जुहोति–ॐ प्राणेनेत्यादिनां चतुर्णां मन्त्राणां
प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दोऽन्नं देवताहोमे विनियोगः । ॐ प्राणे-
नान्नमशीयस्वाहा, इदं प्राणाय नमम । ॐ अपानेन गन्धानशीय
स्वाहा, इद मपानाय न० । ॐ चक्षुषा रूपाण्यशीयस्वाहा, इदं
चक्षुषे० ॐ श्रोत्रेण यशोऽशीयस्वाहा, इदं श्रोत्राय० । ततः
स्थालीपाकेनैव स्विष्टकृतं जुहुयात् ॥ ॐ अग्नये स्विष्ट कृते-
स्वाहा, इदमग्नये० । ततो महा व्याहृत्यादि प्रजापत्यान्तानवा-
हुतीराज्येन जुहुयात् । ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न० । ॐ
भुवः स्वाहा इदंवायवे० ॐ स्वः स्वाहा इदँ सूर्याय० । ॐ
त्वन्नोऽअग्ने ॐ सत्वन्नोऽअग्ने, अनयो र्वामदेवर्षिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽ-
ग्निवरुणौदेवतेप्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ त्वन्नोऽअग्ने
व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठो वन्हि
तमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषाँसि प्रमुमुग्ध्य स्मत् स्वाहा–इद-
मग्नीवरुणाभ्यां नमम । ॐसत्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽ-
अस्याऽउषसो व्युष्टौ । अवयक्ष्वनो व्वरुणँरराणो व्वीहिमृडी-
कँसुहवोनऽएधि स्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यां नमम । ॐ
अयाश्चाग्ने, इत्यस्य वामदेवर्षि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता प्राय-
श्चित्त होमेविनियोगः । ॐ अयाश्चाग्ने स्यनभिशस्तिपाश्च
सत्यमित्वमयाऽअसि । अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजँ
स्वाहा इदमग्नये० । ॐ येतेशतमित्यस्य वामदेवर्षिस्त्रिष्टुप्छन्दो
वरुणः सविता विष्णुर्विश्वेदेवाः मरुतः स्वर्काश्च देवताःप्रायश्चित्त
होमे विनियोगः । ॐ येते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा

न्विततता महान्तः । तेभिर्न्नोऽअद्य सवितो त विष्णुर्विश्वेमुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च ननम । ॐ उदुत्तममित्यस्य शुनः शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता प्रायश्चित्त होमे विनियोगः । ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्म दवाधमं व्विमध्यमँ्श्रथाय । अथा व्वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा "इदं वरुणाय न० । ॐ अग्नये प्रजापतये स्वाहा—इदमग्नये प्रजापतये च नमम । ततः संस्रवप्राशनं, पवित्रप्रतिपत्तिः, पूर्वस्यां प्रणीता विमोकः । पूर्णपात्रं सम्पूज्याद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं ममामुकनक्षत्रोपलक्षितस्यामुकनाम्नः पुत्रस्यान्नप्राशनांगहोम कर्मणः सांग फलाप्तयेऽपूर्णपूरणार्थं चेदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं तुभ्यं ब्रह्मणे संप्रददे । ब्रह्मा गृहीत्वा ॐ अकन्कर्म कर्मकृतः सहवाचा मयो भुवा । देवेभ्यः कर्मकृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः । ॐ स्वस्ति (पूर्णाहुतिर्नान्त्रगोभिल वचनात्) ततो कृतमंगल स्नानसुवस्त्रपरिधानं शिशु माता स्वयं चोत्संगे धृत्वा तत्रानीय पूर्वाभिमुखेन स्वासन उपविश्याभ्यगणेशादि देवान्सम्पूज्यप्रणम्य च सल्लग्ने समायाते लग्नदानानि प्रथकपृथक्, वा तद्द्रव्यमेकीकृत्य कुर्यात् । द्रव्यं ब्राह्मणांश्चसम्पूज्याद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्यामुकोऽहं ममुकराशेर्ममपुत्रस्यान्नप्राशनकर्मणि सामयिकलग्नाद्यधिकेन यत्रकुत्र स्थिता नामादित्यादि नवग्रहाणां क्रूराणामनिष्ट फल शान्त्यर्थं शुभानां शुभ फलाधिक्यप्राप्तये—इदंसुवर्णं तन्निष्क्रयीभूतंद्रव्यं वा ज्योतिर्विदेऽमुकशर्मणे ब्राह्मणायदास्ये । ॐ तत्सन्नमम । ततो बालकंनवीन वस्त्रभूषणादिभिः समलंकृत्य ततः सर्वान्रसान्सर्वमन्नंसव्यंजनं चैकस्मिन्सुवर्णादिपात्रेकृत्वा, भारद्वाजादि पक्षिविशेषाणां सूत्रव्याख्या मीमांसोक्तानिमांसानि वागादिकामनार्थं यथा संभवं समानीय, पात्रे एकीकृत्य वा मांसानि पृथक् पृथक् स्थापयेत् । ततो ऽन्नमेकीकृत्य सुवर्णान्तार्हितया, अनामिकया, ॐ हन्त,, । इति मंत्रेण पंचवारं प्राशयेत् कन्यांतु तूष्णीं प्राशयेत् । ततो मांसा-

निच प्राशयेत् । जलेन हस्तौपादौ प्रक्षाल्य ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणांदद्यात् । ततःसमाचारा त्सुसंस्कृतायां भूमौसुवस्त्रमास्तीर्यतत्र श्वेततण्डुलैर्वा वर्णद्रव्येण वाराहाकृतिंयन्त्रं लिखित्वा, तदुपरिपार्थिवं वस्त्रमास्तीर्य, ३० एन्ततेपठित्वा ३० भूर्भुवः स्वः पृथ्विदेवि, इहागच्छेहतिष्ठेत्यावाहनादिभिः ३० पृथिव्यैनमः इति मंत्रेणपंचोपचारैःसम्पूज्य ततोऽधस्तान्मंत्रे ३० दंष्ट्रोध्दृतवसुन्धरा यवाराहायनमः, इति मंत्रेण सम्पूज्य स्वेष्टदेवताभ्योनमस्कृत्यमांगलिकं वा च यित्वापट्टसूत्रनिर्मितं कटिसूत्रं कटिप्रदेशेबध्वा, हस्तेपुष्पंगृहीत्वा प्रार्थयेत् ३० रक्षैनं वसुधेदेवि सदासर्वगतेशुभे आयुष्प्रमाणंनिखिलं निक्षिपस्व हरिप्रिये । अचिरादायुषस्तस्यये केचित्परिपन्थिनः जीवितारोग्यवित्तेपुनिर्दहस्वाचिरेणतान् । धारिण्यशेषभूतानां मातस्त्वमधिकाह्यसि । अजरा चाप्रमेया च सर्वभूतनमस्कृते । कुमारं पाहिमातस्त्वं ब्रह्मातदनुमन्यताम् । तत्र शंखघंटादिक मांगलिकध्वनौक्रियमाणेशिशुमुपवेशयेत् । ततो विप्रान्पूजयित्वा दक्षिणां च दत्वाऽऽशिषो वाचयित्वा नीराजनं कुर्यात् । ततस्तदग्रे पुस्तकं, वस्त्रं,लेखनी, सुवर्णादिकमुद्रां शिल्पकृत्य भाण्डानि च, संस्थाप्य, तदासवालको प्रथमंयद् गृह्णाति तेन तस्य जीविकाभवेदिति ज्ञातव्यम् । तिलपात्रदानंकृत्वा ततः आचार्यादि दक्षिणा संकल्पः अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकराशेर्मम पुत्रस्य होमसहितान्नप्राशनकर्मणः सांगफलप्राप्तये इमां दक्षिणामाचार्यविप्रायदास्ये, तथाचेमांभूयसीं दक्षिणां नानागोत्रेभ्यो विप्रेभ्यश्चविभज्यदास्ये तथा यथा संख्यकान्ब्राह्मणांश्च भोजयिष्ये । ततो ऽन्यादींश्च सम्पूज्यविसृज्यच न्यायुषंकृत्वाआचार्यः कलशजलेन यजमानमभिषिंच्य मंगलतिलकमाशिषं च दत्वा यजमानः ३० यस्यस्मृत्वेति कर्मसमापनं कृत्वा विप्रान्भोजयित्वा स्वयंभुञ्जीत । इत्यन्नप्राशन कटि सूत्रबंधन कर्म पद्धतिः ।

अथवर्धापन (जन्मदिवस) पूजाविधिः।

उक्तं चादित्य पुराणे-स्वर्क्षेच जन्मदिने स्नातैर्मङ्गल वारिभिः। गुरु देवाग्नि विप्राश्च पूजनीया प्रयत्नतः। स्वनक्षत्रं च पितरस्तथा देवःप्रजापतिः। प्रति संवत्सरं यत्नात्कर्त्तव्यश्च महोत्सवः। गणेशं कुलदेवीं च प्रजाश्चैवविशेषतः। गौर्याद्यामातृकाश्चैवषष्ठीं च जननीं शुभाम्। दीर्घायुषान्मुनीन्सप्तमार्कण्डेयादिकांस्तथा। हनुमन्तंजामदग्न्यं विभीषणञ्च दत्तात्रेयम्। एतानेतान् प्रतिष्ठाप्य चतुर्थ्यन्तैः स्व नामभिः। पाद्यादिभिः पूजयित्वा स्वैर्मन्त्रैर्नतुपार्थयेत्॥ शेषं प्रयोगेस्पष्टम्।

—:०::—

अथ प्रतिवर्षजन्मोत्सवकर्म पद्धतिः

इदं कर्मोपनयनात्पूर्वं बालकस्य पिता कुर्यात्। उपनयनानन्तरंतु स्वयंकुर्वीत। एतदुत्सवस्य जन्मदिवसगणनाकतिचिद्देशेषु चन्द्रमासगणनया जन्मतिथावब्द प्रवेशेकुर्वन्ति। कतिचित्तु सौर प्रमाणतः सौरांशक गणनयाऽब्दप्रवेशदिने जन्मोत्सवं कुर्वन्ति। यथादेश समाचार स्तथाकर्तव्यः। ततः कर्त्ता प्रतिसाम्वत्सरिक जन्मतिथौवा सौरांशक जन्मदिवसे प्रातस्तिलतैलमिश्रहरिद्रादि मंगलद्रव्यैः स्नानंकृत्वा नूतनंवस्त्रंपरिधाय पूजास्थलमागत्य स्वासने चोपविश्याचम्य दीपं प्रज्वाल्य सम्पूज्य भूतोत्सादनंकृत्वा निंब, गुग्गुल, हरिद्रा दूर्वा, गौरसर्षप,पूगीफलान्वितां पोट्टलिकां पीतकौशेय वस्त्रोपरि कृत्वारक्षोघ्नमंत्रै रभिमन्त्र्य ॐ एतन्ते० प्रतिष्ठाप्य ॐ यदावध्नन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्मऽआवध्नामिशतशरदायायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्। इतिपोटलिकांवध्वा शान्तिपाठंकृत्वा गणेशादिपंचागपूजनंविधाय तत्रकलशेवाश्वेतवस्त्रेवक्ष्यमाणप्रकारेणदेवता स्थापनंपूजनं च कुर्यात्। तत्रअर्घसंस्थाप्यप्रधानसंकल्पंकुर्यात्। अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकराशिरमुकगोत्रप्रवरो ऽमुकोऽहममममदीय जन्मदिने अथवाममपुत्रस्यजन्मदिने आयुरारोग्यादिवृद्ध्येवर्षवृद्धिकर्मकरिष्ये तदंगत्वेनदध्यक्षतपुंजेषु कुलदेवतादीनांगुर्वादीनां मार्कण्डेयादीनांचपूजनंकरिष्ये—ॐदुर्गायैनमः। ॐ भुवनेश्व-

यैनमः । ॐ कुलदेवतायैनमः । ॐ गुरुभ्योनमः । ॐ पितृभ्योनमः । ॐ मातृभ्यो० । ॐ अग्नये० । ॐ विप्रेभ्यो० । ॐ देवताभ्यो० । ॐ सूर्याय० । ॐ चन्द्राय० । ॐ भौमाय० । ॐ बुधाय० । ॐ बृहस्पतये० । ॐ शुक्राय० । ॐ शनैश्चराय० । ॐ राहवेनमः । ॐ केतवे० । ॐ नवग्रहादिदेवताभ्योनमः । ॐनवग्रहप्रत्यधिदेवताभ्योनमः । ॐपंचभूतेभ्यो० ॐकालाय० । ॐयुगाय० । ॐसम्वत्सराय० । ॐजन्ममासाय० । ॐपक्षाय० । अस्मज्जन्मतिथयेनमः । अस्मज्जन्मनक्षत्राय० । अस्मज्जन्मराशये० । ॐशिवायै० । ॐसम्भूत्यै० । ॐप्रीत्यै० । ॐसंतत्यै० । ॐ अत्रये० । ॐ अनुसूयायै० । ॐ क्षमायै० । ॐ विष्णवे० । ॐ भद्रायै० । ॐ इन्द्राय० । ॐ अग्नये० । ॐ यमाय० । ॐ निर्ऋतयेनमः । ॐ वरुणायनमः । ॐ वायवेनमः । ॐ धनदायनमः । ॐ ईशानायनमः । ॐ अनन्तायनमः । ॐ ब्रह्मणेनमः । इतिनाम मंत्रैरावाह्य "एतन्तेति" प्रतिष्ठाप्य ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ दुर्गादिब्रह्मान्तदेवताभ्योनमः । सुप्रतिष्ठतावरदाभवन्तु—अनेनैवपाद्यगंधाक्षतधूपदीपादिभिःसंपूज्य ॐ षष्ठिदेविइहागच्छेहतिष्ठेत्यावाह्य ॐ षष्ठ्यैनमः इतिपाद्यादिकंदत्वा ॐ जगन्मातर्जगद्धात्रि जगदानन्दकारिणि । प्रसीदममकल्याणिमहाषष्ठिनमोऽस्तुते । इतिमंत्रेणपुष्पांजलित्रयेणगंधादिभिः सम्पूज्यहस्तेपुष्पंधृत्वावरंप्रार्थयेत् । ॐ रूपंदेहि यशोदेहि कल्याणंदेवि ? देहिमे । पुत्रान्देहिधनंदेहिसर्वान्कामांश्चदेहिमे । इतिवरंप्रार्थ्यप्रणम्यतत्रश्वेतवस्त्रेचन्दनेनाष्टदलंकृत्वाक्षतानादाय ॐ भगवन्मार्कण्डेयेहागच्छेहतिष्ठेत्यावाह्यस्थापयित्वा ॐ मार्कण्डेयायनमः, इति मन्त्रेणपाद्यादिकंदत्वा–इदमनुलेपनं चंदनपुष्पादिभिःसम्पूज्य ॐ आयुःप्रदमहाभागसोमवंशसमुद्भवः । महातपमुनिश्रेष्ठमार्कण्डेयनमोऽस्तुते । इतिपुष्पाञ्जलित्रयेणगन्धपुष्पादिभिरभ्यर्च्यवरंप्रार्थयेत्—ॐ मार्कण्डेयायमुनयेनमस्तेमहदायुषे । चिरजीवीयथात्वंवैभविष्यामितथामुने ?। मार्कण्डेयमहाभागसप्तकल्पान्तजीवन ।

आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थमस्माकंवरदोभव । नराणामायुरारोग्यैश्वर्यसौख्यैःसुखप्रदः । सौम्यमूर्तेनमस्तुभ्यंदीर्घायुष्यंप्रयच्छमे । मार्कण्डेयमहाभागप्रार्थयेत्वांकृताञ्जलिः । चिरजीवीयथात्वंभोभविष्येऽहंतथामुने ? । इतिवरंप्रार्थ्यप्रणम्यतत्रैवाष्टदलमध्येपूर्वादिक्रमतः । ॐ अश्वत्थाम्नेनमः, आवाहयामि स्थापयामि । पूजयाम्येवमग्रेवोध्यम् । ॐ वलयेनमः । ॐ व्यासायनमः । ॐ हनुमतेनमः । ॐ विभीषणायनमः । ॐ कृपायनमः । ॐ परशुरामायनमः । ॐ कार्तिकेयायनमः । ततःकमलान्तरालेदिक्षु ॐ जन्मदेवतायैनमः । ॐ स्थानदेवतायैनमः । ॐ प्रत्यक्षदेवतायैनमः । ॐ वासुदेवायनमः । ॐ क्षेत्रपालायनमः । ॐ पृथिव्यैनमः । ॐ अद्भ्योनमः । ॐतेजसेनमः । ॐवायवेनमः । अन्तरिक्षायनमः । ॐ आकाशायनमः, ऊर्ध्वमितिमंत्रैर्गन्धाक्षतादिभिः सम्पूज्यप्रार्थयेत् । प्रीयंतांदेवताःसर्वाःपूजांगृह्णन्तुतामम । प्रयच्छन्त्वायुरारोग्यंयशःसौख्यंचसंपदः । मन्त्रहीनं भक्तिहीनं क्रियाहीनंमहामुने । यदर्चितंमयादेवपरिपूर्णंतदस्तुमे । इतिपठित्वा ततोवर्षफलंदेवज्ञोवाचयित्वादुष्टस्थानस्थग्रहाणांदानसामग्रीं सम्मुखीकृत्यसम्पूज्यब्राह्मणांश्चपाद्यगंधादिभिः सम्पूज्यसंकल्पंकुर्यात्—ॐ अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकगोत्रप्रवरोऽमुक नक्षत्रोपलक्षितो ऽमुकराशिरमुकोऽहं जन्मकालतोऽद्य यथा संख्यकाब्दप्रवेशसमये ऽमुकलग्नावधिकेनादित्यादि नवग्रहाणां यथास्थानस्थितानां क्रूरग्रहाणां दुष्टदोषोपशान्त्यर्थं शुभानां शुभफलातिक्रय प्राप्तये दशायामन्तर्दशायां गोचरेष्टकवर्गेसर्वतोभद्रे नैर्याणे च शुभफलप्राप्तये, एतद्द्रव्यंग्रहाणां प्रीत्यर्थं ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदास्ये । इति दत्त्वा ततस्तिलपात्रं पुरतःकृत्वा सम्पूज्यविप्रं च पूजयित्वा कुशत्रय तिल जलान्यादाय देशकालौ संकीर्त्यामुको ऽहमद्य जन्मदिने दीर्घायुष्यकाम, एतांस्तिलाँस्सोमदैवत्यान् यथानाम गोत्राय द्विजाय दातुमहमुत्सृजे । इति दद्यात् । ॐ सर्वभूतेभ्योनमः बलिंदत्वा ततस्तंडुलदानंकृत्वा घृतच्छायादानं

च कृत्वा सतिल गुडमिश्रितं दुग्धं कर्त्ता स्वांजलौपूरयित्वार्धं मार्कण्डेयायनिवेद्य तदर्धाञ्जलिपयो वक्ष्यमाण मन्त्रेण त्रिवारं सकृद्वापिबेत्। मंत्रः- ॐ अंजलयर्धमितं क्षीरं सतिलं गुडमिश्रितम्। मार्कण्डेय वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुष्य हेतवे। इति पीत्वाचम्य ॐ मार्कण्डेयाय नमः। ॐ गोभ्यो नमः। ॐ ब्राह्मणेभ्यो नमः। इति प्रणम्य मार्कण्डेय क्षमस्वेति विसृज्य ॐ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः। सप्तैतांश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्। जीवेद्वर्षशतंसाग्रमपमृत्युविवर्जितः। इत्यष्टौ स्मृत्वा ब्राह्मणेभ्य आशीषं गृह्णीयात्। विप्रेभ्यो दक्षिणां दत्वा भोजयित्वा च यथा सुखं विहरेत्। इदं च वर्धापनं यदि जन्ममासोऽसंक्रान्तस्तदा शुद्ध मास एव तत्तिथौ कार्यं नत्वधिके। इदं वर्द्धापनं यावद्वाल्यं पित्रादिभिः कार्यम्। पश्चादुपनयनोत्तरं स्वयमेवेतिस्कन्दपुराणे — खंडनं नखकेशानां मैथुनाध्वगमौ तथा। आमिषं कलहं हिंसां वर्षे वृद्धौ विवर्जयेत्॥ इति॥ इति वर्द्धापन [जन्मोत्स] कर्म पद्धतिः।

अथचूडाकरणकेशान्तसूत्रव्याख्या।

(सांवत्सरिकस्य चूडाकरणम् ?) अथ चूडाकरण केशान्ते तन्त्रेण सूचयति। सम्वत्सरमब्द मतिक्रान्तः सांवत्सरिकः तस्य कुमारस्य चूडाकर्म कुर्वीत। (तृतीये वाऽप्रतिहते २) तृतीये वा सम्वत्सरेऽप्रतिहतेऽनवशिष्टे (यथा मङ्गलं वा सर्वेषाम् ३) यथा यद्वा मंगलं यथाकुलाचारं सर्वांवर्णानां व्यवस्थार्थं। यस्य कुलगामनि चरित्रे च चूडाकर्म क्रियते तस्य सांवत्सरिकस्य यस्य तृतीयेऽब्दे तस्य तृतीये इति व्यवस्था। यस्य कुलेन स्थित नियमस्तस्य यदृच्छया विकल्पः। अन्ये तु यथा मङ्गलं कुलधर्म शास्त्रान्तर विहित कालान्तरोप लक्षणमाहु — अतश्च सर्वेषां तुल्य विकल्पः। बृहस्पति तृतीयेऽब्दे शिशो गर्भाज्जन्मतो वा विशेषत। पंचमे सप्तमे चापि स्त्रिया पुंसोऽपि वा समम्। प्रयोग पारिजाते--आचार्ये कुलधर्मे वैचित्र्यामेऽब्दे द्वितीये। आनीयासंदेहेति विकल्प कुल धर्मत आश्रित्य ग्राम्—उभयत्र युदगयने शुक्लपक्षे विशेषत

वर्षस्ययेशान्तः ४) षोडश वर्षाण्यतीतानि यस्य सो षोडश वर्षः तस्य सप्तदशे वर्षे केशान्तः केशान्ताख्यः संस्कारो भवति ४। **(ब्राह्मणान्भोजयित्वा माता कुमारमादायप्लाव्याहते वाससी परिधाप्यांक आधायपश्चादग्नेरुपविशति ५)** चूडा करणानन्तरं ब्राह्मणान्भोजयित्वा माता जननी कुमारं पुत्रं चूडाकरणार्हं मादाय गृहीत्वा माल्याव्य-स्नापयित्वा-अहते नवे सूक्ष्मे वाससी द्वे वस्त्रे परिधाप्य परिहिते धारयित्वा-अन्तरीयोत्तरीयरूपे किं-शङ्के-आधाय स्थापयित्वा पश्चादग्नेः पश्चिमत उपविशति-आस्ते ॥५॥ मातरि रजस्वलायां तु विशेषः—

बृहस्पतिः—प्राशनमभ्युदय श्राद्धं पुत्र संस्कार कर्मणि। पत्नी रजस्वला चेत्स्यान्न कुर्यात्तत् पिता तदा ॥ विवाहोत्सव यज्ञेषु माता यदि रजस्वला। तत्सर्वं शुभमाप्नोति पंचमं दिवसं विना।

सुमुहूर्त्तालाभे वाक्य सारे शान्तिः—अलाभे सुमुहूर्तस्य रजो दोष उपस्थिते। श्रियं सम्पूज्य विधिवत्तत्होमं समाचरेत्। **मदनरत्ने**—सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूडाकर्म न कारयेत्। पंचमाब्दात् तदूर्ध्वं तु गर्भिण्यामपि कारयेत्। सहोपनीत्या कुर्याच्चेत्तदा दोषो न विद्यते। गर्भे मातुः कुमारस्य न कुर्याच्चौलकर्म तु। पंचमासादधः कुर्यादत ऊर्ध्वं न कारयेत्। **(अन्वारब्ध आज्याहुती-र्हुत्वा प्राशनान्ते शीतास्वप्सूष्णा आसिंचति उष्णेन वाय उदके नेह्यदिते केशान्वपेति ६)** तत अन्वारब्धो ब्रह्मणा उपस्पृष्ट-आज्याहुती, आघारादि स्विष्टकृदन्ता हुर्हुत्वा संस्रव प्राशनान्ते शीतास्वप्सु-उष्णा अप आसिंचति प्रक्षिपति वक्ष्यमाणमन्त्रेण। अन्वारब्धमहणेननित्य आहुति होमो नियम्यते। **(केशश्मश्रु इति च केशान्ते ७)** केशान्ते उष्णेन वायउदकेन-एधिदिते केशश्मश्रु वपेति विशेषः। **(अथास्य नवनीत पिंडं घृत पिंड दध्नो वा प्राश्यति ८)** तत उष्णोदक सेचनानन्तरमप्स्वप्सु नवनीत पिंडं घृतपिंडं दध्नो वा पिण्डं प्राश्यति 'आसुक्षेपणे' प्रक्षिपति ॥ **(तत आदाय दक्षिणं गोदानमुन्दति—सवित्राप्रसूतादैव्या आप उन्दन्तु ते तनूं दीर्घायुत्वाय वर्चस इति ९)** ततस्ताभ्योऽद्भ्य उष्णोदकेनवदैरमादाय दक्षिणं गोदानं शिरसो दक्षिणप्रदेशस्थं गोदानं केशसमूहमुन्दति क्लेदयति। आर्द्रं करोतीत्यर्थः। केनमन्त्रेण सविता प्रसूता इत्यादिना दीर्घायुत्वायवर्चसे इत्यन्तेन **(त्रेण्या शलल्या विनीय त्रीणि कुशतरुणान्य-न्तर्दधाति—ओषधइति १०)** त्रेण्या त्रिश्वेतया शलल्या शल्यवपत्रकण्टकेन विनीय पृथक्कृत्य पुञ्जितान्धिवासित केश लतिकां तस्या अन्तर्मध्येऽन्तरा त्रीणि त्रिसंख्यकानि कुशतरुणानि दर्भपत्राणि-दधाति धारयति ओषधे त्रायस्व इतिमंत्रेण ॥ **(शिवोनामेति लोहक्षुरमादाय निवर्त्तयामी-तिप्रवपति ११)** ततः शिवोनामेत्यनेन मन्त्रेण लोहक्षुरं ताम्रादिकृतमायसं क्षुरमादाय गृहीत्वा दक्षिण करेण निवर्त्तयामी त्यनेन मंत्रेण प्रवपति तं क्षुरं कुशतरुणान्यभिनिदधाति।

(येना वपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्माणो वपतेदम-स्यायुष्यं जरद ष्टिर्यथासदिति१२ सकेशानि प्रच्छिद्यानडुहे गोमयपिण्डे प्रास्युत्युत्त-

रतो भ्रियमाणे १२) येनावपदिति मन्त्रेण केशसहितानि कुशतरुणानि प्रच्छिद्य खण्डत्वाऽग्नेरुत्तरतो भूभागे भ्रियमाणे स्थाप्यमाने—अनडुह—आर्षभे गोमयपिण्डे प्रास्यति प्रक्षिपति। (एवं द्विरपरं तूष्णीं १३) एवमुक्तेन प्रकारेण द्विः, द्विवारं मुन्दनादि गोमयपिण्ड निधानान्तमपरं कर्म तूष्णीं मन्त्ररहितं कुर्यात्। इतरयोश्चोन्दनादि १४) इतरयोः पश्चिमोत्तरयोर्गोदानयोः उन्दन क्लिन्दन प्रभृतिकर्म चतुरावृत्तमन्त्रक द्विरमन्त्रकं भवति। (अथपश्चात्त्र्यायुषमिति १५) अथ दक्षिण गोदानस्य निरुन्दनादि प्रच्छेदनानन्तरं पश्चाद्गोदाने विशेषमाह— त्र्यायुषमिति त्र्यायुषं जमदग्ने इत्यादिना मन्त्रेण सकेशानि कुशतरुणानि सकृत्प्रछिद्य तूष्णीं द्विः प्रच्छिद्य गोमयपिण्डे प्रास्यति। (अथोत्तरतो येन भूरिश्चरादिवं ज्योक् च पश्चाद्धि सूर्यम्। तेनते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तय इति १६) अथानन्तरमुत्तरतो गोदाने उन्दनादि गोमय पिण्ड निधानान्ते विशेषमाह—येन भूरिः इति स्वस्तय इत्यन्तेन मन्त्रेण सकेशान कुशतरुणानां प्रच्छेदनं द्विस्तूष्णीं (त्रिः क्षुरेणशिरः प्रदक्षिणं परिहरति समुखकेशान्ते यत्क्षुरेणमज्जयता सुपेशसावप्ता ऽऽवपतिकेशांश्छिन्धि शिरो मा ऽस्यायुः प्रमोषीः मुखमिति च केशान्ते १७) त्रिः वारत्रयं क्षुरेणशिरमूर्द्धानं प्रदक्षिणं यथा भवति तथा परिहरति शिरसः समन्तात्प्रदक्षिणं क्षुरं भ्रमयतीत्यर्थः मन्त्रेण यत्क्षुरेण, इत्यादिमाऽस्यायुः प्रमोषीरित्यन्तः केशान्तेमुखसहितशिरः परिहरति मन्त्रे केशान्ते च मुखमितिपदं प्रक्षिपेत्। अ वपेत्। अत्र पिण्डमन्त्रः द्विस्तूष्णीमिति हरिहरः (ताभिरद्भिः शिरः समुद्य नापिताय क्षुरंप्रयच्छति अक्षुण्वन्परिवपेति १८) ताभिः शीतोष्णाभिरद्भिः कुमारस्यशिरः समुद्य आर्द्रं विधायनापिताय क्षौरकर्त्रे ददाति विशेषायक्षुण्वन्परिवप इति मन्त्रेण प्रयच्छति। (यथामङ्गल केशशेष करणम् १९) केशानां शेषकरणं शिखास्थापनं केशशेषकरणं यथामङ्गलं कुलाचारस्यव स्थामनतिक्रम्य भवति कुलाचारश्च बुधाः—उक्तं च कारिकायाम्। केशशेषं ततः कुर्यात् यस्मिन् गोत्रे यथोचितम्। वशिष्ठा दक्षिणे भागे उभयतोपि कश्यपाः शिखाकुर्वन्ति शिरसि पञ्चभिर्युता भृगवः मुण्डा इव आङ्गिरसः पृष्ठे अन्ये शिखामङ्गलार्थमिदर्शितम्। वशिष्ठोक्ते गर्गस्यानियताः केशवेशा याद्भेतु—निर्मितोपवीतीत्याशास्ताम्। (अनुगुप्तमेतं सकेशं गोमयपिण्डं निधायगोष्ठे पल्वलउदकान्ते वा २०) अनुगुप्तमाच्छन्नं गोमय पिण्डं सकेशं केशैर्निधाय स्थापयित्वा गोष्ठे वा पल्वले पोदकेन वा उदकान्ते केशस्य समाप्तेः। (आचार्यायवरंददाति २१) आचार्याय गवं गाचार्यमिलक्षितं ददाति (गवात्तं ब्रह्मचर्यं यथा च कर्णान्ते २२) द्वादशवर्ष इत्यादि वर्षत्रयं त्रिरात्रमन्तः २४ कल्पान्तरं ब्रह्मचर्यं तस्य कल्पः केश दानान्तमनेन तत केशान्त कर्मान्तरं स्वधर्मं समन्वयं च विशिष्टयजनमनिरवेत। विहित यपन च. गह्यभाष्ये सेव

मातापित्रोर्गुरौ मृते । आधाने सोमपाने च वपनं सप्तसु स्मृतम् । मुण्डनं चौलकाशश्च सर्वं तीर्थेष्वयं विधिः वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां विरजां गयाम् । प्रयागे वपनं कुर्यात् गयायां पिण्डपातनम् । दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत् विष्णुः—प्रयाग तीर्थयात्रायां पितृमातृवियोगतः । कचानां वपनं कार्यं वृथा न विकचो भवेत् । इति निर्णयेऽपि (नीच केशोऽपि नः स्यात् इति नीच केशान्त विधानात्कर्तनाविना हस्तागमनीयम् । गदाधरः मुण्डनस्य निषेधः कर्तनं तु विधीयते इति बृहस्पतिवचनात् भारते प्राद्युम्नः श्मश्रुकर्माणि कारयीत समाहितः उन्मुखो भूत्वा तथा युधिष्ठिर महान् । तदुक्तं कारिकायाम् । जातकर्मादिका स्त्रीणां चूडाकर्मान्तिकाः क्रियाः । तूष्णीं होमस्तु मन्त्रस्यादिति गोभिलभाषितम् । वृद्धशातातपः प्राक् चूडाकरणाद्बालः प्राग्वा प्राशनाच्छिशुः कुमारस्तु स विज्ञेयो यावन्मौञ्जीनिबन्धनम् । गौतमः—प्रागुपनयनात्कामचारवादभक्षाः । सर्वमसं ब्रह्मणोऽपि वर्जयेत् । उच्छिष्टादानमयतानस्तु; महापातक वर्जम् ।

इति चूडाकरणकेशान्त सूत्र व्याख्या ।

तत्रादौ केशाधिवासन विधिः, । अथ च समाचारात्पूर्वस्यां रात्रौ चूड़ाकरणात्पूर्वं रात्रौ तद्दिने वा केशाधिवासनं वक्ष्यमाण विधिना कुर्यात । तत्रादौ गणेश पूजनार्थ संकल्पः – अद्येत्यादि संकीर्त्यामुक शर्माहममुकराशे रमुकशर्मणो ऽस्य कुमारस्य करिष्यमाण केशाधिवासन कर्मणि निर्विघ्नता सिद्ध्ये श्रीगणेश्वरस्य पूजनं करिष्ये – एवं महागणपतिं सम्पूज्य केशाधिवासन सामग्रीं संपादयेत । तत्रादौ नूतनपीतकौशेय वस्त्रस्य चतुरंगुलायत चतुरस्त्र द्वादश खण्डानिकृत्वा पृथक् पृथक् पात्रे संस्थाप्य प्रत्येकस्योपरि गन्धाक्षत हरितदुर्वा हरिद्रासिद्धार्थ द्रव्यं गौरसर्पपाणि च प्रक्षिप्य रक्त त्रिगुणित सूत्रेण द्वादश पोटालिकाबध्वा पूर्वोक्त गणाधिपेत्यादि रक्षामन्त्रेणाभिमंत्र्य संकल्पं कुर्यात—अद्येहामुक शर्माहममुकराशेरमुकशर्मणोऽस्य कुमारस्य श्वः करिष्यमाण चूड़ाकरणकर्म सिध्यैऽस्यरात्रौ केशाधिवाशनं करिष्ये—इति संकल्पं कुमारं मातुः क्रोडे कृत्वा—एकां पोटलिकामादायादौ कुमारस्य शिखां स्वाचारानुसारं मध्ये वर्तुलाकारं निर्माय तस्यां दृढतरं बध्वा तत उत्तराभिमुखस्य पूर्वस्यां शिरो दक्षिण भागे.

तिस्रस्तिस्रो जूटिका स्त्रेण्या सलल्या कृत्वा प्रतिजूटिकायां प्रत्येकां पोटलिकां वध्वा सपोटलिकाभि स्तिसृभिस्तिसृभिर्जुटिका- भि रेकैकं गोदानं सम्पाद्यैवं पश्चिमोत्तरयोरपि सम्पाद्याचारादे- कां पोटलिकां क्षुरे—एकां कर्तरे च वध्वा ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठा- प्य सपोटलिस्थान्केशान्पीतोष्णीषादिना वध्वा सयत्नं रक्षयेत् । अत्र केशाधि वासनविधौ कतिचित्पद्धतौ समन्त्रको विधिरुक्तः। सच प्रमाण रहितः । तत स्ताम्रपात्रेऽनडुहमद्रवमपर्युषितम् । गोमयंगव्यं घृतं नवनीतं दधिवा त्रिगुणित सित सूत्र वेष्टितं ताम्रपरिष्कृतं तिग्मधारं लोहक्षुरं त्रेणी त्रिस्वेता मन्वण्डां शलय- ककंटकीम् । कुशपत्रत्रय निर्मितानि त्रिगुण सितसूत्र वेष्ठितानि नव कुशतरुण त्रिकाणि च स्थापयेत् । तत आचाराद्दक्षिणा संक- ल्पः । अद्येत्यादि संकीर्त्यामुक शर्माहममुकशर्मणोऽस्य कुमारस्य चूडा करण कर्म पूर्वाङ्गस्य कृतस्यास्य केशाधि वासन कर्मणः सांगता सिध्यै इमां दक्षिणाममुकशर्मणे ब्राह्मणाय दास्ये ।

इति केशाधि वासनम् ॥

अथ च चूडाकरणपद्धतिः

अथ च चूडाकरणकर्म दिने पिता प्रातरुत्थाय स्नानादिकं नित्य कर्मकृत्वा वहिः शालायां पत्नीकुमार सहितः पश्चिमद्वारेण मंग लवाद्य ध्वनिसहितस्तत्रस्थासने उपविश्य पत्नीं वामतः कृत्वा तस्यांके कुमारमुपवेश्य – आचम्य भूतोत्सादनादिकं विधाय तत्र स्थान् सर्वतोभद्रादिदेवान् प्रणम्य — पूजयित्वा च कर्मारभेत् वहिः शालायां चूडाकरणे अशक्तश्चेद् गृहाभ्यन्तरे गणेशादि पंचा- ङ्गदेवताः सम्पूज्य नान्दी श्राद्धंविधाय ततः कुमारहस्तेनापिपुनः गणेशादीन् पूजयित्वा कर्मार्थं हस्तमात्रां वेदिकां निर्माय-आचम्य प्राणायामत्रयं कृत्वा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि अमुकोहं अमुकराशेरमुक माणवकस्य ममास्यपुत्रस्य वीजगर्भ समुद्भवै- नोनिवर्हण पूर्वक मायुर्वलाभि वृद्धये चूडाकरण कर्माहं करिष्ये,

ततः पितास्वयं कर्मकर्तुमशक्तश्चेत्तदाचार्यं वृणुयात्—आचार्यं ब्राह्मणंपाद्यगंधादिभिः सम्पूज्यवरण सामग्रीं करेकृत्वा गन्धाक्षतान् क्षिप्त्वा संकल्पः—अद्ये० अमुकोऽहंममास्य माणवकस्य करिष्यमाण चौल कर्मणि-आचार्य कर्म कर्तुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुकगोत्रं-अमुक शर्माणं ब्राह्मणमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे-वृतोऽस्मीति-आचार्योक्तिः आचार्यस्तु यथास्वर्गे० इति संप्रार्थ्य ततो हस्तमात्रां भूमिं कुशैः परिसमूह्य गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेनोत्तरोत्तरस्तिस्रोरेखा विलिख्यउल्लेखनक्रमेण अनामिकांगुष्ठाभ्यामृदमुद्धृत्यपूर्वं क्षिप्त्वा जलेनाभ्युक्ष्य पाद्यगंधादिभिः पीठं सम्पूज्य तेजसेपात्रे अग्निमादायस्वाभिमुखंवेद्यां स्थापयेत् ततः ब्रह्माणंवृणुयात्—ततः अग्नेरुत्तरतः कल्पितासनोपरि ब्राह्मणंपाद्यादिभिः सम्पूज्यवरणसामग्रींकरे धृत्वा अद्येत्या० अमुकोऽहं ममास्यमाणवकस्य करिष्यमाण चूडा कर्मणः कृताकृतावेक्षरूप ब्रह्मकर्मकर्तुमेभि र्वरणद्रव्यैरमुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे वरणद्रव्यंदत्वाप्रार्थयेत् । यथा चतुर्मुखो० व्रतोऽस्मीतिप्रत्युक्तिः यथाविहितं कर्मकुरु करवाणीति प्रतिवचनम् । ततोऽग्ने र्दक्षिणतो ब्रह्मणेत्रिभिः कुशैरासनंदत्वा । तत्र ब्रह्माणंपूर्वतोऽग्नेः परिक्राम्यकल्पितासने उपवेशयेत् । ततोऽग्नेरुत्तरत आसनद्वयं प्रणीताप्रोक्षण्योराधार्थकुशैःकल्पयित्वा प्रणीतापात्रं दक्षिणहस्तेनादायसव्येपाणौकृत्वा जलेनापूर्य कुशैराच्छाद्यब्रह्ममुखमवलोक्य पश्चिमासने निधायालभ्यपूर्वासने निदध्यात् । ततः कुशमुष्टिमादाय पूर्वपश्चिमयोरुत्तराग्रैर्दक्षिणोत्तरयोः पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणंकृत्वा । ततस्त्रीणिकुशतरुणानि द्वेपवित्रेप्रोक्षणी पात्रमाज्यस्थालीं चरुस्थालीं पंचसंमार्जनकुशान् सप्तोपयमनकुशान्, तिस्रः समिधः स्रुवमाज्यं सदक्षिणं पूर्णपात्रम्, कर्मदक्षिणां चैलानिवस्तूनिप्राक्संस्थानि उदगग्राणि—अग्नेरुत्तरतः स्थापयेत् । ततः कुमारस्यमाता सुखोष्णजलेन कुमारं संस्नाप्यतस्मै अहतेवाससीपरिधाप्यतमंके आधायाग्नेः पश्चिमतः—

भर्तुर्वामभागे उपविशति। ततस्त्रिभिः कुशैर्द्वे पवित्रेप्रच्छिद्य प्रोक्षणीपात्रंप्रणीतातः उत्तरतोनिधायप्रणीतोदकेनाभ्युदय तज्जलं पवित्राभ्यामुत्पूयपवित्रे प्रोक्षण्यांनिधाय तत्प्रोक्षणीपात्रं सव्येकरे कृत्वा तदुदकंदक्षिणानामिकांगुष्ठाभ्यामुच्छालयप्रणीतोदकेनप्रोक्ष्य तत्प्रोक्षण्युदकेना ज्यस्थाल्यादीनि समस्तवस्तूनि प्रोक्षयेत्। ततः आज्यस्थाल्यामाज्यं प्रक्षिप्य ब्रह्मातमग्नावारोप्य श्रावयित्वा प्रोक्षणीपात्रमग्निप्रणीतयोर्मध्येनिदध्यात्। ब्रह्माज्यमवतार्य ज्वलदुल्मुकमादायाज्योत्तरतः समन्ताद्भ्रामयित्वा प्रक्षिपेत्। प्रणीतोदकःस्पर्शः। श्रुवमादायाधोमुखं प्रतप्योपस्पर्श्य पंचसंमार्जन कुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्यन्तं कुशमुलैरग्रतो मूलपर्यन्तंसंमार्ज्याभ्युक्ष्यच पुनः प्रतप्योपस्पृश्य स्वदक्षिणतः कुशोपरिनिदध्यात्। आज्यमुत्थाप्याग्नेः पश्चादानीय पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूयप्रोक्षणीं चोत्पूयसप्त उपयमनकुशान् सव्येहस्ते कृत्वोतिष्ठन्घृताक्ताः समिधस्तूष्णी मग्नौ प्रक्षिप्य प्रोक्षण्युकदेन ईशानाद्युत्तरपर्यन्तंपर्युक्ष्य पवित्रेप्रणीतायां निधाय प्रोक्षणीपात्रं संस्रवधारणार्थं अग्निप्रणीतयोर्मध्येनिधाय पाद्यादिभिः सभ्यनामाग्निं ॐ सभ्यनामाग्नयेनमः, इति मंत्रेणावाह्य ॐ एतन्ते० पठित्वाॐ भूर्भुवः स्वःसभ्यनामाग्ने, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभवेतिप्रतिष्ठाप्य ॐ तदेवाग्निस्तदादित्य स्तद्वायुस्तदुचन्द्रमाः। तदेवशुक्रं तद्ब्रह्मताऽआपः सप्रजापतिः। इति ध्यात्वा चत्वारिशृंगा० इति च पठित्वा ॐ सभ्यनामाग्नयेनमः, इति मंत्रेणासनपाद्यादि नीराजनान्तंसम्पूज्य रेखापूजनं,ॐ संसत्वायनमः ॐ रंरजसेनमः ॐ तंनमसे नमः ॐ जिव्हाभ्योनमः जिव्हापूजनं च कृत्वा दक्षिणंजान्वाच्य ब्रह्मणान्वारब्धो जुहुयात्। तत्रप्रत्याहुत्यनन्तरं स्रुवावस्थित हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रेप्रक्षेपः कार्यः। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतयेनमम इति मनसा ॐ इन्द्रायस्वाहा इदमिन्द्रायनमम। ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नयेनमम। स्वाहा इत्याघारावाज्यभागौ च हुत्वा भूरादिहोमंकुर्यात्। ॐ भूरादिव्याहृतीनां प्रजापति

ॠषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवताश्चूडाकरणांग होमे विनियोगः। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेनमम। ॐभुवः स्वाहा इदं वायवेनमम, ॐ स्वः स्वाहा इदंँसूर्यायनमम। ॐ त्वन्नोऽअग्न इति वामदेवर्षि स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौदेवते चूडाकरणांग होमे विनियोगः ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वन्हितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषा ऍं सिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम। ॐ सत्वन्न इति वामदेवर्षिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निवरुणौदेवते चूडाकरणांग होमे विनियोगः। ॐ सत्वन्नोऽअग्ने ऽअवमोभवो तीनेदिष्ठो ऽअस्या ऽउपसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनोव्वरुण ऍं रराणोव्वीहिमृडीक ऍं सुहवोनऽएधि स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम। ॐ अयाश्चाग्न इति वामदेवर्षिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता चूडाकरणांग होमे विनियोगः ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्चसत्यमित्वमयाऽअसि। अयानोयज्ञं वहास्ययानोधेहिभेषज ऍं स्वाहा इदमग्नयेनमम। ॐ येते शतमिति वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः व्वरुणःसविता विष्णुर्विश्वेदेवामरुतः स्वर्काश्चदेवताः चूडाकरणांगहोमेविनियोगः। ॐ येतेशतंवरुणंयेसहस्रंयज्ञियाः पाशाव्वितताममहान्तः। तेभिर्नोऽअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेमुंचन्तु मरुतःस्वर्काःस्वाहा—इदंवरुणाय सवित्रे,विष्णवे, विश्वेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्चनमम॥ ॐ उदुत्तममितिशुनःशेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता चूडाकरणाङ्गहोमेविनियोगः। ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमॅंश्रथाय। अथाव्वयमादित्यव्रतेतवानागसोऽअदितयेस्यामस्वाहा—इदंव्वरुणायादितयेनमम। ॐ प्रजापतयेस्वाहा—इदंप्रजापतयेनमम। ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा—इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम। इत्याज्याहुतिहोमं विधाय-संस्रवंप्राशयेत्। ततःप्रणीतोदकेनसंमार्जनंकृत्वापवित्रप्रतिपत्तिं विधाय प्रणीताविमोकंकृत्वा पूर्णपात्रंसम्पूज्यब्रह्मणेदद्यात्। तत्र संकल्पः–अद्येत्यादि ममास्याभकस्यामुक राशेरमुकनाम्नः कृतैत-

च्चूडाकरणकर्माङ्गीभूतहोमकर्मणःसांगतासिद्ध्यै-इदंसदक्षिणंपूर्णपात्रंब्रह्मणेतुभ्यंसम्प्रददे । ॐ तत्सन्नममइतिदत्वा । लग्नदानंनिकुर्यात्—संकल्पः । अद्येत्यादि० अमुकोऽहंममास्यामुकराशेः कुमारस्य चूडाकरण सामयिकलग्नावधिकेनामुकलग्नेनसूर्यादिनव ग्रहाणांक्रूराणांदुष्टदोषोपशान्त्यैशुभानांशुभफलाभिवृद्ध्यै, इदं सुवर्णरजतादिद्रव्यममुकदैवतं-अन्यद्धान्यादिद्रव्यंवा-अमुकशर्मणे दैवज्ञायाचार्यायवादास्ये । ॐतत्सन्नमम । ततश्चूडाकरणसामग्रीं कल्पयेत् । ततस्ताम्रस्यकुण्डिकाद्वयंसुखोष्णंशीतलंचजलम् । पूर्वोक्तस्थापितवस्तूनि आनडुहगोमयगव्यनवनीतादिपिण्डानि कर्तर क्षुरशलली कंटकनवसंख्याककुशतरुणत्रिकाणि नूतनंकांस्यपात्रं नापितश्चेमान्युपकल्प्य—कांस्यपात्रेआनडुहगोमयस्य वर्तुलाकृतिमध्यगर्तयुक्तंकृत्वा तन्मध्येदधिदुग्धनवनीतहरित दूर्वाहरिद्रादीनिमंगलवस्तूनिधृत्वा कुमारंमातुरंकेधृत्वा कर्मवेद्याउत्तरभागे पूर्वाभिमुखोभूत्वास्वस्तिवाचनादिकं सैरन्ध्रिद्वाराप्रथानुसारं मंगलगीतध्वनिवादित्रादिपुरःस्सरमुपकल्पितेपात्रे वक्ष्यमाणमन्त्रेण शीतास्वप्सु—उष्णाअपआसिंचति । ॐ उष्णेनेतिपरमेष्ठिऋषिः प्रतिष्ठाछन्दोलिङ्गोक्तादेवता—उष्णोदकाशेकेविनियोगः । ॐउष्णेनवायउदकेनेह्यदितेकेशान्वप । ततस्तूष्णींदधिघृतनवनीतपिण्डान्यप्सुप्रक्षिपेत । ततःपितावाकर्माचार्योवक्ष्यमाणमंत्रेण जलमादायस्ववामभागस्थितायामातुर्दक्षिणभागेस्थितस्यपूर्वाभिमुखस्यकुमारस्यादौ मूलभागेदक्षिणपार्श्वस्थंगोदानाधः स्थितामेकांजूटिकामार्द्रींकरोति । ॐ सवित्रेतिप्रजापतिर्ऋषिर्गायत्रीछन्दआपोदेवताक्लेदनेविनियोगः । ॐ सवित्राप्रसूतादैव्याऽआपऽउन्दन्तुतेतनूम् । दीर्घायुत्वायवर्चसे । ततस्त्रेण्या (त्रिश्वेतया) शलल्या (शलकीकंटकेन) तूर्णींकेशान् विरलान् कृत्वोर्ध्वमूलानिजूटिका संलग्नाग्राणित्रीणिकुशतरुणान्यन्तर्दधानि वक्ष्यमाणमंत्रेण—ॐ ओषधे-इत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्द ओषधिर्देवताकुशान्तर्धाने विनियोगः । ॐ ओषधेत्रायस्व स्वधितेमैनं हिं० सीः । ततः

सकुशकेशान् पितासव्येनहस्तेनगृहीत्वा दक्षिणकरेणवक्ष्यमाण मन्त्रेणक्षुरंगृह्णाति । ॐशिवोनामेत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः क्षुरोदेवताक्षुरग्रहणेविनियोगः । ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पितानमस्ते अस्तुमामाहिंसीः । ततोवक्ष्यमाणमन्त्रेण ताम्र-परिष्कृतमायसं क्षुरमादायसकुशकेशेपुनिदधातिसंलग्नंकरोती-त्यर्थः । ॐ निवर्त्तयामीत्यस्यप्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः क्षुरोदेवता पूर्वगोदानस्थप्रथमजूटिकायां क्षुरनिधानेविनियोगः । ॐ निवर्त्त-याम्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्याय । ततोवक्ष्यमाणमन्त्रेण सकुशप्रथमकेशजूटिकां क्षुरेणप्रच्छिनत्ति । ॐ येनावपत्सविताक्षुरेणसोमस्यराज्ञोवरुणस्यविद्वान् । तेन-ब्रह्माणोवपतेदमस्यायुष्यंजरदष्टिर्यथासत । ततश्छिन्नसकुशकेश-जूटिकां पिताप्रागग्राणिशिशुमातुर्हस्तेदद्यात । साचस्ववामपार्श्वे स्थापित कांस्यपात्रमध्येआनडुहगोमयपुस्करेनिदधाति । अत्र-जलस्पर्शंकुर्यात । एवमेवविधिनेतरजूटिका द्वयस्यापिप्रत्येकजूटि-कायाः पूर्वोक्तरीत्या–आर्द्रीकरणं–शलल्याप्रथक्करणम्–कुशत्रि-कान्तर्धानं–क्षुरग्रहणं –जूटिकोपरिक्षुरसंलग्नीकरणं--सकुशकेशप्र-च्छेदनं–- छिन्नकेशानांमातृहस्तेदानंतथा–– आनुडुहगोमयपिण्ड-निधानान्तं च मन्त्र रहितं द्विवारं कुर्यात । इति दक्षिण गोदानम् । ततः पश्चिम गोदाने पूर्ववद्दक्षिणभाग जूटिकायाः–– ॐ सवित्रा प्रसूता० द्विवारं चेति मन्त्रेण क्लेदनम् । तूष्णीं शलल्या विरली करणम् । ॐ ओषधे त्रायस्व० इति मन्त्रेण कुशत्रिकान्तर्धानम् । क्षुरस्यतु सकृद् ग्रहणान्नपुनर्मन्त्र संस्कारः । (एक द्रव्ये कर्मावृत्तौ सकृन्मंत्र वचनम्) इति कात्या-यनोक्तेः । ॐ निर्वतयामीतिमन्त्रेण केशेषु क्षुर संलग्नं । छेदने विशेषः–-ॐ त्र्यायुषमित्यस्य नारायणर्षि रुष्णिक् छन्दोऽग्नि-र्देवता पश्चिम गोदानस्थ प्रथमजूटिका छेदने विनियोगः । ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽ-अस्तु त्र्यायुषम् । इतिछित्वापूर्ववद् गोमयपुष्करे निदध्यात् ।

जलस्पर्शः । पश्चिमगोदानस्थ शेषजूटिकयोरपि-उन्दनादि गोमय पिण्ड निधानानि तूष्णीं वारद्वयं कुर्यात् । जलस्पर्शश्च ॥ इति-पश्चिमगोदानम् । अथचोत्तरगोदाने प्रथम जूटिकायाः ॐ सवित्रा प्रसूता० इति क्लेदनम् । शलल्या तूष्णीं विरली करणम् । ॐ ओषधे त्रायस्व० कुशान्तर्धानम् । तूष्णीं क्षुरादानम् । ॐ निवर्त्तयामि क्षुरनिधानं च कुर्यात् । छेदनमात्रस्यैव पृथक्मंत्रः । ॐ यनेति वामदेवर्षिः यंजुरछन्दः क्षुरोदेवता उत्तरस्थजूटिकाकेश छेदने विनियोगः । ॐ यनेभूरिश्चरा दिवं ज्योक् च पश्चाद्धि सूर्य्यम् । तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्यायस्वस्तये । इति छित्वापूर्ववद् कुमारमाता गोयम पुष्करे प्राशयेत् । जलस्पर्शः । एवमुत्तर गोदानस्थेतरजूटिकयोरपि क्लेदनं विनयनं कुशान्तर्धानं—क्षुरादानं—क्षुरनिधानं—छेदनंगोमय पिण्डप्राशनं च तूष्णीं कुर्यात् । जलस्पर्शः । ततो वक्ष्यमाण मंत्रेण सकृत्कुर्यात् ॐ यत्क्षुरेणेति वामदेवऋषिर्यजुश्छन्दः क्षुरोदेवता शिरसिक्षुर परिहरणेविनियोगः । ॐ यत्क्षुरेणमज्जयता सुपेशसाऽवप्ता वावपति केशाँश्छिन्धि शिरोमाऽस्यायुः प्रमोषीः । इतिवारमेकं क्षुरं शिरसिभ्रामयित्वा वारद्वयं तूष्णीं भ्रामयेत् । ततो नापितमाहूय नापितस्तच्छेषजलेन सुखवपनार्थं सर्व शिर आर्द्री कृत्य वक्ष्यमाणमंत्रेण नापिताय क्षुरंप्रयच्छेत् । ॐ अक्षवण्वन्नित्यस्य वामदेवऋषिर्यजुरछन्दः क्षुरोदेवता नापिताय क्षुर प्रदाने विनियोगः । ॐ अक्षण्वन् परिवप । इति नापितहस्ते क्षुरंदत्वा परिवपामीति नापितो ब्रूयात् । ततो नापितोऽपि शलल्या 'पूर्वशिखं—उदकशिखं, मध्यशिखं वा यथा कुलाचारं वर्त्तुलाकारं कृत्वा सूत्रेणवेष्टयित्वा शिखावर्ज्यं केश वपनंविधाय माता पूर्ववद् गोमयपुष्करेप्रासयेत् । मातृका विसर्जनान्ते स्वल्प-जलाशयेतदभावे गोष्ठेवानिधापयेत् । ततः पर्युप्तशिरसं सुस्नातं कुमारं पुष्पमालावस्त्रादिभिरलं कृत्य होमवेदी समीपमानीय-अग्नेः पश्चादुपवेशयेत् । आचार्याय वरं गोदानं वा तिलपात्र

दानं वा तन्निष्क्रयीभूतद्रव्यं हस्तेधृत्वा अद्येत्यादि० अमुकराशे रमुकनाम्नः पुत्रस्य चूडाकरणकर्मणः सांगफलावाप्तये साद्गुण्यार्थमिमांदक्षिणाममुकशर्मणे-आचार्याय तुभ्यमहं सम्प्रददे । नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां च दास्ये सांगतासिद्ध्यर्थं दशब्राह्मणान् वा यथासंख्यकान्भोजयिष्ये । इति संकल्प्य सभ्यनामाग्निंसम्पूज्य हस्तेऽक्षतानादाय ॐ गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानेहव्यवाहन । इष्टकाम समृद्ध्यर्थं पुनरागमनं कुरु । (पूर्णाहुतिर्न भवति) ततस्त्र्यायुषकरणं कृत्वा गणेशादि पंचाग देवता विसृज्याचार्यो मङ्गलाभिषेकतिलकमंत्राशिषं च दद्यात् ।

इति चूडाकरणपद्धतिः ।

अथ कर्णवेधपद्धतिः ।

अथच कर्णवेधो देशाचार कुलाचारतो व्रतबन्धात्पूर्व मेव तृतीये पंचमे सप्तमे चवर्षे ज्योतिः शास्त्रोक्त चन्द्रतारानुकूले सँल्लग्ने शुभेऽह्नि पिता स्वकीयं प्रातः कृत्यंनिवर्त्य गणेशादि-पञ्चाङदेवतानां पूजनं कुर्यात्—तत्र स्वासन उपविश्याचम्य दीपं प्रज्वाल्यार्घ संस्थाप्य संकल्पः—अद्येहेत्यादि-अमुकोऽहममुक-राशेः पुत्रस्य करिष्यमाण कर्ण वेध कर्मणि निर्विघ्नताप्राप्तये पूर्वांगत्वेनगणपति पूजनं करिष्ये तदंगतया गौर्यादिषोडषमातृ-णांपूजन कलशस्थापनं पुण्याहवाचनं नान्दीश्राद्धं वसोर्धारा पातनं नवग्रहपूजनं च करिष्ये-इति पूर्वोक्त प्रकारेणसम्पूज्य ततः कलशे केशवादि देवानां पूजनं कुर्यात् । सङ्कल्पः—अद्येहेत्यादि संकी-र्त्यामुकोऽहंममामुकराशेरमुकनाम्नः पुत्रस्य बीजगर्भ समुद्भवैनो निवर्हण द्वारा पुष्ट्यायुः श्री विवृद्ध्ये च कर्णवेध कर्मणि कलशे केशवादि देवानां पूजनं करिष्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः केशवादि देवा अस्मिन्कलशेसमागच्छन्तु तिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु ॐ

एतन्ते० प्रतिष्ठाप्य ॐ केशवायनमः । ॐ हरायनमः । ॐ ब्रह्मणे नमः । ॐ चन्द्राय नमः । ॐ सूर्याय नमः । ॐ दिगीशेभ्यो नमः । ॐ नासत्याभ्यां नमः । ॐ वायवे नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ स्वेष्ट देवतायै नमः । ॐ ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ गवे नमः । ॐ गुरुभ्यो नमः । इति नाम मंत्रैः पाद्यादिभिः सम्पूज्य स्वेष्टदेवं ब्राह्मणान् भिषक्वरं सौचिकं च नमस्कृत्य ततो माता भूषण वस्त्रादिभिरलंकृतं बालकंप्राङ् मुखं गुडमोदकादि-भुंजानं स्वोत्संगे धृत्वा अद्येहेत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहममुकराशेरस्यममबालकस्यकर्णवेध लग्नाद्यत्रकुत्र स्थानस्थितदुष्टग्रहैः सूचितारिष्ट निवृत्यर्थंग्रहाणां प्रीतये-इमांलग्नदान दक्षिणा ममुकशर्मणे विप्राय दास्ये-इति लग्न दानं कृत्वा शुभेलग्ने पितावान्यो सौचिको ब्राह्मणस्य सुवर्णशलाकया रजतशलाकया वाशुरूपस्यादौ दक्षिण कर्णमभिमन्त्र्यवेधयेत् मंत्रः—ॐ भद्रंकर्णेभिरिति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्तादेवता दक्षिणकर्णाभिमंत्रणे विनियोगः ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवाभद्रंपश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितंयदायुः । इति दक्षिण कर्णं वेधयित्वा वाममभिमन्त्रयेत् —ॐ वक्ष्यन्ती वेदेति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्तादेवता वामकर्णाभिमन्त्रणे विनियोगः ॐ वक्ष्यन्तीवेदागनीगन्ति कर्णं प्रिय ६० सखायं परिषस्वजा । योषेवशिंक्ते वितताधिधन्वन् ज्याइय ६० समनेपारयन्ती । इति वामकर्णं वेधयेत् ❀ कन्यकाया मन्त्ररहितमादौ वामकर्णं वेधयित्वा ततो दक्षिणकर्णवेधनानन्तरम् वामनासापुटमपि वेधयेत् । अद्येत्यादि संकीर्त्य अमुकोऽहं मामास्य बालकस्य कर्णवेध

❀ टि०—(कन्यायाः ज्योति शास्त्रप्रमाणेन—कन्यायाश्रवणवेध स्यात्तद्वारे विषमेऽब्दके । आद्ययामि सिते पक्षे मैत्रक्षिप्रोत्तराचरे॥ वामांगं चैवसौभाग्यं नारीणां शास्त्रभाषितम् । सव्य कर्णं छेदयित्वा पश्चाद्दक्षिणकं छेदेत् ॥ वामनासापुटं चैव च्छेदयेत्तु ग्रमनरम् ।

कर्मणः सांगतासिद्ध्यै-इमां भूयसींदक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो विप्रेभ्यो विभज्यदास्ये तथा च ब्राह्मणान्भोजयिष्ये। इतिदत्वोत्तरांगपूजनं कृत्वाभिषेकतिलकमन्त्राशिषं दद्यात्।

इति कर्णवेधपद्धतिः।

अथाक्षर स्वीकार विद्यारंभ परिभाषा।

अथ च-अक्षरारंभः, धर्म नौकायाम्—विद्यारंभः पंचमेऽब्दे शुभः स्यात्तथुभं हित्वा सौम्यसंज्ञेयनेऽर्के। हस्तादित्ये वायुमित्रेच शक्रे पौष्णे दक्षे त्वाष्ट्र हिष्णौ शुभः सः। मन्दारलग्नांश दिनं विहाय राशौस्थिरे कृष्ण दिष्टमेव। रिक्ताष्टमीषष्ठयनलं विहायशुक्लेऽष्टमे चाक्षरस्वीकृतिः स्यात्। संस्कार प्रकाशे मार्कण्डेयः—अभ्यंगस्नानपूर्वं सुगंधवैश्च विभूषितः। शुक्ल वस्त्रं समास्तीर्य तण्डुलोपरिपूजयेत्। पूजयित्वा हरिं लक्ष्मीं देवीं चैव सरस्वतीम्। स्वविद्या सूत्रकारांश्च स्वविद्याश्चविशेषतः। एतेषामेवदेव,नांनाम्नाच हुयाद्धृतम्। दक्षिणाभिर्द्विजाग्र्याणांकर्तव्यंच,प्रपूजनम्। प्राङ्मुखोगुरुणाशिनोवरुण शासुयशिशुम्। अध्यायथोतप्रथमंद्विजार्शीभिःप्रपूजितम्। प्रतिप्रतिपर्दिचैव वर्जयित्वातथाष्टमीम्। रिक्तांपञ्चदशींचैवसौरिभौमदिनंतथा। एवसुनिश्चितेकालेविद्यारम्भंतुकारयेत्। विशेषोज्योतिःशास्त्रेषुद्रष्टव्य। इति० विद्यारंभपरिभाषा॥

॥ अथअक्षरस्वीकारविद्यारम्भपद्धतिः ॥

अथचकुमारपितानित्यकर्मविधाय पूजास्थलमागत्य दीपंप्रज्वाल्य भूतोत्सादनादिकर्मकृत्वा तत्रादौशान्तिपाठंकृत्वा अर्घंसंस्थाप्य-तज्जलेनात्मानंपूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य प्राणानायम्यगणेशादि-पंचांगदेवान्पूर्वोक्तपद्धत्यनुसारेणसंपूजयेत् संकल्पंकुर्यात्—अद्ये-त्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं, अमुकराशेरमुकशर्मणोऽस्यपुत्रस्यसकल विद्यापारंगत्वप्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं, अक्षरारंभंविद्या-

रंभंचकरिष्ये,, तत्पूर्वाङ्गत्वागणेशादिवरुणपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारानिपातनंनान्दीश्राद्धं–नवग्रहार्चनंचकरिष्ये,, ततस्तत्तत्कर्मकृत्वा,, कश्चिन्मनोहर काष्टपीठोपरिनवंश्वेतवस्त्रंप्रसार्यतत्रदध्यक्षतपुंजेषुवक्ष्यमाणविधिना वक्ष्यमाणदेवानावाहयेत्–संकल्पः–अद्येत्यादि० अमुकोऽहं अमुकराशे रस्यमम पुत्रस्याक्षरस्वीकार विद्यारम्भकर्मणोःपूर्वागत्वेनदध्यक्षतपुंजेषु गणेशादिश्यैनिकान्त देवानां वेदादि प्रवर्त्तकानां ब्रह्माद्याचार्याणां, वेदादि विद्यानां च, आवाहन पूर्वकं नाममंत्रैः पूजनं करिष्ये, तत्रादौमध्ये–ॐ भूर्भुवः स्वः, गणेश, इहागच्छेहतिष्ठ पूजार्थमावाहयामि, एवंसर्वत्र—ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहा० । ॐ भू० लक्ष्मि, इ० । ॐ भू० कुलदेवि इ० । ॐ भू० सरस्वति० । ॐ भू० ब्रह्मन्निहा० । ॐ भू० व्यास इ० । ॐ भू० गौतम इ० । ॐ भू० जैमिने० इ० । ॐ भू० मनो इ० । ॐ भू० पाणिने इ० । ॐ भू० कात्यायन इ० । ॐ भू० पातञ्जले इ० । ॐ भू० यास्क इ० । ॐ भू० पिंगल इहा० । ॐ भू० गर्ग इहा० । ॐ भू० कपिल इ० । ॐ भू० वाल्मीके० इ० । ॐ भू० कणाद इ० । ॐ भू० धन्वन्तरे इ० । ॐ भू० वामन इ० । ॐ भू० कृशाश्व इ० । ॐ भू० भरत इ० । ॐ भू० नकुल इहा० । ॐ भू० गोभिल इ० । ॐ भू० यजुर्वेद इ० । ॐ भू० ऋग्वेद इ० । ॐ भू० सामवेद इ० । ॐ भू० अथर्ववेद इ० । ॐ भूर्भुवः स्वः, अष्टादश पुराणानि, इहागच्छन्त्विह तिष्ठन्तु पूजार्थमावाहयामि । ॐ भू० न्याय इ० । ॐ भू० मीमांसे इ० । ॐ भू० धर्म शास्त्र इ० । ॐ भू० शिक्षे इ० ॐ भू० कल्प० । ॐ भू० व्याकरण इ० । ॐ भू० निरुक्त इ० । ॐ भू० छन्दांसि, इहागच्छन्त्विहतिष्ठन्तु, ॐ भू० ज्योतिष इ० । ॐ भू० वेदान्त इ० । ॐ भू० सांख्य इ० । ॐ भू० पातञ्जल इ० । ॐ भू० काव्य इ० । ॐ भू० अलंकार इ० । ॐ भू० वैद्यक इ० । ॐ भू० धनुर्वेद इ० । ॐ भू० गांधर्ववेद इ० । ॐ भू० शिल्पशास्त्र इ० । ॐ भू० पालकाप्य इ० । ॐ भू० शालिहोत्र इ० ।

ॐ भू० पालकाचार्य इ० । ॐ भू० विश्वकर्मन् इ० । ॐ भू० श्यैनिक इ० इतिमंत्रैरावाह्य ॐ एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य, ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाद्यावाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु ॥ अत्र गणेशादीनामावाहने पूजने न विशेषः—ततः प्रादेशमात्रां भूमिं गोमयेनोपलिप्य पालाश दंडोध्दृतांमृद मानीय सैक तं स्थंडिलं-निर्माय तस्योपरितया मृदा पंचकोणं षट्कोणं वा सरस्वती यंत्रं कृत्वा सरस्वतीमावाहयेत्—ॐ भूर्भुवः स्वः, भुवनमातः सर्ववाङ्मय रूपेसरस्वति, इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ एतन्तेति पठित्वा ॐ भू० अस्मिन्यंत्रे सरस्वतिसुप्रतिष्ठितावरदाभव इतिप्रतिष्ठाप्य तत्रादौ गणेशंध्यायेत्—अविरलमदधारा धौत कुंभः शरण्यः, फणिवरवृतगात्रः सिद्धसाध्यादिवंद्यः त्रिभुवनजनविघ्न ध्वान्त विध्वंसदक्षो, वितरतुगजवक्त्र संततं मंगलंवः ॥ ततोविष्णुं—उद्यत्कोटि दिवाकराभ मनिशं शंखं गदां पद्मजं, चक्रं बिभ्रन मिन्दिरा वसुमती संशोभि पार्श्वद्वयम् । कोटीराङ्गद हार कुंडल धरं पीताम्बरं कौस्तुभोद्दीप्तं विश्वधरं स्ववक्षसि लसच्छ्रीवत्स चिन्हं भजे ॥ ततो लक्ष्मीं—कान्त्या कांचन सन्निभां हिमगिर प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैः । हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृतघटै रासिच्यमानां श्रियम् ॥ बिभ्राणां वरमब्ज युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्वलां, क्षौमाबद्ध नितम्ब बिम्ब ललितां वन्देऽरविन्द स्थिताम्—ततो देवीं—अध्यारूढां मृगेन्द्रं सजल जलधर श्यामलां हस्तपद्मैः, शूलं बाणं कृपाणं त्वरि जलजगदा चाप बाणान्वहन्तीम् ॥ चन्द्रो त्तंसांत्रिनेत्रां चतसृभिरभितः खेटकंबिभ्रतीभिः, कन्याभिः सेव्य-मानां प्रतिभट भयदां शूलिनीं भावयामि ॥ ततः सरस्वतीम्—या कुन्देन्दु तुषार हार धवलाया शुभ्रवस्त्रा वृता या वीणा वर दंड मंडित करा या श्वेत पद्मासना । या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता सामांपातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्या पहा ॥ इति ध्यात्वा—वक्ष्यमाणमंत्रैः सर्वेषांपूजनंकुर्यात्—ॐ गणानान्त्वा० । ॐ वि-

ष्णोरराट० ३० श्रीश्चते० । ३० सरस्वतीयोन्यांगर्भमंतररश्विभ्यां
पत्नीसुकृतंबिभर्त्ति । आया ॐ रसेनत्ववरुणेनसाम्नेन्द्र ॐश्रियैज-
नयन्नप्सुराजा । वापूर्वावाहितदेवेभ्योनमः इति मंत्रेण पाद्यादिभिः
पंचोपचार पूजनंकृत्वा । ततो वेद्यांपंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निसं-
स्थाप्य, आचार्यब्रह्मणोर्वरणपूर्वक ब्रह्मोपवेशनादि पर्युक्षणान्तं
कर्मकृत्वा पूर्वोक्तस्थापनक्रमेण नामद्वितीयान्तमंत्रै र्द्रव्यदेव-
ताभिध्यानंकुर्यात् संकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकोऽहं अमुकराशे-
रमुकबालकस्याक्षरारम्भ विद्यारम्भ होमकर्मणा, प्रजापत्यादि
श्यैनिकान्तान् तथा भूरादि प्रजापत्यन्तान्देवान् अग्निॐस्विष्टकृतं
चा ज्येनयक्ष्ये, इति तत्तद्देवताभ्योमयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तुन
मम । ३० भूर्भुवः स्वः पुष्टिवर्द्धननामाग्ने इहागच्छेहतिष्ठ, ३०
एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य, ३० पुष्टिवर्द्धननामाग्नयेनमः इति संमपूज्य,
जिह्वा पूजनं रेखापूजनंकृत्वा आचार्य ब्रह्मणोर्वरणंकृत्वा ३० प्रजा
पतयेस्वाहा इदं प्रजापतयेनममः । ३० इन्द्रायस्वा०इदमिद्रायनमम
३० अग्नयेस्वाहा इदमग्नयेनमम । ३० सोमायस्वाहा इदंसोमाय
नमम । इत्याघारावाज्यभागौहुत्वा पूर्वस्थापनक्रमेण चतुर्थ्यन्तैर्ना
ममंत्रै रेकैकामाज्याहुति गणेशादि श्यैनिकान्तेभ्योजुहुयात् ॐ
गणेशायस्वाहा, ३० विष्णवेस्वाहेत्यादि हुत्वा भूरादिनवाहुतिहोमं
स्विष्टकृद्धोमं च समाप्यपूर्णपात्रदानान्तं कृत्वा, आचार्यादिभ्यो
होमनिमित्तकदक्षिणांदत्वा, तत अभ्यंगस्नान पूर्वक वस्त्रालङ्कारा
दिभिर्भूपितं कुमारंगणेशादि देवान्प्रणमय्य, लग्नसामयिकदानं
कुर्यात् दानसामग्रीं ब्राह्मणं च सम्पूज्य संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्या-
दिदेशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहं करिष्यमाणाक्षरस्वीकार विद्यार-
म्भ लग्नाद्यत्रकुत्र स्थानस्थितानां सूर्यादि ग्रहाणां शुभानां शुभ-
फलाभिवृद्ध्ये क्रूराणां दुष्टफलनिवारणार्थ मिदंसुवर्णरजतादिद्रव्यं
यथानाम दैवत्यममुक शर्मणे ब्राह्मणायदास्ये, ३० तत्सन्नमम,,
ततो गुरुंगुणवान् वस्त्रालंकरणादि ग्रहणसामग्रीं सम्पूज्यगुरुंच—
अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं करिष्यमाणाक्षर स्वीकार विद्यारंभकर्म-

णिएभिर्वरणद्रव्यै रमुकशर्माणं ब्राह्मणं गुरुत्वेनवृणे—इतिसामग्रीं तस्मैदत्वा,, ब्राह्मणः-ॐअक्रन्कर्म० इति पठित्वा,, कुमारो गुरुं प्रार्थयेत्-पुष्पहस्तः-ॐ गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णु र्गुरुर्देवोमहेश्वरः । गुरुः साक्षात्परब्रह्मस्तस्मै श्रीगुरवेनमः,, ततोगुरुः पालाशदण्डोध्दृत धूलिसंयुतेमनोहरे शुभकाष्ठ पीठेसुवर्णशलाकया पंचकोणं सरस्वतीयंत्र विलिख्य,, गुरुःपूर्वाभिमुखो भूत्वापश्चिमाभिमुखं कुमारं कृत्वा,, कुमारः पुष्पहस्त आदौगणेशंप्रणम्य ततोयंत्रे सरस्वतिमावाहयेत्-ॐभूर्भुवःस्वःविद्यामातः सर्ववाङ्मयरूपे सरस्वति, इहा गच्छेहतिष्ठ इत्यावाह्य,, ॐ एतन्तेति पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्व :, अस्मिन्यंत्रेसरस्वति सुप्रतिष्ठितावरदाभव,, ॐ सरस्वतीयोन्यां गर्भमन्तर श्विभ्यांपत्नी सुकृतंविभर्त्ति । अपा ॐ रसेनवरुणेन साम्नेन्द्र ॐ श्रियैजनयन्नप्सुराजा,, इतिमंत्रेणपाद्यादि नीराजनान्तं संपूज्य,, वित्तानुसारं हिरण्यरजतादि द्रव्य मुपायनं समर्पयित्वा प्रार्थयेत्—ॐसरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि । विश्ववन्द्ये विशालाक्षि विद्यान्देहिनमोस्तुते ,, ततो गुरुंप्रणमेत्—ॐ अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजनशलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मैश्रीगुरवेनमः ॥ ततो गुरुः सुवर्णशलाकयारजतशलाकयावा, अकारादिक्षकारान्तान्वर्णान्लिखित्वासंपूज्य चकुमारं ग्राहयेत्,, यथा—ॐ नमःसिद्धं,, अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लॄ ए ऐ ओ औ अं अः॥ क ख ग घ ङ, च छ ज झ ञ, ट ठ ड ढ ण, त थ द ध न, प फ ब भ म, य र ल व, श ष स ह क्ष,,. इति लेखयित्वा—पुनःकुमारंप्राङ्मुखंकृत्वा अक्षराणित्रिवारंवाचयित्वा ततो विद्यारंभंकारयेत्,, ॐ नारायणंनमस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींव्यासं ततोजयमुदीरयेत् ॥ वागर्थाविवसंपृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये । जगतःपितरौवन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ । येनाक्षर समाम्नाय मधिगम्यमहेश्वरात् । कृत्स्नंव्याकरणंप्रोक्तं तस्मैपाणिनयेनमः । वृद्धिरादैच् । गौरीश्रवःकेतकपत्रभंगं० । यस्यज्ञानदयासिन्धोः एवंगुरुमुखाच्छ्रुत्वाकुमारःपठेत् । ततोगुरुचरणयो

कुमाराभ्यां हस्ताभ्यां वादयित्वा गुरुदक्षिणांच निवेद्यप्रणम्यच भूयसींसंकल्पयेत्—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं अमुकराशेः कुमारस्य अक्षरस्वीकार विद्यारम्भ कर्मणोरङ्गत्वेनअक्षतपुंजेषु गणेशादिदेवतानां पूजनस्यहोमकर्मणश्च साद्गुण्यार्थमिमांदक्षिणां नाना नामगोत्रेभ्यो विभज्यदास्ये, ॐ तत्सन्नमम यथासंपादितान्नेनब्राह्मणांश्चभोजयिष्ये, ततःपूर्वपूजित देवानग्निंचविसृज्य मन्त्राशिषंगृह्णीयात् ।

इत्यक्षरस्वीकारविद्यारम्भपद्धतिः

— —

अथउपनयनसूत्रव्याख्या ।

अथोपनयननिरूपणम्—(अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनयेत् ।१। गर्भाष्टमेवा ।२।) अष्टौ वर्षाणि अतीतानि यस्य असौ अष्टवर्षस्तं ब्राह्मणं द्विजातिमुपनयेत् उपनयनाख्येन संस्कारेण संस्कुर्यात् ॥ गर्भाष्टमेषु वा गर्भ गर्भाद्वर्षगणितात् अष्टमो यथा तानि गर्भाष्टमानि तेषु उपनयेत् ततश्च जन्मतो सप्तमेऽष्टमे वा उपनयेदित्यर्थः —(एकादशवर्षं राजन्यम् ३।) एकादश वर्षाण्यतीतानि यस्य सो एकादशवर्षस्तं जन्मतो द्वा दश वर्ष इत्यर्थः राजन्यं क्षत्रियमुपनयीत्युपनयेत । (द्वादशवर्षं वैश्यम् । ४ । द्वादश वर्षाण्यतिक्रान्तानि यस्य स तथा तं जन्मत त्रयोदश वर्षे वैश्यमुपनयेत् ॥ (यथा मङ्गलं वा सर्वेषाम् ५) पक्षान्तरमाह—अथ वा सर्वेषां ब्राह्मण क्षत्रियविशां यथा मङ्गलं यथा कुलधर्मं, यद्वा यथा मङ्गलं स्यात् तथा उपनयेदित्यर्थः पक्षान्तरमाह—मनु—ब्राह्मणस्य शास्त्रार्थं विप्रस्यपञ्चमे ॥ राज्ञोबलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनो ऽष्टमे ॥ (आश्वलायन)गर्भाष्टमेऽष्टमेवा स्यादब्दे विप्रस्य मौञ्जनम् ॥ द्विजस्यप्राप्त्यायाद्विपाकर्परस्य ॥ मासरूला ग्रहनाशं ... गुरु विचिन्त्य द्विजाय ... ॥ ... शास्त्रविधानिरूपणं ॥ उपनीत कुमारस्य विधिविदाम —गर्ग—विप्र क्षत्रियविशां त्रिवर्षैस्यपना तिरिक्ता ॥ पञ्चमाह्नादुद्धरति —शुक्लपक्ष शुभ प्रोक्त कृष्णपक्षान्तस्त्रिभिर्दिनं । जन्ममासविचार —राजमार्त्तण्ड —न जिनिदुगत्क्षपिष्टोत्तरीय गणनियतदत्तात्र ॥ जन्मपर्व क्रियागुरिश्च यथा ... गुरुशुद्धिमाह वृहस्पति ... ॥ ... ॥ कारिकायाम्—...॥ ... पूर्ये ... ।

पुनश्चाना कृतस्वयन रत्नुनासिचैत्रे फल्गिचगयु शुभगोऽयद स्यात ॥ **तिथिमाह राजमार्तण्ड**

तृतीयैकादशी सप्तमी पञ्चमी दशमी तथा, । द्वितीयायां चमन नामन स्थविलम्बित —**विद्यामर्षदारि**

ष्णतीयाम स्या तथैवचप्रतिपद पि नाम्या। कृतबुद्धिविशश्च्य ॥ कृष्णपक्ष चतुर्थी च मस्तमादि

दिपथ त्रयोदशी चतुष्क न अप । गलगह ॥ **प्रदोष द्विनमपिवर्ज्यमुक्त गार्गिलेन—**

दागि च द्वादश चैव अष्टाम्यां न नाकि का अप गिरि वर्जीत तृतीया तृतमनिना ॥ **बृहद्गार्ग्य**

वचनम् ॥ श्राग्याग प्रतीत यस्तु नैमित्तिको भवन सप्तमी माघ शुक्ले तु तृतीया च चया त ॥

बुध नग्नु वागश श्ररतानि भवन ३ ॥ **ज्योतिर्निबन्धनारद** — शाग्याधिपति वा श्व शा

खाधिपवल तत्र ।श सनि ति लाग न हुत। निगम मा **सग्रहे**— स श्वर्वगाम जुपाभिधा गुरु

सौम्य भौमसिता । वारो विप्राणां क्षत्रियाग न व्य गुरिशान्त द ॥ **७ इप नक्षत्राणि मद**

नपारिजात— हस्तत्रय देवत पुष्य न शौक्तु पूर्वाशिशिनाग्येषु वापु श्रु रु र्कं क्ष्यती ।

निवुय श्री द्विनम विध ॥ **राजमार्तण्डेऽतु पुनर्वसु निषध्यन्ति** पुनगो कृत विप्र

पुन गनयारमहति पञ्चहनक्षत्रेषु **वे आदिद्यास्यात्यास्तदुक्त दीपिकायां** कर्णकौ विराह

च व्रत पुनश्चत ।॥ प्र शो न थ तृत्य ल्दिमृल **परित्यज** ॥ **स्वरोदय** शुक्त भोग तो॥

कन्न विन पपमश्ल । पुनाभमधु नायपु चर्तनाय पय ना ॥ सामायता नगशुद्धिगादि ॥

मुहूर्त चिन्तामणौ सत्त भप्र त्न रिपर्वनित श भन ग भ निप य गता पूर्ण गोर्नस्थो

विस्तनो ॥ उत्पतानहल ल प्रतेऽहि पत्रम यावा त्रिदो यदि गर्नति तनि स्य दनध्यायो

व्रत न चित्रया ॥ना दाश न इत चे स्याद यायश्वक कि तदोपनयनं कार्यं वैशखभन

कारयामदनरत्ननारद विनर्ती यन्तनतष्ण पक्षे ग भ्रह । अरक्षते पर्नोत पुन रत्कारमहति

सवदेवचण्डेश्वर दाहदिश चव धराक्रप श्रपत्थ वि ग न वर्तीतर्ध क्ष शुवणप्रपते यद्व

न कुर्याद्व्रतमगल नि । विप याति शास्त्रद्रव्य (**ब्राह्मणा भोजयत्त च**) नं नब्राह्मणान्

भोजयेत् आशयेत तचकार अपनतग्गारयदिति (चकारो भानुज्यते) (षुण्डति समल कुमा

नयति ७) परिमित्त उपभुक्तिशिरोयस्य मुण्डितशिर स्तमन्धत यथा सभव स्नतसुवर्णनिर्मितै

कुण्डलालकारै आनयति श्रन पुरुष। आचाय समा आचार्यपिनयनकर्ता । **तत्कममाह वृद्ध**

गार्ग्य पिता पितामहो भ्रता ज्ञाप्योग अ जानना । प्रनोपक्रीस्यात पूर्वाभाव पर पर

तथा पितैयो येऽधुत्र दभाव तु पिता तदभाव तुत्रता तदभ वतुगोदर पितिविप्र पर न

क्षत्रिय वैश्ययो स्तयोस्तु पुरोहित स्वयमपनय स्पद्रष्ट वा । तयोस्त्वध्यानाडनधिकारात **आचार्य**

लक्षणमनोक्तम्—सयवत वृत्तिमान्यता सवभूतत्पर आस्तिको वदनिरत शुचिराचार्यउच्यते

वेदाध्ययनसम्पन्न वृत्तिमान् विजितेन्द्रिय न यानयल तिशा गुणवन्त गुरु २॥ **पश्चादग्न**

रयस्थाप्य ब्रह्मचर्यमागामिति वाचयति ।८।) तत आचार्यमाण वक्ष्यमाने परिश्रमतः अश्मनो दक्षिणतः अवस्थाप्य अवस्थितं कृत्वा ब्रह्मचर्यमागामिति ब्रूहि, इति प्रेष्युक्त्वा माणवकं ब्रह्मचर्यमागामिति वाचयति (ब्रह्मचार्यसानीतिच ६) ब्रह्मचार्यसानि इत्याचार्यो माणवकं प्रेषयति प्रेषितश्चमाणवको ब्रह्मचर्यसानि इति वदेत् । अथैनंवासः परिधापयति, येनेन्द्राय बृहस्पति वासः पर्यदधादमृतन्तेनत्वापरिदधाम्यायुषे दीर्घायुत्वायबलाय वर्चसइति १०) अथ वाचनानन्तर एनंकुमारमाचार्यः वक्ष्यमाण लक्षणं वासोद्वितीयं परिधापयति परिहितकारयति येनेन्द्रादि इत्यादिमंत्रपठित्वा । मेखलांबध्नीते) इयंदुरुक्तं परिबाधमाना वर्णपवित्रं पुनतीम आगात् । प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसादेवी सुभगामेखलेयम् इति ११ ततः मेखलां मौंज्यादिकांवक्ष्यमाण लक्षणां बध्नीते कटिप्रदेशे त्रिवृतांप्रदक्षिणयानग्रथितां प्रादक्षिण्येन वेष्टयति इयंदुरुक्तइत्यादिना मेखलेयम् इत्यन्तेनमंत्रेणमाणवक पठितेन इति हरिहरः । आचार्यस्येति गदाधरः । युवासुवासा परिवीत आगात्स उश्रेयान् भवति जायमानः तं धीरासः कवयउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्त इति वा । १२ । तूष्णीं वा १३ । इति मंत्रेण वा तूष्णीं वा मेखलां बध्नीते ॥ अत्र यद्यपि सूत्रकारेण यज्ञोपवीतधारणं न सूचितं तथापि एकवस्त्रः प्राचीनावीति 'न' इति प्रेतोदकदाने प्राचीनावीतित्व विधानात्, दण्डाजिनोपवीतानि मेखलां चैव धारयेत् ॥ इति याज्ञवल्क्यवचनेन ब्रह्मचारिण उपवीतधारणाभिधानात् । तथा सदोपवीतिनाभाव्यं सदा बद्धशिखेन च, विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम् ॥ इति हरिहर—अतिशयबलवशो समाचारयज्ञोपवीताजिने भवत, इति भर्तृयज्ञ व्यतिरिक्तवासुदेवादि सर्वग्रन्थेषु कर्काचार्यस्तूपवीतमेवलिखितं तत्र चविरोधःउपवीते शास्त्रान्तरीयो मंत्रो ग्राह्य । यज्ञोपवीत परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः इति वासुदेवः "यज्ञोपवीतलक्षणं स्मृत्यर्थसारे,, कार्पासक्षौम गोवाल शाणबल्क तृणादिकम् ,यथासंभवतो धार्यमुपवीतं द्विजातिभिः ॥ तन्निर्माण प्रकारमाह-शुचौ देशे शुचिः सूत्रसंहताङ्गुलिमूलके,आवेष्ट्य षण्णवत्यां तत्त्रिगुणीकृत्य यत्नतः ॥ अब्लिङ्गकैस्त्रिभिः सम्यक् । प्रक्षाल्योर्ध्ववृतंतु तत् । अप्रदक्षिणमावृत्त सावित्र्या त्रिगुणी कृतम् ॥ अथ प्रदक्षिणवृत्तसमं स्यान्नवसूत्रकं त्रिरावेष्ट्य दृढंबद्ध्वा हरिब्रह्मेश्वरान्नमेत् । यज्ञोपवीतमिति च मन्त्रेणानेनधारयेत् । सूत्रंसलोमकंचेत्स्यात्ततः कृत्वा विलोमकं । सावित्र्या दशकृत्वाऽद्भिर्मन्त्रिताभिस्तदुक्षयेत ॥ विच्छिन्नंवाप्यधोयातिभुक्त्वानिर्मितमुत्सृजेत् । पृष्ठवंशेचनभ्यांचधृतयद्विन्दतेकटिम् । तद्धार्यमुपवीतंस्यान्नातिलंबंनचोच्छ्रितम् । स्तनादूर्ध्वमधोनाभेर्नधार्यंतत्कथंचन । ब्रह्मचारिणमेकंस्यात्स्नातस्यद्वेबहूनिच ॥ तृतीयमुत्तरीयार्थवस्त्राभावेचतुर्थकं ; मध्यसूत्रंतुसव्यांसेस्थितेयज्ञोपवीतिता ॥ प्राचीनावीतितासव्ये कंठस्थेहिनिवीतिता, वस्त्रंयज्ञोपवीतार्थेत्रिवृत्सूत्रंचकं मु ।

धुरामुंजबालतन्तुरुज्जावामर्गतन्तुषु ॥ **यज्ञोपवीततन्तुदेवता** —ॐ कार,प्रथमेतन्तौद्वितीयेग्नि तृ- थेवच । तृतीयेनागदैवत्यंचतुर्थेसोमदेवता । पंचमेपितृदेवत्यंषष्ठेचैवप्रजापति । सप्तमेवासवश्चैव ।अष्टमे सूर्यदेवता । सर्वेदेवास्तुनवमइत्येतास्तन्तुदेवता । ब्रह्मणो इत्यादिसूत्रम् विष्णुनाग्रिगुणीकृतम्—रुद्रेण- दत्तग्रन्थिर्वैसावित्र्याचाभिमन्त्रितं । त्रिगुणमयंसूत्रमग्नेतर्पोकर्मणोद्भवं दूपरेगजलप्रोक्षणीन पाचि सम्भवम् । **यज्ञोपवीताभिमन्त्रणविधिः**—सकृपमादौ संकीर्यइदंविष्णुर्विचक्रमे । मान्त्राणेन- पञ्चोपात्ध्यायेद्विष्णुगुणात्मकम् । आपो हिष्ठेतिति त्रिभि प्रक्षालयेद्ब्रह्मसूत्रकं । गायत्र्यादशभिर्व रं- मन्त्रयेदुपवीतकम् । देवतानवतन्तूनांक्रमेणपरिकल्पयेत् । ॐकारंप्रथमेतन्तौ,अग्निंचैवद्वितीयके । अग्निदूतंपुरोऽनेनत्रितीयंचाभिमन्त्रयेत । नमोस्तुसर्पेभ्येतेनचतुर्थंसोमदैवत । अयंसोमभ्रतेनैव- पंचमंपितृदैवत । उदीरितेतिमन्त्रेणषष्ठंवैप्रजापति । प्रजापतेनत्वमन्त्रात्सप्तमंनिलमाह्वयेत् आवो- नियुद्भिमन्त्रेणचाष्टमेयममाह्वयेत् । मुगाचोदेवा मदनाइतिमन्त्रेणमन्त्रयेत । विश्वानदेवाश्चैवनवमे- विश्वेदेवानमन्त्रत । ब्रह्माणमप्रथमेचैवविष्णुंचैवद्वितीयके । त्रितीयेरुद्रंचैवतत्तन्मंत्रेणस्थापयेत् ॥ एतन्तुतन्मन्त्रेणप्रतिष्ठांपरिकल्पयेत् । ऋष्यादिविनयोगांश्चप्रयोगेकल्पयाम्यहम् ॥ नवयज्ञोपवीतानि धृत्वा जीर्णानि संत्यजेत् ॥ जीर्णयज्ञोपवीतानि शिरोमार्गेण स यजेत ॥ (**अथाजिनं प्रयच्छति**) **मित्रस्य चक्षुर्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वी स्थविरॅं समिद्धम् अनाहनस्यं वसनं जरिष्णु परीदं वाज्यजिनं दधेहमिति** ।) इत्यनेन मंत्रेणाजिनधारणम् । तूष्णींवा (**दण्डं प्रयच्छति**) तं प्रति गृह्णाति । योमे दंड परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम् ॥ तमहं पुनराददे आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्च- सायेति । १४ । अथानन्तरं माणवकाय वदमानाय तदनन्तरं दण्डं प्रयच्छति तूष्णींमाणवकश्च तं दंड दक्षिणहस्तेन प्रतिगृह्णाति—यो मे दंड इति मन्त्रेण दण्डाश्च पलाशवैल्वोदुम्बराः, ब्राह्मणादीनां य- थिशं यथासंख्यं ज्ञेया । अत्र च शाखान्तरीयं प्रमाणम् । केशसम्मितो ब्राह्मणस्य दण्डो ललाट सम्मित क्षत्रियस्य घ्राणसम्मितो वैश्यस्य इति । (**दीर्घ वदेकेदीर्घसत्रमुपैतीति वचनात्**) । १५ । एके आचार्या दीक्षायां यथा दण्डप्रदानं सोमे तथेच्छन्ति तत्र उच्छ्रयस्व वनस्पत इत्यादिना यज्ञस्योदृच इत्यन्तेन मन्त्रेण यजमानो दण्ड उच्छ्रयति । तद्वदत्र ब्रह्मचारी येन हेतुना दीर्घसत्रवा एष उपैति यो ब्रह्मचर्यमुपैति, इत्यारभ्य ब्रह्मचर्यस्य दीर्घसत्र सम्पत्प्रतिपादनात् । **अथास्याद्- भिरञ्जलिनाञ्जलिं पूरयत्यापोहिष्ठेतितिसृभिः । १६ ।**) अत्र दण्डप्रदानान्तरं आचार्य अस्य माणवकस्याञ्जलिं स्वकीयाञ्जलिस्थाभिरद्भिः आपोहिष्ठेतीत्यादिकाभिस्तिसृभि ऋग्भिः पूरयति ॥ **अथैनॅं सूर्यमुदीक्षयति तच्चक्षुरिति १७ ।**) अथ अनन्तरं एनं माणवकं सूर्यमुदीक्षस्व इत्येवं प्रेष्य सूर्यमादित्यं उदीक्षयति अवलोकनं कारयति, स च प्रेषितः तच्चक्षु , इत्यादिना भूय- श्च शरदः शतात् इत्यनेन मन्त्रेण सूर्यमुदीक्षते (**अथास्य दक्षिणांसमधि हृदयमालभत,**

मम व्रतेते हृदयं दधामि मम चित्तमनुचित्तं ते अस्तु मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यमिति ।१८।) अथ सूर्य दर्शनानन्तर आचार्योऽस्य माणवकस्य दक्षिणां समधि दक्षिणस्कंधस्योपरि स्व दक्षिण हस्त नीत्वा हृदयं वक्ष मम व्रतेते इत्यादिना नियुनक्तुमह्यम्, इत्यन्तेन मन्त्रेण आलभते स्पृशति ॥ (**अथास्य दक्षिणं हस्तं गृहीत्वाऽऽह को नामासीति १९।)** अथहृदयालभ नान्तर, आचार्य अस्य माणवकस्य स्वकीयेन दक्षिणहस्तेन दक्षिण हस्त गृहीत्वा को नामासीति आह ब्रवीति ॥ **असावहं भो३ इति प्रत्याह २०।)** एव पृष्टो माणवक —असौ अमुकशर्माहं भो३ इति प्रत्याह प्रतिवचन दद्यात् (**अथैनमाहकस्य ब्रह्मचार्यसीति २१।)** भवत इत्युच्यमान इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्याग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यस्तवासाविति २२।) अथ प्रतिवचनानन्तर आचार्य एन माणवक कस्य ब्रह्मचर्यमि इत्याह पृच्छति भवत इति माणवकेनोच्यमाने इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवहमाचार्यस्तव अमुकशर्मन्निति (**अथैनं भूतेभ्य. परिददाति प्रजापतये त्वा परिददामि देवाय त्वा सवित्रे परिददाम्यद्भ्यस्त्वौषधीभ्य परिददामि द्यावा पृथिवीभ्यान्त्वापरिददामि, विश्वेभ्यस्त्वादेवेभ्य' परिददामि सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्य परिददाम्यरिष्ट्या इति ॥ २३ ॥२)** इति **द्वितीयाकण्डिका॥** अथ अनन्तरम् एनं कुमार आचार्य' भूतेभ्य प्रजापतिप्रभृतिभ्य प्रतिरक्षितु ददाति प्रयच्छति। मन्त्र —प्रजापतये त्वा इत्यादि अरिष्ट्या इत्य त ॥ **अथ तृतीया कण्डिका—(प्रदक्षिणमग्निपरीत्योपविशति। १।)** एव वस्त्रदानादिभिराचार्येण संस्कृतो माणवकोऽग्निं प्रदक्षिण परिक्रम्य अग्ने पश्चादाचार्यस्य उत्तरत उपविशति इति जयरामहरिहरौ। आचार्यस्य दक्षिणत इति गर्ग पद्धतौ। आचार्याग्न्योरुत्तरत इति वासुदेव। अग्नेरुत्तरत इति गदाधर (**अन्वारब्ध आज्याहुतीर्हुत्वा प्राशनान्तेऽथैनꣳ सꣳ** शास्ति ब्रह्मचार्यस्योपाशनकर्म कुरु मादिवासुषुप्था वाच यच्छ समिधमाधेह्यपोशानेति २) तत ब्रह्मणान्वारब्ध आचार्य आघारादि स्विष्टकृत्ताश्चतुर्दशाहुतीर्हुत्वा संस्रवप्राशनान्ते, अत्र पुनरन्वारम्भानुवाद चतुर्दशाहुति होमव्यतिरिक्त होमप्रतिषधार्थ ॥ अथ प्राशनान्तमाचार्य, एन माणवक स्त्रशास्ति शिक्षयति, कथ ब्रह्मचारी असि ? असानीतिमाणवकेन प्रत्युक्त, अप अशान पिव इति। अशानीति प्रत्युक्त कर्म स्नानादिक, स्ववर्णाश्रम विहितकुरु विधेहि, करवाणि, इति प्रत्युक्त मादिवा सुषुप्था स्वाप्सीरिति। नस्वपामीति प्रत्युक्त। वाच गिरयच्छ नियमय यच्छानीतिप्रत्युक्त। समिध काष्ठमाधत्स्व काष्ठाण्याधेहि अग्नौप्रक्षिपेति आपाशानेति पूर्ववत् ॥ (**अथास्मै सावित्रीमन्वाहोत्तरतोऽग्ने प्रत्यङ्मुखायोपविष्टायोप सन्नाय समीक्षमाणाय समीक्षिताय ।३। दक्षिणतस्तिष्ठत आसीनायैके ।४। पच्छोऽर्द्धर्चश सर्वां च तृतीयेन सहानुवर्तयन्**

।५।) अस्मै ब्रह्मचारिणे सावित्रीं सवितृ देवत्यां गायत्री छंदस्कां विश्वामित्र दृष्टां ऋचं अन्वाह उपदिशति । कथं भूताय प्रत्यङ् मुखाय, पश्चिम मभिमुखाय पुनः कथं भूताय उपविष्टाय क, अग्नेरुत्तरस्यां दिशि । तथोपसन्नायपादोप संग्रहणादिना भजमानाय, तथा समीक्षमाणाय सम्यक् आचार्यमवलोकयते, तथा आचार्येण सम्य गवलोकिताय पक्षान्तरमाह दक्षिणतः अग्नेर्दक्षिणस्यां दिशितिष्ठते उर्द्ध्वायउर्द्ध्वा भूताय वा आसीनाय उपविष्टाय इत्येके आचार्याः सावित्रीप्रदानमन्यते । कथमन्वाह पच्छः पादं पादं, अर्द्धर्चशः तदनु अर्द्धर्चमर्द्धर्चम् तदनु च सर्वां तृतीयेनवारेण सम्मिलित्वा आवर्तयन्पठन् ॥ (**सम्वत्सरे षण्मासे चतुर्विंशत्यहेद्वादशाहे-षडहेत्र्यहेवा** ।६।) सद्यस्त्वेव गायत्रीं ब्राह्मणायानुब्रूयादाग्नेयोवै ब्राह्मण—इतिश्रुतेः ।७। त्रिष्टुभꣳराजन्यस्य ।८। जगतींवैश्यस्यꣳ ।९। **सर्वेषां वा गायत्रीं** ।१०। सावित्रीप्रदानस्यकाल विकल्पानाह—सम्वत्सरे उपनयनमारभ्य पूर्णेवर्षेषण्मासेषडेवमासाः षण्मास्यं, (स्वार्थेष्यन्) "तद्धितश्छान्दसो वृद्धिलोपः । छन्दोवद्‌सूत्राणि भवन्ति इतिवचनात । तस्मिन् षण्मास्ये, चतुर्विंशत्यहे, चतुर्विंशत्या अहोभिः रुपलक्षित. कालश्चतुर्विंशत्यह, स्तस्मिन् द्वादशाहे द्वादशभिरहोभि. रुपलक्षितः कालोद्वादशाह स्तस्मिन् । षडहेषड्भिरहोभिरुपलक्षितः कालः षडहस्तस्मिन् । त्र्यहे त्रिभिरहोभिरुपलक्षित. कालः त्र्यहस्तस्मिन् । वा शब्दः सर्वेषु सम्वत्सरादिषु संबध्यते ॥ एतेकालविकल्पाः । आचार्यस्य शुश्रूषादिशिष्यगण तारतम्यापेक्षाः एवं सामान्येन सावित्री प्रदानस्यकालविकल्पा नभिधायाधुना ब्राह्मणस्य विशेषमाह । तु शब्दः पक्षः व्यावृत्तौ, ब्राह्मणस्य नैतेकाल विकल्पाः किन्तु क्षत्रियवैश्ययोः ब्राह्मणस्य सद्य एव गायत्रीमनु ब्रूयात । कुतः आग्नेयोवै ब्राह्मण', इति श्रुते. । आग्नेयः अग्नि देवत्यः ब्राह्मणः इति वेदवचनात् । त्रिष्टुभꣳराजन्यस्य जगतीं वैश्यस्य, सर्वेषां वा गायत्रीं, राजन्यस्य क्षत्रियस्य त्रिष्टुभम्, त्रिष्टुप्छन्दो यस्याः सात्रिष्टुपतां त्रिष्टुभम्, जगती छन्दो यस्याः ऋचः सा जगती तां " जगतीम् "। वैश्यस्यापित्रिः सावित्रीं मनुब्रूयादित्यनुषज्यते । सर्वेषां वा गायत्रीं, सर्वेषां ब्राह्मणक्षत्रियविशाम् गायत्रीमेव गायत्रीछन्दस्कामेव सावित्रीम् । सवितृदेवताकां, तत्सवितुः इति सकलवेदशाखाम्नातां ऋचमनुब्रूयात्—इतितृतीयाकंडिका । **देवी भागवते गायत्री निर्णये व्यासः**—ॐ कारं पूर्व मुच्चार्य भूर्भुवः स्वस्तथैव च ॥ चतुर्विंशत्यक्षरांश्च गायत्री प्रोच्यतेततः । शताक्षरांच गायत्रीं सकृदावर्तयेत्सुधी. ॥ चतुर्विंशत्यक्षराणि "गायत्र्या." कीर्तितानिहि जातवेद सनाम्नीं च ऋचमुच्चारयेत्तत । त्र्यंबकयर्चमा-धृत्य गायत्रीं शतवर्णं का ॥ भवतीयं महापुण्या सकृज्जाप्या बुधैरियम्, संपुटैकषडोंकारा गायत्री विविधामता ॥ पञ्च प्रणव संयुक्तां जपेदित्यनुशासनम् ॥ जपसंख्यातु भागान्ते पादो जाप्यस्तुरीयकः । सद्विजः परमोज्ञेयः परंसायुज्यमाप्नुयात । संपुटैका षडोंकारा भवेत्सा उर्ध्वरेतसाम् । गृहस्थो

ब्रह्मचारी वा मोक्षार्थी तुरीयां जपेत् ॥ तुरीयपादो गायत्र्या परो रजसे सावदोम तन्नैक प्रणवा-
म्नायां गृहस्थैर्ब्रह्मचादिभिः—अत्रसमिदाधानम्—अत्र सावित्री प्रदानोत्तरकाले समिधां आधानं
प्रक्षेपः ब्रह्मचारिणोभवति । अग्नाविति "भाष्यकारः" अत्रावसरस्य पाठादेवसिद्धेः पाणिनाग्निंपरि-
समूहति) अग्ने सुश्रवः सुश्रवसंमाकुरु यथा त्वमग्ने सुश्रव, सुश्रवा असि एवमाँसुश्रवः सौश्रव-
संकुरु, यथात्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपोभूयासमिति ।
।२।) पाणिना दक्षिण हस्तेन अग्निं प्रकृतहोमाधिकरणं परिसमूहति संधुक्षयति इन्धन
प्रक्षेपेण -वचन- माणः पंचभर्मन्त्रैः कारिकायां विशेषः प्रति मंत्रं त्रिभिः
काष्ठैरग्ने सुश्रव आदिभिः । अग्ने सुश्रव इत्येकं यथा त्वं स्याद्वितीयकम् यथा त्व-
मग्ने देवानां मंत्रेणापि तृतीयकम् । कृत्वा पर्युक्षणंवह्नेस्त्थाय समिदाहुतिः । **समिल्लक्षणंछन्दोग परिशिष्टे**—नाङ्गुष्ठादधिकाकार्या समित्स्थूलतया कचित् न वियुक्तात्वचाचैवनसकीटा न पाटिता ।
प्रदेशानाधिकन्यूनान तथ स्याद्विशाखिका न सपर्णा न निर्वीर्या होमेषु विजानता । **ब्रह्मपुराणे**—
पालाशाश्वत्थन्यग्रोध प्लक्षवैकंकतोद्भवाः । अश्वत्थोदुम्बरौबिल्वश्चंदनः सरलस्तथा । शालश्च देवदा-
रुश्चखदिरश्चेतिशाखिनः **(प्रदक्षिणमग्निंपर्युक्ष्योत्तिष्ठन्समिधमादधातिअग्नये समिध-
माहार्षंबृहते जातवेदसे यथा त्वमग्ने समिधासमिध्यसऽएवमहमायुषा मेधया
वर्चसाप्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धेजीवपुत्रोममाचार्यो मेधाव्यहम् सानसा-
न्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यन्नादो, भूयास ᳪ स्वाहेति ॥३॥)
एवंद्वितीयां तथा तृतीयाम ॥४॥) एषाते इतिवा ॥५॥) समुच्चयेवा ॥६॥)** ततः
प्रदक्षिणं यथा भवति तथा अग्निं पर्युक्ष्य दक्षिणहस्त गृहीतोदकेन परिषिच्यउत्थाय ऊर्ध्वीभूय
प्राङ्मुखस्तिष्ठन् समिधं समिध्यते दीप्यते अग्निरनयेति समित् तांसमिधंआदधातिप्रक्षिपति । केन
मन्त्रेण, अग्नये समिधमाहार्षमित्यादि भूयास ᳪ स्वाहा इत्यतेन ३—एतामनेनैव मंत्रेण द्वितीयां
समिधमादधाति । तथा ऽनेनैवमंत्रेण तृतीययाम्, मंत्रविकल्पमाह एषाते अग्नेसमित इत्यादि
प्यायिषीमहि, इत्यन्तेन वा मंत्रेण अथवा अग्नये समिधं इति एषाते इति द्वयोर्मन्त्रयोः समिदा-
धाने समुच्चयः एकयम्, ततश्च मंत्रद्वया ते समित्प्रक्षेपः इतित्रयो मंत्र विकल्पाः **पूर्ववत् परिसमू-
हन पर्युक्षणे ॥७॥)** पूर्ववत् अग्ने सुश्रव इत्यादिभिः पंचभिर्मन्त्रैः परिसमूहनं पर्युक्षणमपि
पूर्ववत्कुर्यात् । **(पाणीप्रतप्य मुखंविमृष्टे तनूपा अग्नेऽसितन्वंमेपाहि आयुर्दाऽअग्ने
ऽस्यायुर्मेदेहि । वर्चोदाऽअग्नेसिवर्चोमेदेहि । अग्नेयन्मेतन्वा ऊनंतन्मऽआपृणमेधां
मेदेवः सविता । मेधांमेदेवी सरस्वती मेधामश्विनौ देवा वाधत्तांपुष्कर स्रजाः-
विति । ॥८॥)** पाणी हस्तौ प्रतप्य तप्तौ कृत्वा तापयित्वा तनूपा अग्नेसि—इत्यादिभिः सप्तभि-

मन्त्रे प्रतिमन्त्राणिभ्यामुख विमृज्यललाटादि चिबुकान्ता मौञ्जीति । तत्र मेधामन्त्र सविता । मेधा-देवी सरस्वती अनयोरादधत्वित्यध्याहार अत्रशिष्टाचारप्राप्ता केचित्पदार्था लिख्यन्ते—तत्राङ्गानि च मत्रव्याख्यान्ता, वाकप्राणश्चक्षु श्रोत्रयशोबलमितिअङ्गानि च गङ्गयननम त्रेणशि प्रभृतीनि पदान्तानि अङ्गान्यालभेत एवं वाक् इत्यनेन मुख, प्राण इत्यनेननासिके, चक्षुरित्यनेन चक्षुषी श्रोत्र मित्यनेन श्रवणे, यशोबलमित्यस्य पादमात्रम् ॥ त्र्यायुषाणि कुरुते भस्मना ललाट ग्रीवायां दक्षिणे स्कंधे हृदि च, त्र्यायुषमिति प्रति मन्त्रम्, त्र्यायुषम् इत्येतैश्चतुर्भिर्मन्त्रैर्दक्षिणानामिका गृहीतेन भस्मना ललाट ग्रीवा दक्षिण सहृदयेषु प्रतिमन्त्र त्र्यायुषाणि कुरुते । अत्र त्र्यायुष करण सूत्रकारानुक्तमपि प्रसिद्धत्वात् शिष्टपरम्परा चरितत्वात् क्रियते । ततो ब्रह्मचारी सन्ध्या मुपास्याग्निकार्यं कृत्वा गुरूपसंग्रहणं वृद्धेभ्योऽभिवादनं कृत्वा नमस्कार कुर्यादित्य यत्र। अत्र स्मृत्यन्तरोक्तमभिवादनं लिख्यते—ततोऽभिवादये देवदत्तनामाहमिति ब्रुवन् प्रयोग ॥ **इतिचतुर्थीकण्डिका ॥ (अथ भिक्षाचर्यचरणम् ।१।)** अत्र वसरभिक्षाचर्यानुष्ठानम् । **(भवत्पूर्वांब्राह्मणो भिक्षेत ।२। भवन्मध्यमांराजन्य ।३। भवदन्त्यांवैश्य ।४।)** भवच्छब्द पूर्वोयस्या सा भवत्पूर्वांतांभिक्षांब्राह्म णो भिक्षतेयाचते । तथैवभवच्छब्दोमध्येयस्या साभवन्मध्यातां राजन्य क्षत्रियोभिक्षेतेत्यनुषङ्ग । भवच्छब्द अन्त्येयस्या साभवदन्त्यातांवैश्य तृतीयोवर्ण भिक्षा-भिक्षेतेत्यनुवर्तते । **उक्तंचमनुना**—प्रतिगृह्येप्सितंदण्डमुपस्थाय चभास्करम् ॥ प्रदक्षिणांपरीत्या ग्निंचरेद्भैक्ष्यंयथ विधि । **(तिस्रोऽप्रत्याख्यायिन्य ।५।) षड्द्वादशाऽपरिमितावा ।६। मातरंप्रथमामेके ।७।)** भिक्षेद्भिक्षेतोद्विरुक्तत्वाद् द्वितीयकल्प इतिसूत्रइति । तिस्रस्त्रियोभिक्षा भिक्षणकर्तृभूता अप्रत्याख्यायिन्य प्रत्याख्यातुंनिराकर्तुंशीलयासाता प्रत्याख्यायिन्य नप्रत्याख्या यि य अप्रत्याख्यायिन्य ता अप्रत्याख्यायिनी । द्वितीयाथप्रथमा, षट्स्त्रिय , द्वादशवा, अप रिमिता । वा असंख्याता । वा स्त्रियोभिक्षेत आहारापर्याप्त्यपेक्षया एकआचार्य मातरंस्वजननीं प्रथमंभिक्षेतेत्याहु । अयंचप्रथमाहुर्धर्म । इतिकल्प । **याज्ञवल्क्य** —ब्राह्मणेषुचरेद्भैक्ष्य-मनिन्द्यात्मवृत्तय ॥ एतद्ब्राह्मणविषयम् । **अतएवव्यास** —ब्राह्मणक्षत्रियविशश्चरेयुर्भैक्षम न्वहम् । सजातीयगृहेष्वेवसार्ववर्णिकमेववा **(आचार्यायभैक्षंनिवेदयित्वावाग्यतोऽह शेषंतिष्ठे दित्येक ।८।)** आचार्यायगुरवेभैक्ष लब्धभिक्षांनिवेदयित्वा इयभिक्षामयालब्धेतिसमर्प्यैवा यतामौनी अह शेषभिक्षानिवेदन त्तरतो यावदस्तमयतिष्ठेन्नोपविशेच्च शयीतवाएवमितइत्येकेसूत्रकारा । प क्षितव तु अनियममन्यामह ततश्चविकल्प । **अहिंस० सञ्चारण्यात् समिध आहृत्य तस्मिन्नग्नौ पूर्ववदाधाय वाचं विसृज्यत (६)** अहिंसन् अच्छिदन्नस्यय भ माइत्यर्थ अरण्याद्ग्रामात् समिध सलक्षणा आहृत्य आनीयस्तस्मिन्नग्नौ

यत्र उपनयनाग्निहोम कृत स्तस्मिन्पूर्ववत् परिसमूहनादि न्यायुष्करण न्त यावदाधाय हुत्वा वाचं विसृजते मौनं त्यजति वा यमपक्षे (अध शाय्य क्षारालवणाशीस्यात् । १०) (दंडधारणमग्नि परिचरण गुरुशुश्रूषाभिक्षाचर्या ।११॥) मधुमांस० समंज्जेमां पर्यासनस्त्रीगमनानृता दत्तादानानि वर्जयेत् ।१२। अत ऊर्ध्वंब्रह्मचारिणो ग्मनियमानाह—अध शयितुंशीलमस्य असावध शायीस्यात् तथा अक्षारमलवणं चश्नातीत्येवं शीलोऽक्षारलवणाशी भवेत् । दंडधारणदण्डस्य स्व वर्णविहितस्यधारण कुर्यात् । दंडाजिनोपवीतानिमेखलाचैवधारयेत् । इत्येतदुपलक्षणत्वेन्सदाग्निहरूपकुर्यात् । अग्ने परिचरणंसायप्रात. परिसमूहनपूर्वन्यायुष कारण न्तेनसमिदाधानम् ॥ गुरुशुश्रूषागुरो शुश्रूषापरिचर्यांताकुर्यात् । भिक्षार्थचर्याभिक्षाचर्याभैक्षचरणमितियावत्-मधुक्षौद्र, मांसपललमञ्जनंनयनद्वाप्लवनम्, स्नानंतूष्दतोदवेनउपरिखट्वादौआसनमुपवेशनम् । आगमनह पोरिमसृरिवाधासनेवा स्त्रीगमनस्त्रीणांमध्यअवस्थाम्, अभिगमनस्यांपरिवक्ष्यमाणत्वात्, अनृतमसत्यवदनमदत्तादानापरद्र—व्याणा आदान ग्रहण स्तेयमित्यर्थ एतानिमध्वादीनिवर्जयेत (अष्टाचत्वरिंश०शद्वर्षाणि वेदब्रह्मचर्यं चरेत् ।१३।) अष्टाभिरधिकानि चत्वारिंशत् अष्टाचत्वारिंशत तानि वर्षाणि अब्दानि वद ब्रह्मचर्य वेद ग्रहणार्थं ब्रह्मचर्यमुक्तलक्षणम् चरत अनुतिष्ठेत् अस्मिन्पक्षे चतुर्णमपि वदानामेकेव व्रतादेश ॥ सर्वे वदा हुति होमश्च । (द्वादस द्वादश वा प्रतिवेदम् ।१४। यावद्ग्रहण वा ।१५।) अनुकल्पमाह—वात दुक्तौ द्वादश द्वादश वर्षाणि प्रति वदम् वदे वदे ब्रह्मचर्यं चरेदित्यनुवर्त्तते । तत्राप्यशक्तौ यावद् ग्रहणम् यावद् वेदस्य वेदयो वदानावाग्रहणं । आचार्यात्पाठतोऽर्थतश्च स्वाकरण तावद् वा ब्रह्मचर्य चरेत् । (वासांऽसि शाण क्षौमाविकानि ।१६।) वर्णव्यवस्थया परिधानवस्त्राण्याह—ब्राह्मण क्षत्रिय विशा ब्रह्मचारिणां यथा सख्य शाण क्षौमा विकानि वस्त्राणि परिधेयानि भवन्ति—तत्र शणमय शाण क्षौमं क्षुमा अतसी तद्विकारमयं—क्षौमं आविक अवर्मेषस्य विकार. आविकम् ऊर्णामयमित्यर्थ. (ऐणेयमजिनमुत्तरीय ब्राह्मणस्य ।१७।) एणी हरिणी तस्या. इदं एणीय अजिनं कृत्ति. उत्तरीयं भवति ब्राह्मस्य ब्रह्मचारिण. ॥ (रौरवंऽराजन्यस्य ।१८।) रुरुर्मृग विशेष चित्रमृग. इति प्रसिद्ध तस्येदमजिनं रौरवम् ॥ राजन्यस्य क्षत्रियस्यौत्तरीय भवति—(अथ आज गव्य वा वैश्यम् ।१९।) अजस्य यस्त्याज इदमाजम्—अजिनं कृत्ति अथवा गव्यं गो इद गव्य अजिनं वैश्यस्योत्तरोय भवति (सर्वेषां वा गव्यमद्दति प्रधानत्वात् ।२०।) पक्षान्तर माह—सर्वेषा ब्राह्मण क्षत्रिय विशा गव्यमजिन वा उत्तरीयं भवति वदा —भवति गुरु व प्रयिमन, कुत. प्रधानत्वात् ॥ गव्यंहि अजिनानां प्रधानम्, एणयादेजिनप्रभृतीनामेणेयादीना गो: प्राधान्य यत.

प्रदूवा गव्यस्य चर्मण. पुरुष सं वधितेन प्रधानत्वात्, तथा च श्रुति. तद्देच्छाय पुरुषं गव्येतां त्वचमश्नुः इति ॥ (**मौंजी रशना ब्राह्मणस्य ।२१।**) (**धनुर्ज्या राजन्यस्य ।२२।**) (**मौर्वी वैश्यस्य ।२३।**) (**मुञ्जाभावे कुशाश्मन्तक वल्वजानाम् ।२४।**) मौंजी मुंजः तृणविशेषः तन्मयी मौंजी रशना मेखला ब्राह्मणस्य ब्रह्मचारिणोभवति धनुर्ज्या चापस्यज्या गुणाः रसना राजन्यस्य ब्रह्मचारिणः मौर्वी तृण विशेषस्तन्मयी रशना वैश्यस्य भवति । मुंजस्याभावेऽलाभे ब्राह्मणस्य कुशानां कुशमयी रशना भवति । धनुर्ज्याया अभावे क्षत्रियस्य अश्मन्तक मयी भवति । मौर्व्यभावे वल्वजी वैश्यस्य मुंजाभवस्वन्दोष्म धनुर्ज्या मौर्व्य भावोपलक्षणार्थः । (**पालाशो ब्राह्मणस्यदण्डः ।२५।**) (**बैल्वोराजन्यस्य ।२६।**) **औदुम्बरोवैश्यस्य ।२७।** (**सर्वे वा सर्वेषाम् ।२८।**) सच वेश संमितः पादादि वेश मूलावधि प्रमाणकः पालाशदंडो ब्राह्मणस्य । बैल्वः बिल्ववृक्षोद्भवः क्षत्रियस्यललाट संमित. ललाटावधि प्रमाणोभ्रू मध्यावधि रित्यर्थः । उदुम्बर वृक्षोद्भवो वैश्यस्य ब्रह्मचारिणोमुख संमितः । ओष्ठपुटावधिः दण्डः । स्यु वा सर्वेषां ब्राह्मण क्षत्रिय विशां ब्रह्मचारिणां सर्वे पालाश बैल्वोदुम्बराः अनियमेन दंडाभवन्ति, नियमोऽत्र नास्ति मुख्यालाभे यथालाभ मुपादेयम् । (**आचार्येणाहूत उत्थाय प्रति शृणुयात् ।२९।**) आचार्येण गुरुणा आहूत. आकारितः उत्थाय उर्ध्वीभूत्वा प्रति शृणुयात् प्रति वचनं दद्यात् ब्रह्मचारी । (**शयानं चेदासीन आसीनं चेत्तिष्ठंस्ते तिष्ठंत चेदभिक्रामन्तं चेदभिधावन् ।३०।**) चेदादि शयानं स्वपन्तं ब्रह्मचारिणं गुरुराह्वयति तदासीन उपविष्ट सन् प्रति वचनंद्यात । आसीनमुपविष्ठ चेदाह्वयति तदातिष्ठन्नुत्थित यदि तिष्ठन्तमुद्दिश्यमाहूव्यति तदा अभि क्रामन् गुरुमभिमुखं गच्छन् प्रति शृणुयात । अभिमाक्रान्तमभिमुखमागच्छन्तमाचार्यः ब्रह्मचारिणं यदि आह्वयति तदा स ब्रह्मचारी अभिमुखं धावन् सन् प्रतिशृणुयात् (**स एवं वर्तमानोदमुत्राध वसतीति ।३१।**) स ब्रह्मचारी एवमुक्तेनमार्गेण ब्रह्मचर्ये वर्तमानस्तिष्ठन् अमुन स्वर्गे अथ इहैव स्थित सन् वसति तिष्ठति । द्विरुक्ति रहस्यार्थ. ॥ (**तस्यस्नातकस्य कीर्तिभवति ।३२।**) तस्य ब्रह्मचारिणः स्नातकस्य समावृतस्य कीर्तियशोभवति । (**त्रयः स्नातकाः भवन्ति विद्यास्नातको व्रतस्नातको विद्याव्रत स्नातकः, इति ।३३।**) त्रयः त्रिप्रकारा. स्नातकाः भवन्ति कथं एको विद्यास्नातकः अपरो व्रतस्नातक अन्यो विद्याव्रत स्नातकः (**समाप्य वेदमसमाप्य व्रतंयः समावर्त्तते स विद्यास्नातकः ।३४।**) (**समाप्य व्रतं असमाप्य वेदम्यः समावर्त्तते स व्रतस्नातक. ।३५।**) (**उभयञ्च समाप्य यः समावर्त्तते सविद्याव्रत स्नातकः, इति ।३६।**) समाप्य समाप्तिंपठतोऽर्थतश्च अवसाननीत्वा वेदं वेदम्य मत्र ब्राह्मणात्मिकामेवां शाखां य समावर्त्तते स्नाति स ब्रह्मचारी

विद्यास्नातका भवति एव समाप्य व्रत द्वादश वार्षिकादिक ब्रह्मचर्यं असमाप्य असम्पूर्णमधीत्य वेदं एकां शाखायो ब्रह्मचारी समावर्त्तते स्नान करोति स व्रतस्नातकोभवति । उभय वेदं ब्रह्मचर्यं च समाप्य अन्तनीत्वा य स्नाति स विद्याव्रत स्नातको भवति । (आषोडशात् वर्षा द्ब्राह्मणस्यानतीतःकालोभवति ।३७।) (आद्वाविंशाद्राजन्यस्य ।३८।) (आचतुर्विंशाद् वैश्यस्य ।३९) उपनयन तस्यपरमावधिमाह आषोडशात्षोडशात्वर्षात् प्राक् ब्राह्मणस्यविप्रस्यानतीत नअतीत उपनयनस्यकाल समयोभवति । आद्वाविंशात्द्वाविंशात्वर्षात् पूर्वंचक्षत्रियस्य, आचतुर्विंशात्, चतुर्विंशतिवर्षादर्वाक् वैश्यस्यउपनयनकाल अनतीतोभवति भवतीतिसर्वेत्रसम्बध्यते (अतऊर्ध्वं पतितसावित्रिकाभवन्ति ।४०।) अत पचदशात्,एकविंशतात् त्रयोविंशाद्वर्षादूर्ध्वंअनुपनीता ब्राह्मणक्षत्रियवैश्या यथासख्यंपतितसावित्रीका पतिताः स्खलिता अधिकारभ्रष्टा निवृत्ता सावित्री गायत्री येषा तेपतितसावित्रीका भवन्तिसम्पद्यन्ते नैना नुपनयेयुर्नाध्यापयेयुर्नयाजयेयुर्नचैभिर्व्यवहारयेयु ४१) सतान्पतितसावित्रीकानुनउपनयेयु उपनयन सस्कारेण न सस्कुर्यु शिष्या । केचिद्वदति व्रात्य स्तोमेन यजेत् उपनीतानपि न अध्यापयेयु न वेद पाठ्ययेयु । तथा न याजयेयु । केचिद्वदति व्रात्य स्तोमेन वेद मध्यापितानपि न याजयेयु न यज्ञं कारयेयु । एभि पतित सावित्रीकै अनुपनीतै रुपनीतैर्वा सह न व्यवहरेयु ॥ न व्यवहरेत् (स्नानाशयनभोजनविवाहादिभि कर्मभिर्नव्यवहारंकुर्यु ॥—कालातिक्रमेनियतवत् ।४२।) गर्भाधानादीनिउपनयनान्तानि कर्माणिनियतकालान्यभिहितानि यदिदैववशादा-त्पुरुषापराधाद्वादोषाद्वातेषांनियतस्यकालस्यातिक्रमोभवति।तदाकिंकर्त्तव्यमितिमन्देह निर्णयमाह—कालातिक्रमेयस्यसस्कारकर्म्मणः शास्त्रेनियमितोयकाल तस्यातिक्रमेलङ्घनेनियतवतन्नित्यवत् नित्येश्रौतकल्पेनित्येषु यद्विहितंतद्वत् अनादिष्टप्रायश्चित्तंभवति । तत कृतप्रायश्चित्तस्यातिक्रान्तकालेसंस्कारकर्मण्यधिकार सम्पद्यते । अनादिष्टप्रायश्चित्तेपि कर्त्तव्यतापंचमकण्डिकान्तेऽरच्यते । अत्रकालादिक्रमइत्युपलक्षणम् अत अन्येषामपिकर्मणां नाशेइदमनादिष्टमेवसर्वप्रायश्चित्तंप्रकारेण प्रायश्चित्तान्तस्यानुपदिष्टत्वात् । किन्तुश्रौतानामतिदेशप्राप्तेअविज्ञातेप्रतिमहाव्याहृतिभि सर्वभिश्चतुर्थेर्ऽसर्वप्रायश्चित्तचेत्यस्यैवकालातिक्रमेनियतवदित्यनेनातिदेश कृतोनत्वेवेदा गृह्यकर्मणत्वाविज्ञानप्रत्यक्षश्रुतिमूलम् । किमिदमार्चंवेदिकम्सामवेदिकयाजुर्वेदिकंवेत्यनिश्चिय स्मार्त्तकर्मत्वाच्चश्रेयश्रौतकल्पेव्याहृति चतुष्टयं पैन पारण होम प्रायश्चित मुदिष्टमन्न गृह्यसूत्रे गृह्योक्त कर्मणामपि स्मार्तत्वात्तद् श्रेपे तस्यैवाति वशो मुख्ो न पुन प्रयत्न वेद मूल कर्म श्रेयादिष्टानाम्—कारिकायाम्—मुख्य कालेनैव कर्म कर्तु यदि न शक्यत, गौणकालेपि कर्तव्यं तदनादिष्टपूर्वकम् ॥ (त्रिपुरुष पतित सावित्री काणामपत्य स ंस्कारो ना ध्यापनं च ।४३।) इदानीं पतित सावित्रीक विषये

संस्कार प्रति प्रसवमाह त्रिपुरुषं त्रीन् पुरुषान् यावत् ये पतितसावित्रीकाः पितृ पुत्र पौत्राः तेषाम-पत्यं पुत्रे संस्कारः उपनयन भवति, न पुनश्चतुर्थादीनाम् । तेषां च उपनीतानामपि, अध्यापनं न भवति, निषिद्धस्य पुनरनुज्ञापनं प्रति प्रसव इति । उपनयनस्यैव प्रति प्रसवात्॥ (**तेषा ॐ स ॐ स्कारेप्सुर्व्रात्य स्तोमे नेष्ट्वा काममधीयीरन्व्यावहार्या भवन्तीति वचनात् ६४॥**)

तेषां सावित्री कालणमध्येयः संस्कारयितुं कामः स व्रात्य स्तोमेन यज्ञ विशेषेण इष्ट्वा व्रात्य स्तोमं यज्ञं कृत्वा व्यवहार्यो भवति उपनयनादि संस्कार योग्यो भवति, तस्मात् कामभिच्छया व्रात्यस्तोमे नेष्ट्वा अधीयीरन् वेदं पठेयुः, व्यवहार्याः लोके दिक्षाना मध्यापनादिषु कर्मसु योग्याः भवन्तीति वचनात् श्रुतेः । **इति पंचमी कण्डिका** । अथेदानीं मदंधार्थः पत्रि सावित्रीक । विषय प्रसंगात्-स्मृत्यं तरोक्ता अपि असंस्कारा लिख्यन्ते ॥ पंगन्धबधिरस्तब्धं जडगद्गद पंगु कुब्ज वामन रोगार्त शुष्कांगिविकलाङ्गिषु ॥ **प्रयोग परिजायते**—ब्राह्मण्यां ब्राह्मणजातो ब्राह्मणः स इति श्रुतिः तस्मान्च पंढबधिरकुब्ज वामनपंगु जड गद् गद् रोगार्त शुष्कांग विकलांगिषु । मत्तोन्मत्तेषु मूकेषु शयनस्थे निरिन्द्रिये । ध्वस्त पुंस्त्वेषु चैतेषु संस्काराः स्युर्यथोचितम्—**मत्तो-न्मत्तौ** न संस्कार्यौ चिति केचित्प्रचक्षते । कर्मस्वन धिकारश्च पतितत्वं नास्ति चैतयोः॥ तदपत्यं च संस्कार्यमपरेत्वाहुरन्यथा ॥ संस्कार मन्त्रहोमादीन् करोत्याचार्य एवतु आनीयाग्नि समीपं वा सावित्रीं स्पृश्य वा जपेत् ॥ कन्यास्वीकरणादन्यत्सर्वं विप्रेण कारयेत । एवमेव द्विजैर्जातौ-संकार्यौ कुण्ड गोलकौ ॥ **स्मृत्यर्थसारेप्येवम् आपस्तम्बः**-शूद्राणामदुष्ट कर्मणामुपनयनम् । इदं च रथ कारस्योपनयनम् तस्य च मातामहो द्वारकं शूद्रत्वं अदुष्ट कर्मता गुरुस्थानादि रहितानामिति विष्णु — नापरीक्षितं याजयेत नाध्यापयेन्नोपनयेत । **अत्र शौनकः**:—अ रम्भावान मार्गोसस्क ऽऽ-तीतेषु कर्मसु आहृत्याज्यं सुसंस्कृत्य हुत्वासर्वं यथा क्रमम् ॥ एकैकस्य तो पेतु पाद कृच्छ्रं समाचरेत—चूडाया अर्द्ध कृच्छ्रं स्यादापदीत्येव भोरितम्—अनापादि तु सर्वत्र द्विगुणं त्रिगुणं चरेत॥ लुप्ते कर्मणि सर्वत्र प्रायश्चितं विधीयते । प्रायश्चित्ते कृते पश्चात लुप्तं कर्म समाचरेत । आश्वलायन कारिकायान्तु–प्रायश्चित्तेकृतेऽतीतं कर्म कृताकृतमित्युत्तम्–प्रायश्चित्ते कृते पश्चादती-तमपि कर्मचे ॥ कार्यमित्येके, आचार्याः नेत्यन्येतु विपश्चितः—मंडनस्तु कालातीतेषु सर्वेषु प्राप्त वस्त्वपरेषु च कालातीतानि कृत्वैव विदध्यादुत्तराणि तु—**अथ पुनरुपनयनमाह**—मनुः अज्ञाना-त्प्राश्य विण्मूत्रं सुरा संसृष्टमेव च । पुनः संस्कार मर्हन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः । "**चन्द्रिकायां बौधायनः**" सिन्धु सौवीर सौराष्ट्रान् तथा प्रत्यन्तवासिनः, अंगवंग कलिंगांश्च गत्वा संस्कार-मर्हति—**हेमाद्रौ पाद्मे**—प्रेत शय्याप्रति ग्राही पुन. संस्कारमर्हति **वृद्धमनु**.—जीवन् यदि समागच्छेद् घृत कुम्भे निमज्य च । उद्धृत्य स्नापयित्वास्य जात कर्मादि कारयेत—**मिताक्षरा**-

यां पराशरः—यः प्रव्रजितो विप्रः प्रव्रज्यातोविनिर्गतः—अनाशकनिवृत्तश्चगार्हस्थ्यं चेच्चिकीर्षति—सचरे त्त्रीणि कृच्छ्राणि त्रीणि चान्द्रायणानि च । जातकर्मादिभिः सर्वैः संस्कृतः शुद्धिमाप्नुयात—शतातपः—लशुनं गृंजनं जग्ध्वापलाडुं च तथा शुनं ॥ उष्ट्र मानुष के भक्ष्य रासभी क्षीर भोजनात् उपायनं पुनः कुर्यात् तप्त कृच्छ्रं चरेन्मुहुः । त्रिस्थली सेतौ—कर्म नाशा जलस्पर्शात करतोया विलंघनात् ॥ गंडकीबाहु तरणात् पुनः संस्कारमर्हति—इति पुनरुपनयनम् ।

अथ वेदारम्भ सूत्र व्याख्या ।

सूत्र कारेण ब्रह्मचर्यचरितव्रत निरूपणप्रकरणे (अष्टा चत्वारिंशद्वर्षाणि वेदब्रह्मचर्यं चरेत्) कां० २ कं० ५ सू० १३ पा० गृ० (द्वादश द्वादश वा प्रति वेदम् ।१४।) वेदाभ्यासे नैव ब्रह्मचर्यं चरेदिति निरूपितम् । वेदारम्भ कर्मणः पृथक् काल कर्मणि नोक्ते उपनयन निरूपणा नन्तरं समावर्तन कर्मैव सूत्रितम् । वेदंसमाप्य स्नायात् कां० २ कं० ६ । पा० गृ० सू० ॥ अत्र सूत्रे वेद समाप्ति विनासमावर्तनस्यानधिकारः सम्पद्यते—अतः उपनयनान्तरमेव वेदारम्भ कालोऽव गम्यते अतः उपनीय गुरुः शिष्यं महाव्या हृतिपूर्वकम् ॥ वेदमध्यापयेदेनं शौचा चारांश्च शिक्षयेत् ॥ अध्ययनारंम्भस्तु प्रथमंस्व वेदस्यैव कार्यः—उक्तं च संस्कार प्रकाशे वशिष्ठः—यच्छाखीयैस्तु संस्कारैः संस्कृतो ब्राह्मणोभवेत् । तच्छाखाध्ययनं कार्यमन्यथापतितोभवेत् । अधीत्यशाखामात्मीयांपरशाखां ततः पठेत् । पारम्पर्यगतोयेषांवेदः सपरिबृंहणः । तच्छाखंकर्मकुर्वीत तच्छाखाध्ययनं तथा । सर्वमध्ययनंकुर्वन् ब्रह्मसायुज्यमाप्नुयात्—एतदेवमतावेशन विसर्गंतु । इति उपाकर्म होमातिदेशाद्वतादेशनेवेदारम्भे प्राप्नोति । इति गुरोः उपनयनान्तरं वेदाध्यापन विधानाच्चउपनयनोत्तर कालेपुण्येऽहनि मातृपूजापूर्वकं वेदारम्भ निमित्तमाभ्युदयिकश्राद्धमाचार्यो विधाय उपनयनान्तरं संल्लग्नेन वा पंचभू संस्कारपूर्वकं लौकिकाग्निंस्थापयित्वा ब्रह्मचारिणमाहूय—अग्नेः पश्चात् स्वस्योत्तरतः उपवेश्य ब्रह्मोपवेशनाद्याज्यभागान्तंहुत्वा, यदिऋग्वेदमारभते तदापृथिव्यैस्वाहा अग्नयेस्वाहा इति द्वेआज्याहुतीहुत्वा ब्रह्मणे छन्दोभ्य इत्याद्यानवाहुतीर्हुत्वा शेषंसमापयेत यदियजुर्वेदंतदाज्यभागान्तरं अन्तरिक्षायस्वाहा, वायवेस्वाहेतिविशेषः । यदा सामवेदंतदाज्य भागान्तरं दिवेस्वाहा सूर्यायस्वाहेतिविशेषः । यदाथर्ववेदं तदाज्यभागान्ते, दिग्भ्यः स्वाहा—चन्द्रमसेस्वाहेति विशेषः यद्येकदा सर्ववेदारम्भ स्तदाज्यभागानन्तरं क्रमेणप्रतिवेदं वेदाहुति द्वयंद्वयंहुत्वा ब्रह्मणेछन्दोभ्यः इत्याहुतिद्वयं च हुत्वा । प्रजापतये इत्याद्याः समस्तमन्त्रेण जुहुयात् । अनन्तरं महाव्याहृत्यादि स्विष्टकृन्ता दशाहुतीर्हुत्वा प्राशनंविधाय पूर्णपात्रवरयोरन्यतरं ब्रह्मणे

दत्वा ब्रह्मचारिणे यथाविधिवेद मध्यापयितुमारभेत । शेषं पद्धतौ स्पष्टम् । इति वेदारम्भ व्रत देश निर्णयम्। अत्र गदाधर भाष्यकारेण ब्रह्मचारि व्रतलोपे प्रायश्चित्तम् आग्नेयं शुक्रियम्, औप-निषदं । शीलभं । गोदानेनेति पञ्च व्रत न्युक्तानि ग्रन्थविस्तार भयादिह नोच्यन्ते तत एवज्ञातव्यानि।

(अथ समावर्तन सूत्रव्याख्या)

(वेद ँ० समाप्यस्नायात् ॥१॥) ब्रह्मचर्यं वा ऽष्टाचत्वारि ँ० शकम् ॥२॥ वेद मंत्रब्राह्मणात्मक समाप्य सम्यक् पठित्वार्थश्चान्तं नीत्वा स्नायाद्वक्ष्य माणेनविधिना स्नानं कुर्यात् अथवा ब्रह्मचर्य व्रतं अष्टाचत्वारि ँ० शकं अष्टाचत्वारिंशद् वर्ष निवर्त्य समाप्य अवसाने प्राप्य गुरुणानुमतः स्नायादिति सम्बन्धः (**द्वादशकेऽप्येके** ॥३॥) एके सूत्रकाराः द्वादशकेपि द्वादशवर्ष समाप्येऽपि व्रते, चरिते स्नायादित्यनुषज्यते । (**गुरुणानुज्ञातः** ॥४॥) अनासुज्ञित मपि उभयवेदं व्रत च व्यसनाप्य स्नायादित्यनुषज्यते यतः पूर्व स्नातकस्य विध्युक्तम् (**विधि-र्विधेयस्तर्कश्चवेद:** ॥५॥ वेद ँ० समाप्य स्नयात् इत्युक्तं तत्रवेद शब्देन किमुच्यते इत्यतआह विधत्ते इति विधीयते इतिवाविधि: दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत् । अग्निहोत्रं जुहुयात् इत्यादि विधायक ब्राह्मणात्मम् । विधयितेविनियुज्यते ब्राह्मणा वाक्येन कर्माङ्गत्वेनेति विधयो मंत्रः इत्यादि: तर्क-शब्देनार्थवादोऽभिधीयते यथाक्ताः शर्करा उपदधातितेजोवैघृतम्, इति अंजने तैलवसादिरपि संभवति, तत्र तेजोवै घृतमितिघृत संस्तवात्तवर्यते घृताक्ताः इति तेनविध्यर्थः पादमन्त्रा त्रिदशाब्देना-भिधीयन्त इत्युक्तम् तर्ककल्पभागमितिभर्तृयज्ञः । तर्कमीमांसेतिकल्पतरुः च शब्दान्नामधेयसंग्रह इति हरिहर: (**षडंगमेके.** ॥६॥) एके सूत्रकाराः षडगंवेदं समाप्यस्नायादित्याहुः । षट् शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त: जोतिषछन्दास्यंगानियस्यवेदस्यषडंगः सषडंगम् । (नकल्पमात्रे) कल्प-मात्रे ग्रन्थमात्रे मंत्रे वा ब्राह्मणे वा अधीते न स्नानमिच्छन्ति । कल्पमात्राध्ययनस्य मनुष्यानायोग्य-त्वात् । यतः अथातोऽधिकार अथातोधर्मजिज्ञासा, अथातोब्रह्मजिज्ञासा, इत्यादिभिरधिकारसूत्रैः अधीतसकलवेदस्याग्नि होत्रादिकर्मस्वधिकार, इत्याचार्यैर्वर्ण्यते (**कामन्तुयाज्ञिकस्य** ॥७॥) तुशब्द: पक्षव्यावृतौ। काममिच्छया याज्ञिकस्य आचार्यवादियज्ञ विद्याकर्मकुशलस्य स्नानमिच्छन्ति अयमर्थ. मंत्रब्राह्मणात्मकवेदमधीत्य अवबुध्यच स्नायादित्येकः पक्षः सांग वेदमधीत्यानुबुध्य च स्नायादिति द्वितीय. प्रथम.ग्रमप्यधीत्य यज्ञ क्रियां चाभ्यास्य स्नायादिति तृतीय:, यज्ञविद्याविर-हेणग्रन्थमात्रे अधीते न स्नायादितिनिर्णय. । यतोवेदाध्ययन वेदविहिताग्निहोत्रादि कर्मानुष्ठान प्रयोजनम् । (**उपसंगृह्य गुरु ँ० समिधोऽभ्याधायपरिश्रितस्योत्तरतः कुशेषुप्रागग्रेषु स्थित्वा ष्टानां मुदकुम्भानामं अन्यस्यन्तरस्मिन्यः प्रविष्टागोह्यउपगोह्यमियूखो**

मनोहास्सरलोंविरजस्तनूदूपु रिन्द्रियहातान्विजहामियोरोचनस्तमिह गृह्णामीत्येक रम दघोगृहीत्वातेनाभिषिंचते तेनमामभिषिंचामिश्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसा- येति ॥६॥) स्नायादित्युक्त तत्र कथस्नायादित्यपेक्षितेआह उपसगृह्यउपसंग्रहण विधिना गुरुप्रणम्य आचार्य समिधस्तिस्र परिसमूहनादि त्र्यायुष करणान्तेन विधिना आचार्यनिर्णीतेत समावर्तनाग्रहोम नौ अथयप्रक्षिप्य अनसमिधोऽभ्याधायत्युक्तम् समिधाधान क्रियेदा हुत्यादि समावर्त होमत्पूर्व उतातश्चात । वदाहुति होम कृत प्रश्नः इति चेत् । एतदेनमतादेशनविसगच्छ्रयतिवेशात, पूर्वमवउपसगृह्यगुरव०समिधोभ्याध्यायतिपाठात् समिदाधाना नन्तरवदाहुतीन मवसरइतिगम्यते, नैतव्वम् [illegible]त्याहिवदाहुतीनामवस्र० समिदाधानत्पूर्वं, समि दाधानपश्चात्पूर्वमितिक्रमस्यज्ञापितत्वात कथस्य मुपयनरामिधम दधातिसाप्रायणीया, यार्ट०स्ना स्य त्सौदनीया, इतिश्रुते तस्म तत्समावर्तनन्तद्धोमन्ते उपसङ्ग्रहणादि परिश्रितस्य परिवृति स्यसर्वत प्रच्छादितस्य समावर्तनागहोम साधन निस्थापन प्रदरस्यउत्तरस्मिन्भागे प्रागग्रेषु कुशेषु आस्तीर्णेषु व्रप्र [illegible] शि, तथाम्, अष्टान्मुदकुम्भानां दक्षिणोत्तरा [illegible]तानमष्ठसरव्यानानमन्ल जल पूर्णान मात्र दिक्षुभपतवमुखाना [illegible] त्वा उर्द्धीभ्यथक्रपत्व तरन्य,, त्यादिनाम् [illegible]ण, तमिहगृह्ण ामि [illegible]एकस्मात् प्रथम तिद्मवाप्ता [illegible] दिति यावत दक्षिणस्थप्रथमत्वक्रम पलद्दिणा दत्तोनगृहीत्वा तज्जल० अभिषिञ्चते । अभ्युदया मानशिरत स्नान्कत तत्रम [illegible] तनमामभिषिंचा मित्यय दिब्रह्मवर्चसायेत्यत ।—(द० श्रियमष्ट एतादनावमृश तार्थ्राम, यशाच्छावश्य पिंचतायदवातदद्विपनायशइति—आपोहिष्ठे तिचप्रत्यृचम्, त्रिभिस्तूष्णीमितरै ॥१०॥)

एवएकोदकुम्भजलसाध्यस्नानमभिवाय इतरस्पतोदकुम्भजलस्नान मान्त्रविशेषाभिधानात् । यन्त्र तरन्य , इत्ययमव सर्वौकुम्भजलग्रहणसाधारणे । मन्त्रतिप्रतीयते, तत सवर्योद्वितीया दिकुम्भेम्य प्रत्येक, येअरवत ति[illegible] समादाय वक्ष्यमाणमन्त्रैर्यथाक्रमभिषिंचत। तद्यथायनि य मितिद्वितीयम् आपोहिष्ठेतितृतीयम्, य व शिवचतुर्थम् तस्मादरगमितिपञ्चमम्, तूष्णीमितराणि त्रीणिस्नानानि (उदुत्तममितिमेखलामुन्मुच्यनिधाय वासोन्यत्परिधाय दिव्यसुपतिष्ठते उद्यन्भ्रा र भ्रगरिन्द्रोमरुद्भिरस्थात प्रातर्यावभिरस्थाद्दशसनिरसि दशसनिमाकुरु विदन्मय । उद्यन्भ्राजभृष्णु रिन्द्रोमरुद्भिरस्थाद्दिवा । पवभिरस्थच्छतमनिरसि, शतसनिमा कुर्वाविदन्म गमय । उद्यन्भ्राजभृष्णु रिन्द्रोमरुद्भिरस्थात्सायं, यवभिरस्थाद्[illegible] सहिसिसहस्रसनिमाकुर्वा विदन्मागमयइति ॥११॥)

[illegible]तमसितिमन्त्रेणमस्तकात्स्वलादुन्मुच्य, [illegible] शिरोमार्गेणनिसार्यताच भूमौनिक्षिप्य- न्यद्वासपरिधाय आदित्यमुपतिष्ठते उदयान्भ्राजभृष्णुरिति मन्त्रै [illegible] ॥ (दधितिल- मप्राश्यजटा लोमनखानिसंहृत्यौदुम्बरेण दन्तान्धावेत— अन्नाद्याय व्यूहध्वं०

सोमोराजायमागमत्। समेमुखम्प्रमार्दयं तेयशसाचभगेनचइति ।१२।) ततोऽधि-तिलानमन्त्रकृत—प्राश्यमाशित्वा जटाश्च लोमानिच नखानिचजटालोम नखानि संहृत्य दृढं च प्रथिरनेत्यर्थः । (संहृत्येतिशिखोलोपर्यग्छा...) स्वयंसंहर्तुमशक्तत्वात्। औदुम्बरेणद्वादशाङ्गुल सम्मितेन कनिष्ठिकाप्रवत्स्थूलेनउदुम्बरकाष्ठेन अन्नाद्य यच्युः... मितिमन्त्रेण दन्तान्धावयेत्प्रक्षालयेत्। ब्राह्मणोद्वादशाङ्गुलेन, राजन्योदशाङ्गुलेन, वैश्योऽष्टाङ्गुलेन, इतिविशेषः अजटा लोम नख वपन निमित्ता दुत्तरप्रपुनःस्नात्वेति—पुनःशब्दसामर्थ्याच्चस्नानमाप्यते। अतोऽनन्तरं स्नानाचमनं विधाय दन्तान्प्रक्षालयेदितिसिद्धम् । (उत्साद्यपुनःस्नात्वाऽनुलेपनम् नासिकयोर्मुखस्यचोप-गृह्णीते । प्राणापानौमेतर्पयचक्षुर्मेतर्पयश्रोत्रंमेतर्पय इति ।१३।) उत्सादसुगन्धिद्रव्येण शरीरं मुद्वर्त्यपुनर्भूय स्नात्वाशिरः प्रभृतीन्यङ्गानिप्रक्षाल्य अनुलेपनंचन्दनादि मुखनासिकयोश्चउप गृह्णीते। मुखनासिकयोश्चाऽनुलिम्पति । प्राणापानौमेतर्पयेत्यादिना । श्रोत्रंमेतर्पयदित्यन्तेनमन्त्रेण ।

पितरः शुन्धध्वमितिपाणयोरवनेजनं दक्षिणानिषिच्यानुलिप्यजपेत् सुचक्षा अहमक्षीभ्यांभूयासं सुवर्चामुखेन सुश्रुत्कर्णाभ्यांभूयासमिति ।१४।) ततः पाण्योरवनेजनम्— हस्तयोः प्रक्षालनमुदकेन... पितरःशुन्धध्वमित्यन्तेनमन्त्रेण प्राचीनावीती दक्षिणाभिमुखो—भूत्वा। दक्षिणस्यादिशि निक्षिप्यप्रक्षिप्य यज्ञोपवीतीभूत्वा पितृकर्मकरणनिमित्तकं उदकस्पर्शंविधाय चंदनादिना-सुगन्धिद्रव्येण गात्राण्यनुलिम्प्य । सुचक्षा अहमक्षीभ्यामित्यादि भूयासमिति—अन्तं मन्त्रं जपेत् ।

(अहतंवासोधौतम्वाऽनेनाच्छादयीत—परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरद्-ष्टिरस्मि । शतञ्चजीवामिशरदः पुरूचीरायस्पोषमभिसंव्ययिष्य इति ।१५।) ततः अहतंनवंमशपवित्रंवस वसनम्, आच्छादयीतपरिदधीत। तदलाभेऽऽन्यधौतेन अरजकेनधौतंक्षालितं। परिधास्यइत्यादिनाअभिमन्त्रयित्वा—इत्यन्तेनमन्त्रेण (अथोत्तरीयम्—यशसामाद्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती । यशोभगश्चमाविन्दद्यशोमाप्रतिपद्यतामिति ।१६।) अथपरिधेय परिधानन्तरं तादृगमेवोत्तरीयवासः यशसमेत्यादि यशोमाप्रतिपद्यतामित्यन्तेनमन्त्रेण अच्छादयीत पूर्ववदाचमेत् । (एकंचेत्पूर्वस्योत्तरवर्गेणप्रच्छादयीत ।१७।) चेद्यदिएकमेववासोभवति तदपूर्वस्यैव परिधानीयस्यवसन उत्तरवर्गेणउत्तरभागे प्रच्छादयीत पूर्वोक्तेनैवमन्त्रेण । (सुमनसः प्रतिगृह्णाति—याआहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय ताअहंप्रतिगृह्णामि यशसाचभगेनचेति ।१८।) सुमनसः पुष्पाणिप्रतिगृह्णाति अन्यदत्तान्यादाय याआहरदित्यादि ... भगेन चेत्यन्तेन मन्त्रेण । (अथवा बध्नीते यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु तेन सग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयीति ।१९।) अथवा प्रतिगृह्य अवयवपूर्णाशिरसि बध्नाति, यद्यशोऽ-

मरसा मिति मन्त्रेण (उष्णीषेण शिरोवेष्टते-युवासुवासेति ।२०।) उष्णीषेण पूर्वोक्त लक्षणेन तृतीयेनवाससा शिरो मूर्द्धनं वेष्टयते । युवा सुवासा इत्यादि कया वेष्टयन्त इत्यन्तयर्चा ॥ (अलंकरण मसि भूयोऽलंकरणं भूयादिति कर्णवेष्टकौ ।२१।) अलंकरणमसीति मंत्रेण दक्षिणोत्तरयो कर्णयो वेष्टकौ भूषणे प्रति मंत्र प्रति मुंचते परिधत्ते । (वृत्रस्येत्यक्षिणी आङ्क्ते ।२२।) वृत्रस्येत्यादिना चक्षुर्मेदेहि इत्यन्तेन मन्त्रेणयथाक्रम दक्षिणवामे मनाक्तया अक्षिणी अङ्क्ते सौवीराञ्जनेनमस्करोति ॥ (रोचिष्णु रसीत्यात्मानमादर्शे प्रेक्षते ।२३।) रोचिष्णुरसि इत्यन्तेन मन्त्रेण आत्मानं मुख प्रभृति शरीर-आदर्श—दर्पणे प्रेक्षते पश्यति । (छत्रं प्रति गृह्णाति-बृहस्पते च्छदिरसि पाप्मनो मामन्त र्धेहि तेजसो यशसो मान्तर्धेहीति । २४ ।) छत्रमातपत्र बृहस्पतेश्छदिरसि, इति मन्त्रेण परिगृह्णाति ॥(प्रतिष्ठेस्थो विश्वतो मापात मित्युपानहौप्रति मुञ्चते । २५ ।) प्रतिष्ठेस्थो, इति मन्त्रेण उपानहौ पादत्राणौ पादयो प्रति मुञ्चते मंत्रस्य द्विवचनान्तत्वात् परिधातुं सकृदुच्चार्य युगपदेवाभ्यो प्रतिमुंचत ॥ (विश्वाभ्योमा नाष्ट्राभ्यस्परिपाहि सर्वत इति वैणवं दण्डमादत्ते ।२६।) विश्वाभ्य, इत्यनेन मन्त्रेण वैणवं, वंशमयं दण्डयष्टि आदत्ते त चोत्तन्यायेन पूर्वदण्डं त्यक्त्वैव, इदमभिषेक प्रभृति दण्डग्रहणा त, कर्मैतत् स्नात कर्ता करोतिनाचार्य (दन्तप्रक्षालनादीनि नित्यमधिवाम च्छत्रोपानहञ्चापूर्वाणि चेन्मन्त्र । २७ । ६] दन्तप्रक्षालनम दी येषां पुष्पादीनां तानि दन्त प्रक्षालन दीनि नित्यमपि सर्वदा मन्त्रवन्ति स्नातस्य भवति, वासांसि च छत्रं च उपानहौ च वासश्छत्रोपानहं चकाराद्दण्डेपि सतानि चेदपि अपूर्वाणि नूतनानि क्रियन्ते गृह्यन्ते तदा मंत्रो भवति तद् ग्रहणे । २७ । इति षष्ठी कण्डिका ॥

अग्रे सप्त यष्ठयो कंडिकयो अध्ययण स्नातक नियमनिरूपणं कृत सूत्र व्याख्या प्रसंगात्तेषामपि—अत्रसंग्रहो भवितुमर्हति परञ्च समावर्तनपद्धतौ स्नातक प्रति आचार्यस्योप देशत्वात् पिष्टपेषणंमत्वा ग्रन्थविस्तार भयाश स्नातकस्य नियमान् प्रयोगे वक्ष्ये ॥

॥ इति समावर्तन सूत्र व्याख्या ॥

॥ अथउपनयनसंस्कारपद्धतिः ॥

तत्रब्राह्मणस्याष्टवार्षिकस्य क्षत्रियस्यैकादश वार्षिकस्य वैश्यस्य द्वादशवार्षिकस्यवा मङ्गलसंज्ञमुपनयनम् । अथोत्तरायणे पूर्वोक्त पुण्येऽहनि गणेशादि पञ्चांगपूजापूर्वकमाभ्युदयिकंश्राद्धं कृत्वायथा-

शक्त्या—ब्राह्मणान्गायत्रीनवग्रहादीनां जपकरणार्थंकृत्वाबहिः पूर्वोक्तांषोडशस्तम्भनिर्मितांशालांसम्पाद्यतत्र सर्वतोभद्र, ग्रह-यागभद्र वास्तुभद्रादींश्चनिर्माय सम्पूज्यच उपनयनात्पूर्वेऽन्हि ग्रहमखंकृत्वाहोमं समाप्ययदिकुमारः पूर्वोक्तसूत्रोक्तवर्षेभ्य उप-नयनमाचष्यतीतकालोवा पतितसावित्रीको वाजन्मादिचूडाकरणा न्तसंस्कारहीनश्चेत्तदा अनादिष्टसंज्ञकं प्रायश्चित्तमाचरेत, तस्या यंप्रयोगः—अथ अनादिष्टप्रायश्चित्तपद्धतिः—अथाचार्यः उपन-यनात्पूर्वाह्नेवटुनासह गणेशादिपूजास्थलमागत्य–आचम्यप्राणा-नायम्यप्रणम्यच—संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्य – अमुकोहंममास्या मुकराशेरमुककुमारस्य, गर्भाधानपुंसवन सीम-न्तजातकर्म नामकरण निष्क्रमणान्नप्राशन चौलकर्मान्तानां संस्का-राणां कालातिपत्तिदोषनिवृत्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अनादिष्ट प्रायश्चित्तहोमंकरिष्ये ततः पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निं स्थापयित्वा कुशकंडिकाविधिनासमित्प्रक्षेपणान्तं कर्मकृत्वा नवाहुतीर्जुहोति— ॐभूःस्वाहा ॐभुवःस्वाहा ॐस्वःस्वाहा ॐ भूर्भुवःस्वःस्वाहा त्व-न्नोअग्ने सत्वन्नोअग्ने ६अयाश्चाग्ने ७येतेशतं ८उदुत्तमं ९इतिनवा-हेति होमात्मकं प्रायश्चित्तंकुर्यात्। चौलातिरिक्त संस्काराणां प्रमा-दादकरणेप्रत्येकं पादकृच्छ्रं तस्मिन्नेवाग्नौ प्रतिसंस्कार नवाहुति होमं पृथक् पृथक् संकल्पं कृत्वा सकृदाचरेत्। चौलाकरणे कृच्छ्रं वटुनाकारयेत्। अशक्तौतत्प्रत्याम्नायत्वेन दशसहस्रगायत्री जपः जपदशांश तिलाज्याहुतिहोमं गोदानं द्वादश ब्राह्मण भुक्त्यादि एवंकं प्रायश्चित्तं कारयित्वा अतीतजातकर्मादीनि कृत्वोपनयन तंत्र समाचरेत्। अथोपनयनेनसह चौलकरणविधिः। यदि उप-नयनेनसह। चौलकरणं चेत्तदापूर्वेद्युः संस्कार द्वयंसंकीर्त्य युगपत् स्वस्तिवाचन ग्रहयज्ञ नान्दी श्राद्धादीनि कृत्वा तद्दिनेरात्रौ पूर्वो क्तकेशाधि वासनविधिना केशजूटिकागोदानानि कृत्वा परेद्युः पूर्वोक्तं चौलप्रयोगं विधिवत्सर्वंकृत्वा ततश्चौलान्त संस्कारान्ते कुमारस्य उपनयनानिमित्तकं वपनं कृत्वा वक्ष्यमाणविधिना उप-नयन संस्कारमाचरेत्। इत्युपनयनेनसहचौलकरणम्।

अथोपनयनपद्धतिः

अथच शुभेह्निजोतिर्विदादिष्टेप्रातःकुमारस्यवपनंकारयित्वा मंगल स्नानंहरिद्रादिभिःकारयित्वागणेशसन्निधावुपगम्य,आचम्य प्रणम्य च पूर्वदिने अकृतप्रायश्चित्तश्चेत्तदा कुमारेणापि कामाचार कामा वादकामभक्षणादिदोषापनोदनार्थं प्रत्याम्नायीभूतंकृच्छ्रत्रयं कार-येत् ततः कृच्छ्रत्रय प्रत्याम्नायी भूतानि त्रीणि सुवर्णखण्डानिवा प्रत्याम्नायीभूत द्रव्यं तिलोपरि पात्रे धृत्वा गंधादिना सम्पूज्य ब्राह्मणं च सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात । अद्येत्यादि अमुकराशिर-मुक शर्माहं कामाचार कामवाद कामभक्षणादि दोषानुपत्तये स्वस्य च उपनेयत्व सिद्ध्ये कृच्छ्रत्रय, गोत्रय, निष्क्रयी भूतानि सतिलानि सुवर्णखंडानि वरजित मुद्रिकाः अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दास्ये । ॐ तत्सन्नममेति दद्यात् । शक्तश्चेद् गोदान त्रयमेकं वा कुर्यात—अद्येत्यादि संकीर्त्यह्यमुकोहं—ममास्य कुमारस्यो पनयनकर्मणि तत्पूर्वांगतयात्रीन्ब्राह्मणानहं भोजयिष्ये-तत्पंक्तौ वटुं च पयसादिना भोजयेत् । भोजनोत्तरं वटुं स्नापयित्वा-अथाचार्यः पिता (क्षत्रियवैश्ययोस्तु पुरोहितादयः) उपनयन वेदीसमीपमागत्य उपनयन सामग्रीं सम्पाद्य उपनयन वेद्यां दक्षिण हस्तेन कुशैः परिसमुह्यपूर्वे क्षिप्त्वा गोमयोदकेनोपलिप्य स्रुवमूलेन प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, उल्लेखन क्रमेण नामि-कांगुष्ठाभ्यांमृदमुद्धृत्य जलेनाभ्युक्ष्य तैजसपात्रोपनीतमग्निं वेद्यां स्वाभिमुखे संस्थाप्य तद्रक्षार्थं द्रव्यं नियुज्य अग्नेः पश्चात् स्वासने उपविश्य ततः पर्युप्त शिरसमलं कृतं कुमारं वाद्यध्वनि मंगलपाठ पुरः सरं मण्डपस्य पश्चिम द्वारेणशालायां प्रदक्षिण मग्निं परिक्रममाणं आचार्यसमीपमानयन्ति । तत आचार्यः कुमारं स्वदक्षिणभागेऽग्नेः पश्चादुदङ्मुख मुपवेशयेत-संकल्पं कुर्यादा-चार्यः अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकोहं ममास्य पुत्रस्य (शिष्यस्य) वा बीजगर्भ समुद्भवैनोनिबर्हण पूर्वक श्रौतस्मार्त

कर्मानुष्ठान सिद्धि द्वारा, ब्रह्मवर्चोभि वृद्धये श्रीपरमेश्वर प्रीतये षोडश संस्कारान्तर्गतोपनयन सँस्कारं करिष्ये—ततो माणवकः स्मार्त्ताचमनं कृत्वा उदंङ्मुखेन बद्धांजलिः सन्नाचार्यं प्रेक्षते। ततः आचार्यो बद्धांजलिंकुमारं प्रति ब्रूयात् ।ब्रह्मचर्य मागाम्,—इतिप्रेषयति, ततो बटुः ब्रह्मचर्यमागाम्—इति वदेत् ॥ पुनराचार्यः, ब्रह्मचार्यसानीति पृच्छेत् बटुः-ब्रह्मचार्यसानीतिब्रूयात् ॥ अथैनंवासः परिधापयत्याचार्यः। तत्राचार्यः पठेत् ॐ येनेन्द्रा येत्यंगिरा ऋषिर्बृहत्ती छन्दोबृहस्पति देवता वासः परिधाने विनियोगः ॥ ॐ येनेन्द्रायबृहस्पतिर्व्वासः पर्य्यदधादमृतम् ॥ तेनत्वापरिदधाम्यायुषे, दीर्घायुत्वायबलाय वर्च्चसे, माणवकाय द्विराचमनं कारयेत्, अमन्त्रकम् ॥ *ततो माणवकस्य कटि प्रदेशे सूत्रोक्तां मेखलां मौञ्यादिकां आचार्यो बध्नीते, माणवकस्यैव मंत्रपाठः। इयं दुरुक्तमिति वामदेव ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो मेखला देवता मेखलाबन्धने विनियोगः॥ ॐ इयं दुरुक्तं परिबाधमाना स्वर्णंपवित्रंपुनतीमऽआगात् ॥ प्राणापानाभ्यां बलमादधानास्वसा देवीसुभगामेखलेयम् ॥ इति कटिप्रदेशे मेखलां त्रिरावेष्ट्य प्रवर संख्ययाग्रंथीः करोत्याचार्यः। युवासुवासः इतिमंत्रेण मेखला बंधनम् तूष्णीं वा (अत्र सूत्रकारेण शिखा बंधनं नोक्तम्—परंच सदोपवीतिनाभाव्यंसदाबद्धशिखेन च इतिकात्यायनः। स्मृत्वोंकारंचगायत्रीं निबध्नीयाच्छिखां ततः इतिवामदेवः इत्याचार्यो गायत्री मंत्रेण बटोः शिखाबन्धनं करोति॥ अत्रावसरे सूत्रकारेण-यज्ञोपवीताजिनधारणेनोक्ते, तथापि दंडाजिनोपवीतानिमेखलां चैवधारयेत्, याज्ञवल्क्यः—बिभृयाद्दंड कौपीनोपवीताजिनमेखलाः इति व्यासः। इति प्रमाणाभ्यां तेकार्ये) अथ यज्ञोपवीतधारण प्रयोगः (उक्तंचछन्दोगपरिशिष्टे—संकल्पः अद्येत्यादिदेशकालौ-

---

* मेखला सम हस्तास्या दजिनं तु द्विहस्तकं। वहिर्वाम र्व्यंगुलंच रोदैवं वा त्रिसंज्ञम। त्रिवृता मेखला कार्या त्रिवृ रं स्यात्सभावृता। तन्मंथयस्त्रय. कार्या पंचवासप्तवा पुन ॥ अत्र प्रवरसंख्या नियम इति वृद्धाः।

संकीर्त्य अमुकोऽहं ममास्यपुत्रस्य शिष्यस्य वा श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठान सिध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीतये उपनयन संस्कारकर्मणि यज्ञोपवीताभिमंत्रणंकरिष्ये ततः पूर्वोक्त प्रकारनिर्मित यज्ञोपवीतसूत्रे आदाय ३० इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिःविष्णुर्देवता गायत्रीछन्दः सूत्र त्रिगुणीकरणे विनियोगः ३० इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपाँसुरे स्वाहा इति मन्त्रेणएकं ब्रह्मजालेन एकं त्रिगुणंकुर्यात् । एवं द्वितीयमपि, प्रक्षालनम् ३० आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिः आपोदेवता गायत्री छंदः यज्ञोपवीत प्रक्षालने विनियोगः ३० अपोहिष्ठामयोभुवस्तानऊर्जेदधातनः महेरणाय चक्षसे । योवःशिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः । तस्माऽअरंगमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ आपोजनयथाचनः ततः प्रक्षालनादनन्तरं दशगायत्री मन्त्रैरभिमंत्र्य नवतन्तु देवता आवाहयेत् प्रथमतन्तौ ३० कारमावहयामि, द्वितीयतन्तौ ३० अग्निदूतं पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे देवां २ऽ।। आसादयादिह ३० अग्निमावाहयामि, तृ० ३० नमोस्तु सर्प्पेभ्योयेके च पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षे येदिवितेभ्यः सर्प्पेभ्योनमः ३० सर्पानावाहयामि, च० ३ँ० वयं ६० सोमव्रते तव मनस्तनूपुबिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि । सोमंआवाहयामि,पं०—३० उदीरतामवरऽउत्परासऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासऽअसुंय्यऽईयुरवृकाऽऋतज्ञास्तेनोवन्तुपितरो हवेषु । पंचमतंतौपितॄनावाहयामि,ष०३ँ०प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणिपरिताबभूव । यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नो ऽअस्तुवयँ स्यामपतयोरयीणाम् । प्रजापतिमावाहयामि, सप्तमतन्तौ ३ँ०आनोनियुद्भिः शतनीभिरध्वरँ ६० सहस्रिणीभि रुपयाहियज्ञम् । वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्वयूयम्पातःस्वस्तिभिःसदानः । अनिलमावाहयामि । अ० ३० सुगावोदेवाः सदनायआजग्मेद ६० सवनंजुषाणः भरमाणा वहमानाहवी षँ ष्यस्मैधत्तवसवोवसूनिस्वाहा । यममावाहयामि । नवतन्तौ ३ँ० विश्वेदेवास ऽआगत शृणुतामऽइम ६०

हवम् । एवं चाहोनिंपीदल । विश्वान्देवानावाहयामि यज्ञोपवीत ग्रन्थिदेवता आवाहनम् –प्र– ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसी- मतः सुरुचोऽवेनऽआवः । सब्बुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सत- श्चयोनि मसतश्चविवः । द्वि० ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे, त्रेधानिद- धेपदम् । समूढमस्यपा ॐ सुरेस्वाहा । तृ० ॐ त्र्यंबकंयजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृ- तात् । ग्रन्थिदेवताभ्योनमः । प्रणवाद्यावाहितदेवताभ्योनमःयथास्था नमहं न्यसामिसंपूज्यध्यायेत् ॐ प्रजपतेर्यत्सहजंपवित्रंकार्पास- सूत्रोद्भवब्रह्मसूत्रम् । ब्रह्मत्वसिध्यैचयशः प्रकाशंजपस्यसिद्धिंकुरु ब्रह्मसूत्र ॥) ततः कलशोपरिधृत्वा ॐ यज्ञोपवीतावाहितदे- वेभ्यो नमः ॐ एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य संपूज्य च ॐ आकृष्णेन- इतिपठित्वा सूर्याय दर्शयित्वा एवं संस्कृतं यज्ञोपवीतं । शाखान्तरीय वक्ष्यमाण मंत्रेण धारयेत ॥ ततः आचार्यः—ॐ यज्ञोपवीतमिति परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः लिंगोक्ता देवताः श्रौतस्मार्त कर्मानुष्ठान सिध्दये यज्ञोपवीत परिधाने विनियोगः ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ॥ आयु- ष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ ॐ यज्ञोप- वीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि ॥ इति मंत्रं पठन्सन् वटोर्दक्षिण बाहुमुधृत्य वामस्कन्धोपरि निदध्यात् ❀ अत्रापिमाण वक आचमनद्वयं कुर्यादमन्त्रकम् ततः स्व स्व वर्णोक्त मेणेयाद्य- जिनं चहिर्लोमं यज्ञोपवीतवत्परिदध्यात् ॥ ॐ मित्रस्य चक्षुरिति वामदेव ऋषि त्रिष्टुप्छन्दः अजिनं देवता अजिन धारणे विनि- योगः—॥–ॐ मित्रस्य चक्षुर्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वि स्थविर ई० समृद्धम् । अनाहनस्यं वसनं जरिष्णुः परीदं वाज्यजिनं दधेहम् ॥ अथाचार्यः वक्ष्यमाणदंडं पादादिशिखान्तं ललाट संम्मितं घ्राण प्रमाणं च त्रैवर्णिकं पालाश बैल्वोदुम्बरजम् । तत्तद्वर्ण

टि० भृगु —उपवीत वटोरेकं द्वेतथेतरयोस्मृते । छंदोगपरिष्टे ब्रह्मचारिण एकस्य स्नातस्य द्वेबहूनिवा ॥

वटवे तूष्णीं समंत्रकं वा वक्ष्यमाण मंत्रेण प्रयच्छति ॥ ॐ यो मे दण्ड इति प्रजापति ऋषि र्यजुश्छन्दो दण्डो देवता दंडग्रहणे विनियोगः । ॐ यो मे दंडः परापतद्वैहायसोऽधि भूम्याम् तमहं पुनरादद ऽआयुषेब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥ इति वटुः प्रगृह्य वक्ष्यमाण मन्त्रेणोच्छ्रयति । ॐ उच्छ्रयस्वेति प्रजापति ऋषि र्यजुश्छन्दः दण्डो देवता दण्डोच्छ्रयणे विनियोगः" । ॐ उच्छ्रयस्व वनस्पतऽऊर्ध्वोमापाह्य र्ह० हसः आस्य यज्ञस्योदृचः" ॥ ततः आचार्यः स्वमंजलिमद्भिरापूर्य तेनैव माणवकांजलिमापूरयति वक्ष्यमाणमंत्रैः ॥ ॐ आपोहिष्ठेत्यादि त्रयाणां मंत्राणां सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्रीछन्दः आपो देवता माणवकांजलिपूरणे विनियोगः ॥ ॐ आपो हिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्जे दधातन महेरणाय चक्षसे । १ । योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः उशतीरिव मातरः २ तस्माऽअरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथऽआपोजन यथाचनः । ३ । इति माणवकांजलि मद्भिः पूरयित्वा एनं सूर्यमुदीक्षस्व इति प्रैषं ददाति ततो माणवक सूर्यमुदीक्षमाणः सन्नं जलिस्थं जलंतूष्णीं सूर्याय प्रक्षिप्योर्ध्ववाहुरादित्य मुपतिष्ठते वक्ष्यमाणमंत्रेण । ॐ तच्चक्षुरिति दध्यंङ्ङाथर्वण ऋषिर्ब्राह्मी त्रिष्टुप्छंदः सविता देवता सूर्यो दीक्षणे विनियोगः ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतॅं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥ अथाचार्यो माणवकस्य दक्षिणांसस्योपरि स्व दक्षिण हस्तं नीत्वा वक्ष्यमाणमंत्रेण हृदयमालभते—ॐ मम व्रतेन इति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दो बृहस्पतिर्देवता हृदयालंभने-विनियोगः ॥ ॐ मम व्रतेते हृदयं दधामि मम चित्त मनुचित्तं तेऽस्तु मम वाच मेकमना जुपस्व बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तुमह्यम् ॥ अथाचार्यो माणवकस्य सांगुष्ठं दक्षिणं हस्तं गृहीत्वा को नामासीत्याह एवं पृष्टोब्रह्मचारी अमुकशर्माहं भोः इति प्रत्याह । पुनराचार्योमाण

वकं पृच्छतिकस्य ब्रह्मचार्यसीति माणवको ब्रूते भवतः इति माण वकेनोच्यमाने ॐ इन्द्रस्येति प्रजापतिर्ऋषिः लिंगोक्ता देवताः आचार्यपाठे विनियोगः । इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यस्यग्निराचार्यस्तवा-हमाचार्यस्तव अमुक शर्मन्। अमुक शर्मन्नित्यत्र अमुक स्थाने,, श्री.........शर्म्मन् इति वटुनामान्तं पठेत ॥ अथैनं भूतेभ्यः परि ददाति मन्त्रेण—ॐ प्रजापतयेत्वेति प्रजापतिर्ऋषिः लिंगोक्ताः देवताः वटुरक्षाकरणे विनियोगः ॐ प्रजापतये त्वा परिददामि देवायत्वासवित्रेपरिददाम्यद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामिद्यावापृथिवीभ्यान्त्वापरिददामिविश्वेभ्यस्त्वाभूतेभ्यःपरिददामिसर्वेभ्य-स्त्वाभूतेभ्यः परिददाम्यरिष्ट्यै ॥ ततःकुमारोऽग्निंप्रदक्षिणीकृत्य आचार्यस्योत्तरतः (वामभागेपूर्वाभिमुखोभूत्वा) उपविशति । अथ ब्रह्मवरणार्थमासनमग्नेर्दक्षिणतः कल्पयित्वापाद्यादिभिः । वरणद्रव्यंब्राह्मणंचसम्पूज्य—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुको-ऽहममास्यवटोः उपनयनकर्मणि तदंगीभूतहवनकर्मणिकृताकृता वेक्षणरूपब्रह्मकर्म्मकर्त्तुमनेन वरणद्रव्येणामुकगोत्र ममुकशर्म्माणं ब्राह्मणंब्रह्मत्वेनत्वामहंवृणे । वृतोस्मीतिब्रह्माब्रूयात् । यथा-विहितं कर्मकुरु करवाणीतिब्रह्मणोक्तिः ततो ब्रह्माणमग्नेः । प्रदक्षिणं कारयित्वा कल्पितासने उदङ्मुखमुपवेशयेत् । ततोऽग्ने रुत्तरतः प्रागग्रैः कुशैरासन द्वयं कल्पयित्वा-प्रणीतापात्रं सव्ये करेकृत्वा दक्षिणहस्तोध्दृत घृतपात्रस्थोदकेन पूरयित्वा पश्चि-मासने निधाय हस्तेनालभ्य पूर्वासने स्थापयित्वा ॥ बर्हिर्मुष्टिमा-दाय (यावद्भिः प्रयोजनं) ईशानादिप्रागग्रै र्बर्हिभिरुदक् संस्थमग्ने रुत्तरतः पश्चाद् वा परिस्तरणं कृत्वा । पवित्र छेद-नानित्रीणि कुशतरुणानि ॥ पवित्रेसाग्रे अनन्तगर्भेद्वे कुश तरुणे । प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली तैजसीचरुस्थाली, सम्मार्जन कुशास्त्र यः उपयमनकुशा स्त्रिप्रभृतयः पंच सप्त वासमिधस्तिस्रः प्रादेश मात्र्यः स्रुवः गव्यमाज्यं, पूर्णपात्रं, दक्षिणा, वरोवा, यथावदा-साद्य, ततस्त्रिभिः कुशतरुणैः द्वेकुशतरुणे प्रच्छिद्य संस्थाप्य

प्रोक्षणी पात्रं प्रणीता सन्निधौ निधाय तत्रहस्तेन प्रणीतोदक मासिच्य, पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रेप्रोक्षणी पात्रे निधाय दक्षिण हस्तेन प्रोक्षणी पात्रमुत्थाप्य सव्ये पाणौ कृत्वा तदुदकं दक्षिणा नामिकांगुष्ठाभ्या मुच्चाल्य प्रणीतोदकेन प्रोक्ष्य आज्यस्थाल्या-दीनि पूर्णपात्रपर्य्यन्तानि प्रोक्षणी जलेन रासादनक्रमेणैकैकशः प्रोक्ष्य प्रणीताग्न्योरंतराले प्रोक्षणीपात्रं निधाय, आसादितमाज्य माज्यस्थाल्यां पश्चादग्ने र्निर्हितायां प्रक्षिप्य प्रणीतोदकमासिच्य तत्राज्यं ब्रह्माधिश्रयति ज्वलदुल्मुकमादाय आज्योपरिस मन्तात् प्रदक्षिण क्रमेण भ्रामयित्वा, दक्षिण हस्तेन श्रुवमादाय प्रांचमधोमुखं तापयित्वा सव्ये पाणौकृत्वा, दक्षिणेन सम्मार्जन कुशाग्रै र्मूलतोऽग्रपर्य्यन्तं मूलैरग्रतो मूल पर्यन्तंसमृज्य तान् कुशानग्नौप्रक्षिपेत्, प्रणीतोदकेन संप्रोक्ष्य पुनः पूर्ववत्प्रतप्यस्रुव दक्षिणतो निदध्यात्, आज्यमग्नेः पश्चादानीय पूर्वं पवित्रा भ्यामुत्पूय अवेक्ष्यापद्रव्य निरसनंकृत्वा प्रोक्षणी जलेन पवित्रा-भ्यां संप्रोक्ष्य । उपयमन कुशान् दक्षिणहस्तेनादाय वामे कृत्वो-तिष्ठन्तिस्रः समिधः अग्नौ प्रक्षिप्य प्रोक्षण्युदकं दक्षिण चुलुके कृत्वा ईशानादि उदगान्तमग्निं प्रदक्षिण क्रमेण संप्रोक्ष्य पवित्रे प्रणीतापात्रेनिधायआघारादीन् जुहुयात् संस्रवधारणार्थ प्रोक्षणी पात्रं प्रणीताऽन्यो र्मध्येनिदध्यात् ॥ ततः समुद्भव नामाग्नि, मावाहयेत् । ॐ एतन्ते इति ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्भव नामाग्ने इहागच्छेहतिष्ठसुप्रतिष्ठितो वरदोभव ॥ चत्वारि शृंगा इति ध्यात्वा गंधादिभिः सम्पूज्य रेखा पूजनं जिव्हा पूजनं च कृत्वा । तत आघाराद्याश्चतुर्दशाहुतीः ब्रह्मणान्वारब्धो जुहुयात । हुत शेषं घृतं संस्रव प्राशनार्थं प्रोक्षणी पात्रे क्षिपेत् । ॐ प्रजापतये स्वाहा इदंप्रजापतयेनमम ॐ इन्द्रायस्वाहा इदमिन्द्राय० ॐ अग्नयेस्वाहा इदमग्नये० ॐसोमायस्वाहाइदंसोमाय० । इत्याघारावाज्यभागौ हुत्वा ॐ भूरादिव्याहृतीनांप्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निवायु-सूर्यादेवताउपनयनांग होमेविनियोगः । ॐ भूःस्वाहाइदमग्नये-

नमम ॐ भुवःस्वाहा इदंवायवेन० । ॐ स्वःस्वाहा इदंसूर्याय० । ॐ त्वन्नोऽअग्ने सत्वन्नोऽग्ने इत्यनयोर्वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छंदः अग्निवरुणौदेवते उपनयनांगहोमे विनियोगः । ॐ त्वन्नोऽग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानोव्विश्वाद्वेषाᳬसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॐ सत्वन्नोऽअग्नेऽअवमो भवोत्ती नेदिष्ठोऽअस्या ऽउषसोव्युष्टौ अवयक्ष्वनोव्वरुणᳬरराणो वीहिमृडीकᳬसुहवोनऽएधिस्वाहा । इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम—ॐ अयाश्चाग्ने इतिवामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता उपनयनांगहोमेवि० । ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि । अयानोयज्ञंव्वहास्ययानोधेहिभेषजᳬस्वाहा इदमग्नयेनमम । ॐ येतेशतमितिवामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोव्वरुणः सवितात्विष्णुर्देवता र्विश्वेदेवामरुतः स्वर्काश्चदेवताः उपनयनांगहोमेविनियोगः । ॐ येतेशतंव्वरुणंयेसहस्रंयज्ञियाः पाशाव्वितताम्महान्तः तेभिर्नोऽअद्यसवितोतविष्णुर्विश्वेमुंचन्तुमरुतः स्वर्काःस्वाहा इदंव्वरुणाय, सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्केभ्यःनमम ॥ ॐ उदुत्तममितिशुनः शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः व्वरुणोदेवता उपनयनांगहोमेविनियोगः । ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्मदवाधमं व्विमध्यमᳬश्रथाय । अथाव्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्यामस्वाहा । इदंव्वरुणाय० । ॐप्रजापतयेस्वाहा इदंप्रजापतये० ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा--इदमग्नयेस्विष्टकृतेनमम--इतिहोमं विधायसंस्रवंप्राश्य, पवित्राभ्यां प्रणीताजलेन संम्मार्ज्य,- पवित्रप्रतिपत्तिः प्रणीताविमोकं च कृत्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्र दानम्—अद्येह अमुक शर्माहं अमुकशर्मणोऽस्य वटोः उपनयनांग होम कर्म्मणः सत्कुण्यार्थं अपूर्णपूरणार्थं च इदं सदक्षिणं पूर्णपात्रं ब्रह्मणे तुभ्यं संप्रददे इति दद्यात् । ॐ स्वस्ति ब्रह्मा गृणान् । तत आचार्यो वटुं शिक्षयति ब्रह्मचार्यसि, इति वदेदाचार्यः—असानि, आचार्यः—अपोशान,

अश्नानि इति वटुः, आचार्यः–कर्मकुरु, वटुः, करवाणि, आचार्यः मादिवा सुषुप्थाः ॥ वटुः, न स्वपानि, आचार्यः–वाचं यच्छ, वटुः यच्छानि, आचार्यः समिधमाधेहि, वटुः, आदधानि, आचार्यः पुनः अपोऽशान ॥ वटुः, अश्नानि, ततोज्योतिर्विदादिभ्योलग्नदानंकुर्यात् । ततः सद्रव्यदानसामग्रीं संपाद्य संप्रोक्ष्य च संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्य अमुकराशिरमुकशर्माहं ममेदानींसावित्रीग्रहणे ऽमुकलग्नावधिकैरमुक स्थानस्थितादित्यादिनवग्रहैः सूचितारिष्ट निर्वृत्तिद्वारा शुभफलप्राप्तये ग्रहाणांसन्तुष्ट्यर्थं इदंसुवर्णंतन्निष्क्रयीभूतंद्रव्यं वा अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय अन्येभ्यश्च वा दास्ये । तत् सत्रमम (पितातिरिक्तोगुरुश्चेत्तस्य वरणंकुर्यात् पितुस्तुप्रजन मात्रं) ततो गुरुवरणद्रव्यं गुरुं च सम्पूज्य, संकल्पः, अद्येत्यादि संकीर्त्यअमुकराशेर्मम सावित्र्युपदेशद्वारा द्विजत्वसिद्धये, एतेन वरणद्रव्येण अमुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणं गुरुत्वेनत्वामहंवृणे इति दत्वा, वृतोस्मीति गुरुर्ब्रूयात् । अथ च गुरुः अग्नेरुत्तरतः स्वदक्षिणपार्श्वे पश्चिमाभिमुखं वटुमुपविश्य स्वयं पूर्वाभिमुखोभूत्वा वक्ष्यमाण प्रकारेण सावित्र्युपदेशकरोति, ततो वटुःकर्णौ स्पृष्ट्वाअमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं,अभिवादयेइत्युक्त्वादक्षिणहस्तेन दक्षिणपादस्पृष्ट्वासव्येनसव्यंपादंस्पृष्ट्वाचरणयोःशिरोधृत्वानमेत् तत्रप्रथमवारमेकैकंपादंश्रावयेत्। ॐप्रणवस्यब्रह्माऋषिर्दैवीगायत्री छन्दःपरमात्मादेवता व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिःगायत्र्युष्णिगनुभश्छन्दांसि अग्नि वायु सूर्या देवता । तत्सवितुरित्यस्य विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सवितादेवता माणवकोपदेशने विनियोगः अथ च शुभे लग्नेशंखादिरवेजायमाने,वाससाऽऽछादनं कृत्वागुरुः दक्षिणकर्णे ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् । इति प्रथमपादं श्रावयित्वा वाचयेच । द्वितीयपादम् । भर्गोदेवस्यधीमहि इति श्रावयित्वा वाचयेच । तृतीयपादम् धियोयोनः प्रचोदयात् इति श्रावयित्वावाचयेच्चततोद्वितीयवारं अर्धर्चंश्रावयेत् । ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । इति द्वितीय-

मर्द्धर्च आवयित्वावाचयेत् ततस्तृतीयवारं सम्पूर्णं ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात् । इति सर्वां आवयित्वावाचयेच्चवटुम्– क्षत्रियाय, ॐ देवसवितुः प्रसुवयज्ञं प्रसुवयज्ञपतिंभगाय । दिव्योगंधर्वः केतपूः केतन्नः पुनातुवाचस्पतिर्व्वाजन्नः स्वदतु । वैश्याय-ॐ विश्वारूपाणि प्रति मुंचतेकविः प्रासावीद् भद्रं द्विपदेचतुष्पदे, विनाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनुप्रयाण मुपसोव्विराजति । सर्वेषांवा ब्रह्मगायत्री मुपदिशेदित्यपरोपक्षः । ततो वित्तशाठ्यवर्जितांगुरवेवरं (ब्राह्मणस्य गौर्वर राजन्यस्यभूमिः वैश्यस्यअश्वम्, सर्वेषां वा गौर्वरम्) वराभावेसुवर्णादि दक्षिणांदद्यात् ॥ संकल्पः–अद्येहअमुकराशिरमुकशर्मा—(वर्म्मा गुप्तो वा) अहंकृतैतत्सवित्री ग्रहणकर्मणः साङ्गुण्यार्थं इदं सुवर्णमग्नि दैवतंरजतंचन्द्रदैवतं वा वर निष्क्रयीभूतं गुरवेतुभ्यमहंसंप्रददे ततो गुरोश्चरणयोः प्रणिपत्य समर्पयेत् आयुष्मान्भवसौम्य, इति गुरुर्वदेत् ततो ब्रह्मचारी तत्कालिकांमध्यान्ह संध्यांचोपासीन । अथ उपनयनाग्नौ समिदाधानं कुर्यात् ततः प्रादेशमात्रंशुष्ककाष्ठं वा गोमयोपलं, तत्र पंचधा विभक्तं संधुक्षणार्थं पर्युक्षणार्थमुदकं । समिधस्तिस्रः संस्थाप्य ब्रह्मचारी अग्नेः पश्चादुपविश्यादौ वक्ष्यमाणैः पंचभिर्मंत्रैः अग्निं हस्तेन परिसमूहयति संधुक्षयतीत्यर्थः हस्ताभ्यां सन्धुक्षणप्रसिद्धिरस्तीतिहरिहरः । ॐ सुश्रवइत्या दीनां पंचानां मंत्राणां ब्रह्माऋषिः यजुश्छन्दः अग्निर्देवता अग्नाविंधन प्रक्षेपणे विनियोगः ॥ ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसम्माकुरु । इति मंत्रेण एकमिंधनमेकशुष्कमुपलं वा ऽग्नौ प्रक्षिप्य,द्वितीयमादद्रे ॐ यथात्वमग्नेसुश्रवः सुश्रवाऽअसि । इति प्रक्षिप्य तृतीयमाददे–ॐ एवम्मा ॐ सुश्रवः सौश्रवसंकुरु ॥ इति प्रक्षिप्य चतुर्थमाददे–ॐ यथात्वमग्नेदेवानां यज्ञस्य निधिपाऽसि । इतिप्रक्षिप्य पंचममाददे, ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपोभूयासम् । इति पंचमंप्रक्षिपेत् इति अग्निं उभाभ्यां हस्ताभ्यां सन्धुक्ष्य प्रज्वलितं कृत्वा दक्षिणहस्त चुलके

जलं गृहीत्वा, ईशानादुत्तर पर्यन्तं प्रदक्षिण क्रमेणपर्युदय, ततो ब्रह्मचारीउत्थाय, वक्ष्यमाण मंत्रेणसमिधमादधाति–ॐ अग्नय इति प्रजापतिर्ऋषिराकृतिछन्दः समिद्देवता समिदाधानेविनियोगः ततो घृताक्तामेकां गृहीत्वा ॐ अग्नये समिधमाहार्षंबृहते जातवेदसे, यथात्वमग्ने समिधा समिध्यसऽएवमहमायुषामेधयावर्चसा प्रजयापशुभि र्ब्रह्मवर्चसेनसमिन्धे, जीवपुत्रोममाचार्यो मेधाव्यहमसान्य निराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यान्नादो भूयास ॐ स्वाहा, इत्यनेनवै द्वितीयां तृतीयाञ्चैकैकशः जुहोति ॥ [अत्र समित्प्रक्षेपणेमंत्र द्वयोर्विकल्पः–अग्नयेसमिध० १ एषाते अग्ने,] इतिवासमुच्चयेन ततस्तूष्णी मुपविश्य पूर्ववत अग्नेः सुश्रवइत्यादि पंचभिर्मन्त्रैः इन्धनप्रक्षेपण परिसमूहनं पर्युक्षणम्, अद्भिरग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणंच कुर्यात् । ततस्तूष्णीमग्नौ हस्तौप्रतप्य मुखंविमार्ष्टि ललाटादि चिबुकान्तं वक्ष्यमाणैः सप्तभिर्मन्त्रैः प्रौक्षति । ॐ तनूपाऽअग्ने इत्यादीनां सप्तमंत्राणां आवत्सार ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता अग्न्या लम्भने विनियोगः—ॐ तनूपाऽअग्नेऽसितन्वंमेपाहि । ॐ आयुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मेदेहि ॥२॥ ॐ वर्चोदाऽअग्नेऽसि वर्चो मेदेहि ॥३॥ ॐ अग्नेयन्मेतन्वाऽऊनतन्म ऽआपृण ॥४॥ ॐ मेधामेदेवः सविता आदधातु ॥५॥ ॐ मेधांमेदेवी सरस्वती आदधातु ॥६॥ ॐ मेधामश्विनौदेवावाधत्तां पुष्कर स्रजौ ॥७॥ (अत्रशिष्टाचारप्राप्ताः केचित्पदार्थाःलिख्यन्ते । हरिहर.)ततः उभाभ्यां हस्ताभ्यां शिरस आपद सर्वाङ्गमालभ्य जपति—ॐ अंगानि च मऽआप्यायन्ताम् ॥ सर्वाङ्ग स्पृशेत मुखे—ॐ वाक्चम ऽआप्यायताम् ॥नासिकारंध्रयोः,—ॐ प्राणश्चमऽआप्यायताम् ॥ नेत्रयोः,—ॐ चक्षुश्चम ऽआप्यायताम् । कर्णयोः—श्रोत्रंचमऽआप्यायताम् । बाह्वो —ॐ यशोबलंचमऽआप्यायताम् तत.हस्तौप्रक्षाल्य ॥ ततः स्रुवमूले भस्मंगृहीत्वा,तेनभस्मनाललाटादिषु त्र्यायुषंकरोति ॥ दक्षिणानामिकया ॐ त्र्यायुषमितिनारायणऋषिरुष्णिक्छंदः—अग्निर्दे

वता आयुष्करणे विनियोगः ॥ आयुषं जमदग्नेः—इति ललाटे, ॐ कश्यपस्य आयुषम्—ग्रीवायाम्, ॥ ॐ यद्देवेषु आयुषम्-दक्षिणांसे,–ॐ तन्नोऽअस्तु आयुषम्-इतिहृदि,–अथाग्नेरभिवादनम्-अमुकगोत्रो ऽमुकप्रवरो यजुर्वेदान्तर्गता मुकशाखाध्यायी अमुक शर्माहं भोः ३ अग्ने त्वामभिवादये । इत्युभाभ्यां हस्ताभ्यां कर्णौ स्पृष्ट्वा शिरसा नमेत्–ततो गुरुं कर्णौ स्पृष्ट्वा दक्षिणहस्तेन गुरोर्दक्षिणं पादं स्पृष्ट्वा सव्येन सव्यं स्पृष्ट्वा शिरोऽवनमनं कृत्वा पूर्ववदुक्त्वा भोः ३ गुरो त्वामभिवादये अभिवादितो गुरुश्च भोः ३ अमुकशर्मन् आयुष्मान् भव सौम्य । इत्याशिषं दद्यात् ततः स्म-त्युक्तानप्यभिवादयेत ॥ (याज्ञवल्क्यः)—ततोऽभिवादयेद्वृद्धानसावहमितिब्रुवन ॥ अभिवादनप्रकारमाहमनुः—भोशब्दं कीर्तयेदन्ते स्वस्य नाम्नोऽभिवादने । नाम्नां स्वरूपभावो हि भोशब्द ऋषिभिः स्मृतः । आयुष्मान्भव सौम्येति वाच्यो विप्रोऽभिवादने ॥ अकारश्चास्य नाम्नोऽन्ते वाच्यः पूर्वाक्षरः प्लुतः ॥ उत्थाय मातापितरौ पूर्वमेवाभिवादयेत् । आचार्यश्च ततो नित्यमभिवाद्यो विजानता । मनुः—अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुः प्रज्ञा यशो बलम् । अथानर्हानभिवादनानाह-मनुः–यो न वेत्त्यभिवादस्य विप्रः प्रत्यभिवादनं ॥ नाभिवाद्यः स विदुषा यथा शूद्रस्तथैव सः ॥ शातातपः–उदक्यां सूतिकां नारीं भर्तृघ्नीं गर्भपातिनीं । पाषण्डं पतितं व्रात्यं महापातकिनं शठम् । नास्तिकं कृतघ्नं स्तेनं कृतघ्नं नाभिवादयेत् । बृहस्पतिस्तु—जपयज्ञजलस्थं च समित् पुष्पकुशानलिलान् । उदपात्रार्घभैक्षान्नं वहन्तं नाभिवादयेत् । अभिवाद्य द्विजश्चैतानहोरात्रेण शुध्यति ॥

(अथातो भिक्षाचरणम्—तदुक्तं याज्ञवल्क्येन-दंडाजिनोपवीतानि मेखलां चैव धारयेत् । सूत्रं च—भवत्पूर्वां ब्राह्मणो भिक्षेत ॥ भवन्मध्यमां राजन्यो, भवदन्त्यां वैश्यः) तत्रादौ मातरम् ॥—तत आचार्यो नूतन वस्त्रनिर्मितां झोलिकां कज्जलविनीं सद्रव्यां सफलां ब्रह्मचारिणो दक्षिणस्कन्धे निधाय

(भो अमुकशर्म्मन् भिक्षार्थं गच्छ) ततो ब्रह्मचारी सलक्षणमुत्थाय प्रथममातरं याचेत्—भवति भिक्षां देहि मातः। पुरुषं प्रति भिक्षणे—भवन् भिक्षां देहि–इति ब्राह्मणोवदेत्–क्षत्रियस्तु भिक्षां भवति देहि मातः, पुरुषं प्रति भिक्षां भवान् ददातु, वैश्यस्तु–मातर्देहि भिक्षां भवति ? पुरुषंप्रति भिक्षां ददातु भवान्॥ अन्यांप्रति भिक्षणे मातः, इतिशब्दोन वाच्यः। भवति भिक्षां देहीति वाच्यम्॥ ततो ब्रह्मचारीमातामंडपात कीयद्दूरे वस्त्रभूषणादिभिरलंकृता कुटुम्बस्त्री परिजनैः सह तिष्ठंती, मनोहरे पात्रे सफल, मिष्टान्न मोदकादिपक्वान्नसहित सुवर्ण रजत मुद्रारत्नादि सहित हरिद्रा रंजिततंदुलान् गृहीत्वा भिक्षार्थमागतं ब्रह्मचारिणं दद्यात॥ ततो ब्रह्मचारी भिक्षां लब्ध्वा ॐ स्वस्ति इतिवदेत्। ततः—अन्ये भ्योपिगृह्णीयात्॥ तत आचार्य समीपमागत्य, भोगुरोऽयं भिक्षा मयालब्धा, इति निवेद्य प्रणम्य च, गुरोरनुज्ञया आत्मभोजनार्थं वा स्वीकुर्यात। यदि गुरुः पिता चेत्तल्लब्ध भैक्ष्यं द्रव्यादिकं ब्राह्मणेभ्योदद्यात्। अन्यश्चेत् स्वयंस्वीकुर्यादिति समाचारः, इति भिक्षाचरणम्॥ ततआचार्यो ब्रह्मचारिणेनियमान् श्रावयेत्, अधः शयीत। अक्षार लवणाशी स्यात्। दंडधारणं कर्तव्यम्–अरण्यात्स्वयं प्रशीर्णाः समिध आहर्तव्या सायं प्रातः संध्योपासन पूर्वक मग्निपरि चरणं कर्तव्यम्॥ स्वाध्यायाविरोधेनगुरुशुश्रूषा च कर्तव्या। सायंप्रातर्भिक्षा चर्या कर्तव्या मधुमांसाशनं न कर्तव्यम्॥ नद्यादौमज्जनंनकर्त्तव्यम् उध्दृतोदकेन स्नायादित्यर्थः। कुशासनोपरिमसूरिका ह्युपधानं कृत्वा नोपविशेत्—स्त्रीभिः सह गमनं तन्मध्ये अवस्थानं च वर्जयेत्। अनृतं न वदेत्। अदत्तादानं चौर्यं न कुर्यात्। स्मृत्यंतरोक्ता यमनियमाश्चानुष्ठेयाः॥ अष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि वेद ब्रह्मचर्यं चरेत्। द्वादश द्वाशदश वा प्रतिवेदम्। यावद्ग्रहणं वा शयानश्चेदाचार्येणाहूत उत्थाय प्रतिश्रृणुयात्, आसीनश्चेत्तिष्ठन्, तिष्ठं श्चेदधिक्रामन्, अभिक्रामंश्चेदभिधावन्।

स एवं वर्त्तमानो मुत्राप्ययसत्यमुत्राप्य वसतीति । यएवंविद्यामानस्तस्य स्नातकस्य कीर्तिर्भवति ॥ तत आचार्याय वरदानम्, अद्येत्यादि संकीर्त्य, अमुकोहं अमुकराशेः पुत्रस्य उपनयनांग होमकर्म्मणः सांगतार्थंइदंद्रव्यंगांचवा वरप्रत्याम्नायीभूतं अमुक शर्म्मणे आचार्याय तुभ्यं सम्प्रददे ॥ ॐतत्सन्नमम ब्राह्मण भोजन संकल्पम्, भूयसी संकल्पं च कृत्वा [अत्रापि न पूर्णाहुतिः] ततः समुद्भवनामाग्ने रुत्तरांगपूजनंकृत्वा अक्षतान् गृहीत्वा विसृजेत् ॥ ॐ गच्छगच्छ सुरश्रेष्ठस्वस्थाने त्वंसमुद्भव इष्टकाम समृध्यर्थं पुन रागमनं कुरु ॥

॥ इत्युपनयनपद्धतिः ॥

— —

अथवेदारम्भपद्धतिः ।

अथाचार्यो ब्रह्मचारिणासह वेदारम्भ वेदीसमीपमागत्य स्वासने उपविश्यआचम्य गणेशादीन्नमस्कृत्य, वेदारम्भ वेद्यां पंचभूसंस्कारान्कुर्यात दक्षिणहस्तेन कुशैः परिसमूह्य पूर्वे, क्षिप्त्वा गोमयोदकेनोपलिप्य, स्रुवमूलेन प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, उल्लेखन क्रमेणानामिकांगुष्ठाभ्यां मृदुमुद्धृत्य, जलेनाभ्युक्ष्य, तैजसपात्रोपनीनमग्निं वेद्यां स्वाभिमुखे संस्थाप्य तद्रक्षार्थं मिंधनं नियुज्य, संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्यमुकोहं अमुकराशेरमुक वटोर्यजुर्वेदादि क्रमेण वेदारम्भ कर्मणि प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, अन्तरिक्षं वायुं, ब्रह्माणं, छन्दाँसि पृथ्वीमग्निं ब्रह्माणं, छन्दाँसिदिवंसूर्यं ब्रह्माणं, छन्दाँसि, दिशश्चन्द्रमसम् ब्रह्माणंछन्दाँसि प्रजापतिं देवान् ऋषीन, श्रद्धां, मेधां, सदसस्पतिं, अनुमतिं, अग्निं, वायुं, सूर्यं, अग्नीवरुणौ, अग्नीवरुणौ, अग्निं, वरुणं, सवितारं, विष्णुंविश्वान् , मरुतः, स्वर्कान. वरुणं, प्रजापतिं स्विष्टकृतं चाज्येनाहं यक्ष्ये, ततो ब्रह्मवरणम्--अद्येत्यादि० कर्तव्य वेदारम्भांगी भूतहवन कार्मणि,

ब्रह्मकर्मकर्तुमनेनवरणद्रव्येण अमुकगोत्रममुकशर्म्माणंब्राह्मणं, ब्रह्मत्वेनाहंवृणे, वृतोस्मीति ब्रह्माब्रूयात् । यथाविहितं कर्मकुरु, करवाणि, ततोग्निपरिक्रमणं कारयित्वा, अग्नेर्दक्षिणतः कुशासने उपवेशयेत् ॥ ततोऽग्नेरुत्तरतः प्रागग्रकुशैरासनद्वयं कल्पयित्वा, प्रणीतापात्रं सव्येहस्तेकृत्वादक्षिण हस्तोध्धृतघृतपात्रस्थोदकेन-पूरयित्वा, पश्चिमासनेनिधाय हस्तेनालभ्य, पूर्वासनेस्थापयित्वा वर्हिर्मुष्ठिमादाय ईशनादिप्रागग्रै वर्हिभिरुदक् संस्थमग्ने रुत्तरतः पश्चाद्वापरिस्तरणं कृत्वापवित्रछेदनानि त्रीणि कुशतरुणानि, पवित्रेसाग्रेअनन्तगर्भे कुशतरुणे, आज्यस्थाली, तैजसी सम्मा-र्जनकुशास्त्रयः, उपयमनकुशस्त्रिप्रभृतिपंचसप्तवा, समिधस्त्रिः प्रादेशमात्र्यः, स्रुवः, गव्यमाज्यं, सदक्षिणं, पूर्णपात्रं, दक्षिणा वरोवा, यथायदासाद्य ततस्त्रिभिः कुशैर्द्वेकुशतरुणे प्रच्छिद्यपृथक् संस्थाप्य, प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय, दक्षिणहस्तेनप्रणी-तोदकमासिच्य, पवित्राभ्यामुत्पूय, पवित्रेप्रोक्षणीपात्रे निधाय-दक्षिणहस्तेनप्रोक्षणीपात्रमुत्थाप्य सव्येपाणैकृत्वा तदुदकंदक्षिणा नामिकांगुष्ठाभ्यामुच्छाल्य, प्रणीतोदकेन, प्रोक्ष्य, प्रणीताग्न्योरंत-राले निदध्यात , आसादितमाज्यं, आज्यस्थाल्यां पश्चादग्नेर्नि-हितायांप्रक्षिप्य, प्रणीतोदकेनासिच्य, तत्राग्नौ ब्रह्माआज्यमधि श्रयति ॥ ज्वलदुल्मुकमादाय, आज्योपरिसमन्तात्प्रदक्षिणक्रमेण भ्रामयित्वा दक्षिणहस्तेन श्रुवमादाय प्रांचमधोमुखं तापयित्वा सव्ये पाणौ कृत्वादक्षिणेन सम्मार्जन कुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्य्यन्तं, मूलैरग्रतोमूलपर्य्यन्तंसमृज्य, तान्कुशानग्नौप्रक्षिपेत् । प्रणीतोदके नाभिषिच्यपुनः पूर्ववत्प्रतप्यस्त्रुव दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ आज्य मग्नेःपश्चादानीय, पूर्वपवित्राभ्यामुत्पूयअवेक्ष्य, अपद्रव्यनिरसनं कृत्वा । प्रोक्षणीजलेनपवित्राभ्यामाषिंच्य, उपयमनकुशान् दक्षिण हस्तेनादाय सव्येकृत्वोत्तिष्ठनघृताक्ताः तिस्रःसमिधः अग्नौप्रक्षि-प्य, प्रोक्षण्युदकंदक्षिणचुलुकेगृहीत्वा । ईशानादुदगान्तमग्नि प्रद क्षिणक्रमेणपरिषिच्य, पवित्रेप्रणीतापात्रेनिधाय, आघारादीन्जुहु

यात, संस्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्न्योर्मध्येनिदध्यात्, ॥ आचार्यस्यहोमकर्तृत्वेपित्र्यादिः—इदमाज्यंतत्तद्दैवतायैमया परित्यक्तंयथादैवतमस्तुनमम । ॐ एतन्तेदेव० पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः, हरिनामाग्ने सुप्रतिष्ठितोवरदोभव, इतिप्रतिष्ठाप्य ॥ ॐअग्ने नयसुपथाराये ऽअस्मान्विश्वानिदेव व्वयुनानिविद्वान् । युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्तेनमऽउक्तिंविधेम ॥ इतिमन्त्रेणपाद्यादि नीराजनान्तंहरिनामाग्निं सम्पूज्यरेखापूजनं जिह्वापूजनंचकृत्वा । ब्रह्मचारिणमग्नेः पश्चात्स्वस्योत्तरतः समुपवेश्य । दक्षिणंजान्वाच्यब्रह्मणान्वारब्धोजुहुयात् । ॐ प्रजापतेस्वाहा, इदंप्रजापतयेनममइतिमनसा, ॥ हुतशेषघृतंसंस्रवधारणार्थं प्रोक्षण्यांक्षिपेत् ॥ ॐ इन्द्रायस्वाहा—इदमिन्द्रायनमम। ॐ अग्नयेस्वाहा इदमग्नये नमम । ॐ सोमायस्वाहा—इदंसोमायनमम । इदानीमन्वारंभंत्यक्त्वावेदाहुतीर्जुहोति—आदौस्वशाखीयवेदाहुतिर्जुहोति, अथयजुर्वेदाहुतयः—ॐ अन्तरिक्षायस्वाहा—इदमन्तरिक्षायनमम । ॐ व्वायवेस्वाहा—इदंव्वायवे० ॥ ॐ ब्रह्मणेस्वाहा इदंब्रह्मणे० ॐ छन्दोभ्यःस्वाहा इदंछन्दोभ्यः ॥ ऋग्वेदाहुतयः ॐ पृथिव्यैस्वाहा इदंपृथिव्यैनमम ॥ ॐ अग्नयेस्वाहा इदमग्नयेनमम ॐ ब्रह्मणेस्वाहा इदंब्रह्मणेनमम । ॐ छन्दोभ्यःस्वाहा इदंछन्दोभ्योनमम । सामवेदाहुतयः ॐ दिवेस्वाहा इदंदिवेनमम । ॐ सूर्यायस्वाहा इदंसूर्यायनमम । ॐ ब्रह्मणेस्वाहा इदंब्रह्मणेनमम । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदञ्छन्दोभ्योनमम० । अथर्ववेदाहुतयः—ॐ दिग्भ्यःस्वा० इदंदिग्भ्योनमम । ॐ चन्द्रमसेस्वाहा इदंचन्द्रमसेनमम । ॐ ब्रह्मणेस्वाहाइदमब्रह्मणेनमम । ॐछन्दोभ्यःस्वाहाइदञ्छन्दोभ्यो नमम । सर्वसामान्याहुतयः—ॐ प्रजापतयेस्वाहा इदम्प्रजापतये नमम ॥ ॐ देवेभ्यःस्वाहा इदन्देवेभ्योनमम । ॐ ऋषिभ्यःस्वा० इदंऋषिभ्योनमम । ॐ श्रद्धायैस्वाहा इदंश्रद्धायैनमम । ॐ मेधायैस्वाहा इदंमेधायैनमम । ॐ सदसस्पतयेस्वाहा इदंसदसस्पतये नमम । ॐ अनुमतयेस्वाहा इदमनुमतयेनमम। ततोब्रह्मणाऽन्वा-

रुधः ॥ ॐभूरादित्र्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, अग्निवायुसूर्यादेवताः वेदारम्भांगहोमेविनियोगः ॥ ॐ भूःस्वाहा इदमग्नयेनमम । ॐ भुवःस्वाहा इदंवायवेनमम । ॐ स्वःस्वाहाइदंसूर्यायनमम॥ ॐ त्वन्नोऽअग्नेसत्वंन्नोऽअग्ने इत्यनयोर्वामदेवऋषिःत्रिष्टुप्छन्दःअग्नीवरुणौदेवते वेदारम्भाङ्गहोमेविनियोगः॥ ॐत्वन्नोऽअग्नेवरुणस्यविद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानोविश्वाद्वेषाँसिप्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम । ॐसत्वन्नोऽग्नेऽवमो भवोतिनेदिष्ठोऽअस्याऽउपसोव्युष्टौ अवयक्ष्वनोवरुण ँ० रराणो वीहिमृडीक ँ० सुहवोनऽएधि स्वाहा इदमग्नी वरुणाभ्यां न मम । ॐ अयारचाग्ने इति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छदः अग्निर्देवता वेदारम्भाङ्ग होमेविनियोगः ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयाऽअसि । अयानोयज्ञं वहास्ययानोधेहिभेषज ँ स्वाहा । इदमग्नयेनमम ॥ ॐ येतेशतमिति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणः सविता विष्णुर्विश्वेदेवामरुतः स्वर्काश्चदेवता वेदारम्भाङ्ग होमे विनियोगः । ॐ येतेशतंवरुणंयेसहस्रंयज्ञियाः पाशाव्वितताममहान्तः । तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तुमरुतः स्वर्क्काः स्वाहा । इदं वरुणाय सवित्रेविष्णवेविश्वेभ्यो देवेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्क्केभ्यश्चनमम । ॐ उदुत्तममितिशुनः शेफ ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणोदेवता वेदारम्भाङ्गहोमेविनियोगः । ॐ उदुत्तमंवरुणपाश मस्मदवाधमं विमध्यम ँ श्रथाय । अथा वयमादित्यव्रतेतवानागसो अदितयेस्याम, स्वाहा । इदं वरुणाय नमम । ॐ प्रजापतये स्वहा इदं प्रजापतयेननमम–ॐअग्नये स्विष्टकृते स्वहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमम । संस्रवप्राशनं पवित्राभ्यांमार्जनं पवित्रप्रतिपत्तिः अग्नेः पश्चिमं प्रणीता विमोकः । ब्रह्मणेपूर्णपात्रदानम्संकल्पः अद्येत्यादिसंकीर्त्यअमकराशिरमकोहं ममैनद्वेदारम्भाङ्ग हवनकर्म्मणः सांगफलप्राप्तये अपूर्णपूरणार्थं इदंसदक्षिणंपूर्णपात्रम् ब्रह्मणेतुभ्यंसम्प्रददे—इतिदद्यात्—ॐअग्ने-

न्कर्मकर्म्मकृतः सहत्वा वामयोभुवा। देवेभ्यः कर्मकृत्वाऽस्तंप्रेत सचासुवः। ॐ स्वाहा। इति वह्निहोमंकृत्वा–ततोब्रह्मचारीविघ्नेशं सरस्वतीं हरिंलक्ष्मींस्वविद्याम्, (वेदसंहितां) चपूजयेत् इति-गदाधरः॥ मनुः—ब्रह्मारम्भेऽवसानेच पादौग्राह्यौगुरोःसदा। व्य-त्यस्तपाणिनाकार्य मुपसंग्रहणंगुरोः। प्राणायामैस्त्रिभिःपूतस्तत ॐ कारमर्हति। ॐ कारंव्याहृतिस्तिस्रः सपूर्वांत्रिपदांततः॥ उक्त्वारम्भेच ग्रन्थान्तमन्वहंगौतमोब्रवीत्। कुलपरंपरागत वेद-मादौअध्यापयेत्–वसिष्ठः—पारंपर्यगतोयेषांवेदःसपरिबृंहणः। तच्छाखंकर्मकुर्वीत तच्छाखाध्ययनंतथा॥ गुरुपूजांततः कृत्वा विद्याःसर्वाःसमारभेत्॥) ततोब्रह्मचारीसंकल्पं कुर्यात् अद्ये-त्यादि० अमुकराशिरमुकोहं, करिष्यमाण वेदारम्भकर्मणः पूर्वांगत्वेन गणेश सरस्वतीहरिलक्ष्मीस्ववेदसंहितादीनां यथा-लब्धोपचारेणपूजनंकरिष्ये॥ ततःपट्टेनाग्रादिस्थातण्डुलपुंजो-परिवा, ॐभूर्भुवःस्वः गणेशमावाहयामिपूजार्थं स्थापयामिचएवं सर्वत्र॥ ॐ भू० सरस्वतीम्०ॐभू० लक्ष्मीम्०। ॐ भू०विष्णुं० ॐ भूर्भुवःस्वःस्वविद्याम्—आवाहयामिपूजार्थंस्थापयामि ततो वक्ष्यमाणनाममन्त्रैः पृथक् पृथक्, पंचोपचारदक्षिणादिभिः सम्पू-जयेत् ॐ गणेशायनमः। ॐ सरस्वत्यैनमः। ॐहरयेनमः। ॐ ॐलक्ष्म्यैनमः। ॐब्रह्मविद्यायैनमः। इतिमन्त्रैःसम्पूज्य ततोगन्ध मालावस्त्रादिभिःगुरुंसम्पूज्य–पूर्ववत्पादोपसंग्रहणंकुर्यात्। यदि पितुरतिरिक्त ब्राह्मणश्चेत्तदावासांगुलिभिर्गुरुवरणं कुर्यात्वरण द्रव्यंसम्पूज्य अद्येत्यादि०अमुकराशिरमुकोहंकरिष्यमाणवेदारम्भ कर्मणिगुरुभिर्वरणद्रव्येणअमुकगोत्रप्रवरंअमुकशर्माणंवेदज्ञंगुरु-त्वेनत्वामहंवृणे वरणद्रव्यंदत्वाप्रार्थयेत–ॐगुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरु-र्देवो महेश्वरः गुरुःसाक्षात्परब्रह्मतस्मै श्रीगुरवेनमः। ततोगुरुः ब्रह्मचारिणं अग्नेरुत्तरतः उदङ्मुखंप्राङ्मुखंवा प्रागग्रेषुकुशेषूपवि श्यस्मार्ता चमनं कृत्वा प्राणायामं विधाय ब्रह्मांजलिं कार-यित्वास प्रणवव्याहृतिपूर्वां गायत्रीं पाठयित्वा स्ववेदारम्भं

कुर्यात् । ॐ इषेत्वादिमन्त्रस्याम्नायस्य माध्यंदिनीयकस्य, वाजसनेयस्य यजुर्वेदस्य विवस्वानृषिर्गायत्र्यादीनिछन्दांसिलिंगोक्ताः देवता वेदारम्भकर्मण्यध्ययने विनियोगः ॥ हस्तंफणाकृतिंकृत्वा वामहस्तकरतलोपरि दक्षिणबाहुमूलंदक्षिण जघनोपरिविन्यस्य उदात्तादिस्वरसहितं हस्तंचालयित्वा, आरभेत्-हरिः ॐ-ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुः० ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायवस्थदेवोवः-सविताप्रार्पयतु श्रेष्ठतमायकर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽइन्द्राय-भागम् ॥ प्रजावतीरनमीवाऽअयक्ष्मा मावस्तेनऽईशतमाघशंसो ध्रुवाऽअस्मिन्गोपतौस्यातबह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि । (१) वसोः,पवित्रम् । अलंस्वल्पारंभोक्षेमकरः ॥ अथऋग्वेदः—ॐ ऋग्वेदस्य-अग्निमीळे इत्यस्यमन्त्रस्य, मधुच्छन्दा ऋषिर्गायत्री छन्दःअग्निर्देवता वेदारम्भकर्मणि ऋग्वेदारम्भकरणेविनियोगः। ॐ अग्निमीळेपुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम् । होतारंरत्नधातमम् । इतिऋग्वेदारम्भः । अथसामवेदारम्भः ॥ ॐ अग्नआयाहीति सामवेदादिमन्त्रस्य, गौतमऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता वेदारम्भकर्मणि सामवेदाध्ययने विनियोगः ॥ ॐ अग्नआयाहिवीतयगृणानोहव्यदातये । निहोतासत्सिबर्हिषि ॥-इतिसामवेदारम्भः—ॐ शन्नोदेवीरिति अथर्ववेदस्यादिमन्त्रस्य दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्गायत्रीछन्दः अग्निर्देवता वेदारम्भकर्मणि अथर्ववेदाध्ययनेविनियोगः-ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ पुनःपूर्ववत्सप्रणवव्याहृतिपूर्विकांगायत्रीं-पठित्वा ॥ ॐ विरामोऽस्तु ॥—इतिवेदानधीत्य, ब्रह्मचारीपूर्ववद् गुरुपादावभिवंद्य प्रणम्यचगुरुदक्षिणासंकल्पंकुर्यात्-अद्येत्यादिअमुकोऽहं, मयाकृतस्य वेदाध्ययनकर्मणः सांगफलावाप्तये गोचरप्रत्याम्नायीभूतमिदंद्रव्यं, गुरवेतुभ्यमहंसम्प्रददे, इतिगुरुचरणयोर्धृत्वापूर्ववत्प्रणमेत्—ॐ आयुष्मान्भवसौम्य, विद्यावान्भवसौम्य ततस्त्रायुष्करणंकृत्वा अथचलोकाचाराद् ब्रह्मचारी काश्यांविद्याध्ययनार्थं तीर्थपर्यटनार्थंवागच्छति ॥ तदावाजिभिः

सहब्रह्मचारीदण्डादिभिः परियुतःसन्, अग्रतोगच्छेत्तदनुयायिनोपिगच्छन्तु। ततःपूर्वस्यांदिशिवाग्रामदेवता सन्निधौगत्वातत्र देवंसंपूज्य प्रणम्यपरिक्रमणचतुष्टयंकृत्वा ततो माता वा पिता सगोत्रिणः तत्रगच्छन्ति,ततोब्रह्मचारिणंप्रबोधयन्ति, भोब्रह्मचारिन्त्वांगृहेपाठयिष्यामः ततोब्रह्मचारी ॐ तदस्तु॥ इत्युक्त्वा ततस्तंब्रह्मचारिणं, दृढपुरुषस्यस्कंधारूढंकृत्वा वेदारम्भवेदीसमीपमानयन्ति, ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेरितिललाटे कश्यपस्यत्र्यायुषमिति ग्रीवायांयद्देवेषु त्र्यायुषमितिदक्षिणांसे। तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषमिति हृदि॥ ततोवेदाध्ययनसांगतार्थंगोदानंवातिलपात्रंकुर्यात्-अद्येत्यादि०अमुकराशिरमुकशर्म्माहं करिष्यमाण वेदारम्भकर्मणिवेदाध्ययनस्यसांगतासिध्यर्थंमिदंद्रव्यंगोप्रत्याम्नायीभूत ममुकशर्मणे कर्मोपदेशकायाचार्यायतुभ्यंसम्प्रददे।ततोदशब्राह्मणान भोजयेत्

अथ समावर्त्तनपद्धतिः।

अथसमावर्तन संस्कार पद्धतिः—अथ च ब्रह्मचारी गुरुमर्थदानेन संपूज्य (याज्ञवल्क्यः गुरवेतुवरं दत्वा स्नायीत तदनुज्ञया॥ वेद व्रतानिवा पारं नीत्वा ह्युभयमेवपा॥ इति प्रमाणात् समावर्त्तन करणाधिकारार्थ स्व गायत्री गुरवे वरं (ब्राह्मणस्य गौर्वरः) वा गो प्रत्याम्नायी भूतंद्रव्यं दद्यात्–तत्र संकल्पः–गां वा द्रव्यं संपूज्य—ॐ अद्येत्यादि संकीर्त्य–अमुकोहं समावर्त्तन स्नानाधिकार सिद्धये इमां गां गोनिष्क्रयीभूतं सुवर्णं रजतं वा गुरवे तुभ्यमहं सम्प्रददे॥ पितुर्गुरवे पुरोहिताय दद्यात्॥ इति दत्वा आयुष्मान् भव सौम्य, इत्याशिषं लब्ध्वा गुरुंप्रार्थयेत्॥ भोगुरो अहं स्नास्यामि। इति प्रार्थ्य–स्नाहि गुरुर्वदेत इति लब्धानुज्ञो ब्रह्मचारी वक्ष्यमाण विधिना स्नायात। तत आचार्यः समावर्तन

वेदी समीपमागत्यप्राङ् मुखमुपविश्य, स्व दक्षिणत उदङ्मुखं ब्रह्मचारिणमुपवेश्य आचम्य प्राणायाम त्रयंविधाय, गणेशादीन्प्रणम्य प्रतिज्ञा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्य अमुकोह ममुक नाम्नोऽस्यवटोः ब्रह्मचर्य समापन पूर्वक स्नातकत्वसिद्धये समावर्तन कर्म करिष्ये । ततो वेद्यां कुशकं डिकामारभेत ॥ ततो दक्षिणाहस्तेनकुशैः समावर्तन वेदीं परिसमुह्यकुशान्पूर्वे क्षिप्त्वा गोमयोदकेनोपलिप्य, स्रुवमूलेन प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य उल्लेखन क्रमेणानामिका गुष्ठाभ्यां मृदमुध्दृत्य, जलेनाभ्युक्ष्य, तैजसपात्रोपनीतमग्निं वेद्यां स्वाभिमुखं संस्थाप्य, तद्रक्षार्थद्रव्यं नियुज्य ब्रह्मवरणं कुर्यात्—ब्राह्मणं सम्पूज्यद्रव्यं च, अद्येत्यादि-अमुकनाम्नो वटोः समावर्तनांगहोमकर्मणि, कृता कृता वेक्षण-रूप ब्रह्मकर्म कर्तुमनेन वरणद्रव्येण अमुक शर्म्माणंत्वां ब्रह्मत्वेन वृणे। इतिदत्वावृतोस्मीतिब्रूयात् । कर्मकुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः॥ ततोऽग्नेः प्रदक्षिणं कारयित्वा अग्नेर्दक्षिणतः कुशैः कल्पितासनो पर्युपवेशयेत् ॥ ततोग्नेरुत्तरतः प्रागग्रकुशैरासनद्वयं कल्पयित्वा प्रणीतापात्रं सव्यहस्तेधृत्वा दक्षिणहस्तोध्दृत घृतपात्रोदकेन पूरयित्वा, पश्चिमासने निधाय हस्तेनालभ्य पूर्वासने स्थापयित्वा, बर्हिर्मुष्टिमादाय ईशानादि प्रागग्रै र्बर्हिभिरुदक्संस्थमग्नेरुत्तरतः पश्चाद्वा परिस्तरणं कृत्वा, पवित्र छेदनानित्रीणि कुशतरुणानि, पवित्रे साग्रे अनन्त गर्भेद्वे कुशतरुणे प्रोक्षणीपात्रं आज्यस्थाली तैजसी चरुस्थाली सम्मार्जन कुशास्त्रयः, उपयमन कुशास्त्रि-प्रभृतयः पंचसप्तवा, समिधस्तिस्रः प्रादेशमात्र्यः, स्रुवः गव्य-माज्यं, पूर्णपात्रं दक्षिणावरोवा यथावदासाद्य, विशेषोपकल्पनी यानि वस्तूनि—इंधनं पृथक् पृथक् दशधा विभक्तं, पर्युक्षणार्थ जलं समिधस्तिस्रः हरिताः कुशाः स्नानार्थं सर्वौषधि मिश्रित तीर्थजल पूर्णा अष्टौ कलशाः । सहस्रधारा ताम्रमयी, सूर्योप-स्थानार्थं वस्त्रं, भोजनार्थं दधितिलानि, नापितः स्नानार्थं शीतलं जलं, औदुम्बरं दन्तधावनं वर्षप्रमाणकं, उद्वर्तनं स्नानार्थं सुगन्-

मुदकं, चन्दनं नूतने वाससी यज्ञोपवीतं पुष्पाणि माला च, शिरोवेष्ठनम्-उत्तरीयं, परिधानवस्त्राणि कुण्डले, अंजनं दर्पणं, छत्रं उपानहौवैणवो दण्डश्चेति संगृह्य कर्मारभेत् ॥ ततस्त्रिभिः कुशतरुणैः द्वे कुशतरुणे प्रछिद्य पृथक् संस्थाप्य प्रोक्षणीपात्रं प्रणीतासन्निधौ निधाय तत्र हस्तेन प्रणीतोदकमासिच्य, पवित्राभ्यामुत्पूय पवित्रे प्रोक्षणीषु निधाय, दक्षिणहस्तेन प्रोक्षणीपात्रमुत्थाप्य सव्ये करे कृत्वा तदुदकं दक्षिणा नामिकां गुष्टाभ्यामुच्छाल्य प्रणीतोदकेन प्रोक्ष्य आज्यस्थाल्यादीनिपूर्णपात्र पर्य्यन्तानि प्रोक्षणी जलेनआसादन क्रमेणैकैकशः प्रोक्ष्य, प्रणीताग्न्योरंतरालेप्रोक्षणी पात्रं निधाय, आसादितमाज्यं, आज्यस्थाल्यां, पश्चादग्नेर्निहितायांप्रक्षिप्य, प्रणीतोदकमासिच्यतत्राज्यंब्रह्माधिश्रयति, ज्वलदुल्मुकमादाय, आज्योपरि समन्तात प्रदक्षिणक्रमेण भ्रामयित्वा, दक्षिण हस्तेन स्रुवमादाय, प्रांचमधोमुखं तापयित्वा सव्येपाणौकृत्वा दक्षिणहस्तेन संम्मार्जन कुशाग्रैर्मूलतोऽग्रपर्य्यन्तं, मूलैरग्रतो मूलपर्य्यन्तं संम्मार्ज्य कुशानग्नौप्रक्षिप्य प्रणीतोदकेनाभिषिच्य, पुनः पूर्ववत्प्रतप्य स्व दक्षिणतोनिदध्यात् ॥ आज्यमग्रेः पश्चादानीय, पवित्राभ्यामुत्पूय, अवेक्ष्यापद्रव्य निरसनं कृत्वा, प्रोक्षणी जलेन पवित्राभ्यामासिंच्य उपयमनकुशान दक्षिणहस्तेनादाय, सव्येकृत्वाउत्तिष्ठन् दक्षिणहस्तेन घृताक्तास्तिस्रःसमिध आदाय तूष्णीमग्नौ प्रक्षिप्य, प्रोक्षण्युदकम् दक्षिणचुलुकेगृहीत्वा, ईशनादि उदगान्तमग्निं प्रदक्षिण क्रमेण परिषिच्य पवित्रे प्रणीतापात्रे निधाय, आघारादीन् जुहुयात् ॥ संस्रव धारणार्थं प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्न्यो रंतराले निदध्यात् ॥ द्रव्यदेवताभि ध्यानं कुर्यात् ॥ अद्येत्यादि संकीर्त्य-अमुक नाम्नोऽस्य वटोः समावर्त्तन कर्मणि तत्रप्रजापतिं, इन्द्रम्, अग्निम, सोमम्, अंतरिक्षम्, वायुम्, ब्रह्माणम्, छन्दाꣳसि, दिवं, सूर्यं, ब्रह्माणं, छन्दाꣳसिप्रजापतिम्, देवान, ऋषीन, श्रद्धां, मेधां, सदसस्पतिं अनुमतिं, अग्निं, वायुं, सूर्यं, अग्नीवरुणौ, अग्नीवरुणौ, अग्निं, वरुणꣳसवितारं, विष्णुं,

विश्वेदेवान मरुतः, स्वर्कान्, वरुणं, प्रजापतिं, स्विष्टकृतंचाज्ये-नाहं यक्ष्ये (आचार्यस्यहोमकर्तृत्वे, पित्रादिः, इदमाज्यं तत्तद्देवतायै मया परित्यक्तं यथा दैवनमस्तु न मम ॥) ततः (व्रतान्तेराजपुत्रकः) इति स्मरणात् राजपुत्रनामानमग्नि मावाहयेत्) ॐ भूर्भुवः स्वःराजपुत्रनामाग्ने। इहागच्छेहतिष्ठ, ॐ एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य ॐ तदेवाग्नि० इति मंत्रेण वा ॐ राजपुत्रनामाग्नये नमः इति मंत्रेण सम्पूज्य, दक्षिणं जान्वाच्य, ब्रह्मणान्वारब्धो जुहुयात-स्रुवेण-ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतयेनमम । ॐ इन्द्राय स्वाहा-इदमिन्द्रायनमम । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नयेनमम । इत्याघाराज्यभागौहुत्वा, अन्वारंभंत्यक्त्वा, समावर्त्तनांग होमस्यप्रधानाहुतीर्जुहुयात् । तत्रादौ यजुर्वेदाहुतयः—ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा इदमन्तरिक्षायनमम । ॐ वायवे स्वाहा इदं वायवे० ॐ । ब्रह्मणे स्वाहा-इदं ब्रह्मणे । ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः०-अथ ऋग्वेदाहुतयः ॐ पृथिव्यै स्वाहा इदं पृथिव्यैनमम । ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये० । ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे० ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्य० । सामवेदाहुतयः ॐ दिवे स्वाहा इदं -दिवेनमम ॐ सूर्यायस्वाहा इदं सूर्याय०ॐ ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे०ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा इदं छन्दोभ्यः० अथर्ववेदाहुतयः-ॐदिग्भ्यः स्वाहा इदं दिग्भ्यो नमम । ॐ चन्द्रमसे स्वाहा-इदं चन्द्रमसे० — ब्रह्मणे स्वाहा इदं ब्रह्मणे०ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा-इदं छन्दोभ्यः । अथ संवलग्न सामान्याहुतयः—ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतयेनमम । ॐ देवेभ्यः स्वाहा इदं देवेभ्यः०। ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा इदं ऋषिभ्यः०। ॐ श्रद्धायै स्वाहा इदं श्रद्धायै०। ॐ मेधायै स्वाहा-इदं -मेधायै० ॐ सदसस्पतये स्वाहा-इदं सदसस्पतये० । ॐ अनुमतये स्वाहा इदमनुमतयेनमम । इति कर्म्माङ्गा हुतयोहुत्वा ब्रह्मणान्वारब्धोजुहुयात् ॐ भूरादिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री-उष्णिग-नुष्टुभ्छंदांसि अग्नि वायु सूर्या देवताः समावर्तनांग होमेविनि-

योगः (ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेनमम ॐ भुवः स्वाहा इदं वाय-
वे० ॐ स्वः स्वाहा इदꣳसूर्याय० ॐ त्वन्नोऽअग्ने सत्वन्नोअग्ने
इत्यनयोर्वामदेव ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरुणौ देवते समावर्तनां
गहोमे विनियोगः। ॐत्वन्नोऽग्ने व्वरुणस्य विद्वान् देवस्यहेडो
ऽअवयासिसीष्ठाः यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानो व्विश्वाद्वेषाꣳसि
प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम ॐ सत्वन्नोऽअग्ने
ऽवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउपसोव्युष्टौ। अवयक्ष्वनोव्वरुण ꣳ०
रराणोव्वीहिमृडीक ꣳ० सुहवोनऽएधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां
ॐ अयाश्चाग्ने इति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता समा-
वर्तनांग होमेविनियोगः—ॐअयाश्चाग्नेस्यनभिशस्तिपाश्च सत्य
मित्त्वमयाऽअसि अयानोयज्ञं व्वहास्ययानोधेहिभेषजꣳ स्वाहा
इदमग्नये—ॐ येतेशतमिति वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो व्वरुणः
सवितादिष्णुर्विश्वेदेवामरुतः स्वर्काश्चदेवताः समावर्तनांग होमे
विनियोगः ॐयेतेशतंवरुणंयेसहस्रंयज्ञियाः पाशाव्वितताममहान्तः
तेभिर्नोऽअद्यसवितोत विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तुमरुतः स्वर्काःस्वाहा
इदं व्वरुणाय सवित्रे विष्णवेविश्वेभ्यो देवेभ्योमरुद्भ्यःस्वर्केभ्य-
श्चनमम। ॐ उदुत्तममितिशुनः शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः व्वरुणो
देवतासमावर्तनांग होमेविनियोगः ॐ उदुत्तमंव्वरुणपाश मस्म-
दवाधमं व्विमध्यमꣳश्रथाय, अथाव्वयमादित्यव्रते तवानागसोऽ
अदितयेस्याम स्वाहा० इदं व्वरुणायनमम, ॐ प्रजापतये स्वाहा
इदं प्रजापतयेनमम। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नयेस्वि
ष्टकृतेनमम संस्रवंप्राश्य, प्रणीताजलेन पवित्राभ्यां मुर्धसंमार्ज्य
अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः अग्नि पश्चिमे प्रणीताविमोकं कृत्वा ब्रह्-
मणेपूर्णपात्रंदद्यात्—अद्येत्यादि० अमुकोऽहंममसमावर्तनांगहोम
कर्मणःसांगफलप्राप्तये अपूर्णपूरणार्थं इदं सदक्षिणं पूर्णपात्रं ब्रह्म
णे तुभ्यंसंप्रददे ॐ स्वस्तीति ब्रह्माब्रूयात्। ततोब्रह्मचारी गुरुम-
भिवन्द्य,वक्ष्यमाणमंत्रैःप्रतिमंत्रैणैकमिन्धनमग्नौप्रक्षिपेत् तत्रमंत्रः
ॐ अग्नेसु अव इत्यादीनां पंचानां मंत्राणां ब्रह्मऋषिर्यजुश्छन्दः

अग्निर्देवता समिन्धने विनियोगः—ॐअग्ने सुश्रवः सुश्रवसंमा· कुरु ॥१॥ इत्येकं शुष्कमिन्धनमग्नौप्रक्षिपेत् । ॐ यथात्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवाऽअसि । द्वितीयंक्षिपेत् । ॐएवंमाँसुश्रवः सौश्र वसंकुरु । तृतीयं ॐयथात्वमग्नेदेवनांयज्ञस्यनिधिपाऽअसि, चतुर्थं ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्यनिधिपो भूयासम् इति पंचमंप्रक्षि- पेत् । एवंहस्ताभ्यांधुंदय वन्हिमुत्तेजितंकृत्वा जलेन ईशानादुदगंत प्रदक्षिणक्रमेण वन्हिंसम्मार्ज्य, ततो ब्रह्मचारी उत्थाय दक्षिण हस्ते घृताक्तामेकां समिधमादायोत्तिष्ठन् ॐ अग्नयेसमिधमिति प्रजापतिर्ऋषिराकृतिश्छन्दः समिद्देवता समिदाधाने विनियोगः । ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे यथात्वमग्ने समिधा समिध्यसऽएव मह्मायुषामेधयाऽवर्चसाप्रजयापशुभिर्ब्रह्मवर्च- सेनसमिन्धेजीवपुत्रोममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यश स्वीतेजस्वीब्रह्मवर्ची स्यन्नादोभूयासँ स्वाहा इत्येकांहुत्वा अनेनैवमंत्रेणद्वितीयांतृतीयांचहुत्वापुनः पूर्ववत्अग्नेसुश्रवःपंचभि र्मन्त्रैःपंचेन्धनप्रक्षेपणंपुक्षणंअग्निपर्युक्षणं, विधायतूष्णींपाणीप्रत प्यमुखंविमार्ष्टितनूपाअग्नेरित्यादिसप्तभिर्मन्त्रैःप्रतिमंत्रेणललाटादि चिबुकपर्यन्तंमुखंहस्ताभ्यांप्रोंक्षति । ॐतनूपाअग्नेइत्यादिसप्तानां मंत्राणाम् अवत्सारऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः अग्निर्देवता अग्न्यालंभने विनियोगः ॐतनूपाअग्नेऽसितन्वंमेपाहि ॥१॥ ॐ आयुर्दाऽअग्ने ऽस्यायुर्मेदेहि ॥२॥ ॐ वर्चोदाऽअग्नेऽसि वर्चोमेदेहि ॥३॥ ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनं तन्मऽ आपृण ।४। ॐ मेधां मेदेवः सविता आदधातु ।५। मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ।६। ॐ मेधामश्विनौ देवावाधत्तांपुष्करस्रजौ ।७। इतिप्रोंक्षयित्वा वक्ष्य- माणमंत्रैराचार्यो वटोः सर्वांगं प्रतप्तपाणिना आलभेत ॥ ॐ अङ्गानिचमऽऽआप्यायताम् । इति सर्वांगम् ॥ ॐ वाक् चमऽआ- प्यायताम्–इति मुखम् । ॐ प्राणश्चमऽआप्यायताम्–इति ना सारन्ध्रे ॥ ॐ चक्षुश्चमऽआप्यायताम्—इति चक्षुषी ॐ श्रोत्रं चमऽआप्यायताम्–श्रोत्रे मंत्रपर्यायेण–यशोबलं च मऽआप्या-

यनाम्-इति वाहू। तत हस्तौ प्रक्षालयेत् अथानामिकयाऽग्नेर्भस्मगृहीत्वा वक्ष्यमाणमंत्रैः त्र्यायुषाणि कुर्यात्। ॐ त्र्यायुषमिति नारायणऋषिरुष्णिक्छन्दः अग्निर्देवता त्र्यायुषकरणे विनियोगः। ॐ त्र्यायुषंजमदग्नेः इति ललाटे। ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषमितिग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्या-युषम्-इति दक्षिणांसे। ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषमिति—हृदि-ततो ब्रह्मचारी व्यस्तहस्ताभ्या मग्नेरभिवादनं कुर्यात्। अमुकगोत्रोऽमुकप्रवरो यजुर्वेदान्तर्गतामुक शाखाध्यायी, अमुकोऽहंभो अग्ने त्वामभिवादये॥ इत्यग्निमभिवाद्य, ततः कर्णौस्पृष्ट्वाव्यस्ताभ्यां हस्ताभ्यांअमुकगोत्रेत्याद्युक्त्वा, भोगुरोत्वामभिवादये गुरुस्तुआयुष्मान्भवसौम्यअमुक०।३। ततोऽग्रेरुत्तरतः दक्षिणोत्तरश्रेणियुतानां ताम्रादिमयानां जलपूर्णकुम्भानां पंचपल्लवावृतमुखानां पुरस्तात् हरितकुशान् प्रागग्रानास्तीर्य, तेषुकुशेषुब्रह्मचारी उदङ् मुखेनोपविश्य (गणनायां दक्षिणतोवामगतिन्यायेन) प्रथमत्वं दक्षिणस्यैवभवति। तत्रादौ दक्षिणस्यादौ उदकुंभादुदकं गृहीत्वा, ॐ येप्स्वन्तरमिति प्रजापति ऋषिर्यजुश्छन्दः, आपोदेवता अपांग्रहणे विनियोगः। ॐ येप्स्वन्तरग्नयःप्रविष्टागोह्यऽउपगोह्योमयूखो मनोहास्खलोविरुजस्तनूदूषिरिन्द्रियहा तान् विजहामियोरोचनस्तमिहगृह्णामि। इति मंत्रेणप्रथम जलकुम्भाद्दक्षिणहस्तचुलुके जलंगृहीत्वा वक्ष्यमाण मंत्रेण आत्मानमभिषिंचति। वक्ष्यमाण मंत्रेण तेनोदकेनब्रह्मचारीस्वीकीयशिरसोऽभिषेकं कुर्यात्। अभिषेकानन्तरं शेषजलं सहस्रधारां शिरसिकृत्वा तत्र क्षिपेत् वासर्वं कुम्भाभिषेकान्ते सर्वेषां जलेनैकैकशः सहस्रधाराभिः स्नायात्, ॐ तेनेति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः अपोदेवता अभिषेचने विनियोगः। ॐ तेन मामभिषिंचामि श्रियैयशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्च्चसाय। इति मंत्रेण अभिषेकं कृत्वा, सहस्रधाराभिर्वाशिरसि जलं क्षिपेत्। ततः पूर्वोक्तयेऽअप्स्वन्तरग्नय इति मंत्रेणैव कलशाष्टकानां चुलुकेनजलं ग्रहणंकरोति। अभिषेकस्यैव पृथक् पृथक्मंत्राः

सन्ति । ततो द्वितीयकलशजलं येप्स्वन्तरग्नयः इति चुलुकेगृहीत्वा ॐ येनेति प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः आपोदेवता अभिषेचने विनियोगः ॐ येनश्रियमकृणुतां येनावमृश्यता ऽँ सुराम् । येनाक्ष्यावभ्यषिंचतां यद्वां तदश्विनायशः ।२। इत्यभिषिंच्य ततः पूर्ववद्, येऽप्स्वन्तः । आपोगृ० ॥ ॐ आपोहिष्ठेति सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछन्दः अपोदेवता अभिषेचने विनियोगः ॐ आपो हिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे । इत्यभिषिंच्य ।३। चतुर्थकुम्भात् । येअप्स्वन्तः जलमादाय ॐ योवऽ इति सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछन्दः आपोदेवता अभिषेचने विनियोगः ॐ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः इत्यभिषिच्य ।४। ततः पंचम कुम्भात् । येऽअप्स्वंत० इति जलं० ॐ तस्माऽअरंग इति सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपोदेवता अभिषेचने विनियोगः ॥ ॐ तस्माऽअरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजन यथा चनः ॥ इत्यभिषिच्य, ततः षष्ठ सप्तम अष्टम कुम्भानां जलमैकैकशः, ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः इति मंत्रेण पूर्वं जल ग्रहणं, तूष्णीमभिषेचनम्–कुर्यात् पूर्ववत् (क्वचित्पुस्तके इदानीमभिषेकानन्तरं, अभिषेकावशिष्ट जलेन सहस्रधाराभिः स्नानं निर्दिष्टम्–सूत्रकारेण शिरसोभिषेकश्चुलुकेनोक्तः नतु सहस्रधाराभिः ॥ देशसमाचारोऽयम् ।)—वक्ष्यमाण मंत्रेण ब्रह्मचारीमौञ्जींमेखलांमंत्रंपठनस्वयमेवशिरोमार्गेणनिस्सार्य भूमौ क्षिपेत्–ॐ उदुत्तममिति शुनःशेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वरुणो देवता मेखलोन्मोके विनियोगः ॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाशमस्मदवा धमंव्विमध्यमऽँश्रथाय । अथावयमादित्यव्व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम ॥ इति मेखलामुन्मुच्य तूष्णीं मुदगग्रं दण्डमजिनं च भूमौ निधाय, उपकल्पितवासस्तूष्णीं परिधाय द्विराचम्यवक्ष्यमाण मंत्रैः आदित्यमुपतिष्ठते । ॐ उद्यन्भ्राजभृष्णुरिति प्रजापतिर्ऋषिः शाक्करीछन्दः आदित्योदेवता सूर्योपस्थाने विनियोगः ॥ ॐ उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्प्रातर्य्यावभिरस्थाद्दश-

सनिरसि दशसनिं मा कुर्वाविदन्मागमय। उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद्दिवायावभिरस्थाच्छत सनिरसि शत सनिंमा कुर्वाविदन्मागमय। उद्यन्भ्राजभृष्णुरिन्द्रोमरुद्भिरस्थात्सायं यावंभिरस्था त्सहस्रसनिरंसि सहस्रसनिं मा कुर्वाविदन्मागमय। इति मंत्रैः ब्रह्मचारी उत्तिष्ठन्नूर्ध्वं बाहुः सूर्योपस्थानं कुर्यात् ॥ तत उपकल्पितं दधि तदभावे तिलान्वा दक्षिणहस्तमध्य सोमतीर्थेन प्राश्यजटालोमनखानां नापितद्वारा निकृन्तनं कृत्वा॥ वपननिमित्तकं शीतलोदकेन स्नात्वा आचम्य ततो ब्राह्मणः द्वादशांगुल दीर्घेण, क्षत्रियो दशांगुलेन, वैश्योऽष्ठांगुलेन, कनिष्ठिकाग्रभाग स्थूले न उदुम्बरकाष्टेन दन्तधावनं वक्ष्यमाणमंत्रेण कुर्यात्—ॐ अन्नाद्यायेत्याथर्वण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः—सोमोदेवता दन्तधावने विनियोगः॥ ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वँसोमोराजाऽअयमागमत्। समेमुखं प्रमार्दयते यशसा च भगेन च॥ ततो द्वादशगंडूषान् कृत्वा, आचम्य सुगन्धि द्रव्येण कटुतैलमिश्रित हरिद्रापिष्टादियुतेन कल्केन गात्रोद्वर्तनं कृत्वा सशिरस्कं तप्तोदकेन स्नात्वा, ततः केशरचन्दनाद्यनुलेपनमादाय, तेन चन्दनेन उभौ हस्तावुपलिप्यवक्ष्यमाणमंत्रै र्वक्ष्यमाण अंगानि उपगृह्णीते ॐ प्राणापानाविति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः लिंगोक्तादेवता चन्दनोप संग्रहणे विनियोगः॥ आदौ—उभाभ्यां हस्ताभ्यां मुखं नासिकां च लिम्पेत् ॐ प्राणापानौ मे तर्पय। ततश्चक्षुषी—ॐ चक्षुर्मे तर्पय॥ ततः कर्णौ—ॐ श्रोत्रं मे तर्पय, ततो हस्तौ प्रक्षाल्य, अपसव्यं कृत्वा, तदवनेजनं दक्षिणाभिमुखः पितृतीर्थेन दक्षिणास्यां भूमौ निषिंचेत् वक्ष्यमाण मंत्रेण—ॐ पितर इति प्रजापत्यऋषिसरस्वत्य ऋषयो यजुश्छन्दः पितरो देवताः निषेचने विनियोगः। ॐ पितरः शुन्धध्वम् इति पाण्योरवनेजनं जलं भूमौ निषिंचेत्॥ अत्रपित्र्यत्वात् सव्यं भूत्वोदकस्पर्शः॥ ततोऽनुलेपनानन्तरं केशवादि नामभिर्द्वादशतिलकान धारयेत्—यथा ॐ केशवायनमः ललाटे १ ॐ नारायणायनमः उदरे

-२ ॐ माधवायनमः हृदये ३ ॐ गोविन्दायनमः कंठकूपके ४ ॐ विष्णवेनमः दक्षिणकुक्षौ ५ ॐ मधुसूदनायनमः दक्षिणबाहौ ६ ॐ त्रिविक्रमायनमः कर्णमूलयोः ७ ॐ वामनायनमः वाम कुक्षौ ८ ॐ श्रीधरायनमः वामबाहौ ९ ॐ पद्मनाभायनमः पृष्ठदेशे १० दामोदरायनमः ककुदि ११ ॐ वासुदेवायनमः मूर्ध्नि १२ ललाटेवंशपत्राकृतिकं मध्यशून्यंधारयेदितिच ॥ एवं-तिलकान्धृत्वा वक्ष्यमाणमंत्रंजपेत—ॐ सुवक्षाइति प्रजापति-ऋषि, र्यजुश्छन्दःसवितादेवताजपे विनियोगः ॥ ॐ सुचक्षाऽहं मक्षीभ्यांभूयासं०सुवर्चामुखेनसुश्रुत्कर्णाभ्यांभूयासम् ॥ अथ वासःपरिधत्ते—ॐ परिधास्यैइत्याथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दोवासो-देवताअधोवस्त्रपरिधाने विनियोगः ॥ ॐ परिधास्यैयशोधास्यै, दीर्घायुत्वायजरदष्टिरस्मि । शतंचजीवामिशरदः, पुरूचीरायस्पो-षमभिसंव्ययिष्ये ॥ ततोद्विराचम्यपूर्वमभिमंत्रितं यज्ञोपवीतं द्वितीयंधारणंकुर्यात । (स्नातस्यद्वेवस्त्रेनिवाइतिवचनात) वस्त्रा-भावेतृतीयंउत्तरीयाभावे चतुर्थंचयथासंप्रदायः ।) ॐ यज्ञोपवी तमितिपरमेष्ठीऋषिः—त्रिष्टुप्छन्दोलिंगोक्तादेवताः यज्ञोपवीत परिधाने विनियोगः—ॐ यज्ञोपवीतं परमंपवित्रं प्रजापतेर्यत्स-हजंपुरस्तात, आयुष्यमग्र्यंप्रतिमुंचशुभ्रं यज्ञोपवीतंबलमस्तुतेजः । अथोत्तरीयम्—ॐ यशसामेत्यथर्वणऋषिः पंक्तिश्छन्दोलिंगोक्ता देवता उत्तरीयपरिधाने विनियोगः ॐ यशसामाद्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती । यशोभगश्चमाऽविंदद्यशोमाप्रतिपद्यताम् अने नैवमन्त्रेण कौशेयादिदुकूलेनाच्छादयेत् । (एकमेववस्त्रंचेत्तेनैवो-त्तर वर्गेणप्रच्छादयीत) ततो द्विराचमनं कृत्वा पुष्पमालां गृह्णाति । ॐ या आहरदिति भरद्वाज ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सुमनसो देवता पुष्पमाला ग्रहणे विनियोगः ॥ ॐ याऽआहरज्जमदग्निः श्रद्धायै, मेधायैकामयेंद्रियाय । ताऽअहंप्रति गृह्णामियशसाच भगेनच,इति गृहीत्वा वक्ष्यमाण मंत्रेण शिरसिबध्नाति। ॐ यद्यशोऽप्सरसा-मितिभरद्वाज ऋषिर नुष्टुप्छन्दः सुमनसोदेवताः पुष्पमाला धारणे

विनियोगः। ॐ यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथुतेन संग्र-थिताः सुमनसः आबध्नामियशो मयि॥ अथोष्णीषेण शिरोवेष्ट-यते । ॐ युवासुवासा ऽ इति विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः शिरोदेवता शिरस्युष्णीष वेष्टने विनियोगः, ॐ युवासुवासा परिवीत आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः तन्धीरासः कवयऽ उन्नयन्ति स्वाध्योमनसा देवयन्तः॥ ततः कुण्डलादीन्यलंकाराणि वासांसिवा—ॐ अलंकरणमिति प्रजापतिर्ऋषिर्यजुश्छन्दः अलं करणं दैवतं वस्त्रभूषणालङ्करणे विनियोगः-ॐ अलङ्करणमसि भूयो ऽ अलङ्करणं भूयात् । इति कुण्डल वस्त्रान्यद्भूषण हारा-दिभिरलंकृत्वा वक्ष्यमाणमंत्रेण चक्षुषी अंजनेनाङ्क्ते॥ ॐ वृत्र-स्यासि कनीनकश्चक्षुर्दाऽअसि चक्षुर्मे देहि॥ अनेनैव दक्षिणवामौ संस्करोति॥ तत्र आदर्शं प्रेक्षते-ॐ रोचिष्णुरिति प्रजापतिर्ऋषि-र्यजुश्छन्दः आदर्शोदेवता आत्मानमादर्शे दर्शनेविनियोगः॥ ॐ रोचिष्णुरसि ॥ इति सर्व देहं दर्पणे पश्यति ॥ ततश्छत्रं प्रति गृह्णाति, ॐ बृहस्पतेश्छदिरिति गौतमऋषि रार्चीबृहतीछन्दः छत्रं देवता छत्र ग्रहणे विनियोगः ॐ बृहस्पतेश्छदिरासिपाप्म-नो मामन्तर्धेहि तेजसो यशसोमामन्तर्धेहि॥ ततोवक्ष्यमाणमंत्रेण (प्रतिष्ठे) इति मंत्रस्य द्विवचनान्तत्वात् पादयोर्युगपत्प्रतिमुंचते परिधत्ते॥ ॐ प्रतिष्ठे इति विश्वामित्र ऋषिर्विराट्छन्दो लिंगो-क्ता देवता उपानत्प्रतिग्रहणे विनियोगः। ॐ प्रतिष्ठेस्थोविश्वतो मापतम् । ततो वैणवदण्डमादत्ते-ॐ विश्वाभ्य इति याज्ञ वल्क्य ऋषिर्यजुश्छन्दो दण्डोदेवता दंडग्रहणे विनियोगः ॐ विश्वाभ्योमा नाष्ट्राभ्यस्परि पाहि सर्व्वतः इति वैणव (बांस) यष्टिकां गृहीत्वा आचार्य समीपमागत्य प्रणम्यच (धारयेद्वैणवीं यष्टिं सोदकं च कमंडलुम्॥ यज्ञोपवीतं वेदंच शुभे रौक्मे च कुण्डले।) तत्र आचार्यमुखात् स्नातको नियमान् शृणुयात् (उक्तं च पारस्कर गृह्यसूत्रे कांड २ कांडिका ७नः) स्नातकस्य यमान् वक्ष्याम। स्नातस्य ब्रह्मचर्यं समावृतस्य त्रैवर्णिकस्य निय-

मान वक्ष्यामः ॥ (कामादितरः ।२। कामादिच्छया इतरः द्विजातेरन्य शूद्रोपिनियमेषु–अधिक्रियते ॥ (नृत्यगीत वादित्राणि न कुर्यान्नचगच्छेत् ३ ॥) नृत्यं तालाद्यनुकरणगात्र विक्षेपः, गीतं षड्जादिस्वरैः ध्रुवादिरूपकः विशेष लावण्यरागध्वनिः ॥ वादित्रं शब्दगुणात्मकं तंत्रीमृदंगादिभेदेन चतुर्विधम् ॥ एतानि स्वयं न कुर्यात्–एतान्यन्यैः क्रियमाणानिद्रष्टुं श्रोतुंवान गच्छेत् ॥ (कामन्तु गीतं गायति वैयगीते वा रमत इतिश्रुतेर्लोपरम् ४॥) क्षेमेनक्तं ग्रामान्तरं न गच्छेत् ।५।) कुशलेसति रात्रौ अन्यग्रामं न गच्छेत् (आपदितु नक्तमपि गच्छेत् । (न च धावेत् ।६।) अकारणं शिघ्रं न गच्छेत् (उदपानावे क्षण वृक्षारोहण फलप्रपतन, संधिसर्पणं, विवृतस्नानं, विषमलंघनं, शुक्तवदनं, संध्यादित्यप्रेक्षण, भैक्षणानि न कुर्यात्, न ह्वै स्नात्वा भिक्षेतापहवै स्नात्वा भिक्षां जयतीति श्रुतेः ।७। कूपस्यावेक्षणं उपरितः अधोमुखीभूत्वा चिरकालंकौतुकेन न कुर्यात्, वृक्षोपरिगमनं, आम्रादि फलानां त्रोटनं, संध्यायां मार्गगमनं, कुमार्गे शीघ्रगमनं, नग्नस्नानं, पर्वतगर्तादे रुच्छालनेन लंघनम् । अश्लीलं तु त्रिविधं लज्जाकरं, दुःखकरं, अमंगलसूचकंचन ब्रूयात् ने क्षेतादित्यमुद्यन्तं, नास्तं यान्तं कदाचन नोपरिष्ठं न वारिस्थं न मध्यं नभसो गतम्, पक्वान्नभिक्षां, एतानि क्षेमेसति वर्जयेत् (वर्षत्यप्रावृतो व्रजेदयंमेवज्रः पाप्मानमपहनदिति ।८। देवेइन्द्रे वर्षतिसति अनाच्छादितः सन् वक्ष्यमाणमंत्र जप्त्वा गच्छेत् । ॐ अयंमेवज्रः पाप्मानमपहनत् इति । (अप्स्वात्मानं नावेक्षेत ॥९॥) जलेस्व मुखं न पश्येत् । (अजातलोम्नीं विपुं १० सीषँ षंढंचनोपहसेत् ११) भृकुटि पलकादिपुरोमरहितां कूर्चाकारां ओष्ठरोमजां पुरुषाकृतिंस्त्रियम् । नोपहसेत् न तयासह गच्छेत् नपुंसकमपिनोपहसेत् । गर्भिणीं विजन्येति ब्रूयात् ।११। सकुलमिति न कुलम् ।१२। भगालमितिकपालम् ।१३। मणिधनुरितीन्द्र धनुः ।१४। गर्भिणींस्त्रियम् विजन्याइत्येवं ब्रूयात् ।११। सकुल-

विरोपम् सकुलमिति ब्रूयात् । कपालंमानुपशिरः भगालमिति ब्रूयात्। इन्द्रधनुः मणिधनुरिति ब्रूयात्। (गांधयन्तीं परस्मैनाचक्षीत ।१५। परस्य गांस्ववत्संपाययन्तीं, तत्स्वामिनेन कथयेत्॥ (उर्वरायामनन्तर्हितायां भूमावुत्सर्पं ई० स्तिस्तत्र मूत्रपुरीषेकुर्यात् ।१६। उर्वरायां सस्यवत्यां भूमोवहुतृणैरंतर्हितायां च भूमौ ऊर्ध्वं तिष्ठनसन्। उत्सर्पन्नपि च मलमूत्रेन कुर्यात्। [स्वयंप्रशीर्णेन काष्टेन गुदं प्रमृजीतः ।१७। स्वयं भूमौ पतितेन, अयज्ञिकेन, काष्टखण्डेन मलोत्सर्गान्ते गुदं मलद्वारं प्रोंच्छयेत् (विकृतंवासोनाच्छादयीत् ॥१८॥ विकृतं नीलयादीन्या रंजितम् स्वाचार विरुद्ध वस्त्रं न परिदधीत स्मृत्युक्तकौशेयादिरक्तपीतवासांसितुपरिधेयानिसन्ति दृढव्रतोवधत्त्रः स्यात् सर्वेषांमित्रमिव ।१६। दृढंस्थिरं व्रतंप्रारम्भंकर्मयस्यसो दृढव्रतः स्यात् भवेत्॥ वधात्। घातात्। आत्मानंरक्षतीति वधात्रः स्यात् स्वेषांपरेषां च मित्र मिव हितकारीस्यात्। मैत्रोब्राह्मणउच्यते, इति स्मरणात् इति सर्वसाधारण नियमाः अथच समावर्त्तनान्तेद्विजा त्रिरात्रव्रतमाचरेयुस्तदवदये तिस्रोरात्रीर्व्रतंचरेत् ।१। तिस्रः त्रिसंख्यारात्रीः अहोरात्राणिव्रतं वदयमाणंचरेत् अनुतिष्ठेत्। अमांसाश्यमृन्मयपायी॥२॥ मांसं नभक्षयेत्। जलं मृन्मयेनपात्रेण न पिबेत्॥[स्त्रीशूद्रशवकृष्ण— शकुनिनां चादर्शनमसम्भाषाचैः ।३। स्त्री शूद्रादिभ्योऽसंभाषणं कुर्यान्नब्रूयादित्यर्थः शवोमृतशरीरंकृष्णाशकुनिःश्वाकुर्कुरः एतेषाम दर्शनम् नावलोकयेदित्यर्थः [शव शूद्रसूतकान्नानि च नादद्यात् ॥४॥ शवोमृतकःतस्मिंजातेसतिकीत्यालब्ध्या वायत् ज्ञातिभिरन्ते शूद्रस्यअवरवर्णस्य नापितादेर्भोज्यान्नस्यापियदन्नंतच्छूद्रान्नं [हविषान्नातिरिक्तं कोद्रान्नादिकंच सूतकेप्रसवाशौचेसति यत् ज्ञातीनामन्नंतत्सूतकान्नं तानिशावशूद्रसूतकानिनाद्यान्नभक्षयेत्। मूत्रपुरीषंष्ठीवनं चातपे न कुर्यात ॥५॥ मलमूत्रोत्सर्जनं घर्मे सति नकुर्यात्। तथाष्ठीवनंथूत्कृत्य,मुखलालकफादिनिःस्रावं न कुर्यात [सूर्याच्चात्मानंनान्तर्दधीत ६] छत्रवस्त्रादिभ्यःशरीरं

सूर्पातनगोपपेत तप्तेनोदकार्थान् कुर्वीत ।७। ततजलेन शौचा क्रिया विदध्यात् (अथज्योत्स्न रात्रौभोजनम् ।८। दीपंप्रज्वाल्यरात्रौभोजनम् । कुर्यात् । सत्यवदनमेववा) ।९। सत्यंब्रूयात् मिथ्या भाषणं न कुर्यात् । अमांसाशनादीन्यपिच ॥ अत्र सूत्रकारेण यावन्ति स्नातक व्रतान्युक्तानि न तावन्त्येवानुतिष्ठेत् ॥ अपितु मन्वादि स्मृतिप्रणी तान्यपितानि तु ततएव ज्ञेयानि अथ च वटुः पूर्वोक्त नियमान् श्रुत्वा, पूर्वदाचार्यस्य चरणौवंदयित्वा पूर्णाहुतिंजुहुयात्ततः पूर्णाहुतौ मृडनामाग्निं सम्पूज्य०–संकल्पं कुर्यात्–अद्येत्यादि संकीर्त्य अमुकोहं ममास्य वटोः समावर्त्तन कर्मणः सांगफलावाप्तये मृडाग्नौ पूर्णाहुतिहोमं करिष्ये—ततो घृताभ्यक्त श्रीफलं रक्तकौशेयवस्त्र वेष्ठितं गंधपुष्पादिभिः सुपूजितं स्रुवे निधाय उत्थाय, समिद्धेऽग्नौ घृतधारया वक्ष्यमाण मंत्रेण जुहुयात् ॥ ॐ मूर्द्धानंदिव इति भरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वानरो देवता मृडनामाग्नौ पूर्णाहुति होमे विनियोगः— ॐ मूर्द्धानं दिवोऽअरतिंपृथिव्या वैश्वानरमृतऽअजात मग्निम् । कविँसम्राजमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः–स्वाहा इदमग्नये वैश्वानरायनमम ॥ इति जुहुयात् ॥ (पूर्वोक्त पूर्णाहुति निषेधस्य समावर्त्तनेऽभावा दत्र पूर्णाहुति र्भवति) ततः प्रदक्षिणाचतुष्टयं कृत्वा, ततः स्नातकस्य पित्रादिः समावर्त्तनान्तकर्मणां परिपूर्णार्थं गोदानं कुर्यात् ॥ पुरोहितायदत्वा उत्तरांगत्वेन राज पुत्र नामाग्निं सम्पूज्य,गणेशादिग्रहयाग सर्वतोभद्र वास्तुभद्रस्थ देवताः पृथक् पृथक् सम्पूज्य–प्रतिमादान संकल्पं कुर्यात्अद्ये – त्यादि अमुकोहं ममास्यपुत्रस्य उपनयन वेदारम्भसमावर्त्तनकर्माणि ग्रहयागस्य सर्वतोभद्रस्य वास्तुभद्रस्य इमाः सुपूजिताः सौवर्णीः राजतीः प्रतिमाःसवस्त्राच्छन्नाः, तत्तदाचार्येभ्यो ब्राह्मणेभ्योदास्ये, ॐ तत्सन्नमम इतिदत्वाजापकादिभ्योपि जपसंख्यया दक्षिणांदद्यात् नानानामगोत्रेभ्योभूयसीमपि दद्यात् ततोब्राह्मण भोजनसंकल्पः अद्येत्यादि अमुकोहं अस्य पुत्रस्य उपनयन वेदा-

रंभ समावर्त्तन कर्मणां सादगुण्यार्थं ब्राह्मणान् भोजयिष्ये ॥ अग्न्यादिदेवान् विसृजेत अक्षतानादाय हस्ताभ्यां क्षिपेत् ॐ उत्सावेतंधूर्षाह्यौयुज्येथामनश्रूऽअवीरहणै ब्रह्मचोदनौ । स्वस्तियजमानस्यगृहाणि गच्छतम् । ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम् । इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनायच । ततः कलशजलेनअभिषेकं कृत्वा मंत्रतिलकं कुर्यात् । ततो देवोपभुक्तनिर्माल्यं रक्षाबन्धनसूत्रं च पूर्वोक्तमंत्रैः कुर्यात् ॥ ततः स्वगृहंगत्वा पूर्वोक्तत्रिरात्रव्रतमाचरेत्स्नातकः—स्नातकस्य माता चतुर्थे अहनि चौलकेशानुपनयनकेशांश्च पूर्वोक्तप्रकारेणगोष्ठे जलाशये वा स्थापयेत् ।

इति समावर्त्तन संस्कार पद्धतिः ।

नवाष्टनवभूवर्षे, भाद्रेकृष्णदले शुभे,
श्रीकृष्ण जन्मदिवसे जयन्त्यां बुधवासरे ॥१॥
आदित्यनामके यंत्रे, इन्द्रप्रस्थे शुभेपुरे,
संरच्य मुद्रितः कर्म काण्डरत्नाकरो ह्यसौ ॥२॥
नानाग्रन्थान्समालोक्य, सप्रमाणोऽधुनामया,
देवानन्देन विदुषा बद्रीनाथनिवासना ॥३॥
द्वितीय स्तस्यचैवासौ, खंडःसंस्कार कर्म्मणाम्,
संपूर्णतामगाच्चैव, गुरुपादाऽनुकम्पया ॥४॥

इति संस्कारखण्डः

श्रीगणेशायनम, सर्वभीष्ट प्रदातारं नमामि बदरीश्वरम्, दानखंडं विवक्ष्येऽहं चातुर्वेगार्थद परम्। अथ दानपरिभाषा—तत्रादौ दानस्वरूपमाह देवल—अर्थानामुदिते पात्रे, श्रद्धया प्रतिपादनम्। दानमित्यभिनिर्दिष्टं व्याख्यानं तस्यवक्ष्यते। तथा—परस्वत्वापादनान्तो द्रव्यत्यागोदानम्, तच्चदानं हेतुतोद्विविधम्—श्रद्धाभक्तिभेदात्, तत्र श्रद्धा अस्तिदानं परलोकसाधनम्। स्नेहपूर्वक मभिध्यानं, भक्ति। तद्गीतायां त्रिविधमुक्तम्—दातव्य मितियद् न दीयतेऽनुपकारिणे। देशकाले च पात्रे च तद्दान सात्विकं स्मृतम्। राजसम्—यत्तु प्रत्युपकारार्थं फल मुद्दिश्यवा पुन। दीयते च परिक्लिष्टंतद्राजस मुदाहृतम्। तामसम्—अदेशकालेयद्दानमपात्रेभ्यश्चदीयते। असत्कृतमवज्ञात तत्तामस मुदाहृतम्॥ गारुडे—अर्हतमस्तु वर्णादिदानतत्स्वात्विकं स्मृतम्। आर्तानाम भयंदान मित्यतद्राजसं स्मृतम्। विद्यामादाय यज्जप्य तद्दान मानव द्विजा। उक्तंच दानधर्मे—तपो धर्म. कृतयुगे ज्ञानं त्रेतायुग स्मृतम्। द्वापरे चाध्वरा प्रोक्ताः, कलौदान दयादम॥ गारुडे—दानान मुत्त दानं विद्यादान मिदुर्बुधा। मातु समस्त विद्याना श्रियमवाधिदैवतम्। यथावरिष्ठो देवाना विष्णु कारण पूरुष। तथाविद्याप्रद श्रेष्ठो गरीयाश्च गरीयसाम्॥ दानपात्रम्—स्वाध्यायी तपसा युक्त प्रतिग्रह विवर्जित। शूद्रान्न पनकं नायाऽत्तान्न श्रेष्ठमुच्यते॥ गारुडे विशेष—छात्राणां भोजनाभ्यङ्ग वस्त्रभिक्षामथापिवा। दत्वा प्राप्नोति पुरुष सर्वकामानशेष। विपक्षी जीवित दीर्घ धर्मक माथमाप्नुयात। सर्वमेव भवद्दत्त छात्राणां भोजन कृत। भारत दानधर्मे—कुलौ तिष्ठति यस्यान्न विद्याभ्यासेन जीर्यति। गोत्राणि तारयत्तस्य दश पूर्वान्दशापरान्। छात्राणां वृत्ति दान च सर्वशास्त्रेषु गीयते। स्वर्गलोकेचमहीयन्ते छात्रवृत्ति प्रदानत। प्रथमं दान माचार्य दत्वा श्रेष्ठमनुक्रमात्। ततान्येषां च विप्राणां दद्यात्पात्रानुसारत। सन्निधावस्थितान्विप्रान्दौहित्र विट्पतिंतथा। भगिनेय विशेषेण तथा बन्धुंगृहागतान्। नाति क्रामे नरस्त्वेतान्सुमूर्खानपि भावत। अतिक्रम्य महारौद्र रौरव नरक व्रजेत्। आचार्य लक्षणम्—नानाविध नि कर्माणि कर्ताकारयिताचय। सर्व धर्म विधिज्ञश्च सआचार्य उच्यत। वेद वेदाङ्ग शास्त्राणां पारग समदर्शन। दम्भलोभादि रहित सज्ञेयो वेदपारग। अग्राह्य दानानि—अजिन मृतशय्याच मेषो चाभयतो मुखी। कुरुक्षेत्रे च गृहनो नभूय पुरुषो भवत्। मनु—हिरण्य भूमि मश्वगाममन्नवासस्तिलान्घृतम्। अविद्वान्प्रति गृह्णानो भस्मी भवति काष्ठवत्। अविद्वान्विषतपोभ्याहीन। दानकाल स्मृत्यन्तरे—दर्शेशतगुणं दान तच्चाष्ट दिनक्षय। शतघ्न तच्च संक्रान्तौ शतघ्न विषुवे तत। युगादौ तच्छतगुणमयने तच्छता हतम्। सोमग्रह तच्छतघ्न तच्छतघ्नंरविग्रहे। पौर्णमासीषु सर्वासु मासर्क्ष सहितासु च। दत्ताना

मिह दानानां फलं शतगुणं भवेत्। **निमित्तदानकाल**—ग्रहणोद्वाह सङ्क्रान्तियात्रार्ति प्रसवेषु च। दानं नैमित्तिकं ज्ञेयं रात्रावपि नदुष्यति।

अथदानविधिः।

सूर्यारुण सम्वादे दानधर्मे—श्रीसूर्यउवाच—स्नात्वानित्य क्रियां कृत्वा कर्त्तशुचिरलंकृत। ब्राह्मणान्दय वस्तूनि गन्धद्यैरर्च्ययेत्सुत। दानं ददेह ममुकं दद्याद्विप्रकरे जलम्। दत्स्वेति द्विजेनोक्त मितिदानविधिस्मृत। ॐ तत्सत्पूर्वमुच्चार्य गृहीत्वतुकरे जलम्। सतिलकुश हस्तस्तु कालं ज्ञानं समुच्चरेत्। प्राङ्मुखश्चोदङ्मुखोवा मैत्रे याम्यमुखस्तथा। (**नतुनान्दी मुखे**) वामेन पाणिना स्पृष्ट्वा स्मरेत्तद्द्रस्तुदैवतम्। विप्रायमुक गोत्राया मुकशर्मो ह्यहंददे। नममे इत्युच्चर्य द्विज हस्तेजलक्षि (**कन्यादानाति रिक्त दानेषु नममेत्युच्चारणम्**) स्वस्तीत्युक्त च त्रिःण्दानम क्षयतां नयेत्। त नमिति सम्प्रोक्त मन्यत्त्यागइतिस्मृतम्। **कन्या दाने विशेष**—कन्यादान त्रिपुरुष गोत्रोच्चारण पूर्वकम्। गो, कन्या, प्रतिमा, शय्या, एकैकस्य प्रदापयेत्। विभज्यनिविना दातानतत्फलमवाप्नुयात्। **दानप्रतिष्ठा**—प्रतिष्ठा सर्वदानानां स्वर्णमक्षयकारकम्। दानमक्षयतायाति सम्प्रदानमनुत्तमम्। तीर्थादौ त्याग विधिना सम्प्रदान सम फलम्। तावद्देनुषुधेनुष्व वैमत्व प्रतिमासु च। यावद्विप्रोनगृह्णीयात्स्वस्त्येत्युक्ते तुतद्वसु॥

॥ प्रतिग्रहविधिः॥

आपस्तंब त्रिमात्रा स्तुप्रयोक्तव्या कर्मारम्भेषुसर्वशः। त्रिस्त्र सार्द्धास्तुकर्त्तव्यामानोस्तत्वार्थ चिन्तकैः। **गौतम**—अन्तर्जानुकरं कृत्वा सकुशंतुतिलोदकम्। फलान्यपिच सधाय प्रदद्यान्छ्रद्धयान्वितो। **वृद्धवसिष्ठ**—नाम त्रिसमुच्चार्य सम्प्रदानस्य चात्मनः। सम्प्रदाय प्रयच्छति कन्यादान तु पुंस्त्रयम्। **स्मृत्यन्तरे**—सकीर्य दशकं सादि तुभ्यंसम्प्रददे इति। नममेति स्वस्य वस्य निवृत्तिमपि कीर्तयेत्। **प्रचेता**—दक्षिण हस्तमध्ये ब्राह्मणस्याग्नेय तीर्थं, आगमन प्रति गृह्णीया दिति—**विष्णु धर्मोत्तरे**—प्रतिग्रही वा सावित्रीं सर्वत्रैवातु कीर्तयेत्। ततस्तु कीर्तयेत्सार्धं दैवतं द्रव्य दैवतम्। समर्पयेत्तत पश्चात्कामस्तुत्या प्रतिग्रहम्। तदन्त कीर्तयेत्स्वस्ति प्रतिग्रह विधिस्त्वयम्। **प्रतिग्रहान्त ब्राह्मणस्य कर्त्तव्यता—आदित्य पुराणे**—ओङ्कारपुर्वकंप्राशो दक्षिणे सकुशोदकम्। गृह्णीयाद्विधिवेहस्तेतदन्ते स्वस्तिकीर्तयेत्। प्रतिग्रह पठेदुच्चैः प्रतिगृह्यद्विजोत्तमात। मन्द्रं पठेत्तु राजन्ये, उपांशु च तथा विशि। (मन्द्र मध्यमस्वर) मनसा तु तथा शूद्रे स्वस्ति वाचन मेव च। ओंकारं ब्राह्मणेकुर्यात निरोंकारं महीपतौ दत्यांगुच तथा वैश्ये मनसा स्वस्ति शूद्रके।

दाने द्रव्यपरत्वेन देवता वक्ष्ये ।

हेमाद्रौ विष्णु धर्मोत्तरे—अभयं सर्व दैवत्यं भूमिर्वै विष्णु देवता । कन्यादासस्तथा-दासी प्राजापत्या प्रकीर्तिताः ॥ **अग्निपुराणे**—प्राजापत्यो गज. प्रोक्तस्तुरगो यमदैवत ॥ तथा चैक शफं सर्वं कथितं यम दैवतम् । महिषश्चतथायाम्य, उष्ट्रो नैर्ऋत. स्मृत । रौद्रीधेनु विनिर्दिष्टा छागमाग्नेय मादिशेत् । मेषंतु वारुणं विद्याद्वराहं वैष्णव तथा । आरण्या पशव सर्वे कथिता वायुदेवता. । जलाशयानि सर्वाणि समुद्राश्च कमण्डलु । कुम्भश्च करकं चैव वारुणानि भवन्तिहि । समुद्रजानि रत्नानि वारुणानि प्रचक्षते । आग्नेयं कनकं प्रोक्त सर्व लोहानि चाप्यथ । प्राजापत्यानि सस्यानि पक्वान्नानिच्यानि वै । विद्याः सर्वगंधाश्च गान्धर्वा विचक्षणो. विद्या ब्राह्मी विनिर्दिष्टा विद्योप करणानि च । सारस्वतानिज्ञेयानि पुस्तकादीनि पण्डितै. । बार्हस्पत्यं स्मृतं वासः सौम्याश्चैवारसास्तथा । पक्षिणस्तु तथासर्वे वायव्याः परिकीर्तिता. । सर्वेषां शिल्पभाण्डानां विश्वकर्मा च देवता । द्रुमाणामथ पुष्पाणां शाकैर्हरीतकिस्तथा, फलानां मणिमर्वैव देवोज्ञेयो वनस्पति । मत्स्यमास विनिर्दिष्टं प्राजापत्यं तथैवच । छत्रं कृष्णाजिनं शय्या रथमासन्मेवच । उपानहौ तथा यानं यच्चान्यत्प्राणि वर्जितम् । सर्वचाङ्गि रसत्वेन प्रतिगृह्णीत मानव. । शूद्रोपयोगिद्रव्यं सर्व शस्त्रमस्त्र ध्वजादिकम् गृहोपकरणं सर्व विद्यं सर्व दैवतम् गृहंच शक्रदैवत्यं यदनुक्तं द्विजोत्तमा. । विद्येय विष्णुदैवत्यं सर्वदा विधि वर्त्मनि । वाचये जलमादाय करणाय प्रतिग्रहम् । दातुर्मंत्र प्रयोगान्ते अमुकस्मै सुराय वै । इदमों प्रतिगृह्णामि तदन्ते स्वस्ति कीर्तयेत् ।

अथ दानसमये प्रतिग्रह स्थानानि ।

प्रतिगृह्णीत गापुच्छे कण्वा हस्तिना करे । भूमिनदामी मजंचैव पृष्ठेऽश्वतर गर्दभौ । अश्वं कर्णे कट्या वा दान मुद्दिश्यवाचयत । शय्यासने गृह चैव संस्पृश्यादाय काञ्चनम् । उष्ट्रंच ककुदिस्पृष्ट्वा मृगाश्च महिषादिकान् । गोधामश्वविधानेन पक्षे संस्पृश्यपक्षिणः । छत्र दंड तस्यमूले फलं संगृह्यगौरवात् । **हेमाद्रौतु**—भूमे प्रतिग्र० कुर्याद्भूमि कृत्वा प्रदक्षिणम् । करं गृहीत्वा कन्याच दास दास्यौ द्विजोत्तमे । आरुह्यच गजस्योक्त कर्णोवाश्वस्य कीर्तित तथाचैक शफानान्तु सर्वषाच विशेषत । प्रतिगृह्णीत शृंगेजां पुच्छकृष्णाजिन तथा । एक शफा शृङ्गिण स्तेषां शृगएव । वक्त्रादिश्च सर्वे ग्राह्या पुच्छेविचक्षणै । गृह्णीयान्महिषं शृङ्गे खड्ग वै पृष्ठदेशत । प्रतिग्रहस्योष्ट्रस्य यानस्य चाधिरोहणात् ॥ बीजानामुष्टिमादाय रत्ना न्यादाय सर्वश । वस्त्रंवस्त्रान्तादादद्या त्पविधायापिवापुन । आरुह्यौ पानहौ मञ्च मारुह्यैवच पादुके । धर्मध्वजौतु संस्पृश्यग्रहणीयाद्दानेविधि । अवतीर्यंच सर्वाणि जलवाहनानि यानिव । आयुधानि समादाया तथायुन्य विभूषणम् । आयुन्य वध्देत्यर्थं । पुस्तुत्सङ्गमारोप्य प्रतिग्रहणीत दरवम् . रथंरथ मुखे स्पृष्ट्वा प्रतिगृह्णीत कूबरे । कूबरो युगाधारकाष्ठम् । युग्य वाचन व स्थाणो नागयुक्ते प्रतिगृहे ।

द्रव्याणामथ सबषा ब्दसख्यगणानर व चय ज्ञलमादाय कोणाथ प्रतिग्रहम् । दान फलानितु ग्रथ निस्तार भिया न लिखित नि, हेमाद्रि दानखण्डतोऽज्ञयानि ।

तत्रादौ बृहद्गोदान परिभाषा ।

उक्तञ्च स्मृत्यन्तरे देशकाला —स्वघ नाशन पुण्य सदकामाथ सिद्धिदम् । स्वर्गापवर्गद चाथवत्तय गोदानमुत्तमम् । अयने विषुवपाते वैधृतौ सूयसंक्रम । अमावास्या पौर्णमास्यां द्वादश्या राहु पर्वणि । म वादौच युगादौच जन्मसुपुत्रजन्मनि । य ार ले महोत्पाते दु स्वप्नेऽद्भुत दर्शने । एतेयोगे प्रतिष्ठासु गावोन्या शिव धिना । **स्थानान्याह**—तीर्थ ब्राह्मे गोष्ठे सद्मेमण्डपे । शालग्रामशिला- ग्रेच शिवलिंगस्य सन्निधौ । इत्यादि शुभदेशेषु स्वगृहेवापयस्विनीम् दद्यादास्तिक्यबुध्यत्तो महमा द्विजपुगव । **गोदानयोग्य ब्राह्मणानाह्**–महाभारते कुलीनाय सुशील यवदवदाग्वादिने । आर्त्विय शरायाताय साग्नाय व्रतचारिण । सद्वृत्ताया प्रमत्त य दान्त य क्षमान्वये । कोपहिसा विहीनाय सदामन्तोष जीवने । सर्वदानानि दद्यानि द्विगुणत्त विद्नयत् । **गोरगदेवता आह हेमाद्रौभविष्ये**—शृङ्गमूले गव स्थित ब्रह्मविष्णु समाश्रितौ शृगाग्रसवतीर्थ नि स्थ वराणिच याणिच । शिरोमध्यमहादेव सर्वभूतमय शिव । ललाटाग्रेस्थितागौरी नासावशेच षण्मुख । कंबलाश्वतरौनागौ नासापुटमुपाश्रितौ । कर्ण र श्विनौदेवौ चक्षुषा शशिभास्करौ । दतषु वायव सव जिह्वाया वरुण स्थित । सरस्वतीच हुकार मासन्तौच गण्डगो सन्ध्याद्वय तथोष्ठ भ्या ग्रीव [illegible] समाश्रित । रक्षांसि [illegible] सध्यारचोरसि सस्थिता । चतुष्पादसकनो धम स्वय जघासुसंस्थित । खुरमध्येतु गन्धव खुराग्रेषु चपन्नगा । खुराणापश्चिमाग्रेषु गणा अप्सरसो तथा । रुद्र श्च एकादश पृष्ठ वसव सवसंधिषु । श्रोणी तटस्था पितर सोमो लांगूलमाश्रित । आदित्य रश्मयोबाला [illegible] साचाद्गगाच गोमूत्रे गोमय यमुनास्थिता । चोमरस्वतीक्षीरे नमदा दधिसस्थिता । हुताशन स्वयसर्पि ब्रह्मणाना गुरु पर । अष्टाविंशति देवाना कोटयो ।मसुसंस्थिता । उदर पृथिवीज्ञेया सागराश्चयोधरा **महाभारते**—दानानामिह सवषा गोदान विशिष्यत । गाव श्रेष्ठ पवित्राश्च पावना जगदुत्तमा । **दानसमयोक्त प्रकारश्च स्मृतिकौस्तुभेगार्ग्ये**—ता सदक्षां प्रमुखी मवस्राच्य दातापु उत्तरवदशिर प्राङ्मुखस्तिष्ठन् । पात्रभूत विप्रस्तत्र दक्षिणा मुखस्तिष्ठेत् । द तायथाशक्तित्तन कपुत माषमात्र मादाया तत्रगोपुच्छे निक्षिप्य सलिले आत्म विप्रपाणौ घनाक सतिल कुशपुच्छ निक्षिप्य जलक्षिपेत् । कचिद्गापुच्छ दक्षिणपितृतपण कृत्वा गोदानमिच्छन्ति, मनु —याचित प्रतिग्रहानि योर्वे दिक्षा प्रदच्छन्ति । ताभुभौ गच्छत स्वग गच्छतु विपर्यय । इति सवत्र विधान, महाभारताक्ता गापतीव प्रधान वदामि ॥ ॥ इति गोदान परिभाषा ॥

———०§०———

अथ गोदानपद्धतिः।

अथ च गोदानकर्त्ता सुस्नातः हस्तौपादौप्रक्षाल्य सुलिप्तायांभूमौस्वासनेउपविश्य, करौसपवित्रौकृत्वा, यथोक्तलक्षणांगांपूर्वाभिमुखीं सवत्सामवस्थाप्य, सुलक्षणं ब्राह्मण मुदङ्मुखंस्थाप्य स्वयं पूर्वाभिमुखोभूत्वा आचम्यस्वाग्रभूमौगंधेन चतुरस्रंमंडलंकृत्वा तत्राधपात्रंसंस्थाप्यजलेनापूर्य गन्धपुष्पाक्षतादींस्तूष्णीं निक्षिप्य, तेनजलेन गोदानसामग्री मात्मानं च संप्रोक्ष्य, आधारं सम्पूज्य, भूतोत्सादनं कृत्वा प्राणायामंविधाय ॐ सुमुखश्चेति० गणेशंसंप्रार्थ्य कुश तिलयव जलान्यादाय प्रधान संकल्पं कुर्यात्। ॐ विष्णुर्विष्णु र्हरिर्हरिः ।३। ॐ श्रीमद्भगवतो महापुरुस्येति देशकालौ संकीर्त्यामुकसंवत्सरे अमुकमासे पक्षे तिथौ वारेनक्षत्रे योगे, करणे अमुकप्रदेशे पुण्यतीर्थेऽमुककाले, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये, अमुककर्मनिमित्तक श्री परमेश्वर प्रीतयेगोदानं करिष्ये, तत्प्रतिग्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणंचकरिष्ये, ततः स्वदक्षिणेयज्ञीयवृक्षोद्भवासने उदङ्मुखं ब्राह्मणमुपवेश्य पूजयेत् ॐ विष्णुस्वरूपिणे ब्राह्मणायनमः इति मंत्रेणासनपाद्याद्यर्घादिकंदत्वा, वक्ष्यमाणमंत्रैः पूजनंकुर्यात् ॐआपद्धनध्वान्तसहस्रभानवः समीहितार्थार्पणकामधेनवः। समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्त्तयोरक्षन्तुमांब्राह्मणपाद पांसवः ।१। समस्त संपत्समवाप्तिहेतवः समुत्थितागः कुलधूमकेतवः । अपारसंसार समुद्रसेतवः पुनन्तुमांब्राह्मणपादपांसवः ।२। विप्रौघदर्शनात्क्षिप्तं क्षीयंते पापराशयः । वन्दनान्मंगलावाप्तिरर्चनादच्युतंपदम् ।३। आधिव्याधिहरं नृणांमृत्युदारिद्र्यनाशनम् । श्री पुष्टिकीर्तिदंवंदे विप्रश्री पादपंकजम् ।४। तत्फलंकपिलादानेकार्त्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे तत्फलं पांडवश्रेष्ठ विप्राणां पादक्षालने ।५। इति पादौप्रक्षाल्य। ॐ गन्धद्वारा मितिगंधम्। ॐ नमोस्त्वनन्तायेति पुष्पमालादिभि

रभ्यर्च्य, वरणसामग्रीं धौतोत्तरीय कमंडल्वादीन्संपूज्य, संकल्पः अद्येत्यादिसंकीर्त्याऽमुकोऽहंकरिष्यमाणअमुककर्मणि, एभिर्गन्धाक्षत पत्रपुष्प फलयज्ञोपवीत ताम्बूलादिभि गोदान प्रतिग्रहार्थममुकवेदाध्यायिनममुकगोत्रममुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वांवृणे । वृतोऽस्मीति ब्राह्मणोवदेत् ततः प्रार्थयेत् यदर्चनं कृतंविप्र तवविष्णु स्वरूपिणःतत्सर्वंममदीनस्य विष्णवेऽस्तुसमर्पणाम् । ततःस्वपुरतः प्राङ्मुखींगामवस्थाप्य,वत्सतदुत्तरतोन्यस्य अक्षतपुष्पैः३ॐ आगावोऽअग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठेरणयन्त्वस्मे । प्रजावतीः पुरुरूपाइहस्युरिन्द्राय पूर्वीरुपसोदुहानाः । ॐ आवाहयाम्यहंदेवीं गांत्वां त्रैलोक्यमातरम् । यस्याःस्मरणमात्रेणसर्वपापैः प्रमुच्यते-। त्वंदेवीत्वंजगन्मातात्वमेवासिवसुन्धरा । गायत्रीत्वंच सावित्री गंगात्वंच सरस्वती । तृणानि भक्षसेनत्य ममृतंस्रवसेप्रभो । भूत प्रेतपिशाचांश्च पितृदैवत मानुषान् । सर्वांस्नारयसेदेविनरकात्पापसंकटात् । इत्यावाह्यपूजयेत् ॐ सवत्सायैगवेनमः पाद्यम् स्नानं समर्पयामि पुष्पाणिगृहीत्वा ॐ नमोवोविष्णुमूर्त्तिभ्यो विश्वमातृभ्यएवच । लोकाधिवासिनिभ्यश्च रोहिणीभ्योनमोनमः ॐ गोः अग्रपादाभ्यांनमः ॐ गोः पश्चात्पादाभ्यांनमः ॐ देहस्थायाचरुद्राणां शंकरस्यसदाप्रिया धेनुरूपेणसादेवीममपापं व्यपोहतु । ॐ गोमुखायनमः । ॐ विष्णोर्वक्षसियादेवी स्वाहा याचविभावसोः चन्द्राऽर्कशक्र शक्तिर्यासाधेनुर्वरदास्तुमे । ॐ गोः शृंगाभ्यांनमः ॐ गोःकर्णाभ्यांनमः ॐचतुर्मुखस्ययालक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धनदस्य च । लक्ष्मीर्यालोकपालानां साधेनुर्वरदास्तुमे । ॐ गोः पृष्ठायनमः ॐ स्वधात्वं पितृमुख्यानां स्वाहा यज्ञ भुजां तथा ॥ सर्वपाप हराधेनु स्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छमे । ॐ गोः पुच्छाय नमः । वस्त्रम्–ॐ आच्छादनंमयादत्तं सम्यक् शुध्दांसुनिर्मलं । सुरभिर्वस्त्रदानेन प्रीयतांपरमेश्वरी ॥ गन्धम्— ॐ सर्वदेव प्रियंदेवि चन्दनं शशिसन्निभम् । कस्तूरी कुंकुमाढ्यंच गौर्गन्धः प्रतिगृह्यताम् । अक्षताः पुष्पाणि च–ॐ नमोवो विश्व

मूर्त्तिभ्यो विश्वमातृभ्य एवच ॥ लोकाधिवासिनीभ्यश्च रोहिणीभ्योनमोनमः ॥ ॐ गवेनमः पुष्पमालां समर्पयामि । धूपम्—ॐ आनन्दकृत्सर्वलोके देवानांचसदाप्रिये ॥ गोस्त्वंपाहि जगन्नाथे धूपोयंप्रतिगृह्यताम् ।दीपम्—ॐ आनन्द दायिनि शिवे, सर्वसौभाग्यदायिने । सर्वपाप हरेमात र्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । नैवेद्यम्—ॐ सुरभिस्त्वं जगन्माता नित्यं विष्णुपदेस्थिता गोग्रासोऽयंमया दत्तो नैवेद्यंप्रतिगृह्यताम् ॥ घंटाचामरमंत्रः—ॐ यत्तेमयार्पितं शुध्दं घंटाचामरमुत्तमम् । ग्रैवेयं तद् गृहाणत्वं मुनित्रिदशवन्दिते । ततो गोदेहे देवादीनावाहयेत्—अक्षतपुष्पैः पूजयेच्च-शृंगमूले—ॐ ब्रह्मविष्णुभ्यां नमः ।शृंगाग्रे—ॐ सर्वतीर्थेभ्योनमः। शिरोमध्ये—ॐ महादेवायनमः । ललाटे—ॐ गौर्य्यैनमः । नासारन्ध्रे—ॐ षण्मुखायनमः । नासापुटयोः—ॐ कंबलाश्वतराभ्यांनमः । कर्णयोः—ॐ अश्विभ्यांनमः । चक्षुषोः—ॐ शशिभास्कराभ्यां नमः । दन्तेषु—ॐ वायुभ्योनमः । जिव्हायां—ॐ वरुणायनमः हुंकारे—ॐ सरस्वत्यैनमः । गंडयोः—ॐ मासपक्षाभ्यांनमः । ओष्ठयोः—ॐ संध्याद्वयायनमः ॥ ग्रीवायाम्—ॐ इन्द्रायनमः। कक्षे—ॐ रक्षोभ्योनमः उरसि—ॐ साध्येभ्योनमः । जंघासु-ॐ धर्मायनमः । खुरमध्ये—ॐ गंधर्वेभ्योनमः । खुराग्रेषु—ॐ पन्नगेभ्योनमः । खुरपश्चिमाग्रेषु—ॐ अप्सरोगणेभ्योनमः । पृष्ठे—ॐ एकादशरुद्रेभ्योनमः।सर्वसंधिषु | ॐवसुभ्योनमः । श्रोण्योः ॐ पितृगणेभ्योनमः । पुच्छे—ॐ सोमायनमः । पुच्छकेशेषु—सूर्यरश्मिभ्योनमः । गोमूत्रे—ॐ गंगायैनमः । गोमये—ॐ यमुनायैनमः । क्षीरे—ॐ सरस्वत्यैनमः । दध्नि—ॐ नर्मदायैनमः घृते—ॐ वन्हयेनमः । रोमसु—ॐ अष्टाविंशतिदेवकोटिभ्योनमः ॥ उदरे—ॐ पृथिव्यैनमः । स्तनेषु—ॐ चतुःसागरेभ्योनमः । इति देवांस्तीर्थांश्चावाह्य ॥ ततः शक्त्यौसत्यां रौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां-स्वर्णशृंगीं, घंटाचामर विभूपितां लाङ्गूलसमर्पित रत्नमुक्ताफलां सुवस्त्राच्छादितां गां संभूष्य समीपे वामभागे-कांस्यमयं

दोहन पात्रं चसंस्थाप्य-प्रार्थयेत्—ॐ नमोगोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेईभ्यएवच । नमोब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्योनमोनमः । गावोममाग्रतः सन्तु गावोमेसन्तुपृष्ठतः । गावोमेपार्श्वयोः सन्तु गवांमध्येवसाम्यहम् ॥ पंचगावः समुत्पन्ना मथ्यमाने महोदधौ । तासांमध्येतु यानन्दा-तस्यैदेव्यैनमोनमः । गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश यस्मात्तस्माच्छिवं मेस्यादिहलोके परत्र च । ब्रह्मादयस्तथादेवा रोहिण्यः पान्तुमातरः ॥ अथ तर्पणविधानम् कुशाक्षत जलैःसार्द्धं गृहीत्वा पुच्छमादृतः । कराभ्यां तर्पयेद्देवान देवतीर्थेन मंत्रवित । प्राजापत्येनमनुजान् पितृन्पित्र्येणतर्पयेत । ततः प्राङ्मुखो दाता सकुशाक्षतयवं गोपुच्छं गृहीत्वा सततजल धारया देवतीर्थेन देवांस्तर्पयेत्--केचित गोपुच्छोदकेन तर्पणमिच्छन्ति,, ॐ यान्दिनीसुशीलाद्याः कामदाश्चैवधेनवः । ताः सर्वाः पुच्छतोयेन तर्पितास्तर्पयन्तुमाम् ॥ ब्रह्माविष्णुर्महादेवः कार्तिकश्च गणाधिपः । पुष्पचापो महेन्द्रश्च भगवानच्युताग्रजः ॥ देवाः समस्ताः सगणाः सवाहन परिच्छदाः । वसवोष्ठौ द्वादशार्कारुद्राऽएकादशैवतु॥ विश्वेदेवाश्चसाध्याश्च मरुतोमातरस्तथा । गधर्वा गुह्यकाश्चैव सागराः सरितस्तथा । राक्षसायक्षवेतालाः पूतनाः पर्वताद्रुमाः । तीर्थाण्यप्सरसश्चैव पशवः पन्नगाखगाः । ऋक्षाणिराशयोयोगामासवर्षर्तुवासराः । अयनेचयुगाःकल्पास्तथामन्वंतराणिच । भुवनानिदिशोलोकाश्चतथासर्वेन्द्रियाणिच । ॐकारश्चैव गायत्रीछन्दांस्यंगानिचैवहि । वेदाश्चस्मृतयश्चैवपुराणानितथैवच । आयुर्वेदोधनुर्वेदोगान्धर्वोमंत्रगह्वरः । औषध्योवनसम्भूताग्राम्याश्चैवसुपिप्पलाःसानुगादेवता श्चैवमुनयःसगणास्तथा । ऋषयोऋषिपत्न्यश्चसिध्दाश्चसगणास्तथा । प्रजाःप्रजापतिश्चैव येन्येविघ्नविनायकाः । विद्याधराश्चदैत्याश्चआचार्या गुरवस्तथा । डाकिन्यः क्षेत्रपालाश्च भैरवाश्चाष्ट संख्यकाः । स्थावराजंगमाचैव भूतग्रामश्चतुर्विधिः । अक्षयेनामृतेनैव मंगलेनसुधारिणा । गोपुच्छाग्रच्युते नेदमद्दत्तेनहितेऽखिलाः । शाश्वतींतृप्तिमायान्तु दार्ढ्ययुक्तवर-

प्रदाः। सूर्यःसोमः कुजः सौम्योगुरुः शुक्रः शनैश्चरः। ग्रहाश्च तृप्तिमायान्तु राहुकेतुसमान्विताः। इन्द्रोवन्हिर्धर्मोरक्षः पाशी-वायुर्धनाधिपः। ईशोनन्तस्तथाब्रह्मा सर्वेतेतर्पितामया। सावित्र्या सहलोकेशः सलक्ष्मीक श्चतुर्भुजः महेशश्चोमयासार्द्धं तृप्तिमा-यान्तु शाश्वतीम्। अत्रिर्वशिष्ठो भृगुगौतमौच। मरीचिदक्षौ पुलहः पुलस्त्यः। प्रचेतसः काश्यपविश्वमित्रौ भरद्वाज संज्ञो जमदग्निर्मुनिश्च। अन्येचसर्वे मुनिपुंगवाश्च गृह्णन्तुदत्तं जलम-यतुष्टाः। इतिदेवतर्पणम्। ततोयज्ञोपवीतं कण्ठावलंवितंकृत्वा, अक्षतकुशजलै मनुष्यतीर्थेन सनकादीं स्तर्पयेत–ॐसनकःसनन्द-नश्चैवतृतीयश्चसनातनः। कपिलश्चासुरिश्चैव वोढुःपंचशिखस्त था। तेतृप्तिमाखिला यान्तु गोपुच्छोदकतर्पणैः। ततोऽपसव्यं-कृत्वा द्विगुणितकुशतिलजलैः पितृतीर्थेन, पितॄँस्तर्पयेत्–ॐ कव्यवाडनलः सोमोयमश्चैवार्यमातथा। अग्निष्वात्ताः सोमपा-श्चतथावर्हिषदश्चये। तेसर्वेतृप्तिमायान्तुगोपुच्छोदकतर्पणैः। ततो यमादीन्–ॐ यमायधर्मराजायमृत्यवे चान्तकायच। वैवस्वताय-कालायसर्वभूतक्षयाय च। औदुंवरायदध्नाय नीलायपरमेष्ठिने। वृकोदरायचित्रायचित्रगुप्तायवैनमः। ततः स्वपितॄन् ॐ पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः। माता पितामहीचैवतथैव प्रपि-तामही। मातामहःप्रमातामहोवृद्धप्रमातामहस्तथा। मातापितामही प्रमातामहीवृद्धप्रमातामहीतथा। अक्षय्यांतृप्तिमायान्तुगोलाङ्गू-लोच्युतोदकैः। त्रिकंमातामहाद्यंचमातामह्यादिकंत्रयम्। तेचताश्च प्रदत्तंमेस्वीकुर्वन्तुजलंमुदा। येमृतावै पितृव्याश्चमातुलाःश्वसुरा स्तथाआचार्यागुरुमित्राद्यातेगृह्णन्तुशुभंजलम्। येचसंवंधिनो पुत्रा वन्हिदाह विवर्जिता। अपमृत्युमृतायेच तेतृप्तिं च लभन्त्विह। पितृवंशेमृतायेच मातृवंशेचयेमृताः गुरुश्वसुरवंधूनांयेचान्येवांध-वामृताः। येमेकुले लुप्तपिंडाः क्रियालोप गताश्चये। विरूपा आमगर्भाश्चजाताऽजाताः कुलेमम। तेसर्वेतृप्तिमायान्तु गोपु-च्छोदकतर्पणैः। गोत्रेमदीये विसुनामृताये गोत्रेच मातुर्ममयेवि-

पन्नाः। गर्भच्युताश्राद्धविवर्जितारचतेभ्यःस्वधाऽनेनजलेनकृत्वा । भृग्वग्नि वज्रादि जलादिशस्त्रै र्विपाण्दंतैनखरैर्भुजङ्गैः पंचत्व-भावंविगताश्चयेचतेभ्यःप्रदत्तंशिवमस्तुतोयम् । येरौरवादौनरके निमग्नाः । क्रियाविलुप्ताश्च कृताऽपकाराः । जन्मान्तरेयेममदास भूतास्तेप्यत्रयांतृप्ति मिहाभजन्तु । येबान्धवा अबांधवायेन्यज-न्मनिबांधवाः। तेसर्वेतृप्तिमायान्तु गोपुच्छोत्सृष्ठवारिभिः। तर्पण फलम्–धेनुपुच्छेकरंकृत्वा तर्पणंच करोतियः । आत्मानंतारयेद्विप्रो दशपूर्वान्दशापरान् । प्रार्थना–सन्तर्पितामयायेच गोपुच्छोदकतर्प-णैः । आयुर्वृद्धिंतथा तुष्टिंमेधांप्रज्ञांच संततिम् । आरोग्यंधनला-भंच संतुष्टाश्चददन्तुमे। इतिगोपुच्छोदकतर्पणंकृत्वा । अथसंकल्पः ३० ततः सव्येनाचम्य कांस्याज्यपात्रे घृतदिग्धं कुशसुवर्ण तिल-युतंगोपुच्छंकरेकृत्वोदङ्मुखः ३० नमः परमात्मने पुराणपुरुषोत्त-माथाद्य ब्रह्मणोन्हि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवराहकल्पेऽष्टाविंशति-तमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखंडेऽमुकनामसंवत्सरेऽमु कायने मासेपक्षे तिथौ वारेनक्षत्रे योगेकरणे एवंविधौ पंचांगे, अमुकोऽहं श्रुतिस्मृति फलावाप्तये सुपूजितामिमां सवत्सांगां रुद्रदैवत्यां यथाशक्त्यलंकृतां निखिलदुःख दौर्भाग्य दुःस्वप्नदु-र्निमित्तामुक ग्रहबाधाशांतिपूर्वकमायुरारोग्य धनधान्य द्विपद ,चतुष्पद संतत्ति प्राप्तिद्वारा (वामुककर्मनिमित्तक) गोरोमतुल्य वत्सरावधि सकलभोग परिपूर्ण स्वर्गलोक प्राप्तिकामः श्रीयज्ञ-पुरुषप्रीतये ऽमुकगोत्रायअमुकवेदाध्यायिनेऽमुकशर्मणे ब्राह्मणा यतुभ्यमहं संप्रददे । ३० तत्सन्नमम ३० यज्ञसाधनभूताया विश्व-स्याघविनाशिनी । विश्वरूप धरोदेवःप्रीयतामनयागवा। इत्युचार्य सकुशजलतिलगोपुच्छंब्राह्मणहस्तेदद्यात् । विप्रोपठेत्–३०द्योस्त्वा ददातुपृथिवीत्वा प्रतिगृह्णातु । देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहु-भ्यांपूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णाति । ३०स्वस्ति,इमांगांप्रतिगृह्णामि इतिप्रगृह्य३०कोदात्कस्माऽअदात्कामोदात्कामायादात। कामोदाता कामःप्रतिगृहीताकामैतत्तोइतिविप्रोपठेत्–३०ततोगोदानप्रतिष्टार्थं

कल्पः—ॐअद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्यामुकोऽहंकृतैतद्गोदानप्रतिष्ठासिध्यर्थमिदंसुवर्णमग्निदैवतं(वारजतंचन्द्रदैवतम्)ब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे, ॐ नमम ॥ ततः सब्राह्मणांधेनुं कानिचित्पदान्यनुव्रज्य महाभारतोक्तां गोमतीं जपन् गोब्राह्मणयोः प्रदक्षिणात्रयं कुर्यात् ॐ गावोमामुपतिष्ठन्तुहेमशृंग्यः पयोमुचः। सुरभ्यः सौरभेयश्चसरितः सागरंयथा। गावः पश्याम्यहंनित्यं गावः पश्यन्तुमांसदा। गावोऽस्माकंवयंतासांयतोगावस्ततोवयम्। यमोक्तामपिच—गावःपवित्रंपरमं गावोमंगलमुत्तमम्। गावः सर्वस्यलोकस्य गावोधन्याः सवाहनाः। नमोगोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्यएवच। नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमोनमः। ब्राह्मणाश्चैव गावश्चकुलमेकं द्विधाकृतम्। एकत्रमंत्रास्तिष्ठंतिहविरन्यत्रतिष्ठति। वशिष्ठोक्तौ च पठेत्—घृतक्षीरादुधामावोघृतयोन्योघृतोद्भवा। घृतनद्योघृतावर्त्ता स्तामेस्सन्तुसदागृहे। घृतंमेहृदयेनित्यंघृतंनाभ्यांप्रतिष्ठितं। घृतंमेससर्वतश्चैवगवांमध्येवसाम्यहम्। गावोममाग्रतःसन्तुगावोमेसन्तुपृष्ठतःकृष्णवच्चैव गौलोकेगवांमध्ये वसाम्यहम्। इतिगोमतीं पठित्वा। ततो ब्राह्मणोगोपुच्छोदकेन यजमानमभिषिंचेत् ॐ द्यौः शान्ति० ततस्तिलकंकृत्वा आशिषंदद्यात् ॐ सोमोधेनुं० सोमोऽअर्वन्तमाशु ई० सोमोवीरं कर्मण्यंददाति सादन्यं विदथ्य ई० सभेयंपितृश्रवणं योददाशदस्मै ॥ तत आचार्यादिभ्योपि दक्षिणांदत्वा ब्राह्मणांश्चभोजयेत्। इति गोदान पद्धतिः

———०§०———

अथोभयतोमुखी गोदान विधिः

उक्तंच स्मृत्यन्तरे—स्वर्णशृंगीरौप्यखुरा मुक्तालांगूलभूषिता। कांस्यापदोहना शुभ्रासिवस्त्रा द्विजपुंगवे। प्रसूयमाना योदद्याद्धेनुर्द्रविणसंयुताम्। यावद्वत्सोयोनिगतो यावद्गर्भंनमुंचति, तावद्गौ पृथिवी ज्ञेया सशैलवनकानना। देवल —अलंकृत्योभा विधिनासुवर्णान्यलान्वितम्। देयाचद्विरत्नामध्या पलैकादक्षिणाधना। वराहु—सुवर्णमाद्धेतदर्द्धंर्द्धंमु त्र्यमु च म्। सुवर्णस्य मितदर्द्धेनापिवापुन। तस्याप्यर्द्ध शत-

वापि पंचाशच्छतोर्ध्वम् । यथाशक्त्यापि दातव्या वित्तशाठ्य विवर्जितेति ॥ उभयतोमुखीं स्वर्णादिभिर्युतां दत्वा, सर्व [illegible] । सुवर्णानि दक्षिणायुतानि, [illegible] ग्राह्यं । अत्यशक्तौ विंशति माषकं वा दद्यात् इत्यर्थः ॥

इत्युभयमुखी धेनुदान परिभाषा—

—:०:—

॥ अथउभयमुखीधेनुदानपद्धतिः ॥

अथचोभयमुखी धेनुदानकर्त्ता, प्रसववतींगामवेक्ष्य, स्नात्वादान सामग्रीं–पूर्वोक्तांप्रकल्प्यवत्समुख योन्यंतर्गतेऽपि तांगांपूर्वोक्त-विधानेन सम्पूज्य ब्राह्मणंच दरिद्रंबहुकुटुंबिनं वेदपारगंसुशील माहूययथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसुसज्य तत्रसंकल्पः—अद्ये त्यादि, संकीर्त्यामुकोहं करिष्यमाणोभयमुखी धेनुदानकर्मणि, अमुकगोत्र ममुकवेदाध्यायिन ममुकशर्माणंब्राह्मणं प्रतिग्रहार्थंत्वां वृणे, वृतोऽस्मीतिब्राह्मणोब्रूयात—ततोगामपिपूजयेत्–ॐ त्वंम-हीमवनिविश्वधेनांतुर्वीतयेष्यायत्त्वरंतीम् । अरंमयोनमसैजदर्णः सुतरणाम् । ॐ आयंगौपृश्निरक्रमीदसदन्मातरंपुरः । पितरंचप्रयं न्त्सः । इतिमन्त्राभ्यांवापूर्वोक्त प्रकारेणसालंकारैर्गांसम्पूज्य समर्घंप्रतीक्षेत–यदावत्समुखोयोनिनिर्गतोभवति, तदाकांस्यपात्रं घृतपूरितं पूर्वोक्तसुवर्णयुतं सकुशतिलाम्बुसहितंपूर्वाभिमुखोभूत्वा (गांचैवपूर्वाभिमुखींकृत्वा) दक्षिणहस्ते घृतदिग्धगोपुच्छं च निधाय, संकल्पंकुर्यात्–ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्येत्यादि देश-कालौ संकीर्त्यामुकोऽहं यथोपस्करयुतामुभयतोमुखीं समुद्रशैल-वनोपेतपृथ्वीदानसमफलावाप्तये धेनुवत्सरोमसंख्याकयुगदेवलो कमहिमत्व पितृपितामहप्रपितामहकुलशतनरकोत्तारणपूर्वकघृत-क्षीरबहुकुल्याकदधिपायसकर्दमदेशाधिकारणकोत्तरकेप्सितकामो ब्रह्मलोकावाप्तिकामः एकोनविंशतिकुलोत्तारणार्थंचेमांरुद्रदैवत्यां गाममुकगोत्रायामुकवेदाध्यायिने अमुकशर्मणेतुभ्यंसम्प्रददे–नम मेतिसघृततिलपूर्णकांस्यपात्रसुवर्णयुतं गोपुच्छंसकुशजलंतद्धस्ते-

दत्वाप्रार्थयेत्–यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्याघविनाशिनी । विश्व-रूपधरोदेवःप्रीयतामनयागवा । इमांगृहाणोभयमुखींभवाद्त्राता ममाऽस्तुवै । ममवंशविशुध्देश्चसदास्वस्तिकरोभव । विप्रस्तु–ॐ द्यौस्त्वाददातुपृथिवीत्वाप्रतिगृह्णातु । देवस्यत्वासावतुः प्रस-वेश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णोहस्ताभ्याम्–प्रतिगृह्णामि । इतिगोपुच्छंप्रगृह्य पठेत्—ॐ कोदात्कस्माऽअदात्कामोऽदात्कामायादात् । कामो दाताकामः प्रतिगृहीताकामैतत्ते ॥ अथचेदानींसुवर्णमुद्रासहस्रमा रभ्यपञ्चविंशति पर्यन्तसुवर्णमुद्रा हस्तेनिधाय प्रतिष्ठासंकल्पं कुर्यात—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं कृतस्योभयतोमुखीधेनुदा-नकर्मणः प्रतिष्ठार्थमेताःसुवर्णमुद्राः, अमकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यंसम्प्रददे ॐतत्सन्नमम,ततोविप्रःपठेत्–ॐइरावती धेनुमती हिभूतं सूयवासिनी मनुवेदशस्या ॥ व्यस्कभ्नारोदसी विष्णवेतेदाधर्थ पृथिवीमभितोमयूखैः ।१। ॐ स्योनापृथिवीभ-वान्नृक्षरानिवेशनी, यच्छानःशर्म्मसप्रथाः ॥ इतिमंत्रद्वयंपठित्वा पुनर्वदेत्—ॐ प्रतिगृह्णन्त्विमांधेनुं कुटुम्बार्थेविशेषतः । स्वस्ति-भवतुमेनित्यं रुद्रमातर्नमोस्तुते ॥ इतिनत्वागृहीतायाधेनोर्दक्षि णपाणिना योन्योन्मुखवत्ससुखंस्पृष्ट्वा मंत्रंपठेत्–ॐ गर्भेनुस-न्नन्वेषा मवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वाशतंमापुर । आयसीर रक्षन्नधश्येनो जवसानीरदेयम् । इति वत्समाकृष्येत । वत्से-निष्कासिते सति कार्यान्तरमाह–ततोयजमानो हस्तोपादौप्रक्षा-ल्या चम्य प्राणानायम्यच । संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं कृतस्योभयतो मुखीगोदान कर्मणः सांगता–सिद्धये वेदोक्त मंत्रै स्तपर्ण होमंच करिष्ये ततआचार्यः हस्तमितं स्थंडिलं चतुरस्र कृत्वा तत्र होमपद्धत्युक्त प्रकारेण वरदनामाग्निं सस्थाप्य प्रतिष्ठाप्यच समिदाधानान्तं कर्मकृत्वा । द्रव्यदेवता भिध्यान पूर्वकं द्रव्यत्यागं कुर्यात्–संकल्पः–अद्येत्यादि अमुकोहं, करिष्यमाणोभयतोमुखी धेनुदान कर्मणि, आधाराद्यन्वाधान देवेभ्य आज्येन तथाच घृतेन पृथिव्यै चतस्र आहुती गौर्य्यैव्या-

हृतिभिश्चतुरसीत्याज्याहुतीः स्विष्टकृद्देवादिभ्यो मयापिरित्यक्तं यथादैकतमस्तु नमम तत आधाराद्यन्वाधानान्तं कृत्वा ततःकुशास्तृत भूमौ, अग्नेःपश्चात्साक्षताभिरद्भिर्वक्ष्यमाण मंत्रै र्देवादीं स्तर्पयेत्-तेचमंत्राः-ॐ येदेवासो दिव्येकादशस्थ पृथिव्यामध्येकादस्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादशस्थतेदेवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्। देवांस्तर्पयामि, ॐ उशंतस्त्वा निधी मह्युशन्तःसमिधीमहि। उशन्नुशतआवह पितॄन्हविषेऽअत्तवे। पितॄस्तर्पयामि, ॐ इमम्मे गंगेयमुने सरस्वति शुतुद्रीस्तोमं सचतापरुष्ण्या। असिक्न्या मरुद्वृधेवितस्तयार्जीकिये शृणु ह्यासुषोमया। सरितस्तर्पयामि। ॐ अद्रिभिः सुतोमतिभिश्चनोहितः। प्रचोरयन्रोदसी मातरा शुचिः। रोमाण्यव्यासमया विधावतिमधोर्धारा पिन्वमाना दिवे दिवे। पर्वतांस्तर्पयामि। ॐ वनस्पते शतवल्शो विरोह सहस्रवल्शा विचयं रुहेयम्। यन्त्वामयं स्वधितिस्तेजमानः प्रणिनाय महतेसौभगाय। वनस्पतींस्तर्पयामि। ॐ समुद्रज्येष्टाः सलिलस्यमध्यात्पुनानायं त्यन्वीयमानः। इन्द्रोयावज्रीवृषभोररादस्ताऽआपोदेवीरिहमामवन्तु। समुद्रांस्तर्पयामि। ॐ अहिरिव भोगैः पर्येतिवाहुं ज्यायाहेतिं परिवाभमानः। हस्तघ्नो विश्वावयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा ॐ संपरिपातु विश्वतः। नागांस्तर्पयामि। ॐ मधुव्वालाऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नस्संत्वोपधीस्तर्पयामि। ततोवक्ष्यमाण मंत्रै श्चतस्त्राज्याहुतिर्जुहुयात्-ॐईले द्यावापृथिवी पूर्वचित्तयेग्निं धर्मं सुरुचं यामन्निष्टये। याभिर्भरे का रमंशाय जिन्वथस्ताभि रूपुऊतिभिरश्विनागतम् स्वाहा- इदं पृथिव्यैनमम। ॐ महीद्यौः पृथिवीच न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः स्वाहा—इदंपृथिव्यैनमम। ॐ ऊर्वीपृथिवी बहुले दूरे अंतेऽउपब्रुवेनमसा यज्ञेऽअस्मिन्। दधातेये सुभगे सुप्रतूर्ती द्यावारक्षतं पृथिवीनो ऽ अभ्यात्स्वाहा इदंपृथिव्यै नमम। ३। ॐ गौरीमिमाय सलिला नितक्षत्येक पदी द्विपदी साचतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी वभूवुषी सहस्राक्षरा

परञ्योमो मन्तस्वाहा इदं गौर्यैनमम । इति चतस्रआज्याहुती र्हुत्वा गायत्रीमंत्रेण चतुरशीत्याज्याहुतीः प्रजापतयेजुहुयात्-इदं प्रजापतयेनममेतित्यागः । ततः स्विष्टकृदादिहोमशेषं समाप्या चार्यायदक्षिणांदत्वान्येभ्योपिभूयसींदद्यात्ततोगामनुव्रज्यपूर्वोक्त गोदानपद्धत्युक्तप्रकारेण-गोमतीं पठेत्-वा ॐ नमोगोभ्यःश्रीमतीभ्यः सौरभेईभ्यएवचा । नमोब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्योनमो नमः इतिगोर्ब्राह्मणयोः प्रदक्षिणात्रयंविधाय,स्वस्तिवाचानंपठित्वा ग्निंविसृज्य, अभिषेकतिलकारोपणादिकंकृत्वा आशिषंगृहीत्वा,, पायसादिनाद्वादश ब्राह्मणान्भोजयित्वा, तेभ्योदक्षिणांच दत्वा सुहृद्युतोभुंजीत । इत्युभयमुखी गोदानपद्धतिः ।

अथच प्रसंगादुभयमुखी गोप्रतिग्रह प्रायश्चित्तमाह-उक्तंच दानोद्योतेऽरुणस्मृतौ-कृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तंकुर्यात् । रहस्यप्रायश्चित्तेष्वशक्तश्चेत् चतुर्विंशति सहस्रं गायत्रींजपेद्वा । इत्युभयमुखी गोदानप्रतिग्रह प्रायश्चित्तम् ॥

अथ तिल धेनू दानविधिः

अनुलिप्ते महीपृष्ठे वस्त्राजिन कुशोत्तरे । धेनुतिलमयी कृत्वा सर्वरत्नैरलंकृताम् ॥ धेनुं द्रोणेन कुर्वीत आढके नतु वत्सकम् । स्वर्णशृंगींरौप्यखुरां गंधघ्राणवतींतथा । कुर्याच्चशर्करां जिह्वां गुडास्यां विधिवलाम् । इक्षुपादां ताम्रपृष्ठीं शुक्तिमुक्ता फलेक्षणाम् । प्रशस्त पात्र श्रवणां फलदन्तमयीं शुभाम् । स्रग्दामपुच्छां कुर्वीत नवनीत स्तनान्विताम् । सितवस्त्र युगच्छन्नां घंटाभरण भूषिताम् । ईदृग्रूपस्थ न सम्पूर्णा कृत्वा श्रद्धासमन्वित । कांस्यपात्र दोहनां दद्यात्केशव प्रीयतामिति । अथवा—उत्तमादि धेनु स्यात्तिलभारैश्चतुष्टया । वत्सभारेण कुर्वीत अर्धभारेण वा भवेत् । चतुर्भारेन वाकुर्याद्गृहवित्तानुसारत ॥ तत्र भारमानमाह—तुलापल शतप्राहुर्भार स्याद्विंशतिस्तुलं । भारतो मानान्नियमे फलाधिक्यम् ॥ तिलधेन्वादीनां प्रतिमाविक्रया युक्तं हेमाद्री ब्रह्मवैवर्त्त —दानकाले तु देवस्य प्रतिमानं प्रकीर्तितम् । धेनूनामपि धेनुत्व श्रुत्युक्त दानयोगत । दातुर्वेदनकाले तु धन्य परिकीर्तिता । विप्रस्य व्ययकालेतु द्रव्य तदिति निश्चय । दानग्रहि विप्रेण द्रव्यमागच्छनागतम् । त सर्वं विदुषातेन विक्रेय स्वेच्छया विभो । कुत्र भरण कार्ये धर्मकार्ये च सर्वत । अन्यथा नाश्याति येत्रमाह पितामह ॥

इति तिल धेनू दान विधि —

——०——

॥ अथतिळधेनुदानपद्धतिः ॥

अथचयजमानः कृतनित्यक्रियः । पूजास्थलमागत्य गणेशादिदेवा न्संपूज्य, तत्रैवानुलिप्तेभूमौवस्त्रोपरिवा-एणेयाजिनोपरि, कुशा- नास्तीर्य, तत्रवित्तशाठ्यविवर्जितभारचतुष्टयादारभ्य द्रोणपरि- मितांस्तिलान्विकीर्यधेनोः प्रतिकृति,मिक्षुपादांगुडमुखीं-शर्करा- जिव्हां ताम्रपृष्ठां स्वर्णश्रृंगीं गंधघ्राणवतीं स्रग्दामपुच्छां प्रशस्त पात्र श्रवणांफलदंतमयींनवनीतस्तनीं सितयुग्मवस्त्राच्छादितां घण्टाभरणभूषितां, कृत्वा । तदर्ध्देनवत्संचैवकल्पयित्वा । आच- म्यप्राणानायम्य प्रधानसंकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्या- मुकोऽहं सर्वपापक्षयार्थे-करिष्यमाणतिलधेनुदानकर्मणि ब्राह्मण वरणपूर्वकं गोपूजनंचकरिष्ये, ततःपूर्वोक्तगोदानपद्धत्यनुसारेण ब्राह्मणंगांचसम्पूज्य, वृत्वाच ॥ पूर्वोक्तगोदानपध्दत्यनुसारेण आवाहनादिकंकृत्वा, ततःपूर्वाभिमुखोभूत्वा घृतपूरितंकांस्य पात्रं ससुवर्णं तिलकुशाम्बुसहितं स्रग्दामं दक्षिणहस्तेनिधाय— संकल्पः—ॐ विष्णुः ३ अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं सर्वपापक्षयपूर्वक समस्तपितॄणां निरतिशयानंद गोलोकावाप्तये आत्मनश्चश्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलावाप्तये, इमांसवत्सांतिलधेनु ममुकगोत्रायामुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे । ॐ तत्सन्न मम, केशवार्पणमस्तु—ततःसुवर्णमुद्रांसतिलकुशाम्बुयुतां हस्ते- निधाय—संकल्पः—अद्यैतत्तिलधेनुदानप्रतिष्ठार्थं मिमांसुवर्ण- मुद्राममुकशर्मणे तुभ्यमहंसंप्रददे, ॐ तत्सन्नमकेशवार्पणमस्तु— ब्राह्मणोपठेत्—ॐ इरावतीधेनुमतीहिभूतं सूयवसिनीमनुवेद· शस्या । व्यस्कभ्नारोदसी विष्णवेतेदाधर्थ पृथिवीमभितोमयूखैः । ॐ स्योनापृथिविनोभवन्नृक्षरानिवेशनी । यच्छानःशर्मसप्रथाः । इतिपठित्वायदेत्—ॐ प्रतिगृह्णन्त्विमांधेनुंकुटुंबार्थे विशेषतः । स्वस्तिभयतुमेनित्यं रुद्रमातर्नमोस्तुते । ततःप्रार्थयेत—ॐ या लक्ष्मीः सर्वभूतानां याचदेवेष्ववस्थिता । धेनुरूपेणसादेवी मम-

पापंव्यपोहतु ॥ वाग्गोदानोक्तां गोमतींपठित्वा तिलधेनुप्रार्थनां- पठेत्—ॐ तिलाश्चपितृदैवत्या निर्मिताश्चेहगोसवे । प्रमाणात न्मयीधेनुर्दत्ताप्रीणातु, केशवः ॥ ततःकलशजलेन यजमानमभि षिंच्याशिषंदत्वा ततःकेशवादिद्वादशनामैर्द्वादशब्राह्मणान्संपूज्य क्षीरादिभिर्भोजयेत् ॥ इतितिलधेनुदानपद्धतिः ॥

अथ वृषभ दान परिभाषा—

उक्तं च भविष्योत्तरे—दशधेनु समोनड्वानेकश्चैव धुरंधरः ॥ दशधेनु प्रदानाध्दि वृषएकोविशि- ष्यते ॥ अलंकृत्य वृषंशान्तं पुण्येन्हि समुपस्थिते ॥ रौप्यलांगूल संयुक्तं ब्राह्मणाय निवेदयेत् । मंत्रेणानेन राजेन्द्र तंप्रदद्याद्दशमिते । धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानन्द कारकः । अष्टमूर्त्ते रधिष्ठान मतः पाहि सनातन: । सप्तजन्म कृतं पापं वाङ्मनः काय संभवम् ॥ तत्सर्वं विलयंयाति वृषदानेन कर्मणा ॥ तं धर्मरूपं वृषभं गायत्र्या वा प्रपूजयेत्—ॐ तीक्ष्ण शृंगाय विद्महे धर्मपादाय धीमहि तन्नोवृष. प्रचोदयात् ॥ इति वृष- गायत्री ॥ पश्चिमुखं वृषंस्थाप्य, दाता पूर्वमुखो भवेत् ॥ ककुद स्पर्शयित्वा च दद्यात्तं द्विजपुंगवे ॥

इति वृष दान परिभाषा—

अथवृषदानपद्धतिः ।

अथ वृषदान कर्ता, प्रातर्नित्यकर्म समाप्य, शुभेह्निवा पुण्य काले गणेशं सम्पूज्य, गोमयेनोपलिप्य, तत्पश्चिमे पूर्वाभिमुखे नोपविश्य तत्र पश्चिमाभिमुखं वृषभमवस्थाप्य, सत्कश्चे द्रौप्य- लांगूल घण्टाचामर क्षुद्रघण्टिका दिभिरलंकृत्य । स्वदक्षिणभागे, उदङ्मुखं स्वासने ब्राह्मणमुपवेश्य, आचम्य प्राणायामं कृत्वा, गणेशंध्यात्वा स्वस्तिवाचनं पठित्वा । संकल्पं कुर्यात्—ततः कुश तिलयवजलान्यादाय, ॐ अद्येहेत्यादि देशकालौ संकीर्त्य मुकोहं जन्म जन्मान्तर कृत कायिक वाचिक मानसिक त्रिविध पापानुपत्तये वृषरोमसम संख्य वर्ष सहस्रावधिगोलोक वासो- त्तर पुनर्जन्मन्यिह लोके वेदोपनिषद्याजकत्व ब्रह्मकुल जन्म

प्राप्त्यर्थं (वामुकग्रह पीडाव्यथादि समस्त दुष्टारिष्ट निर्वृत्यर्थ ममुकग्रहप्रीतये) श्रीपरमेश्वर प्रीतये वृषभ दानं करिष्ये-तत्प्रति ग्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजन पूर्वकं वरणं वृषभस्यपूजनंच करिष्ये-ततो ब्राह्मणं संपूज्य-वरणसामग्रीं हस्तेनिधाय,-ॐ अद्येत्यादि संकी र्त्यामुकोहं करिष्यमाण वृषदानकर्मण्येभिर्गन्धाक्षत वस्त्रयज्ञो-पवीतादि द्रव्यैरमुक गोत्रप्रवरममुक शर्माणं ब्राह्मणं वृषदान प्रति ग्रहार्थं त्वांवृणे -वृतोऽस्मीति ब्राह्मणोब्रूयात-वृषंपूजयेत-आवा-हनम्-ॐ आवाहयाम्यहं देवं धर्मपादं महावृषं , सर्व सौख्यप्रदे तस्मै वृषभाय नमोनमः ततः-ॐ तीक्ष्णशृङ्गायविद्महे धर्मपादाय धीमहि। तन्नोवृषः प्रचोदयात्--इतिवृषगायत्र्या पाद्यगन्धवस्त्र घण्टा किंकिणीजालादिभिः संभूष्य धूपदीपनैवेद्यादिभिः संपूज्य च, दान संकल्पं कुर्यात्—यव कुशजलतिलान्यादाय—ॐ अद्ये-त्यादि देशकालौसंकीर्त्यामुकोहं जन्मजन्मांतरकृत कायिकवाचिक मानसिक त्रिविध-ज्ञाता ज्ञात सकलपापानुपत्तये वृषरोमसंख्यक वर्षसहस्रावधि गोलोकवासोत्तरान्य जन्मन्यिहलोके वेदोपनिषद् पारङ्गत ब्रह्मकुल जन्मप्राप्त्यर्थं, (वामुकग्रहपीडाव्यथादि समस्त दुष्टारिष्ठ निर्वृत्यर्थममुकग्रह प्रीतये) श्रीपरमेश्वर प्रीतयेच यथा शक्त्यलंकृतं रुद्र दैवतमिमं वृषं, अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं संप्रददे नमम-ततो वृषककुदं हस्तेनस्पर्शयित्वा ब्रह्मणायदद्यात-ॐ धर्मस्त्वंवृषरूपेण पठेत्--ॐ कोदात्कस्मा०। ततोहस्ते सुवर्णं कृत्वा प्रतिष्ठासंकल्पः—अद्येत्यादि वृषदानप्रतिष्ठार्थं मिदंसुवर्णं शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे। ततोभूयसींदत्वा शीर्गृहीत्वा ब्राह्मण भोजनं दद्यात् इति वृषदानं पद्धतिः।

अथ महिषी दानविधिः—

उक्तं च हेमाद्रौ —महिषी दान माहात्म्यं कथयामि युधिष्ठिर। पुण्यं पवित्रमायुष्यं सर्वं कामप्रदं तथा। चन्द्रसूर्योपरागे च कार्त्तिक्यामयनेषु च। शुक्ल पक्षे चतुर्दश्यां संक्रान्तौ च विशेषतः। सर्वारिष्ट विना-

शाय चित्तोद्वेग प्रशान्तये । दुःस्वप्नदर्शने चैव शनिपीडा निवारणे । प्रसूतां प्रथमावेर सर्वदोष विवर्जिताम् । सालंकृतां स्वर्ण शृंगी सुहेमतिलकान्विताम् । ताम्रदोहां रौप्यखुरां सप्तधान्योपरि स्थिताम् ॥ रत्नमाल्यां रक्तवस्त्रां घण्टाभिः सुशोभिताम् । एवंरूपाच महिषी प्राङ्मुखी स्थापयेत्ततः । दद्याद्द्विजाय शान्त्यर्थं दरिद्राय कुटुम्बिने दद्यात्प्रदक्षिणीकृत्य ब्राह्मणं तां पयस्विनीम् । प्रतिग्रह स्मृतस्तस्याः पुरा स्वयम्भुवा ॥

इति महिषी दानविधिः ॥

अथमाहिषीदानपद्धतिः ॥

अथ च महिषीदान कर्त्ता–परिभाषोक्त दिने, मृद्गोमयोप लिप्तायांभूमौ, पूर्वोक्तांसामग्रींसुवर्णशृङ्ग, सुवर्णतिलक, ताम्रदोह रौप्यखुर, सप्तधान्य, रक्तवस्त्र, घण्टा, क्षुद्रघण्टिका, इतिधृत्वा, यथोक्त लक्षणं ब्राह्मण मुदङ्मुखं कुशाशनोपरि कृष्णऊर्णासनेस्व दक्षिणत उपवेश्य, हस्तौपादौप्रक्षाल्य, स्वासने उपवेश्या चम्य प्राणायामं विधाय हस्ताक्षत पुष्पः सुमुखश्चेति गणेशं ध्यात्वा– समयं प्रतीक्षेत्—ततः संकल्पं कुर्यात्—ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं, ममसर्वारिष्ट निवृत्तिपूर्वक मायुरारोग्यै श्वर्या-भि वृद्ध्येवा अमुकराशिस्थ शनिग्रहस्थितेन तत्कृतामुकरिष्ठ प्रशा-न्तयेच यथाशक्त्यलंकृतांमहिषीं ब्राह्मणाय दास्ये, तत्पूर्वांगत्वेन ब्राह्मणास्य पूजनपूर्वकं वरणं महिषी पूजनंच करिष्ये । ॐ नमो स्त्वनन्तायेति ब्राह्मणं पाद्यगन्धादिभिः संपूज्य । कृष्णवस्त्र धौतोत्तरीय परिधानवस्त्र रजतमुद्रादियुतं करेकृत्वा । अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं ममामुक जन्मराशिसकाशादमुकस्थ शनिग्रहपीडा निवारणार्थं महिषीदानकर्मणि, एभिर्गन्धाक्षतरक्त पुष्पमाला वस्त्रताम्बूलादिभिर्महिषी दानप्रतिग्रहार्थममुकगोत्रममुकवेदाध्या यिनममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वांवृणे–वृतोऽस्मीति ब्राह्मणो ब्रूयात् । ततोमहिषीमानीय सप्तधान्योपरिकृत्वा–पूजयेत्—ॐ यमस्वरूपा

यै महिष्यैनमः, इति नम स्कृत्य प्रार्थयेत्--ॐ महिषी ब्रह्मपुत्री च लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । प्रार्थितासिमयादेवि यममार्गं निवारय, इति संप्रार्थ्य--ॐ महिषी यमरूपात्वं विश्वामित्र विनिर्मिते । पूजिता हरमे पापं सर्वदान फलप्रदे । इति मंत्रमुक्त्वा--ॐ यमस्वरूपायै महिष्यै नमः । इति मंत्राभ्यां, अवाहनं, आसनं, पाद्यं, अर्घ्यं आचमनं, स्नानं, रक्तवस्त्राच्छादनं गन्धाक्षतपुष्प रक्तमाल्यानि सुवर्णतिलकं च समर्प्यसुवर्णशृङ्गीं रौप्यखुरां कृत्वा ताम्रदोहनं च वामभागे संस्थाप्य । घण्टांगलेवध्वा क्षुद्रघण्टिका मालांच सुसज्य धूप दीप नैवेद्यादिभिः सम्पूज्य हस्ते तिल कुश जलंनिधाय--ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकनक्षत्रोपलक्षितोमुकराशि, रमुकोऽहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलाप्तये, तथाच शनैश्चरजनित समस्तव्याधि शान्त्यर्थं, इदानीममुकपर्वणि, इमां सुपूजितां यथाशक्यलंकृतां महिषींयमदैवतां, अमुकगोत्रायअमुकवेदाध्यायिनेसुपूजितायअमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यंसंप्रददे । नममेति तिलकुशजलेन दक्षिणहस्तेन महिषीपृष्ठंस्पृशन्—ॐ इन्द्रादिलोकपालानां याराजमहिषीशुभा । महिषीदानमाहात्म्यात्सास्तुमेसर्वकामदा । धर्मराजस्यसाहाय्येयस्याः पुत्रःप्रतिष्ठितः । महिषासुरस्यजननी यासास्तुवरदाम्मम । इतिमन्त्राभ्यां ब्राह्मण हस्तेदद्यात् । विप्रोऽपिमहिषीपृष्ठंस्पृष्ट्वा । ॐ देवस्यत्वा० । पठित्वा ॐ स्वस्तीतिप्रतिगृह्य । ॐ कोदात्कस्मा० इतिपठित्वा ततोयजमानः सविप्रांमहिषीं प्रदक्षिणीकृत्य, स्वासनेउपविश्य प्रतिष्ठासंकल्पं कुर्यात् अद्येत्यादिस्मृत्वामुकोहं महिषीदानप्रतिष्ठार्थमिदं सुवर्णतुभ्यंसंप्रददे नमम ॥ ततोभूयसीविभज्याचार्याय दक्षिणांदत्वा स्वयंसचैलंहरिद्रादि चूर्णनस्नात्वा अन्यद्वासर्सी-परिधाय ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयंभुंजीत ।

इतिमहिषीदानपद्धतिः ।

—:o:—

अथ अश्वदान विधिः

उक्तं च महाभारते—सर्वालक्षणोपेतं युवानं दोषवर्जितम् । योऽश्वं ददाति विप्राय स्वर्गलोके महीयते । अश्वमेध भारतंयस्तु फलोऽतु न दाप्नुते । अश्वदानन्तु तेनेह कर्तव्यं विधिपूर्वकम् । ताम्रे पयाले रौप्ये, सुवर्णालंकृतं क्रमात् । सदक्षिणं सवस्त्रं च दद्यातमग्निहोत्रिणे । चन्द्रसूर्योपरागे च, मन्वादिषु युगादिषु । अयनादिषु पुण्येषु कालेऽश्वं प्रदापयेत् ॥

इति अश्व दानविधिः

अथाश्वदान पद्धतिः ।

अथच सुलिप्तायांभूमौ पूजासामग्रींसंपाद्य, यथा शक्तिसुवर्णपट्ट हयकल किंकिणीजालावृतकंठं सवस्त्राच्छादिताऽऽरूढासनपृष्ठमश्वंसुसज्य, ब्राह्मणमाहूयोत्तरमुखमुपवेश्य स्वयंयजमानः पूर्वाभिमुखः स्वासनेऽउपविश्य, हस्तौपादौ प्रक्षाल्य प्राणायामं विधाय, सुमुखश्चेतिगणेशं संप्रार्थ्य, संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं चातुर्वर्ग्यार्थे कामपूर्वकाश्वरोमसमसंख्यकदिव्याब्दान्सूर्यलोक निवासार्थमश्वदानंकरिष्ये । तदंगतया ब्राह्मणपूजनपूर्वकंवरणं । अश्वपूजनं च करिष्ये । ततो ब्राह्मणं पाद्यगंधादिभिः संपूज्य वरणसामग्रीं हस्तयोर्निधाय, ॐ अद्येत्याद्यमुकोऽहं मेभिर्गंधाक्षत सद्रव्य धौतोत्तरीय वासोभिरमुक गोत्रं शर्माणंब्राह्मणमश्वदान प्रतिग्रहार्थं त्वांवृणे । ॐ वृतोऽस्मीतिब्राह्मणोक्तिः । ततः धान्योपर्यश्वमुत्थित्वा । ॐ विभ्राड्बृहत्पिवतु सौम्यमित्यादि सूर्यसूक्तेन, वा ॐ महार्णवेसमुत्पन्नउच्चैश्रवसपुत्रक । यथात्वं पूजितोवाजिन्शान्तिदोभवसर्वदा । अनेनमंत्रेण सुवर्णतिलकाक्रान्तललाटं, ग्रैवेयकसुपर्याणान्वितं, रौप्यरत्नकटकशोभितं हीरकनेत्रं, ताम्रखुरं, क्षौमपुच्छं, सुवाससं, शुभ्रसंवृतं, स्वायुधान्वितं, धान्यरत्नोपरिसुसज्जितमुत्थितमश्वं पाद्यादिनीराजनान्तं सम्पूज्य, संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्य अमुकोऽहं चातुर्वर्ग्यार्थे कामपूर्वकाश्वरोम संख्यकदिव्याब्दान्सूर्यलोक निवासकामः स्वर्गकामोवा, यमदैवतं सर्वालंकारयुतं अश्वं

सुपूजिताय ब्राह्मणाय, अमुकगोत्रप्रवराय, अमुकशर्मणे, तुभ्यमहं संप्रददे, ॐ तत्सन्नमम, इतिसकुशतिलोदकं अश्वस्यगृहीतदक्षिणंकर्णं, ब्राह्मणहस्ते, ॐ उच्चैः श्रवास्त्वमश्वानां राज्ञां विजय कारकः । सूर्यवाहनमस्तुभ्यमतः शान्तिं प्रयच्छमे, इतिपठित्वा दद्यात् , ब्राह्मणश्चकर्णगृहीत्वा ॐ देवस्यत्वासवितुः प्रसवेश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् । इति पठित्वा, ॐ स्वस्तियजमान स्यकामाः सत्याः सन्तु, ततः ॐ कोदादितिकामस्तुतिं च पठेत् । ततोयजमानः सब्राह्मणमश्वं प्रदक्षिणीकृत्य अश्वसप्तसप्तति पदानियावत् अश्वाग्रतो गत्वामनसि, सूर्यनारायणंध्यायन,दर्शयित्वाच परावृत्य,स्वासनेउपविश्य दान प्रतिष्ठांकुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोहं अश्वदानकर्मणि दानप्रतिष्ठासिध्यर्थमिदं सुवर्णं रजतंवा, अमुकशर्म्मणे ब्राह्मणायतुभ्यमहं संप्रददे, ॐतत्ससन्नम ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा । स्वयमपिभुंजीत, । इत्यश्वदानम् ।

भूमि दान परिभाषा—

उक्तं च महाभारते—प्रादेशमात्रां भूमिंतु योदद्यादनुपस्कृताम् । न ससीदति कृच्छ्रेण नच दुर्गाण्युपाश्नुते । मुदितो राजते प्राज्ञः शक्रेण सहनन्दति । यावन्ति लाङ्गलमुखेन रजांसि भूमेर्भागीरते दुहितु रङ्गजरोमकाणि । तावन्ति शंकरपुरे सयुगानि तिष्ठेत् । भूमिप्रदान निरतः कुरुते मनुष्य. । बृहस्पतिः— यत्किञ्चित्कुरुते पापं जन्म प्रभृतिमानवः । अपिगोचर्ममात्रेण भूमिदानेन शुध्यति । स्वदत्तां परदत्तां च योहरेच वसुंधराम् । -षष्टिर्वर्ष सहस्राणि विष्ठाया जायते कृमिः ॥ इति

अथ भूमिदान पध्दतिः

अथ च भूमिदानकर्त्ता देयभूमेर्मृत्पिंडं, ताम्रपत्रेधृत्वा गृहे वा तीर्थादिष्वः स्वासने उपविश्याचम्य, दीपंप्रज्वाल्य, अर्घस्थापनादि कर्मकृत्वा, तिलकुशजलं हस्तेनिधाय, प्रतिज्ञा संकल्पं-कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्य अमुकोहं करिष्यमाण भूमिदानकर्मणि गणेशादिपूजनपूर्वकम् तथा च भूमिदान प्रतिग्रहार्थं ब्राह्मणस्य पूजनपूर्वकं वरणंकरिष्ये, ततो गणेशं सम्पूज्य ॐ शुक्ला-

म्बर धरमिति विष्णुंच स्मृत्वा, नमोस्त्वनंतायेति मंत्रेण ब्राह्मणं पाद्यगन्धादिभिः संपूज्य चरणद्वयंच हस्तेकृत्वा—अद्येत्यादि अमुकोऽहं एभिर्गन्धाक्षतधौतवस्त्रादिभिः करिष्यमाण भूमिदान प्रतिग्रहार्थं अमुकगोत्रममुकशर्माणं त्वामहंवृणे इतिदत्वा वृतोस्मी तिप्रत्युक्तिः। ततो भूमिंपूजयेत। ध्यानन् शुक्लवर्णामहीकार्या दिव्याभरणभूषिता। चतुर्भुजासौम्य वपुश्चन्द्रांशु सदृशाम्बरा। दिङ्नागानांचतुर्णांतुकार्यापृष्ठगतामही। सर्वौषधियुतादेवीशुक्ल-वर्णातलः स्मृताः। ॐ भूरसिभूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्यधर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ हं० हृ पृथि-वींमाहि हं० सीः। इति ध्यात्वा ॐ भूम्यैनमः इति मंत्रेणताम्र पात्रस्थ भूमिपिंड, (वाभूमिमूल्यं सुवर्णादिद्रव्यम्) सम्पूज्य दान सँकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य अमुकोऽहं षष्ठिसहस्रवर्षमित गोलोकवासकामो वा सकलपाप दूरीकरणर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये इमां भूमिंविष्णुदैवतकाम्,अमुकगोत्राय, अमु-कवेदाध्यायिने अमुकशर्मणे ब्राह्मणायतुभ्यंसंप्रददे, ॐ तत्सन्नमम ब्राह्मण हस्तेदत्वा, ॐ देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्। ॐ कोदात् इतिकामस्तुतिं च पठित्वा, ॐ विष्णवे भुवं प्रतिगृह्णामि। ॐ स्वस्तीतिवदेत् दानप्रतिष्ठां कुर्यात् अद्येहेत्यादि अमुकोऽहं कृतस्यभूमिदानकमर्णः प्रतिष्ठार्थं इदं सुव-र्णमग्नि दैवतं अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय संप्रददे। ततो ब्राह्मणो यजमान मभिषिच्याशीर्वादं दद्यात्। इति भूमिदान पद्धतिः

अथ गृहधर्मशालादानपरिभाष—उक्तञ्चमार्कंडेयपुराणे— कुर्यात्प्रतिश्रयगृहं पथिकानां हितावहम्। निजगेहैकदेशं वा साधूनां यो नियोजयेत्। अक्षयंपुण्यमुद्दिष्टं तस्य स्वर्गोऽक्षयोऽमृ। सर्वकाममसमृद्धोऽसौ देववद्दिविमोदते, (प्रतिश्रयो धर्मशाला)—भविष्यपुराणे—प्रतिश्रये सुविस्तीर्णे कारिते सज्जलेन्धने। दीनानाथ जनार्थाय वर्तितं कृतं भवेत्। मदनरत्ने भविष्ये—एवं संभृत-संभारं गृहं कृत्वा द्विजोत्तमान्। कुलशीलसमायुक्तान्गृहस्थानिमंत्रयेत्॥ निराश्रितं स्था राजद्भ्योऽत्र

महाफलम् । ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे—गृहाङ्गणे कारयित्वा कुंडमेकं समेखलम् । ग्रहयज्ञः प्रकर्त्तव्यस्तुष्टि-पुष्टिकरः सदा ॥ रक्षोघ्नानि च सूक्तानि पठेयुर्ब्राह्मणास्ततः । वास्तोः पूजा प्रकर्त्तव्या दिक्पालानां बलिं क्षिपेत् । ततः पुण्याह घोषेण ब्राह्मणास्तेषु वेश्मसु । प्रवेशयित्वा स्वर्वास्तुसमायं तु प्रवेशयेत् । यज-मानस्ततस्नात शुक्लाम्बरधरः शुचिः । रथस्य विहित पूर्वं ततस्मै प्रतिपादयेत —मत्स्यपुराणे—य एवं सर्वमर्त्यमान वेश्म विनिवेदयेत् । कल्पकोटि शतं यावद्ब्रह्मलोके महीयते । शेष प्रयोगेऽस्पष्टम् ॥

॥ अथगृहदान (धर्मशाळा) दानपद्धतिः ॥

अथचदातापूर्वोक्त गृहनिर्माणविधिनायथाशक्तिगृहं(धर्मशालांवा) निर्मितंकृत्वा । पूर्वोक्तगृहवास्तुस्थापनविधानेन, ग्रहयागपुरः सरं वास्तुस्थापनान्तं कर्मकृत्वा ॥ तत्रसंकल्पेविशेषोऽयम्—ततोयज-मानः तत्रमंडपेप्रविश्य, शुभासने उपविश्याचम्य दीपंप्रज्वलय्य शान्तिपाठंकृत्वा, प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्याऽमुकोहं गृहदानकर्मणो निर्विघ्नतासिध्यर्थं गणेशादि नवग्रहान्तपंचाङ्ग देवतानां पूजनपूर्वक तत्पूर्वाङ्गतया, आचार्या-दीनांवरणं ग्रहपूजनं, ग्रहयागहोमं शिलान्यासपूर्वक वास्तुपूजनं स्थापनंचकरिष्ये, अत्रसर्वकृत्यं पूर्वोक्तपध्दतिभिःकुर्यात्—होमा-न्तेयजमानो होमसांगतासिध्यर्थं सर्वेषांदेवानां प्रीतये, ऋत्वि-ग्भ्यः सुवर्णरजतान्यतरदक्षिणां आचार्यायगांचदद्यात्—ततः आचार्यादयः सपिवारंयजमानमभिषेकमंत्रैर्ग्रहवेदीशानस्थकलश-जलैर्दूर्वापल्लवैर्मंगलघोषपुरस्सरमभिषिंचेयुः । तदनंतरंयजमानः उद्वर्त्तनपूर्वकंस्नात्वा, स्नानवस्त्रंत्यक्त्वा, शुक्लवस्त्रेपरिधाय गीत-मंगलवाद्यादिभिर्गृहं, गृहप्रतिष्ठोक्तैः पूर्वोक्तैः रक्षोघ्नपावमान, मंत्रैः त्रिसूत्र्याप्रदक्षिणक्रमेणावेष्टय, तैरेवसदुग्धजलधारांगृहस्यो परितः पातयित्वा, गृहमध्येगत्वा, तत्रगृहस्यदक्षिणाभागे, अष्ट दलंकमलंलिखित्वा तदुपरिप्रस्थमात्रांस्तिलान्ताम्रपात्रेधृत्वा, तत्रो परिउपधानादिसर्वोपकरण सहितांशय्यां पूर्वापरायतां स्थापयि-त्वा, तत्रअग्न्युत्तारणकृतां सौवर्णींलक्ष्मीनारायणप्रतिमांसंस्था

प्य, सम्पूज्यच, सुवस्त्रभूषणैर्भूषितं सपत्नीकंब्राह्मणं गृहदान प्रतिग्रहार्थंवृत्वा, तध्दस्तंकरेणगृहित्वा, सुलग्नेमङ्गलवाद्यादिभिः सह, ॐ एह्येहिनारायणदिव्यरूप, सर्वामरैर्वन्दितपादपद्म। शुभाशुभानन्दशुचामधीश, लक्ष्म्यायुतस्त्वंहि गृहंगृहाण ॥१॥ नमःकौस्तुभनाथायहिरण्यकवचायच, क्षीरोदार्णवसुप्तायजगध्दात्रेनमोनमः॥२॥ नमोहिरण्यगर्भाय,विश्वगर्भायवैनमः। चराचरस्यजगतोगृहभूतविदेनमः॥३॥ भूर्लोकप्रमुखालोकास्तवदेहेव्यवस्थिताः। नन्दन्तियावत्कल्पान्तं तथाऽस्मिन्भवनेगृही ॥४॥ त्वत्प्रसादेनदेवेशपुत्रपौत्रैर्युतोगृहे। पंचयज्ञक्रियायुक्तोवसेदाचन्द्र तारकम् ॥५॥ इतिसपत्नीकं ब्राह्मणंगृहाभ्यंतरे शय्योपरिउदङ्मुखमुपवेश्य, स्वयंभूमौ आसनोपरिप्राङ्मुखउपविश्य, आचम्यकुशतिलयवजलान्यादाय, देशकालौसंकीर्त्य अमुकराशिरमुकोऽहं मम आत्मनः सकलपापक्षयपूर्वकं, कल्पकोटिशताद्यधिककाल श्रीलक्ष्मीनारायण चरणारविन्दसमीप निवासकामः। इदंसदारूजं शिलानिर्मितंयथाशक्ति संपादितकांस्यपात्रादिभाजन, सर्व धान्यादि, लवण,शर्करा, घृतादिपरियुतं, समश्वतूलिकावितानादि सर्वोपकरणसहितम्। अश्वरथदासदासीयुतं, सदीपप्रभाभिरुचो तंसर्वदैवतंगृहं, अमुकगोत्राय अमुकवेदाध्यायिने, अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय, तुभ्यंसम्प्रददे, ॐ तत्सन्नमम। इतिब्राह्मणहस्ते सकुशजलंदत्वा। ॐ शैलजंपरमंदिव्यं सर्वधान्ययुतंत्विदम्। सर्वोपस्करसंयुक्तंगृहंगृह्णद्विजोत्तम। ततोब्राह्मणः, ॐ देवस्यत्वा० इतिपठित्वा, ॐ प्रतिगृह्णामीत्युक्त्वा, ॐ कोदात्कस्माऽअदात्० इतिकामस्तुतिंपठेत्। ततोगृहदानप्रतिष्ठांकुर्यात्—अद्येत्यादिदेश कालौ संकीर्त्यामुकोऽहं कृतैतद्गृहदान प्रतिष्ठासिध्दर्थमिदंसुवर्णम्। अग्निदैवतंदक्षिणां, अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यंसम्प्रददे, (गृहदानप्रतिष्ठानियमंतु—सहस्रसुवर्णमुद्रामारभ्यैक सुवर्णावरामिति—भारते) ततस्तस्मैपादुकोपानह छत्रचामरादिकंदत्वा, प्रार्थयेत्—संपन्नंवाप्यसंपन्नं गृहोपस्करभूपितम्। सर्वसम्पूर्ण-

तामेतु, त्वत्प्रसादाद्द्विजोत्तम। ततोभूयसीदक्षिणांदत्वा पूर्वपूजितदेवान् विसृज्यघृतछायांकृत्वा आशीर्वादंगृहीत्वा ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। इतिगृहदानपध्दतिः ॥

—०—

अथ शय्यादान विधिः।

उक्तंच हेमाद्रौ भविष्ये—शय्यादानं प्रवक्ष्यामि पाण्डुकुलोद्वह। यांदत्वा शिवभागीस्यादिहलोके परत्रच। हंसतूलो प्रतिच्छन्नां शुभगण्डोपधानिकाम्। प्रच्छादनपटीयुक्तां, धूपगन्धादिवासिताम्। तस्यांसंस्थापयेध्देवं। हरिंलक्ष्म्या समन्वितम् उच्छीर्षके घृतभृतकलशं परिकल्पयेत्। विशेष पांडव श्रेष्ठ सनिद्राकलशोबुधैः। चतुष्कोणेषु संस्थाप्या, यथाशक्तियुधिष्ठिर। घृतकुंकुमगोधूम पूर्णपात्रंजलस्यच। दीपीकोपानहच्छत्र, चामरासनभाजनम्। पार्श्वेषुस्थापयेद्भक्त्या रात्रावान्यानिचैवहि। शयनस्थस्यभवति यदन्यदुपकारकम्। शय्यामेवंविधांकृत्वा ब्राह्मणायोपपादयेत्। सपत्नीकायसंपूज्य पुरयेन्द्दिविधि पूर्वकम्। एवंशय्याप्रदानेतु। विधिरेष प्रकीर्तितः स्वर्गेपुरंदरगृहंसूर्यपुत्रालयेतथा। सुखंवसत्यभोजन्तु शय्यादानप्रभावतः। पीडयन्तिनतंयाम्याः पुरुषाभीषणाननाः कल्प विकल्परहितः स्वयंस्वर्गेविराजते ॥ इति शय्यादन विधि ॥

अथ शय्यादान पद्धतिः।

—:o:—

अथत्र शय्यादानकर्ता, पुण्यकाले लिप्तायांभूमौ स्वासने प्राङ्मुख उपविश्य दीपंप्रज्वाल्य, आचम्य, हंसतूल्यादि समायुक्तां शय्यांपूर्वापरायतामास्तीर्य शिरः प्रदेशे घृतपूर्ण ताम्रकलशं निद्राख्यं तथा चतुष्कोणेषु, घृतकुम्भं। १। कुम्कुममिश्रित जलकुम्भं। गोधूमपूर्ण जलपूर्णंच कुम्भं संस्थाप्य। पादप्रदेशे चतुर्वर्तियुतं ज्वलन्तं दीपं संस्थाप्य। शय्याधःप्रदेशे कर्पूरादि वासितं जलपूर्णकलशं, संस्थाप्य, अन्यानि चोपस्करणानि धान्यानि भांडानिच पार्श्वयोः संस्थाप्य, शय्योपरि अग्न्युत्तारण कृतां लक्ष्मीनारायणसुवर्णप्रतिमां ताम्रपात्र पूरिततिलोपरि

संस्थाप्य, ब्राह्मणमुदङ्मुख मुपवेश्य, गणेशंनमस्कृत्य, अर्घ संस्थाप्य विधानुत्सार्यंच ब्राह्मण वरणं कुर्यात, ब्राह्मणं वरणद्रव्यंच सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्य, अमुकोहं करिष्य माण शय्यादान कर्मणि, एभिर्वरणद्रव्येण, अमुकगोत्रममुकशर्माणं शय्यादानप्रतिग्रहार्थं त्वांवृणे, इति ब्राह्मणं वृत्वा, शय्योपरि लक्ष्मीनारायण प्रतिमा पूजनं कुर्यात्। ततः एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य सहस्रशीर्षेत्यादि, पुरुषसूक्तेन पंचोपचारादिभिः प्रतिमां संपूज्य, पुष्पाक्षत हस्तः—ॐ नमः, प्रमाण्यैदेव्यै। इति मंत्रेण, चतुर्दिशं शय्यां प्रदक्षिणी कुर्वन् शय्योपर्यक्षत पुष्पाणिक्षिप्त्वा, शय्यादान संकल्पं कुर्यात—अद्येत्यादि, देशकालौ संकीर्त्य, अमुकोहं सकल पाप क्षय पूर्वक धर्मार्थ काममोक्षप्राप्तये सर्वसुखाप्तिपूर्वक, अप्सरोगण सेव्यमान विमानारोहण पूर्वकभूत संप्लव कालावधि स्वर्गलोक वास कामः। श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं मिमां दारुमयीं हंसतूली, गण्डोपधान, प्रच्छादनादि वस्त्र पादुकोपानच्छत्र चामरासन सुवर्णरजतभूषणनानाभक्ष्यभोज्यादि वाहनायुध परिवृतां लक्ष्मीनारायणसुवर्णप्रतिमांयुतां शय्यां प्रजापतिदैवतां अमुक गोत्रप्रवरायामुकब्राह्मणाय तुभ्यंसंप्रददे। इति शय्यांस्पृष्ट्वा सकुशजलं ब्राह्मण हस्तेदद्यात—ॐ नमम इत्युक्त्वा प्रार्थयेत्—यथानकृष्णशयनं शून्यंसागर जातया। शय्याममाप्य शून्यास्तु। तथा जन्मनि जन्मनि। यस्मादशून्यं शयनं केशवस्य शिवस्यच। शय्याममाप्य शून्यस्तु तथा जन्मनि जन्मनि। ब्राह्मणश्च—ॐ स्वस्ति प्रजापति दैवतायै प्रतिगृह्णामि इत्युक्त्वा गृह्णीयात्। ॐ कोदादितिच पठेत्॥ ततो यजमानः स्ववित्तानुसारं कर्षमात्रंवा सुवर्णां हस्तेनिधाय—अद्येत्यादि अमुकोहं कृतैतत् शय्यादान प्रतिष्ठार्थं मिदंसुवर्णां विष्णुदैवत ममुकशर्म्मणे तुभ्यं संप्रददे। भूयसीं दक्षिणांदत्वा ब्राह्मणान्भोजयेत्।

इति शय्यादान पद्धतिः।

अथ तुलादान परिभाषांवक्ष्ये ।

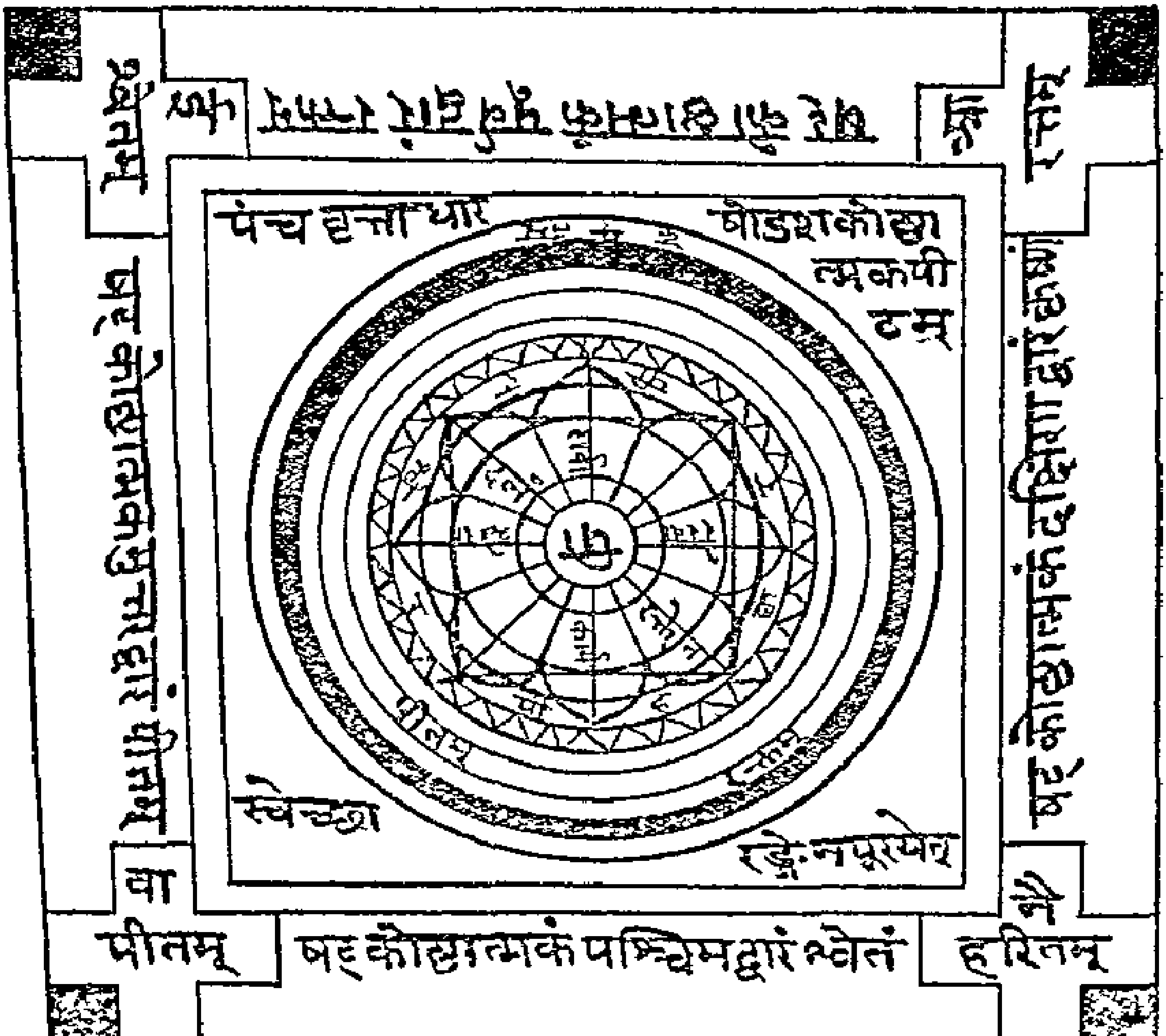
—:○:○:—

युधिष्ठिरउवाच—भगवन्श्रोतु मिच्छामि तुलापुरुष संज्ञकम् । कोहोमः कस्यपूजा च सकल्पः कोयथाविधिः ॥ श्रीकृष्णउवाच—ग्रस्तेसूर्ये तथाचन्द्रे देवयात्रा सरित्तटे लक्षहोमे विशेशेणात्मानं तोलयेद्बुधः ॥ भूमिकम्पे तथोल्कायां निर्घातोत्पातदर्शने । तथा दुर्ग्रह पीडा यामात्मानं तोलयेत्तथा । मंडपं च यथाशक्त्या उत्तमम्मध्यमंतथा । कुर्यात्पूर्वोक्त विधिना द्वाराणि तत्रकल्पयेत् । तन्मध्ये स्थापयेद्विद्वान्स्तं भंदारुमयं शुभम् । पलाशखदिरा श्वत्थ देवदारु शमीमयम् । पञ्चहस्तस्यवा कुर्याच्चतुर्हस्त प्रमाणकम् । मानहीनाधिकं कृत्वा कृतमप्य कृतंभवेत् ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन सप्रमाणं च कारयेत् । रविसंक्रम कालेपि स्नातस्तु परितोलयेत् । पीतवस्त्रेण संछाद्य चंदनेनानुलेपयेत् । तत्रादौतुगणेशं च मातृका मंडलं तथा ॥ पूजयेद्गन्धपुष्पैश्च धूपैर्दीपैस्तथोत्तमैः ॥ **विष्णुधर्मोत्तरे**—तुलादानं प्रवक्ष्यामि सर्वपापप्रणाशनम् । यद्गौर्यां चरितं पूर्वलक्ष्म्या नारायणेन च ॥ पुण्यं दिन मथासाद्य तृतीयाया विशेषतः । गोमयनानु लिप्तायां भूमौ कुर्याध्दटं शुभम् ॥ दारुजंशुभवृक्षस्य चतुर्हस्तप्रमाणतः । सुवर्णं तत्रवध्नीतस्वशक्त्या घटितं घटे ॥ सौवर्णं स्थापयेत्तत्र वासुदेवं चतुर्भुजम् । शिक्य द्वयन्तुवध्नीयात्स्थापयत्पिटकेततः । तत्रारुह्यसवस्त्रास्त्र. सर्वालंकार भूषितः । अभीष्टंवित्तंगृह्य स्नापयित्वा घृतादिभिः । तुल पुरुष दानस्य विधिरेषप्रकीर्तित. ॥ **रोगपरत्वेन तत्रा शार्थ द्रव्य विशेषेण तुलादानान्युक्तानि—गारुडे**—तुला पुरुष दानंतु श्रृणु मृत्युंजयोद्भवम् । अथलोहं प्रदातव्यं सर्वरोगोपशान्तये ॥ कांस्यचयदमर्णेद्यं त्रपुचार्शो विकारके । अपस्मारेच सीसंस्यात्ताम्रं कुष्टेसुदारुणे । पैत्तलंरक्त पित्तेच रूप्यं प्रदर मेहयोः । सौवर्णंसर्वरोगेषु प्रदद्यान्मृत्यु नोदनम् ॥ फलोद्भवं तथा दद्याद् ग्रहण्यां दीर्घ दारुणे । गुडंभस्मक रोगेतु पौगन्तु गण्डमालके । जाङ्गलं चाग्निमांद्येतु रोमोत्पाते तुपौष्पकम् । मधूद्भवं तथा देयं कासश्वास जलोदरे । घृतोद्भवं तथादेयं छर्दिरोगोप शान्तये । क्षीरं पित्तविनाशाय दाधिकं भगदारुणे । लावणं वेरनाशाय पैष्टं दद्रुविनाशने ॥ अन्नंच सर्वे रोगस्य नाशनं स्मृतमेवच । आर्तो यदास्यात्पात्रंवा प्राप्नुयात्पुण्यदेशतः । नित्यं मृत्युंजय प्राप्त विधिना यत्प्रदीयते । सदेव सर्वशात्यर्थं भयतोह न संशयः ॥ **तुलादानेकुण्ड मंडपादि**— तच्च सुवर्ण तुलायामेवा वश्यक मिति हेमाद्र्यादयः, रत्नरजतादि तुलायान्तु कृताकृतमित्युक्तं तत्रैव । होमाद्य शक्तौतु मण्डपादि रहितमेव कुर्यात् । नतत्रमंत्रो होमोवा एवमेव प्रदीयते । इतिमात्स्योक्तेः । प्रदमंत्रा द्वारजाप संभावनेत्यर्थः ॥ **तुलापुरुषदानोपयोगि देवतादिमदन रत्ने विद्धधर्मोक्तेः**—विशेष दानं कथितं तुलादि तस्मात्तुला लक्षण मुच्यते प्राक् ॥

यातुलाप्रमाणं स्यात्तमंगुलानि दैर्घ्यगुणे पाणानिप्रमाणं ॥ प्रतिद्वयेष्वंगुलषट्कं २ शतांगुलान्योक्तमङ्गुलानाम् स्युर्निशति. पव च धातुर्बंधावंधेप्यानम्ग्रनिवेश्या । ईशा. शशीमास्तद्वदसुर्य्यी स्याद्वि भवर्मागुरुराम्नी । प्रजापतिर्विश्वगणद्विधाता पर्जन्य शम्भु रितुदेवताच सौम्यस्चयमामराज अश्विनी जलेशमित्रावरुणामरुद्गण । धनेशगंधर्व जलेश विष्णुर्दंडे चतुर्विंशतिरेव देवता: ॥ अत्र सौम्योनुध ॥ स्यात् पंचविंश पुरुष ग एषो यस्तोल्यमानस्तुलयामहात्मा । एताविधेयास्तापनीयमय्यो स्वार्चिता दैवत मूर्त्तयस्ता ॥ षडंगुल स्याच्चतुरस्रपिंड प्रान्तद्वये विष्णुरनन्तनामा: । पार्श्व द्वयं तच्चतुरंगुलं स्यादेवं मया ते कथितं प्रमाणम् ॥ मध्यावुदे शृङ्खलिकांगुलानि पचाशिका विंशतिरेव दैर्घ्यं । एकांगुलोस्याद्भ्रमतीह पिंड स्तत्राधिदेव: विहगाधिप स्यात् । सद्वातुबंधं शुभवाष्टनाटं पिंडेगुलद्वन्द्वमधोनिवेश्यम् ॥ अधोर्द्ध्वेभूम्यधिदेवतास्यात्तुलान्तरे भूमिपतिर्निवेश्य ॥ **तुलादानेयन्त्र सच वेद्यां वागोमयोपलिप्ते समे भूमौ कर्त्तव्य:-** तत्राचार्यो भूमौ वा वेद्या मध्ये त्रिहस्तमितं चतुरस्रं व्यासं कृत्वा प्रागपरं दक्षिणोत्तर नवरेखाभिस्तच्चतुःषष्टिकोष्ठकं कुर्यात । तत्र कोष्ठानि प्रकोष्ठानि प्रत्यके नव नवांगुलानि संपद्यन्ते । ततोबहिरन्तपंक्तिपुचतुर्दिक्षुमध्यकोष्ठानि चत्वारि मार्जयित्वा तदुपर्युपान्त्यपंक्तिषु पार्श्वयोर्द्वयं त्रय त्यक्त्वा प्रतिदिशं प्रति मध्यकोष्ठद्वय मार्जयेत् । तच्चतुर्दिक्षु षट् षट् कोष्ठानि चत्वारि द्वाराणि सिध्यन्ति । ततोमध्यस्थितषोडशकोष्ठानि मार्जयेत् । ततोबहो एकैककोणकोष्ठं विहाय कोणकोष्ठद्वारपीठान्तरालवर्त्तीन्यष्टौ निपं चपं चकोष्ठानिमार्जयेत् । तथाचमध्यचतुरस्रपीठ पादा सिध्यन्ति । ततोमध्याच्चत्वारिवृत्तानिकुर्यात् । तत्राद्ये चत्वार्यंगुलानिव्यास द्वितीयेऽष्टौ तृतीयेचतुर्विंशति , चतुर्थेषड्विंशतिरिति तच्चतुरंगुलवृत्त कर्णिकारूप पीतेन रजसा पूरयित्वा कर्णिकाऽवधिरेखा सितेन रजसा निर्माय, तद्बहि रष्टांगुलात्मकेवृत्ते पीतरक्त सितरजोभि संपादित मूलमध्याग्राणिशोडशकेसराणि संपाद्य तत्केशरादधिरेखां सितेनैवरजसांगुलोन्नतां संपाद्य तच्चतुर्विंशांगुलात्मकेतद्बहिर्वृत्तेरजसाष्टदिक्ष्वष्टौ पत्राणि रक्ताग्राणि कुर्यात् । ततोदलान्तररेखा सितेनरजसा विधाय दलान्तराणि कृष्णेनरजसा पूरयित्वा तद्बहिरेकांगुलान्तरां बहिर्वृत्तरेखां सितेनैव रजसासंपाद्य वृत्तद्वयान्तरं परितोऽष्टदलायतं तन्मध्यचिन्हे षोडशधाविभज्य प्रतिभागयवाकारान्षोडशारान्, श्यामपीतारुणश्वेतरजोभि कल्पयित्वा, तदंतरेण यथायोगरजोभि पूरयित्वा तद्बहि सित पितारुण श्यामहरिता पंचरेखा लिखेत् । तद्बहि. पीठे चेत्र चतुरस्रयथाशोभरजोभि रक्तं कृत्वा पीठावधिरेखां सितेनरजसा चतुरस्रां रचयेत् द्वारदेशाणि पूर्वादित पीतश्यामसितहरितरजोभि पूरयेत् । आग्नेयादिकोण कोष्ठचतुष्टय लोहित हरितश्यामधवलै पूरयेत् । आग्नेयादिपीठचतुष्टयं पञ्चकोष्ठात्मकंतुक्रमात्सित रक्त पीत कृष्णरजोभि पूरयेत् । तत सितेन रजसा गुलोन्नतेनबहिश्चतुरस्ररेखां कुर्या दितिमदनरत्नादय । इदमेव वारुण्यां मण्डले जलाशयोत्सर्गादौ ज्ञेयम् । पुनस्तत्रैव—वजूरागुत्त-

मेभागे आग्नेय्यांशक्तिमुज्वला । अतिवे दक्षिणेदण्डं नैर्ऋत्याखड्गमालिखेत । पाशान्तु वारुणेलेख्यध्वजं वायुगोचरे । कौबेर्यान्तुगदालिख्यईशान्यां शूलमालिखेत् । शूलस्यवामदेशेतु चक्र पद्मं च दक्षिणे इतिषोडशार चक्रम् ॥ इति ॥

वारुणमण्डलभद्रोद्धारः



अथ तुळादानपद्धतिः ।

अथ च तुलादानकर्त्ता पूर्वोक्त परिभाषानुसारेणोद्धारपूर्वकं वारुणमंडलंगोमयोपलिप्ते भूमौषोडशारंहस्तत्रयात्मकं चतुरस्रं लिखित्वा तत्तद्रंगैरापूर्य सुसज्य च पूर्वोक्त लक्षणंघटंचानीय

तत्रसंस्थाप्य, शुध्देधौतेवाससी परिधाप्य मंडपे पूर्वाभि मुखेनो पविश्याचम्य प्राणानायम्य, रक्षादीपं प्रज्वलय्य, प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य मुकशर्माहंममात्मनो दुष्टग्रह पीडाद्यखिलरोगादि निवृत्तिपूर्वक दीर्घायुष्यप्राप्तये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थममुक तुलादान कर्मणि निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थे तदंग· त्वेन गणेशादि पंचांगदेवतानां पूजनं आचार्यवरणंच करिष्ये ततः पूर्वोक्तविधिना गणेशादीन्संपूज्य, रक्षासूत्रमभिमंत्र्यकलशोपरि संस्थाप्य, आचार्यंवृणुयात् वरणद्रव्यमाचार्यं च सम्पूज्य वरणद्र- व्यंहस्ते निधाय संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुको- ऽहं करिष्यमाण तुलादान कर्मण्येभिर्गन्धाक्षत पुष्पपूगीफल यज्ञो पवीत वासोलंकरण वरणद्रव्यैः अमुकतुलादान प्रतिग्रहार्थं ममुक गोत्रममुकप्रवरान्वितममुकवेदाध्यायिन ममुकशर्माणं ब्राह्मण माचार्यत्वेनत्वामहंवृणे वरणसामग्रीं तस्मैदत्वावृतोऽस्मीत्याचार्यो ब्रूयात्—कर्मकुरु करवाणीति प्रत्युक्तिः ततः प्रार्थयेत् आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः। तथात्वंममयज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव- सुव्रत। तत आचार्यो गोविन्द, मृत्युंजय, धर्मराजनांसलिसंभवे ईशादिचतुर्विंशति देवानां च सुवर्णप्रतिमाः स्थाल्यांनिधाय अग्न्यु त्तारण विधिना संस्नाप्य अग्न्युत्तारणंकृत्वा पूजयेत्—संकल्पः अद्ये- त्यादिसंकीर्त्य, अमुकोऽहं मम दुष्टग्रहजनिताऽखिलरोग निवृत्ति पूर्वक दीर्घायुष्य प्राप्तिद्वारा श्रीपरमेश्वर तुलापुरुष प्रीतयेकरिष्य- माण तुलादानकर्मणि सुवर्णप्रतिमानामुपरि गोविन्द मृत्युंजय धर्मराजानां पूजनंकरिष्ये—तत्रादौ गोविन्दं ध्यायेत् ॐ अधश्चक्र। गदाभृध्दर्वदक्षिणवामयोःक्रमात् । ऊर्ध्वदेशंखमधः पद्मंगोविन्दः कपिलाङ्कः ॐ इदं विष्णुरिति मेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दः विष्णुर्देवता तुलादाने गोविन्दावाहनेपूजने विनियोगः। ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपाँ सुरेस्वाहा ॐ एतन्ते देवसवितर्य्यज्ञं प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे। तेनयज्ञमवतेन यज्ञ पतिं तेनमामव । मनोजूतिर्जुषता माज्यस्य बृहस्पति र्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्टं यज्ञ टि० समिमंदधातु । विश्वेदेवासऽइहमादय-न्तामोंप्रतिष्ठ । ॐ भूर्भुवः स्वः गोविन्देहागच्छेह तिष्ठ सुवर्ण प्रतिमायां सुप्रतिष्ठितोवरदोभव इति प्रतिष्ठाप्य पुरुषसूक्तेनवा ॐ गोविन्दायनमः इति मंत्रेण सम्पूज्य, मृत्युञ्जयंध्यायेत्—ॐ त्र्यंबकं वृषभारूढं प्रतिवत्क्रैत्रिलोचनम् । कपाल शूलखट्वाङ्गं चंद्रमौलिसदाशिवम् । ॐ त्र्यम्बकमिति वशिष्टऋषि स्त्र्यंबक रुद्रोदेवता तुलादान कर्मणि सुवर्णप्रतिमायां मृत्युंजयावाहने पूजनेच विनियोगः—ॐ त्र्यंबकंयजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात् ॥ ॐ एतन्ते पठित्वा॥ ॐ भूर्भुवः स्वः, त्र्यम्बके हागच्छेह तिष्ट सुप्रतिष्ठितो वरदोभव–ध्यायेत्—ॐ मृत्युंजयश्चदेवोऽयं चतुर्बाहु स्त्रिलोचनः । अक्षमालाधरोदेवो दक्षिणेनतुपाणिना । वामेनामृत कुण्डीच धारयन्नमृतान्विताम् । वरदाभयपाणिश्च दिव्याभरण भूषितः । शुक्लः सुनीलवासाश्च पद्मस्योपरि संस्थितः ❀ । इति मृत्युंजय प्रतिमां सम्पूज्य मृत्युंजय प्रतिमाया मात्मनि च न्यासं कुर्यात्—ॐ जां हृदयायनमः, ॐ जीं शिरसे स्वाहा, ॐ जूं शिखायैवषट्, ॐ जैं कवचाय हुम्, ॐ जौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ जः, अस्त्रायफट् इति मृत्युञ्जय प्रतिमाया मात्मनिचन्यासं कृत्वा, त्र्यंबक प्रतिमां वेदोक्त मृत्युञ्जय मंत्रेण वा नमस्ते रुद्रमन्यवेति नीलसूक्तेन सम्पूज्य । आवरणशक्तीः पूजयेत्—ॐ जयायैनमः, ॐ विजयायैनमः, ॐ अजितायैनमः, ॐ अपराजितायैनमः, ॐ भद्रकाल्यैनमः, ॐ कपालिन्यैनमः, ॐ क्षेम्यायैनमः ॐ मृत्यु पराजितायै नमः, इति नाममंत्रैर्गन्धाक्षता दिभिः प्रादक्षिण्येन क्रमेण सम्पूज्य, पुनः प्रार्थयेत्—ॐमृत्युञ्जय

टि० " लोहतुलादाने प्रतिगृहीतु' शिरसि, ललाटे, जिह्वामूले, गंडयो हृदये, नाभौ, गुह्ये, मण्गांधेन ॐ जूं म इतिमृत्यु'जयमन्त्र संस्कृत्वा सतिसंभवे प.दपलात्मकंलोहदंडंकृष्णधान्योपरि धृत्वा वस्त्रेणाच्छाद्य तुलादानान्ते संकल्प पू।क माचार्याय दद्यात् लोहतुलादाने। अयमेव विधिर्विशेष

त्रिलोकेश, दयालो भक्तवत्सल। रक्षमां देवदेवेश स्वल्प मृत्यु-भयात्प्रभो। इति संप्रार्थ्य, केचिदत्र धर्मराज पूजनमप्याचरन्ति, यथा चारः कर्त्तव्यः, प्रतिमायां धर्मराजमावाहयेत्–ॐ धर्मराजं धर्ममूर्त्तिं जगदानंदकारकं। ध्यायामि मनसादेवं धर्माधर्मस्य साक्षिणम्। ॐ यमायत्वेतिदध्यङ्ङाथर्वण ऋषिर्यजुश्छन्दो धर्म राजोदेवता तुलादान कर्मणि सुवर्णप्रतिमायां धर्मराजावाहने विनियोगः—ॐ यमायत्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्मः पित्रे। इत्यावाह्य एतन्तेति प्रतिष्ठाप्य। ॐ भूर्भुवः स्वः। धर्मराज इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव। ॐ धर्म राजायनमः, इति मंत्रेण धर्मराजं सम्पूज्य। ततः षोडशारयंत्रस्य पूर्वादिदिक्षु, दशदिक् पालानां पूजनं पूर्वोक्तेन ग्रहयागोक्तेनविधिनाकुर्यात् वा पूर्वे–ॐ इन्द्रायनमः इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि इति गंधाक्षताभिः सम्पूज्य, आग्नेये—ॐ अग्नयेनमः, दक्षिणे–ॐ यमायनमः, नैर्ऋत्ये–ॐ निर्ऋतयेनमः, पश्चिमे–ॐ वरुणायनमः, वायव्ये—ॐ वायवेनमः, उत्तरे–ॐ कुबेरायनमः ईशाने ॐ ईशायनमः इति सम्पूज्य वल्युक्त प्रकारेण सर्वेभ्योवलीर्दत्वा षोडशार यंत्रमध्ये पृथ्वीमावाहयेत्–आगच्छ सर्वकल्याणि वसुधे लोकधारिणि तुलाधः स्थापयामित्वां सशैल वनकानने॥ ॐ स्योना पृथ्वीति मेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दः पृथ्वीदेवता तुलादाने पृथिव्यावाहनेस्थापनेच विनियोगः–ॐस्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छानः शर्म्मसप्रथाः। एतन्तेति प्रतिष्ठा ॐ भू० पृथिवि इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठिता वरदाभव। ॐ पृथिव्यै नमः, इति सम्पूज्य, तत यज्ञवृक्षोद्भवं तुलास्तंभं फलकं च तत्रानीय पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य। तुलास्तंभ स्थापनार्थं गर्त्तं कुर्यात्—ॐ अनन्तायनमः, ॐ कूर्मायनमः ॐ पृथिव्यैनमः, इति षोडशारे मध्ये सम्पूज्य, तत्रगर्त्तंकृत्वा तुलास्तंभ मारोपयित्वा दृढं कुर्यात्। तत फलक स्यकोणौ च तुश्चतुरंगुलीत्यक्त्वा कोणयोर्मुंजादिरशनां शिक्यां वध्वा दक्षिणे

त्तर तंचं फलकं स्तंभोपरि निदध्यात् । ततस्तुलापूजनं कुर्यात्— ॐ तुलायैनमः, इति मंत्रेण तुलांपंचोपचारादिभिः सम्पूज्य, रक्त पीतादिवस्त्रेणतुलां समाच्छाद्य, ततस्तुलायां दक्षिणकोणमारभ्यो त्तर वृध्या, ईशादि चतुर्विंशति, पूर्वपूजिताः प्रतिमाः सूत्रेष्वालं-ब्य, वक्ष्यमाण नाममंत्रैः आवाह्य प्रतिष्ठाप्य पूजयेत् । ततस्त्रि सूत्र्यां प्रतिमांबध्वा, दक्षिणकेणे तुलाफलकोपर्यालंब्य, तत्र, ॐ ईशायनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि एवं क्रमेण, ॐ शशिने नमः ।२। ॐ मारुतायनमः ।३। ॐ रुद्रायनमः ।४। ॐ सूर्यायनमः ।५। ॐ विश्वकर्मणेनमः ।६। ॐ गुरवेनमः ।७। ॐ अङ्गिरोऽग्निभ्यांनमः ।८। ॐ प्रजापतयेनमः ।९। ॐ विश्वे भ्योदेवेभ्योनमः ।१०। ॐ जगद्विधात्रेनमः ।११। ॐ पर्जन्यशं भुभ्यांनमः ।१२। तत उत्तरफलकभागे—ॐ पितृदेवताभ्योनमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।१३। एवं सर्वत्र–ॐ सोमाय नमः ।१४। ॐ धर्मायनमः ।१५। ॐ अमरराजायनमः ।१६। ॐ अश्विभ्यांनमः ।१७। ॐ जलेशायनमः ।१८। ॐ मित्रा वरु-णाभ्यांनमः ।१९। ॐ मरुद्गणेभ्योनमः ।२०। ॐ धनेशायनमः ।२१। ॐ गन्धर्वायनमः ।२२। ॐ जलेशायनमः ।२३। ॐ विष्णवे नमः ।२४। इतिस्थापयित्वा । इतिनाममंत्रैः पंचोपचारादिभिः सम्पूज्य, तत स्तुला मध्य शृंखलायां पूर्ववत्सूत्रे सुवर्णप्रतिमां बध्वा, ॐ वासुकयेनमः, वासुकिमावाहयामिस्थापयामि । तत स्तंभमूले ॐ अनन्तायनमः आ० स्था० पू० । तदुपरि–ॐ भूम्य धिपतयेनमः, आ० स्था० पू० शृङ्खलासु–ॐ सर्पेभ्योनमः, आ० स्था० पू० । ॐ तुलास्थ देवेभ्योनमः, इति पाद्यगन्धधूपदीपादि भिः सम्पूज्य, ततो नूतनशुक्लाम्बर धरो यजमानः हस्ते पुष्पां-जलिंधृत्वा, वारत्रयं तुलांपरिक्रम्य वक्ष्यमाण मंत्रैरामंत्रयेत् । ॐ नमस्ते सर्वदेवानां शक्तिस्त्वं सत्यमाश्रिता । साक्षीभूता जगद्धात्री निर्मिता परमेष्ठिना । एकतः सर्वसत्यानि तथानृत-शतानिच । धर्माधर्मकृतां मध्येस्थापितासि जगद्धिते । त्वंतुले

सर्वभूतानांप्रमाणमिहकीर्तिता। मांतोलयन्तीसंसाराद्उद्धरस्व नमो
स्तुते । योऽसौतत्त्वाधिपोदेवःपुरुषःपंचविंशकः। सएषोऽधिष्ठितो
देवित्वयितस्मान्नमोस्तुते। इतिपुष्पाक्षतैःतुलांसंप्रार्थ्य,एवंतुलापुरुषं
गोविन्दंप्रार्थयेत—ॐ नमोनमस्तेगोविन्द तुलापुरुषसंज्ञक। त्वं-
हरेतारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात। इत्यक्षतपुष्पाणि, तुला-
स्थगोविन्दोपर्यवकीर्य, पुनःप्रदक्षिणा चतुष्टयंगोविन्दस्यकृत्वा,
ततः—शुद्धनूतनवासांसिपरिधाय, दक्षिणहस्तेलोहशस्त्रंगृहीत्वा
क्रोडे*स्वेष्टदेवमादाय पूर्वाभिमुखस्तुलाया उत्तरभागेवस्त्रास्तृते
गृहीतकुसुमांजलिः सूत्रेणगोमयादिना वातुलायामवलंबितायाः
गोविन्दप्रतिमायाः मुखंपश्यन्सावधानतयाआसीत। ततस्तुला
यादक्षिणभागे समादधिकंतोलनीयद्रव्यं, सुवर्णं,रजितंताम्रलौहं
वाघृतमन्नादिद्रव्यं यथावित्तंआचार्यादिः स्थापयेत। अल्पमृत्यु-
निवारणार्थं, वापुष्टिकामेयजमानेभूमिसंस्थं, यावतादक्षिणपिटकं-
भवति तावद्द्रव्यंस्थापयेत। ततोयजमानः क्षणमात्रंतुलायांस्थि-
त्वा, पुष्पाक्षतहस्तःमन्त्रंपठेत। ॐ नमस्तेसर्वभूतानां साक्षिभू
तेसनातनी। पितामहेनदेवित्वं निर्मिताविश्वयोनिना। त्वयाधृतं
जगत्सर्वं सहस्थावरजङ्गमैः। सर्वभूतात्मभूतेशे नमस्तेविश्वधा-
रिणि। इतिसंप्रार्थ्य, अवतीर्यच, तोलितद्रव्यं गंधाक्षतादिभिः
सम्पूज्य, वस्त्रेणाछाद्य,—संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ-
संकीर्त्य, अमुकोऽहंमम (अस्यबालकस्यवा) क्रूरग्रहजनित सर्वा
रिष्टनिवृत्तिपूर्वकदीर्घायुष्यप्राप्तिकामनया, श्रीपरमेश्वरप्रीतये
आत्मसमतोलितमिदममुकद्रव्यममुकदैवतं, अमुकशर्मणेब्राह्मणाय
आचार्याय अन्येभ्योब्राह्मणेभ्यो वायथांशेनविभज्यदास्ये, इति
द्रव्योपरिक्षिप्त्वा, प्रतिष्ठार्थंसुवर्णं यथावित्तद्रव्यंहस्तेनिधाय—
अद्येत्यादिअमुकोऽहंमम (अस्यशिशोरितिवा) अमुकद्रव्यतुलादान

टि॰ उक्तंचविष्णुधर्मोत्तरे—तत्रारुह्यसवस्त्रास्त्रः पुष्पालङ्कारभूषितः। अभी-
ष्टांदेवतांगृह्यस्नापयित्वाघृतादिभिः॥ इतिप्रमाणान्तरात्र सूर्यधर्मराजयोर्ग्रहणमि-
तिबोध्यम्॥

कर्मणः सांगफलाप्तये, इदंकर्षमितंसुवर्णं, रजितादिद्रव्यंवा, अमुकशर्मणेआचार्यायदानप्रतिष्ठांसम्प्रददे, तथान्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थमिमांभूयसीदक्षिणांनानानामगोत्रेभ्योविभज्यदास्ये, तथा—तुलादानकर्मणः साङ्गफलप्राप्त्यर्थं यथासंख्यकान्ब्राह्मणान्भोजयिष्ये,॥ ततःपुष्पाक्षतहस्तः—ॐ यान्तुदेवगणाःसर्वे० इति देवान्विसृज्य, आचार्यायप्रतिमादत्वा घृतछायापद्धत्यनुसारेण घृतेछायांदृष्ट्वापरिधेय वस्त्राणित्यक्त्वा, हरिद्रोद्वर्त्तनादिभिः स्नानंकृत्वा अभिषेकादिमन्त्राशिषंगृहीत्वा, तुलाद्रव्यंतदैवब्राह्मणेभ्योविभज्यदद्यात्, नचिरंरक्षयेत् ।

इतितुलादानपद्धतिः ।

अथ ग्रहाणां दान पद्धतिः

अथ सूर्यादिवारेषु ग्रहदोषो पशांतयेवाकेवलंपुण्यवृद्धये दानानि । तत्रादौग्रहाणांमणिदानम् ॥ माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि गारुत्मकं पुष्पक वज्रनीलम् ॥ गोमेदवैडूर्य्यकमरकताः स्यूरत्नान्यथोज्ञस्यमुदेसुवर्णम् । दद्यादितिशेषः ॥ अथमहामूल्य रत्नदानेयस्य सामर्थ्याभावस्तदर्थं मल्पमूल्यानिरत्नान्युक्तानि । देयंतुष्ट्यैविद्रुमंभौमभान्वोरूप्यंशुक्रेन्द्वोरचहेमंगुरोश्च ॥ मुक्तासूरेर्लोहमर्कात्मजस्यलाजावर्त्तः कीर्तितः शेषयोश्चेति । अथ प्रत्येक ग्रहस्य पृथग्द्रव्यदानानि ॥ ग्रहदानकर्म वक्ष्ये सर्वसिद्धिकरंपरम् । सर्वं शांतिकरं नृणांसर्वपापप्रणाशनम् । आदौसूर्य्यस्य॥ कौसुंभवस्त्रंगुडहेमताम्रंमाणिक्यगोधूम सुवर्णपद्मम् ॥ सवत्सगोदानमिति प्रणीतं सूर्यस्यतुष्ट्यैसुमसूरिकाच ॥ द्रव्यंसम्पूज्य ब्राह्मणंच सम्पूज्य ॥ यथा कामंसंकल्प्य दद्यादितिसर्वत्रबोध्यं ॥ अथदान वाक्यम् ॥ दिवाकरः पद्मसंस्थः पद्मभृत्प्राणिबोधनः ॥ दानेनानेनसंतुष्टोजायतांमेकिरीटभृत ॥ चन्द्रस्य ॥ घृतकलशंसित वस्त्रं

दधिशंखंमौक्तिकं सुवर्णंच ॥ रजतं चतण्डुलान्नंतुष्टयैदद्याद्विधोः क्षीरम् ॥ दानवाक्यम् ॥ अमृतांशुःप्राणिजीवीकिरीटीवरदःशशी ॥ दानेनानेनभवतुप्रसन्नोवरदोमम ॥ भौमस्य ॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषंसताम्रंकरवीरपुष्पम् ॥ आरक्तवस्त्रंगुडहेमधेनुं दद्याद्विधिज्ञेहिकुजस्यतुष्ट्यै ॥ दानवाक्यम् ॥ चतुर्भुजोमेपगतः शूलीरक्तांबरः कुजः ॥ तुष्टोभूयात्स दास्माकन्दानस्यास्यप्रभावतः ॥ बुधस्य नीलंवस्त्रंमुद्गदानं बुधाय रत्नंपाचींदासिकाहेमसर्पिः ॥ कांस्यंदंतं कुञ्जरस्याथमेपोरौप्यंसस्यं पुष्पजात्यादिकश्च ॥ दानवाक्यम् ॥ चतुर्भुजः पीतवपुः किरीटीचर्मासिभृद्दंडधरश्चहारी ॥ पीताम्बरः सोमसुतोबुधस्तुदानेनशांतिममसंप्रयच्छतु ॥ गुरोः ॥ अश्वःसुवर्णं शुभपीतवस्त्रंसपीतधान्यंलवणंसपुष्पं ॥ सशर्करंरजनीभिश्चयुक्तं दानायचोक्तंसुरारा जमंत्रिणः ॥ दानावक्यम् ॥ किरीटीपीतवदनः पीतवासाश्चतुर्भुजः दानेनानेनसंतुष्टो भूयाद्देवपतिर्गुरुः ॥ शुक्रस्य—चित्रवस्त्रमपिदानवार्चितप्रीतयेमुनिवरैः प्रणोदितम् । तंडुलंघृतसुवर्णरूप्यकं, वज्रकंपरिमलोहिम्नीहयः ॥ दानवाक्यम्— दैत्यमन्त्रीचतुर्बाहुःकिरीटीशान्तिदःसदा। दानेनभूयान्मन्त्रज्ञोभार्गवः कविनायकः। शनेः–नीलकंमहिषीवस्त्रं कृष्णलोहंपयस्विनीम् तैलमाषकुलित्थाश्च,देयाः सौरिमुदेसदा । दा०वा०—नीलद्युतिः शूलधरः, किरीटीगृध्रसंस्थितः । दानेनवरदोभूयाद्दानेनग्रहनायकः। राहोः—राहोर्दानम् कृष्णमेषोगोमेदंलोहकंबलम् । सुवर्णनागरूप्यंच सतिलंताम्रभाजनम् । दा०वा० । अर्द्धकायोनीलवपुश्चन्द्रादित्यविमर्दनः । दानेनानेनवरदोभूयाच्चयैधरस्तमः ।।केतोः।। केतोर्वैडूर्यममलंतैलंमृगमदस्तथा । ऊर्णातिलैस्तुसंयुक्तंदद्यात्सर्वार्थसिध्दये । दानवाक्यमधूम्रवर्णोरौप्यवक्रोगृध्रस्थस्तारकाग्रहः । प्रसन्नोवरदोभूयाद्दानेनममसर्वदा । अथान्यच्चवारेषुदानद्रव्यम् । भानुस्ताम्बूलदानादपहरति नृणांवैकृतंवासरोत्थंसोमः श्रीखण्डदानादवनिसुतभवोरक्तपुष्पप्रदानात् । सौम्यःशक्रस्यमन्त्रीघृतदधिपयसोभार्गवः शुभ्रवस्त्रात्तैलाल्लोहाच्च सौरिस्तिलरजत

सुवर्णैश्चैवसर्वेग्रहेन्द्राः ॥ ग्रहान्स्वर्णमयान्कृत्वा योविप्रेभ्यःप्रयच्छति तद्दिनेषु यथाशक्त्या सर्वान्कामान् सविन्दति । ॥ इति ॥

——o——

अथ कर्मकाण्ड रत्नाकरस्य चतुर्थः शान्ति खण्डः प्रारभ्यते,,

ह्रीं कारस्पां श्रीं शक्तीं, प्रणम्य भुवनेश्वरीम्,,
शान्तिखण्डं विवक्ष्येहं, सर्व दोषप्रशांतये,,

श्रीगणेशायनमः,, अथ च प्रथम रजोदर्शने निषिद्धमासादौ सति गर्भाधानस्य शान्ति पूर्वकमनुष्ठेयत्वात् शान्ति वक्तु तत्र दुष्टमासाद्यभिधीयते । उक्तं च **मुहूर्त्त चिन्तामणौ—** भद्रा निद्रा संक्रमे दर्श रिक्ता संध्याषष्ठी द्वादशी वैधृतीषु रोगेष्टम्या चन्द्रसूर्योपरागे पाते चाद्य नो रजोदर्शन शत । आद्य रज शुभंमाघे मार्गराधेय फाल्गुने ॥ ज्येष्ठ श्रावणयो शुक्ले सद्वारे सत्तनौदिवा ॥ **अशुभ मासा**—चैत्र ज्येष्ठाषाढ भाद्रपौषा अशुभा । आश्विनोर्जौमध्यमौ । शेषा शुभावहा । शुक्लपक्ष शुभ कृष्णोऽशुभ ,, तिथिषु ।१। ।४। ।६। ।८। ।९। ।१२। ।१४। ।१५। ।३०। एता अशुभा । नक्षत्रेषु ।२। ।३। ।६। ।९। ।१०। ।११। ।१२। ।१८। ।२०। २।५। अशुभान्यन्यानि शुभानि । योगेषु परिघ वैधृति व्यतीपाता अशुभा वर्जनीय म । शेषा शुभा । भद्रारहि तानि करणानिप्रशस्तानि । लग्नेषु १।२।४ दुष्टानि ।९।१०।११। मध्यमनि, अन्यानि शुभानि । दिवसस्य प्रथमोभाग शुभः । द्वितीयो मध्यम । तृतीयोनेष्ट । उभेसन्ध्येऽशुभे रात्रिरप्य शुभा । महानिशा निन्दिता । भर्तुर्भग्नीयश्च चतुर्थोऽष्टम द्वादशस्थश्चन्द्रोनेष्ट । मरणाशौचमशुभम् ॥ **रजो दर्शनसमयेपरिधान वस्त्र फलम्**—जीर्ण कृष्ण नील रक्त परिहितवस्त्र तदशुभानि । **शान्तिमाह नारद**—निषिद्धे तिथिवारेषु य पुष्प प्रदृश्यते तत्र शान्ति प्रकर्त्तव्या घृतदूर्वा तिलाक्षतैः । प्रत्येक मष्टशतं गायत्र्या जुहुयात्तत । स्वर्णगोभू तिलान्दद्यात्सर्वदोषापनुत्तये । शेष प्रयोगे स्पष्टम् ॥

इति दुष्टरजो दर्शन शान्ति परिभाषा ॥

—○•○—

अथ-प्रथम दुष्टरजो दर्शनशान्ति पद्धतिः ।

अथ च पूर्वोक्त दुष्टरजोदर्शन दिवसाच्चतुर्थे ऽहनि सायंकाले गोमयेनोपलिप्तायां भूमौयवैरष्ट दलंकमलं विरच्य ॥ तदुपरि

कलशस्थापन विधिना कलशं संस्थाप्य संपूज्य च। तत्रवधूमाना-
य्यतज्जलेनादौ पूर्वोक्त पूजाखण्डोक्ताभिषेकमंत्रैर्देवस्यत्वेति,
सुरास्त्वामभिषिंचन्त्वित्यादिभिर्वा द्यौः शान्तिरित्यादिभि मंत्रै
ब्राह्मणद्वाराऽभिषेकपूर्वकं सुखोष्णोदकेन तां वधूं स्नापयित्वा
शुद्धे वाससीपरिधाय, तद्द्वितीयदिवसे वाचन्द्रतारानुकूले दिवसे
भर्त्ता प्रातरभ्यङ्ग पूर्वकंस्नात्वा, शुभासने उपविश्य, पत्नींदक्षिण
तउपवेश्य च रजोदर्शनात्पूर्वंगमनेकृते कृच्छ्रादिप्रायश्चित्तंकुर्यात
स्ववित्तानुसारं द्रव्यं ताम्रपात्रे तिलोपरि स्थापयित्वा द्रव्यं
ब्राह्मणांच पूजित्वा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकी-
र्त्यामुकराशिरमुकोऽहं सपत्निको यन्मयास्यांभार्यायां रजोदर्शना
त्पूर्वं वृथागमनं कृतं तद्दोष परिहारार्थ मिदं तिल सुवर्ण कृच्छ्र
प्रत्याम्नायी भूतं रजतंवाऽमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे
तत्सनमम। इति कृच्छ्रं विधाय। आचम्यपञ्चांग पूजासामग्रीं
सम्पाद्यार्घं संस्थाप्य स्वस्तिवाचनं पठित्वा गणेशादि पञ्चाङ्ग
पूजनं कुर्यात्—तत्रसंकल्पः—अद्येत्यादि सं० अमुकराशिरमुकोऽहं
ममास्याः भार्यायाः निंद्यमासतिथि नक्षत्र वासरेषु जात प्रथम
रजोदर्शन दोषशान्त्यर्थं करिष्य माणे शान्ति कर्मणि, गर्भाधाना
ख्य संस्कारकर्मणिच निर्विघ्नता सिद्धयें श्रीभगवतो गणेश्वरस्य
पूजनं कलशस्थापनपूजनं पुण्याह वाचनं मातृकापूजनं नान्दी
श्राद्धं वसोर्धारा निपातनादि ग्रहपूजनं रक्षाविधानं च करिष्ये।
इति पूर्वोल्लिखित पद्धत्यनुसारेण पंचाङ्ग पूजांविधाय। होमार्थं
वेदिकांनिर्माय संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं
ममास्याः पत्न्याः मासर्क्ष तिथिवार योगकरण मुहूर्त्त कुस समय
दुर्वस्त्रादिषु यत्रकुत्रचिद्दुष्टे जात प्रथम रजोदर्शन सूचितारिष्ट
निर्वृत्ति द्वारा तथाच प्रतिगर्भं संस्कारातिशयद्वारा, अस्यांजनि-
ष्यमाण सर्वगर्भाणां बीजगर्भसमुद्भवैनोनिबर्हणद्वाराश्रीपरमेश्वर.
प्रीत्यर्थं यथाशास्त्रोक्त प्रकारेण शान्तिं करिष्ये॥ ततो होमवेद्यां
पंचभूसंस्कार पूर्वकमग्निं संस्थाप्य। आचार्यं ब्राह्मणं सम्पूज्य

वरणद्रव्यं हस्तेनिधाय संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि, अमुकोऽहं एभिर्गन्धाक्षत पुष्प पूगीफल वासोभिः, दुष्टरजोदर्शन शान्ति कर्मणि, आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे इति तस्मैदत्वा । ॐ आचार्य स्त्विति प्रार्थयेत् ॥ ततो ब्रह्माणं सम्पूज्य । संकल्पः–अद्येत्यादि० अमुकोहं एभिर्वरणद्रव्यै दुष्टरजोदर्शन शान्ति कर्मणि, अमुक शर्माणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे । इतिवृत्वा—ॐ यथा चतुर्मुखो ब्रह्मेत्यादिना प्रार्थयेत् । ततो रुद्रीपाठार्थं, चण्डीपाठार्थं, होमार्थं च, ऋत्विजःपाठकांश्च वृणुयात्—ततः सुवर्णप्रतिमां अग्न्युत्तारण पूर्वकं पंचामृतेन संस्नाप्य । होमवेदी शाने कलशं संस्थाप्य सम्पूज्य च तत्र प्रतिमां संस्थाप्य गायत्री स्वरूपिणीं भुवनेश्वरी मावाहयेत् । ॐ उद्यद्युति मिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्तां स्मेरमुखीं वरदाङ्कुपाशा भीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् । वा गायत्री मंत्रेणावाह्य, ॐ भुवनेश्वर्यैनमः, इति मंत्रेणसम्पूज्य । ततो भुवनेश्वरी त उत्तरस्यां पुनः कलशं संस्थाप्य, तत्र गणेशादि नव ग्रह देवानावाह्य सम्पूज्यच रक्षोघ्नसूक्तेन रक्षासूत्रमभिमंत्र्य तत्रैव कलशेस्थापयेत् । ततआचार्यो ब्रह्मोपवेशनादि पर्युक्षणांतं कुशकंडिकाविधिं कृत्वा । एतन्तेति मंत्रेण तारण वरदनामाग्निं प्रतिष्ठाप्य ॐ चत्वारि शृंगा० पठित्वा, ॐ अग्नेनय० । इति मंत्रेणवा, ॐ तारणवरद नामाग्नयेनमः, इत्यनेनच नीराजनान्त मग्निं सम्पूज्य रेग्वा जिह्वाश्चपूजयेत् ॥ ततो यजमानो देवता भिध्यानपूर्वकं द्रव्यत्यागं कुर्यात् । संकल्पः–अद्यामुकोह मादौ रजोदर्शन शान्तिकर्मणायक्ष्ये–तत्र प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, आज्येन, सवितृरूपांभुवनेश्वरीं आज्येनाज्याभिघारित दूर्वातिल यव द्रव्यैश्च, अग्निं, वरुणंसवितारं विष्णुंविश्वान्देवान्मरुतः स्वर्कान्, वरुणं, प्रजापतिं, अग्निंवैश्वानरं चाज्येनाहंयक्ष्ये । इद माज्यमाघाराज्य भागदेवताभ्यः प्रजापतये, अग्नयेच मयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तु- ॐ तत्सन्नमम । एवं यजमानेन द्रव्यत्यागे कृते । आचार्यः ब्रह्मान्वारब्धः कुर्यात् । ततः संस्रवधारणार्थं

प्रोक्षणीपात्रं प्रणीताग्न्योरंतरालेनिदध्यात् ॥ ॐ प्रजापतयेस्वाहा इदं०,इतिमनसाप्रजापतिंध्यात्वा।ॐइन्द्रायस्वाहा,इदं० ॐअग्नये स्वाहा,इदं०ॐसोमाय स्वाहा । इदंइत्याघारावाज्यभागो चहुत्वा प्रधानहोमं कुर्यात् (संस्कारको स्तुभेतु सवितृत्वेनभुवनेश्वर्याएव पूजनंचोक्तम् अतोगायत्र्याजुहुयात्)ॐगायत्रीमंत्रस्यविश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सवितादेवता आज्यदूर्वादियवतिल होमेवि- नियोगः ॐ भू० तत्सवि० स्वाहा । इत्याज्यदूर्वातिल यवादिभिः १०८ आहुतिप्रधानहोमंकृत्वा ब्रह्मणा ऽन्वारब्धः आज्यादिभिः स्विष्टकृतंहुत्वा भूरादिभ्याहुति होमं सर्वप्रायश्चित्त होमं च कुर्यात् । ततः संस्रवंप्राश्य पवित्राभ्यां मुखसंमार्ज्याग्नौ पवित्रे क्षिप्त्वा प्रणीताविमोकंकुर्यात् । ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् अद्येत्यादि अमुकोहं कृतस्य दुष्टरजोदर्शन शान्तिहोमकर्मणः सत्पुण्यार्थं। अपूर्णपूर्णतासिद्ध्ये ससुवर्णं सदक्षिणंचेदं पूर्णपात्रं ब्रह्मणेतुभ्यं संप्रददे । ॐ अकन्कर्म० इतिपठेत् ॐ तनूपा अग्ने रित्यादिभि रङ्गान्यालभेत ततः पूर्णाहुतिंजुहुयात् ततस्त्र्यायुषं कुर्यात् । ततः सपत्निकोयजमानो गोदानंकुर्यात् । अशक्तश्चे त्तिलपात्रादि दा- नार्थं संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं ममास्याभा- र्यायाः दुष्टरजोदर्शन सूचितारिष्ठनिवृत्तिपुरः सरंसकलसौभा- ग्य प्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतयेभुवनेश्वरी शान्तिकर्मणः सांगता सिद्ध्ये, इदं ससुवर्णं सदक्षिणं गोप्रत्याम्नायी भूतंद्रव्यं, आचा- र्याय तुभ्यंसंप्रददे एवं नवावृत्ति चंडीपाठस्य रुद्रीपाठस्य होतु श्चदक्षिणां तत्तदाचार्येभ्योदद्यात् । ततः क्षेत्रपालाय बलिंदत्वा अग्निंसम्पूज्य विसृज्य च ततः आचार्यादयः कलशजलेन यजमा- नमभिषिंचेयुः । तिलकं कृत्वा रक्षासूत्रंबध्वा घृतच्छायादर्शनं कारयित्वा तद्दानं च विधाय ब्राह्मणान्भोजयेत् तस्यामेवरात्रौ गर्भाधान संस्कारंकुर्यात् । ॥ इति दुष्टरजोदर्शनशान्तिः ।

अथ संस्कार्य मातृरजोदर्शने श्री शान्ति परिभाषा—

उक्तं च मुहूर्त्त चिन्तामणौ—ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत्—**उक्तं च प्रयोगसारे**—यस्यमाङ्गलिकं कार्यं तस्यमाता रजस्वला । वैधव्यं जायते तत्र शुनायां. पाणिपीडने । **ज्योतिर्निबंधे गर्गः** — विवाहोत्सव यज्ञेषु मातायदि रजस्वला । तदास मृत्युमाप्नोति पञ्चमंदिवसंविना **वसिष्ठ** —यस्यमाङ्गलिकंकार्यं तस्यमातारजस्वला । अद्भुतं [illegible] । **तत्रैव बृहस्पति** —प्रारब्धमभ्युदय श्राद्धं पुत्रसंस्कारकर्मणि । पत्नीरजस्वलाचे स्यान्कुर्यात्तदितातस । **माधवीये**—प्रारम्भोत्तरंरजोदर्शने न कर्मनिषेध इत्यर्थः ॥ प्रारंभश्च नान्दीश्राद्धम् ॥ **मेधातिथि** —प्रारंभोवरणंयज्ञे सङ्कल्पोव्रत सत्रयोः । नान्दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धेपाकपरिक्रिया ॥ **मुहूर्त्त चिन्तामणौ**—नान्दीश्राद्धोत्तर मातु पुष्पे लग्नान्तरेनहि । शान्त्याचौल व्रतं पाणिग्रह कार्यं मथानसत् ॥ **बृहस्पति** —वैधव्यच विवाहस्याज्जटत्वं मनवबन । चूडायां च शिशोर्मृत्यु विघ्नंयात्रा प्रवेशयोः । **वाक्यसारे तु**—अलाभे सुमुहूर्त्तस्य रजोदोषे ह्युपस्थिते । श्रियंसंपूज्य विधिवत्ततो मङ्गलमाचरेत् ॥ हेमींनघनिता [illegible] श्रीसूक्तविधिनार्चयेत् प्रत्यृच पायस हुत्वाभिषिच्याहितमाचरेत् । **संग्रहे तु प्रकारान्तर मुक्तम्**—संकटे समनुप्राप्ते सूतके समुपागते ॥ कूष्माण्डीभिर्घृतं हुत्वा गां च दद्यात्पयस्विनीम् । चौलोपनयनोद्वाह प्रतिष्ठादिकमाचरेत् । इति

—:◌:•:◌:—

॥ अथसंस्कार्यमातृरजोदर्शनश्रीशान्तिपद्धतिः ॥

अथसंस्कार्यस्यच सुतस्यकन्यायावा चूडोपनयन विवाहादिषु, मातुर्नान्दीश्राध्दोत्तरं रजोदर्शनंजातंचेत्तदा संस्कार्ययोः पिता संस्कारकर्त्तावा, शुचौदेशेगणेशंसम्पूज्य, कलशस्थापनविधिना कलशंसंस्थाप्य, सम्पूज्यच तत्रकलशे पूर्णपात्रोपरि ताम्रादिपात्रं स्थापयित्वा, तत्रमापमितांसुवर्णप्रतिमांश्रीस्वरूपिणीमग्न्युत्तारण पूर्विकांसंस्थाप्य, संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहं ममास्यामुकस्य वीजगर्भसमुद्भवैनो निवर्हणद्वाराकरिष्यमाण चूडोपनयनपाणिग्रहणादिकर्मसु (वाकन्यायाःकरिष्यमाण विवाहकर्मणि) संस्कार्यस्यमातुर्नान्दीश्राध्दोत्तरंरजोदोषसं जातस्यतत्तद्दोषोपशान्त्यर्थं, शुभफलप्राप्तयेन. । श्रीशान्तिकर्मणिसुवर्णप्रतिमायांश्रीपूजनं श्रीसूक्तस्यनथावृत्तिपाठपूर्वकं सप्त-

शतीपाठंचाहं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये तच्छान्त्यर्थं पायसेनहोमं कारयित्वा गोदानंचकरिष्ये। ततआचार्यंवृत्वा पाठकांश्चवृणुयात्—ततः—ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीमितिऋग्वेदोक्तश्रीसूक्तेन षोडशोपचारैःश्रियंसम्पूज्य, श्रीसूक्तस्य नवावृत्तिपाठंकृत्वा सप्तशतीपाठंकुर्यात्–ततःपाठावसाने, हस्तपरिमितंस्थंडिलंहोमार्थंनिर्माय होमपद्धत्युक्तप्रकारेण समिदाधानान्तंकर्मकृत्वा। ॐ वरदाग्नयेनमः इतिमन्त्रेणवरदाग्निंसम्पूज्य। आघारावाज्यभागौहुत्वा, चरुणापायसेन श्रीसूक्तस्यप्रत्यृचेन नवार्णवमन्त्रेणाष्टोत्तरशताहुतीर्हुत्वा भूरादिनवाहुतिहोमं पूर्णाहुत्यन्तंकृत्वा। ततःपूर्वोक्तप्रकारेण कुमारीपूजांकृत्वाभोजयित्वा ताभ्योदक्षिणांचदत्वा। गोदानपद्धत्युक्तप्रकारेण तद्दोषशान्त्यर्थं गोदानंकुर्यात् ॥ ततआचार्यपाठकेभ्योदक्षिणांदत्वा। ततआचार्यउत्तराङ्गपूजनंविधाय कलशजलेनसंस्कार्यं श्रीसूक्तेनाभिषिंच्य पूर्वोक्ताभिषेक मन्त्रैरपिषिंचेत्। ततस्तिलकारोपणादिकं कृत्वाशीर्दद्यात् ततोब्राह्मणान्भोजयेत्। इतिश्रीशान्तिपध्दतिः॥

कन्या रजोदर्शन शांतिपरिभाषा।

अथ पितृगृहे विवाहात्पूर्वमेव कन्यारजस्वला चेत्तन्निर्णय शान्तिश्चवक्ष्ये, उक्तं च संस्कार कौस्तुभे मदन रत्ने—वशिष्ठ—यदि कन्या पितृगृहे रजस्वला भवेद्धूरचे(?) वृषलीमतातुमा। मातापिताज्येष्ठ सहोदरश्च प्रजन्तिनीर नरकत्रयोऽपि। य उद्वहेन्तां वृषलीमति स्यात् अपांक्तेयो न च यस्त्वन्यो। अतो न कन्योद्वहने विलम्ब कार्योनिशा दशवर्षेतोऽत्र। प्रतीक्ष्यवर्षत्रयम प्रदत्ताराजस्वलासाप्रवरोतुलम्। कन्या रजोदोषे शान्तिः—कन्यामृतुमतीं दृष्ट्वा कृत्वानिष्कृतिमात्मन शुद्धिंचकारयित्वा तामुद्वह दनुरागयतो। निमज्जन् चतुर्थ्या तु गणयेद्यदि निशुतो। दानाविग्रह यदा स्पोलयेज्जनोक्तीम्। यथा तत्तुत्याया मा शक्र कन्यापिताग्रदि। दत्त यैत्रानिनि रवेनदत्त तस्यायथाविधि। [illegible] मतिनि स्व सदक्षिणम् ॥ कन्यापितातुर्वंवेषु वराय प्रति पादयेत्। ज्योत्स्न्याधि [illegible] कन्यराज्ञीपीता गर्भाय। प्रदद्याननेमेरवातवस्त्रागैस्तभूषणाम्। तामुद्वहवरगाति कृष्णाद्वेनुदुयादिश। यज्ञपार्श्वः—विवाहे वितते तन्त्रे होतकालउपस्थिते। कन्यामृतुमतीं दृष्ट्वा कथं कुर्वन्ति याज्ञिका स्नापयित्वा

हुताकन्या मर्वयित्वायथाविधि युंजानामाहुतिं हुत्वा तनः संप्रवर्त्तयेत् । बौधायनसूत्रे—अथ यदि कन्यो स्यद्यानावोह्यमानायां रजस्वलास्यात्तामनुमन्त्रयेत् पुमांसौ मित्रावरुणा पुमांसावश्विन वुभौ । पुमानिन्द्रश्चसूर्यश्च पुमा सन्द्धाविति । अथ द्वादशागनलंकृत्या प्राशयत्वच गव्यमथशुद्धाकृत्वा विवहेत् । अथ च वराह पुराणात्कात्यायन विधानेन पितृगेहे कन्याया रजोदर्शनशांतिरित्थं सूत्रित— अत्र देवता गणेशसिद्धि बुद्धीन्द्रेन्द्राणी विष्णुश्रिय आसांप्रतिमाः सम्पूज्य । अग्निं संस्थाप्य आज्यभागान्ते गणानान्त्वेतिगणेशं, अम्बे अम्बिके, इति सिद्धिबुद्धि च इन्द्रदेवा, इति इन्द्रेन्द्राण्यौ । इदं विष्णु रिति विष्णुं, श्रीश्चते इतिश्रियम् । सम्पूज्य एभिरेव मन्त्रैरष्ट विंशति सङ्ख्यया प्रत्येकं जुहुयात् । तथैव ग्रहाणां मन्त्रैरपि प्रत्येकमष्टा विंशतिसङ्ख्यया होम विधाय ततो भूरादि स्विष्टकृदन्त पूर्णाहुतिं च हुत्वोत्तरागत्वेन गणेशादीन्संपूज्य दिक्पालेभ्यो बलिदान विधाय आचार्याय गोवस्त्र हिरण्यादि प्रतिमाभि सह दद्यात् । तत आशिषं गृहीत्वा ब्राह्मणान्भोजयेत् । इति कन्यारजोदर्शने शान्ति परिभाषा ॥

—:o:—

कन्या रजोदर्शनशांति पद्धतिः

अथ च कन्या पिता कन्या विवाहात्पूर्वं विवाहसन्निधौ गृहाभ्यंतरे पूजास्थलमागत्याचम्य दीपंप्रज्वाल्य प्रधानसंकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं, ममगृहेकन्यायाः जात प्रथमरजोदर्शनसूचित समस्तप्रायश्चित्तनिवृत्त्यर्थंवराह पुराणोक्त प्रकारेण शान्तिंकरिष्ये, तदंगतयागणेशादि पंचांगदेवतानांपूजन पूर्वकं, आचार्य ब्रह्मणोर्वरणं च करिष्ये—ततोगणेशादि पूजनं विधाय हस्तपरिमितायांवेद्यां पंचभूसंस्कार पूर्वकं वरदाग्निमावाह्यसंस्थाप्यआचार्य ब्रह्मणोर्वरणं कृत्वा, होमवेदीशाने कलशस्थापन विधिना कलशं संस्थाप्य,तत्रताम्र पात्रोपरि गणेशादीनां सप्तसुवर्ण प्रतिमावारजतप्रतिमाः संस्थाप्य ॐ गणानान्त्वा० इति मंत्रेण गणेशमावाह्य, ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽअम्बालिकेनमा नयतिकश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाकाम्पीलवासिनीम् । इति सिद्धिबुद्धिम् । ॐ इन्द्रंदेवाऽआवृणानाः सुमृडीको भवतुजातवेदा इति इन्द्रेन्द्राण्यौ० । ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् । समूढमस्यपाँसुरेस्वाहा । इति विष्णुम्० । ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्च० ।

इतिश्रियं० । पंचोपचारैःसंपूज्य । वरदाग्निंच सम्पूज्य,द्रव्यत्याग संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिसंकीर्त्य स्वगृहजात कन्यारजोदर्शन शान्तिकर्मणि आघाराज्यभागावाज्येन गणेशसिद्धिबुद्धीन्द्रेन्द्राणि विष्णुश्रियः प्रत्येकमष्टाविंशति संख्ययाज्येन सूर्यादि ग्रहांश्चता-भिरेव संख्याभिःतत्तन्मंत्रैर्हुत्वा स्विष्टकृतं भूरादिनवाहुति होमा न्तेचाज्येनयक्ष्ये । इति द्रव्यत्यागंकृत्वा गणेशादीन् प्रत्येकंपूर्वोक्त मंत्रैस्तेनैवक्रमेण प्रत्येकमष्टाविंशति संख्ययाहुत्वा तथा च नवग्र-हान् तत्तन्मंत्रैःप्रत्येकमष्टाविंशति संख्यया च हुत्वा स्विष्टकृदन्ते भूरादिनवाहुति होमंविधाय संश्रव प्राशनादि पूर्णपात्रदानान्तं कर्मकृत्वा पूर्णाहुतिंहुत्वा उत्तराङ्ग पूजनंविधाय । आचार्यं संपूज्य गोदानोक्तपध्दत्या सवत्सांगां सम्पूज्य संकल्पंकुर्यात् । अद्येत्या-दि० अमुकोऽहं ममगृहे कन्यायाः प्रथमरजोदर्शनजात सकलपा-पारिष्टपरिहारार्थ वराहपुराणोक्त शान्तिकर्मणः साङ्गुण्यार्थं इमांगां वा गोप्रत्याम्नायीभूतं सुवर्णं रजतंवा आचार्यायतुभ्यं संप्रददे ३० तत्सन्नमम इतिदत्वा घृतच्छायादिकंकृत्वाभिषेक तिलकाशीर्ग्रहणं च कृत्वा ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयंभुंजीत ।

इति पितृगृहे विवाहात्पूर्व कन्यारजो दर्शनशान्तिः

अथगोमुख प्रसव शान्ति परिभाषा ।

तत्रादौवहुशान्त्यंगत्वाद् गोमुखप्रसवोभिधीयते, प्रयोग पारिजाते—गर्गः—प्रणिपत्य रविं वक्ष्ये प्रायश्चित्त मनुस्मरन् । सर्वारिष्ट विनाशाययदुक्तं ज्योतिरर्णवे ॥ पित्रारिष्टे सुतारिष्टे मातृरिष्टे तथैव च । प्रायश्चित्तंतदा कुर्यात्तद्दोषस्यशान्तये । पूषाश्विनी गुरुः सार्पं मघाचित्रेन्द्र मूलभे । एषुऋक्षेषु जातस्य कुर्याद्गो जननं तथा । (अत्र प्रायश्चित्तं मूलादि शान्तौ गोजननं कुर्या दित्यर्थः) जन्मर्क्षात्त्रिजन्मर्क्षे, शुभवारे शुभेदिने । कृत्वाभ्यंगादिकं सर्वं गृहालंकार पूर्वकम् । गोमये नोपलिप्याथ गृहस्ये शान भागके । पंकज कर्णिका युक्तं रजोभिः श्वेत वर्णकैः । मं हीं स्तत्र विनिक्षिप्य यथा वित्तानुसारतः । नव सूर्पं च तन्मध्ये रक्त वस्त्रं प्रसारयेत् । स्थापयित्वा शिशुं तत्र पुनः सूत्रेण वेष्टयेत् । प्राङ्मुखं तम थ वपादं तिल

गर्भे गत शिशुम् । गोमुखदर्शयित्वाथ पुनर्जात तु गोमुखात् (शिशुमपि गोमुख दर्शयित्वेत्यर्थ) विष्णुर्योनीतिसूक्तेन गव्येन स्नापयेच्छिशुम् (पचगव्येन) गवामगेषु मत्रेण ग्वामगेषु सस्पृशेत् । विष्णो श्रेष्ठेतिमन्त्रेण गोप्रसूतं तु बालकम् । आचार्यस्तु समादाय पश्चान्मात्रे ददेत्तदा । ज्योतिर्निबन्धेतु—साचार्य स्तुसमादाय पश्चान्माने ददेत्पितेतिपाठ ॥ मातांजघनभागस्था शिशुमानीय त मुखात् । (गोमुखात) तत पित्रे तु सादद्यात्ततोमात्रे सदापयेत् । वस्त्रे स्थाप्य पिताऽथाथ पुत्रस्य मुखमीक्षयेत् । गोमूत्र गोमयक्षीर दधिसर्पिश्च सयुतम् । आपोहिष्ठादिभिर्मत्रै रभिषिंचेत्तत शिशुम् । मूर्ध्निच घ्रायत पुत्र मन्त्रेण तदापिता । (अगादगात्संभवसीत्यनेन मन्त्रेण) मूर्धनि त्रिरवघ्रायत शिशु स्थापयेत्तत । पुण्याहं वाचयेदग्यां द्वब्राह्मणै वदपारगै । दरिद्रायाथ विप्राय तागामभ्यर्च्यर्दापयेत् । गोवस्त्र स्वर्ण धान्यानि दद्यादर्वा दित क्रमात् (सूर्यादिग्रहेभ्यो दद्यात्) यथाशक्ति धनदद्याद्ब्राह्मणेभ्यस्तदा पिता । ततो होम प्रकुर्वीत स्वस्व शाखोक्तमार्गत । उल्लेखनादिक कृत्वा आज्यभागान्त माचरेत् । होमस्यै शान दिग्भाग धान्योपरि घट शुभम् । पचगव्य घटे स्थाप्य तिलास्तत्र विनिक्षिपेत् । क्षीरद्रुमकषायाश्च पञ्चरत्नानि निक्षिपेत् । वस्त्रयुग्मेन सवेष्ट्य गन्धादिभि रथाचयेत् । विष्णुवरुणमभ्यर्च्य प्रतिमां च विधानत । यत इन्द्रादिभिर्मत्रै कुभस्पृश्याभिमन्त्रयेत् । (यतइन्द्रेति षड्चस्य सूक्तस्य ग्रहणम्) दधिमध्वाज्य युक्तेन होम कुर्याद्विधानत । आपो हिष्ठेति तिसृभि रग्नेमसोमइत्यथ तद्विष्णो परम पद मत्तव्या मिति सूक्त । ऋग्भिराभि प्रत्यृच चाष्टाविंशति सख्यया । अशक्तौ चाष्ट सख्य वादधिमध्वाज्य सयुतम् । आदित्यादिग्रहाणां च होम कुर्यात्समन्त्रकम् । आदित्यादि ग्रहाणां च होम दधिमध्वाज्येनेत्यन्वय अन्यथा पुर्दध्यादि ग्रहणस्य वैयर्थ्यापत्ते । इतिगर्गोक्त गोमुख प्रसव शान्ति परिभाषा ॥

—— o ——

॥ अथगोमुखप्रसवशांतिपद्धतिः ॥

अथपिताजातकस्य जन्मनक्षत्रदिवसेऽन्यस्मिन्शुभदिने नामकर्मदिनेवागृहाभ्यन्तरे गोमयोपलिप्तेशुचौदेशे स्वासनेउपविश्य-दीपंप्रज्वलय्याचम्य भूतोत्सादनादिंकृत्वा, शान्तिपाठंकृत्वा अर्घसंस्थाप्यगणेशंप्रणम्यप्रधानसंकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्यामुकोऽहममुकनक्षत्रोत्पन्नस्यामुकराशेरस्य शिशोरमुकनक्षत्रोत्पत्ति सूचितारिष्टनिरसनपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीतये गोमुख

प्रसवशान्तिंकरिष्ये, तत्पूर्वांगत्वेन गणपतिपूजनं कलशस्थापनपू-र्वकवरुणपूजांपुण्याहवाचनाभ्युदयिकमातृकापूजनंसूर्यादीनांपूज-नंचकरिष्ये , ततोगणेशादीन्सम्पूज्य, आचार्यस्यपूजनपूर्वकंवरणं-कृत्वा, ततआचार्योगोमयोपलिप्तभूमौ कर्णिकायुतंश्वेताष्टदलं कमलंविलिख्य तन्मध्येवित्तानुसारेण द्रोणादिपरिमितान्व्रीही-न्संस्थाप्य तदुपरिनवीनंशूर्पनिधाय तस्मिनरक्तवस्त्रंप्रसार्य तिल पूरितंकृत्वा तत्रैवतिलगर्भगतंशिशुं पूर्वशिरस्कंप्रत्यक्पादंकृत्वा शिशुंससूर्परक्तसूत्रेणावेष्ट्य शिशुसन्निधौपूर्वाभिमुखींगामुपस्था-प्य, गोमुखंशिशोरूपरिकृत्वागोमुखात्प्रसवं, भावयित्वाशिशुंपञ्च गव्येन, वक्ष्यमाणशतपथोक्तेनसूक्तेनस्नापयेदभ्युदेद्वा—मन्त्राः—
ॐ विष्णुर्योनिंकल्पयतु त्वष्टारूपाणिपिंशतु ॥ आसिंचतुप्रजा पतिर्धातागर्भन्दधातुते ।१। ॐ गर्भंधेहिसिनीवालिगर्भन्धेहि-पृथुष्टुके । गर्भन्तेऽअश्विनौ देवावाधत्तांपुष्करस्रजौ ।२। ॐ हिरण्ययीऽअरणीयाभ्यांनिर्मन्थतामश्विनौदेवौ । तन्तेगर्भंदधा महेदशमेमासिसूतवे ।३। इतिसूक्तेन शिशुंस्नापयित्वाऽभ्युदयवा । वक्ष्यमाणमन्त्रेणगोःसर्वाङ्गेपुस्पृशेत्—मन्त्रः—ॐ गवामंगेषुति-ष्ठन्तिभुवनानिचतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिवंमेस्यादिहलोकेपरत्रच । इतिगोरंगानिस्पृष्ट्वा । ततआचार्यःतंगोमुखप्रसूतंबालकं वक्ष्य-माणमन्त्रेणशूर्पादुत्थाप्यगोजघनभागस्थायैमात्रेदद्यात्तन्मन्त्रः-
ॐ विष्णोःश्रेष्ठेनरूपेणास्यांनार्यांगवीन्याम् ॥ पुमांसंपुत्रानाधे-हिदशमेमासिसूतवे । इतिमाताचतंबालकंहस्ताभ्यांगृहीत्वा । गोमुखपर्यन्तमानीयपित्रेदद्यात । पितातंशिशुं हस्ताभ्यांगृहीत्वा तद्देवमात्रेदद्यात् ॥ माताचतंशिशुंनूतन वस्त्रेस्थापयेत् । ततःपिता नव्यवस्त्रस्थितस्य शिशोर्मुखंपश्येत् ततआचार्योवक्ष्यमाण त्रिभि र्मंत्रैःपंचगव्येनाभिषिंचेत् । मंत्राः–ॐआपोहिष्ठेतितिसृणां सिन्धु द्वीपऋषिर्गायत्रीछन्दः आपोदेवतापंचगव्याभिषिंचने विनियोगः ॐ आपोहिष्ठामयोभुव स्तानऽऊर्जेदधातन । महेरणायचक्षसे १। ॐ योवःशिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः ।उशतीरिवमातरः ।२।

ॐ तस्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ । आपोजन यथाच नः । इत्यभिषिंच्य वक्ष्यमाण मन्त्रेण मूर्ध्नि शिशुं त्रिरवघ्राणं कुर्यात् । मंत्रः—ॐ अंगादंगात्संभवसि हृदयादधिजायसे । आत्मावै पुत्रनामासि सजीव शरदः शतम् । इति वारत्रय मवघ्राय, मात्रे दद्यात् । ततो ब्राह्मण द्वारा पुण्याह वाचनं वाचित्वा, तां गां दरिद्राय कुटुंबिने ब्राह्मणाय दद्यात्— तत्र संकल्पः—अद्येत्यादि संकीर्त्या मुकोऽहं, अमुकराशे रस्यशिशो रमुक कालोत्पत्ति सूचितारिष्ट दूरी करणार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये कृतैतद्गोमुख प्रसव शान्तिकर्मणः सांगता सिध्द्यर्थे, इमांसवत्सांगांरुद्रदैवतां अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे । इतिदत्वा गोदान प्रतिष्ठार्थं सुवर्णंच दद्यात् । ततो ग्रहाणां प्रीतये यथाशक्ति गोभूहिरण्यवासांसिदद्यात । ततआर्चो होमवदी सन्निधावागत्य, वेद्यां पचभू संस्कार पूर्वक मग्निं संस्थाप्य वेदीशाने कलश पूजोक्त विधिना कलशद्वय स्थापयेत् । तत्रैकस्मिन्कलशे ब्रह्मवरुण सहितानादित्यादि नवग्रहान्नावाह्य संपूज्य च, द्वितीयकलशे पञ्चरत्न पञ्चपल्लवान् पंचगव्यं तिलान् क्षीरवृक्ष त्वक्कषायांश्च निक्षिप्य युग्मवस्त्रेण संछाद्य पूर्णपात्रोपरि ताम्रपात्रे तिसृषुसुवर्ण प्रतिमासु, अग्न्युत्तारितासु विष्णुवरुणयक्ष्मघ्नान्स्थापयेत्पूजयेच्च । तत्रादौ विष्णुमन्त्रः—ॐ तद्विष्णोः परमं पद ँ० सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीच चक्षुराततम् । ततोवरुणम्—ॐ तत्वायामि ब्रह्मणाव्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो व्वरुणोहवोध्युरुश ँ० समानऽआयुः प्रमोषीः । ततो यक्ष्महणम्—ॐ अक्षीभ्यान्ते नासिकाभ्यां छुबुकादधि ॥ यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्का जिजह्वाया विवृहामिते । इति त्रीन्देवान्संस्थाप्य । ॐ एतन्ते० पठित्वा, ॐभूर्भुवः, स्वःविष्णुवरुणयक्ष्महणः, इहागच्छन्त्विहतिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य। पूर्वोक्त मंत्रैर्वा नाममंत्रैः सम्पूज्य—तत्कलशं स्पृष्ट्वा, वक्ष्यमाण सूक्तं पठेत्—ॐ यत इन्द्रभयामहे ततोनोऽअभयंकृधि ।

मघवञ्छग्धि तवतन्नऽऊतिभिर्विद्विषोविमृधोजहि ।१। त्वंहिराधस्पतेराधसोमहः क्षयस्यासि विधतः । तंत्वावयं मघवन्निन्द्रगिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ।२। इन्द्रः स्पलुत वृत्रहा परस्पानो व्वरेण्यः । सनोरक्षिपच्चरमं समध्यमं सपश्चात्पातुनः-पुरः ।३। त्वंनः पश्चादधरा दुत्तरात्पुर इन्द्र निपाहि विश्वतः । आरे अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः ।४। अद्याद्या श्वश्वइन्द्रत्रास्वपरेचनः । विश्वाचनो जरितॄन्सत्पते अहादिवा नक्तंच रक्षिषः ।५। प्रभंगीशूरो मघवातु वीमघः संमिश्लो वीर्यायकम् । उभाते वाहू वृषणाशतक्रतोनियावज्रं मिमिक्षतुः ।६। ततोयजमानो द्रव्यत्यागं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं गोमुख प्रसव शान्तिकर्मणि, पद्धत्युक्त विष्ण्वादिदेवेभ्यःपूर्वाङ्गदेवेभ्यः प्रधान देवताभ्यो दधिमध्वाज्यद्रव्यैः प्रत्येकमन्त्रेणाष्टाविंशति अष्टान्यतर संख्या हुतिभिः । उत्तराङ्ग देवताभ्यश्चमयापरित्यक्तं, तत्तदैवतमस्तु नमम ॥ तत आचार्यो ग्निस्थापन होमपद्धत्यनुसारेण ब्रह्मोपवेशनादि पर्युक्षणान्तं कर्मकृत्वा—ॐवरदनामाग्नयेनमः, वरदाग्निमावाह्य ॐ एतन्तेति, प्रतिष्ठाप्य, सम्पूज्यच । अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीपात्रं संस्थाप्य, ब्रह्मणान्वारब्धः, आघारावाज्य भागौचहुत्वा अनन्वारब्धः प्रधानहोमं कुर्यात्—तत्रादौ—ॐ तद्विष्णोरिति मेधातिथि ऋषिर्गायत्रीछन्दो विष्णु र्देवता, दधिमध्वाज्य, मिश्र होमेविनियोगः । ॐ तद्विष्णोः परमंपदꣳ सदापश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुरा ततम् स्वाहा । इति मंत्रेण विष्णुमष्टाविंशत्याहुतिभिर्जुहुयात् ॥ असक्तश्चेदष्ट संख्यया जुहुयादेवं सर्वत्र बोध्यम्—ॐ आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्रीछन्दऽआपोदेवता दधिमध्वाज्य मिश्र होमेविनियोगः ॥ ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातन । महेरणायचक्षसे स्वाहा—इदंवरुणाय । पूर्ववत् २८ संख्यया ॐ योवः शिवतमोरस स्तस्यभाजयतेहनः उशतीरिवमातरः स्वाहा—इदंवरुणाय ॥ ॐ तस्माऽअरङ्गमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ आपो

जनयथाचनः स्वाहा- इदंवरुणाय, ॐ अप्सुमे सोम इतिमेधातिथिर्ऋषिरनुष्टुप्छन्दः आपो देवताः, दधिमध्वाज्य मिश्रहोमे विनियोगः ॥ ॐ अप्सुमेसोमोऽब्रवीदन्त र्विश्वानि भेषजा। अग्निंच विश्वसमुवमापश्च विश्वभेपजीः स्वाहा -इदंवरुणाय- पूर्ववत् २८ संख्यया। ॐ अक्षीभ्यामिति षण्णां मन्त्राणां कश्यपो विवृहा ऋषिरनुष्टुप्छन्दो यक्ष्मदेवता दधिमध्वाज्य मिश्र होमेविनियोगः। ॐ अक्षीभ्यान्ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि। यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्का ज्जिह्वाया विवृहामिते -स्वाहा- इदंयक्ष्मघ्ने-२८ सं०। ॐ ग्रीवाभ्यस्तऽउष्णिहाभ्यः कीकसाभ्योऽअनूक्यात्। यक्ष्मंदोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां विवृहामिते स्वाहा। इदंयक्ष्मघ्ने। ॐ आंत्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि। यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्नः प्लाशिभ्यो विवृहामिते स्वाहा-इदं यक्ष्मघ्ने।२८सं० ॐ ऊरूभ्यान्तेऽअष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्यां। यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाद्भंससो विवृहामिते स्वाहा- इदंयक्ष्मघ्ने।२८ सं०। ॐ मेहनाद्वनं करणाल्लोमभ्यस्तेनखेभ्यः। यक्ष्मंसर्वस्मा दात्मनस्त मिदं विवृहामिते स्वाहा-इदंयक्ष्मघ्ने। २८ सं० ॥ ॐ अङ्गा दङ्गा ल्लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणि पर्व्वणि। यक्ष्मं सर्वस्मा दात्मनस्तमिदं विवृहामिते स्वाहा-इदंयक्ष्मघ्ने। २८ सं० हुत्वा, ततःसूर्यादिनवग्रहाणां मन्त्रैश्च पूर्ववत् २८ संख्यायां नवग्रहेभ्योहुत्वा, ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा-इदमग्नये स्विष्ठकृते। ततो भूरादिनवाहुति होमं पूर्णाहुत्यन्तं कुशकंडिकोक्तरीत्या समापयित्वा। ततःकलशद्वयजलमेकीकृत्यसपत्निपुत्र यजमानस्याभिषेकं कृत्वा मङ्गलतिलकंच कृत्वा आशीर्वादं दद्यात्। ततो ब्राह्मणेभ्योकर्मनिमित्तक दक्षिणां दत्वा ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥

॥ इति गर्गोक्त गोमुखप्रसव शान्ति पद्धतिः ॥

अथमूलशान्तिपरिभाषांवक्ष्ये ।

उक्तंच मुहूर्त्त चिन्तामणौ—आद्येपिता नाश मुपैतिमूल पादेद्वितीये जननी तृतीये। धनंचतुर्थं च शुभोऽथशान्त्या सर्वत्र सत्स्या दहिभेविलोमम् ॥ मूलवृक्ष विभागो जपार्णवे—मूलस्तंभ स्त्वचा शाखा पत्रंपुष्पं फलं शिखा। घटिका विभागस्तत्रैव ॥ वेदाश्च मुनयश्चैव दिशश्च वसवस्तथा। नंदाबाणा रसारुद्रा मूलभेदाः प्रकीर्त्तिताः। फलम्—। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तंभेहानिर्धनक्षयः। त्वचिभ्रातृ विनाशश्शाखामातुर्विनाश कृत्। पत्रेशपरिवारस्य पुष्पेषु नृपवल्लभः। फलेषु लभतेराज्य शाखायामल्प जीवितम्। मास परत्वेन स्वर्गादि वासं भूपाल वल्लभे—वृषालि सिंहेषु घटेषु मूलंदिविस्थित दुग्म तुलांगनासु। पातालगं मेषधनुः कुलीर नक्रेषु मर्त्येष्विति संस्मरन्ति—फलम्—स्वर्गेमूले भवेद्राज्यं पातालेच धनागमः। मृत्यु लोके यदा मूलं तदा शून्यं समादिशेत् ॥ वशिष्ठः—नैर्ऋत्यभोद्भूत सुतः सुतावा क्षिप्रादवश्यं श्वशुरं निहन्ति। अभुक्तमूल माह वशिष्ठः—ज्येष्ठान्ते घटिकाचैका मूलादौ घटिकाद्वयम्। अभुक्त मूलमित्याहु जतिंतत्र विवर्जयेत्। बृहन्मनुनातु—ज्येष्ठान्तं घटिकार्धंतु मूलादौ घटिकार्धकम्। तयोरन्तर्गता नाडी, अभुक्तं मूलमुच्यते। भल्लाटः—अभुक्त मूलसंभवं परित्यजेत्तु बालकं ॥ समाष्टकं पिताथवा नतन्मुखं विलोकयेत्। अत्रत्याग विधाने स्वत्वस्यापायात्पातकित्व त्यजतो त्यादौ त्यजतेदानार्थत्वा भावाच्च। सिंहादि प्रसूति वन्मूल प्रसूतस्यापि पीडनं भवतीति केचित् तन्न। त्यागविधानेपि स्वत्वापाये प्रमाणाभावात्। अतश्चात्र त्यजतिना जन्मदर्शना-भावो वा जन्मत्यागपक्षे समाष्टके दर्शनेवान्यद्वारा जातकर्मादि करणंमध्ये चाकस्मिक दर्शने शांति पूर्वं स्वयंतत्करणम्। अन्त्यागपक्षेपीडनादि भवत्येवेति। पुत्रयेत्वल्प अवश्यत्याज्यत्वात् मूलोत्पन्न प्रतिगृहीतुश्च नत्याग शांतिकादि नप्रत्युत्पत्तिकाले स्वत्वाभावेन मूलोत्पन्न पुत्रत्वाभावात्। तस्माच्छान्तिं प्रकुर्वीत ग्रहाणां क्रूर चेतसामिति दिक् ॥ शत मूलानि दैवज्ञमनोहरे—बर्हिः शिखा, हरि क्रान्ता, सहदेवी, पुनर्नवा, । शरपुंखा, वराहीच, काकजंघा, सुलक्षणा ॥८॥ तुंबिका चैव, कर्कन्धुः, कर्पूरो, काकवल्लिका । कर्कोटिकाच, चक्रांका, श्वेताऽर्को, व्याघ्र पत्रिका ॥१६॥ दन्ती, चाश्वगधाच, मुसली, गिरिकर्णिका। इन्द्रवारुण्य, पामार्ग शतपुष्पी, कुमारिका ॥२४॥ शल्लकी, चाश्वगंधारी, निर्गुंडी, देवदालिका । वटः, शमी, तथाप्लक्षः, पालाशो, श्वत्थएवच ॥३३॥ चूत, श्चोदुंबरो, जम्बू, नंदीवृक्षो, थवेतसः, पुन्नागो, थार्जुनो, शोको, वकुलो, श्मंतकस्तथा ॥४३॥ शाल, स्ताल, स्तमालश्च पाटलः शतपत्रिका । मधूकश्च, शिरीषश्च, श्रीवृक्षो, बृहतीद्वयं ॥५२॥ बला, चातिबला, चैव पाठा, नागबला, तथा । जातीच बकुलश्चैव केतकी कदली तथा ॥६१॥ मातुलिंगी, जयन्ती च, यवानी, पुत्रिका तथा । द्रोणपुष्पा, तथाकुंभी,

श्रीपर्णी, मदनस्तथा ॥६८॥ चंपकं, पद्मकं, चैव, तथाकांचन पुष्पिका, सिद्धेश्वरी च, बदरी, राजवृक्षो, धवस्तथा ॥७६॥ कुंदश्च, मुचकुंदश्च, गोजिह्वा, चरकंदुका । डाडिमी, बीजपूरीच, ब्राह्मी, चामलकीतथा ॥८४॥ भृंगराज, अथ पुष्पी, मत्स्याची, चाटरूपक । तरंगिणी, गुडूचीच, निशाह्वा, शतमूलिका ॥६२॥ बाकुची, काकजंघाच, बर्बरी, तुलसी तथा । कुश काशश्चेतुमूलं तथासर्षप मूलकम् ॥१००॥ इति शत मूलनामानि ॥

—⊰०⊱—

उक्तंच विधानपारिजातके:—अथात.सप्रवक्ष्यामिमूलजातहितायवै । मातापित्रोर्धनस्यापिकुलस्यापि हितायवा॥१॥ त्यागोवमूलजातानां स्यादष्टाब्दात्तुदर्शनं अभुक्तमूलजाताना परित्यागोविधीयते॥२॥ अदर्शनेवापिपितु सोऽपितिष्ठेत्समाष्टकम् । एवंदुहितरिप्रोक्तं मूलजायां स्तंबुधैः ॥३॥ मुख्यकालं प्रवक्ष्यामि शान्तिहोमस्ययत्नत । जातस्यद्वादशाहेवा जन्मर्क्षेवाशुभेदिने ॥४॥ समष्टके द्वादशाब्देर्याच्छान्तिकमादरात् । यदैवशान्तिक कुर्यात्कर्मतत्रप्रवक्ष्महे । संस्कृते पुण्यदेशेतु मंडपंकारयेद्बुध ॥६॥ मंत्राभिमंत्रितैस्तस्मै प्रोक्षितायाक्षितौतत तत्रोदकुंभ सुस्थ्स्थापरकं अप्रणाविवर्जितम् ॥७॥ सुवर्णंलंच निर्मितं कारयेनिर्मलाभमा । वस्त्रावगुंठितकुर्यात्पूरयत्तीर्थवारिणा ॥८॥ कूर्चहेमसमायुक्तं चूतपल्लवशोभितम् । स्वस्तिकोपरि विन्यस्य सक्षीरद्रुमपल्लवम् ॥६॥ द्रोण व्रीहींश्च निक्षिप्य चेशाने च निधापयेत् । पंचरत्नानि निक्षिप्य सर्वौषधिसमन्वितम् ॥१०॥ अर्चितंधपुष्पाद्यै श्रीरुद्रं च स्पृशन् जपेत् षडंगसहितंशान्त्यै जपेद्रुद्रमस्थया ॥११॥ वह्वृचोरुद्रसूक्तैर्वच्छन्दोगोरुद्रसामभि एकादशाष्टन्निद्रुक सख्यया शक्तितोजपेत् ॥१२॥ तत्राप्रतिरथसूक्तं शतरुद्रानुवाक्कम् । रक्षामंत्रं तथापुण्य रक्षोघ्नंच स्पृशन्जपेत् ॥१३॥ त्र्यम्बकं जपेत्सम्य गष्टोत्तरसहस्रकम् । एवबारं तथाजापी पावमानी स्तुराजपेत् ॥१४॥ जपस्य पंचकुंभास्युर्द्वयं वातदलाभत श्रीरुद्रस्यैककुंभश्च सर्वसूक्तानितत्रतु ॥१५॥ तथान्यं च शुभकुम्भं पूर्वोक्तैलक्षणैर्युतम् । चतुःप्रस्रवणं कुर्यात्पंचवकं तुतद्भवेत ॥१६॥ गजाश्वरथ्यावल्मीकात्संगमाद्ध्रदगाकुलात् । राजद्वार प्रदेशाच्चमृदमानीयनिक्षिपेत् ॥१७॥ कुम्भस्यनैर्ऋतेदेशे होमस्थानं प्रकल्पयेत् । गोमयाल्लेपितेदेशे कुर्या स्थंडिलमुत्तमम् ॥१८॥ कृत्वाग्निं मुखपर्यन्त मुल्लेखादि स्वशाखत । पूर्णपात्रविधानान्तं कृत्वा पूर्वासमारभेत् ॥१६॥ नक्षत्र देवता रूपं सुवर्णनप्रयत्नत निष्कपात्रेणवार्धेन पादेनाथ स्वशक्तित ॥२०॥ प्रतिमांलक्षणोपेतां कारयित्वाविचक्षण यद्वामूलस्सुवर्णस्य स्थापयित्वाप्रपूजयत् ॥२१॥ सुवर्णसर्वदैवत्यं सर्वदेवात्मकोनल सर्वदेवात्मकोविप्र सर्वेन्वमयोहरि ॥२२ सैरसर्गमिनिर्ऋतिरयामसुमुखेनर वाहनम् । रक्षोधिपंखड्गहस्त दिग्गाभरणभूषितम् ॥२३॥ प्रतिमापूजनार्थाय वस्त्रयुग्मं प्रकल्पयेत् पद्मजकारयेद्भूमौ रंजितैर्व्रीहितंडुले ॥२४॥ चतुर्विंशद्दलोपेते शुक्लैर्वर्णिकान्विताम् । तस्योपरि न्यसेत्ताम्रंकलश ताम्र मृण्मयम् ॥२५॥ शुद्धस्नेश सत्राय तनमूलानि निक्षिपेत् ॥ मूलानितानमूलानि स्वयग्रु नाटयेत्पिता॥२६॥

भगवाश्चाविश्राश्च औषध्यः क्रमशाम्यहम् । मासांमूलानिगृहीयाच्चलाभेविशेषतः ॥२७॥ विष्णुक्रान्ता सहदेवी तुलसी च शतावरी । स्थापयेत्कर्णिकामध्ये वस्त्रगन्धाद्यलंकृतम् ॥२८॥ कूर्चहेम जलोपेतं कुम्भमौषधिसंयुतम् । कुम्भोपरि न्यसेद्विद्वान्मूलनक्षत्रदैवतम् ॥२९॥ अधिप्रत्यधिदैवौच दक्षिणोत्तरदेशतः । अधिदेवं यजेच्छक्रोऽपैशानस्त्र दैवतम् ॥३०॥ पूर्वषाढाप्रत्यधिप देवतंपूजयेत्ततः । उत्तराज्येष्ठा० अनुराधान्तमर्चये ॥३१॥ ऐन्द्रादीशानपर्यन्तं पूजयेत्स्वस्वनामतः । स्वलिङ्गोक्तैश्चमन्त्रैश्चप्रधानादीन्प्रपूजयेत् ॥३२॥ पंचामृतेन संस्नाप्य आवाहाद्यप्रमर्चयेत् । उपचारैः षोडशभिर्यद्वापंचोपचारकैः ॥३३॥ रक्त चन्दन गन्धाद्यैः पुष्पैश्चैवसितासितैः मेषश्रृङ्गादिधूपैश्चघृतदीपैस्तथैवच ।३४। सुरांपोलिकमांसाद्यैर्नैवेद्यैश्चौदनादिभिः मत्स्यमांस सुरादीनि ब्राह्मणश्चविवर्जयेत् ॥ ३५ ॥ सुरास्थाने प्रदातव्यंक्षीरमन्यव मिश्रितम् । पायसंलवणोपेतं मांसस्थाने प्रदापयेत् ॥ ३६ ॥ रक्तगन्धाद्यलाभेतुयथालाभंसमर्चयेत् । पुष्पांजल्यन्तमभ्यर्च्यहोमंकुर्याद्यथोदितम् ॥ ३७ ॥ निर्वापप्रोक्षणादीनिचरोः कुर्याद्यथाविधि । दर्विगृहीत्वा विधिवन्नैर्ऋत्यैवऋचाहुवेत् ॥ ३८ ॥ मोषुणः परापरेति, यन्तेदेवीतिवापुनः । पायसंघृतसम्मिश्रंहुवेदष्टोत्तरंशतम् ॥ ३९ ॥ समिदाज्यचरुन्पश्चाच्छक्तितः संख्यया हुवेत् । अधिदैवत योश्चापिजुहुयात्स्वस्वमन्त्रतः ॥ ४० ॥ चतुर्थ्यन्तैर्नमोन्तैश्चस्वाहान्तैश्चसमन्त्रकैः । नक्षत्रदेवताभ्यश्चपायसेनतुहोमयेत् ॥ ४१ (कृणुष्वेतिपंचदशभिः जुहुयात्कृसरंततः । गायत्र्याजातवेदसेत्र्यंबकमितिक्रमात् ॥ ४२ ॥ सीराक्षुजन्तित्वामग्निवास्तोष्पत्यग्निर्मेवच । क्षेत्रस्यपतिना, शुनाना, अग्निदूतं तथैवच ॥ ४३ ।' इतिमन्त्रैः कृसरंजुहुयात्)श्रीसूक्तेनतथाविद्वान्समिदाज्यचरूक्रमात् । अष्टोत्तरशतैर्वापिअष्टाविंशतिभिः क्रमात् ॥ ४४ ॥ अष्टसंख्ययावापिजुहुयाच्छक्तितोबुधः स्वनः सोमेन जुहुयात्पायसंतु त्रयोदश ॥ ४५ ॥ चतुर्गृहीतमाज्यंच यातेरुद्रेति मन्त्रतः स्रुवेण जुहुयादाज्यं महाव्याहृतिभिःक्रमात् ॥ ४६ ॥ हुत्वास्विष्टकृतंपश्चात्प्रायश्चित्ताहुतिर्हुवेत ' आचार्योयजमानोवावन्हौपूर्णाहुतिं हुवेत । ४७ ॥ समुद्रादिति सूक्तेन प्राजापत्यार्चातथा । पूर्णादर्वि, सप्ततेअग्नेएतैः पूर्णाहुतिंहुवेत् ॥४८ ॥ होमशेषंसमाप्यथवन्हिमारोपयेद्बुधः । कुंभाभिमन्त्रणं कुर्याद्दक्षिणेनाभिमर्शयेत् ॥ ४९ ॥ मृत्युप्रशमनायाथजपेत्त्र्यंबकंशतम् । रुद्रकुम्भोक्तमार्गेणरुद्रमन्त्र स्पृशञ्जपेत् ॥ ५० ॥ धूप दीपौचनैवेद्यंकुम्भयुग्मेनिवेदयेत् । (रुद्रकुंभेनिर्ऋतिकुम्भेच)प्रसादयेत्ततोदेवमभिषेकार्थमादरात् ॥ ५१ ॥ तस्मिन्कालेमहातिथ्यंकर्तव्यंभूतिमिच्छता । पृथक्प्रशस्तलेनैव नक्षत्रैश्चासदेवता ॥ ५२ ॥ अभिषेकविधिंवक्ष्येपूर्वाचार्यैरुदाहृतम् । भद्रासनोपविष्टस्ययजमानस्यऋत्विजः ॥ ५३ ॥ दारपुत्रसमेतस्यकुर्युःसर्वेऽभिषेचनम् । अक्षीभ्यामितिसूक्तेनपावमानीभिरेवच ॥ ५४ ॥ आपोहिष्ठेतिनवभिः यतइन्द्रद्वयेनच सहस्राक्षेणऋचेनापिदेवस्यत्वेतिमन्त्रकैः ॥५५॥ शिवसंकल्पमन्त्रैश्चवरुणस्यमन्त्रकैः । तत्त्वायामिषंकन्तुसर्वदोषोपशान्तिदम् ॥ ५६ ॥ सर्वकाम

प्रदक्षिणंमङ्गलान्याचमङ्गलान् । वस्त्रान्तरितकुंभाभ्यांपश्चात्तुस्नापयेद्बुध ॥ ५७ ॥ ततः शुक्लाम्बर-धरः शुक्लमाल्यानुलेपनः । यजमानोदक्षिणाभिस्तोषयेदृत्विगादिकान् ॥ ५८ ॥ कृष्णांपयस्विनींद-द्यादाचार्यायसवत्सकाम् । निऋतिप्रतिमावस्त्रहेमकुंभचदापयेत् ॥ ५९ ॥ ग्रहाणां प्रतिमावस्त्रतत्त-ज्जापेभ्यअर्पयेत् । श्रीरुद्रजापिनेदद्यात् कृष्णोनड्वाहंप्रयत्नतः ॥ ६० ॥ इतरेभ्योयथाशक्त्याचदक्षि-णाम् । उक्तालाभेतथादद्यादाचार्यब्राह्मऋत्विजाम् ॥ ६१॥ तत्तन्मूल्यप्रदातव्यशक्त्यावाथप्रदापयेत । आचार्यायचयद्दत्ततदर्धंब्रह्मणेददेत ॥ ६२ ॥ सदस्यायब्रह्मणोर्धंमृत्विग्भ्यश्चतदर्धकम् । गृहीत्वा-दाशिषस्तेभ्य प्रणम्याथ क्षमापयेत् ॥ ६३ ॥ दद्यादन्नपायसादिब्राह्मणान्भोजयेन्छतम् । अलाभेस-तिपञ्चाशद्दशकंतदलाभत ॥ ६४ ॥ सर्वशान्तेश्चपठन ब्राह्मणैराशिषस्ततः गृहीत्वार्पयेद्विप्रान्निऋति प्रीयतामिति ॥ विधाने चरितेह्यस्मिन्नततः शान्तिर्भवेद्ध्रुवम् । गण्डान्तेष्वेवमेवस्यात्सार्पार्धे चैव-मवहि ॥ ६६ ॥ पुष्यार्धतथैवच, इतिशान्तिरत्नादौ ॥ शेष प्रयोग स्पष्ट ।

इति शौनकोक्त मूल शांति परिभाषा ॥

——— o ———

॥ अथमूलशान्तिपद्धतिः ॥

अथचमूलनक्षत्रोत्पन्नसुतयोः पितासूतकान्तेचन्द्रतारानुकूले द्वादशाहे, वा तयोर्जन्मर्क्षेवाशुभेदिने, अष्टमेमासिवाद्वादशेमासि, वाष्टमाब्देद्वादशेब्देवा,—मूलशान्त्यर्थं शालायांवागृहाभ्यन्तरे, यथाशक्तिमंडपंविरच्यस्तंभतोरणादिभिः सुसज्यपूजापद्धत्युक्त स्तंभमंडपपूजापद्धत्यनुसारेण सम्पूज्यच, तत्रादौगणेशादिपञ्चांग पूजांकुर्यात् सचविधिः, सपत्निपुत्रोयजमानः प्रातःस्नात्वानित्य क्रियांसमाप्य, मंडपेपश्चिमद्वारेणसमागत्य शुभासनेउपविश्य, रक्षादीपंप्रज्वलय्याचम्य भूतोत्सादनंकृत्वा पत्नींसपुत्रां स्वदक्षि-णतउपवेश्य, संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्य, अमु कगोत्रोऽमुकराशिः सपत्निपुत्रोऽमुकोऽहं मूलनक्षत्रोपलक्षितस्य-धनुर्धरराशेरमुकबालकस्यामुकचरण जजनमूलनक्षत्रसूचितपितृ मात्राद्यरिष्टनिवृत्तिपूर्वकं सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं शुभफलप्राप्तये श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थंच शौनकोक्तविधानेन ग्रहयागसहितमूलशान्ति-कर्मणि तत्पूर्वाङ्गत्वेन श्रीगणेश्वरस्यपूजनपूर्वकं कलशस्थापन,

पुण्याहवाचन, नान्दीश्राद्धनवग्रहाणां पूजनंकरिष्ये, तथाचमूलशान्तिकर्मसमृद्धये, आचार्यब्रह्मणोः सदस्यऋत्विजांरुद्रैकादशिन्यादि, अप्रतिरथसूक्तादिपाठकानां तथामहामृत्युंजयादि जापकानांब्राह्मणानां पूजनपूर्वकंवरणंचकरिष्ये, ततोगणेशादिपंचांगपूजांकृत्वा पुण्यतीर्थजलेन वापंचगव्येन, ॐआपोहिष्ठा मयोभुव स्तानऽऊर्जेदधातनः। महेरणायचक्षसे योवः शिवतमोरसतस्यभाजयतेहनः। उशतीरिवमातरस्तस्माऽअरंग मामवोयस्यक्षयाय जिन्वथऽआपोजनयथाचनः॥ इतिमंत्रैर्मंडपंशालांचाभिषिंच्य॥ मण्डपस्यनैर्ऋतभागेस्थंडिले सपादहस्तांवेदिकांहोमार्थनिर्माय तत्र होमपद्धत्युक्तप्रकारेण पंचभूसंस्कारपूर्वकमग्निमुपसमाधाय, तद्रक्षार्थमिन्धनंनियुज्य ततोमंडपेशानभागेरुद्रकलशस्थापनार्थं द्रोणपरिमितान्व्रीहीन् निक्षिप्यतदुपरिस्वस्तिकांकारयित्वा श्वेतादिपंचवर्णरंगैरापूर्य, तत्रश्लक्ष्णंसुवर्तुलंबृहत्ताम्रकलशं। (अशक्तश्चेत्) रक्तवर्णमृण्मयकलशं कलशपूजोक्तविधानेनसंस्थाप्य सम्पूज्यच। तत्कलशंरक्तवस्त्रेणावेष्ट्य तदुपरितण्डुलपूरित ताम्रपात्रंन्यस्य, तत्रवस्त्रेसौवर्णीरुद्रप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकंपंचगव्यसंस्नापितांसंस्थाप्य। आचार्यादिब्राह्मणानाहूययथाक्रमेण गन्धादिभिःसम्पूज्य वृणुयात्—तत्रसंकल्प—अद्येहेत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोहं, कर्त्तव्यमूलशान्तिकर्मणि। आचार्यकर्मकर्तुंब्रह्मकर्मकर्त्तुं रुद्रैकादशिन्यादिसूक्तपाठकर्मकर्त्तु, एतेषांयथासंख्यक ब्राह्मणानांपूजनपूर्वकं। अमुकामुकब्राह्मणान, एभिर्वरणद्रव्यैः युष्मान्वृणे, वरणद्रव्यंतेभ्योदत्वा, यजमानःसांजलिपुटःप्रार्थयेत—भोब्राह्मणायथाविहितं कर्मकुरुध्वम्। तेचकरवामयथामति,इति ब्रूयुः॥ आचार्यःस्वयंपूजनादिकर्मकुर्याद्वा,यजमानद्वाराकारयेत्। तत्ररुद्रपूजनम्—संकल्पः—अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुकोहं मूलशांति कर्मणिव्रीह्युपरिस्थापितरुद्रकलशे, सुवर्णप्रतिमायां रुद्रपूजनंकरिष्ये। ॐ एतन्तेतिप्रतिष्ठाप्य, पूर्वपूजापटलोक्तवेदोक्त शिवार्चनपद्धत्यावा ॐ त्र्यंबकं०—इतिमन्त्रेण रुद्रंसम्पूज्योपस्पृश्य, ततो

रुद्रकलशादुत्तरस्यां चतुर्दिक्षुचतुरः कलशान्—मध्येचपंचमंयथा विधिसंस्थाप्य तत्रवरुणमावाह्य पृथक्पृथक् पूजयेत् । तत्रमध्य कलशे पूर्णपात्रोपरि शतमूलानि, तदलाभेविष्णुक्रान्ता सहदेवी तुलसीशतावरी कुशान्संस्थाप्यवरुणंपूजयेत् । (अत्रपंचकलश-स्थापनमाचार्याविकल्पमाहुः) विकल्पपक्षेउत्तरस्यैकस्मिनकलशे शतमूलादीनिस्थापयित्वावरुणंपूजयेत् । ततोरुद्रैकादशिन्याचार्यः—रुद्रकलशंस्पृष्ट्वा—षडंगन्यासपूर्वकंसाङ्गांरुद्रैकादशिनींजपेत्—(सच विधिःपूर्वोक्तपूजापटलेरुद्रैकादशिन्यादिपरिभाषायांद्रष्टव्यः) ततः पंचकुम्भपक्षे—अप्रतिरथादिसूक्तजापकः पूर्वकुम्भं स्पृशन् ॥ ३ॐ आशुःशिशान० इत्यादि द्वादशमंत्रान् रुद्रस्याष्टाध्याय्यास्तृतीया ध्यायोक्तान् जपेदयमेवाप्रतिरथसूक्तः (य० सं० अ० ।१७। मं ३३ तः ४४ यावत) ततोदक्षिणकुंभंस्पृशन्, एकादशवारं, रुद्राष्टाध्या-य्याः पंचमाध्यायस्य, नमस्तेरुद्रमन्यव०, इत्यादि षोडशर्चं शत-रुद्रानुवाकं जपेत ॥ ततःपश्चिमकुम्भंस्पृशन्, एकादशवारंपूर्वोक्त पूजापटलस्थरक्षोघ्नसूक्तंजप्त्वा, पुनः—ॐकृणुष्वपाज, इतिपञ्च-र्चस्य वामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता मूलशान्तिकलशेजपे विनियोगः ॥ ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिन्नपृथ्वीयाहिराजेवामवा २॥ऽइभेनत्रिष्वीमनु प्रसितिंद्रूणानोऽस्ताऽसिविध्यरक्षसस्तपिष्ठैः ।१। तवभ्रमासऽआशुया पतन्त्यनुस्पृशधृषताशोशुचानः । तपूँ ष्यग्नेजुह्वापतंगानसन्दितो विसृजविष्वगुल्काः ।२। प्रतिस्पशो विसृजतूर्णितमोभवा पायुर्विशोऽअस्याऽअदब्धः । योनोदूरेऽअ घशंसोयोऽअन्त्यग्नेमाकिष्टे व्यथिरादधर्षीत ।३। उदग्नेतिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्यामित्राँ ओषतात्तिग्महेते । योनोऽअरातिं समिधानचक्रे नीचातंधक्ष्यतसं नशुष्कम् ४ ऊर्ध्वोभवप्रतिविध्या ध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने । अवस्थिरातनुहि यातजूनां जामिमजामि प्रमृणीहिशत्रून् ।५। इतिएकादशवारंजपेत् ॥ तत उत्तरकुम्भंस्पृशन्, अष्टोत्तरसहस्रकृत्वः त्र्यंबकमन्त्रंजप्त्वा वार मेकंवक्ष्यमाण पावमानीरृचजपेत् ॥ ॐ पुनन्तुमापितरइत्यादि

नवमन्त्राणां प्रजापति ऋषिर्मन्त्रलिंगोक्तादेवताः, मूलशान्तिकलशेजपे विनियोगः—ॐ पुनन्तुमापितरः सोम्यासः पुनन्तुमापितामहाः। पुनन्तुप्रपितामहाः पवित्रेणशतायुषा ।१। पुनन्तुमापितामहाःपुनन्तुप्रपितामहाः।पवित्रेणशतायुषाविश्वमायुर्व्यश्नवै ।२। अग्नऽआयूँषि पवसऽआसुवोर्जमिषंचनः । आरेबाधस्वदुच्छुनाम् ।३। पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः। पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा ।४। पवित्रेणपुनीहिमाशुक्रेणदेवदीद्यत। अग्नेक्रत्वाक्रतूँऽरनु ।६। यत्तेपवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्मतेनपुनातुमा ।७। उभाभ्यांदेवसवितः पवित्रेणसवेनच। मांपुनीहिविश्वतः ।८। वैश्वदेवीपुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वोवीतपृष्ठाः। तयामदन्तः सधमाधेषुवयँस्यामपतयोरयीणाम् ।९। ततःपंचकुम्भानामुत्तरभागे,शुद्धभूमौचतुर्विंशतिदलं कमलंरक्तशुक्लतंडुलैर्लिखित्वा तन्मध्येकर्णिकायांसुलक्षणंसुवर्णकलशं, वारजतताम्रमृदन्यतमकलशंसंस्थाप्य, तत्राभ्यंतरेशतमूलानितदभावे विष्णुकान्तासहदेवी शतावरीतुलसीकुशान्कुंकुमं पञ्चसुनिधद्रव्यं सप्तमृदादिप्रक्षिप्य, कलशस्थापनविधिना धान्यपूर्णपात्रनिधानान्तंकर्मकृत्वा। तदुपरिरक्तवस्त्रे अष्टदलकमलं विलिख्यमध्ये कर्णिकायांनिष्कवातदर्धं चतुर्थांशप्रमाणंसुवर्णघटितां मूलनक्षत्राधिपतिं निर्ऋतिप्रतिमां यथोक्तलक्षणां, अग्न्युत्तारणपूर्वकं पञ्चामृतस्नापितांसौवर्णी—ॐ यन्तेदेवीनिर्ऋतिराबबन्धपाशंग्रीवास्वविचृत्यम्। तंतेविष्याम्यायुषोनमध्यादथैतंपितुमद्धिप्रसूतः। इतिमन्त्रेणमध्येसंस्थाप्य, ॐएतन्तेदेव० पठित्वा ॐ भूर्भुवःस्वः मूलर्क्षाधिपनिर्ऋते इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव॥ इतिप्रतिमायांनिर्ऋतिंप्रतिष्ठाप्य तद्दक्षिणभागेमूलाधिदेवंज्येष्ठानक्षत्राधिपमिन्द्रंप्रतिमायां। ॐभू०इन्द्रेहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितोवरदोभव,निर्ऋतिवामेप्रत्यधिदेवंपूर्वाषाढाधिपंतोयम्—ॐभू०तोयह०ति०सु०व०।एवंनाममंत्रैर्भूमौचतुर्विंशतिदलेपुपूगीफलानिसंस्थाप्यतेषुपूर्वदलमारभ्येशानपर्यन्तंउत्तराषाढाद्यनुराधाप

र्यन्तान्नक्षत्रदेवताः क्रमेणस्थापयेत् ॥ तत्रायंस्थापनेक्रमः—ॐ भूर्भुवः स्वः उत्तराषाढादेवाः, विश्वेदेवा,इहागच्छन्त्विहतिष्टन्तुसुप्रतिष्ठितावरदा भवन्तु ॥ १ ॐ भू० श्रवणाधिप गोविन्द इहा० सु० ।२। ॐ भू० धनिष्टाधिपावसवः इ० सु० ।३। ॐ भू० शतभिषग्देववरुणइ० सु० व० ।४। ॐ भू० पूर्वभाद्रपदाधिप,अजचरण —इ० ।५। ॐ भू० उत्तराभाद्रपदाधिप, अहिर्बुध्न्य, इहा० ।६। ॐ भू० रेवतीनक्षत्राधिप पूषन्,इहागच्छेह तिष्टसुप्रतिष्ठितोवरदोभव ।।७।। ॐ भू० अश्विनीदेवौ, दास्रौ इहागच्छतमिहतिष्टतं सुप्रतिष्ठितौवरदौभवेतम्।८। ॐ भू० भरणीनक्षत्रदेवयम, इ०सु० व० ।९। ॐ भू० कृतिकादेव अग्नेइ० ।१०। ॐ भू० रोहिणीदेवब्रह्मन,इ०।११। ॐ भू० मृगशिरोधिपचन्द्र इ०।१२। ॐ भू० आर्द्राधिपरुद्रइ० ।१३। ॐ भू० पुनर्वसुदेवनेअदितेइ०।१४। ॐ भू० पुष्याधिपवाक्पते इ० ।१५। ॐ भू० श्लेषाधिपाःसर्पाः इहागच्छन्त्विह तिष्टन्तु सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु ।१६। ॐ भू० मघादेवाःपितरः, इहागच्छन्तु ।१७। अत्रोदकस्पर्शः ॥ ॐ भू० पूर्वाफाल्गुनीदेवते भगइ० ।१८। ॐ भू० उत्तराफाल्गुनीदेवते अर्यमन्इ० ।१९। ॐ भू०हस्तदेवसूर्य इ० ।२०। ॐ भू० चित्रादेवत्वष्टः इ० २१ ॐ भू० स्वातीदेववायो इ० २२ ॐ भू० विशाखाधिपौइन्द्राग्नीइहागच्छत मिहतिष्टंतसुप्रतिष्ठितौ वरदौभवेतम् ।२३। ॐ भूर्भुवः स्वः अनुराधादेवमित्रइहागच्छेहतिष्टसुप्रतिष्ठतोवरदोभव।२४। ॐ एतन्ते० पठित्वा ॐ भू०विश्वान्देवानारभ्य मित्रपर्यन्ताश्चतुर्विंशतिदेवताः सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥ पूजासंकल्पं कुर्यात् अद्येत्यादिदेशकालौसंकीर्त्यामुकराशिरमुकोहं मूलनक्षत्रामुकचरण जातस्यामुकपुत्रस्य सूचितामुकारिष्ट निवृत्तये शुभफलप्राप्तये च करिष्यमाण मूलशांतिकर्मणि मूलाधिष्ठात्रि देवतानिर्ऋतेरधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहितस्य च कलशोपरि—स्थापित सुवर्णप्रतिमासु तथाचभूमौचतुर्विंशतिदलस्थाक्षतपूगीफलेषुतत्तत्प्रतिमासु च उत्तराषाढामारभ्यानुराधा पर्यन्तानां चतुर्विंशतिनक्षत्राणां

देवतानां पूजनं च करिष्ये तंत्रेणहोमवेदीशाने कलशस्थापन नव ग्रहाणांस्थापनं पूजनं च करिष्ये इति संकल्यनिर्ऋतिंध्यायेत् ,, गृहीताक्षतपुष्पः—ध्यायामि निर्ऋतिं कृष्णंसुमुखं नरवाहनम्। रक्षोधिपंखड्गहस्तं नानाभरणभूषितम् ३० यन्तेदेवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशंग्रीवास्वविचृत्यम्। तंते विष्याम्यायुषोनमध्यादर्थतं पितुमद्धिप्रसूतः। इति मंत्रेण पंचोपचारैः सम्पूज्य ❀ अधिदेव प्रत्यधि देवयोर्नाममंत्राभ्यां पूजनंकुर्यात्–३० मूलाधिदेवायेन्द्राायनः इति दक्षिणभागे ३० मूलप्रत्यधि देवायतोयायनमः। इति संपूज्य ३० नक्षत्रदेवेभ्योनमः इति नक्षत्रदेवानपिसंपूज्य, वासवेंपांपुरुषसूक्तेन पूजनंकुर्यात् , ततो होमवेदीशानकोणे कलशविधिना कलशंसंस्थाप्य संपूज्य च ग्रहयागोक्तपद्धत्या तत्र साधिदेवप्रत्यधिदेवा नादित्यादि ग्रहानावाह्य संपूज्य च तत्र पंचाशत्कुशनिर्मितं ब्रह्माणमपि संस्थाप्य संपूज्य च रक्षासूत्रमभिमंत्र्य प्रतिष्ठाप्यतत्रैव कलशे स्थापयेत्। ततो होमवेदी समीपमागत्य पूर्वोक्त होमपद्धत्यनुसारेण ब्रह्मोपवेशनादि, अर्थवत्प्रोक्षणान्तं कर्मकृत्वा। होमसामग्रीं पायसंचरुंकृसरं (तिलौदनम्) अपयित्वापर्युक्षणान्तंकृत्वा। (शान्तिकेवरदः) इतिवरदनामाग्निं, एतन्ते तिप्रतिष्ठाप्य। पंचोपचारैः सम्पूज्य रेखाजिह्वाश्चपूजयेत्। अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहं सग्रहयाग मूलशान्तिकर्मणि द्रव्यदेवताभिध्यान पूर्वक महंयक्ष्ये तत्र प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निम् सोमं,आज्येन,नवग्रहानष्टसंख्याभिः समिच्चर्वाज्यतिलाहुतिभिः विनायकादि पंचलोकपालानिन्द्रादि दिक्पालांश्चद्विर्द्विःसंख्याभिः समिदाज्याहुतिभिःनिर्ऋतिं प्रतिद्रव्यमष्टोत्तरशतसंख्याहुतिभिः इन्द्रम् अपश्चअष्टाविंशति संख्याभिर्घृतचर्वाहुतिभि श्चविश्वेदेवा याश्चतुर्विंशति देवता अष्टसंख्याभिःपायसाहुतिभिःऋग्वेदोक्तरक्षोघ्न कृणुष्व, इति पंचदशभिः ऋग्भिःप्रत्यर्चंपष्टसंख्याभिःकृस·

टि० निर्ऋतिपूजने परिभाषोक्त २४ श्लोकादौ—मंप शुक्लादिभूषितेच, इत्यादि मिनवैद्यान्तं पूजयेत्।

राज्याहुतिभिःसवितारंदुर्गा,त्र्यंबकमृऋतिवक्स्तुतिं दुर्गावास्तोष्पतिं अग्निंक्षेत्राधिपतिम् मित्रावरुणौ,अग्निं,चाष्टसंख्याभिःकृसराज्या हुतिभिः श्रियं, हिरण्यवर्णा, इतिपंचदशभिः श्रीसूक्तऋग्भिःप्रति मंत्रमष्टसंख्याभिर्दूर्वाहुतिभिश्चर्वाहुतिभिश्च,, रुद्रं घृताहुतिभिः,, शेषघृतेनस्विष्टकृतमग्न्यादि प्राजापत्यान्तानाज्येनाहंयक्ष्ये,, इदं संपादितंचर्वादिद्रव्यं, आघाराज्यभागदेवताभ्यो नवग्रहदेवताभ्यो ऽधिदेवप्रत्यधिदेवेभ्यश्च विनायकादि लोकपालेभ्यइंद्रादिदिक्पालेभ्यश्च,, निर्ऋतीन्द्रतोयेभ्यस्तथा विश्वेदेवमारभ्य मित्रपर्यन्तेभ्य श्चतुर्विंशतिनक्षत्रदेवेभ्यश्च ॥ स्विष्टकृदग्नयेमहाव्याहृतिदेवताभ्यः सर्वप्राश्चित्तदेवताभ्यः प्रजापतये च मयापरित्यक्तं ॐ तत्तद्यथादैवतमस्तु नमम ॥ तत आचार्योदक्षिणं जान्वाच्य ब्रह्मणान्वारब्धोमनसा प्रजापतिं ध्यात्वा—ॐ प्रजापतये स्वाहा,, इदंप्रजापतयेनमम । ॐ इन्द्रायस्वाहा—इदमिन्द्राय० ॐ अग्नयेस्वाहा इदमग्नये० । ॐ सोमायस्वाहा इदं सो० इत्याघाराज्य भागौ च हुत्वाआचार्योऽन्वारंभंत्यक्त्वाऋत्विग्भिःसहादौग्रहयागोक्तरीत्या आदित्यादि ग्रहेभ्योसमिद्भिः प्रत्येकं अष्टसंख्याभिर्हुत्वा (अत्र केचिद्गोप्रसव शान्ति होम मप्याचरन्ति) ततोघृतेन चरुणा पालाश खादिर समिद्भिर्घृताक्तपायसेन निर्ऋतिं जुहुयात्—ॐ यन्ते देवीति प्रजापतिर्ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो निर्ऋतिर्देवता घृतमिश्रं समित्पायसादि द्रव्य, होमे विनियोगः ॥ ॐ यन्तेदेवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशंग्रीवा स्वविचृत्यम् । तंते विष्याम्यायुषोन मध्य तथैतं पितुमद्धि प्रसूतः स्वाहा । इदंनिर्ऋतये नमम ॥१०८॥ ततोऽधिदेवमिन्द्राय—ॐ इन्द्रऽआसामिति प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दऽ इन्द्रोदेवता घृताक्त पायसादिद्रव्यहोमे विनियोगः ॥ ॐ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतुसोमः । देवसेनानामभिभंजतीनां जयंतीनां मरुतो यन्त्वग्रम् स्वाहा—इदमिन्द्राय० (२८) प्रत्यधिदेवेभ्योऽद्भ्यः—ॐ आपोहिष्ठेति सिंधुद्वीप ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः आपोदेवताः घृताक्त पायसादि होमे विनियोगः ।

ॐ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्जेदधातनः महेरणायचक्षसेस्वाहा इदमद्भ्योनमम (२६) तत उत्तराषाढादि देवतानां नाममंत्रै रष्ट संख्याहुतिभिः प्रत्येकं घृताक्त पायसेन चतुर्विंशति देवांजुहुयात्— ॐविश्वेभ्योदेवेभ्योनमः स्वाहा । इदंविश्वेभ्योदेवेभ्यो नमम ।८। ॐ गोविन्दायनमः स्वाहा—इदंगोविन्दाय नमम । ॐ वसुभ्यो नमः स्वाहा । इदंवसुभ्यो नमम । ॐ वरुणाय नमः स्वाहा— इदंवरुणायनमम । ॐ अजचरणाय नमः स्वाहा—इदमजचरणाय नमम । ॐअहिर्बुध्न्यायनमः स्वाहा । इदमहिर्बुध्न्यायनमम । ॐ पूष्णेनमः स्वाहा—इदंपूष्णे नमम । ॐ दस्राभ्यांनमः स्वाहा— इदंदस्राभ्यांनमम । ॐ यमायनमः स्वाहा—इदंयमायनमम । ॐ अग्नयेनमः स्वाहा—इदमग्नयेनमम । ॐ धात्रेनमः स्वाहा— इदंधात्रे० । ॐचन्द्रमसे नमः स्वाहा—इदंचन्द्रमसे० । ॐशिवाय स्वाहा इदंशिवाय० । ॐअदितयेस्वाहा-इदमदितयेनमम । ॐ वा- क्पतयेनमः स्वाहा—इदंवाक्पतये० । ॐ सर्पेभ्योनमः स्वाहा— इदँसर्पेभ्योन० । ॐ पितृभ्योनमः स्वाहा-इदंपितृभ्यो० । ॐ भगायनमः स्वाहा—इदंभगाय० । ॐ अर्यम्णेनमः स्वाहा— इदमर्यम्णे० । ॐ सवित्रेनमः स्वाहा । इदंसवित्रे० । ॐ त्वष्ट्रे नमः स्वाहा । इदंत्वष्ट्रेनमम । ॐ वायवेनमः स्वाहा—इदंवायवे०। ॐ शक्राग्निभ्यांनमः स्वाहा—इदंशक्राग्निभ्यां० ॐ मित्रायनमः स्वाहा—इदंमित्रायनमम । इतिनक्षत्र देवेभ्यो हुत्वा । रक्षोघ्न- कृसर होमं कुर्यात्—ॐ कृणुष्वेति पंचदश मन्त्राणां वामदेवऋषि- स्त्रिष्टुप्छन्दो रक्षोहाग्निर्देवता कृसरहोमे विनियोगः ॥ ॐ कृणुष्वपाजः प्रसितिन्नपृथ्वीं याहिराजे वामवा-२ँ ॥ इभेन । तृष्वीमनुप्रसितिं द्रूणानो स्तासि विध्यरक्षसस्तपिष्ठैः स्वाहा (१)- इति अष्टवारं जुहुयात्प्रतिमंत्रेण,—ॐ तवभ्रमासऽआशुया पतन्त्य- नुस्पृशधृषताशोशुचानः । तपूँ ष्यग्ने जिह्वापतंगान सन्दितो. विसृज विष्व गुल्काः स्वाहा । ८ वारम् । ॐ प्रतिस्पशो विसृज, तूर्णितमो भवा पायुर्विशोऽअस्याऽअदब्धः । योनोदूरेऽअघशंसो,

योऽअन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिराकधर्षीत् स्वाहा ।३। इत्यष्टधाहुत्वा ।८। ३० उदग्नेतिष्ठ प्रत्यातनुष्वन्गमित्राँओषतातिग्महेते । योनो ऽअरातिं समिधानचक्रे नीचातं धक्ष्यत सन्न शुष्कं स्वाहा ।८।वारं० ३० उर्ध्वोभव प्रति विध्याध्यास्मदा विष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने । अवस्थिरा तनुहि यातुजूनांजामिमजामिं प्रमृणीहि शत्रून्स्वाहा । । ८वारं । ३० सतेजातानि सुमतिं यविष्ठयईवते ब्रह्मणेगातुमैरत् । विश्वान्यस्मै सुदिनानिरायोद्युम्नान्यर्यो विदुरोऽअभिद्योत्‌स्वाहा ।८ वारं । ३० सेदग्नेऽअस्तुसुभगः सुदानुर्यस्त्वा नित्येन हविषाय उक्थैः । पिप्रीसति स्वऽआयुषिदुरोणे विश्वेदस्मै सुदिनासा सदिष्टिः स्वाहा । ८ वारं । ३० अर्चामिते सुमतिं घोष्यर्वाक्संते वावाता जरतामियंगीः । स्वश्वास्त्वासुरथा मर्जयेमास्मे क्षत्राणि- धारयेरनुद्यून्स्वाहा । ८वारं । ३० इहत्वा भूर्याचरेदुपत्मन् दोषा- वस्तर्दी दिवां समनुद्यन् । क्रीलन्तस्त्वा सुमनसः सपेमाभिद्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम् स्वाहा, । ८ वारं । ३० यस्त्वास्वश्वः सुहिरण्यो, अग्नऽउपयातिवसुमतारथेन । तस्यत्राताभवसि तस्य सखायस्तआथिथ्य मानुषग् जुजोषत्, स्वाहा । ८ वारं । ३० महोरुजामि बन्धुताबचोभिस्तन्मापितु र्गोतमादन्वियाय । त्वंनोऽअस्य वचसश्चिकिद्धि होतर्य विष्ठ सुक्रतो दमूनाः स्वा- हा ।८ वारंजुहुयात् । ३० अस्वप्नजस्तरणायःसुशेवां अतन्द्रासो वृकाऽअश्रमिष्ठाः । तेपायवःसध्र्यंचोनिषद्याग्ने तवनःपान्त्वमूरः स्वाहा । ८ वारं० ३० येपात्रवोमामतेयन्ते अग्नेपश्यन्तो अन्धं- दुरितादरक्षन् । ररक्षतान्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्तइद्रिपवो नाहदेभुः स्वाहाः । ८ वारं० । ३ॐ त्वयावय स धन्यस्त्वोतास्तव प्रणीत्यश्यामवाजन् । उभाशम्मासूदयसत्यतातेऽनुष्टुकृणुह्यहृयाणः स्वाहा ८ वारं० । ३० आयतेऽअग्ने समिधाविधेम प्रतिस्तोम शस्यमानं गृभाय । दहाशसोरक्षसः पाह्यस्मान्द्रुहोनिदो मित्रम होऽअवद्यातस्वाहा । इत्यष्टवारंकृसरान्नंजुहुयात । ३० गायत्र्या विश्वमित्रऋषिःगायत्रीछन्द सवितादेवताकृसरान्नहोमेविनियोगः

ॐ भुर्भुवःस्वाहा तत्सवितु० स्वाहा । ८ वारं जु° । ॐ जातवेद स्य कश्यप ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो दुर्गा देवता कृसरान्न होमे विनियोगः । ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निद᳚ हातिवेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुदुरिता त्यग्निः स्वाहा ।८। वारंजु० । ॐ त्र्यंबकमिति वसिष्टऋपिरनुष्टु-प्छन्दः रुद्रोदेवता कृसरान्नहोमे विनियोगः । ॐ त्र्यंबकंयजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृ-तात् स्वाहा । ८ वारंजु० । इदंरुद्रायनमम । उ० स्पर्शः । ॐ सीरायुंजन्तीति सौम्यबुध ऋपिर्गायत्रीछन्दःऋत्विक्स्तुतिर्देवता कृसरान्नहोमे विनियोगः । ॐ सीरा युंजन्तिकवयोयुगा वितन्वते पृथक् । धीरादेवेपुसुम्नया स्वाहा । वारंजु० ॐ तामग्नि वर्णा-मितिसौभ ऋपिस्त्रिष्टुप्छन्दो दुर्गादेवता कृसरान्नहोमे विनियोगः ॐ तामग्निवर्णां तपसाज्वलन्तीं वैरोचनींकर्मफलेषु जुष्टां । दुर्गां देवीं शरणमहंप्रपद्ये सुतरसितरसेनमः सुतरसितरसेनमः स्वाहा ८ वारं० । ॐ वास्तोष्पत इत्यस्यवसिष्ठऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वास्तो ष्पतिर्देवता कृसरान्नहोमे विनियोगः ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानी ह्यस्मान्त्स्वावेशोऽअनमीवोभवानः । यत्त्वेमहेप्रतितन्नोजुपस्वश-न्नोभव द्विपदेशंचतुष्पदे स्वाहा ८ । वा० । ॐ अग्निमीलइत्यस्य कण्वोमेधातिथिर्ऋपिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता कृसरान्नहोमे विनि योगः—ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्यदेवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् स्वाहा ८ । ॐ क्षेत्रस्येति वामदेवऋपि रनुष्टुप्छन्दः क्षेत्रपालोदेवता कृसरान्नहोमे विनियोगः ॐ क्षेत्रस्यपतिनावयं हितेनेवजयामसि । गामश्वंपोपयिन्त्वासनो मृलातीहशे स्वाहा ८ वारं० । ॐ गृणानेतिजमदग्निर्ऋपिर्गायत्रीछन्दो मित्रावरुणौ देवते कृसरान्नहोमे विनियोगः—ॐ गृणाना जमदग्निना योना घृतस्यसीदतम् । पार्तसोम मृतावृधा स्वाहा ८ वारंजु० । ॐअग्निं दूतमिति विरुपाक्षऋपिर्गायत्रीछन्दो ऽग्निर्देवता कृसरान्न होमे विनियोगः । ॐ अग्निंदूतंपुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे । देवांशाऽ

आसादयादिह स्वाहा । इत्यष्ट वारं० इति कृसरहोमः । अथमिश्र होमः—ततः श्रीसूक्तपंचदशमंत्रैः प्रतिमंत्राष्टसंख्याभिः समिदाज्यचरुद्रव्याणि जुहुयात्–ॐ हिरण्यवर्णामिति श्रीसूक्तस्य पंचदशमंत्राणांआनन्दकर्दमचिक्लीतेन्दिरासुतऋषयो मंत्रोक्ताश्छन्दांसि श्रीर्देवता समिदाज्य चरुहोमे विनियोगः । ॐ हिरण्य वर्णां हरिणींसुवर्णरजतस्रजाम् । चन्द्रांहिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह स्वाहा । एवमष्ठवारं प्रतिमंत्रेणजुहुयात्—ॐ ताम्मऽआवहजातवेदो, लक्ष्मीमनपगामिनीम् यस्यांहिरण्यंविन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् स्वाहा ।२। ॐ अश्वपूर्वांरथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् । श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीर्मादेवीर्जुषताम् स्वाहा ।३। ॐ कांसो स्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलन्तीन्तृप्तां तर्पयन्तीम् । पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वयेश्रियम् स्वाहा ।४। ॐचन्द्रांप्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियंलोके देवजुष्टामुदाराम् । तांपद्मनेमिंशरण महं प्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वांवृणोमि स्वाहा ।५। ॐ आदित्य वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पति स्तववृक्षोऽथविल्वः । तस्यफलानि तपसानुदन्तु मायाऽन्तरायाश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः स्वाहा ।६। ॐ उपैतुमांदेवसखः कीर्तिश्चमणिनासह । प्रादुर्भूतोऽस्मिराष्ट्रेऽस्मि न्कीर्तिमृद्धिंददातुमे स्वाहा ।७। ॐ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमेगृहात् स्वाहा। ।८। ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् स्वाहा।९। ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनांरूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां-यशः स्वाहा ।१०। ॐ कर्दमेन प्रजाभूतामयिसंभवकर्दम । श्रियं वासयमेकुले मातरंपद्ममालिनीम् । स्वाहा ।११। ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीतवसमेगृहे । निचदेवींमातरं श्रियं वासय मेकुले स्वाहा ।१२। ॐ आर्द्रांपुष्करिणीं पुष्टिंसुवर्णां पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मींजतवेदोमऽआवह स्वाहा ।१३। ॐ आर्द्रांयः करिणीं यष्टिंसुवर्णां हेममालिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं

लक्ष्मीं जातवेदोमऽआवह स्वाह ।१४। ताम्म ऽआवहजातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यंप्रभूतं गावो दास्यो ऽश्वा न्विन्देयंपुरुषानहम् स्वाहा ।१५। इति श्रीसूक्तेन प्रतिमंत्रेणाष्टधा पूर्वोक्तद्रव्यं हुत्वा । ततः पायसेन त्रयोदशसंख्यया सोमं वक्ष्यमाणमंत्रेण जुहुयात् ॐ त्वन्नः सोमेत्यस्यऐन्द्रोविमर्दऋषिः पंक्ति श्छन्दः सोमोदेवता पायसहोमेविनियोगः ॐ त्वन्नः सोमविश्व तोगोपा । ऽअदाभ्योभव सेधराजन्नपस्रिधो विवोमदेमानोदुः शंस ईशताविचक्षसे स्वाहा। इतित्रयोदशवारंहुत्वा। ततःस्रुवेण चतु राज्यं गृहीत्वा वक्ष्यमाणेन रुद्रहोमं कुर्यात्—ॐ यातेरुद्रेति प्रजापतिर्ऋषि रनुष्टुप्छन्दः एकरुद्रोदेवता आज्यहोमे विनियोगः ॐ यातेरुद्रशिवातनू रघोरा ऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ता भिचाकशीहि स्वाहा ॥ इति रुद्रहोमं कृत्वा अन्वारब्ध आचार्यःकुर्यात् ॐ अग्नयेस्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृतेनमम । ततोनवाहुतिहोमः—ॐ भूरादिव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि अग्निवायु सूर्यादेवताः प्रायश्चित्त होमेविनियोगः। ॐ भूः स्वाहा इदमग्नयेनमम। ॐ भुवः स्वाहा इदंवायवेनमम। ॐ स्वः स्वाहा इदंसूर्यायनमम।ॐ त्वन्नोअग्ने इत्यस्य वामदेव ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरुणौदेवते प्रायश्चित्तहोमे वि०। ॐ त्वन्नोऽअग्नेव्वरुणस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मात्स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम। ॐ सत्वन्नो अग्नेइत्यस्य वामदेव ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः अग्नीवरुणौदेवते प्रायश्चित्त होमे० ॐ सत्वन्नो ऽअग्ने ऽअवमोभवोतीनेदिष्ठोऽअस्या ऽउषसोव्युष्टौ । अवयक्ष्वनो व्वरुण ꣳ रराणो व्वीहिमृडीक ꣳ सुहवोन ऽएधिस्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यांनमम। ॐ अयाश्चाग्ने इत्यस्यवामदेवऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो ऽग्निर्देवता प्रायश्चित्तहोमे०ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया ऽअसि । अयानोयज्ञंव्वहास्ययानोधेहिभेषजꣳस्वाहा इदमग्नये

नमम । ॐयेतेशतमितिवामदेवऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणोदेवता प्रायश्चित्त० ॐयेतेशतंवरुणयेसहस्रंयज्ञियाःपाशावितितामहान्तः तेभि र्नोऽअद्यसवि तो त विष्णुर्विश्वेमुंचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदंवरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्योदेवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्के भ्यश्चनमम । ॐ उदुत्तममितिशुनः शेफऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो वरुणो देवता प्रायश्चित्तहोमे० । ॐ उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमं विमध्यमंश्रथाय । अथा वयमादित्यव्रतेतवानागसोऽअदितये स्यामस्वाहा । इदंवरुणायनमम । ॐ प्रजापतयेस्वाहा–इदंप्रजाप तयेनमम । ततोवर्हिर्होमः । ॐ स्वाहा । संस्रवप्राशनम् । पवित्र प्रतिपत्तिः । प्रणीताविमोकः । ततोयजमानः पूर्णपात्रं ब्रह्मणे दद्यात्—अद्येत्यादिसंकीर्त्यामुकोऽहं मूलशान्तिकर्मणः सांगफला प्तये, अपूर्णपूरणार्थं मिदंसदक्षिणं पूर्णपात्रं ब्रह्मणेतुभ्यमसुक शर्म्मणे सम्प्रददे तत्सन्नमम ॥ ॐ अक्रन्कर्म कर्मकृतःसहवाचा मयोभुवा । देवेभ्यःकर्मकृत्वाऽस्तंप्रेतसचाभुवः । इतिपठित्वा बलिदानंकुर्यात । तत्रादौपूर्वोक्त ग्रहयागोक्त बलिदानपद्धत्यनुसा रेण नवग्रहादिभ्यो विनायकादिभ्यो दिक्पालेभ्यश्चवलीन्दत्वा । ततोनिर्ऋत्यादिभ्योवलीन्दद्यात्—भूमौसदीपपायसदध्यक्षतवलिं वा संस्थाप्य, ॐनिर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधायसशक्ति कायएपसदीपवलिर्नमः ॥ इतिसम्पूज्य ॥ हस्तेजलंगृहीत्वा— भोभोनिर्ऋते, एतंसदीपं पायसवलिं भक्ष २ ममयजमानस्य सकुटुंवस्य आयुष्कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शांतिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता भव, ॐ मन्डलेशंचत्वांज्ञात्वा मयाभक्त्यानिवेदितम् । इदमर्घ्य मिदं पाद्यदीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् । इतिवल्युपरिजलंविसृजेत् ॥ एवंसर्वत्र—ॐ इन्द्रायनमः वलिंसम्पूज्य जलंगृहीत्वा भोभो- इन्द्रएतं० । ॐ अद्भ्यः सांगाभ्यः सपरिवाराभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्योनमः सं० भो० आपः०॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः सं० भो० विश्वेदेवा ममयजमानस्य आयुष्कर्त्तारः० । ॐ विष्णवेनमः । भोभो विष्णो० । ॐ वसुभ्योनमः, भोभोवसवः०

कर्त्तारौ भवन्तु। ॐ वरुणायनमः भोभोवरुण०। ॐ अजचरणायनमः भोभो अजचरण०। ॐ अहिर्बुध्न्यायनमः। भोभो अहिर्बुध्न्य०। ॐ पूष्णेनमः, भोभोःपूषन्०। ॐ अश्विभ्यांनमः भो अश्विनौ० कर्त्तारौ० ॐ यमायनमः। भोभोयम०। ॐ अग्नयेनमः, भो२अग्ने०। ॐ धात्रेनमः भो२धातः० ॐ चन्द्रायनमः भो२चन्द्र०। ॐ रुद्रायनमः। भो२रुद्र०। अत्रोदकस्पर्शः ॐ अदितयेनमः भो२अदिते० आयुष्कर्त्री०। ॐ गुरवेनमः। भो२गुरो०। ॐ सर्पेभ्योनमः भो२सर्पाः०। ॐ पितृभ्योनमः, भोभोःपितरः०। ॐ भगायनमः, भो२भग०। अर्यम्णेनमः भो २अर्यमन्०। ॐ सवित्रेनमः भोःसवितः०। ॐ त्वष्ट्रेनमः, भो२ त्वष्टः०। ॐ वायवेनमः, भो२वायो०। ॐ इन्द्राग्निभ्यांनमः, भो२इन्द्राग्नी० गृहीतम्०। आयुष्कर्त्तारौ०। ॐ मित्रायनमः, भो२मित्र०। ॐ रुद्रायनमः, भो२रुद्र०॥ एवंनैर्ऋत्यादि रुद्रान्ते भ्योवलीन्दत्वा उदकंसंस्पृश्य पूर्वोक्तक्षेत्रपालवलिपद्धत्युनुसारेण क्षेत्रपालायबलिंदद्यात्॥ ततःपूर्णाहुति संकल्पः—अद्येत्यादि संकीर्त्याऽमुकोहं ममामुकबालकस्य मूलनक्षत्र जननशान्ति होम कर्मणः न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं मृडाग्नौपूर्णाहुतिहोमं करिष्ये॥ ततोनारिकेलं पूगीफलंवारक्तवस्त्राछादितंकृत्वा स्रुचेस्रुवंच सम्पूज्य वक्ष्यमाणमन्त्रैर्जुहुयात्—तत्रमन्त्राः—ॐ समुद्रादूर्मि रितिसूक्तस्य वामदेवऋषि स्त्रिष्टुब्जगतीछन्दांसि, अग्निर्देवता, पूर्णाहुतिहोमेविनियोगः—ॐ समुद्रादूर्मिर्म्मधुमाँ॥२उदारदुपाꣳशुनासमम्मृतत्वमानट्। घृतस्यनामगुह्यंयदस्ति जिह्वादेवानाममृतस्यनाभिः।१। वयंनामप्रब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः। उपब्रह्माशृणवच्छस्यमानंचतुः शृंगोऽवमीद्गौरऽएतत्।२। चत्वारिशृङ्गात्रयोऽअस्यपादाद्वेशीर्षेसप्तहस्तासोऽअस्य। त्रिधाबद्धोवृषभोरोरवीति महादेवो मर्त्या २॥ऽ आविवेश।३। त्रिधाहितंपणिभिर्गुह्यमानं गविदेवासोघृतमन्वविन्दन्। इन्द्रऽएकꣳसूर्यऽएकंजजानवेनादेकꣳस्वधयानिष्टतक्षुः।४। एताऽअर्षन्ति

:द्यात्समुद्राच्छुतव्रजारिपुणानावचक्षे । घृतस्यधारा अभिचाक
ीमि हिरण्ययोव्वेतसोमध्यऽआसाम् ।५। सम्यक्स्रवन्तिसरि-
ोनधेनाऽअन्तर्हृदामनसापूयमानाः। एतेऽअर्षन्त्यूर्मयोघृतस्यमृगा
ऽइवक्षिपणोरीषमाणाः ।६। सिन्धोरिवप्राध्वनेशूघनासोव्वातप्रमि
यःपतयन्तियह्वाः । घृतस्यधाराऽअरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्मि
भिःपिन्वमानः ।७। अभिप्रवन्तसमनेवयोषाःकल्याण्यः स्मयमाना
सोऽअग्निम् । घृतस्यधारासमिधोनसन्तताजुषाणोहर्यतिजात
वेदाः ।८। कन्याऽइवव्वहतुमेतवा ऽ उअंज्यञ्जानाऽअभिचाकशी
मि । यत्रसोमःसूयते यत्रयज्ञोघृतस्यधाराऽअभितत्पवन्ते ।९।
अभ्यर्षतसुष्टुतिंगव्यमाजिमस्मासुभद्राद्रविणानिधत्त । इमंयज्ञं
नयतदेवतानोघृतस्यधारामधुमत्पवन्ते ।१०। धामन्तेविश्वं भुवन
माधिश्रितमन्तः समुद्रेहृद्यन्तरायुषि । अपामनीकेसमिथेयऽआ-
भृथस्तमश्याम मधुमन्तंतऽऊर्मिम्स्वाहा ।११। ॐ प्रजापतेनत्वे
तिहिरण्य गर्भऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः प्रजापतिर्देवता पूर्णाहुतिहोमे
विनियोगः । ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणिपरिताबभू
व यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नोऽअस्तुव्वयँ स्यामपतयोरयीणाम् स्वा
हा।१।ॐपूर्णादर्वीति,औणनाभऋषिरनुष्टुप्छन्दः इन्द्रोदेवतापूर्णा
हुतिहोमेविनियोगः । ॐ पूर्णादर्विपरापतसुपूर्णापुनरापत । व्व
स्नेवविक्रीणाव्वहाऽइषमूर्जँ शतक्रतो स्वाहा । ॐ सप्ततेऽअ
ग्नेऽइतिसप्तऋषय स्त्रिष्टुप्छन्दोऽग्निर्देवता पूर्णाहुतिहोमे विनि
योगः—ॐसप्ततेऽअग्नेसमिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्त-
धाम प्रियाणी ॥ सप्तहोत्राः सप्तधात्वायजन्ति सप्तयोनि रापृण-
स्वघृतेनस्वहा। इतिपूर्वोक्तचतुर्दशमंत्रैरविच्छिन्नघृतधारभिरग्निंतृ
प्त्वा, ततोघृताभिघारितं रक्तकौशेयवस्त्रवेष्टितंश्रीफलंस्रुवेकृत्वो
त्थाय—ॐ मूर्द्धानमितिभरद्वाजऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः वैश्वानरोदेवता
मृडाग्नौपूर्णाहुतिहोमेविनियोगः । ॐ मूर्द्धानंदिवोऽअरतिंपृथि
व्यावैश्वानरमृऽआजातमग्निम् । कविँ सम्राजमतिथिंजनाना
मासन्नापात्रं जनयंतदेवाः स्वाहा—इतिपूर्णाहुतींहुत्वाऽग्निं

मेधां प्रार्थयेत् । ॐ सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिंद्रस्यकाम्यम् । सनिम्मेधा मयासिष ॐ स्वाहा ।१। यान्मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते । तयामामद्यमेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ।२। मेधाम्मे वरुणो ददातुमेधामग्निः प्रजापतिः मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधांधाता ददातुनः स्वाहा । ३ । श्रद्धां मेधांयशःप्रज्ञां विद्यां पुष्टिं बलंश्रियम् । आयुष्यं द्रव्यमारोग्यं देहिमे हव्यवाहन ।४। ततो वक्ष्यमाण मन्त्रैः प्रतिमंत्रं ललाटाच्चिबुकपर्यन्तं पाणिप्रलपन पूर्वकं मुखं प्रोंछेत् । ॐ तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वंम्मे पाहि । ॐ आयुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मेदेहि । ॐ वर्चोदाऽअग्नेऽसि वर्चोमेदेहि । ॐ अग्ने यन्मे तन्वाऽऊनंतन्मऽआपृण । ॐ मेधांमे देवःसविता आदधातु । ॐ मेधांमे देवी सरस्वती आदधातु । ॐ मेधामश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ । ततोंगालभनं कुर्यात्—ॐ अंगानि चमऽआप्यायताम् । सर्वांगान्युपस्पृशेत् । ॐ वाक्चमऽआप्यायतामितिमुखे । ॐ प्राणश्चमऽआप्यायताम्–नासिकायां । ॐ चक्षुश्चमऽआप्यायताम्–नेत्रयोः । ॐ श्रोत्रंचमऽआप्यायताम्–कर्णयोः ॥ ॐ यशोबलंचमऽआप्यायताम्—बाह्वोः ॥ अत्रोदकं स्पृष्ट्वा तत स्त्र्यायुप करणं–ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः–इतिललाटे । ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्–इतिग्रीवायाम् । ॐ यद्देवेषुत्र्यायुषम्–इतिदक्षिणांसे । ॐ तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्–इतिहृदि । ततोरुद्र कुम्भस्य मुखं वा दक्षिणतः स्पृष्ट्वा रुद्रैकादशिनीं,शतवारं त्र्यंबक मंत्रंच जपेत । ततो निर्ऋति कुम्भंरुद्रकुंभं ग्रहादींश्च पंचोपचारैः सम्पूज्य । शान्तिमण्डपस्योत्तरभागे, वा गृहांगणे गोमयेनोपलिप्य तत्र फलक पीठं संस्थाप्य तत्र श्वेतवस्त्रं प्रसार्य, तदुपरि सपत्निपुत्रो यजमान उपविष्टःशङ्खवाद्यादिरवे जायमाने मङ्गलगीतानि शृण्वन् पत्नीं वामभागे कृत्वा—संकल्पं कुर्यात्–अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य सपुत्र पत्निकोऽहं ममपुत्रस्यामुकबालकस्य मूलनक्षत्रामुकपादजनन सूचितारिष्ट निवृत्तये शुभ फलप्राप्तयेच अभिषेकमंत्रैः शान्त्यन्त स्नानं करिष्ये—ततः सर्वौषधीभिरनु-

लिप्ताङ्गस्य नूतन वस्त्रं परिधाप्यमानस्य प्राङ्मुखो पविष्ठस्य वा यजमानस्याचार्यादयः सर्वकलशोदकमेकीकृत्वाउत्थाय वक्ष्यमाण मन्त्रैरभिषेकं कुर्युः। तत्रमन्त्राः—ॐअक्षीभ्यान्ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि। यक्ष्मं शीर्षण्यंमस्तिष्काज्जिह्वाया विवृहामिते। १। ग्रीवाभ्यस्तऽउष्णिहाभ्यः कीकसाभ्योऽअनूक्यात। यक्ष्मंदोषण्यंमंसाभ्यांबाहुभ्यांविवृहामिते।२। आंत्रेभ्यस्तेगुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि। यक्ष्मंमतःस्नाभ्यांयक्नप्लाशिभ्योविवृहामिते।३। ऊरुभ्यान्तेऽअष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णिभ्यां प्रपदाभ्याम्। यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाद्भंससो विवृहामिते।४। मेहनाद्वनं करणा ल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः। यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तदिदं विवृहामिते।५। अङ्गादङ्गाल्लोम्नोलोम्नो जातं पर्वणि पर्वणि। यक्ष्मं सर्वस्मा-दात्मनस्तदिदं विवृहामिते।६। ततः पावमानीभिश्च ॐ पुनन्तुमापितरः सोम्यासःपुनन्तुमापितामहाः। पुनन्तुप्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा।७। पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तुप्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै।८। अग्नऽआयूँषिपवसऽआसुवोर्जमिषंचनः। आरे बाधस्वदुच्छुनाम्।९। पुनन्तुमादेव जनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा।१०। पवित्रेण पुनिहिमा शुक्रेण देवदीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ २॥ऽ रनु।११। यत्तेपवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्मतेन पुनातुमा।१२। पवमानःसोऽअद्यनःपवित्रेण विचर्षणिः। यःपोता सपुनातुमा।१३। उभाभ्यां देवसवितः पवित्रेण सवेनच। मांपुनीहिविश्वतः।१४। वैश्वदेवी पुनीती देव्यागा-द्यस्यामिमा वह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः। तयामदन्तः सधमादेषु वयँस्याम पतयोरयीणाम्।१५। ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन। महेरणाय चक्षसे।१६। ॐ योवः शिव [illegible] भाजयते हनः। उशती रिवमातरः।१७। तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्यक्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथाचनः।१८। शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये। शंयोरभिस्रवन्तुनः।१९।

ईशाना वार्याणांयक्षन्तीश्चर्षणीनाम् ।आपोयाचा मिभेषजम् ।२०। अप्सुमेसोमोऽअब्रवीदन्तर्विश्वानिभेषजा । अग्निंचविश्वशम्भुवम् । २१ । आपःप्रणीतभेषजं वरूथं तन्वे ३ मम । ज्योक्चसूर्यंदृशे । २२ । इदमापःप्रवहत यत्किंच दुरितंमयि । यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वाशेपऽउतानृतम् । २३ । आपोऽअद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि । पयस्वानग्नऽआगहि तम्मासंसृज वर्चसा । २४ ।ॐ यतऽ इन्द्रभयामहे ततोनोऽअभयं कृधि । मघवंछग्धितव तन्नऽऊतिभिर्विद्विषोविमृधोजहि । २५ । त्वंहि राधस्पते राधसोमहः क्षयस्यासि विधतः । तंत्वा वयं मघवन्निन्द्रगिर्वणःसुतावन्तो हवामहे । २६ । ॐ सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषा हार्षमेनम् । शतंयथेमंशरदोन यातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम् ।२७। शतंजीव शरदो वर्द्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमुवसन्तान् । शत मिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः । २८ । आहार्षन्त्वा विद्विन्त्वा पुनरागाः पुनर्नव । सर्वाङ्ग सर्वंतेचक्षुः सर्वमायुश्चतेविदम् । २९ । ॐ देवस्यत्वा सवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै वाचोयन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्ये नाभिषिंचामि । ३० । देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् । अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिंचामि । ३२ । देवस्यत्वा सवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् । सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिंचामि । ३३ । देवस्यत्वासवितुःप्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् । इन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियैयशसेऽभिषिंचामि । ३४ । ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरंगमंज्योतिषांज्योतिरेकं तन्मेमनःशिवसंकल्पमस्तु ।३५। येनकर्म्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषुधीराः । यद पूर्वंयक्ष मन्तः प्रजानां तन्मेमनः शिवसंकल्पमस्तु । ३६ । यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्चयज्योतिरंतरमृतं प्रजासु । यस्मान्नऽऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मेमनः० ।३७। येनेदंभूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृते

नसर्वम् । येनयज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मेमनः शिव० ।३८। यस्मि-न्नृचः सामयजूँषियस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभा विवाराः । यस्मिं श्चित्तँ सर्वमोतंप्रजानां तन्मेमनः० । ३६ । सुषारथिरश्वानि वयन्मनुष्यान्नेनीयतेभी शुभिर्वाजिनऽइव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे० । ४० । ३० तच्छँय्योरावृणीमहे गातुंयज्ञपतये । दैवी स्वस्तिरस्तुनः स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वंजिगातुभेषज ँ शन्नोऽअस्तुद्विपदेशं चतुस्पदे । ४१ । अतः परं शौनकोक्तैः रष्टदिक् पाल मन्त्रैरभिषेकं कुर्यात्—३० योऽसौवज्रधरोदेवो महेन्द्रो गज वहानः । मूलजात शिशोर्दोषं माता पित्रोर्व्यपोहतु । १ । योसौ शक्ति धरोदेवो हुतभुग्मेष वाहनः । सप्तजिह्वः सदेवोऽग्निर्मूल दोषंव्यपोहतु । २ । योऽसौदंडधरोदेवो धर्म्मो महिष वाहनः । मूलजात शिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु । ३ । योऽसौखड्गधरो देवो निर्ऋतिराक्षसाधिपः । प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गण्डान्त सम्भवम् । ४ । योऽसौपाशधरोदेवो वरुणश्चजलेश्वरः। नक्रवाहः प्रचेतानो मूलोत्थाऽघंव्यपोहतु । ५ । योऽसौदेवो जगत्प्राणो मारुतोमृगवाहनः । प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शान्तिदः।६। योऽसौनिधिपतिर्देवोगदाभृन्नरवाहनः । मातापित्रोः शिशोश्चैव मूलदोषं व्यपोहतु ।७। योऽसाविन्दुधरोदेवः पिनाकीवृष वाहनः। आश्लेषा मूल गण्डान्त दोषमाशु व्यपोहतु । ८ । विघ्नेशः क्षेत्र पोदुर्गा लोकपाला नवग्रहाः सर्वदोष प्रशमनं सर्वं कुर्वन्तु शान्तिदाः ‌। ६ । ततोऽभिषेक विधौ पूर्वोक्तैः पौराणिकमन्त्रैः सुरास्त्वा मभिषिंचन्त्वित्यादिभि र्व्यासाष्टकेनाऽपिचाभिषिंच्य, ३० शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु वृद्धिरस्तु यच्छ्रेयस्तदस्तु यद्रोगः शोकः कष्टं दुःखं द्रारिद्र्यं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु, ३० भूर्भुवः स्वः, अमृताऽभिषेकोऽस्तु ।। इत्यभिषिंच्य ततः सपत्नि पुत्रं यजमानं वस्त्रान्तरित कुम्भाभ्यां स्नापयित्वा, ततोयजमानःशुक्लवस्त्राणि परिधाप्य, पूर्वोक्त प्रकारेण घृतच्छाया दर्शनं कृत्वा स्नानवस्त्रा-ण्याचार्याय दद्यात् । ततोगोदानम्—गोदानपद्धत्युक्त प्रकारेणगां

सम्पूज्य देवादींस्तर्पयित्वा, आचार्यं सम्पूज्य संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकराशिः सपत्नि पुत्रोऽहं ममास्य पुत्रस्य मूलनक्षत्र प्रथमाद्यमुकपाद जनित सूचितारिष्ट निवृत्ति पूर्वक सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं शुभफल प्राप्त्यर्थेच शौनकोक्त विधानेन कृतस्य मूलशान्तिकर्मणः साद्गुण्यार्थमिमां सवत्सां कृष्णांगां (गवाभावे गोनिष्क्रयीभूतं हिरण्यं रजतंवा) तथा मूलर्क्षदेव निर्ऋति सुवर्ण प्रतिमामधिदेव प्रत्यधिदेव सहितां सवस्त्र कुम्भां चआचार्यायामुक शर्मणेतुभ्यं संप्रददे, ततःप्रतिष्ठांकृत्वा प्रदक्षिणा चतुष्टयं विधाय, ततो रुद्रजापिनं ब्राह्मणं कृष्णमनड्वाहंच सम्पूज्य वृषभे चन्दनेन त्रिशूलचक्र चिन्हे कृत्वा–संकल्पः–अद्येत्यादि० मूलशांति कर्मणि रुद्रैकादशिन्यादिपाठ कर्मणः साद्गुण्यार्थं श्री रुद्रप्रतिमां कृष्णमनड्वाहं सवस्त्रं रुद्रकुम्भंचामुकशर्मणे रुद्रजापिने सप्रतिष्ठितं तुभ्यंदास्ये,ॐतत्सन्नमम। ततःशान्तिसूक्तादिजापकेभ्यो ब्राह्मणेभ्योऽपिदक्षिणांदत्वा भूयसीदक्षिणा संकल्पंचकृत्वा यथांशंविभज्य ततआचार्यादयो यजमानस्यसपरिवारस्य पूर्वोक्त–पद्धत्यनुसारेण तिलकाक्षतादिरोपणं तत्तन्मंत्रै रक्षाबन्धनं त्र्यायुष करणंच कृत्वाशीर्वादंदद्युः यजमानोऽपि प्रणिपत्यक्षमापयेत्। ततः आवाहित देवानग्निंच सम्पूज्य–ॐ यान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम् । इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनायच । ॐ गच्छगच्छेति च विसृज्य, ततः पायसादि भोज्यपदार्थैः शतंपंचाशद्दशवा ब्राह्मणान्यथाशक्तिभोजयेत अनेन शान्तिकर्मणा श्री भगवान्यज्ञपुरुषो निर्ऋतिदेवश्च प्रीयेताम् । ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वजनैः सहभुंजीत ॥

इति मूलजनन शान्तिपद्धतिः ।

अथ आश्लेषा जनन शान्तिपरिभाषा—उक्तंच शान्तिसारे—आश्लेषायान्तु-जतानां शान्तिं वक्ष्याम्यतः परम् । जातस्य द्वादशाहे च शान्तिहोमं समाचरेत् । असम्भवे तु जन्मर्क्षे अन्यस्मिन्वा शुभे दिने । स्नातोऽभ्यंगादिभिस्तस्मिन्वरयेद्द्विजोत्तमान् । अग्न्यादिग्रहदिनसंख्या मूलवत् । विभवे पंचकुंभास्तु-द्वयं वा तदलाभतः । देवतास्थापने चैकमेकं रुद्राभिमन्त्रणे । मूलवत्प्रकारेण कुम्भे निक्षिप्य पूजयेत् । गोमया-लेपिते देशे धान्येनोपरिशोभिते । पंकजं कारयेत्सम्यग्विंशद्दलान्वितम् । तण्डुलैः कारयेद्धीमान् रक्तपीतसितासितैः । कर्णिकायां न्यसेद्व्रीहीन् स्थापयेत्तेषु कुम्भकम् । आजिघ्रकलशेत्यनया कलशस्थापनं शुभम् । इमं मे गंगे मंत्रेण-पूरयेत्तीर्थवारिणा । कुम्भं च वस्त्रगन्धाद्यैस्तत्तन्मन्त्रैः प्रपूजयेत् । सा फलोनीरितिमन्त्रेण चिपेद्द्व्यौषधादिकान् । कुंभोपरिस्थपात्रे तु आश्लेषाप्रतिमां यजेत् । निष्क, निष्कार्धपादैर्वा स्वर्णादिस्वास्वशक्तितः । तत्पूर्वोत्तरनक्षत्रे दक्षिणो-त्तरयोर्यजेत् । इन्द्रादीशानपर्यन्तमितरस्थापिपूजयेत् । नक्षत्रदेवतेति केचित् । मूलोक्तेनविधानेन कुम्भयोरभि-मन्त्रणम् । रुद्रपीठकुम्भे तु पूर्ववच्च समाचरेत् । मूलशान्तिवत्पंचामृतस्नानादिपुराणान्तमित्यर्थः । नमो-ऽस्तुसर्पेभ्यः पूजामन्त्रइतीरितिः सर्पाः रक्ताक्षिनेत्राश्चद्विभुजाः पीतवस्त्रकाः । फलकमिराप्ती दगदिव्याभरण भूषिताः । एवं ध्यात्वा ततोऽभ्यर्च्य होमकर्म समाचरेत् । वह्नि स्थापनमार्गेण, आचार्यस्याश्रयाचरेत् । मुखान्तं कनिष्ठहविगदायशाखतः । इदं सर्पेभ्यो जुहुयात्सर्पस्याधिदेवतम् । इदंहवि० अष्टोत्तरशत-वाथ अष्टाविंशतिमेव च । मूल नक्षत्रवच्चैवहोमकर्म समाचरेत् । पूर्णाहुत्यन्तकर्माणि कृत्वा संपातं तथा कुम्भे-जलं च क्षिप्य अभिषेकमथाचरेत् । दारपुत्रसमेतस्य यजमानस्य पूर्ववत् । अभिषिंचेत्तथाचार्य ऋत्विग्भि-सहितस्तथा अभिमन्त्रितकुंभाद्भिरभिषेचनमारभेत् । तथा पौराणमंत्रैश्च पल्लवैरभिषेचयेत् । आश्लेषाऽऽदि-जातस्य मातापित्रोर्धनस्य च । भ्रातृज्ञातिकुलस्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु । योऽसौ नागेश्वरो नाम अधिदेवो हृद-ये स्थितः । मातापित्रोः शिशोश्चैव गण्डान्तं च व्यपोहतु । पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरः सदा । सर्पनक्षत्र-जातस्य चिरां च शान्तिर्भवतान् । एवं कृतेऽभिषेके तु सर्वशान्तिर्भवेद्ध्रुवम् । ततः शुक्लाम्बरधरो यजमानः सुभूषितः । दक्षिणाभिस्ततो विप्रान्मूलवच्च प्रतोषयेत् । भुक्तवद्भ्यश्च विप्रेभ्यः स्वीकुर्यादाशिषं गृही । इत्युक्तेन विधानेन अरिष्टं नापोहति । **अथोत्तरांगपूजान्ते सर्पार्घमन्त्रः**—सर्पाधीशनमस्तुभ्यं नागा-नां च गणाधिप । गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वारिष्टप्रशान्तये । मूलनक्षत्रवत्कुर्यात्सार्पगण्डे च नामतः ।

॥ इति शौनकोक्त आश्लेषाशान्ति विधिः ॥

॥ अथाश्लेषाशान्तिपद्धतिः ॥

अथाश्लेषोत्पन्नशिशोः पिता द्वादशाहे वा जातस्य सार्पजन्मर्क्षे वा चन्द्रतारानुकूले शुभदिने मूलनक्षत्रवद् मण्डपादिकं कृत्वा

मण्डपोत्तरभागेयज्ञान्तस्नानाऽभिषेकार्थंचमण्डपंविधाय, मंडपेस तिमंडपपूजां कृत्वा, गोमयोपलिप्तेदेशे शुभासनेउपविश्य, दीपं-प्रज्वलय्य, आचम्यसर्षपभूतोत्सादनं कृत्वा, शान्तिपाठंकृत्वा—संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौस्मृत्वा ममास्यपुत्रस्य आश्लेषा जन्मर्क्षसूचित पित्राद्यरिष्टादि शान्तिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं, गोमुखप्रसवपूर्वकं आश्लेषा शान्तिंकरिष्ये, तत्पूर्वाङ्गत्वेन गणेशादि पंचांगदेवतानां पूजनंचकरिष्ये ॥ ततोगणेशादीन्पूजयित्वा—आचार्यादीन् वृणुयात्-ततअष्टौचतुरोवा ब्राह्मणान्सम्पूज्य-संकल्पः-अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममास्य आश्लेषानक्षत्रजातस्य, आश्लेषाशान्तिकर्म कर्तुंकारयितुंच आचार्यादीनां वरणंकरिष्ये-ततोवरणद्रव्यं, आचार्यब्रह्मासदस्य ऋत्विक् एकादशिन्यादि, अप्रतिरथपाठशान्तिसूक्तादि पाठकारकादिभ्यो दद्यात् ॥ इतिवा न्वृत्वा-यथाविहितं कर्मकुरुध्वम्-यजमानोक्तिः ॥ ततःकरवामः-प्रत्युक्तिः । वापृथक्पृथक्वृणुयात-तत्रादौगोमुखप्रसवशान्तिं पूर्वोक्तविधिनाकृत्वा । आचार्यो मंडपेवागृहाभ्यंतरे शान्तिस्थलंपञ्चगव्येन वागंगादिजलेन, ॐ आपोहिष्ठामयोभुवेतित्र्यृग्भिः, भूमिं सम्प्रोक्ष्य मंडपेसति तत्पूजनंकृत्वा, तत्रादौनैर्ऋत्यभागे स्थंडिले पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निं स्थापयित्वातद्रक्षार्थं द्रव्यंनियुंज्य ॥ ततो होमवेदीशानभागे गोमयोपलिप्तेस्थले रंगरंजितस्थलंनिर्माय-तत्रद्रोणप्रमाण व्रीहीन्निक्षिप्य, तदुपरिव्रणरहितं रक्तकुम्भंसंस्थाप्य, तत्कुंभस्यचतुर्दिक्षुकुम्भचतुष्टयं संस्थाप्य, मध्यकलशाभ्यंतरे मूलपरिभाषोक्त शतमूलानितदभावे-तुलसी, सहदेवी, शतावरी, अपामार्ग, कुशान्निक्षिप्य, कलशस्थापनविधिना संस्थाप्यसम्पूज्य चतदुपरि तंडुलपूर्णताम्रपात्रंस्थापयित्वा तत्ररक्तवस्त्रंप्रसार्य, ततः अग्न्युत्तारणपूर्वकां सुवर्णनिर्मितां श्रीरुद्रप्रतिमांसंस्थाप्यसंकल्पः-अद्येत्यादिसंकीर्त्य, अमुकोऽहं, आश्लेषाशान्तिकर्मणि रुद्रकलशोपरि, सुवर्णप्रतिमायां श्रीरुद्रस्य पूजनंकरिष्ये, ॐ एतन्ते० इति पठित्वा, ॐ भूर्भुवःस्वः, श्रीरुद्रात्रसुवर्णप्रतिमायां सुप्रतिष्ठितो

वरदोभव । इतिप्रतिष्ठाप्य, ३० त्र्यंबकंयजामहे० । अनेनैव वापूर्वोक्त वेदोक्त पूजापद्धत्यासम्पूज्य, तत्ररुद्रजापकःकुम्भंस्पृष्ट्वा रुद्रैकादशिनींपठेत् ॥ ततोऽष्टशतवारं त्र्यंबकमन्त्रं, पावमानीश्च, ३० पुनन्तुमापितरः, इत्यादिनव, सकृज्जपेत ॥ ततश्चप्रतीरथादिसूक्त जापकःपूर्वोक्त मूलशान्त्युक्तप्रकारेण पूर्वादिकुम्भान्स्पृष्ट्वा चतुर्ष्कुम्भेपुतत्रोक्तानि मन्त्रसूक्तानिजपेत ॥ (ग्रंथविस्ताराद्नात्रसंग्रहीतानि) ततरुद्रकुंभोत्तरभागेचतुर्विंशतिदलंकमलंकर्णिकासहितं, पिष्टादिनाविलिख्य, रंगेनपूरयित्वा तन्मध्येकर्णिकायां सुश्लक्ष्णं सुवर्णकलशं वारजत, ताम्रमृदन्यतमकलशं, संस्थाप्य तत्राभ्यन्तरे शतमूलानितदभावे, विष्णुक्रान्ता शतावरी सहदेवी कुशातुलसीश्चकुंकुमं पंचसुगन्धिद्रव्यं सप्तमृदादिप्रक्षिप्य, कलश स्थापन पूजनविधिना-संस्थाप्य सम्पूज्यच, तदुपरितास्रादिपूर्णपात्रेश्वेतवस्त्रोपरि, अष्टदलकमलंविलिख्य कर्णिकायां, अग्न्युत्तारणपूर्विकांसर्पाकृतिं, आश्लेषादेवसर्पप्रतिमां, तद्दक्षिणेअधिदेवतागुरोः, तद्वामे प्रत्यधिदेवता पितॄणांप्रतिमाःसंस्थाप्य, आवाहनंकुर्यात्-३० भूर्भुवःस्वः मध्येसुवर्णप्रतिमायां, आश्लेषानक्षत्र देवाःसर्पाः, इहागच्छन्त्विहतिष्ठन्तु पूजार्थंच आवाहयामि स्थापयामि । तद्दक्षे-३० भूर्भुवःस्वः सर्पाधिदेवपुष्पनक्षत्राधिपगुरो इहागच्छेहतिष्टपूजार्थंत्वां आवाहयामि स्थापयामि । तद्वामे— ३० भूर्भुवःस्वः सर्पप्रत्यधिदेवाः मघानक्षत्रेशाःपितरः, इहागच्छन्त्विहतिष्ठंतु, पूजार्थंच आ० स्था० । ततोभूमौ चतुर्विंशतिदलेषु पूर्वादिक्रमेण—पूगीफलानि साक्षतपुंजानि प्रतिमावासंस्थाप्य तत्रैवक्रमेण—३० भूर्भुवःस्वः पूर्वफाल्गुनीदेवभग, इहागच्छेह तिष्ठपूजार्थंस्थापयामि । एवंसर्वत्र—३० भू० उत्तराफाल्गुनीदेव अर्यमन्, इहा० । २ । ३० भू० हस्तदेवरवेइहा० । ३ । ३०-भू० चित्रादेवत्वष्टः इहा० । ४ । ३० भू० स्वातीदेव, वायो, इहा० ।५। ३० भू० विशाखादेवौ शक्राग्नी इहागच्छतम्, इहतिष्ठतंपूजार्थं वामावाहयामिस्था० ।६। ३०भू०अनुराधादेवमित्र,इहा० ।७। ३०भू०

ज्येष्ठादेवइन्द्र, इहा० । ॥८॥ ॐ भू० मूलदेवनिर्ऋते इहा० ॥९॥ उदकस्पर्शः—ॐ भू० पूर्वाषाढादेवतोय, इहा० ॥१०॥ ॐ भू० उत्तराषाढादेवा विश्वेदेवाः इहागच्छन्त्विहतिष्ठन्तु पूजार्थं युष्मान्वआवाहयामि स्थापयामि॥११॥ ॐ भू० श्रवणदेवविष्णो इहा० ॥१२॥ ॐ भू० धनिष्ठादेववसवः इहागच्छन्त्विहतिष्ठन्तु पूजार्थं व आवाहयामि स्था० ॥१३॥ ॐ भू० शतभिषग्देववरुण इहा० ॥१४॥ ॐ भू० पूर्वाभाद्रपदादेव, अजचरण इहा० ॥१५॥ ॐ भू० उत्तराभाद्रपदादेव अहिर्बुध्न्य इहा० ॥१६॥ ॐ भू० रेवती देवपूषन, इहा० ॥१७॥ ॐभू० अश्विनीदेवौ दस्रौ इहागच्छतं इहतिष्ठतं पूजार्थं युवामावाहयामि स्थापयामि ॥१८॥ ॐ भू० भरणीदेवयम इहा० ॥१९॥ ॐ भू० कृत्तिकादेव अग्ने इहा० ॥२०॥ ॐ रोहिणीदेव प्रजापते, इहा० ॥२१॥ ॐ भू० मृगशिरसोदेव सोम इहा० ॥२२॥ ॐ भू० आर्द्रादेवशिव इहा० ॥२३॥ उ० स्प० ॐ भु० पुनर्वसुदेव अदिते इहा० ॥२४॥ एवं नक्षत्रदेवान्संस्थाप्य एतन्तेतिपठित्वा । ॐ भूर्भुवः स्वः कर्णिकामध्ये कलशोपरि प्रतिमासु आश्लेषानक्षत्रदेवताः सार्पाः साधिदेव प्रत्यधिदेव गुरु पितरसहिताः तथा भूमौ कमलदलेषु पूर्वाफाल्गुन्यादिचतुर्विंशति नक्षत्रदेवताः भगाद्यदितिपर्यन्ताः इहागच्छन्त्विहतिष्ठन्तु सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु । इति प्रतिष्ठाप्य, पूजासंकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या ऽमुकोऽहंममास्य बालकस्यामुकस्य आश्लेषानक्षत्रामुकपादजनित सूचितारिष्टनिरसनपूर्वकं सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं चतुर्विंशतिदलोपरि प्रतिमासु आवाहित सर्पाद्यदितिपर्यन्तानां साधिदेवप्रत्यधिदेव सहितानांयथालब्धोपचारेण पूजनंकरिष्ये—तत्रादौ कलशोपरि सर्पान्ध्यायेत ॐ सर्पारक्तास्त्रिनेत्राश्च द्विभुजाः पीतवस्त्रकाः । वरदाभयहस्ताश्च दिव्याभरणभूषिताः । तद्वद्गुरुम् ॐ पीताम्बरः पीतवपुः किरीटीचतुर्भुजोदेवगुरुःप्रशान्तः। दधाति दंडंचकमंडलुंच तथाक्षसूत्रं वरदोऽस्तुमह्यम् । वामेपितॄन्-ॐ शुक्लाम्बराः शुक्लगन्धाःशुक्लयज्ञोपवीतिनः । आत्मनोऽभिमुखा-

सीना ज्ञानमुद्रानिरायुधाः । इतिध्यात्वा सर्पपूजार्थमंत्रः—ॐ नमोऽस्तुसर्पेभ्योयेकेचपृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः । ॐ सर्पेभ्योनमः इति संपूज्य, गुरुपूजनेमंत्रः—ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहिचित्रम् । ॐ गुरवेनमः सम्पूज्य, पितृपूजनेमंत्रः—ॐ पुनन्तुमापितरःसोम्यासः पुनन्तुमा पितामहाः पुनन्तुप्रपितामहाःपवित्रेणशतायुषा । ॐ पितृभ्योनमः संपूज्य अन्येषां पूर्वाफाल्गुन्यादिदेवानां नाममंत्रैर्वा पुरुषसूक्तेन पूजनं कुर्यात् । ततो होमस्थंडिलोत्तरे कलशस्थापन विधिना कलशं संस्थाप्य सम्पूज्य तत्रैवकलशे सूर्यादिनवग्रहान्साधि प्रत्यधिदेव सहितान् ग्रहयागोक्तपद्धत्यनुसारेणावाह्य, लोकपालक्षेत्रपाला दींश्चावाहयेत् तेनैवविधिना संपूज्य, ततो होमवेद्यां ब्रह्मोपवेशनादि अर्थवत्प्रोक्षणान्तं कर्मकृत्वा, होमद्रव्याणि, चरुंपायसंश्रपयित्वा कृसरान्नं च पाचयित्वा, समिदाज्यादि संपाद्यपर्युक्ष्यच, वरदनामाग्निं ॐ एतंते० पठित्वा ॐ भू० वरदनामाग्ने इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितो वरदोभव, ॐ वरदनामाग्नयेनमः सम्पूज्य रेखाभ्योनमः ॐ जिह्वाभ्योनमः सम्पूज्य, ततोऽग्नि प्रणीतयोर्मध्ये संस्रवधारणार्थं प्रोक्षणीपात्रंनिदध्यात् ततो यजमानो द्रव्यत्यागंकुर्यात्—संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्याऽमुकोहं सग्रहयाग, आश्लेषा शांतिकर्मणि तत्र प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, घृताहुतिभिः समिच्चर्वाज्य तिलाहुतिभिरष्टसंख्याभि र्नवग्रहान् तदधिदेवताः प्रत्यधिदेवताश्चताभिश्चतुःसंख्याभिराहुतिभिः पंचलोकपालान्दशदिक्पालांश्चद्विद्विसंख्याभिःसमिच्चर्वा ज्याहुतिभिःसर्पान् प्रतिद्रव्यमष्टोत्तर शतसंख्यभिर्घृतमिश्रपायस [illegible] अधिदेवंगुरुं प्रत्यधिदेवान्पितॄंश्च प्रतिद्र- [illegible] राहुतिभिर्भगाद्याश्चतुर्विंशतिदेवता अष्टसंख्याभिराहुतिभिः रक्षोघ्नसूक्तदेवान् पंचदशभि र्ऋग्भि प्रत्यृगष्ट संख्याभिः कृसराहुतिभिः सवितारं, दुर्गां, त्र्यंबक

ऋत्विक्स्तुतिं दुर्गां, वास्तोष्पतिं अग्निं त्र्याधिपतिं मित्रावरुणौ अग्निंचाष्टसंख्याभि राहुतिभिःसोमंत्र्योदश संख्याभिराहुतिभिः रुद्रं चतुर्गृहीतेनाज्येन,स्विष्टकृतंअग्न्यादि प्राजापत्यान्तांश्चाज्येना-हंयक्ष्ये—इदं संपादितं द्रव्यं यथा दैवतमस्तनमम, तत आचार्यो रक्षोघ्नसूक्तेनरक्षासूत्र मभिमंत्र्य कलशोपरिधृत्वा, ब्रह्मणान्वार-रब्धो दक्षिणं जानुनिपात्याघारावाज्यभागौच हुत्वा, अन्वारम्भं त्यक्त्वा ग्रहयागोक्त होमपद्धत्यनुसारेण, आदित्यादि दिक्पाल-लान्तेभ्यो देवताभ्योसमिच्चर्वाज्य तिलाहुतिभिर्हुत्वा, ततो गोप्रसवहोमं पूर्वोक्त प्रकारेण विष्ण्वादिभ्योहुत्वा, ततो घृतमि-श्रितेन समित्तिलपायसादिद्रव्येण प्रधानहोमं अष्टोत्तरशतं, सर्पे-भ्यो वक्ष्यमाणमंत्रेणकुर्यात्—ॐ नमोस्तुसर्पेभ्य इति प्रजापति ऋषिरनुष्टुप्छन्दः सर्पादेवताः होमेविनियोगः—ॐ नमोऽस्तुसर्पे-भ्योयेकेच पृथिवीमनु । येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः । स्वाहा । इदंसर्पेभ्योनमम । इति १०८ वारं जुहुयात् । ततोऽधिदेव बृहस्पतये २८ वारं० ॐ बृहस्पते, इति गृत्समदऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दो बृहस्पतिर्देवता होमेविनियोगः ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्योऽअर्हाद्यु-मद्विभातिक्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात तदस्मासुद्र-विणंधेहिचित्रम् स्वाहा. इदंबृहस्पतयेनमम २८ वारंहुत्वा । ततः प्रत्यधिदेवपितृभ्यो ऽष्टाविंशतिसंख्याभि र्जुहुयात् । ॐ पुनन्तुमा पितर इति प्रजापतिर्ऋषि रनुष्टुप्छन्दःपितरोदेवता होमेविनियोगः ॐ पुनन्तुमापितरः सोम्यासः पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तुप्रपि तामहाः पवित्रेण शतायुषा । पुनन्तुमा पितामहाः पुनन्तुप्रपिता-महाः ॥ पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै स्वाहा ॥ इदंपितृ भ्योनमम, उ०स्प०। ततोभगादि चतुर्विंशति नक्षत्रदेवेभ्यो ऽष्ट संख्याभिर्नाममंत्रैः पायसेनवा यवाज्यतिलै र्जुहुयात् । ॐ भगा-यनमः स्वाहा० । इदंभगाय नमम, एवंसर्वत्र ॐ अर्यम्णेनमः स्वाहा० । ॐ सूर्यायनमः स्वाहा० । ॐ त्वष्ट्रेनमः स्वाहा० । ॐ वायवेनमः स्वाहा । ॐ शक्राग्निभ्यांनमः स्वाहा, इदंशक्रा-

ग्निभ्यांनमम। ॐ मित्रायनमः स्वाहा०। ॐ इन्द्रायनमःस्वाहा० ॐ निर्ऋतयेनमः स्वा० उ० स्प०। ॐ तोयायनमः स्वाहा०। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः स्वाहा—इदं विश्वेभ्यो देवेभ्योनमम। ॐ विष्णवेनमःस्वाहा०। ॐ वसुभ्योनमः स्वाहा०। इदं वसुभ्यो नमम। ॐ वरुणायनमः स्वाहा०। ॐ अजचरणाय नमः स्वाहा०। ॐ अहिर्बुध्नायनमः स्वाहा०। ॐ पूष्णेनमः स्वाहा०। दस्राभ्यां नमः स्वाहा०। इदंदस्राभ्यां नमम। ॐ यमायनमः स्वाहा०। ॐ अग्नयेनमः स्वाहा०। ॐ ब्रह्मणेनमः स्वाहा०। ॐ चन्द्रमसे नमःस्वाहा०। ॐरुद्रायनमःस्वाहा०। उ०स्प०। ॐअदित्यै नमः स्वाहा, इदमदित्यैनमम। अनः परंप्रत्येक मंत्रेणाष्ट संख्यया कृणुष्वपाजेत्यारभ्य यातेरुद्रेत्यन्तै मूलशांतिहोमोक्तमंत्रै जुहुयात्- ग्रंथविस्तारभियान्नात्रसंग्रहीताः। उदकंस्पृष्ट्वा—ततः स्विष्टकृतं हुत्वा ब्रह्मणान्वारब्धो भूरादिनवाहुतिभिर्हुत्वा प्रणिताविमोकान्तं कृत्वा पूर्णाहुतिं कुर्यात् तद्यथा साचार्योयजमानः पूर्णाहुतिंकुर्यात्—तत्रसंकल्पः– अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्यामुकराशि रमुकोऽहंममास्य पुत्रस्याश्लेषा नक्षत्र जनन शान्ति होम कर्मणो न्यूनातिरिक्त दोषपरिहारार्थं श्रीपरमेश्वर प्रीतये मृडनामाग्नौ पूर्णाहुति होमं करिष्ये, ततःश्रीफलं रक्त कौषेय वस्त्रवेष्टितं पूगीफलंवास्रुवेनिधाय, मूलशान्त्युक्त प्रकारेण, अंगालंभनान्तं कर्मकृत्वा, उदकंस्पृष्ट्वा,मूलशान्तिवत् रुद्रकुंभं, सार्पकुंभंच संपूज्य—ॐ त्र्यंबकंयजामहे० मन्त्रेणरुद्रं, ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो येके च पृथिवीमनु। येऽअन्तरिक्षेयेदिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः॥ इति प्रसादयित्वा, ततः स्नानमण्डपे श्वेत वस्त्रं प्रसार्य तदुपरि शत मूलानिवा श्रीपर्णी कुशादिकान् विकीर्य, तत्रयजमानः सपत्नि पुत्रः पद्मासनेनोपविशेत् तत्र संकल्पः—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकराशिरमुकः सपत्निपुत्रोऽहम्–ममपुत्रस्यआश्लेषा नक्षत्रामुक पाद जनन सूचित मातापित्राद्यरिष्ट दोष परिहार्थं शुभाप्तयेचाभिषेक मन्त्रैर्यज्ञान्तस्नान महं करिष्ये, ततआचार्यादयो ब्राह्मणाः

उत्थाय, पूर्वोक्त मूलशान्त्यभिषेक मंत्रैः ४१ अभिषिच्य, ततोऽभिषेकपद्धत्युक्तैः सुरास्त्वामित्यादिभिरभिषिचञ्च, वक्ष्यमाण मन्त्रैश्चाभिषेकं कुर्यु—ॐ आश्लेषा ऋक्षजातस्य मातापित्रोर्धनस्य च । भ्रातृज्ञाति कुलस्थानां दोषं सर्वव्यपोहतु । पितरः सर्वभूतानां रक्षन्तु पितरःसदा । सर्पनक्षत्रजातस्य वित्तंच ज्ञातिबांधवान् । इत्यभिषेकं कृत्वा, सहस्त्रधाराभिः स्नात्वा नूतन वस्त्रपरिधानं कृत्वा घृतछायादर्शनं कुर्यात्, ततो गोदानादि संकल्पं कुर्यात्—ततः सवत्सांगामानाय्य, गोदानपद्धत्युक्त विधिना सम्पूज्य ब्राह्मणंच, संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकराशिरमुकशर्मा सपत्निपुत्रोऽहं ममास्य पुत्रस्याश्लेषानक्षत्रोत्पन्नस्य माता पित्रोःसर्वारिष्ठ निवृत्तिपूर्वकं शुभफलाप्तये, कृतस्याश्लेषा शान्ति होमकर्मणः साद्गुण्यार्थं इमांसवत्सांगां आचार्याय तुभ्यंदास्ये, ॐ तत्सन्नमम,ततःप्रतिष्टांकृत्वा,ततोऽन्द्रजापकं कृष्णमनड्वाहंच-संपूज्य—संकल्पः—अद्ये०अमुकोऽहंआश्लेषाशांतिकर्मणः साद्-गुण्यार्थं श्रीरुद्रप्रीतये इममनड्वाहंरुद्रदैवतं तुभ्यंदास्ये, ततःप्रतिष्ठांकृत्वा ॥ ऋत्विक्सदस्यादि ब्राह्मणान्सम्पूज्य—अद्येत्यादि० अमुकोहं आश्लेषाशान्तिकर्मणःसाद्गुण्यार्थं ब्रह्मसदस्यर्त्विक्सप्तशती शान्तिकाध्याय सूक्तादिपाठकारकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो इमांदक्षिणां यथांशविभज्यदास्ये—तथेमांभूयसीदक्षिणांचान्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्यदास्ये, ॐ तत्सन्नमम, ततश्चाचार्यादयःपूर्वोक्त प्रकारेण अभिषेकं मन्त्रतिलकाक्षतारोपणंचकृत्वा रक्षाबंधनादि आशीर्वादंदद्युः ॥ ततउत्तराङ्गपूजनंकृत्वा—ताम्रपात्रेसफलार्घ्यंगृहीत्वा—ॐ सर्पाधीशनमस्तुभ्यं नागानांचगणाधिप । गृहाणार्घ्यं मयादत्तं सर्वारिष्टप्रशांतये । इत्यर्घ्यंदत्वा—ॐ यान्तुदेवगणाः०। इतिदेवंविसृज्य ॥ अग्निंचविसृज्य, यजमानस्य महानीराजनं कारयित्वा , ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥

इत्याश्लेषाजननशान्तिपध्दतिः ॥

— :*: —

॥ अथयमलजनन शान्तिपरिभाषा ।

अथ कात्यायनोक्त यमलजनन शान्तिः—अथातो यमलजनन [illegible] विधिं व्या-ख्यास्यामो, [illegible] महिषी वडवा विकृतिं [illegible] (चन्द्र-तारानुकूले [illegible]) [illegible] । [illegible] गो [illegible], [illegible] कषायैश्च [illegible], [illegible], पंचगव्येन, [illegible] ।, [illegible], [illegible] त्वा, अलंकृत्य [illegible] जुहोति, पूर्वोक्तै स्नानमंत्रैः, स्थालीपाकस्य जुहोति, अग्नये स्वाहा, सोमाय स्वाहा, पवमानाय स्वाहा, पावकाय स्वाहा, [illegible] स्वाहा, [illegible] स्वाहा, यमाय स्वाहा, [illegible] स्वाहा, [illegible] स्वाहा, [illegible] स्वाहा, अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इति, एतेभ्यो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कृत्वा [illegible] [illegible] ([illegible]) [illegible] शान्तिं [illegible] विधिना कृत्वा [illegible] ब्राह्मणा-[illegible] [illegible] शान्तिर्भवतीति ॥

अथयमलजननादिशान्तिपद्धतिः ।

अथ यजमानः प्रसवदिवसाद्दशाहोर्ध्व, नामकर्म दिवसे वा चन्द्रतारानुकूले शुभेऽन्हि, प्रातर्नित्यकर्मसमाप्य गृहाभ्यंतरे पूजास्थलमागत्य, प्लक्ष १ औदुंबर २ वट ३ अश्वत्थ ४ शमी ५ देवदारु, ६ वृक्षाणां कषायं (रसं) एकीकृत्य, अष्टौमृण्मय कलशानापूर्य तत्र गौरसर्षप हिरण्य दूर्वांकुराम्र पल्लवान्प्रक्षिप्य, संस्थाप्य च, आचम्य भूतोत्सादनादि कर्मकृत्वा संकल्पं कुर्यात्–अद्येत्यादि० अमुकराशि सपत्निकोऽहं ममयमल जननेन सूचिता रिष्ट निरसनद्वारा सर्वोपद्रव शान्त्यर्थं स्वस्तिवाचन गणेशादि पंचांग देवता पूजनपूर्वकंकषायाष्टकलश स्थापनं तैः स्नानं तदनं-तरं-कात्यायनोक्त विधानेन होमं गोदानंच करिष्ये ततोब्राह्मणां, श्चभोजयिष्ये, ततः स्वस्तिवाचनं पठित्वा-गणेशादि पंचांगदेवा-न्सम्पूज्य, कलश स्थापन पूजन् प्रकारेणाष्टौ कलशान्संस्थाप्य

संपूज्य च, आचार्य वृणुयात्—आचार्य ब्राह्मणंसम्पूज्यसंकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकराशि रमुकः सपत्निकोऽहंकर्तव्यैतद्यमलजनन शान्तिकर्मणि, आचार्यकर्मकर्त्तुमेभिर्वरणद्रव्यैरमुक शर्म्माणंब्राह्मण मात्वार्यत्वेनत्वांवृणे, कर्मकुरु, करवाणि, ततः सपत्नीकंयजमानं गृहांगणे पूर्वाभिमुख मुपवेश्य, पत्नींवामतः कृत्वा-आचार्योवक्ष्य माण मंत्रैः कलशाष्टकधारिणायथाक्रमेणाष्ट वारं, मंत्रान्पठित्वा स्नापयेत्, तत्रमंत्राः—ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधा-तन । महेरणाय चक्षसे ।१। योवः शिवतमोरस स्तस्यभाजयतेहनः । उशतीरिवमातरः ।२। तस्माऽअरंग मामवोयस्य क्षयाय जिन्वथ । आपोजनयथा चनः ।३। ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा । कयाश चिष्ठयावृता ।१। कस्त्वासत्योमदानाम ᳬ०हिष्ठो मत्सदन्धसः । दृढाचिदारुजेवसु ।२। ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्रᳬ०हवे हवे सुहवᳬँशूरमिन्द्रम् । ह्वयामिशक्रं पुरुहूत मिन्द्रᳬँस्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ इतिपंचेन्द्रसूक्तं ॐ वरुण स्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कंभसर्जनीस्थोवरुणस्यऽऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋतऽसदनमसि वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ इ० पंच वारुणसूक्तं । ॐ इदमापः प्रवहता वद्यं च मलंचयत् । यच्चाभि दुद्रोहा नृतं यच्चशेपेऽअभीरुणम् । आपोमातस्मा देनसः पवमानश्च मुंचतु । ॐ अपाघमप किल्विषमप कृत्यामपोरपः । अपामार्गत्व मस्मदप दुस्वप्न्यᳬ०सुव । एतैर्मंत्रैर्दम्पत्योः स्नानं, अष्टकलश जलै रष्टधा । मंत्रं पठित्वा अभिषेकं कृत्वानव्यवस्त्रैरलं कृत्य, होमवेदी समीप मागत्य तत्र कुशेपूपविश्य, पत्नींदक्षिणतः कृत्वा, संकल्पः-अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोहं सपत्निकः। यमलजनन होम कर्मणि, पंचभू-संस्कारपूर्वक मग्निस्थापन महंकरिष्ये, ततो होम पद्धत्यापंचभू संस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं कुशकंडिका-विधानं ब्रह्मो पवेश नादि कर्मकृत्वा, द्रव्यदेवताभि ध्यानपूर्वकं द्रव्यत्यागं कुर्यात्—अद्येत्यादि सपत्निकोऽहं-यमल जनन शान्तिकर्मणि-कात्यायनोक्तविधानेन,—प्रजापतिं, इन्द्रं, अग्निं, सोमं, आज्येन

अपः इन्द्रं, वरुणं, अपः, अपामार्गं, आज्येन, ततः अग्न्यादी-न्स्विष्टकृदन्तान् स्थालीपाकेन, महाव्याहृत्यादि-प्रायश्चित्तदेवताः प्रजापतिं चाज्येनाहं यक्ष्ये—एतदाज्यादि द्रव्य माघाराज्य भाग देवताभ्यः प्रधानदेवताभ्यउत्तरांग देवताभ्यश्च यथापरित्यक्तम्-तत्सन्नमम—ततः संस्रव-धारणार्थ-प्रोक्षणी पात्रमग्निप्रणीतयोर्म मध्येधृत्वा ॥ तत आचार्यो ब्रह्मणान्वारब्धः दक्षिणं जानुनिपात्य आघारावाज्य भागौ च हुत्वा-त्यक्त्वान्वारंभः प्रथमं, स्थाली पाकेन—ॐ आपोहिष्ठेति तिसृणां सिन्धुद्वीपऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवताः, यमलशान्ति होमे विनियोगः ॥ ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तानऽऊर्जेदधातन । महेरणायचक्षसेस्वाहा । इदमद्भ्यो नमम एवं सर्वत्र ।१। ॐ योवः शिव तमोरस स्तस्य भाजयते हनः । उशतीरिवमातरः स्वाहा ।२। ॐ तस्माऽअरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जनयथाचनः स्वाहा ।३। ॐ कयान इति द्वयोर्वामदेव ऋषिः गायत्रीछन्दः रुद्रोदेवता यमलशान्तिहोमे० ॥ ॐ कयानश्चित्रऽआभुव दूती सदावृधः सखा । कयाश चिष्ठया वृता स्वाहा ।१। ॐ कस्त्वासत्यो मदानामꣳहिष्ठो मत्सदंधसः । दृढाचि दारुजे व्वसु स्वाहा ।२। ॐ त्रातारमिन्द्रमिति गर्गऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः, इन्द्रोदेवता यमलशान्तिहोमे वि० । ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्रꣳहवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम् । ह्वयामि शक्रं पुरु हूतमिन्द्रꣳस्वस्तिनोमघवाधात्विन्द्रः स्वाहा, इतिपंचेन्द्रेण पंचा-हुतिर्जुहुयात् ॥ ॐ वरुणस्येति प्रजापति ऋषिः पंचयजूंषि वरुणो देवता यमलशान्ति होमे वि० । ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुण स्यस्कंभसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसि व्वरुणस्यऽऋत सदनमसि व्वरुणस्यऽऋत सदममासीद स्वाहा । इतिपंचवारुणे नापि पंचवारं० । ॐ इदमाप इति प्रजापतिर्ऋषिर्महापंक्तिश्छन्दः आपोदेवता यमलशांतिहोमेवि० । ॐ इदमापः प्रवहता वद्यं च मलं च यत् । यच्चाभि दुद्रोहा नृतंयच शेपेऽअभीरुणम् । आपो मातस्मादेनसः पवमानश्च मुंचतु स्वाहा । ॐ अपाघमिति शुनः

शेपऋषिर्गायत्रीछन्दः अपामार्गो देवता यमलशान्ति होमेवि० । ॐ आपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपोरपः । अपामार्ग त्वमस्म दपदुस्स्वप्न्यꣳसुव स्वाहा ॥ ॐ अग्नयेस्वाहा, इदमग्नयेनमम ॥ ॐ सोमायस्वाहा इ० । ॐ पवमानायस्वाहा इ० । ॐपावकाय स्वाहा इ० । ॐ मारुतायस्वाहा इ० । ॐ मरुद्भ्यःस्वाहा इ० । ॐ यमायस्वाहा इ० । ॐ अन्तकायस्वाहा इदमन्तकायनमम । ॐ मृत्यवेस्वाहा इ० । उ० स्प० । ॐ ब्रह्मणेस्वाहा इ० । ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इ० । ततो होमपद्धत्यनुसारेण भूरादि- नवाहुतिहोमानन्तरं संस्रवप्राशनादिकं कुर्यात—ततःपूर्णपात्रदा नादि पूर्णाहुतिन्यायुषकरणान्तं कृत्वा गोदानादि ऋत्विक्दक्षि णादानान्ते मन्त्राशिषंगृह्णीत्वा ब्राह्मणान्भोजयेत ॥

इतियमलजननशान्तिपद्धतिः ॥

अथ त्रिकप्रसव शांति परिभाषा ।

उक्तंचशान्तिसर्वस्वे—सुतत्रयसुताचेत्स्यात्त्रयेपसुतोऽपि । मातापित्रो कुलस्यापितदाऽ निष्टमहद्भवेत् । ज्येष्ठनाशोधनेहानि दुःखवामहद्भवेत । तत्रयथा शास्त्राद्वा शाह शुभेदिने । आचार्य- मृत्विजाश्चैवमहद्रूपुर गम्म् । ब्रह्मविष्णु महेशे द्र प्रतिमा स्वर्णात कृता । पूजयद्धान्यराशिस्थ कन शोराशिक्षत । पचम कलशेरुद्र पूजयेद्रुद्रमन्यया । रुद्रसूक्तानिचत्वारि शान्तिसूक्तानिसर्वशः । (रुद्र गव्ययारुद्रसूक्तानि जपेदित्यर्थ) आचार्यो जुहुयात्तत्र समिदाज्यतिलैश्चरुम् । अष्टोत्तरसहस्रवदतया त्रिशतीतुवा देवेभ्यश्चतुर्ण्णामि पुर सम् । ब्रह्मादिभ्यो इदमवत इमयामह । तत स्विष्टकृत हुत्वाबलिपूर्णाहुतिन्ततः अभिषेकं कुटुम्बस्य कृत्वाचार्यं प्रपू यत् । हिरण्यधेनुरेवाचमृत्विजादक्षिणा तत । आज्यस्यवीक्षण कृत्वा शान्तिं कुर्य्यात् । इतित्रिकप्रसवशान्ति परिभाषा ।

अथ त्रिकप्रसव शान्तिपद्धतिः ।

अथ च बालकस्य पिता, पुत्रजन्मदिवसादेकादशाहेद्वादशाहे अन्यस्मिन चन्द्रताराऽनुकूले वा शुभदिने, परिभाषोक्त शान्ति सामग्रींसंपाद्य स्वासने उपविश्य, आचम्य दीपं प्रज्वलय्य भूतो, त्सादनं कृत्वा शान्तिपाठं कृत्वा अर्घसंस्थाप्य–संकल्पः—अद्ये त्यादि सकीर्त्या मुकराशिरमुकोऽहं त्रिकप्रसव शान्तिकर्मणि

निर्विघ्नतासिद्ध्ये, श्रीभगवतो गणेश्वरस्य पूजनंकरिष्ये-तथाच तत्पूर्वाङ्गत्वेन कलशस्थापन पुण्याहवाचन नान्दीश्राद्धमातृका पूजा वसोर्द्धारानिपातन पूर्वक नवग्रहाणां पूजनं च करिष्ये। ततो गणेशादि पंचांगदेवतानां पूजनंविधाय, आचार्यादीनांवरणं कुर्यात्—तत आचार्य ब्रह्मर्त्विकरुद्रसूक्तशान्तिपाठका न्संपूज्य संकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकोहं त्रिकप्रसवशांतिकर्मणि एभिर्वर णद्रव्यैरमुकगोत्रानमुकामुक शर्मणो ब्राह्मणा आचार्य ब्रह्मर्त्विक् सूक्तशान्ति, कर्मकर्त्तॄन् वृणे, वरणद्रव्यं यथांशंविभज्य, कर्मकुरु, करवाणीति प्रत्युक्तिः तत आचार्यो होमवेदीं कृत्वा पंचगव्येन संप्रोक्ष्य पंचभूसंस्कार पूर्वक मग्निं संस्थाप्य, तत्पूर्वभागे कलशं संस्थाप्य, तत्रग्रहानावाह्य सम्पूज्य च तत्कलशस्योत्तरस्यां पंचसु धान्यराशिषु पंचकलशानव्रणान्कलशप्रोक्त विधिना संस्थाप्य तत्रब्रह्म विष्णुमहेशेन्द्ररुद्राणां पंचदेवानां सुवर्णप्रतिमाः अग्न्युत्ता रण पूर्वकं पंचकलशोपरि पंचप्रतिमाः संस्थाप्य,-संकल्पः-अद्ये-त्यादि० अमुकोऽहं त्रिकप्रसव शान्तिकर्मणि कलशोपरि स्थापितासु सुवर्णप्रतिमासु ब्रह्मादीनां पूजनं करिष्ये० ॐ एतन्ते० पठित्वा,, ॐ भूर्भुवः स्वः पंचकलशोपरि सुवर्णप्रतिमासु ब्रह्मादिपंचदेवता सुप्रतिष्ठितावरदाभवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य तत्रादौब्रह्माणं पूर्वकल-शोपरि पूजयेत् ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमंपुरस्ता द्विसीमतः सुरुचोवेन ऽआवः सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनि मसतश्चविवः इतिमंत्रेण ब्रह्माणं संपूज्य दक्षिणे विष्णुं०—ॐ इदं विष्णुर्विच-क्रमेत्रेधानिदधेपदम् समूढमस्यपाॅंसुरे। ॐ विष्णवेनमः सम्पू-ज्य पश्चिमे महेशम् ॐ तत्पुरुषाय विद्महेमहादेवायधीमहि । तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्। ॐ महेशायनमः उत्तरेइन्द्रम्—ॐयतइन्द्र भयामहेततोनोऽअभयंकृधि मघवन्छग्धि तवतन्न ऊतिभिर्विद्विषो विमृधोजहि। ॐ इन्द्रायनमः । ततश्चतुर्णांमध्ये रुद्रकलशे रुद्रं पूजयेत्—ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः । बाहुभ्यामुतते-नमः। ॐ रुद्रायनमः, इति सम्पूज्य, ततः सूक्तजापकश्च रुद्रक-

लशं स्पृशन्नेकादशवारं प्रतिमूक्तपठेत्--ॐ कद्रुद्रायेति रुद्रसूक्त स्याष्टमंत्राणां कण्वऋषिर्गायत्रीछन्दो रुद्रोदेवता पाठेविनियोगः ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसमीढुष्टमायतव्यसे । वोचेमशन्तमंहृदे ॥१॥ यथानो अदितिः करत्पश्वेनृभ्योयथागवे । यथा तोकायरुद्रियम् ॥२॥ यथानोमित्रोवरुणो यथारुद्रश्चिकेतति । यथाविश्वेसजोषसः ॥३॥ गाथपतिंमेधपतिंरुद्रंजलाषभेजम् । तच्छंयोसुम्नमीमहे ॥४॥ यः शुक्रइवसूर्यो हिरण्यमिवरोचते । श्रेष्ठोदेवानांवसुः ॥५॥ शंनः करत्यर्वते सुगंमेषायमेष्ये । नृभ्योनारिभ्योगवे ॥६॥ अस्मेसोमश्रियमधिनिधेहिशतस्यनृणाम् । महिश्रवस्तुविनृम्णम् ॥७॥ मानः सोमपरिबाधोमाऽरातयो जुहुरंत । आनइन्द्रोवाजेभज ॥८॥ ॐ यास्तेइत्यस्य कण्वऋषि रनुष्टुप्छन्दः रुद्रोदेवता पाठं विनियोगः ॐ यास्तेप्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य । मूर्धानाभासोमवेन आभूषन्तीसोमवेदः ॐ इमारुद्रायेतिरुद्रसूक्तस्य नव मंत्राणां कुत्सऋषि र्जगतीछन्दः रुद्रोदेवतापाठे विनियोगः ॐ इमारुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीराय प्रभरामहेमतीः । यथासमद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वंपुष्टंग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ।१। मृडानोरुद्रो तनो मयस्कृधिक्षयद्वीराय नमसाविधेमते यच्छंचयोश्चमनुरायेजेपिता तदश्याम तवरुद्र प्रणीतिषु ।२। अश्यामते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तवरुद्रमीढ्वः सुम्नायन्निद्विशो अस्माक माचरा रिष्टवीरा जुहवामतेहविः ।३। त्वेषंवयंरुद्रंयज्ञसाधंवङ्कुं कविमवसे निह्वयामहे । आरे अस्मद्दैव्यहेडो अस्यतुसुमति मिद्वयमस्यावृणीमहे ।४। दिवोवराहमरुषं कपर्दिनंत्वेषंरूपंनमसानिह्वयामहे । हस्ते बिभ्रद्भेषजावार्याणि शर्मवर्मच्छर्दिरस्मभ्यंयंसत् ।५। इदंपित्रेमरुता मुच्यतेवचःस्वादोः स्वादीयोरुद्रायवर्धनम् । रास्वाचनो अमृत मर्त्तभोजनं मनेतोकायतनयायमृड ।६। मानोमहान्तमुतमानो अर्भकंमानउक्षन्तमुतमानउक्षितम् । मानोवधीः पितरंमोतमातरंमानः प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ।७। मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषि मानो गोषुमानोअश्वेषुरीरिषः । मानोवीरान्रुद्रभामिनोवधीर्हं

येष्मन्तःसदमित्वाहवामहे ।८। उपतेस्तोमान्पशुपाइवाकरं रास्वा पितर्मरुतांसुम्नमस्मे । भद्राहितेसुमतिर्मृडयतमाथा वयमवइत्तेवृ- णीमहे ।९। ॐ उपते, इतिरुद्रसूक्तस्य मन्त्रयोः कुत्सऋषिस्त्रिष्टु प्छन्दः रुद्रोदेवता पाठेविनियोगः ॥ ॐ उपतेस्तोमान्पशुपाइवा करं रास्वापितर्मरुतांसुम्नमस्मे । भद्राहितेसुमतिर्मृडयतमाथा व्व- यमवइत्तेवृणीमहे ।१०। आरेतेगोघ्नमुतपूरुषघ्नंक्षयद्वीरसुम्नमस्मे तेअस्तु । मृडाचनोअधिचब्रूहिदेवाधाचनः शर्मयच्छद्विवर्हाः ।११। इतिद्वितीयः । ॐ आतेपितः, इतिपञ्चदशमन्त्राणां गृत्समदऋषि जगतीछन्दांसि रुद्रोदेवता तृतीयरुद्रसूक्त पाठे विनियोगः । ॐ आतेपितर्मरुतांसुम्नमेतुमानः सूर्यस्यसंदृशोयुयोथाः । अभिनो वीरोअर्वतिक्षमेतप्रजायेमभिरुद्रः प्रजाभिः ।१। त्वादत्तेभिरुद्रशंत मेभिः शतंहिमाअशीयभेषजेभिः । व्यस्मद्द्वेपोवितरंव्यंहो व्यमी वाश्चातयस्वाविषूचिः ।२। श्रेष्ठोजातस्यरुद्रः श्रियाऽसितमस्तवस्त वसांवज्रवाहो । पर्षिणःपारमंहसः स्वस्तिविश्वाअभीतीरपसो- युयोधि ।३। मात्वारुद्रचुक्रुधामानमोभिर्मा सुष्टुतीवृषभमासहूति उन्नोवीराँअर्पयभेषजेभिर्भिषक्तमंत्वाभिषजांशृणोमि ।४। हवी मभिर्हवतेयोहविर्भिरवस्तोमेभीरुद्रंदिषीय । ऋदूदरःसुहवोमानो अस्यैबभ्रुः सुशिप्रोरीरधन्मनायै ।५। उन्माममन्दवृषभो मरुत्वान् त्वक्षीयसावयसानाधमानम् । घृणीवच्छायामरपा अशीयाविवा सेयंरुद्रस्यसुम्नम् ।६। क्वस्यतेरुद्रमृडयाकुर्हस्तोयोअस्तिभेषजोजला षः । अपभर्त्तारपसोदैव्यस्याभीनुमावृषभचक्षमीथाः ।७। प्रबभ्रवे वृषभायश्वितीचेमहोमहीं, सुष्टुतिमीरयामि । नमस्याकल्मली किनं नमोभिर्गृणीमहि त्वेषंरुद्रस्यनाम ।८। स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप उग्रोबभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशेहिरण्यैः ॥ ईशानादस्यभुवनस्यभूरेर्न वाउयोषद्रुद्रादसुर्यम् ।९। अर्हन्बिभर्षिसायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतंविश्वरूपम् । अर्हन्निदंदयसेविश्वमभ्वं नवाओजीयोरुद्रस्त्व दस्ति ।१०। स्तुहिश्रुतंगर्त्तसदंयुवानं मृगंनभीममुपहत्नुमुग्रम् । मृडाजरित्रेरुद्रस्तवानोऽन्यंते अस्मन्निवपन्तुसेनाः ।११। कुमारश्चि

त्पितरंवन्दमानं प्रतिनानामरुद्रोपयन्तं । भूरेर्दातारंसत्पतिंगृणीषे स्तुतस्त्वंभेषजारास्यस्मे ।१२। यावोभेषजामरुतः शुचीनियासन्त मावृषणोयामयोभु । यानिमनुरवृणीतापितानस्ताशंचयोरच रुद्र स्यचश्मि ।१३। परिणोहेतीरुद्रस्यवृज्याः परित्वेषस्यदुर्मतिर्महीगात । अवस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकायतनयायमृड ।१४। एवावभ्रोवृषभचेकितानयथादेवनहृणीषेनहंसि ॥ हवनश्रुन्नोरुद्रहबोधि बृहद्वदेमंविदथेसुवीराः ।१५। इतितृतीयसूक्तः ॥ ॐ इमारुद्रायेतिचतुर्णांमन्त्राणां वशिष्ठऋषिर्जगतीछन्दो रुद्रोदेवता शान्तिकर्मणिचतुर्थ रुद्रसूक्तपाठे विनियोगः ॥ ॐ इमारुद्रायस्थिरधन्वनेगिरः क्षिप्रेषवेदेवायस्वधाम्ने। अषाढ्हायसहमानाय वेधसेतिग्मायुधाय भरताशृणोतुनः ।१। सहिक्षयेणक्षम्यस्यजन्मनः साम्राज्येनदिव्यस्यचेतति । अवन्नवन्तीरुपनो दुरश्चरानमीवो रुद्रजासुनोभव ।२। यातेदिद्युदवसृष्टा दिवस्परिक्ष्मया चरतिपरिसावृणक्तुनः । सहस्रंतेस्वपिवातभेषजा मानस्तोकेषुतनयेषुरीरिषः ।३। मानोवधीरुद्रमापरादामातेभूमप्रसितौहीडितस्य, आनोभजबर्हिषिजीवशंसेयूयंपात: स्वस्तिभिःसदानः ।४। इति रुद्रसूक्तान्येकादशवारंजपित्वा, ॐ ऋचंवाचम् । इतिरुद्रैःसप्तमं शान्त्यध्यायंचपठेत् । तत आचार्योहोममेषां पध्दत्युक्तप्रकारेण पर्युक्षणान्तंकर्मकृत्वा प्रोक्षणीपात्रं संस्रवधारणार्थमग्निप्रणीतयोर्मध्येधृत्वा । ॐएतन्ते०, इतिपठित्वा ॐभूर्भुवस्वः,वरदनामा अग्ने इहागच्छेहतिष्ट सुप्रतिष्ठितोवरदोभवेति प्रतिष्ठाप्य, ॐ वरदनामाग्नयेनमः सम्पूज्य यजमानो द्रव्यदेवता मिध्यानपूर्वकं द्रव्यत्यागंकुर्यात्–अद्येत्यादि संकीर्त्य, त्रिकप्रसव शान्तिकर्मणि प्रजापतिमिन्द्रमग्निं सोममाज्येन,आदित्यादि ग्रहान् समित्कृभिः प्रत्येकमष्टसंख्यया साधिप्रत्यधिदेवांश्चतुः संख्यया, विनायकादि पंचलोकपालानिन्द्रादि दशदिक्पालांश्चद्वि संख्यया, ब्रह्मविष्णुमहेशेन्द्ररुद्रान्प्रधानपंचदेवा न्प्रत्येकमष्टोत्तरशतसंख्यया ओदेस्विष्टकृतम्–अग्न्यादि प्राजापत्यान्तांश्चाज्येनाहंयक्ष्ये, इदं

तत्तद्देवताभ्योमयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तु, ॐ इदन्नमम । ततः आचार्यो ब्रह्मणाऽन्वारब्धो दक्षिणंजान्वाकुंच्य घाराज्यभागौ च हुत्वा अन्वारंभंत्यक्त्वा, सत्विक् ग्रहयागोक्तपद्धत्युक्त प्रकारेण; दशदिक्पालान्तान्हुत्वा ततः प्रधान देवेभ्यो ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेन्द्र रुद्रेभ्यः पूर्वोक्त ब्रह्मजज्ञानमित्यादिभिः पंचभि मंत्रैः प्रत्येकं समित्तिलाज्य चरुद्रव्यै रष्टोत्तरशतसंख्यं होमं हुत्वा, स्विष्टकृद्धो मंविधाय, आज्येन भूरादि नवाहुतिहोमं वर्हिर्होमंचकृत्वा, संस्रवप्राशनान्तं विधाय ब्रह्मणेपूर्णपात्रं दत्वा ततो ग्रहयागोक्त वलि दानरीत्या ग्रहादिलोकपालन्तेभ्यो दध्यक्षतवलिं वा पायसवलिं निवेदयित्वा ब्रह्मादि पंचभ्यो वलिदानंविधाय क्षेत्रपालाय वलिं दत्वा पूर्णाहुतिहोमं कुर्यात्, ततःसपत्निपुत्रो यजमानो गोदानं कुर्यात्-तदभावे निष्क्रयीभूतं तिलपात्रादिकं च कुर्यात् संकल्पः अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य सपत्निकोहं ममसुतत्रयानन्तरं सुताजननेन वा कन्यात्रयानंतरं पुत्रजननेन सूचितारिष्टनिरसन द्वारा शुभफलप्राप्त्यर्थं कृतस्य त्रिकप्रसवशान्तिहोमकर्मणः। साद्गुण्यार्थं इमांगांवा गोप्रत्याम्नायीभूतं सुवर्ण रजतादिद्रव्यं तथेमाः सुपूजिताश्चप्रतिमाः अमुकशर्मणे आचार्याय तुभ्यंदास्ये, तथा सूक्तादि शान्तिपाठकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो, इमांदक्षिणां तथा नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसींदक्षिणां विभज्यदास्ये, तथा पक्वान्नेन ब्राह्मणांश्च भोजयिष्ये दक्षिणांचदास्ये,इत्याचार्यादिभ्यो कर्मदक्षिणांविभज्य, पूर्वावाहिताग्न्यादिदेवाना मुत्तराङ्गपूजनं कृत्वा विसृज्यच, पूजित घटकलशोदकेनाभिषेक पद्धतिना सपुत्र पत्नीकस्यस्वस्या भिषेकमाचार्यादिभिःकारयित्वा घृतच्छायादर्शनं कुर्यात्—ततः आनोभद्रेति शान्तिपाठंकृत्वा तिलकाक्षतादिरोपणाशीर्वादं गृह्णीयात् । ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयंच भुंजीत।

इतिशांतिपटलोक्तत्रिकप्रसवशान्तिपद्धतिः।

॥ अथपित्राद्येकनक्षत्रजननशांतिपरिभाषा: ॥

अथ पित्राद्येकनक्षत्र जनन शान्ति परिभाषा— उक्तं च शान्तिसारे— एकस्मिन्नेव नक्षत्रे भ्राता वा पितृ पुत्रयो । प्रसूतिश्च तयोर्मृत्युर्भवेदेकस्य निश्चय । भ्रात्रो भ्रातृभगिन्योरित्यर्थः । पितृ पुत्रयो मातापितृनक्षत्रे पुत्रकन्ययोरित्यर्थः ॥ तत्र शान्तिं प्रवक्ष्यामि सर्वाभिमतन्तु । शुभर्क्षे शुभवारे च चन्द्रताराबलान्विते । [illegible] । आचार्यं वरयेत् पूर्वं पुरोधजाद्विजोत्तमान् । पूजया ह्वापयित्वा तु शान्तिकर्म समारभेत् । अग्नेरीशानदिग्भागे नक्षत्रप्रतिमां तत । तत्र [illegible] पूजय कलशादि । स्नानमन्त्रं वसिष्ठप्रोक्तं [illegible] । नक्षत्रं तद्देवतां च पूजयेत् । [illegible] माण्डव्योक्ति विधिना वचनात् । रक्तवस्त्रेण [illegible] । रक्ताक्षतेन [illegible] ता । [illegible] शतम् । तत्र [illegible] । प्रत्येकं समिदाज्यैः [illegible] च अभिषेकं [illegible] पितृपुत्रयो । इत्यनिष्टप्रशमनलक्षणम् ॥ यत्र जन्म तत्र [illegible] पञ्चत्थ । वस्त्रालङ्कारगोदानं [illegible] पूजयेत्तु । आचार्याय दक्षिणां [illegible] सुवर्णकम् । तच्च प्रतिमादान वायवस्त्रादिभि सह । [illegible] दद्याद्दोषप्रशान्तये । भोजयेद् ब्राह्मणान् सर्वान् वित्त शाठ्यविवर्जित ॥ एवं कृत्वा विधानेन शान्तिर्भवति निश्चितम् ॥

॥ अथपित्राद्येकनक्षत्रजननशांतिपद्धति: ॥

अथ च कर्त्ता नित्यकर्मसमाप्य, पूजास्थलमागत्य शुभासने उपविश्याचम्य, दीपं प्रज्वलय्य भूतोत्सादनं विधाय, स्वस्तिवाचनं पठित्वा संकल्पंकुर्यात—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोऽहम, अमुकनक्षत्रोपलक्षितस्यामुकराशेरस्यपुत्रस्य पित्राद्येकनक्षत्रजनन सूचितारिष्ट निवृत्तये शुभफलाप्तये, सर्वोपद्रव निरसनार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीतये चैकनक्षत्रजनन शान्तिंकरिष्ये—तत्पूर्वांगत्वेन निर्विघ्नता सिद्धये, गणपत्यादि पंचांङ्ग देवतानां पूजनंकरिष्ये–तथा होमार्थं आचार्यं ब्रह्मर्त्विजां तथा सप्तशती शान्त्याध्याय पाठकानां च पूजनपूर्वकं वरणंकरिष्ये इति सकल्प्य गणेशादि नवग्रहान्त पूजन विधाय (माता पितृनक्षत्रे पुत्रकन्या जन्मनिजाते तत्रादौ गौमुखप्रसवशान्तिं कृत्वा कर्ममारभेत्) भ्रातृभगिन्योर्भ्रात्रो रेकनक्षत्रोत्पन्नौ चगौप्रसवं कृत्वा वक्ष्यमाण विधानेन शांतिकुर्यात्—तत आचार्यादीनां चतुर्णांवरणंकृत्वा,

आचार्यो गौरसर्षपानादाय भूतोत्सादनं कृत्वा पंचगव्येन भूमिं संशोध्य, तत्र होमवेदीं निर्माय पँचभूसंस्कार पूर्वक मग्निं संस्था प्य, होमवेद्या ईशाने कलशविधिना कलशं संस्थाप्य तत्रनवग्रहा नावाह्य सम्पूज्य च तत्र ताम्रपूर्णपात्रोपरि पश्चाक्लिन्नश्वेतवस्त्रंप्र- सार्य तदुपरिसौवर्णां जन्मनक्षत्र देवता प्रतिमामग्न्युत्तारण पूर्वि- कांसंस्थाप्य ॐ एतन्तेति० पठित्वा, ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकनक्षत्र देवात्रसुवर्णं प्रतिमायां सुप्रतिष्ठितोवरदोभव इति प्रतिष्ठाप्य,, (अत्रनक्षत्रदेवता कमंत्रं मूलशान्त्युक्त नक्षत्रदेवतास्थापन विधौ विचार्य गृहीत्वातेन पूजनंकुर्यात्) ग्रंथविस्तारभयान्नात्रमंत्राः प्रदर्शिताः । एवं नक्षत्रदेवं पाद्यादिभिः सम्पूज्य रक्षासूत्रमभिमंत्र्य तत्रकलशेसंस्थाप्य, होमवेद्यां ब्रह्मोपवेशनादि चरुश्रपणान्तं कर्म कृत्वा ततो यजमानो द्रव्यदेवता भिध्यान पूर्वकं द्रव्यत्यागं कुर्यात्–अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यैकनक्षत्रजनन शांतिकर्मणा ऽहंयक्ष्ये—तत्रादौ प्रजापतिमिन्द्रमग्निं सोममाज्येन, अमुकनक्ष- त्रामुकदेवतां समिच्चर्वाज्यद्रव्येण प्रत्येकमष्ठोत्तर शतसंख्याहुति- भिःशेषेणस्विष्टकृतं,अग्न्यादि प्राजापत्यन्तांश्चाज्येन यक्ष्येतदेतद्धोम द्रव्यमेतद्देवताभ्यो मयापरित्यक्त यथादैवतमस्तुनमम । ततआचा- र्योवरदनामाग्निं ॐ एतन्ते०इतिप्रतिष्ठाप्य ॐ वरदनामाग्नयेनमः सम्पूज्य रेखाभ्योनमः ॐ सप्तजिव्हाभ्योनमः सम्पूज्य च प्रोक्ष- णीपात्रं संस्रवधारणार्थं प्रणीताग्न्योरंतराले निधाय, अन्वारब्ध आघाराावाज्य भागौच जुहुयात् आचार्यादयऋत्विक्पाठका नक्ष त्रदेवता मंत्रेणाष्ठोत्तरशत संख्यया समिच्चर्वाज्य द्रव्यैः प्रत्येकं प्रधानहोमंकुर्युः एवं प्रधानहोमं कृत्वा आचार्यो ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमंव्याहृत्यादिनवाहुतिहोमं दिक्पालेभ्योबलिं दत्वा संस्रवप्राशनं कृत्वा ब्रह्मणे पूर्णपात्रं दत्वा वर्हिर्होमं पूर्णाहुतिं च कृत्वा आचार्याय गांयान्निष्क्रयीभूतं द्रव्यंदत्वा, ऋत्विक् पाठका- दिभ्योपि दक्षिणां दद्यात् ततः कलशजलेन अभिषेकं पूर्वोक्तमंत्रैः कृत्वा तिलकारोपण रक्षाबंधनं च विधाय घृतच्छाय। दर्शनंकृत्वा

आशीर्वादं गृहीत्वाग्निं देवांश्चविसृज्य, ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयमपि च भुञ्जीत ।

इत्येकनक्षत्रजननशान्तिः ।

—:*:—

अथ प्रथमोर्ध्वदंजनन तथा सदन्त जननशान्ति परिभाषा ॥ उक्तं च हेमाद्रौ विष्णुधर्मोत्तरेच शान्तिसारसंग्रहे—दन्तजन्मनि बालानां लक्षणं तन्निबोधमे । उपरिप्रथमं यस्य जायन्ते हि शिशोर्द्विजा. (दंताः) ॥ दन्तैर्वा सह यस्यस्याज्जन्मभार्गवसत्तम ॥ मातरंपितरंचैव खादेत्यात्मानमेवच । शान्तितत्र प्रवक्ष्यामि तामेनिगदतःशृणु । गजपृष्ठस्थितंबालंनौस्थंवास्नापयेद् बुधः । तदभावेतु धर्मज्ञ कांचनेचवरासने । सर्वौषधैः सर्वगंधैर्बीजैः पुष्पफलैस्तथा । पंचगव्येनरत्नैश्च मृत्तिकाभिश्चभार्गव । स्नापयेद्विज वयः ॥ स्थालीपाकेनधातारं पूजयेत्तदनन्तरम् । चतुर्थ्यन्तनाम्नासकृदाहुतिः ॥ सप्तहंचाग्रकर्तव्यं तथा ब्राह्मणभोजनम् । अष्टमेऽहनिविप्राणां तथादेया च दक्षिणा ॥ कांचनं रजतं गांच भूर्वा धान्यमेव च । अद्भुतसागरेत्वत्र पंचदशी शान्तिरुक्ता—तत्रैवगृह्यस्मृतिः—बालानामष्टमेमासि षष्ठेमासितथा पुनः । दंतायस्यचजायन्ते मातावाम्रियतेपिता । बालकःपीडयतेतत्र स्वयमेवनसंशयः । दधिक्षौद्रघृताक्तानामश्वत्थसमिधांततः । जुहुयादष्टशतं प्राज्ञोमन्त्रेण मन्त्रवित् । धेनुंचदक्षिणांदद्यात्ततःसम्पद्यतेशुभम् । साधारणेन प्रकारान्तरमुक्तंपद्मपुराणे—सामान्येनविधिर्दन्तजन्मनि सामान्यशृणुसत्तमपरम् । भद्रासनेनिवेश्यैनं मूर्ध्निमूलफलैस्तथा । सर्वौषधैः सर्वबीजैः सर्वगंधैस्तथैवच । स्नापयेत्पूजयेच्चाथ वन्हिसोमसमीरणान् पर्वतांश्च तथादित्यातादेव देवं च केशवम् । एतेषामेव जुहुयात्कृतमग्नौ यथाविधि । ब्राह्मणानन्नतुदातव्य यथाशक्त्याचदक्षिणा । तत्रदत्तकृतंयालमासमेनतुप्रक्षेपयेत् । पूज्याश्चाविधवा नार्यो ब्राह्मणा सुहृदस्तथा

इति दुर्दन्तजननशान्तिविधिः ॥

—:*:—

अथप्रथमोर्ध्वंतथासदन्तजननशान्तिपद्धतिः ।

अथच शान्तिकर्त्ता चन्द्र तारानुकूले शुभमुहूर्त्ते, शुभासने, उपविश्य दीपं प्रज्वलय्याचम्यार्घसंस्थाप्य भूतोत्सादनंकृत्वा, प्राणानायम्य-संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि० अमुकोऽहममुकराशेः अस्यबालकस्य सदन्तजनन शान्ति कर्मणि, (वा) प्रथमोर्ध्व दन्त-जननशान्तिकर्मणि, (वा) निंद्यमासादिषु दन्त जननशान्तिकर्मणि, सर्व विघ्नोप शान्त्यर्थं—श्रीगणेश्वरादि पंचांग देवतानां पूजनं

करिष्ये—तथाच पूर्वोक्त प्रकारान्तर्गतामुक प्रकार प्रथम दन्त जनने सूचितारिष्टनिरसनार्थं सर्वकल्याणहेतवे श्रीपरमेश्वर प्रीतये निषिद्ध दन्तजननशान्तिं करिष्ये—ततः पूर्वोक्तप्रकारेण गणेशादि पूजनं कृत्वाहोमार्थं वेदीं निर्माय, तत्राचार्यं ब्रह्माणं च वृत्वा, ततो वृताचार्यो होमवेद्यां पंचभूसंस्कार पूर्वक मग्निं संस्थाप्य-तदीशानकोणे कलशस्थापन विधिना कलशंसंस्थाप्यसंपूज्य तत्र नवग्रहानावाह्य संपूज्य च, ततोहोमवेद्युत्तरे द्वितीयं वृहत्कलशं स्थापयित्वा, तत्रसर्वौषधि, सर्वधान्यवीज, सर्वगंध, पंचरत्नानि, पंचगव्यं च प्रक्षिप्य, तत्तन्मंत्रै रभिमंत्र्य संपूज्य च, बालकमा नीय, गजपृष्ठे वा नौकायां, तदभावेतु—कांचने वरासने, भद्रा सनोपविष्टं बालकं तत्सर्वौषध्यादि जलेन पूर्वोक्त मूलशान्त्युक्ता भिषेक मंत्रैरभिषिंच्य, उद्वर्त्तनपूर्वकं संस्नाप्य च नव्येवाससी परिधाप्य, अंके धृत्वा पूजास्थल मागत्य, ईशानकलशे ताम्रपूर्ण पात्रो परिपंच सुवर्णप्रतिमाः अग्न्युत्तारण पूर्वकं वन्हिसोमवायु पर्वत केशवानां संस्थाप्य, संकल्पंकुर्यात्—अद्येत्यादि संकीर्त्या मुकोहं ममास्यामुकराशेर्बालकस्य निषिद्धदन्त जनन शान्ति कर्मणि, स्थापित कलशोपरि सुवर्ण प्रतिमासु वन्हिसोमवायु पर्वत केशवा नां पूजनं तथा कलशे सूर्यादि नवग्रहाणां पूजनं च करिष्ये,ततः, ३० एतन्ते० ३० भूर्भुवः स्वः सुवर्ण प्रतिमासुवन्ह्यादि केशवान्ता देवाः कलशाभ्यंतरे ब्रह्मवरुण सहिता नवग्रहाश्च सुप्रतिष्ठिता वरदाभवन्तु, इति प्रतिष्ठाप्य, चतुर्थ्यन्तैर्नाममंत्रैः पूजयेत्—३० ब्रह्मवरुण सहित भास्करादि ग्रहेभ्योनमः । ३० अग्नयेनमः, ३० सोमाय नमः, ३० वायवेनमः, ३० हिमवदादि पर्वतेभ्योनमः, ३० देवदेवकेशवायनमः,, होमवेदी समीपमागत्य ब्रह्मोपवेशनादि पर्युक्षणान्तंकर्मकृत्वा वरदनामाग्निं, ३० एतन्ते० इति प्रतिष्ठाप्य,, ३० वरदनामाग्नयेनमः संपूज्यरेग्नाजिह्वाश्च पूजयेत ।। प्रोक्षणी पात्रप्रणीता न्योरंतराले निदध्यात् ततोयजमानः संकल्पवि-धिनाद्रव्यत्यागं कुर्यात-संकल्पः-अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्या

मुकोहं ममास्यामुकराशेरमुकबालकस्य, प्रथमोर्ध्वपंक्ति दंतजनन शान्तिकर्मणि, वा सदंतजन्मजनन शां० । वा निर्दिनमासादौ दंत जनन शान्तिकर्मणि, वरदाग्नौ–प्रजापतिं, इन्द्रम्, अग्निं सोमं, आज्येन, वह्निंसोमंवायुं हिमवदादिपर्वतान् देवदेवंकेशवं,अष्टोत्तर संख्यया प्रत्येकं आज्येन अग्न्यादिकान स्विष्टकृतं चाज्येनाहंयक्ष्ये इदमाज्यं मयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तुनमम । ततआचार्यःब्रह्मणा ऽन्वारब्धो मनसाप्रजापतिंध्यात्वा जुहुयात्–ॐ प्रजापतये स्वाहा इदंप्रजापतयेनमम,ॐइन्द्रायस्वाहा । इदमिन्द्रायनमम । ॐअग्नये स्वाहा इदमग्नयेनममइतिहुत्वा,अन्वारंभंत्यक्त्वावक्ष्यमाण मंत्रैः १०८ संख्याघृताहुतिभिःप्रत्येकंजुहुयात्–यथा–ॐ वन्हयेनमःस्वाहा इदंवन्हयेनमम १०८वारंजुहुयात्एवंसर्वत्र । ॐसोमायनमःस्वाहा इदं० १०८ॐवायवेनमःस्वाहाइदंवायवेनमम १०८। ॐहिमवदादि पर्वतेभ्योनमःस्वाहा, इदं हिमवदादि पर्वतेभ्योनमम १०८। ॐ देवदेवकेशवायनमःस्वाहा इदंदेवदेवकेशवायनमम१०८। इति प्रधान होमं हुत्वा अतः परंहोमपद्धत्युक्त प्रकारेण भूरादि पूर्णाहुत्यन्तं हुत्वाऽऽयुषं कृत्वा ततो यजमानो गोदानादिकं कृत्वा जापकपा ठकेभ्यो दक्षिणांदत्वा, आचार्यः कलशजलेन पूर्वोक्ताभिषेक मंत्रैः अभिषिंच्य मंत्रतिलकं कृत्वा रक्षासूत्रंबध्वा मंत्रपाठं कृत्वाशिषं दद्यात् ततो घृतच्छायांदृष्ट्वा, आवाहितदेवानग्निं च विसृज्य ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयंभुंजीत ।

इति निर्यदंतजनन शांति पद्धतिः ।

॥ अथसहजननशांतिविधिः ॥

अथशान्तिविधि प्रोक्तषण्मासान्तेकुहूदिनेगणेशं पूजयेदादौ पूर्वांगहेमातृकाग्रहान् । प्रतिमा कारयेद्देव्याः स्वर्णरौप्यादिधातुजाम् । तस्यांसपूजयेद्देवीं श्यामांवामाङ्गवासिनीम् । भवस्यभीति हरणीं सर्वारिष्टप्रणाशिनीम् । रुद्राणींदक्षजांदक्षां शिववामाङ्गवासिनीम् । भद्रांभद्रकालींच त्रिपु रासुरनाशिनीम् । कामदांमोक्षदांचाद्यामण्डवैत्यमर्दिनीम् । इन्दुसुन्दरमुखांसुनेत्राचारुभूषणाम् । त्रिनेत्रांबहुनेत्रांच स्वर्णभूषणशोभिताम् । शिवाशिवप्रियारम्यांरामदुःखप्रणाशिनीम् ।पुराणांपुण्यदां

पुण्यामंभि. श्यामांप्रपूजयेत् । प्रणवादिनमोन्तैर्मुख्यपाविंशतिभिस्ततः । पूजयेच्चकितांदेवीं ... वैदिकतान्त्रिकैः । गंधैःपुष्पैस्तथाधूपैर्दीपनैवेद्यपायसैः । बलिदानैस्तुसंतोप्यदक्षिणाभिश्चतोषयेत् । सुवासिन्योथगायन्त्योगृहांगणविभूषणाः । अन्दरानीतयोर्मध्येबालकौमातृसंयुतौ । परस्परावि विन्यस्यमौनेनैवविधानवित् । परस्परोपायनंचपूर्वंवासप्रकल्पयेत् । दक्षिणाभिस्तथावस्त्रैः परस्प रोपपाणिषु । मोदकानिविचित्राणिदेयानिचतथाक्रमात् । अन्योन्यवीक्षणंकुर्याद्बालकेभ्योथमातृभिः । ततःस्वभवनंविश्यगीतवादित्रनिस्वनैः । श्यामांपुनःपूज्यमहेशार्धशरीरिणीकामप्रदांदुःखनुतांशिवप्रदां । ...हन्त्रींप्रसवपनाशिनीं दिव्यादिविस्त्वांपरितोषमानम् । इतिकृत्वाविनश्येतसहप्रसवसंभवः । दोषस्तुगिरिजेचान्यद्वक्ष्यामिसुसमाहितः ॥१४॥ इति

—:॰:—

॥ अथसहजननशांतिपद्धतिः ॥

अथ च प्रथमप्रसववत्याजलपूजाभ्यन्तरे एकस्मिन्गृहे, यथा एकस्यैवपुरुषस्योभेभार्ये, वापितापुत्रस्यभार्येवासहोदरयोर्भार्ये, सहप्रसववत्यौचेत्तदाशांतिः कार्यासाच–षण्मासान्तेकुहूदिने अमावास्यायां पृथक् पृथक् कर्त्तव्या ॥ अथचकर्त्ता आमादाःपायां प्रातर्नित्यकर्मसमाप्य, गणेशंनमस्कृत्य स्वस्तिवाचनंपठित्वा प्रधानसंकल्पंकुर्यात—अद्येत्यादि देशकालौसंकीर्त्य मुकराशिरमुकोहं मदाकुहूदिने अमुकराशे रमुकजातस्य सहजननदोषोपशान्त्यर्थं मायुरारोग्यादि चातुर्वर्गार्थसिध्दये, गणपत्यादि पंचांगदेवतानां, पूर्वाङ्गत्वेन पूजनंकरिष्ये—तथाचशान्त्यर्थं हरवामाङ्गवासिनीं श्यामादेवींचपूजयिष्ये, ततोगणेशादि पूजनंकृत्वा, कलशोपरिताम्रपात्रे सुवर्णप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्विकांसंस्थाप्यश्यामादेवीमावाहयेत्—ॐ आवाहयाम्यहंदेवीं, श्यामांदक्षसुतांशुभाम् । भवस्य भीतिहरणीं सर्वारिष्टनिवारणीम् ॥ ॐ एतन्ते० पठित्वा, ॐ भूर्भुवःस्वः शिववामाङ्गवासिनि, श्यामादेवि, इहागच्छेहतिष्ठ सुप्रतिष्ठितावरदाभव ॥ इतिप्रतिष्ठाप्य—ॐ श्यामादेव्यैनमः, इतिमन्त्रेण वाश्रीसूक्तेन पाद्यादि नीराजनान्तंदेवीं सम्पूज्य उपायनंनिवेद्य वक्ष्यमाणमन्त्रैः पुष्पांजलिप्रतिमन्त्रेणसमर्पयेत्—ॐ

श्यामादेव्यैनमः । ॐ वामांगवासिन्यै० । ॐ भवभीतिहरण्यै नमः । ॐ सर्वारिष्टप्रणाशिन्यै० । ॐ रुद्राण्यैनमः । ॐ दक्षजायै० । ॐ दक्षायै० । ॐ भववामांगवासिन्यै० । ॐ भद्रदायै० । ॐ भद्रकाल्यै० । ॐ त्रिपुरासुरनाशिन्यै० । ॐ कामदायै० । ॐ मोक्षदायै० । ॐ आद्यायै० । ॐ मधुकैटभमर्दिन्यै० । ॐ सुरूपायैनमः । ॐ सुमुख्यै० । ॐ सुनेत्रायै० । ॐ चारुभूषणायै० । ॐ त्रिनेत्रायै० । ॐ बहुनेत्रायै० । ॐ चारुकुंडलशोभितायै० । ॐ शिवायै० । ॐ शिवप्रियायै० । ॐ रम्यायैनमः । ॐ रामदुःखप्रणाशिन्यैनमः । ॐ पुण्यदायै० । ॐ पुण्यायैनमः इत्यष्टाविंशतिमन्त्रैरभ्यर्च्य, पुनर्धूपदीपबल्यादिभिः संतोष्यपूजास्थलंयत्नेनसंरक्ष्य, अर्द्धरात्रसमयेगृहांगणेसुवासिनीभिर्गीतादि गीयमानेसति । तयोःप्रसूत्योर्मध्येबालकौ परस्परांकेतूर्णांविन्यस्य परस्परोपायनं भूषणंमोदकादीनिचदत्वा अन्योन्यवीक्षणंकृत्वा बालकयोश्चततः स्वंस्वंबालकंगृहीत्वा गीतवादित्रनिःस्वनैः सहस्वंस्वंगृहंप्रविश्यपूजास्थलमागत्य,पुनः पूर्ववत्श्यामादेवींसंपूज्य । ततःसफलार्घ्यंदत्वा, प्रार्थयेत्—ॐ आयुर्वित्तंसुतंदेविदेहि सौभाग्यनिश्चलम् । कल्याणदायिनिशिवे श्यामादेविनमोस्तुते । उत्तरांगपूजनंकृत्वाकलशजलेन सपत्निपुत्रयजमानमभिषिंच्याशिषंदद्यात् ॥ इतिसहजननशान्तिपध्दतिः ॥

—:०:—

अथ आमावास्या जनन शांतिपरिभाषा ।

उक्तं च शान्तिसारे नारद.- अथातो दर्शजातानां मातापित्रोर्दरिद्रता । तद्दोषपरिहारार्थं शान्ति वक्ष्यामितेमदा । पुण्याहं वाचयित्वा तु कुर्यात् संकल्प पूर्वकम् । कुंभं वा स्थण्डिलकुर्यात्तद्देशे स्थापयेद् घटम् (तद्देशेतत्समीपे) तत्कुंभेनिक्षिपेद्द्रव्यं दधिक्षीरघृतादिकम् । (आदिशब्दाद्गोमूत्रगोमये) न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थाः सचूता निम्बकस्तथा । एतेषां त्वङमूलानांतगादीन्पल्लवांस्तथा । पंच रत्नानि निक्षिप्य वस्त्रयुग्मेण वेष्टयेत् । सर्वे समुद्र सरितस्तीर्थानि जलदानदाः । आयान्तुयजमानस्य दुरितक्षयकारकाः

रका । आपो हिष्ठा त्र्यृचेनाथ कयानश्चित्र इत्यृचा । यत्किंचेदमृचाचैव समुद्रज्येष्ठ इत्यृचा । अभिमंत्र्योदकं शरदग्नेः पूर्वदेशके । हरिद्रं रक्तकं चैव कृष्णं श्वेतं च नीलकम् एतेषां तण्डुलैश्चैव सर्वतोभद्रमुद्धरेत् कुंभात् पश्चादग्ने श्चपूर्वतो हरिद्रारक्तकैस्तंडुलैः सर्वतोभद्रमुद्धरेदित्यर्थ । दर्शस्यदेवतायाश्च सोमसूर्य स्वरूपकम् । प्रतिमां स्वर्णजां नित्यं राजतीं ताम्रजां तथा । (**पितृरूपाया दर्शदेवतायाः सोमसूर्ययोश्चस्वरूपं प्रतिमारूपं स्थापयेदित्यर्थः इति प्रयोग पारिजातः** । सर्वतोभद्रमध्ये च स्थापयेद्दर्श देवताम् । सद्वर्णे रक्तकुसुमे रक्तवर्णे गन्धपुष्पकम् । आप्यायस्वेति मंत्रेण सविता पश्चात्तथैव च उपचारैः समाराध्य ततो होमं चरेद्गुरुः । कृत्वा वह्निप्रतिष्ठां च कर्तुः संकल्पमीदृशम् । आयुरारोग्य मित्यर्थं सर्वारिष्ट प्रशांतये । पुत्रस्य दर्शे जननं तस्य दोष निबर्हणम् । मातापित्रोः कुमारस्य सर्वारिष्टप्रशान्तये । तथा मायुः श्रियै चैव शांतिहोमं करोम्यहम् । (**आयुरारोग्येतिश्लोकद्वयेन कर्तुसंकल्पं कृत्वेत्यर्थः**) समिधश्चरुद्रव्यं क्रमेण जुहुयाद् गुरुः । जुहेत्पितृमंत्रेण सोमाविष्णुंच मंत्रतः एतैश्च प्रत्येकं जुहेदष्टोत्तरं शतम् (**एतैरिति बहुवचनात् पितृहोमोऽप्यष्टोत्तर शतमिति प्रयोगपारिजातः**) दर्शस्य देवताहोम अष्टाविंशति संख्यया । होमान्तेतु ततः कुर्यादभिषेचनम् । श्री सूक्त मधुसूक्तसमुद्रज्येष्ठा इत्यृचा एतैर्मन्त्रैरभिषेकं मातापित्रोः शिशोस्तथा । तत हिरण्यमग्निश्चादीन्संकल्प्य समर्पयेत् । हिरण्यं रजतं चैव कृष्णधेनुं सदक्षिणां । अन्येभ्योऽपि यथाशक्ति दातव्या दक्षिणा तथा । ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्र कारयेत् स्वस्ति वाचनम् । **इति नारदोक्त दर्शशांति परिभाषा ।**

—:o:—

अथअमावास्याजननशांतिपद्धतिः ।

—:※:—

अथच कर्त्ता नित्यकर्म समाप्य—गृहाभ्यंतरे पूर्वदिक्षु एकोनविंशति रेखात्मकं सर्वतोभद्रं विरच्य स्वासने उपविश्या चम्य प्राणानायम्य, दीपं सम्पूज्यसंकल्पंकुर्यात—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकोहं ममास्य जातस्य दर्शजनन सूचितस्य मातापित्रोः कुमारस्य च सर्वारिष्ट प्रशांतये, आयुरारोग्य सिध्दये च श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थं, दर्शजननशान्ति कर्मणि, निर्विघ्नता सिद्धये—गणपतिपूजन कलशस्थापन पुण्याहवाचन मातृका पूजन नान्दी श्राद्ध ग्रहपूजन पूर्वकमाचार्यऋत्विग्वरणानिच करिष्ये ॥ ततो गणेशादीन्संपूज्य, सर्वतो भद्रे मंडलदेवानावाह्यसंपूज्य च—तत्र

मध्ये-ताम्रकलशं-संस्थाप्य, तत्र संगमजलं पंचगव्यं न्यग्रोधो दुम्बरोश्वत्थचूतनिंबवृक्षाणांमूलत्वचःपल्लवांश्चपंचरत्नानिनिक्षिप्य वस्त्रयुग्मेन संवेष्ट्य कलशपूजोक्त विधिना संस्थाप्य संपूज्य च। तत आपोहिष्ठेत्यृचेन, कयानश्चित्र० इतिच। पूर्वोक्त समुद्रज्येष्ठा इतिसूक्तेनोदकमभिमंत्र्य ॥ तदुपरिताम्रपूर्णपात्रं तंडुलपूरितं विन्यस्यतत्र वरुणं संपूज्य, तत्र पूर्णपात्रोपरि मध्ये सुवर्णप्रतिमांदर्शदेवतात्मकपितृरूपां, ॐ येचेह पितरो येचने हयाँश्च विद्मया २ॐ॥ऽउचनप्रविद्म। त्वंवेत्थ यतितेजातवेदः स्वधाभिर्यज्ञ० सुकृतं जुषस्व ॥ इतिमंत्रेण संस्थाप्य—तद्दक्षिणेसोमं रजत प्रतिमाया मावाहयेत्-मंत्रः—ॐ आप्यायस्व समेतुतेविश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवावाजस्य संगथे। इतिसोमंसंस्थाप्य, पितृवामे-सवितारमावाहयेत्-मंत्रः ॐसवितात्वासवानाॅंसुवतामग्नि र्गृहपतीनाम्। इति संस्थाप्यैभिर्मंत्रैः संपूज्य; ततः कुंभात्पश्चिम दिशि, होमवेदीं कल्पयित्वा होमपद्धत्युक्त विधानेन पंचभू-संस्कार पूर्वकं प्रोक्षणान्तं कर्मकृत्वा संस्रवधारणार्थ-प्रोक्षणीपात्र मग्निप्रणीतयोर्मध्ये धृत्वा ततोवरदनामाग्निं संपूज्य द्रव्यत्यागं कुर्यात्-अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममास्यजातस्य दर्शजननसूचितारिष्ट निरसनपूर्वकं दर्शशान्तिकर्मणायक्ष्ये तत्राघाराज्य भागदेव ताभ्यो नवग्रहदेवताभ्योऽष्टसंख्याभि स्तथा पितृसोम सवितृ देवेभ्योऽष्टोत्तरशताहुतिभिः प्रत्येकं। वाष्टविंशत्यन्यतम संख्याभिर्हुत्वा स्विष्टकृदादि भूरादिनवाहुतिहोमे घृतेन, तत्तद्देवताभ्यो परित्यक्तं यथादैवतमस्तु नमम ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा। ॐ इन्द्रायस्वाहा। ॐ अग्नयेस्वाहा। ॐ सोमायस्वाहा। इत्याघारा वाज्यभागौहुत्वा प्रधानहोमंकुर्यात्—तत्रादौ नवग्रहाणांमंत्रैः प्रत्येकं २८ विंशत्याहुतिभिर्हुत्वा। ॐ येचेह पितरः ०१०८। ॐ आप्यायस्व० १०८ ॐसवितात्वा०।१०८।ततः—ॐअग्नये स्विष्ट कृतेस्वाहा। ततो भूरादि नवाहुत्याज्यहोमं हुत्वा। सर्वतोभद्रस्थ कलशजलेन पूर्वोक्ताभिषेक मंत्रैः श्रीसूक्तेन च सपत्निपुत्रयज

मानमभिषिंच्य, ततोबलिदानान्ते पूर्णाहुतिंकृत्वा, आचार्यायवरं कृष्णांसवत्सांगांदत्त्वाशेषं समाप्य ऋत्विगाचार्यादिभ्यो दक्षिणां दत्वा आवाहित देवान्संपूज्याग्निं विसृज्य यजमानं तिलकारोपणेनाशिषं दत्वा ब्राह्मणान्भोजयित्वा शान्तीः पाठयित्वा स्वस्ति वाचनंकुर्यात् ॥ इत्यमावास्या जनन शान्ति पद्धतिः ॥

अथ ग्रहणजनन शांतिविधिः ।

अथ शौनकोक्त ग्रहणजनन शान्तिविधिर्वक्ष्ये—ग्रहणेचन्द्रसूर्यस्य प्रसूतिर्यदिजायते । व्याधिपीडातदास्त्रीणामादौतु मृत्युदर्शनात् । इत्थसंजायतेयस्तु तस्यमृत्युर्नसंशय व्याधि पीडा च दारिद्र्यशोकश्चकलहोभवेत् । शान्तितेषांप्रवक्ष्यामिनराणां हितकाम्यया । यस्मिन्नृक्षेविशेषेण ग्रहणयदिजायते । तन्नक्षत्राधिपस्यैव सुवर्णप्रकल्पयेत् । (नक्षत्राधिपस्यरूपमित्यर्थः) यथशक्त्यनुसारेण नित्तशाठ्यनकारयेत् । सूर्यग्रहेसूर्यरूप हिरण्येन स्वशक्तित । चन्द्रंच ग्रहेधीमान्रजतेन विशेषत - राहोरूप प्रकुर्वीत नागनैवविचक्षण (नागनसीसेन) शुचौदेशे प्रयत्नेन गोमयेनोपलेपयेत् । तस्योपरिन्यसद्धीमानवपल्लवशोभनम् । त्रयाणांचैवरूपाणां स्थापनं तत्रकारयेत् । रक्ताक्षतरक्तगंधरक्तपुष्पाम्बराणि च सूर्यग्रहे प्रदातव्यं सूर्यप्रीतिकराय च । श्वेतवस्त्रश्वेतमाल्य श्वेतगंधानुलेपनम् चन्द्रग्रहे प्रदातव्य चन्द्रप्रीतिकरायच । राहवेचैवदातव्यं कृष्णपुष्पाम्बराणिच । दद्यात्तत्रनाथाय राहुप्रीतिकरायच । सूर्यं सम्पूजयेद्धीमानकृष्णेनतिमन्त्रत । चन्द्रग्रहे तथा सम्यगिमदेवेतिमन्त्रत । कयानश्चित्रमन्त्रेणराहुयत्नेनपूजयेत् । एवंसपूज्यधीमान्समिद्भिश्च र्कं सभवै । (सूर्यग्रहइत्यर्थ.) चन्द्रग्रहेच पालाश समिद्भिर्जुहुयात्तत । दूर्वाभिर्जुहुयाद्धीमान्राहो । सम्प्रीणनायच । समिद्भिर्ग्रहभूतस्य नवनैवेद्यसंयुतम् । आज्येनचरुणाचैव तिलैश्चजुहुयात्तत । निम्बइत्यर्थं । पंचगव्यैपंचरत्नै पंचत्वक्पंचपल्लवै । जलैर्गंधकल्कैश्चसहितै कलशोदकै अभिषेकं प्रकुर्वीतयजमानस्य मन्त्रत मन्त्रैर्वारुणसंभूतै रापोहिष्ठादिभिस्त्रिभि । इमंमेगंगे इत्यादितत्त्वायामीति मन्त्रकै अभिषेके निवृत्तेतुयजमान समाहित आचार्यं पूजयेत्तश्चरत्नशान्तो ।विजितेंद्रिय । तस्मैदद्यात्प्रयत्नेन भक्त्या प्रतिकृतित्रयम् । गांचैव दक्षिणां दद्याद्यजमान समाहित इत्थंग्रहण जातानां सर्वारिष्ट विनाशनम् कथितं भार्गवेणेद शौनकायमहात्मने ।

इति ग्रहणजात शान्तिविधिः सरलतयाऽत्रप्रयोगोदर्शित ॥

अथ कार्तिकवाराहदंष्ट्राजननशांति परिभाषा ।

—::०::—

स्मृत्यादिषु— दिनषट्कंकन्यकायाः— सप्ताहानिचकार्तिके । वराहदंष्ट्राविज्ञेया वर्जयेत्सर्व कर्मसु । इति केचिन्मतम्---वैद्यशास्त्रेतु कार्तिकस्य दिनान्यष्टावष्टौ चैवाग्रहायणे । यमदंष्ट्रा समाख्याता स्वल्पाहारः सजीवति (ग्रन्थान्तरे) लोही तामी च रौप्यो तदनुखलु–महा राजती कालदंष्ट्रा ऊर्जमासे मुनीन्द्रा स्त्रिदशदिवसवैमानमाद्युक्तमत्र । आरभ्यां तातनाशो निजकुलविरति स्ताम्रयावा तथैव राजत्यांद्व्यहानि भवति च नियतं स्वर्णयावे शुभानि ॥ ज्योतिषार्णवेतु— तुलार्कतस्त्रिस्त्रिदिनेश्वलोह ताम्रोयरौप्याग्निजयामदंष्ट्राः इहप्रजातस्यसमस्तलिङ्गा च्छान्त्याशुभोदशभवाधकास्त्री ॥ स्मृत्यन्तरे—चित्रापादेतृतीयेच यदाभानुःप्रजायते । तदारभ्यार्द्धमासे च विज्ञेया कालदंष्ट्रकाः ॥ इत्यादि प्रमाण वाक्यैस्तुलार्कत एव पूर्वोक्त दंष्ट्राणां मानं नतु चान्द्रमानतो गणना भवतीति शास्त्रसम्मतिः ॥ सर्व सम्मत्या तु–दंष्ट्राप्रभागे भगवान्धरित्रीं प्रयेदशाहे ऽश्वतकार्तिकस्य । तस्मिन्नकुर्याद् व्रतगेहवास्तुविवाहयात्रा शुभमंगलानि । तत्रशान्तिः प्रकर्त्तव्यादंष्ट्रादंष निवारिका धेनुंपयःस्विनींदद्यात्सर्वदोषोपशान्तये । गर्गमते तु–गर्ग उवाच–अथातःसंप्रवक्ष्यामि दंष्ट्रायां जननेफलम् । सिंह सर्पन्तथाश्वानस्त्रयोदशव्यवस्थिताः प्रथमेह्यात्मनाशाय पितृनाशोद्वितीयके । तृतीयेमातृनाशाय चतुर्थेभ्रशनाशनम् । पंचमेभ्रातरंहन्ति षष्टेगोत्रक्षयोभवेत् । सप्तमेमातुलं हन्ति सर्वस्वचाऽष्टमेतथा । नवमेद्रविणहन्तिदशमेस्वामिनंतथा । श्वश्रूमेकादशेहन्तिद्वादशेश्वसुरंतथा त्रयोदशेशुभंविद्यात् दंष्ट्रायाफलमीदृशम् ॥ मर्त्ये स्वर्गे च पाताले—चत्वारिदिनसंख्यया । फलं वक्ष्यामिलोकेषु दंष्ट्राद्वादशके तथा । स्वर्गलोकेभवेत्सौख्यंमर्त्यलोकेमहद्भयम् । पातालेचभवेत्स भो दंष्ट्रायास्तुव्यवस्थितिः । तत्रशान्तिप्रवक्ष्यामि साचार्यमतेनतु । ब्राह्मणान्वरयेत्पूर्वं कुलीनान्वेद पारगान् । प्रतिमांकारयेद्विष्णो निष्कनिष्कार्धपादतः । मंडलंकारयेत्तत्र रक्ताब्जव्रीहितंडुलैः । तत्रैककलशंस्थाप्यपंचरत्नसमंयुतम् । शतौषधानिनिक्षिप्यसर्वौषधियुतानिच ॥ (शतौषधानिशतमूलानि मूलशांतिपरिभाषायामुक्तानि) वेदोक्तेनविधानेनकलशंस्थापयेत् बुधः । तत्रोपरिन्यसेत्पात्रंस्वर्णवा रौप्यताम्रकम् । तन्मध्येप्रतिमांस्थाप्य, पीताम्बरधरांशुभाम् । विष्णोरराटमंत्रेणप्रतिमांपूजयेत् सुधीः । उपचारैःषोडशभिः किंवापंचोपचारकैः । तस्मात्तु नैर्ऋते देशे स्थंडिलेग्निंप्रकल्पयेत् । स्व स्वशाखोक्तविधिना कुर्यादग्निमुखंततः ॥ त्रिमध्वक्तै स्तिलैर्विद्वान्होमं कुर्यात्स्वशक्तितः । निर्वर्त्य चाज्यहोमान्तमभिषेकं समाचरेत् । दारपुत्रसमेतस्ययजमानस्यसर्त्विजः । अक्षीभ्यामितिसूक्तेन पावमानीभिरेव च । विष्णो ररराटमंत्रेणशिवसंकल्पमन्त्रकैः । ततःशुक्लांबरधरःशुभगंधानुलेपनः । यजमानो दक्षिणाभिस्तोषयेदृत्विगादिकान् । धेनुंपयस्विनीं दद्यात्प्रतिमांवस्त्रसंयुताम् । गुरुगवमनां

भूत्वा आचार्याय प्रदापयेत् । अन्येभ्यो दक्षिणां दद्यात्तथा वित्तानुसारतः । भूयसीं दक्षिणां दद्याद् ब्राह्मणान् भोजयेद्दश । एवं कार्तिकदंष्ट्रायां शान्तिं कुरुते नरः । सर्वान्कामानवाप्नोति जीवेद्वर्षशतं सुधीः । व्रत वधे भवेत्कुष्टी दीक्षाचापि सुनिष्फला । विवाहे चापि वैधव्यं दंष्ट्रायां फलमीदृशम् । इति—

— ० —

अथकार्तिकवाराहदंष्ट्राजननशांतिपद्धतिः ।

अथ च शान्तिकर्ता पूजा स्थलमागत्य स्वासने उपविश्य आचम्य, प्रतिज्ञा संकल्पं कुर्यात्—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकराशिरमुकोऽहं कर्त्तव्यो मुक बालकस्य कन्याया वा दंष्ट्रा जनन शान्तिकर्मणि निर्विघ्नतासिद्धये गणपत्यादि पंचाङ्ग देवतानां पूजन पूर्वकं गर्गोक्त विधानेन वाराहदंष्ट्रा जनन शांतिंकरिष्ये, ततः पंचाङ्ग देवताः सम्पूज्य, तत्र तंडुलै रष्टदल कमलं विरच्य सिंदूरेणापूर्य तन्मध्ये ताम्रकलशं मृण्मय कलशं वा संस्थाप्य, जलेनापूर्य पंचपल्लव शतमूलानि तत्रनिक्षिप्य आचार्यं वृणुयात्—वरण द्रव्यं ब्राह्मणं च संपूज्य, वरणद्रव्यं हस्तेनिधाय संकल्पः—अद्येत्यादि संकीर्त्य, अमुकोऽहं ममास्य बालकस्य गर्गोक्तविधिना दंष्ट्राजनन शान्तिकर्मणि, एभिर्वरणद्रव्येणामुक शर्माणं ब्राह्मण माचार्यत्वेनाहं वृणे, वरणद्रव्यं दत्वा, वृतोऽस्मीति ब्राह्मणो ब्रूयात् । कर्मकुरु करवाणीति प्रत्युक्तिः । ॐ आचार्य स्त्वति प्रार्थयित्वा, तत आचार्यः कलशं पूजयित्वा, ततस्तदुपरि तंडुल पूरितं ताम्रपात्रं—ॐ पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णापुनरापत । वस्नेव विक्रीणा वहाऽइषमूर्जं शतक्रतो । इतिपूर्णपात्रं संस्थाप्य तदुपरि निष्क निष्कार्द्धं वा यथावित्तं सुवर्ण प्रतिमां महाविष्णो रग्न्युत्तारण पूर्विकां संस्थाप्य सौवर्णीं दंष्ट्रामपि च स्थापयित्वा, संकल्पः— अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकोऽहं ममास्य बालकस्यतुलार्के वाराह दंष्ट्रासु जननत्वान्मातापित्रोर्वा स्वस्य च समस्तदुःखदौर्भाग्यादि दोषानुपत्तये शुभफल प्राप्तये च गर्गोक्त विधिना

कलशोपरिसुवर्ण प्रतिमायां महाविष्णोः पूजनं करिष्ये-ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णव मसिविष्णवेत्वा ॥ इतिमंत्रेण वा पुरुष सूक्तेन षोडशो पचारेण संपूज्य, ततस्तन्मंडलस्य कीयद्दूरे नैर्ऋत्यभागे हस्तपरि मितंस्थंडिलं कृत्वा कुशकण्डिकोक्त विधिना पञ्च भूसंस्कार पूर्व कमग्निं संस्थाप्य,कुशास्तीर्णादि प्रोक्षणी निधानान्तं कर्मकृत्वा-ॐ वरदाग्ने इहागच्छेह तिष्ठ, ॐ एतन्ते देव० इति पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः वरदाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भवेति प्रतिष्ठाप्य ॐ अग्निंदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुप ब्रुवे ॥ देवाँ २॥ऽआसादयादिह ॥ इति मंत्रेण सम्पूज्य ब्रह्माणं वृणुयात्-ब्रह्माणंसम्पूज्य वरण द्रव्यं हस्तेनिधाय, संकल्पः—अद्येत्यादि अमुकोऽहं करिष्यमाण वराह दंष्ट्रा जननशान्ति कर्मणि कृता कृतावेक्षणादि ब्रह्मकर्म कर्तुं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे वृतोऽस्मीति कर्मकुरु करवाणीति प्रत्युक्तिः ॥ तत आघारावाज्यभागौ हुत्वा (नान्वारंभः) मधु गुड़ शर्कराघृतमिश्रिततिलैः प्रधानहोमं कुर्यात्—विष्णोरराट मिति प्रजापतिर्ऋषि र्यजुश्छन्दो विष्णुर्देवता दंष्ट्रा जनन होम कर्मणिविष्णुप्रीतयेत्रिमध्वक्त तिलहोमेविनियोगः—ॐ विष्णोर राटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा, इति मंत्रेण सहस्राहुतीर्हुत्वा, ततः ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते नमम, ततोभूरादि नवाहुति प्रायश्चित्त होमं कृत्वा पूर्णपात्र दानान्ते संस्रवप्राशनं प्रणीता विमोकं पूर्णाहुतिं च कृत्वा, मंडपोत्तर देशे सपत्निपुत्रं यजमानं भद्रासनस्थं, स्थापित शतमूलादि गर्भित कुम्भजलेन मूल शान्त्युक्त विधिना श्वेत वस्त्रोपर्युपवेशयित्वा पत्नीं वामतः कृत्वा संकल्पं कुर्यात्-अद्येत्यादि संकीर्त्य मुकराशिः सपत्नि पुत्रो ऽहममुकराशे रमुक बालकस्य, वराह दंष्ट्रा जनन सूचिता रिष्ट निवृत्तये शुभफल प्राप्त्यर्थेच अभिषेकमंत्रैः शान्तिस्नानं करिष्ये,, ततो हरिद्रादि सतैल सर्वौषधि-लिप्ताङ्गानां त्रयाणां

प्राङ्मुखानांमाचार्यो मूलशान्त्युक्तमंत्रैः ॐ अक्षिभ्यांते इत्यादि तत्रोक्ते द्विपदे शंचतुष्पदे, इत्यन्तैरेकचत्वारिंशन्मंत्रैरभिषिंच्य । ततः—ॐ योऽसौ वज्र धरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः दंष्ट्रा जात शिशोर्दोषं मातापित्रो व्यपोहतु । १ । योऽसौ शक्तिधरोदेवो हुतभुग्मेषवाहनः । सप्त जिह्वः सदेवोग्नि दंष्ट्रादोषं व्यपोहतु । २ । योऽसौ दंडधरोदेवो यमो वहिषवाहनः । दंष्ट्राजात शिशोर्दोषं मातापित्रो व्यपोहतु । ३ । योऽसौखड्गधरोदेवो निर्ऋतिराक्षसाधिपः । प्रशामयतु दंष्ट्रोत्थंदोषंगण्डान्तसम्भवम् । ४ । योऽसौ पाशधरोदेवो वरुणश्च जलेश्वरः नक्रवाहः प्रचेतानो दंष्ट्रोत्थाऽघं व्यपोहतु । ५ । योऽसौदेवो जगत्प्राणो मारुतो मृगवाहनः । प्रशामयतु दंष्ट्रोत्थंदोषं बालस्य शान्तिदः । ६ । योऽसौ निधिपतिर्देवो गदाभृन्नर वाहनः । मात्रा पित्रोः शिशोश्चैव दंष्ट्रादोषं व्यपोहतु । ७ । योऽसाविन्दुधरोदेवः पिनाकी वृषवाहनः । वराह दंष्ट्रजनितं दोषमाशुव्यपोहतु ॥ ८ । ॐ विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपालानवग्रहाः । सर्वदोष प्रशमनं सर्वेकुर्वन्तु मंगलम् । ९ । ततःसपत्निपुत्रं यजमानं वस्रान्तरित कुम्भाभ्यां स्नापयित्वा, शुक्ल वस्त्राणि परिधाप्य घृतच्छाया दर्शनं कृत्वास्नानवस्त्राण्याचार्यायदद्यात् ततोगोदान पद्धत्युक्तप्रकारेण गांसंपूज्य देवादींस्तर्पयित्वा—संकल्पः—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्यामुकराशिः सपत्निपुत्रोऽहंममास्यपुत्रस्य (कन्यायाः) तुलार्कवराहदंष्ट्राजननसूचितारिष्टनिवृत्तिपूर्वकसर्वोपद्रव शान्तिपूर्वक दंष्ट्राजननशांति कर्मणः साद्गुण्यार्थमिमां सवत्सां गां तथा विष्णुप्रतिमां हैमीं वराहदंष्ट्रां सकुम्भास्त्वा आचार्यायामुकशर्मणेतुभ्यंसंप्रददे।ॐतत्सन्नमम,ततःप्रतिष्ठांकृत्वा प्रदक्षिणा चतुष्टयंविधाय कलशजलेन यजमानमभिषिच्य रक्षासूत्रंबध्वामन्त्रतिलकाशीर्वादंदत्वा देवान्विसृज्य दशब्राह्मणान्भोजयेत ।

॥ इति तुलार्कवराहदंष्ट्रा जनन शान्तिपद्धति. ॥

अथ सिंहगवादि प्रसव शांतिपरिभाषा।

अथ सिंहादिप्रसूतगवादिशान्तिः —अद्भुतसागरसारे —गौर्मिहिषी वा यदि तृणं प्रसूयते । मण्डलं निर्दिष्ट भूमिर्भवेत् ददौ प्रसूतां ब्राह्मणाय तां गां विप्राय दापयेत् । ततो होमं कुर्यात् घृताक्त मधुपर्के । आहुतीनां घृताक्तनाम्नुत जुहुयात्ततः (व्याहृतिभिर्नाम) सोमाय प्रयत्नेन ब्राह्मणाय दक्षिणा । वस्त्रयुग्मं च गांचैव सुवर्णं च प्रदापयेत् । इष्टदेवमन्त्रेण ततः शान्तिर्भविष्यति । अथर्ववेद परिशिष्टोक्तशान्तिः —अधेनुं च महिषीं चाश्वैवडवादिना । सिंहगाव प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायका । विधानान्तरकर्तव्यं नैरृत्यादिभिश्चरेत् । रौद्रे सूक्ते प्रकर्तव्यो होमः सूर्यस्य प्रार्थये । प्रजापतिरुत्तरस्य पायसशर्करे हुतम् । सहस्रं वा भोक्तदानाद्यष्टौ यथाविधि । प्रसूतपाप्मन् (सूर्यमन्त्रेण) तां गां विप्रायदापयेत् । ततोऽग्नीन् निर्वापयेत्—तिलहविषा न च अर्घं सलवणतया । तन्त्रशान्त्यर्थितिमिच एक स्मृतम्—रत्नानि रत्नप्रकाशतो दृष्टानि ।

इति सिंहादि प्रसूतगवादि शान्ति विधि सरलत्वान्नप्रयोगो दर्शित ।

अथ सीताभूत सर्पशांति विधिः ।

उक्तं च नंदीपुराणे —कार्तिकेयउवाच हलरदमथ फालनाम्रकार्तिकेय । प्रियतयस्य मरणेयदेवतन्त्रमद्भुतम् । मत्वौर गृहपतेर्भिक्षाणाम् तथा । ब्रह्मशान्ति प्रकुर्व्वात तिकयनचोदिता । आदौगणेशसम्पूज्य चैन्यालयवैत्य । मृत्युंजयस्य प्रतिमा वलयग्रालेनयद्भुत तस्मिन्सौवर्णरोलेरुम कर्कूटरूणात्सुम् । त्रिनेत्र द्विभुजपीत वस्त्रेणाच्छादितम् । त्र्यम्बकेणैवमन्त्रेण पूजयेद्विधिवत्प्रिय । मृत्युञ्जयसमीपे कटेचैव प्रदूषयेत् । नमो रुद्राभिन्नेनमहामन्त्र प्रकल्पयेत् । चरघृतेन तथा होमान्ते हविषपक्वेत् । दद्यात्पुनरमृतस्य यजमानस्य ब्राह्मण इतिकार्तिकेय । केचिन्मत—वृषभील कृत्वा पतो निष्क्रय च प्रदापयेत् । मृत्युंजयप्रतिमां तदधवा प्रदापयेत् । गोदानमात्रं कर्तव्यं यदिच्छेत्सिद्धिमिच्छति ।

इतिसीताभूत सर्पशान्ति ।

अथ सर्पयुग्म दर्शनशान्तिः

ईश्वर उवाच —सर्पयुग्ममयदापश्यत्तदाहानि प्रजायते । अर्धहानिर्भवेत्तस्यशरीरे व्याधिपी-डनम् तत्र होतव्यात जुहुयाद्घृतमधुना । नमोऽस्तु सर्पेभ्य इतिमन्त्रो तुभ्यंविधि । मृत्युंजयस्य प्रतिमां स्वशक्ति प्रपूजयेत् ।

इतिसर्पयुग्मदर्शन शान्ति

अथ काकविष्ठापतन शांतिः ।

अथ यस्योपरिकाको विष्ठां संध्यतेयदि । चोरस्तस्मात्भय स्तस्यमिद्धिमकरा । कुम्भजलस्थसलरूढो विष्ठांमध्यतेयदि । त यत्लक्ष्मी त्रायांतिमिमिम संनशाम्य निरालम्बोयदाकाको विष्ठासम्पतते यदि ।

शिरसिपततियस्यपञ्चमासात्तस्य मृत्युः। स्कन्धेवाथयथापृष्ठे विष्ठापततियस्यचेत् । आतंकंभवेत्तस्य, भयवादेहनाशनम् बाह्वोः । पततिविष्ठातुमित्रनाशोभवेत्तदा । कुक्षौपुत्रमित्रनाशः, उदरेरोगमादिशेत् । गुह्येपततियस्यैव पुत्रनाशोभवेत्तदा । ऊर्वोर्वाजानुनोर्यस्य, काकविष्ठाप्रपद्यते । तद्वाहनस्यनाशः स्याद्भयं राज्ञः सकाशतः । चरणेप्रपतेद्यस्य, देशत्यागोभवेत्तदा । निशाभ्योयदाकाको विष्ठांश्वेतांकरोतिचेत् । उत्तरात्पूर्वमायाति शत्रुनाशोभवेत्तदा । याम्यात् पराद्दिशंयाति क्रुणुविष्ठांप्रपद्यते । मध्यान्हेतरतोमृत्युः सर्वनाशोभवेत्तदा । **इति काकविष्ठापतनफलम् ।** **अथशांतिः**—यस्यांगेप्रपतेद्विष्ठा, सचैलंस्नानमाचरेत् । वस्त्रत्यागोभवेत्तस्यसद्यः शान्तिकरोद्विजः । धेनुरेकाप्रदातव्याप्रसवालंकारशोभिता । पंचरत्नं च दातव्यं दक्षिणाचैवशक्तितः । सतिलैर्मधुमिश्रैश्चमंत्रैःशतमष्टोत्तरंशतंयजेत् ।

—:::—

अथकाकविष्ठापतनशान्तिपद्धतिः ।

अथचकर्त्ता काकविष्ठा पतन क्षणेजलाशये गत्वा—संकल्पः—अद्येत्यादि० अमुकोऽहं ममामुकांगे काकविष्ठापतन जनितदुर्दोषोप शान्त्यर्थं, सचैल स्नानं करिष्ये, इतिसचैलंस्नात्वा परिधेय स्नान वस्त्राणि परित्यज्यान्यवासः परिधाय स्थंडिलेग्नि मुपसमाधाय। वरदाग्निमावाह्य, नदीशाने कलशं संस्थाप्य, तत्रग्रहानावाह्य, अम्बोपचेशनादि पर्युक्षणान्तं कर्मकृत्वा, आघारा वाज्यभागौ हुत्वा । मधुतिल सर्पिभिर्गायत्री मंत्रेण वा त्र्यंबक मंत्रेणे, न्द्रमंत्रेणचाष्टोत्तर शतंहोमंविधाय उत्तरतंत्रं समाप्य स्वशक्त्या-दक्षिणां दद्यात् । होमा शक्तौतु—सचैलंस्नात्वातिलपात्रेण सह मापान्न दानं घृतच्छायां कुर्यात् वासप्तशती पाठं कुर्यात्कारयेद्वासर्वदोषपरिहारार्थं गोदानं पंचरत्नदानंच कुर्यात् ॥

इतिकाकविष्ठापतनशांतिपद्धतिः ।

अथ काकमैथुनदर्शनशांतिविधिः ।

हेमाद्रौगर्गः—श्वेतकाकमैथुनदर्शन मेवानिष्टावहम् । काको मैथुनयुक्तश्चेत्श्वेतः सयदिदृश्यते । नारदसंहितायान्तु---दिवावायदिवारात्रौयः पश्येत्काक मैथुनम् ॥ सनरोमृत्यु माप्नोतिअथवा स्थाननाशनम् । तद्दोषशमनायेत्थं शान्तिकर्मसमाचरेत् ॥ गृहस्यैशानभागेतु होम-

स्थानं प्रकल्पयेत् । स्वगृह्योक्त विधानेन तत्रस्थाप्य हुताशनम् । मरान्ते समिदमाज्यैर्हुनेदष्टोत्तरं शतम् । प्रतिमन्त्रं त्र्यंबकेण अपमृत्युद्वयेनच । व्याहृतिभिर्व्रीहि तिलैर्जपःधन्तं प्रकल्पयेत् । पूर्णाहुतिंच जुहुयात्कर्ता सुचिरलं व्रतः । स्वर्णशृंगी रौप्यखुरां कृष्णांधेनुं पयस्विनीम् । वस्त्रालंकारसहितांनिष्क द्वादशसंयुताम् । तदर्धेन तदर्द्धेनकायुताम् । यथावित्तानुसारेणतन्न्यूनाधिक कल्पना । आचार्याय प्रियायतांदद्यात्कुटुम्बिने । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्स्वस्तिवाचनपूर्वकम् । एवंयः कुरुतेसम्यक्‌सतद्दोषात्प्रमुच्यते ।

। इति काकमैथुनदर्शनशान्ति विधिः ।

अथ पल्लीपतनशरठारोहणशांतिः ।

उक्तंच वशिष्ठ संहितायाम्—कुड्यगेमस्तकथंगे. पतिते फलमुच्यते । मस्तके राज्यलाभःस्याद्भालिकेणेच भूषणम् । नेत्रयोर्मित्रलाभःस्यात्सुगंधनासिकोपरि । मुखेसुभोजनंकण्ठे स्त्रीलाभः स्कन्धयोर्जयः । अंसेते नौ वेवृद्धिःस्या दर्थवृद्धिःकरद्वये । वक्षःस्थलेतुसौभाग्यं हृदिप्रीतिविवर्धनम् । पुत्रलाभस्तु कुक्षौस्यान्नाभौप्रीतिविवर्धनम् । अर्थलाभस्तुपृष्ठेस्या पार्श्वयोः सुहृदागमः । कटिस्थाने वस्त्रलाभो गुह्यस्थाने समागमः । गुददेशे विनाशःस्या दूरुजान्वे श्चवाहनम् । जंघयोः पादयोश्चैव सदागमनमादिशेत् ॥ पादतश्चोर्ध्वगमनं कुर्यादामस्तकाद्यदि । गात्रेप्रदक्षिणेचापि राज्यलाभोभवेत्सदा । मस्तकात्पादपर्यन्तं यदिगच्छेदधोऽपिवा । भवेदुश्चतदातस्य कुटुम्ब कलहामयाः । सरटीपतनादेव सचैलं स्नानमाचरेत् ॥ वामपादेतु गमनं क्षीणाव्यक्तं फलंवदेत् ॥ नारदसंहितायाम्—फलेप्ररोहणेचैव सरटस्य प्रचारतः । सर्वांगेष्यशुभं विद्याच्छान्ति कुर्यात्स्वशक्तितः । शुभस्थाने शुभावाप्तिरशुभेदोषशान्तये । तरस्वरूप सुवर्णेन रुद्ररूपं तथैवच । मृत्युंजयेन मन्त्रेण वस्त्रादिभिरथार्चयेत । अग्निं तत्रप्रतिष्ठाप्यजुहुयात्तिलपायसैः आचार्यो वारुणैः सूक्तैःकुर्यात्तत्राभिषेचनम् । आज्यावलोकनं कृत्वा शक्त्या ब्राह्मण भोजनम् । गणेशक्षेत्रपालार्क दुर्गाक्षोपयंगदेवता । तासांप्रीत्यै जप कार्यः शेषं पूर्ववदाचरेत् । ऋत्विग्भ्योदक्षिणांदद्यात्षोडशेभ्यः स्वशक्तितः ॥

॥ इति पल्लीपतन शरठारोहणशान्तिः ॥

अथ विनायकशान्ति परिभाषा—तत्रादौप्रतिकूलादिनिर्णयः—स्मृतिचंद्रिकायांभृगुः धाम्राननंतरंश्चकुलयोः कस्यचिन्मृति तदोद्वाहोनेकार्यः कृतोवैकव्यमाप्नुयात् । **शौनकः**—पितापितामहश्चैव मातावै पितामही । तृतीयास्त्रीपुताभ्राता भगिनीचाविवाहिता । एभिरत्रविपन्नैश्च प्रतिकूलं बुधैस्मृतम् । **पित्रादिमरणेतु विशेषमाह शौनकः**—वरवधू पितामाता पितृव्यश्चसहोदरः एतेषांप्रतिकूलं च महाविघ्नप्रदंभवेत् । **मांडव्यः**—पितुराशौच मब्दंस्यात्तदर्धं मातुरेवहि । मासत्रयंचमा-

यं यास्तदर्धभ्रातृपुत्रयो. देवज्ञमनोहरे विशेष:--प्रतिकूलेनर्ङिडगमासमेकं विवर्जयेत्. मेधातिथि: प्रेतकार्याण्यनिर्दिष्टं चरेन्नाभ्युदयक्रियाम् । ज्योति:प्रकाशे:----प्रतिकूलेपिवर्त्तेयो विवाहोनासमंतत । दुर्भिक्षेराष्ट्रभंगेच पित्रोर्वाप्राणसंशये । प्रौढायामनिकन्यायां प्रतिकूलंनदुष्यति । मेधातिथि: आचतुर्थंततः पुंसःपंचमेशुभदंभवेत । दीर्घरोगाभिभूतस्य दूरदेशस्थितस्य च उदासवर्तिनश्चैवप्रतिकूलनविद्यते । संकटे समनुप्राप्तेयावन्न्यथेनयोगिना । शांतिकृत्वागणेशस्य कृत्वातांशुभमाचरेत । अकृत्वा शांतिकंयस्तु निषेधे सतिदारुणे । य:करोति शुभंतस्य विघ्नं तस्यपदेपदे । विशेषोनिर्णयग्रंथेषुद्रष्टव्य: ।

अथविनायकशान्तिविधि: ।

उक्तंचलेंड्रे--ब्राह्मणै: क्षत्रियैर्वैश्यै: शूद्रैर्वासिद्धिकमुखै । कर्मनिर्विघ्न सिध्यर्थंसुपूज्य: स्तु गजानन: । महार्णवे-- यजमानस्तु शूद्रश्चेद्द्विजभिस्ता नियोजयेत ॥ स्नपनं तस्य कर्त्तव्यं पुण्येन्हि विधिपूर्वकम् । शुक्लपक्षे चतुर्थ्यांच वारेण धिषणस्य च । तिष्येच वीरनक्षत्रे तस्यैव पुरतो नृपेत्यपरार्के भविष्ये ॥ दत्त्रोक्तम स्नपनपरम् । धिषणस्यगुरो: । तस्य विनायकस्य । तस्मादौ देवता पूजोक्ता परार्के भविष्ये---व्योमकेशंतु सम्पूज्य पार्वतीं भौमजं तथा, कृष्णस्य पितरं तात्यर्कमारंसितं तथा । धिषणं वलेद पुत्रंच कोणं लक्ष्मच भारत, विधुर्द वाहुलेयं नंद कस्यच धारणं ॥ व्योम केश. शिव. । भौमजो गणेश: । आरो भौम. सित: शुक्र । वलेदपुत्रोबुध: । कोण. शनैश्चर: । लक्ष्मतद्वांश्चन्द्र: । वाहुलेय. स्कंद: । य.क्षत्रस्तय: । गौरसर्षपकल्केन साज्य नोत्सादितस्यच ॥ सर्वौषधै: सर्वगंधै विलिप्त शिरसस्तथा । भद्रासनोपविष्टस्य स्वस्तिवाच्याद्विजै: शुभै: । उत्सादितस्य उद्वर्त्तितांगस्य, सर्वौषधानि मात्स्ये--सह देवी वचा व्याघ्री वला चातिवलातथा । शखपुष्पी तथासिंही चाष्टमीतु सुवर्चला । महौषध्यष्टकं होतत्महास्नानेषु योजयेत् । महार्णवेत्वन्यान्युक्तानि--मुरामांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनी-द्वयम् । शठ चंपक मुस्ताच सर्वौषधिगण स्मृत: । याज्ञवल्क्य.---अश्वस्थानाद्गजस्थाना द्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात् । मृत्तिका रोचनं गंधं गुग्गुलंचविनिक्षिपेत् । या आहृता एक वर्णैश्चतुर्भि: कलशैर्ह्रदात् ॥ कलशैराहृतास्वप्सुक्षिपेदित्यर्थ: । अत्र विशेषो वैज वापगृह्ये--चतु: प्रस्रवणे-भ्यश्च कुम्भानाहृत्य तेषु सर्वौषधी: सर्वगंधान् हिरण्यमीहि यवगुग्गुलून् । मृदमाखूत्कर मिति प्रक्षिपेदिति शेष: ॥ याज्ञवल्क्य:---चर्मण्यानडुहेरक्ते स्थाप्य भद्रासनंतत: । मंत्रा:--ॐ सहस्राक्षं शतधारमृषिभि: पावनं कृतम् । तेनत्वामभिषिंचामि पावमान्य: पुनन्तुते । ॐ भगंते वरुणो राजा भगंसिंद्रोबृहस्पति: । भगमिंद्रश्च वायुश्च भग सप्तर्षयोददु । ॐ यत्तेकेशेषु दौर्भाग्यं सीमन्तेयच्चमूर्द्धनि । ललाटेकर्णयोरक्ष्णो रापस्तद्घ्नन्तु सर्वदा । पूर्वादि कलशत्रये एकैको मंत्रश्चतुर्थे मन्त्रत्रयमिति विज्ञानेश्वर: । सर्व कलशेषुमंत्रत्रयमित्यपरार्क: । शुक्लंचैतदेव विनिगमका

नावात् । स्नातस्य सार्षपं तैलं स्रुवेणौदुम्बरेण तु । जुहुयान्मूर्द्धनि कुशान् सव्ये नपरिगृह्य च । मितश्च संमितश्चैवतथा शालकटङ्कटौ । कूष्माण्डो राजपुत्रश्चेत्यन्तेस्वाहासमन्वितैः ॥ अपरार्कं तु शालकटं कटः । कूष्माण्डो राजपुत्रश्चेति पाठः मूर्द्धनिहोमः । नामभिर्बलि मन्त्रैश्च नमस्कार समन्वितैः । पूर्वोक्त षण्णामभि स्तैलं स्रुवा च दीपेण आदि नामभि र्बलिंदद्यात् । इतिविज्ञाने-श्वरः । अपरार्केतु—पूर्वोक्त चतुर्नामभिस्तैलं स्रुवा तैरेव नामभिः कृता कृतादि वलिर्देयः चरुहोमस्तु नास्त्येवेत्युक्तम् ॥ दद्याच्चतुष्पथेशूर्पे कुशानास्तीर्यसर्वतः । कृताकृतां स्तण्डुलांश्च पल लौदन मेवच । मत्स्यान्पक्कां स्तथाचा येमांसमेतावदेवतु । मांसमत्स्यभिन्नं । एतावदितिपक्व मपक्वंचेत्यर्थः । तिलपिष्ट मिश्र ओदनः । पललौदनः । पुष्पं चित्रं सुगंधंच सुरांच त्रिविधामपि मूलकं पूरिका पूपां स्तथैवोण्डेरकस्रजः । दध्यन्नं पायसंचैव गुडमिश्र समोदकम् ॥ ब्राह्मणैः कापि सुरानग्राह्या । क्षत्रियवैश्याभ्यान्तु पैष्टी नग्राह्येत्यन्नमूलं मृण्मयम् । मूलकं प्रसिद्धमाह्य मितिमहार्णवे ॥ तदाकारः पिष्टविकारः, इतिविज्ञानेश्वरः । उण्डेरकस्रजः क्षुद्रापूप इत्यपरार्कः । महार्णवेतु—वर्तुलैश्चतुरस्रैश्च दीर्घैः पिष्टविकारकैः । निर्मिताः स्रजउच्यन्ते उण्डेरक समाख्यया । गुडमिश्रं पिष्ट मित्यर्थः । मोदका लड्डुकाः बृहत्तरा शरेण कुल्माषाः फलानि चेत्यधिक मुक्तम् । एतत्सर्व मेकस्मिन्शूर्पे निधाय, सकृन्निवेदयेदित्यर्थः ॥ एता सर्वानुपाहृत्य भूमौ कृत्वाततः शिरः विनायकस्य जननी मुपतिष्ठेत्ततोम्बिकाम् । दूर्वासर्षप पुष्पाणां दत्वार्घ्यं पूर्णमंजलिम् । दूर्वादि पूर्णमंजलिं सजलं **विनायकायाम्बिकायवार्घ्यं दत्वोपतिष्ठे** दित्यर्थः । मंत्रः— ॐ रूपंदेहि यशोदेहि भगं भगवति देहिमे । पुत्रान्देहि धनंदेहि सर्वान्कामांश्चदेहिमे । विनायकोपस्थाने भगवन्नित्यूह, इति विज्ञानेश्वरः । ततः शुक्लाम्बरधरः शुक्ल माल्यानुलेपनः ब्राह्मणान्भोजयेत्दद्यद्वस्त्रयुग्मं गुरोरपि । एवं विनायकः पूज्यो ग्रहाश्चैव विधानतः । कर्मणांफल माप्नोति श्रियंप्राप्नोत्यनुत्त-माम् ॥ आगमेतु विनायकाम्बिकयोः पीठे विशेष उक्तः—आदौ पद्मंलिखित्वा पद्म मष्ट दलं ततः । केशरैः शोभितं तच्च चतुरस्रततोभवेत् । आसनंकल्पयित्वातु प्रणवेनयथाविधि । कर्णिकाया न्यसेद्देव गणेशं चाम्बिकां तथा । आदित्यं च तथान्यस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् । न्यसेत्पीठमध्येचपद्मपत्रेषुमितादिकन् । मातृश्चेशरा ग्रेषु पूर्वादिषुपूजयेत् । ततश्चाष्ट दलेष्वेपूजयेद्देवतास्तथा । कौमारं पूर्वदिग्भागे चाग्नेयांच कुष्माण्डकम् । दक्षिणेशेत्रमित्युक्तं नैर्ऋत्ये कौशिकं तथा । अपस्मारं वारुणे च निशानं वायुगोचरे । कौबेर्यां विघ्नराजंच मीशपत्रे स्मयकम् । पूर्वादि पद्मपत्रेच । सोमादींश्च ग्रहान्न्यसेत् । ततः—इन्द्राणी पूर्वपत्रे च ह्याग्नेयांच कुमारिका । ब्रह्माणीदक्षिणेचैव वाराही नैर्ऋतेतथा । वैष्णवी पश्चिमे पूज्या चामुंडा वायवेतथा । मातरश्चोत्तरे पूज्या ईशकोणे महेश्वरी । इन्द्रादीनष्टदिक्पालान्पूर्वादि क्रमशो न्यसेत् । शचीस्वाहा च

वाराही खड्गिनी वारुणी तथा । मृगा हढा च कौमारी शूलिनीच तथाष्टमी वज्र शक्ति दंड खड्ग पाशांकुश गदा अपि । त्रिशूल लोक पालाना मायुधानिक्रमाल्लिखेत् । ऐरावत तथ मेष महिष प्रेत सञ्ज्ञक । मकरश्च मृगश्चैव नरश्चवृषभ तथा ॥

ऐरावत पुण्डरीकोवामन कुमुदोंजन । पुष्पदन्त सार्वभौम सुप्रतीकश्च दिग्गजा ॐ कारादिनमोन्तैश्च पूजनीया प्रयत्नत पीतवस्त्रयुगच्छन्न कलश जलपूरित मण्डलात्पूर्वभागेतु सहिरण्यफलान्वितम् । गणाना-न्त्वेतिमन्त्रेण सहस्रचाष्टसंयुतम् । भद्रासनस्थाष्टदल देवतावाहनमप्युक्तम् तत्रैव —अभ्यकूष्मा-ण्डनामानं पूर्वशान्तेक्रमेणकम् । दक्षिणस्यां विशाखं च पश्चिमेधदमेव उत्तरेराजपुत्रकुबेरा ने जृम्भक तथा । आग्नेय्यां यज्ञविक्षेप विरूपाक्षचनैर्ऋते । वायव्यांशुचसञ्ज्ञाप्य सुर्विदार मेवचेति । बलिदानेविशेषस्तत्रैव । चतुःपथगत्वा चतुर्विंशतिदेवेभ्योबलिर्यथायथाविधि । त्रिमुख्यश्च तथाश्येनस्त्र्यवकोदन्तएवच । कूष्माण्डो भैरवश्चेति पूर्वस्य दिशि संस्थिता । बलिग्रहणान्तुतेभ्यवमयादत्तयथा विधि । विनायकश्चशूलगडोराजपुत्रस्तथैवच यक्षविक्षेपकश्चैव कुलगर्भेनमोनन अगामारी दक्षिणस्या पूजनीयाप्रयत्नत शूर्पकेशीशूर्पकोडीदं-ष्ट्रेतश्चतुष्कमक विरूपाक्षोलोहिताक्ष पश्चिमस्यां दिशिस्थिता उत्तरस्यां प्रवक्ष्यामि देवतामुनिसत्तम । विनायक क्षेत्रपालौ वैश्रवणस्तत परम् । महासेनो महादेवो महाराजा सुकीर्तिता । एतेषांपूजनकृत्वा बलिदान तत परमिति ।

इति विनायक शांति परिभाषा ।

—⁂—

अथप्रतिकूलविनायकशांतिपद्धतिः ।

अथच प्रतिकूलशान्तिकर्त्तापरिभाषोक्तसापिंड्यादि त्रिपुरुषीं विचार्यप्रेतस्य सपिंडीश्राध्दान्ते यावद्वार्षिककुंभदानादि कर्मसमा पयित्वा, मासोत्तरेवाभ्यंतरेज्योतिः शास्त्रोक्तशुभदिने प्रातर्नित्य कर्मसमाप्य. स्वासनेउपविश्य रत्नादीपंप्रज्वलय्य, सम्पूज्यचशांति पाठंकृत्वा, प्रधानसंकल्पंकुर्यात—अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्या मुकोऽहं ममास्यामुकराशेरमुकस्य वीजगर्भसमुद्भवैनो निवर्हण द्वाराश्रीपरमेश्वरप्रीतयेकरिष्यमाणामुकसंस्कारकर्मणि, स्वत्रिपुरुषा भ्यन्तरेनिश्चयोत्तरं प्रतिकूलत्वात्तद्दोषपरिहारार्थं शुभसौभाग्यै-श्वर्याभिसिद्ध्ये विनायकशान्तिंकरिष्ये, ततोगणेशादि ग्रहपूजा न्तं पंचाङ्गपूजनंकृत्वा, अत्रकेचिद्वृद्धिश्राद्धमपीच्छन्ति ॥ ततआ चार्योगृहाभ्यंन्तरे वा यथावकाशस्थानेगोमयोपलिप्ते, भूमौ,भद्रा

स्नानार्थं पञ्चवर्णैरंगैरंजयित्वा तत्रैकं स्वस्तिकं कृत्वा, तस्य पूर्वादिदिक्षु चतुरः स्वस्तिकान् ऋत्विग्भिः कारयित्वा, (मध्यस्वस्तिकेरक्तमानुडुहं चर्मोत्तरलोमप्राचीनग्रीवं संस्थाप्य) कलितव्यैत्यानस्योपरि श्रीपर्णीपीठं (पीढ़ा) संस्थाप्य श्वेतवस्त्रेणाच्छादयेत् ॥ ततआचार्यवरणं कृत्वा चतुरो ब्राह्मणान्नृत्विजश्च वृत्वा, तेच ऋत्विजः पूर्वादिक्रमेण चतुर्दिक्षु चतुर्षु स्वस्तिकेषु चतुरः कलशान्धान्यराशिषु स्रग्दामवेष्टितकंठान्नवाहतवस्त्र भूषितान् संस्थाप्य, नदीसंगमोदकेनवाह्रदोदकेनापूर्य, तेषु (अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमात्हृदान्मृत्तिकांनीत्वा) ॐ उद्धृतासिवराहेणकृष्णेनशतबाहुना । मृत्तिकेहर मेपापं यन्मयादुष्कृतंकृतम् । इतिचतुर्षु पंचमृदः प्रक्षिप्य । ॐ गंधद्वारामिति चन्दनागरुकस्तूरीकर्पूरादीन्गंधान् गोरोचनंगुग्गुलंचाक्षिप्य पूर्वोक्तसह्देव्यादिमहौषध्यष्टकं क्षिप्त्वा कलशस्थापनआजिघ्रेत्यारभ्य प्रसन्नो भवसर्वदेत्यन्तं कलशपूजोक्त विधिनाप्रत्येकं संस्थाप्य सम्पूजयच ॥ केचित्तु–ईशाने रुद्रकलशमपीच्छन्ति ॥ तेनैव प्रकारेण स्थापयित्वा ॥ तत्र पूर्वस्थऋत्विग्धस्तेनपूर्वकलशंस्पृष्ट्वा ॥ ॐ हिरण्यवर्णांहरिणीमिति श्रीसूक्तेनाभिमन्त्रयेत् ॥ एवं दक्षिणस्थऋत्विग्दक्षिणकलशंस्पृष्ट्वा ॥ ॐ महित्रीणामवोस्तुद्युक्षमित्रस्यार्यम्णः । दुराधर्षंवरुणस्य ।१। नहितेषाममाचननाध्वसुवारणेषु । ईशेरिपुरघशंसः ।२। तेहिपुत्रासोऽअदितेःप्रजीवसेमर्त्याय । ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम् ।३। कदाचनस्तरीरसिनेन्द्रसश्चसिदाशुषे । उपोपेन्नुमघवन्भूय इन्नुतेदानन्देवस्यपृच्यते ।४। तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो०।५। ॐ परितेदूडभोरथोस्माँ॥अश्नोतुविश्वतः । येनरक्षसिदाशुषः ।६। भूर्भुवःस्वःसुप्रजाः प्रजाभिःस्याॐसुवीरो वीरैःसुपोषःपोषैः । नर्यप्रजाम्मेपाहिशॐ स्यपशून्मेपाह्यथर्य्यपितुम्मेपाहि ।७। आगन्मविश्ववेदसमस्मभ्यंवसुवित्तमम् । अग्नेसम्राडभिसहऽआयच्छस्व ।८। अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजायावसुवित्तमः । अग्नेगृहपतेभिद्युम्नमभिसहऽआयच्छस्व ।९। अयमग्निःपुरीष्योरयिमान्पुष्टिवर्द्धनः । अग्नेपुरीष्याभद्युम्नमभि

सहऽआयच्छस्व ।१०। गृहामाव्विभीतमावेपध्ध्वमूर्ज्जम्बिभ्रतऽए मसि । ऊर्ज्जम्बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधागृहानैमिमनसामोदमानः ।११। येषामध्येतिप्रवसन्न्येषुसौमनसोबहुः । गृहानुपह्वयामहे तेनोजा नन्तुजानतः ।१२। उपहूताऽइहगावऽउपहूताऽअजावयः । अथोऽ अन्नस्यकीलालऽउपहूतोगृहेषुनः । क्षेमायवः शान्त्यैप्रपद्येशिवꣳ शग्ग्मꣳशंय्योःशंय्योः ।१३। ॐ शान्तिः ३। ततःपश्चिमकलशं स्पृष्ट्वा—ॐ इमम्मेव्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडयत्वामवस्युराचके।१। तत्वायामिब्रह्मणाव्वन्द मानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः । अहेड मानोव्वरुणेहबोध्युरुशꣳसमानऽआयुःप्रमोषीः ।२। त्वन्नोऽअग्ने व्वरुणस्यव्विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठाः । यजिष्ठोवन्हितमः शोशुचानोविश्वाद्वेषाꣳसिप्रमुमुग्ध्यस्मत ।३। सत्वन्नोऽअग्नेवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्याऽउषसोव्युष्टौ । अवयक्ष्वनोव्वरुणꣳरराणो व्वीहिमृडीकꣳसुहवोनऽएधि ।४। महीमूषुमातरꣳसुव्रतानामृत स्यपत्नी मवसेहुवेमतुविक्षत्रा मजरन्तीमुरूचीꣳ सुशर्म्माण मदितिꣳसुप्रणीतिम् ।५। सुत्रामाणं पृथिवींद्यामनेहस ꣳ सुशर्म्माण मदितिꣳ सुप्रणीतिम् । दैवीन्नावꣳ स्वरित्रा मनागसमस्रवन्तीमारुहेमा स्वस्तये ।६। सुनावमारुहेय मस्रवन्ती मनागसम् । शतारित्राꣳ स्वस्तये ।७। आनोमित्राव्वरुणा घृतैर्ग- व्यूति मुक्षतम् । मध्वारजाꣳसिसुक्रतू ।८। प्रवाहवासिसृतंजीव- सेनऽआनोगव्यूतिमुक्षतंघृतेन । आमाजने श्रवयतंयुवाना श्रुतम्मे मित्राव्वरुणाहवेमा ।।९।। शन्नोभवन्तुव्वाजिनोहवेषुदेवताता मितद्रवः स्वर्काः जम्भयन्तोहिंवृक ꣳ रक्षाꣳसिसनेम्यस्मद्युय- वन्नमीवा ।१०। ॐ व्वाजेव्वाजेव्वतव्वाजिनोनोधनेषुविप्राऽअमृ- ताऽऋतज्ञाः । अस्यमध्वः पिबतमादयध्ध्वन्तृप्ता यात पथिभिर्दे- वयानैः ।।११।। इतिवारुणसूक्तेनाभिमंत्र्य तत उत्तरकलशंस्पृष्ट्वा, ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः इत्यादिपुरुषसूक्तेनाभिमंत्र्य, ततः पंचमंरुद्र कलशं, ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवः । इत्यादिरुद्रसूक्तेनाभिमंत्र्य सम्पूज्य तत आचार्यो भद्रासनस्योत्तरभागे मनोहरंकाष्टपीठं संस्थाप्य

तत्र पिष्टेनषट्कोणं यंत्रंसवर्त्तुलं तद्बाह्ये,अष्टदलं कमलं सवर्त्तुलंच कमलबाह्ये अंगुलद्वय विस्ताराद्बहिश्चतुरस्रं ग्रहस्था पनार्थमष्ट खंडंकृत्वा यथोक्त रंगैरापूर्य, तत्रवक्ष्यमाण देवानावाहयेत । तत्रादौ मध्ये अग्न्युत्तारण पूर्वकं विनायकांबिकयोः प्रतिमाद्वयं संस्थाप्य । गणेशमावाहयेत्—ॐ एकदन्तायविद्महेवक्रतुंडायधीमहितन्नोदंतिः प्रचोदयात् ॐ भूर्भुवः स्वः विनायकमावाहयामि स्थापयामि । एवंसर्वत्र, ततोऽम्बिकाम्—ॐ सुभगायै विद्महे काममालिन्यधीमहि, तन्नोगौरीप्रचोदयात् ॥ ॐ भू०गौरीं०। ॐ आदित्यायनमः० । ॐ ब्रह्मणेनमः० । ॐ विष्णवेनमः० । ॐ महेश्वरायनमः० । ततःषट्कोणेषु—ॐमितायनमः० । ॐसम्मितायनमः० । ॐ शालकायनमः० । ॐ कटंकटायनमः० । ॐ कूष्मांडाय नमः० । ॐ राजपुत्रायनमः० । ततः षट्कोणान्तरालेषु—ॐ व्योमकेशायनमः० । ॐ पार्वत्यैनमः० । ॐ भीमजायनमः० ॐ स्कंदायनमः० । ॐ वसुदेवायनमः० । ॐ विष्णवेनमः० । षट्कोणवर्त्तुले पूर्वादिक्रमेणमातॄः—ॐ भू० कीर्त्यादित्रयोदश गृहमातृभ्योनमः० ॥ ततः कमलाष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण—ॐ भू० कौमारायनमः० । ॐ कुमारायनमः० । ॐ श्वेतायनमः० । ॐ कौशिकायनमः० । ॐ अपस्मारायनमः० । ॐ विशाखायनमः०। ॐ स्कंदायनमः० । ॐ प्रमेयकायनमः० । ततस्तेनैवक्रमेणपद्मान्तरालाष्टभागेषु—ॐ इन्द्राण्यैनमः० । ॐ कुमारिकायैनमः० । ॐ ब्रह्माण्यैनमः० । ॐ वाराहैनमः० । ॐ वैष्णव्यैनमः० । ॐ चामुंडायैनमः० । ॐ धृत्यादिमातृभ्योनमः० । ॐ माहेश्वर्यै नमः० । ततःपूर्वादिक्रमेणग्रहान्—पूर्वे—ॐ शुक्रायनमः० । ॐ चन्द्रायनमः० । ॐ भौमायनमः० । ॐ राहवेनमः० । शनिश्चराय नमः० । ॐ केतवेनमः० । ॐ गुरवेनमः० । ॐ बुधायनमः० । ततश्चतुरस्राद्बहिः पूर्वादिक्रमेणलोकपालान्— ॐइन्द्रायनमः० । ॐ अग्नयेनमः० । ॐ यमायनमः० । ॐ निर्ऋतयेनमः० । ॐ वरुणायनमः० । ॐ वायवेनमः० । ॐ सोमायनमः०। ॐ ईशा-

नायनमः० । तत्सन्निधौ—ॐ शच्यैनमः० । ॐ स्वाहायैनमः० । ॐ वाराहैनमः० । ॐ खड्गिन्यैनमः० । ॐ वारुण्यैनमः० । ॐमृग्यैनमः० । ॐ कौमार्यैनमः० । ॐ शूलिन्यैनमः० । तत्रैवदिक्पाला नांदक्षिणे—ॐ वज्रायनमः० । ॐ शक्त्यैनमः० । ॐदंडायनमः० । ॐ खड्गायनमः० । ॐ पाशायनमः० । ॐ अंकुशायनमः० । ॐ गदायैनमः० । ॐ त्रिशूलायनमः० । तत्रैववाहनानि—ॐ ऐराव तायनमः० । ॐ मेषायनमः० । ॐ महिषायनमः० । ॐ प्रेताय नमः० । ॐ मकरायनमः० । ॐ मृगायनमः । ॐ नरायनमः० । ॐ वृषभायनमः ० । तद्बहिस्तेनैवक्रमेणदिग्गजान्—ॐ ऐरावता यनमः० । ॐ पुंडरीकायनमः० । ॐ वामनायनमः० । ॐ कुमुदा यनमः० । ॐ अंजनायनमः० । ॐ पुष्पदन्तायनमः० । ॐ सार्व भौमायनमः० । ॐ सुप्रतीकायनमः० । ततोबहिस्तेनैवक्रमेणाष्ट भैरवान्—ॐ प्रमेयकभैरवायनमः० । ॐ यज्ञविक्षेपकभैरवाय नमः० । ॐ विशाखभैरवायनमः० । ॐ विरूपाक्षभैरवायनमः०। ॐ यक्षभैरवायनमः० । ॐ सूर्यकोटरभैरवायनमः० । ॐ राज पुत्रकभैरवायनमः० । ॐ जृंभकभैरवायनमः० ॥—इतिसंस्थाप्य सम्पूज्यच—ततआचार्यः—ॐ गणानान्त्वा० । इतिगणपतिमन्त्रे ण अष्टोत्तरसहस्रमन्त्रैः प्रतिमंत्रमेकैकंमोदकंयुग्मदूर्वाङ्कुरयुतं गणेशायनिर्विघ्नतासिध्दयेनिवेदयेत् ॥ असक्तश्चेदष्टोत्तरशतंनिवेद येत् ॥ तत आचार्योगृह्योक्त विधिनाप्रादेशमात्रांहोमवेदींनिर्माय, पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निंसंस्थाप्य, वरदनामाग्निंसम्पूज्य, आचा र्यब्रह्मणोर्वरणंकृत्वा । घृतसंस्कारंकृत्वा तदैवचरुमग्नावारोप्य संस्कृत्यच ॥ ब्रह्मातत्रैवाग्निसमीपेतिष्ठेत् ॥ ततयजमानो गवाज्य द्रवितेन गौरसर्षपसर्वौषधचूर्णैश्चन्दनागरु कस्तूरिकादिभिश्चोद्व र्तितसर्वाङ्गो चतुर्णांकुम्भानांमध्ये पूर्वनिर्मितेभद्रासनेउपविश्य स्व गृह्योक्तमार्गेणस्वस्तिवाचनंकुर्वीत,तत्रसंकल्पः—अद्येत्यादिदेशका लौसंकीर्त्यामुकोहं करिष्यमाणप्रतिकूलविनायकशांतिकर्मणिसर्वो पद्रवशांतये,कल्याणहेतवेसौभाग्यवतीभिश्चतुःमस्रवणकुंभजलैर्गंग

लाभिषेकंकारयिष्ये,ततोजीवत्पतिपुत्राभिश्चतिसृभिःस्त्रीभिःकुशै रभिषेकंकारयेत्-ततः पूर्वकलशमादाय-ॐ सहस्राक्षंशतधारमृषि भिःपावनंकृतम् । तेनत्वामभिषिंचामिपावमान्यःपुनन्तुते । तंकल- शंतत्रैवपूर्वे स्थापयेत्सर्वत्र । दक्षिणकलशेन-ॐ भगंतेवरुणोराजा भगंसूर्योबृहस्पतिः । भगमिंद्रश्चवायुश्च भगंसप्तर्षयोददुः ॥ पश्चिमकलशेन—ॐ यत्तेकेशेषुदौर्भाग्यं सीमन्तेयच्चमूर्द्धनि । ललाटेकर्णयोरक्ष्णो रापस्तद्घ्नन्तुसर्वदा । तत उत्तरकलशमादाय पूर्वोक्तै स्त्रिभिर्मंत्रैरभि षिंच्य कलशंपूर्ववत्स्थापयित्वा तत ईशा- नकलश जलंगृहीत्वा यजमानशिरसि सहस्रछिद्रं ताम्रपात्रं सहस्र- धारमुपरितः कृत्वा-बृहत्पाराशरोक्तैर्मंत्रैरभिषिंचेत् ॐ एतद्वैपाव- मानं सहस्राक्षरंस्मृतम् ।तेनत्वांशतधारेण पावमान्यः पुनन्त्विमाः ।१। शक्रादिदशदिक्पाला ब्रह्मेशाः केशवादयः । आपस्तेघ्नन्तुदौ- र्भाग्यं शांतिंददतुसर्वदा ।२। ॐ सुमित्रियानऽआप ऽओषधयः सन्तुदुर्मित्रियास्तस्मैसन्तु योस्मान्द्वेष्टियंचवयंद्विष्मः । समुद्रा गिरयोनद्योमुनयश्च पतिव्रताः । दौर्भाग्यंघ्नन्तुते सर्वेशान्तिंय- च्छन्तुसर्वदा ।४। पादगुल्फोरुजंघासु नितम्बोदरनाभिषु । स्तनो- रुबाहुहस्ताग्र ग्रीवास्वंसांगसन्धिषु ।५। नासाललाट कर्णभ्रूकेशा- न्तेषुचयत्स्थितं । तदापोघ्नन्तुदौर्भाग्यं शान्तिंयच्छन्तुसर्वदा ।६। एवमभिषिंच्य, तत आचार्योयजमानस्य पश्चात्तिष्ठन्सव्यपाणि गृहीतकुशांतरिते यजमानस्य मुर्द्धनिसार्षपतैल मौदुम्बरेणस्रुवेण जुहुयात् । मंत्राः—ॐ मिताय स्वाहा । ॐ संमिताय स्वाहा । ॐ शाल,यस्वाहा । ॐ कटंकटायस्वाहा । ॐ कूष्मांडायस्वाहा । ॐ राजपुत्रायस्वाहा । ततो यजमानस्तथैव होमवेदीसन्निधावुपा- गत्य स्वासनेउपविश्य, देवताभिध्यानपूर्वकं द्रव्यत्यागंकुर्यात् ॥ अद्येत्यादि कृतमंगलाभिषेकोऽमुकोहं प्रतिकूल विनायकशांतिक- र्मणि, घृतेनाघाराज्यभाग देवतास्ततश्चरुणाप्रधानदेवान्-मितं संमितं, शालं,कटंकटं, कूष्माडं, राजपुत्रं,हुत्वा-ततश्चाज्येनस्विष्ट- कृतंहुत्वा-ततोभूरादिनवाहुतिहोमं पद्धत्यनुसारेणपदये । एतद्द्र-

ष्यंतत्तद्देवताभ्योमयापरित्यक्तं यथादैवतमस्तुनमम । इतित्यागं विधाय होमपद्धत्यनुसारेण समिधाधानंकृत्वा आघाराज्यभागौ हुत्वा, (नान्वारंभः) चरुणाप्रधानहोमं कुर्यात्—ॐ मिताय स्वाहाइद ॐ संमितायस्वाहा२८ ॐ शालायस्वाहा२८ ॐ कटंकटाय स्वाहा२८ ॐ कूष्मांडायस्वाहा २८ ॐ राजपुत्रायस्वाहा । इति प्रत्येकमष्टाविंशति ,संख्याभिर्हुत्वा, अष्टोत्तरशतसंख्याभिः—ॐ गणानन्त्वा० इतिचहुत्वाॐश्रीश्चतेति अंबिकांचाष्टाविंशतिसंख्य-याहुत्व, वा एकैकसंख्ययाश्चतुर्थ्यन्तैर्नाममंत्रैः यंत्रस्थापित देवा-नपिचहुत्वा । ॐ अग्नयेस्विष्टकृतेस्वाहा इतिस्विष्टकृतं विधाय होमपद्धत्युक्तप्रकारेण भूरादिप्रायश्चितहोमं विधाय पूर्णाहुत्यन्तं कर्मकृत्वा । ततो यजमानश्चरुशेषेणयामाषौदनेन, अभिषेकशा-लागांचैन्द्र्यादिदिक्षु, लोकपालेभ्यो बलीनद्यात् ,बलिप्रकारश्चपू-र्वोक्तः । तत्रक्रमः–इन्द्राय० अग्नये० यमाय० निर्ऋतये० वरुणाय वायवे० सोमाय० ईशानाय० ब्रह्मणे० अनंताय० क्षत्रपालाय० । इतिबलीन्दत्वा, ततोयजमानः उष्णोदकेन स्नात्वा शुक्लमाल्यां-बरधर आचार्येणसहितः पूजास्थल मागत्य ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुंडायधीमहि तन्नोदंतिः प्रचोदयात् । इति मंत्रेण पुनर्गणेशं उपायनान्तं सम्पूज्य, अंबिकांपूजयेत्—ॐ सुभगायै विद्महे काममालिन्यैधीमहि । तन्नोगौरी प्रचोदयात् । इतिसंपूज्य ततः कृताकृततंदुल तिलयुक्तौदनं पक्वापक्वमांस, त्रिविधिसुरा (मद्यमांसानि विप्रवर्जितानि) मूलकापूप पूरिकोंडेरकदध्यन्नपायस सगुड मिश्रपिष्टलड्डुक कुल्मापफलानि । पूर्वोक्त पूजामंत्राभ्यां-सविनायकाम्बिकायैच तमुपहारं शिरसाभूमौ प्रणम्य ततोऽर्घ्यं-पात्रे सजलगन्धाक्षत पुष्पदूर्वाफलयुतं अर्घ्यंवामहस्ते धृत्वाउत्ता-नंदक्षिण हस्तमुपरि कृत्वा–ॐ विनायक नमस्तेस्तु विघ्नसंघनि-वारक, गृहाणपरयाप्रीत्यासफलार्घंसुरेश्वर ततोवारिणादेवं संस्नाप्य फलमग्रेनिवेदयेत् ततोऽम्बिकाम् ॐ गौरिदेविनमस्तुभ्य, मंबिके विघ्ननाशिनि । गृहाणपरयाप्रीत्या सफलार्घंमहेश्वरि । तथैव

फलमग्रेनिवेदयेत्। ततोगणेशंपुष्पाञ्जलिहस्तःप्रार्थयेत् ॐ रूपंदेहियशोदेहि भगंभगवन्देहिमे। पुत्रान्देहिधनंदेहि सर्वान्कामांश्चदेहिमे, ततो म्बिकाम् ॐ रूपंदेहियशोदेहिभगंभगवतिदेहिमे। पुत्रान्देहि धनंदेहि सर्वान्कामांश्चदेहिमे। ततोनूतनशूर्पं कुशानास्तीर्यप्रदीपद्वारशेषं कृताकृततंडुलादिकंतत्रनिधाय, चतुष्पथं (चतुर्मार्गपथं) गत्वा—वक्ष्यमाणप्रकारेण देवान्संपूज्य बलीन्दद्यात्—तत्रादौ पूर्वे, ॐ विमुख्यादिषड्देवेभ्योनमः इतिसम्पूज्य शूर्पस्थद्रव्यं चतुर्धाकृत्वैकभागमादाय बल्युपरिदीपं प्रज्वलय्य—ॐ विमुख्यश्चतथाश्येन स्त्र्यवकोयक्षएव च कृष्मांडोभैरवश्चेति पूर्वस्यांदिशिसंस्थिताः बलिंगृह्णन्तुतेसर्वे मयादत्तंयथाविधिः। इतिबल्युपरि जलक्षिप्त्वा पूर्वस्यांप्रक्षिपेत्—एवंसर्वत्र ततोदक्षिणे ॐ विनायकादिषड्देवेभ्योनमः सम्पूज्य द्वितीयभागमादाय—ॐ विनायकश्च कूष्मांडो राजपुत्रस्तथैवच। यज्ञविक्षेपकश्चैव कुलंगायैनमोनमः। अपामारी दक्षिणस्यांप्रजयामिप्रयत्नतः। बलिंगृह्णन्तुतेसर्वेमयादत्तं यथाविधिः दक्षिणे प्रक्षिपेत्। ततः पश्चिमेशूर्पकेश्यादिषड्देवेभ्यो नमः सम्पूज्य—ॐ शूर्पकेशी शूर्पकोडीहैप्रपेतश्चकुम्भकः विरूपाक्षोलोहिताक्षःपश्चिमस्यांदिशिस्थिताः बलिंगृह्णंतुतेसर्वे मयादत्तं यथाविधिः। ततउत्तरे ॐ विनायकादिषड्देवेभ्योनमःसंपूज्य ॐ विनायकः क्षेत्रपालोवैश्रवणास्ततः परम्। महासेनोमहादेवो महराजः सुकीर्तिताः। बलिंगृह्णन्तुतेसर्वे मयादत्तंयथाविधिः तत हस्तौपादौ प्रक्षाल्याचम्य, पूजास्थल मागत्याचार्यायवस्त्रद्वयं गोदानं च दत्वा ऋत्विग्भ्योऽन्येभ्यश्चदक्षिणांदत्वा विनायकांविकायोरुत्तराङ्ग पूजनंकृत्वाविसृज्यआचार्यकलशजलेनयजमानं सकुटुम्ब मभिषिंच्याशीर्दत्वा शांतिपाठंकृत्वाकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ततो ब्राह्मणान्भोजयेत्।

इति प्रतिकूल विनायक शांतिपद्धतिः ॥

——*×*——

अथगुर्वर्कशान्तिपरिभाषा।

मुहूर्त्त चिन्तामणौ—वटुकन्या जन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः। श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयान्यत्र निंदितः। ज्योतिर्निबन्धेगर्गः—स्त्रीणां गुरुबलं श्रेष्ठं पुरुषाणांरवेर्बलम्। जन्म त्रिदशमारिस्थः पूजया शुभदोगुरुः। विवाहेथ चतुर्थाष्ट द्वादशस्थो मृतिप्रदः। देवलः— नष्टात्मजा धनवती विधवा कुशीला पुत्रान्विता हतधवा सुभगा विपुत्रा। स्वामिप्रिया विगतपुत्र धवा धनाढ्या वन्ध्याभवेत्सुरगुरौ, क्रमशोभिजन्मा। गर्गः—सर्वत्रापि शुभंदिद्याद्द्वादशाब्दात्परं गुरुः। पंचषडब्दयोरेव शुभगोचरतामता। रजस्वलायाः कन्याया गुरुशुद्धिं नचिन्तयेत्। अष्टमेपि प्रकर्त्तव्यो विवाहं त्रिगुणार्चनात्। अर्क गुर्वोर्बलं गौर्यां रोहिण्यर्क बलात्स्मृता। कन्याचन्द्र बलाप्रोक्ता वृषली लग्नतोबला, अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षाच रोहिणी। दशवर्षा भवेत्कन्या अतऊर्ध्वं रजस्वला। अथगुरुपूजाविधिः मंदरत्ने स्कान्दे—कन्या, विवाह कालेतु शुद्धिर्यस्या नविद्यते। ब्राह्मणस्योपनयने यस्यस्याद्दुः स्थितागतः। एभिः पूजा गुरोः कार्या विधिवद् भक्ति भावितैः। मदन्ती काम पुष्पाणि पत्रं पालाश सर्षपाः। कामोद्भवनवाः। गुडूची चाप्यपामार्गं विडंगं शंखिनी वचा। सहदेवी विष्णुक्रान्ता सर्वौषध्यः शतावरी कुष्ठमांसी हरिद्रेद्वे मुरा शैलेय चन्दनम्। वचाकचोर मुस्ताच सर्वौषध्यः प्रकीर्तिताः। तथैवाश्वत्थ भंगश्च पंच गव्यं जलं तथा। नूतनं सोदकुंभंच पीतवस्त्र समन्वितं। पंचरत्नैः समायुक्त मीशान्यां स्थाप्यचानलात्। याऽऔषधीति मंत्रेण सर्वास्तवस्मिन्विनिक्षिपेत्। कुंभस्योपरिभागेतु स्थापयित्वाबृहस्पतिम्। सुवर्णपात्रेसौवर्णं प्रतिमांमाषसंम्मिताम्। कारयेत्तुयथाशक्ति वित्तशाठ्यविवर्जितः। पीतवस्त्रयुगच्छन्नंपीतयज्ञोपवीतिनम्। पूजयेद्गन्धपुष्पाद्यैस्ततोहोमंसमाचरेत्। समिधोऽश्वत्थ घस्य होम्या अष्टोत्तर शतम्। तिलव्रीहि यव दर्भ च होतव्यं च यथाक्रमम्। बृहस्पतेतिमंत्रेण ऋषिश्छन्दसमन्वितम्। जपंकुर्याद्गुरोश्चैवशान्त्यर्थभक्तिभावतः। एकोनविंशसाहस्रंहोतव्यंशुभमिच्छता। नक्तंराशंचहोतव्यंचरुणाज्यतिलादिभिः। ततोहोमावसानेतुपूजयेच्चबृहस्पतिम्। पीतगन्धैस्तथापुष्पैर्धूपदीपैश्चभक्तितः। दध्योदनं च नैवेद्यंफलताम्बूलसंयुतम्। नमस्तेंगिरसनाथ वाक्पतेथ बृहस्पते। क्रूरग्रहैःपीडितानाममृतायनमोनमः। पूजयित्वा गुरुंचार्यपश्चादर्घ्यं निवेदयेत्। गम्भीरदृढरूपांगद्विम्म्यमसुमतिप्रभो। नमस्तेवाक्पतेशांतग्रहाणार्घ्यं बृहस्पते। अर्घ्यं दत्वा सुरेशाय जपहोमंसमर्चयेत्। गण्यांपयेद्गुराचार्यं होमपूजादिसंस्कृतम्। तस्य ग्रहाणुगानार्थं बृहस्पते नमो नमः। मन्त्रेणानेन संकल्प्यपश्चात्संप्रार्थयेन्नृप। जीवो बृहस्पतिः सूरिराचार्यो गुरुरंगिराः। वाचस्पतिर्देवमन्त्री शुभंकुर्यात्सदाम। एर्वोचार गंदुत्वा प्रतिमां सयुधिष्ठिर। प्रणम्य च गवयुक्ता माचार्याय निवेदयेत्। स्नापयेत्तु नियतो वेद वेदांगपारगः। यजमानं स्नानं दृष्टवातैश्चितं जितेन्द्रियम्। कुम्भोदकं गृहीत्वा तु मन्त्रोत्तैःप्रपूजयेत्। इदनारोपमन्त्रेणानमस्तिरेस्नातषा। या औषधीरश्वत्तीकृत्यादिश्चाभिविनयेत। परस्वागसोभयं द्विप्रान्सुखाति युधिष्ठिर। अंबलत्वाभिर्क्रांतेयतथाश्व भुदर्दैशु च ग्रहं बृहस्पते: पूजनमहं परमारगुरा। गुरुकान्तोगुरुसंमान्तौ। इति गुर्वर्क पूजा विधिः।

॥ अथप्रतिकूलगुरुशांतिपद्धतिः ॥

अथचपूर्वोक्त परिभाषानुसारेण वटुकन्याजन्मराशिभ्यां देव गुरुः जन्मराशिस्थ तृतीयस्थ षष्ठस्थ दशमस्थ गोचरस्थानेषु सामान्यपूजामपेक्षते चतुरष्टमद्वादशस्थ गोचरस्थानेषु द्विगुणपूजामपेक्षते, तद्दोषपरिहारार्थं वक्ष्यमाणपध्दत्यनुसारेण गुरुपूजनंकुर्यात्- अथचकर्त्ता स्नाननित्यकर्मसमाप्य शुचौदेशेशुभासने उपविश्याचम्य रक्षादीपंप्रज्वलय्य गणेशादिपंचांगपूजनंकृत्वा, तदीशान भागे नूतनंमृण्मयकुम्भं, तीर्थजलपूरितं पीतवस्त्रपंचरत्नैःसमायुक्तं, सर्वौषधिअश्वत्थसमिद्खंड पंचपल्लवपंचगव्यादिकानिच तत्रप्रक्षिप्य, कलशपूजोक्तविधिनाकलशंसम्पूज्य ॥ तत्रपूर्णपात्रोपरि सुवर्णपात्रंरजतताम्रादिपात्रंवासंस्थाप्य तत्रसौवर्णीगुरुप्रतिमामग्न्युत्तारण पूर्विकांसंस्थाप्य, पीतवस्त्रेणाछाद्य षोडशोपचारपूजने पीतयज्ञोपवीतंचसमर्प्य, पीतपुष्पपीतचन्दनादिभिः सम्पूज्य दध्योदनंपीतौदनं चणकाम्रलड्डुकादीन्नैवेद्यंदत्वा ततःप्रार्थयेत्—ॐ नमस्तेङ्गिरसानाथवाक्पतेथबृहस्पते। क्रूरग्रहैःपीडितानाममृतायनमोनमः। इतिसफलपुष्पांजलिंनिवेद्य, ततआचार्यंजापकंच वृत्वा—संकल्पंकुर्यात—अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्यामुकोहं, ममास्यवटोः (कन्यायावा) वीजगर्भ समुद्भवैनो निवर्हणद्वारा करिष्यमाण चौलोपनयन संस्काराख्यकर्मणि-(वाकरिष्यमाणामुकीकन्यायाविवाह संस्काराख्यकर्मणि) अमुकनक्षत्रोपलक्षितस्यवटोः अमुकराशिसकासात, गोचराष्टकवर्गाभ्या ममुकदुरिचक्रय स्थानस्य गुरुग्रहस्य दुर्दोषोपशान्तये शुभफलप्राप्त्यर्थेच वेदोक्त विधानेनैकोनविंशति सहस्र मन्त्रजापकार्थं—अमुकगोत्र अमुकशर्माणंब्राह्मण मेभिर्वरणद्रव्यैः जापकत्वेन त्वामहंवृणे। इतिवरणद्रव्यंदत्वा। वृतोस्मीतिकर्मकुरु, करवाणीतिप्रत्युक्तिः (अमुकनक्षत्रोपलक्षितायाः कन्यायाः अमुकराशिसकासात, गोचराष्टकवर्गाभ्या ममुकदुरिचक्रय स्थानस्य गुरुग्रहस्य दुर्दोषोपशांतये शुभ

फलप्राप्तये वैधव्यादि दोषोपशान्त्यर्थेच, वेदोक्तविधानेनैकोनविं शति सहस्रजपकर्मकर्त्तुं मेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्र ममुकशर्माणं ब्राह्मणं जापकत्वेन त्वामहंवृणे) इतिब्राह्मणंवृत्वा—सचब्राह्मणो ममयजमानस्येति संकल्पविधिना वेदोक्तमन्त्रंगुरोर्जपेत् ॥–ततो जपान्तेहस्तमात्रांस्थंडिलं होमार्थनिर्माय होमपद्धत्यनुसारेण पंच भूसंस्कारादि ब्रह्मोपवेशनान्तं कर्मकृत्वा, वरदनामाग्निं सम्पूज्य, द्रव्यदेवताभिध्यानपूर्वकं द्रव्यत्यागंकृत्वा, आघाराज्यभागौहुत्वा,— ॐ बृहस्पतइत्यस्य गृत्समदऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो बृहस्पतिर्देवता, अश्वत्थसमिद्धोमे (वायवाज्यतिलहोमे) विनियोगः॥ ॐबृहस्पते० इतिमन्त्रेण अष्टोत्तरशतसमिद्धोमंकृत्वा ततोयवाज्यतिलैर्जप दश मांश होमंविधाय ॥ होमपद्धत्युक्तप्रकारेण भूरादिहोमादारभ्य पूर्णाहुत्यन्तंकर्मकृत्वा । ततःपीतगंधपुष्पादिभिः ॐ बृहस्पते० इतिमन्त्रेणसम्पूज्य । सफलार्घ्यं निवेदयेत्मन्त्रः—–ॐ गम्भीर दृढरूपांग दिव्येज्यसुमतिप्रभो । नमस्तेवाक्पतेशान्त गृहाणार्घ्यं बृहस्पते । अर्घ्यवारिणा गुरुप्रतिमांसंस्नाप्य, फलमग्रेनिधाय, ततो जपहोमंसमर्पयेत्—–ॐभक्त्याथतेसुराचार्यजपहोमादिसत्कृतम् । तत्वंगृहाणशान्त्यर्थं बृहस्पतेनमोनमः । ततःपुष्पाक्षतहस्तः प्रार्थ येत्—–ॐ जीवोबृहस्पतिः सूरिराचार्योगुरुरंगिराः । वाचस्पतिर्देव मन्त्रीशुभंकुर्यात् सदामम । ततउत्तराङ्गपूजनंकृत्वा देवंविसृज्य, गांचसम्पूज्य गोदानोक्तविधिना प्रतिमासहितंगामाचार्यायदत्वा। ततःकुम्भोदकेनसपरिवारं संस्कार्यचवरदगमःणमन्त्रैरभिषिंचेत्— ॐ इदमापःप्रवहता यञ्चमलञ्चयत् । यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपेऽअभीरुणम् । आपोमातस्मादेनसः पवमानश्चमुंचतु ।१। ॐ तामग्निवर्णांतपसाज्वलंती वैरोचनींकर्मफलेपुजुष्टां । दुर्गांदेवीं शरणमहंप्रपद्ये ।२। ॐ याओषधीः पूर्वाजातादेवेभ्यस्त्रियुगपुरा। मनैनुबभ्रूणामहं०शतंधामानिसप्तच ।३। ॐ अश्वावतींᳫ॑सोमा वतीमूर्जयन्तीमुदोजसम् । आवित्सिसर्वाऽओषधीरस्माऽअरिष्ट तातये ।४। ॐ सहस्रांशंशतधारमृषिभिः पावनंकृतम् । तेनत्वाम

भिषिंचामि पावमान्यःपुनन्तुते ।५। भगंतेवरुणोराजा भगमिन्द्रो बृहस्पतिः । भगमिन्द्रश्चवायुश्चभगंसप्तर्षयोददुः ।६। यत्तेकेशेषु दौर्भाग्यं सीमन्तेयच्चमूर्द्धनि । ललाटेकेशयोरक्ष्णो रापस्तद्घ्नन्तु सर्वदा ।७। ततस्तिलकाक्षतादिरोपणंकृत्वा आशीर्दद्यात् ततोब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ ॥ इतिप्रतिकूलगुरुशान्तिः ॥

—::*::—

अथ प्रतिकूलार्कशांतिः ।

अथच गोचराष्टकवर्गाभ्यां तृतीयषष्ठदशमैकादश चतुर्थाष्टम द्वादशस्थेषुस्थानेषु उपनयनविवाह संस्कारयोः पुरुषस्यसूर्यश्चेत्तर्हिवक्ष्यमाण शांतिंकृत्वासंस्कारौकुर्यात्–तत्रविधिः–कर्त्ताआदौ गणेशादिपंचांग पूजनंकृत्वा, ततः ईशानकोणे ताम्रकलशंजलपूर्णं तत्रपंचरत्नं सर्वौषधिगणं पंचगव्यं पंचपल्लवं अर्कवृक्षखण्डं च क्षिप्त्वा कलशपूजोक्त विधिना सम्पूज्य ततः पूर्णपात्रोपरि ताम्रपात्रंविन्यस्य तत्राग्न्युत्तारण पूर्विकांप्रतिमां संस्थाप्यरक्तवस्त्रेणाच्छाद्य–आचार्यंजापकंच सम्पूज्य वरणद्रव्यंकरेकृत्वा संकल्पंकुर्यात् अद्येत्यादि संकीर्त्या मुकोहंममास्य पुत्रस्यामुकनक्षत्रोत्पन्नस्या मुकराशेरमुकस्यकरिष्यमाणउपनयनकर्मणि (वाविवाहाख्य संस्कारकर्मणि) जन्मराशिसकाशात्सूर्यग्रहामुकदुःस्थिस्थानस्थितेन तत्कृतदुष्टारिष्ट निवारणार्थं झटिति शुभफलप्राप्तये च सूर्यग्रहस्य शान्तिकर्मकर्त्तुं, तथाचवेदोक्तविधिना, सप्तसहस्र संख्यकजपकर्म कर्त्तुं मेभिर्वरणद्रव्यै रमुकगोत्रप्रवरममुक शर्माणमाचार्यत्वेन तथा चा मुकशर्माणं जापकत्वेनयुवांवृणे इतिवृत्वा,ॐआकृष्णेतिमंत्रेण कलशोपरि सूर्यनारायण मावाह्य, षोडशोपचारेण सम्पूज्य, मिष्टान्नौदनं गोधूम पूपकादीन्नैवेद्यंसमर्प्य, उत्थाय दुग्धमिश्रितजलेन सूर्यार्घंदद्यात्–ॐ नमोस्तु सूर्याय सहस्रभानवे नमोस्तुवैश्वानर जातवेदसे । त्वमेवचार्घ्यं प्रतिगृह्णदेव देवाधिदेवायनमोनमस्ते

।१। ॐ नमोभगवतेतुभ्यं नमस्ते जातवेदसे। दत्तमर्घ्यमयाभानो त्वंगृहाणनमोऽस्तुते।।२। ॐ एहिसूर्य सहस्रांशोतेजोराशेजगत्पते अनुकंपयमां देवगृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते। ततोजापकः पूर्वोक्तप्रकारेण संकल्पंकृत्वा विनियोगःपूर्वकं सप्तसहस्रमंत्रं,ॐ आकृष्णेनेतिजपेत् ततःआचार्यो दीन्कृत्वा, आघारावाज्यभागौहुत्वा, अर्कसमिद्भिर ष्टोत्तरशतं समिद्धोमंविधाय पायसेनजपदशांश होमंकृत्वा,होमप- द्धत्युक्तप्रकारेणान्वाधानादि पूर्णाहुत्यन्तं कर्मकृत्वाःपूजास्थलमाग- त्य पूर्वोक्तमंत्रैर्वारत्रयं सफलार्घ्यंदत्वाप्रार्थयेत् ॐसर्वदेवाधिदेवाय आधिव्याधिविनाशिने। पूजांगृहाणमेदेव सर्वव्याधिर्विनश्यतु। ततो जपादिकं समर्पयेत्—ॐ सूर्यायसांगाय सपरिवाराय,, मयायत्कृतं तन्निवेदयामि। ॐ नमः सूर्यायशान्ताय सर्वरोगवि- नाशिने। ममेप्सितं फलंदत्वा प्रसीदपरमेश्वर, तत उत्तरांगपूजनं विधाय देवंविसृज्य गोदानोक्तविधिना रक्तवर्णांगां प्रतिमायुतामा- चार्यायदद्यात् तत आचार्यः कलशजलेन गुरुपूजोक्तमंत्रैर्वा अभि- षेक मंत्रैर्यजमानमभिषिंच्याशीर्वादं दद्यात् ततो ब्राह्मणान्भो- जयेत्। इति प्रतिकूलार्क शांतिपद्धतिः।

—:०:—

अथ प्रतिशुक्रशान्ति परिभाषा।

प्रतिशुक्रदोषमाह मुहूर्तचिन्तामणौ—दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्या द्गच्छेयु- र्नहि शिशुगर्भिणी नवोढा। बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नवोढा चेद्वन्ध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा। यद्वाह बादरायणः— अस्तंगते भृगौ पुत्रे तथाभिमुखमागते। नष्टे जीवे निरंशे वा नैव गच्छेत् कदा भूमे।

[illegible] अस्तंगते गुरौ शुक्रे सिंहस्थे वा बृहस्पतौ दीपोत्सवे [illegible] कन्या [illegible] विशेत्।

[illegible] नगर प्रवेश विषयादुपद्रवे परपीडने नियुधर्मे तीर्थयात्रयोः। नृपपीडने [illegible] न प्रतिभार्गवो भवति दोषकृत् क्वचित्। [illegible] तीर्थयात्रयो यत्र यात्रा [illegible] नगरकोटयात्रा देवदर्शनयात्रा। तीर्थयात्रा [illegible] शुक्रास्तदोष [illegible] दोषं न भजतीति शास्त्रसम्मति। बादरायण —कश्यपेषु वसिष्ठेषु चात्रिभृग्वंगिरःसु च। भरद्वाजेषु वत्सेषु प्रतिशुक्रं न दुष्यति। आपत्तिः — [illegible] [illegible] [illegible]।

विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न दुष्यति । शुभानुकूल्येन शुक्रस्यापवादमाह श्रीपतौ—भगस्तं गतेऽप्यां स्फुजिति प्रयाया दृगुधीयदिस्या दशुह्लवर्त्तां । यातव्य दिशिव्वस्तदिर्थः । कालविशेषे प्रतिशुक्रापवादं शुक्रास्तेच विशेषमाह मुहूर्त्तचिन्तामणौ--यावचन्द्रः पूषाभात्कृत्तिकाद्ये पादे शुक्रोऽधोनदुष्टोऽग्रदक्षे । पराशरः—पौष्णादिवह्नि भ पादे यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः । तावच्छुक्रो भवेदंधः सम्मुखे गमनं हितम् । पूर्वपदस्यदंतत्र्यं निपातनाच्छुक्रोऽधोयदाभवेत्तदासम्मुखे दक्षिणभागेच दोषकृन्नेति प्रमाणम् । अथैवंविधेऽपि शुक्रसांमुख्येऽवश्यकर्त्तव्येचगमने शान्तिमाह वशिष्ठः—तद्दोष शमनार्थाय शांतिं वक्ष्ये समासतः । कृत्वाशांतिं प्रयत्नेन पश्चात्सर्वं समाचरेत् । भृगुलग्ने भृगोर्वारे भृगोर्वर्गे भृगूदये । अथवा भृगुवारेऽपिशुक्रस्योदयंप्रति । रजतेनच शुद्धेनकारयेत्प्रतिमांभृगोः लिखेदष्टदलं पद्मं कांस्य पात्रेच तण्डुलैः । शुक्ल सूत्रावरैर्वेष्ट्य प्रतिमांतत्रपूजयेत । शुक्ल पुष्पाक्षतैर्गन्धै शुभ्रमुक्ताफलान्वितैः । उपचाराणिकार्याणि भृगुमन्त्रेणधीमता । तन्मन्त्रेण जपं कुर्यात्सम्यगष्टोत्तरं शतम् । कर्मान्ते तेनमन्त्रेण भक्त्याचार्घं प्रदापयेत् । श्वेतगंधाक्षतैःपुष्पैः क्षीरमिश्रेण वारिणा । संप्रार्थ्यच प्रयत्नेन प्रतिमाभूषणान्विता । देवज्ञायैवदातव्या श्वेत वस्त्रसहितंवच, ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चात्स्वयं भुंजीतबंधुभि. । ततः सम्मुखजोदोषस्तत्क्षणादेवनश्यति ॥

॥ इति प्रतिशुक्रशान्ति परिभाषा ॥

—:—

अथ प्रतिशुक्रशान्तिपद्धतिः ।

अथच पूर्वोक्त विषयेषु शुक्रशान्तिकर्त्ता शुक्रवारे चन्द्रतारानुकूलेशुभदिने ॥ पूजास्थलमागत्य गणपत्यादि ग्रहपूजान्त पंचांग पूजनं कृत्वा ततः कांस्यापात्रे श्वेत तण्डुलै रष्टदलं कमलं विरच्य तत्राग्न्युत्तारणपूर्विकां साश्वशुक्रटंकिनां रजत प्रतिमां संस्थाप्य, संकल्पं कुर्यात— अद्येत्यादि संकीर्त्यामुकराशिरमुकशर्माहं, द्विरागन कर्मणि वातीर्थगमन यात्रादिषु प्रतिशुक्रसम्मुख दक्षिणयोर्दोषानुपत्तये, स्थापित रजत प्रतिमायां शुक्रपूजनं करिष्ये—ततः श्वेतपुष्पाक्षतैर्ध्यायेत—ॐ श्वेतांबरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्य गुरुः प्रशान्तः । तथाक्ष सूत्रंच कमण्डलुंच जपंच बिभ्रद्वरदो स्तुमह्यम् ॥ ॐ भूर्भुवःस्वः भोजकट देशोद्भव भार्गवसगोत्र शुक्ल वर्ण शुक्रअस्यां साश्वप्रतिमायां मिहागच्छेहतिष्ठेत्यावाह्य । ॐ

अन्नादिति प्रजापत्यश्वि सरस्वतीन्द्रा ऋषयोतिजगतीछन्दः शुक्रो देवता शान्ति प्रतिमायां शुक्रस्थापने विनियोगः—ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमंप्रजापतिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रियं विपानँ्शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु । ॐ एतन्ते देव० इति प्रतिष्ठाप्य । ॐ शुक्रायनमः, इति सम्पूज्य श्वेतवस्त्रेणावेष्ठ्य उपायनं निवेद्य, अष्टोत्तरशतंशुक्र मंत्रं जप्त्वा, ततः श्वेतगन्धाक्षत मुक्ताफल दुग्धमिश्रित जलमंजलौनिधाय उत्तिष्ठन्नर्घं दद्यात्तत्रमन्त्रः— ॐ दैत्यमन्त्री दिवादर्शीचोशनाभार्गवः कविःश्वेतोथमंडलीकाव्यो विधिस्थोभृगवेनमः इत्यर्घवारिणा प्रतिमांसंस्नाप्य मुक्ताफलंनिवेदयेत् । ततः श्वेतपुष्पाक्षतः प्रार्थयेत्—ॐ त्वत्पूजयानयाशुक्र सम्मुखत्वसमुद्भवं । दोषंविनाशयक्षिप्रंरक्षमांतेजसांनिधे । ततः उत्तरांगपूजनंकृत्वा, प्रतिमादानंकुर्यात । ब्राह्मणं सम्पूज्य संकल्पंकुर्यात—अद्येत्यादिसंकीर्त्या मुकराशिरमुकोऽहं प्रतिशुक्रशांन्तिकर्मणि, द्विरागमनादि दोषानुपशये, इमांसाश्वशुक्र प्रतिमांकांस्यपात्रसहितां भृगुदैवत्यां रजतस्का ममुकगोत्रायामुकशर्म्मणे तुभ्यंसंप्रददे ॐ तत्सन्नमम एवं दानप्रतिष्ठांकृत्वा । कलशजलेन यजमानमभिषिंचगाशीर्दद्यात् ततो ब्राह्मणान्भोजयित्वा यथेष्ठगमनं यात्रादिकंकुर्यात् अत्रकेचिद्वंशपात्रे प्रतिमास्थापनं पूजनंच वदयन्ति यथासमाचारस्तथा कर्त्तव्यः ।　　　　इति प्रतिशुक्रशांतिपद्धतिः ।

अथ नवग्रहशांतिः ।

— . * —

तत्रादित्य शांति ।

मदनरत्नेभविष्योत्तरे—आदित्यवारे हस्तेन युक्तेयदिवासरे । मंत्रोक्तविधिनाम कुर्यात्पूजा समाहितः । प्रथमं [illegible] भक्तिपरायणः । [illegible] मंत्रान्ते [illegible] भास्करे [illegible] । ताम्र [illegible] प्रपूजयेत । [illegible] [illegible] ।

समिधोष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिंवचहोतव्यामधुसर्पिर्भ्यांदध्नाचैव तेनच । मंत्रेणानेनविदुषे ब्राह्मणायप्रदापयेत । अ दिव्य नमस्तुभ्यंमस्तमस्ते दिवाकर । त्वंतेजसात्रास्त्वा तस्मान्सततमागत । सूर्यपीडासु घोर सु कृता शान्तिः शुभप्रदः ॥

अथचन्द्रशांतिः—तद्वन्चित्रासुसंगृह्यसोमव रंविचक्षणः । अनंनंनोक्तविधिनातु पूजादिवंविधोः । सप्तमेतुततः प्राप्ते कुर्याद्ब्राह्मण भोजनम् । सप्तमेऽहनि । कांस्यपात्रेसमास्थाप्य सोमं रजत सम्भवम् । श्वेतत्र श्रयुगन्ध्रेण श्वेतपुष्पैः प्रपूजयेत् । होमंघृततिलैः कुर्यात्सोम नाम्नाचमंत्रवित् । समिधोऽष्टोत्तरशत मष्टाविंशतिरेव वा । होतव्यामधुसर्पिर्भ्यां दध्नाचैवाज्येन च । दध्यग्रशिखरे कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत । मंत्रेणानेन राजेन्द्र सम्यक् भक्त्या समन्वितः । महादेव जातिपज्जो पुष्प गौर्वीर पांडुर । सोम सौम्योभवास्माकं सर्वदाते नमो नमः ।

अथ भौमशान्तिः—स्वात्या मंगारकं गृह्य क्षमायां नक्त भोजनम् । पृथिव्यामेवनतुपात्रे भोजनम् । सप्तमेत्वथ संप्राप्ते हेमं ताम्रे निवेशयेत् । रक्त वस्त्र युगन्धं कुंकुमेना नुलेपितम् । निवेद्य भक्त्याकं सार पुष्प धूपा क्षतादिभिः । होमंघृत तिलैः कुर्यात्कुजनाम्नाचमंत्रवित । समिधोष्टोत्तरशत मष्टाविंशतिरेववा । होतव्यामधुसर्पिर्भ्यां दध्नाचैव घृतेन च । मंत्रेणानेन तद्द्या द्ब्राह्मणाय कुटुंबिने । कुज कुजभवोऽसित्व मंगलः परिगद्यसे । अमंगलं निहत्याशु सर्वदा यच्छ मंगलम् । **अथ बुधशान्तिः**—विशाखासु बुधं गृह्य सप्त नक्तान्यथा चरेत् । बुधंहेम मयंकृत्वा स्थापितं कांस्य भाजने । हरिद्रस युगलक्षं पीतमाल्यानु लेपनं । क्षीर यष्टिक नैवेद्यं ब्राह्मणाय निवेदयेत । होमं घृततिलैः कुर्याद्बुधनाम्ना च मंत्रवित । समिधोष्टोत्तर शत मष्टाविंशतिरेवच । बुधत्वं बुद्धिजननो बोधवान्सर्वदा नृणाम् । तत्वावबोधं कुरुमे सोम पुत्रायते नमः ॥ **अथ गुरु शान्तिः**— गुरुं चैवानुराधासु पूजयेद् भक्तितोनरः पूर्वोक्तविधिना सोमंसप्तनक्तान्यथा चरेत् । हैमं हेममयेपात्रे स्थापयित्वा बृहस्पतिं । पीताम्बर युगच्छन्नं पीत यज्ञोपवीतिनम् । पादुकोप नहच्छत्रका द्यलं विभूषितम् । पूजयेत्पीत कुसुमैः कुंकुमेनविलेपितम् । धूपदीपादिभिर्दिव्यैः फलैश्चन्दन तंदुलैः । खंडखाद्योपहारैश्च गुरोरग्रे निवेदयेत ॥ धर्मशास्त्रार्थ तत्वज्ञ ज्ञान विज्ञान पारग । विबुधार्ति हराचिन्त्य देवाचार्य नमोस्तुते । होमं घृत तिलैः कुर्याद् गुरुनाम्ना च मंत्रवित् । समिधोष्टोत्तर शतमष्टाविंशति रेवच । होतव्या मधुसर्पिर्भ्यां दध्नाचैव घृतेनच । विपन्नस्थे गुरौकार्या महा शान्तिरियंनृभिः । **अथ शुक्र शांतिः**—शुक्रं ज्येष्ठासु संगृह्यचनायां (पृथिव्यां) नक्त भोजनम् । (दिनस्याष्टमभागशेषे) शुक्लं क्रममागण द्विज संतर्पणेन च । सप्तम्यथ संप्राप्ते रौप्यं शुक्रंतुकारयेत् । वंशपात्रे च संस्थाप्य पूजयेत्सित पंकजैः । तदभावे सितैः पुष्पैस्तांबूलैश्चन्दनेनच । अभेतस्य प्रदातव्यं पायसं घृत संयुतम् । दद्यादनेन मंत्रेण ब्राह्मणाय कुटुम्बिने । भार्गवो भार्गवश्रेष्ठ श्रुतिस्मृति विशारद । हित्वा

ग्रहकृतान्दोषानपहरेद्यदोऽस्तु स । होम घृत तिलैः कुर्याच्छुक्र मन्त्राच यथाविधि । समिधो-ऽष्टोत्तरशत मष्टाविंशतिरेव च । अथशनैश्चरादि शान्ति शनैश्चरं राहुकेतू लोहपात्रेषु विन्यसेत । कृष्णागरु स्मृतो धूपो दक्षिणा च स्वशक्तित । यथाक्रम शमीदूर्वा कुशाना समिध स्मृता । मन्त्रैस्तथ सम्प्राप्तैतद्वर्णानथ कारयेत । कृष्ण वस्त्र युग्म मेकैक कारयेद्बुध । मृगनाभ्या समालभ्य कुसुमान्विनिदधेत । होमावसाने तत्सर्व ब्राह्मणायोप पादयेत । शनैश्चर नमस्तेऽस्तु नमस्ते राहुकेतवे । केतवे च नमस्तुभ्य सर्वशान्ति प्रदायके । इति मदनरत्ने भविष्योत्तरे नवग्रह शान्ति विधि ॥

— ॥ —

नवाष्टनवभूवर्षे, आश्विन्ये शुक्लपक्षके ।
दुर्गोत्सवे दशम्यांच श्रवणर्क्षेरवेर्दिने ॥१॥
आदित्यनामकेयंत्रे, इन्द्रप्रस्थे पुरेशुभे ।
संरच्यमुद्रितः कर्मकाण्डरत्नाकरोह्यसौ ॥२॥
चतुर्थस्तस्यचैवाऽसौ,खंडःशान्त्यादिकर्मणाम् ।
सम्पूर्णतामगादद्य गुरुपादानुकंपया ॥ ३ ॥
प्रशंसन्तुग्रन्थं विमलमनसः कर्मनिपुणाः ।
प्रवृत्तोनैवाहं जगतियशसः ख्यापनकृते ॥
प्रबन्धव्याजेन स्वयमिह महत्कर्मसरणौ ।
मयाशङ्कापङ्कः निजमनसिलग्नः परिहृतः॥४॥
नात्रातीवप्रकर्त्तव्यं दोष दृष्टिपरंमनः ।
दोषोह्यविद्यमानेऽपि तच्चित्तानांप्रकाशते ॥५॥

इतिवैदिक पं० देवानन्द डिमरीविरचित
कर्मकांडरत्नाकरस्यशांतिखंडश्चतुर्थः
॥ समाप्तः ॥
संपूर्णोऽयंग्रन्थः
ॐ शान्तिः ३